॥ श्रीः ॥

श्रीसूरसागर

अर्थात्

भाषा कविकुलचूड़ामणि श्रीसूरदास रचित श्रीमद्भागवत
बारहों स्कन्धोंका ललित रागरागिनियोंमें

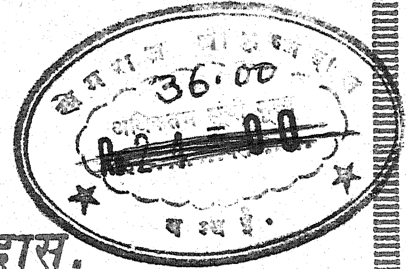
अनुवाद

काशीनिवासी-श्रीराधाकृष्णदासद्वारा अनेक
शुद्धप्रतियोंसे संशोधित



भजनानन्दी तथा प्रेमीभक्तोंके चित्तविनोदार्थ





मुद्रक व प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

संवत २०१३] [सन् १९५७

निवेदन



भाषा कविकुलगुरु श्रीसूरदासजीको यदि भाषाका आदिकवि कहा जाय तो भी अत्युक्ति न होगी. यद्यपि इनके पहिलेके बहुतेरे कवियोंकी कविता और ग्रन्थ मिलते हैं परन्तु यदि विचार कर देखा जाय तो आजकल जो कविताका प्रचार है उसकी जड़ श्रीसूरदासजीहीसे है। सभी कवि इन्हींका अनुसरण करते हैं।

सूरसागर सूरसागरही है. सम्भव है कि, समुद्रके सब रत्न इकट्ठे कर लिये जासकें और उसका उचित मूल्य भी निर्धारित हो सके परन्तु यह किसकी सामर्थ्य है जो सूरके अगाध समुद्रके अनमोल रत्नोंका मोल कर सके? कोई जौहरी भी तो हो और हो ही करके क्या कर सकता है, यहां तो सूरकी चकाचौंधमें सभी सूर हो जाते हैं, सूझे क्या और कहैं क्या? और सूझा भी तो जुबान बन्द.

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि इसका दर्शन तो करता परन्तु संयोग न आया एक दिन पूज्यपाद श्रीभारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीके पुस्तकालयमें पुस्तकोंको उलटते पलटते एक बस्तेमें सूरसागरका केवल दशमस्कंधका पूर्वार्द्ध हाथ आया उसे देखकर और भी पिपासा बढ़ी इसी बीच बांकीपुर जानेका संयोग हुआ और वहां मित्रवर बाबू रामदीनसिंहजीके यहां सूरसागरका प्रथमसे नवमस्कंध तक देखनेमें आया. मुझे उत्साह हुआ कि, यदि यह अमूल्य ग्रन्थ छपजाता तो भाषारसिकोंको बड़ा आनंद आता और भक्तोंको तो एक निधि ही हाथ आ जाता मैंने भाषाके सच्चे प्रेमी सेठजी श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासजीको लिखा और उन्होंने सहर्ष इसे छापना स्वीकार किया दशम उत्तरार्द्ध और एकादश द्वादश स्कंध श्री १०८ महाराज काशिराज बहादुरके पुस्तकालयसे मंगाया गया अतएव मैं उक्त महामान्यवरोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूं.

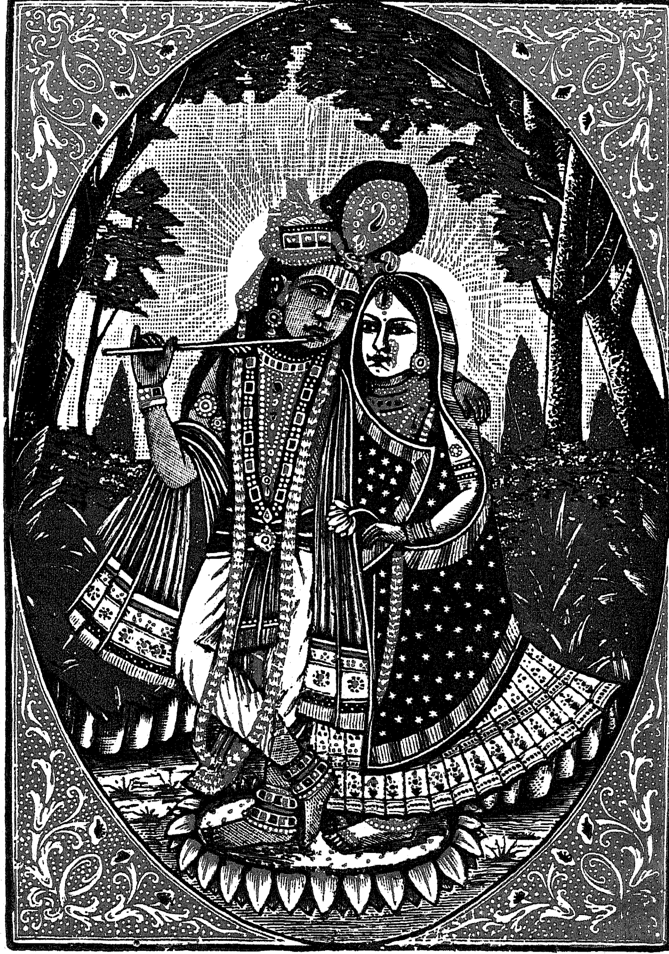
इससे पहली आवृत्तिमें ग्रन्थका कुछ भाग छपजाने पर पता लगा कि इसकी एक प्राचीन पूरी प्रति जानीमल खानचन्द्रजीकी कोठीमें है. उक्त कोठीके स्वामी बाबू गिरिधरदासजीने कृपा कर उसे दी और राधाकृष्णदासजीने छपजानेके उपरान्त मिलान करके शुद्धिपत्र तथा पाठान्तरकी एक सूची पृथक् बना दी बहुतसे पद तथा पदोंके भाग छूट गये थे वे भी पाठान्तरके साथ बढ़ा दिये गये थे कि यदि भगवदिच्छा और ग्राहकोंके उत्साहसे इसके फिरसे छपनेका अवसर प्राप्त होगा तो ये सब यथा यथा स्थान सन्निवेशित कर दिये जायगे और यथासम्भव नोट आदि भी दिये जायँगे इस प्रकार जो उस समय शीघ्रताके कारण नहीं हो सका था वह सब अतिश्रमसे अबकी आवृत्तिमें यथा स्थान सन्निवेशित कर यह उत्तम ग्रन्थ मुद्रित किया गया है.

यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि, सूरदासजीने सवालाख पद बनाये और सूरसागर सारावलीके देखनेसे भी विदित हुआ कि एक लाख पद तक तो उन्होंने सारावलीके बनाने तक बनाये थे, परन्तु इस ग्रन्थमें बहुत कम पद हैं वह दिन परमसौभाग्यका होगा जब कि वह सब पद देखनेमें आवेंगे और भाषा रसिकोंके लिये वह दिन चिरस्मरणीय होगा जब कि सब पद छपकर प्रकाशित हो जायँगे. मैं बड़े हर्षके साथ प्रकाशित करता हूँ कि, श्री १०८ गोस्वामी श्रीबालकृष्ण लालजी महाराज कांकरौली नरेशने आज्ञा दी है कि, मेरे पुस्तकालयमें पूरे सवालाख पद हैं और उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की है कि यदि तुम चाहोगे तो मैं उसे नकल करनेकी आज्ञा दूंगा यदि "श्रीवेंकटेश्वर" भगवानसे प्रेरित हुए हमारे ग्राहकोंसे उत्साह पाकर उत्साहित हुआ मैं उसे छापनेकी इच्छा करता हुआ उस ग्रन्थको प्राप्त करनेका उद्योग करूंगा.

मैं फिर उन महाशयोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूं जिनसे इस बडे काममें मुझे सहायता मिली है और आशा करता हूं कि, मेरी अनुपयुक्तताके कारण जो इसमें त्रुटियें रह गई हैं उन्हें सज्जन क्षमा करके मूल ग्रन्थकी ओर दृष्टि देंगे।

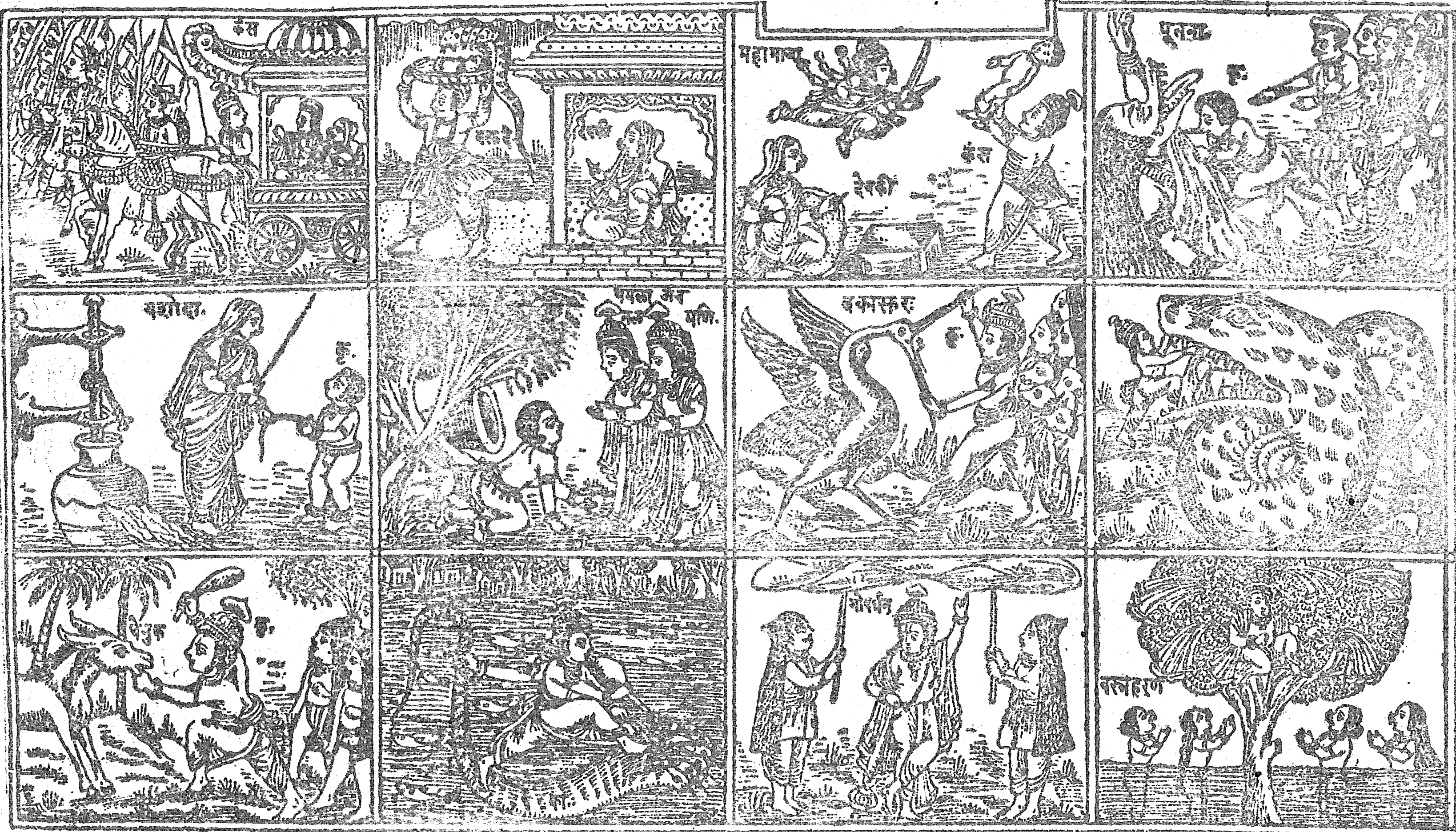
सेवक	आपका कृपाकांक्षी
श्रीराधाकृष्णदास,	**खेमराज श्रीकृष्णदास,**
चौखम्बा–काशी.	**"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई.**

श्रीनिकुंजविहारिणे नमः ।

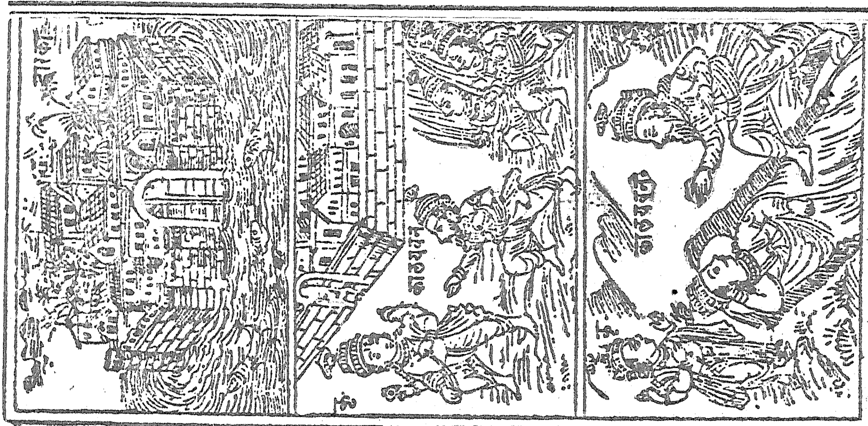


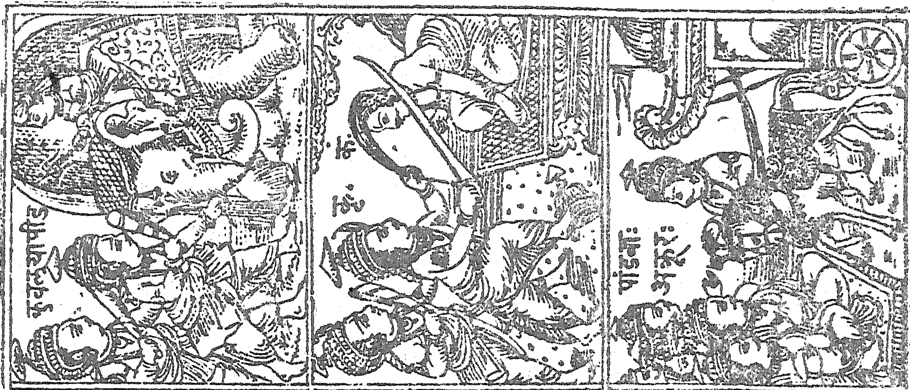
दक्षहस्तकृताश्लेषां वामेनालिङ्गच राधिकाम् ।
कृतनाटचो हरिः कुञ्जे पातु वेणुं विनादयन् ॥

दशमस्कंध पूर्वार्ध-उत्तरार्ध.

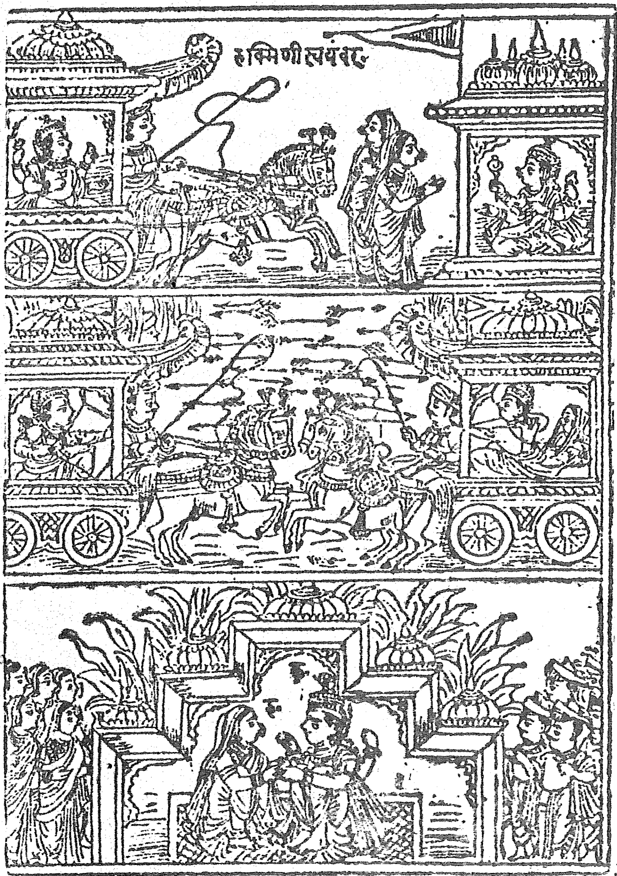


अंबिका
गोपाः
रासक्रीडा
धनुर्भंगः
अरिष्टासुरः
मु॰
चा॰
कृ॰
केशी
गोप्यः
अक्रूरः
गोप्यः
गोप्यः
उद्धवः





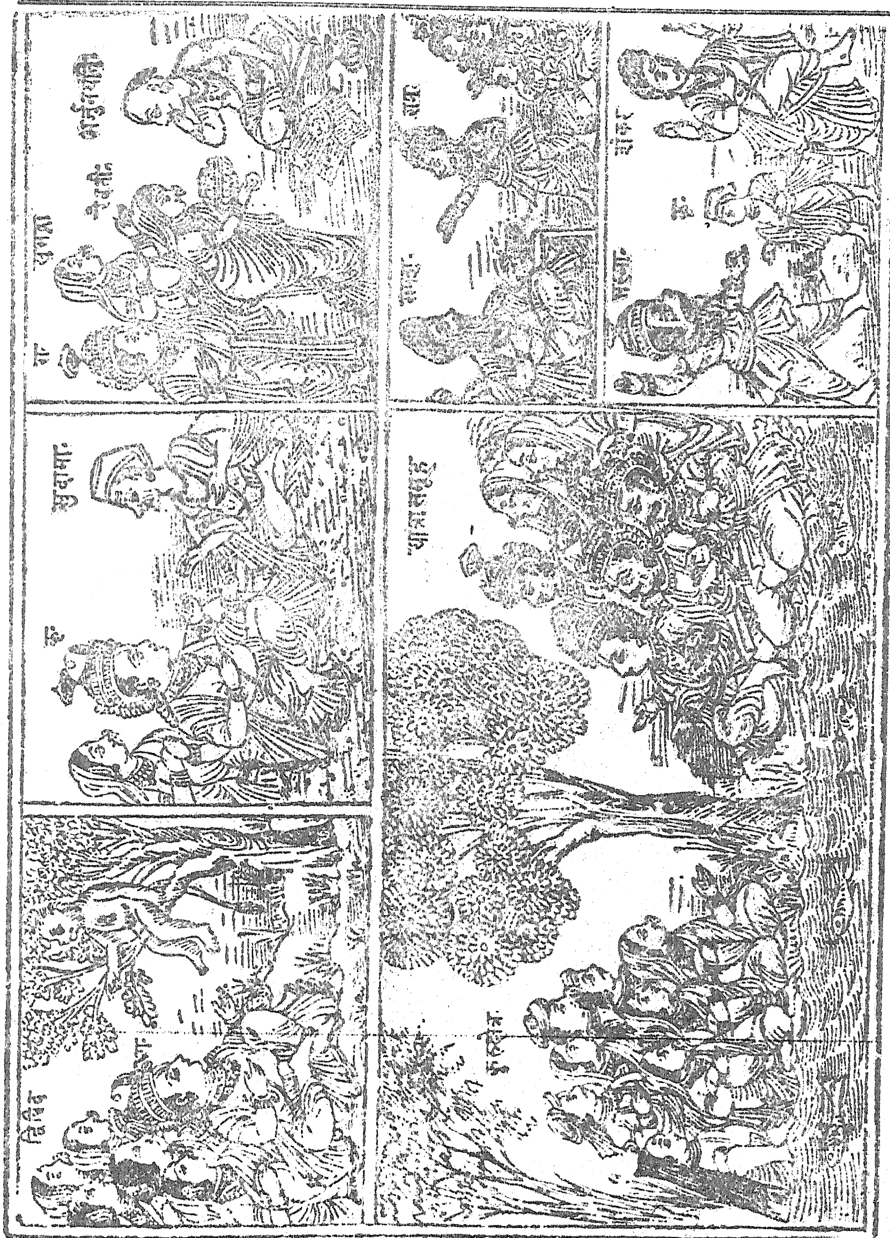




रुक्मिणीस्वयंवरः



कृ॰
जांबु॰
सत्रा॰
कृ॰
सत्यभा॰
अर्जुन
कालिंदी
लक्ष्मणा
शंबर
रवि
प्रद्युम्न



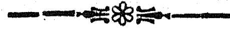






॥ श्रीहरिः ॥

श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र ।



न जाने क्यों हमारे देशके विद्वानोंका ध्यान इतिहासकी ओर तनिक भी न आया ? कि जिसके कारण अनेकानेक प्रसिद्ध पुरुषोंके नामभी नहीं सुननेमें आते. सूरदासजीको हुए अभी कुछ बहुत दिन नहीं हुए परन्तु इतनेही थोड़े कालमें भारतवर्षके एक इतने बडे प्रसिद्ध कविके जीवनचरित्रका पता ठीक ठीक नहीं लगता, यहाँतक यहाँके लोगोंका ध्यान इस ओर कम था कि सूरदासजीके थोडेही दिन पीछे गोस्वामी श्रीविठ्ठलनाथजी महाराजके पुत्र श्रीगोकुलनाथजीने जो चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता लिखी उसमेंभी सूरदासजीका चरित्र सुना सुनायाही लिखदिया; यदि उस समय थोड़ाभी परिश्रम किया जाता तो इनका पूरा पता लगजाता परन्तु खेद है कि इधर तो किसीका ध्यानही न था ॥

सूरदासजीके विषयमें चौरासी वैष्णवोंकी वार्तामें तथा पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीने जो लिखा है वह और साहित्यलहरीमें बाबू रामादीन सिंहने जो कुछ छापा है स्थानान्तरमें प्रकाशित किया जाता है यहाँ हम केवल समयका निरूपण करते हैं ॥

सूरदासजीका समय निर्णय करना कुछ बहुत कठिन नहीं है क्योंकि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके ये शिष्य थे (" श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो " सू० सा० सा० ११०२) और श्रीगोसाईंजी (श्रीविठ्ठलनाथजी) के समयमें ये मरे यह तो इनके लेखहीसे विदित है "थापि गोसाईं करी मेरी आठ मद्धे छाप" (भारतेन्दुजी लिखित लेख) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुका जन्म सम्वत् १५३५ वैशाख कृ० ११ को और अन्तर्धान सम्वत् १५८७ आषाढ़ सु०२को और श्रीगोस्वामी विठ्ठलनाथजीका जन्म संवत् १५७२ पौषकृष्ण ९ और अन्तर्धान संवत् १६४२ माघ कृष्ण ७ को हुआ. अब इनका समय संवत् १५३५ से लेकर संवत् १६४२ के बीच १०७ वर्षके भीतरही निर्णय होना चाहिये । अब विचारणा चाहिये कि इन्होंने अल्पायु पाई या दीर्घायु । १ पहिले तो उनके पदोंकी बडी संख्या ही उन्हें दीर्घायु बताती है परन्तु मुझे उनकी अवस्था लगभग अस्सी वर्षकी होनेका पक्का प्रमाण मिला है । सूरदासजीने सूरसागरसारावलीको अपनी सरसठ वर्षकी अवस्थामें लिखा है ॥ यथा–

गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरस प्रवीन। शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊपार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये। मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३ ॥ गोवर्द्धन गिरि रत्नसिंहासन दंपति रस सुख मान। निबिड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रसबिलसत सुखखान ॥ १००४ ॥ निशा भोर कबहूं नाहिं जानत प्रेममत्त अनुराग ॥ ललितादिक सींचत सुख नैननि जुर सहचारि बडभाग ॥ १००५ ॥ यह निकुञ्जको वर्णन करिके वेद रहे पचिहार। नेति नेति करि कहेउ सहसबिधि तऊ न पायो पार ॥ १००६ ॥ दरशन दियो कृपा करि मोहन नेग दियो वरदान। आगम कल्प रमन तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान ❀ ॥१००७॥

सूर सागर सारावलीको सूरदासजीने एक लाख पद बनानेके उपरान्त बनाया है:--

कर्मयोग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो। श्रीवल्लभगुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥ ११०२ ॥ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बन्द। ताको सार सूर सारावलि गावत अति आनन्द ॥ ११०३ ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहै मम साथ ॥ ११०४ ॥

सूरदासजीके सवालक्ष पद बनानेकी किम्बदन्ती जो प्रसिद्ध है वह ठीक विदित होती है क्यों कि एक लाख पद तो श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य होनेके उपरान्त और सारावलीके समाप्त होने तक बनाये इसके आगे पीछे अलगही रहे ॥

अब देखना चाहिये कि यह सारावली कब बनी ? इसके अन्तमें सूरदासजी लिखते हैं—

" सरस समतसर लीला गावे युगल चरण चित लावे। गर्भवास बन्दीखानेमें बहुरि सूर नहिं आवे ॥ ११०७ ॥ " मुझे सरस संवत्सरका शब्द खटका और इसपर मैंने माननीय महामहोपाध्याय श्रीपंडित सुधाकर द्विवेदीजीसे पूँछा इन्होंने बताया कि सरस नहीं यह शब्द षरस हो सकता है जिसका अर्थ साठ होता है और पहिले लोग सैकडाको प्रायः लिख दिया करते थे, इससे संवत् १५६० का अनुमान हुआ, परन्तु जो विचारकर देखा तो यह बात सर्वथा असंगत प्रतीत हुई. क्योंकि एक तो "सरस संवत्सरलीला गावै" से विदित होता है कि, यह फलस्तुति है, सम्भव है इस लीलाहीका नाम सरस सम्वत्सरलीला हो, क्योंकि गोवर्धनपूजाके प्रसंगमें भी सूरदासजीने

❀ इसको जीवनचरित्रवाले पद "प्रथमही प्रथजगात" के इन पदोंसे मिलाइये "सातएं दिन आय यदुपति कीन आप उद्धार। दियो चख दै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाइ। हौं कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखौं देखि राधा श्याम। सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल दक्षिण विप्रकुलते शत्रु ह्वैहै नास। अमित बुद्धि बिचारि विद्यमान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास सूर सु श्याम। भए अन्तर्धान बीते. पाछिली निशि याम ॥"

लिखा है "श्याम कह्यो सूरदासजीसो मेरी लीला सरस बनाय" दूसरे यह कि, हम ऊपर दिखला चुके हैं कि सरसठ वर्षकी अवस्थामें यह ग्रन्थ बना तो १५६० में से ६७ निकाल दीजिये तो १४९३ बचता है जो कि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके जन्मके बहुत पहिले आता है और यदि श्रीगोसाईंजीके कालमें सूरदासजीकी मृत्यु उनके लेखानुसार मानी जाय तथा सूरदासजीने संवत् १६०७ में साहित्यलहरी बनायी है तब तो सूरदासजीकी अवस्था ११४ वर्षसेभी अधिक हो जाती है, इससे इसे छोडकर साहित्यलहरीकेही सम्वत्पर ध्यान देना चाहिये ॥ साहित्यलहरीमें सूरदासजीने यों सम्वत् दिया है:—

"मुनि पुनि रसनके रस लेष दशन गौरीनंदको लिखि सुबल संवत् पेष ॥ नंदनंदन मास छैतेहीन त्रितियावार । नंदनंदन जनमते हैं बाण सुखआगार ॥ तृतियऋक्ष सुकर्मयोग बिचारि सूर नवीन । नन्दनन्दन दासहित साहित्य लहरी कीन ॥ १०९ ॥"

मुनि=सात, रसन एक, रस छ, दशन गौरीनंद=एक अर्थात् १६०७ "अंकानां वामतो गतिः" नन्दनन्दनमास=वैशाख, अक्षय तृतीया कृत्तिकानक्षत्र सुकर्म योगमें साहित्यलहरी बनाया।

साहित्यलहरीको सूरदासजीने सूरसागरसे दृष्टकूट पदोंको छांटकर संग्रह किया है अस्तु अब १६०७ में से सरसठ वर्ष निकाल दीजिये तो १५४० सम्वत्के लगभग उनके जन्मका समय लाया और इसके पीछे सम्वत् १६२० के लगभग उनकी मृत्यु मानलेनी चाहिये ॥

सूरसागरके देखनेसे विदित होता है कि उस समयमें श्रीगोस्वामि हित हरिवंशजीको और स्वामि हरिदासजीके पूरे अभ्युदयका समय था और उस समयके सब वैष्णवोंमें प्रेम था सूरदासजी लिखते हैं:—

निशिदिन श्याम सेऊं मैं तोहिं । इहै कृपा करि दीजै मोहिं ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमें, हरिवंशी हरिदासी जहाँ । हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दै (पृष्ठ ३६२ पंक्ति १०) ॥

ऐसा प्रतीत होताहै कि सूरदासजीने श्रीमद्भागवतको शृंखलापूर्वक एक समयमें नहीं बनाई थी क्योंकि वार्ता इत्यादिमें समय समय पर जो सबपद "खंजन नैन रूप रस माते।" आदि लिखे हैं प्रायः वे सभी इसमें आगये हैं, और पूरा पूरा भागवतका अनुवादभी नहीं है बहुतसी कथा छोडभी दीहै और कई एक उपासनाके अनुसार बढाभी दीहै कुछ और पुराणोंसेभी सहायता ली है. आप लिखते हैं:—

"वंदन रज विधि सबै कह्यो विधि दियो ऋषिन्ह बताइ । व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥" (पृष्ठ ३६४ पंक्ति २३)

एक सूरदास और हुए हैं वह अपना नाम कवितामें सूरदास मदनमोहन रखते थे सूरदासजीका नाम भारतवर्षमें ऐसा प्रसिद्ध होगया है कि सभी अंधोंको सूरदास कहते हैं और बहुतसे लोग आप कविता करिके सूरदासजीकी छाप उसमें रखदेते हैं. जिसमें वह कविता प्रसिद्ध होजाय. बाबू अक्षयकुमारदत्तने भ्रमवश अपने बंगला ग्रन्थ "भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय" में लिख दिया है कि जितने अन्धे फकीर एकतारा लेकर गातेहुये घूमते फिरते हैं सब सूरदासके सम्प्रदायमें हैं सूरदासजीका जीवनचरित्र आगे दियेहुये लेखोंसे प्रगट होजायगा अतएव हम यहाँ कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते ॥

पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी लिखित नोट सूरदासजीका ।

संसारमें जो लोग भाषाकाव्य जानते होंगे वह सूरदासजीको अवश्य जानते होंगे और उसी तरह जोलोग थोडेभी वैष्णव होंगे, वे इनका थोडा बहुत जीवनचरित्रभी अवश्य जानते होंगे. चौरासी वार्ता, उसकी टीका, भक्तमाल और उसकी टीकामें इनका जीवन विवृत कियाहै, इन्हीं ग्रंथोंके अनुसार संसारको (और हमकोभी) विश्वास था (१) कि ये सारस्वत ब्राह्मणहैं, इनके पिताका नाम रामदास, इनके माता पिता दरिद्री थे, ये गऊ घाटपर रहते थे, इत्यादि. अब सुनिये एक पुस्तक सूरदासजीके दृष्टिकूटपर टीका (टीकाभी सम्भव है उन्हींकी है, क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दिये हैं वह दोहे और चौपाई भी सूरनामसे अंकित हैं,) मिली है, इस पुस्तकमें ११६ दृष्टिकूटके पद अलंकार और नामिकाके क्रमसे हैं और उनका स्पष्ट अर्थ और उनके अलंकार नायिका इत्यादि सब लिखे हैं इस पुस्तकके अंतमें कविने अपना जीवनचरित्र दियाहै जो नीचे प्रकाश किया जाता है अब इसको देखकर सूरदासजीके जीवनचरित्र और वंशको हमलोग औरही दृष्टिसे देखनेलगे वह लिखते हैं "प्रथमजगात" (२) प्रार्थज गोत्र (?) वंशमें इनके मूल पुरुष ब्रह्मराव (३) हुए जो बडे सिद्ध और देव प्रसाद लब्ध थे इनके वंशमें भौचंद (४) हुआ, पृथ्वीराजने (५) जिसको ज्वालादेश दिया उसके चार पुत्र जिनमें पहिला राजा हुआ। दूसरा गुणचन्द्र उसका पुत्र शीलचंद्र उसका पुत्र वीरचंद्र

(१) कविवचनसुधा प्राचीन पुस्तकावलीकी दूसरी जिल्दमें सूरदासजीका जीवनचरित्र देखो।

(२) "प्रथमजगात"–इस जाति वा गोत्रके सारस्वत ब्राह्मण सुननेमें नहीं आए। पंडित राधाकृष्णसंगृहीत सारस्वत ब्राह्मणोंकी जातिमालामें 'प्रथजगात" "प्रथ"–वा "जगात" नामके कोई सारस्वत ब्राह्मण नहीं होते। "जगा वा जगातिया' तो भाटको कहते हैं।

(३) ब्रह्मराव नामसे भी सन्देह होता है कि यह पुरुष या तो राजा रहा हो या भाट।

(४) भौ शब्द हुआ अर्थमें लीजिये तो केवल चन्द्र नाम था। चन्द्रनामका एक कवि पृथ्वीराजकी सभामें था। आश्चर्य!!!

(५) पृथ्वीराजका काल सन् ११७६।

यह वीरचंद्र रत्नभ्रमर (रनथम्भौर) के राजा प्रसिद्ध हम्मीर (६) के साथ खेलता था। इनके वंशमें हरिश्चन्द्र (७) हुआ उसके पुत्रके ७ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा (कवि लिखताहै) मैं सूरजचन्द्र था मेरे ६ भाई मुसलमानोंके युद्ध (८) में मारे गए। मैं अन्धा कुबुद्धि था। एकदिन कुएमें गिरपडा तो सात दिन तक उस (अन्धे) कुएमें पडा रहा किसीने न निकाला सातवें दिन भगवानने निकाला और अपने स्वरूपका (नेत्र देकर) दर्शन कराया और मुझसे बोले कि वर मांग मैंने वर मांगा कि आपका रूप देखकर अब और रूप न देखूं और मुझको दृढभक्ति मिलै और शत्रुओं (९) का नाश हो। भगवान्ने कहा ऐसाही होगा तू सब विद्यामें निपुण होगा प्रबल दक्षिणके ब्राह्मण (१०) कुलसे शत्रुका नाश होगा और मेरा नाम सूरजदास, सूर, सूरश्याम इत्यादि रखकर भगवान अन्तर्धान होगये। मैं व्रजमें बसने लगा फिर गोसाईं (११) ने मेरी अष्ट (१२) छापमें थापना की इत्यादि। इस लेखसे और लेख अशुद्ध मालूम होते हैं क्योंकि जैसे चौरासी वार्ताकी टीकामें लिखाहै कि दिल्लीके पास सीही गाँवमें इनका दरिद्री माता पिताके घर जन्म हुआ यह बात नहीं आई। यह एक बडे कुलमें उत्पन्न थे और आगरे वा गोपाचलमें इनका जन्म हुआ हो यह मानलिया जाय कि मुसलमानोंके युद्धमें इनके भाइयोंके मारेजानेके पीछेभी इनके पिता जीते रहे और एक दरिद्र अवस्थामें पहुँच गए थे और उसी समयमें सीदी गाँवमें चले गये हों तो लडमिल

---

(६) हम्मीर चौहान भीमदेवका पुत्र था। रणथंभौरके किलेमें इसीकी रानी इसके अलाउद्दीन (दुष्ट) के हाथसे मारेजाने पर सहस्रावधि स्त्रीके साथ सती हुई थी। इसका वीरत्व यश सर्वसाधारणमें हमीर हठके नामसे प्रसिद्ध है।

(तिरिया तेल हमीर हठ, चढे न दूजीबार) इसीकी स्तुतिमें अनेक कवियोंने वीररसके सुन्दर श्लोक बनाए हैं। 'मुञ्चति मुञ्चति कोषं भजति च भजति प्रकम्पमरिवर्गः। हम्मीरवीरखड्गे त्यजति त्यजति क्षमामाशु।' इसका समय सन् १२९०। (एक हमीर सन् ११५२ में भी हुआ है)।

(७) सम्भव है कि हरिचन्द्के पुत्रका नाम रामचन्द्र रहा हो जिसे वैष्णवोंने अपनी रीतिके अनुसार रामदास कर लिया हो।

(८) उस समय तुगलकों और मुगलोंका युद्ध होता था॥

(९) शत्रुओंसे लौकिक अर्थ लीजिये तो मुगलोंका कुल (इससे सम्भव होता है कि इनके पूर्वपुरुष सदासे राजाओंका आश्रय करके मुसलमानोंको शत्रु समझते थे या तुगलकोंके आश्रित थे इससे मुगलोंको शत्रु समझते थे) यदि अलौकिक अर्थ लीजिए तो काम, क्रोधादि।

(१०) शिवाजीके सहायक पेशवाका कुल जिसने पीछे मुसलमानोंका नाश किया। अलौकिक अर्थ लीजिए तो सूरदासजीके गुरु श्रीवल्लभाचार्य्य दक्षिण ब्राह्मण कुलके थे।

(११) "गोसाईं"-श्रीविट्ठलनाथजी श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र।

(१२) अष्टछाप-यथा-सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, और कृष्णदास ये चार महात्मा आचार्य्यजीके सेवक और छीतस्वामि गोविन्दस्वामि, चतुरभुजदास और नन्ददास ये गोसाईंजीके सेवक। ये आठों महाकवि थे।

सकती है। जो हो हमारी भाषा कविताके राजाधिराज सूरदासजी एक इतने बडे वंशके हैं यह जान कर हम लोगोंको बडा आनन्द हुआ। इस विषयमें कोई और विद्वान् जो कुछ और विशेष पता लगा सके तो वहभी उसे पत्रद्वारा प्रकाशित करें॥

प्रथम ही प्रथ जगाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव बिचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप॥ पान पयदेवी दियो शिव आदिसुर सुख पाय। कहा दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति सुखदाय॥ पार पायन सुरनके पितु सहित अस्तुति कीन तासुवंश प्रशंस मैं भौ (१) चन्द * चारु नवीन॥ भूप पृथ्वी (२) राज दीनों तीन्हीं

* दीपनिर्वाण नामक उपन्यासके पहले भागमें मुन्शी उदितनारायण वर्म्माने लिखा है:—

"कविचन्द यथार्थमें एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराजके परमबन्धु थे, और पृथ्वीराजके सहवासहीमें सर्व्वदा रहते थे। चन्दकवि पुस्तकमें कविचन्द्रके नामसे लिखे गये हैं। इंगलैण्डके सर फिलिप्सिड्नी और सर वाल्टर रयालीके समान वे काव्यविषयमें निपुण थे, युद्धविषयमें भी वैसेही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्यही उनके यशका चिह्न है. उनका सकल महाकाव्य राजपूत लोगोंके विशेषतः पृथ्वीराजके कीर्तिकलाप और शूरता पराक्रममें वर्णन हुआ है। सुतराम् समस्त आर्यजातिमें जैसे रामायण और महाभारत आदरणीय है, ग्रीक (यूनान) लोगोंमें जैसे होमर आदरणीय है, राजपूत लोगोंमें चन्दकविका काव्यसमूह भी वैसेही आदरणीय है। किन्तु चन्दकविका कपोलकल्पित काव्य बहुत कम है, प्रकृत वृत्तान्तका भाग अधिक है। दुःखका विषय यही है कि उनका समस्त जीवनचरित्र कहीं भी नहीं पाया जाता और उनके काव्यसमूहका अधिकांश प्रायः प्राचीन हिन्दीभाषामें छन्दोबद्ध है।

चन्दकविके विषयमें शिवसिंहसरोजमें यों लिखा है:—

चन्दकवि प्राचीन बंदीजन सम्भल निवासी सम्वत् ११९६ ए० चन्दकवि महाराजा बीसलदेव चौहान रनथंभौरवालेके प्राचीन कवीश्वरकी औलाद थे। संवत ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहानके पास आये और मंत्री कवीश्वर दोनोंपदको प्राप्त हुए और पृथ्वीराज रायसा नामक एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोकसंख्या भाषामें रचा जिसमें ६९ खण्ड हैं और जिसमें पुरानी बोली हिन्दुओंकी है इस ग्रन्थमें चन्दकविने सम्वत् ११२० से ११४९ तक पृथ्वीराजका जीवनचरित्र महाकविताईके साथ बहुत छन्दोंमें वर्णन किया है, छप्पय छन्द तो मानों इसी कविके भागमें थीं जैसा चौपाई छन्द श्रीगोसाईं तुलसीदासके हिस्सेंमें पडी थीं इस ग्रन्थमें क्षत्रियोंकी वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाडका माहात्म्य और दिल्ली इत्यादि राजधानियोंकी शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव चालचलन-व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे बरन् नीतिशास्त्र और चारनके काम काजमें महाशूर वीर थे। सम्वत् ११४९ में पृथ्वी-राजके साथ ये भी मारे गए इन्हींकी औलादमें शाङ्गधर कवि थे, जिन्होंने हमीररायसा और हमीरकाव्य भाषामें बनाया है।

शाङ्गधर कवि बन्दीजन चन्द कवीश्वर वंशी सम्वत् १३५७ ये प्राचीन कवि चंद कवीश्वरके वंशमें सम्वत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीर देव चौहान रनथम्भौरवालेके यहां जो राजा विशालदेवके वंशमें रहा करते थे इन्होंने हमीररायसा १ और हमीरकाव्य २ ये दो ग्रन्थ महाउत्तम बनाए हैं हमीररायसा राजा हमीरकी प्रशंसामें लिखा है।

दोहा-सिंहगवन सत्पुरुषवचन, कदलि फरै इक वार। तिरिया तेल हमीरहठ, चढै न दूजी बार १

कवित्त-तंगन समेत काटि विहित मतंगनसों रुधिरसों रंगरण मंडलसों भरिगो। सारंग सुकवि भनै भूपति भवानीसिंह पारथ समान महाभारतसों करिगो॥ मारे देखि मुगुल तुराबखान ताहि समै काहू अस न जाना काहू नट सों उचरिगो। बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथा हाथी हाथी ते सहादति उतरिगो॥ १॥—

ज्वालादेश । तनय ताके चार कीन्हों प्रथम आप नरेश ॥ दूसरे (३) गुणचंद तासुत शीलचंद सरूप । (४) वीरचंद प्रताप पूरण भयो अदभुत रूप ॥ रंतभार हमीर भूपत

—चन्दकविके विषयमें पण्डित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंडाने पृथ्वीराजरायसाकी टिप्पणीमें लिखा है।

चन्दबरदई–इस महाकाव्यका ग्रंथकर्त्ता कि जो हिन्दुओंके अंतिम बादशाह पृथ्वीराजजी चौहानका लंगोटिया मित्र और उनके दरबारका कविराज था। वह भट्ट जाति जो आजकल राव करके कहलाते हैं उसके जगात नामक गोत्रका था और उसके पुरुषा पञ्जाब देश लाहौर नगरके रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेरके चौहानोंकी थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस महा-काव्यसे विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि, वह पंजाब देशकी अद्यावधि प्रसिद्ध बीरभूमिके तत्त्वोंसे उत्पन्न हुआ था और राजपूतानेके हृदयरूपी अजमेर नगरमें बड़ा हुआ। था यह षट् भाषाव्याकरण, काव्य, साहित्य, छंदःशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक और गान आदिक विद्याओंमें अच्छा व्युत्पन्न पंडित था। उसके पिताका नाम वेण और विद्या-गुरुका नाम गुरुप्रसाद था। उसकी दो स्त्रियोंके नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लडकीका नाम राजबाई और दश लडकोंके नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ वल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुणराज१० थे। इस महाकाव्यके विषयोंको वैसे तो उसने समय २ पर बनाकर कंठ कर रक्खे थे परन्तु उनको ग्रंथाकारमें उसने ६० दिनमें रचा था और अंतको उसने रायसाकी पुस्तक अपने लड़के जल्ह नामकको दी थी। इस रायसेके अतिरिक्त उसके रचे और भी कई एक ग्रंथ सुननेमें आते हैं परंतु उनमें सबसे बड़ा ग्रंथ यह रायसा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिल्कुल नहीं मिलते हैं। उसका सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहाँ तक हमारे जाननेमें ख्यातादिसे आई है वह हम इस ग्रंथके समाप्त होनेपर छापकर प्रसिद्ध करेंगे।

फिर लिखा है–

छप्पय–"सम वनिता वर बंदि चंद जपिय कोमल कल। शब्द ब्रह्म यह सत्य अपर पावन कहि निर्मल ॥ जिहित शब्द नहिं रूप रेख आकार ब्रह्म नहिं ॥ अकल अगाध अपार पार पावन त्रयपुर महिं ॥ तिहिं शब्द ब्रह्म रचना करौं गुरुप्रसाद सरसे प्रसन ॥ यद्यपि सुउकति चूकौं जुगति तौ कमल वदनि कवितह हसन ॥

छंद ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

८ चंद इस रूपकमें अपनी स्त्रीको उसकी शंकाका उत्तर देकर समाधान करता है। शब्द ब्रह्म (सं० शब्दात्मकं ब्रह्म) शब्दका प्रयोग चंदकी व्याकरण और वेदान्त विद्याके ज्ञानका द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थमें कविने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियोंके अनुसार चंदके विद्यागुरुका नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देशका रहनेवाला एक बडा पंडित हुआ है। कवितह चंदकी हिन्दीका निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कविका है। किसी २ पुस्तकमें जो बरबदि, अमल, अबल, त्रयपूर, महि तिहि और प्रसन्न पाठ हैं वे अशुद्ध हैं.

फिर लिखा है-

"बिहु बाह सूर सज्जे समंत। बनै बिरद बन्धे अनंत" ॥ ६२३ ॥

यह छन्द सं० १६४७। १७७० और १८४५ की पुस्तकोंमें नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है।

इस छंदकी अंतकी तुकमें "बनै बिरद बन्धे अनन्त' है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेनने अनेक विरद बांधे अर्थात् कहे। यह बेन कवि इस महाकाव्यके रचनेवाले चन्दका पिता था और वह सोमेश्वरजीके इस समय साथ था। अब तक चन्दसे पहिलेका कोई काव्य किसी भी—

सँग खेलत आप । तासु वंश अनूप भो हरचंद अति विख्यात ॥ आगरे रशि गोपचलमें रह्यो ता सुत बीर । पुत्र जनमे सात तीके महाभट गम्भीर ॥ कृष्णचंद (९) उदारचंद जो रूपचंद सुभाइ । बुद्धचंद प्रकाश चौथो चन्द भौ सुखदाइ ॥ देवचन्द्रप्रबोध संभृत (६) चन्द ताको नाम । भयो सप्तो नाम सूरज चन्द मन्द निकाम ॥ सो समर करि साहि सेवक गये (७) विधिके लोक । रह्यो सूरज चन्द दृगते हीन भर वर शोक ॥ परो कूपपुकार काहू सुनी ना संसार । सातये दिन आइ यदुपति कियो आप उधार ॥ दियो (८) चख दै कही शिशु सुनु मांग बरजो चाइ । होंकहों प्रभु भगत चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम । सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु

—कविका किसीके जाननेमें नहीं है किन्तु हमनेजो एक चन्द छन्द वर्णनकी महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाडराजके महाराणाजी श्री उदयसिंहजीके महाराजकुमार श्रीसगतसिंहजीके पंडित विष्णुदासजीने अकबर बादशाहके भाट गंगजीसे अजमेरमें पटोलावायके मुकामपर चन्दके बाप कवि राव बेनका नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करतेहैं। इस छप्पयसे वेनने पृथ्वीराजजीके पिता सोमेश्वरजीको आशीश दीथी—

छप्पय—अटल ठाट महि पाट, अटल तारागढ थानं । अटल नग्र अजमेर, अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप, अटल लंका गढ डंडिव । अटल आप चहुवान, अटलभूमीयशमंडिव ॥
संभारि भूप सोमेश नृप, अटल छत्र ओपै सु सर । कविराव वेन अशीश दें, अटल युगां राजैश कर॥

इसीके साथ उसी पुस्तकमें चन्दके नागापत्रकरणाका कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखा हैः—

दोहा—लै कूंजा नृप पीथुला, सामंत चमू समंद । बेन नंदन कनवज गमन, चन्द करन कइ दंद ॥

पृथ्वीराज रायसेकी प्रथम सरक्षामें लिखा है—

इसके सिवाय फारसी और जम्मूकी तवारीख भी इस बातकी साक्षी देती है कि चन्द हमारे हिन्दुओंके अंतिम बादशाहका परमप्रिय कविराज और सहचर था । यदि हम उन पुस्तकोंका मूल उद्धृत करके यहां प्रमाणमें प्रवेश करें तो ग्रन्थके बहुत बढ जानेका भय है । अतएव हम मेजर रैवर्टी साहबकी एक टिप्पणीको उद्धृतकर प्रमाणमें इस अभिप्रायसे देते हैं कि हमारे पाठकोंको इस विषयका अनुभव एक थोडीसी पंक्तियोंसेही होजाय । नीचे लिखी थोडीसी पंक्तियें केवल यही नहीं सिद्ध करतीं कि चन्द कवि पृथ्वीराजजीके समयमें हुआ था परन्तु रायसेमें लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेरफारके साथ सिद्ध करता है ।

(मैजर रैवर्टी साहबकृत तबकात नासरी पृष्ठ ४८६)

हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तांत लिखते हैं कि उसीको अब्बुलफजलने और जम्मूकी तवारीख वालेने भी थोडेसे फरकके साथ वर्णन किया है—

यद्यपि फारसी इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि रायपिथौरा तलावरी (तराई) पर लडाईमें मारा गया और मुईजुद्दीन दमयकमें एक खोखरके हाथसे मारा गया कि जो इसी कामके लिये उतारू हो रहा था, और ऐसेही वृत्तान्तका अवलंब तबकात और अकबरी और फरिश्ताके ग्रंथकर्त्ताओंने किया है, तथापि हिन्दू भाटोंके जुबानी वर्णनसे कि जो प्रत्येक नामांकित शाखेकी ख्यातोंके भण्डार हैं और जो पीढियों तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरेको उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गया है कि राव पिथौराके लड़ाईमें कैद होजाने और गजनीको ले गये पीछे एक चन्द जिसे कोई चांदा करके भी लिखते हैं, कि जो राय पिथौराका स्तुतिपाठक और विश्वासी सहचर था और कोई कोई ग्रन्थकर्त्ता उसे राय पिथौराका कविराज करके भी लिखते हैं, वह अपने आपदाग्रस्त स्वामीकी खबर लेनेको गजनी पहुँचा वह अपने अच्छे प्रयत्नोंके बलसे प्रबन्ध कर सुलतान—

सुदाम ॥ प्रबल छन्द छिन विप्रकुलते शत्रु हुइ हैं नास । अषित (९) बुद्धि बिचारि विद्यामान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास, सूर, सुश्याम । भये अन्तर्धान बीते पाछली निशि याम ॥ मोहि पनसो (१०) इहै ब्रजकी बसे सुख चित थाप । थपि (११) गोसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप ॥ विप्र प्रथजगातको है भाव भूर .निकाम । सूर है नन्दनंदजूको लियो मोल गुलाम ॥ ११८ ॥

अर्थ--सुगम-सूर आपन वंश वर्णत है ॥ ११८ ॥

एकसौ अठारह पदकी टिप्पणीमें लिखा है कि ग्रन्थके अन्तमें सूरदासके विषयमें लिखा जायगा अतएव यहां इस समय मुझे जहांतक सूरदासके विषयमें लेख मिले हैं उन सबोंको यहां प्रकाश करताहूं । भारतेन्दु हरिचन्द्रजीने चरितावली और सूर शतक पूर्वार्धमें जो लिखा है उसे छोड देता हूं । सूरदासके समयसे अनेक कवियोंका समय निर्णय होगा ।

रामरसिकावली-महाराज रघुराजसिंहकृत—

दोहा-सूरदासजी जगविदित, श्रीउद्धव अवतार ।
कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करों उदार ॥ १ ॥
चौपाई-जब मथुरामें श्रीनन्दलाला । गोपिनको विज्ञानविशाला ॥ १ ॥
सादर करन हेतु उपदेशू । पठयो उद्धव गोकुल देशू ॥ २ ॥

मुईजुद्दीनकी सेवामें प्राप्त हुआ और बन्दीगृहमें राय पिथौराके साथ बातचीत करनेमें भी सफल हुआ. यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुए और एक दिन चन्दने अपने छलबलके द्वारा सुलतानके मनमें राय पिथौराकी बाणविद्याकी परमकुशलता देखनेकी नितान्त इच्छा उत्पन्न की और उसको चन्दाने इतनी सराही कि सुलतानका मन उसे देखे विना न रहने लगा. निदान बंधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उससे उसकी बाण विद्याकी परमकुशलता ही दिखानेकी बिनती की गई । उसके हाथमें एक धनुष और बाण दिये गये । उसने अपनी स्वीकृत युक्तिके अनुसार जो निशाना सुलताननने रिनयत कराया था उसे छोड़कर खास सुलतानके ही बाण मारा कि वह वहीं मरगया और सुलतानके पासवालोंने राय पिथौरा और चन्दाको काटकर टुकडे टुकडे कर डाले ।

जम्मूकी तवारीखवाला लिखता है कि राय पिथौरा अन्धाकर (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीगृहसे बाहर लाया गया और उसके निज धनुष और बाण उसे दिये गये । यद्यपि वह अन्धाथा तथापि उसने बाण चढाकर और साधकर सुलतानके शब्दके अनुसन्धान और चन्दाकी सूचनाके अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतानके जाकर लगा । बाकीका वृत्तान्त तदनुसार ही है ।

इति श्रीपदकूट सूरदासटीका संयुक्त सम्पूर्ण ।

टिप्पणी–सरदार कविने कई एक स्थान इस भजनमें पाठान्तर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है ।

(१) शुभमें (२) पृथ्वीराज (३) रंतभौर (४) सुखअवदात (५) कृतचंद (६) षष्टम (७) साहिसे सब (८) दिव्य (९) अखिल (१०) मनसा (११) श्रीसूरदासके विषयमें ग्रन्थके अन्तमें लिखा जायगा ।

तहँ गोपिन पर प्रेम परेखी । उद्धव बोले ज्ञानविशेखी ॥ ३ ॥
धारि भक्ति हरि निज उरमाहीं । आवतभे पुर मथुरा काहीं ॥ ४ ॥
राखि भाव उर गोनिनकेरो । लख्यो संग हरि चरित घनेरो ॥ ५ ॥
तब उद्धवको श्रीयदुराया । बदरीनाथ कान्ह पठवाया ॥ ६ ॥
यह सुबासना उद्धवके तब रहों आय ब्रज एकबार कब ॥ ७ ॥
गोपिनको अनूप अनुरागा । हरिलीला जो ब्रजसब जागा ॥ ८ ॥
सो रसनाते वर्णन करहूं । बर सन्तोष हियेपर धरहूं ॥ ९ ॥
कीन्हें यही वासना काहीं । उद्धव प्रगट भये कलि माहीं ॥ १० ॥
सूरदासते संत शिरोमणि । विरचन सवा लाख पदको गुणि ॥ ११ ॥
करि संकल्प मुदित मनसामें । हरि लीला विभूतिहू तामें ॥ १२ ॥

दोहा-वरण्यो तिमि गोपीनको, जो यथार्थ अनुराग ।
विरचि कृष्णपद सूरबदि, सहस पचीस अदाग ॥
पूरण कीन्हों सूर प्रण, सूर श्याम जहँ होय ।
सो पद विरच्यो कृष्णही, जानिलेहु सब कोय ॥२॥
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेब दुख दूर ।
दृग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर ॥ ४ ॥

चौपाई—जन्महिते है नैन विहीना । दिव्य दृष्टि देखहिं सुखभीना ॥ १ ॥
लीन परीक्षा सो तेहि नारी । एक समै अस वचन उचारी ॥ २ ॥
प्रिय मोहिं सकल ग्रामकी वामा । मोसों कहहिं वचन असिवामा॥३॥
तू केहि देखन करि शृँगारा । तेरो पति तो अन्ध अपारा ॥ ४ ॥
सुनिकै सूर कही यह बानी । आजु शृँगार भली बिधि ठानी ॥५॥
बहु इस्त्रिनको लै निज संगा । बैठहु आइ इहां सउमंगा ॥ ६ ॥
भूषण तुव बिगरो जो होई । देहैं हम बताइ सत सोई ॥ ७ ॥
सुनि यह सूरदासकी नारी । सब भूषण निज अंग सँवारी ॥ ८ ॥
बेंदी देत भयी नहिं भाला । सूर बोलायो ढिग तब बाला ॥९॥
तिय भूषण सब अंग निहारी । सूरदास बोल्यो सु पधारी ॥१०॥
बन्दी भाल दियो क्यों नाहीं । लखि प्रभाव यह सूर तहांही॥११॥
कीन्हें सकल लोगजय शोरा । ख्यातबात भै जग सब ठोरा॥१२॥

दोहा-ह्वै विरक्त संसारते, दिव्यदृष्टि हरि ध्यान ।
सुरदास करते रहे, निशिदिन विदित जहान ॥ १ ॥
सूरदास इतिहास बहु, परचै अहैं अनेक ।
जानि लेहु सब सन्तजन, कहौं नेक सविवेक ॥ २ ॥

कवित्त-कविकुल कोक कञ्ज पाइकै किरिनि काव्य विकसे चिनोदित ह्वै नेरे और दूरके । सूखिगो अज्ञान पंक मन्दभो मयंक मोह विषय विकार अन्धार मिटे,

कूरके ॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराइ गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूलके । छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूर हरिजन जीव मूर सूर उदै होत सूरके ॥ १ ॥ मतिराम * (१) भूषण (२) बिहारी (३) नीलकण्ठ (४) गङ्ग (५) बेनी (६) शंभु (७) तोष (७) चिन्तामणि (९) कालिदास (१०) की । ठाकुर (११) नेवाज (१२) सेनापति (१३) शुकदेव (१४) देव (१५) पजनेश (१६) घनानन्द (१७) घनश्यामदास (१८) की ॥ सुन्दर (१९) मुरारी (२०) बोधा (२१) श्रीपति हू (२२) दयानिधि (२३) युगल (२४) कविन्द (२५) त्यों गोविन्द (२६) केशौदास (२७) की । भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदासकी ॥ २ ॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नाहिं झूठी नेकु सुधाहूते सरस सरस को सुनावतो । उद्धत विराग भाग सहित अनेक राग हरिको अदाग अनुरागको सिखावतो ॥ जगत उजागर अमलपद आगर नट नागर ध्याय सूरसागर को गावतो । भाषै रघुराज राधा माधवको रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहिं आवतो ॥ ३ ॥ साह सुन्यो सुरनसे बेगही बुलायो दिल्ली पूछयो कौन हो तू सूर कह्यो पूंछो बेटीसों । साह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंघ तिल साह पुछवायो सो तुरत एक चेटीसों ॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही शरीर छूटी हठपरे कहि तनु तजि हरि भेटीसों । भनै रघुराज साह सूर पद शिर नाय पूछ हरिदास मोरि भवभीत मेटीसों ॥ ४ ॥ गोकुल में रास होत राधाजूने मान कीन्हों हरि मानो मोरबेको उद्धवै पठायो है । जानि गुरुमान कह्यो नेकुक कटुक बैन दीनी वृषभानुसुता शापको पछायो है ॥ धारिये मनुज तनु तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भयो है । भनै रघुराज सोई उद्धव अवनि आइ रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है ॥ ५ ॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने 'शिवसिंहसरोज' पढनेके समयमें जिन जिन कवियोंके विषयमें कुछ लिखा है उनमें अकबर और गंगके इतिहासपर अपनी राय नाम मात्रको लिखी है उसे नीचे प्रकाश करता हूं ।

अकबर ।

अकबर बादशाह दिल्ली सं० १५८४ में हुए इनके हालात में अकबरनामा १ आईन अकबरी २ तबकाहत अकबरी ३ तारीख अब्दुलकादिर बदाऊनी ४ इत्यादि बडी बडी किताबें लिखी गई हैं जिनसे इस महाप्रतापी बादशाहका जीवनचरित्र साफ साफ प्रगट होता है यहां केवल हमको उनकी कविताका वर्णन करना अवश्य है सो हमको कोई ग्रंथ इनका नहीं मिला, दो चार कवित्त जो मिले हैं सो हमने लिखा है जहांगीर बादशाहने अपने जीवन चरित्रकी किताब तुजुक जहांगीरीमें लिखा है कि अकबर बादशाह कुछ

---

* अङ्कवाले कवियोंका वर्णन आगे किया जायगा ।

पढे लिखे न थे परन्तु मौलाना अब्दुलकादिरकी किताबसे प्रगट है कि अकबरशाह संस्कृत महाभारतको एक रात आपही उल्था कराने बैठे और सुल्तान मोहम्मद थानेसरी और खुद मौलाना बदायूनी और शेखफैजीने जहां जहां कुछ आशय छोड दिया था उसे फिर तर्जुमा होएको हुकुम दिया इनके समयमें नरहरि १ करन २ हाल ३ खानखाना ४ बीरबर ५ गंग ६ इत्यादि बडे बडे कवि हुए हैं परन्तु खास जो कवि नौकर थे उनके नाम इस सवैयासे प्रगट होंगे।

सवैया—पृथी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी। गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुणसागर गंग सु ज्ञानी ॥ जोध जगन्नजमें जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी। कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलिकै कविता जु बखानी ॥ १ ॥

श्रीगोसाईं तुलसीदास तौ दरबारमें हाजिर नहीं हुए * सूरदासजी और बाबा रामदास उनके पिता गानेवालोंमें नौकर थे+ जैसा कि आईने अकबरीमें लिखा है केशवदास जी उस समयमें इनके मन्त्री श्रीराजा बीरबरके दरबार में हाजिर हुये थे जब इन्द्रजीत राजा उडछा बुंदेलखण्डी प्रवीन राइ पातुरीके लिये बादशाही कोपमें था।

दोहा—जाको यश है जगतमें, जगत सराहे जाहि।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर शाहि ॥ १ ॥

गंग।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर जिला इटावा अथवा बंदीजन दिल्ली वाल) सं० १५९५ में हुए गंगकविको हम सुनते रहे कि दिल्लीके बंदीजन हैं और अकबरबादशाहके यहां थे जैसा किसी कविने बन्दीजनोंकी प्रशंसामें यह कवित्त लिखा है।

कवित्त—प्रथम विधातातें×प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु यज्ञ ते प्रकाश सरसात है।
माने सूत शौनकन सुनत पुराण रह यशको बखाने महासुख बरसात है ॥
चंद्र चौहानके केदार गोरी साह जूके गंग अकबरके बखाने गुण गात है।
काग कैसे मास अजनास धन भाटनको लूटि धरे जाको खरा खोज मिटिजातहै॥ १॥

परन्तु अब जो हमने जांचा तौ विदित हुआ कि गंगकवि एकनौर गांउ जिला इटावाके ब्राह्मण थे जब गंग मरगये हैं और जैनखाँ हाकिमने एकनौरमें कछु जुलम किया तब गंगजीके पुत्रने जहांगीर शाहके यहाँ यह कवित्त अरजीके तौरपर दिया है। जैनखाँ जुनारदार मारे एकनौरके; । जुनारदार फारसीमें जनेऊ रखनेवालेका

* श्रीतुलसीदासजीका काल यह नहीं है। हरिश्चन्द्र।
\+ श्रीसूरदास कहीं नौकर न हुए। हरिचन्द्र।
× सूरदासजीके पदसे मिलाना। हरिश्चन्द्र।

नामहै लेकिन खास ब्राह्मणहीको जुनारदार कहते हैं खैर जो हो हमको इसबातमें बहुत लिखनेसे कुछ मतलब नहीं गंगजी महान् कवि थे राजा बीरबलने गंगको इस छप्पयमें (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपया इनाम दिया इसी प्रकारसे अकबर, जहाँगीर, बीरबर, खानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सबोंने गंगको बहुत दान मान दिया है।

भक्तविनोद—कवि मियांसिंह कृतसेः—

दो०—करन विमल मन हरन तम, दमन त्रिविध दुख दोष।
भक्ति महातम करहुँ कल, कथन ललितप्रद मोष॥
नाशन कुमतिकृतान्त भय, भासनभानु प्रबोध।
सुमति विकासन भक्तजन, दलन मदनमदक्रोध॥

चौपाई—कृष्ण देव जब जनन उबारा। मथुरा लीन ललित अवतारा।
किए कृपालु चरित जस चारू। सो मनहरन विदित संसारू॥ १॥
तब यादव इक भक्त प्रवीना। कृष्ण सरोज चरण मन लीना।
सूर नयन बर बंश उजागर। उपज्यो भक्त सृष्ट गुणसागर॥ २॥
सखा पुनीत मीत व्रत धारी। मन वच कर्म कृष्ण हितकारी।
जब मथुरा तजि करत पयाना। द्वारावती आय भगवाना॥ ३॥
ते किमि चंचरीक बड भागी। सकहिं सरोज चरण प्रभु त्यागी।
भक्ति प्रेम कल नकल उमंगा। आयो दीनदयालु कर संगा॥ ४॥
यद्यपि आनँद भवन प्रसादू। ताके तहाँ सुलभ सब साधू।
पै निवास वृंदावन चारू। बिहरन कुंज गलिन मनहारू॥ ५॥
कृष्ण संग नित नवल विलासा। सो न पलक कल बिसरत तासा।
तन मथुरा वृंदावन मनुआं। लग्यो रहत निश दिवस अननुआं॥ ६॥
करि सुमरन कल कुंजन शोभा। होत प्रबल जिय यादव छोभा।
प्रभु सन बार बार अस बरनी। नम्रत बिनय दिवस निशिकरनी॥ ७॥
कृपा निकेत जनन सुखदाई। तुव सन कवन दिवस शुभ जाई।
शुचि भंडीर विपिन मनहरना। रविजा कुंज स नख नग धरना॥ ८॥
आन ललित लावण्य तनीके। देहु देव परमप्रिय जीके।
जब लगि जियन नाथ संसारा। सो प्रमोद किमि बिसरन हारा॥ ९॥
अस प्रकार उतकंठित रहना। वृंदाविपिन अहर निशि कहना।
काल पाय तब भक्त उबारा। लिये संग यादव परिवारा॥ १०॥

दोहा—करि कौतुक करुणायतन, निज वैकुंठकलधाम।
गए गमनकरि भवनमुद, रमारमन अभिराम॥

चौपाई—ते यादव हरि भक्त सुजाना। तहांपि जोरि युगल निज पाना।
वृन्दावन दरशन अनुरागा। नम्रत विनय करन अस लागा॥ १॥

चलन होहिं तुव दीन सनेहू। कब कृपालु बृन्दावन तेहू।
सो अरण्य कल कुंज सुहाए। दीननाथ मोरे मन भाये ॥ २ ॥
बिसरत सो न भक्त सुखदाई। एक बार प्रभु देहु दिखाई।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई। बोले वचन वदन मुसुकाई ॥ ३ ॥
सुनहु मीत पूरवत ताहीं। मोर गमन वृन्दावन माहीं।
अब न होहिं पय भक्त सुजाना। मैं परिवार सहित निज नाना ॥ ४ ॥
कुंज कुंज राधा युत चारू। तहां निवास करहुँ मन हारू।
ते मथुरा वृन्दावन जोहीं। जन वैकुंठ अधिक प्रिय मोहीं ॥ ५ ॥
जबते तज्यो मनोहर नगरी। कलित कुंज लीला निज सगरी।
तबते यद्यपि मोर सुहावा। इह वैकुंठ अखिल सुख छावा ॥ ६ ॥
तद्यपि तिहि समान सुखदाई। उपज्यो नाहिंन तनक सुख भाई।
जिमि वाराणशि शंकर काहीं। विदित विश्व प्रिय मानस माहीं ॥ ७ ॥
तजत न तासु दैव त्रिपुरारी। तिमि मथुरा मोहिं प्राणन प्यारी।
अजहुं समरण होत मन भाई। ललित बाललीला सुखदाई ॥ ८ ॥

दो०—मृतिकाभक्षण पूतना, शकटविभंजन मित्र।
अर्जुन यमलजमदहरन, अघ बकबदन चरित्र ॥ १ ॥
कालीपद क्षय करन पुनि, मोह नलिनभव देन।
बृन्दावन बंसीबजन, चरन चारु बरधेन ॥ २ ॥
धेनुक वधन प्रलंब पुनि, तृणावर्त वश काल।
बृंदावन रक्षाकरन, नग नख धरण रसाल ॥ ३ ॥
रचन रास लीलादि पुनि, वचन सखन सखिसंग।
केसिविध्वंसन नंदकुल, त्रातन हृदय उमंग ॥ ४ ॥
दावानलकर शमन पुनि, ग्वालन सन मन चाउ।
वन वन विहरन सजन सुन, हनन कंसरिपु राउ ॥ ५ ॥
जननि जनक बंधन मुकत, चरित चारु इत्यादि।
जब जब होत समरण इह, उपजत हृदय दुखादि ॥

चौपाई—सदा रहत मानस उतकंठा। तजि निज रुचिर धाम वैकुंठा।
पुनि कब वपुष पूर्ववत धारी। अद्भुत करहुँ चरित मनहारी ॥ १ ॥
जे जन भक्ति निरत बड भागे। मोर प्रेम पावन रस पागे।
हृदय कुतर्क कपट सब खोई। मोर रुचिर लीला कृत जोई ॥ २ ॥
यथा विधान रास विरचाई। गायन श्रवण करहिं मन लाई।
सो साक्षात विश्व शुभ चारी। मोर स्वरूप भक्त व्रत धारी ॥ ३ ॥
मथुरा धारि जन्म त्रिय जोई। मोर ललित उत्सव पर होई।
सो मोहिं यशुमति मातु समाना। सुनहु आन अब भक्त सुजाना ॥ ४ ॥

जे नर मोर जन्म दिन लेखी। धारि रुचिर व्रत भक्ति विशेषी।
बालरूप मम पूजन करहीं। आवागमन सहज श्रम हरहीं॥ ५॥
करि प्रवेश मथुरापुरि माहीं। जो जन करहिं रटन मोहिं काहीं।
भक्त मोर सो प्राणन प्यारू। ताकर तरन सुमन संभारू॥ ६॥
अब तोहिं जोपि भक्त बडभागा। मथुरा गमन प्रीति अनुरागा।
तो अब सुनहु कथन कल मोरा। संतत भक्त सृष्ट हित तोरा॥ ७॥
जेहि ते तहां सजन तुव जाई। सोउ लेहु सुख कीरति पाई।
अस कहि कृष्ण दैव भगवाना। लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना॥ ८॥
कलीकाल सन्ध्या अवसाना। मथुरा प्रांत भक्त गुणखाना।
सुभ्रत विप्र बंश उपजाई। मथुरा मोर ललित पुर आई॥ ९॥
मोर जन्म लीला गत पारू। करत करत गायन व्रत धारू।
सोउ अखंड सुयश सुख जोहीं। होहिं भक्तजन प्रापत तोहीं॥ १०॥
बहुरि मोर लीला मनभायन। प्राकृत वदन सफुट जब गायन।
कीन तुमहुँ संगीत प्रकारू। सुभ्रत ललित प्रेम रससारू॥ ११॥
सुनत लोक कलिकाल मँझारा। हुइ हैं भक्ति निरत संसारा।
बढहि मोर चरणन अनुरागा। उधरहिं तुव प्रसाद बडभागा॥ १२॥
पै तुव जन्म अन्ध दृग हीना। जननि जनक अस देखि प्रवीना।

दोहा—पालहिं जन समान कछु, सुत सनेहवश तोहिं।
आन शंक बांधव सुहृद, सो न करहिं हितकोइ॥

चौपाई—केवल जननि करहिं तुमसेवा। अस कहि बदन भक्त द्रुम देवा।
भए विराम कृष्ण घन बरना। तब प्रणाम करि यादव चरना॥ १॥
कलि सन्ध्या कर अंत प्रवीना। सोचन लग्यो भक्त मन लीना।
सो जब समय आय नियराना। तजि विकुंठ यादव गुणखाना॥ २॥
मथुरा प्रांत विप्र वर गेहा। भा उत्पन्न भक्ति हरि नेहा।
जन्म अन्ध दृग ज्योति विहीना। जननि जनक कछु हर्ष न कीना॥ ३॥
रहे मौन बांधव समुदाई। करहिं प्रीति केवल इक माई।
अष्ट वर्ष कर जानि सुहावा। यज्ञोपवित जनक तब पावा॥ ४॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा। सूरदास ताकर अस नामा।
अवसर एक मातु पितु संगा। आन लोक पुर प्रेम उमंगा॥ ५॥
कृष्ण जन्म पुरि दरशनलागी। आये सकल सदन निजत्यागी।
करि यात्रा विधिवत अनुरागे। जब निज सदन चलन सब लागे॥ ६॥
सूरदास तब कहत उचारी। मैं अब इहां सदन नग धारी।
कछु दिन करहुँ ललितनिजवासा। कृष्णप्रसाद विगत श्रम त्रासा॥ ७॥
तुव निज गवँहु सदनशुभ काहीं। चिन्ता मोरि करहु कछु नाहीं।
सुनि अस जननि जनक तेहि बानी। सुत सनेह निज मानसबानी॥ ८॥

रुदन करत अस वचन उचारे। बसत अन्ध दृग युगल तुम्हारे।
करहिं कवन भोजन पट दाना। शिशु निदान तुव देश बिराना॥ ९ ॥
कसतजिजाहिं सुवन पितु माता। काहु न देखि परत तुव त्राता।
सुनि अस जननि जनक मुखबानी। कृष्ण भरोस सूर जिय मानी॥ १० ॥

दो०—बोल्यो अभय प्रसन्नमन, वदन बचन सुखदान।
तुव जिय करहु न सोच कछु, मोहिं विदेश असजान॥

चौपाई-मोरे कृष्ण देव भगवाना। करनहार कल पालन त्राना।
अन्ध दीन बलहीनन कोही। पोषन करत दैव प्रभु सोही॥ १ ॥
शरन चरन दुख हरन करीके। परे कोटि अस मोर सरीके।
दीनबन्धु जन दीननपाला। दीननाथ प्रभु दीनदयाला॥ २ ॥
दीन हरन भय दीन उबारन। दीन सुखद दुख दीन निवारन।
अस प्रकार जब दीन सहाए। विदित पुराण वेद श्रुति गाए॥ ३ ॥
मोरे कस न होहिं तब मय्या। जानि दीन दृग हीन सहय्या।
तब अस सुनत वचन वर ताहू। साधु जठर दाया वश काहू॥ ४ ॥
बोल्यो सूर मातु पितु काहीं। तुव न करहु चिन्ता जिय माँहीं।
हर्षि जाहु सुभ्रम निज गेहू। तुव दृग हीन बाल बर एहू॥ ५ ॥
मोरे बसहिं सदन सुखमानी। अस कहि गहत सन्त शुभ पानी।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने। उत पितु मातु सदन निज गवने॥ ६ ॥
साधु सनेह प्रीति अवलोकी। भई प्रसन्न मातु गत शोकी।
सूरदास मानस अनुरागा। प्रमुदित बसन सन्त गृह लागा॥ ७ ॥
पूरब चरित कृष्ण कल गायन। रह्यो सुनत सादर मनभायन।
आपु प्रेम युत भक्ति उमंगा। वैष्णव भक्त जनन कर संगा॥ ८ ॥
नृत्य गीत गायत करि चारू। कृष्ण चरित्र विमल मनहारू।
प्रभु अद्भुत लीला जिमि कीनी। आदि उपान्त श्रवन करिलीनी॥ ९ ॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना। सो पूरब सञ्चित निज ज्ञाना।
अनुभव भयो विदित सब भास्यो। दैव चरित लीलादि बिलास्यो॥ १० ॥

दो०—भयो छकित उनमत्तवत, प्रेमासव करि पान।
कृष्ण चरित पद नव ललित, निज विरचित रुचिमान॥

चौपाई-अस प्रकार कृत नवल सुहाई। भक्त सृष्ट कल कुञ्जन जाई।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन। भयो कृष्णपद भक्तिपरायन॥ १ ॥
मथुरा निवसि सुयश सुख लय्यो। सूर विदित सब देशन भय्यो।
निर्मित तासु ललित पद पावन। संसृति गाय लोक मनभावन॥ २ ॥
वैष्णव भए भक्ति रसनागर। भक्त प्रधान सुयश वन सागर।
सूरदास हरि गुण गण गाते। जहँ जहँ फिरहिं भक्त मदमाते॥ ३ ॥

तहँ तहँ भक्ति विवश अनुरागे। पाछे फिरहिं तासु प्रभु लागे।
सूर चरित पाछिल भगवाना। ग्वाल केलि. वन धेनु चराना ॥ ४ ॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए। देखत रहत भक्ति सरसाए।
ब्रह्मानन्द मगन दिन राती। प्रेमभक्ति कछु कही न जाती ॥ ५ ॥

दो०—एक दिवस मारग चलत, विधुनकूपकल कोय।
दृगविहीन चीन्ह्यो न कछु, लग्यो भक्तच्युत होय ॥

चौपाई—तब भगवान भक्त रखवारे। अद्भुत गोप वेष निज धारे।
गहत करन कर तुरत मुरारी। भक्त कूप च्युत लीन निवारी ॥ १ ॥
करि कर हरण त्रास कर केरा। सूर सपरश लेत जिय हेरा।
इह कर जानिपरत नर नाहीं। करि बिचार करुणानिधि काहीं ॥ २ ॥
करते लीन पकारि कर संगा। कहिस वचन मन मोद उमंगा।
अब न तजहुँ बिन साँच बखाने। तब भगवान बदन मुसकाने ॥ ३ ॥
सूर करन कर, करि बरजोरा। चले छुडाइ भक्त चितचोरा।
अस जिय जानि दैव चतुराई। ब्रह्मानन्द सूर सुख पाई ॥ ४ ॥
मानत भयो भूरि निज भागा। करसो कर कृपालु जब लागा।
गद्गद गिरा प्रेम दृग वारी। बोल्यो बदन बचन मनहारी ॥ ५ ॥
बन्दहुँ बार बार प्रभु तोहीं। जो अस निबल जानि जिय मोहीं।
केशी कंस असुर मद गञ्जा। लीन छुडाय सबल कर कञ्जा ॥ ६ ॥

दो०--काह भयो करते छुटे, कर्णधार भवसिन्धु।
मनते छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद उर इन्दु ॥ १ ॥
अबतो बलकर तोरि कर, चले निबल कर मोहिं।
पै मनते टूटों न जब, तब देखों प्रभु तोहिं ॥ २ ॥

चौपाई—सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए। सूरदास कर प्रभु मन भाए।
हर्षे दिनदयालु भगवाना। कीन स्परस दृगन तिहि पाना ॥ १ ॥
तत्क्षण अंग नयन युग तासा। अमल विमल कल ज्योति प्रकासा।
पाय दीप्ति अस सूर सुजाना। सन्मुख कृपासिन्धु भगवाना ॥ २ ॥
कलित कञ्जलोचन घनवरना। आनन हृदय भक्ततमहरना।
चारु ललाट खोर श्रीखण्डन। माल जयंति जनन मनमंडन ॥ ३ ॥
यज्ञोपवित पीतपट राजा। निज छवि कोटि मदनमद लाजा।
चितवनि चारु मुनिन मनमोहन। धृत गोपाल वेष वर सोहन ॥ ४ ॥
मूरति विमल बाल बल भय्या। निरत प्रवर परचारन गय्या।
सूर विलोकि रूप मनहरना। परचो दंडवत चरणन धरना ॥ ५ ॥
सुमिरि कृष्ण जब शीश उठाया। कीन तुरंत मुग्ध प्रभु माया।
जानत भयो सूर मनमाहीं। गोप बाल नँदनंदन काहीं ॥ ६ ॥

लग्यो बहुरि अस बचन उचारन। तुमहुँ कूप च्युत कीन निवारन।
भयो सहाय अंध तकि मोरा। अहो कीन उपकार न थोरा ॥ ७ ॥
बंदहुँ बार बार अब तोहीं। कीन्ह्यों कूप त्रास गत मोहीं।
अब वृतांत निज देहि सुनावा। केहि ते आव कवन कित जावा ॥ ८ ॥
मोहविवश अस तासु निहारी। बोले गोप वेष गिरिधारी।
मथुरा बसहुँ गोपसुत भय्या। आवा विपिन चरनहित गय्या ॥ ९ ॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना। कूप उहाँ निवरन चुत कीना।
अब तुमजाहु सदन सुखमाना। मैं इत करहुँ विपिन निज प्याना ॥ १० ॥

दो०—अस कहि बत्सल भक्त प्रभु, कृष्ण दलनदुख क्रूर।
द्रुमन ओट करुनायतन, गए कछुक जब दूर ॥ १ ॥

चौपाई—तब दर्शनहित सूर सुजाना। पाछिल चल्यो वेग अकुलाना।
गवन्यो कहाँ बाल मृदु अंगा। हरण ललित छवि कोटि अनंगा ॥ १ ॥
इत उत फिरहिं विथत मनमाहीं। आवत दृष्टि बालप्रभु नाहीं।
अतिशय क्लेश सूर तब पावा। पूँछत पथिक देखि जित आवा ॥ २ ॥
कोउ असबरनश्याम मृदुचारू। वेत्रपानि गय्यन चरवारू।
कामर कन्ध माल बन सोहा। देखा तुमहुँ बाल मन मोहा ॥ ३ ॥
सुनतहि कथन पथिक इहिभांती। इह कस कहत कवन तेहिभांती।
इहां न कोउ धेनु वनचारी। जाहु सजन निज सदन सिधारी ॥ ४ ॥
सूर सुनत अस पथिकबखाना। आगल चल्यो विपिन बिसमाना।
खोजत नील जलजवत बरना। गोपबाल कानन मनहरना ॥ ५ ॥
भ्रमत भ्रमत दारुण श्रम पाया। बैठ्यो अन्तव्यथित द्रुमछाया।
तौलो ढुरचो सूर निशि छायो। भक्त सूर व्याकुल उठि धायो ॥ ६ ॥
जहँ तहँ लग्यो भ्रमन वन माहीं। खोजत गोपबाल मृदुकाहीं।
गति अनन्य अस भक्तजुडाना। भा तद्रूप कृष्ण भगवाना ॥ ७ ॥
पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं। तजि न जाहि काननपुरकाहीं।
तब निशि स्वप्न रूप मृदु सोई। देवे दिवस गोपसुत जोई ॥ ८ ॥
मन्दहास युत भक्त सहय्या। बोले बदन वचन सुखदय्या।
इहां न भक्त गोपसुत कोई। मैंहुँ कीन कौतुक कल सोई ॥ ९ ॥
कीन्ह्यों तुमहिं कूपचुत वारन। बनत गोप बन गय्यन चारन।
ज्योतिविमलतुव दृगन प्रकासा। भक्तसृष्टसबमोर विलासा ॥ १० ॥
तुव नयनन इन लीन निहारी। मोर स्वरूप भक्त व्रतधारी।
तुव हित देन दरश मनहारू। इह मैं कीन चेष्ट निज चारू ॥ ११ ॥

दो०—अब मथुरा तुव गवन करि, मोर चरित गुणगान।
करि गायन भवपूर्ववत, विचरहु अभय सुजान ॥ १ ॥

चौपाई—सुनि प्रभु वचन सुखद अभिरामा। सूर दंडवत करत प्रणामा।
बोल्यो आज धन्य जगदीना। जेहि इन् दृग दरश प्रभु कीना॥ १ ॥
मुनि योगिन सुर दुर्लभ जोई। मोरे सुलभ आज जग सोई।
अब न दैव कछु संसृति कामा। एक स्मरण तोर अभिरामा॥ २ ॥
मोरे हृदय लालसा छाई। बिसरहिं सो न भक्त सुखदाई।
अरु तुम्हार माया बलवाना। करहिं न मोहिं मुग्ध भगवाना॥ ३ ॥
हे कृपालु कल कमल विलोचन। हृदय भक्तजन सोच विमोचन।
जिन नयनन् अस रूप तुम्हारा। मैं प्रत्यक्ष प्रभु लीन निहारा॥ ४ ॥
तिनसन जगत विलोकन काहीं। दीनदयालु मोरि रुचि नाहीं।
ताते करहु पूर्ववत मोरे। दृग विहीन बन्दहुँ प्रभु तोरे॥ ५ ॥
तुव स्वरूप नित दीन सनेहू। देखत रहहुँ दिवसनिशि एहू।
करि अस विनय वदन अनुरागा। भयो विराम सूर बडभागा॥ ६ ॥
बोले कृष्ण भक्त चितचोरा। सूर कथन सब सन्तत तोरा।
होहिं सत्य संशय कछु नाहीं। भाषि वदन अस त्रिभुवनसाईं॥ ७ ॥
भये लुप्त प्रभु भक्त उबारचो। उठे सूर जनु स्वप्न विचारचो।
युगलअंध लोचन निज पायो। प्रभुपद शीश मनहिं मन भायो॥ ८ ॥
निज कल्पित पद पावनचारू। लग्यो करन गायन मनहारू।
उदय अरुण तजि विपिन सिधाए। यमुना तीर भक्त वर आए॥ ९ ॥
करि स्नान गुणगन प्रभु गाते। मथुरा आय भक्ति मद माते।
भजन प्रभाव देखि अधिकाई। सादर करहिं लोक सेवकाई॥ १० ॥

दोहा—सबकर हित जिय मानिनिज, द्विज विरक्त संसार।
रटन कृष्ण गुणगण निरत, सूर भक्त व्रतधार॥

चौपाई—अवसर एक मलेक्ष सुहावा। विदित दिलीश लोक सब गावा।
संयुत भक्ति प्रीति हरषाए। तासु सूर जन लीन बुलाए॥ १ ॥
आवत देखि भक्त अभिरामा। शाह कीन उठि दंड प्रणामा।
सादर शुचि आसन बैठारे। भक्ति पूर्वक वचन उचारे॥ २ ॥
तुव यादव प्रभु लोगन गाए। भक्त कृष्ण भगवान सुहाए।
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू। देहु उतर उर हरहु सँदेहू॥ ३ ॥
सदन मोर प्रभु अगणित भामा। इकते एक सरस अभिरामा।
तिनहुँ मध्य यादव कुलवारी। ऐहिं कोउ किन भक्त मुरारी॥ ४ ॥
सुनि दिलीश अस कथन सुहावा। सूर वदन अस वचन अलावा।
सुनहु धरणिनायक बडभागी। करहुँ कथन कछु तुव हितलागी॥ ५ ॥
जिहिते तोर मनोरथ एहा। अबहिं होहि फुर विगतसँदेहा।
इह तुम्हारि संकुल वरनारी। तुमहिं देखि पुनि मोहिं निहारी॥ ६ ॥

क्रमते एक एक अस आई। करहिं गमन इत मारग राई।
तिनहुँ मध्य तबकर त्रिय जोई। सो निज सकुच लाज सब खोई ॥ ७ ॥
मोहिंसन करहि रुचिर संभाषा। होहि तुरंत बहुरि मृत तासा।
साह सुनत अस दीन रजाई। महिषी सुनत सकल चलिआई ॥ ८ ॥
एक एक करि नम्र प्रणामा। चली जात भामिनि निज धामा।
आई एक सबनते पाछे। पतिप्रिय रूप ललितगुण आछे ॥ ९ ॥

दोहा-निरखत सन्मुख हर्षवश, कहिसि बदन मुसकाय।
कहिंते कीन आगमन तुव, मोर मर्म कछु पाय ॥

चौपाई-देखत कहिस सूर तिहि ओरा। शुभ्रे मोहिं मर्म सब तोरा।
भामिनि सुनत चरण गहिलीने। देखत सबन प्राण तजि दीने ॥ १ ॥
महिषी आन देखि अस तासा। लागीं रुदन करन संभाषा।
साह व्यथित मानस विसमायो। धरत धीर पुनि बदन अलायो ॥ २ ॥
बन्दहुँ बार बार अब तोहीं। भगवन करहु कथन सब मोहीं।
को इह रही भवन मम भामा। जहि अस तज्यो वपुष निष्कामा ॥ ३ ॥
तब पूर्ववत कथा जु सुहायन। लागे सूरदास मुख गायन।
इह मथुरा पुरि बसहि सुहाई। बीरवधू सब लोगन गाई ॥ ४ ॥
हावभाव कल निरत परायन। कला प्रवीन परमपटु गायन।
सभा महिंद्र धनक जन जाई। निज प्रभाव गुण लेत रहाई ॥ ५ ॥
काहु धनाढ्य काल शुभ पायो। पाणिग्रहण निज सुवन रचायो।
इहि कहँ पठ्यो बोलि सन्माना। लाग्यो होन नृत्य कलगाना ॥ ६ ॥
करि निज कला ललित चतुराई। मूर्छित सभा कीन समुदाई।
तब कोउ आन देशकर राई। इहि नृत गीत देखि चतुराई ॥ ७ ॥
निज पुर गयो लेत हरषाना। पावा तहां विविध सन्माना।
एक दिवस रत नृत्य अगारा। देखिस रुचिर धरणि पतिदारा ॥ ८ ॥
सजि श्रृंगार आभरण सोहन। ठाडी मनहु मान रति मोहन।
चारि ओर परिवारत दासी। सेवइं सुखद रूप गुण रासी ॥ ९ ॥
अस प्रभाव दृग देखि सुहावा। तेहि कर हृदय मनोरथ छावा।
हमहुँ होब इहि सम कस रानी। अस बिचारि मानस सकुचानी ॥ १० ॥
इन कर भूप पुण्य संसारा। हमहु अधम धिग जनम हमारा।
पुनि देखिस छितपत पटरानी। देत दान दीनन रति मानी ॥ ११ ॥

दोहा-धन भूषण पट भक्ति युत, करत सकल सेवकाइ।
अतिथ सन्त आवत सदन, भोजन देहुँ जिवाँइ ॥
हमहुँ करब यदि पुण्य अस, कहत गुणत जिय माहिं।
तो पावहुँ संशय नहीं, भूप पतनि पदकाहिं ॥

चौ०—अस प्रकार पावन शुभ तासा। ललित दान रुचि हृदय प्रकासा।
तब तहिं दैवयोग कर आई। ज्वररुज उपजं प्रबल दुखदाई॥ १॥
पुनि पंचत्वभाव कहँ सोई। प्रापत भई व्याधि सब खोई।
धर्मदूत रौरव तेहि डारचो। तहां भोग निज कृत अघ सारचो॥ २॥
सुरपुर गवनि बहुरि हरषाटी। अपसर नृत्य गीत कलराती।
मथुरा भवन भवन भगवाना। जो नृत गीत ललित पुनि गाना॥ ३॥
कीन्हेसि भक्ति प्रेम सरसाए। तेहि परिणाम अमर पुर पाए।
अरु उपकार देखि नृप रानी। जोतहिं हृदय दान रुचिमानी॥ ४॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई। भोगे विविध भोग सुख पाई।
आजु विदित देखत तुव एहा। मृत वश भई तुरत तजि देहा॥ ५॥
पै यादव वंशी त्रिय जेहू। रहीं सो देव रूप सब तेहू।
कौतुक करन देवपुर त्यागी। आई धरणि कृष्ण अनुरागी॥ ६॥
गवनी बहुरि अमरपुर काहीं। रहीं सो मनुज रूप कछु नाहीं।
अस कहि सूरदास हरषाते। माँगि बिदाय भक्ति मदमाते॥ ७॥
तब दिलीश सादर धन दीना। भक्त सुष्ट सुइकार न कीना।
हमरे नहिन द्रव्य कछु कामा। तब दिलीश वर्णन अभिरामा॥ ८॥
धरचो शीश नम्रत कर जोरी। विनय बदन कछु कीन न थोरी।
चले सूर तब होत बिदाए। हर्षत कृष्ण ललित पुर आए॥ ९॥
अगणित विमलभक्ति सरसावन। विरचत कृष्णचरित पद पावन।
रहे करत गायन संसारा। सकल लोक हित हृदयविचारा॥१०॥
पदन प्रबंध सूर जन नागर। बाँध्यो जनहु सेतु भवसागर।
बिनु प्रयास कलिकाल मँझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा॥११॥

दो०—सूर सूर सम विदित जग, सकल कविन शिरमोर।
सूर श्याम जेहि भक्तिवश, भए भक्त चितचोर॥ १॥
जौलौं विचरे धरणितल, पल न बिसारे श्याम।
भए अंत अलिचरणकल, कंज कृष्ण अभिराम॥ २॥

बाबू रघुनाथसिंह तअल्लुकेदार भदवरने मुझे १६ दोहे दियेथे उन दोहोंमें सूरदासके समयके कवियोंके नाम हैं पर कई एकमें मुझे सन्देश है जोहो वे दोहे नीचे प्रकाश किये जाते हैं।

दो०—सूरदासके समयमें, जो कवि भये महान। उन सबसे बढिके सबै, इन्हैं करत सन्मान॥ १ ओलिराम[1] अकबर[2] अगर[3], दासकवी[4] करनेश[5]। चतुरविहारी[6] गोपकवि[7], घनआनँद[8] अमरेश[9]॥ २॥ आशकरन[10] अजबेश[11] अरु, कादर[12] केशवदास[13]। टोडर[14] गोविन्द[15] जैतकवि[16], चरण[17] चतुर्भुज[18] नंददास॥ ३॥ जीवन[19] केशव[20] ताजकवि[21], होलराय[22] कवि खेम[23]। योधा[24]

३। ४ अगरदास और अगर कवि।

जोयसी[२५] चंद[२६]सखि, कृष्णदास[२७] कवि क्षेम[२८] ॥ ४ ॥ अमृत[२९] खानखांना[३०] जगन[३१], ऊधोराम[३२] कमाल[३३] जमालुद्दीन[३४] जगनंद[३५]कवि, गोविन्द[३६]दास जमाल[३७] ॥५॥ जमालुद्दीन[३८] कल्याण[३९] कवि, फैजी[४०] ब्रह्म[४१] फहीम[४३]। अभय[४३]राम परसिद्ध[४४]कवि, विठ्ठलविपुल[४५] रहीम[४६]॥६॥अमरसिंह[४७] घनश्याम[४८]हूँ, दील्है[४९] नरोत्तमदास[५०]। चेतनचन्द[५१] कविन्द[५२] भट[५३], बारक[५४] विद्यादास[५५] ॥७॥ छित[५६]स्वामी भगवतरसिक[५७], छत्र[५८] विहारीलाल[५९]। मिश्रगदाधर[६०] मानसिंह[६१], लालन[६२] मोतीलाल[६३] ॥ ८ ॥ हरीदास[६४] हरिनाथ[६५]कवि, मानराय[६६] रघुनाथ[६७]। मिश्रगणेश[६८] कवीर[६९] अरु, लीलाधर[७०] कविनाथ[७१] ॥ ९ ॥ दामोदर[७२] दिलदार[७३] कवि, दौलत[७४] नागर[७५] दास[७६]। नंदनहित[७७] हरिबंस[७८] कवि, सेन[७९] नरायणदास[८०] ॥ १० ॥ नीलकंठ[८१] नंदलाल[८२] कवि, नंददास[८३] रसखान[८४]। नाभा[८५] नरबाहन[८६] नरसि[८७], नारायणभट[८८] तान[८९] ॥ ११ ॥ निपटनिरंजन[९०] इंद्रजित[९१], पृथ्वीराज[९२] को जान। लक्ष्मीनारायण[९३] हरी[९४], बलीभद्र[९५] को मान॥१२॥ विठलनाथ[९६] विशुनाथ[९७] कवि, पद्मनाभ[९८] परबीन[९९]। भगवनदास[१००] मनोहर[१०१], परमानन्द[१०२] नवीन[१०३] ॥ १३ ॥ माणिकचन्द[१०४] निहाल[१०५]कवि, मुकुंद[१०६] मुबारक[१०७] बीर[१०८]। देव[१०९] दिनेश[११०] नंदान[१११] कवि, तेही[११२] तोषी[११३] नधीर[११४] ॥ १४ ॥ श्री[११५]पति यद्यपि भक्तिमें, न्यून न कछुक लखात। तद्यपि कवितामें कहो समता कछु न दिखात ॥ १५ ॥ विद्यापति[११६] आदिक कवि, जितने भये सुजान। काव्य भावमें सूरसम, तुलसी * एकप्रमान ॥ १६ ॥

चौरासी वार्ता—बालकृष्णजीसे ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता।

सो एकसमय श्री आचार्य महाप्रभु अंडेलते ब्रजको पाँउ धारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचो बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु पांव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभु उतरे तहां श्रीआचार्य जी महाप्रभु स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करनको बैठे और श्री आचार्य जी महाप्रभुके सेवकनको समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुरजीकी रसोई करन लगे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजीको स्थल हुतो सो सूरदासजी स्वामी है आप सेवक करते, सूरदास जी भगवदीय है गान बहुत आछो करते ताते बहुत लोग सूरदासजीके सेवक भयेहुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभु गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदासजीके सेवक देखके सूरदासजीसों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजय कियो है सब पंडितनको जीते हैं भक्ति-

---

९१-धीर नरिन्द्रभी इनका नाम है ॥

९९ प्रवीनरायपातुरी।

१०० भगवानदास।

* अङ्कवाले कविकोंका आगे वर्णन किया जायगा।

मार्ग स्थापन कियो है सो श्रीवल्लभाचार्य यहां पधारे हैं तब सूरदासजीने अपने सेवक-नसो कह्यो जो तू जायके दूर बैठि जब आप भोजन करके विराजें तब खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको जायँगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयो तब श्री ठाकुरजीको भोग समर्प्यो पाछे समयानुसार भोग सराय अनोसर करके महा प्रसाद लैके श्री आचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिके श्री आचार्य जी महाप्रभूनके आसपास आय बिराजे हैं तब वह सूरदासको सेवक आयो सो सूरदाससों कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थल ते आय के श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर आवो बैठो तब सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून को दर्शन करिके आगे आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर कछु भगवत यश वर्णन करो तब सूरदासने कही जो आज्ञा तब सूरदासजीने श्री आचार्य महाप्रभूनके आगे एक पद गायो सो पद—

राग धनाश्री—हों हरि सब पतितनको नायक॥ को करिसके बराबर मेरी, इते मानको लायक॥ १॥ जो तुम अजामेलसों कीनी जो पाती लिखपाऊं। होय विश्वास भलो जिय अपने औरहु पतित बुलाऊं॥ २॥ सिमिटे जहां तहांते सबकोऊ आयजुरे एकठौर। अबके इतने आन मिलाऊं बेर दूसरी और॥ ३॥ होडा होडी मन हुलास करि करें पाप भरिपेट। सबहिन ले पाँय नतर परिहों यही हमारी भेंट। ऐसी कितक बनाऊं प्राणपति सुमिरन है भयो आडो। अबकी बेर निवारलेउ प्रभु सूरपतित काठाडो॥ फिर दूसरो और पद गायो सो पद—

राग धनाश्री—प्रभु मैं सब पतितनको टीको। और पतित सब द्यौस चारके मैं तो जन्मतहीको॥ १॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाहीको। मोहिं छांडि तुम और उधारो मिटे शूल कैसे जीको॥ कोऊ न समरथ सेव करनको खैंच कहतहौं लीको। मरियत लाज सूर पतितनमें कहत सबनमें नीको॥

ऐसो पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर ह्वेके ऐसो काहेको घिघियात है कछु भगवत्लीला वर्णन करु तब सूरदासने कह्यो जो महाराज होंतो समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो कि जा स्नान करि आउ हम तोको समझावेंगे तब सूरदासजी स्नान करि आये तब श्रीमहाप्रभुजीनें प्रथम सूरदासको नाम सुनायो पाछे समर्पण करवायो और दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजीको नवधा भक्ति सिद्ध भई तब सूरदासजीने भगवत्लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकाते सम्पूर्ण लीला फुरी

सो क्यों जानिये सौ दशमस्कन्धकी सुबोधनीजीमें मंगलाचरणकी प्रथम कारिका किये हैं सो यह श्लोक सूरदासजीने कह्यो सो–श्लोक–

नमामि हृदयेऽशेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥१॥ और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधि पद किये सो पद–

राग बिलावल–चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम बियोग। यह पद सम्पूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद दशमस्कन्धके मंगलाचरणकी कारिकाके अनुसार कियो सो यामें कह्यो है जो तहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदासने याभांति पद किये ताते जानी जो सूरदासको सम्पूर्ण सुबोधनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जान्यो जो लीलाको अभ्यास भयो पाछे सूरदासजीने नन्दमहोत्सव कियो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायो सो पद–

राग देवगांधार–ब्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी।

सो यह श्री आचार्य जी महाप्रभूनके आगे गायो सो सुनके श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुखते कहे ,जो सूरदास मानों निकटही हुते पाछे सूरदासजीने अपने सेवक किये हुते तिन सबनको नाम दिवायो पाछे सूरदासजीने बहुत पद किये पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभूनने सूरदासजीको पुरुषोत्तमसहस्रनाम सुनायो तब सूरदासजीको सम्पूर्ण भागवत स्फूर्तना भई पाछे जो पद किये सो भागवत प्रथम स्कन्धते द्वादशस्कन्ध पर्यंत (तांई) किये ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीय हैं पाछे श्री आचार्य महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन बिराजे पाछे फिर व्रजको पाँवधारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ ब्रजको आये।

॥ वार्ता प्रसङ्ग ॥ १ ॥

अब, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रजको पांव धारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके साथ सूरदासजीहू आये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने श्रीमुखसों कह्यो जो सूरदासजी श्रीगोकुलको दर्शन करौ सो सूरदाससे श्रीगोकुलको दण्डवत करी सो दण्डवत करतमात्र श्रीगोकुलकी बाललीला सूरदासजीके हृदयमें फुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी है ताते दर्शन करत मात्र सूरदासजीको श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्तना भई तब सूरदासजीने मनमें बिचारचो जो श्रीगोकुलकी बाललीलाको वर्णन करिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सुनाइये जन्म लीलाको पद तो प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायो सो पद–

राग बिलावल–शोभित कर नवनीत लिये। घुटुअन चलत रेणुतनुमंडित मुखमें लेप किये ॥ १ ॥ चारु कपोल लोललोचन छवि गोरोचनको तिलक दिये। लर

लटकन मानो मत्त मधुपगन माधुरी मधुर पिये ॥ कठुलाकंठ वज्र केहरिनख राजत हैं सखि रुचिर हिये । धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये ॥

यह पद सूरदासने गायो सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछे औरहु पद गाये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मनमें बिचारे जो श्रीनाथजीके इहां और तौ सब सेवाको मंडान भयो है पर कीर्तनको मंडान नाहीं कियो है ताते अब सूरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजी द्वार पधारे सो सूरदासजीको साथ लिये ही सो श्रीनाथजी द्वार जाय पहुँचे तब आप स्नान करिके मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यो जो सूरदासजी ऊपर आउ स्नान करिके श्रीनाथजीको दर्शन कर तब सूरदास पर्वत ऊपर जायके श्रीनाथजीको दर्शन कियो तब आपने कह्यो जो सूरदास कछु श्रीनाथजीको सुनावो तब सूरदासने प्रथम विज्ञप्तिको पद गायो सो पद–

राग धनाश्री–अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥

यह पद संपूर्ण करिके श्रीनाथजीके आगे गायो तब श्रीमहाप्रभुजीने कह्यो जो सूरदास अब तौ तुममें कछू अविद्या रही नहीं तुम्हारी अविद्या प्रभूनने दूर कीनी ताते कछू भगवत्‌यश वर्णन करो तब सूरदासने माहात्म्य और लीला ऐसो यश करिके गाय सुनायो सो पद–

राग गौरी–कौन सुकृत इन व्रजवासिनको ॥

यह पद संपूर्ण करि गायो सो सुनिकै श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मार्गप्रकाश कियो हो ताके अनुसार सूरदासजीने पद किये श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मार्गको कहा स्वरूप है माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढस्नेहकी तौ परम काष्ठा है और स्नेह आगे भगवान्‌को रहत नाहीं ताते भगवान् बेर बेर माहात्म्य जनावत हैं नामप्रकरणमें पूतना करि शकट तृणावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठदर्शन करि ऐसे करिके भगवानने बहुत माहात्म्य जतायो परि इन व्रजभक्तन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ माहात्म्य रहे पीछे विस्मृत होय जाय ।

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और सूरदासजीने सहस्रावधि पद किये हैं ताको सागर कहिये सो सब जगत्‌में प्रसिद्ध भये सो सूरदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनके यह बिचारचो जो सूरदासजी काहू रीत (विधि) सों मिलैं तौ भलो सो भगवत् इच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजीसों कह्यो देशाधिपतिने जो सूरदासजी मैं सुन्यो है जो तुमने विष्णुपद बहुत किये हैं जो मोको परमेश्वरने राज्य दियो हैं सो सब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते तुमहू कछु गावो तब सूरदासजीने देशाधिपतिके आगे कीर्तन गायो सो पद–

राग बिलावल—मना रे तू करि माधवसों प्रीति ॥ यह पद देशाधिपतिके आगे संपूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे तो भगवत् अनुग्रहकी सदा सार्ति रहै और संसारते सदा वैराग्य रहै और कुसंगको सदा भय रहै और भगवदीयके संगकी सदा चाह रहै और श्रीठाकुरजीके चरणारविंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशादिक ऊपर आसक्ति न होइ ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायो सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदासजी मोको परमेश्वरने राज्य दीनो है सो सब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते मेरो यश कछु गावो तब सूरदासजीने यह पद गायो सो पद—

राग केदारो—नाहिन रह्यो मनमें ठौर ॥ यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मनमें विचारचो जो ये मेरो यश काहेको गावेंगे जो इनको मेरो कछु बातको लालच होय तौ गावें ये तो परमेश्वरके जन हैं और सूरदासजी ने या पदके अंतमें गायो हो जो "सूर ऐसे दर्शको ए मरत लोचनप्यासे" यह गायो हो सो देशाधिपतिने पूँछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तौ देखियत नाहीं सो प्यासे कैसे मरतहैं और बिन देखे तुम उपमाको देतहौ सो तुम कैसे देतहौ तब सूरदासजी कछु बोले नहीं तब फिरि देशाधिपति बोल्यो जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वरके पास हैं सो वहां देखत हैं सो वर्णन करते हैं तब देशाधिपति सूरदासजीके समाधानकी मनमें विचारी जो इनको कछु चाहिये पर यह तौ भगवदीय हैं इनको काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछे सूरदासजी देशाधिपतिसों विदा होयकै श्रीनाथजीद्वार आये।

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जाते थे सो कोऊ चौपड खेलते हुते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन थे जो कोऊ आवतेकी सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्न थे सो देखके सूरदासजीके संग भगवदीय थे तिनसों सूरदासजीने कह्यो जो देखो वह प्राणी कैसो अपनो जमारो खोवत हैं भगवानने तो मनुष्यदेह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजनके लिये दीनी है सो तौ या देहसों हाड कूटत हैं यामें यह लौकिक सिद्ध नहीं सो काहेते जो या लोकमें तौ अपयश और परलोकमें भगवानते बहिर्मुखता ताते श्रीठाकुरजीने इनको मनुष्यदेह दीनी है तिनको चौपड ऐसी खेलनी चाहिये सो तासमय एक पद सूरदासजीने अपने संगिनसों कह्यो सो पद—

राग केदारो—मन तू समझ सोच विचार। भक्ति विन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ १ ॥ साधु संगति डार पासा फेर रसना सार। दांव अबकै परचो पूरो उतरि पल्ली पार ॥ २ ॥ बाकसत्रे सुनि अठारे पंचहीको मार। दूरते तजि तीन काने चमकि

चौकि बिचार ॥ ३ ॥ काम क्रोधजंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नार । सूर हरिके पदभजनबिन चल्यो दोउकर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने अपने संगके भगवदीयनसों कह्यो सो या पदमें सूरदासजीने कहा कह्यो, मन तू समझ शोच बिचार । ये तीनों वस्तु चौपडमें चाहिये सोई तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चहियें काहेते जो समझ न होय तौ संसार श्रवण कहा करेगो ताते पहिले तौ समझ चहियें और शोच कहिये चिन्ता जो भगवान्‌के प्राप्तिकी चिन्ता न होय तौ संसारऊपर वैराग्य कैसे आवे ताते शोच चहिये और बिचार जो या जीवको बिचारही नहीं तौ संगदुसंगमें कहाकरैगो ताते बिचार चहिये सो ये तीनों वस्तु होयतौ भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीयको अवश्य चहिये और चौपडमेंहूँ तीनौ वस्तु चाहिये समझ कहें गनबो न आवे तो गोट कैसे चले और शोच अगम जो मेरे यह गोट दांव पडे तौ यह चलूं बिचार जो वाहीमें तन मन जो ये तीनों वस्तु होय तौ चौपड खेली जाय सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुके ऐसे परम भगवदीय हैं ।

बहुरि श्रीसूरदासजी श्रीनाथजीद्वार आयके बहुत दिनताईं श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच बीचमें श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियजीके दर्शनको आवते सो एक समय सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रियजीके दर्शन किये और बाललीलाके पद बहुत सुनाये सो श्रीगुसाँईजी सुनिके बहुत प्रसन्न भये पाछे श्रीगुसाईंजीने एक पालना संस्कृतमें कियो सो पालना सूरदासजीको सिखायो सो पालना सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजी झूलत हुते तासमय गायो सो पदः-

राग रामकली । प्रेषपर्यंकशयनम् ।

यह पद सूरदासजीने सम्पूर्णकरिके गायो सुनायो श्रीनवनीतप्रियजीको पाछे या पदके भावके अनुसार बहुत पद किये सो सुनिके श्रीगुसाईंजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो सो पदः-

राग बिलावल-बाल विनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥ कठुलाकंठ रुचिर केहरिनख ब्रजबाला बहु लई अमोलनि । वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मनु मधुपनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यो कर परसत आननपर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि । कहे जन सूर कहांलों वर्णों धन्य नंदजीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

और पद राग बिलावल-गोपाल दुरेहैं माखन खात । देख सखी शोभा जोबढी अतिश्याम मनोहर गात ॥ १ ॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी है जिहि विधि नहिं लखिलेत । चकृत नैनचहूं दिश चितवत और सबनको देत ॥ २ ॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यहै अकार । जनु जलरुह तजि वेर विधीसों लाय मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरिगिरि

परत बदनते ऊपर द्वैदधिसुतके बिंदु । मानहुँ सुधाकन खोरवत न प्रियजन बिंदु ॥ ४ ॥ बालविनोद विलोकि सूर प्रमुदित भई ब्रजकी नारि । फुरत न बचन बरजिबेको मन रही विचार विचारि ॥ ५ ॥

राग जैतश्री–कहाँ लगि वरणों सुंदरताई । खेलत कुँवर फटिकआँगनमें नैन निरखि सुखपाई ॥ १ ॥ कुलहे लसत श्यामसुंदरके बहुविधि रंग बनाई । मानउ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई । श्वेतपीत अरु असित लालमणि लटकन भाल रुराई । मानहुँ असुरदेव गुरुसों मिलि भूमिजसों समुदाई । अति सुदेश मृदु चिहुर हरत मन मोहनमुख बिगराई । मानहु मंजु ऊ कंचनऊपर अलिआवलि फिरि आई । दूधदंतछबि कहि न जात कछु अलि लपलप झलकाई । किलकत हसत दुरत प्रगट मानो बिंदुमें विपुलताई । खंडित बचन देत पूरण सुख अद्भुत यह उपमाई । घुटुरुन चलत उठत प्रमुदितमन सूरदास बलिजाई ॥ ६ ॥

राग रामकली–देखो सखी एक अद्भुतरूप । एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एक अवलि दोय जलचर उभे अर्क अनूप । पंजचार चढि गहि देखियत कहो कहा स्वरूप ॥ शिशुगणनमें भई शोभा करो कोउ विचार । सूर श्री गोपालकी छबि राखो यह निरधार ॥

ऐसे पद सूरदासजीने गाये पाछे फेरि श्रीनाथजी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥

अब सूरदासजीने श्रीनाथजीकी सेवा बहुत कीनी बहुत दिनताँई ता उपरांत भगवत् इच्छा जानी जो अब प्रभुनकी इच्छा बुलायबेकी है यह विचारके जो नित्यलीलाफलात्मक रासलीला जो जहां करे हैं ऐसो जो परासोली तहां सूरदासजी आये श्रीनाथजी की ध्वजाको दण्डवत करिके ध्वजाके साम्हैं सन्मुख करिके सूरदासजी सोये, परि अंतःकरणमें यह जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु दर्शन देयँगे अब यह देहतौ थकी ताते अब या देहसो श्रीनाथजीको दर्शन होय तौ जानिये परम भाग्य है श्रीगुसाईंजीको नाम कृपासिंधु है भक्तनके मनोरथ पूर्णकर्त्ता हैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्रीगुसाईंजीको चिंतवनकरते हैं और श्रीगुसाईंजी कैसे कृपासिंधु हैं जैसे सूरदासजी वहाँ स्मरण करते हैं तैसे श्रीगुसाईंजी इनको छिनहूं नाहिं भूलतहैं श्रीनाथजीको शृंगार होतो ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाढे ठाढे कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसाईंजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हुते और सूरदासजीको कीर्तन करते न देख्यो तब श्रीगुसाईंजीने पूँछो जो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते ? तब काहू वैष्णवने कह्यो जो महाराज सूरदासजी तौ आज परासोलीको ओरी जात देखै हैं तब श्री गुसाईंजीने जान्यो जो भगवत् इच्छाते अवसान समयहै ताते सूरदासजी परसोली गये हैं तब

श्रीगुसाईंजीने अपने सेवकनसों कह्यो जो पुष्टिमार्गको जहाज जातहै जाको कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवत् इच्छाते राजभोग आरती पाछे रहत है तौ मैंहू आवत हों पाछे श्रीगुसाईंजी बेरबेर सूरदासजीकी खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदासजीतौ अचेतहैं कछू बोलत नाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समय भयो सो राजभोग आरती करिकै श्रीगुसाईंजी गिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरके सेवक रामदासजी प्रभृति और कुंभनदासजी और गुसाईंजीके सेवक गोविंदस्वामी चतुरभुजदास प्रभृति और सब श्रीगुसाईंजीके साथ आये सो आवतही सूरदासजीसों श्रीगुसाईंजीने पूछो जो सूरदासजी कैसे हो तब सूरदासजीने श्रीगुसाईंजीको दंडवत करिकै कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी बाट देखत हुतो यह कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद—

राग सारंग—देखो देखो हरिजूको एक सुभाय ।
अति गंभीर उदार उदधिप्रभु जानि शिरोमणिराय ॥
राई जितनी सेवाको फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधुसम बूँदन एकौ जान ॥ २ ॥
बदनप्रसन्न कमलपदसन्मुख दीखतहींहै ऐसे ॥
विमुखहुभयेकृपायामुखकी जबदेखोतब तैसे ॥ ३ ॥
भक्तविरहकातरकरुणामयडोलतपाछेलागे ॥
सूरदास ऐसे प्रभुको कत दीजै पीठअभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने कह्यो सो सुनिके श्रीगुसाईंजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यो जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकनको देहिं या दैन्यके पात्र एही हैं तब वा बेर श्रीगुसाईंजीके पास ठाढेहुते और चतुर्भुजदासहू ठाढेहुते तब चतुर्भुजदासने जो कह्यो सूरदासजीने बहुत भगवत् यश वर्णन कियो परि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको वर्णन नाहीं कियो तब यह वचन सुनिकै सूरदासजी बोले जो मैं तौ सब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकोही यश वर्णन कियो है कछू न्यारो देखूं तौ न्यारो करूं परितेरे साथ कहतहों या भांति कहिके सूरदास-जीने एक पद कह्यो सो पदः—

राग विहागरो—भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीवल्लभनखचंदछटाबिनु सब जग मांझ अंधेरो ॥ साधन और नहीं याकलिमें जासों होत निबेरो ॥ सूर कहा कहे दुबिधि आंधरो बिनामोलको चेरो ॥

यह पद कह्यो पाछे सूरदासजीको मूर्छा आई तब श्रीगुसाईंजी कहें जो सूरदासजी चित्तकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पदः—

राग बिहागरो—बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर शिरोमणि प्रीति करी कैसे होत है छानी ॥ १ ॥ वे जु धरतनतन

कनक पीतपटसो तो सब तेरी गति ठानी ॥ ते पुनि श्याम सहजबे शोभा अम्बर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अबहिं ह्वै आयो निरखि देखि निज देह सियानी ॥ सूर सुजानके बूझे प्रेम प्रकाशभयो बिहँसानी ॥ ३ ॥

यह पद कह्यो इतनो कहिकै श्रीसूरदासजीके चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुख तामें करुणारसके भरे नेत्र देखे तब श्रीगुसाईंजी पूछो जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पदः—

राग बिहागरो--खञ्जन नैन रूप रसमाते ॥ अतिशय चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते । चल चलजात निकट श्रवणनके उलटपलट ताटंक फँदाते ॥ सूरदास अञ्जनगुण अटके नातर अब उडिजाते ॥

इतनो कहतेही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कियो सो भगवत् लीलामें प्राप्ति भये पाछे श्रीगुसाईंजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्धन आये ताते सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते (सो) इनकी वार्ताको पार नहीं पाते इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ।

सीधी हिन्दी--पहिले भागमें गया गवर्नमेन्ट स्कूलके पण्डित बलदेव मिश्रने लिखा है कि सूरदासजीका घर कृष्णावेना गांवमें देवशर्म्मा ब्राह्मणका बेटा बिल्वमङ्गल पांडे इनका नाम था । पहले इनकी चालचलन अच्छी नहीं थी । पीछे ये सुधरे और सवालाख भजनका सूरसागर बनाकर बडे नामी हुए । लोग कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंख आपही फोडी थी ।

‘ सुगम पन्थ ’ में पंडित गणपत लाल चौबे फर्स्ट असिस्टेंट मास्टर स्कूल रायपुरने लिखा है कि शूरदास किंवा सूरदास--मदनमनोहर सूरध्वज ब्राह्मण दिल्ली नगरके समीप किसी ग्रामके रहनेवाले थे । किसी समय दिल्ली आये यहाँ एक दिन किसी स्त्रीको कोठेपर खडी देख उसपर मोहित हुए और कोठेकी ओर इकटक चितै रहे । लोग इनकी दशा देख धिक्कारने लगे परन्तु वह स्त्री घरसे बाहर निकल बोली “ विप्रजी ! क्या आज्ञा होती है ’ विप्र बोले “ क्या सचमुच मेरी आज्ञा पालेगी ” वह बोली “ निस्सन्देह ” मुझे ईश्वर साक्षी है तब तो वह विप्रके कहनेके अनुसार दो सुइयां ले आई और जब विप्रने कहा कि मेरी छातीपर बैठ इन दोनों सुइयोंको मेरे नेत्रोंमें घुसेडदे उसने वैसाही किया और तबहीसे सूरदास कहलानेलगे । लोगोंने इनकी बडी प्रसंसा कर इनके कहनेके अनुसार मथुरा वृन्दावनमें पहुँचा दिया यहांपर इन्होंने सवालाख विष्णुपदका एक बहुत बडा सूरसागर नामी गन्थ बनाया निदान कुछ कालतक ये अकबर बादशाहकी सभामें रहे और फिर परलोकको सिधारे ।

प्राचीन मनुष्योंकी कहावत है कि, ये उद्धवका अवतार थे वे सब कवियोंमें श्रेष्ठ गिने जाते हैं यथा–

दोहा–सूरसूर्य्य तुलसी शशी, उडगण केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकाश॥

रामरसिकावलीकी टिप्पणीमें लिखा है कि 'अंकवाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा' परन्तु मतिराम कविका वर्णन काव्यरत्नाकरमें लिखा गया है अतएव यहां उनका कुछ काव्य लिखा जाता है।

(१) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले।

कवित्त—पूरण पुरुषके परम दृग दोऊ जानि कहत पुराण वेद बानियो रतिगई। कवि मतिराम दिनपति यों निशापतियों दुहुँनकी कीरति दिशान मांझ मठि गई॥ रविके करन भये एक महादानी यह जानि जिय आनि चिन्ता चित्त मांझ चढि गई। तोहि राज बैठत कुमाऊं श्रीउदोत चन्द्रचन्द्रमाकी करक करे जहूंते कढि गई॥ १॥

ललितललाम।

परम प्रवीन धीर धरम धूरीन दीनबन्धु सदा जाकी परमेश्वरमें मतिहै।
दुर्जन बिहाल करि याचक निहाल करि जगतमें कीरति जगाई ज्योति अतिहै॥
राउ शत्रुशालके सपूत पूत भाउसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबतिहै।
जानपति दानपति हाडा हिन्दुबानपति दिल्लीपति दलपति बालाबंद पति है॥ २॥
कैसे आसमानसे विमानसे घटासे गज रावरे चलत मानौ मेरुसे लरति है।
अतल वितल तल हलत चलत दल गज मद राज दिगदन्ती चिक्करति है॥
कहै मतिराम शम्भु द्विरद दराज ऐसे जिन्हैं पाइ कविराज आनंद भरतिहै।
कुम्भ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि विलन्द गद गरद करतिहै॥ ३॥

छप्पय।

जबलगि कच्छप कोल सहसमुख धरणिभारधर।
जबलगि आठौ दिशनि दाबि सोहत दिग्गजबर॥
जबलगि कबि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल।
जबलगि सुवरणमेरु सघन घन मगन अगन चल॥
नृप शत्रुशालनंदन नवल भावसिंह भूपालमनि।
जग चिरञ्जीव तबलगि सुखित कहत सकल संसारधनि॥

दोहा–भौंह कमान कटाक्ष शर, समरभूमि बिचनैन।
लाजतजेहू दुहुँनके, सजल सुहृदसे बैन॥ १॥
रूपजाल नँदलालके, परिकरि बहुरि छुटैंन।
खञ्जरीट मृगमीनसे, ब्रजबनितनके नैन॥ २॥

क०—बानीको बसन कैधौं बातको बिलास डोलै कैधौं मुखचंद्रचारु चांदनी प्रकास है । कवि मतिराम कैधौं कामको सुयश कै पराग पुञ्ज प्रफुलित सुमन सुवास है॥नासा नथुनीके गजमोतिनके आभा कैधौं रतिवन्त प्रगटित हियेको हुलास है । सीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधौं बालाके बदन बिलसत मृदुहास है ॥ ४ ॥

छन्दसार पिंगल ।

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फते साहिसी नगर साहिबी समाजु है । जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊं पति पूरो रज लाजु है ॥ जैसे जयसिंह यशवंत महाराज भयो जिनको महीमें अजों बाढ्यो बलसाजु है । मित्रासाहि नन्द सी बुन्देल कुलचंद जग ऐसो अब उदित स्वरूप महाराजु है ॥ ५ ॥ लछमनही सँगलिये जोबन बिहार किये सीता हिये बसे कहो तासों अभिरामको । नव दल शोभा जाकी विकसे सुमित्रे लखि कोशलै बसत कोऊ सुठि धामठामको ॥ कवि मतिराम शोभा देखिये अधिक नित सरस निधान कविकोविदके कामको । कीन्होंहै कवित्त एक तामरसहोको यासों रामको कहतकै कहत कोऊ वामको ॥ ६ ॥

रसराज ।

चन्दन चढारी नभ चन्दन चढारी अंग चन्द उजियारी देखि नकराति कैसी है । फंद फंदफबदी गंसीली गांठि गूंठि मूंदि मूंदि २ मुख मन्द मन्तरात वैसी है । मतिराम मिलन बिहारी सूं तूं प्यारी चलु नितरतिवारी आजु जकराति कैसी है ॥ कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसी रात रतरात कैसी है ॥ ७ ॥

चोरकी चोर छिनार छिनारकी साहुकी साहु बलीकी बली ।
ठगकी ठग कामुक कामुककी अरु छैलकी छैल छलीकी छली ॥
प्रवीणनकी परवीणही जानै मतिराम न जानै कहाधौं चली ।
उन फेरि दई नथकी मुकता उन फेरिकै फूंकी गुलाबकली ॥
गोपबधू तन तोलत डोलत बोलत बोलजु कोमल भाषैं ।
ऊरू नितंबनिकी गुरुता पगजात गयन्दनिकी गति नाषैं ॥
आगम भो तरुणापनको मतिराम भनै भई चञ्चल आँषैं ।
खञ्जनके युग सावक ज्योंउड़ि आवत ना फरकावत पाँषै ॥ ८ ॥

क०—येरे मतिमन्द चन्द ढिग है अनन्द तेरे जोपै बिरहीन जरि जात तेरे तापते ।
तूतो दोषाकार दूजे धरैहै कलंक उर तीसरे सखानि सँग देखो शिरं छापते ॥
कहै मतिराम हाल जाहिर जहान तेरो वारुणीके वासी भासीं राहुके प्रतापते ।
बांधो गयो मथो गयो पियो गयो खारो भयो बापुरो समुद्र ऐसे पूतहीके पापते ॥९॥

(२) शिवसिंहसरोजमें लिखा है भूषणत्रिपाठी ढिकमापुर जिले कानपुर सं० १७३८ में हुए रौद्र वीर भयानक ए तीनों रस जैसे इनकी काव्यमें हैं ऐसे और कवि लोगोंकी कवितामें नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेशके यहां छः महीने तक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सतारागढ वालेके इहां जाय बडा मान पाया और जब यह कवित्त भूषणजीने पढा (इंद्र जिमिजंभपर) तब शिवराजने पांच हाथी औ २५ हजार रुपिया इनाम दिया इसी प्रकारसे भूषणने बहुत वार बहुत २ रुपिया हाथी घोडा पालकी इत्यादि दानमें पाये ऐसे शिवराजके कवित्त बनाए हैं जिनकी बराबर किसी कविने वीरयश नहीं बनाय पाया। निदान जब भूषण अपने घरको चले तो परना होकर राजा छत्रशालसे मिले छत्रशालने विचारा अब तो शिवराजने इनको ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उसका दसवां हिस्सा भी नहीं देसकते ऐसा सोच विचार करि चलते समय भूषणकी पालकीका बांस अपने कंधेपर धरि लिया, ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी बहुत प्रसन्न है यह कवित्त पढा । साहूको सराहों की सराहों छत्रशाल को। और दूसरा यह कवित्त बनाया । तेरी बरछीने बरछीने हैं खलनके। और दो दोहा बनाय छत्रशालको दै घरमें आए ॥

दोहा—एक हाडा बूँदी धनी, मरद महेवावाल।
शालत नौरंगजेबके, ए दोनों छत्रशाल ॥ १ ॥
ए देखौ छत्तापता, ए देखौ छत्रशाल।
ए दिल्लीकी ढाल ए, दिल्ली ढाहनवाल ॥ २ ॥

भूषणजी थोडे दिन घरमें रहकर बहुत देशान्तरोंमें घूमिघूमि रजवाडोंमें शिवराजका यश प्रगट करते रहे जब कुमाऊँमें जाय राजा कुमाऊंके यशमें यह कवित्त पढा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तब राजाने सोचा कि ये कुछ दान लेने आए हैं और हमने जो सुना था कि शिवराजने लाखों रुपया इनको दिया सो सब झूँठ है ऐसा विचार हाथी घोडे मुद्रा बहुत कुछ भूषणके आगे किया भूषणजी बोले इसकी अब भूँख नहीं हम इसलिये इहाँ आए थे कि देखैं शिवराजका यश यहाँ तक फैला है या नहीं ? इनके बनाए हुए ग्रंथ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास ४ ये चारही ग्रंथ सुने जाते हैं कालिदासजूने अपने ग्रंथ हजाराकी आदिमें ७० कवित्त नवरसके इन्हीं महाराजके बनाए हुए लिखे हैं।

(३) बिहारीलाल चौबे ब्रजवासी सम्वत् १६०२ में हुए। ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजै आमेरके इहाँ थे जयपुरकी तवारीख देखनेसे प्रगट है कि महाराजै मानसिंहसे जो संवत् १६०२ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये हैं पर हमको निश्चय है कि ये कवि महाराजे मानसिंहके पुत्र जयसिंहके पास थे जो महागुण-

ग्राहक थे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंहके प्रपौत्र संवत् १७८९ में थे। यह बात है कि जब महाराजे जयसिंह किसी एक थोडी अवस्थावाली रानी पर मोहित है रात दिन राजमन्दिरमें रहने लगे राज्यके संपूर्ण काम काज बन्द होगये तब विहारीलालने यह दोहा बनाय राजाके पास तक किसी उपायसे पहुँचाया।

दो०—नहिं पराग नहिं मधुर रस, नहिं विकास यहि काल।
अली कलीहूसों विंध्यो, आगे कौन हवाल ॥ १ ॥

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न है १०० मोहर इनाम दै कहा इसी प्रकारके और दोहा बनावो विहारीलालने सातसौ दोहा बनाए औ ७०० अशरफी इनाममें पाया। यह सतसई ग्रन्थ अद्वितीय है बहुत कवि लोगोंने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविताका रंग जमाना चाहा पर किसी कविको सुर्खरुई प्राप्त नहीं हुई है। यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्ति नहीं हुई। लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तवमें इसी ग्रन्थके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं।

सब तिलकोंमें सूरति मिश्र आगरेवालेका तिलक विचित्र है और सब सतसैयोंमें विक्रम सतसई और चंदनसतसई इसके लगभग है।

विहारी कवि २ सं० १७३८ इनके महासुन्दर कवित्त हजारामें हैं। विहारी कवि ३ बुंदेलखंडी सं० १८०६ सरस कविता करी है। विहारी दास कवि ४ ब्रजबासी सं० १६७० इनके पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं।

(४ नीलकंठमिश्र अंतर्वेदीबासी सं० १६४८ दासजीने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जाननेमें की है।

(५) नीलकंठ त्रिपाठी टिकमापुरवाले मतिरामके भाई। संवत् १७३० इनका कोई ग्रंथ हमने नहीं देखा॥

(६) बेनीकवि प्राचीन असनी जिले फतेपुरवाले। संवत् १६९० ये महान् कवीश्वर हुए हैं इनका एक ग्रन्थ नायकाभेदमें अति विचित्र देखनेमें आया है इनकी कविताई बहुतही सरस ललित मधुर है।

बेनीकवि २ बन्दीजन बैंती जिले रायबरेलीके निवासी संवत् १८४४ ये कवि महाराज टिकेतराइ दीवान नवाब लखनऊके यहां थे और बहुत वृद्ध होकर संवत् १८९२ के करीब मरगए।

बेनी प्रवीन ३ बाजपेई लखनऊके निवासी संवत् १८७६ ये कवि महासुन्दर कविता करनेमें विख्यात हैं इनका ग्रन्थ नायकाभेदमें देखनेके योग्य है।

बेनी प्रगट ४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासीके पुत्र संवत् १८८० इनका काव्य महासुन्दर है।

(७) एक शंभु कविका वर्णन काव्यरत्नाकरकी टिप्पणीमें है उसके सिवाय यहां लिखा है। शंभुनाथ मिश्र कवि सं० १८०३ ये महाराज महान् कवि भगवंत राइ खीचीके यहां असोथरमें रहा करते थे शिव कवि इत्यादि सैकडों मनुष्योंको इन्होंने कवि कर दिया। कवितामें महा निपुण थे, रसकल्लोल १ रसतरंगिणी २ अलंकारदीपक ३ ये तीन गन्थ इनके बनाये हुए हैं।

शंभुनाथकवि बन्दीजन सं० १७९८ ये कवि सुखदेवके शिष्य थे रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिकाकी ऐसी इस ग्रन्थमें भी नाना छन्द हैं।

शंभुनाथकवि त्रिपाठी डौंडिया खेरेवाले सं० १८०९ ये महाराज राजा अचलसिंह बैस डौंडिया खेरेके यहां थे राव रघुनाथसिंहके नाम बैतालपचीसीको संस्कृतसे भाषा किया है और मुहूर्त्तचिंतामणि ज्योतिषग्रंथको भाषामें नाना छन्दोंमें बनाया है ये दोनों ग्रन्थ सुन्दर हैं।

शम्भुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ये कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजुरगांवके यहां थे थोरी अवस्थामें अल्पायु होगया बैस वंशावली और शिवपुराणका चतुर्थखंड भाषामें बनाया है शम्भुप्रसाद कविके शृंगारमें सुन्दर कवित्त हैं।

(८) तोष कवि सं० १७०५ ये महाराज भाषाकाव्यके आचार्य्योंमें हैं ग्रंथ इनका कोई हमको नहीं मिला पर इनके कवित्तोंसे हमारा कुतुबखाना भरा हुवा है कालिदास तथा तुलसीजीने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थोंमें बहुत सारी लिखी हैं।

(९) चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुरवाले सं० १७२९ ए महाराज भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिनेजाते हैं अन्तर्वेदमें विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजीके स्थानमें जाते थे वे देवीजी वनकी भुइआं कहाती हैं टिकमापुरसे एक मीलके अन्तर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न ह्वै चारि मुंड दिखाय बोली यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा कि चिंतामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वादसे कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्यको पढि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहैगा इन्हीं के वंशमें शीतल और बिहारीलाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुरमें सूर्य्यवंशी भोंसला मकरंदशाहिके इहां रहे और उन्हींके नाम १ छंद विचार नाम पिंगल बहुतभारी ग्रन्थ बनाया और काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ये पांच ग्रन्थ इनके बनाए हुए हमारे पुस्तकालयमें मौजूद

हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त और नाना अन्य छन्दों में बहुत अपूर्व है बाबू रुद्रसाहि सुलंकी और शाहिजहां बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रंथों में कहीं कहीं अपना नाम मणिलाल करिकै कहा है।

चिन्तामणि २ ललित काव्य करी है।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तर्वेदके निवासी सं० १७४९ ये कवि अन्तर्वेदमें बडे नामी गिरामी हुएहैं। प्रथम औरंगजेब बादशाहके साथ गोल कुंडा इत्यादि दक्षिणके देशोंमें बहुत दिन तक रहे तेहि पीछे राजा योगाजीतसिंह रघुवंशी महाराज जम्बूके इहाँ रहे और उन्हींके नाम बधूविनोद नाम ग्रन्थ महाअद्भुत बनाया और एक ग्रन्थ कालिदास हजारा नाम संग्रह बनाया जिसमें सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५ तकके कवि लोगोंके एक हजार कवित्त २१२ कवि लोगोंके लिखेहैं हमको इस ग्रन्थके बनानेमें कालिदासके हजारासे बडी सहायता मिली और एक ग्रंथ और जंजीराबन्द नाम महाविचित्र इन्हीं महाराजका हमारे पुस्तकालयमें है इनके पुत्र उदयनाथ कविन्द और पौत्र कवि दूलहबडे महान् कवि हुए हैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कविको किसीने कहाहै कि वे असनी ग्रामके बन्दीजन थे सं० १८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाहके जमानेमें बुन्देलखण्डी हुए हैं और कोई कहतेहैं कि नहीं, ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्डवासी हैं। किसी कविका बयान है कि छत्रपुर बुंदेलखण्डमें बुंदेला लोग हिम्मति बहादुर गोसाईं के मारने को इकठ्ठा थे ठाकुर कविने यह कवित्त (समयो यह बीर बरावने हैं) लिखि भेजा सब बुंदेला चले गए और हिम्मति बहादुरने ठाकुर को बहुत रुपया इनाम दिया हिम्मति बहादुर संवत् १८०० में थे और कवि कालिदासने हजारा संवत् १७४५ के करीब बनाया है और उसमें ठाकुरके बहुत कवित्त और ऊपर लिखा हुआ कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करते हैं कि ठाकुरकवि बुंदेलखण्डी अथवा असनी वाले भाट या कायस्थ कछु होवैं पर ये कवि अवश्य संवत्० १७०० में थे इनका काव्य महामधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारोंसे भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है। सवैया इनके बहुत ही चोटीले हैं इनके कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकडों हैं पर ग्रन्थ कोई नहीं और न हमने किसी ग्रन्थ का नाम सुना।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर जिले रायबरेली सं० १८८२ ये महान् पंडित संस्कृत साहित्यमें महाप्रवीण सारे हिन्दुस्तानमें काव्यहीके हेतु फिरि ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्यकी इकठ्ठा की थीं अपने हाथसेभी नाना ग्रन्थ लिखे थे और बुंदेलखण्डमें तौ घर घर कवि लोगोंके यहां फिर फिर एक संग्रह भाषा कवि लोगोंकी

इकठ्ठा की थी रसचन्द्रोदय ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है तत्पश्चात् काशीजीमें गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगोंसे बहुत मेल जोल रहा और अवधदेशके राजा महाराजाओंके इहां भी गये जब इनका सं० १९२४ में देहान्त हुवा तौ इनके चारों महामूर्ख पुत्रोंने १८। १८ बस्ते बांटिलिये और कौडियोंके मोल बेंचिडाले हमने भी प्रायः दो सौ ग्रन्थ अन्तमें मोल लिया था।

ठाकुरराम कवि इनके कवित्त शान्तरसमें सुंदर हैं।

ठाकुरप्रसादत्रिवेदी अलीगंज जिले खीरी विद्यमान हैं सत कवि हैं।

(१२) निवाजकवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगारमें अच्छे कवित्त हैं। निवाज २ ब्राह्मण अन्तर्वेद वाले सं० १७३९ ये कवि महाराजै छत्रशाल बुंदेला परना नरेशके इहां थे आजमशाहकी आज्ञानुसार शकुंतला नाटकको संस्कृतसे भाषा बनाया एक दोहासे लोगोंको शक है कि निवाजकवि मुसलमान थे पर हमने बहुत जांचा तौ १ निवाज मुसलमान और २ हिंदु पाये गये हैं।

दो०-तुम्हें न ऐसी चाहिये, छत्रशाल महराज। जहँ भगवतगीता पढ़ै, तहँ कवि पढ़ै निवाज॥ १॥

निवाज ३ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं० १८०१ ये कवि भगवंतराय खींची गाजीपुरवाले के इहां थे।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन वासी १६८० ये महाराज वृन्दावनमें क्षेत्र संन्यास लै सारी वैस वहांही व्यतीत किया। काव्यमें इनकी प्रशंसा हम कहां तक करैं अपने समयके भामथे काव्य कल्पद्रुम इनका ग्रन्थ बहुतही सुन्दर है हजारामें इनके बहुत कवित्त हैं।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ ये कवि भाषा साहित्यके आचार्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंहके पुत्र राजा राजसिंह गौरके इहां जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्तविचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतिसिंह बंधलगोती अमेठीके इहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नवाब फाजिलअलीखां मन्त्री औरंगजेब बादशाहके नाम भाषासाहित्यमें फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रन्थ महाअद्भुत रचा ये तीनों ग्रन्थोंके सिवाय हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ये दो ग्रन्थ और भी इन्हीं महाराजके किये हुये हैं।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतपुर जिले रायबरेली वाले १८०३ ये महाराज महान् कवि बैसवारेमें हो गये हैं राव मर्दनसिंह बैस डौंडियाखेरेके यहां थे और उन्हींके नाम रसार्णवनाम ग्रन्थ नायकाभेदमें बहुत सुन्दर बनाया है शम्भुनाथ इत्यादि कवि इन्हीं के शिष्य थे।

सुखदेव कवि ३ अंतर्वेदी वाले। १७९१ ये कवि महाराज भगवंत राय खीची असोथर वाले के यहांथे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ये महाराज सुखदेव मिश्र दौलतपुर वाले न होवें।

(१५) देव कवि प्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव जिले मैनपुरी निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समयके भाम मम्मट के समान भाषा काव्यके आचार्य हो गये हैं शब्दोंमें ऐसी समाई कहां है जिनमें इनकी प्रशंसा की जावे इनके बनाये ग्रन्थोंकी संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुई है तिनमें केवल ११ ग्रन्थोंके नाम जो हमको मालूम हैं लिखे जाते हैं जिन्हें अक्सर हमने भी देखा है।

१ प्रेमतरंग २ भावविलास ३ रसविलास ४ रसानन्दलहरी ५ सुजानविनोद ६ काव्य-रसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंच नाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास।

देव (काष्ठजिह्वास्वामी) काशीस्थ। १९११ ये महाराज पंडितराज षट्शास्त्रके वक्ता प्रथम संस्कृत काशीजीमें पढि दैवयोगसे एकबार अपने गुरुसे वादकरि पीछे पछिताय काष्ठकी जीभ मुहँमें डालि बोलना बन्दकरि दिया पाटीमें लिखिके बातचीत करते थे उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायण सिंह काशीनरेशने इनसे उपदेश लै रामनगरमें टिकाया तब ये महाराज भाषामें नाना ग्रन्थ विनयामृत इत्यादि बनाए इन्हीके पद आज तक काशीनरेशकी सभामें गाये जाते हैं।

(१६) पजनेश कवि बुन्देलखण्डी १८७२ ये कवि परनामें थे और मधुप्रिया नाम ग्रन्थ भाषा साहित्यमें अद्भुत बनाया है इस कविकी अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रास जमक तारीफके योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रसमें और कटु अक्षरोंसे जो अपनी कवितामें भर दिया है इस कारणसे इनकी काव्य कविलोगोंके तीररूपी जिह्वाकी निशाना हो रही है इनका नखशिख देखने योग्य है इन्होंने पारसी विद्यामें भी श्रम किया था।

(१७) घनआनन्द कवि। १६१५ ये कवि कविलोगोंमें महाउत्तम कवि हो गये हैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ये कवि कवितामें महानिपुण बांधव-नरेशके यहां थे ग्रन्थ तौ पूरा हमने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इनके हमारे पास हैं, कालिदासने भी इनके कवित्त हजारामें लिखे हैं।

(१९) सुन्दरकवि ब्राह्मण ग्वालियर निवासी सं० १६८८ ये महाराज शाहजहां बादशाहके कवि थे पहिले कविरायकी पदवी पाया इनका बनाया हुवा सुन्दरशृंगार नाम ग्रन्थ भाषासाहित्यमें बहुत सुन्दर है इन्हीं कविके पदमें यह अगन पराथा (सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रन्थमें है।

सुन्दरकवि दादूजीके शिष्य मेवाडदेशके निवासी । इनकी कविता शांत रसमें कछु अच्छी है सुन्दरसांख्य नाम एक इनका बनाया हुआ ग्रन्थ भी सुना जाता है ।

(२०) सुन्दर कवि बन्दीजन असनीवाले रसप्रबोध ग्रन्थ बनाया है ।

मुरारिदास ब्रजवासी इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ।

(२१) बोधाकवि सं० १८०४ इनके कवित्त बहुतही सुन्दर हैं ।

बोधकवि बुन्देलखंडी । सं० १८५५ ऐजन् ।

(२२) श्रीपतिकवि प्रयागपुर जिले बहिरायच निवासी सं० १७०० ये महाराज भाषा साहित्यके आचार्योंमें गिने जाते हैं इनके बनाए हुए काव्यकल्पद्रुम १ काव्यसरोज २ श्रीपतिसरोज ३ ये तीन ग्रन्थ विख्यात हैं हमने ये तीनों ग्रन्थ नहीं देखे और न इनके कुल और न जन्म भूमिसे हमको ठीक ठीक आगाही है ।

(२३) दयानिधिकवि बैसवारेके सं० १८११ राजा अचलसिंह बैस की आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रन्थ बनाया ।

(२४) युगलकिशोर भट्ट कैथल बासी सं० १७९५ ये महाराज मोहम्मद शाह बादशाहके बडे मुसाहिबोंमें थे इन्होंने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रन्थ अलंकारमें अद्वितीय बनाया है जिसमें ९६ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किये हैं उसी ग्रन्थमें ये दो दोहा अपने नाम और सभाके समाचारमें कहे हैं ।

दोहा—ब्रह्म भट्ट हौं जातिमैं, निपट अधीननिदान ।
राजा पद मोको दयो, महमदशाह सुजान ॥ १ ॥
चारि हमारी सभामें, कोविद कवि मतिचारु ।
सदा रहत आनंद बढे, रसको करत विचारु ॥ २ ॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, अरु सुखलाल रसाल ।
शतञ्जीव सुगुमान हैं, शोभित गुणनि निशाल ॥ ३ ॥

युगलकिशोर कवि २ शृंगाररसमें कवित्त नीके हैं ।

जुगराज कवि बहुतही सरस काव्य इनकी है ।

जुगुलप्रसाद चौबे । इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुन्दर काव्य है ।

जुगुलदास कवि—पद बनाए हैं ।

जुगुलकवि सं० १७५५ इनके बनाए हुए पद अति अनूठे महाललित हैं ।

(२५) कविंद (उदयनाथ त्रिवेदी) बनपुरा निवासी कवि कालिदासजीके पुत्र सं० १८०४ ये कवि अपने पिताके समान महान् कवीश्वर हो गुजरे हैं प्रथम राजा हिम्मतसिंह बन्धलगोत्री अमेठी महाराजके यहां बहुत दिनतक रहे और कवितामें अपना नाम

उदयनाथ वर्णन करते रहे जब राजाके नामसे रसचन्द्रोदय नाम ग्रन्थ बनाया तब राजाने कविंद् पदवी दिया तबसे अपना नाम कविंद करके धरते रहे। इस ग्रन्थके चारि नाम हैं–रति विनोद चंद्रिका १, रतिविनोद चन्द्रोदय २, रामचंद्रिका ३, रसचन्द्रोदय ४ यह ग्रन्थ भाषासाहित्यमें महा अद्भुत हैं तेहि पीछे कविंदजी थोडे दिन राजा गुरुदत्तसिंह अमेठीके यहां रहे भगवंतरायखीची और गजसिंहमहाराज आमेर और राव बुद्धहाडा बूँदीवालेके यहां महामान सन्मानके साथ काल व्यतीत करते रहे और एक कविंद त्रिवेदी बैतीगांव जिले रायबरेलीमें भी महान् कवि हो गये हैं।

कविंद २ सखीसुख ब्राह्मण नरवर बुंदेलखंड निवासीके पुत्र सं० १८९४ इन्होंने रसदीपक नाम ग्रन्थ बनाया है।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशीनिवासी सं० १६२२ ये कविंदाचार्य्य महाराज संस्कृतसाहित्य शास्त्रमें अपने समयके भानु थे। शाहजहां बादशाहके हुकुमसे भाषाकाव्य बनाना प्रारंभ किया और बादशाही आज्ञानुसार कविंदकल्पलता नाम ग्रन्थ भाषामें रचा जिसमें बादशाहके पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहेबकी तारीफमें बहुत कवित्त हैं।

(२६) गोविंद अटलकवि सं० १६७० इनके कवित्त हजारामें हैं।

गोविंदजी कवि सं० १७५० ऐजन्।

गोविंददासजी ब्रजवासी सं० १६१५ रागसागरोद्भवमें इनकी कविताहै ये कवि नाभाजीके शिष्य थे।

गोविंद कवि सं० १७९८ ये कवीश्वर बडे नामी कवि हो गए हैं इनका बनाया हुआ करुणाभरण ग्रन्थ बहुत कठिन और साहित्यमें शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इनका प्राचीन निवास टिहरी था राजा मधुकर शाह उडछावालेके यहां आये और वहां उनका बडा सन्मान हुवा। राजा इंद्रजीतसिंहने २१ गांव संकल्प दिये तब कुटुंब सहित उडछेमें रहने लगे॥ भाषा काव्यके तौ भाम मम्मट भरताके समान प्रथम आचार्य्य समझना चाहिये काहेते कि काव्यके दशौ अंग पहिले पहिले इन्हींने कविप्रिया ग्रन्थमें वर्णन किये तेहि पीछे अनेक आचार्य्योंने नाना ग्रन्थ भाषामें रचे प्रथम मधुकर शाहके नाम विज्ञान गीता ग्रन्थ बनाया और कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीणराय पातुरीके लिये रचा और रामचंद्रिका राजा मधुकर शाहके पुत्र इन्द्रजीतके नामसे बनाया और रसिक प्रिया साहित्य और रामअलंकृत मंजरी पिंगल ये दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनोंके उपकारार्थ रचे। जब अकबर बादशाहने प्रवीण राय पातुरीके हाजिर न होने और उदूल हुकमी और लडाईके कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड रुपया जुर्माना किये

तब केशवदासजीने छिपकर राजा बीरबर मंत्रीसे मुलाकात किया और बीरबरजूकी प्रशंसामें (दियो करतार दुहूँ करतारी) यह कवित्त पढा तब राजा बीरबरने महाप्रसन्न हो जुर्माना माफ कराया परन्तु प्रवीणरायको दरबारमें आनें पडा।

केशवदास २ सामान्य कविता है।

केशवराय बाबू बुंदेलखंडी सं० १७३९ इन्होंने नायकाभेदमें एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है और इनके कवित्त बलदेव कविने अपने संग्रहीत ग्रन्थ सतकवि गिराबिलासमें लिखे हैं

केशवराम कवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रन्थ रचा है।

बाबू रघुनाथ सिंहके दोहेके अनुसार कवियोंका 'समय शिवसिंह सरोजसे' निरूपण किया जाता है।

(१) ओडीरामकवि संवत १६२१ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हजारामें लिखे हैं।

(२) अकबरका हाल पहिले लिखा गया है।

(३) अगर कवि सं० १६२६ नीतिसम्बन्धी कुण्डलिया छप्पय दोहा इत्यादि बहुत बनाए हैं।

(४) अगरदास गलता जयपुर राज्यके निवासी सं० १५९५ इनके बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं ये महाराज कृष्णदास पयअहारीके शिष्य थे और इन महाराजके नाभादास भक्तमालग्रंथकर्त्ता शिष्य थे।

(५) करनेशकवि बन्दीजन असनीवाले सं० १६११ ये कवि नरहरि कविके साथ दिल्लीमें अकबर बादशाहकी सभामें जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण २ भूपभूषण ३ ये तीन ग्रन्थ बनाये हैं।

(६) चतुरविहारी कवि ब्रजवासी संवत १६०५ इनके पद रागसागरोद्भवमें बहुत हैं।

(७) गोपकवि संवत् १५९० रामभूषण १ अलंकार चन्द्रिका २ ये दो ग्रन्थ बनाए हैं।

(९) अमरेशकवि सं० १६३५ इनकी कविता महाउत्तम है कालिदासजीने अपने हजारामें इनकी कविता बहुतसी लिखी हैं।

(१०) आशकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ वालेके पुत्र सं० १६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यासदेवके संग्रहीत ग्रन्थमें मौजूद हैं।

(११) अजबेस प्राचीन सं० १५७० ये कवि श्रीराजा बीरभानसिंह जोधपुरके यहां थे। और उसी देशके रहनेवाले बंदीजन मालूम होते हैं।

अजबेस नवीन भाट सं० १८९२ ये कवि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह बांधव रीवांनरेशके यहां थे।

(१२) कादर, (कादिरबख्श मुसल्मान पिहानीवाल) सं० १६३५ कवितामें निपुण थे और सैयद इब्राहीम पिहानीवाल रसखानिके शिष्य थे।

(१४ टोडर, (राजा टोडरमल खत्री पंजाबी) सं० १५८० ये राजा टोडरमल अकबर बादशाहके दीवान आला थे इनके हालातमें तारीख फारसी भरी हुई है अरबी फारसी संस्कृत विद्यामें महानिपुण थे श्रीमद्भागवतको संस्कृतसे फारसीमें उलथा किया है और भाषामें नीतिसंबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराजने दो काम बहुत शुभ हिंदुस्तानियोंके लिये किये हैं एक तो पंजाबके देशमें खत्रियों यहां रिवाज तीन साला मातमको उठाय केवल वार्षिक रसमको नियत किया दूसरे फारसी हिसाब किताबको ईरान देशके माफिक हिन्दुस्तानमें जारी किया सं०९९८ हिजरीमें शहर लाहौरमें देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि सं० १६०१ अकबर बादशाहके यहां थे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर जिला फैजाबाद संवत् १५३७ सुरोदय ग्रन्थ बनाया।

(१८) चतुर्भुज सुन्दर कविता करी है।

चतुर्भुजदास सं० १६०१ रागसागरोद्भवमें इनके बहुत पद हैं ये महाराज करौलीके राजा स्वामी विट्ठलनाथजी गोकुलस्थके शिष्य थे अष्टछापमें इनका भी नाम है।

(१९) जीवन कवि सं० १६०८ इनके कवित्त हजारामें हैं।

(२१) ताजकवि सं० १६६२ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(२२) होलराय कवि बंदीजन होलपुर जिले बाराबंकी सं० १६४० ये महान् कवि अकबरके दरबार तक राजा हरिवंशराय दीवान कायथ बदरकावासीके वसीलेसे पहुँचे और एक चक पाइ उसीमें होलपुर नाम ग्राम बसाया। एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्यासों लौटते समय होलपुरमें आए होलरायने गोसांईजीके लोटाकी प्रशंसामें कहा।

दोहा—लोटा तुलसीदासको, लाख टकाको मोल।—तब गोसांईजी बोले

मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल ॥ १ ॥

होलाराइने उस लोटाको मूर्तिके समान स्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते हैं हमने अपनी आंखसे देखा है कि आजतक उसकी पूजा होती है इस होलपुरमें सिवाय गिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादिके कोई नामी कवि नहीं हुए इन दिनों लछिराम और संतवकस ये दो कवि अच्छे हैं यह गांव आज तक इन्हीं बन्दी जनोंके नंबरमें है।

---

१ सम्वत् १८९२ के अजबेस सूरदासके समयके नहीं हैं।

(२३) खेमकवि २ ब्रजवासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें इनके पद हैं। एक खेमकवि बुंदेलखंडी हैं।

(२४) जोधकवि सं० १२९० अकबरबादशाहके यहां थे।

(२५) जोयसीकवि सं० १६५८ इनके कवित्त हजारामें हैं।

(२६) चंद्रसखी ब्रजवासी सं० १६३८ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(२७) कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके बहुत पद रागसागरोद्भवमें लिखे हैं और इनकी कविता अत्यंत ललित और मधुर है ये कवि और सूरदास, परमानंददास और कुंभनदास चारों श्रीवल्लभाचार्य्यके शिष्य थे कृष्णदासजीकी कविता सूरदासकी कवितासे मिलती थी एकदिन सूरजी बोले आप अपना कोई ऐसा पद सुनाओ जो हमारी काव्यमें न मिले तब कृष्णदासजीने चारि पद सुनाये उन सब पदोंमें सूरजीने चोरी अपने पदोंकी साबित किया तब कृष्णदासजीने कहा कालि हम अनूठे पद सुनावेंगे ऐसा कहि सर्व रात्रि इसी शोचमें नहीं सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखाहुवा देखि सूरजीके आगे पढ़ा ॥ आवत बने कान्ह गोप बालक संग नेचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली ॥ सूरजी जानगये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकीकी है बोले अपने बाबाकी सहायता लीनी है इनकी गिनती अष्टछापमें है अर्थात् ब्रजमें आठ ८ बडे कवि हुए हैं जैसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथमें गोपालसिंहने ब्यौरा अष्टछापका लिखा है इसभाँतिसे कि सूरदास १ कृष्णदास २ परमानंद ३ कुंभनदास ४ ये चारों वल्लभाचार्य्यके शिष्य और चतुर्भुज ५ छीतस्वामी ६ नंददास ७ गोविंददास ८ ये चारों विठ्ठलनाथ वल्लभाचार्य्यके पुत्रके शिष्य अष्टछाप करिके विख्यात हैं कृष्णदासजीका बनाया हुवा प्रेमरसरासग्रन्थ बहुत सुंदर है।

(२८) छेमकवि २ बंदीजन दलमऊके सं० १५८२ ये कवि हुमायूं बादशाहके इहां थे।

(२९) अमृत कवि संवत् १६०२ अकबर बादशाहके यहां थे।

(३०) खानखाना नवाब अब्दुलरहीम खानखाना बैरमखांके पुत्र रहीम और रहिमन छाप है। सं० १५८० ये महाविद्वान् अरबी फारसी तुरकी इत्यादि यावनीभाषा और संस्कृत ब्रजभाषाके बड़े पंडित अकबर बादशाहकी आंखकी पुतली थे इन्हींके पिता बैरमकी जवांमर्दी और तदबीरसे हुमायूंको दुबारा दिल्लीका राज्य प्राप्त हुआ खानखानाजी पंडित कवि मुल्ला शायर ज्योतिषी और सब गुणवान् मनुष्योंके बडे कदरदान थे इनकी सभा रातदिन विद्वज्जनोंसे भरीपुरी रहती थी संस्कृतमें इनके बनाए श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषामें नवो रसके कवित्त दोहा बहुतही सुन्दर हैं नीतिसम्बन्धी दोहा ऐसे अपूर्व हैं जिनके पढनेसे कभी पढनेवालेको तृप्ति नहीं होती फारसीमें इनका दिवान

बहुत उमदा है वाक़ियात बावरी अर्थात् बाबर बादशाहने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जबानमें आपही लिखा है उसको इन्होंने फारसी जबानमें तर्जुमा किया है ७२ वर्षकी अवस्थामें सन् १०३६ हिजरीमें सुरलोकको सिधारे ।

श्लो०—आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका व्योमाकाशखखांबराब्धिवसवस्त्वप्रीतयेऽद्यावधि ॥ प्रीतो यद्यसि मां निरीक्ष्य भगवन्मत्प्रार्थितं देहि मे नो चेद् ब्रूहि कदापि मा नय पुनर्मामीदृशीर्भूमिकाः ॥ १ ॥

शृङ्गार सोरठा–भाषा ।

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति ।
बाती सी उसकाय, मानौ दीनी दीपकी ॥ १ ॥
गई आगि उरलाय, आगि लेन आई जु तिय ।
लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै ॥ २ ॥

नीति-दोहा—खीरा शिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय ।
करुये मुखको चाहिये, रहिमन यही सजाय ॥ १ ॥

फारसी ।

शुमार शौक नदानिस्ताअमकि ताचंदअस्त, जुज ईं कद्र किदाम सख्त आरजूमन्द अस्त, नदाना दानम्, वनैदानम्, ईंकदरदानम्, कि पाय ताबसरम हर्चे हस्तदरबंदस्त ।

एक दिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया–

तारायन शशि रैन प्रति, सूर होहिं शशि गैन ।

औ दूसरा चरण नहीं बना रोज रात्रिको यह आधा दोहा पढाकरते थे दिल्लीमें एक खत्रानीने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया ।

तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन ॥ १ ॥

(३१) जगनकवि सं० १६५२ शृङ्गाररसमें कवित्त चोखे हैं ।

(३२) ऊधोराम कवि सं० १६१० इनकी कविता कालिदासजीने अपने हजारामें लिखी है ।

(३३) कमाल कवि (कबीरजी के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालिदासने हजारामें लिखी है ।

(३४) जमालउद्दीन पिहानीवाल सं० १६२५ कवि अच्छे थे ।

(३५) जगनंदन कवि वृन्दावनवासी सं० १६५८ इनके कवित्त हजारामें हैं ।

(३७) जमाल सं० १६०२ ये कवि गूढकविकूटमें बहुत निपुण थे इनके दोहा बहुत सुंदर हैं ।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं० १६१५ हजारामें इनके कवित्त हैं ।

(३९) कल्याणदास ब्रजवासी कृष्णदास पय अहारीके शिष्य सं० १६०७ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं । पुनः कल्याणसिंह भट्ट एक और हैं ।

(४०) फैजी शेख अबल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १५०८ इनको छोटे बडे विद्वान् भली भांति जानते हैं कि ये फैजी अरबी फारसी संस्कृत भाषामें महानिपुण थे इनका ग्रन्थ हमने भाषामें नहीं पाया केवल दोहरा मिले हैं ये अकबर के कवि थे ।

(४१) ब्रह्मकवि राजा बीरबल ब्राह्मण अन्तर्वेदिवाले सं० १५०८ इनका नाम प्रथम महेशदास था ये कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण जिले हमीरपुरके किसी गांवके रहनेवाले थे काव्य पढि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेशके यहां कवि लोगोंमें नौकर हो गये । राजा भगवानदास इनकी कवितासे बहुत प्रसन्न हो अकबर बादशाहको नजरके तौर इनको देदिया । ये कवि काव्यमें अपना नाम ब्रह्म करिकै वर्णन करते थे अकबर कविता के सिवाय इनमें सब प्रकारकी बुद्धि पाय पुर्वसंस्कारके अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाय कविरायकी पदवी दिया फिर पीछे पांच हजारीका मनसब औ मुसाहेब हातिशवर राजै बीरबरका खिताब दिया इनके जीवनचरित्र विचित्र तवारीखोंमें लिखे हैं सन् ९९० हिजरीमें बिजौर इलाके काबुलमें पठानोंके हाथसे समरभूमिमें मारे गये इनका समग्र ग्रन्थ तौ कोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कविताई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालयमें हैं सूरदासजीने कहा है ।

दो०—सुन्दर पद कविगंगके, उपमाको बरबीर ।
केशव अर्थ गम्भीर को, सूर तीनि गुण तीर ॥

राजा बीरबलने अकबरके हुक्मसे अकबरपुर गाउँ जिले कानपुरमें बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसीको नियत किया और नारेनौल कसबामें इनकी पुरानी इमारतें बडी आलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराईका ओहदा जो बहुधा ब्राह्मणोंको मिला और गोवध बंद हुवा और हिंदू मुसलमानोंमें बहुत मेलजोल हो गया ये सब बातें इन्हीं महाराजकी कृपासे हुई थीं ।

(४२) फहीम शेख अबदुलफजल फैजीके कनिष्ठ सहोदर सं० १५८० इनके केवल दोहरा हमने पाये हैं ग्रन्थ कोई नहीं मिला ये अकबरके वजीर थे ।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हजारामें लिखा है ।

(४४) प्रसिद्ध कवि प्राचीन सं० १५९० ये महान् कवीश्वर खानखानाके यहां थे ।

(४५) विठ्ठल विपुल २ गोकुलस्थ श्रीस्वामी हरिदास के शिष्य १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज मधुबनमें बहुधा रहा करते थे ।

(४६) रहीम कवि ये रहीम कवि खानखानाके सिवाय दूसरे रहीम हैं कविता इनकी सरस है काव्यनिर्णयमें दासकविने इनका नाम एक कवित्तमें लिखा है परन्तु दोनों रहीम अर्थात् अबदुल रहीम खानखाना और इन रहीमकी फुटकर काव्यका भिन्न भिन्न करना कठिन है।

कवित्त—सूर केशौ मंडन बिहारी कालिदासब्रह्म चिंतामणि मतिराम भूषणसो जानिये। नी कंठ नीलाधर निपटि नेवाज निधि नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये ॥ आलम रहीम खानखाना रसलीनवली सुंदर अनेक गन गनती बखानिये । ब्रजभाषाहेत ब्रजबसकीन अनुमान एते एतेकविनकी वाणीहूंते जानिये ॥ १ ॥

(४७) अमरसिंह हाडा जोधपुरके राजा सं० १६२१ ये महाराज अमरसिंह श्रीहाडा वंशावतंस सूरसिंहके पौत्र हैं जिन सूरसिंहने छः लाख रुपया एक दिनमें छः कवि लोगों को इनाम दिया था और जिनके पिता गजसिंहने राजपुतानेके कविलोगोंको धनाधीश कर दिया था राजा अमरसिंहकी तारीफमें जो बनवारी कविने यह कवित्त कहा है कि (हाथकी बडाईकी बडाई जमधरकी) सो इसकी बाबत टाड साहबकी किताब टाडरा-जिस्तानसे हम कछु लिखते हैं । प्रगट हो कि राजा अमरसिंह हाडा महा गुणगाहक और साहित्यशास्त्रके बडे कदरदान और खुदभी महाकवि थे । इन्हीं महाराजाने पृथ्वी-राजरायसा चन्दकवि कृतको सारे राजपुतानेमें तलाश कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अब सारे राजपुतानेमें बडे बडे पुस्तकालयोंमें मौजूद हैं. शाहजहां बाद-शाहके यहां अमरसिंहका मनसब तीन हजारी था जो कि अमरसिंह बहुधा शैर शिकारमें रहा करते थे इसलिये एकदफे शाहजहाने नाराज हो कछु जुर्माना किया और सलाव-तिखां बख्शी उल्मुमालिकको जुर्माना वसूल करनेको नियत किया अमरसिंह महाक्रोधा-ग्निसे प्रज्वलित दरबारमें आया पहिले एक खंजरसे सलावतिखांका काम तमाम किया पीछे शाहजहां पर भी तलवार आबदार झारी तरवार सिनूनमें लगी बादशाह तौ भाग बचे, अमरसिंहने पांच और बडे सरदार मुगलोंको मार आप भी उसी जगह अर्जुनगौर अपने सालेके हाथसे मारे गये (विस्तारके भयसे संक्षेपसे लिखा है) ।

(४९) दीलह कवि सं० १६२५ ।

(५०) नरोत्तमदास ब्राह्मण बाडी जिले सीतापुरवाले सं० १६०२ सुदामाचरित्र बनाया है मानो प्रेम समुद्र बहाया है ।

(५१) चेतनचंद्रकवि सं० १३१६ राजा कुशलसिंह सेंगर वंशावतंसकी आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र बनाया ।

(५२) बारककवि सं० १६५५

(५५) वियादास ब्रजवासी सं० १६५० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ।

(५६) छीतस्वामी ब्रजवासी सं० १६०१ इनके पद बहुत राग कल्पद्रुममें हैं ये महाराज वल्लभाचार्यके पुत्र विट्ठलनाथजीके शिष्य थे इनकी गिनती अष्टछापमें है।

(५७) भगवतरसिकवृन्दावननिवासी माधवदासजीके पुत्र हरिदासजीके शिष्य सं० १६०१ इनकी कुंडलियां बहुत सुंदर हैं।

(५८) छत्रकवि सं० १६२५ विजयमुक्तावली नाम ग्रन्थ अर्थात् भारतकी कथा बहुत संक्षेपसे सूचीपत्रके तोरसे नानाछंदोंमें वर्णन की है।

(५९) गदाधरमिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं इनका बनाया हुआ यह पद ' सखी हौं श्यामके रंग रँगी देखि बिकाय गई वह मूरति मूरति हाथ बिकी।' देख स्वामीजीव गोसाईं जो उस समय बडे महात्मा थे गदाधर भट्टसे बहुत प्रसन्न हुए।

(६०) मानसिंह महाराज कछवाह आमेरवाले सं० १५९२ ये महाराज कविकोविदोंके बडे कदरदान थे हरिनाथ इत्यादि कविश्वरोंको एक एक दोहामें लक्ष लक्ष रुपया इनाम दिया इन्होंने अपने जीवनचरित्रकी किताब विस्तारपूर्वक बनायी है जिसका नाम मानचरित्र है उसी ग्रन्थमें लिखा है कि जब राजा मानसिंह काबुलकी ओर अकबरके हुकुमसे चले और अटक नदीपर पहुँचके धर्म्म शास्त्रको बिचार उतरनेमें शोच बिचार करने लगे और अकबरशाहको लिखा तब अकबरने यह दोहा लिखा।–

दोहा सबै भूमि गोपालकी, तामें अटक कहा।
जाके मनमें अटक है, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढि मानसिंह अटकपार जाय स्वामिकार्य्यमें बडी वीरता करी॥

(६१) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं० १६५२ ये मराराज बडे महात्मा हो गुजरे हैं इनके कवित्त शांतरसमें है और हजारामें भी कालिदासने इनका नाम लिखा है। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६२) मोतीलाल कवि वांसी राज्यके निवासी सं० १५९७ गणेशपुराण भाषामें बनाया। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६३) हरिदास स्वामी वृन्दावन निवासी सं० १६४० इन महाराजका जीवन चरित्र भक्तमालमें है इहां केवल हमको काव्यहीका वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृतकाव्यमें जयदेव कविसे कविता कम नहीं है और भाषामें इनके पद सूर और तुलसीके पदोंके समान मधुर और ललित हैं इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं पर हमने इनकी कविता केवल वही देखा है रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें है तान सेनको इन्हीं महाराजने काव्य और सङ्गीत विद्या पढ़ाया था।

(६४) हरिनाथ कवि महापात्र बंदीजन असनीवाले सं० १६४४ ये महान् कवीश्वर नरहरिजीके पुत्र बडे भाग्यवान् पुरुष थे जहां जिस दरबारमें गये लाखों रुपया

हाथी घोडे गांव रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेशने राजाराम बघेलेकी प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा—लंकालौं दिल्ली दई, साहि बिभीषण काम ।
भये बघेलो रामसों, राजा राजाराम ॥ १ ॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपया इनाम पाया। और राजा मानसिंह सवाई आमेरवालेके पाससे दोहा पढि दो लक्ष रुपया दान पाया।

दोहा—बलि बोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात ।
सींची मान महीपने, जब देखी कुँभिलात ॥
जाति जातिते गुण अधिक, सुन्यो न अजहूँ कान ।
सेतु बांधि रघुबर तरे, हेलादै नृप मान ॥ २ ॥

जब हरिनाथ जू ए रुपया और सब सामान लै घरको चले तो मार्गमें एक नागापुत्र मिला और उसने हरिनाथ जू की प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा-दान पाइ दोई बढे, की हरिकी हरिनाथ ।
उनबढि ऊंचे पगकिये, इन बढि ऊंचे हाथ ॥ १ ॥

हरिनाथने सब धन धान्य जो पाया था सब इसी नागापुत्रको दै आप रीते हाथ घरको चले आए और अपनी और अपने पिताकी कमाई तमाम उमर इसी भांतिसे लुटाते रहे।

(६६) मानराय बंदीजन असनीवाले सं० १५८० अकबरके यहां थे।

(६७) रघुनाथराय कवि सं० १६३९ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुरके यहां थे।

(६८) गणेशजी मिश्र सं० १६१५ ।

(६९) कबीर (कबीरदास) जोलाहा काशीवासी सं० १६१० इनके दो ग्रन्थ अर्थात् बीज १ रमैनी २ मेरे पास हैं औ इनके चरित्र तो सब मनुष्योंपर विदित हैं कालिदासजीने हजारामें इनका नाम भी लिखा है इसलिये हमने भी लिख दिया।

(७०) लीलाधर कवि सं० १६१९ ये कवि महाराज गजसिंह जोधपुरके यहां थे और इनका प्रमाण सब कवि करते चले आये हैं।

(७१) नाथ कवि, नाथ कविके नामसे मालूम नहीं हो सकता कि नाथ कितने हुए हैं जैसे उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शंभुनाथ, हरिनाथ इत्यादि कवि लोगोंने नाथ करके अपना भोग वर्णन किया है जहां तक हमको मालूम हुआ तहांतक हर एक नाथकी कविता अलग अलग वर्णन करी है। नाथकवि ब्रजवासी गोपाल भट्ट ऊंच गांव वालेके पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भवमें षट्ऋतु इत्यादि सुंदर है।

(७२) दामोदरदास ब्रजवासी सं० १६२२ इनके पद रागसागरमें हैं एक और दामोदरकवि हैं ।

(७३) दिलदार कवि सं० १६५० हजारामें इनका काव्य है ।

(७४) दौलते कवि सं० १६५१ ।

(७५) नागर कवि सं० १६४८ हजारामें इनके कवित्त हैं ।

(७६) दास (भिखारी दास कायस्थ) अरबल बुन्देलखण्डी सं० १७८० ये महान् कवि भाषासाहित्यके आचार्य्य गिनेजाते हैं छन्दार्णव नाम पिंगल १ रससारांश २ काव्य-निर्णय ३ श्रृंगारनिर्णय ४ बागबहार ५ ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए अति उत्तम काव्यके हैं ।

दास २ बेनीमाधव दास पसका जिले गोंडा सं० १६५५ ये महात्मा गोस्वामी तुल-सीदासजी के शिष्य उन्हींके साथ रहते रहे हैं और गोसांईजीके जीवनचरित्र की एक पुस्तक गोसांई चरित्र नाम बनाया है संवत् १६९९ में देहांत हुआ ।

(७७) नन्दनकवि सं० १६२५ ये महाराज सतकवि होगये हैं हजारामें इनका नाम है ।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसांई वृन्दावननिवासी व्यास स्वामीके पुत्र संवत् १५५९ इनके पिता व्यासजीने राधावल्लभी संप्रदायको चलाया ये देववंदके रहनेवाले गौड ब्राह्मण थे हितहरिवंश जी महान् कवि थे संस्कृतमें राधासुधानिधि नाम ग्रन्थ और भाषामें हित-चौरासी नाम ग्रन्थ महासुन्दर बनाया है ।

(७९) सेनकवि नापति बांधवगढके सं० १५६० हजारामें इनके कवित्त हैं ये कवि स्वामी रामानंदजीके शिष्य थे ।

(८०) नारायणदास कवि सं० १६१५ हितोपदेश राजनीतिको भाषामें छन्दबद्ध रचा है ।

(८२) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें इनके कवित्त हैं ।

(८४) रसखान कवि सैयद इबराहिम पिहानीवाले सं० १६३१ ये कवि मुसलमान थे श्रीवृंदावनमें जाय कृष्णचंद्रकी भक्तिभावमें ऐसे डूबे कि फिर मुसलमानी त्यागकरि माला कंठी धारण किये हुए वृन्दावनकी रजमें मिलि गये इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालामें पढने योग्य है ।

(८५) नाभादास कवि नाम नारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १५४० इनको स्वामी अग्रदासजीने गलता नाम इलाके आमेरमें लाकर अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञा करी नाभाजीने ११८ छप्पय छन्दमें इस ग्रंथको रचा, तिस पीछे स्वामी प्रियादास वृन्दावनीने उसका तिलक कवित्तोंमें किया, तिस पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी वे सन् ११५८ हिजरी में उसीकी टीका बनाय भक्तउरबासी नाम रक्खा, इन दिनों उसी भक्तमालाको महारसिक भगवद्भक्त तुलसीराम अगरवाले मीरापुर निवासीने ऊर्दूमें उल्था करि भक्तमालप्रदीपन नाम धरा है नाभादासकी विचित्रकथा भक्तमाल में लिखी है।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० ये कवि स्वामी हितहरिवंशजीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्र हैं कथा इनकी भक्तमालमें है।

(८७) नरसिया कवि अर्थात् नरसीजी जूनागढनिवासी सं० १५९० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(८८) नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बड़े भक्त थे बृन्दावन मथुरा गोकुल इत्यादिमें जो तीर्थ स्थान लुप्त होगये थे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड इन्होंने प्रथम डाली है।

(८९) तानसेन कवि ग्वालियर निवासी सं० १५८८ ये कवि मकरंद पाँडे गौड ब्राह्मणके पुत्र थे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजी गोकुलस्थके शिष्य हो काव्य विद्याको यथावत् सीखा तत्पश्चात् शेख महम्मद गौस ग्वालियरवासीके पास जाय संगीतविद्याके लिये प्रार्थना करी शाहसाहब तन्त्रविद्या में अद्वितीय थे बरन् मुसल्मानोंने इन्हींको इस विद्याका आचार्य्य सब तवारीखोंमें लिखा है शाहसाहबने अपनी जीभ तानसेनकी जीभमें लगाय दिया उसी समयसे तानसेन गानविद्यामें महानिपुण होगए इनकी प्रशंसामें आईन अकबरीमें ग्रन्थकर्त्ता फहीममें लिखा है ऐसा गानेवाला पिछले हजारोंमें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतिखां शेरखां बादशाहके पुत्रपर आशिक है उनके ऊपर बहुतसी कविता करी तिस पीछे दौलति खांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेलाके यहां गये और वहांसे अकबर बादशाहने अपने यहां बुला लिया तानसेन और सूरदासजीसे बहुत मित्रता थी तानसेनजीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया।

दो०—किधौं सूरको शर लग्यो, किधौं शूरकी पीर ।
किधौं सूरको पद लग्यो, तनमनधुनत शरीर ॥ १ ॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा—

दो०बिधना यह जिय जानिकै, शेष न दीन्हें कान ।
धरा मेरु सब डोलतो, तानसेनकी तान ॥ २ ॥

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रन्थ हैं ।

(९०) निपटनिरंजन स्वामी संवत् १६५० ये महाराज गोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्ध होगयेहैं और इनके ग्रन्थोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानी संगृहीत पुस्तकोंमें सैकडों कवित्त हम इनके देखते हैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ और निरञ्जन संग्रह २ दो ग्रन्थ इन महाराजके बनाये हुए हैं इनकी कवितामें बहुत बडा प्रताप यह है कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवै इनके वाक्यके श्रवण कीर्तनसे निःसंदेह मुक्त होजावे ।

(९१) इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदीवाले सं० १७३९ औरंगजेबके नौकर थे ।

(९२) पृथ्वीराज कवि सं० १६२४ हजारामें इनके कवित्त हैं ये कवि बीकानेरके राजा संस्कृत और भाषाके बड़े कवि थे❀ ।

(९३) लक्ष्मीनारायण मैथिल सं० १५८० ये कवि खानखानाके यहां थे ।

(९४) हरि कवि ये महान् कविथे इन्होंने चमत्कारचन्द्रिका नाम ग्रन्थ भाषा भूषणकी टीका १ और कविप्रियाभरण नाम ग्रन्थ कविप्रियाका तिलक २ विस्तारपूर्वक बनाया है और तीनों काण्ड अमरकोश भाषा किया है ।

(९५) बलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं॰ १६४२ इनका नखशिख सारे कविकोविदोंमें महाप्रामाणिक ग्रंथ हैं और भागवत पुराणपर टीका बहुत सुन्दर की है ।

(९६) विठ्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाईं वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ ये महाराज वल्लभाचार्यजीके पुत्र परमभक्त वात्सल्यनेष्ठाके हुए हैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि बहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं ।

❀ मार्कण्डेय कविने मुझसे यह कवित्त कहा था—

कवित्त—जबते सुनी है बैन तबते न मोको चैन पाती पढि नेकु सो बिलंबना लगावेगो। लेके यमदूतसो समस्त राजपूत आज आठघड़ी आगरामें ऊधम मचावेगो ॥ कहै पृथ्वीराज प्रिया नेकु उर धीर धारो चिरजीव राना ये मलेच्छन भगावैगो । मानको मरदि मान प्रबल प्रतापसिंह बब्बर लौं तडपि अकब्बर पै आवैगो ॥

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५.

(९८) पद्मनाभजी ब्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनके पद बहुत रागसागरोद्भवमें हैं-अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठीनारायण, पद्मनाभ ये सब कृष्णदासजीके शिष्य और महान्कवि हुए हैं और अग्रदासके शिष्य नाभादास थे।

(९९) प्रवीनराय पातुरी उडछा बुंदेलखण्डवासिनी सं० १६४० इस वेश्याकी तारीफमें केशवदासजीने कविप्रियाग्रंथकी आदिमें बहुत कुछ लिखा है इसके कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इसका बनाया हुआ ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिला है जिसमें इसके सैकरों कवित्त बनाए हुए हैं हमने किसी तवारीखमें नहीं देखा कि बादशाह अकबरने प्रवीनको बोलाया केवल विदित है कि अकबरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरबारमें हाजिर होनेका हुकुम दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इन्द्रजीतकी सभामें जाय ये तीन कूट कवित्त पढे (आई हौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभामें बादशाहके गई तो बादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए।

बादशाह- युवन चलत तिय देहते, चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन-मन्मथ बारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु॥ १॥

बादशाह-ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन।
प्रवीन-अब पताल वश करनको, ढरकि पयानो कीन॥ २॥

इसके पीछे जब प्रवीनने यह दोहा पढ़ा।

विनती राय प्रवीनकी, सुनिये शाह सुजान।
जूंठी पतरी भखत हैं, बारी बायस श्वान॥ १॥

तब बादशाहने बिदाई दई और प्रवीन इन्द्रजीतके पास आई।

(१००) भगवानदास निरंजनी भर्तृहरिशतक कवित्तोंमें भाषा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० रागसागरोद्भवमें पद हैं।

(१०१)मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकबर शाहके मुसाहिब फारसी संस्कृत भाषाके महान् कवि थे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करते थे।

(१०२) परमानंददास ब्रजवासी वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भवमें बहुत हैं और इनकी गिनती अष्टछापमें है।

(१०३) नवीनकवि बहुत ही सुंदर कवित्त शृंगाररसके हैं ।

(१०४) माणिकचंद्र कवि सं० १६०८ रागसागरोद्भवमें इनके पद हैं ।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५ ।

(१०६) मुकुन्दसिंह हाडा महाराजे कोटा सं० १६३५ ये महाराजा शाहजहां बादशाहके बड़े सहायक और कविताईमें महानिपुण कविकोविदोंके चाहक थे ।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारक अली बिलग्रामी सं० १६४० इनकी काव्य तौ विदित है इनका ग्रंथ कोई हमने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालयमें हैं ।

(१०८) बीरबर (बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी सं० १७७७ ये महान् कवि थे इनका बनाया हुवा कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रन्थ साहित्यमें बहुत सुन्दर और हमारे पुस्तकालयमें मौजूद है ।

(११०) दिनेशकवि इनका नख शिख बहुतही विचित्र है ॥

(१११) दानकवि शृंगारमें सरस कविता है ।

(११२) तोषीकवि ।

(११३) तेहीकवि ।

(११४) धीरज नरिंद महाराजे इंद्रजीतसिंह बुंदेला उडछावाले सं० १६१५ इन्हीं महाराजके इहां कवि केशवदास थे और प्रवीनराइ पातुरभी इन्हींकी सभामें विराजमान थी इनके समयमें उडछा बडी राजधानी थी । ❀

(११७) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी सं० १६०१ ये महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर जिले प्रयागके रहनेवाले प्रायः संवत् १५८३ के करीब उत्पन्न हुए थे और सं० १६८० में स्वर्गवास हुआ इनके जीवनचरित्रकी पुस्तक बेनीमाधवदास कवि पुसकाग्राम वासीने जो इनके साथ साथ रहे हैं बहुत विस्तारपूर्वक लिखी है उसके देखनेसे इन महा

❀ (११५) श्रीपति कविका वर्णन पहले हुआ है परन्तु वह इस दोहेका नहीं है ।

रत्नाकर कविने हमसे कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाहके नौकर थे परन्तु खुशामदी न थे कई एक कवियोंने मिलकर अकबर बादशाहके सामने (करो मिल आश अकब्बरकी) समस्या दिये परन्तु कविने स्पष्ट बादशाहको फटकारा यह कवि भक्त था वह तो कवितासे स्पष्ट ही मालूम हुआ ।

अबके सुलतां फुनियान समान हैं बांधत पाग अटब्बरकी । तजि एकको दूजो भजै जो कोऊ तब जीभ कटै वह लब्बरकी ॥ शरणागत श्रीपति श्रीपतिकी नहिं त्रास जरा कोऊ जब्बरकी । जिनको नहिं आश कछू हरिकी सो करो मिलि आश अकब्बरकी ॥

राजके सब चरित्र प्रगट होते हैं इस पुस्तकमें ऐसे विस्तार कथाको हम संक्षेप करिके वर्णन करैहैं निदान गोसाइंजी बडे महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध होगए हैं इनके बनाये ग्रन्थोंकी ठीक ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई केवल जो ग्रन्थ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालयमें हैं उनका जिकर किया जाता है प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफसीलसे—

१ चौपाई रामायण ७ कांड। २ कवितावली ७ काण्ड। ३ गीतावली ७ काण्ड। ४ छन्दावली ७ काण्ड। ५ बरवै ७ काण्ड। ६ दोहावली ७ काण्ड। ७ कुंडलिया ७ काण्ड।

और सिवाय इन ४९ कांडके १ सतसई। २ रामसलाका। ३ संकटमोचन। ४ हनुमत्‌बाहुक। ५ कृष्णगीतावली। ६ जानकीमंगल। ७ पार्वतीमंगल। ८ कडखाछंद। ९ रोलाछंद। १० झूलनाछन्द। इत्यादि औरभी ग्रन्थ बनाए हैं अन्तमें विनयपत्रिका महाविचित्र मुक्तिरूप प्राज्ञानंद सागर ग्रन्थ बनाया है चौपाई गोसाईं महाराजकी ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न विनयपत्रिकाके समान अद्भुत ग्रन्थ आज तक किसी कवि महात्माने रचा इस कालमें जो रामायण न होता तौ हम ऐसे मूर्खोंका बेड़ा पार नहीं लगता गोसाईंजी श्रीअयोध्याजी, मथुरा, वृंदावन, कुरुक्षेत्र, पराग, बाराणसी पुरुषोतमपुरी इत्यादि क्षेत्रोंमें बहुत दिनतक घूमते रहे हैं सबसे अधिक श्रीअयोध्या, काशी, पराग, उत्तराखण्ड, बंशीबट इत्यादि जिले सीतापुरमें रहे हैं। इनके हाथकी लिखीहुई रामायण जो राजापुरमें थी वह खण्डित होगई है पर मलिहाबादमें आजतक सम्पूर्ण ७ काण्ड मौजूद हैं १ पत्र नहीं है विस्तार भयसे अधिक हालात हम नहीं लिख सकते हो दोहा पर इन महाराजका वृत्तान्त समाप्त करते हैं। दोहा—कविताकरता तीनि है, तुलसी केशव सूर ❀॥ कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर॥ १॥ तुलसी रवि सूरज शशी, उडगण केशवदास॥ अबके कवि खद्योतसम, जहँ तहँ करत प्रकाश॥ २॥

इति श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र समाप्त।

❀ बाबू रघुनाथसिंहने जो दोहे मुझे दिये थे उससे मालूम हुआ कि ११७ कवि सूरदासके समयमें वर्तमान थे। इनमेसे दो तीन कविको छोड़कर सबोंका नाम "शिवसिंह सरोज" में मिलता है पर इससे (शिवसिंहसरोज) जो मैंने समय लिखा है सबका सूरदासके समयसे नहीं मिलता सूरदासका समय संवत् १६४० "शिवसिंहसरोज" में लिखा है और सूरदासजीने—

—स्वयं "साहित्यलहरी" नामक पुस्तकमें "साहित्यलहरी"के बनानेका समय सं० १६०७ लिखा है और भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने लिखा है कि संवत् १६२० के लगभगमें इन्होंने शरीर त्यागा। अब यदि सूरदासजीके जन्मसे मरण पर्यंत १२५ वर्ष रख लेते हैं तो भी संवत् १५०५ से लेकर १६२० तक होता है ॥ अब यदि संवत् १७०० से अधिकके कवियोंको सूरदासजीके सामयिक रघुनाथसिंहके दोहे और "शिवसिंहसरोज"के अनुसार ठहराया है वह यथार्थमें ठीक नहीं है। अब सोचना पड़ा कि बाबूरघुनाथसिंहके दोहे ठीक हैं कि नहीं? यह तो मुक्तकण्ठसे कहना पड़ेगा कि उस दोहेके अनेक कवियोंका सूरदासका सामयिक होना ठीक है परन्तु कई एकमें भ्रम है उसमें भी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस नामके और कवि न हुए हों परन्तु "शिवसिंहसरोज" से जो मैंने कवियोंका समय प्रकाश किया है उसमें अवश्य भ्रम है।

हरिश्चन्द्रजीने लिखा है सूरदासके समयमें तुलसीदासजी न हुए उसका कारण सोचनेसे यह मालूम होता है कि नन्ददासजीके भाई तुलसीदासजीपर ध्यान गया है क्योंकि वैष्णवोंकी चौरासी वार्तामें लिखा है कि तुलसीदास और नन्ददास भाई हैं और नन्ददासका समय संवत् १५८५ का है और तुलसीदास नन्ददासका भाई गोसाईंचरित्र उर्दूमें भी लिखा है। अथवा मीराबाईके समयपर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम" और "रामरसिकावली" तथा "हरिभक्तिप्रकाशिकामें" मीरा बाई और तुलसीदासकी बातचीत लिखी है परन्तु मीराबाईका समय तुलसीदासके समयमें मेरी सम्मतिसे नहीं है।

क्योंकि "शिवसिंहसरोज"में मीराबाईके विषयमें यह लिखा है।

मीराबाई सं० १४७५ में हुई हमने इनका जीवनचरित्र भक्तमाल तुलसीदास कायस्थकृतम देखा और तवारीख चित्तौरसे मिलाया तो बड़ा फरक पाया गया अब हम इनका हाल चित्तौरके प्राचीन प्रबन्धसे लिखते हैं ये मीराबाई माडवार देशमें राना राठौर वंशावतंसमें रेतिया देशाधिपतिके यहां उत्पन्न हुई थीं यह रियासत सारे मारवाडके फिरकोंमें उत्तरोत्तर है और मीराबाईका विवाह सं० १४७० के करीब राना मोकल देवके पुत्र राना कुम्भकरन चित्तौर नरेशके साथ हुआ था संवत् १५२५ ऊदारानाके पुत्रने रानाको मारडाला मीराबाई महास्वरूपवती और कवितामें अति निपुण थीं. रागगोविंद ग्रन्थ भाषामें बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढ़में दो मंदिर करीबमहल राना रायमलके थे। एक रानाकुम्भका और दूसरा मीराबाईका, सो मीराबाई अपने इष्टदेव श्यामनाथको उसी मंदिरमें स्थापन करि नृत्य गीत भाव भक्तिसे रिझाया करती थीं। एक दिन श्यामनाथ मीराके प्रेमवश ह्वै चौकीसे उतरि अंकमें ले बोले हे मीरा, केवल इतनाही शब्द राधानाथके मुँहसे सुनि मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकबिहारी गिरधारीके नित्यबिहारमें जाय मिली इन दोनों मंदिरोंके बनानेमें नब्बेलाख रुपया खर्च हुआ था।

मीराबाईके विषयमें तवारीख तुहफए राजस्थान' से मौलवी मुहम्मद उबैदुल्लाह फरहतीने लिखा है।

"सांगाको इस शिकस्तका निहायत रंज हुआ, वह इसी सालके अन्दर मेवाडके पहाड़ी इलाकेमें मोतसे या किसीके जहर देनेसे इन्तिकाल करगये, और उनके साथ मेवाडकी तरक्की खत्म हो गई अगर वह जिन्दह रहते तो दुबारह लड़ाईमें किस्मत आजमाई करते यह महाराणा जोरावर, खूबसूरत और दर्मियानी कदके आदमी थे। इन महाराणाके दो बेटे उनके सामने गुजर चुके थे जिनमेंसे बड़े भोजराजके साथ मेडतिया राठौर जयमलकी रिश्तहदारी बहिन मीराबाई, जिसके फकीरानह भजन अवाममें मशहूर हैं व्याही गई थी। कर्नल टाडने गलत तौरपर उसकी शादी महाराणा कुम्भाके साथ लिख दी है, जो सांगाजीके दादा थे। एशियाई मुल्कोंमें जियादह

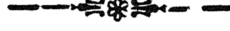
व्याह करनेसे आदतें खराब और जिस्म जईफ होनेके सिवाय हरएक औरत अपनी औलादकी बिहतरीके वास्ते हर तरहकी तदबीर करना चाहती है, जिससे बहुत खरा बियां पैदा होती हैं। इसलिये कर्नल टाडने खयाल किया है कि महाराणा सांगाको उनके खानदानमेंसे किसीने जहर दे दिया।"

अब पं० बलदेवमिश्र और पं० गनपतलाल चौबेकी बातपर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन्हें शुद्ध भ्रम होगया है जरा भक्तमाल भी पढ़े होते तो सूरदास कितने हुए हैं मालूम होजाता फिर जिस सूरदासका सूरसागर बनाया है व्यर्थ उनमें और सूरदासका हाल न लिखते। इति शम्।



॥ श्रीः ॥

अथ श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका।



इति श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर



अथ श्रीसूरदासजीरचित सूरसागर सारावली ।

तथा सवालाखपदोंका सूचीपत्र ।

राग कल्पद्रुम ॥ वन्दौं श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सब कुछ दरशाई ॥ बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास प्रभुकी शरणागत बारम्बार नमो ते पाई ॥ रागिनी काफी तालजति ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक—अविगत आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी ॥ १ ॥ जहँ वृन्दावन आदि अजर जहँ कुञ्जलता विस्तार । तहँ विहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृङ्ग गुञ्जार ॥ २ ॥ रत्न जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँ नीर । साहस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ॥ ३ ॥ जहँ गोवर्द्धन पर्वत मणिमय सघन कंदरासार । गोपिनमंडल मध्य विराजत निस दिन करत विहार ॥ ४ ॥ खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन विस्तार । अपने आप करि प्रकट कियो है हरी पुरुष अवतार ॥ ५ ॥ माया कियो क्षोभ बहु विधि करि कालपुरुषके अंग । राजस तामस सात्त्विक त्रयगुण प्रकृति पुरुषको सँग ॥ ६ ॥ कीन्हें तत्त्व प्रगट तेही क्षण सबै अष्ट अरु बीस । तिनके नाम कहत कवि सूरज निर्गुण सबके ईश ॥ ७ ॥ पृथिवी आप तेज वायू नभ संज्ञा शब्द परस अरु गन्ध । रस अरु रूप और मन बुधि चित अहंकार मति अन्ध ॥ ८ ॥ पान अपान व्यान उदान अरु कहियत प्राण समान । तक्षक धनंजय देवदत्त अरु पौण्ड्रक शंख द्युमान ॥९॥ राजस तामस सात्त्विक तीनो जीव ब्रह्मसुखधाम । अट्ठाईस तत्त्व यह कहियत सो कवि सूरज नाम ॥ १० ॥ नाभिकमल नारायणकी सो वेद गर्भ अवतार । नाभिकमलमें बहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार ॥ ११ ॥ तब आज्ञा भइ यह हरिकी अज करो परमतप आप । तब ब्रह्मा तप कियो वर्षशत दूरि भये सब पाप ॥ १२ ॥ तब दर्शन दीन्हो करुणाकर परमधाम निज लोक । ताको दर्शन देखि भयो अज सब बातन निःशोक ॥ १३ ॥ जहां आदि निज लोक महानिधि रमा सहससंयूत । आन्दोलन झूलत करुणानिधि रमासुखद अतिपूत ॥ १४ ॥ अस्तुति करै विविध नाना करि परम पुरुष आनन्द । जय जय जय श्रुति गीत गायकै पढत है नानाछंद॥१५॥ आज्ञा करी नाथ चतुरानन करो सृष्टि विस्तार ।

होरी खेलन की विधि नीकी रचना रचे अपार ॥ १६ ॥ चौदह लोक करो नाना विधि रचि वैकुंठ पताल । नाना रचना रची विधाता होरी खेल रसाल ॥ १७ ॥ दशहीपुत्र भये ब्रह्माके जिन संच्यो संसार ॥ स्वायंभुव मनु प्रकट तब कीन्हे अरु शतरूपा नार ॥ १८ ॥ भुवकी रक्षा करन जु कारण धरि वराह अवतार । पीछे कपिलरूप हरि धारचो कीन्हो सांख्य विचार ॥ १९ ॥ दीन्हों ज्ञान आप माताको कीन्हों भवनिस्तार । आठों लोकपाल तब कीये अपन अपन अधिकार ॥ २० ॥ तेज, अग्नि, यम, मरुत, वरुण औ सूर्य्य चन्द्र यह नाम । मृत्यु, कुबेर, यक्षपति कहियत जहँ शंकरको धाम ॥ २१ ॥ सत्यलोक, जनलोक, तपलोक और महर निजलोक । जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशि दिन रहत अशोक ॥ २२ ॥ जननी आज्ञा पाय चले बन पांच वर्ष सुकुमार । ताको आप कृपा हरि कीन्हीं धरि आये अवतार ॥ २३ ॥ पाछे पृथुको रूप हरि लीन्हों नाना रस दुहि काढे । तापर रचना रची विधाता बहुविधि रत्न न बाढे ॥ २४ ॥ रचि नवखंड द्वीप सातों मिलि कीन्हों जोरि समाज । वन उपवन पर्वत बहु फूले सब वसन्तको साज ॥ २५ ॥ दानव देव लगे आपसमें कीन्हो युद्ध प्रकार । विविध शस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिरकी धार ॥ २६ ॥ दीन्हें मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हीं राज । एकन को फगुवा इन्द्रासन इक पतालको साज ॥ २७ ॥ विद्याधर, गन्धर्व्व, अप्सरा गान करत सब ठाढे । चारण, सिद्ध पढत बिरुदावलि लै फगुवा सुख बाढे ॥ २८ ॥ चन्द्रलोक दीन्हो शशिको तब फगुवामें हरि आप । सब नक्षत्रको राजा दीन्हो शशिमंडल में छाप ॥ २९ ॥ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि राहु केतु यह जान । रवि अरु शशि सबहिनको फगुवा दीन्हों चतुर सुजान ॥ ३० ॥ अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान । पाताल और रसातल मिलिकै सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकर्षणको धाम परम रुचि तहँ राजत निज वीर । शेषनाग ताके तर कूरम बसत महा धन धीर ॥ ३२ ॥ इलावर्त्त औ किम्पुरुषा कुरु औ हरिवर्ष केतु माल । हिरनमय रमनक भद्रासन भरत खंड सुखपाल ॥ ३३ ॥ सातों द्वीप कहे शुक मुनिने सोइ कहत अब सूर । जंबू, प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शालमलि, कुश, पुष्कर भरपूर ॥ ३४ ॥ अपने २ स्थाननपर तब फगुवा दियो चुकाय । जब जब हरि मायाते दानव प्रकट भये हैं आय ॥ ३५ ॥ तब तब धरि अवतार कृष्णने कीन्हों असुर संहार । सो चौवीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार ॥ ३६ ॥ प्रथम किये स्वायंभुवमनु नृप अज आज्ञा यह दीन्हीं । भूपर जाय राज तुम करिहौ सृष्टि विस्तार यह कीन्हीं ॥३७॥ स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत भूमिपर आये । जलमें मगन भये भुव देखे फिरि अजपै चलि आये ॥ ३८ ॥ जासोंआय कही सबही विधि भुवद्रव देखियत नाहीं । तब अति ध्यान कियो श्रीपतिको केशव भये सहाहीं ॥ ३९ ॥ आई छींक नाकते प्रकटे शूकर अति लघु रूप । देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों बृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जय जय करत सकल सुर नर मुनि जलमें कियो प्रवेश । जाय पताल बाट गहिलीन्हीं धरणी रमानरेश ॥ ४१ ॥ ते भुवकमल कुसुमकी नाई चले मनहुँ गजराज । कछु डर नाहिंन जियमें डरपति अति आनन्द समाज ॥ ४२ ॥ योगी, साधु, सनकादिक चारों गये हरिके निज लोक । कीन्हें

क्रोध मने जब कीन्हें दियो शाप अति शोक ॥ ४३ ॥ जय अरु विजय असुर योनिनको भये तीन अवतार। तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितिकी कोखि मँझार ॥ ४४ ॥ प्रथम भयो हिरण्याक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल। नारद सीख गयो शूकरपै देखो रूप बिकराल ॥ ४५ ॥ सहस वर्षलौं जलमें जूझे कियो दनुज संहार। पाछे आय भूमिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६ ॥ स्वायम्भुव शतरूपा तनया कहियत तीन प्रमान। आकूती देवहूती औ परसूती चतुर सुजान ॥ ४७ ॥ परसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सती सयान। सो दीन्हीं महादेव देवको अति आनंद सुज्ञान ॥ ४८ ॥ तज्यो देह अपमान पायके बहुरि दक्षगृहजाई। पातिव्रतहि धर्म जब जान्यो बहुरो रुद्र बिहाई ॥ ४९ ॥ आकूती दई रुचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार। इन्द्रासन बैठे सुख विलसत दूर किये भुवभार ॥ ५० ॥ देवहुती कर्दमको दीन्हों तिन कीन्हों तप भारी। बिन्दुसरोवर आये माधव किये गरुड असवारी ॥ ५१ ॥ दियो बरदान सृष्टि करिबेको अस्तुति करी प्रमान। मेरो अंश अवतार होयगो कहि भये अन्तर्द्धान ॥ ५२ ॥ पाछे ऋषि निज तप मनलायो कीन्हों प्रगट विमान। तामें बैठि सकल जग देख्यो कन्या नौ सुखदान ॥ ५३ ॥ पाछे कपिलरूप हरि प्रगटे दर्शनकरि मुनिराय। कीन्हों त्याग गये वनको तब ब्रह्म परमपद पाय ॥ ५४ ॥ पाछे विविध ज्ञान जननीको दीन्हों कपिल दृढाय। सांख्ययोग अरु ज्ञान-भक्ति दृढ़ वरणी विविध बनाय ॥ ५५ ॥ जलको रूप तुरत ह्वैगई वह हरिके रूप समाय। चले मगन ह्वै ब्रह्मध्यान कर गंगासागर न्हाय ॥५६॥ अजहूंलौं राजत नीरधि तट करत सांख्य विस्तार। सांख्यायनसे बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार ॥ ५७ ॥ अत्रै पुत्र भये ब्रह्माके तिन कीन्हों तप जाय। आये तीन देव ताके ढिग ब्रह्मा शिव हरिराय ॥ ५८ ॥ तब उन मांग्यो सुत तुमहींसे तीनों प्रगटे आय। अज शशि अंश, रुद्र दुर्वासा; दत्तात्रेय हरिराय ॥ ५९ ॥ अनसूयाके गर्भ प्रगट ह्वै कियो योग आराधि। यम अरु नियम प्राण प्रत्याहार धारण ध्यान समाधि ॥ ६० ॥ आसनके सब सिद्ध योग कर प्रगट कला जगदीश। दीन्हों भोग सहस नृपको बहु करुणानिधि जगदीश ॥ ६१ ॥ कीन्हें गुरु चौबीस सीख लै यदुको दीन्हों ज्ञान। पातंजलिसे मुनि पद सेवक करत सदा अज ध्यान ॥ ६२ ॥ जब सृष्टिनपर किरपा कीन्हीं ज्ञानकला विस्तार। सनक सनंदन और सनातन चारों सनतकुमार ॥ ६३ ॥ उनसे कह्यो सृष्टि नानाविधि रचना करो बनाय। उन नहिं मान्यो तब चतुरानन खीझे क्रोधउपाय ॥ ६४ ॥ शंकर प्रगट भये भ्रुकुटीते करो सृष्टि निर्मान। भूत प्रेत बेताल रचो बहु दौरे विधिको खान ॥ ६५ ॥ पूरण करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख दैन। तब शंकर तपस्याको निकसे चिंते कमलदलनैन ॥ ६६ ॥ मूरति त्रिया जु भई धर्मकी तिनके हरि अवतार। नारायण जब भये प्रकट वपु तिन मेट्यो भुवभार ॥ ६७ ॥ सहस कवच इक असुर सँहारेउ बहुरि कियो तप भारी। शोच परेउ सुरपतिको तब उन पठइ अप्सरा नारी ॥ ६८ ॥ बहुत भांति उन कियो परमछल तपमें उनके काज। कछु नहिं चली ब्रह्मनारायण सुखसमाज तिय साज ॥ ६९ ॥ इक उर्वशी हृदय उपजाई दई शक्रको ताय। ताको देखिदिखि जीवतहैं अजहुँ इन्द्र सुख

पाय ॥ ७० ॥ स्वायंभुवके द्विितिय पुत्र उत्तानपाद मतिधीर । तिनके ध्रुव बालक जो जाये औ उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥ नृपके पास गये गोदीमें बैठनको सुकुमार । तब लघु मात कह्यो तब बैठो जब मेरे अवतार ॥ ७२ ॥ सुनि कटु वचन गयो माता पै तब उन ज्ञान दृढायो । हरिकी भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख पायो ॥ ७३ ॥ पांचवर्षके निकसि चले तब मधुवन पहुँचे आय । बिच नारद मुनि तत्त्व बतायो जपैं मंत्र चितलाय ॥ ७४ ॥ कछुदिन पत्र भक्ष करि बीते कछुदिन लीन्हों पानी । कछुदिन पवन कियो अनुप्राशन रोंक्यो श्वास यह जानी ॥ ७५ ॥ दारुण तप जब कियो राजसुत तब कांप्यो सुरलोक । त्राहि २ हरिसों सब भाख्यो दूर करो सब शोक ॥ ७६ ॥ तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अबहिं तुरत मैं जैहौं । बालक ध्रुव वन करत गहन तप ताहि तुरत फल देहौं ॥७७॥ इतनी कहत गरुड़ पर चढिके तुरतहि मधुवन आये । कंबुकपोल परसि बालकके वाणी प्रकट कराये ॥ ७८ ॥ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब विधि सुनि प्रसन्न भये आप । दीये राज भूमिमण्डलको सब विधि थिरकरि थाप ॥ ७९ ॥ हरि वैकुंठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने धाम । कीन्हों राज तीस षट वर्षन कीन्हें भक्तन काम ॥ ८० ॥ यक्ष प्रबल बाढे भुव मंडल तिन मारचो निज भ्रात । तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ बहुत वर्षलौं राज कियो भुव फिर आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरानन ब्रह्म जीवको बीच । प्रगट हंसवपु धरचो जगत पुर जोपै नीर सुमीच ॥ ८३ ॥ यह भुवमण्डल को रस काढ्यो भांति २ निज हाथ । धरि पृथुरूप कियो जग आनँद अखिल लोकके नाथ ॥८४॥ प्रियव्रत वंश धरेउ हरि निजवपु ऋषभ देव यह नाम । कीन्हें काज सकल भक्तनको अंग २ अभिराम ॥ ८५ ॥ कीन्हों गर्व महा मघवाने वर्षा बरषो नाहिं । तब हरि आप मेघह्वै बरषे करी परम सुख छाहिं ॥ ८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रनको ब्रह्मावर्त मझार । पाछे करि संन्यास जगत्में विचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठों सिद्ध भई सन्मुख जब करी न अंगीकार । जय जय जय श्रीऋषभदेव मुनि परब्रह्म अवतार ॥ ८८ ॥ ब्रह्मसभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार । प्रगटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ॥ ॥ ८९ ॥ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रहो छिपाय । धरि हयग्रीव रूप हरि मारचो लीन्हें वेद छुडाय ॥ ९० ॥ सत्यव्रत राजा रघुवंशी प्रथम भये मनुवंस । कीन्हों तप बहु भांति परमरुचि प्रकट भये हरिअंश ॥ ९१ ॥ धरि लघुरूप मीनको मोहन आये उनके पानि । तब उन जलमें डारिदियो फिर तब बोले हरि वानि ॥ ९२ ॥ जलके बीच डारि जिन मोकों बडे मच्छ डर लाग । यह कहि बृहतरूप हरि धारेउ सत्यव्रतके भाग ॥९३॥ सतयें दिवस होयगी परलय आवेगी इकनाव । तामें बैठ सप्तऋषि अरु तुम करो भजन मम भाव ॥ ९४ ॥ इतनो कहि हरि नृप देखतही भये जो अन्तर्धान । सातैं दिवस भयो जब परलय तब कीन्हों नृप ज्ञान ॥ ९५ ॥ सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लियो ऋषि साथ । बैठो नावध्यान हरिका करि दरशन दीन्हों नाथ ॥ ९६ ॥ वासुकि नाग आय तहँ तत्क्षण बांधी दृढकरि नाव । पूंछचो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान

बनाव ॥ ९७ ॥ बहुत काललौं विचरे जलमें तब हरि भये सुसांति । बीसै प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहुभाँति ॥ ९८ ॥ यह हरि मच्छरूप जब लीन्हों कियो चरित विसतार । जय जय जय श्रीमीन महावपु जय जय जगत अधार ॥ ९९ ॥ सुर अरु असुर मथन कीन्हों निधि चौदह रतन निकार । पर्वत पीठ धरेउ हरिनीके लियो कूर्म अवतार ॥ १०० ॥ हिरण्य कशिपु अति प्रबल दनुज है तप कीन्हों परचण्ड । तब उन वर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमर अखण्ड ॥ १०१ ॥ जब तप गयो तबहिं मघवाने सब संपति गहि लीन्हीं । गहे जब कच कामिनि राजाकी तब नारद सिख दीन्हीं ॥ १०२ ॥ याके गर्भ बसतहै हरिजन सुनु सुरपति यह बात । तब तजिदई आप लै आये निज आश्रम विख्यात ॥ १०३ ॥ नित प्रति ज्ञानकथा हंसनसों कहत रहत मुनिराज । सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोखिमें अति आनंद समाज ॥ १०४ ॥ ता पाछे तप कियो असुरबहु फिरि देख्यो निजधाम । तब नारद मुनि दई कथा ध्रुव लै आयो है ग्राम ॥ १०५ ॥ पाछे लोकपाल सब जीते सुरपति दियो उठाय । वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुबस कियो क्षण माँय ॥ १०६ ॥ हाहाकार भयो सुरलोकन गये सबै अजपास । तब अज ध्यान कियो माधवको वाणी भई अकास ॥ १०७ ॥ सकललोक यह देत असुर दुख तऊ न करौ सँहार । जब मेरे जनको दुख दैहै क्षणहिंमें डारौं मार ॥ १०८ ॥ जब प्रह-लाद प्रकट ताके गृह पांच वर्षके भैहैं । आदर बहु कीन्हों राजाने पढन विप्रगृह गैहैं ॥ १०९ ॥ जब वह विप्र पढावै कुछ २ सुनके चित धरि राखै । जब वह जाय तबहिं सबहिनसों राम राम मुख भाखै ॥ ११० ॥ लरिका और पढत शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन करो सबही मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सबनको किये भजन रसलीन । षण्डामर्क जो पूंछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ॥ ११२ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज । सोई सार जगतमें कहियत सुनो देव द्विजराज ॥ ११३ ॥ येही बात जगत्में नीकी सोइ पढत हम आज । जबहीं विप्र कहेउ जो असुरसों पुत्र पढत बिनकाज ॥ ११४ ॥ तबहिं असुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरिअंक । कहो पुत्र तुम कहा पढौहौ पूँछत कहेउ निशंक ॥ ११५ ॥ श्रवण, कीर्त्तन, स्मरणपाद, रत, अरचन, बंदन, दास । सख्य और आतमा निवेदन प्रेमलक्षणा जास ॥ ११६ ॥ सुनो पिता हौं यही पढयो हूं और बात नाहिं जानूं । इतने और मोहिं जो कहियत सो कबहूं नाहिं मानूं ॥ ११७ ॥ दीन्हों पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ । रे मूरख तू कहा पढायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ॥ ११८ ॥ जो यह मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढायो । देहुगिराय याहि पर्वतते क्षण गतजीव करायो ॥ ११९ ॥ दीन्हों डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो । डारि अग्निमें शस्त्रन मारो नाना भांति प्रहारो ॥ १२० ॥ तऊ न घात भई अंगनकी जहँ तहँ राम बचायो । तब नृप आप शस्त्रकर गहिकैं बहुतहि त्रास दिखायो ॥ १२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गर्जन कीन्हीं । घट घट जल थल व्योम धरणिमें व्यापक यह ध्वनि लीन्हीं ॥ १२२ ॥ तब लै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी । प्रगट भये नरहरि वपुधरि हरि कट

कट करि उच्चारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर बल डारो नखन विदारी । रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४ ॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमें जय नृसिंहवपु धारे पुष्पन वृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो । अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो ॥ १२६ ॥ अपनी अपनी अस्तुति करिकै सबहिन यहै सुनायो । गंधर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो १२७ ॥ तब प्रह्लाद आय हरि पदसों शीशनाय यह भाख्यो । जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥ ॥ १२८ ॥ तुमहीं आदि अखंड अनूपम अशरण शरण मुरार । देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥ १२९ ॥ जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ होत सहाय । अस्तुति करि मन हर्ष बढायो लेहन जीभ कराय ॥ १३० ॥ तब बोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम बात । मन्वन्तरको राज दियो तोहिं धरयो शीशपर हाथ ॥ ॥ १३१ ॥ निर्गुण सगुण होय मैं देख्यो तोसों भक्त न पाऊं । जहँ जहँ परत भीर भक्तनको तहां प्रकट हो आऊं ॥ १३२ ॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको कबहुँ न त्यागूँ । जैसे धेनु बच्छको चाटत तैसे मैं अनुरागूँ ॥ १३३ ॥ जो मांगो सो देहुँ तुरतही नाहिं बिलम्ब कछु लाग । तब प्रह्लाद यही बर मांग्यो चरण कमल अनुराग ॥ १३४ ॥ करी कृपा दीन्हों करुणानिधि अटल भक्ति थिरराज । अंतर्धान भये हरि तहँते सफल भये सब काज ॥ १३५ ॥ नारदरूप जगत उद्धारण विचरत लोकन माय । करि उपदेश ज्ञान हरिभक्तहि अरु बैराग्य दृढाय ॥ १३६ ॥ स्वायंभुवशतरूपा दोऊ कहियतहैं अवतार । जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥ १३७ ॥ करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लै हाथ । आयुर्वेद विस्तारण कारण सब ब्रह्माण्डके नाथ ॥ १३८ ॥ क्षत्रिय दुष्ट बढे जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार । परशुराम ह्वैकै द्विजथापे दूर कियो भूभार ॥ १३९ ॥ रघुकुलवंश चतुर चूडामणि पुरुषोत्तम अवतार । दशरथके गृह जन्म लियो हरि रामरूप सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप बढे सकल जगमाहिं । सबहिन लोकपाल उन जीते कोऊ बाच्यो नाहिं ॥ १४१ ॥ सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास । लै शिवसंग चले चतुरानन क्षीरसिन्धु सुखवास ॥ १४२ ॥ अस्तुति करि बहुभांति जगाये तब जागे निजनाथ । आज्ञा दई जाय कपिकुलमें प्रकटो सब सुर साथ ॥ १४३ ॥ तब ब्रह्मा सबहिनसों भाष्यो सोई सब सुर कीन्हों । सातों द्वीप जाय कपिकुलमें आय जन्म सुरलीन्हों ॥ १४४ ॥ अपने अंश आपहरि प्रकटे पुरुपोत्तमनिजरूप । नारायण भुवभार हरोहै अति आनन्द स्वरूप ॥ १४५ ॥ वासुदेव यों कहत वेदमें हैं पूरण अवतार । शेष सहसमुख रटत निरंतर तऊ न पावत पार ॥ १४६ ॥ सहसवर्षलौं ध्यान कियो शिव रामचरित सुखसार । अवगाहन करिकै देख्यो तऊ न पायो पार ॥ १४७ ॥ विती समाधि सतीं तब पूछ्यो कहो मर्मगुरुईश । काको ध्यान करत उरअंतर को पूरण जगदीश ॥ १४८ ॥ तब शिव कहेउ राम अरु गोविंद परमइष्ट इक मेरे । सहसवर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण सुख

कैरे ॥ १४९ ॥ तामें रामसमाधि करी अब सहसवर्ष लौं वाम । अतिआनन्द मगन मेरो मन अंग अंग पूरण काम ॥ १५० ॥ दाया करि मोको यह कहिये अमर होहुँ जेहिभांति । मोहिं नारद मुनि तत्त्वबतायो ताते जिय अकुलाति ॥ १५१ ॥ तब महादेव कृपाकरिकै यह चरित कियो विस्तार । सो ब्रह्मांडपुराण व्यासमुनि कियो वदन उच्चार ॥ १५२ ॥ मुनिवाल्मीकि कृपा सातो ऋषि राम मंत्र फल पायो । उलटो नाम जपत अघबीत्यो पुनि उपदेशकरायो ॥ १५३ ॥ ॥ रामचरित वर्णनके कारण वाल्मीकि अवतार । तीनों लोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार ॥ १५४ ॥ शतकोटी रामायण कीनों तऊ न लीन्हों पार । कह्यो वसिष्ठमुनि रामचन्द्रसों रामायण उच्चार ॥ १५५ ॥ कागभुशुंड गरुडसों भाष्यो रामचरित अवतार । सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र यशसार ॥ १५६ ॥ कछु संक्षेप सूर अब वर्णत लघुमति दुर्बल बाल । यह रसना पावनके कारण मेटन भव जंजाल ॥ १५७ ॥ तीनों व्यूह संगलै प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम । संकर्षण प्रद्युम्न लक्ष्मण भरत महासुख धाम ॥ १५८ ॥ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतु है चतुर्व्यूह निजरूप । रामचन्द्र प्रकटे गृहमें हरषे कोशलभूप ॥ १५९ ॥ पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लग्न शुद्ध शुभवार । प्रगटभये दशरथ गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार ॥ १६० ॥ अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो । सौमित्रा कैकई मन आनंद यह सबहिन सुत जायो ॥ १६१ ॥ गुरु वसिष्ठ नारदमुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी । रामचन्द्र विख्यात नाम यह सुर मुनिकी सुधि लीनी १६२ ॥ देत दान नृप राज द्विजनको सुरभी हेम अपार । सब सुंदरि मिलि मंगल गावत कंचन कलश दुवार ॥ १६३ ॥ आयो देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख भारी । अपने अपने धाम चले सब परममोद रुचिकारी ॥ १६४ ॥ मनवांछित फल सबहिन पाये भयो सबन आनंद । बालरूप ह्वैकै दशरथसुत करत केलि स्वच्छंद ॥ २६५ ॥ घुटुरुन चलत कनक आँगनमें कौशल्या छबि देखत । नील नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत ॥ १६६ ॥ कबहूं माखन रोटी लैकै खेल करत पुनि मांगत । मुख चुंबत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत ॥ १६७ ॥ कागभुशुण्ड दरशको आये पांच वर्षलौं देखे । स्तुति करी आपु बरपायो जन्म सफल करिलेखे ॥ १६८ ॥ कृपा करी निज धाम पठायो अपनो रूप दिखाय । वाके आश्रम कोउ बसत है माया लगत न ताय ॥ १६९ ॥ प्रातकाल उठि जननि जगावत उठो मेरे वारे राम । उठि बैठे दँतुवन लै आई करी मुखारी श्याम ॥ १७० ॥ चारों भ्रात मिलकर कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल आचमन आरती करिकै फिरि कीन्हों अस्नान ॥१७१॥ करत शृंगार चार भइया मिलि शोभा वरणि न जाई । चित्र विचित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुष छबि छाई ॥ १७२ ॥ अलकावलि मुक्तावलि गूंथी डोर सुरंग विराजै । मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति यमुना मध्य विराजै ॥ १७३ ॥ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो । मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदयसो कीनो । १७४ ॥ खंजन नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार । खंजन युग मनो लरत लराई करि बुझावत रार ॥ १७५ ॥ नासाके बेसरमें मोती वरण विराजत चार । मनो जीव शनि शुक्र

एक ह्वै बाढे रविके द्वार ॥ १७६ ॥ कुंडल ललित कपोल विराजत झलकत आभागंड । इन्दीवरपर मनो देखियत रविकी किरण प्रचंड ॥ १७७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि चारु चिबुक मुसक्यान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिमबीज समान ॥ ॥ १७८ ॥ कंठसिरी बिच पदिक विराजत बहुमणि मुक्ताहार । दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत बहुबार ॥ १७९ ॥ रत्नजटित कंकण बाजूबंद नगन मुद्रिका सोहै । डार डाह मनु मदन बिटपतरु बिकच देखिमन मोहै॥१८०॥कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत किलकारी । नूपुरध्वनि पग लालि पन्हैयां उपमा कौन विचारी ॥ १८१ ॥ भूषण बसन आदि सब रचि रचि माता लाड लडावै रामचन्द्रकी देखमाधुरी दर्पण देख दिखावै ॥ १८२ ॥ निज प्रतिबिंब विलोक मुकुरमें हँसत राम सुखरास । तैसेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास ॥ १८३ ॥ दशरथ राय न्हाय भोजन को बैठे अपने धाम । लावो वेगि राम लक्ष्मणको सुनि आये सुखधाम॥१८४॥ बैठे सँग बाबाके चारों भैया जेंवन लागे । दशरथ राय आपु जेंवत हैं अति आनँद अनुरागे ॥ १८५ ॥ लघु लघु ग्रास राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत । बालकेलिको विशद परमसुख सुखसमुद्र नृप झेलत ॥ १८६ ॥ दाल भात घृत कढी सलोनी अरु नाना पकवान । आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अतिआनन्द निधान ॥ १८७ ॥ अचवनकर पुनि जल अचवायो जब नृप बीरा लीनो । रामलषण अरु भरत शत्रुहन सबहिन अचवन कीनो ॥ १८८ ॥ बीरा खाय चले खेलनको मिलिकै चारों वीर । सखासंग सब मिले बराबर आये सरयू तीर ॥ १८९ ॥ तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत । कबहुँक सधे अश्व चढि आपुन नानाभाँति नचावत ॥ १९० ॥ कबहुँक चारभ्रात मिलि अगिआ जात परम सुख पावत । हरिन आदि बहुजंतु किये बध निज सुरलोक पठावत ॥ १९१ ॥ यहि विधि वन उपवन बहुक्रीडा करी राम सुखदाई । वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर कछुयक सूर जो गाई ॥ १९२ ॥ भई सांझ जननी टेरत है कहां गए चारों भाई । भूख लगी ह्वै है लालनको लावो वेगि बुलाई ॥ १९३ ॥ इतने मांझ चार भैया मिलि आये अपने धाम । मुखचुंबत आरती उतारत कौशल्या अभिराम ॥ १९४ ॥ सौमित्रा कैकयि सुख पावत बहुविधि लाड लडावत । मधुमेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत ॥ १९५ ॥ चारों भ्रातन श्रमित जानिकै जननी तब पौढाये । चापत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये ॥ १९६ ॥ आई नींद राम सुख पायो दिनको श्रम विसरायो । जागे भोर दौरि जननीने अपने कंठ लगायो ॥ १९७ ॥ विश्वामित्र बड़े मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम । मारिच और सुबाहु महासुर विघ्न करत दिनयाम ॥ १९८ ॥ परब्रह्म अवतार जानिकै आये नृपके पास । दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास ॥ १९९ ॥ भोजन कर जबहीं जु विराजे तब भाष्यो मुनिराय । यज्ञ सफल कीजै मेरो अब दीजै राम पठाय ॥ २०० ॥ तब नृप कह्यो राम हैं बालक मोको आज्ञा कीजै । तब द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै ॥ २०१ ॥ गुरु वशिष्ठ सब विधि समझाये राम लषन सँग दीन्हें । मारगमें अहल्या उद्धारी नावक निज पद

छीने ॥ २०२ ॥ विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार। मारगमें ताड़का जु आई धाई वदन पसार ॥ २०३ ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी नेक न लागीबार। दीन्ही मुक्ति जानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ २०४ ॥ कीन्हें विप्र यज्ञ परिपूरण असुर विघ्नको आये। अग्निबाण कर दहन कियो है एक समुद्र पठाये ॥ २०५ ॥ जनक विदेह कियो जु स्वयम्बर बहु नृप विप्र बुलाये। तोरन धनुष देव त्र्यम्बकको काहू यतन न पाये ॥ २०६ ॥ विश्वामित्र मुनि वेग बुलाये सकल शिष्य लै संग। राम लषण सँग लिये आपने चले प्रेमरसरंग ॥ २०७ ॥ जहँ तहँ उझकि झरोखा झांकत जनक नगरकी नार। चितवनि कृपाराम अवलोकत दीन्हों सुख जो अपार ॥ २०८ ॥ कियो सन्मान विदेह नृपतिनै उपवनवासी कीन्हों ॥ देखन राम चले निजपुरको सुख सबहिनको दीन्हों ॥ २०९ ॥ सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग। अद्भुत नगर विदेह विलोकित सुख पायो सब अंग ॥ २१० ॥ कहत नारि सब जनक नगरकी विधि सों गोदपसार। सीताजूको बर यह चहिये है जोरी सुकुमार ॥ २११ ॥ अपने धाम फिरे तब दोऊ आये जान भई सांझ। कर दण्डवत परसिपद ऋषिके बैठे उपवन मांझ ॥ ॥ २१२ ॥ संध्या भई कृत्य नित करिकै कीन्हों ऋषि परणाम। पौढे जाय चरण सेवा द्विज करके अति विश्राम ॥ २१३ ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई। कर परणाम देवगुरु द्विजको जल सुस्नान कराई २१४ ॥ आयेभूप देश देशनके जुरी सभा अतिभारी। तहां बुलाये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी ॥ २१५ ॥ कौशिक मुनि तहँ छबिसों पधारे लिये शिष्य सँग सात। चले नित्य आह्निक सबकर द्विज उर आनँद न समात ॥ २१६ ॥ दोनों भ्रात संगमें लीन्हे आये राजदुआर। जहँ बैठे सब भूप ओपसों बाढ्यो गर्व अपार ॥ ॥ २१७ ॥ अपने अपने भुज बलतोलत तोरन धनुषपुरार। कछु नाहिं चलत खिसाय गये सब रहे बहुत पचिहार ॥ २१८ ॥ सीता कहत सहेलिनसों पुनि यही कहत रघुनंद। तब उन कह्यो सकल सुखसागर सो ये परमानंद ॥ ॥ २१९ ॥ बार बार जिय शोचकरत हैं विधिसों वचन उचारी। मन क्रम वचन यहै बर दीजो मांगत गोदपसारी ॥ २२० ॥ एक बार सुरदेवी पूजत भयो दरश सखि मोहिं। तादिनते छिन कल न परत है सत्य कहत हौं तोहिं ॥ २२१ ॥ सब नृपपचे धनुष नाहिं टूट्यो तब विदेह दुख पायो। क्रोध वचनकरि सबसे बोले क्षत्री कोउ न रहायो ॥ २२२ ॥ यह सुनि लक्ष्मण भये क्रोधयुत विषम वचन यों बोले। सूरजवंश नृपति भूतलपर जाके बल बिन तोले ॥ २२३ ॥ कितक बात यह धनुष रुद्रको सकल विश्व कर लैहौं। आज्ञापाय देव रघुपतिकी छिनकमांझ हठगैहौं ॥ २२४ ॥ सबके मनको देख अँदेशो सीता आरत जानी। रामचन्द्र तबही अकुलाने लीन्हों शारँग पानी ॥ २२५ ॥ छिनमें कर लैकै जु चढायो देखत हैं सब भूप। डार्यो तोर अवात शब्द भयो जैसे कालको रूप ॥ २२६ ॥ सबही दिशा भई अति आतुर परशुराम सुनि पायो। परशुसम्हार शिष्य संग लैकै छिनहीमें तहँ आयो ॥ २२७ ॥ जयजयकार भयो जगतीपर जनकराज अति हरषे। सुर विमान सब कौतुक भूले जयध्वनि सुमनन बरषे ॥ २२८ ॥ जनकराज तब विप्र पठाये वेगबरात बुलाई।

दशरथराज बाजि गज लैके सबहीं सौजतुराई ॥ २२९ ॥ चली बरात विपुल धन लैकै जुरे मनुज नहिंपार । शोभासिंधु करत नहिं आवे वर्णन करतउचार ॥ २३० ॥ गुरु वसिष्ठ मुनि लग्न दियो शुभ शुभनक्षत्र शुभवार । आये जान नृपति सम्माने कीन्हीं अति मनुहार ॥ २३१ ॥ ब्याह केलि सुख वर्णन कीन्हों मुनि वाल्मीकि अपार । सो सुख सूर कह्यो वह कीरति जगतकरी विस्तार ॥ २३२ ॥ वेद शास्त्र मथ करी व्याहविधि सोइ कीन्हीं नृपराय । राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारों दिये बिवाय ॥ २३३ ॥ होम हवन द्विजपूजा गणपति सूरजशक्र महेश । दीन्हों दान बहुत विप्रनको राजा मिथिल नरेशा ॥ २३४ ॥ उत्सव भयो परम आनंदको बहुत दायजो दीन्हों । भये बिदा दशरथनृप नृपसों गमन अवधपुर कीन्हों ॥ २३५ ॥ भृगुपति आयजानि जब रघुति मिले धाय शिरनाय । दशरथराय बिनय बहुकीन्हीं जियमें अति डरपाय ॥ २३६ ॥ तब मुनिकह्यो धनुप क्यों तोरेउ रुद्र परमगुरु मेरे । रामचंद्र पूरणपुरुषोत्तम नेक नयन जब हेरे ॥ २३७ ॥ लीन्हों खैंचि भृगुपतिको अपनेरूप समायो । करो जाय तप शैल महेंद्रपै सुनि मुनिवर शिरनायो ॥ २३८ ॥ अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगरशृंगार । कदलीखंभ चौक मोतिनके बांधी बंदनवार ॥ २३९ ॥ कियो प्रवेश राजभवनमें रामचंद्र सुखराश । अद्भुत भवन बिराजत रत्नन सूरजकोटि प्रकाश ॥ २४० ॥ द्वादश बरष बिराजे बालक फिर भूभार हरो । कैकेयी बचन प्रमान किये नृप तब यह काज करो ॥ २४१ ॥ वचन समझ नृप आज्ञाकीन्हीं देव उपाय करो । रामचंद्र पितु आज्ञा मानी जियमें वचन धरो ॥२४२॥ यह भू भार उतारन रघुपति बहुत ऋषिन सुखदेन । वनोबासको चले सियासँग सुखनिधि राजिवनैन ॥ २४३ ॥ मारगमें हरि कृपा करी है परमभक्त इकजान । तहँते गये जु चित्रकूटको जहां मुनिनकी खान ॥ २४४ ॥ वाल्मीकि मुनि वसत निरंतर राममंत्र उच्चार । ताको फल यह आज भयो मोहिं दर्शन दियो कुमार ॥ २४५ ॥ पूजाकर पधराय भवनमें रामचन्द्र परनाम । कियो विविधविधि पूजा करिकै ऋषिचरनन शिरनाम ॥ २४६ ॥ बहुत दिवसलौं बसे जगतगुरु चित्रकूट निजधाम । किये सनाथ बहुत मुनिकुलको बहुविधि पूरे काम ॥ २४७ ॥ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःसह परम वियोग । आये धाय संग सब लैकै पुरवासी गृहलोग ॥ २४८ ॥ विन दशरथ सब चले तुरतही कोशलपुरके बासी । आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी मिटी उदासी ॥ २४९ ॥ रामचन्द्र पुनि सबजन देखे पिता न देखन पाये । पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहुविधि बिलखाये ॥ २५० ॥ वेदरीति करि रघुपति सबबिधि मर्य्यादा अनुसार । बहुतभांति सब विधि समुझाये भरत करी मनुहार ॥ २५१ ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि कह्यो भरतसों रामब्रह्मअवतार । वनमें जाय बहुत मुनि तारे दूर करैं भुवभार ॥ २५२ ॥ पुनि निज विश्वरूप जो अपनो सो हरिजाय देखायो । आज्ञा पाय चले निजपुरको प्रभुहि गीत समझायो ॥ २५३ ॥ कछु दिन बसे जु चित्रकूटमें रामचन्द्र सहभ्रात । तहँते चले दंडकावनको सुखनिधि साँवलगात ॥२५४॥ मारगमें बहुमुनिजन तारे अरु विराधरिपु मारे । वंदनकर शरभंग महामुनि अपने दोष निवारे ॥ २५५ ॥ दरशन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी पग धारे । तहां दुष्ट शूर्पणखा

नारी करि बिननाक उधारे ॥ २५६ ॥ यहसुनि असुर प्रबल दलआये छिनमें राम सँहारे। कीन्हें काज सकल सुर मुनिके भुवके भार उतारे ॥ २५७ ॥ मुनि अगस्त्य आश्रम जु गये हरि बहुविधि पूजा कीन्हीं। दिव्य बसन दीने जब मुनिने फिर यह आज्ञा दीन्हीं ॥ २५८ ॥ दशकंधरको वेगि सँहारो दूरकरो भुजभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनककुमार ॥ २५९ ॥ शूर्पणखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हाथ। रावणक्रोध कियो अतिभारी अधर फरक अतिगात ॥ २६० ॥ गयो मारीच आश्रमहिं तबहीं वाने बहु समझायो। तब मारीच कह्यो दशकंधर बिनती बहुत करायो ॥ २६१ ॥ रामचन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर मारनको सुनि वह भयो उदास ॥ २६२ ॥ करगहि खड्ग तोर वध करिहैं सुनि मारिच डर मान्यो। रामचन्द्रके हाथ मरूंगो परम पुरुष फल जान्यो ॥ २६३ ॥ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं। रामचन्द्र कर सायक लैकै मारनकी विधि कीन्हीं ॥ २६४ ॥ मारचो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नाम पुकारेउ। लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट विचारेउ ॥ २६५ ॥ धरिकै कपटभेष भिक्षुकको दशकन्धर तहँ आयो। हरिलीन्हों छिनमें माया करि अपने रथ बैठायो ॥ २६६ ॥ चल्यो भाज गोमायु जंतुज्यों लैकै हरिको भाग। इतने रामचन्द्र तहँ आये परमपुरुष बडभाग ॥ २६७ ॥ जब माया सीता नहिं देखी जियमें भये उदास। पूंछन लगे राम द्रुमगनसों बहुत बढी दुखत्रास ॥ २६८ ॥ मारगमें जटायुखग देख्यो विकल भयो तनुहीन। बिनती करी राम मैं तासों बहुतलडाई कीन ॥ २६९ ॥ जब तनु तज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी। जान्यो सखा राय दशरथको अपनी निजगति दीनी ॥ २७० ॥ मारगमें कबंधरिपु मारचो सुरपति काज सँवारचो। पंपापुर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारयो ॥ २७१ ॥ शबरी परमभक्त रघुपतिकी बहुत दिननकी दासी। ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी। २७२ ॥ दीन मुक्ति निजपुरकी ताको तब रघुपति चले आगे। सीतासीता विलपत-डोलत परम विरहसों पागे ॥ २७३ ॥ रविनन्दन जब मिले रामको अरु भेटे हनुमान। अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बडो बलवान ॥ २७४ ॥ सप्तताल वेधन हरि कीन्हों बालि छिनकमें तारो। दीन्हों राज राम रविनन्दन सब विधि काज सँवारो ॥ २७५ ॥ सप्तद्वीपके कपिदल आये जुरी सेन अति भारी। सीताकी सुधि लेन चले कपि ढूँढत विपिन मँझारी ॥ २७६ ॥ जल निधि तीर गये सब कपि मिल सुन संपातिकी बानी। लंकबसत सीता रिपु बनमें सब बानर यह जानी ॥ २७७ ॥ रामचरण कर सुमिरण मनमें चले पवनसुत धाय। रामप्रताप विघ्न सब मेटे पैठि नगर सुखपाय ॥ २७८ ॥ धरि लघुरूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मँझार। रामभक्त निज जान विभीषण भेटे हरि अँकवार ॥ २७९ ॥ तब वाने सब भेद बतायो देखी कपिसबलंक। रामचरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशंक ॥ २८० ॥ जाय अशोकवाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह। कर दण्डवत बहुत बिनती कर राम मुद्रिका दीन्ह ॥ २८१ ॥ सब संदेश कह्यो कपि सियप्रति सुनि हियमें धरि राख्यो। राम संदेश कहेउ

तब सीता जो बूझो सो भाख्यो ॥ २८२ ॥ लागी भूख चले उपवनमें नानाविधि फल खायो। विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दरशायो ॥ २८३ ॥ सुनि पुकार निश्चर बहु आये कूदि सबन संहारे। इंद्रजीत बलनिधि जब आयो ब्रह्मअस्त्र उन डारे ॥ २८४ ॥ तासों बँधे दशानन देखत चले पवनसुत धीर। रावण बहुत ज्ञान समझायो कथ २ कथा गँभीर ॥ २८५ ॥ चले छुड़ाय छिनकमें तबही जारदई सब लंक। कूदि-चले गजवनको जयकर ज्यों मृगराज निशंक ॥ २८६ ॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय जहँ राम। सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अति अभिराम ॥ २८७ ॥ करि कपिकटक चले लंकाको छिनमें बांध्यो सेत। उतरगये पहुँचे लंकापै विजय ध्वजा संकेत ॥ २८८ ॥ पठयें वालिकुमार विनयकरि समझाये बहुबार। चित्त न धरो कालबश जान्यो फिर आयो सुकुमार ॥ २८९ ॥ अशरण शरण उदार कल्पतरु रामचन्द्र रणधीर। रिपुभ्राता जान्यो जु विभीषण निश्चर कुटिलशरीर ॥ २९० ॥ राखिशरण लंकेशकियो पुनि जब निश्चर सब मारे। माया करी बहुत नानाविधि सबको राम निवारे ॥ २९१ ॥ कुंभकर्ण पुनि इंद्रजीत यह महाबली बलसार। छिनमें लिये सोख मुनिवर ज्यों क्षत्री बली अपार ॥ २९२ ॥ कियो प्रसाद शांतना करिकै राजविभीषण दीन्हीं। पुनि मन्दोदरि अचल आयु दै अभयदान सबकीन्हीं ॥ २९३ ॥ समाधान सुरगणको करिकै अमृत मेघ बरषायो। कृपादृष्टि अवलोकन करिकै हत. कपिकटक जियायो ॥ २९४ ॥ निश्चर किये मुक्त सब माधव ताते जिये न कोय। निर्भय किय लंकेश विभीषण रामलषणनृप दोय ॥ २९५ ॥ सीता मिली बहुत सुखपायो धरो रूप निज मायो। पुष्पकयान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ २९६ ॥ चले पवनसुत विप्ररूप धरि भरतहि देन बधाई। जानि दूत रघुपतिको प्रमुदित भरत मिले तबधाई ॥ २९७ ॥ सुनत नगर सबहिन सुख मान्यो जहँतहँते चले धाई। रामचन्द्र पुनि मिले भरतसों आँनदउर न समाई ॥ २९८ ॥ कियो प्रवेश अयोध्यामें तब घर घर बजत बधाई। मंगल कलश धराये द्वारे बन्दनवार बँधाई ॥ २९९ ॥ राजभवनमें राम पधारे गुरु वशिष्ठ दरशायो। शीशनवाय बहुतपूजा-करि सूरजवंश बढायो ॥ ३०० ॥ समाधान सबहिनको कीन्हों जो दर्शनको आयो। कौशल्या कैकेयी सुमित्रा मिलि मनमें सुखपायो ॥ ३०१ ॥ बैठे राम राजसिंहासन जगमें फिरी दुहाई। निर्भय राज रामको कहियत सुर नर मुनि सुख पाई ॥ ३०२ ॥ चार मूर्त्ति धर दरशन आये चार वेद निज रूप। अस्तुति करी बहुत नानाविधि रीझे कोशलभूप ॥ ३०३ ॥ शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशनको आये। रामराज बैठे जब जाने सबहिन मन सुख पाये ॥ ३०४ ॥ लोकपाल अतिही मन हरषे सब सुमनन वरषायो। पुष्पविमान बैठि हरि आये लै कुबेर पहुँचायो ॥ ३०५ ॥ अति आनन्द भयो अवनीपर रामराज सुखदास। कृतयुग धर्म्म भये त्रेतामें पूरण रमा प्रकाश ॥ ३०६ ॥ अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार। हय गज हेम धेनु पाटम्बर दीन्हें दान उदार ॥ ३०७ ॥ चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीन्हों। जनकसुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीन्हों ॥ ३०८ ॥ जौन वसंत बहुत द्रुम फूले जनकसुता

अनुरागे । प्रेमप्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलनलागे ॥ ३०९ ॥ कबहुँक निकट देखि वर्षाऋतु झूलत सुरँग हिंडोरे । रमकत झमकत जनकसुता सँग हावभाव चित चोरे ॥ ३१० ॥ कबहुँक कमल सरोवर उपवन जनकसुता सँग लीन्हें । नाना जलबिहार बिहरत हैं सन्तजनन सुखदीन्हें ॥ ३११ ॥ कबहुँक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा उजियारी । बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी ॥ ३१२ ॥ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लिय सुगन्ध सुखकारी । कबहुँक निरतत देवनटीलखि रीझत हैं सुखभारी ॥ ३१३ ॥ रामबिहार कहेउ नानाविधि वाल्मीकि मुनि गायो । वर्णत चरित विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिं पायो ॥ ३१४ ॥ सूर समुद्रको बुन्द भई यह कवि वर्णन कह करिहै । कहत चरित रघुनाथ सरस्वति बौरी मति अनुसरिहै ॥ ३१५ ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग । जै जै जै श्रीरामकल्पतरु प्रकट अयोध्या भोग ॥ ३१६ ॥ दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगुपतिको रूप । क्षणमें भुवको भार उतार्यो परशुराम द्विजभूप ॥ ३१७ ॥ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हें प्रकट पुराणन । नानावाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुव भारन ॥ ३१८ ॥ बुद्धरूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सबनको मूल । दूरकियो पाखण्डवाद हरिभक्तनको अनुकूल ॥ ३१९ ॥ कलिके आदि अन्त कृत युगके है कलंकी अवतार । मारि मलेच्छ धर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजयकार ॥ ३२० ॥ कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार । सुधापान दीन्हों सुरगणको भयो जग यश विस्तार ॥ ३२१ ॥ असुरनको व्यामोह कियो हरि धरो मोहिनी रूप । अमृतपानकराय सुरनको कीन्हें चरित अनूप ॥ ३२२ ॥ तैसेही भुवभार उतारन हरिहलधर अवतार । कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार ॥ ३२३ ॥ गज अरु ग्राह लडेउ जलभीतर तब हरि सुमिरण कीन्हों । छोडि गरुड सुखधाम सांवरो भक्तनको सुख दीन्हों ॥ ३२४ ॥ जब बहु असुर बढे पृथिवीपर कियो अनर्थ विस्तार । सत्यसेन प्रगटे विश्वम्भर सत्य कियो है अपार ॥ ३२५ ॥ निज वैकुंठ बसाय रमापति कियो रमाको हेत । विनती सुनि कमलाकी केशव कीन्हों सुख संकेत ॥ ३२६ ॥ ब्रह्मचर्य थापनके कारण धरो विभू अवतार । जहँ तहँ मुनिवर निज मर्यादा थापी अघट अपार ॥ ३२७ ॥ अजितरूप ह्वै शैल धरो हरि जलनिधि मथवे सब काज । सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्तके काज ॥ ३२८ ॥ जब बलिराजा गये देवपुर लीन्हों स्वर्ग छुड़ाय । अदिति दुखित भई कश्यपसों विनतीकरी सुनाय ॥ ३२९ ॥ तब कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय । ताकी कोखि जन्म हरि लीन्हों श्रीवामन सुखदाय ॥ ३३० ॥ भादौं श्रवणद्वादशी शुभ दिन धरोविप्र हरिरूप । शिव विरंचि सनकादिक आये बन्दनको सुखभूप ॥ ३३१ ॥ यज्ञोपवीत विधोक्त कियो विधि सब सुर भिक्षा दीन्हीं । वामनरूप चले हरि द्विजवर बलिकी मनसुधि कीन्हीं ॥ ३३२ ॥ दंड कमंडलु हाथ विराजत अरु ओढ़े मृगछाला । धरि बटुरूप चले वामनजू अम्बुजनयन विशाला ॥ ३३३ ॥ सूरज कोटि प्रकास अंगमें कटि मेखला विराजै । करी वेदध्वनि नृपद्वारेपै मनहु महाघनगाजै ॥ ३३४ ॥ सुनि धायो तबहीं बलिराजा आय

चरण शिरनायो । बिनती करी बहुत सुख मान्यो आज भयो मनभायो ॥३३५॥ चलिये विप्र यज्ञशालामें जहँ द्विजवर सब राजैं । आये ब्रह्मरूभामें वामन सूरज तेज विराजैं ॥ ३३६ ॥ तब नृप कहेउ कछू द्विज मांगो रतन भूमि मणिदान । हय गज हेम रतन पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान ॥ ३३७ ॥ तब बोले वामन यह वाणी सुन प्रह्लाद कुल भूप । बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप ॥ ३३८ ॥ तीन पैंड बसुधा हम पावैं पर्ण-कुटी इक कारण । जब नृप भुव संकल्प कियो है लागे देह पसारन ॥ ३३९ ॥ एक पैरमें वसुधा नापी एक पैर सुरलोक । एक पैर दीजै बलि राजा तब ह्वैहो विनशोक ॥ ३४० ॥ नापो देह हमारी द्विजवर सो संकलिपत कीन्हों । सुनि प्रसन्न वामन यों बोले तैं मोको वश कीन्हों ॥ ३४१ ॥ सदा द्वार तेरे ठाढो ह्वै दरशन देहौं तोहिं । मायाकाल कबहुं नहिं व्यापै सुमिरन करतैं मोहि ॥ ३४२ ॥ सुतललोकमें थिरकरि थाप्यो जहँ विभूत अति भारी । गहिकै गदा द्वारपर ठाडे वामन ब्रह्म मुरारी ॥ ३४३ ॥ स्वर्ग लोक दीन्हों सुर-पतिको पुनि थिरकरि कर थाप्यो । निगम नेति कहि रटत निरन्तर देवशत्रु सब कांप्यो ॥ ३४४ ॥ वामनरूप ब्रह्महरि प्रगटे जिनको यश जग गावै । शेष सहस मुख रटत निरंतर सूर पार किमि पावै ॥ ३४५ ॥ पुनि बलि राजहिं स्वर्गलोकमें थापैंगे हरि राय । सार्वभौम अवतार धरेंगे श्रीवामन सुखदाय ॥ ३४६ ॥ पुनि विभुरूप एक हरि लेंगे सकल जगत कल्याण । कपट खंड पाखंड असुरकों थापे भक्त निदान ॥ ३४७ ॥ विष्वक्सेन रूप हरि लेंगे कीन्हों शिवको हेत । असुर मारि सब तुरत विडारे दीन्हें रुद्रनिकेत । ३४८॥ धर्मसेतु ह्वै धर्म बढायो भुविको धारण कीन्हों । शेष रूप ह्वै धराशीश फिर सब जगको सुख दीन्हों ॥ ३४९ ॥ अन्तर्यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप । अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुर भूप ॥ ३५० ॥ योग पन्थ पातंजलि भाष्यो सोउ क्षीण सब जान्यो । योगीश्वर वपु धरि हरि प्रकटे योग समाधि प्रमान्यो ॥ ३५१ ॥ क्रिया पंथ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो । बृहद्भानु ह्वैकै हरि प्रकटे क्षणमें प्रक-टायो ॥ ३५२ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करि सकै बखान । सोई सूरदासने वरणे जो कहे व्यास पुराण ॥ ३५३ ॥ अंशकला अवतार श्यामके कविपै कहत न आवैं । जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ बपुधरि धावैं ॥ ३५४ ॥ मायाकला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप । वायु वरुण यम औ कुबेर शशि मृत्यु अग्नि सुर भूप ॥ ३५५ ॥ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेदवपु जान । जगको प्रकट करन परजा पति प्रकटे कलानिधान ॥ ३५६ ॥ जो जो भूप भये भूमंडल लोकपाल निज जान । निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ॥ ३५७ ॥ सुर अरु असुर रची रहि रचना सो जग प्रगटहि कीन्हीं । क्रीडा करि बहुत नाना विधि निगम बात दृढ़ चीन्हीं ॥ ३५८ ॥ यहि विधि होगी खेलत खेलत बहुत भांति सुख पायो । धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ॥ ३५९ ॥ अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी । सदा विहार करत ब्रज मंडल नंदसदन सुखकारी ॥ ३६० ॥ नित्य अखंड अनूप अनागत अविगत अनघ अनंत । जाको आदि कोउ नहिं जानत कोउ न

पावत अन्त ॥ ३६१ ॥ जब हरि लीलाकी सुधि कीन्हीं प्रगट करन विस्तार ॥ श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि ब्रजराज उदार ॥ ३६२ ॥ विद्या ब्रह्म कही यशुमतिसों जाकी कोखि उदार । सोरहकला चन्द्र जो प्रगटे दीन्हों तिमिर विदार ॥ ३६३ ॥ पुनि वसुदेव देवकी कहियत पहिले हरिवर पायो । पूरण भाग्य आय हरि प्रगटे यदुकुल ताप नशायो ॥ ३६४ ॥ आठें बुद्ध रोहिणी आई शंख चक्र वपुधारो । कुंडल लसत किरीट महाध्वनि वपु वसुदेव निहारो ॥ ३६५ ॥ अस्तुति करी बहुत नाना विधि रूप चतुर्भुज देख्यो । पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सफल दिन लेख्यो ॥ ३६६ ॥ तब हरि कहेउ जन्म तुम्हरे गृह तीन बार हम लीनो । पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जो कृष्ण रूप रंग भीनो ॥ ३६७ ॥ मांगो सकल मनोरथ अपने मनवांछित फल पायो । शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयो ॥ ३६८ ॥ यह भुवभार उतारन कारन हलधरके सँग लायो । क्रीडा करों लोक पावन कर करों भक्त मन भायो ॥ ३६९ ॥ प्राकृत रूप धरो हरि क्षणमें शिशु ह्वै रोवन लागे । तब वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे ॥ ३७० ॥ तब देवकी दीन ह्वै भाख्यो नृपको नाहिं पतीजै । अहो वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥ ३७१ ॥ तब लै हरि पलना पौढाये पीताम्बर जु उढायो । तब वसुदेव शीश धरि पलना भयो सबन मन भायो ॥ ३७२ ॥ गोकुल चले प्रेम आतुर ह्वै खुलि गये कपट कपाट । सोये श्वान पहरुआ सोये सबै मुक्त भई बाट ॥ ३७३ ॥ तब वसुदेव लियो कर पलना अपने शीश चढायो । रैन अँधेरी कछु नहिं सूझत अटकर अटकर आयो ॥ ३७४ ॥ शेष सहस फण ऊपर छाये घनकी बूँद बचावें । आगे सिंह हुँकारत आवत निर्भय बाट जनावें ॥ ३७५ ॥ यमुना अति जलपूर बहतहै चरण कमल परशायो । मारग दीन्हों राम सिंधुज्यों नन्दभवन चलिआयो ॥ ३७६ ॥ पहुँचे आय महर मन्दिरमें नेक न शंका कीन्हीं । बालक धरि लैकै सुरदेवी सुरति गवनकी कीन्हीं । ॥ ३७७ ॥ लै वसुदेव तुरत घरआये काहू जिय नहिंजाने । जब वह रोवनलागी तब सब जागपरे अकुलाने ॥ ३७८ ॥ बालक भयो कह्यो नृपसों जब दौरि कंस तब आयो । करगहि खड्ग कह्यो देवकिसों बालक कहँ पहुँचायो ॥ ३७९ ॥ तब देवकी अधीन कह्यउ यह मैं नहिं बालकजायो । यह कन्या मोहिं बकस बीर तू कीजै मोमन भायो ॥ ३८० ॥ कंस वंशको नाश करत है कहा समुझ रिसयानी । मोको भई अनाहद बाणी ताते डर नहिं जानी ॥ ३८१ ॥ कन्या मांगलई तब राजा नेकु शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकाशै कंस प्रतीत न मानी ॥ ३८२ ॥ भइ अकाशवाणी सुरदेवी कंस यहीं अब आई । तेरो शत्रुप्रकट कहुँ व्रजमें काहु लख्यो नहिं जाई ॥ ३८३ ॥ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों तुवकाल प्रकट इक कतहूँ लखि न सकत तेहि कोई ॥ ३८४ ॥ अन्तर्द्धान भई सुरदेवी कंस प्रतीत जो मानी । तब बसुदेव देवकीके गृह कंस गयो यह जानी ॥ ३८५ ॥ क्षम अपराध देवकी मेरो लेख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराध किये शिशु मारे करजोरे बिललाई ॥ ३८६ ॥ पुनि गृह आय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवै । देश देशके

दूत बुलाये सब हिन मतोसुभावै ॥ ३८७ ॥ दीनहीन जो असुर चढत बलि करत सकल पुनि तैसो। बूझत नहिं तन भार उतारेउ जलको माखन जैसो ॥ ३८८ ॥ भयो और यशुमति गृह आनँद मँगलचार बधाई। जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनँद उर न समाई ॥ ३८९ ॥ जैसे शशि प्रगटत प्राचीदिशि सकलकला भरिपूर। यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुरतिमिर कर दूर ॥ ३९० ॥ नन्द राय घर ढोटा जायो महासुख पायो। विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्हीं स्वस्ती बचन पढायो ॥ ३९१ ॥ जातकर्मकर पूजि पितर सुरपूजन विप्र करायो। दोइलख धेनुदई तेहि अवसर बहुतहि दानदिवायो ॥३९२॥ पर्वतसात तिलनको कीन्हों रत्नन ओपमिलायो। मागध सूत और बंदीजन ठौर ठौर यश गायो ॥ ३९३ ॥ बाजे बजत विचित्र भाँतिसों रह्यउ घोष सब गाज। सुर सुमनन बरषावत गावत व्योम विमानन साज ॥ ३९४ ॥ बांधत बंदनवार साथिये द्वारेध्वजा सुहाई। कनक कलश प्रतिपौर विराजत मंगलचार बधाई ॥ ३९५ ॥ सुरभी वृषभ सिंगारे बहुविधि हरदी तेल लगाई। सुबरण माल विचित्र धातुरंग अँग अँग चित्र बनाई ॥ ३९६ ॥ आये गोपभेंटलै लैकै भूषण बसन सोहाये। नानाविधि उपहार दूध दधि आगेधरि शिरनाये ॥ ॥ ३९७ ॥ यशुमतिके गृह पुत्र प्रकटभयो सुनीसकल ब्रजनारी। मंगलसाज सँवार हाथलै घरघर मंगलकारी ॥ ३९८ ॥ अति आतुरह्वै चलीं झुण्डजूरि शिर सुमनन बरसावें। मानों रीझ मधुप धरणीको रस पराग दरशावें ॥ ३९९ ॥ पहुँचीं जाय महर मन्दिरमें करत कुलाहल भारी। दरशनकरि यशुमतिसुतको सब लेनलगीं बलिहारी ॥ ४०० ॥ नाचतगोप परस्पर सब मिलि छिरकतहैं नवनीत। दूध और दधि हरदजल सींचतहैं कर प्रीत ॥४०१॥ यशुमतिकोखिसराहि बलैया लेनलगीं ब्रजनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रजको शृंगार ॥ ४०२ ॥ यशुमति रानी देति बधाई भूषण रत्न अपार। फूली फिरत रोहिणी मइया नखशिख करशृंगार ॥ ४०३ ॥ देत अशीश चलीं ब्रजसुन्दरी जिय उपज्यों सुखभारी। गृहपूजनसब कियो वेदविधि नंदराय सुखकारी ॥४०४॥ देशदेशते ढाढी आये मनवां छित फलपायो। को कहि सकै दशोंधी उनको भयो सबन मन भायो ॥ ४०५ ॥ तादिनते सगरे या ब्रजमें रमारूप दरशायो। निजकुल वृद्ध जानि इक ढाढी गोवर्द्धनते आयो ॥ ४०६ ॥ परम महर ब्रजपतिजू ढाढी निकट बुलायो। बाजत हुडुक मँजीरा नूपुर नानाभाँति नचायो ॥ ४०७ ॥ झँगापगा अरु पाग पिछोरी ढाढिनको पहिरायो। हरिदरियाई कंठलगाई परदरशात उठायो ॥ ४०८ ॥ बहुतदान दीन्हें उपनँदजूरतनकनक मणि हीर। धरानन्दधनबहुतहि दीन्हों ज्यों बरषत घर नीर ॥४०९॥ कुण्डल कान कंठ मालादै ध्रुवनंद अति सुखपायो। सीधोबहुत सुर सुरानंदैं गाडाभरि पहुँचायो ॥ ४१० ॥ कर्माधर्मानन्दकहत हैं बहुतहि दानदिवायो। ब्रजरानी ढाढिन पहिराई मन बांछित फल पायो ॥४११॥ चले भवनको दै अशीश दोउ निर्भय कीरति गावैं। जिन यांचे ब्रजपति उदार अति याचक फिर न कहावैं ॥ ४१२ ॥ नानाविधिके विविध-खिलौना रत्नन अधिक अमोले। ताको लेन गये मथुराको आनकदुन्दुभि बोले ॥४१३॥ वेगजाव गोकुल तुम अबहीं सुनियत है उतपात। सुनि ब्रजराज तुरत घर आये जियमें

अति अकुलात ॥ ४१४ ॥ प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुन्दर बपु धारयउ । थसिकै गरल लगाय उरोजन कपट न कोऊ निहारयउ ॥ ४१५ ॥ लिये उठाय श्याम सुन्दरको थन गहिकै मुख लीन्हों । लीन्हें खींचि प्राण विष पय युत देह विकल तब कीन्हों ॥ ॥ ४१६ ॥ छोड छोड कहि परी धरणिपर कर चरणन जु पसार । योजन डेढ विटप बेली सब चूरचूर कर डाल ॥ ४१७ ॥ ताको जननीकी गति दीन्हीं परमकृपाल गुपाल । दीन्हीं फूंक काठ तन वाको मिलके सकल गुवाल ॥ ४१८ ॥ तबहीं नंदरायजू आये कौतुक सुनि यह भारी । विस्मित भये देवने राख्यो बालक यह सुखकारी ॥ ४१९ ॥ विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई । आरति विविध उतार महरजू करत-बधाई ॥ ४२० ॥ एक दिना हरि लई करोटी सुनि हरषी नँदरानी । विप्र बुलाय स्वस्ति वाचन करि रोहिण नैन सिरानी ॥ ४२१ ॥ नित मंगल नित होत कुलाहल नितनित बजत बधाई । भादों देव छठिको शुभ दिन प्रगट भये बलभाई ॥ ४२२ ॥ वर्ष दिवस पहिले ब्रजमण्डल शेष महा वपु लीन्हों । अपनो धाम जान प्रकटो भुव रूप प्रगट निज कीन्हों ॥ ४२३ ॥ कंस नृपतिने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हों । आय नंदगृह द्वार नगरमें रूप शकटको कीन्हों ॥ ४२४ ॥ मारी लात श्याम पलनाते परयउ धरणि भहराय । जहँ तहँते दौरे ब्रजवासी श्यामहिं लियो उठाय ॥ ४२५ ॥ बच्छपुच्छ लै दियो हाथपर मंगलगीत गवायो । यशुमति रानी कोखि सिरानी मोहन गोद खिलायो ॥ ४२६ ॥ एक दिन अस्तनपान करावति यशुमति अति बडभागी । बदनपसारि विश्व दिखरायो क्षणइक मुरछा जागी ॥ ४२७ ॥ तृणावर्त विपरीति महाखल सो नृपराय पठायो । चक्रवात ह्वै सकल घोषमें रजधुंधर ह्वै छायो ॥ ४२८ ॥ चल्यो उठाय गुपाल व्योममें तब हरि कंठ गहायो ॥ पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो ॥ ४२९ ॥ गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो वसुदेव पठायो । नामकरण ब्रजराज महरघर अति आनन्दित आयो ॥ ४३० ॥ नामकरण कीन्हों दोहुनके नारायण सम भाषे । तुम्हरे दुःख मिटावन कारण पूरणको अभिलाषे ॥ ४३१ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज । बहुतहि काज करैंगे तुम्हरे सुनहु महर ब्रजराज ॥ ४३२ ॥ एकदिना पलना हरि पौढे नन्दमहरके द्वार । नँदरानी गृह कारज लागी नाहिंन लई सँभार ॥ ४३३ ॥ कंसनृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप । सम्मुख आय नयन दोउ जोरे देख्यो श्यामको रूप ॥ ४३४ ॥ कंठ चाप बहुबार फिरायो पटक्यो नृपके पास । एक याममें वचन कह्यो यह प्रगट भयो तुव नास ॥ ४३५ ॥ यह कहिकै तनु त्याग कियो उन कंस-नृपतिके आगे । भयो उदास सुहात न कुछ ये क्षण सोवत क्षण जागे ॥ ४३६ ॥ एकदिना ब्रजराज महरजू और यशोदारानी । घुटुवन चलत श्यामको देखत बोलत अमृतबानी ॥ ४३७ ॥ इतते नन्दमहर बोलत हैं उतते जननि बुलावत । सुन्दरश्याम खिलौना कीन्हों हँसि हँसि मोद बढ़ावत ॥ ४३८ ॥ शशिको देख और हरिठानी कर मनुहार मनावत । मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना लावत ॥ ४३९ ॥ कमलनैनको महर

यशोदा जलप्रतिबिंब दिखावत। फेरतहाथ चंद्र पकरनको नाहिंन होत लखावत ॥ ४४० ॥ बूढ़ेबाबू दरशन आये लाल चंद्रमणि दीन्हों। ताको देख और सब छांडी भोजनकी सुधि कीन्हों ॥ ४४१ ॥ औट्यो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे। पीवत देखि रोहिणी यशुमति डारत है तृण तोरे ॥ ४४२ ॥ कुछ दिन भये संग दोउ बालक बल मोहन दौउ भाई। चोरी करत हरत दधि माखन लीला कहिय न जाई ॥ ४४३ ॥ सब ब्रजनारी उरहन आई ब्रजरानीके आगे। मैं नाहिंन दधि खायो याको शिशु ह्वै रोवन लागे ॥४४४॥ एकदिना ब्रजपतिकी पौरी खेलत हरि ब्रजबाल। माटी खाय वदन दिखरायौ चंचल नयनविशाल ॥ ४४५ ॥ सकल ब्रह्मांड उदरमें देख्यौ ब्रजमंडल राताल। नन्द महर यशुदा रौहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ॥ ४४६ ॥ हृदयज्ञान उपज्यौ तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखै। हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्र करि लेखै ॥ ४४७ ॥ एकदिना दधि मथन करतही महर घोषकी रानी। हरि माँग्यो माखन नाहिं दीन्हों तब मनमें रिस ठानी ॥ ४४८ ॥ फोरै भांड दही आंगनमें फैलपरेउ अति भारी। दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ ४४९ ॥ जानी विकल बहुत जननीको हरि पकराई दीनी। बहुत दाम लै बाँधनलागी अँगुरी द्वै भइ हीनी ॥ ४५० ॥ व्याकुल भई बँधत नहिं मोहन दया श्यामको आई। ऊखल दाम बँधे हरि जाने गोपी देखन धाई ॥ ४५१ ॥ तौलों बँधे देव दामोदर जौलों यह कृतकीनी। देख दुखित द्वै सुत कुबेरके कृपादृष्टि करि दीन्हीं ॥ ४५२ ॥ नारद मुनिको शाप पायके श्याम दई गति ताय। निकसे बीच अटक ऊखलमें श्याम रहे अटकाय ॥ ४५३ ॥ चरण परसि ते पुलकि भये भुव परे वृक्ष भहराय। भयो शब्द आघात स्वर्गलों सुनि आये ब्रजराय ॥ ४५४ ॥ अस्तुति करिवे गये स्वर्गको अभय हाथ करि दीन्हों। बंधनछोरि नंद बालकको लै उछंग कर लीन्हों ॥४५५॥ यशुमतिजूसों लरै महरजू तुम क्यों बांध्यो दाम। गर्ग कहेउ मोही नारायण आये हैं बलश्याम ॥ ४५६॥ यशुमतिमाय धाय उर लीन्हों राई लोन उतारो। लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदर रूप निहारो ॥ ४५७ ॥ कबहुँककर करताल बजावत नाना भांति नचावत। कबहुँक दधि माखनके कारण आछी आर मचावत ॥ ४५८ ॥ बडे गोप उपनन्द बुलाये नंदमहरके धाम। कीन्हे मंत्र गोप सब मिलिकै जेहि विधि पूरनकाम ॥ ४५९ ॥ बहु उत्पात रहत हैं गोकुल निज प्रति कंस पठायो। अंत जाय कहु वास करैंगे बालकदेव बचायो ॥ ४६० ॥ अब वृंदावन जाय रहैंगे जहँ वीरुध तृण पानी। चले गोप अति ओप विराजैं बोलत हो हो बानी ॥ ४६१ ॥ यमुना उतर आय वृन्दावन जहां सुखद द्रुम राजैं। गोवर्द्धन वृन्दावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजैं ॥ ४६२ ॥ बसे जाय आनंद उमँगसों गइयां सुखद चरावैं। आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरि चित बात धरावैं ॥४६३॥ करि विचार छिनमें हरि मारो सो बछरा वनआज। ता पाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज ॥ ४६४ ॥ बच्छ चरावत वेणु बजावत गोप सखनके संग। सो देखत चतुरानन आये हरि लीला रसरंग ॥ ४६५ ॥ छाकैं खात खवावत ग्वालन सुन्दर यमु-

नातीर । ग्वालमंडली मध्य बिराजत हरि हलधर दोउ वीर ॥ ४६६ ॥ गाय गोप अरु बच्छ सबै विधि छिनहींमें हरि लीन्हों । सबको रूप भये हरि आपुन नेक बिलम्ब न कीन्हों ॥ ४६७ ॥ जबही गर्व गयो चतुरानन अद्भुत चरितहिं देख । परो धाय हरिपांय जोरि कर नाथ कृपा कर लेख ॥ ४६८ ॥ अस्तुति करी वेदविधि करके चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधोको हँसत सकल किलकाति ॥ ४६९ ॥ गये धाम अपने विधि सुखसों हरि आज्ञा सुखपाय । वर्ष दिवसलौं सर्वरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय ॥ ४७० ॥ धेनु चरावन चले श्यामघन ग्वालमंडली जोर । हलधर संग छाक भरि काँवर करत कुलाहलशोर ॥ ४७१ ॥ क्रीडा करत आप वृन्दावन धेनुसमूह नचावत । गोबर्धन पर वेणु बजावत फूलन भेष सँवारत ॥ ४७२ ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये सुरभी ग्वाल जिवाये । कनक कमलके बोझ शीशधरि मथुरा कंस पठाये ॥ ॥ ४७३ ॥ दावानलको पान कियो सुख गोपन रक्षा कीनी । वर्षा सुऋतु देख वृंदावन क्रीडाकी सुधि लीनी ॥ ४७४ ॥ वेणु बजाय विलास कियो वन धौरी धेनु बुलावत । बरहापीडदाम गुञ्जामणि अद्भुत भेष बनावत ॥ ४७५ ॥ प्रातकाल अस्नान करनको यमुना गोपि सिधारी । लैकै चीर कदम्ब चढे हरि विनवत हैं ब्रजनारी ॥ ४७६ ॥ दै बरदान संग खेलनको शरद रैनि जब आई । रचिकै रास सबन सुख दीन्हों रजनी अधिक कराई ॥ ४७७ ॥ गोवर्धन धरि सब ब्रज राख्यौ मघवा मान मिटायो । नारायण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ॥ ४७८ ॥ धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड वध कीन्हों । करिकै चरण परस प्रभु वनमें व्याल अभयपद दीन्हों ॥ ४७९ ॥ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिन सुख पायो । सबहिन यह मांग्यो विनती कर हरि वैकुंठ दिखायो ॥ ४८० ॥ अभयदान दीन्हों मघवाको नंदरायको राख्यो । वरुणलोकमें गये कृपा करि विविध वचन उन भाख्यो ॥ ४८१ ॥ यज्ञ करत ब्राह्मण मथुराके ओदन श्याम मँगायो । उन नाहिं दियो नारिपै पठये तब उन सुनि सुख पायो ॥ ४८२ ॥ षटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आईं । कियो मनोरथ पूरण उनको निर्भय करि जु पठाईं ॥ ४८३ ॥ व्योमासुर केशी सब मारे अरु अरिष्ट वध कीनो । क्रीडा बहुत करी गोकुलमें भगतनको सुख दीनो ॥ ४८४ ॥ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद तू सोवे । तेरो शत्रु प्रकट गोकुलमें गुप्त न जानत कोवे ॥ ४८५ ॥ यह सब देव प्रकट भये ब्रजमें जहँ तहँ ठौरहि ठौर । उग्रसेन वसुदेव देवकी यादव जे सब और ॥ ४८६ ॥ नंद गोप वृषभान यशोदा सबहि गोपकुल जानो । करो उपाय बचो जो चाहो मेरो बचन प्रमानो ॥ ४८७ ॥ यह सुनि कंस सबनको बन्धन दीनो है त्यहिकाल । श्रीवसुदेव देवकी निज पितु बन्धन दियो विशाल ॥ ४८८ ॥ फिरि नारद गोकुल हो आये हरि चरणन शिर नाये । अस्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे बीन बजाये ॥ ४८९ ॥ हरि कछु इन उत्तर नाहिं दीनो फिर गये अपने धाम । बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीडत गोकुल ग्राम ॥ ४९० ॥ बल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुन सुफलकसुत बात । राम कृष्ण

को लावो मधुपुर विलम करो जनि जात ॥ ४९१ ॥ तब रथ बैठ चले सुफलकसुत संध्या गोकुल आये। पैंडेमें हरिचरण धूरिलै अपने अंग लगाये ॥ ४९२ ॥ मिले नंद बलदेव रोहिणी और यशोदा रानी। पूजा करि पधराय सदनमें भोजनकी विधि ठानी ॥ ४९३ ॥ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये। धनुष यज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ॥ ४९४ ॥ चले महर व्रजराज साज लै कौतुक देखन आज। राम कृष्ण दोउ आगे लैके सकल घोष शिरताज ॥ ४९५ ॥ मारगमें कालिंदीके तट कीन्हों जल असनान। निज वैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरन ज्ञान ॥ ४९६ ॥ करि वंदन हरिके चरणन को पुनि अक्रूर यह भाख्यो। तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम भक्तनको प्रण राख्यो ॥ ४९७ ॥ मथुरा आये रहे उपवनमें नंदराय सब गोप। रामकृष्णके चरण परसते अधिक मधुपुरी ओप ॥ ४९८ ॥ गये नगर देखनको मोहन बलदाऊ ले साथ। पुर कुल वधू झरोखन झांकत निरख निरख मुसक्यात ॥ ४९९ ॥ मारगमें यक रजक सँहारचो सबहि वसन हरि लीन्हें। बालक मिल्यो सबहि पहिराये सबहिनको सुख दीन्हें ॥५००॥ आगे मिल्यो सुदामा माली फूल माल पहिराई। निर्भय दान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढाई ॥ ५०१ ॥ कुब्जा घिसि चन्दन लै आई मारग देखन आई। हरि मांग्यो उन लेजु समर्प्यो मन वांछित फल पाई ॥ ५०२ ॥ दियो वरदान भवन आवनको तहांते चले कन्हाई। मथुरानगर देख मनमोहन फूले हैं दोउ भाई ॥ ५०३ ॥ रीझत नारि कहत मथुराकी आपुसमें दै सैन। कोमल गात कौनको ढोटा सुन्दर राजिवनैन ॥ ५०४ ॥ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल अतिभारी। कैसेकै वाको मारैंगे शोचत हैं पुरनारी ॥ ५०५ ॥ उपवन आय कियो हरि व्यारू नन्दराय सुख दीन्हों। मधु मेवा पकवान मिठाई जो भायो सो लीन्हों ॥ ५०६ ॥ पौढे जाय दोउ शय्यापर सोवत आई निंद। स्वपनेमें मथुरा फिर देखी जागे बालगोविंद ॥ ५०७ ॥ भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुष यज्ञको देखन। मल्लयुद्ध नानाविध क्रीडा राजद्वारको पेखन ॥ ५०८ ॥ गये ब्रजराज द्वार भूपतिके बहु उपहार दिवाये ॥ तब नृप कह्यो सकल गोपनसों भली करी तुम आये ॥ ५०९ ॥ बैठारे सब मंच ओपसों कौतुक देखन लागे। राम कृष्ण सँग ग्वालमण्डली नगर देख अनुरागे ॥ ५१० ॥ तोरेव धनुष टूक करि डारे दोउन आयुध कीने। तासु मारि करि चूर पहरुआ परममोद रसभीने ॥ ५११ ॥ मद गजराज द्वारपर ठाढो हरि कहेउ नेक बचाय। उन नहिं मान्यो सन्मुख आयो पकरेउ पूंछ फिराय ॥ ५१२ ॥ दियो पठाय श्याम निजपुरको मावत सहि गजराज। आगे चले सभामें पहुँचे जहँ नृप सकल समाज ॥ ५१३ ॥ बडे बडे राजा सब बैठे अरु पुरवासी लोग। अपने अपने भाव सु देखत मिट्यो सकल मनशोग ॥ ५१४ ॥ मल्लन सबन मल्ल से दीखे नृपन लखे नृपराय। युवतिन सबै कामवपु देखे भेंटनको ललचाय ॥ ५१५ ॥ गोपन सखाभाव करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड। पुत्रभाव वसुदेव देवकी देखे नित्य अखण्ड ॥ ५१६ ॥ विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मनमें सुख पायो। पूरण तत्त्व

देख योगी जन हितसों ध्यान लगायो ॥ ५१७ ॥ यदुकुलके कुल दीपक प्रकटे सब यादव सुखदाई । कंस देखि निजकाल आपनो बहुतहि क्रोध रिसाई ॥ ५१८ ॥ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग । वृंदावनमें हम सुनियत हैं क्रीडत हौ बहुरंग ॥५१९॥ अब तुम कंस नृपतिको दिखावो मल्लयुद्ध करि नीके । कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलकै जानत हौ सब जीके ॥ ५२० ॥ तब हरि मल्लक्रीडा कर बहु विधि दांव देखाये । वर्णन कियो प्रथम संक्षेपन अबहूं वर्ण न पाये ॥ ५२१ ॥ मुष्टिक साथ लरे बलभाई धरेउ बृहदवपु दोउ । छिनहींमें हरि तुरत सँहारे अतिआनँद मन होउ ॥ ५२२ ॥ और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गये सब भाज । मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखि फूले ब्रजराज ॥५२३॥ तब नृप कंस बहुत बिललायो बार बार रिसयाई । बाँधो नंद हरो गोपन धन कीन्हों कपट ढुराई ॥ ५२४ ॥ फागुनवदि चौदशको शुभ दिन अरु रविवार सुहायो । नखत उत्तरा आप बिचारेउ काल कंसको आयो॥५२५॥ यह कहि कूद गये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय । हरिको देखि खड्ग कर लीन्हों सन्मुख आयो धाय ॥ ५२६ ॥ तब हरि केश पकरि अपने कर धरणी मांझ पछारो । ऊपर गिरे आपु तिहुँ पुरको बोझ शीशपर डारो ॥ ॥ ५२७ ॥ कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुना लौं आये । करिविश्राम सकल श्रम बीत्यो जब यमुना जल न्हाये ॥ ५२८ ॥ बंधन छोर पिता मातको अस्तुति की शिरनायो । तुम हमको पठये गोकुलमें याते लाड लडायो ॥ ५२९ ॥ यशुमति मात और ब्रजपति जू बहुतहि आनँद दीनो । याते टहल करन नहिं पायों कहत श्याम रँगभीनो ॥ ५३० ॥ तब ब्रजराज महरपै आये बल मोहन दोउ भाई । तुम्हारी कृपा कंस मैं मारो कहँ लौं करौं बड़ाई ॥ ५३१ ॥ रोहिणि यह बोली यशुमतिसों हम तुम्हरे सुख पायो । ज्यों तुम्हारो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाड लडायो॥ ५३२ ॥ हिल मिल चले सकल ब्रजवासी नंदगाँव फिरि आयो । सुबस बसी मथुरा ता दिनते उग्रसेन बैठायो ॥ ५३३ ॥ राम कृष्ण घर आये जाने पुरवासिन सुख पायो । मंगलचार भये घर घरमें मोतिन चौक पुरायो ॥ ५३४ ॥ तब हरि मात पितापै आये दोउ भाइन शिर नायो । बन्धन छोर विनय बहु कीन्हें तुम हमबिन दुख पायो ॥ ५३५ ॥ फिर बहुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुखधाम । राम कृष्णको लाड लडावत जानत नहिं दिन याम ॥ ५३६ ॥ गर्ग बुलाय वेदविधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो । विद्या पढ़न काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो ॥ ५३७ ॥ राजनीति मुनि बहुत पढाई गुरु सेवा कर-वाये । सुरभी दुहत दोहनी मांगी बांह पसार देवाये ॥ ५३८ ॥ गुरुदक्षिणा देन जब लागे गुरुपत्नी यह मांग्यो । बालक बह्यो सिन्धुमें हमरो सो नितप्रति चितलाग्यो ॥ ५३९ ॥ यह सुनि श्याम राम दोउ मिलि गये जलधिके बीच । पंरपंचानन शंख तहँ लीन्हों मारि असुर अति नीच ॥ ५४० ॥ यमपुर जाय शंखध्वनि कीन्हों यमराजा चलिआयो । चरण धोय चरणोदक लीन्हों बालक दे शिर नायो ॥ ५४१ ॥ ले बालक गुरु आगे धरिकै राम कृष्ण सुखरासी । आज्ञालै मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनासी ॥ ५४२ ॥ क्रीडा

करत विविध मथुरामें असुर भवन सिधारे । अस्तुति करी बहुत नानाविधि निर्भय कर शिर धारे ॥ ५४३ ॥ कुबिजाके घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनो । ऊधोभक्त संग लेके अति आँनँद भक्तन दीनो ॥ ५४४ ॥ उद्धव भक्त बुलाय संगले हरि इकांत यह भाख्यो । ब्रजबासी लोगनसों मैंतो अन्तर कछु नहिं राख्यो ॥ ५४५ ॥ सुरगुरु शिष्य बुद्धिमें उत्तम यदुकुल कहत प्रमान । मन्त्री भृत्य सखा मो सेवक याते कहत सुजान ॥ ५४६ ॥ मोकू लाड लडायो उन जो कहँलगि करैं बड़ाई । सुनि ऊधो तुम समझत नाहिंन अब देखोगे जाई ॥ ५४७ ॥ बेग जाव ब्रज मो आज्ञाते ब्रजवासिन सुख देहौ । चरणरेणु शिरधरि गोपिनकी तुमहु अभयपद लेहौ ॥ ५४८ ॥ गोपिनसों विनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि करियो । विरह व्यथा बाढै जब तनुमें तब तब म्वहिं चितधरियो ॥ ५४९ ॥ पाती लिखी आपकर मोहन ब्रजवासी सब लोग । मात यशोदा पिता नन्दजू बाढो विरह वियोग ॥ ५५० ॥ धौरी धूमरि कारी काजर मैन मजीठी गाय । ताको बहुत राखियो नीके उन पोष्यो पयप्याय ॥ ५५१ ॥ बनमें मित्र हमारे यक हैं हमहीं सो हैं रूप । कमल नयन घनश्याम मनोहर सब गोधनको भूप ॥ ५५२ ॥ ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु कीजो परणाम । उन हमरो ब्रज सबहि बचायो सब विधि पूरे काम ॥ ५५३ ॥ आज्ञालै ऊधो श्रीपतिकी चले वेग नँदग्राम । पुष्करमाल उतार हृदयते दीनी सुन्दरश्याम ॥ ५५४ ॥ पीताम्बर अपनो पहिरायो श्रुति कुण्डल पहिराये । अपने रथ बैठाय प्रीतिसों उद्धव ब्रज पधराये ॥ ५५५ ॥ दिनमणि अस्त भये गये गोकुल नँदरायसों भेंटे । बल मोहन दोउ देख माधुरी परम विरह दुख मेटे ॥ ५५६ ॥ मिले नन्द बलराम कृष्ण दोउ हैं नीके यह भाख्यो । मारो कंस भली सब कीन्हीं यादव कुल सब राख्यो ॥ ५५७ ॥ पूजा करि भोजन करवायो उद्धव संत सरायो । सोवन निशा नेक नहिं पाये रामकृष्ण गुणगायो ॥ ५५८ ॥ यशुदा विकल बात पूछति है नयनन नीर प्रवाह । तन मनमें अति ही दुख बाढ्यो अति आतुर जनुदाह ॥ ५५९ ॥ बातें करत शेष निशि आई उद्धव गये सनान । सुमिरण कर फिर ब्रजमें आये गोपिन देखे आन ॥ ५६० ॥ उद्धव देखि सकल गोपिनने कीन्हीं मन अनुमान । रथको देखि बहुत भ्रम कीन्हों धौं आये फिरकान ॥ ५६१ ॥ तब यक सखी कहै सुनरी तू सुफलकसुत फिरि आयो । प्राणगये लै पिंड देनको देह मन भायो ॥ ५६२ ॥ इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह सब जानी । उद्धव कियो प्रणाम सबनको विनय कियो मृदुवानी ॥ ५६३ ॥ भली करी तुम आये उद्धव लाये हरिकी पाती । जादिनते हरि गोकुल छांड्यो हमपर विरह बराती ॥ ५६४ ॥ इतने मांझ मधुप यक देख्यो आय चरण लपटायो । ताको देख कहत उद्धवसों हरि गोकुल बिसरायो ॥ ५६५ ॥ रे रे मधुप कितवके बन्धू चरण परस जिन करिहौ । प्रियाअंक कुंकुम कर राते ताहीको अनुसरिहौ ॥ ५६६ ॥ अधर सुधारस सकृत पान दै कान्ह भये अति भोगी । विजय सखाको सखी कहत है तासों रहत सँयोगी ॥ ५६७ ॥ तीनलोक नारीको कहियत जो दुर्लभ

बलबीर । कमलाहू नित पांयपै लोटत हम तो हैं आभीर ॥ ५६८ ॥ पहले ही इन हनी पूतना बाँधे बलिको दान । शूर्पणखा ताडका संहारी श्याम सहज यह बान ॥ ५६९ ॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवणन बनविहंग भये योगी । मांगत भीख फिरत घर घरही सजन कुटुम्ब वियोगी ॥ ५७० ॥ फिर हरि आय यशोदाके गृह रिंगन लीला करि हैं । मांग्यो चन्द्र और जब कीन्हीं उन बातन चित धरि हैं। ॥ ५७१ ॥ बहुत दनुज संहार श्यामघन ब्रजकी रक्षा करि हैं । यमला अर्जुन विटप उपारे कालीको विष हरि हैं ॥ ५७२ ॥ बेणुबजाय रास वन कीन्हों अति आनंद दरशायो । लीला कथत सहसमुख तोऊ अजहूं पार न पायो ॥ ५७३ ॥ महाप्रलयके मेघ पठाये सुरपति कीन्हों कोप । छिनही मांझ गोवर्धन धारो राखलिये सब गोप ॥ ५७४ ॥ ऐसे बहुत चरित्र कान्हके वरणि कहत नाहिं आवै । उद्धव तुम नयनन नाहिं देखो ताते भेद न पावै ॥ ५७५ ॥ तब उद्धव कहेव धन्य धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनार । तुम्हरे सुवस सदा हरि ब्रजमें करत विहार ॥ ५७६ ॥ तुम्हरी चरणकमलरज कारण तप कीन्हों चतुरानन । रमा शेष पुनि किनहुँ न पायो सो देखियत वृन्दावन ॥ ५७७ ॥ गुल्मलतामें जन्म मांगि तब विधिसों गोद पसारी । उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरणरेणु ब्रजनारी॥ ॥ ५७८ ॥ एक रूप ह्वै रहे वृन्दावन गुल्मलता करवास । वज्रनाभ उपदेश कियो जिन पूरण केलि प्रकास ॥ ५७९ ॥ एक रूप उद्धव फिर आये हरिचरन शिर नायो । कह्यो वृत्तान्त गोपवनितनको विरह न जात कहायो ॥ ५८० ॥ म्वहिं खोजत षटमास बीति गये तबहुँ न आयो अंत । ब्रजवनितनके नैन प्राणबिच तुमहीं श्याम बसंत ॥ ५८१ ॥ छिन नाहिं दूर श्याम तुव उनसों मैं निश्चय यह कीनों । तुमरो रूप देखि गोकुलमैं बाढ्यो नेह नवीनो ॥ ५८२ ॥ तब हरि कह्यो सुनो उद्धवजू ब्रजवासी तनमोर । तिनको सपन कबहुँ नाहिं छांडों सत्य कहत हौं तोर ॥ ५८३ ॥ वृन्दावनमें धेनु चरावत गोपसखनके सँग । वेणु बजावत मोद बढावत क्रीडा कोटि अनंग ॥ ५८४ ॥ अरु गोपिनसों अंगसु अंग करि नित प्रति करों विनोद । दुष्ट कंस मारन यह आयों सदा यशोदा गोद ॥५८५॥ कुञ्ज कुञ्जमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुख देहौं । गोप सखन सँग खेलत डोलौं ब्रज तज अंत न जैहौं ॥ ५८६ ॥ मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्म केरो विस्तार । वसुधा भार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार ॥ ५८७ ॥ मित्र एक वन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो । ताको पूजन नित प्रति करिहौं सो तुम सुबुध विशेख्यो ॥ ५८८ ॥ नाना रत्न कंदरा कबहू छिन नाहिं मोहिं भुलावे । क्रीडा करो नित्य कुंजनमें गोपिनको सुख भावे ॥ ५८९ ॥ ताही क्षण अक्रूर बुलाये बल मोहन यह भाख्यो । तुम अब वेगि जाव हस्तिनपुर कमलनयन जिय दाख्यो ॥ ५८९ ॥ तब अक्रूर बैठि हरिके रथ हस्तिनपुर जु सिधारे । कुन्ती मिली युधिष्ठिर अर्जुन भीम विदुर उर धारे ॥ ५९१ ॥ गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सब भेटें । बहुत दिनाके ताप सबनके सुफलकसुत सब मेटे ॥५९२॥ तब यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भांति समुझायो । तब नृप कह्यो नहीं मेरो वश मोह प्रबल जिय छायो ॥ ५९३ ॥ तब अक्रूर विचार कियो यह हरि इच्छा जिय मानी ।

करि प्रणाम गये मधुपुरको जहां श्याम सुखदानी ॥ ५९४ ॥ समाचार सबही कहि दीनो बल मोहनहिं सुनायो। सुन वसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुख जिय पायो ॥ ५९५ ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउ पत्नी कंस रायकी कहियत। जरासंध पै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ॥ ५९६ ॥ तीन बीस अक्षोहिणि लै दल जरासंध तहँ आयो। बल मोहन छिन मांझ संहारे करि बिनचमू पठायो ॥ ५९७ ॥ सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी। अबकै फेर दुष्ट बनि आयो हरि कछु बात विचारी ॥ ५९८ ॥ अंतरिक्षते द्वै रथ उपजे आयुध तुरंग समेत। तापर बैठ कृष्ण संकर्षण जीते हैं सब खेत ॥ ५९९ ॥ नारद जाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउ वीर। तोहिं न गनत बसतहैं मथुरा बड़े बली रणधीर ॥ ६०० ॥ यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय। तीन कोटि भट यवन संग ले मथुरा पहुँच्यो जाय ॥ ६०१ ॥ सुन बलमोहन बैठ रहसि मैं कीनो कछू विचार। मागध मगध देशते आयो साजे फौज अपार ॥ ६०२ ॥ विश्वकर्माको आज्ञा दीन्हीं रची द्वारका आय। निशिको सोये सब मथुरामें जागे द्वारका जाय ॥६०३॥ हलधर हम मूसल कर लीने सभी मलेच्छ सँहारे। मारि फौज सबही मागधकी जरासंध उरबारे ॥ ६०४ ॥ चले भाज दोउ सभी उहांते जहँ सोवत मुचुकुन्द। वसन उढाय रहे छिपि आपन पूरण परमानन्द ॥ ६०५ ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो भहराय। निकसी अग्नि नैनते तासों भस्म भयो तेहि दाय ॥ ६०६ ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरशन दीन्हों भूप। शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥६०७॥ तब पूछ्यो तुम कौन रूपहौ कौन देव अवतार। अबलों कहुँ देखे नाहीं मैं तुम अतिहौ सुकुमार ॥ ६०८ ॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु वेद न पावै पार। भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ॥ ६०९ ॥ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप वासुदेव मम-रूप। भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ॥ ६१० ॥ तब नृप अस्तुति बहु विधि कीन्हीं जन्म कर्म गुणगाय। तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ ६११ ॥ नव गुण नवलरूप पुरुषोत्तम जै यदुकुल अवतार। जयजयजय वैकुंठ महानिधि कमल नयन सुखसार ॥ ६१२ ॥ वेद पुराण रटत यश जाको तऊ न पावत पार। मैं मुचुकुन्द नृपति कृतयुगको सोवत भए युगचार ॥ ६१३ ॥ अब मोको आज्ञा कछु दीजै जैसे चरणन पाऊं। सदा बसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुण गाऊं ॥६१४॥ क्षत्री जन्म बहुत अघ कीन्हों ताते मुक्ति न होय। विप्र जन्म धरि मुक्ति होगयी करि तप साधन सोय ॥ ६१५ ॥ आज्ञा लैकै चल्यो नृपति वहँ उत्तर दिशा विशाल। करि तप विप्रजन्म जब लीन्हों मिट्यो जन्म जंजाल ॥ ६१६ ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर पर बरषन गिरि आये। पर्वत बहुत नमन करि पूजा यह बिनती करवाये ॥ ६१७ ॥ नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लागत शीत अपार। अगणित पाप महादुख मेटो

मांगत यही मुरार ॥ ६१८ ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात। पर्वत मांझ गये दोउ भइया उन देखे दग जात ॥ ६१९ ॥ दीन्हीं अग्नि लगाय चहूँवा उन जानी रिपु हान। राम कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ॥ ६२० ॥ भयो अनंद द्वारकामें सब घर घर गीत गवाये। करि रिपु हानि समर सब जीत्यो राम कृष्ण घर आये ॥ ॥ ६२१ ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्मके गेह। पूजा करी बहुत नाना विधि नृपति जनाये नेह ॥ ६२२ ॥ लखि लखि रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार। पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६२३ ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज। तब नृप कह्यउ करो निश्चय यह सफल होय मम काज ॥ ॥ ६२४ ॥ तब नारदमुनि गये द्वारका कृष्णचन्द्रके पास। बिनती करी रुक्मिणीकी सब सुनि हरि भये हुलास ॥ ६२५ ॥ करो वेग कछु बिलँब न कीजै नारद कहि यह बात। श्रवण सुनत कमलापतिको जिय तनु पुलकित सब गात ॥ ३२६ ॥ सुन नारद म्वहिं नींद न आवे करिहौं वेग उपाय। यह कहि चले आप हरि रथचढि शोभा कही न जाय ॥ ६२७ ॥ देश देशके नृपति जुरे सब भीष्म नृपतिके धाम। रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्णसों काम ॥ ६२८ ॥ यतने मांझ आपु हरि आये सुनी नृपति सबबात। उपवन रहे जान जियमें यह मनमें अति अकुलात ॥ ६२९ ॥ पूजन करन चली देवीको सखी वृन्द सब संग। पूजा करि बोली यह कमला लोकलाज कृत भंग ॥ ६३० ॥ अटलशक्ति अविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप। आदि अव्यक्त अंबिका पूरण अखिललोक तवरूप ॥ ६३१ ॥ कृष्णचन्द्रके चरण कमलमें सदा रहो अनुराग। येही पति नित होहिं हमारे जोपूरण मम भाग ॥ ६३२ ॥ तब उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वैहैं अचल सुहाग। चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरण अनुराग ॥ ६३३ ॥ तब हरि आय बैठ रथ नीके आय मिले बड़भाग। कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ॥ ६३४ ॥ मानो नीलमेघके सँगमें मिली दामिनी आय। चले तुरत हरि पुरी द्वारका शंख चक्रधरि धाय ॥ ६३५ ॥ दुष्ट नृपतिको मान मथन करिचले द्वारकानाथ। जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ॥ ६३६ ॥ रथपाछे मिलि शोभित यहि विधि सकल दुष्टकी खान। महासिंह निजभाग लेत ज्यों पाछे दौरैं श्वान ॥ ६३७ ॥ हलधर आय दुष्ट सब मारे असुर नृपतिकी भीर। भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तनुपीर ॥ ६३८ ॥ आये नाथ द्वारका नीकें रच्यो मांडयो छाय। व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय ॥ ६३९ ॥ ब्रह्मा रुद्रवेद तहँ आये शुक नारद सनकादि। दरशन करि मंगल सुख कै सब मेटी विरह जो आदि ॥ ६४० ॥ चैत्रमास पूनोंको शुभदिन शुभनक्षत्र शुभवार। व्याहिलई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ॥ ६४१ ॥ यक सत्राजित यादव कहिये सूरजदेव उपास। दीन्हीं मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्यप्रकाश ॥ ६४२ ॥ भार भार नित कनक देत है नृपति सुनी यह बात। तब उन मांगी इन नहिं दीनी बाढ्यो वैर

अघात ॥ ६४३ ॥ एक दिवस मृगयाको निकस्यो कंठ महामणि लाय । तब उन सिंह मारि मणि कीन्हों ऋच्छ मिल्यो यकताय ॥ ६४४ ॥ जाम्बवान महाबली उजागर सिंह मारि मणि लीन्हीं । पर्वत गुफा बैठ अपने गृह जाय सुताको दीन्हीं ॥ ६४५ ॥ चर्चा परी बहुत द्वारावति कृष्णचन्द्रकी बात । तब हरि गये शैलकंदरमें अति कोमल मृदु-गात ॥ ६४६ ॥ दिन अट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बलभंग । तब पग परेउ बहुत अस्तुति करि जानि रामपदसंग ॥ ६४७ ॥ तब हरि कहेउ भक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम । कीन्हें शुद्ध तत्त्व सब तनुके पूरण कीन्हें काम ॥ ६४८ ॥ जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुहाय । करि हरि ध्यान गयो हरि पुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ ६४९ ॥ लै स्यमंतमणि जाम्बवतीसह आये द्वारकानाथ । अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समान ॥ ६५० ॥ आश्विनसुदि नौमीको शुभ दिन हरि आये निजधाम । तौलौं घर घर प्रति दुर्गाको पूजन कियो सब काम ॥ ६५१ ॥ सत्राजित अपनी तनुयाको दीन्हें त्रिभुवनराय । सतभामाजु नाम तेहि कहियत शोभा कही न जाय ॥ ६५२ ॥ कीन्हों व्याह परम आनँद सों सतभामा सुखरास । द्वारावती विराजत नित प्रति आनँद करत विलास ॥ ६५३ ॥ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपा करि पांडव कुलको तार । तहँ कालिन्दी वनमें व्याही अतिसुन्दरि सुकुमारि ॥ ६५४ ॥ मित्रविंदा यक नृप-तिनन्दनी ताको माधव व्याये । सात बैल नाथनके कारण आप अयोध्या आये ॥६५५॥ सत्या व्याहि बहुतसुख कीन्हों मथ्यो नृपतिको मान । आये फेर द्वारका मोहन मंगल केलि निधान ॥ ६५६ ॥ भद्रा व्याहि आप जब आये द्वारवती आनंद । तैसेही लक्ष्मणा विवाही पूरण परमानंद ॥ ६५७ ॥ नरकासुरको मारि श्यामघन सोरह सहस त्रियलाये एकहि लग्न सबन कर पकरे एक मुहूर्त्त विवाये ॥ ६५८ ॥ यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोकते धाये । कृष्णचन्द्रके चरण परस कर बीणा मधुर बजाये ॥ ६५९ ॥ तब हरि रीझ कहेव नारद सों कहौं कहांते आये । तब उन कहेव दरशको आयो बहुत रूप धरि व्याये ॥ ६६० ॥ यह कौतुक देखनके कारण मैं आयो जो देखायो । रूप अनत आदि अविनाशी दरशन प्रेम बढायो ॥ ६६१ ॥ तब हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सब ठौर । मैंही हौं सब थल परिपूरण मोबिन नाहिंन और ॥ ६६२ ॥ तब मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुख पायो । नाना क्रीड़ा करत निरंतर घरघर रूप दिखायो ॥ ६६३ ॥ कहुँ क्रीडत कहुँ दाम बनावत कहूँ करत शृंगार । कहुँ बालकन खिलावत माधव खेलत परम उदार ॥ ६६४ ॥ कहुँ चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उच्चार । कहुँ मृगयाको चले अश्वचढि श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६६५ ॥ कहुँ कर लेकर शस्त्र संवारत कहुँ कछु करत विचार । कहुँ कछु बात कहत सबहिनसों कहुँ ध्वनि वेद विचार ॥ ६६६ ॥ कहुँ मिलि यज्ञ करत विप्रन सँग अति आनंद मुरार । नाना दान-देत हय गज भुव ऐसे परम उदार ॥ ६६७ ॥ कहुँ गोदान करत कहुँ देखे कहुँ कछु सुनत पुरान । कहुँ निर्त्तत सब देख बारबधु कहुँ गँधरव गुणगान ॥ ६६८ ॥ कहुँ जप

करत सनातन निजवपु ब्रह्म करत कहुँ ध्यान । कहुँ उपदेश कहूँ जैबेको कहुँ दृढावत ज्ञान ॥ ६६९ ॥ कहुँ भोजन नानारुचि माँगत षटरसके पकवान । आरोगत ब्रजराज सांवरो कहूँ करत जलपान ॥ ६७० ॥ कहुँ जागत दरशन दियो मुनिको करि पूजा परणाम । संध्या करत कहूँ त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ॥ ६७१ ॥ कहुँ पौढे कमलाके सँगमें परम रहस्य । एकान्त कहुँब्रत करत कहूँ निगमनको ज्ञान कर्मको अंत ॥ ६७२ ॥ कतहूँ श्राद्ध करत पितरनको तर्पण करि बहुभांति । कहुँ विप्रनको देत दक्षिणा कहुँ भोजनकी पांति ॥ ६७३ ॥ कहूँ सुगन्ध लगावत लैकै कहूँ अश्व शृंगार । कहुँ गजरथ कहुँ बाजिरथन सजि डोलत हैं गृह द्वार ॥ ६७४ ॥ कहुँ ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडा परम प्रेम उच्चार । कहुँ पांडवकी कथा चलावत चिंता करत अपार ॥ ६७५ ॥ कहुँ मिलि विप्र कहत सब हिनसों बालक करन सगाई । कहुँ सुत व्याह कहुँ कन्याको देत दायजो राई ॥ ६७६ ॥ कहुँ गजराज बाजि शृंगारे तापर चढे जु आप । सँग बलभद्र चमू सब सँग लै चले असुरदल कांप ॥ ६७७ ॥ कहूँ हस्तिनापुर देखनको मनमें करत विचार । कतहूँ अर्घ्य देत सूरजको कहुँ पूजत त्रिपुरार ॥ ६७८ ॥ कहुँ यक दुर्गादेवि जानिकै जोरी विप्र निजधाम । करत होम बहु भांति वेदध्वनि सब विधि पूरणकाम ॥ ६७९ ॥ प्रथम पुत्रको व्याह जानिकै पूजत कहूँ गणेश । कहूँ ऋषिनके चरण धोयकै शिरपर धरत नरेश ॥ ६८० ॥ कहूँ व्याहकी केलि परम सुख निरखत मुनि सचुपायो । शेष सहसमुख पार न पावै कछु इक सूर जु गायो ॥ ६८१ ॥ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरणकमल शिर नायो । मैं सबठोर फिरेउँ तुम देखन कतहूँ पार न पायो ॥ ६८२ ॥ जित तित देखों तुम परिपूरण आदि अनंत अखंड । लीला प्रकट देव पुरुषोत्तम व्यापक कोटि ब्रह्मंड ॥ ६८३ ॥ शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश दिनेश । इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ॥ ६८४ ॥ तुम्हरे चरण कमलकी महिमा जानत हैं त्रिपुरारि । प्रगट गंग पावन चरणनते ताहि रहत शिर धारि ॥ ६८५ ॥ पुनि गौतम घरणी जानत हैं नावक शबरी जान । उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम सुरज्ञान ॥६८६॥ हनूमान अरु भक्त विभीषण चरणकमल रज मांगी । सोई कृपा करो करुणानिधि मांगत हौं अनुरागी॥६८७॥यह कहिकै मुनि लोक सिधारे बीण बजाय रिझाय । ब्रह्मलोक पहुँचे छिनहीमें हरि आज्ञाको पाय ॥ ६८८ ॥ पहिलो पुत्र रुक्मिणीजायो प्रद्युमन नाम धरायो । कामदेव प्रगटे हरिके गृह पहिले रुद्र जरायो ॥६८९॥ नारद जाय कह्यो शंबरसों तव रिपु वपु धरि आयो । वेग उपाय करो मारनको प्रगट द्वारका आयो॥६९०॥तब शंबर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहि काल । हरिको चक्र देख रखवारी व्याकुल भयो विहाल ॥ ॥ ६९१ ॥ तब नारदमुनि आय चक्रसों बात करन ठहरायो । इतने मांझ पुत्रलै भाज्यो निधिमें जाय दुरायो ॥ ६९२ ॥ एक मीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनी । सोई मत्स्य पकरि मोधुकने जाय असुरको दीनी ॥ ६९३ ॥ तब उन कह्यो पाकशालामें अबही यह पहुंचाओ । चीरचो उदर पुत्र तब निकस्यो उन जान्यो मम नाओ ॥६९४॥

नारद कह्यो यही तब पति है याकूं वेग बढ़ाय। जौलौं बडो होय तोलौं यह असुरन मतिहि देखाय ॥ ६९५ ॥ सेवा कीनी बडे भये जब समरथ विपुल उदार। महाबली बलराम कृष्ण सुत कीन्हों असुर सँहार ॥ ६९६ ॥ मारि असुरको आय द्वारका कृष्ण चरण शिर नायो। भीतर गये नये रुक्मिणिको सब हिन कंठ लगायो ॥ ६९७ ॥ बर अरु बधू आय जब जाने रुक्मिणि करत बधाई। रति अरु काम प्रकट तादिनते कवि मिलि कीरति गाई ॥ ६९८ ॥ याविधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद। महिमा सिंधु कहां लग वरणै सूर जु कवि मति मंद ॥ ६९९ ॥ पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्ररेखा हरि लीन्हों। चारवर्ष अरु,चारमासलौं ऊखाको सुख दीन्हों ॥ ७०० ॥ तब हरि जाय संग हलधर लै सब यादव दल जोर। सबै भुजा करि दूर असुरकी चार हाथ दिये छोर ॥ ७०१ ॥ आये रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरिसाथ। छिनमें जीति बधूसुत लैकै आय द्वारकानाथ॥७०२॥पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार। उग्रसेन वसुदेव सात्यकी अरु अक्रूर उदार ॥ ७०३ ॥ इतने मांझ दूत यक आयो सबहिन कहि समुझायो। वासुदेव नृप आज्ञा करके मोको वेगि पठायो ॥ ७०४ ॥ वासुदेव यह कहत वेदमें प्रगट ब्रह्म अवतार। सो तौ मैं ही प्रगट भयो भुव यहि विधि बढ्यो अपार ॥ ७०५ ॥ क्षणमें जाय तुरत हरि मार्यो दीन्हीं मुक्त कृपाल। फेर द्वारका तुरत पधारे गरुड़ चढे गोपाल ॥ ७०६ ॥ एक दुष्टने बहुत कियो तप सो रीझे त्रिपुरारे। तब शिवने उन कृत्या दीन्हीं बाढो क्रोध अपार ॥ ७०७ ॥ कृत्या चली जहां द्वारावति हरि जानी यह बात। आज्ञा करी चक्रको माधव छिन कृत्याकर घात ॥ ७०८ ॥ काशी जाय जराय छिनकमें गये द्वारका फेर। अति आनन्द परम सुखसों सब दिन बीतत रसटेर ॥ ७०९ ॥ पुनि कुरुक्षेत्र गये यादव मिलि कियो तीर्थ अस्नान। यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रनको बहु दान ॥ ७१० ॥ सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर। दर्शन भयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनु पीर ॥ ७११ ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव। कुंती नकुल और गान्धारी कृपी विदुर सहदेव ॥ ७१२ ॥ दुर्योधन सब भ्रात संगलै धृतराष्ट्रहि लै आयो। नारद गौतम वाल्मीकि मुनि हरिदर्शन हित धायो ॥ ७१३ ॥ भारद्वाज मरीचि अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरु सनकादिक संत ॥ ७१४ ॥ हरिको दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्हीं। अति आनंद भये तन मनमें सौंज बहुत विधि दीन्हीं ॥ ७१५ ॥ ब्रजवासी सब सखा संगके यशुमति अरु ब्रजराज। दर्शन पाय बहुत सुख पायो सफल भये सब काज ॥ ७१६ ॥ यशुमति मात उछंग लगाये बल मोहनको आय। बालभाव जियमें सुधि आई अस्तन चले चुचाय ॥ ७१७ ॥ गोपिन देखि कान्हकी शोभा बहुतहि मन सुख पायो। सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो ॥ ७१८ ॥ रुक्मिणि कहत कमललोचनसों राधा हमैं देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सबहिनकुँ सुनायो ॥ ७१९ ॥ तब वृषभानुसुता पगधारी रानिन

मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले तामधि फूली सांझ ॥ ७२० ॥ देख तेज वृषभानु-सुताको सबै भई छबि हीन । अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहिं कृतारथ कीन ॥ ७२१ ॥ तब हरि कह्यो मोहिं राधा बिन पल क्षण कछु न सोहाय। सुनो रुक्मिणी कथा घोषकी मोपै कहिय न जाय ॥ ७२२ ॥ एक दिना वनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो। ताके बल गिरि गोवर्द्धन लै अपने हाथ उठायो ॥ ७२३ ॥ अरु काली धेनुक दावानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल विघ्नकों छिनमें दिये नशाई ॥ ७२४ ॥ भांति भांति करि मोहिं लडायो सघन कुंजमें जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय ॥ ७२५ ॥ रास केलि करि क्रीडा कीन्हीं होरी खेल खिलायो। मटुकि छुडाय लियो दधि बरसत तउ कछु मन नहिं आयो ॥ ७२६ ॥ रत्न जटित पर्यंक द्वारका पौढत हैं सुखधाम। तोहू इनको ध्यान करतही बीतत है सब याम ॥ ७२७ ॥ इन बिन मोहि कछु नहिं भावै नन्दरायकी आन। सुनो रुक्मिणी लोचनमें ए बसी रहैं मम प्राण ॥ ७२८ ॥ जागत सोवत अरु वन डोलत भोजन करत विहार। ध्यान करत नखशिख इनहीकी बसि द्वारकामँझार ॥ ७२९ ॥ तब रंग मिलि बहुत भांतिनसों कीन्हें विपुल विहार। ब्रजजन चले सकल गोकुलको दीन्हें दान अपार ॥ ७३० ॥ चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल भार। पहुँचे आय द्वारका संमुख घर घर मंगलचार ॥ ७३१ ॥ कियो विचार यज्ञको राजा राजसूय जिय जानि। कृष्णचंद्रको वेगि बुलाओ संग सकल पटरानि ॥ ७३२ ॥ आये इंद्रप्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरे भूप बहु सकल देशके हरिदर्शन जिय जान ॥ ७३३ ॥ चारों भ्रात चारि दिशि जीतो भारत कही बखान। ठौर ठौरके नृप सब आये लै उपहार प्रमान ॥ ७३४ ॥ बडो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे विप्र बहु भारी। महाभाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहँ माधव अधिकारी ॥ ७३५ ॥ सबहिन कहयो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजै। सबमें बडो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै ॥ ७३६ ॥ तब सहदेव कह्यो सबहिनसों सुनो नृपति मन लाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचंद्र यदुराय ॥ ७३७ ॥ सबहिन कह्यो साधु यह बाणी सुर मुनि मनुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई ॥ ७३८ ॥ गोकुल नंद अहीर गोपगृह पय पियके यह जीयो। दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित विषम बहु कीयो ॥ ७३९ ॥ मातुल मारि बहुइ अघ कीन्हें कहांलों करो बडाई। वृन्दावन गोवर्धन कुंजन लूटी नारि पराई। ७४० ॥ वन वन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजै लकुटी हाथ गरे गुंजमाला अधर मुरलिका बाजै ॥ ७४१ ॥ ऐसे ख्याल करे इन बहुविधि कहन जु आवे लाज। वेद विदित सुर काज बिगारे बहँकाये ब्रजराज ॥ ७४२ ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरामें याचे भीख न दीन्हीं। अर्पण कियो नहीं देवनको पहिले इन मति कीन्हीं ॥ ७४३ ॥ माखन चोरचोर गोपिनको दूध जु दधि लै खायो। यमुना न्हात गोपनकन्यनको लै पट कदम चढायो ॥ ७४४ ॥ काली हरिकी आज्ञाको लै यमुनामांझ बसायो। ताहि निकाल दियो क्षणहीमें नेक सकोच न आयो

॥ ७४५ ॥ यक पूतना पयपान करावन प्रेमसहित चलिआई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राणजो लियो चुराई ॥ ७४६ ॥ जन्म होत इन मात तात को तबहीं बंधन दीन्हों। यादव जात भाज जित तितको अनत जाय दुख कीन्हों ॥ ७४७ ॥ वेणु बजाय रास इन कीन्हों मधुपगोपकी नारी । परनारीको दोष कछू चित इन नहिं कीन्ह विचारी ॥ ७४८ ॥ दूध दहीके भाजन चाटे नेकहु लाज न आई । माखन चोरि फोरि मथनीको पीवत छांछ पराई ॥ ७४९ ॥ छाक खाय जूंठन ग्वालिनको कछु मनमें नहिं मान्यो । परदाराके संग आय निशि कुब्जासों सुख मान्यो ॥ ७५० ॥ बहुत प्रीतिकरि गोपन जाने बहुविधि लाड लडायो । ताको यत्न कछू नहिं मान्यो मथुरामें चलिआयो ॥ ७५१ ॥ जरासन्ध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊ भाई नगर समुद्र बसायो॥७५२॥ कालयवनके आगे भाज्यो जाय गुफा गहिलीन्हीं । लात मारि मुचुकुन्द जगायो नेकु दया नहिं कीन्हीं ॥ ७५३ ॥ बातै बहुतयाहिकी लंपट सभामांझ नहिं कहिये । जियमें समुझ अपने संमुख मुखते चुपकरि रहिये ॥ ७५४ ॥ अतिशय क्रोध भये पांडवसुत और नृपति हरिदास । राखे बरज सबनको माधव नेक न भये उदास ॥ ७५५ ॥ अतिही भई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मारचो । करि निजभाव एक कुश तनमें क्षणक दुष्ट शिरमान्यो ॥ ७५६ ॥ परम कृपालु दयालु देवकीनन्दन पावननाम । दीन्हीं मुक्ति दया करिकै तब दियो लोक निजधाम ॥ ७५७ ॥ जयजयकार भयो वसुधापर राज युधिष्ठिर हरषे । अमृतस्नान कराय वेदविधि कनककुसुम शिर बरषे ॥ ७५८ ॥ दीन्हीं सभा बनाय पांडुकी मय मायागत अंत । ताको देख भ्रमे दुर्योधन महामोह मतिमंत ॥ ७५९ ॥ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान । अन्ध पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिस मान ॥ ७६० ॥ गयो भवन अकुलाय बहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी । ताही दिनते पांडुपुत्रसों वैर विषमगति ठानी ॥ ७६१ ॥ सभा रची चौपरक्रीडा करि कपट कियो अति भारी । जीत युधिष्ठिर भइ सब जानी तउ मनमें अधिकारी ॥ ७६२ ॥ युवती धरी जान दुष्टनने जब द्रौपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत पंथमें दुश्शासन गहिलाई ॥ ७६३ ॥ अहो नाथ ब्रजनाथ नाथ निज यदुकुलके निज नाथ । गोकुलनाथ नाथ सब जनके मो पति तुम्हरे हाथ ॥ ७६४ ॥ ज्यों गजराज बचायो जलमें नेक विलंब न कीन्हीं । अपनो भक्त बचावन कारण विष अमृत करि दीन्हीं ॥ ७६५ ॥ शबरी गीध और पशु पक्षी सबकी रक्षा कीनी । अबतो सहाय करो तुम मेरी हौं पांवर मति हीनी ॥ ७६६ ॥ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका मंझार । पासे डार परम आतुर सों कीन्हें अनत उचार ॥ ७६७ ॥ चीर बढाय दियो बहु तेहि क्षण ऐंचत पार न पायो । भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर सब विस्मय मन लायो ॥ ७६८ ॥ रहेउ दुष्ट पचि हार दुशासन कछू कला न चलाई । बैठो आय सभामें पाछे बार बार पछिताई ॥ ७६९ ॥ फिर द्रौपदी भवनमें आई श्रीहरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारतमें कही बहुत विधि भाखी ॥ ७७० ॥ पुनि वनवास दियो

पांडवसुत हरि द्वारकामें जानी । अक्षय पात्र दिवायो रविपै बडे भक्त सुखदानी ॥ ७७१ ॥ दुर्वासा शापनको आये तिनकी कछु न चलाई । अक्षय कियो कमलदल लोचन भक्तन भये सहाई ॥ ७७२ ॥ पंडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले । दुर्योधनसों कह्यो दूत ह्वै भक्त पक्ष दृढ़ बोले ॥ ७७३ ॥ पांच गांव पाण्डवको दीजै सुनो नृपति मम बात । और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ ७७४ ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान । इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजै और राज तुव जान ॥ ७७५ ॥ सुनिकै क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज । तुमरो कुल सब नाश होयगो कहिजो चले ब्रजराज ॥ ७७६ ॥ बहुत दुःख दीन्हों पाण्डवको अबलों मैं सहि लीन्हों । लाख भवन बैठार दुष्टने भोजनमें विष दीन्हों ॥ ७७७ ॥ वन वन फिरे अर्क तूलन ज्यौं वास विराटहि कीन्हों । अन्तहि गुप्त रहे ता पुरमें भेद काहु नहिं दीन्हों ॥ ७७८ ॥ जुरे नृपति अक्षौन अठारह भयो युद्ध अतिभारी । रथ हांकत गोविंद अर्जुनको दीन्ह शस्त्र सबडारी ॥ ७७९ ॥ करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्ममुख पुनि पुनि देव मनाऊं । जो तुम्हरे कर शर न गहाऊं गंगासुत न कहाऊं ॥ ७८० ॥ चढे प्रबल दल दोऊ ओरके बिच अर्जुन रथ ठाढो । इत पारथ गांगेय बली उत जुरो युद्ध अति गाढो ॥ ७८१ ॥ दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी । सत्यवचन हरि कियो भक्तको निगम झूठकर बानी ॥ ७८२ ॥ धरि रथचक्र श्याम निज करमें जबहि भीष्मपर डारो । शीतल भई चक्रकी ज्वाला जब शिर तिलक निहारो ॥ ७८३ ॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणनिधान गांगेय । तब हरि कहेउ विपुल बल तुम्हरो जीतिलिये सब देव ॥ ७८४ ॥ तब उन कहेउ चरण आपनमें राख्यो निशि दिन ध्यान । मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ॥ ७८५ ॥ डार शस्त्र शरशय्या सोये हरि चरणन चित लायो । उत्तर दिशि रवि जान देह तजि वहां परमपद पायो ॥ ७८६ ॥ नृपति युधिष्ठिर राजतिलक दै मारि दुष्टकी भीर । द्रोण कर्ण अरु शल्य मुक्त-करि मेटी जगकी पीर ॥ ७८७ ॥ गोविंद आय द्वारका निज गृह अति आनंद बढायो । घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होत बधायो ॥ ७८८ ॥ शल्य नृपति तप किय पंचानन तापै यह वर पायो । दियो बनाय नगर गोपुरमें काहु न जात लिवायो ॥७८९॥ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने । प्रद्युमन लरे सप्तदश दोदिन रंच हार नहिं माने ॥ ७९० ॥ हरि अप सगुन जानि हस्तिनपुर बैठ तुरत रथ धाये । बहुत देशको पावन करिकरि सांझ द्वारका आये ॥ ७९१ ॥ कीन्हों युद्ध आय शालवसों उन बहु माया कीन्हीं । जलमें थल थलमें जल देख्यो श्याम दूर कर दीन्हीं ॥ ७९२ ॥ माया दूर करी नंदनन्दन चक्र दियो शिरडार । क्षणहीं मांझ दुष्ट संहारो भुवको भार उतार ॥ ७९३ ॥ जयजयकार करत देवांगन वरषत कुसुम अपार । कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ॥ ७९४ ॥ राजसूय करवाय श्यामघन जरासंध मरवायो । दन्तवक्र महिपाल महाबल विदुरथ प्राण नशायो ॥ ७९५ ॥ बालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें

हरिलाये। दीन्हों दरश भक्त नृपबलिको तनुके ताप नशाये ॥ ७९६ ॥ बालक आय देवकी जाने अस्तन पान कराये। हरिको शेषपान करिके वे हरिके पद पहुँचाये ॥७९७॥ एक दिना यदुनाथ संग सब विप्र मण्डली लीन्हें। मिथिला चले जनक राजापै दरश कृपा करि दीन्हें ॥ ७९८ ॥ तहां बसत श्रुतिदेव महामुनि सुनि दर्शनको धायो। तब उन कहेउ चलो मेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ ७९९ ॥ नृपति कह्यउ मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय। ताहूके हरि आपु पधारे प्रकट धरे वपु दोय ॥ ८०० ॥ देख चरित्र विनोद लालके विस्मित भै द्विजराज। अद्भुत केलि कृपा करि कीन्हीं द्विजको ज्ञान दृढ़ाय ॥ ॥ ८०१ ॥ बहुत दिवसलों कृपा करी हरि जनकराय सुख दीन्हों। बहुरि पधारे पुरी द्वारका यदुकुलमें सुख कीन्हों ॥ ८०२ ॥ बहिन सुभद्रा व्याह विचारौ हरि अर्जुन चित धारो। श्रीबलदेव कह्यउ दुर्योधन नीको दुलह विचारो ॥ ८०३ ॥ हरिको भेद पायकै अर्जुन धरि दंडीको रूप। भिक्षाको निजभवन बुलायो श्रीभलभद्र अनूप ॥ ८०४ ॥ नयनन मिलत लई कर गहिकै फाल्गुन चले पराय। सुनि बलदेव क्रोध अति बाढचउ कृष्ण शान्त कियो आय ॥ ८०५ ॥ फेर बुलाय ब्याह करि दीन्हों विजय बहुत सुख पायो। फिर आये हस्तिनपुर पारथ मघवाप्रस्थ बसायो ॥ ८०६ ॥ एकदिना यक विप्र भक्तमति हरिको सखा कहावे। अति दारिद्र दुखित जब जाने तब पत्नी समुझावे॥ ८०७ ॥ जाहु नाह तुम पुरी द्वारका कृष्णचन्द्रके पास। जिनके दरश परस करुणाते दुख दरिद्रको नास ॥ ८०८ ॥ तंदुल मांग दोंचिके लाई सो दीन्हों उपहार। फाटे वसन बांधिकै द्विजवर अति दुर्बल तन हार ॥ ८०९ ॥ आये देव द्वारका हरिपै जाय चरण शिर नायो। हरि भेंटे भ्राताकी नाईं पूजा विविध करायो ॥ ८१० ॥ अपने मुनि आसन बैठारे हँसि २ बूझत बात। कहो विप्र हम गये वंतिका गुरुके सदन विख्यात ॥ ८११ ॥ वनमें वह वर्षा जब आई ताकी सुधि कर लेहो। गुरु आये आपुनको बोलन मंत्र थकायो मेहो ॥८१२॥ तादिनकी यह कथा तुम्हारी बिसरत नाहिंन मोहि। कीधौं कौन कार्यको आये सो पूछत हौं तोहि ॥ ८१३ ॥ कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुम्हरे साथ। फाटे वसन सकुच अति लागत काढत नाहिंन हाथ ॥ ८१४ ॥ हरि अपने कर छोरि वसनको तंदुल लीन्हें हाथ। मुट्ठी एक प्रथम जब लीन्हें खान लगे यदुनाथ ॥ ८१५ ॥ द्वितीय मुष्टिका लेन लगे जब कमला गहि लियो हात। दियो द्विजहि मघवाको वैभव बाढचो यश विख्यात ॥ ॥ ८१६ ॥ भोर भये उठि चले भवनको हरि कछु इनहिं न दीन्हों। ताको हर्ष शोक निज मनमें मुनिवर कछू न कीन्हों ॥ ८१७ ॥ भली भई हरि दरशन पायो तनुको ताप नसायो। दुर्बल विप्र कुचैल सुदामा ताको कंठ लगायो ॥ ८१८ ॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपै वर्णि न जाई। शेष सहसमुख पार न पावत निगम नेति कहि गाई ॥८१९॥ ऐसे कहत गये अपने पुर सबहिं विलक्षण देख्यो। मणिमय महल फटिक गोपुर लखि कनक भूमि अवरेख्यो ॥ ८२० ॥ पत्नी मिली परमसुख पायो कृष्णचन्द्र आराधे। मघवाको सुख भयो सुदामहिं तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ ८२१ ॥ नौलख धेनु दई राजा नृग

बहुतहि दान देवायो । कृष्ण भक्ति बिन विप्रशापते गिरगिटकी गति पायो ॥ ८२२ ॥ ताको चरण परशिके माधव दुःखित शाप छुटायो । कृपा करी यदुनाथ महानिधि जिन वैकुंठ पठायो ॥ ८२३ ॥ बलदाऊ ब्रजमंडल आये ब्रजवासिनको भेंटे । बहुत दिननके विरहताप दुख मिलत क्षणकमें मेटे ॥ ८२४ ॥ सघन निकुञ्ज सुभग वृन्दावन कीन्हें विविध विहार । गोपिन सँग रासरस खेले बाढ्यो श्रमसुकुमार ॥ ८२५ ॥ कालिन्दीको निकट बुलायो जल क्रीडाके काज । लियो आकरषि एक क्षणमें हरि अति समरथ यदुराज ॥ ८२६ ॥ विविध भांति क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिन सुख दीन्हों । द्वादश वन अवलोक मधुपुरी तीरथको चित कीन्हों ॥ ८२७ ॥ शुभ कुरुक्षेत्र अयोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये । पुनि शतरुद्र और चन्द्रभागा गंगा व्यास न्हवाये ॥ ८२८ ॥ निमिषारन आये बलजू जब सकल विप्र शिर नायो । करी अवज्ञा कथा कहत द्विज अपने लोक पठायो ॥ ८२९ ॥ तब द्विज कहेउ कथा कहिके यह हमको सुख उपजायो । हम कापै अब कथा सुनैंगे बलदाऊ समझायो ॥ ८३० ॥ इनको पुत्र होय जो बालक ताको वेग बिठावो । धरेउ हाथ शिर दीन्हीं विद्या नित प्रति कथा सुनावो ॥ ८३१ ॥ पुनि द्विज विनती करि यह भाष्यो असुर एक इहँ आवे । यज्ञ करतमें जान परत वह आय रुधिर वर्षावे ॥ ८३२ ॥ यह सुनिके बलदेव गुसांई हल मूसल लियो हाथ । लियो पकर हल नभ मंडलते कर मूसलसों घात ॥ ८३३ ॥ जयजयकार भयो सुरलोकन देव दुंदुभी बाजै । अस्तुति करत बहुत पूजा द्विज अति आनंद समाजै ॥ ८३४ ॥ विनती करी बहुत विप्रनने राम विप्र तुम मारेउ । तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरि द्विज वचन विचारेउ ॥ ८३५ ॥ वर्ष दिवसमें अरसठ तीरथ न्हाय करत घर आये । आय प्रभासु विप्र बहुजनको बहुतहि दान देवाये ॥ ८३६ ॥ पुनि मिथिला यक दिवस पधारे हरि बलदेव गुसांई । गदायुद्ध दुर्योधन सिखयो नाना भेद बताई ॥ ८३७ ॥ पुनि द्वारका पधारे निजपुर अति आनंद सुख बाढ्यो । प्रगट ब्रह्म नित वसत द्वारका कलह भूमिको काढ्यो ॥ ८३८ ॥ दश दश पुत्र एक यक कन्या हरि सबके उपजाई । सुतके सुत नाती पतिनीकी महिमा कहिय न जाई ॥ ८३९ ॥ बडे बली प्रद्युम्न कहावत कृष्ण अंश अवतार । सब जग जीत्यो तिहुँ लोकन तिन बाढ्यो सुयश अपार ॥ ८४० ॥ अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुलको दोष मिटायो । करि दिग्विजय विजयको जगमें भक्त पक्ष करवायो ॥ ८४१ ॥ नाना विधि कीन्हीं करि क्रीडा यदुकुल शाप दिवायो । जो ज्यहि लोक छोंडिके आयो ताको तहँ पहुँचायो ॥ ८४२ ॥ ऊधोको कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्त्व बतायो । कही कथा दत्तात्रय मुनिकी गुरु चौबीस करायो ॥ ८४३ ॥ कहि आचार बक्त विधिभाषी हंसधर्म प्रकटायो । कही विभूती सिद्धि साधनता आश्रम चार कहायो ॥८४४॥ सांख्य तत्त्व गीता हरि कीन्हीं गुणके भेद करायो । ऐलगीत पुनि भिक्षुगीत कहि पूजा विधि दरशायो ॥ ८४५ ॥ सदा वसत हरि पुरी द्वारका बहु विधि भोग विलासी । आदि अनंत अघट्ट अनूपम हैं अविगत अविनाशी ॥ ८४६ ॥ एक दिना यक विप्र द्वारका वसत

सुखद निजधाम । वेदरूप तपरूप महामुनि कृष्ण विप्र यह नाम ॥ ८४७ ॥ बालक दश जु भये वाके जब भूमा लिये मँगाय । चित्तमें यह अनुरक्त विचारत हरि दर्शनको चाय ॥ ८४८ ॥ दश सुत भयो जानिकै ब्राह्मण करि पुकार हरि पास । तब हरि कहेउ देवकी गति यह करत काल जग नास ॥ ८४९ ॥ तब अर्जुन यह कहेउ मत्त है नृप नाहिंन भुवभार । मैं अर्जुन गांडिवधनु जाको काल लरों क्षणमार ॥ ८५० ॥ जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मणते अर्जुन गये गृह ताइ । शरपंजर रोप्यो चहुँ दिशिते जहां पवन नहिं जाइ ॥ ८५१ ॥ तब सुत गयो देहको लैकै दरशन भयो न ताय । अतिही क्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ॥ ८५२ ॥ तब अर्जुन ढूँढनको निकसे तीन लोक फिरि आयो । कहूं न पायो सुत ब्राह्मणके तबमनमें अकुलायो ॥ ८५३ ॥ कियो विचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो । लै निज सँग चले पश्चिमको लोकालोक सोहायो ॥ ८५४ ॥ कनक भूमि अरु धाम देनको देखे परम सुहायो । बहुत निबिड तम देख चक्र धरि धरेउ हाथ समुझायो ॥ ८५५ ॥ महा कालपुर तुरत पधारे हरि भूमाके पास । तुल्य अग्नि बर अगिन समानी भूमा तेज प्रकाश ॥ ८५६ ॥ कृष्ण तेजको देख सकल सुर तन मन भयो हुलास । अतिही मन्द तेज भूमाको हरिके तेज प्रकाश ॥ ८५७ ॥ अति आनन्द परस्पर बाढ्यो जब उन विनती कीन्ही । भली भई भुवभार उतारेउ मेरी फिरि सुधि लीन्हीं ॥ ८५८ ॥ लै दशपुत्र द्वारका आये दीन्हें विप्र बुलाय कीन्हों दुःख दूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय ॥ ८५९ ॥ कीन्हीं केलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेउ । प्रकट ब्रह्मराजत द्वारावति वेद पुराण विचारेउ ॥ ८६० ॥ एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई । सुनु रुक्मिणि राधिका बिना मोहिं पल सम कल्प बिहाई ॥ ८६१ ॥ कनकभूमि रचि खचित द्वारका कुंजनकी छवि नाहीं । गोवर्धन पर्वतके ऊपर बोलत मोर सुहाहीं ॥ ८६२ ॥ यमुनातीर भीर खग मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै । वृन्दा विपिन राधिका मन्दिर नितप्रति लाड़ लड़ावै ॥ ८६३ ॥ राति दिवस रस स्रवत सुधामें कामधेनु दरशाई । लूट लूट दधि खात सखन सँग तैसो स्वाद न पाई ॥ ८६४ ॥ षटरस भोजन नानाविधिके करत महलके माहीं । छाके खात ग्वालमंडलमें वैसो तो सुख नाहीं ॥ ८६५ ॥ जन्मभूमि देखनके कारण मेरो मन ललचावै । धौरी धेनु बुलावन कारण मधुरे बेनु बजावै ॥ ८६६ ॥ रासविलास विविध मैं कीन्हें संग राधिका लीन्हें । कीन्हें केलि विविध गोपिनसों रुबहिनको सुख दीन्हें ॥ ८६७ ॥ बल मोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधोको सँग लीने । दीन्हों बास चरणरज गोपिन गुल्मलता रस भीने ॥ ८६८ ॥ सदा विलास करत गोकुलमें धनधन यशुमतिमात । ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारकानाथ ॥ ८६९ ॥ नित प्रति मंगल रहत मकरके नितप्रति बजत बधाई । नितप्रति मंगल कलश धरावत नित प्रति वेद पढाई ॥ ८७० ॥ श्रीवृषभानु रायके आँगन नितप्रति बजत बधाई । नितप्रति मिल सुनि राजमण्डली मंगलघोष कराई ॥ ८७१ ॥ बालकेलि क्रीडत ब्रजआँगन यशुमतिको सुख दीन्हों । तरुण

रूप धरि गोपिनके हित सबको चित्त हरि लीन्हों ॥ ८७२ ॥ चन्द्रावली गोपकी कन्या चन्द्रभागगृह जाई । भई किशोर श्यामने देखी अद्भुत प्रीति बढाई ॥ ८७४ ॥ तब ललिता पूछचो नीके कर केहि विधि श्याम मिलाई । अब न परत मोकूं कल क्षणहूं जियमें अति अकुलाई ॥ ८७४ ॥ तब उन कहेउ शीश गोरसले बेचनके मिस आओ । गोवर्धनपर गोबिंद खेलत निरख परम सुख पाओ ॥ ८७५ ॥ करि शृंगार चली चन्द्रावलि नख शिख भूषण साजै । ज्यों करनी गजराज विलोकत ढूँढतहै अतिगाजै ॥ ८७६ ॥ गोवर्द्धनके शिखर चारुपर सखावृन्द सँग लीन्हें । गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मन कीन्हें ॥ ८७७ ॥ राखो घेरि सकल युवतिनको सखा वृन्दसों भाख्यो । आपु जाय पकरचो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यो ॥ ८७८ ॥ देहो दधिको दान नागरी गहर न लावो चित्त । तुमरे काज नित्य हम ठाढे अरपे अपनो वित्त ॥ ८७९ ॥ वृन्दावनमों धेनु चरावत मांगत गोरस दान । नाना खेल सखन सँग खेलत तुम पायो नृपयान ॥८८०॥ अरी ग्वालि मदमत्त वचनकी बोलत वचन विचार । अचल राज गोबर्द्धन मेरो वृन्दावन मंझार ॥ ८८१ ॥ जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावनकी ठौर । लूटलूट दधि खात सबनको सब चोरनके मौर ॥८८२॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत । सखा वृन्द सब मीत हमारे बडी राज रजनीत ॥ ८८३ ॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावत बात । जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधीरात ॥ ८८४ ॥ सुनरी ग्वालि गँवार बातकी बोलत बिना विचार । कमल कोषमें वसत मधुप ज्यों त्यों भुव रहे मुरार ॥ ८८५ ॥ दूध दहीके नात बनावत बातें बहुत गोपाल । गढि गढि छोलत कहा रावरे लूटत हौ ब्रजबाल ॥ ८८६ ॥ जो प्रभु देह धरे नहिं भुवपर दीन अधमको तारे ॥ बढे असुर पुहुमीपर खल अति तिन्हैं तुरतको मारे ॥ ८८७ ॥ योग युक्तिकर ध्यान लगावत योगसिद्ध कर ज्ञान । नेति २ करि निगम बतावत ताहि होत निरमान ॥ ८८८ ॥ योग सांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय विनास । प्रेमभक्त मेरो यश गावे तेहि घट मेरो बास ॥ ८८९ ॥ मुखऊपर कह कहो लायके अर उत्तरको खोर । जब यशुमतिने ऊखल बांधे हमारी दीन्हें छोर ॥ ८९० ॥ बालक निपट अयान ग्वालिनी कछु सुधि जानिन जाय । लैकर चीर कदमपर बैठचो सबहिन हाहाखाय ॥ ८९१ ॥ बहुत भयेहौ ढीठ साँवरे मुखपर गारी देत । तुम्हरे हम डरपत नाहिंन कहा कँपावत वेत ॥ ८९२ ॥ श्याम सखनसों कहेउ टेर दे घेरो सब अब जाय । बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटुकी लेहु छिड़ाय ॥ ८९३ ॥ जाय श्याम कंकणकर लीनो महि हारावलि तोर । लूट लूट दधि खात सांबरो जहां सांकरी खोर ॥ ८९४ ॥ इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमारि । विमल विमल दधि खात सबनको करत बहुत मनुहारि ॥ ८९५ ॥ गहि बहियां ले चले श्याम वन सघन कुंजके द्वार । पहिले सखी सबै रचिराखी कुसुमन सेज सँवार ॥ ८९६॥ नाना केलि सखिन सँग विहरत नागर नन्दकुमार । आलिंगन चुम्बन परिरंभन भेंटत भरि अँकवार ॥ ८९७ ॥ श्रम जल बिंदु इन्दु आनन पर राजत अति सुकुमारि ॥ मानो

विविध भाव मिल बिससत मगन सिंधु रससार ॥८९८॥ कंजरंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वारे। निरख निरखत दम्पति नेत्रन सुख तोर तोर तृन डारे॥८९९॥यह अवलोकि देव ग्रन्धब मुनि बरसत कुसुम अपार । जय जय करत बार नीराजन बोलत जय जय कार ॥९००॥ गोवर्द्धनकी सघन कन्दरा कीनो रैनि निवास। भोर भये निजधाम चले दोउ अति आनंद विलास ॥ ९०१ ॥ नन्दधाम हरि बहुरि पधारे पौढ रहे निज शैन। यशुमति मात जगावत भोरहिं जागे अम्बुज नैन ॥ ९०२ ॥ करी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान। करि शृंगार चले दोउ भइया खेलनको सुखदान ॥ ९०३ ॥ कहुँ खेलत मिल ग्वाल मंडली आँख मीचनी खेल। चढ़ा चढ़ीको खेल सखनमें खेलत हैं रसरेल ॥९०४॥ कहूँ आमरू डार विटपकी खेलत सखन मँझार। कूद कूद धरणी सब धावत दाँव देत किलकार ॥९०५॥ भोजन समय जान यशुमतिने लीने दुहुन बुलाय ॥ बैठ आय यशुमति कि गोदमें आनंद उर न समाय ॥ ९०६ ॥ बहु विधिके पकवान बनाये परसत यशुमति माय। आरोगित बलमोहन दोऊ सुख देखत ब्रजराज ॥ ९०७ ॥ कबहूं कवर खात मिरचनकी लागी दशन टकोर। भाज चले तब गहे रोहिणी लाई बहुत निहोर ॥९०८॥ भोजनकरि नाना विधि दोऊ लीनो मठा सलोनो। अँचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो ॥ ९०९ ॥ बीरी खाय चले खेलनको बीच मिलि ब्रजराज। लै चलि पकर बाँह राधापै सघन कुंजके द्वार ॥ ९१० ॥ राधासों मिलि अति सुख उपज्यो उन पूछी इक बात। कहो जु आज रैन कहँ सोये हम देखे तुम जात ॥ ९११ ॥ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक दौर। ताको लेन गयो गोबर्धन सोय रहेउँ तेहि ठौर ॥ ९१२ ॥ कन्द मूल फल दीने गोधन सो निशिको मैं खायो। भोर भये उठि तेरे आयो चरण कमल परसायो ॥ ९१३ ॥ निज प्रतिबिंब विलोकि राधिका हरिनख मंडल माहँ द्वितिय रूप देखे अबलाको मान बढ्यो तन छाहँ ॥ ९१४ ॥ चली रिसाय कुंजमृगनयनी जहँ अति करत गुंजार। बैठी जाय एकान्त भवनमें जहां मानगृह चार ॥ ९१५ ॥ नंद कुँवर विरहन राधाके विरहभये भरिपूर। बैठे जाय एकान्त कुंजमें सखा कियो सब दूर ॥ ९१६ ॥ ललिता बोल कही मृदुवाणी कृष्ण विमल दलनैन। बिन राधा मोहिं कल न परत है कहत मधुर मृदु बैन ॥ ९१७ ॥ बेगजाय परि पायँ राधिका बिनती करो सुनाय। दरशन देव सकल दुख मेटो तुम बिन रहेउ न जाय ॥ ९१८ ॥ तुम विन खान पान नहिं भावत गोचारन शृंगार। रैन नींद नहिं परत निरन्तर सम्भाषण व्यवहार ॥ ॥ ९१९ ॥ करि दण्डवत चली ललिता जो गई राधिका गेह। पायँन पर पर बहुत विनय कर सफल करनको नेह॥९२०॥बेगि चलो वृषभानुनंदनी बोले नंदकुमार । तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ ९२१ ॥ नव निकुंजमें मिलो श्यामसों भेंटो भरि अँकवार। कुसुम सेजपर करो केलि प्रिय गिरधर परम उदार ॥ ९२२ ॥ तो विन पियहि कछू नहिं भावे तोसों पिय आधीन। तो बिन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ॥ ९२३ ॥ कहा सुभाव परचो सखि तेरो यह विनवत हौं तोह। मान करत गिरवर

धर पियसों मानत नाहिन मोह ॥ ९२४ ॥ करि श्रृंगार सकल ब्रज सुन्दरि नीलाम्बर तनुसाज। रैनि अँधेरी कछू न दीखत नूपुर ध्वनि जिन बाज ॥ ९२५ ॥ कुवलय दल कुसुमन शय्या रचि पंथ निहारत तोर। सपन जाग अरु शयन सुमृत तुव वचन सत्य है मोर ॥ ९२६ ॥ सित अरु पीत यूथिका बेनी गूँथो विविध बनाय। रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ ९२७ ॥ तू छबि सिंधु विरह ब्रजनायक क्षुद्र नदी नहिं भावै। जबते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नहिं आवै ॥ ९२८ ॥ हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम। विरह विराग महायोगी ज्यों बीतत हैं सब याम ॥९२९॥ कबहुँक किसलय सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कबहुँक अपने हाथ सँवारत गूंथत कुसुमन माल ॥ ९३० ॥ तुव बिन बट संकेत सदन वन देखत लगत उदास। विरह अग्नि चहुँ दिशिमें धावत फूले दिखत पलास ॥ ९३१ ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृतवान। बैठ रहे दुरसदन सघन वन ध्वनि नहिं सुनियत कान ॥ ९३२ ॥ कालिन्दी तट विमल कदमतर करत वदन तुव ध्यान। सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान ॥ ९३३ ॥ गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव श्रुतिकी सुधि आवै ॥ कंचन बरन जात तेरो वपु पीताम्बर पहिरावै ॥ ९३४ ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुर ध्वनि कमल नयन अकुलात। तेरे बोल करत सुधि जियमें बिरह मगन ह्वैजात ॥ ९३५ ॥ तुव नासापुट गात मुक्त फल अधर बिंब उनमान। गुंजाफल सबके शिर धारत प्रगटी मीन प्रमान ॥ ९३६ ॥ सिंधु सुतासुत तारिपु गमनी सुन मेरी तू बात। कामपिता बाहन भखको तनु क्यों न धरत निज गात ॥ ९३७ ॥ अलि बाहन पति बाहन रिपुकी तपन-बढी तनुभारी। शैल सुतासुत तासुत अँगना सोतैं सबै विसारी ॥९३८॥ भृंग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग। जऊसुत बाहनसों जन धारत विषम लगत विषअंग॥९३९॥ चतुरानन सुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो। मन्मथ मात तात सुत अथयो सो तो वृथा गँवायो ॥ ९४० ॥ पंकज उर पंकज जिन केरे तेरो अटल सुहाग। सुरपति बाहन तासुत शिरपर मांग भरो अनुराग ॥ ९४१ ॥ कमल पुत्र तासुत कर राजत सोहरि निज कर लीन्हें। सप्तस्वरन उपजाय बजावत रटन राधिका लीन्हें ॥ ९४२ ॥ सुत प्रह्लाद तासु सुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो ॥ संज्ञा सुत वपु सदृश बसन तन सो तन लागत छायो ॥ ९४३ ॥ सारँग ऊपर सारँग राजत सारँग शब्द सुनावै। सारँगदेख सुने मृग-नैनी सारंग सुख दरशावै ॥ ९४४ ॥ सारंग रिपुकी बदन ओट दै कह बैठी है मौन। ब्रह्म सुता सारँगके धोखे करत सकल ब्रज गौन ॥ ९४५ ॥ सारँगसुता देखि सारँगको तेरो अटल सुहाग। सारँग पति ता पति बाहन कीरत रट अनुराग ॥ ९४६ ॥ दधिसुत बाहन सुभग नासिका दधिसुत बाहन देख्यो। दधिसुत बाहन वचन सुनत तुव अंग अंग अवरेख्यो ॥ ९४७ ॥ शशिको भ्रात कहत ता बाहन कुन्द कुसुम लल-चात। खंजन सदृश देख तुव अँखियां तन मनमें अकुलात ॥ ९४८ ॥ मारुत सुरपति रिपु ता पतनी ता सुत बाहन बात। श्रवण सुनत अकुलात साँवरो

कछुक कही नहिं जात ॥ ९४९ ॥ चतुरानन सुत ता सुत पत्नी ता सुतको जो दास । ता सुत बाहन पुत्र अंगधरि जलसुत करों प्रकास ॥ ९५० ॥ श्रीबलदेवराम जो कहिये तामें भान मिलाय । ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ॥ ९५१ ॥ सिंधु-सुता तव भाग्य विलोकत मनमें रही लजाय । काम पिता माता गुरु ता वपु युवति कोटदरशाय ॥ ९५२ ॥ सातों रासमेल द्वादशमें ऐसे बीतत याम । द्वितीय रासमें मिलत सप्तमी सो जानत निज धाम ॥ ९५३ ॥ शैलसुता धरि ता रिपु बांधत अंगअंग पिय आज । कोटि यत्नकर खींचत तोऊ मिटत नहीं ब्रजराज ॥ ९५४ ॥ बायस अजा शब्द मन मोहन रटत रहत दिन रैन । तारापतिके रिपु परठाढे देखत हैं हरि नैन ॥ ९५५ ॥ गंगासुत रिपु रिपु शिष मेरी सुनत नहीं सखि काह । नारायणसुत ता सुत ता सुत लगत विषम विष ताह ॥ ९५६ ॥ जलसुत बाहन देख वदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी । मंगल मात तासु पति बाहन राजत सदृश भुलानी ॥ ९५७ ॥ दशप्रजापतिकी तनयापति ता सुत नारगई । सिंधुसुता सुत बाहनकी गति देखत विश्रम भई ॥ ९५८ ॥ अग्नितात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी । बंधु कुसुम द्रुम ता रिपुको पति सारँग रिपुकर भाखी ॥ ९५९ ॥ पति पाताल लग्न तनधारन सो सुख भुजा विचारी । प्रथम मथत जल-निधि सो प्रकटचो सो लागत सब नारी ॥ ९६० ॥ बंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरे गावै । ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारँग सुता देखावै ॥ ९६१ ॥ इन्द्र सुता-पति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावै । इन्द्र सुता तनया पतिको सुत ताके गुनै न पावैं ॥ ९६२ ॥ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर वचन उच्चार । कमलाबाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार ॥ ९६३ ॥ कालिन्दी पतिनैन तासु सुत लागतहैं सबलोग । इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ॥ ९६४ ॥ अम्बुज मात तात पति ता रिपु ता पति काम बिगारे । ताते सुन तू भाननन्दनी मेरो वचन विचारे ॥ ॥ ९६५ ॥ तीस मान द्वै मास सकल ऋतु सिंधुसुता सन जान भूपन अंग लसत गुंजा-वलि और न कछू समान ॥ ९६६ ॥ इति दृष्टकूट सूचनिका सम्पूर्ण ॥ कबहुँक सेज रचत बेंदी कर हृदय होम घृत नैन । विप्र भोज बालन तुव देखियत अंगकूस नहिं चैन ॥९६७॥ अब तू बेग बिचार बचन मम सुनु वृषभानुकुमारि । मिलिहौ वेग कमलदल लोचन सुनु मेरी मनु हारि ॥ ९६८ ॥ गौर बरण ह्वै जात सांवरो ध्यान करत तुव अंग । पुनि ललिता हरिके ढिग आई बैठे सांवल रंग ॥ ९६९ ॥ बेग चलो तुम श्याम मनोहर आपु काज महँ काज । लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज ॥ ९७० ॥ ऋतु बसंत अब आय देखियत फूले कुसुम सुरंग । मानो मदन बसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग ॥ ॥ ९७१ ॥ वेगि चलो अब पियां मनावन नेक बिलम्ब न लाओ । मेरी कही बात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढाओ ॥ ९७२ ॥ परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय । सुनत वचन दूतिको बदनमें श्याम चले अकुलाय ॥ ९७३ ॥ जहँ बैठी वृषभानुनंदिनी तहँ आये धरि मौन । परे पांय हरि चरण परसकरि छिन अपराध सलौन ॥ ९७४ ॥

सुनि हरि बचन बिलोकत शोभा मानगयो सबछूट । मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट ॥ ९७५ ॥ रच्यो शृँगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया बनायो । शीशफूल बेनी नकबेसर तिलकभाल करवायो ॥ ९७६ ॥ युगताटंक चिबुक दशनावलि कर कंकण उरमाल । नूपुर पद कटि छुद्रघंटिका सब शृँगार रसाल ॥ ९७७ ॥ सकल शृँगार करत वर्णनको कृपा यथामति मोर । होत विलम्ब मिलनके कारण ताते वर्णत थोर ॥ ९७८ ॥ चले धाय नवकुञ्ज दोउ मिलि किसलय सेज विराजे । परिरंभण सुख रास हास मृदु सुरत केलि सुख साजे ॥ ९७९ ॥ नाना बंध विविध रस क्रीडा खेलत श्याम अपार । रस रस तत्त्व भेद नाहिं जानत दंपति अंग सँभार ॥ ९८० ॥ सुरत सरुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुख झेल । निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहु खेल ॥ ९८१ ॥ नूपुर संचित किंकिनिकी ध्वनि सुनत मधुर किलकार । मदन सिंधु मधुमत्त मधुपगन फूले करत गुंजार ॥ ९८२ ॥ मधुपयूथ मिलि सबन चन्द्रमा तडित लिये आकाश । खंजन मीन बजावत गावत निरतत सुख सुविलास ॥ ९८३ ॥ जलद समूह खसत उडुगण गण पै समुद्रके बीच । मकरकपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधा-रस सींच ॥ ९८४ ॥ मोहन बेल शृँगार विटपसों उरझी आनँदवेल । कंचन बेल तमालहि लपटी रसिक रंग भरि रेल ॥ ९८५ ॥ युगल कमलसों मिलत कमल युग युगल कमल ले संग । पांच कमल मध्य युगल कमल लखि मनसाभई अपंग ॥ ९८६ ॥ किरणकदम्ब मंजुका पूरण सौरभ उडत अवेश । अगर धूप सौरभ नासा सुख बरषत परम सुदेश ॥ ९८७ ॥ कुंद कुमुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात । तापर चन्द्र देख संज्ञासुत तनमें बहुत डेरात ॥ ९८८ ॥ बरना भख करमें अवलोकत केश पास कृत बन्द । अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत मुखफन्द ॥ ९८९ ॥ मुदित मराल मिलत मधुकरसों खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रणधीर मिलतसम रत रस लहरतरंग ॥ ९९० ॥ सुरत समुद्र कहत दम्पतिके निरवधि रमन अपार । भयो शेष मनमूढ कहनको राधाकृष्ण विहार ॥ ९९१ ॥ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आतमाराम । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुशोतम सब विधि पूरणकाम ॥ ९९२ ॥ आदि सनातन एक अनूपम अवि-गत अल्पअहार । ॐकारआदि वेद असुरहन निर्गुण सगुण अपार ॥ ९९३ ॥ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षटआनन सम जान । सहसानन बहुआनन गावत पार न पाय बखान ॥ ९९४ ॥ सगनकुंजमें अमित केल लख तनु सुगन्धकी रेल । मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदारस झेल ॥ ९९५ ॥ मलिन भये रस मानसरोवर मुनिजन मानस-हंस । थकित विलोकि शारदा वर्णन करिबे बहुत प्रशंस ॥ ९९६ ॥ वृन्दावन निजधाम परम रुचिवर्णन कियो बढाय । व्यास पुराण सघन कुञ्जनमें जब सनकादिक आय ॥ ९९७ ॥ धीर समीर बहत त्यहि कानन बोलत मधुकर मोर । प्रीतम प्रियावदन अव-लोकत उठि उठि मिलत चकोर ॥ ९९८ ॥ अमित एक उपमा अवलोकत जियमें परत विचारां नहिं प्रवेश अज शिव गणेश पुनि कितक बात संसार ॥ ९९९ ॥ सहस रूप बहु-

रूप रूप पुनि एक रूप पुनि दोय । कुमुद कली विकसित अम्बुज मिलि मधुकर भागी सोय ॥ १००० ॥ नलिनपराग मेघमाधुरिसों मुकुलित अम्ब कदम्ब । मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब ॥ १००१ ॥ गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरष प्रवीन । शिवविधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नाहिं लीन ॥१००२॥ सुख पर्य्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये । मधुर मल्लिका कुसुमित कुञ्जन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३ ॥ गोवर्द्धन गिरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुखमान । निबिड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रस बिलसत सुखखान ॥ १००४ ॥ निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेम मत्त अनुराग । ललितादिक सींचत सुखनैनन जुर सहचरि बड़भाग॥१००५॥ यह निकुञ्जको वर्णन करिदे वेद रहे पचिहार । नेति नेति कर कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार ॥ १००६ ॥ दरशन दियो कृपा करि मोहन वेग दियो वरदान । आगम कल्प रमण तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान ॥ १००७ ॥ सो श्रुतिरूप होय ब्रजमण्डल कीनो रास विहार । नवल कुञ्जमें अंश बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार ॥ १००८ ॥ पुनि ऋषि रूप राम वर पायो हरिसे प्रीतम पाग । चरण प्रसाद राधिका देवी उन हरिकंठ लगाय ॥ १००९ ॥ वृन्दावन गोवर्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेश । नित प्रति करत विहार मधुरस श्याम श्याम सुरेश ॥ १०१० ॥ निरखि निरखि सुख दम्पतिको यह कविकुल सब पचि हारे । भूषण खसे सुरत वश दोऊ केशन आपु सँवारे ॥ १०११ ॥ ललिता ललित बजाय रिझावत मधुर बीन कर लीने । जान प्रभात रागपञ्चम षट मालकोस रसभीने ॥ १०१२ ॥ सुर हिंडोल मेघ मालव पुनि सारँग सुरनट जान । सुर सांवत भूपाली ईमन करत कान्हरो गान ॥ १०१३ ॥ ऊंछ अडानेके सुर सुनियत निपट नायकी लीन । करत विहार मधुर केदारो सकल सुरन सुख दीन ॥ १०१४ ॥ सोरठ गौर मलार सोहावन भैरव ललित बजायो । मधुर विभास सुनत बेलावल दम्पति अतिसुख पायो ॥ १०१५ ॥ देवगिरी देशाक देव पुनि गौरी श्री सुखरास । जैतश्री अरु पूर्वी टोडी आसावरि सुखरास ॥१०१६॥ रामकली गुनकली केतकी सुर सुघराई गाये । जैजैवन्ती जगत मोहनी सुरसों बीन बजाये ॥ १०१७ ॥ सूआ सारस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुवरि रस मान्यो । जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोऊ जान्यो ॥ १०१८ ॥ जागे प्रात निपट अलसाने भूषण सब उलटाने । करत शृंगार परस्पर दोउ अति आलस शिथिलाने ॥ १०१९ ॥ जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सफल करि लेखे । जान प्रभात उछंगन दम्पति लेत प्राण रसपेखे ॥ १०२० ॥ औट्यो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहँ आई । पहिले श्यामाको अँचवायो पाछे पिवत कन्हाई ॥ १०२१ ॥ करि शृंगार सघन कुञ्जनमें निशि दिन करत विहार । नीराजन बहुविधि वारत हैं ललितादिक ब्रजनार ॥ १०२२ ॥ कबहुँक केलि करत यमुनाजल सुन्दर शरद तडाग । कबहुक मधुरमाधुरी झूलत आनँद अति अनुराग ॥ १०२३ ॥ प्रथम वसन्तपञ्चमी शुभदिन मंगलचार बधाये । पञ्चानन जारयो मन्मथ सो प्रगट भये फिरि आये ॥ १०२४ ॥ यशुमति

मात बधाई बाँटत फूली अँग न समाई । उबटिन्हवाय श्यामसुन्दरको आभूषण पहिराई ॥ १०२५ ॥ घर घरते आईं ब्रज सुन्दरि मंगल साज सँवारे । हेम कलश शिरपर धरि पूरण काम मन्त्र उपचारे ॥ १०२६ ॥ अबिर गुलाल अरगजा सोंधी लीन्हों सौज बनाय । मनमें किये मनोरथ बहुविधि मिलवत सब मनभाय ॥ १०२७ ॥ भीर जानि सिंह पौरें त्रियनकी यशुमति भवन दुराई । ढूंढ सकल त्रिय दौर मातको पकर बांह ले आई ॥ १०२८ ॥ केसर चन्दन और अरगजा शीश महरके नाये । जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भाँति कराये ॥ १०२९ ॥ फगुआ दियो महर मन भायो यशुमति परम उदार । पकर लिये घनश्याम मनोहर भेटें भरि अँकवार ॥ १०३० ॥ पहिली जान बसंत पंचमी यशुमति बहुत खिलाये । केशर चोवा और अरगजा श्याम अंग लपटाये ॥ १०३१ ॥ ता पाछे गोपिनने छिरके कनक कलश भरि डारे । मानो शीश तमाल अमृत घन सरस सुधा निधरारे ॥१०३२॥ चन्दन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तनु अरप्यो । मानो प्रकट करी अपने चित्त पियको प्राण समरप्यो ॥ १०३३ ॥ किये मनोरथ नाना विधिके मेवा बहु विधि लाई । सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि सुखपाई ॥ १०३४ ॥ सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये । रत्न चौकमें खेल मचायो सरस वसंत बधाये ॥ १०३५ ॥ करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीडा अति मन भाई । सुरँग अबीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई ॥ १०३६ ॥ फगुआ देन कह्यो मन भायो सबै गोपिका फूली । कंठ लगाय चलीं प्रीतमको अपने गृह अनु-कूली ॥ १०३७ ॥ करत आरती विविध भांति यशुमति परम सुहाई । सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर कन्हाई ॥ १०३८ ॥ बैठे जाय सघन कुंजनमें यमुनातीर गोपाल । सखी एक तहँ आय निकट ही बोली वचन रसाल ॥ १०३९ ॥ वृन्दावन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज बहु भांत । हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधुकर पाँत ॥ १०४० ॥ ठौर ठौर झिल्ली ध्वनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार । मानो मन्मथ मिलि कुसुमाकर फूले करत विहार ॥ १०४१ ॥ अपनो सब गुण तुम्हैं दिखावन स्मर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परम सुहायो ॥ १०४२ ॥ गोवर्धनके शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत संयोगिन बिरहिन करत उदास ॥ १०४३ ॥ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख युवति जन विषयासक्ति अपार ॥ १०४४ ॥ बीथिन विपिन विलोकि विविध मन मण्डित कुसुमित कुंज । मनहुँ हेम मंडपिका मुखरिति कल्पलता रस पुंज ॥ १०४५ ॥ वेगि चलो वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत । हिल मिल खेलो मन्मथ क्रीडा क्यों वसंत दिन खोवत ॥ १०४६ ॥ सुनत वचन ललिताके मोहन तुरत चले उठिधाय । कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय ॥ १०४७ ॥ लता लता बन बन कुंजनमें खेलत फिरत वसन्त । मनहुँ सकल मण्डलमें मधुकर विहरतहैं रसमन्त ॥ १०४८ ॥ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत ब्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधु-

कर गुंजार ॥ १०४९ ॥ खेल वसंत बहुत सुख मान्यो हर्षे गोपी ग्वाल । बिँहसि गये ब्रजराज भवन सब चञ्चल नैनविशाल ॥ १०५० होरीडांडी दिवस जानके अति फूले ब्रज-राज । बैठे सिंहद्वारपै आपुन जुरिकै गोपसमाज ॥ १०५१ ॥ विप्र बुलाय वेदविधि करिकै होरी डांडी रोप । आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप ॥ १०५२ ॥ परिवा प्रथम दिवस होरीको नन्दराय गृहआई । सकल सोंज गोपीकर लेके खेलनको मनभाई ॥ १०५३ ॥ दुइज दुहुँ दिशिते होरी मचि सुरंग गुलाल उडायो । मनो अनुराग दुहुँनके अन्तर सबहिन प्रकट करायो ॥ १०५४ ॥ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनो । मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर सुखरत है सुरभीनों ॥ १०५५ ॥ चम्पक लता चौथ दिनजान्यो मृगमद शीर लगायो । मनहुँ नीलजलधरके ऊपर कृष्णागर लपटायो ॥ ॥ १०५६ ॥ पांचै प्रमदा परम प्रीतिसों केसर छिडकी घोर । मनहुँ सुधानिधि वर्षत घन-पर अमृत धार चहुँओर ॥ २०५७ छठि छरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर । लेलत फाग संग गोपिनके गोपवृन्दकी भीर ॥ १०५८ ॥ सातें रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि लेआई उपहार । बल मोहनको हंसत खेलावत रीझ भरत अंकवार ॥ १०५९ ॥ आठें अति आतुर अबलाप्रिय चुम्बन दीन्हों गाल । नाना विधि शृंगार बनाये वेंदा दीन्हों भाल ॥ १०६० ॥ नवमी नौसत साजि राधिका चन्द्रावलि ब्रजनार । हो हो करत पलाश कुसुम रंग बर्षतहैं जो अपार ॥ १०६१ ॥ दशमी दशौ दिशा भई पूरित सुरंग अबीर गुलाल । मनु प्रीतम मिलिबेके कारण फूले नयन विशाल ॥ १०६२ ॥ एकादशी एक सखि आई डारचो सुभग अबीर । एक हाथ पीताम्बर पकरचो छिरकत कुमकुम नीर ॥ १०६३ ॥ द्वादशि मची दुहूंदिशि होरी इत गोपी उत ग्वाल ॥ इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नवलाल ॥ १०६४ ॥ तेरस तरुणी सब मिलिके यह कीन्हों कछुक उपाय । तोक सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥ १०६५ ॥ चौदशि चहूं दिशा सों मिलिके गठ जोरो गहि भोर । मनमोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥१०६६॥ देखि कुहू कुसुमाकार फूल्यो मधुप करत गुंजार । चन्द्रावलि केसर ले आई छिरके नन्दकुमार ॥ १०६७ ॥ शुक्लपक्ष परिवा पुरुषोत्तम क्रीडा करत अपार । हलधर संग सखा सब लीन्हें डोलत गृह गृह द्वार ॥ १०६८ ॥ द्वैज दाम कुसुमनकी जूंथी अपने हाथ संवार । दई पठाय भानुतनयाको पहिरत घोषकुमार ॥ १०६९ ॥ तीज तरुण सब गावत आई नन्दराय दरबार । पकरे आय श्यामनट सुन्दर भेंटत भरि अंकवार॥१०७०॥ चौथ चहूंदिशिते सबधाये सखा मंडली धाय । इतते आई कुंवर राधिका होरी अधिक मचाय ॥ १०७१ ॥ पंचम पंच.शब्द करि साजे सजि वादित्र अपार । रुंज मुरज ढफताल बांसुरी झालरको झंकार ॥ १०७२ ॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र । सुर सुर मण्डल जलतरंग मिल करत मोहनी मंत्र ॥ १०७३ ॥ विविध पखावत आवत संचित बिच बिच मधुर उपंग । सुर सहनाई सरस सारंगी उपजत तानतरंग ॥ १०७४ ॥ कंसताल कटताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग । मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल

सुख पावत रतभंग ॥ १०७५ ॥ निपटन केरी श्रवणन धुनि सुनि धीर न रहे ब्रजबाल । मधुर नाद मुरलीको सुनके भेंटे श्याम तमाल ॥ १०७६ ॥ छठिको षटरस सरस बनायो हरिभोजन करवायो । नाना विधि पकवान बनायो जेवँत अति सुख पायो ॥ १०७७ ॥ सातें सखि मिली बारी लाई आरोगे ब्रजराज । आठें दिशा सकल मिल ठाढो दूर करी सब लाज ॥ १०७८ ॥ नवमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग । दशमी दशहु दिशा परिपूरण बाढचो अति अनुराग ॥ १०७९ ॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिलि खेलनलाग । बैठेजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचरि बड-भाग ॥ १०८० ॥ सघन कुंजमें डोल बनायो झूलतहैं पिय प्यारी । ललितादिक बीरी जो खवावत नानाभाँति सँवारी ॥ १०८१ ॥ अतिसुगंध घसलायं अरगजा छिरकत सांवलगात । हरि बारीप्यारी हरि छिरकत शोभा वरणि न जात ॥ १०८२ ॥ द्वादश दिवस दुहुँदिश माच्यो फाग्रु सकल ब्रजमांझ । आलिंगन सब देत श्यामको लखै न धुन्धरमांझ ॥१०८३॥ तेरस भामिनी पियो अधररस अति आनंद अघाय । चहुँदिशिते गहिकै गठजारी कीन्हों कीन्हों सखियन आय ॥ १०८४ ॥ पून्यो सुखपायो ब्रजवासी होरी हर्ष लगाय । परमराग अनुराग प्रकट भयो अतिफूले ब्रजराज ॥ १०८५ ॥ यशुमतिमाय लाल अपनेको शुभ दिन डोल झुलायो । फगुवा दियो सकल गोपिनको भयो सबन मनभायो ॥१०८६॥ यमुनाजल क्रीडत ब्रजवासी संगलिये गोविंद । सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनंद कंद ॥ १०८७ ॥ यहि विधि क्रीडत गोकुलमें हरि निज वृन्दावन धाम । मधुबन और कुमुदवन सुन्दर बहुलाबन अभिराम ॥ १०८८ ॥ नन्दग्राम संकेत खिदरबन और काम बनधाम । लोह बन माठ बेलबन सुन्दर भद्रबृहद बन ग्राम ॥ १०८९ ॥ चौरासी ब्रज कोश निरन्तर खेलत हैं बलमोहन । सामवेद ऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन ॥ ॥१०९० ॥ व्यास पुराण प्रगट यह भाख्यो तंत्र ज्योतिषिन जान्यो । नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृत वचन परमान्यो ॥ १०९१ ॥ सनकादिकसों कहेउ आपु हरि निज वैकुंठ मँझार । व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियो उचार ॥ १०९२ ॥ नारायण चतुरा-ननसों कहि नारद भेद बतायो । ताके सुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायो॥१०९३॥ शेष कहेउ जो सांख्यायनसों सुनिके सनत्कुमार । कहेउ बृहस्पति पुनि मैत्रेसों उद्धव कियो विचार ॥१०९४॥ऐसे विविध प्रमाण प्रकट बहु लीला करि ब्रजईश । सोई श्रीशुकदेव महा मति प्रकटकही राधीश ॥ १०९५ ॥ वृन्दावन हरि यहिविधि क्रीडत सदा राधिकासंग । भोर निशा कबहूं जानतहैं सदा रहत यक रंक ॥१०९६॥ सघनकुंजमें खेलत गिरिधर मथुराकी सुधिआई । राखे बरजि राधिका रानी अब न सकोगे जाई ॥ १०९७ ॥ राखों कंठ लगाय लालको पलक ओट नहिं करिहौं । युगकुच बीच भुजा दोउन मिल सदा प्रेमरंग भरिहौं ॥ १०९८ ॥ सदा एकरस एक अखंडित आदि अनादि अनूप । कोटिकल्प बीतत नहिं

जानत विहरत युगल स्वरूप ॥१०९९॥ संकर्षणके वदन अनलते उपजी अग्नि अपार। सकल ब्रह्मांड तुरत तेजसों मानो होरी दई पजार ॥११००॥ सकल तत्त्व ब्रह्मांड देव पुनि माया सब बिधि काल। प्रकृतिपुरुष श्रीपति नारायण सब हैं अंश गोपाल ॥११०१॥ कर्म योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो। श्रीवल्लभ गुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥ ११०२ ॥ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बन्द । ताको सार सूर सारावलि गावत अति आनंद ॥ ११०३ ॥

अथ श्रीनाथजीके बरदान ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहैं मम साथ ॥ ११०४ ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो वेद विदित यह बात ॥ * ॥ धरि जिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल। मनवांछित फल सबही पावें मिटे जन्म जंजाल ॥ ११०५ ॥ सीखै सुनै पढै मन राखै लिखै परम चितलाय। ताके संग रहत हौं निशिदिन आनँद जन्म विहाय ॥ ११०६ ॥ सरस समतसर लीलागावें चरण युगल चितलावें। गर्भबास बंदीखानेमें सूर बहुरि नहिं आवें ॥११०७॥

इति श्रीसूरदासजीकृत संवत्सरलीला तथा सवालाख पदोंका सूचीपत्र समाप्त ॥



श्रीराधाकृष्णचन्द्राय नमः ।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सूरसागर

प्रथम स्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ चरण कमल बंदौं हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सब कछु दरशाई ॥ बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बन्दौं तेहि पांई ॥ १ ॥

राग कन्हरा । भक्त अंग॥अविगत गति कछु कहत न आवे । ज्यों गूँगे मीठे फलको रस अंतर्गतही भावे ॥ परमस्वाद सबही जु निरंतर अमित दोष उपजावे । मन वाणीको अगम अगोचर सो जानै जो पावै ॥ रूप रेख गुण जाति जुगति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावे ।सब विधि अगम विचारहिं ताते सूर सगुण लीलापद गावे ॥ २ ॥

भक्तवत्सलअंग । राग मारू ॥ वासुदेवकी बड़ी बड़ाई ॥ जगत पिता जगदीश जगत गुरु आपुन भक्तकी सहत ढिठाई ॥ भृगुको चरण राखि उर ऊपर बोले वचन सकल सुखदाई । शिव बिरंचि मारनको धाए सो गति काहू देव न पाई ॥ बिनु बदले उपकार करतहैं स्वारथ बिना करत मित्राई । रावण अरिको अनुज विभीषण ताको मिले भरतकी नांई ॥ बकी कपट करि मारन आई सो हरिजू वैकुंठ पठाई।बिनु दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं यदुनाथ गुसाईं ॥ ३ ॥

राग धनाश्री॥करणी करुणा सिंधुकी कछु कहत न आवै। कपट हेतु परशे बकी जननी गति गावै ॥ वेद उपनिषद यश कहै निर्गुणहिं बतावै । सोइ सगुण होय नंदकी दाँवरी बँधावै॥उग्रसेनकी आपदा सुनि सुनि बिलखावै । कंस मारि राजा कियो आपुन शिरनावै॥ जरासंधकी बंदी काटी नृप कुल यश गावै। असमय वन निगले पिता ताको शाप नसावै॥ उधरे शोक समुद्रते पांडव गृह लावै। जैसे गैया बच्छको सुमिरत उठि धावै । बरुण फांस ते ब्रजपतिहिं छिन माहिं छुड़ावै । दुखित गयंदहि जानिके आपुन उठि धावै ॥ कलिमें नामा प्रगटियो ताकी छानिछवावै । सूरदासकी बीनती कोउ लै पहुँचावै ॥ ४ ॥

राग मारू । ऐसी कौन करी है और भक्त काजे॥जैसे धरैं जगदीश जियमाहिं लाजे ॥ हिरनकश्यप बढ्यो उदय अरु अस्त लौं ग्रस्यो प्रहलाद चित चरंण लायो । भीरके परेते धीर सबहिन तज्यो खंभते प्रगट कर जन छुड़ायो॥ ग्रस्यो गज ग्रांह लै चल्यो पातालको कालके त्रास सुख नाम आयो । छांड़ि सुखधाम अरु गरुड़तजि सांवरो पवनके गवनते अधिक धायो ॥ कोपि कौरव गहे केश जब सभामें पांडुकी वधू यश नेकु गायो । लाजके साजमें हुती ज्यों द्रौपदी बढ्यो तनु चीर नहिं अंत पायो॥रोरके जोरते शोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो ॥ जोरि अंजलि मिले छोरि तंदुल लये इन्द्रके विभवतैं अधिक बाढ्यो ॥ शक्रको दान बिन मान ग्वालिन कियो गह्यो गिरिपान यश जगत छायो । यहै जिय जानिकै अंध भवत्रासते सूर कामी कुटिल शरण आयो ॥ ५ ॥

राग रामकली । का न कियो जनहित जदुराई ॥ प्रथम कह्योदै वचन दयारत तेहि बस गाय चराई । भक्त बछल बपु धरि नरके हरि दनुज दहन उर डर सुरसाई । बलि बल देखि अदिति सुत कारन भियदुपलव तिहुँपुर फिरि आई ॥ एहि थर बनि ब्रीडा गज मोचन और अनंत कथा श्रुति गाई। सूर दीन प्रभु प्रगट विरद सुनिअजहुँ दयाल पतित शिरनाई ॥६॥

जहां जहां सुमिरे हरि जेहि विधि तहां तैसे उठि धाये हो। दीनबंधु हरि भक्त कृपानिधि वेदपुराणन गाये हो ॥ सुत कुबेरके मत्त मगन भए विष रस नैना छाये हो । मुनिशरापते भये जमल तरु तेहि हित आपु बँधाये हो॥ वस्त्र कुचैल दीनद्विज देखत ताके तंदुल खाये हो । सम्पति दई वाकी पत्नीको मन अभिलाष पुराये हो॥जब गज गह्यो ग्राह जलभीतर तब हरिनाम पुकारयो हो । गरुड छांडि आतुर ह्वै धाये सो तत्काल उबारयो हो॥ कलानिधान सकल गुणसागर गुरु धौं कहा पढाये हो॥तेहि उपकार मृतक सुत यांचे सो यमपुरते ल्याये हो॥तुम मोसे अपराधी माधव कितेक मुक्ति पठाये हो । सूरदास प्रभु भक्तवछल तुम पावन नाम कहाये हो ॥ ७ ॥

राग धनाश्री॥प्रभुको देखो एक सुभाई । अति गंभीर उदार उदधि सरि जान शिरोमणि राई ॥ तिनकासो अपने जनको गुण मानत मेरु समान । सकुचि समुद्र गनत अपराधहि बूँद तुल्य भगवान॥वदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत हौं हों जैसे। विमुख भये अकृपिण निमेष हूं फिर चितयो तो तैसे ॥ भक्त विरह कातर करुणामय डोलत पाछे लागे । सूरदास ऐसे स्वामीको देहि सु पीठ अभागे ॥ ८ ॥

राग नट॥हरिसो ठाकुर और न जनको । जेहि विधि सेवक सुख पावे तेहि विधि राखत तिनको॥ भूखे बहु भोजन जु उदरको तृषा तोय पट तन को । लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत संग उचित गमन गृह बन को॥परम उदार चतुर चिंतामणि कोटि कुबेर निधनको॥ राखत हैं जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कणको ॥ संकट परे तुरत उठि धावत परमसुभट निजप्रणको ॥ कोटिक करैं एक नहिं मानै सूर महाकृतघनको ॥ ९ ॥

राग धनाश्री॥हरिसो मीत न देखौं कोई। अन्तकाल[1] सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतक्षो होई॥ ग्राह गये गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धायो । तजि वैकुंठ गरुड़ तजि श्री निकट दासके आयो ॥ दुर्वासाको शाप निवारयो अंबरीष पति राखी । ब्रह्मलोक पर्यंत फिरयो तहँ देव मुनी जन साथी॥लाखा गृहतै जरत पांडुसुत बुधिबल नाथ उबारे । सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे ॥ १० ॥

राग धनाश्री॥राम भक्तवत्सल निज बानो। जाति गोत कुल नाम गनत नहिं रंक होयकै रानो॥ब्रह्मादिक शिव कौन जात प्रभु हौं अजान नहिं जानो ॥ महता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो द्वैता क्यों मानो॥प्रगट खंभ ते दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो । रघुकुल राघो कृष्ण सदाही गोकुल कीनो थानो ॥ बरणि न जाय भजन की महिमा बारम्बार बखानो ! ध्रुव रजपूत बिदुर दासी सुत कौन कौन अरगानो ॥ युग युग बिरद यहै चलि आयो भक्तन हाथ बिकानो । राजसूयमें चरण पखारे श्याम लये कर पानो॥ रसना एक अनेक श्याम गुण कहँलौं करो बखानो । सूरदास प्रभुकी महिमा है साखी वेद पुरानो ॥ ११ ॥

---

१ विपतकाल ।

राग विलावल॥काहूके कुल तन न विचारत। अविगतकी गति कहि न परतु है व्याध अजामिल तारत॥ कौन धौं जाति अरु पांति बिदुरकी ताहीके प्रभु धारत । भोजन करत दुष्ट घर उनके राज मान भँग टारत॥ ऐसे जन्म करमके ओछे ओछेही अनुसारत । यह सुभाव सूरके प्रभुको भक्त बछल प्रण पारत ॥ १२ ॥

राग सारंग ॥ गोविन्द प्रीति सबनकी मानत ॥ जेहि जेहि भाय करी जिन सेवा अन्त-र्गत की जानत ॥ शबरी कटुक बेर तजि मीठे भाखि गोद भरि लाई । जूँठे की कछु शंक न मानी भक्ष किये सतभाई ॥ सन्तन भक्त मित्र हितकारी श्याम बिदुरके आये। अतिरस बाढ़ो प्रीति निरन्तर साग मगन ह्वै खाये ॥ कौरव काज चले ऋषि शापन साग पत्रही अघाये । सूरदास करुणानिधान प्रभु युग युग भक्त बढ़ाये ॥ १३ ॥

राग रामकली ॥ शरण गये को को न उबारचो । जब जब भीर परी सन्तनको चक्र-सुदर्शन तहां सँभारचो ॥ भयो प्रसाद अंबरीष को दुर्वासाको क्रोध निवारचो । ग्वालन हेतु धरचो गोवर्धन प्रगट इन्द्र को गर्व प्रहारचो ॥ कृपा करी प्रह्लाद भक्त को खंभ फारि उर नखन बिदारचो ॥ नरहरि रूप धरचौ करुणा करि छिनक माहिं हरणाकुश मारचो ॥ ग्राह ग्रसत गजको जल बूडत नाम लेत वाको दुख टारचो । सूरश्याम बिनु और करै को रंग भूमिमें कंस पछारचो ॥ १४ ॥

राग केदारा ॥ जनकी और कौन पत राखै । जाति पांति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै। जेहि कुल राज द्वारका कीनो सो कुल शापत नाश्यौ । सोइ मुनि अंबरीषके कारण तीन भुवन भ्रमि त्रास्यो ॥ जाको चरणोदक शिव शिर धरचो तीन लोक हितकारी। तिन प्रभु पांडुसुतनके कारण निजकर चरण पखारी ॥ बारह बरस बसुदेव देवकी कंस महा डर दीनो । तिन प्रभु प्रह्लादहि सुमिरत ही नरहरि रूप जु कीनो ॥ जग जानत यदुनाथ जितेजन निज भुज प्रभु श्रम सुख पायो। ऐसो को जो शरण गये ते कहत सूर इतरायो ॥ १५ ॥

जब जब दीनन कठिन परी। जानत हौं करुणामय जनको तब तब सुगम करी ॥ सभामँझार द्रौपदी आनी हरि सुदुशासन दुष्ट धरी । सुमिरत पटको कोट बढ्यो तब दुख सागर उबरी ॥ ब्रह्म शापते गर्व उबारचो टेरत जरी जरी। तब तब रक्षा करी भगतपर जब जब विपति परी ॥ बिपतिकाल पांडव बँधुअनमें राख्यो श्याम डरी। करि भोजन अवशेष यज्ञ प्रभु त्रिभुवन भूख हरी ॥ पाय प्रसाद भक्तपन राख्यो जगसों राखि धरी। महामोहमें परचो सूर प्रभु काहे सुधि बिसरी॥ १६ ॥

राग रामकली ॥ और न काहुहि जनकी पीर। जब जब दीन दुखी भयो तब तब करी कृपा बलवीर ॥ गज बल दीन विलोकि दशौ दिशि तब हरि शरण परचो। करुणासिंधु दयालु दरश दै सब संताप हरचो ॥ गोपी गाइ ग्वाल गो सुत हित सात दिवस गिरि लीनो । मागध हन्यो मुक्त नृप कीने मृतक विप्रसुत दीनो ॥ श्रीनृसिंह वपु धरचो असुर हित भक्त वचन प्रतिपारचो । सुमिरत

नाम द्रुपदतनयाको पट अनेक विस्तारचो॥ मुनि मद मेटि दास व्रत राख्यो अंबरीष हितकारी। लाक्षा गृहमें शत्रु सैनते पांडव विपति निवारी ॥ वरुण फांस व्रजपति मुकरायो दावानल दुख टारचो। घर आये वसुदेव देवकी कंस महाखल मारचो॥ श्रीपति युग युग सुमिरनके वश देव विमल यश गावैं। अशरण शरण सूर यांचत है को जो सुरति करावै ॥ १७ ॥

राग केदारा ॥ ठकुरायत गिरधर जूकी सांची॥कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीन लोकमें मांची॥ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल डरत ध्रुव भंगकी आंची। रावण सो नृप जात न जान्यो माया विषम शीश धरि नाची॥ गुरुसुत आनि दिये यमपुरते विप्र सुदामा कियो अयाची। दुःशासन कर वसन छुड़ावत सुमिरत नाम द्रौपदी बांची॥हरि चरणारबिंद तजि लागत अनत कहूँ तिनकी मति कांची। सूरदास भगवंत भजत जे तिनकी लीक चहूँ युग खांची ॥ १८ ॥

भक्त महिमा। राग सारंग॥ हरिके जन सबते अधिकारी। ब्रह्मा महादेवते को बड़ तिनके सेवक भ्रमत भिखारी। याचक पै याचक कहा याचै जो याचै सो रसना हारी। गणिका पूत शोभ नहिं पावत जिन कुल कोऊ नहीं पितारी॥ तिनकी साख देखि हरनाकुश रावण कुटुंब समेत भो ख्वारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषण सु अजहूँ राजारी ॥ शिला तरी जल माँहिं सेतु बँधि बलि वहि चरण अहल्या तारी।जे रघुनाथ शरण तकि आये तिनकी सकल आपदा टारी। जिन गोविन्द अचल ध्रुव राख्यो रवि शशि दै प्रदक्षिणा हारी। सूरदास भगवंत भजनबिनु धरनी जननि बोझ कतमारी ॥ १९ ॥

राग सारंग॥जापर दीनानाथ ढरे। सोइ कुलीन बड़ो सुन्दर सोइ जिनपर कृपा करे ॥ राजा कौन बड़ो रावणते गर्वहिगर्व गरे। रांकव कौन सुदामाहूते आपु समान करे॥ रूपव कौन अधिक सीताते जन्म वियोग भरे। अधिक कुरूप कौन कुबिजाते हरिपति पाइ बरे। योगी कौन बड़ो शंकरते ताको काम छरे।कौन विरक्त अधिक नारदसों निशि दिन भ्रमत फिरे॥ अधम सुकौन अज मिलहूते यम तहँ जात डरे।सूरदास भगवंत भजन विन फिरि फिरि जठर जरे॥ २० ॥

जाको दीनानाथ निवाजै। भवसागरमें कबहुँ न झूके अभय निशाने बाजै॥ विप्र सुदामाको निधि दीनी अरजुन रनमें गाजै। लंकाराज विभीषण राजे ध्रुव आकाश बिराजै॥मारि कंस केशी मथुरामें मेट्यो सबै दिवाजै। उग्रसेन शिर छत्र धरचो है दानव दुहुँ दिशि भाजै॥ अंबर गहत द्रौपदी राखी पलट अंधसुत लाजै। सूरदास प्रभु महा भक्तिते जाति अजातिहि साजै ॥ २१ ॥

रागदेव गंधार॥ जाको मन मोहन अंग करै। ताको केश खसै नहिं शिरते जोजग बैर परै॥ हिरनकशिपु परिहार थक्यो प्रह्लाद न नेकु डरै। आजहूं लौं उत्तानपाद सुत राज्य करत न मरै॥ राखी लाज द्रुपदतनयाकी कोपित चीर हरै। दुर्योधनको मान भंग करि वसन प्रवाह भरै॥विप्रभक्त नृग अंधकूप दियो बलिपढि वेदछरै। दीनदयालु कृपालु कृपा-

निधि कापै कह्यो परै ॥ जो सुरपति कोप्यो व्रज ऊपर कहिधौं कछु न सरै । राखे ब्रज जन नंदके लाला गिरिधर बिरद धरै ॥ है जाकी गर्वप्रहारी विरह सो कैसो बिसरै। सूरदास भगवंत भजन करि शरण गहे उधरै ॥ २२ ॥

राग केदारा ॥ जाको हरि अंगीकार कियो । ताके कोटि विघ्न हरि हरिकै अभय प्रताप दियो ॥ दुर्वासा अंबरीष सतायो सो हरि शरण गयो । परतिज्ञा राखी मनमोहन फिरि तापै पठयो ॥ निकसि खंभते नाथ निरंतर अपनो राखि लियो ॥ बहु शासना दई प्रह्लादहिं ताहि निशंक कियो । मृतक भये सब सखा जिवाये विष जल जाइ पियो । सूरदास प्रभु भक्तवछल हैं उपमा कौन कियो ॥२३॥

राग विलावल ॥ कहा कमी जाके राम धनी । मनसानाथ मनोहर पूरण सुखनिधान जाको मौज घनी ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल चार पदारथ देत छनी । इन्द्र समान जाके हैं सेवक मो बपुरेकी कहा गनी ॥ कहा कृपणकी माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी । खाइ न सकैं खरच नहिं जानैं ज्यों भुअंगशिर रहत मनी ॥ आनँद मगन राम गुण गावे दुख संतापकी काटि तनी । सूर कहत जे भजत रामको तिनसों हरिसों सदा बनी ॥ २४ ॥

हरिजूके जनकी अति ठकुराई । महराज ऋषिवर सुर नरमुनिदेखत रहे लजाई ॥ निरभय राज ताहिको दीनो लागनि मननि उछाहू । कामक्रोध मद लोभ मोहमिलि भये चोरते साहू ॥ दृढ़ विश्वास कियो सिंहासन तापर बैठ्यो भूप । हरिजस विमल छत्र शोभित शिर राजत परम अनूप ॥ हरिपद पंकज प्रजाप्रेम बश ताहीके रँगराते । मंत्री ज्ञान न अवसर पावै कहत न बनै सकाते ॥ अर्थ धर्म दोउ रहे वहैं दुरि काम मोक्षशिर नायो । विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न काहू पायो ॥ अष्ट महानिधि आगे ठाढी कर जोरे उर लीने । छरीदार वैगार विनोदी छिरकि वाहिये कीने ॥ कायर काल कछू नहिं व्यापै या इस रीतिहि जानै । सूरदास नर तौ जाने जो गुरुप्रसादः पहिचानै ॥ २५ ॥

मायावर्णन । राग केदारा ॥ विनती सुनो दीनकी चित दै कैसे तव गुण गावै माया नाटिनि लकुटि कर लीने कोटिक नाच नचावै ॥ दर दर लोभ लागि ल्वै डोलति नाना स्वांग करावै । तुमसों कपट करावति प्रभु जू मेरी बुद्धि भ्रमावै ॥ मन अभिलाष तरंगनि करिकरि मिथ्या निशा जगावै । सोवत स्वप्नेमें ज्यों सम्पत्ति त्यों दिखाय बौरावै ॥ महा मोहनी मोह आत्मा मन करि अवाहि लगावै । ज्यों दूती परबधू भोरिकै लै परपुरुष दिखावै ॥ मेरे तो तुमहीं पति तुम गति तुम समान को पावै । सूरदास प्रभु कृपा बिनु कोमों दुख बिसरावै ॥ २६ ॥

राग सोरठ ॥ बिनै कासों कहौं दीनबन्धो । जन्मकृत अकृत चकृतचित चरनसरन राखि दयासिंधो ॥ द्विज पतित मतिहीन गनिका गुन लौलीन करत अघ खीन पूतना प्रहारे। सकृत निज हरिनाम जिन लियो अवशि कर दूरि करि को कौ न तारे ॥ ध्रुव तेइ थापि थिर प्रहलाद परतीत करि हिरन कश्यप उर नख विदारे । मानि गज भरि भेंटि तनकी पीर द्रुपद-

कन्या धरन धीर लज्या निवारे॥रावन मदअन्ध और नृप जरासंध किये निरबन्ध क्रोध वर तुल्य कारे। त्रैलोक जस रह्यो यहै सब श्रुति कह्यो सोही मैं दृष्टि गह्यो शलधारे॥अन्नित-विक्रम शिवविरंचि भ्रमत सकल मुनिजन अगम लोकपारे। सूरकल्याण प्रभु राखि सनमान अब देहि निज दान कलिमल ताप हारे ॥ २७ ॥

विनती करत मरत हौं लाज। नख सिखलौं मेरी यह दही है पापकी जहाज ॥ लवमुनि जस रह्यो रेहै नन आंखितर देखत अपनो साज। तीनों पनभरि और निबाह्यो तऊ न आओ बाज ॥ पाछे भयो न आगे ह्वैहै सब पतितन सरताज । नरकौ भज्यो नाम सुनि मेरो पीठिदई यमराज ॥ अबलौं नान्हे रून्हे तारचो ते सब वृथा अकाज। सांचे विरदसूरके तारत लोकन लोक अवाज ॥ २८ ॥

हरि तेरी माया कौन बिगोयो। सौ योजन मर्याद सिंधुकी पलमें राम बिलोयो॥ नारद मगन भये मायामें ज्ञान बुद्धि बल खोयो।साठ पुत्र अरु द्वादश कन्या कंठ लगाये जोयो ॥ शंकरको चित हरचो कामिनी सेज छोड़ि भुव सोयो । जारि मोहनी आढ कियो तब नख शिखते रोयो ॥ सौ भैया राजा दुर्योधन पलमों गरद समोयो। सूरज दास कांच अरु कंचन एकहि धगा परोयो ॥ २९ ॥

राग सारंग।तुम्हरी माया महाबली जिन जग बश कीनो। नेकु चितै मुसुकाइ सबन को मन हरिलीनो ॥ कछु कुलधर्म न जानइ वाके रूप सकल जग राच्यो । बिनु देखे बिनही सुने ठगत न कोऊ बाच्यो ॥ सुनि याके उत्पातते शुक सनकादिक भागे। लोक लाज सब छुटि गई काम क्रोध मद जागे॥अकथ कथा याकी हरिकही कहत न आई। छैलनके संग यों फिरै जैसे तनुसँग छाई ॥ इहि विध इन डहकेसबै जलथल जियजेते। चतुरशिरोमणि नन्दके अरु कहा कहौं केते॥पहिरे राती चूनरी शिर श्वेतउपरना सोहै। कटिलहँगा लीलो बन्यो नीको जो देखिन मोहै॥ चोली चतुरानन ठग्यो अमर उपरना राते। अतरौटा अव-लोकिकै सब असुर महा मदमाते ॥ योग युगति विसरी सबै उठि धाये सँग लागे। नेक दृष्टि तहँ परिगइ शिवशिर टोना लागे ॥ बहुत कहांलौं वर्णियो पर पुरुष न उबरन पावै। भरि सोवै सुखनींदमें तहां जाइ जगावै। एकनिको दरशन ठगै एकनि सँग सोवै।एकनि लै मन्दिर चढै इक विरचि बिगोवै ॥ यहि लाजनि मरिए सदा सब कहत तुमारी। सूर श्याम यहि बरजिकै मेटहु कुल गारी ॥ ३० ॥

राग विहांगरा। हरि तेरो भजन कियो न जाइ। कहा केहूं तेरी प्रबल माया देति लहर बहाइ॥ जबै आऊं साधु संगति कछुक मन ठहराइ। ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता बहुरि बहै सुभाइ। वेष धरि धरि हरचो परधन साधु साधु कहाइ। जैसे नटुवा लोभ कारण करत स्वांग

---

१ रोयो। २ करौं।

बनाइ ॥ करौं यतन न भजौं तुमको कछुक मन उपजाइ । सूर हरिकी प्रबल माया देति मोहिं लुभाई[1] ॥ ३१ ॥

माधव जू मन माया बश कीनो। लाभ हानि कछु समुझत नाहीं ज्यों पतंग तनुदीनो॥ गृह दीपक छनतेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर । मैं मतिहीन मर्म नहि जान्यौं परचों अधिक करि दौर ॥ विवश भयों नलिनीके शुक ज्यों बिन गुरु मोहिं गह्यो । मैं अज्ञान कछू नाहिं समझों परदुखपुंज सह्यो ॥ बहुतक दिवस भए या जगमें भ्रमत फिरचो मति हीन । सूर श्यामसुंदर जो सुमिरे क्यों होवै गति दीन ॥ ३२ ॥

अविद्यावर्णन । मलार । माधव जू यह मेरी इक गाई । अब आजुते आपु आगे लै आइए चराई ॥ है अति हरिहाई हटकतहूं बहुत अमारग जाती । फिरति वेद वन ऊख उखारति सब दिन अरु सबराती ॥ हित कै मिलैलेहु गोकुलपति अपने गोधन मांह । सुख सोऊं सुनि वचन तुम्हारे देहु कृपा करि बांह ॥ निधरक रहौं सूरके स्वामी जन्म न जाऊँ फेरि । मैं ममता रुचिसों रघुराई पहिले लेउँ निबेरि ॥ ३३ ॥

राग धनाश्री ॥ कितक दिन हरिसुमिरन बिनु खोये । परनिंदा रसनाके रसमें अपने पर तर बोये ॥ तेल लगाई कियो रुचि मर्दन वस्त्रहि मलि मलि धोये । तिलक बनाय चले स्वामी ह्वै विषयिनके मुख जोये ॥ काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हूं रोये । सूर अधमकी कहौं कौन गति उदर भरे परि सोये ॥ ३४ ॥

तृष्णावर्णन । केदारा ॥ माधव जू नेकु हटकौ गाइ । निशि वासर यह भरमात इतउत अगह गही नहिं जाय ॥ क्षुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ । अष्टदश घट नीर अवचे तृषा तउ न बुझाइ ॥ छहूं रस हूं धरत आगे वहै गंध सुहाय । और अहित अभक्ष भक्षति गिरा बरणि न जाय ॥ व्योम धर नद शैल कानन इते चरि न अघाइ । ढीठ निठुर न डरति काहू त्रिगुण ह्वै समुहाइ ॥ हरै न खलबल दनुज मानव सुरनि शीश चढाइ । रचि विरंचि मुख भौंह छबिलौं चलतिचितहिं चुराइ ॥ नील खुर जाके अरुन लोचन श्वेत सींग सोहाइ । दिन चतुर्दश खेत खूँदति सु यह कहा समाइ ॥ नारदादि शुकादि मुनिजन थके करत उपाइ । ताहि कहु कैसे कृपानिधि सकत सूर चराइ ॥३५॥

विनती अंग । राग केदार ॥ बन्दौ चरण सरोज तुम्हारे । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्म सदाशिवके धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे । जे पदकमल तातरिस त्रासत मन वच क्रम प्रहलाद सँभारे ॥ जे पदपद्म परसि जल पावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे । जे पदपद्म परसि ऋषिपत्नी बलि नृग व्याध पतित बहु तारे ॥ जे पदपद्म रमत वृन्दावन अहिशिर धरि अगणित रिपु मारे । जे पद पद्म परसि ब्रजभामिनि सर्वस दैसुत सदन बिसारे ॥ जे पदपद्म रमत पंडवदल दूत भये सब काज सँवारे । सूरदास तेई पदपंकज त्रिविध ताप दुख हर न हमारे ॥ ३६ ॥

---

१ भुलाइ ।

हरि जू तुमते कहा न होई । रंक सुदामा कियो इन्द्रसम पांडवहित कौरवदल खोई ॥ पतित अजामिल दासी कुबिजा तिनहूंके कलिमल सब धोई। बोलै गूँग पंगु गिरिलंघै अरु आवैं अंधा जग जोई ॥ बालक मृतक जिवायदिये द्विज जो आये दरबारे रोई । सूरदास प्रभु इच्छापूरण श्री गुपाल सुमिरत सब कोई ॥ ३७ ॥

राग सोरठ ॥ अबके राखिलेहु भगवान । हम अनाथ बैठे द्रुम डरिया पारधि साधे बान ॥ जाके डर भाज्यो चाहत है ऊपर ढुक्यो सचान । दुवौ भाँति दुख भयो आनि यह कौन उबारै प्रान ॥ सुमिरतहीं अहि डस्यो पारधी कर छूटे संधान । सूरदास शर लग्यो सचानहि जय जय कृपानिधान ॥ ३८ ॥

राग बिहगरा ॥ हृदयकी कबहुँ न जरन घटी । बिनु गोपाल बिथा या तनुकी कैसे जात कटी ॥ अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी । हो तितही उठि चलति कपट लगि बांधे नयन फटी ॥ झूठो मन झूटी यह काया झूठी आर भटी । अरु झूठनिके वदन निहारत मारत फिरत लटी ॥ दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी ॥ चिन्ता गई अरु भूख भुलानी नींद फिरत उचटी ॥ मगन भयो माया रस लम्पट समझत नाहिं हटी । तापर मूड चढ़ी नाचति है मीचति नीच नटी ॥ खैंचत स्वाद श्वान पातर ज्यों चातक रटत ठटी । सूर जलधि सिंचै करुणानिधि निज जन जरनि मिटी ॥ ३९ ॥

राग केदारा ॥ अब नाथ मोहिं उधारि । मग नहीं भव अम्बुनिधिमें कृपासिन्धु मुरारि ॥ नीर अति गम्भीर माया लोभ लहरति रंग । लये जाति अगाध जलमें गहे ग्राह अनंग ॥ मीन इन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार । पग न इत उत धरन पावत उरझि मोंह सिवार ॥ काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर । नाहिं चितवन देत प्रिय सुत नाम नौका ओर ॥ थक्यो बीच बिहाल बिह्वल सुनो करुणामूल । श्याम भुज गहि काढि लीजै सूर ब्रजके कूल ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥ माधव जू मन हठि कठिन परचो । यद्यपि विद्यमान सब निरखत दुःख शरीर मरचो ॥ बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशिधाये । ज्यों शुकसेंवर फूल बिलोकत जात नहीं बिन खाये ॥ युग युग जन्म मरन अरु बिछुरन सब समुझत मतिभेव । ज्यों दिनकर उलूक नहिं मानत परी आनि यह टेव ॥ हौं कुचील मतिहीन सकलविधि तुम कृपालु जग जान । सूर मधुप निशिकमल कोश वश करो कृपा-दिन भान ॥ ४१ ॥

राग धनाश्री ॥ आछो गात अकारथ गारचो । करी न प्रीति कमल लोचन सों जन्म युवा ज्यों हारचो ॥ निशि दिन विषय बिलासनि बिलसत फूटि गई तब चारचो । अब लाग्यो पछतान पाइ दुख दीन दईको मारचो ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन कौन कृपा करि तारचो । ताते कहत दयालु देव मुनि काहे सूर बिसारचो ॥ ४२ ॥

राग सारंग ॥ माधव जू मन सबही विधि पोच । अति उन्मत्त निरंकुश मयगज चिंता रहित अशोच ॥ महामूढ़ अज्ञान तिमिरमें मग्न होत सुख मानि । तेलीकेर वृषभ ज्यों

भरम्यो भजत न सारंगपानि ॥ गीध्यो ढीठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मतिमंद । लुब्धौ स्वाद मीन आतुर ज्यों अवलोक्यो नाहिं फंद ॥ ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हटि ज्यों पतंग तनु जारचो । विषय असक्त अमित अघ व्याकुल तब हम कछू न सँभारचो ॥ ज्यों कपि शीत हुतासन गुंजा सिमटि होत लवलीन । त्यों शठ वृथा तजत नहिं कबहूं रहत विषय आधीन ॥ सेंवर फूल सुरंग शुक निरखत मुदित होत खग भूप । परशत चोंच तूल उघरत मुख परत दुःखके कूप ॥ और कहांलौं कहौं एक मुख या मनके कृत काज । सूर पतित तुम पतित उधारन गहो विरद की लाज ॥ ४३ ॥

मेरो मन मतिहीन गुसाँई । सब सुखनिधि पद कमल छाँड़ि श्रम करत श्वान की नाईं ॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान । तिहि लालच कबहूँ कैसेहूँ तृप्ति न पावत प्रान ॥ जहँ जहँ जात तहीं भय त्रासत आस लकुटि पदत्रान । कौर कौर कारण कुबुद्धि जड़ किते सहत अपमान ॥ तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भुवन निजनाथ ॥ तिन्हें छांड़ि यह सूर महाशठ भ्रमत भ्रमनिके साथ ॥ ४४ ॥

राग गौरी ॥ करुणामय तेरी गति लखि न परै । धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ॥ जय अरु विजय कर्म कहा कीनो ब्रह्म शराप दिवायो । असुर योनि ता ऊपर दीनी धर्मउ छेद करायो ॥ पिता वचन खंड़े सो पापी सो प्रह्लादहिं कीनी । निकसे खंभ बीच ते नरहरि ताहि अभयपद दीनी ॥ दान धर्म बहु कियो भानुसुत सो तुव विमुख कहायो । वेद विरुद्ध सकल पंडवसुत सो तुम्हरो मन भायो ॥ यज्ञ करत वैरोचनको सुत वेद विमल विधि कर्मा । सो छलि बांधि पताल पठायो कौन कृपानिधि धर्मा ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका नेह लगायो । सुत हित नाम लियो नारायण सो वैकुंठ पठायो । पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रत ते टारी । दुष्ट पुंश्चली अधम सु गणिका सुवा पढ़ावत तारी ॥ मुक्त हेतु योगी श्रम कीनों असुर विरोधहि पावै । अविगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ ४५ ॥

राग सारंगा ॥ अविगत गति जानी न परै । मन वच अगम अगाध अगोचर केहि विधि बुधि सँचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष बल पाये केहरि भूख मरै । बिन आशा विन उद्यम कीने अजगर उदर भरै ॥ रीते भरै भरे पुनि ढौरै चाहै फेरि भरै । कबहुँक तृण बूडै पानीमें कबहूँ शिला तरै ॥ बागर ते सागर करि राखै चहुँ दिशि नीर भरै । पाहन बीच कमल विकसाही जलमें अगिनि जरै ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै । सूर पतित तरिजाइ तनकमें जो प्रभु नेकु ढरै ॥ ४६ ॥

राग केदारा ॥ अपनी भक्ति देहु भगवान ॥ कोटि लालचजो दिखावहुँ नाहिनै रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरिते सुकर काटत शीश । देखि साहस सकुच मानत राखि सकत न ईश ॥ कामना करि कोपि कबहूँ करत कर पशु घात । सिंह शावक जात गृह तजि इन्द्र अधिक डरात ॥ जा दिना ते जन्म पायों यहै मेरी रीति ।

विषय विष हठि खात नाहीं टरत करत अनीति ॥ थके किंकर यूथ यमके टारे टरत न नेक । नरक कूपनि जाइ यमपुर परचो बार अनेक ॥ महा माचल मारिबेको सकुच नाहिन मोहिं । परचो हौं प्रण किये द्वारे लाज प्रणकी तोहिं ॥ नाहिनै काचो कृपानिधि करौं कहा रिसाय । सूर तबहुं न द्वार छांडै डारिहौ कढराइ ॥ ४७ ॥

राग धनाश्री ॥ जनके उपजत दुख किन काटत । जैसे प्रथम अषाढ के वृक्षनि खेतहर निरखि उपाटत ॥ जैसे मीन किलकिला दरशत ऐसे रहो प्रभु डाटत । पुनि पाछे अघसिंधु बढत है सूर खार किन पाटत ॥ ४८ ॥

राग कान्हरा ॥ कीजै प्रभु अपने बिरदकी लाज । महापतित कबहूं नहिं आयो नेकु तुम्हारे काज ॥ माया सबल धाम धन वनिता बांध्यो हौं इहिसाज । देखत सुनत सबै जानत हौं तऊ न आयो बाज ॥ कहियत पतित बहुत तुम तारे श्रवणनि सुनी अवाज । दई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज ॥ लीजैपार उतारि सूर को महाराज ब्रज-राज । नई न करन प्रभु तुम सों सदा गरीबनेवाज ॥ ४९ ॥

राग विलावल ॥ महाप्रभु तुम्हैं विरद की लाज । कृपानिधान दानि दामोदर सदा सँवारत काज ॥ जब गज ग्राह चरण धरि राख्यो तब तुम्हैं नाथ पुकारचो । तजिकै गरुड़ चलबो अति आतुर पकरि चक्र कर मारचो ॥ निशि निशिही ऋषि लये सहस दश दुर्वासा पग धारचो । तत्कालहि तब प्रगट भये हरि राजा जीव उबारचो ॥ हरनाकुश प्रहलाद भक्तको बहुत शासना जारचो । रहि न सके नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछारचो ॥ दुःशासन गहिकेश द्रौपदी नगन करनको लाये । सुमिरत ही तत्काल कृपा-निधि वसन प्रवाह बढ़ाये ॥ मागधपति बहु जीति महीपति कछु जियमें गर्वाए । जीत्यो जरासंध रिपु मारचो बल करि भूप छुड़ाए ॥ महिमा अति अगाध करुणामय भक्त हेतु हितकारी । सूरदास पर करौ कृपा अब दरशन देहु मुरारी ॥ ५० ॥

राग धनाश्री ॥ शरण आयेकी लाज उर धरिये । सध्यौ नहिं धर्म शील शुचि तप व्रत कछू कहा मुख लै तुम्हैं विनय करिये ॥ कछु चाहौं कहौं सोचि मनमें रहौं कर्म अपने जानि त्रास आवै । यहै निज सार अधार मेरे अहै पतित पावन विरद बेद गावै ॥ जन्मते एकटक लागि आशा रही विषय विष खात नाहिं तृप्तिमानी । जो छिपा छरद करि सकल संतनि तजी तासु मति मूढ़रस प्रीति ठानी ॥ पाप मारग जिते तेव कीने तिते बच्यो नहिं कोइ जहँ सुरति मेरी । सूर अवगुण भरचो आइ द्वारे परचो तकी गोपाल अब शरण तेरी ॥ ५१ ॥

प्रभु मेरे गुण अवगुण न विचारो । कीजै लाज शरण आयेकी रविसुत त्रास निवारो ॥ योग यज्ञ जप तप नहिं कीयो वेद विमल नहिं भाष्यो । अति रसलुब्ध श्वान जूँठनि ज्यों कहूँ नहीं चित राख्यो ॥ जिहि जिहि योनि फिरचो संकटवश तिहि तिहि यहै कमायो । काम क्रोध मद लोभ ग्रसित भये विषय परम विष खायो ॥ जो गिरिपति मसि घोरि उदधि

में लै सुरतरु निज हाथ। मम कृत दोष लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन अपराधी मतिहीन। तुम समान और नहिं दूजो जाहि भजौं है दीन ॥ अखिल अनंत दयालु दयानिधि अविनाशी सुखरास। भजन प्रताप नाहिं मैं ज़ान्यो परचो मोहकी फांस ॥ तुम सर्वज्ञ सबै समरथ विधि अशरण शरण मुरारि। मोह समुद्र सूर बूड़त है लीजै भुजा पसारि ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ तुम हरि सांकरेके साथी। सुनत पुकार परम आतुर है दौरि छुड़ायो हाथी ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी वेद उपनिषद साखी बसन बढ़ाय द्रुपदतनयाके सभा माँझ पत राखी ॥ राज रवनि गाई व्याकुल है दै दै सुतको धीरक। मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक। कपट स्वरूप धरचो जब कोकिल नृप प्रतीत करि मानी। कठिन परी तबहीं तुम प्रगटे रिपु हति सब सुखदानी ॥ ऐसे कहौं कहांलौं गुणगण लिखत अंत नहि पइये। कृपासिंधु उनहीके लेखे नम लज्जा निर्वहिये ॥ सूर तुम्हारी ऐसी निबही सङ्कटके तुम साथी। ज्यों जानो त्यों करो दीनकी बात सकल तुम हाथी ॥ ९३ ॥

तुम बिनु सांकरेको काको। बिनु दीनदयालु देवमणि नाम लेउँ धौं ताको ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको। मेटी पीर परम पुरुषोत्तम दुख मेट्यो दोउ धांको ॥ हा करुणामय कुञ्जर टेरचो रह्यो नहीं बल जाको लागिपुकार। तुरत छुटकायो कास्यो बंधन वाको ॥ अंबरीषको शाप देन गयो बहुरि पठायो ताको। उलटी गाढ़ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको। निधरक है पंडवसुत डोलैं हुतो नहीं डर काको। चारों वेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावत है ताको ॥ छोरी बंदिबिदा करि राजा राजा होइ कि रांको। जरासंधको जोर उधेरचो फारि कियो द्वैफांको ॥ सभा माँझ द्रौपदी पति राखी पति जानै गुन जाको। बसन ओट करि कोट विश्वंभर परननपायो झांको ॥ भीर परे भीषण प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हांको। रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त बछल प्रण ताको ॥ गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको। नरहरि हरि हरनाकुश मारचो काम परचो हो बांको ॥ ९४ ॥

राग कान्हरा ॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसांई मैं अपने अज्ञान न जानत। उपजत दोष नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत ॥ सब सुखनिधि हरि नाम महातम पायो है नाहित पहिंचानत। परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कौड़ी बदले मगरज छानत ॥ शिवको धन संतनको सर्बस महिमा वेद पुराण बखानत। इते मान यह सूर महाशठ हरि नग बदलि विषयखरि आनत ॥ ९५ ॥

राग बिलावल ॥ अपुने जान मैं बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामी समुझी न परी ॥ दूरि गयो दरशनके ताईं व्यापकप्रभुता सब बिसरी। मनसा वाचा कर्म अगोचर सो मूरति नहिं नैन धरी ॥ गुणबिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नामलेत श्री श्याम हरी। कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सब बिगरी ॥ ९६ ॥

तुम गोपाल मोसों बहुत करी । नरदेही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी ॥ गर्भवास अतित्रास अधोमुख तहां न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन नाहिं दीनों कंचन सी मेरी देह धरी ॥ जगमें जन्मि पाप बहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद कि लाज धरी ॥ ५७ ॥

राग धनाश्री ॥ माधवजू जो जनते बिगरै ॥ तउ कृपालु करुणामय केशव प्रभु नाहिं जीय धरै ॥ जैसे जननि जठर अंतर्गत सुत अपराध करै । तऊ पुनि जतन करै अरु पोषै निकसे अंक भरै ॥ यद्यपि मलय वृक्ष जड काटत कर कुठार पकरै । तऊ सुभाव सुगंध सुशीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ ज्यों हल गहि धर धरत कृषीबल वारि बीज बिथुरै । सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको सोई सुफल करै ॥ द्विज रसना जो दुखित होइ बहु तौ रिस कहा करै । यद्यपि अंग बिभंग होतहै लै समीप सँचरै ॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै । इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उबरै ॥ ५८ ॥

राग कान्हरा ॥ दीनानाथ अब वार तुम्हारी । पतित उधारन बिरद जानिकै बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलतही खोयो युवा विषय रस माते । वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तनत्वच भई जु न्यारी । श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जलधारी ॥ पलित केश कफ कंठ बिरोध्यौ कल न परी दिन राती । माया मोह न छाड़ै तृष्णा ए दोऊ दुख दाती ॥ अब या व्यथा दूरि करिबेको और न समरथ कोई । सूरदास प्रभुकरुणासागर तुमते होइ सु होई ॥५९॥

राग आसावरी ॥ पतित पावन जान शरन आयो । उदधि संसार शुभ नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतम नारि परश पायो । अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अबल प्रह्लाद बलदैत्य सुखही बचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो । पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो । सूर प्रभु चरण चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ६० ॥

राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपा कर दीनपर डरत भव त्रासते राखि लीजै । नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥ जीव जलधर जिते भेष धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ बहु अचल भारे । मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनन मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृषभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे । अजामिलि गणिका ते कहा मैं. घट कियो तुम जु अब सूर चितते बिसारे ॥ ६१ ॥

कबहुँ नाहीं गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिरन वश भक्तनि अभय दियो ॥ गाय गोपगोपीहितकारण गिरि करकमल लियो । अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावान

लहिं पियो । कंसवंश वधि जरासंधहति गुरुसुत आनि दियो । कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय कियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो । काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिंन और बियो ॥ ६२ ॥

राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवै । दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिषद् गावै ॥ जो तुम कहौ कौन खल तारचो तौ हौं बोलों साखी । पुत्रहेतु हरिलोक गयो द्विज सक्यो न कोऊ राखी ॥ गणिका किये कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै । मनसा करि सुमरचो गज बपुरो ग्राह परमगति पावै ॥ बकी जु गई घोषमें छल करि यशुदाकी गति दीनी । और कहत श्रुति वृषभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै । ऐसो कौन और करुणामय वसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै । ऐसोको ठाकुर जन कारन दुख सहि भलो मनावै ॥ दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडवअँहित विचारी । सुमिरंत तीनों लोक अघाए न्हात भज्यो कुश डारी ॥ देवराज मख भंग जानिकै वरस्यो व्रजपर आई । सूर श्याम राखे सब निजकर गिरि लै भए सहाई ॥ ६३ ॥

राग धनाश्री ॥ दीनको दयालु सुन्यों अभयदान दाता । सांची विरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥ व्याध गीध गणिका गज इहिमें को ज्ञाता । सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारिमुष्टिक कियो घाता । अपने ध्रुव राज काज केतक यह बाता ॥ तीन लोक विभव दियो तंदुलके खाता । सर्वस प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता । और कुटिल तारि तारि काहे गर्वाता ॥ माँगत है सूर त्याग जिहि तन मनराता । अपनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ॥ ६४ ॥

राग मारू ॥ सो कहा जु मैं न कियो जो पै सोइ सोई चित धरिहौ । पतितपावन बिरद सांच कौन भांति करिहौ ॥ गबते जग जन्म लियो जीवहै कहायो । तबते छुट अवगुण इक नाम न कहि आयो ॥ साधु निंदक स्वाद लंपट कपटी गुरुद्रोही । जितने अपराध जगत सब मोही ॥ लागत गृह गृह द्वार फिरचो तुमको प्रभु छाँडे । अंध अंध टेक चलै क्यों न परै गाडे ॥ कमल नैन करुणामय सकल अंतर्यामी । विनय कहा करै सूर क्रूर कुटिल कामी ॥ ६५ ॥

राग सारंग ॥ कौन गति करिहौ मेरी नाथ हौंतो कुटिल कुचील कुदरशन रहत विषयके साथ ॥ दिन बीतत मायाके लालच कुटुंबके हेत । सारी रैन नींद भरि सोवत जैसे पशू अचेत ॥ कागज धरनि करै द्रुम लेखनि जलसायर मसि घोर । लिखैं गणेश जन्म भर ममकृत तऊ दोष नहिं ओर ॥ गज गणिका अरु विप्र अजामिल अगनित अधम उधारे । अपथ चाऊ अपराध करे मैं तिनहूं ते अति भारे ॥ लिखि लिखि मम अपराध जन्मके चित्रगुप्त अकुलाये । भृगु ऋषि आदि सुनत चकृत भये यम सुनि शीश डुलाये ॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो । सूर पतित जब सुन्यो बिरद यह तब धीरज मन आयो ॥ ६६ ॥

राग केदारा ॥ मेरी कौन गति ब्रजनाथ । भजन विमुख अरु शरण नाहीं फिरत विषयिन साथ ॥ हौं पतित अपराध पूरण जरचो कर्म विकार । काम क्रोध रु लोभ चितवन नाथ तुम्हैं बिसार ॥ उचित अपनी कृपा करिहौ तबै तौ बनिजाइ । सोइ करहु जो चरण सेवै सूर जूठनि खाइ ॥ ६७ ॥

राग धनाश्री ॥ सोइ कछु कीजे दीनदयाल । जाते जन छिन चरण न छांडै करुणासागर भक्त रसाल ॥ इन्द्रिय अजित बुद्धि विषयारत मनकी दिन दिन उलटी चाल । काम क्रोध मद लोभ महाभय अहनिश नाथ भ्रमत बेहाल ॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत इनमें एकौ अंक न भाल । कहा करूं किहि भाँति रिझाऊँ हौं तुमको सुन्दर नंदलाल ॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि अशरण शरण हरण जग जाल । कृपानिधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपण यहि काल ॥ ६८ ॥

राग गूजरी ॥ कृपा अब कीजिए बलि जाऊं । नाहिं मेरे और कोउ बलि चरण कमल बिनु ठाऊं ॥ हौं असोच अकृत अपराधी सन्मुख होत लजाउं । तुम कृपालु करुणानिधि केशव अधम उधारन नाउँ ॥ काके द्वार जाइहौं ठाढो देखत काहि सुहाउं । अशरण शरण नाम तुमरो हौं कामी कुटिल सुभाउं ॥ कलँकी और मलीन बहुत मैं सेंतमेंत बिकाउं । सूर पतितपावन पद अंबुज क्यों सो परिहरि जाउं ॥ ६९ ॥

राग सारंग ॥ दीनदयालु पतितपावन प्रभु विरद भूलावत कैसो । कहा भयो गज गणिकातारी जो जन तारो ऐसो ॥ जो कबहुं नर जन्म पाइ नहिं नाम तुम्हारो लीनो । काम क्रोध मद लोभ मोह तजि अंत नहीं चित दीनो ॥ अकरम अबुध अज्ञान अवज्ञा अनमारग अनरीति । जाको नाम लेत अघ उपजै सो मैं करी अनीति ॥ इन्द्री रसवश भयो भ्रमत रह्यो जोइ कह्यो सो कीनो । नेम धर्म व्रत तप नहिं संयम साधु संग नहिं चीनो ॥ दरश मलीन दीन दुर्बल अति तिन कैसे दुख दामी । ऐसो सूरदास जन हरिको सब अधमनिमें नामी ॥ ७० ॥

राग देवगंधार ॥ मोहि प्रभु तुमसों होड परी । नाजानों करिहौ जु कहा तुम नागर नवल हरी ॥ दुतीं जिती तितनी मति गाई सो मैं सबै करी । पावहुगे कहुँ, मो महि तारनको जिय जक पकरी ॥ मैं जु रहो राजीवनैन दुरि पाप पहार दुरी । पावहु मोहिं कहो तारन को गूढ गँभीर खरी ॥ एक अधार साधुसंगतिको रचि पचिकै सँचरी । ज्यों गजशुचि नहाइ निरमलकरि पुनि रज शीश धरी ॥ मोको मुक्त विचारतहो प्रभु पूंछत पहर घरी । श्रमते तुम्हैं पसीना ऐहै कति यह जकनि करी ॥ सूरदास बिनती कहा बिनवै दोषनि देह भरी । अपनो बिरद सँभारहुगे तब यामें सब निवरी ॥ ७१ ॥

राग धनाश्री ॥ नाथ सकौ तौ मोहि उधारो । पतितनमें विख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारो ॥ बडे पतित पासंगहु नाहीं अजामिल कौन विचारो । भाजै नरक नाम सुनि मेरो यमनि दियो हठ तारो ॥ क्षुद्रपतित तुमतारि रमापति जिय जु करौ जिन गारो । सूरपतितको ठौर कहूँ नहिं हरिनाम सहारो ॥ ७२ ॥

तुम कब मोसो पतित उधारचो । काहे को प्रभु बिरद बुलावत बिन मसकत को तारचो ॥ गीध व्याध गज गौतमकी तिय उनको कहा निहोरो । गणिका तरी आपनी

करनी नाम भयो प्रभु तोरो ॥ अजामील तो विप्र तुम्हारो हुतो पुरातन दास । नेक चूकते यह गति कीनी फिर वैकुंठहि बास ॥ पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यो न काहू खोट । तौ जानौं जौ मोहिं तारिहौ सूर कूर कवि ठोट ॥ ७३ ॥

पतितपावन हरि बिरद तुम्हारो कौनै नाम धरयो । हौंतौ दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परयो ॥ चारि पदारथ दए सुदामा तंदुल भेट धरयो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करयो ॥ संदीपनद्रुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करयो । सूर कि बिरियां निठुर भये प्रभु मोते कछु न सरयो ॥ ७४ ॥

राग धनाश्री ॥ आजु हो एक एक करि टरिहौं । कै हमहीं कै तुमहीं माधव अपुन भरोसे लरिहौं ॥ हौं तो पतित सात पीढिनको पतितै ह्वै निस्तरिहौं । अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुम्हैं बिरद बिनु करिहौं ॥ कत अपनी परतीत नशावत मैं पायों हरि हीरा । सूर पतित तबहीं लै उठि है जब हँसि देहौ बीरा ॥ ७५ ॥

राग नट ॥ कहावत ऐसे दानी । चारि पदारथ दये सुदामाहिं अरु गुरुको सुत आनी ॥ रावणके दश मस्तक छेदे शर गहि शारँग पानी । विभिषनको तुम लंका दीनी पूर बली पहिचानी ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची मीति पुरातन जानी । सूरदास सों कहा निठुर भए नैनन हूकी हानी ॥ ७६ ॥

राग धनाश्री ॥ मोसों बात सकुच तजि कहिये । कत व्रीडत कोउ और बतावहु वाहीके ह्वै रहिये ॥ कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोमैं भोलो । तौ हौं अपनी फेरि सुधारों वचन एक जो बोलो ॥ तीनों पनमें और निबाही इहै स्वांगको काछे । सूरदासको यहै बडो दुख परत सबनके पाछे ॥ ७७ ॥

राग सारंग ॥ प्रभुहौं बडी बेरको ठाढो । और पतित तुम जैसे तारे तिनहीं में लिखि काढो ॥ युग युग यहै बिरद चलि आयो टेरि कहत हौं याते । रियतम लाज पांच पतितन में होब कहौ घट काते ॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठह कै करो बिरद सहीसूर पतित जो झूठ कहत है देखौ खोजि वही ॥ ७८ ॥

प्रभु हौं सब पतितनको टीको । और पतितसब दिवस चारिके हौं जन्मांतरहीको ॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाहीको । मोहिं छांडि तुम और उधारे मिटै शूल क्यों जीको ॥ कोउ न समरथ अघ करिवेको खैंचि कहतहौं लीको । मरियत लाज सूर पतितनमें हमहूंते को नीको ॥ ७९ ॥

हौंतौ पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनहीं तारयो सुन्यों जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥ ८० ॥

माधो जू और न मोते पापी । घातक कुटिल चवाई कपटी महा रु संतापी ॥ लंपट धूत पूत दमरीको विषय जाप को जापी । भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कबहुँ न मनसा धापी ॥ कामी विवश कामिनीके रस लोभ लालसा थापी । मन क्रम वचन दुसह सबहिनसों कटुक बचन अलापी ॥ जेतिक अधम उधारे तुम प्रभु तिनकी गति मैं नापी । सागर सूर भरयो विकारजल पतित अजामिल वापी ॥ ८१ ॥

राग कान्हरा ॥ हरि हौं सब पतितन पतितेश । और न सर करिबेको दूजो महामोह मम देश ॥ आशाके सिंहासन बैठ्यो दंभछत्र शिर तान्यो । अपयश अति नकीब कहि टेर्यो सब शिर आय समान्यो ॥ मंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति । दुबिधा दुंद होत निशि बासर उपजावति बिपरीत ॥ मोदी लोभ खवास मोहके द्वारपाल अहँकार । पाठ अहं ममता है मेरी मायाको अधिकार । सेवक तृष्णा भ्रमत टहल हित लहत न छिन विश्राम । अनाचार सेवकसों मिलिकै करत चवावन काम ॥ बाज मनोरथ गर्व मत्तगज असत कुमति रथ सूत । पाइक मन बानैत अधीरज सदा दुष्ट मति दूत ॥ गढ तजि भये नरकपति मोसों दीने रहत किंवार । सेना साथ बहुत भाँतिनकी कीने पाप अपार ॥ निंदा जग उपहास करत मग बंदीजन यश गावत । हठ अन्याय अधर्म सूरनित नौबत द्वार बजावत ॥ ८२ ॥

राग धनाश्री ॥ सांचो सो लिखहार कहावै । काया ग्राम मसाहत करिकै जमा बांधि ठहरावै ॥ मन यह तो करि कैद अपनेमें ज्ञान जहतिया लावै ! मांडि मांडि खरिहान क्रोधको पोता भजन भरावै ॥ बट्टा काट कसूर भर्म को फरद तलै लै डारै । निश्चय एक असल पै राखै टरै न कबहूँ टारे ॥ करि अवार जा प्रेम प्रीतिको असल तहां खतियावै । दूजी करद दूरि करि है यतनै कत तामें आवै ॥ मुजमिल जोरै ध्यान कुल्ल का हरिसों तहँ लै राखे । निर्भय रूपै लोभ छाँडि कै सोई वारिज राखे ॥ जमा खर्च नीके करिराखै लेखा समुझि बतावै । सूर आप गुजरान मुहासिब लै जबाब पहुँचावै ॥ ८३ ॥

प्रभु जु मैं ऐसो अमल कमायो । साबिक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तललायो॥ वासिलबाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी । चित्तरगुप्त होत मुस्तौफी शरण गहूँ मैं काकी ॥ पांच मुहर्रिर साथ करिदीने तिनकी बड़ी विपरीति । जिम्में उनके मांगें मोते यह तौ बड़ी अनीति ॥ पांच पचीस साथ अगवानी सब मिलि काज बिगारे । सुनतगीरी मेरी बिसरि गई सुधिमोतजि भये नियारे ॥ बड़ो । तुम्हार बरामद हू को लिखि कीनो है साफ । सूरदासकी यहै बीनती दस्तक कीजै माफ ॥ ८४ ॥

राग सारंग ॥ प्रभु हौं सब पतितनको राजा । निंदा परमुख पूरि रह्यो जम यह निसान तब बाजा ॥ तृष्णा देश रु सुभट मनोरथ इन्द्रिय खड्ग हमारे । मन्त्री काम कुमति देवै को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥ गज अहंकार बढ्यो दिगविजयी लोभ छत्रकरि शीश । फौज असत संगतिकी मेरी ऐसो हौं मैं ईश ॥ मोहमई बन्दी गुण गावत मागध दोष अपारै । सूर पापको गढ़ दृढ़ कीनो मुहकम लाइ किंवार ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ॥ हरि हौं सब पतितनको राव । को करि सकै बराबरि मेरी सो तौ मोहिं बताव ॥ व्याध गीध अरु पतित पूतना तिनमें बढ़िजो और । तिनमें अजामेल गणिकापति उनमें मैं शिर मौर ॥ जहँ तहँ सुनियत यहै बड़ाई मो समान नहिं आन। अब रहे आजु कालिके राजा मैं तिनमें सुलतान ॥ अब लौं तौ तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट । तजौं बिरद कै मोहिं उधारो सूर गही कसि फेंट ॥ ८६ ॥

राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनको नायक । को करि सकै बराबरि मेरी और नही कोउ लायक ॥ जैसो अजामेलको दीनो सो पाटी लिखि पाऊं । तो विश्वास होइ मनमेरे औरौ पतित बुलाऊं ॥ यह मारग चौगुनो चलाऊँ तौ पूरो व्यापारी । वचन मानि लै चली गाँठि दै पाऊं सुख अति भारी ॥ पतित उधारन नाम सुन्यौं जब शरन गही तकि दौर । अब कै तौ अपनी लै आयों बेर बहुरकी और ॥ होड़ा होड़ी मनहि भावते किये पाप भरि पेट । सबै पतित पाँइन तर डारौ इहै हमारी भेंट ॥ बहुत भरोसो जानि तुम्हारो अघ कीनो भरि भाडो । लीजै बेगि निबेरि तुरंतहि सूर पतित को टाडो ॥ ८७ ॥

राग धनाश्री ॥ मोसों पतित न और गुसाईं । अवगुण मोते अजहुँ न छूटत भली तजी अबताई ॥ जन्म जन्म योंही भ्रमि आयो कपि गुंजा की नाईं । परशत शीत जान नहिं क्योंहू लै लै निकट बनाई ॥ मोह्यो जाइ कनक कामिनि सों ममता मोह बढ़ाई । जिह्वा स्वाद मीन ज्यों उरझ्यो सूझत नहिं फंदाई ॥ सोवत मुदित भयो स्वप्नेमें पाई निधि जु पराई । जागि परचो कछु हाथ न आयो यह जगकी प्रभुताई ॥ परशे नाहिं चरण गिरिधरके बहुत करी अन्याई । सूर पतितको ठौर और नाहिं राखि लेहु शरणाई ॥ ८८ ॥

हरि हौं महा पतित द्रोही अभिमानी । परमारथसों पीठि विषय रस भाव भगति नहिं जानी ॥ निशि दिन दुखित मनोरथ करि करि पावत हूं तृष्णा न बुझानी । शिर पर काल नीच नाहिं चितवत आयु घटत ज्यौं अँजुरी पानी ॥ विमुखनिसों रति जोरत दिन प्रति साधुनसों न कहूं पहिचानी । तिहि बिनु रहत नहीं निशि बासर जिहि सब दिन रस विषय बखानी ॥ माया मोह लोभ नाहिं जाने ऐसो वृन्दावन रजधानी । नवलकिशोर जलद तनुसुन्दर बिसरचौ सूर सकल सुखदानी ॥ ८९ ॥

माधव जू मोहिं काहेकी लाज । जन्म जन्म योंही भरमायो अभिमानी बे: काज ॥ जल थल जीव जिते जग जीवन निरखत दुखित भये देव । गुण: अवगुणकी स"झि न शंका परी आइ यह टेव ॥ सर्वस खोंई रह्यो घर बैस्यो करचो न कछू बिचारी । सूर श्वानके पालन हारे आवत है नित गारी ॥ ९० ॥

राग सारंग ॥ माधवजू सो अपराधी हौं । जन्म पाइ कछु भलो न कीनो कहो सु क्यों निबहौं ॥ सबसों रीति कहत यमपुर की गज पिपीलिकालौं ॥ पाप पुण्यको फल दुख सुख है भोग करौं जुइगों । मोको पंथ बताओ सोई नरक कि स्वर्ग लहौं । काके बल हौं तरौं गुसाईं कछु न भक्तिमों रहौं ॥ हँसि बोले जगदीश जगतपति बात तुम्हारी यों । करुणासिंधु कृपालु कृपानिधि भजो शरणको क्यों । बात सुनेते बहुत हँसोगे चरण कमल की सौं । मेरी देह छुटत यम पठये जितक दूत घरमों ॥ लै ले सब हथियार आपुने सान धराये त्यों । जिनके दारुण दरश देखिके पतित करत म्यौं म्यौं ॥ दांत चबात चले मधु पुरते धाम हमारे को । ढूँढि फिरे घर कोउ न बतावे श्वपच

कोरिया लों ॥ रिस भरि गए परम किंकर तब फकरचो छुटि न सकों । लै लै फिरे नगरमें घर घर जहां मृतक हौं हौं ॥ ता रिसते मोहिं बहुतक मारचो कहं लौं बरणि कहौं । हाय हाय मैं परचो पुकारचो राम नाम न बकौं ॥ ताल पखावज चले बजावत समधी सोभोकों । सूरदासकी भली बनी है गजीगईअरुपों ॥ ९१ ॥

राग कान्हरा ॥ थोरो जीवन बहुत न भारो । कियो न साधु समागम कबहुँ लियो न नाम तुमारो । अति उन्मत्त मोह मायावश नहिं कछु बात विचारो । करत उपाव न पूंछत काहू गनत न खाटो खारो ॥ इन्द्री स्वाद विवश निशि वासर आप अपुनपो हारचो । जल उन्मत्त मीन ज्यों बपुरो पांउ कुल्हारो मारचो ॥ बांधी मोट पसारि त्रिविध गुण कहूँ न बीच उतारचो । देख्यो सूर विचारि शीश परि तब तुम शरण पुकारचो ॥ ९२ ॥

राग धनाश्री ॥ अब मैं नाच्यों बहुत गुपाल । काम क्रोधको पहिरि चोलना कंठ विषय की माल ॥ महामोहको नेपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल । मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ कोटिक कला कांछि देखराई जल थल सुधि नहिं काल । सूरदास की सबै अविद्या दूरि करो नंदलाल ॥ ९३ ॥

ऐसी करत अनेक जन्म गये मन सन्तोष न आयो । दिन दिन अधिक दुराशा लाग्यो सकल लोक भरमायो ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अग्नि ते काहु न जरत बुझायो ॥ स्त्रक चंदन वनिता विनोद सुख यह जर जरन बितायो । मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत मांझ घृत नायो । भ्रमि भ्रमि हौं हारचो हिय अपने देखि अनल जग छायो । सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु कैसे जात नशायो ॥ ९४ ॥

बादिहि जनम गयो सिराइ । हरि सुमिरन नहिं गुरुकी सेवा मधुबन बस्यो न जाइ ॥ अबकी बेर मनुष्य देह धरि भजों न आन उपाइ । भटकत फिरचो श्वान की नाईं नेक जूंठ के चाइ ॥ कबहुं न रिझये लाल गिरिधरन विमल विमल यश गाइ ॥ प्रेम सहित पग बांधि घूँघुरू सक्यो न अङ्ग नचाइ ॥ श्रीभागवत सुन्यो नहिं श्रवणनि नेकहुं रुचि उपजाइ । अनन्य भक्त नरहरि भक्तनके कबहुं न धोए पाइ ॥ कहा कहौं जो अद्भुत है वह कैसे कहूँ बनाइ । भव अंभोधि नाम निज नौका सूरहिं लेउ चढ़ाइ ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ माधव जू तुम कत जिय बिसरचो । जानत सब अन्तरकी करणी जो मैं कर्म करचो ॥ पतित समूह सबै तुम तारे हुते जु लोग भरचो । हौं उनसे न्यारो करि डारचौं इहि दुख जात मरचो फिरि फिरि योनि अनंतनि भरम्यो अब सुख शरण परचो । इहिं अवसर कत बांह छुड़ावत इहि डर अधिक डरचो ॥ हौं पापी तुम पतित उधारन डारे हो कत देत । जो जानत यह सूर पतित नहिं तो तारो निज हेत ॥ ९६ ॥

राग केदारा ॥ जो पै तुमही विरद बिसारचो । तो कहो कहां जाउँ करुणामय कृपण कर्मको मारचो ॥ दीनदयालु पतित पावन यश वेद बखानत चारचो । सुनियत कथा

पुराणनि गणिका व्याध अजामिल तारचो ॥ राग द्वेष विधि अविधि अशुचि शुचि जिन प्रभु जितै सँभारयो । कियो न कहूँ बिलम्ब कृपानिधि सादर सोच निवा यो ॥ अगणित गुण हरि नाम तुम्हारे अजा अपुनपो धारयो । सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत श्रम हारयो ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ जैसे और बहुत खल तारे । चरण प्रताप भजन महिमा सुखको कहि सकै तिहारे ॥ दुःखित गीध दुष्ट मति गणिका नृग कूप उधारे । विप्र बजाइ चल्यो सुतके हित काटि महाअघ भारे ॥ व्याध दुरद गौतमकी नारी कहो कौन व्रत धारे । केशी कंस कुवलिया मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे ॥ उरजनिको विष बांटि लगायो यशुमतिकी गति पाई । रजक मल्ल चाणूर दवानल दुख भंजन सुखदाई ॥ नृप शिशुपाल महा पद पायो सर औसर नहिं जाने । अघ बक तृणावर्त धेनुक इति गुण गहि दोष न माने ॥ पांडुवधू पटहीन सभामें कोटिन बसन पुजाए । विपति काल सुमिरत छिन भीतर तहीं तहीं उठि धाए ॥ गोप ग्वाल गोसुत जल त्रासत गोवर्धन कर धारयो । संतत दीन महा अपराधी काहे सूर बिसारयो ॥ ९८ ॥

राग केदारा ॥ बहुरि की कृपाहू कहा कृपाल । विद्यमान जन दुखित जगतमें तुम प्रभु दीनदयाल ॥ जीवत यांचत कनकनि निर्धन दर दर रटत बिहाल । तनु छूटे ते धर्म नहीं कछु जो दीजै मणिमाल ॥ कहा दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित कलिकाल । सूरश्यामको कहा निहोरो चलत वेदकी चाल ॥ ९९ ॥

कौन सुनै यह बात हमारी । समरथ और न देखों तुम बिनु कासों बिथा कहौं बनवारी ॥ तुम अविगत अनाथके स्वामी दीनदयालु निकुंज बिहारी । सदा सहाय करी दासनको जो उर धरी सोइ प्रतिपारी ॥ अब केहि शरण जाउँ यादव पति राखि लेहु बलि त्रास निवारी । सूरदास चरणनिके बलि बलि कौन गुसाते कृपा बिसारी ॥ १०० ॥

राग कल्याण ॥ जैसे राखहु तैसहि रहौं । जानत दुख सुख सब जनके तुम मुख करि कहा कहौं ॥ कबहुंक भोजन लहों कृपानिधि कबहूं भूख सहौं । कबहुंक चढ़ों तुरंग महागज कबहुंक भार बहौं ॥ कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं । सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं ॥ १०१ ॥

राग धनाश्री ॥ कब लगि फिरि है दीन भयो । सुरत सरित भ्रम भमर परचो तन मन परचत न लह्यो ॥ वातचक्र तृष्णा प्रकृति मिलि हों तृण तुच्छ गहो । उरझ्यो विवश कर्म तरु अंतर श्रम सुख शरण चह्यो ॥ बिनती करत डरात कृपानिधि नहीं न परत रह्यो । सूर करन वर रच्यो जु निज कर सो कर नाहिं गह्यो ॥ १०२ ॥

तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जेहिके वश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी ॥ बहत पवन भरमत दिनकर दिन फनपति शिर न डुलावै । दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बहावै ॥ शिव विरंचि सुरपति समेत अब सेवत प्रभु पद चाये । जो कछु करन चहत सो कीजत करत है अति अकुलाये ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुण पूरण परमानंद । सूरदास पर कृपा करो प्रभु श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १०३ ॥

राग मलार ॥ तुम तजि कौन नृपतिके जाऊं । काके द्वार जाय शिर नाऊं पर हथ कहां बिकाऊं ॥ ऐसोको दाता है समरथ जाके दए अघाऊं । अंतकाल तुमरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं जाऊँ ॥ रंक अयाची कियो सुदामा दियो अभय पद ठाऊं । काम धेनु चिंतामणि दीनो कल्पवृक्ष तरु छाऊँ ॥ भव समुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराऊँ । कीजै कृपा सुमिरि अपनो प्रण सूरदास बलि जाऊँ ॥ १०४ ॥

राग मारू ॥ मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊँ । हौं कहाइ तिहारौ अब कौनको कहाऊँ ॥ कामधेनु छांड़ि कहा अजा जा दुहाऊँ । हय गयंद उतरि कहा गर्दभ चढ़ि धाऊं ॥ कञ्चन मणि खोलि डारि कांच गर बँधाऊं । कुंकुमको तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥ पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊं । अंबको फल छांड़ि कहां सेंवरको धाऊं ॥ सागरकी लहर छांड़ि खार कत अह्नाऊं । सूर कूर आँधरो मैं द्वार परचो गाऊँ ॥ १०५ ॥

राग आसावरी ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं । श्याम बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहू माहिं हृदय न लाऊँ ॥ यहै जप यहै तप यम नियम व्रत यहै यहै मम प्रेमफल यहै पाऊँ ॥ यहै मम ध्यान यह ज्ञान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु हौं यहै पाऊँ ॥ १०६ ॥

राग देवगंधार ॥ मेरे जिये सु ऐसी बनी । छांड़ि गुपाल और जो जाचौं तो लीजै जननी ॥ कहा कांचको संग्रह कीजै त्याग अमोल मनी । विषको मेरु कहांलों कीजै अमृत एक कनी ॥ मन वच क्रम सत भाउ कहत हौं मेरे श्याम धनी । सूरदास प्रभु तुमरी भक्ति लगि तजी जाति अपनी ॥ १०७ ॥

मेरो मन अनत कहां सुख पावै । जैसे उड़ि जहाजको पक्षी फिर जहाज पर आवै ॥ कमल नैनको छांड़ि महातम और देवको धावै । परम गङ्गको छांड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै ॥ जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ १०८ ॥

राग सारंग ॥ तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान । छूटि गये कैसे जन जीवत ज्यों पानी बिन प्रान ॥ जैसे मगन नाद सुनि सारंग बधत वधिक तनु बान । ज्यौं चितवै शशि ओर चकोरी देखतही सुख मान ॥ जैसे कमल होत परि फूलित देखत दरशन भान । सूरदास प्रभु हरिगुण मीठे नित प्रति सुनियत कान ॥ १०९ ॥

राग धनाश्री ॥ जो हम भले बुरे तौ तेरे । तुम्हें हमारी लाज बड़ाई बिनती सुन प्रभु मेरे ॥ सब तजि तुम शरणागत आयो निजकर चरण गहेरे । तुम प्रताप बल बदत न कोहू निडर भये घर चेरे ॥ और देव सब रंक भिखारी त्यागे बहुत अनेरे । सूरदास प्रभु तुमरि कृपाते पायो सुख जु घनेरे ॥ ११० ॥

राग बिलावल ॥ हमें नँदनंदन मोल लिये । यमके फंद काटि मुकराए अभय अजात किये ॥ भाल तिलक श्रवणनि तुलसी दल मेंटे अंक बिये । मूँड़ मूँड़ कण्ठ बनमाला मुद्रा चक्र दिये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिये । सूरदासको और बड़ो सुख जूंठनि खाइ जिये ॥ १११ ॥

हरि हरि हरिहरि सुमरन करौ । हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ हरिकी कथा होइ जब जहाँ । गंगाहू चलि आवै तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवै । गोदावरी विलम्बै न लावै ॥ सर्व तीर्थको बासा तहां । सूर हरि कथा होवै जहां ॥ ११२ ॥

श्रीभागवत वर्णन निमित्त राग सारंग ॥ श्रीमुख चारि श्लोक दिये ब्रह्माको समुझाइ । ब्रह्मा नारदसों कहे नारद व्यास सुनाइ ॥ व्यास कहे शुक देवसों द्वादश कंध बनाइ । सूरदास सोई कहै पद भाषा करि गाइ ॥ ११३ ॥

व्याससों शुक उत्पत्ति । राग बिलावल ॥ व्यास कह्यो जो शुकसों गाई । कहों सु सुनो संतचित लाई ॥ व्यास पुत्रहित बहुत तप कियो । तब नारायण यह वर दियो ॥ ह्वै है पुत्र भक्त अतिज्ञानी । जाकी जगमें चलै कहानी ॥ यहै हृदय हरि कियो उपाई । नारदमुनि संशय उपजाई ॥ तब नारद गिरिजापै गये । तिनसों यहि विधि पूंछत भये ॥ मुंडमाल शिव ग्रीवा जैसे । मोसों वरणि सुनावो तैसे ॥ उमा कही मैं तो नहिं जानी । अरु शिवहू मोसों न बखानी ॥ नारद कह अब पूँछहु जाई । बिनु पूँछे नहिं देह बताई ॥ उमा जाइ शिवको शिर नाई । कह्यो सुनो बिनती सुर गाई ॥ मुंडमाल कैसे तब ग्रीवा ताको मोहिं बतावहु सीवा ॥ शिव तब बोले वचन रसाल । उमा आहि यह सुनि मुँडमाल ॥ जब जब जन्म तुम्हारो भयो । तब तब मुंडमाल मैं लयो ॥ उमा कह्यो शिव तुम अविनाशी । मैं तुम्हरे चरणनकी दासी ॥ मेरे हित इतनो दुख भरत । मोहिं अमर काहे नहिं करत ॥ तब शिव उमा गये ता ठौर । जहाँ नहीं द्वितीया कोउ और ॥ सहस नाम तहाँ तिन्हैं सुनावो । जाते आप अमरपद पावौ ॥ तहां हुतो इक शुकको अंग । तिन यह सुन्यो सकल परसंग ॥ ताको शिव मारनको धायो । तिन उड़ि अपुनो आप बचावो ॥ उड़त २ शुक पहुँच्यो तहां । नारि व्यासकी बैठी जहां ॥ शिवहू ताके पाछे धाए । पै ताको मारन नहिं पाये ॥ व्यास नारि तबहीं मुख बायो । तब तनु तजि मुखमाहिं समायो ॥ द्वादश वर्ष गर्भमें रह्यो ॥ व्यास भागवत तब तिहि कह्यो ॥ बहुरो जब यदुपति समुझायो । तेरी माता बहुदुख पायो ॥ तू जेहि हित बाहर नहिं आवै । सो हमसों कहि क्यों न सुनावै ॥ प्रभु तुव माया मोहिं सतावत । ताते हौं बाहर नहिं आवत ॥ हरि कह्यो अब न व्यापि है माया । तब वह गर्भ छांड़ि जग आया ॥ माया मोह ताहि नहिं दह्यो । सुन्यो ज्ञान सो सुमिरन रह्यो ॥ जैसे शुकको व्यास पढ़ायो । सूरदास तैसे कहि गायो ॥ ११४ ॥

श्रीभागवत वक्ता श्रोता प्रस्ताव वर्णन । राग बिलावल ॥ व्यासदेव जब शुकहि पढ़ायो । सुनिकै शुक सो हृदय बसायो ॥ शुक सों नृपति परीक्षित सुन्यो । तिन पुनि भली भांतिकै गुन्यो ॥ सूत शौनकनिसों पुनि कह्यो । विदुर मैत्रेयसों पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सबनि सुख पायो । सूरदास सो वरणि सुनायो ॥ ११५ ॥

सुत संवाद । राग बिलावल ॥ सूत व्याससों हरिगुण सुने । बहुरो तिन निज मनमें गुने ॥ बहुरौ नैमिषारपै आयो । तहां ऋषिनको दरशन पायो ॥ ऋषिन कह्यो हरि कथा सुनावहु । भली भाँति हरिको गुण गावहु ॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार । सुनौ सूर सो अब चित धार ॥ ११६ ॥

व्यास अवतार वर्णन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणार विन्द उर धरौ॥ व्यास जन्म भयो जा परकार । कहौं सो कथा सुनौ चितधार ॥ सत्यवती मच्छोदरि नारी । गंगातट ठाढ़ी सुकुमारी ॥ पाराशर ऋषि तहाँ चलि आए । विवश होइ तिनके मद धाए ॥ ऋषि कह्यो ताहि दान रति देहि । मैं वर दीन्यो तोहिं सुलेहि ॥ तू कुमारिका बहुरौ होई ॥ तो को नाउँ धरै नहिं कोई ॥ मेरो कह्यो न जो तू करि है। देउँ शराप महादुख भरि है ॥ सत्यवती शाप भय मान । ऋषिको वचन कह्यो परिमान ॥ व्यासदेव ताके सुत भये । होत जन्म बहुरो बन गये ॥ योजनगंधा माता करी । मच्छ बास ताकी तब हरी ॥ देखो काम प्रताप अधिकाई ॥ वश कियो पाराशर ऋषिराई प्रबल शत्रु आहै यह मार । याते सुनौ चलौ संभार ॥ या विधि भयो व्यास अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ११७ ॥

श्रीभागवत आदि तरण कारण । राग बिलावल ॥ भयो भागवत चारि प्रकार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ सतयुग लाख वर्षकी आई । त्रेता दश सहस्र कह गाई ॥ द्वापर सहस एक रहि गई । कलियुग शत संवत रहि गई ॥ सोऊ कहन सुनन का भाई । कलि मर्याद कही नाहिं जाइ ॥ ताते हरि करि व्यास अवतार । करी संहिता वेद विचार ॥ बहुरि पुराण अठारह गाए । पै तोऊ शांती नहिं पाए ॥ तब नारद तिनके ढिग आय । चारि श्लोक कहे समुझाय ॥ ए ब्रह्मासों कहे भगवान । ब्रह्मा मोसे कहे बखान ॥ सोई अब मैं तुमसों भाषो कहो भागवत इहि हिय राखे ॥ श्रीभागवत सुन जो कोई । ताको हरिपद प्रापति होई ॥ ऊँच नीच ब्योरो न बड़ाई । ताकी साखी मैं सुनि पाई । जैसे लोहा कञ्चन होई । व्यास भई मेरी गति सोई ॥ दासी सुत ते नारद भयो। दुख दासपनको मिटि गयो ॥ व्यास देव तब करि हरि ध्यान । कियो भागवतको व्याख्यान ॥ सुनै भागवत जो चित लाई । सूर सु हरि भजि भव तरि जाई ॥ ११८ ॥

राग सारंग ॥ कह्यो शुक श्रीभागवत विचार । जाति पांति कोऊ पूछत नाहिं श्रीपतिके दरबार ॥ श्रीभागवत सुनै जो हित करि तरै सु भव जलधार । सूर सुमिरि गुण रटि निशि बासर राम नाम निज सार ॥ ११९ ॥

नाम माहात्म्यवर्णन । राग कान्हरा ॥ बड़ी है राम नाम की ओट । शरण गये प्रभुकाढि देत नहिं करत कृपाके कोट ॥ बैठत सभा सबै हरिजूकी कौन बड़ोको छोट । सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट ॥ १२० ॥

राग धनाश्री ॥ सोई भलो जु रामहिं गावै । श्वपच प्रसन्न होइ बड़ सेवक बिनु गुपाल द्विज जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहुं जाई जन्म डहकावै । होइ अटल जगदीश भजनमें सेवा तासु चारि फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिनु भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै । सूरदास प्रभु संतसमागम आनंद अभय निसान बजावै ॥ १२१ ॥

राग सारंग ॥ काहूके बैर कहा सरै । ताकी सरबरि करै सु झूठो जाहि गुपाल बड़ो करै ॥ शशि सन्मुख जी धूर उडावै उलटि तिहीके मुख परै ॥ चिरिया कहा समुद्र उलीचै

पवन कहा पर्वत टरै ॥ जाकी कृपा पतित होइ पावन पग परसत पाहन तरै। सूर केश नहिं टारि सकै कोऊ दांत पीसि जो जगत मरै ॥ १२२ ॥

राग केदारा ॥ है हरि भजनको परमान। नीच पावै ऊँच पदवी बाजते नीशान ॥ भजनको परताप ऐसो जल तरै पाषान। अजामिल अरु भील गणिका चढे जात विमान ॥ चलत तारे सकल मंडल चलत शशि अरु भान ॥ भक्त ध्रुवकी अटल पदवी रामके दीवान निगम जाको सुयश गावत सुनत संत सुजान। सूर हरिकी शरन आयो राखि ले भगवान ॥ १२३ ॥

भगवान विदुर दुह भोजन करन वर्णन। राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई। ऊँच नीच हरि गिनत न दोई ॥ विदुर गेह हरि भोजन पाये। कौरव पतिको मनहिं न ल्याये ॥ कहौं सुकथा सुनौ मन लाई। सूर श्याम भक्तनि मन आई ॥१२४॥

भए पांडवनिके हरि दूत। गये जहां कौरवपति धूत ॥ उनसों जो हरि वचन सुनाये। सूर कहत जो सुनि चित लाये ॥ १२५ ॥

सुनि राजा दुर्योधन हम तुमपै आये। पांडुसुवन जीवित मिले दै कुशल पठाए ॥ क्षेम कुशल अरु दीनता दण्डवत सुनाए। कर जोरे विनती करी दुर्बल सुखदाए ॥ पांच गांव पांचों जना करि किरपा दीजै। ए तुमरे कुल वंश हैं हमरी सुनि लीजै ॥ उनकी हमसों दीनता कोउ कहि न सुनावो। पांडु सुतनि अरु द्रौपदीको मारि कढावो ॥ राजनीति जानो नहीं गोसुत चरवारे। पीवहु छांछ अघाइकै कब केरे वारे ॥ गई गाउँके बेटला मेरे आदि सहाई। इनकी हम लज्जा नहीं तुम राजबड़ाई ॥ भीषम द्रोण कर्ण सुनै कोउ मुखहु न बोलै। ए पांडव क्यों काढिए धरणी डग डोलै। हम कछु लेत न देत हैं ए वीर तम्हारे ॥ सूरदास प्रभु उठि चले कौरव सुत हारे ॥ १२६ ॥

उद्धवपति वचन। राग धनाश्री ॥ उद्धव चलो विदुरके जाइये। दुर्योधनके कौन काज जहां आदर भाव न पाइयै ॥ गुरु मुख नहीं बड़े अभिमानी काय सेव कराइयै। टूटी छानी मेघ जल वरषै टूटे पलंग बिछाइयै ॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु आइयै। सकुचति फिरति जु वदन छिपावै भोजन कहा मंगाइयै ॥ तुमतो तीनि लोकके ठाकुर तुमते कहा दुराइयै। हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी शाक चखाइयै ॥ हंसि हंसि खात कहत मुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाइयै। सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढ़ाइयै ॥ १२७ ॥

हरि ठाढ़े रथ चढ़े दुवारे। तुम दारुक आगे ह्वै देखहु भक्त भवन किधौं अनत सिधारे ॥ सुनि सुन्दरी उठि उत्तर दीनो कौरव सुत कछु काज हँकारे। तहं आये यदुपति कहियत है कमल नयन हरि हितू हमारे ॥ तिहिको मिलन गयो मेरो पति ते ठाकुर हैं प्रभु हमारे। सूर प्रभु सुनि संभ्रम धाए प्रेम मगन तन बसन बिसारे ॥ १२८ ॥

प्रभुजू तुम हो अंतर्यामी। तुम लायक भोजन नहिं गृहमें अरु नाहीं गृहस्वामी। हरि कह्यो साग पत्र जो मोहीं प्रिय अमृत या सम नाहीं। बारंबार सराहि सूर प्रभु शाक विदुर घर खाहीं ॥ १२९ ॥

भगवान दुर्योधन संवाद। राग सोरठ ॥ क्यों दासीसुतके पांव धारे। भीष्म कर्ण द्रोण मंदिर तजि मम गृह तजे मुरारे ॥ सुनियत दीन हीन वृषली सुत जाति पांतिते न्यारे ॥ तिनके जाइ कियो तुम

भोजन यदुवंशी सब लाजनि मारे ॥ हरि जू कहैं सुनो दुर्योधन सोइ कृपण मम चरण बिसारे । वेई भक्त भागवत वेई रागद्वेषते न्यारे ॥ सूरदास प्रभु नंदनंदन कहैं हम ग्वालन जुठिहारे ॥ १३० ॥

राग सारंग ॥ हमतें विदुर कहा है नीको । जाके रुचिसों भोजन कीनो सुनियत सुत दासीको ॥ द्वै विधि भोजन कीजै राजा विपति परे कै प्रीती । तेरी प्रीतिन मोहीं आपदा यहै बड़ी बिपरीती ॥ ऊँचे मंदिर कौन काजके कनक कलश जु चढाये । भक्त भवनमें मैं जु बसतहौं यद्यपि तृण करि छाये ॥ अंतर्यामी नाम हमारो हौं अंतरकी जानों । तद्यपि सूर भक्तवच्छलही भक्तन हाथ बिकानों ॥ १३१ ॥

हरि तुम क्यों न हमारे आए । षटरस व्यंजन छांड़ि रसोई साग बिदुर घर खाये ॥ ताकी टुगियामें तुम बैठे कौन बड़ापन पायो ; जाति पांति कुलहूते न्यारो है दासीको जायो ॥ मैं तुही कहौं अरे दुर्योधन सुन तू बात हमारी । बिदुर हमारो प्राण पियारो तू विषया अधिकारी ॥ जाति पांति हौं सबकी जानों बाहिर छाक मँगायो । ग्वालनिके सँग भोजन कीनो कुलके लाज लगायो ॥ जहँ अभिमानी तहां मैं नाहीं यह भोजन विष लागे । सत्य पुरुष बैठे घटही में अभिमानीको त्यागे ॥ जहँ जहँ भीर परे भक्तनको तहां २ उठि धाऊँ । भक्तनके हौं संग फिरत हौं भक्तन हाथ बिकाऊँ ॥ भक्तवछल है बिरद हमारो वेद स्मृति हूँ गाये । सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्तन काज बढाये ॥ १३२ ॥

द्रौपदी सहाय ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई नारि पुरुष हरि गनत न दोई ॥ द्रुपदसुताकी राखी लाज । कौरवपति को पारचो ताज ॥ कहौं सु कथा सुनौ चितलाई । सूरश्याम भक्तन बनिआई ॥ १३३ ॥

कौरव पासा कपट बनाये धर्मपुत्रको जुवा खिलाये । तिन हारचो सब भूमि भंडारी । हारि बहुरि द्रौपदी नारी ॥ ताको पकरी सभामें लाये । दुःशासनकरि बसन छुड़ाये ॥ तब वह हरिसों रोइ पुकारी । सूर राखि मम लाज मुरारी ॥ १३४ ॥

राग सारंग ॥ अब कछु नाहिं नाथ रह्यो । सकल सभामें बैठि दुशासन अम्बर आनि गह्यो । हारचो सब भंडार भूमि अरु अब बनवास लयो । एकै चीर हुतौ मेरे. परसो इन हरन चह्यो ॥ हा जगदीश राखि यहि अवसर प्रकट पुकारि कह्यो । सूरदास उमंगे दोउ नयना बसन प्रवाह बढचो ॥ १३५ ॥

राग विलावल ॥ जेती लाज गोपालहिं मेरी । तितनि नाहिं बधू हौं जाकी अंबर हरत सबन तन हेरी ॥ पति अति रोष मारि मनमहियां भीषम दई वेद विधि टेरी । हा जगदीश द्वारका स्वामी भई अनाथ कहत हौं टेरी ॥ बसन प्रवाह बढचो जब जान्यो साधु साधु सबहुन मति फेरी । सूरदास स्वामी यश प्रगट्यो जानी जनम जनमकी चेरी ॥१३६॥

राग धनाश्री ॥ निबहो बाँह गहेकी लाज । द्रुपदसुता भाषत नँदनन्दन कठिन भई है आज ॥ भीषम कर्ण द्रोण दुर्योधन बैठे सभा विराज । तिहि देखत मेरो पट काढत लीक लगी तुम काज ॥ खंभ फारि हिरनाकुश मारचो ध्रुव नृप धरचो निवाज । जनकसुता हित

हत्यो लंकपति बांधो सागर गाज ॥ गद्गद सुर आतुर तनु पुलकित नैननि नीर समाज । दुखित द्रौपदी जानि प्राणपति आये खगपति त्याज ॥ पूरे चीर बहुरि तनु कृष्णा ताके भरे जहाज । काढि काढि थाक्यो दुःशासन हाथनि उपजी खाज ॥ विकल अमान कऱ्यो कौरवपति पाऱ्यो शिरको ताज । सूर प्रभू यह रीति सदाही भक्त हेत महाराज ॥१३७॥

राग विहागरा ॥ ठाढी कृष्ण कृष्ण यों बोलै ॥ जैसे कोई विपति परेते दूरि धऱ्यो धन खोलै ॥ पकऱ्यो चीर दुष्ट दुःशासन बिलख बदन भइ डोलै । जैसै राहु नीच ढिग आये चंद्रकिरन झकझोलै ॥ जाके मीत नन्दनन्दसे ढकिलइ पीत पटो लै । सूरदास ताको डर काको हरि गिरिवरके औलै ॥ १३८ ॥

राग धनाश्री ॥ तुमरी कृपा बिनु कौन उबारै । अर्जुन भीम युधिष्ठिर राजा सुमति नकुल बल भारै ॥ केश पकरि लायो दुःशासन राखौ लाज मुरारे । नाना बसन बढाइ दियो प्रभु बलि बलि नंददुलारे ॥ नगन न होति चकित भयो राजा शीश धुनै करसों कर मारे ॥ जापै कृपा करै करुणामय को ताकी दिशि सकैनिहारे ॥ जो जो जन निश्चयकरि सेवै हरि प्रभु अपनो बिरद सँभारे । सूरदास प्रभु अपने जननको कबहूँ उरते नेकु न टारै ॥ १३९ ॥

सूत वचन शौनकनि प्रति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पंडवको ज्यों दियो राज । अरु पुनि गयो राज्य ज्यों त्याज ॥ बहुरो भयो परीक्षित राजा । तिनको शाप विप्रसुत साजा ॥ सुनि हरिकथा मुक्त सो भयो । सूत शौनकनिसों सो कह्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धार । सूर कहै भागवत अनुसार ॥ १४० ॥

भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ भारत युद्ध होइ जब बीता । भयो युधिष्ठिर अति भयभीता ॥ कुरुकुल हत्या मोते भई । धौं अब कैसे करिहै दई ॥ करौं तपस्या पाप निवारौं । राजछत्र नाहीं शिर धारौं ॥ लोगन तिहि बहुबिधि समझायो । पै तिहि मनसंतोष न आयो ॥ तब हरि कह्यो टेक परिहरौ । भीष्मपितामह कहै सुकरौ ॥ हरि पांडव रणभूमि सिधाए । भीषम देखि बहुत सुख पाए ॥ हरि कह्यो राज्य न करत धर्मसुत । कहत हते मैं भ्रात भ्रातसुत ॥ गुरुहत्या मोते ह्वै आई ! कहौ सु छूटै कौन उपाई ॥ राजधर्म भीषम तब गायो । दान आपदा मोक्ष सुनायो ॥ पै नृपको संदेह न गयो तब भीषम नृपसों पुनि कह्यो ॥ धर्मपुत्र तू देखि विचार । कारन करनहार करतार ॥ नरके किये कछू नहिं होई । करता हरता आपुहि सोई ॥ ताको सुमिरि राज्य तुम करौ । अहंकार चितते परिहरौ ॥ अहंकार किये लागत पाप । सूरश्याम भजि मिटै संताप ॥ १४१ ॥

राग धनाश्री ॥ करी गोपालकी सब होई । जो अपनो पुरुषारथ मानत अतिझूठो है सोई ॥ साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल यह सब डारहु धोई । जो कछु लिखि राखी नँद नंदन मेटि सकै नहिं कोई ॥ दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौं रोई । सूरदास स्वामी करुणामय श्याम चरण मन पोई ॥ १४२ ॥

राग कान्हरा ॥ होत सुजो रघुनाथ ठटी।पचि पचि रहे सिद्ध साधक मुनि तऊ बढी न घटी॥ योगी योग धरत मन अपने औ शिर राखि जटी । ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं सों न छटी ॥ जपि तपि तपसी आराधन कर चारों वेद रटी । सूरदास भगवंत भजन बिनु कर्म रेख न कटी ॥ १४३ ॥

राग सारंग ॥ भावी काहू सों न टरै । कहां वह राहु कहां रवि शशि आनि संयोग परै ॥ मुनि बशिष्ठ पंडित अति ज्ञानि रचि रचि लग्न धरै । तात मरन सियहरन राम बन बपु धरि बिपति भरै ॥ रावण जीति कोटि तेतीसों त्रिभुवन राज्य करै । मृत्यु बांधि कूपमें राखै भावीवश सु मरै ॥ अर्जुनके हरि हितू सारथी सोऊ बन निकरै । द्रुपदसुताके राजसभा दुःशासन चीर हरै ॥ हरिश्चंद्रसोको जग दाता सो घर नीच भरै । जो गृह छांड़ि देश बहु धावै तउ वह संग फिरै ॥ भावीके वश तीनि लोक है सुर नर देह धरै । सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै को करि सोच मरै ॥ १४४ ॥

राग कान्हरा ॥ ताते सेइए यदुराई । सम्पति बिपति विपति सों सम्पति देह धरेको यहै सुभाई ॥ तरुवर फूलै फलै परि हरै अपने कालहि पाई । सरवर नीर भरै पुनि उमड़ै सूखे खेह उड़ाई ॥ द्वितिय चन्द्र बाढत ही बाढ़ै घटत घटत घटि जाई । सूरदास संपदा आपदा जिनि कोऊ पति आई ॥ १४५ ॥

राग मलार ॥ इहि विधि कहा घटैगो तेरो । नंदनँदन करि घरको ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरो ॥ कहा भयो जो सम्पति बाढ़ी कियो बहुत घर घेरो । कहुँ हरि कथा कहूँ हरि पूजा कहुँ संतनिको डेरो ॥ जो वनिता सुत यूथ सकेलै हय गय रथनि घनेरो । सब तजि सुमिरण सूर श्याम गुण यहै साच मत मेरो ॥ १४६ ॥

भारत वर्णन । राग सारंग ॥ भक्त बछल श्रीयादवराई । भीषमकी परतिज्ञा राखी अपनो वचन फिराई ॥ भारत माहिं कथा यह विस्तृत कहत होय । सूर भक्त वत्सलता वरणौं सर्व कथाको सार ॥ १४७ ॥

अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्णगृह ॥ भक्तवत्सलता प्रगट करी । सत संकल्प वेदकी आज्ञा जनके काज प्रभु दूरि धरी ॥ भारतादि दुर्योधन अर्जुन भेटन गए द्वारकापुरी । कमलनैन बैठे सुखशय्या पारथ पाइतरी ॥ प्रभु जागे अर्जुन तन चितयो कब आये तुम कुशल घरी । ता पाछे दुर्योधन भेटहि शिर दिशते मन गर्व धरी ॥ दुहूँ मनोरथ अपनो भाष्यो तब श्रीपति बातें उचरी । युद्ध न करौं शस्त्र नहिं पकरौं एक ओर सेना सिगरी ॥ हरि प्रभाव राजा नहिं जान्यो कह्यो सेन मोहिं देदु हरी । अर्जुन कह्यो जानि शरणागत कृपा करौ ज्यों पूर्वकरी । निजपुर आइ राइ भीषमसों कही जु बातें हरि उचरी । सूरदास भीषमपरतिज्ञा शस्त्र लिवाऊं पैजकरी ॥ १४८ ॥

दुर्योधन वचन भीष्म प्रति । राग धनाश्री ॥ मैं तोहि पूछौं भूतलराई । सुनहु पितामह भीषम मम गुरु कीजै कौन उपाई ॥ उत अर्जुन अरु भीम पंडुसुत-दोउ करवार गहै गम्भीर । इतै भगदत्त द्रोण भूरिश्रव तुम सेनापति धीर ॥ जे जे जात परत ते भूतल ज्यों ज्वालागत चीर । कौन सहाय जानियत नाहिंन होत वीर निर्वीर ॥ जब तोसों समुझाय कही नृप तबतैं करी

१ इतहि करण ।

नकान। पावक किरण दहत सबही दल तूलसुमेरु समान॥ अविगत अविनाशी पुरुषोतम हांकत रथकी क्यान। अचरज कहा पार्थ जो वेधे तीन लोक इक बान॥ तेरे काज करौं पुरुषारथ यथा जीवं घटमांही। यह न कहों हौं रन चढ़ि जीतौं मो मति नहिं अवगाही॥ अजहूँ समुझि कह्यो करि मेरो कहत पसारे बाहँ। कहो ताहिको सखरि पूजै प्रभु पारथ दोउ माहँ॥ अब तो सूर शरण तकि आयो सोइ रजायसु दीजै। जिहिते रहै छत्रपन मेरो वहै मतौ कछु कीजै॥ १४९॥

भीष्म प्रतिज्ञा राग मलार॥ आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊं॥ लाजौं हौं गंगा जननीको शन्तनुसुत न कहाऊं॥ स्यंदन खंडि महारथ खण्डों कपि ध्वज सहित डुलाऊं। इती न करौं शपथ मोहिं हरिकी क्षत्रिय गतिहि न पाऊं॥ पांडवदल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर बहाऊं। सूरदास रणभूमि विजय विन जियत न पीठि दिखाऊं॥ १५०॥

राग मारू॥ सुरसरि सुवन रणभूमि आये। बाण वर्षा लगे करन अति-क्रोध ह्वै पार्थ औसान तब सबै भुलाये। कह्यो करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजो नहीं तो मरत रण हम हराए। सूर प्रभु भक्तवत्सल विरद आनि उर ताहि या विधि वचन कहि सुनाये॥ १५१॥

भगवत वचन अर्जुन प्रति॥ राग बिलावल॥ हम भक्तनके भक्त हमारे। सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे॥ भक्तै काज लाज जिय धरिकै पाइँ पयादे धाऊं। जहँ जहँ भीर परै भक्तनको तहँ तहँ जाय छुड़ाऊं॥ जो मम भक्तसों बैर करत है सो निज बैरी मेरो। देखि विचारि भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो॥ जीते जीत भक्त अपनेकी हारे हारि विचारों। सूरदास सुनि भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन जारों॥ १५२॥

राग सारंग॥ गोबिंद कोपि चक्र कर लीनो। छांड़ि आपनो प्रण यादवपति जनको भायो कीनो॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै चले चरण अति धाए। मनु शंकित भूभार उतारन चलत भए अकुलाए॥ कछुक अंगते उड़त पीतपट उन्नत बाहु बिशाल॥ स्वेदं स्रोत तनु शोभा कन छबि घन वर्षत जनु लाल॥ सूर सुभुजा समेत सुदर्शन देखि विरंचि भ्रम्यो। मानो आनि सृष्टि करिबेको अंबुज नाम भज्यो॥ १५३॥

राग मलार॥ मेरी प्रतिज्ञा रहै कि जाउ। इत पारथ कोप्यो हे हम पर उत भीषम भट राउ॥ रथते उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुभट हि सन्मुख आए। ज्यौं कन्दर ते निकसि सिंह झुकि गज यूथनिपर धाये॥ आय निकट श्रीनाथ विचारी परी तिलकपर दीठि। शीतल भई चक्रकी ज्वाला हरि हँसि दीनी पीठि॥ जय जय जय चिंतामणि स्वामी शन्तनुसुत यों भाखै। तुम बिनु ऐसो कौन दूसरो जो मेरो प्रण राखै॥ साधु साधु सुरसरीसुवन तुम मैं प्रण लागि डराऊं। सूरजदास भक्त दोनों दिशि कापर चक्र चलाऊं॥ १५४॥

अर्जुन भीष्म संवाद। राग धनाश्री॥ कहो पितु मोसों सोई सतभाव। जाते दुर्योधन दल जीतों किहि विधि कवन उपाव॥ जब लगि जी अंतर घट मेरेको सरवरि करि पावै। चिरंजीव जौलौ

दुर्योधन जियत न पकरहिं आवै॥ कौरव छांड़ि भूमिपर कैसे दूजो भूप कहावै।तो हम कछु न बसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै॥अब मैं शरण तुम्हें ताकि आयो हमैं मंत्र कछु दीजे। नातर कुटुंब सैन संहारि कर कौन काजको जीजै ॥ द्रुपदकुमार होइ रथ आगे धनुष गहो तुम बान। ध्वजा बैठि हनुमत कलगाजै प्रभु हांके रथ जान ॥ केतिक जीव कृपण मम बपुरो तजैं कालहू प्रान। सूर एकही बाण बिडारे श्रीगोपालकी आन ॥ १९९ ॥

भीष्म देह त्याग। राग सारंग ॥ पारथ भीषमसों मति पाई। कियो सारथी शिखंडि आई ॥ भीषम ताहि देखि मुख फेरचो। पारथ युद्ध हेतु रथ प्रेरचो ॥ कियो युद्ध अतिही विकरार। लागी चलन रुधिरकी धार ॥ भीषम शरशय्यापर परचो। पै दक्षिणायन लगि नहिं मरचो। हरि पांडव समेत तहँ आए। सूरज प्रभु भीषम मन भाए ॥ १९६ ॥

राग सारङ्ग ॥ हरिसों भीषम विनय सुनाई। कृपाकरी तुम यादवराई ॥ भारतमें मेरो प्रण राख्यो। अपनो कियो दूरिकर नाख्यो ॥ तुम बिनु प्रभु ऐसी को करै जो भक्तनके वश अनुसरै ॥ तुम दर्शन सुर नर मुनि दुर्लभ। मोको भयो सो अतिही सुर्लभ ॥ दूरि नहीं गोविन्द वह काल। सूर कृपा कीजै गोपाल ॥ १९७ ॥

गोविंद अब न दूरि वह काल। दीनानाथ देवकीनन्दन भक्तवत्सल गोपाल ॥ मैं भीषम तुम कृष्ण सारथी किये पीत पट लाल। बहुत सनाह समर शर बेधे कनक बेल ज्यौं ताल ॥ तुमरे चरणकमल मम मस्तक कत ताको शरजाल। सूरदास जन जानि आपनो देहु अभयकी माल ॥ १९८ ॥

राग मलार ॥ वा पट पीतकी फहरान ॥ कर धरि चक्र चरणकी धावनि नहिं बिसरति वह बान ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै कच रजकी लपटान। मानौ सिंह शैलते निकस्यो महामत्तगज जान ॥ जिन गुपाल मेरो प्रण राख्यो मेटि देवकी कान ॥ सोई सूर सहाय हमारे निकट भये हैं आन ॥ १९९ ॥

राग सारङ्ग ॥ भीषम धरि हरिको उरध्यान। देखत हरिके तजे परान ॥ तासु क्रिया करि सब गृह आए। राजसिंहासन बैठाए ॥ हरि पुनि द्वारावती सिधाये। सूरदास हरि को गुण गाये ॥ १६० ॥

अथ भगवानको द्वारका गमन ॥ राग बिलावल ॥ धर्मपुत्र को दै हरि राज। निज पुर चलिबेको कियो साज ॥ तब कुन्ती बिनती उच्चारी। सुनौ कृपा करि कृष्ण मुरारी ॥ जब जब हमको विपदा परी तब तब प्रभु सहाय तुम करी ॥ तुमते विमुख राज्य किहि काम। सूर बिसारहु हमैं न श्याम ॥ १६१ ॥

अथ कुन्तीकी विनय ॥ राग कान्हरा ॥ प्रभुजू बिपदा भली बिचारी। धिक यह राज्य विमुख चरणनते कहति पंडुकी नारी ॥ लाक्षामंदिर कौरव विरच्यो तहँ राखे बनवारी। दुर्योधन की सभा द्रौपदी अम्बर दिए उबारी ॥ अतिथिऋषीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाकते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी॥ परतिज्ञा प्रहलादकि राखी श्री नरहरि वपुधारी। सोई सूर सहाय हमारे सन्तनको हितकारी ॥ १६२ ॥

अथ विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी प्रति, वन गमन, राजा युधिष्ठिरको बैराग्य वर्णन । राग बिलावल ॥ कुरुपति ज्यों वनगमन कियो । धर्मसुवन विरक्त ज्यों भयो ॥ वरणि सुनाऊँ ता अनुसार । सूत कही जैसे परकार ॥ भारदादि कुरुपतिकी जथा । चली पांडवनकी जब कथा ॥ विदुर कह्यो मत करो अन्याई । देहु पांडवन राज्य बटाई ॥ कुरुपति कह्यो धान मम खाई । पंडुसुतनकी करत सहाई ॥ याको ह्यांते देहु निकारी । बहुरि न आवै मेरे द्वारी ॥ विदुर शस्त्र सब तहीं उतारी । चल्यो तीरथनि मुंड उघारी ॥ भारतके बीते पुनि आयो । लोगन सब वृत्तांत सुनायो ॥ तब पूँछो कुरुपति हैं कहां । कह्यो पंडुसुत मंदिर जहां ॥ राजा सेवा भलि विधि करत । दिन प्रति सुख सम्पति तहँ भरत ॥ विदुर कह्यो देखो हरिमाया । जिन इह सकल लोक भरमाया ॥ जिहि हरि कृपाकरचो सो छूट्यो । इन माया सब लोगनिं लूट्यो ॥ इहिके पुत्र एकसौ भए । तिनैं बिसारी सुखी ए हुए ॥ अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊँ । जिहिं तिहिं विधि वैराग्य उपाऊँ ॥ बहुरो धर्मपुत्र पै आयो । राजा देखि बहुत सुख पायो ॥ करि सन्मान कह्यो आ भाई । करी हमारी बहुत सहाई ॥ लाक्षागृहते जरत उबारे । अरु बालापनते प्रतिवारे ॥ कौन कौन तीरथ फिरि आए । विदुर सकल वृत्तान्त सुनाए ॥ बहुरि कह्यो हरि सुधि कछु पाई । कह्यो न कछू रह्यो शिर नाई ॥ बहुरो कौरवपति ढिग आए । पूछे समाचार सत भाए ॥ कह्यो युधिष्ठिर सेवा करत । ताते बहुत अनंदित रहत ॥ कह्यो पुत्रसुधि आवत कबहीं । कह्यो भावि एके वश सबहीं ॥ विदुर कह्यो शतपुत्र तिहारे । पंडव सुतनि कलंक संहारे ॥ तिनके गृह तुम भोजन करत । अरु पुनि कहत सुखै हम धरत ॥ धिक धिक तुम या कहिबे ऊपरं । जीवंत रहिहौ कौलौं भूपर ॥ श्वान तुल्य है बुद्धि तुम्हारी । जूंठन काज सहत दुख भारी ॥ द्रौपदिके तुम बसन छिनाए । इन तुम राज बहुत दुख पाए । इनके गृह रहि सुख तुम मानत । अति निलज्जको लाज न आनत ॥ जीवनआश प्रबल तुम लेखी । साक्षात सो तुममें देखी ॥ काल अग्नि सबही जग जारत । तुम कैसे जीवन न विचारत ॥ आयुतुम्हारी गई सिराई गई सिराई । वन चलि भजो द्वारकाराई ॥ कुरुपति कह्यो अंध हम दोई । वनमें भजन कौन विधि होई ॥ विदुर कहै सेवामैं करिहौं । सेवा करत नेक नहिं टरि हौं ॥ अर्धनिशा ताको लै गयो । प्रात भए नृप विस्मय भयो ॥ बूढ़ मुए कै कहुँ उठि गये । तिनके ताप नृपति बहुतए ॥ वहां जाइ कुरुपति बल योग । दियो छांड़ि तनको संयोग ॥ गांधारी सहगामिनि कियो । विदुरभक्त तीरथ मग लियो ॥ इहि अन्तर नारद इहँ आयो । नृपको सब वृत्तांत सुनायो ॥ नृपके मन उपजो वैराग । भजो सूर प्रभु अब सब त्याग ॥ १६३ ॥

अथ हरिवियोग पांडवनको उत्तर गमन ।राग सारङ्ग ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो । हरिवियोग पांडव तजि राज । गमन कियो परीक्षितराज ॥ कहौं सुकथा सुनौ चित धार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥१६४॥

राग बिलावल ॥ राजसों अर्जुन शिरनाई । कह्यो सुनौ बिनती महराई॥बहुदिन भे हरिसुधि नहिं पाई । आज्ञा होइ तो देखहुँ जाई॥यह कहि पारथ हरिपुर गए । सुन्यो सकल यादव क्षय भये॥अर्जुन सुनत नयन जलधार । पर्यो धरणि पर खाइ पछार॥तब दारुक संदेश सुनायो॥ कह्यो हरिजू जो गीता गायो ॥ सो स्वरूप मम हृदये आन । रहियो सदा करत मम ध्यान ॥ तब अर्जुन मन धीरज धारि ॥ चल्यो संग लै जे नर नारि ॥ तहँ भिल्लनिसों भई लराई । लूटे बिन सब श्याम सहाई । अर्जुन बहुत दुखित तब भए । इह अपसगुन होत दिन नए ॥ रोवैं वृषभ तुरंत अरु नाग । श्याल दिवस निशि बोलें काग ॥ कंपै भुव वर्षा नहिं होई । भए सोच चित यह नृप जोई ॥इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो । राजाके चरणन शिर नायो ॥ राजा ताको कण्ठ लगाई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ बल वसुदेव कुशल सब लोई । अर्जुन यह सुनि दीने रोई ॥ राजा कह्यो कहा भयो तोहिं । तू क्यों कहि न सुनावै मोहिं ॥ काहू असत्कार. तोहिं कियो । कै कहि दान न द्विजको दियो ॥ कै शरणागतको नहिं राख्यो । कै तुमसों काहू कटु भाख्यो ॥ कै हरिजू भए अन्तर्ध्यान । मोसों कहि तू प्रकट बखान ॥ तब अर्जुन नैनन जल डारि । राजासों किय वचन उचारि ॥ सूरज प्रभु वैकुंठ सिधारे । तेहि बिनको मम काज सँवारे ॥ १६५ ॥

राग धनाश्री ॥ हरि बिनुको पुरवैमेरो स्वारथ । मुंडहि धुनत शीश कर मानत रुदन करत नृप पारथ ॥ थाके हस्त चरण गति थाकी अरु थाक्यो पुरुषारथ । पांच बाण मोहि शंकर दीने तेऊ गए अकारथ ॥ जाके संग सेतुबन्ध कीनो अरु जीत्यो महभारथ । गोपीहरी सूरके प्रभु बिन घटत न प्राण पदारथ ॥ १६६ ॥

राग बिलावल ॥ यह सुनि राजा रोइ पुकारे । भीमादिक रोये पुनि सारे ॥ रोवत सुनि कुन्ती तहां आई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ अर्जुन कह्यो सबै लरि मुए । हरि बिनु सब अनाथ हम हुए ॥ कुन्ती प्राण तजे धरि ध्यान । जीवन मरन उतै भल जान ॥ राज्य परीक्षितको नृप दीना । बज्रनाभ मथुरापति कीना ॥ द्रुपदसुता समेत सब भाई । उत्तर दिशा गए हर्षाई । योगपंथ करि उन तनु तजे । सूर सबै ते हरि पद भजे ॥ १६७ ॥

अथ श्री भगवान् परीक्षित गर्भरक्षा जन्म वर्णन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणारविन्द उर धरौ ॥ हरि परीक्षितै गर्भ मँझार । राखि लियो निज कृपा अधार ॥ कहौं सु कथा सुनौ चितलाई । जो हरि भजै रहै सुख पाई ॥ भारत युद्ध वितत जब भयो । दुर्योधन अकेल तहँ रह्यो ॥ अश्वत्थामा तापै जाई । ऐसी भांति कह्यो समुझाई ॥ हमसों तुमसों बाल मिताई । हमसों कछु न भई मित्राई ॥ अब जो आज्ञा मोको होई । छांड़ि बिलंब करों अब सोई ॥ राज्य गयेको दुःखन सोई । पांडव राज भयो जो होई ॥ उनके मुए होय सुख होई । जो करिसको करो अब सोई ॥ हरि सर्वज्ञ बात यह जान । पांडुसुतनिसों कह्यो बखान ॥ आज सरस्वति तट रहौ सोई । पै यह बात न जानै कोई ॥ पांडव हरिकी आज्ञा पाई । तजि गृह रहे सरस्वति जाई ॥ काहूसों यह कहि न सुनाई । वहां जाइ सब रैन बिताई । अश्वत्थामा तब इहां आए द्रौपदि सुत तहां सोवत पाए ॥

उनको शिर लै गयो उतारि । कह्यो दुर्योधन आयो मारि ॥ बिन देखे ताको सुख छयो । देखेते दूनो दुख भयो ॥ ए बालक तैं वृथा जु मारे । पुनि कुरुपति तजि प्राण सिधारे ॥ अश्वत्थामा भय करि भाग्यो । इहां लोग सब सोवत जाग्यो ॥ द्रौपदि देखि सुतन दुख पायो । अर्जुनसों यह वचन सुनायो ॥ अश्वत्थामा जब लगि मारों । तब लगि अन्न न मुखमें डारों ॥ हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये । अश्वत्थामा पै चलि आये ॥ अश्वत्थामा अस्त्र चलायो । अर्जुनहू ब्रह्मास्त्र पठायो ॥ उन दोनोंसे भई लराई । तब अर्जुन दोउ लए बुलाई ॥ अश्वत्थामाको गहि लाए । द्रौपदि शीश मुठी मुकराए ॥ याके मारे हत्या होई । मूयो जिवत न देख्यो कोई ॥ अश्वत्थामा बहुरि खिसाई । ब्रह्म अस्त्रको दियो चलाई ॥ गर्भ परीक्षित जारन गयो ॥ तब हरि ताहि जरन नहिं दियो ॥ रूप चतुर्भुज गर्भ मँझार । ताको तासों लियो उबार ॥ जन्म परीक्षितको जब भयो । कह्यो चतुर्भुज अब कहँ गयो ॥ पुनि जब हरिको देखौं जोई ॥ पाइ सन्तोष सुखी होउँ सोई ॥ राजा जन्म समयको देखि । मनमें पायो हर्ष विशेखि ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा करी । सोई कथा सकल बिस्तरी ॥ श्रीभगवान कृपा जिहि करै । सूर सो मारे काके मरै ॥ १६८ ॥

अथ परीक्षित राजाको कलियुग दंड । ऋषि शाप । राग सारंग ॥ हरि हरि भक्तनको शिर नाऊं । हरि भक्तनके गुण गाऊं ॥ हरि हरि भक्त एक नहिं दोई । पै यह जानत बिरला कोई ॥ भक्त परीक्षित हरिको प्यारो । गर्भ माँह हो तो जब बारो ॥ ब्रह्म अस्त्रते ताहि बचायो । युग युग बिरद यहै चलि आयो ॥ बहुरि राज्य ताकहँ जब भयो । मिस दिग्विजय चहूं दिशि लयो ॥ सकल प्रजा सुधर्म रत देखे । ताके मन बहु हर्ष विशेखे ॥ कुरु क्षेत्रमें पुनि जब आयो । गाय वृषभ तहँ दुःखित पायो ॥ तासु वृषभके पग त्रय नाहीं । रोवत गाय देखके ताहीं ॥ वृषभ धर्म पृथ्वी सो गाई । वृषभ कह्यो तासों या माई ॥ मेरे हेत दुखी तू होत । कै अधर्म तुम पर अच्छोत ॥ गो कह्यो हरि वैकुंठ सिधारे । शम दम उनही संग पधारे ॥ तप सन्तोष दया अरु गयो । ज्ञान यमादिक सब लय भयो ॥ यज्ञ साधना कोउ न करै । कोऊ धर्म न मनमें धरै ॥ अरु तुमको बिन पाँइन देखि । मोहि होत है दुःख विशेखि ॥ इह अंतर राजा शूद्र आयो । वृषभ गऊको पांव चलायो ॥ ताहि परीक्षित खड्ग उठाई । बहुरो बचन कह्यो या भाई । तू को कौन देश है तेरो ॥ कैछल गह्यो राज्य सब मेरो ॥ या विधि नृपति परीक्षित कह्यो । पै वासों उत्तर नहिं लह्यो ॥ कह्यो वृषभसोंको दुखराई । तासु नाम मोहिं देहु बताई ॥ इंद्र होइ ताहूको मारों ॥ तुमरो यह सन्ताप निवारों ॥ वृषभ कह्यो तुम ऐसेइ राव । पै मैं लेउं कौनको नाँव ॥ कोउ कह हरि इच्छा दुख होई । द्वितीया दुखदायक नहिं कोई ॥ कोउ कह कर्म दुःखके दाता । काहू दुख नहिं देत बिधाता ॥ कोउ कह शत्रु होत दुखदाई ॥ सु तौ मैं न कीनी शत्राई ॥

काके नाम बताऊँ तोको । दुखदायक अरिष्ट सम मोको ॥ लहत आपने दुख दातार । तुमही देखो करियविचार॥तब विचार करि राजा देख्यो।शूद्र नृपति कलियुग करि लेख्यो॥ वृषभ धर्म अरु पृथ्वी गाई । इनको भयो इहाँ दुखदाई ॥ ताहि कह्यो तुम बड़ा अधर्मी । तो समान नहिं औरकुकर्मी॥क्षमा दया तप पग तैं काट्यो॥छांडि देश मम यह कहि डाट्यो॥ तिन कह्यो मोमें एक भलाई । तुमसों कहों सुनो चितलाई ॥ धर्म विचारत मनमें होई । मनसा पाप न लागत कोई ॥ राज तुम्हारो है सब ठौर । तुम बिनु नृपति न द्वितीया और ॥ जौन ठौर मोहिं आज्ञा होई । ताहि ठौर रहौं मैं जोई ॥ हो हरि विमुख रु वेश्या जहां । सुरापान वधिकन गृह तहां ॥ जूवा खेलत जहां जुवारी । ए पांचों हैं ठौर तुमारी ॥ पांचौं होई नृपति ए जहां । मोको ठौर बता बहु तहां ॥ तब नृप याको कनक बतायो कनक मुकुट लखि सो लपटायो ॥ इक दिन राव अखेटे गयो । ता बनमांह पियासो भयो ॥ ऋषि शमीकके आश्रम आयो । ऋषि हरि पदको ध्यान लगायो ॥ राजा जल ता ऋषिसों मांग्यो । ताको मन हरि पदसों लाग्यो ॥ राजाको उत्तर नहिं दियो । तब मन माहिं क्रोध नृप कियो ॥ यह सब कलियुगको परभाव । जो नृपके मन भयो कुठाव । ऋषिकी कपट समाधि विचारी । दियो भुजंग मृतक गर डारी ॥ ऋषि समाधि महँ त्यौंही रह्यो । शृंगीऋषि सों लरिकन कह्यो ॥ शृंगीऋषि तब कियो विचार । प्रजा दुख कर नृपति गुहार ॥ नृपति दुःख कहिये किहिं जाई । दियो शाप तोहिं तक्षक खाई ॥ दैकरि शाप पितापै आयो । देख्यो सर्प पितागर नायो ॥ रोवन लाग्यो सु मृतक जान । रुदन करत छूट्यौ ऋषि ध्यान । सुत सों कह्यो कहा भयो तोहिं । कहि न सुनावत निज दुख मोहिं ॥ शृङ्गीऋषि सब कहि समुझायो । नृप भुजंग सो ग्रीवा नायो ॥ यह अपराध बड़ो उन कीनो । तक्षकडसन शाप मैं दीनों ॥ ऋषि कह्यो बहुत बुरो तुम कीनो । जो यह शाप नृपतिको दीनो ॥ तुव शरापते मरिहै सोई । यह अपराध मोहि सब होई ॥ सुखसों सोवत राज याहि सब । दुख पैहैं सो सकल प्रजा अब । ताकी रक्षा हरिजू करी । हरि अवज्ञा तुम अनुसरी ॥ इहां राजा मनमें पछताई । मैं यह कियो बड़ो अन्याई ॥ जाके हृदय बुद्धि यह आवै । ताको फल सो भलो न पावै ॥ ऋषि शिषको भेज्यो समुझाई । नृपसों कह तुम ऐसे जाई ॥ मम सुत शाप दियो या भाई । सप्तम दिन तोहि तक्षक खाई ॥ शृङ्गीऋषि यह किय बिन जाने । होत कहा अबके पछताने ॥ ताते तुम उपाव सो करो । जाते भवसागरको तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन विचार । सप्तम दिन मरिबो निर्धार ॥ यज्ञ दान करि सुन पुर जइये । तहां जाइके सुख बहु लहिये ॥ बहुरि कह्यो सुर पुर कछु नाहिं । पुण्य क्षीण तिहि ठौर गिराहिं ॥ ताते सुत कलत्र सब त्याग । गहों यक हरिपद अनुराग ॥ बहुरि कह्यो अब हो कहा त्याग । खोयो जन्म विषय सुख लाग ॥ सूर न हरि पदसों चित लायो । इत उत देखत जन्म गँवायो ॥ १६९ ॥

वैराग्य उपदेश परीक्षित मन प्रति । धनाश्री ॥ इत उत देखत जन्म गयो । या माया झूठीके लालच दुहुँ दृग अंध भयो ॥ जन्म कष्टमें पाय दुखित भये अति दुख प्राण सह्यो ।

ये त्रिभुवनपति बिसरि गए तुहि सुमिरत क्यों न रह्यो। श्रीभागवत सुनो नहिं श्रवणनि बीचहि भटक मुयो। सूरदास कहि सब जग पूज्यो युगयुग भक्त जियो ॥ १७० ॥

राग सारंग ॥ जन्म सिरानो अटके अटके। राज काज सुत पितुकी डोरी बिन बिवेक फिर्यो भटके ॥ कठिन जु ग्रंथि परी मायाकी तोरि जात न झटके। ना हरि भजन न सन्त समागम रहे बीचही लटके ॥ ज्यों बहु कला काछ दिखरावै लोभ न छूटत नटके। सूरदास शोभा क्यों पावै पिय विहीन धन मटके ॥ १७१ ॥

जन्म सिरानो ऐसे ऐसे। कै घर घर भरमत यदुपति बिन कै सोवत कै वैसे ॥ कै कहुँ खान पान रसनादिक कै कहुँ बाद अनैसे। कै कहुँ रंक कहूँ ईश्वरता नट बाजीगर जैसे ॥ चेत्यो नहीं गयी टरि अवसर मीन विना जल जैसे। यह गति भई सूरकी ऐसी श्याम मिलैं धौं कैसे ॥ १७२ ॥

राग देवगंधार ॥ विरथा जन्म लियो संसार। करी न कबहूं भक्ति हरिकी मारि जननी भारि ॥ यज्ञ जपतप नाहिं कीनो अल्पमति विस्तारि। प्रगट ब्रह्म दुरयो नहीं तू देखि नैन पसारि ॥ प्रबल अविद्या ठग्यो सब जग जन्म जूवा हारि ॥ सूर हरिको सुयश गावहु जाहि मिटि भव भारि ॥ १७३ ॥

राग सोरठ ॥ काया हरिके काम न आई। भाव भक्ति जहँ हरियश सुनियत तहां जात अलसाई। लोभातुर ह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ चरण कमल सुन्दर जहँ हरिकौ क्योंहू न जात नवाई ॥ जब लगि श्याम अंग नाहिं परसत अंधहि ज्यों भरमाई। सूरदास भगवंत भजन तजि विषय परम विष खाई ॥ १७४ ॥

राग धनाश्री ॥ सबै दिन गए विषयके हेत। तीनोंपन ऐसे ही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ आंखिनि अंध श्रवण नाहिं सुनियत थाके चरण समेत। गंगाजल तजि पियत कूपजल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ राम नाम बिन क्यों छूटोगे चन्द ग्रहे ज्यौं केत। सूरदास कछु खर्च न लागत रामनाम मुख लेत ॥ १७५ ॥

राग सारंग ॥ जो तू राम नाम चित धरतो। अबको जन्म आगलौ तेरो दोऊ जन्म सुधरतो ॥ यमको त्रास सबै मिटिजातो भक्त नाम तेरो परतो। तंदुल घृत सँवारि श्यामको सन्त परोसो करतो ॥ हो तो नफा साधुकी संगति मूल गांठ नाहिं टरतो। सूरदास बैकुण्ठ पंथमें कोउ न फेंट पकरतौ ॥ १७६ ॥

राग मलार ॥ दोमें एकौ तो न भई। ना हरि भजे न गृह सुख पावे वृथा विहाइ गई ॥ ठानी हुती और कछु मनमें औरे आनि ठई। अविगत गति कछु समुझि परत नाहिं जो कछु करत दई ॥ सुत सनेह तिय सकल कुटुंब मिलि निशि दिन होत खई। पदनख चन्द चकोर विमुख मन खात अंगार मई ॥ विषय विकार दवानल उपजी मोह बयार बई। भ्रमत भ्रमत बहुते दुख पायो अजहुँ न टेव गई ॥ कहा होत अबके पछताने होनी शिर बितई। सूरदास सेये न कृपानिधि जो सुख सकल मई ॥ १७७ ॥

राग सारंग ॥ यह सब मेरियै कुमति । अपने ही अभिमान दोष दुख पावत हों मैं अति ॥ जैसे केहरि उझक कूपजल देखे आप परत । कूप परचो पुनि मर्म न जान्यो भई आय सुइ गत ॥ ज्यों गज फटिक शिला में देखत दशनन जाइ अरत । जो तू सूर सुखहि चाहत है तौ क्यों विषय परत ॥ १७८ ॥

राग केदारा ॥ झूठहि लगि जन्म गँवायो । भूल्यो कहां स्वप्नके सुखको हरिसों चित न लगायो । कबहुंक बैठ्यो रहसि रहसिके ढोटा गोद खिलायो । कबहुँक फूल सभामें बैठ्यो मूँछनि ताव दिवायो ॥ टेढी चाल पाग शिर टेढी टेढे टेढे धायो । सूरदास प्रभु क्यों नहिं चेतन जब लगि काल न आयो ॥ १७९ ॥

राग केदारा ॥ जगमें जीवतहीको नातो । मन बिछुरे तनु छार होइगो कोउ न बात पुछातो ॥ मैं मेरी कबहूं नहिं कीजे कीजे पंच सुहातो । विषय असक्त रहत निशि बासर सुख सीरो दुख तातो ॥ साँच झूठ करि माया जोरी आपु न रूखो खातो । सूरदास कछु थिर नहिं रहई जो आयो सो जातो ॥ १८० ॥

राग धनाश्री ॥ कहा लाइ तैं हरिसों तोरी । हरिसों तोरि कौनसों जोरी । शिरपर धरि न चलेगो कोऊ अनेक जतन करि माया जोरी । राज पाट सिंहासन बैठे नील पदम हूं सों थोरी ॥ मैं मेरी करि जन्म गँवावत जब लगि नाहिं परत यम डोरी । धन जोबन अभिमान अल्प जल कहै कूर आपुनी बोरी ॥ हस्ती देखि बहुत मन गावत ता मूरखकी मति हैं थोरी । सूरदास भगवंत भजन बिनु चले खेलि फागुनकी होरी ॥ १८१ ॥

बिचारत ही लागे दिन जान । सजल देह कागज ते कोमल किहि विधि राखे प्रान ॥ योग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा संत संग नहिं ज्ञान । जिह्वास्वाद इंद्रियन कारन आयु घटत दिन मान ॥ और उपाय नहीं रे बौरे सुनि तू यह दे कान । सूरदास अब होत बिगूचन भजिले शारंग पान ॥ १८२ ॥

अब मैं जानी देह बुढानी । शीश पाउँ धर कह्यो न मानत तनकी दशा सिरानी ॥ आन कहत आनै कहि आवत नाक नैन बहै पानी । मिट गइ चमक दमक अंग अंगकी दृष्टि रु मति जु हिरानी ॥ नारी गारी विन नहिं बोले पूत करै कलकानी । घरमें आदर कादर कोसो खीझत रैन बिहानी ॥ नाहिं रही कछु सुधि तन मनकी भई है बात पुरानी । सूरदास अब होत बिगूचन भजिले शारंगपानी ॥ १८३ ॥

चित्त बुद्धिको संवाद । राग देवगंधार ॥ चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग । जहँ भ्रम निशा होत नहिं कबहूं वह सायर सुख जोग ॥ जहां सनकसे मीन हंस शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश । प्रफुलित कमल निमिष नहिं शशि डर गुंजत निगम सुवास ॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत अमृत रस पीजै । सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम इहां कहा रहि कीजै ॥ लछमी सहित होत नित क्रीड़ा शोभित सूरजदास । अब न सुहात विषय रस छीलर वा समुद्रकी आस ॥ १८४ ॥

राग देवगंधार ॥ चलि सखि तिहि सरोवर जाहिं । जिहि सरोवर कमल कमला रवि बिना बिकसाहिं ॥ हंस उज्वल पंख निर्मल अंक मलि मलि न्हाहिं । मुक्ति मुक्ता अंबुके फल तिन्हें चुनिचुनि खाहिं ॥ अतिहिमगनमहा मधुर रस रसन मध्य समाहिं । पद्म बास सुगंध शीतल लेत पाप नशाहिं ॥ सदा प्रफुलित रहैं जल बिनु निमिष नहिं कुम्हलाहिं । देखि नीर जो छिलछिलो अति समुझि कछु मन माहिं ॥ सघन गुंजत बैठि उनपर भौंर हैं बिरमाहिं । सूर क्यों नहिं चलो उड़ि तहां बहुरि उड़ि बोनाहिं ॥ १८५ ॥

राग रामकली ॥ भृङ्गी री भजि चरण कमल पद जहँ नहिं निशिको त्रास । जहां विधि भानु समान प्रभानख सो बारिज सुखरास ॥ जिहिं किंजल्क भक्ति नव लक्षण याम ज्ञान रस एक । निगम सनक शुक नारद शारद मुनिजन भृंग अनेक ॥ शिव विरंचि खंजग मनरंजन छिन छिन करन प्रवेशं । अखिल कोश तहां वसत सुकृत जन प्रगट श्याम दिनेश ॥ सुनु मधुकरी भरम तजि निर्भय राजिव रविकी आश ॥ सूरज प्रेम सिंधुमें प्रफुलित तहां चलि करे निवास ॥ १८६ ॥

मन बुद्धिको संवाद । राग देवगंधार ॥ सुवा चलि ता बनको रस पीजै । जा बन राम नाम अमृत रस श्रवण पात्र भरि लीजै ॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको घरनी घरको तेरो । काम कराल श्वानको भोजन तू कहै मेरो मेरो ॥ बड़ी वाराणसि मुक्ति क्षेत्र है चलि तोको दिखराऊं । सूरदास साधुनकी संगति बड़ो भाग्य जो पाऊं ॥ १८७ ॥

अथ मन प्रबोध ॥ रे मन सुमिरि हरि हरि हरि । शतयज्ञ नाहीं नाम सम परतीति करि करि करि ॥ हरि नाम हिरणाकुश बिसारचो उठ्यो बरि बरि बरि । प्रहलाद हित जिन असुर मारचो ताहि डरि डरि डरि ॥ गज गृध्र गणिका व्याधके अघ गये गरि गरि गरि । चरण अंबुज बुद्धि भाजन लेहु भरि भरि भरि ॥ द्रौपदीकी लाज कारण दावपरि परि परि । पंडुसुतके विघ्नजेते गए टरि टरि टरि ॥ कर्ण दुर्योधन दुशासन शकुनि अरि अरि अरि । सुतहित अजामिल नाम लीनो गयो तरि तरि तरि ॥ चारि फलके दानि हैं प्रभु रहे फरि फरि फरि । सूर श्रीगोपालको गुण हृदय धरि धरि धरि ॥ १८८ ॥

राग केदारा ॥ करि मन नंदनंदन ध्यान । सेइ चरण सरोज शीतल तजि विषय रस पान ॥ जानु जंघ त्रिभंग सुन्दर कलित कंचन दंड । काछनी कटि पीट पट द्युति कमल केसर खंड ॥ जनुमराल प्रवाल छीना किंकिणी कल राव । नाभि हृद रोमावली अलि चारु सहज सुभाव ॥ कण्ठ मुक्तामाल मलयज उर बनी वनमाल । सुरसरी शशि तीर मानो लता श्याम तमाल ॥ बाहु पाणि सरोज पल्लव धरे मृदु मुख वेणु । अति बिराजति वदन विधुपर सुरभि मंडित रेणु ॥ अधर दशन कपोलनासा परम सुंदर नैन । चलत कुंडल गंड मंडल मनो निरतन मैन ॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड । चलत कुण्डल गंड मंडल मनोशर संधाने देखि घनको दंड ॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरि भरि लेहिं । प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन न देहिं ॥ १८९ ॥

भजि मन नंदनंदन चरण । परम पंकज अति मनोहर सकल सुखके करण ॥ सनक शंकर ध्यान ध्यावत निगम अवरन वरन । शेष शारद ऋषि सुनारद सन्त चिंतत चरण ॥

पदपराग प्रताप दुर्लभ रमालो हित करण। परशि गंगा भई पावन तिहूं पुर घर घरन ॥ चित्त चिंतन करत जग अघ हरत तारन तरन। गये तरि ले नाम केते पतित हरि पुर घरन ॥ जासु पदरज परशि गौतम नारि गति उद्धरण। तासु महिमा प्रगट केवट धोइ पग शिर धरण ॥ सोइ पद मकरंद पावन अरु नहीं सर वरण। सूर भजि चरणारविंदनि मिटै जनमन मरण ॥ १९० ॥

रे मन समुझि सोच विचारि। भक्ति बिनु भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि ॥ ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि। दांव अबके परचो पूरो कुमतिपिछलीहारि ॥ राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पांचोमारि ॥ डारिदे तू तीन काने चतुर चौक निहारि ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह्यो पग्यो नागनि नारि। सूर श्रीगोविन्द भजन बिनु चले दोउ कर झारि ॥ १९१ ॥

राग सारंग ॥ होमन रामनामको गाहक ॥ चौरासीलख जिया योनिमें भटकत फिरत अनाहक ॥ भक्तन हाट बैठि तू स्थिर ह्वै हरि नग निर्मललेहि। काम क्रोध मद लोभ मोह तू सकल दलाली देहि ॥ करि हियाव सो सो जलादि यह हरि के पुर लेजाहिं। घाट बाट कहुँ अटक होइ नहिंसब कोउ देहि निबाहिं ॥ और बनजमें नाहीं लाहाहोत मूलमें हानि। सूर स्वामिको सौदो सांचो कहौ हमारो मानि ॥ १९२ ॥

राग केदारा ॥ रे मन रामसों करि हेतु। हरिभजन की वारि करिले उबरे तेरो खेत ॥ मन सुआ तनु पिंजरा तिहिमाहिं राख्यो चेत। काल फिरत बिलारतन धरि अब घरी तुम लेत ॥ सकल बिषय बिकार तजि तू तरै सायर सेत। सूर भजि गोपाल गुणको गुरु बताए देत ॥ १९३ ॥

राग कान्हरा ॥ मन वच क्रम मन गोविंद सुधि करि। शुचि रुचि सहज समाधि साजि शठ दीनबंधु करुणामय उर धरि ॥ मिथ्यावाद विवाद छांडिदे काम क्रोध मद लोभै परिहरि। चरण प्रताप आनि उरअंतर और सकल सुखया सुखतर हरि ॥ वेदन कह्यो समृतिहु भाष्यो पावन पतित नाम निज नरहरि। जाको सुयश सुनत अरु गावत पापवृन्द जैहैं भजिभरहरि ॥ परमउदार श्याम घन सुन्दर सुखदायक संतन हितकर हरि। दीन दयाल गोपाल गोपपति गावत गुण आवत ढिग ढर हरि ॥ अति भयभीत निरखि भवसागर घन ज्यों घेरि रह्यो घट धर हरि। जब यमजाल पसार परैगो हरिबिनु कौन करैगो धरहरि ॥ अजहूं चेत मूढ चहुँदिशिते कालअग्नि उपजत झुकि झरहरि। सूर काल बलिव्याल ग्रसत है श्रीपति शरन परत क्यों न फरहरि ॥ १९४ ॥

तिहारो कृष्ण कहत कहा जात। बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वैहै ज्यों तरुवरके पात। शीत पित्त कफ कंठ विरोधे रसना टूटे बात ॥ प्राण लए जम जाइ मूढमति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत नरकी केतक बात। इह जग प्रीति सुवा सेमर ज्यों चाखत ही उड़जात ॥ जबलगि यमको फंद परचो नाहिं चरणन चित्त लगात ॥ कहत सूर वृथा यह देही इतो कहा इतरात ॥ १९५ ॥

दिन दश लेहु गोविंद गाइ। छिन न चेतत चरण अंबुज वाद जीवन जाइ ॥ दूरि जवलों जरा रोग रू चलत इन्द्री भाइ। आपुनो कल्याण करिले मानुषीतनु पाइ ॥ रूप यौवन सकल मिथ्या देखि जिन गरवाइ। ऐसे ही अभिमान आलसकाल ग्रसिहै आइ ॥ कूपखनि कत जारेरे नर जरत भवन बुझाइ। सूर हरिको भजन करिले जन्म मरण नशाइ ॥ १९६ ॥

राग धनाश्री ॥ मन तोसों केति कही समुझाई। नंदनँदनके चरण कमलभजि तजि पखंड चतुराई ॥ सुख संपति दारा सुत हय गय झूठ सबै समुदाई। क्षणभंगुर ए सबै श्याम बिनु अंत नाहिं सँग जाई। जन्मत मरत बहुत युग बीते अजहूँ लाज न आई। सूरदास भगवंत भजत बिनु जैहै जन्म गँवाई ॥ १९७ ॥

राग मलार ॥ अब मन मान धौं राम दुहाई। मन वच क्रम हरिनाम हृदय धरि जो गुरु वेद बताई। महाकष्ट दश मास गर्भबसि अधोमुख शीशरहाई। इतनी कठिन सही तू निकस्यो अजहूं न तू समुझाई ॥ मिटि गए राग द्वेष सब तिहिके जिन हरि प्रीति लगाई। सूरदास प्रभु नामकी महिमा पतित परमगति पाई ॥१९८॥

राग आसावरी ॥ बौरे मन रहन अटल कर जाना। धन दारा सुत बंधु कुटुंब कुल निरखि निरखि बौराना ॥ जीवनजन्म अल्प सपनोसो समुझि देखि मन माहीं। बादर छांह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाहीं ॥ जब लगि डोलत बोलत चितवत धन दाराहैं तेरे। निकसत हंस प्रेत कहि भजिहैं कोउ न आवै नेरे ॥ मूरख मुग्ध अज्ञान मूढमति नाहीं कोऊ तेरो। जो कोऊ तेरो हितकारी सो कहे कढू सबेरो ॥ घरी एक सज्जन कुटुंब मिलि बैठे रुदन कराहीं। जैसे काग कागके मूये कां कां कहि उड़ि जाहीं। कृमि पावक तेरो तन भखिहैं समुझि देखि मनमाहीं। दीनदयालु सूर हरि भजिले यह औसर फिरि नाहीं ॥१९९॥

राग गौरी ॥ ते दिन बिसरि गये इहां आये। अति उन्मत्त मोह मद छाक्यो विरत केश बगराए। जिन दिवसनिते जननि जठरमें रहत बहुत दुख पाए। अति संकटमें भरत भटालौं मलमें मूड गडाए ॥ बुधि विवेक बल हीन छीन तन सबही हाथ पराए। तिहि न करतचित अधम अजहुँलौं जीवत जाके ज्याए ॥ कहिधौं साथ कौन है तेरे खान पान पहुँचाए। सूर सुमृग ज्यों बाणसहत नित विषय व्याधके गाए ॥ २०० ॥

राग धनाश्री ॥ रे मन निपट निलज्ज अनीति। जियतकी कहि को चलावै मरत विषया प्रीति ॥ श्वान कुब्जक पंगु कानो श्रवण पुच्छ विहीन। भगन भाजन कंठकृमि शिरकामिनीआधीन ॥ निकट आयुध धरे बंधक करत तीक्षण धार। अजानायक मग्नक्रीडत चढत बारंबार ॥ देह छिन छिन होत छीनी दृष्टि देखत लोग। सूरस्वामीसों विमुख ए सतीकेसे भोग ॥ २०१ ॥

राग गौरी ॥ बौरे मन समुझि समुझि कछु चेत। इतनो जन्म अकारथ खोयो श्याम चिकुर भए श्वेत ॥ तबलगि सेवा कर निश्चय करि जबलगि हरवा खेत। सूरजदास भरम जिन भूलो करि विधनासे हेत ॥ २०२ ॥

राग धनाश्री ॥ रे शठ बिन गोविंद सुख नाहीं । तेरो दुःख दूर करिबेको ऋद्धि सिद्धि फिरि जाहीं ॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि जन उनकी गति अवगाहीं । जगत पिता जगदीश शरण बिन सुख तीनों पुर नाहीं ॥ और सकल मैं देखे झूठे बादरकी सी छाहीं । सूरदास भगवंत भजन बिन दुख कबहूं नहिं जाहीं ॥ २०३ ॥

राग कान्हरा ॥ मन तोसों कोटिक बार कही । समुझ न चरण गहत गोविंदके उर अघ शूल सही ॥ सुमिरन ध्यान कथा हरि जूकी यह एकौ न भई । लोभी लंपट विषय-नसों हित यह तेरी निबही ॥ छांड़ि कनकमणि रत्न अमोलक कांचकी किरच गही । ऐसो तू है चतुर विवेकी पय तजि पियत मही ॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि शशि देखे सुर सबहीं । सूरदास भगवंत भजन बिनु सुख तिहुँ लोक नहीं ॥ २०४ ॥

राग परज ॥ मना रे माधव सों कर प्रीति । काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांड़ि सबै विपरीत ॥ भौंरा भोगी वन भ्रमै, मोद न मानै ताप । सब कुसुमनि मिलि रस करै; कमल बँधावै आप ॥ सुनि परमित पिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि । घन आशा सब दुख सहै; अंत न याचै वारि ॥ देखो करनी कमलकी, कीनो जलसों हेत । प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहि समेत ॥ दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग । तनुतो तिहि ज्वाला जरयो, चित न भयो रस भंग ॥ मीन बियोग न सहिसकै, नीर न पूछै बात । देखि जु तू ताकी गतिहि, रति न घटै तन जात ॥ प्रीति परेवाकी गनो, चाहन चढत अकाश तहँ चढि तीय जु देखिये, परत छांड़ उरश्वास ॥ सुमर सनेह कुरंगकी, श्रवनन राच्यो राग । धरि न सकत पग पछमनो, सर सनमुख उर लाग ॥ देखि जरनि जड़ नारि की, जरत प्रेतके संग । चिता न चित फीको भयो, रची जु पियकै रंग ॥ लोक वेद बरजत सबै, नयनन देखत त्रास । चोर न जिय चोरी तजै, सरबस सहै बिनास ॥ सब रसको रस प्रेम है, विषयी खेलै सार । तन मन धन यौवन खिसै, तऊ न मानै हार ॥ तैं जु रत्न पायो भलो जान्यो साधु समाज । प्रेम कथा अनुदिन सुनी, तऊ न उपजी लाज ॥ सदा संघाती आपनों, जियको जीवन प्रान । सोतू बिसरयो सहजही, हरि ईश्वर भगवान ॥ वेद पुराण स्मृति सबै; सुर नर सेवत जाहि । महामूढ अज्ञान मति. क्यों न सँभारत ताहि ॥ खग मृग मीन पतंग लौं, मैं शोधे सब ठौर । जल थलजीव जिते तिते, कहौं कहां लगि और ॥ प्रभु पूरण पावन सखा, प्राणनहूँको नाथ । परम दयालु कृपालु प्रभु जीवन जाके हाथ ॥ गर्भ बास अति त्रासमें, जहां न एकौ अंग । सुनि शठ तेरो प्राणपति, तहांन छांड्यो संग ॥ दिना राति पोषत रहै, ज्यों तंबोलीपान । वा दुखते तोहिं काढकै, लै दीनो पयपान ॥ जिन जड़ते चेतन कियो, रचि गुण तत्त्व बिधान । चरण चिकुर कर नख दिए, नैन नासिका कान ॥ अशन वसन बहुविध दिये, औसर औसर आनि । मात पिता भय्या मिलै, नई रुचइ पहिचान ॥ सजन कुटुम्ब परिजन बढ़े, सुत दारा धन धाम । महामूढ़ विषयी भयो, चित आकर्ष्यो काम ॥ खान पान परिधान रस, यौवन गयो वितीत । ज्यों विट पारि परतीय वश, भोर भये भयभीत ॥ जैसे सुखही मन बढ्यो, तैसे बढ्यो अनंग । धूम बढ्यो लोचन खस्यो, सखा न सूझ्यो संग ॥ जम

जान्यौ सब जग सुन्यो, बाढ्यो अयश अपार। बीच न काहू तब कियो, जब दूतनि काढ्यो बार॥ कह जानों कहवां मुवो, ऐसे कुमति कुमीच। हरिसों हेतु बिसारिकै सुख चाहत है नीच॥ जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहौं सौ बार। एकहु अंक न हरि भजे, रे शठ सूर गँवार॥ २०५॥

राग कल्याण॥ धोखेही धोखे डहकायो। समुझि न परी विषय रस गीध्यो हरि हीरा घरमांह गँवायो॥ ज्यों कुरंग जल देखि अवनिको प्यास न गई चहूँ दिशि धायो। जन्म जन्म बहु कर्म किये हैं तिनमें आपुन आपु बँधायो॥ ज्यों शुक सेमर सेव आश लगि निशि वासर हठि चित्त लगायो। रीतो परचो जबै फल चाख्यो उड़ि गयो तूल तांवरो आयो॥ ज्यों कपि डोरी बांध बाजिगर कनकनको चौहटे नचायो। सूरदास भगवंत भजन बिनु काल ब्याल लै आप डसायो॥ २०६॥

राग धनाश्री॥ जन्म गँवायो ऊआबाई॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो बिलोकत छांई॥ धन जोबन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई। लालच लुब्ध श्वान जूंठनि ज्यों सोऊ हाथ न आई॥ रंच कांच सुख लागि मूढमति कंचन राशि गँवाई॥ सूरदास प्रभु छांडि सुधारस विषय परम विष खाई॥ २०७॥

भक्ति कब करिहों जन्म सिरानो। बालापनमें खेलत खोयो तरुणापै गरबानो॥ बहुत प्रपंच करै मायाको तऊ न पेट अघानो। जतन जतन करि माया जोरैं लै गये रंग न रानो॥ सुत बित वनिता मोह लगायो झूठे भरम भुलानो। लोभ मोहमें चेत्योनाहीं सुपने ज्यों डहकानो॥ वृद्ध भये कफ कण्ठ निरोध्यो शिर धुनि धुनि पछतानो। सूरदास भगवंत भजन बिनु यमके हाथ बिकानो॥ २०८॥

मन रामनाम सुमिरन बिनु बाद जनम खोयो। रंचक सुख कारणते अंतकाल बिगोयो॥ साधु संगति भक्ति बिना तन अकारथ जाई। ज्ञानी ज्यों हाथ झारि चलै झटकाई॥ सुत दारा देह गेह संपति सुखदाई। इनमें कछु नाहिं तेरी काल अवधि आई॥ काम क्रोध लोभ मोह मनमें तू जोयो। गोबिंद गुण चित बिसारि कौन नींद सोयो॥ सूर कहै शुचि विचारि भ्रम भूल्यो अन्धा॥ राम नाम ले तजि करि और सकल धंधा॥ २०९॥

राग कल्याण॥ भक्ति बिनु बैल बिराने ह्वै हो। पाँउ चारि शिर शृंग गुंग मुख तब कैसे गुण गैहो॥ चारि पहर दिन चरत फिरत वन तऊ न पेट अघैहो। टूटे कन्ध सुफूटी नाकनि कौलौं धौं भुसखैहो॥ लादत जोतत लकुट बाजि है तब कहँ मूंड़ दुरैहो॥ शीत घाम घन बिपति बहुत विधि भारतरे मरि जैहो॥ हरि सन्तनको कह्यो न मानत कियो आपुनो पैहो। सूरदास भगवंत भजन बिनु मिथ्या जन्म गँवैहो॥ २१०॥

राग सारंग॥ छांड़ि मन हरि बिमुखनको संग। जिनके संग कुबुद्धि उपजति है परत भजनमें भंग॥ कहा होत पयपान कराये विष नहिं तजत भुजंग। कागहि कहा कपूर चुगाये श्वान न्हवाये गंग॥ खरको कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग। गजको कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग॥ पाहन

पतित बाँस नहिं बेधत रीतो करत निखंग । सूरदास खल कारी कामरि चढत न दूजो रंग ॥ २११ ॥

राग सोरठ ॥ रे मन जन्म अकारथ खोइस ॥ हरिकी भक्ति कबहुँ नहिं कीनी उदर भरचो परिसोइस निशि दिन रहत फिरत मुँह बांधे अहंकार करि जन्म बिगोइस । गोड पसार परचो दोउ नीके अबके किये कहा होइस ॥ काल यमनिसों आनि बनेहै देखि देखि मुख रोइस । सूरश्याम बिनु कौन छुड़ावै चले जाहु भइ पोइस ॥२१२॥

तबते गोविंद क्यों न सँभारे । भूमि परेते सोवन लाग्यो महाकठिन दुख भारे ॥ अपने पिंड पोषिवे कारण कोटि सहस जिय मारे । इन पापनते क्योंहु न उबरौ दामनगीर तिहारे। आप लोभ लालचके कारण कहूँ न पाप तिहारे । सूरदास यमकंठ गहेते निकसत प्राण दुखारे ॥ २१३ ॥

राग धनाश्री ॥ रे मन मूरख जन्म गँवायो । करि अभिमान विषय रस गीध्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार सुवा सेंवर ज्यों सुन्दर देखि लुभायो । चाखन लग्यो रुई उड़ि गई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा होत अबके पछताये पहिले पाप कमायो । कहत सूर भगवंत भजन बिनु शिर धुनि धुनि पछतायो ॥ २१४ ॥

राग मारू ॥ औसर हारचो रे तैं हारचो । मानुषजन्म पाइ नर बौरे हरिको भजन बिसारचो ॥ रुधिरबुंदते साजि कियो तन सुंदर रूप संवारचो । जठर अग्नि अंतर ऊरध मुख जिन दश मास उबारचो ॥ जबते जन्म लियो जगभीतर तबते प्रभु प्रतिपारचो । अंध अचेत मूढ मतवारे सो प्रभु क्यों न सँभारचो । पहिरि पितांबर करि आडंबर यह तनु ठाट शृंगारचो । काम क्रोध मद लोभ त्रिया रति बहुविधि काज बिगारचो ॥ मरन बिसारि जिवन थिर जान्यो बहु उद्यम जिय धारचो । सुत दाराको मोह अजयविष हरि अमृतफल डारचो ॥ झूँठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारचो । कालअवधि पूरण भई जादिन बिनहूँ त्यागि सिधारचो ॥ प्रेत प्रेत तेरो नाम परचो जब जेवरि बांधि निकारचो । जा सुतके हितविमुख गोविंदते प्रथमहिं तिन मुख जारचो ॥ भाईबंधु कुटुंब सहोदर सब मिलि यहै बिचारचो । जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनुका तोरि उचारचो ॥ सतगुरुको उपदेश हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवारचो । हरि भज बिलंब छांड़ि सूरज प्रभु ऊँचे टेरि पुकारचो ॥ २१५ ॥

राग बिलावल ॥ याविधि राजा करि बिचार । राज साज सबहीको डार । जीरण पटकु दीन तनु धारि । चल्यो सुरसरी तीर उधारि ॥ पुत्र कलत्र देखि सब रोवे । राजा तिनके ओर न जोवे ॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब नृपति बियोग ॥ नृपति सुरसरीके तट आये । कियो स्नान मृत्तिका लगाये ॥ करि संकल्प अन्नजल त्याग्यो । केवल हरिपदसों अनुराग्यो॥ अत्रि वसिष्ठादिक तहँ आये ।नारदादि मुनि बहुरि सिधाये । कुश आसन दै तिनहिं बिठायो । पुनि कह्यो तिनके पद शिर नायो ॥ धन्य भाग तुम दर्शन पायो । मम उधार कारण तुम आयो ॥ तुम देखत हरि सुमरन होई । और प्रसंग चले नहिं कोई ॥ आज्ञा होइ करौं अब सोई । जाते मोरि शुद्धगति होई ॥

कोउ कहै तीरथ सेवन करो। कोउ कहै दान यज्ञ विस्तरो ॥ काहू कहै मंत्र जप करना। काहू कछु काहू कछु बरना ॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं। इति इहिको मोहिं सूझत नाहीं ॥ इहि अंतर शुकदेव तहां आये ॥ राजा देखि तुरत उठि धाये ॥ करि दंडवत कुशासन दीनो। पुनि सन्मान ऋषिन सब कीनो ॥ शुकको रूप कह्यो नहिं जाई। शुक हिय रह्यो कृष्णरस छाई ॥ शुककी महिमा शुकही जाने। सूरदास कहि कहा बखानै ॥ २१६ ॥

हरिके जनकी अति ठकुराई। महाराज ऋषिराज राजहूं देखत रहे रजाई ॥ निर्णय देश राज्य करि ताको लोगन मन उत्साह। काम क्रोध मद लोभ मोह ए भये चोरते साह ॥ दृढ बिश्वास कियो सिंहासन तापर बैठे भूप। हरियश बिमल छत्रशिरऊपर राजत प्रेम अनूप ॥ हरिपदपंकज पियो प्रेमरस ताहीके रँगरातो। मंत्री ज्ञान न औसर पावै कहत बात सकुचातो ॥ अर्थ काम दोऊ रहैं द्वारे धर्ममोक्ष शिर नावै। बैठि विवेक विचित्र पौरियासमय न कबहूं पावै ॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढीं करजोरे डरलीने। छरीदार बैराग बिनोदी हरकि बाहरे कीने ॥ माया काल कछू नहिं व्यापै यह रसरीति जु जानी। सूरदास यह सकल समग्री गुरुप्रताप पहिंचानी ॥ २१७ ॥

शुक नृपओर कृपा करि देख्यो। धन्य भाग्य तिन अपनो लेख्यो ॥ बिनती करी चरण शिर नाई। सप्त दिवस सब मेरी आई। तऊ कुटुंबको मोह न जात। पुनि धनलोभ आइ लपटात ॥ जानि बूझि मैं होत अजान। उपजत नाहीं मनसों ज्ञान ॥ अरु तनु छूटत बहु दुख होई। ताते सोचरहे नाहिं कोई ॥ बिना त्वचा सुमिरन क्यों होई। आज्ञा होइ करों अब सोई। शुक कह्यो तन धन कुटुंब बिहाई। हरिपदभजो न और उपाई ॥ आयु भग्नघटजलसी छीजै। अहनिश हरि हरि सुमिरन कीजै ॥ नृप खट्वांग पूर्व इक भयो। सुतौ द्वैघरीमें तरिगयो ॥ तेरी सप्त दिवसहै आई। कहौं भागवत सुन चित लाई ॥ सुनि हरि कथा धरौ हरि ध्यान। जग सब जानो स्वप्न समान ॥ या विधि जो हरिपद उर धरिहौ ॥ निस्संदेह सूर तब तरिहौ ॥ २१८ ॥

हरि यश कथा सुनौ चित लाई। जो खट्वांग तर्‌यो गुण गाई ॥ नृप खट्वांग भयो भुवमाहीं। ताके सम द्वितिया जग नाहीं। इक दिन इन्द्र तासु घर आयो। राजा उठिकरि शीश नवायो ॥ धन मम गृह धन भाग्य हमारो। जो तुम चरण कृपा करि धारो ॥ अब मोको जो आज्ञा होई। आयसु मान करौं सब सोई ॥ इन्द्र कह्यो मम करो सहाई। असुरनसों भइ मोहिं लराई ॥ इन्द्रपुरी खट्वांग सिधाये। नाम सुनत सो सकल पराये ॥ सुरपतिसों नृप आज्ञा मांगी। उन कह्यो लेहु कछू वर मांगी ॥ नृपति कह्यो कहो मेरी आय। वर लेहों पुनि शीश चढ़ाय ॥ दोइ मुहूरति आयु बताई। नृप बोल्यो तब शीश नवाई ॥ तुरत देहु मोहि घर पहुँचाय। तरों जाय तहँ हरिगुण गाय ॥ एक मुहूरतमें फिर आयो एक मुहूरत हरिगुण गायो ॥ हरिगुण गाय परमपद लहयो। सूर नृपति सुनि धीरज गहयो ॥ २१९ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृत प्रथमः स्कंधः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत—

श्री सूरसागर

द्वितीय स्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरिसुमिरन करौ । हरिचरणारविंद उर धरौ ॥ शुकदेव हरिचरणन चित लाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ तुम कह्यो सप्तदिवस मम आय । कहों हरिकथा सुन चित लाय ॥ चिंता छांडि भजो यदुराई।सूर तरो हरिके गुण गाई॥१॥

राग सारंग ॥ जो सुख होत गोपालहि गाये । सो न होत जप तपके कीने कोटिक तीरथ न्हाये ॥ दिये लेत नहिं चारि पदारथ चरण कमल चित लाये । तीन लोक तृण सम करि लेखत नंदनँदन उर आये ॥ बंशीवट वृन्दावन यमुना तजि वैकुंठको जाये । सूरदास हरिको सुमिरनकरि बहुरि न भव चलिआये ॥ २ ॥

राग केदारा ॥ सोइ रसना जो हरिगुण गावै । नैननकी छबि यहै चतुरता ज्यों मकरन्द मुकुन्दहि ध्यावै ॥ निर्मल चिततौ सोई सांचो कृष्ण विना जिय और न भावै । श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई सुनि रसकथा सुधारस प्यावै ॥ करतेई जो श्यामहिं सेवै चरणनि चलि वृन्दावन जावै । सूरदास जैये बलि ताके जो हरिजूसे प्रीति बढावै ॥ ३ ॥

राग सारंग ॥ जबते रसना राम कह्यो । मानो धर्म साधि सब बैठ्यौ पढिबेमें धौं कहा रह्यो ॥ प्रगट प्रताप ज्ञान गुरु गमते दधि मथि घृतलै तज्यो मह्यो । सारको सार सकल सुखको सुख हनूमान शिव जानि कह्यो ॥ नाम प्रतीत भई जा जनकी लै आनन्द दुख दूरिदह्यो । सूरदास धन धन वे प्राणी जो हरिको ब्रत लै निबह्यो ॥ ४ ॥

अनन्यभक्तिमहिमा राग सारंग ॥ गोविंदसो पति पाइ कहा मन अनत लगावै । गोपाल भजन बिनु सुख नहीं जो चहुँ दिश धावै ॥ पतिको व्रत जो धरै त्रिया सो शोभा पावै । आन पुरुषको नाम लेत तिय पतिहि लजावै ॥ गणिकाते उपजै सुपूत कौनको कहावै ॥ बसत सुरसरीतीर मंदमति कूप खनावै ॥ जैसे श्वान कुलालके पाछे उठि धावै । आन देव हरि तजि भजै सो जन्म गँवावै ॥ फलकी आशा चित्त धारि जो वृक्ष बढावै । महामूढ सो मूल तजि शाखा जल नावै ॥ सहज भजै नंदलालको सो सब शुचि पावै । सूरदास हरिनाम लिये दुख निकट न आवै ॥ ५ ॥

राग कान्हरा ॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहिं ताहिं और नहिं भावै हो । ज्यों गूँगो गुर खाइ अधिक रस सुख सवाद न बतावै हो ॥ जैसे सरिता मिलै सिंधुको बहुरि प्रवाह न आवै हो । ऐसे सूर कमल लोचनते चित नहिं अनत डुलावै हो ॥६॥

राग बिहाग ॥ जो मन कबहुँक हरिको जांचै। आन प्रसंग उपासना छांडै मन वच क्रम अपने उर सांचै ॥ निशिदिन श्याम सुमिरि यश गावै कल्पन मेटि प्रेमरस पावै। यह व्रत धरै लोकमें बिचरै सम करि गनै महामणि काचै ॥ शीत उष्ण सुख दुख नहिं मानै हानि भये कछु शोच न राचै। जाइ समाइ सूर वा निधिमें बहुरि न उलटि जगतमें नाचै ॥७॥

राग सारंग ॥ कह्यो शुक श्रीभागवत विचारि। हरिकी भक्ति विरद है युगयुग आन धर्म दिन चारि ॥ चिंता तजौ परीक्षित राजा सुन सुख साखि हमारि। कमलनयनकी लीला गावत कटक अनेक बिकारि ॥ सतयुग सत त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि। सूर भजन कलि केवल कीजै लज्जा कानि निवारि ॥ ८ ॥

राग बिलावल ॥ गोविन्दभजन करो इहिबारा। शंकर पार्वती उपदेशत तारक मंत्र लिख्यो श्रुतिद्वारा ॥ अश्वमेध यज्ञ जो कीजै गया बनारस अरु केदारा। रामनाम सरितऊ न पूजै जो तनु गारो जाइ विवारा ॥ सहसबार जो बेनी परसौ चन्द्रायण सौ बारा। सूरदास भगवंत भजन विनु यमके दूत खरे हैं द्वारा ॥ ९ ॥

राग केदारा ॥ हैहरि नामको आधार। और इहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार ॥ नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो बहुत विचार। सकल श्रुति दधि मथित काढ्यो इतोई घृतसार ॥ दशो दिशते कर्म रोक्यो मीनको ज्यों जार। सूर हरिको सुयश गावत जाहि मिट भव भार ॥ १० ॥

अथ नाममहिमा ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई। हरि हरि सुमिरत सब सुख होई ॥ हरिसमान द्वितीय नहिं कोई। हरिचरणनि राखो चितगोई ॥ श्रुति स्मृति सब देखो जोई। हरिसुमिरत होई सो होई ॥ हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई। बिनहरि सुमिरन मुक्ति न होई ॥ कोटि उपाय करै जो कोई। हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई ॥ शत्रु मित्र हरि गिनत न दोई। जो सुमिरै ताकी गति होई ॥ हरिहरिहरि सुमिरो सब कोई। हरिके गुण गावत सब कोई ॥ राव रंक हरि गिनत न दोई। जो गावै ताकी गति होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरयो जिन जिहां। हरि तिहिं दरशन दीनो तहां। हरि बिनु सुख नहिं इहां न वहां। हरि हरि हरि सुमिरो जहँ तहां ॥ हरिहरिहरि सुमिरो दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात ॥ सौ बातनिकी एकै बात। सूर सुमिरि हरि हरि दिन रात ॥ ११ ॥

जन्म जन्म जब जब जिहिं जिहिं युग जहां जहां जन जाइ। तहां तहां हरिचरण-कमलरति जो दृग होइ रहाइ ॥ श्रवण सुयश सारंग नादविधि चातकविधि मुख नाम। नैन चकोर संत संतति शशि करि अर्चन अभिराम ॥ सुमति स्वरूप सचै सरघा लो उर अम्बुज अनुराग। नितप्रति अलि जिमि गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग ॥ औरौ सकल सुकृत श्रीपति हित तन मन रहत सुप्रीति। नाक निरै सुख दुख न सूर प्रभु जिहिके भजन प्रतीति ॥ १२ ॥

अथ हरिविमुख निंदा। राग सारंग ॥ अचंभो इन लोगनिको आवै। छांडै श्याम अमीरस फलको माया बिष फल भावै ॥ निंदत मूढ मलय चन्दनको राख अंग लपटावै ॥

मान सरोवर छांड़ि हंसतट काग सरोवर न्हावै ॥ पगतर जरत न जानै मूरख घर तजि घूर बुझावै । चौरासी लख योनि स्वांग धरि भ्रमि भ्रमि यमहिं हँसावै ॥ मृग तृष्णा आचार युक्ति जल तासँग मन ललचावै । कहत जु सूरदास संतनि मिलि हरियश काहे न गावै ॥ १३ ॥

भजन बिनु कूकर सूकर जैसो । जैसे घर बिलावके मूसा रहत विषय बश तैसो ॥ बकी बकुला अरु गीध गीधनी आइ जन्म लियो वैसो । उनहूँके यह सुत दारा हैं इन्हैं भेद कहो कैसो ॥ जीव मारिकै उदर भरत हैं तिनके लेखे ऐसो । सूरदास भगवंत भजन बिनु जियब ऊंट खर जैसो ॥ १४ ॥

भजन बिनु जीवत जैसे प्रेत । मलिन मंदमति डोलत घर घर उदर भरनके हेत ॥ मुख कटु वचन नित्य प्रति निन्दा सगुन सुयश सुख लेत । कबहूं पाप करै पावत धन गांठि धूत तहां देत ॥ ब्राह्मण गुरु सन्तजन सज्जन जात न कबहुं निकेत । सेवा नाहिं भगवंत चरणकी भवन नीलको खेत ॥ कथा नहीं गुण गीत सुयश हरि साधत देव अचेत । ताकी कहा सुनि सूरज बूड़त कुटुंब समेत ॥ १५ ॥

जिहि तनु हरि भजबो न कियो । सो तनु शूकर श्वान मीन ज्यों इहि सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहूंको ताहि न चित्त दियो । प्रगट जानि यदुनाथ बिसारै आशामद जु पियो ॥ चारि पदारथको प्रभु दाता तिनैं न मिलौ हियो । सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियो ॥ १६ ॥

अथ सत्संगमहिमा । राग केदारा ॥ जादिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटि सनान करे फल जैसो दरशन पावत ॥ नेह नयो दिन दिन प्रति उनको चरण कमल चित लावत । मन वच कर्म और नहिं जानत सुमिरत औ सुमिरावत ॥ मिथ्या बाद उपाधि रहित है बिमल बिमल यश गावत । बंधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि बहावत ॥ संगति रहै साधुकी अनुदिन भव दुख दूरि नशावत । सूरदास या जन्म मरण ते तुरत परम गति पावत ॥ १७ ॥

अथ भक्ति साधन । राग धनाश्री ॥ हरि रसतो कबहुं जाइ लहिये । गये सोच आये नाहिं आँनद ऐसो मारग गहिये ॥ कोमल वचन दीनता सबसों सदा अनंदित रहिये । वाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दंड जिय सहिये ॥ ऐसी जो आवै या मनमें यह सुख कहँलौं कहिये । अष्ट सिद्धि नव निद्धि सूरप्रभु पहुँचे जो कछु चहिये ॥ १८ ॥

राग धनाश्री ॥ जौलौं मन कामना न छूटे । तौ कहा योग यज्ञ व्रत कीने बिनुकन तुसको कूटे ॥ कहा सनान किये तीरथके अंग भस्म जट जूटे । कहा पुराणन पढ जु अठारह ऊर्ध्व धूमके घूटे ॥ जग सोनाकी सकल बड़ाई इहिते कछू न खूटे । करनी और कहै कछु औरै मन दशहूं दिश लूटे ॥ काम क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतनो सुनि छूटे । सूरदास तबहीं तम नाशै ज्ञान अग्नि झर फूटे ॥ १९ ॥

राग बिलावल ॥ भक्ति पंथको जो अनुसरै । सुत कलत्र सो हित परिहरै ॥ अशन बसनकी चित्त न करै । विश्वंभर सम जगको भरै ॥ पंगु जाके द्वारे पर होई । ताको

पोषत अहनिशि सोई ॥ जो प्रभुके शरणागत आवै । ताको प्रभु क्यों करि बिसरावै ॥ मात उदरमें रस पहुँचावत । बहुरि रुधिरते क्षीर बनावत ॥ अशन काज प्रभु बनफल करै । तृषाहेतु जल झरना झरै ॥ पात्र स्थान हाथ हरि दीने । वसन काज बल्कल प्रभु कीने ॥ शय्या पृथ्वी करि विस्तार । गृह गिरिकंदर करे अपार ॥ ताते चिंता सकल त्याग । सूर श्यामपद करि अनुराग ॥ २० ॥

भक्ति पंथको जो अनुसरै । सो अष्टांग योगको करै ॥ यम नियमासन प्राणायाम । करि अभ्यास होइ निष्काम ॥ प्रत्याहार धारना ध्यान । करै जु छांड़ि बासना आन ॥ क्रम क्रम करिकै करै समाधि । सूर श्याम भजि मिटै उपाधि ॥ २१ ॥

राग धनाश्री ॥ सबै दिन एकैसे नाहिं जात । सुमिरन ध्यान कियो करि हरिको जब लगि तन कुशलात ॥ कबहूं कमला चपला पाके टेढे टेढे जात । कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजनको बिलखात ॥ या देहीके गर्व बावरो तदपि फिरत इतरात । बाद विवाद सबै दिन बीते खेलत ही अरु खात ॥ हौं बड़ हौं बड़ बहुत कहावत सूधे कहत न बात । योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भये अकुलात ॥ बालापन खेलत ही खोयो तरुणापन अलसात । सूरदास औसरके बीते रहि हौ पुनि पछितात ॥ २२ ॥

राग सारंग ॥ गर्व गोविंदहि भावत नाहिं । कैसी करी हिरण्यकशिपुसों प्रगट होइ छिन माहिं ॥ जग जानी करतूत कंसकी नरकासुर मारचो पलमाहिं । ब्रह्मा इन्द्रादिक पछताने गर्व धारि मनमाहिं ॥ यौवन रूप राज धन धरती जान जलदकी छांहिं । सूरदास हरि भजो गर्व तजि विमुख अगतिको जाय ॥ २३ ॥

राग कान्हरा ॥ विषया जाते हर्ष्यो गात । ऐसे अंध जानि तैं मूरख जो परत्रिय लपटात ॥ बरजि रहे सब कहे न मानत करि करि जतन उड़ात । परे अचानक त्यौं रस लंपट तनु तजि यमपुरजात ॥ यह तौ सुनी व्यासके मुखतें परदारा दुखदात ॥ रुधिर मेद मल मूत्र कठिन कुच उदर गंध गंधात । तन धन यौवन ताहित खोवत नरककी पाछे बात ॥ जो नर भले चहत तो सो तजि सूर प्रभू गुण गात ॥ २४ ॥

अथ आत्मज्ञान । राग नट ॥ जौलौं सत स्वरूप नहिं सूझत । तौलौं मृगमद नाभि बिसारे फिरत सकल वन बूझत ॥ अपनो ही मुख मलिन मंदमति देखत दर्पण माहि । ता कालिमा मेटबे कारण पचत पखारत ॥ तेल तूल पावक पुट भरि धरि बनै न बिना प्रकाशत । कहत बनाइ दीपकी बतियां कैसे धौं तम नाशत । सूरदास यह गति आये बिनु सब दिन गने अलेखे । कहा जाने दिन करकी ॥ महिमा अंध नयन बिनु देखे ॥ २५ ॥

अपुनपो आपुनही बिसरचो। जैसे श्वान कांचमंदिरमें भ्रमिभ्रमि भूसि मरचो ॥ हरि सौरभ मृग नाभि बसत है द्रुम तृण सुंघि मरचो । ज्यों सपनेमें रंक भूप भयो तस करि अरि पकरचो ॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखिकै आपुन कूप परचो । ऐसे गज लखि फटिक शिलामें दशननि जाइ अरचो ॥ मर्कट मुष्ठि छाँड़ि नहिं दीनी घर घर द्वार फिरचो । सूरदास नल नीको सुवटा कहि कौने जकरचो ॥ २६ ॥

अथ विराटस्वरूप वर्णन ॥ राग केदारा ॥ नैननि निरखि श्याम स्वरूप । रह्यो घट घट व्यापि सोई ज्योतिरूप अनूप ॥ चरण सप्त पताल जाके शीश है आकाश । सूर चन्द्र नक्षत्र पावक सर्व तासु प्रकाश ॥ २७ ॥

अथ आरती ॥ हरिजूकी आरती बनी । अति विचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी ॥ कच्छप अध आसन अनूप अति डांडी शेष फनी । मही सराव सप्तसागर घृत बाती शैल घनी ॥ रवि शशि ज्योति जगत परिपूरण हरत तिमिर रजनी । उडत फूल उडगन नभ अंतर अंजन घटा घनी । नारदादि सनकादि प्रजापति सुर नर असुर अनी काल कर्म गुण अरुण अंत कछु प्रभु इच्छा रचनी ॥ यह प्रताप दीप सु निरंतर लोक सकल भजनी । जाके उदित नचत नाना विधि गति अपनी अपनी ॥ सूरदास सब प्रकृति धातुमय अति विचित्र सजनी ॥ २८ ॥

अथ नृप विचार । राग गूजरी ॥ श्रीशुकके सुनि वचन नृप लाग्यो करन विचार । झूठे नाते जगतके सुत कलत्र परिवार ॥ चलत न कोऊ सँग चलै मोरि रहे मुख नार । आवत गाढे काम हरि देखो सूर विचार ॥ २९ ॥

राग गूजरी ॥ हरि बिनु कोऊ काम न आयो । यह माया झूठी प्रपंच लगि रतनसो जन्म गँवायो ॥ कंचन कलश विचित्र चित्र करि रचि पचि भवन बनायो । तामेंते तिहि छिनहीं काढ्यौ पलभरि रहन न पायो ॥ हौं तेरे ही संग जरोंगी यह कहि त्रिया धूति धन खायो । चलत रही चित चोरि मोरि मुख एक न पग पहुँचायो ॥ बोलि बोलि सब बोलि मित्र जन लीनो सो जिहि भायो । परयो काज अंतकी बिरिया तिनिहीं आनि बँधायो ॥ आशा करि करि जननी जायो कोटिक लाड लड़ायो । तोरिलयो कटिहूंको डोरा तापर बदन जरायो पतित उधारन गणिका तारन सो मैं शठ बिसरायो । लियो न नाम नेकहूँ धोखे सूरदास पछतायो ॥ ३० ॥

राग देवगंधार ॥ सकल तजि भजि मन चरण मुरारि । श्रुति स्मृति अरु मुनिजन भाषत मैं हूँ कहत पुकारि ॥ जैसे स्वप्ने सोइ देखियत तैसे यह संसारि । जात बिलै ह्वै छिनक मात्रमें उघरत नैन किवारि ॥ बारैबार कहत मैं तोसों जन्म न जूवा हारि । पाछे भई सु सूरजन अजहूं समुझि सँभारि ॥ ३१ ॥

राग गूजरी ॥ अजहूं सावधान क्यों न होई । माया विषम भुजंगनिको विष उतरयो नाहिंन तोई ॥ कृष्ण सुमंत्र जियावन मूरी जिन जग मरत जिवायो । बारंबार निकट श्रवणनि ह्वै गुरु गारुडी सुनायो ॥ भौतिक देह जीय अभिमानी देखत ही दुख लायो । कोउ कोउ उबरयो साधू संगति जिन राम जीवन पायो ॥ जाग्यो मोह मयूर प्रति छूटे सुयश गीतके गाये । सूर मिटै अज्ञान मूरछा ज्ञान मूलके खाये ॥ ३२ ॥

नृपके वचन शुकदेव प्रति ॥ नमो नमो करुणा निधान । चितवत कृपा कटाक्ष तुम्हारी मिटि गयो तम अज्ञान ॥ मोह निशाको लेश रह्यो नहिं भयो विवेक बिहान । आतम रूप

सकल घट दरश्यो उदय कियो रवि ज्ञान ॥ मैं मेरी अब रही न मेरे छुट्यो देह अभिमान । भावै परो आजुही यह तनु भावै रहो अमान ॥ मेरे जिय अब यह लालसा लीला श्रीभगवान । श्रवण करौं निशि वासर हितसों सूर तुम्हारी आन ॥ ३३ ॥

अथ शुकदेव वचन राग सारंग ॥ कह्यो शुक सुनो परीक्षित राव । ब्रह्म अगोचर मन बाणीते अगम अनंत प्रभाव ॥ भक्तन हित अवतार धारि जो करि लीला संसार । कहौं ताहि जो सुनै चित्त दै सूर तरै सो पार ॥ ३४ ॥

अथ नारद ब्रह्मा संवाद । राग बिलावल ॥ नारद ब्रह्माको शिर नाई । कह्यो सुनो त्रिभुवनपति राई ॥ सकल सृष्टि यह तुमते होई । तुम सम द्वितिया और न कोई॥तुम हौ धरत कौनके ध्यान । यह तुम मोसों कहो बखान ॥ कह्यो कर्ता हर्ता भगवान । सदा करत मैं तिनको ध्यान ॥ नारदसों कह्यो विधि या भाई । सूर कह्यो त्योंही शुक गाई ॥ ३५ ॥

अथ चतुर्विंशति अवतार वर्णन । राग धनाश्री ॥ जो हरि करै सो होई कर्ता नाम हरी । ज्यों दर्पण प्रतिबिंब त्यों सब सृष्टि करी ॥ आदि निरंजन निराकार कोउ हुतो न दूसर । रचो सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर ॥ त्रिगुण तत्त्वते महातत्त्व महातत्त्वत्ते अहंकार । मन इंद्रिय शब्दादि पंची ताते किये विस्तार ॥ शब्दादिकते पंचभूत सुन्दर प्रगटाये । पुनि सबको रचि अंड आपमें आप समाये । तीन लोक निज देहमें राखे करि विस्तार । आदि पुरुष सोई भयो जो प्रभु अगम अपार ॥ नाभि कमलते आदि पुरुष मोको प्रगटायो । खोजत युग गए बीति नालको अंत न पायो ॥ तिन मोसों आज्ञा करी रचि सब सृष्टि उपाई । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मैं आई ॥ मच्छ कच्छ बाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि । वामन बहुरो परशुराम पुनि राम रूप करि ॥ वासुदेव सोई भयो बुध भयो पुनि सोई । कल्की होइ है और न द्वितीया कोई॥ ए दश हैं अवतार कहों पुनि और चतुर्दश । भक्त बछल भगवान धरे वपु भक्तनिके वश ॥ अज अविनाशी अमर प्रभु जन्मै मरै न सोई । नटवर कला करत सकल बूझै बिरला कोई ॥ सनकादिक पुनि व्यास बहुरि भए हंसरूप हरि । पुनि नारायण ऋषभ देव बहुरचो धन्वंतरि ॥ नारद दत्तात्रेय हरि यज्ञ पुरुष वपु धारि ॥ कपिल मोहनी पृथु हयग्रीव सुध्रुव उद्धारि ॥ भूमिरेणु कोउ गनै और नक्षत्र न समुझावै । कह्यो चहै अववार अंत सोऊ नहिं पावै ॥ सूर कहौ क्यों कहि सकै जन्म कर्म अवतार । कहै कछुक गुरु कृपाते श्रीभागवत अनुसार ॥ ३६ ॥

ब्रह्मा उत्पत्ति चतुःश्लोक प्रति । राग विलावल ॥ ब्रह्मा यों नारदसों कह्यो । जब मैं नाभि कमलते भयो ॥ खोजत नाल कितो युग गयो । तउ मैं कछू मरम ना लह्यो ॥ भइ आकाशवाणी तिहिं बार । तू ए चारि श्लोक विचार ॥ इनैं विचारत ह्वैहै ज्ञान । ऐसी भाँति कह्यो भगवान ॥ ब्रह्मा जो नारदसों कही । व्यास सोई नारदसों लही ॥ व्यास कही मोसों विस्तार । भयो भागवत या परकार ॥ सोई मैं अब तोसों भाखौं । तेरे हृदय न संशय राखौं ॥ मूल भागवतके एइ चार । सूर भली विधि इन्हैं विचार ॥ ३७ ॥

अथ चतुःश्लोकी श्रीशुकवाक्य ॥ राग कान्हरा ॥ पहिले होहिं हों तब एक । अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक । सो हौं एक अनेक भांति करि शोभित नाना भेष । ता पाछे इन गुणनि गाएते हौं रहिहौं अवशेष ॥ झूठी सांचीसी लागति मम माया सो जानि । रवि शशि राहु संयोग बिना ज्यों लीजत है मन मानि । ज्यों जग फटिक मध्य न्यारो बसि पंच प्रपंच बिभूत ॥ ऐसे मैं सबहुनते न्यारो मणि ग्रंथित ज्यों सूत ॥ पहिले ज्ञान विज्ञान द्वितिय पद तृतीय भक्तिको भाव । सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मन लाव ॥ ३८ ॥

इति श्रीकविवरसूरदासकृते श्रीमद्भागवते सूरसागरे द्वितीयः स्कन्धः समाप्तः ॥



अथ कवि सूरदास कृत—

श्री सूरसागर।

तृतीय स्कन्ध।

अथ शुकवचन ॥ रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ। हरिचरणारबिंद उर धरौ॥ शुकदेव हरिचरणन चित लाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहौं हरिकथा सुन चित लाई। सूर तरौ हरिके गुण गाई॥ १॥

उद्धव विदुर संवाद। कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट बतावन राग विलावल॥ जब हरि भए अंतर्धान। कहि उद्धवसों तत्त्वज्ञान॥ कह्यो मैत्रेयसों समुझाई। यह तुम विदुरहि कहियो जाई॥ बद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आए। तीरथ करत गए अकुलाए॥ उद्धव बिदुर तहां मिलि गए। दोऊ कृष्ण प्रेम वश भए॥ उद्धव कहो हरि कह्यो जो ज्ञान। कहिहैं तुम्हैं मैत्रेय आन॥ यह कहि उद्धव आगे चले। बिदुर मैत्रेय बहुरो मिले॥ जो कछु हरिसों सुनियो ज्ञान। कह्यो मैत्रेय ताहि बखान॥ सोई मोहिं दियो व्यास सुनाई। कहों सो सूर सुनो चित लाई॥ २॥

अथ विदुर जन्म वर्णन॥ विदुर सुधर्म राई अवतार। ज्यों भयो कहैं सुनो चित धार॥ मांडव्य ऋषि जब शूली दयो। तब सो काठ हरचो ह्वै गयो॥ मांडव्य धर्मराजपै आयो। क्रोधवंत यह वचन सुनायो॥ कौन पाप मैं ऐसो कियो। जाते मोकूं शूली दियो॥ धर्मराज कह सुन ऋषिराई। क्षमा करौ तौ देउँ सुनाई॥ बाल अवस्थामें तुम धाई। उड़त भँभीरी पकरी जाई॥ ताहि शूलपर शूली दियो। ताको बदलो तुमसों लियो॥ ऋषि कहै बाल दशा अज्ञान। भयो पाप मोते बिन जान॥ बालापनको लगत न पाप। ताते देउँ मैं तुम्हें शराप॥ दासी सुत तू ह्वै है जाई। सूर विदुर भयऊ सो आई॥ ३॥

अथ सनकादिकावतार॥ ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि। मनसों प्रकट कियो सुत चारि॥ सनक सनंदन सनतकुमार। बहुरि सनातन नाम ए चार॥ ए चारों जब ब्रह्मा किये। हरिको ध्यान धरचो तिहिं हिये॥ ब्रह्मा कह्यो सृष्टि विस्तारो। उन यह वचन हृदय नहिं धारो॥ कह्यो यहै हम तुमसों चहैं। पांच बरसके नितही रहैं॥ ब्रह्मासों यह वर तिहि पाई। हरि चरणन चित राख्यो लाई। शुकदेव कह्यो जैसे प्रकार। सूर कहै ताही अनुसार॥ ४॥

अथ रुद्र उत्पत्ति वर्णन॥ सनकादिकनि कह्यो नहिं मान्यो। ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यो॥ तब इक पुरुष भौंहते भयो। होत समय तिहि रोवन ठयो॥ ताको नाम रुद्र विधि राख्यो। ताको सृष्टि करनको भाख्यो॥ तिन बहु सृष्टि तामसी करी। सो तामस करि मन अनुसरी। ब्रह्मा मन सो भली न भाई। सूर सृष्टि तब अवर उपाई॥ ५॥

अथ सप्तऋषि चारमनु उत्पत्ति वर्णन ॥ ब्रह्मा सुमिरन करि अभिराम । प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम ॥ भृगु मरीचि अंगिरा वसिष्ठ । अत्रि पुलह पुनि भयो पुलस्त्य ॥ पुनि दक्षादि प्रजापति भये । स्वयंभु आदि चार मनु जये ॥ इनते उपजी सृष्टि अपार । सूर कहां लौं कर विस्तार ॥ ६ ॥

अथ सुर असुर उत्पत्ति वर्णन राग विलावल ॥ ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो । ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो ॥ सूर अरु असुर कश्यपके पुत्र । भ्रात विमात आपमें शत्रु ॥ सुर हरि भक्त असुर हरि द्रोही । सुर अति क्षमी असुर अति कोही ॥ उनमें नित उठि होइ लराई । करैं सुरनकी कृष्ण सहाई ॥ तिनहित जो जो किये अवतार । कहौं सूर भागवत अनुसार ॥ ७ ॥

अथ बाराह रूप वर्णन । राग विलावल ॥ ब्रह्माते स्वयंभू मनु भयो ॥ तासों सृष्टि करनको कह्यो ॥ तिन ब्रह्मासों कहो शिर नाई । सृष्टि करौंसु रहे किहि भाई ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगायो ॥ तब हरि वपु बराह धरि आयो ॥ ह्वै बराह पृथ्वी जब लायो । सूरदास शुक त्यौंहीं गायो ॥ ८ ॥

राग धनाश्री ॥ हरि गुण कथा अपार पार नहिं पाइये । हरि सेवत सुख होइ हरी गुण गाइये ॥ ब्रह्मपुत्र सनकादि गये वैकुंठ एक दिन । द्वारपाल जय विजय हुते बरज्यो तिहिंको पुन ॥ शाप दियो तब क्रोध ह्वै असुर होउ संसार । हरि दर्शनको जात क्यों रोक्यो बिना विचार ॥ हरि तिनसों कह्यो आइ भली शिक्षा तुम दीनी । बरज्यौ आवत तुम्हैं असुर बुद्धि इन कीनी ॥ तिन्हैं कह्यो संसारमें असुर होउ अब जाइ । तृतियहि जन्म विरुद्ध करि मोसों मिलिहौ आइ ॥ कश्यपकी दिति नारि गर्भ ताके दोउ आए । तिनके तेज प्रताप देवतनि बहु दुख पाए ॥ गर्भ माहिं शत वर्ष रहि प्रगट भये पुनि आइ । तिन दो उनको देखिकै सुर सब गए डराइ ॥ हिरण्याक्ष इक भयो हिरण्यकशिपु भयो दूजो । तिनके बलको इंद्र वरुण कोऊ नहिं पूजो ॥ हिरण्याक्ष तब पृथ्वीको ले राख्यो पाताल । ब्रह्मा विनती करि कह्यो दीनबंधु गोपाल ॥ तुम विन दुतिया और कौन जो असुर सँहारै । तुम बिन करुणा सिंधु कौन पृथ्वी उद्धारै ॥ तब हरि धरि बाराह वपु ल्याए पृथ्वी उठाइ । हिरण्याक्ष लेकर गदा तुरतहि पहुँच्यो आइ ॥ असुर कोप ह्वै कह्यो बहुत तुम असुर संहारे । अब लेहौं वह दांव छांडि हौं नहिं बिन मारे ॥ यह कहिकै मारी गदा हरिजू ताहि सँभारि । गदा युद्ध तासों कियो असुर न मानी हारि ॥ तब ब्रह्मा करि बिनय कह्यो हरि ताहि सँहारो । तुम तौ लीला करत सुरन मन परो धकारो ॥ मारचो ताहि बिचारि हरि सुर मुनि भयो हुलास । सूरदासके प्रभु बहुरि कियो वैकुण्ठ निवास ॥ ९ ॥

अथ कपिलदेवमुनि अवतार वर्णन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ॥ हरिको ध्यान सदा हिय धरौ ॥ ज्यों भयो कपिल देव अवतार । कहौं सो कथा सुनो चित धार ॥ कर्दम पुत्र हेतु तप कियो । तासु नारिहूं इक व्रत लियो ॥ हरिसो पुत्र हमारे होई । और जगत सुख हू पुनि होई ॥ नारायण तिनको वर दियो । मोसो और न कोई वियो ॥

मैं लेहौं तुम गृह अवतार । तप तजि करो भोग संसार ॥ दुहुँ तब तीरथमाहिं न्हवायो । सुन्दर रूप दुहूं जन पायो ॥ भोग समग्री जुरी अपार । विरचन लागे सुख संसार ॥ तिनके कपिल देव सुत भये । परम भाग्य मानी तिहि लये ॥ १० ॥

कर्दम प्रसंग राग विलावल ॥ कर्दम कह्यो तिन्हैं शिर नाई ॥ आज्ञा होइ करौं तप जाई ॥ अभय अछेद रूप मम जान । जो सब घट है एक समान ॥ मिथ्या तनुको मोह बिसारि । जाइ रह्यो भावै गृहदारि ॥ करत इंद्रियनि चेतन जोई ॥ मम स्वरूप जानो तुम सोई ॥ तनु अभिमान जाको नशिजाई । सो नर रहै सदा सुख पाई ॥ जब मम रूप देह तजि जाई । तब सब इंद्री शक्ति नशाई ॥ ताको जानि मग्न ह्वै रहै । देह अभिमान ताहि नहिं दहै ॥ और जो ऐसी जानै नाहीं । रहै सो सदा काल भयमाहीं ॥ यह सुनि कर्दम वनहिं सिधाए । वहां जाय हरिपद चित लाए ॥ हरि स्वरूप सब घट पुनि जान्यो । ऊँखमाहिं ज्यों रस है सान्यो ॥ जोयो तिन आतम रस सार । ऐसी विधि जान्यो निरधार ॥ यह लखि गहि हरिपद अनुराग । मिथ्या तनुको कीनो त्याग ॥ तनुहि त्यागिकै हरि पद पायो । नृप सुनि हरि स्वरूप उर लायो ॥ ११ ॥

अथ देवहूती माताको प्रश्न कपिलमुनिसों ॥ इहां कपिलसों माता कहो । प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहो ॥ आतम ज्ञान देहु समुझाई । जाते जन्म मरण दुख जाई ॥ कहच्यो कपिल कहों तुमसों ज्ञान । मुक्त होइ नर ताको जान ॥ मुक्त विविधके लक्षण केहौं । तेरे सब संदेहै दहौं ॥ मम सो रूप जो सब घट जान । मग्न रहै तजि उद्यम आन ॥ अरु सुख दुख कछु मन नहिं ल्यावै । माता सो नर मुक्त कहावै ॥ और जु मेरो रूप न जानै । कुटुँब हेत नित उद्यम ठानै ॥ जाको इहि विधि जन्म सिराई । सो नर मरिकै नरक सिधाई ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी सँग हो अज्ञान ॥ ताते साधुसंग नित करना । जाते मिटै जन्म अरु मरना ॥ स्थावर जंगममें मोहिं जानै । दयाशील सबसों हित ठानै ॥ सत सन्तोष दृढ़ करै समाध । माता ताको कहिये साध ॥ काम क्रोध लोभै परिहरै । द्वंद्व रहित उद्यम नहिं करै ॥ ऐसे लक्षण हैं जिहि माहीं । माता तिनकों साधु कहाहीं ॥ जाको काम क्रोध नित व्यापै । अरु पुनि लोभ सदा सन्तापै ॥ ताहि असाधु कहत कवि सोई । साधु भेष धरि साधु न कोई ॥ सन्त सदा हरिके गुण गावैं । सुनि लोग भक्तिको पावैं ॥ भक्ति पाइ पावैं हरि लोक । तिन्हैं न व्यापै हर्ष न शोक ॥ देवहूति कह भक्ति सु कहिये । जाते हरि पुर बासा लहिये ॥ १२ ॥

भक्ति प्रश्न ॥ अरु भक्ति कीजै किहि भाई । सोऊ मोको देहु बताई ॥ माता भक्ति चारि परकार । सत रज तम गुण सुधासार ॥ भक्ति एक पुनि बहुविधि होई । ज्यों जल रंग मिलि रंग सु होई । भक्ति सात्त्विकी चाहत मुक्त । रजोगुणी धन कुटुँब अनुरक्त ॥ तमोगुणी चाहै या भाई । मम बैरी क्योंही मरजाई ॥ सुधा भक्ति मोक्षको चाहै । मुक्ति हुको नाहीं अवगाहै ॥ मन क्रम वच मम सेवा करै । ममते भव आशा परि हरै ॥ ऐसो भक्त सदा मोहिं प्यारो । इक छिन जाते रहौं न न्यारो ॥ ताके मैं हित मम हित सोई । जा सम मेरो और न कोई ॥ विविध भक्ति मेरे है जोई ॥ जो

माँगै तिहि देहुँ मैं सोई ॥ भक्त अनन्य कछू नहिं माँगे ॥ ताते मोहिं सकुच अति लागै ॥ ऐसो भक्त जानिहै जोई । जाके शत्रु मित्र नहिं दोई ॥ हरिमाया सब जग संतापै । ताको माया मोह न व्यापै ॥ १३ ॥

हरिमायाप्रश्न ॥ कपिल कहो हरिको निजरूप ॥ अरु पुनि माया कौन स्वरूप ॥ देवहूति जब याविधि कह्यो । कपिलदेव सुनि अति सुख लह्यो । कह्यो हरिके भय रवि शशि डरै । वायु वेग अतिशय नहिं फरै ॥ अगिनि रहै जाके भय माहीं । सो हरिमाया जा वश माहीं ॥ मायाको त्रिगुणातम जानो । सत रज तम ताको गुण मानो ॥ तिन प्रथमै महत्तत्त्व उपायो । ताते अहंकार प्रगटायो ॥ अहंकार कियो तीनप्रकार । मनते ऋषिमनसात रु चार ॥ रजगुणते इंद्रिय विस्तारी । तमगुणते तन्मात्रा सारी ॥ तिनते पांच तत्त्व प्रगटायो । इहि सबको इक खंड बनायो ॥ अंडसु जड़ चेतन नहिं होई । तब हरिपद माया मन पोई ॥ ऐसी विधि बिनती अनुसारी । महाराज बिनु शक्ति तुम्हारी ॥ यह अंडा चेतन नहिं होई । करौ कृपा हरि चेतन सोई ॥ तामें शक्ति आपुनी धारी । चक्ष्वादिक इंद्री विस्तारी ॥ चौदह लोक भये तामाहिं । ज्ञानी तिहि बैराट कहाहिं ॥ आदिपुरुष चैतन्यको कहत । जो है तिहूं गुननते रहित ॥ जड स्वरूप सब माया जानो । ऐसो ज्ञान हृदयमें आनो ॥ जब लगि है जियको अज्ञान । चेतनको सो सकै न जान । सुत कलत्रको अपनो मानै । अरु तिनसों ममत्व बहु ठानै ॥ जो कोई सुख दुख सपने जोई । सत्य मानले तिनको सोई ॥ जब जागै तब सत्त न मानै । ज्ञान भए त्योंहीं जग जानै ॥ चेतन घट घट है या भाई । ज्यों घट घट रवि प्रभा लखाई ॥ घट उपजो बहुरो नशि जाई । रवि नित रहै एक ही भाई ॥ जा तिनको है जन्म रु मरना । चेतन पुरुष अमर अज बरना ॥ ताको ऐसो जानै जोई । ताके तिनसों मोह न होई ॥ जबलौं ऐसो ज्ञान न होई । वर्णधर्म को तजै न सोई ॥ संतनकी संगति नित करै । पापकर्म मनतैं परिहरै ॥ अरु भोजन सो इहि विधि करै । आधा उदर अन्नसों भरै ॥ आधेमें जलवायु समावै । तब तिहिं आलस कबहुँ न आवै ॥ और जु परालब्ध सों आवै । ताहीको सुखसों बरतावै ॥ बहुतेको उद्यम परिहरै । निर्भय ठारै बसेरो करै ॥ तीरथहू में जो भय होई । ताहूको तू परिहरै सोई ॥ बहुरो धरै हृदय महँ ध्यान । रूप चतुर्भुज श्याम सुजान ॥ प्रथमै चरण कमलको ध्यावै । तासु: महातम मनमें ल्यावै ॥ गंगा परसि उनहिंको भई । शिव शिवता इनही सों लही ॥ लक्ष्मी इनको सदा पलोवै । बारंबार प्रीतिको जोवै । जंघनको कदली सम जानै । अथवा कनक थंभ सम मानै ॥ उर अरु ग्रीव बहुरि हिय धारै । तापर कौस्तुभ मणिहि बिचारै ॥ भृगुलत्ता लक्ष्मी तहँ जानी । नाभिकमल चित धारै ध्यानी ॥ मुख मृदुहास देख सुख पावै । तासों प्रेम सहित मन लावै ॥ नैन कमल दलले अनियारे । दरशत तिनैं कटैं दुख भारे ॥ नासा कीर परम अति सुंदर । दरशत ताहि मिटै दुखद्वंदर ॥ कूप समान श्रवण दोउ जानै । मुखको ध्यान इसी विधि ठानै ॥ केसर तिलक रेख अति सोहै । ताके पटतरको जग को है ॥ मृगमद

बिंदा तामें राजै । निरखत ताहि काम शत लजै ॥ मोर मुकुट पीताबर सोहै । जो देखै ताको मन मोहै ॥ श्रवणनि कुंडल परम मनोहर । नख शिख ध्यान धरै यों उर धर ॥ क्रम करि यह ध्यान बढ़ावै । मन कहुँ जाय फेरि तहँ आवै ॥ ऐसे करत मगन होइ सोई ॥ बहुरो ध्यान सहजही होई ॥ चितवन चलत न चितते टरै ॥ सुत त्रिय धनकी सुधि बिसमरै ॥ तब आतम घट घट दरशावै । मग्न होइ तन मन बिसरावै ॥ भूख प्यास ताके नहिं व्यापै । सुख दुख तनिकौ नहिं संतापै ॥ जीवनमुक्त रहै या भाई । ज्यों जल कमल अलिप्त रहाई ॥ १४ ॥

देवहूती प्रश्न सुगम उपाय । राग बिलावल ॥ देवहूति यह सुनि पुनि कह्यो । देव ममत्व ढेर मुहिं रह्यो ॥ कर्दम मोह न मनतें जाई । ताते कहिये सुगम उपाई ॥ कपिल कह्यो तोहिं भक्ति सुनाऊँ । अरु ताको बेवरो समझाऊँ ॥ मेरी भक्ति चतुर विधि करै । सुने सुने ते सब निस्तरै ॥ जो कोउ दूरि चलनको करै । क्रम क्रम करि डग डग पग धरै ॥ एकदिन सु वहां पहुँचै जाई ॥ त्यों मम भक्त मिलै मोहिं आई ॥ चलत पंथ कोउ थाक्यो होई । कहै दूरि डरि मरिहै सोई ॥ जो कोउ ताको निकट बतावै । धीरज धरि सु ठिकाने आवै ॥ तमोगुणी रिपु मरनो चाहै ॥ रजो गुणी धन कुटुंब अवगाहै ॥ भक्त सात्त्विकी सेवै संत । लखै तबै मूरति भगवंत ॥ मुक्ति मनोरथ मनमें ल्यावै । मम प्रसादते सो वह पावै । निर्गुण मुक्तिहुको नहिं चहै । मम दर्शनहीते सुख लहै ॥ ऐसो भक्त सु मुक्त कहावै ॥ सो बहुरचो चलि भवनाहिं आवै ॥ क्रम क्रम ही करि सब गति होई । मेरो भक्त नष्ट नाहिं होई ॥ १५ ॥

हरिते विमुख होइ नर जोइ । मरिकै नरक परत है सोइ ॥ तहां जातना बहुविधि पावै । बहुरो चौरासीमें आवै ॥ चौरासी भ्रमि नरतन पावै । पुरुषवीर्यसों तिय उपजावै ॥ मिल रज वीरज ऐसी होई । द्वितिय मास शिर धारै सोई ॥ तीजे मास हस्त पग होवै । मास चौथि कटि अँगुरी सोवै । प्राणवायु पुनि आय समावै ॥ ताको इत उत पवन चलावै । पंचम मास हाड बलपावै । छठे मास इन्द्री प्रगटावै ॥ सप्तम चेतनता लहै सोई । अष्टमास सम्पूरण होई ॥ नीचे शिर अरु ऊंचे पांई । जठर अग्निको व्यापै ताई ॥ कष्ट बहुत सो पावै जहां । पूर्वजन्म सुधि आवै तहां ॥ नवम मास पुनि बिनती करै । महाराज यह दुख मम टरै ॥ ह्यांते जो मैं बाहर परौं । अहर्निश भक्ति तुमहारी करौं ॥ अत्र मोपै प्रभु किरपा कीजै । भक्ति अनन्य आपुनी दीजै ॥ अरु यह ज्ञान न चितते टरै । बार बार यों बिनती करै ॥ दशम मास पुनि बाहर आवै । तब यह ज्ञान सकल बिसरावै ॥ बालापन दुख बहुविधि पावै । जीभ बिना कहि कहा सुनावै ॥ कबहुं विष्ठामें रह जाई । कबहूं माखी लागै आई ॥ कबहूं जुवां देइं दुखभारी । तिनको सो नहिं सकै निवारी ॥ पुनि जब षष्ठ वर्षको होई । इत उत खेलन चाहत सोई ॥ माता पिता निवारैं जबहीं । मनमें दुख पावै सो तबही ॥ माता पिता पुत्र तेहि जानै । वह उनसे तब नातो मानै ॥ वरसैं दश व्यतीत जब होई । बहुरि किशोर होय पुनि सोई ॥ सुंदर नारी ताहि विवाहैं । अशन बसन बहुविधि सो चाहै ॥ बिना भाग सो कहँते आवै । तब वह मनमें बहु दुख पावै ॥

पुनि लक्ष्मी हित उद्यम करै ॥ अरु जब उद्यम खाली परै ॥ तब वह रहै बहुत दुख पाई ॥ कहं लौं कहौं कह्यो नहिं जाई ॥ बहुरो ताहि बुढापो आवै । इन्द्री शक्ति सकल मिट जावै । कान न सुनै आँखि नहिं सूझै । बात कहै सो कछु नहिं बूझै ॥ खैबेको जब नाहिंन पावै । तब बहु बिधि मनमें पछतावै ॥ पुनि दुख पाइ पाइ सो मरै ! बिनु हरि-भक्ति नरकमें परै । नरक जाइ पुनि बहु दुख पावै । पुनि पुनि योंहि आवै जावै ॥ तऊ नहीं हरिसुमिरण करै । ताते बार बार दुख भरै ॥ १६ ॥

भक्त महिमा ॥ भक्त सकामीहूँ जो होई । क्रम क्रम करिकै उधरै सोई ॥ शनै शनै विधि पावै जाई । ब्रह्म संग हरिपदहि समाई ॥ निष्कामी वैकुंठ सिधावै । जन्म मरन तिहि बहुरि न आवै ॥ त्रिविधि भक्ति अब कहों सुनु सोई । जातें हरिपद प्रापति होई ॥ एक कर्म योगको करै । वर्ण आश्रमाधरि निस्तरै ॥ अरु अधर्म कबहूं नहिं करैं । ते नर याही विधि निस्तरैं ॥ एक भक्ति योग को करै । हरि सुमिरन पूजा विस्तरै । हरि पद पंकज प्रीति लगावै । क्रम क्रम करि हरि पदहि समावै ॥ ते हरिपद को याविधि पावै ॥ एक ज्ञान योग विस्तरै ॥ ब्रह्म जानि सबसों हित करै ॥ कपिलदेव बहुरो यों कह्यो । हमैं तुमैं संवाद जु भयो ॥ कलियुगमें यहि सुनि है जोई । सो नर हरिपद प्रापति होई ॥ १७ ॥

देवहूति हरिपदप्राप्ति ॥ देवहूति ज्ञानको पाई । कपिलदेवको कह्यो शिर नाई ॥ आगे मैं तुमको सुत मान्यो । अब मैं तुमको ईश्वर जान्यो ॥ तुम्हरी कृपा भयो मुहिं ज्ञान । अब न व्यापि है मोहिं अज्ञान ॥ पुनि बन जाइ दियो तनु त्याग । गहिकै हरिपदसों अनुराग ॥ कपिलदेव सांख्य जो गायो । सो राजा मैं तुम्हैं सुनायो ॥ याहि समुझि जु रहै लवलाई । सूर बसै सो हरिपुर जाई ॥ १८ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते तृतीयस्कंधः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत—

श्री सूरसागर

चतुर्थस्कन्ध ।

(राग विलावल) हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविन्द उर धरो ॥ कहों अब दत्तात्रेय अवतार । राजा सुनौ ताहि चित धार ॥ अत्रि पुत्रहित बहु तप कियो । तासुनारिहूँ यह व्रत लियो ॥ तीनों देव तहां मिलि आयो । तिनसों ऋषि यह वचन सुनायो ॥ मैं तो एक पुरुषको ध्यायो । अरु एकहि सों मैं चित लायो॥ अपने आवनको कहो कारण । तुम हौ सकल जगत निस्तारण ॥ कह्यो तुम एक पुरुष जो ध्यायो । ताको दरश न काहू पायो ॥ ताकी शक्ति पाइ हम करैं । प्रतिपालौ बहुरो संहरैं ॥ हम तीनों हैं जगकरतार । मांगलेहु हमसों वर सार ॥ कह्यो विनय मेरी सुनि लीजै । ज्ञानमान पुत्र मोहि दीजै ॥ विष्णु अंश दत्त अवतरे ॥ रुद्र अंश दुर्वासा ढरे ॥ ब्रह्म अंश चंद्रमा भयो । अत्रि अनसूयाको सुख दयो ॥ यों भए दत्तात्रेय अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ १ ॥

शुकदेव वचन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ शुकदेव हरि चरण चित लाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरिकथा सुनौ चित लाई । सूर तरचो हरिके गुण गाई ॥ २ ॥

यज्ञपुरुष अवतार वर्णन ॥ दक्षके उपजीं पुत्री सात । तिनमें सती नाम विख्यात ॥ महादेवको सो पुनि दई । यज्ञ दक्षकेमें सो मुई ॥ तहां कियो हरि यज्ञ अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ३ ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणारविन्द उर धरौ ॥ कहौं अब यज्ञ पुरुष अवतार । राजा सुनौ ताहि चित धार ॥ सती दक्षके पुत्री भई । दक्ष सु महादेवको दई ॥ ब्रह्मा महादेव ऋषि सारे । एक दिन बैठे सभा मँझारे ॥ दक्ष प्रजापतिहू तहां आए । करि सन्मान सबनि बैठाये ॥ काहू समाचार कछु पूँछे । काहूसे बहुरो उन पूँछे ॥ शिवकी लागी हरिपद तारी । ताते नहिं शिव आंख उघारी ॥ महादेव बैठे रहि गए । दक्ष देखिकै तिहि दुख तए ॥ महादेवको भाखत साधु । मैं तो देखो बहुत असाधु ॥ यज्ञ भाग ताको नहिं दीजै । मेरो कहो मान करि लीजै ॥ नन्दी हृदय भयो सुनि ताप । दियो ब्राह्मणनको तिन शाप ॥ श्रुति पढिकै तुम नहिं उद्धरिहौ । विद्या बेंचि जीविका करिहौ ॥ भृगु तब कोप होय तहँ कह्यो । तैं शराप सबहुनको दियो ॥ महादेव हित जो तप करि है । सोऊ भव जलते नहिं तरि है ॥ दक्ष प्रजापति यज्ञ रचायो । महादेवको नहीं बुलायो ॥ सुर गंधर्व जे नेवति बुलाये । ते सब बधू सहित तहां आये ॥

सती सबनि तिन्ह आवत देखी । शिवसों बोली वचन विशेखी ॥ चलिये दक्षगेह हम जाहीं । यद्यपि हमैं बुलाये नाहीं ॥ मोको तो यह अचरज आयो । उन हमको कैसे बिसरायो ॥ गुरु पितु गृह बिनु बोले जैये । यहै नीति नाहीं सकुचैये ॥ शिव कह्यो तुम भलि नीति सुनाई । पै वह मानत है शत्रुताई ॥ वहां गये ते होई अपमान । तौ यह भली बात नहिं जान ॥ दुर्जन वचन सुनत दुख जैसो । बाणलगे दुख होयन तैसो ॥ मम सतराई हृदये आन । करिहै तेरोऊ अपमान ॥ भये अपमान वहांतू मरि है । जो मन वचन हृदय नहिं धरिहै ॥ सती कह्यो मम भगिनी सात । सबै बोलाई ह्वैहै मात ॥ मोहूको अब आज्ञा दीजै । महाराज अब बिलंब न कीजै ॥ बारंबार सती जब कह्यो । तब शिव अंतर्गत यों लह्यो ॥ सती सदा मम आज्ञाकारी । कहत जु या विधि बारंबारी ॥ देखत हैं कछु होवनहारी । सो काहू पै जाइ न टारी ॥ गणन समेत सती तहँ गई । तासों दक्ष बात नहिं कही ॥ सती जानि अपनो अपमान । शिवको बचन कियो अनुमान ॥ कह्यो वहां अब गयो न जाई । बैठगई शिर नीचे नाई ॥ शिव आहुतिकि बेर जब आइ । विप्रन दक्ष पूंछियो जाई ॥ शिवनिंदा कहि तिनसों भाष्यो । मैं तुमही पहिलेहि कहि राख्यो ॥ मेरो वचन प्रमान करि लेहू शिवनिमित्त आहुति मत देहू ॥ तब क्रोध सती तिहि कही । तैं शिवकी महिमा नहिं लही ॥ महादेव ईश्वर भगवानं शत्रु मित्र वह एक समान ॥ तू अज्ञान जो करि शत्रुताई । उनकी महिमा तैं नाहिं पाई ॥ पिता जानि तोकों नहिं मारों । अपनोही मैं आप सँहारो ॥ योगधारण करि तनु त्यागो शिवपद कमल माहिं अनुराग्यो ॥ बहुरि हिमालयके अवतरी । समयांतर हर बहुरो बरी ॥ ह्यां शिवगणनि उपद्रव कियो । तब भृगुऋषि उपाय यह ठयो ॥ आहुति यज्ञ कुंडमें डारि । कह्यो पुरुष उपजै बल भरि ॥ पुरुष कुंडते प्रगट जुभए । भृगुके निकट चले सब गए ॥ भृगु कह्यो करत यज्ञको नास । इनको ह्यांते देहु निकास ॥ शिवके गण तिहि बहुतै मारे । ते गण शिवते जाइ पुकारे ॥ शिव ह्वै क्रोध इक जटा उपारी । वीरभद्र उपज्यो बल भारी । बीरभद्रको तहां पठायो । तासों इहि बिधि कहि समझायो ॥ दक्ष शिरकाटि कुंडमें डारी । आवौ बेगि न करौ अबारी ॥ वीरभद्र दक्षको मारयो । अरु भृगुऋषिको केश उपारयो ॥ हाथ पायँ बहुतनके काटे । आइ नवायो शिवहिं ललाटे ॥ तब सुर ऋषि ब्रह्मापै जाय । दियो सकल वृत्तान्त सुनाय ॥ कह्यो ब्रह्मा शिवनिन्दा जहां । बुरो किया तुम सबै तहां ॥ ब्रह्मा तिहिलै शिवपै आये । शिव प्रणाम करि ढिग बैठाये ॥ शिवको सवन कियो परमान । भोला नाथ लियो सो मान । ब्रह्मा शिवको बचन सुनायो । दक्ष तुम्हारो मर्म न पायो ॥ जैसो करयो सो तैसो पायो । अब वाको तुम फेर जिवायो ॥ शिव कह्यो मेरे नहिं शत्रुताई । सती मुई यह मनमें आई ॥ अब जो तुम्हरी आज्ञा होई । छाड़ि विलंब कीजिए सोई । ब्रह्मा विष्णु रुद्र तहँ आए । भृगु ऋषि केश आपुने पाए ॥ घायल सब

नीके ह्वै गए। सुर ऋषि सबके भाए भए। दक्ष शीश कुंडमें जरचो। ताके बदले अजशिर धरचो ॥ महादेव तेहि फेरि जिवायो। दक्ष जानि यह शीश नवायो ॥ विप्रन यज्ञ बहुरि विस्तारयो ॥ वेद भली विधिसों उच्चारचो। वेद भली विधिसों उच्चारचो। यज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंडसे दरशन दए ॥ सुंदर श्याम चतुर्भुज रूप। ग्रीवा कौस्तुभ माल अनूप ॥ उठके सबहुन माथो नायो। दक्ष बहुरि यह विनय सुनायो ॥ मैं अपमान रुद्रको कियो। तब मम यज्ञ सांग नहिं भयो ॥ अब मोहिं कृपा कीजिए सोई। फिर दुर्बुद्धि न ऐसी होई ॥ बहुरो भृगु ऋषि अस्तुति कीनी। महाराज मम बुधि भइ हीनी ॥ दियो क्रोध करि शिवहि शराप। करो कृपा जु मिटै यह दाप ॥ पुनि शिव ब्रह्मा अस्तुति करी। यज्ञपुरुष वाणी उच्चरी ॥ दक्षतैं कियो शिवहि अपमान। ताते भई यज्ञकी हान। विष्णु रुद्र विधि एकहि रूप। इन्हैं जान मत भिन्न स्वरूप ॥ जाते यह परगट भइ आई। ताको तू मनमाहिं धियाई ॥ यों कहि पुनि बैकुंठ सिधारे। सुर गंधर्व गये पुनि सारे ॥ या विधि भयो यज्ञ अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ४ ॥

अथ संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा ॥ राग मारू ॥ यज्ञ प्रभु प्रगट दरशन दिखायो ॥ विष्णु विधि रुद्र मम रूप ए तीनि हूं दक्षसों वचन यह कहि सुनायो दश ऋषि मानि जब यज्ञ आरंभ कियो सबनको सहित पत्नी हँकारयो ॥ रुद्र अपमान कियो सती तब जिय दियो रुद्रके गणनि ताको सँहारयो ॥ बहुरि विधि जाइ क्षमवाइ कै रुद्रको विष्णु विधि रुद्र तहाँ तुरत आये। यज्ञ आरंभ मिलि ऋषि बहुरो कियो शीश अज राखिकै दक्ष जिवाये ॥ कुंडते प्रगट यज्ञपुरुषदरशन दयो श्यामसुंदर चतुर्भुज मुरारी। रूप प्रभु निरखि दंडवत सबहिनि कियो सूर ऋषि सबनि अस्तुति उचारि ॥ ५ ॥

पार्वती विवाह वर्णन ॥ सती हिए धरि शिवको ध्यान। दक्ष यज्ञमें छाड्यो प्रान ॥ बहुरि हिमालयके शुभ घरी। नाम पार्वती ह्वै अवतरी ॥ पार्वती बर प्रापत भई। तबहिं हिमाचल तासों कही ॥ तेरो कासों कीजै व्याह। तिन कह्यो मेरो पति शिव आह ॥ कह्योहिमाचल शिव प्रभु ईश। हमको उनसों कैसी रीस ॥ पार्वती शिव हित तप करयो ॥ तब शिव आइ तहां तिहि वरयो ॥ पार्वती विवाह व्यवहार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ६ ॥

ध्रुव कथा राग बिलावल ॥ स्वयंभू मनुके सुत भए दोई। तिनकी कथा कहौं सुनसोई ॥ उत्तानपाद इक नृपको नाम ॥ द्वितिय प्रियव्रत अति अभिराम ॥ उत्तानपादके ध्रुव सुत भए। हरि जू ताको दरशन दए ॥ बहुरि दियो ताको अस्थान। जहां प्रदक्षिण दे शशि भान ॥ कहौं सुकथा सुनो चित धार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ७ ॥

ध्रुव वरदेन अवतार वर्णन। राग बिलावल ॥ हरिहरिहरिहरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ कहौं अब ध्रुव बर देन अवतार। राजा सुनो ताहि चितधार ॥ उत्तानपाद पृथ्वीपति भयो। ताको यश तीनों पुर छयो ॥ नाम सुनीति बडी तिहि नारि। सुरुचि दूसरी ताकी नारि ॥ भयो सुरुचिते उत्तम बार। सुनीति नारिके ध्रुव कुमार ॥ राजा को सु सुरुचिसों नेह। बसै सुनीतिदूसरे गेह ॥ इक दिन नृपति सुरुचि गृह आए। उत्तम

कुँवर गोद बैठाए ॥ ध्रुव खेलत खेलत तहँ आए । गोद बैठिबेको पुनिधाए ॥ राजा त्रिय-डर गोद न लीनो । ध्रुव कुमार रोइ तब दीनो ॥ तबहि सुरुचि ध्रुवको समुझायो । तैं गोविंदचरण नहिं ध्यायो ॥ जो हरिको सुमिरन तू करतो । मेरे गर्भ जानि अवतरतो ॥ राजा तब तोहिं लेतो गोद । तबहिं गोदमें करतो मोद ॥ अजहूं तू हरिपद चित लाई । होहिं प्रसन्न तोहिं यदुराई ॥ वचन सुरुचि बाण सम लागे । ध्रुव आये मातपै भागे ॥ माता ताको रोदन देखि । दुख पायो मन माँह विशेखि ॥ कह्यो पुत्र तोको केहिं मारचो । ध्रुव अति दुखित वचन उच्चारचो ॥ माता ताको कंठ लगायो । तब ध्रुव सब वृत्तांत सुनायो ॥ कह्यो सुत सुरुचि सत्य यह कह्यो । बिनु हरिभक्ति पुत्र मम भयो ॥ अजहूं सो हरिपद चित लैहो । सकल मनोरथ मनको पैहो ॥ जिन २ हरि चरणन चितलाए । तिन तिन सकल मनोरथ पाए । पितृ तुव ब्रह्माको तपकियो । हरि प्रसन्न ह्वै तिहि बर दियो ॥ तिहि को सर्व जगत विस्तार । जाकी नाहीं पारावार ॥ बहुरि स्वयंभू मनु तपकीनो । ताहूको हरिजू वर दीनो ॥ ताको भयौ बहुत परिवार । नर पशु कीट गनत नहिं पार ॥ तूहू जो हरि हित तप करिहै । सकल मनोरथ तेरो पुरिहै ॥ ध्रुव एहि सुनि वनको उठि चले । पंथ-माहिं तेहि नारद मिले ॥ देख्यो पांच बरसको बाल । वचन सुरुचि नहिं सक्यो सँभाल ॥ अब मैं हूं याको दृढ देख्यो । दृढविश्वास बहुरि उपदेशों ॥ ध्रुवसे कह्यो क्रोध परिहरौ । मैं जो कहौं सो चितमें धरौ ॥ मेरे सँग राजापै आवौ । देआवौं तोहि राज्य धन गांवौ ॥ भक्तिभावको जो तोहिं चाह । तोसों नहिं ह्वैहै निर्वाह ॥ बहुतक तपसी पचिपचि मुये । पै तिहि हरि दरशन नहिं हुए ॥ मैं हरिभक्त नाम मम नारद । मोसों कहो सु अपनो हारद ॥ राजा पास कहों सो जाई । लेहैं मान नृपति सत भाई ॥ ध्रुव विचार तब मनमें कियो । सुमिरत नारद दरशन दियो ॥ जब मैं भक्ति श्यामकी करिहौं । नहिं जानत जु कहा मैं पैहौं ॥ कह्यो सो नारद करो सहाई ॥ करों भक्ति हरिकी चित लाई ॥ तुम नारा-यण भक्त कहावत । काहेको तुम मोहिं फिरावत ॥ तब नारद ध्रुवको दृढ देखि । कह्यो देउँ मैं ज्ञान विशेषी ॥ मथुरा जाय सु सुमिरन करो । अरु हरिध्यान हृदयमें धरो ॥ मथुरा जाइ सोई उन कियो । तब नारायण दरशन दियो ॥ ध्रुव अस्तुति कीनी बहुभाई । तब हरिजू बोले मुसुकाई ॥ ध्रुव जो तेरी इच्छा होई । मांग लेहु मोसों अब सोई ॥ प्रभु मैं तुमरो दरशन लह्यो । मांगनको पाछे कहा रह्यो ॥ हरि कह्यो राज्य हेतु तप कियो । ध्रुव प्रसन्न होइ मैं तोहिं दियो ॥ अरु तेरे हित कियो अस्थान । देहिं प्रदक्षिण जहँ शशि भान ॥ ग्रह नक्षत्रहू त्योंही फिरै । तू भव अटल न कबहूं टरै ॥ अरु पुनि महाप्रलय जब होई । मुक्तिस्थान पाइहौ सोई ॥ यह कहि हरि निज लोक सिधारे । ध्रुव निजपुरको पुनि पग धारे ॥ जब ध्रुव पुरके बाहर आये । लोगन नृपको जाइ सुनाये ॥ उनके कहे न मनमें आई । तब नारद कह्यो नृपसों जाई ॥ ध्रुव आयो हरिसों वर पाई । राजा ताहि जाहि मिलि धाई ॥ नृप सुनि मन आनन्द बढ़ायो । अंतःपुरमें जाइ सुनायो ॥ पुनि नृप कुटुंब सहित तहँ आये । नगर लोग सब सुनि उठि धाये ॥ ध्रुव राजाके चरणन परचो ॥ राजा कंठ लाइ हित करचो ॥ पुनि सु सुरुचिके चरणन परचो । तासों वचन ध्रुव उच्च-रचो ॥ तुम उपदेश मैं हरिहि धियायो । यह उपकार न जात मिटायो ॥ पुनि माताके

पाँइन परचो । माता ध्रुवको अंकमें भरचो ॥ ध्रुव नृप सिंहासन बैठाए । नृप तपकारण बनहि सिधाये ॥ सप्तद्वीप राज्य ध्रुव कियो । शीतल भयो मातको हियो ॥ यों भयो ध्रुव बर देन अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ८ ॥

राग असावरी ॥ ध्रुव विमाता वचन सुनि रिसायो ॥ दीनके द्याल गोपाल करुणामई मातुसों सुनि तुरत शरन आयो ॥ बहुरि जब वन चल्यो पंथ नारद मिल्यो कृष्ण निज धाम मथुरा बतायो । मुकुट शिर धरे बनमाल कौस्तुभ गरे चतुर्भुज श्याम सुंदर धियायो॥ भये अनुकूल हरि दियो तेहि तुरत बर जगत करि राज पद अटल पायो ॥ सूरके प्रभुकी शरन आयो जु नर करि जगत भोग वैकुंठ सिधायो ॥ ९ ॥

पृथु अवतार वर्णन राग बिलावल ॥ धारि पृथुरूप हरि राज्य कीयो । विष्णु की भक्ति परमान जगमें करी प्रजाको सुख सकल भांति दीयो ॥ वेन नृप भयो बलवंत जब पृथ्वी वर ऋषिनसों कह्यो जप तप निवारों । होइ तिहिको पतन शाप ताको दयो मारिकै ताहि जगदोष ढारचो॥ भयो प्रगट आराज तब सब ऋषिन मंत्र करि वेनकी जांघको मथन कीनो ॥ जांघके मथेते पुरुष परगट भयो श्याम तिहि भीलको राज्य दीनो ॥ बहुरि जब ऋषिन भुज दक्षिन मथन कियो लक्ष्मी सहित पृथु दरश दीयो । पहिरि आभरन पुनि राज्य लागे करन आनि सब प्रजा दंडवत कीयो ॥ बहुरि बंदी जननि आय अस्तुति करी इन्द्र अरु बरुन तुम तुल्य नाहीं । कह्यो नृप बिना प्राक्रम न अस्तुति करौ बिना किए मूढ सुनि हर्ष जाहीं ॥ करो भगवानको यश सदा गुणीजन जो जगत सिंधुते पार तारै । किये नरकी अस्तुति कौन कारज सरै करे सु आपनो जन्म हारै ॥ कह्यो नित तुम्हें हम मनुष जानत नहीं जगतपि तु जगत हित देह धारचो ।करोगे काज जो कियो न काहू नृपति किए जस जप हम दोष सारो॥ बहुरि सब प्रजा मिलि आय नृपसों कह्यो बिना आजीविका मरत सारी ॥ नृप धनुष बाण लै पृथ्वीपर कोप कियो तिन गऊरूप बिनती उचारी॥ बेनके राज्यमें औषधी गिलगई होइ है सकलकिरपा तुम्हारी । पर्वतनि जहां तहां रोकि मोकों लियो देहु करि कृपा एक दिशा टारी॥ धनुषसों टारि पर्वत कियो एक दिश पृथ्वी सम करि प्रजा सब बसाई । सुर ऋषिन नृपति यों पृथ्वी दोहन करी आपुनी जीविका सबन पाई ॥ बहुरि नृप यज्ञ निन्यनवे करी शत यज्ञको जबहि आरम्भ कीनो । इन्द्र भय मान हय गहन सुतसों कह्यो सो न लै सक्यो तब आप लीनो ॥ नृपति सुतसों कह्यो जाइ हय ल्याव अब इंद्र तिहि देखि हय छांड़ दीनो । नृप कह्यो सुरनके हेतु मैं यज्ञ करत इन्द्र मम अश्व किहि काज लीनो ॥ ऋषिन कह्यो तुव शतमयज्ञ आरंभ लखि इन्द्रको राज्यहित कँप्यो हीयो । नृप कह्यो इन्द्र पुरकी न इच्छा मुझे ऋषिन तब पूर्ण आहुती दीयो ॥ यज्ञ पूरुष कह्यो कुंडते निकसि यज्ञ पूर्ण भयो इन्द्र जिमि बर कछू मांगि लीजै । पृथु कह्यो नाथ मेरे न कछु शत्रुता अरु न कछु कामना भक्ति दीजै ॥ यज्ञ पूरुष गए वैकुंठ धाम जब नौति नृप प्रजाको तब हँकारो । तिन्हें सन्तोषि कह्यो देहु मांगे मुझे विष्णुकी भक्ति सब चित्त धारो ॥ सुनत यह बात सनकादि आए तहां मान दै कह्यो मोहि ज्ञान दीजै ।

कह्यो यह ध्यान सुमिरन यहै निरखि हरि रूप मुख नाम लीजै ॥ पुनि कह्यो देहु आशीश मम प्रजाको सबै हरि भक्ति नित चित्त धारै । कृपा तुम करी मैं भेदको मन धरी नहीं कछु वस्तु ऐसी हमारे ॥ बहुरि सनकादि गए आपुने धामको नृपति सब लोग हरि भक्ति लाए । सूर प्रभु चरित अगनित न गने जाँय कछु यथामति आपुने कहि सुनाए ॥ १० ॥

पुरंजन कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ कथा पुरंजनकी अब कहों । तेरे सब संदेहै दहों ॥ प्राचिन बर्हि भूप इक भए । आयु प्रयंत यज्ञ तिहि ठये ॥ ताके मन उपजी गिल्यान । मैं कीनी बहु जियकी हानि ॥ यह मम दोष कवन विधि टरै । ऐसी भाँति सोच मन करै ॥ इहि अन्तर नारद तहँ आए । नृपसों यों कहि वचन सुनाए ॥ मैं अबहीं सुरपुर ते आयो । मगमें अद्भुत चरित लखायो ॥ यज्ञ माहिं जो पशु तुम मारे । ते सब ठाढ़े शस्त्रनि धारे ॥ जो हत हैं ये पंथ तुम्हारो । अब तुम अपनो आप सँभारो ॥ नृप कह्यो मैं ऐसोई कियो । यज्ञकाज मैं तिहि दुख दियो ॥ रसनाहीको कारज सारचो । मैं यों अपनो काज बिगारचो ॥ अब मैं यहै बिनय उच्चरौं । जो कछु आज्ञा होइ सो करौं ॥ कह्यो कहौं एक नृपकी कथा । उन जो कियो करो तुम तथा ॥ ताहि सुनौ तुम भली प्रकार । पुनि मनमें देखो जु विचार ॥ ता नृपको परमातम मित्र । इक छिन रहै नहीं सो अत्र ॥ खान पान सो सब पहुचावै । पैनृप तासों हित न लगावै ॥ नृप चौरासी लक्ष फिरि आयो । तब एहि पुर मानुष तनु पायो ॥ पुरको देखि परम सुख लह्यो । रानीसों मिलाप तहां भयो ॥ तिन पूँछचो तुम काकी अही । उन कह्यो मम सुमिरन नहिं रही ॥ पुनि कह्यो नाम कहा है तेरो । कह्यो न आवै नाम मोहि मेरो ॥ तन पुर जाय पुरंजन राव । कुमति तासु रानीको नांव ॥ आँख नाक मुख मूल द्वार । मूत्र शौच नव पुरको द्वार ॥ लिंह देह नृपको निज गेह । दश इद्रिय दासीसों नेह ॥ कारण तन सुशैन अस्थान । तहां अविद्या नारि प्रधान ॥ कामादिक पांचौ प्रतिहार । रहैं सदा ठाढे दरबार ॥ सन्तोषादि न आवै पावैं । विषयी भोग आइ हरषावैं ॥ जा द्वारे पर इच्छा होइ । रानी सहित जाइ नृप सोइ ॥ तहां तहांको कौतुक देखि । मनमें पावै हर्ष विशेखि ॥ इन्द्री दासी सेवा करैं । तृप्ति न होइ बहुरि विस्तरैं ॥ यहि इन्द्रको यहै सुभाइ । तृप्ति न होइ कितोई खाइ ॥ निद्रावश जो कबहूं सोवै । मिलि अविद्यासों सुधि बुधि खोवै ॥ उनमत ज्यौं सुख दुख नाहिं जानै । जागै वहै रीति पुनि ठानै ॥ सन्त दरश कबहूं जो होई । जग सुख मिथ्या जानै सोई ॥ पै कुबुद्धि ठहरान न देइ । राजाको अंकम भरिलेइ ॥ राजा पुनि तब क्रीडा करै । छन भर हू अन्तर नहिं धरै ॥ जब अखेट पर इच्छा होइ । तब रथ साजि चलै नृप सोइ ॥ जा द्वारे नृप इच्छा करै । ताही द्वार होइ निःसरै ॥ चक्ष्वादिक इन्द्री दर जानो । रूपादिक सब वनसम मानो ॥ मन मन्त्री सो रथ हँकवैया । रथमें पुण्य पाप दोउ पहिया ॥ अश्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच । विषय अखेटके नृप मन रांच ॥ राजा मन्त्रीसों हित मानै ।

ताके दुख सुख दुख सुख जानै ॥ नरपति ब्रह्मअंश सुखरूप । मन मिलि परचो दुःखके कूप ॥ ज्ञानी संगति उपजै जान । अज्ञानी सँग होइ अज्ञान ॥ मन्त्री कहै अखेट सो करै ।.विषय भोग जीवनि संहरै ॥ निशि भये रानी पै फिर आवै । सोवत सो तिहि बात सुनावै ॥ आजु कहा उद्यम करि आए । कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए ॥ कालिह जाय अस उद्यम करौं । तेरे सब भंडारनि भरौं ॥ सब निशि याही भांति बिहाई । दिन भये बहुरि अखेटक जाई ॥ तहां जीव नाना संहरै । विषय भोग तिहिको हत करै ॥ विषय भोग कबहूं न अघाई । यों हीं नृप नित आवै जाई ॥ एक दिन नृप निज मंदिर आयो । रानीसों अहनिशि मन लायो ॥ ताके पुत्र सुता बहु भए । विषय बासना नाना रये ॥ कान लागिके अस कह्यो जाइ । जरा कालकन्या पुर आइ । कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखे नृपति कहा धौं होइ ॥ देह शिथिल भई उठयो न जाई । मानौ दीनी कोट गिराई ॥ कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखो नृपति कहा धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दौ दीनी पुर लाई । जरन लगे पुर लोग लोगाई ॥ मरन अवस्थाको नृप जानै । तौहू धरै न मनमें ज्ञानै ॥ मम कुटुंबकी कहा गति होई । पुनि पुनि मूरख सोचै सोई ॥ काल भए तिहि पकर निकारचो । सखा प्राणपति तउ न सँभारचो ॥ रानीहीमें मन रहि गयो । मरि विदर्भकी कन्या भयो ॥ बहुरो तिन सतसंगति पाई । कहों सु कथा सुनो चित लाई ॥ मेघ ध्वजसों भयो विवाह । विष्णु भक्तिको तिहि उत्साह ॥ ता संगति नव सुत तिन जाये । श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाये ॥ या विधि तिहि निज आयु बिताई । पूर्व पाप सब गए बिलाई ॥ मरण अवस्था जब नजिकाई । ईश सखाके मन यह आई ॥ बहुत जन्म इन भ्रम भ्रम कीनो । पै इन मोको कबहुँ न चीनो ॥ तब दयालु है दरशन दीनो । कबहुँ मूढ़ तैं मोहिं न चीनो ॥ विषय भोगहीमें पगरह्यो । जान्यो मोहिं और कहुँ गयो ॥ मैं तो निकट सदाही रहौं । तेरे सकल दुखनको दहौं ॥ यह सुनिकै तिहि उपज्यो ज्ञान । पायो पुनि तिहि पद निर्वान ॥ यह कहि नारद नृपसों कही । तेरीहू तैसी गति भई ॥ मैं जु कहों सो देखि विचार । बिन हरिभजन नहीं निस्तार ॥ हरिकी कृपा मनुष्य तनु पावै । मूरख विषय हेतु सु गँवावै ॥ तिन अंगनको सुनो विवेक । खरची लाख मिलै नाहिं एक ॥ नैन दरश देखनको दिये । मूरख लखि परनारी जिए ॥ श्रवण कथा सुनिबेको दीने । मूरख परनिंदा हित कीने ॥ हाथ दए हरिपूजा हेत । तेहि कर मूरख परधन लेत ॥ पग दए तीरथ जैबे काज । तिनसों चलि नित करत अकाज ॥ रसना हरि सुमिरनको करी । ताकरि परनिन्दा उच्चारी ॥ यह सुनि नृप कीनों उनमान । मैं सुइ नृपति न दूसर आन ॥ नारद जू तुम कियो उपकार । डूबत मोहि उतारचो पार ॥ नृपति पाइ पुनि आतमज्ञान । राज्य छांडिकरि गए उद्यान ॥ यह लीला जो सुनै सुनावै । सूर हरि कृपा ज्ञानको पावै ॥ शुक ज्यों राजाको समुझायो । मैंहू ता अनुसार सुनायो ॥ ११ ॥

राग बिलावल ॥ अपुनपो आपुनहींमें पायो । शब्दहिं भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो ॥ ज्यों कुरंग नाभी कस्तूरी ढूँढ़त फिरत भुलायो । फिरि चेत्यो जब चेतन है

करि आपुनही तनु छायो ॥ राजकुँआर कंठ मणि भूषण भ्रम भयो कहूं गँवायो ॥ दियो बताइ और सत जन तब तनुको पाप नशायो । सपने माहिं नारिको भ्रम भयो बालक कहूं हिरायो । जागि लख्यो ज्योंको त्योंही है ना कहुँ गयो न आयो ॥ सूरदास समुझे की यह गति मनहीं मन मुसकायो । कहि न जाइ या सुखकी महिमा ज्यों गूँगो गुर खायो ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे श्रीसूरदासकृते चतुर्थः स्कन्धः समाप्तः ॥



अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर

पञ्चम स्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिचरणान शुकदेव शिरनाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरि कथा सुनौ चित धार । जाते तरो उदधि संसार ॥ ज्यों भयो ऋष देव अवतार । कहौं सुनो सो अब चितधार ॥ शुक वरण्यो जैसे परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ १ ॥

ऋषभदेव अवतार वर्णन । राग बिलावल ॥ ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजायो । ताते जन्म प्रियव्रत पायो ॥ प्रियव्रतके अग्नीध्र भयो । नाभि जन्म ताहीते लयो । नाभि नृपति सुतहित जग कियो । यज्ञपुरुष तब दरशन दियो ॥ विप्रन अस्तुति वेद सुनाई । पुनि कह्यो सुन त्रिभुवनके राई ॥ तुम सम पुत्र नाभिके होई । कह्यो मो सम जग और न कोई ॥ मैं हर्त्ता कर्त्ता संसार । मैं लैहौं नृपगृह अवतार ॥ ऋषभदेव तब जन्मे आई । राजाके मन भये बधाई ॥ बहुरो ऋषभ बडे जब भए । नाभि राज्य दे वनको गए ॥ ऋषभराज परजा सुख पायो । यश ताको सब जगमें छायो ॥ इन्द्र देखि ईर्षामन लायो । करिकै क्रोध न जल बरसायो ॥ ऋषभ देव तबहीं यह जानि । कह्यो इन्द्र यह कहा मन आनि ॥ निजबल योग नीर वरषायो । प्रजालोग अतिही सुख पायो । ऋषभराज मन सब उत्साह । कियो जयंतीसों पुनि व्याह ॥ तासों सुत निनानवे भए । भरतादिक सब हरि रँग रए ॥ तिनमें नव नवखंड अधिकारी । नव योगेश्वर ब्रह्मविचारी ॥ अंसी और इक द्विज व्रत लियो । ऋषभ ज्ञान सबहिनको दियो ॥ दृष्टमान नाश सब होई । साक्षी व्यापक नशै न सोई ॥ ताहीसों तुम चित्त लगावहु । ताको सेवि परमगति पावहु ॥ संत संग सेवो हरि शरना । ताते संत संग नित करना ॥ बहुरो देकर भरतहिं राज । ऋषभ ममत्व देहको त्याज ॥ उनमत भै ज्यों बिचरण लागे । अशन बसनकी सुरति तियागे ॥ कोउ खवावै तौ कछु खाहीं । नातरु बैठेई रहि जाहीं ॥ मूत्र पुरीष अंग लपटावै । सुगंध वास दश योजन जावै ॥ अष्ट सिद्धि बहुरो तहँ आई । ऋषभदेवपै मुख न लगाई ॥ राजा रहत हुतो तहां एक । भयो श्रावगी ऋषिको देख ॥ वेद पुरानै तजि न अन्हावै । प्रजा सकलको यहै सिखावै ॥ अबहूं श्रावग ऐसो करैं । ताहीको मारग अनुसरैं ॥ अंतः क्रिया रहित नहिं जानैं । बाहर क्रिया देखि मन मानैं ॥ वरण्यो ऋषभदेव अवतार । सूरदास भागवत अनुसार ॥ २ ॥

जडभरत कथा वर्णन राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ ऋषभदेव जब वनको गए । नव सुत नवो खंड नृप भये ॥ भरत सु भरत-खंडको राव । करै सदाहि धर्म अरु न्याव ॥ पालै प्रजा सुतनकी नांई । पुरजन बसैं सदा सुख पाई ॥ भरतहु दे पुत्रनको राज । गये बनको तज राजसमाज ॥ तहां करी नृप हरिकी सेवा । भये प्रसन्न देवन के देवा ॥ यक दिवस गंडकि तट जाई । करन लग्यो सुमिरन चित लाई ॥ गर्भवती हरिनी तहां आई । पानी सो पीवन नाहिं पाई ॥ सुनी सिंह भय मान अवाजि ! मारि फलाँग चली वह भाजि ॥ कूदत तनु ताको छुटिगयो । ताके छौना सुन्दर भयो ॥ भरत दया ता ऊपर आई । ल्याये आश्रम ताहि लिवाई ॥ पोषे ताहि पुत्रकी नांई । खाइ आप तब ताहि खवाई ॥ सोवै जब तब ताहि सो आवै । तासों क्रीडत अति सुख पावै ॥ सुमिरन भजन बिसरि सब गयो । एक दिन मृगछौना कहिं गयो । ताके मोह भरत तब भयो । सब दिन विरह अग्नि अति तयो ॥ संध्या समय निकट नाहिं आयो । ताके ढूँढन हित उठि धायो । पग को चिह्न पृथ्वी पर देखि । कहो पृथ्वी जहां धन पगरेखि ॥ बहुरौ देख्यो शशिकी ओर । तामें देख्यो श्यामता कोर ॥ कहन लगो मम सुत शशि गोद । तासेती शशि करत विनोद ॥ ढूँढत २ बहु श्रम पायो । पै मृगछौना नहिं दरशायो ॥ मृगको ध्यान हृदय नहिं गयो ॥ भरत देह तजिके मृग भयो ॥ पूरब जन्म ताहि सुधि रही । आप आपसों तब यह कही ॥ मैं मृगछौनामें चित दयो । ताते मैं मृगछौना भयो ॥ अब काहूसे संग न करौं । हरिचरणार-विन्द उर धरौं ॥ संग मृगनिहू को नहिं करैं । हरे घासहू सो नहिं चरै ॥ सूखे पात रु तिनके खाई । या विधि डारचौ जन्म बिताई ॥ मृगतनु तजि ब्राह्मण तनु पायो । पूर्व जन्म तहां सुमिरन आयो ॥ मनमें यहै बात ठहराई । होय असंग भजौं यदुराई ॥ पिता पढावै सो नहिं पढै । मनमें रामराम नित रटै । पिता तासु कालवश भयो । भ्रातनिहूँ श्रम बहु विधि टयो ॥ पै सो हरि हरि सुमिरत रहै । और कछू विद्या नहिं गहै ॥ जड-स्वरूप सो जहँ तहँ फिरै । असन बसनकी सुधि नाहिं धरै ॥ जैसो देहि सु तैसो खाई । नाहिं तो भूखोई रहि जाई ॥ कृषिरक्षक भाइन तब कीनो । उन तहां हरिचरणन चित दीनो ॥ तहँ हीं अन्न देहिं पहुँचाई । जो न देहिं भूखो रहिजाई ॥ भीलराव नीजलोगनि कह्यो । मैं कालीसों यह प्रण गह्यो ॥ तुव प्रसाद मम गृह सुत होई । नर बलि देहुँ भयो वर सोई ॥ तुम काहू धन दै लै आवहु । मेरे मनकी आश पुजावहु ॥ ते खोजतखोजत तहँ आए । जहां जडभरत कृषीमें छाये ॥ देख्यो भरत तरुण अति सुंदर । स्थूल शरीर रहित सब द्वंदर ॥ निजनृपपास बांधि लै आए । नृप तेहि देखि बहुत सुख पाए ॥ विप्रन कह्यो ताहि अन्हवावहु । याके अंग सुगंध लगावहु ॥ तिहि देवी मंदिर लै गए । खड्ग रावके कर तिन्हि दए ॥ जब राजा तिहिं मारन लाग्यो । देवी काली मन धगधाग्यो ॥ हरिजन मारे हत्या होई । ज्यों नहिं मरै करौं अब सोई ॥ देवी निकसि रावको मारचो । भरत साथ यह वचन उचारचो ॥ जाने बिना चूक यह भई । मैं उनसों ऐसी नाहिं कही ॥

विप्रन वेदधर्म नाहिं जान्यो । ताते उन ऐसो बलि ठान्यो ॥ यह सुनि ह्यांते भरत सिधायो । राजासों शुक कहि समुझायो ॥ नहीं त्रिलोकी ऐसो कोई । भक्तनको दुख दै सकै जोई ॥ ज्यों शुकनृपको कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं करिगायो ॥ ३ ॥

जडभरत-रहूगण गोष्ठ वर्णन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ॥ हरि-चरणारविंद उर धरो ॥ नृपति रहूगणके मन आई । सुनिय ज्ञान कपिलसों जाई ॥ चढि सुख आसन नृपति सिधायो । तहां कहरि एक दुखपायो ॥ भरत पंथ पर देख्यो खरचो । वाके बदले ताके धरचो ॥ तिनसों भरत कछु ना कह्यो । सुख आसन कांधेपर गह्यो ॥ भरत चले पथ जीव निहार । चलै नहीं ज्यों चलैं कहार ॥ नृपति कह्यो मारग सम आह । चलत न क्यों तुम सूधो राह ॥ कह्यो कहारन हमैं न खोरि । नयो कहार चलत पग झोरि ॥ कह्यो नृपति मोटो तू आहि । बहुत पंथहू आयो नाहिं ॥ तू जो टेढो टेढो चलत । मरिवेकी नाहिं भय हिय धरत ॥ ऐसी भांति नृपति बहु भाखी । सुनि जडभरत हृदयमें राखी ॥ मन मन लाग्यो करन विचार । हर्ष शोक तनुको व्यवहार ॥ जैसो करै सो तैसो लहै ! सदा आत्मा न्यारो रहै ॥ नृप कह्यो मैं उत्तर नाहिं पायो । मेरो न कह्यो मनमें लायो ॥ नृप दिशि देखि भरत मुसुकाये । बहुरो याविधि कहि समुझाए ॥ तुम कह्यो तैं है बहुत मोटायो । और बहुत मारग नाहिं आयो ॥ टेढ़ो टेढ़ो क्यों तू जात । सुनो नृपति मोसों यह बात ॥ जिय करि कर्म जन्म बहु पावै । फिरत फिरत बहुते श्रम आवै ॥ अरु अजहूं न कर्म परिहरै । जाते इहिको फिरिबो टरै ॥ तनु स्थूल अरु दूबर होइ । परम आत्मको ए नाहिं दोइ ॥ तनु मिथ्या क्षणभंगुर जानो । चेतन जीव सदा थिर मानो ॥ जीवको सुख दुख तनुसँग होई । जोर विजोर तनके सँग सोई ॥ देहअभिमानी जीवहिं जानै । ज्ञानी जीव अलिप्तकरि मानै ॥ तुम कह्यो मरिवेको तोहिं चाह ॥ सबकाहूको है यह राह ॥ कहा जानि तुम मोसों कह्यो । यह सुनि ऋषि-स्वरूप नृप लह्यो ॥ तजि सुखपाल रह्यो गहि पाइ । मैं जान्यों तुम हौ ऋषिराइ ॥ भृगु कै दुर्वासा तुम होहु । कपिल कै दत्त कहो तुम मोहु ॥ कबहूं सुर कबहूं नर होई । कबहूं राव रंक जिय सोई ॥ जीव कर्म करि बहु तनु पावै । अज्ञानी तिहि देखि भुलावै ॥ ज्ञानी सदा एक रस जानै । तनके भेद भेद नाहिं मानै ॥ आत्म सदा अजन्म अविनासी । ताको देह मोह बड़ फांसी ॥ ऋषभ पुत्र भरत मम नाम । राज्य छांडि लियो वन विश्राम ॥ तहँ मृगछौनासों हित भयो । नरतनु तजिकै मृगतनु लह्यो । अब मैं जन्म विप्रके पायो । सब तजि हरिचरणन चित लायो ॥ ताते ज्ञानी मोह न करै । तनु कुटुंबसों हित परिहरै ॥ जबलगि भजै न चरण मुरारी । तब लगि होइ न भवजलपारी ॥ भव जलमें नर बहुदुख लहै । पै वैराग तबहुँ नहिं गहै ॥ सुत कलत्र दुर्वचन जु भाषै । तिन्हैं मोहवश मन राखै ॥ जो वै वचन और कोउ कहैं । तिनको सुनिकै सहि नाहिं रहै ॥ पुत्र अन्याय करै बहुतेरे । पिता एक अवगुण नाहिं हेरे ॥ और जु एक करै अन्याइ । तिहि बहुअवगुण देइ लगाइ ॥ इक मन अरुज्ञानेन्द्री पांच । नरको सदा नचावै नाच ॥ ज्यों मग चलत चोर धन हरै ।

त्यों एक सुकृत धनहिं परिहरै ॥ तस्कर ज्यों सुकृतीधन लेहीं। अरु हरि भजन करन नहिं देहीं ॥ ज्ञानी इनसों संग न करै। तस्कर जानिदूरि परिहरै ॥ नृपयह सुनि भरतै शिरनाई। बहुरि कह्यो यां भांति सुनाई ॥ नरशरीर सुर ऊपर आहि। कहैं ज्ञान कहिए कहँ ताहि ॥ ताते तुमको करत दंडौत। अरु सब नरहूंको परनौत ॥ शुक कह्यो सुन यह नृपति सुजान। लेहु जान तजि देहअभिमान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सोऊ ज्ञान भक्तिको पावै ॥ शुकदेव ज्यों दियो नृपति सुनाई। सूरदास कह्यो याही भाई ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते पंचमः स्कन्धः समाप्तः।



अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

षष्ठस्कन्ध।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। आधे पल कहुँ जिन बिस्मरो ॥ शुक हरिचरणनको शिर नाय। राजासों बोल्यो या भाय ॥ कहौं हरि कथा सुनौ चित लाय। सूर तरयो हरिको गुण गाय ॥ १ ॥

अजामिल उद्धार वर्णन। राग बिलावल ॥ हरिहरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारबिंद उर धरो ॥ हरि हरि कहत अजामिल तरयो। ताको यश सब जग बिस्तरयो ॥ कहौं सु कथा सुनो चितलाय। कहै सुनै सो नर तरि जाय ॥ अजामिल विप्र कनौज निवासी। सो भयो वृषलीके गृहवासी ॥ जाति पाँति तिन सब बिसराई। भक्ष अभक्ष मिलै सो खाई ॥ ता वृषलीके दश सुत भए। पुत्र भूलि तिन गए ॥ लघु सुत नाम नारायण धरयो। तासों हेतु अधिक करि करयो ॥ काल अवधि जब पहुँची आइ। तब यम दीने दूत पठाइ ॥ नारायण सुत नाम उचारयो। यमदूतनि हरिगणनि निवारयो ॥ दूतन कह्यो बडो यह पापी। इनतो पाप किए हैं धापी ॥ विप्र जन्म इन जूवे हारयो। काहेते तुम हमैं निवारयो ॥ गणनि कह्यो इन नाम उचारयो। नाममहातम तुम न बिचारयो ॥ जान अजान नाम जो लेई। हरि वैकुंठवासा देई ॥ विन जाने कोउ औषधि खाई। ताको रोग सकल नशिजाई ॥ ज्यों त्यों हरि विनु जाने कहै। सो सब अपने पापनि दहै ॥ अग्नि बिना जानें कोउ गहै। तात कालसो ताको दहै ॥ दोउ पुरुषको नाम एक होई। एक पुरुषको बोलै कोई ॥ दोऊ ताको ओर निहारैं। हरिहू ऐसे भाव विचारैं ॥ हांसी में कोउ नाम उचारै। हरिजू ताको सत्य विचारै ॥ मैंहूं करि कोउ लहै जुनाम। हरिजू देहिं तिन्हैं निज धाम ॥ जा बन केहरि शब्द सुनावै। तावनते मृग जाहि परावै ॥ नाम सुनत यों पाप पराहीं। पापी हू बैकुंठ सिधाहीं ॥ यह सुनि दूत चले खिसिआई। कह्यो तिन्ह धर्मराजसों जाई ॥ अबलौं हम तुमहीको जानत। तुमहींको दंडदाता मानत ॥ आज गह्यो हम पापी एक। तिन भय मानत हमको देख ॥ नारायण सुत हेत उचारयो। पुरुष चतुर्भुज हमैं निवारयो ॥ उनसों हमरो कछु न बसायो। तातै तुमको आनि सुनायो ॥ औरो दंडदाता कोउ आही। हमसों क्यों न बतावै ताही ॥ धर्मराज करि हरिको ध्यान। निज दूतनसों कह्यो बखान ॥ नारायण सबके करतार। पालत अरु पुनि करत संहार ॥ ता सम द्वितिया और न कोई। जब चाहै पुनि साजै सोई ॥ ताको जब उन नाम उचारयो। तब हरिदूतन तुमैं निवारयो ॥ हरिके दूत जहां तहँ रहैं।

हम तुम उनकी सुधि नहिं लहैं ॥ जो जो मुख हरि नाम उचारैं । हरिगन तिहिं तिहिं तुरत उधारैं ॥ नाममहातम तुम नहिं जानौ नाममहातम सुनो वखानौं ॥ ज्यों ज्यों कोउ हरिनाम ऊचरै । निश्चयकरि सो तरै पै तरै ॥ जाके गृहमें हरिजन जाई । नाम कीर्तन करै सो गाई ॥ यद्यपि वै हरिनाउँ न लेहीं । तद्यपि तिहि हरि निजपद देहीं ॥ कैसोइ पापी क्यों नहिं होई । रामनाम चित्त उचरै सोई ॥ तुमरौ नहिं ता ठौर अधिकार । मैं तुमसों यह कही पुकार ॥ अजामेल हरिभक्तन देखि । मनमें कीनो हर्षविशेखि ॥ यमदूतनको इनहिं निवारचो । वाभयते मोहिं इन्हीं उबारचो ॥ तब मनमाहिं आनि वैराग । पुत्र कलत्र मोह सब त्याग ॥ हरिपदसे उन ध्यान लगायो । तातकाल वैकुंठ सिधायो ॥ अंत-काल जो नाम उचारै । सो सब अपने पापन जारै ॥ ज्ञानविराग तुरत तिहि होई । सूर विष्णुपद पावै सोई ॥ २ ॥

श्रीगुरुमहिमा वर्णन, बृहस्पति अनादरते विश्वरूप वृत्रासुर ब्राह्मण हत्या इन्द्रप्रति पुनि गुरुकृपा से इन्द्रासन प्राप्ति राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिगुरु एकरूप नृप जानि । तामे कछु संदेश न आनि ॥ गुरु प्रसन्न हरिप्रसन्न जोई । गुरुके दुखित दुखित हरिहोई ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धारि । कहै सुनै सो तरै भव पारि ॥ इन्द्र इक दिन निजसभा मँझारि । बैठ्योहुतो सिंहासन डारि ॥ सुर ऋषि सब गंधर्व तहां आए । पुनि कुबेरहू तहां सिधाए । सुरगुरुहूं तेहि औसर आयो । इन्द्र उठि तिन्हैं न शीश नवायो ॥ सुरगुरु लख्यो गर्व तिहिं भयो । तहँते फिर निज आश्रम गयो ॥ सुरपति तब लागे पछतान । मैं यह कहा कियो अज्ञान । पुनि निज गुरु आश्रम चलि गयो । तिहि सुरगुरु दरशन नहिं दयो ॥ यह सुन असुर इन्द्रपुर आए । किये इन्द्रसों युद्ध बनाये ॥ इन्द्र सहित तब सब सुर भागे । आश्रम अपने सबहिन त्यागे ॥ पुनि सब सुर ब्रह्मापै जाई । कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाई ॥ ब्रह्मा कह्यो बुरो तुम कियो । निज गुरुको आदर नहिं दियो ॥ अब तुम विश्वरूप गुरु करो । ता प्रसाद या दुखसों तरो ॥ सुरपति विश्वरूपपै जाइ । दोउ कर जोर कह्यो शिर नाइ ॥ कृपा करो मम प्रोहित होहु । कियो बृहस्पति मोपर कोहु ॥ कह्यो पुरोहित होत न भलो । जाततेज तप जप नशि सकलो ॥ पै तुम बिनती बहुविधि करी । ताते मैं मनमें यह धरी ॥ यह कहि इन्द्रहि यज्ञ करायो । गयो राज्य अपनो तिन पायो । असुरनि विश्वरूपसों कह्यो । भलो भाइ तू सुरगुरु भयो ॥ तुव ननसालमाहिं हम आहिं । आहुति हमैं देत क्यों नाहिं ॥ तिन्ह निमित्त तिहिं आहुति दई । सुरपति बात जानि यह लई ॥ करिकै क्रोध तुरत तिहि मारचो । हत्याहेत न मंत्र विचारचो ॥ चारि अंश हत्याके किए । चारों अंश बांटि पुनि दिन ॥ एक अंश धरतीको दियो । ऊसरमाहिं अन्न नहीं भयो ॥ एक अंश वृक्षनको दीनो । गोंद होइ प्रकाश तिन कीनो ॥ एक अंश जलको पुनि दयो । ह्वैकरि काई जलको छयो ॥ एक अंश सब नारिन पायो । तिनको ह्वै रजस्वला छायो ॥ त्वष्टा विश्वरूपको बाप । दुखित भयो सुनि सुत संताप ॥ तिन करि क्रोध इक जटा उपारी । वृत्रासुर उपज्यो बल भारी ॥ सो सुरपतिको मारन धायो । सुरपतिहू ता सन्मुख आयो ॥ जेतक शस्त्र किए प्रहार ।

सो करि लिए असुर आहार ॥ तब सुरपति मनमें भयमान । गयो तहां जहां श्रीभगवान॥ नमस्कार करि बिनय सुनाई । राखि राखि अशरन शरनाई ॥ कह्यो भगवान उपाय न आन.। ऋषि दधीचि हाड़ लै दान ॥ ताको तुम निज वज्र बनाव । मरिहै असुर तिसीके घाव ॥ तब सुरपनि ऋषिके ढिग जाई । करी बिनय बहु शीश नवाई ॥ बहुरि कही अपनी सब कथा । हरि ज्यों कह्यो कह्यो पुनि तथा ॥ तिन कह्यो देह मोहि अति प्यारी । सुरपतिहू यह देखि विचारी ॥ यह तनु क्यों ही दियो न जावै । और देत कछु मन नहिं आवै ॥ पै यह अंत न रहिहै भाई । परहित देहुँ तो होइ भलाई ॥ तनु देवेते नाहिन भजों । योग धारना करि यह तजों ॥ गउ चटाइ मम त्वचा उपारो । हाड़नको तुम वज्र संवारो ॥ सुरपति ऋषिकी आज्ञा पाई । लियो हाड़ कियो वज्र बनाई ॥ गोमुख अशुचि तबै ते भयो । ऋषि शुकदेव नृपतिसों कह्यो ॥ इंद्र आइ तब असुर प्रचारयो । कियो युद्ध पै असुरन मारयो ॥ इन्द्र हाथते बज्र छिनाई । मारयो ऐरावतको जाई ॥ ऐरावत घायल जब भयो । तब वृत्रासुरको सुख भयो ॥ ऐरावतको अमृत प्याए । भयो सुचेत इंद्र तब धाये ॥ वृत्रासुरको बज्र प्रहारयो ॥ तिन तिरशूल इंद्रको मारयो ॥ लगत त्रिशूल इंद्र मुरझायो । करते अपनो वज्र गिरायो ॥ कह्यो असुर सुरपति संभारि ॥ लैकर वज्र मोहिं परहारि ॥ जो मरिहौं तौ सुरपुर जैहौं । जीते जगतमांहिं यश लैहौं ॥ हारि जीति नहिं जयके हाथ । कारण करता आपहि साथ ॥ हमें तुमें पुतरीके भाइ । देखत कौतुक विविध नचाइ ॥ तब सुरपति लै वज्र संहारयो । जै जै शब्द सुरन उच्चारयो ॥ पै इंद्रहि संतोषन भयो । ब्राह्मण हत्या दुःखहि तयो ॥ सो हत्या तिहि लागी धाइ । छपो सुकमल नालमें जाइ ॥ सुरगुरु जाइ तहांते ल्यायो । तासों हरि हित यज्ञ करायो ॥ यज्ञ किए हत्या गइ बिलाइ । यों नृप बहुरि इंद्रपुर आइ ॥ नृप यह सुनि शुकसों पुनि कही । ज्ञानबुद्धि असुरहि क्यों भई ॥ शुककह्यो सुनो परीक्षितराइ । देहुँ तोहिं वृत्तान्त सुनाइ ॥ चित्रकेतु पृथ्वीपति राव । सुतहित भयो तासु हिय चाव ॥ यद्यपि रानी बरी अनेक । पै तिहिते सुतभयो न येक ॥ तागृह ऋषि अंगिरा सिधाये अर्घ्यासन दै तिन बैठाये ॥ ऋषिसों नृप निज व्यथा सुनाई । कह्यो मोहिं सो करो उपाई ॥ ऋषि कह्यो पुत्र न तेरे होई । होइ कहूँ तो दुख दे सोई ॥ नृप कह्यो यक बार सुत होई । पाछे होनी होइ सो होई ॥ ऋषि ता नृपसों यज्ञ करायो । दै प्रसाद यह वचन सुनायो ॥ जा रानीको तू यह दैहै । ता रानीसेती सुत ह्वैहै ॥ तब रानीको सो नृप दियो तिन प्रणाम करि भोजन कियो ॥ ऋषि प्रसादते सुत तिन जायो । सुत लडाइ दंपति सुख पायो ॥ विप्र याचकन दीनो दान । कियो उत्सव कहा करौं बखान ॥ ता रानी सों नृप हित भयो । और तियनिको मन अतितयो ॥ तिन सबहिन करि मंत्र उपाई । नृपति कुँवर को जहर पिआई ॥ बहुत बेर भइ कुँवर न जाग्यो । दासीसों रानी तब भाष्यो ॥ ल्याव कुँवरको वेगि जगाय । दूध प्यायके बहुरि सोवाय ॥ दासी कुँवर जगावन आई । देख्यो कुँवर मृतककी नाई ॥ दासी बालक मृतक निहारी । परी धरणिपै खाइ पछारी ॥ रानी तब तहां धाई आई । सुत मृत देखि गिरी मुरछाई ॥ पुनि रानी जब सुरति सँभारी

रुदन करन लागी अति भागी ॥ रुदन सुनत राजा तहँ आयो । देखि कुँवरको अति दुख पायो ॥ तबहीं मूर्छित हो नृप गिरे । कबहुँक सुतको अंकम भरे ॥ ऋषि नारद अँगिरा तहँ आये । राजासों यह वचन सुनाये ॥ को तू को यह देखि विचार । स्वप्न स्वरूप सकल संसार ॥ सोयो होय होय सत मानै । जो जागै सो मिथ्या जानै ॥ तातें वृथा मोत बिसारि । श्रीभगवान चरण उर धारि ॥ हम तुमसों पहिले ही कही । नृप सो बात आज भइ सही ॥ नृपको सुनि उपज्यो वैराग । बनको गयो राज सब त्याग ॥ बनमें जाइ तपस्या करी । मरि गंधर्व देह तिन धरी ॥ इक दिन सो कैलास सिधायो । शिवको दरशन तहां न पायो ॥ उमा नग्न देखी तिन जाई । दियो शाप ताही या भाई ॥ तू अब असुर देह धरि जाई । मेरो कह्यो वृथा नाहिं जाई ॥ उमा शाप ताको जब भयो । वृत्रासुर सो या विधि भयो ॥ हरिकी भक्ति वृथा नाहिं जाई । जन्म जन्म सो प्रगटे आई ॥ तातें हरि गुरु सेवा कीजे । मेरो वचन मानि यह लीजे ॥ ज्यौं शुक नृपसों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही करिगायो ॥ ३ ॥

गुरुमहिमा ॥ रागसारंग ॥ गुरु बिनु ऐसी कौन करै । माला तिलक मनोहर बाना लै शिर छत्र धरै ॥ भवसागरसे बूडत राखै दीपक हाथ धरै । सूरश्याम गुरु ऐसो समरथ छिनमें लै उधरै ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते षष्ठः स्कन्धः समाप्तः ॥ ६ ॥



अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर ।



सप्तमस्कन्ध ।

★

श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई । राजासों बोल्यों या भाई ॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाइ । सूर तरो हरिके गुण गाइ ॥ १ ॥

नरहरि नरहरि सुमिरन करो । नरहरि पद नित हृदय धरो ॥ नरहरि रूप धरचो जो भाई । कहों सु कथा सुनो चितलाई ॥ हरि जब हिरण्याक्षको मारचो । दशन अग्र पृथिवीको धारचो ॥ हिरण्यकशिपु दुःसह तपकियो । ब्रह्मा आइ दरश तब दियो ॥ कछू तोहिं इच्छाजो होई । माँगिलेहि वरदेहुँ अब सोई ॥ राति दिवस नभ धरणि न मरौं । अस्त्र शस्त्र परिहार न धरौं ॥ तेरी सृष्टि जहाँ लगि होई । मोको मारिसकै नाहिं कोई ॥ कह्यो ब्रह्मा ऐसेही होई । पुनि हरि चाहै करि है सोई ॥ यह कह ब्रह्मा निजपुर आए । हिरण्यकशिपु निज भौन सिधाए ॥ भवन आइ त्रिभुवनपति भए । इंद्र वरुण सबही भजि गए ॥ ताके पुत्र भए प्रह्लाद । भयो असुर मुनि अति अह्लाद ॥ पांच वरषकी भई आइ । षंडमार्का लिए बुलाइ । तिनके सँग चटशाल पठायो । राम नामसों तिन चित लायो ॥ षंडामर्क रहे पचिहार । राजनीति कह्यो बारंबार ॥ कह्यो प्रहलाद पढत मैं सार । कहा पढावत और जंजार ॥ जब पांडे इत उत कहिं गए । बालक सब इकठौर भए ॥ कह्यो यह ज्ञान कहां तुम पायो । नारद मातागर्भ सुनायो ॥ सबनि कह्यो देहु हमैं सिखाई । सबहुनकै मति ऐसी आइ ॥ कह्यो सबनिसे तब समुझाई । सब तजि भयो चरण रघुराई ॥ रामहिं राम पढो रे भाई । रामहिं जहँ तहँ होत सहाई ॥ इहां कोऊ काहूको नाहिं । असंबंध मिलत जगमाहिं ॥ काल अवधि जब पहुंचे आइ । चलत बेर कोउ संग न जाइ ॥ सदा संगती श्री यदुराई । भजिये ताहि सदा लवलाई ॥ हर्ता कर्ता आपै सोई । घट घट व्यापि रह्यो है जोई ॥ ताते द्वितीया और न कोई । ताके भजे सदासुख होई ॥ दुर्लभ जन्म सुलभही पाई । हरि न भजै सो नरकहि जाई । यह जिय जानि विषय परिहरो । राम नाम ही सदा उच्चरो ॥ शत संवत मनुष्यकी आई । आधीतो सोवत ही जाई ॥ कछु बलपन में बीतै । कछु विरधापनमाहिं व्यतीतै ॥ कछु तप सेवा करत विहाई । कछुइक विषय भोगमें जाई ॥ ऐसेही जो जन्म सिराई । बिन हरि भजन नरकमें जाई ॥

बालपनो गए ज्वानी आवै। वृद्ध भये मूरख पछतावै ॥ तीनों पन पुनि ऐसहि जाई। ताते अबहिं भजो यदुराई ॥ विषय भोग सब तनमें होई। बिनु नरजन्म भक्ति नहिं होई ॥ जो न करै सो पशुसम होई। ताते भक्ति करो सब कोई ॥ जबलगि काल न पहुँचै आई। हरिकी भक्ति करो चित लाई ॥ हरि व्यापक है सब संसार। ताहि भजो ऐसही बिचार ॥ शिशु किशोर वृद्धतनु होई। सदा एक रस आतम सोई ॥ जांनि ऐसो तनु मोहै त्यागो। हरिचरणारविन्द अनुरागो ॥ माटीमें जो कञ्चन परै। त्यों ही आतम तनु संचरै ॥ कंचनते जो माटी तजै। त्यों तनु मोह छांड़ि हरि भजै ॥ नरसेवाते जो सुख होई। क्षणभंगुर थिर रहै न सोई ॥ हरिकी भक्ति करो चित लाई। होई परम सुख कबहुँ न जाई ॥ ऊँच नीच हरि गिनत न दोइ। यह जिय जानि भजो सब कोइ ॥ असुर होइ सुर भावै होई। जो हरि भजै पिआरो सोई ॥ रामहिं राम कहौ दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात ॥ सौ बातनकी एकै बात। सब तजि भजो द्वारकानाथ ॥ सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरि पद चित लाई ॥ हरि हरि नाम सदा उच्चारैं। विद्या और न मनमें धारैं। तब षण्डमर्का संक्याय। कह्यो असुरपतिसों पुनि जाय ॥ तव सुतको पढाय हम हारे। आप न पढै अरु औरं बिगारे ॥ राम नाम नित रटिबो करै। राजनीति नहिं मनमें धरै ॥ ताते कह्यो तुमें हम आइ। करनी होय सो करो उपाइ ॥ हिरनकशिपु तब सुतहिं बुलायो। कछुक प्रीति कछु डर दिखरायो ॥ बहुरो गोदमाहि बैठारि। कह्यो कहः पढ्यो विद्या सारि ॥ सार वेद चारोंका जोई। छहो शास्त्र सार पुनि सोई। सर्व पुराण माहिं जो सार। राम नाम मैं पढ्यो सँभार ॥ कह्यो याको लेजाई उठाई। सुमिरत मम रिपुको चित लाई। मेरी ओर न कछू निहारो। याको पावक भीतर डारो ॥ जो ऐसे करते नाहिं मरै। डारि देहु गज मैंमत तरे ॥ पर्वतसे इहि देहु गिराई। मरै जौन विधि मारो जाई ॥ असुर चले तब कुँवर लिवाय। हरिजू ताकी करै सहाय ॥ करै उपाउ सो वृथा जाइ। नृपकी आज्ञा लियो उठाइ ॥ कुँवर रह्यो हरिपद चितलाइ। असुरनि गिरिते दियो गिराइ। राखि लियो तिन त्रिभुवनराइ ॥ तब गज मैमत आगे डार्यो। राम नाम तब कुँवर उचार्यो ॥ गज दोउ देत टूटि धर परे। देख असुर यह अचरज करे। बहुरो नाग दयो लपटाइ। जिनके ज्वाला गिरि जरि जाइ ॥ हरिजू तहँहू करी सहाइ। नाग रह्यो शिर नीचे नाइ ॥ पुनि पावकमें दियो गिराय। हरि जू ताकी कियो सहाय ॥ करै उपाइ सु विरथा जाइ। तब सब असुर रहे खिसियाइ ॥ कह्यो असुरपति सों पुनि जाइ। मरत नहीं यह कियो उपाइ ॥ हम तो बहुत भांति पचिहारे। यह तो रामहि राम उचारे ॥ नृप कह्यो मन्त्र यन्त्र कछु आहि। कै छल करत कछू तू आहि। तोको कौन बचावत आइ। सो तू मोको देहि बताइ ॥ मन्त्र यन्त्र हरि नाम। घट घटमें जाको विश्राम ॥ जहां तहां सोइ करत सहाइ। तासों तेरो कछु न बसाइ ॥ कह्यो कहां सो मोहिं बताइ। नातर तेरो जिय अब जाइ ॥ जो सब ठौर खम्भहूँ होइ। कह्यो प्रह्लाद आहि तू जोहि ॥ हिरण्यकशिपु क्रोध मन धार्यो। जाइ खम्भको मुक्का मार्यो ॥ फटि तब खम्भ भयो द्वै फारि। निकसे हरि नरहरि बपु धारि ॥ निरखि असुर चकृत ह्वै गयो। बहुरि गदा लै सन्मुख भयो ॥ हरि तासों कियो युद्ध बनाइ। तब सुर मनमें

गयो डराइ ॥ सन्ध्या समय भयो जो आइ । हरिजू ताको पकरयो धाइ । निज जांघन पर ताहि पछारयो । नखन साथ तब उदर बिदारयो ॥ जयजयकार दशो दिश भयो । असुर प्राण तजि हरिपुर गयो ॥ ब्रह्मादिक सब रहे अरगाइ । क्रोध देखि कोउ निकट न जाइ ॥ बहुरो ब्रह्मा सुरन समेत । नरहरिजूके जाइ निकेत । करि दण्डवत विनय उच्चारि । तुम अनन्तपराक्रम बनवारि । तुमहीं करत नरक निस्तार । उत्पति भरत करत संहार ॥ करो क्षमा कियो असुर संहार । गयो न क्रोध भरो सो भार ॥ महादेव पुनि विनय उचारी । नमो नमो भक्तन भयहारी ॥ भक्त हेतु तुम असुर सँहारो । श्रीनरहरि अब क्रोध निवारो ॥ क्रोध न गयो तब ऐसे कह्यो । क्षमो प्रलयको समय न भयो ॥ तौहूँ क्रोध न गयो विकारि । महादेव हू फिरे निहारि ॥ बहुरि इन्द्र अस्तुती उचारी । मुयो असुर सुर भये सुखारी ॥ ह्वैहै यज्ञ अब देव मुरारी । क्षमिये क्रोध सुरन सुखकारी ॥ पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई।डरौं देखि यह रूप निवांई । महाराज यह रूप दुरावहु । पुनि चतुर्भुज मोहिं दिखावहु । वरुन कुबेरादिक पुनि आए । करी विनय तिनहूं बहु भाए ॥ तौहूँ क्रोध क्षमा नहिं भयो । तब सब मिलि प्रहलादहिं कह्यो ॥ तुमरे हेतु हरि लियो अवतार । तुम अब जाइ करो मनुहार ॥ तब प्रहलाद हरि निकट आइ । करि दण्डवत परो गहि पाइ ॥ तब नरहरिजू ताहि उठाइ । ह्वै कृपालु बोल्यो या भाइ ॥ कहु जु मनो-रथ तेरो होइ । छांडि बिलम्ब करौं अब सोइ ॥ दीनानाथ दयालु मुरारी । मम हित तुम लीनो अवतारी । असुर अशुचि है मेरी जात । मोहिं सनाथ कियो तुम नाथ ॥ भक्त तुम्हारी इच्छा करै । ऐसो असुर कह्यो क्यों मरै ॥ भक्तन हित तुम धारी देह । तरिहैं गाइ गाइ गुण एह ॥ जग प्रभुत्व प्रभु देखा जोई । सो बिन तुम क्षणभंगुर होई ॥ इन्द्रादिक जाते भय करयो । सो मम पिता मृतक होइ परयो ॥ साधुसंग प्रभु मोको दीजै । तिहि संमत तुम भक्ति करीजै ॥ और न मेरी इच्छा कोय । भक्ति अनन्य तुम्हारी होय ॥ और जु मोपर कृपा करो । जो सब जीवनको उद्धरो ॥ जो कहा कर्मभोग जब करिहैं । तब ए जीव सकल निस्तरि हैं ॥ मम कृत इनके बदले लेहु । इसके कर्म सकल मोहिं देहु । मोको नरक माहिं लै डारो । पै प्रभुजू इनको निस्तारो ॥ पुनि कह्यो जीव दुखित संसारा । उपजत बिनसत बारम्बारा ॥ बिना कृपा निस्तार न होई । करो कृपा में मांगत सोइ ॥ प्रभु मैं देखि तुम्हैं सुख पावत । पै सुर देखि सकल डर पावत ॥ ताते महा भयानक रूप । अन्तर्ध्यान करो सुरभूप ॥ हरि कह्यो मोहिं विरदकी लाज । करो मन्वन्तरलों तुम राज ॥ राज लक्ष्मी मद नाहिं होइ ॥ कुल इकीस ले उधरे सोइ ॥ जो मम भक्त नरकमें जाइ ॥ होइ पवित्र ताहि परसाइ ॥ जा कुल माहिं भक्त मम होइ । सप्त पुरुष लै उधरै सोई ॥ पुनि प्रहलाद राज बैठाए । सब असुरन मिलि शीश नवाए ॥ नरहरि देखि हर्ष मन कीनो । अभयदान प्रहलादहिं दीनो ॥ तब ब्रह्मा बिनती अनुसारी । महाराज नरसिंह मुरारी ॥ सकल सुरनको कारज सरो । अंतर्ध्यान रूप अब करो ॥ तब नरहरि भे अंत-र्ध्यान । राजासों शुक कह्यो बखान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सूरदास हरि भक्ति सु पावै ॥ २ ॥

राग रामकली ॥ पढ़ौ भैया कृष्ण गोविंद मुरारी । कहै प्रहलाद सुनो रे बालक लीजै जन्म सुधारी ॥ कोहै हिरण्यकशिपु अभिमानी जोर सकै तुम मारी । राखनहार वहै कोउ और श्याम धरे भुज चारी ॥ कर्मरूप वसुदेव नारायण नहिं दीजै सु बिसारी ॥ सूरदास ताहिसे मीता कबहुँ न आवैहारी ॥ ३ ॥

राग कान्हरा ॥ जो मेरे भक्तन्ह दुखदाई । सो मेरे इहि लोक बसै निज त्रिभुवन छांड़ि अनत कहुँ जाई ॥ शिव विरंचि नारद मुनि देखत तिनहुँ न मोको सुरति दिवाई । बालक अबल अजान रहै वह दिन दिन देत त्रास अधिकाई ॥ खंभ फारि गलगाजि मत्त बल क्रोधमान छबि बरणि न जाई । नैन अरुन बिकराल दशन अति नखसों हृदय बिदारन आई ॥ कर जोरे प्रहलादजू बिनवैं बिनय सुनो अशरन शरनाई । अपनी रिसै बिसारि तात मम अपराधी सु परम गति पाई ॥ दीन दयालु कृपानिधि नरहरि अपनो जानि हृदय लियो लाई । सूरदास प्रभु पूरण ठाकुर कह्यो शुकहिं नामैं निरुआई ॥ ४ ॥

राग मारू ॥ ऐसीको सकै करि बिना मुरारी । कहत प्रहलादके धारि नरसिंहवपु निकसि आए तुरित खम्भ फारी ॥ हिरण्यकश्यपु निरखि रूप चकृत भयो बहुरि कर ले गदा असुर धायो ॥ हरि गदायुद्ध तासों कियो भली विधि बहुरि संध्या समय होन आयो ॥ गहि असुर धाइ पुनि जाइ निज जंघपर नखनिसों उदर डारचो बिदारी । देखि यह सुरन वर्षा करी पुहुपकी सिद्ध गन्धर्व जय ध्वनि उचारी ॥ बहुरि बहु भाइ प्रहलाद अस्तुति करी ताहि दै राज बैकुण्ठ सिधाए । भक्तके हेत हरि धरचो नरसिंह बपु सूर जन जानि यह शरन आए ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ॥ तब लगि हौं बैकुण्ठ न जैहौं । सुनु प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जब लगि तुम शिर छत्र न देहौं ॥ मन बच कर्म जान जिय अपने जहां जहां तहँ तहँ ऐहौं । निर्गुण सगुण होय सब देख्यों तोसो भक्त कहूं नहिं पैहों ॥ मो देखत मो दास दुखित भयो यह कलंक हौं कहां गँवैहों । हृदय कठोर कुलिशते मेरो अब नहिं दीन दयालु कहै हों ॥ गहि तनु हिरनकशिपुको चीरों फारि उदर तब रुधिर न हैहों । इहि हत मिटै कहै सूरज प्रभु या कृतको फल तुरत चखैहौं ॥ ६ ॥

श्रीभगवान शिव सहायवर्णन । राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उरधरो ॥ हरि ज्यों शिवकी करी सहाई ॥ कहौं सु कथा सुनो चितलाई ॥ एक समै सुर असुर प्रचारि । लरे भई असुरनकी हारि ॥ तिन ब्रह्माके हित तप कीनो । ब्रह्मा प्रकटि दरश तब दीनो ॥ तब ब्रह्मासों कह्यो शिर नाइ । जै हैहैं हमरी किहि भाइ ॥ ब्रह्मा तब यह बचन उचारचो । मय मायामय कोट सँवारचो । तामें बैठि सुरन जय करो । तुम उनके मारे नहिं मरो ॥ असुरन यह मयको समुझाई । तब मय दीनो कोट बनाई ॥ लोहतले मधरूपा लायो । ताके ऊपर कनक लगायो ॥ जहँ लैजाहि तहां वह जावै । त्रिपुर नाम सो कोट कहावै ॥ गढ़के बल असुरन जय पाई । लियो सुरनसों अमृत छिनाई ॥ सुर सब मिलि गए शिव शरनाई । शिव तब कीन्ही तिनैं सहाई ॥ पै शिव जाको

मारत धाई । अमृत प्याइ तिहिं लेहिं जिवाई ॥ तब शिव कीनो हरिको ध्यान । प्रगट भये तहां श्रीभगवान ॥ शिव हरिसों सब कथा सुनाई । हरि कह्यो अब मैं करों सहाई ॥ सुन्दर गऊरूप हरि कीनो । बछरा करि ब्रह्मा संग लीनो ॥ अमृत कुंडमें पैठी जाय । कह्यो असुरंन मारो या गाय ॥ एकनि कहयो याहि मत मारो । याको सुन्दर रूप निहारो ॥ कितन अमृत पीवै यहि भाई । हरिमति तिनकी फिर भर माई ॥ हरि अमृत पिय गए अकाश । असुर देखि यह भए उदास ॥ कह्यो इही हिरणाक्ष सुमारचो । हिरण्यकशिपु इनहिं संहारचो ॥ यासों हमरो कछु न बसाई । यह कहि असुर रहे खिसियाई ॥ शिव तब कीनो युद्ध अपार । पै असुरन नहिं मानी हार ॥ बाण एक हरि शिवको दियो । तासों सब असुरन क्षय कियो ॥ या विधि हरिजू करी सहाय ॥ मैं सो तुमसों दई सुनाय ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समझायो । सूरदास जन त्योंही गायो ॥ ७ ॥

नारद उत्पत्ति कथा वर्णन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ हरि भजि जैसो नारद भयो । नारद व्यासदेवसों कह्यो ॥ कहौं सु कथा सुनौ चित धार । नीच ऊँच हरिके इकसार ॥ गंधर्व ब्रह्मसभा मँझार । हँस्यो अप्सरा ओर निहार ॥ कह्यो ब्रह्मा दासीसुत होहि । सकुच न करी देखि तैं मोहि ॥ भयो दासीसुत ब्राह्मण गेह । तुरत छाँड़िके गंधर्व देह ॥ ब्राह्मणगृह हरिके जन छाए । दासी दास सेवहित लाये ॥ हरि जन हरि चरचा जो करै । दासीसुत सो हृदय धरै ॥ सुनत सुनत उपज्यो बैराग । कह्यो जाउं क्यों माता त्याग ॥ ताकी माता खाई कारे । सो मर गई शापके मारे ॥ दासी सुत वन भीतर जाई । करी भक्ति हरिपद चित लाई ॥ ब्रह्मापुत्र तनु तजि सो भयो । नारद यों अपने मुख कह्यो ॥ हरिकी भक्ति करै जो कोई । सूर नीचसों ऊंच सु होई ॥ ८ ॥

इति श्रीभागवते सूरसागरे सूरदासकृते सप्तमस्कंधः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर

अष्टम स्कन्ध।

राग बिलावल ॥ चालि ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई। राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहों हरिकथा सुनो चित-लाई। सूरदास हरिके गुण गाई ॥ १ ॥

गजमोचन अवतार ॥ राग बिलावल ॥ गजमोचन ज्यों भयो अवतार। कहौं सुनौ सो अब चित धार ॥ गंधर्व एक नदीमें जाय। देवल ऋषिके पकरचो पाय ॥ देवल कह्यो ग्राह तुम होहि। कह्यो गंधर्व दया करि मोहिं ॥ जब गजेंद्रके पग तू गहिहै। हरिजू ताको आनि छुडैहै ॥ भये सपर्श देवतनु धरिहै। मेरो कह्यो नहीं यह टरिहै ॥ राजा इंद्रद्युम्न कियो ध्यान। आयो अगस्त्य नहीं तिन जान ॥ दियो शाप गजेंद्र तू होहि ॥ कह्यो नृप दयाकरो ऋषि मोहिं ॥ कह्यो तुहि ग्राह आन जब धरिहै। तू नारायण सुमिरन करिहै ॥ याही विधि तेरी गति होई। भयो त्रिकूट पर्वत गज सोई ॥ कालहि पाइ ग्राह गज गह्यो। गज बल करि करिके थकि रह्यो ॥ सुत पत्नी हूं बलकरि रहे। छूट्यो नहीं ग्राहके गहे ॥ ते सब भूखे दुःखित भये। गजको मोह छाँडि उठिगए ॥ तब गज हरिकी शरणहि आयो सूरदास प्रभु ताहि छुटायो ॥ २ ॥

माधवजू गज ग्राहते छुडायो। निगमनि हूं मन वचन अगोचर प्रगटि स्वरूप दिखायो॥ शिव विरंचि सब देखत ठाढे बहुत दीन दुख पायो। बिन बदले उपकार करैको काहू कहत न आयो ॥ चितवत चितहीमें चिंता मणि चक्र लये कर धायो। अति करुणा करि करुणामैं हरि गरुडहूंको छुटकायो ॥ सुनियत सुयश जु निज जन कारन कहूं न गहर लगायो। ना जानों जु सूर इहि औसर कौन दोष बिसरायो॥ ३ ॥

राग बिलावल ॥ हरि कर चक्र धरे धर धावत ॥ गरुड़ समेत सकल सेनापति पाछे लागे आवत ॥ चलि ना सकत गरुड़ मन डरपत। बुद्धि बल बलहि बढावत। मनो पवनवश पत्र पुरातन अपनो चरण चलावत ॥ को जानै प्रभु कहाँ चलैहैं काहू कछु न जनावत। अति व्याकुल गति देखि देवगण सोचि सकल दुख पावत ॥ गजहित धावन जन मुकरावन वेद विमलयश गावत। सूर समुझि समुझव अनाथनि इहि विधि नाथ छुडावत ॥४॥

राग सारंग ॥ झांई न मिटन पाई आए हरि आतुर ह्वै जब जान्यो गज ग्राह लये जात जलमें। यादौपति यदुनाथ खगपति साथ जन जान्यो विहबल तब छांडि दयो थलमें ॥ नीरहूते न्यारो कीनो चक्र नक्रशीश छीनो देवकीके नन्दलाल ऐंचि भुवतलमें। कहै सूरदास देखि नैननकी मिटी प्यास कृपा कीनो गोपीनाथ आइगए पलमें ॥ ५ ॥

राग बिलावल ॥ अब हौं सब दिशि हेर रह्यो । राखत कोउ न नाथ कृपानिधि अति बल ग्राह गह्यो ॥ सुर नर सब स्वारथके गाहक कत श्रम आन करै उडुगण उदित तिमिर नहिं नाशत बिन रवि रूप धरै ॥ इतनी बात सुनत करुणामय चक्र गहे कर धाए । हत गजशत्रु सूरके स्वामी ताछिन सुखउपजाए ॥ ६ ॥

कूर्मअवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त ॥ राग बिलावल ॥ जैसे भयो कूर्मअवतार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ नरहरि हिरण्यकशिपु जब मारचो । अरु प्रह्लाद राज्य बैठारचो ॥ ताको सुत वैरोचन भयो । ताके बहुरि पुत्र बलि हुयो ॥ बलि सुरपतिको बहु दुख दयो । तब सुरपति हरिशरणनि गयो ॥ हरिजू अपनी बिरद सँभारचो । सूरज प्रभु कूरमतनु धारचो ॥ ७ ॥

राग मारू ॥ सुरन हेत हरि कच्छपरूप धारचो । मथन करि जलधिअमृत निकारचो ॥ चतुर्मुख त्रिदश तब बिनय हरिसों करी बलि असुरसों सुरनि दुःख पायो । दीनबंधू कृपाकरन अशरनशरन मंत्र यह तिनैं निज मुख सुनायो ॥ बासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठमें आपनी पीठ धारचो । असुरसों हेत करि करो सागर मथन तहांते अमृतको पुनि निकारचो ॥ रत्न चौदह बहुरि तहांते प्रगट होहिं असुरको सुरा तुम अमृत प्याऊं । जीतिहौ तब महाअसुर बलवंतको मैरें नाहिं देवता यों जिवाऊं ॥ इन्द्र मिलि सुरन बलिपास गयो बहुरि उन कह्यो कहो कि हि काज आयो । त्रिदश तब समुद्रके मथनकी बात जो हुति सो सकल कहिके सुनायो ॥ बलि कह्यो विलंब अब नेकु नहिं कीजिए मंदराचल अचल चलो धाई । दोउ इक मंत्र करि जाइ पहुँचे तहां कह्यो अब लीजिए इहि ऊँचाई ॥ मंदराचल उपारत भयो बहुत श्रम बहुरि लै चलनको जब उठायो । सुर असुर बहुत ता ठौरही मरिगए दुहूँको गर्व हरि यों नशायो ॥ तब दुहूँ ध्यान भगवानको धरि कह्यो बिन तुम्हारी कृपा गिरि न जाई ॥ वामकरसों पकरि गरुडपर राखि हरि क्षीरके जलधिपट धरचो जाई ॥ कह्यो भगवान अब बासुकी ल्याइए जाइ तिनि बासुकीसों सुनायो । मान भगवान आज्ञा सुआयो तहां नेति करि अचलको समुद्र पायो । मंदराचल समुद्र माहिं बूडनलग्यो तब बहुरि सबन अस्तुति सुनाई । कूर्मको रूप धरि धरि अचल पीठपर सुर असुर सकल मन भइ बधाई ॥ पूंछको तजि असुर दौरिके मुख गह्यो सुरन तब पूंछकी ओर लीनो । मथतभए छीन जब तबै अस्तुति करि श्रीमहराज निजशक्ती दीनी ॥ भयोहलाहल प्रगट प्रथमही मथत जब रुद्रको दयो तिहि कंठधारी । चन्द्रमाबहुरि जब मथत पायो प्रगट सोउ करिकृपा दीनो मुरारी ॥ कामना धेनु तब सप्त ऋषिको दई लई उन बहुत आनन्द कीने । अप्सरा पारजातक धनुष्य अश्व गज श्वेत ए पांच सुरपतिहि दीने। शंख अरु कौस्तुभ मणि लई आप हरि बहुरि पुनि लक्ष्मीदई दिखाई।परम सुंदर मनो तडित है दर्शनी कमलकी माल कर लए आई ॥ सकल भूषन मनिनके बने सकल अंग अरु बसन अरुन सुन्दर सुहाये। देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन कह्यो मैं बरवरों आप भाए । जो मुझे चहै मैं ताहि नाहीं चहौं असुरको राज थिर नाहिं देखों । तपसियनको कह्यो क्रोध इनमें हुवत

ज्ञानियनिमें न आचार पेखों ॥ सुरनको देखि कह्यो ए पराधीन सब देखि विधको कह्यो यह बुढायो । चिरंजीवनि देखि कह्यो न डराई ए लोकतिहुँ माहिं कोउ चित न आयो ॥ बहुरि भगवानको निरखि सुन्दर परम कह्यो इहिमाहिदै सब भलाई । पै न इच्छा इनैंहै कछू बस्तुकी अरु न ए देखिकै मोहिं लोभाई ॥ कबहुं किये भक्तिहूके न ए रीझिहैं कबहुंके बैरर रीझि जाहीं । और गुण चाहिये सो सकल हैं इन्हैं डारि दई माल कहि गरेमाहीं ॥ हरि कह्यो मम हृदय माहिं तुम रहो सदा सुरन मिलि देव दुन्दुभि बजाई । धन्य धनि कह्यो पुनि लक्ष्मीसों सकल सिद्ध गंधर्व जै ध्वनि सुनाई ॥ बहुरि धन्वंत्रि आयो समुद्रसे निकसि सुरा अरु अमृत पुनि संग लायो । भयो आनंद सुर असुरको देखिकै असुर करि बलहि अमृत छिनायो ॥ सुरन भगवानसों आइ बिनती करी असुर सब अमृत लै गए छिनाई । कह्यो भगवान चिंता न कछू मन धरो मैं करों अब तुम्हारी सहाई ॥ परस्पर असुर तब युद्ध लागे करन होय बलवंत सोई लै छिनाई । मोहिनी परूधरि श्याम आए तहां देखि सुर असुर सबहीं लोभाई ॥ आइ असुरन कह्यो लेहु यह अमृत तुम सबन दै बांटि मेटो लराई । हँसि कह्यो नहीं हम तुम कछू मित्रता बिना बिश्वास बांध्यो न जाई ॥ कह्यो तोहि बांट पर हमें बिश्वास है देह तुम बांट जो धर्म होई । कह्यो सब सुर असुर मिलि कियो दधि मथन देउ सब बांट है धर्म सोई ॥ कह्यो जो करो सो हमैं परमान है असुर सुरपांति करि तब बिठाई । असुर दिश जिते मुसकाइ मोहे सकल सुरनको अमृत दीनो पिलाई ॥ राहु शशि सूर्यके बीचमें बैठिकै मोहनीसों अमृत मांगिलीनो । सूर्य शशि कह्यो जब असुर यह कृष्णजू लै सुदर्शन सु द्वै टूक कीनो ॥ राहु शिर केतु धरको भयो तबहिंते सूर शशिको सदा दुःखदाई । करत भगवान रक्षा शशिउ सूरकी होत है सुदर्शन तब सहाई ॥ करि अंतर्ध्यान तब मोहनीरूपको गरुड़ असवार ह्वै तहां आए । असुर चकृत भए कहां गई नारि वह सुर असुर युद्ध हेतु दोउ धाए ॥ सुरनकी जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए सबही पराई । सूर प्रभु जिहि करे कृपा जीतै सुई बितु कृपा जाइ उद्यम बृथाई ॥ ८ ॥

मोहनीरूप । राग मारू ॥ हरि कृपा करै जीतै सोई । वाद अभिमान जिन करो कोई ॥ पाइ सुधि मोहनीकी सदाशिव चले जाइ भगवानसों कहे सुनाई । असुर अजितेंद्रिय देखि मोहित भये रूपसो मोहिं दीजै दिखाई ॥ हरि कह्यो ब्रह्मव्यापक निराकार सो निर्गुण तुम सगुण लै कहा करिहौ । पुनि कह्यो बीनती मान लीजे प्रभू उमा देख्यो चहत कृपा धरिहौ ॥ हरि कह्यो तुम्हैं दिखराइहौं रूप वह करौ विश्राम इक ठौर जाई । बैठि एकांत जोहन लग्यो पंथ शिव मोहनी रूप कब दे दिखाई ॥ होइ अंतर्ध्यान मोहनी रूप धरि जाई बनमाहिं दीनो दिखाई । सूर शशि किधों चपला परमसुंदरी अंग भूषननि छबि कहि न जाई ॥ हाव अरु भाव करि चलत चितवत जबै कौन नेसो जो मोहित न होई ॥ उमा को छांडि अरु डारि मृगचमको जाइके निकट रह्यो रुद्र जोई ॥ रुद्रको देखिकर मोहनी लाज करिलियो अंतर रुद्र अधिक मोह्यो । उमाहू देखि पुनि ताहि मोहित भई तासुसम रूप अपनो न जोह्यो ॥ रुद्र धीरज तज्यो जाई ताको गह्यो सो चली आपको तब

छुड़ाई । रुद्रको वीर्य छुटिके परयो धरणिपर मोहनी रूप हरि लियो दुराई ॥ देखिकै उमा को रुद्र लज्जित भए कह्यो मैं कौन यह काम कीनो । इंद्रीजित कहावत हौं तो आपुको समुझि मनमाँहिं ह्वै रह्यो खीनो । चतुर्भुज रूप हरि आइ दरशन दियो कह्यो शिव शोच दीजै बिहाई ॥ सम तुम्हारो नहीं दूसरो जगतमें कह्यो तुम रूप तब दियो दिखाई ॥ नारि के रूपको देखि मोहै न जो सो नहीं लोक तिहुँ माँहिं भावै । सूरस्वामी शरन रहित माया सदा को जगत जो न कपिज्यों नचावै ॥ ९ ॥

राग बिलावल ॥ असुर द्वै हुते बलवंत भारी । सुंद उपसुंद स्वेच्छा विहारी ॥ भगवती तबै दीनी देखाइ । देखि सुंदरी दोउ रहे लुभाइ ॥ भगवती कह्यो तिनको सुनाई । युद्ध जीते सु मुहि बरै आइ ॥ तब दुहुँ युद्ध कीनो तहाँई । करि मुये तुरंतहि दोउ भाइ ॥ देखिकै नारि मोहित जो होवै । आपुनो मूल या विधि सु खोवै ॥ शुक नृपति पास जेहि विधि सुनाई । सूर ज्यों ही तेहि भांति गाई ॥ १० ॥

वामन अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ जैसे भयो वामन अवतार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ हरि जब अमृत सुरन पियायो । तब बलि असुर बहुत दुख पायो ॥ शुक्र ताहि पुनि यज्ञ करायो । सुर जै राज्य त्रिलोकी पायो ॥ निन्यानवे यज्ञ पुनि किये । तब दुख भयो अदितिके हिये ॥ हरिहित उन पुनि बहुत पुकारयो । सूरश्याम वामन वपु धारयो ॥ ११ ॥

राग मलार ॥ द्वारे ठाढे हैं द्विज वामन । चारों वेद पढ़त मुख आगर अति सुगंध सुर गावन ॥ वाणी सुनि बलि पूछन लागे इहां विप्र करो आवन । चर्चित चन्दन नील कलेवर बरसति बुंदन सावन ॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो मांगि देउं मन भावन । तीन पैंड वसुधा हौं चाहौं परण कुटीको छावन ॥ इतनो कहा विप्र तैं मांग्यो बहुत रत्न देउँ गांवन । सूरदास प्रभु बोल छले बलि धरयो पीठि पद पावन ॥ १२ ॥

राग मलार ॥ राजा इक पंडित पौरि तुमारी । चारों वेद पढे मुख आगर है वामन वपुधारी ॥ अपद दुपद पशुभाषा बूझै अविगत अल्प अहारी । नगर सकल नरनारी मोहे सूरज ज्योति बिसारी ॥ सुनि आनंद चले बलि राजा आहुति यज्ञ बिसारी । देखि स्वरूप सकल कृष्णाकृति कीनी चरण जुहारी ॥ चलिए विप्र जहां यज्ञवेदी बहुत कही मनुहारी । जो मांगो सोइ देहुँ तुरतही हीरा रतन भंडारी ॥ रहु रहु राजा यों नहिं कहिये दूषण लागै भारी । हूंठ पैंड दे वसुधा हमको तहां रचौं धर्मसारी ॥ शुक्र कह्यो सुन हो बलिराजा भूमिको दान निबारी । ए तो विप्र न होवें राजा आए छलन मुरारी ॥ कहि धौं शुक्र कहा धों कीजै आपुन भए भिखारी । सबही उदक दियो बलिराज वामन देह पसारी ॥ जैजैकार भयो भुव मापति तीन पैंड भइ सारी । आध पैंड दै वसुधा राजा नातरि चल सतहारी अब सत क्यों हारों जगस्वामी नापो देह हमारी । सूरदास बलि सर्वस दीनो पावो राज्यपतारी ॥ १३ ॥

मत्स्यअवतार वर्णन ॥ राग मारू ॥ सुरन हेतु हरि मत्स्यरूप धारचो । सदाही भक्त संकट निवारचो ॥ चतुर्मुख कह्यो श्रुति चतुर शंखा असुर लै गयो तबै परलै दिखायो। भक्तवच्छल कृपाकरन अशरन शरन मत्स्यको रूप तहां धारि आयो ॥ स्नान करि अंजली जल जबै नृप लियो मच्छको देखि कह्यो डार दीजै । मत्स्य कह्यो मैं गही आय तुमरी शरन करि कृपा मोहिं अब राखिलीजै ॥ नृप सुनत वचन चकृत प्रथम ह्वै रह्योकह्यो मछ वचनकिहिभांति भाख्यो । पुनि कमंडलु धरचो तहां सो बढिगयो कुंभ धरि बहुरि पुनि मांट राख्यो ॥ पुनि धरचो खाइ तालाबमें पुनि धरचो नदीमें बहुरि तिहि डारिदीनो बहुरिजब बढिगयो सिंधु तबलैगयो तहां हरिरूप तब चीन्हलीनो ॥ कह्यो करि विनय तुम ब्रह्म अन अंत हौ मत्स्यको रूप किहिकाज कीन्हो । वेद विधि चहत तुम प्रलय देखन कहत तुम दोऊ हेतु अवतार लीनो ॥ कबहुँ बाराह नरसिंह कबहुँ भयो कच्छको रूपहु कबहुँ लीनों । कबहुँ भयो राम वसुदेव कबहूँ भयो और बहुरूप हितभक्त कीनो ॥ सातवें दिवस दिखराय हों प्रलय तुहिं सप्तऋषि नावमें बैठि आवैं । तोहिं बैठारिहैं नावमें हाथ गहि बहुरि हम ज्ञान तुहि कहि सुनावैं ॥ सर्प इक आइ है बहुरि तुमरे निकट ताहिसों नाव मम शृंग बांधो यहै कहि मत्स्य प्रभु भए अंतर्ध्यान नृप तबै आपनो कर्म साधो ॥ सातवें दिवस आयो निकट जलधि जब नृपति कह्यो अब कहीं नाव पावें । आइगई नाउ तब ऋषिन तासों कह्यो आव हम नृपति तुमको बचावैं ॥ पुनि कह्यो मत्स्य हरि अब कहां पाइये ऋषिन कह्यो ध्यानजियमाहिं धारचो । मत्स्य अरु सर्प ता ठौर प्रगटित भए तबै तिनसों नृपति कहि उचारचो ॥ ज्यों महाराज या जलधिते पार कियो भवजलधिहू पार करो स्वामी । अहं ममता हमैं सदा लागी रहति मोह क्रोधयुत मंद कामी ॥ कर्म सुखहित करत होत तहँ दुःख तब इतैपर मूढ नाहीं सँभारत । करन महाराज हैं आपही ध्यान प्रभुको न मनमाहिं धारत ॥ बिनु तुमारी कृपा गति नहीं नरनकी जानि मोहिं आपनो कृपा कीजै । जन्मअरु मरनमें सदा दुःखित रहत देहु मोहिं ज्ञान जो सदा जीजै ॥ मत्स्यभगवान कह्यो ज्ञानपुनि नृपतिसों भयो सुपुराण सब जगत जान्यो । लेहु अब ज्ञान कह्यो आंखि अब मीचि तू मत्स्य जोकह्यो सो नृपति देख्यो ॥ बहुरि कह्यो हरि प्रलय माया दिखाई । कह्यो जो ज्ञान भगवान सो आनि नृप उरहि निज आयु इहि विधिताई ॥ बहुरि शंखासुरै मारि वेद आनिदयो चतुर्मुख विविध अस्तुति सुनाई । सूरके प्रभूकी नित्य लीला घनी सकै कहि कौन यह कछुक गाई ॥ १४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते अष्टमः स्कंधः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ कवि सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

नवम स्कन्ध।

राजा पुरूरवाको वैराग्यवर्णन। राग बिलावल॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राउ। नारी नागिनिएक स्वभाव॥ नागिनिके काटे विष होइ। नारी चितवन नर रहै मोइ॥ नारीसौं नर प्रीति लगावै। पै नारी तिहि मनहिं न ल्यावै॥ नारी संग प्रीति जो करै। नारी ताहि तुरत परिहरै। नृपति एक पुरूरवा भयो। नारी संग हेत तिन ठयो॥ तासों उन कटु वचन सुनाए। पै ताके मन कछु न आए॥ बहुरो तिहि उपज्यो वैराग। गयो उरबशीको सो त्याग॥ हरिकी भक्ति करत गति पाई। कहों सुकथा सुनो चित लाई॥ एकबार महाप्रलय भयो। नारायण आपै रहिगयो॥ नारायण जलमें रहे सोई। जागि कह्यो बहुरो जग होई॥ नाभिकमलते ब्रह्मा भयो॥ तिन मनते मरीचिको ठयो॥ पुनि मरीचि कश्यप उपजायो। कश्यपकी तिय सूरज जायो॥ सूरजके वैवस्वत भयो। सुतहितसो वशिष्ठ पै गयो॥ ताकी नारि सुताहित भाख्यो। सुनि बशिष्ठ अपने मन राख्यो॥ ऋषि नृपसों यज्ञ विधि करवाई। इला सुता ताके गृह आई॥ नृप कह्यो पुत्र हेत यज्ञ कियो। पुत्री भई यह अचरज भयो॥ ऋषि कह्यो रानी पुत्री कही। मेरे मनमें सोई रही॥ तातें पुत्री उपजी आई। करिहै पुत्र ताहि हरि राइ॥ हरि ता पुत्रीसों सुत कर्यो॥ नाम सुद्युम्न ताहि ऋषि धर्यो॥ एक दिवस सु अखेटक गयो। जाइअंबिका बन तिय भयो॥ बुधके आश्रम सो पुनि आयो। तासों गंधर्व ब्याह करायो॥ बहुरौ एकपुत्र तिन जायो। नाम पुरूरवा ताहि धरायो॥ पुनि सुद्युम्न वशिष्ठसों कह्यो। अंबा बनमें तिय हैगयो॥ ऋषि शिवसों बहु बिनती करी। तब शिव यह वाणी उच्चरी॥ एक मास यह ह्वैहै नारि। द्वितीय मास पुरुष-आकारी॥ तब सुद्युम्न अपने गृह आयो। राज समाज माहिं सुख पायो॥ तीनि पुत्र तिन और उपाए। दक्षिण राज्य करन सु पठाए॥ दश सुत ताके उपजे और। भयो इक्ष्वाकु सबन शिरमौर॥ सूरजवंशी सो कहवायो। रामचन्द्र ताही कुल आयो॥ सोमवंशी पुरूर-वासों भयो सकल देश नृप ताको दयो॥ तिहि वंश अवतार। असुर मारि कियोसुरन उद्धार॥ कहिहौं कथा सुकरि विस्तार। पुरूरवा कथा सुनो चितधार॥ पुरूरवा गेह उर्वशी आई। मित्रवरुनते शापहिं पाई॥ नृपति देखि तेहि मोहित भयो। तिन यह बचन नृपतिसों कह्यो॥ बिन रतिकाल नग्न नाहिं होवहु। मम मेढमिको कहूँ न खोवहु॥ तबलौं मैं तुमरो

सँग करौं । वचन भंग भयेते परिहरौं ॥ नृपति कह्यो तुम कह्यो सु करिहौं । तुमरी आज्ञा मैं अनुसरिहौं ॥ तासों मिलि नृप बहु सुख माने । षष्ठ पुत्र तासों उतपाने ॥ सुरपुरसों गंधर्व पुनि आयो । उर्वशीसों यह वचन सुनायो ॥ अब तुम इन्द्रलोकको चलो । तुम विनु सुरपुर लगत न भलो ॥ तिन उर्वशी कह्यो या भाइ । छल बल करिसकौ तौ लैजाइ ॥ मम चलिवेको यहै उवाय । छल करि मेंढनि नभ लै जाव ॥ गंधर्व मेढनि नभ लै धाए । सोवत नृप उरबशी जगाए ॥ मम मेंढनिको लै गयो कोई । देखौ तुम पुरुषै तिहिं जोई ॥ अर्ध निशा नृप ताको धायो । पै मेंढनिको कहूँ न पायो ॥ इत उत देखि नृपति जब आयो । तब उरबशी यह वचन सुनायो ॥ राजा वचन तुमारो टर्यो । ताते मैं तुमको परिहर्यो ॥ यह कहिकै सो चली पराय । जैसे तड़ित अकासै जाय ॥ ताके विरह नृपति बहु तयो । नग्न नग्न ता पाछे धायो ॥ भ्रमत भ्रमत नृप बहु श्रम पायो । बहुरो कुरुक्षेत्रमें आयो ॥ तहां उरबसी सखिन समेत । आइगई सुस्नानके हेत ॥ पै उनको कोउ देखै नाहिं । उनको सकल लोक दरशाहिं ॥ उरबशीसों तिलोत्तमा कह्यो । कौन पुरुष तुम भुवमें लह्यो ॥ ताके देखनकी मोहिं चाह । कह्यो पुरुष वह ठाढो आह ॥ नृपको देखि सु विस्मय भई । कह्यो विरह तोहिं नृप सुधि गई ॥ बहुत दुखित है तेरे नेह । एक बेर इहिं दरशन देह ॥ तिन माया आकर्षण करी । तब वह दृष्टि नृपतिकी परी ॥ राजा निरखि प्रफुल्लित भयो । मानो मृतक बहुरि जिय लह्यो ॥ उरबशी निकट नृपति चलि आयो । करि बिनती यह बचन सुनायो ॥ तैं मोको काहे बिसरायो । मैं तुम बिन बहुतै दुख पायो ॥ तुम बिन भूख नींद नहिं आवै । पल पल युग सम मोहिं बिहावै ॥ मेरे गेह कृपा करि चलो । वाही विधि मोसों हिल मिलो ॥ कह्यो नेह हम कामसों आहि । बिना काम हमरे नहिं चाहि ॥ हमसों सहस बरस हित धरै । हम तिहिको छिनमें परिहरै ॥ बिन अपराध पुरुष हम मारे । माया मोह न मनमें धारे ॥ हमैं कहै केतो किन कोई । चाहैं करन करैं हम सोई ॥ नृप पुनि बिनती बहु विधि करी । तब उरबशी बात उच्चरी ॥ वर्ष सात बीतेहौं ऐहौं । एक रात्रि तोको सुख देहौं ॥ वर्ष सप्त बीते सो आई । नरपतिसों मिलि रैन बिताई ॥ प्रात होत चलिबेको चह्यो । तब राजा तासों यों कह्यो ॥ तूं मोको छांडि कित जात । मोको तुम बिनु छिन न बिहात ॥ जब या भांति नृपति बहु कह्यो । तब उरबशी यह उत्तर दयो ॥ यह तो होनहार है नाहीं । सुरपुर छांडि रहौं भुव माहीं ॥ जो तुम मेरी इच्छा धरौ । गंधर्वनीके हित तप करौ ॥ तप कीनेसे देहैं आग । ता सेती तुम कीजो जाग ॥ यज्ञ किये गंधर्वलोक सिधैहो । तहां आइ मोको तुम पैहो ॥ नृप यज्ञ करि ता लोक सिधायो । मिलि उरबशी बहुत सुख पायो ॥ जब या विधि बहु काल बितायो । तब वैराग्य नृपति मन आयो ॥ बहुते काल भोग मैं कीए । पै संतोष न आए हीए ॥ श्रीनारायणको बिसरायो । विषय हेत सब जन्म गँवायो ॥ याविधि जब विरक्त नृप भयो । छांडि उरबशी वनको गयो ॥ वनमें जाइ तपस्या करी । विषय वासना सब परिहरी ॥ हरिपदसों नृप ध्यान लगायो ।

मिथ्या तनुको मोह भुलायो ॥ हरि व्यापक सब जगमें जान । हरिप्रसाद पायो निर्वान ॥ ताते बुद्धि त्रियसे गति तजै । श्रीनारायणको नित भजै ॥ शुक जैसे नृपको समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १ ॥

च्यवनऋषि कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव । जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई । जग सुख पाइ मुक्ति फल सोई ॥ च्यवन ऋषीश्वर बहु तप कियो । तासम और जगत नाहिं बियो ॥ बांमी ताको लियो छिपाई । तासों ऋषि नहिं दई दिखाई ॥ ता आश्रम सरजात नृप गये । तहां जाइके डेरा दये ॥ छांडि तहीं सब राज समाज । राजा गयो अखेटक काज ॥ नृपकन्या तहँ खेलन गई । ऋषि दृग चमकत देखत भई ॥ पै तिहि ऋषि दृग जाने नाहिं । खेलत शूल दये तेहि माहिं ॥ रुधिर धार ऋषि आँखिन ढरी । नृपकन्या सु देखि तब डरी ॥ शूल व्यथा सब लोगन भई । राजा कह्यो कहा भइ दई ॥ तहँके बासी नृपति बुलाये । बूझो तब तिन कह्यो बुझाये ॥ च्यवन ऋषि आश्रम है इहां राई । करौ बीनती उनसों जाई ॥ नृप खोजत ऋषिआश्रम आयो । ऋषि दृग देखत बहुत डरायो ॥ कह्यो कियो किन ऐसो काज । कन्या कह्यो सुनौ महाराज ॥ मोते बिन जाने यह भई । ऋषिके दृगनि शूल हौं दई ॥ नृप मनही मन बहु पछतायो । ऋषिसों पुनि यह बचन सुनायो ॥ महाराज तुम तो हौ साध । मम कन्याते भयो अपराध ॥ या कन्याको प्रभु तुम बरो । कष्ट शूल कृपा करि हरो ॥ लोग सकल नीको जब भयो । नृप कन्या दै गृहको गयो ॥ ऋषि समाधि हरि चरण लगाई । कन्या ऋषि चरण लव लाई ॥ सुरपति ताके रूप लुभायो । बहुरि कुबेर तहां चलि आयो ॥ पै तिहिं दिशि तिन देख्यो नाहीं । गये खिस्याय दोऊ मन माहीं ॥ चौदह बर्ष भये यह भाई । तब ऋषि देख्यो शीश उठाई ॥ हाडचाम तनु पर रहि गये । कृपावंत ऋषि तापर भये ॥ असुनी सुत यहि अवसर आयो । करि प्रणाम यह वचन सुनायो ॥ जो कछु आज्ञा मोको होई । छांडि बिलंब करौं अब सोई ॥ कह्यो दृगनिको करो उपाय । तुरत नेत्र तिन दिये बनाय ॥ कह्यो मैं यज्ञभाग नहिं पावत । वैद्य जानि मोहिं सुर बहरावत ॥ ऋषि कह्यो मैं करिहौं जहां जाग । देहौं तोहिं अवश करि भाग ॥ नृपकन्यासों ऋषि सो कह्यो ॥ तुहि ऊपर प्रसन्न मैं भयो ॥ यद्यपि कछु इच्छा नहिं मेरे । तदपि उपाय करौं हित तेरे ॥ दोउ मिलि तीरथ माहिं अन्हाये । सुन्दर रूप दुहूँ जन पाये ॥ दासी सहस प्रगट तहां भई । इन्द्रलोक रचना ऋषि ठई ॥ तियको सुख ऋषि बहु बिधि दियो । तासु मनोरथ पूरणकियो ॥ तब सरजात रानीसों कही । जबते कन्या ऋषिको दई ॥ तबते सुधि कछु नाहीं पाई । बिनु प्रसंग तहां गयो न जाई ॥ यज्ञारंभ नृपति तहँ गयो । देखि ऋषाश्रम

विस्मय भयो ॥ कह्यो यह विभव कहांते आई । किन यह ऐसी बनत बनाई ॥ इहि अंतर नृप कन्या आई । पिता देखि मिलिबेको धाई ॥ नृप ताको आदर नहिं दियो । तैं यह कौन कर्म है कियो ॥ वृद्ध ऋषीश्वरको कहा भयो । कुल कलंक तैं किहि मिलि लयो ॥ कह्यो योगबल ऋषि सब कीनो । मुहिं सुख सकल भांति करि दीनो ॥ नृप प्रसन्न हो ऋषिपै आए । यज्ञ प्रसंग कहिकै गृह लाए ॥ रानी सुता देखि सुख मान्यो । धन्य जन्म करि अपनो जान्यो ॥ च्यवन नृपतिको यज्ञ करवायो । अश्विनी सुत हित भाग उठायो ॥ इन्द्र कोप ह्वै ऋषिसों कह्यो । ताहि भाग तुम काहे दयो ॥ पुनि मारनको वज्र उठायो । पै ऋषिको मारन नहिं पायो ॥ इन्द्र हाथ ऊपर रहि गयो । तिन कह्यो दई कहा यह भयो ॥ कह्यो सुरन तुम ऋषिहिं सतायो । ताते कर रहि गयो उँचायो ॥ इन्द्र बिनय ऋषिसों बहु करी । तब ऋषि कृपा ताहि पर धरी ॥ सुरपति कर जब नीचे आयो । अश्विनी सुत बलि सुरमें पायो ॥ ऐसो हरिको भक्त प्रभाव । बरनि कह्यो मैं तुमसों राव ॥ हरिकी भक्ति करै जो कोई । दुहूं लोकको सुख तेहि होई ॥ शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ २ ॥

हलधर विवाह कथा वर्णन । राग भैरों ॥ द्वारावति पति रेवत राजा । तासम जग दुतिया न विराजा॥ तागृह जन्म रेवती लयो।ताको लै सुब्रह्मपुर गयो । विधि तिहि आदर दै बैठायो । तब नृप मनमें अति सुख पायो ॥ इहां देखि अप्सरा अखारा । नृप कछु नहीं वचन उच्चारा ॥ जब अप्सरा नृत्य करि रही । तब राजा ब्रह्मासों कही ॥ मम पुत्री वर प्रापति आहि । आज्ञा होइ देउँ तेहि व्याहि ॥ ब्रह्मा कह्यो सुनो नरनाह । ते नृप तो अब जगमें नांह । हल धरको तुम देहु विवाह । व्याह योग अब सोई आह ॥ रेवत व्याह कियो जग आइ । आप कियो तप बनमें जाइ ॥ हलधर व्याह भयो या भाइ । सूरदास जन दियो सुनाइ ॥ ३ ॥

राजा अंबरीषकी कथा । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणार विन्द उर धरो ॥ हरि पद अम्बरीष चित लायो । ऋषिशरापते ताहि बचायो ॥ ऋषिको तापै फेरि पठायो । शुक नृपको यों कहिं समुझायो ॥ अम्बरीष राजा हरि भक्त । रहै सदा हरि पद अनुरक्त ॥ श्रवण कीरतन सुमिरन करै । पद सेवन अचरन उर धरै ॥ बन्दन दासीपन सो करै । भक्तन शिष्य भाव अनुसरै ॥ काय निवेदन सदा उचारै । प्रेम सहित नवधा विस्तारै ॥ नवमी नेम भली विधि करै । दशमीको संयम विस्तरै ॥ एकादशी करै निरहार । द्वादशी पोषै लै आहार ॥ पतिव्रता वा नृपकी नारी । अहनिशि नृपकी आज्ञा-कारी ॥ इन्द्री सुखको दोऊ त्याग । धरैं सदा हरिपद अनुराग ॥ ऐसी विधि हरि पूजैं सदा । हरि हित लावैं सब संपदा॥राजकाज कछु मन नहिं धरै । चक्र सुदर्शन रक्षा करैं ॥ घटिका दोइ द्वादशी जान । ऋषि आयो नृप कियो सनमान ।कह्यो भोजन कीजै ऋषिराई।

ऋषि कह्यो आवत हौं मैं न्हाई। यह कहिकै ऋषि गये अन्हान। काल बितायो करत असनान॥ राजा कहै कहा अब कीजै। द्विजन्ह कह्यो चरणोदक लीजै। राजा तब करि देख्यो ज्ञान। या विधि होइ न ऋषि अपमान॥ लै चरणोदक निज व्रत साध्यो। ऐसी विधि हरिको अवराध्यो॥ इहि अन्तर दुर्वासा आये। अम्बरीष सों वचन सुनाये॥ सुन राजा तेरो व्रत टूटो। क्यों कर तैंरे भोजन करो॥ कह्यो नृपति मुनिये ऋषिराई। मैं व्रत हित यह करचो उपाई॥ चरणोदक लै व्रत प्रति पारयो। अबलौं अन्न न मुखमें डारयो॥ ऋषि करि क्रोध इक जटा उपारी। सो कृत्या भइ ज्वाला भारी॥ जब नृप ओर दृष्टि उन करी। चक्र सुदर्शन सो संहरी॥ पुनि ऋषिहूको जारन लागयो। तब ऋषि आपन जिय लै भाग्यो॥ ब्रह्मा रुद्र लोकहू गयो। एनहूं ताहि अभय नहिं दयो॥ बहुरो ऋषि बैकुण्ठ सिधायो। करि प्रणाम यह वचन सुनायो। मैं अपराध भक्तको कीनो। चक्र सुदर्शन अति दुख दीनो॥ और कहूं मैं ठौर न पायो। अशरण शरण जानिकै आयो। महाराज अब रक्षा कीजै। मोकों जरत राखि प्रभु लीजै। हरिजू कह्यो सुनो ऋषिराई। मोपै तुहि राख्यो नहिं जाई॥ तैं अपराध भक्तको कीनो। मैं निज भक्तनके आधीन॥ मम हित भक्त सकल सुख तजैं। और सकल तजि मोको भजैं। बिन मम चरण न उनके आशा। परम दयालु सदा मम आशा॥ उनके मन नाहीं शत्राई। ताते कहौं उन्हींपै जाई। तुमको लेहैं वेग बचाई। नाहीं या बिन और उपाई॥ इहां राजा अति ही दुख लयो। ऋषि मम द्वारेते फिरि गयो। ऋषि मग जोवत वर्ष बितायो। पै भोजन तौहू न सिरायो॥ अम्बरीष पै तब ऋषि आयो। हाथ जोरि पुनि शीश नवायो॥ ऋषिहि देखि नृप कह्यो या भाई। लेहु सुदर्शन याहि बचाई॥ ब्राह्मण हरि हरिभक्त पियारो। ताते अब याको मति जारो॥ चक्र सुदर्शन शीतल भयो। अभयदान दुर्वासा लह्यो॥ मुनि नृप तिहिं भोजन करवायो। ऋषि नृपसों यह वचन सुनायो। मैं नहिं भक्त महातम जान्यों। अबते भली भांति पहिचान्यों॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सो हरि भक्ति पाइ सुख पावै॥ शुक राजासों ज्यों समझायो। सूरदास त्यों ही करि गायो॥ ४॥

राग गूजरी॥ फिरत फिरत बलहीन भयो। कहा करों यहि त्रास कृपानिधि जप तपको अभिमान गयो॥ धायो धर शर शैल बिदिशि दिशि तहां तहां चाहि लयो। जासे शिव विरंचि सुरपति सब काहू नैकन शरन दयो॥ भाग्यो फिरचो लोक लोकनमें पत्र पुरातन पवन हयो। सूरदास मुनि दीन जानि प्रभु तब निजजन सन्मुख पठयो॥ ५॥

६ सौभरि ऋषि कथा वर्णन। राग बिलावल॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव। जैसो है हरि भक्त प्रभाव॥ हरिको भजन करै जो कोई। जग सुख पाइ मुक्ति लहै सोई॥ सौभरि ऋषि यमुनातट भयो। तहां मच्छ इक देखत भयो॥ सहित कुटुंब सो क्रीड़ा करै। अति उत्साह हृदयमें धरै॥ तबहि देखिकै ऋषि मन आई। यह आश्रम है अति सुखदाई॥

तप तजिकै गृह आश्रम करौं । कन्या एक नृपतिकी बरौं ॥ कह्यो मान्धातासों जाइ । पुत्री एक देहु मोहिं राइ ॥ नृप कह्यो देखि वृद्ध ऋषि देह । हैं पचास पुत्री मम गेह ॥ अन्तःपुर भीतर तुम जाउ । बरै तुम्हें सो देहुँ बिवाहु ॥ तब ऋषि मनमें करै विचार । वृद्ध पुरुषको बरै न नार ॥ तप बल कियो रूप अति सुन्दर । गयो सु तहां जहां नृपमन्दिर ॥ सब कन्या सौभरिको बरयो । ऋषि विवाह सबहिनसों करयो ॥ ऋषि तिनके हित गेह बनाये । तिनके भीतर बाग लगाये ॥ भोग समग्री भरे भण्डार । दासी दास गनत नहिं पार ॥ ऋषि नारी मिलि बहु सुख पाये । सहस पचास पुत्र उपजाये ॥ तिनके बहुत भये सन्तान । कहँलौं तिनकी करौं बखान ॥ बहुत काल या भांति बितायो । पै ऋषि मन सन्तोष न आयो ॥ कह्यो विषयतें तृप्ति न होय । केतो भोग करै किन कोय ॥ या विधि जब उपज्यो वैराग । तब तप करि कीन्यो तनु त्याग ॥ सब नारिन सहगामिनि कियो । हरिजू तिनको निजपद दियो ॥ तातें बुध हरि सेवा करै । हरि चरणन नित ही चित धरै । शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो ॥ सूरदास त्यों ही कहि गायो ॥ ६ ॥

श्रीगंगा भुव लोक आगमन कथा ॥ राग मैरों ॥ शुकदेव कह्यो सुनो नरनाह । गंगा ज्यों आई जग मांह ॥ कहौं सु कथा सुनौ चित लाई । सुने सु भवतरि सुरपुर जाई ॥ शतमों यज्ञ सगर जब ठयो । इन्द्र अश्वको हरिले गयो ॥ कपिलाश्रम लै ताको राख्यो । सगरसुतन तब हयको भाख्यो । हम सब लोक माहिं फिरि आये । हयके खोज कहूँ नहिं पाये ॥ आज्ञा होइ जाहिं पाताल । जाहु तिन्हैं भाख्यो भूपाल । तिनके खोदे सागर भये । कपिल आश्रम ते पुनि गये ॥ अश्व देखि कह धावहु धावहु । भागि जाहि मति बिलम लगावहु ॥ कपिल कुलाहल सुनि अकुलायो । कोपदृष्टि करि तिन्हैं जरायो ॥ सगर नृपति जब यह सुधि पाई । अंशुमानको दियो पठाई ॥ तिन कपिलस्तुति बहु विधि कीनी । कपिल ताहि यह आज्ञा दीनी । यज्ञ हेतु अश्व यह लेहु । भ्रात तुम्हारे भये जु खेहु । सुरसरि जब भुव ऊपर आवै । उनको अपनो जल परसावै ॥ तबहीं उन सबकी गति होई । ता बिन और उपाव न कोई ॥ अश्व लाइ यज्ञ पूरण कियो । अंशुमान राजा पुनि भयो ॥ अंशुमान पुनि राज बिहाई । गङ्गा हेतु कियो तप जाई ॥ याही विधि दिलीप तप कीनी । पै गङ्गाजू वर नहिं दीनो ॥ भागीरथ जब बहु तप कियो । तब गंगाजू दर्शन दियो ॥ कह्यो मनोरथ तेरो करौं । पै मैं जब अकाशते परौं ॥ मोको कौन धारना करै । नृप कह्यो शंकर तुमको धरै ॥ तब नृप शिवकी सेवा कीन्ही । शिव प्रसन्न है आज्ञा दीनी ॥ गंगासों नृप जाइ सुनाई । तब गंगाजू भुवमें आई ॥ साठ सहस्र सगरके पुत्र । कीन्हे सुरसरि तुरत पवित्र ॥ गंग प्रवाह मांहि जु अन्हाई । सो पवित्र है हरिपुर जाई ॥ गंगा इहि विधि भुवपर आई । नृप मैं तुमसों भाखि सुनाई ॥ शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं कहि गायो ॥ ७ ॥

श्रीगंगा विष्णु पादोदककी स्तुति वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरिपद कमलको मकरन्द । मलिन मति मन मधुप परिहारि विषय नीरस फन्द । परम शीतल जानि शंकर शिर धरचो तजि चन्द । नाक सरवसु लेन चाहो सुरसरीको बिन्द । अमृतहूते अमल अति गुण स्त्रवति निधिआनन्द । सूर तीनों लोक परस्यो सुर असुर जस छन्द ॥ ८ ॥

राग भैरों ॥ जय जय जय जय माधव बेनी । जगहित प्रगट करी करुणामय अगतिनको गति देनी ॥ जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप संग सजी अघ सैनी । जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोपेउ पैनी ॥ मेरु मूठि वर वारि पाल क्षिति बहुत वित्तकी लैनी । शोभित तरंग त्रिसंगम धरी धार अति पैनी ॥ दरशनहूं नाश यम सैनिकै जिमि नेह बालक सैनी । एकै नाम लेत सब भाजै परि सुभूमि रसैनी । जा जल युद्ध निरखि सन्मुख ह्वै सुन्दर सैना बैनी । सूर परस्पर करत कुलाहल गर स्रगपहरावैनी ॥९॥

राग बिलावल ॥ गंग तरंग बिलोकत नैन । अति पुनीत विष्णु पादोदक महिमा निगम पढ़त गुन चैन ॥ परम पवित्र मुक्तिकी दाता भागीरथी भई वर दैन । द्वादशवर्ष सेये निशि वासर तब शंकर भाषी है लैन ॥ त्रिभुवन हार सिंगार भगवती सलिल चराचर जाके ऐन । सूरजदास विधाताके तप प्रगट भई संतन सुख दैन ॥ १० ॥

परशुराम अवतार वर्णन । राग बिलावल ॥ ज्यों भयो परशुराम अवतार । कहौं सु कथा सुनौ चितधार ॥ सहसबाहु रविबंशी भयो । सरिता तिर इक दिन सो गयो ॥ निज भुजबल तिन सरिता गही । बढिगयो जल तब रावणनृपकही । तुम हमसों करो लराई । कह्यो करौं मध्यान बिताई ॥ बहुरो क्रोधवंत युध छयो । सहसबाहु तब ताको गह्यो ॥ हरौ नृप करिकै मध्यान । दीनो ताको छांडि निदान ॥ फिर नृप जमदग्न्याश्रम आयो । कामधेनुबल करि लै धायो ॥ परशुराम जब यह सुधि पाई । मारचो ताहि तुरंतहि धाई ॥ तासुसुतनि जमदग्निहि मारचो । परशुराम रेणुका हँकारचो ॥ मारचो क्षत्री इकइसबार । यों भयो परशुरामअवतार ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं कहि गायो ॥ ११ ॥

राग धनाश्री ॥ परशुराम जमदग्निगृह लीनो अवतार । माता ताकी यमुन जल लेन गई इक बार ॥ लागी तहां अबार तिहि ऋषि करि क्रोध अपार । परशुरामसों यों कही माको वेगि संहार ॥ और सुतन तब कही पिता नहिं कीजे ऐसी । क्रोधवंत ऋषि कह्यो करौं इनसों हूं वैसी ॥ परशुराम तिन सबनको मारचो खड्ग प्रहार । ऋषि कह्यो होइ प्रसन्न वर मांगौ देउँ कुमार ॥ परशुराम तब कह्यो यहै बर देहु नात अब । जाने नाहिन मुए फेरिकै जीवैं ये सब ॥ ऋषि कह्यो यह वर दियो मैं इनको देहु उठाइ । परशुराम उनको दियो सोवत मनो जगाइ ॥ परशुराम बन गए तहां दिन बहुत लगाये । सहसबाहु तिहि समय जमदगिन आश्रम आए । कामधेनु जमदग्निकी लैगयो नृपति छिनाय । परशुरामसों बोलि ऋषि दियो वृतान्त सुनाय ॥ परशुराम सुनि पिता वचन ताको संहारचो । कामधेनु दई आनि बचन ऋषि-

को प्रतिपारयो ॥ सहसबाहुके सुतन पुनि राखी घात लगाइ। परशुराम जब बन गयो मारयो ऋषिको धाइ ॥ ऋषिकी यह गति देखि रेणुका रोइ पुकारी ॥ परशुराम तुम आइ लगत क्यों नहीं गोहारी ॥ यह सुनिकै आयो तुरत मारयो तिन्हैं प्रचार। बहुरो जिय धरि क्रोध हति क्षत्री बीसिकबार ॥ जग अराज ह्वै गयो ऋषिन तब अति दुख पायो। लै पृथ्वीको दान ताहि फिर बनहिं पठायो ॥ बहुरि राज्य दियो क्षत्रियनि भयो ऋषिनि आनंद। सूरदास पावत हरष गावत गुण गोविंद ॥ १२ ॥

रामअवतार कारण। राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ जय अरु विजय पार्षद दोइ। विप्र शराप असुर भये सोइ ॥ एक बराह रूप धरि मारयो। एक नृसिंह रूप संहारयो ॥ रावण कुंभकर्ण सोइ भये। राम जन्म तिनके हित लए ॥ दशरथ नृपति अयोध्या राव। ताके गृह कियो आविर्भाव ॥ नृपसों ज्यों शुकदेव सुनायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १३ ॥

बालकांड श्रीरामजन्म वर्णन ॥ राग कान्हरा ॥ आजु दशरथके आँगन भीर। आए भुव उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ॥ फूले फिरत अयोध्या बासी गनत न त्यागत चीर। परिरम्भण हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर ॥ त्रिदश नृपति ऋषि व्योमविमाननि देखत रहे न धीर ॥ त्रिभुवननाथ दयालु दरश दै हरी सबनकी पीर ॥ देत कान राख्यो न भूप कछु महा बडे नग हीर ॥ भये निहाल सूर सब याचक जे याचे रघुबीर ॥ १४ ॥

अयोध्या बाजत आज बधाई। गर्भ मुच्यो कौशल्या माता रामचन्द्र निधि आई ॥ गावैं सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई। भीरभई दशरथके आँगन साम वेद ध्वनि गाई ॥ पूछत ऋषिहि अयोध्याको पति कहि हो जन्म गुसांई। बुद्धवार नौमीतिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥ चारि पुत्र दशरथके उपजे तिहूं लोक ठकुराई। सदा सर्वदा राज रामको सूर दादि तहँ पाई ॥ १५ ॥

रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर। देश देशते टीका आयो रतन कनक मनि हीर ॥ घर घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिन भीर। आनँदमगन भये सब डोलत कछू न शोध शरीर ॥ मागध बंदी सूत लुटाए गउ गयंद हय चीर। देत अशीश सूर चिरजीयो रामचंद्र रणधीर ॥ १६ ॥

शरक्रीडा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ करतल शोभित बान धनुहियां। खेलत फिरत कनकमय आँगन पहिरे लाल पनहियां ॥ दशरथ कौशल्याके आगे लसत सुमनकी छहियां। मानो चारि हंस सरवर ते बैठे आइ सदहियां ॥ रघुकुल कुमुद चंद चिंतामणि प्रगटे भूतल महियां। यहै देन आए रघुकुलको आनँद निधि सब गहियां ॥ ये सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाए प्रभु पहियां। सूरदास हरि बोले भगतको निरबाहत गहि बहियां ॥ १७ ॥

राग बिलावल ॥ धनुही बान लये कर डोलत। चारों बीर संग हक सोहत बचन मनोहर बोलत। लछिमन भरत शत्रुघन सुंदर राजिवलोचन राम। अति सुकुमार परम पुरुषारथ

मुक्ति धर्म धन काम ॥ कटि पट पीत पिछौरी बांधे काग पच्छ धरि शीश । शर क्रीड़ा दिन देखत आवत नारद सुर तेंतीस ॥ शिवमन शोच इन्द्रमन आनँद सुख दुख ब्रह्म समान ॥ दिति दुर्बल अति अदिति हृष्ट चित देखि सूर संधान ॥ १८ ॥

विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताडका बध सीतास्वयंवर । बन ॥ राग सारंग ॥ दशरथसों ऋषि आनि कह्यो । असुर नसों यज्ञ होन न पावत राम लछन तब संग दयो ॥ मारि ताड़का यज्ञ करायो विश्वामित्र आनंद भयो । सीय स्वयंवर जानि सूर प्रभुको ऋषि लै ता ठौर गयो ॥ १९ ॥

सीता पतिदर्शन ॥ राग बिलावल ॥ देखनको मंदिर आनिचढी । रघुपति पूरनचंद बिलोकत मानो उदधि तरंग बढी ॥ पिय दरशन प्यासी अतिआतुर निशि बासर गुन आन रढ़ी । तजि कुलकानि पीय मुख निरखत शीश नाइ आशीशपढी ॥ भई देहजोंखेहकरमवश ज्यों तट गंगा अनल दढी । सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि मानो फेरि बनाइ गढी ॥२०॥

सीता मनोरथ पूरण ॥ राग सारंग ॥ चितै रघुनाथ बदनकी ओर । रघुपतिसों अब नेम हमारो विधिसों करति निहोर ॥ यह अति दुसह पिनाक पिताप्रण राघव वयस किशोर । इनते परिघ धनुष चढिहै क्यों यह सखि संशय मोर ॥ सिय अंदेश जानि सूरज प्रभु लियो करजकी कोर । टूटत धनु नृप लुके जहां तहँ ज्यो तारागण भोर ॥ २१ ॥

दशरथको जनकपुर आगमन रामजूके विवाहहेतु ॥ महाराज दशरथ तहँ आये । ठाढे जाय जनक मंदिरमें मोतिन चौक पुराये ॥ विप्र लगे ध्वनि वेद उचारन युवतिन मंगल गाये । सुर गंधर्वगन कौटिक आए गगन विमानन छाये ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन व्याह निरखि सुख पाये । सूर भयो आनंद नृपतिमन दिवि दुंदभी बजाए ॥ २२ ॥

कंगना खोलन ॥ राग आसावरी ॥ कर कंपै कंगन नहिं छूटै । राम सुपरस मगन यम कौतुक निरखि सखी लूटै ॥ गावत नारि गारि सब दैदै तात भ्रातकी कौन चलावै । तब कर डोर छुटै रघुपति जू जो कौशल्या माइ बुलावै ॥ पूगीफल युत जल निर्मल धरि आनी भरि कुंडीजु कनकली । खेलत जूय युवन युवतिनमें हारे रघुपति जीति जनककी ॥ घेरे निशान अजिर गृह मंगल विप्र वेद अभिषेक करायो । सूर अमित आनंदकुशलपुर सोइ शुकदेव पुराण निगायो ॥ २३ ॥

धर्नुभंग पाणिग्रहणलीला ॥ राग नट ॥ ललितगति राजत अति रघुबीर । नरपति सभा मध्य भये ठाढ़े युगल हंसत मतिधीर ॥ अलख अनंत अमित महिमाबल कटि कसि रख्यो तुनीर । लघु धनु काकपक्ष शिर शोभित इक इक द्वै द्वै तीर ॥ भूषण विविध विशद अंबर युत सुन्दर श्याम शरीर । देखत मुदित चरण परसे सुर व्योम विमानन भीर ॥ प्रमुदित जनक निरखि अंबुज सुख बिगत नयन मन पीर । तात कठिन प्रण मानि जानि जिय जनकसुता आधीर ॥ करुणामय जब चाप लियो कर बाँधि सुदृढ कटि चीर । भुवभृत शीश नमित जु गर्वगत पावक संच्यो नीर ॥ डुलत महीधर भौर भौ फनपति चल कूरम अति अकुलान । दिग्गज चलित खतित मुनि आसन इंद्रादिक भयमान॥रवि मग

तज्यो तरफि ताके इत उत पथ गएकी आन ॥ शिव विरंचि व्याकुल भये ध्वनि सुनि जब तोरचो भगवान ॥ मनन शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्टदिशा नभ पूर । श्रवन हीन सुनि भये अष्टकुल नाग बगरि भय चूर ॥ अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि सदा सुभट बड भूर । मोहित सकल सयान जानि जिय महाप्रलयको पूर ॥ पाणि ग्रहण रघुवर वर कीनो जनकसुता सुख दीन । जय जय धुनि सुनि करत अमरगन वरनारी लवलीन ॥ दुष्टन दुष्ट संत संतनको नृप ब्रत पूरण कीन ॥ रामचंद्र दशरथहिं बिदा करि सूरदास आधीन ॥ २४ ॥

जनक दशरथ रामजी सीता समेत विदा करन । राग सारंग ॥ दशरथ चले अवध आनन्दत । जनकराइ बहु दाइज दैकरि बार बार पद बंदत ॥ तनया जामातनिको समुदत नैन नीर भरि आए । सूरदास दशरथ आनन्दित चले निशान बजाए ॥ २५ ॥

मार्गविषे परशुरामको रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद ॥ परशुराम तेहि अवसर आयो । कठिन पिनाक कह्यो किन तोरचो क्रोधवंत यह बचन सुनायो ॥ विप्र जानि रघुवीर धीर दोउ हाथ जोरि शिर नायो । बहुत दिननको हुतो पुरातन हाथ छुअत उठि आयो ॥ तुम तौ द्विज कुलपूज्य हमारे हम तुम कौन लराई । क्रोधवंत कछु सुन्यो नहीं लयो सायक धनुष चढाई ॥ तबहू रघुपति क्रोध न कीनो धनुष बान संभारचो । सूरदास प्रभु रूप समुझि पुनि परशुराम पगधारचो ॥ २६ ॥

अवधपुरी प्रवेश । राग सारंग ॥ अवधपुर आए दशरथ राइ । राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन शोभित चारों भाइ ॥ घुरत निशान मृदंग शंख ध्वनि भेरे झांझ सहनाइ । उमँगे लोग नगरके निरखत अतिसुख सबहिन पाइ ॥ कौशल्या आदिक महतारी आरति करति बनाइ ॥ यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाइ ॥ २७ ॥

दशरथ विचार रामजीको राज्य दे आप वन गमन, कैकेयी विनती, भरत राज ॥ महाराज दशरथ मन धारी । अवधपुरीको राज राम दै लीजै ब्रत वनचारी ॥ यह सुनि बोली नारि कैकई अपनो बचन सँभारो । चौदह वर्ष रहैं वन राघव छत्र भरत शिर धारो ॥ यह सुनि नृपति भयो अतिव्याकुल कहत कछू नहिं आई । सूर रहे समुझाइ बहुत पै कैकयि हठ नहिं जाई ॥ २८ ॥

दशरथ कौशल्या विनय । राग कान्हरा ॥ महाराज दशरथ पुनि सोचत । हा रघुपति लछिमन वैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत ॥ त्रियचरित्र मय मत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत । महा विपरीत रीति कछु औरै बार बार मुख जोवत ॥ परम कुबुद्धि कह्यो नहिं समुझत राम लषन हँकराये । कौशल्या अति परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये ॥ विह्वल तन मन चकित भई सुनि सो प्रतच्छ सुपनाये । गदगद कंठ सूर कोसलपुर शोर सुनत दुख पाये ॥ २९ ॥

दशरथ पश्चात्ताप कैकेयी प्रति वचन ॥ फिरि फिरि नृपति चलावत बात । कहो सुमति कहा तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे बन जात ॥ हाहा राम लक्ष्मण अरु सीता फल भोजन जु डसावैं पात । ह्वै वियोग शिर जटा धरैं द्रुम चर्म भस्म सब गात ॥ बिन रथ रूढ दुसह दुख मारग बिन पदत्रान चलैं दोउ भ्रात । एहिविधि सोच करत

अतिही नृप जानकी ओर निरखि बिलखात ॥ इतनीसुनत सिमिटि सब आये प्रेम सहित धारे अश्रुपात । तादिन सूर शहर सब चकृत सब रस नेह तज्यो पितु मात ॥ ३० ॥

कैकेयी वचन राम प्रति । राग सारंग ॥ सकुचनि कहत नहीं महाराज । चौदह वर्ष तुम्हैं वन दीनो मम सुतको निज राज ॥ तब आयसु शिर धरि रघुनायक कौशल्या ढिग आए । शीश नाइ बन आज्ञा माँग्यो सूर सुनत दुख पाये ॥ ३१ ॥

राम जू प्रति दशरथ विलाप ॥ रघुनाथ पियारे आजु रहो हो । चारि याम विश्राम हमारे छिन छिन मीठे बचन कहो हो ॥ वृथा होइ बर वचन हमारो री कैकयी जीव कलेश सहो हो । आतुर ह्वै अबछांडि कुशलपुर प्राणजिवन कित चलन कहो हो ॥ बिछुरत प्राण पयान करैंगे रहो आजु पुनि पंथ गहो हो । अब सूरज दिन दर्शन दुर्लभ कलपि कमल कर कंठ गहो हो ॥ ३२ ॥

राग गूजरी । श्रीराम जू वचन जानकी प्रति ॥ तुम जानकी जनकपुर जाहु । कहां आनि हम संग भरमिहो वन दुख सिंधु अथाहु ॥ तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलप बिपिन फल खैहो । ग्रीषम कमलबदन कुम्हिलैहैं तजि सर निकट दूर कित न्हैहो ॥ जिन कछु वृथा सोच मन करिहौ मातु पिता सुख दैहो । तुम फिरि रहौं संग मैं तेरे जो बन बसि पछितैहौ ॥ होनी होइ कर्मकृत रेखा करिहौं तासु वचन निरबाहु । सूर जो पतिव्रत राखो तौ उठि संग चलौ जिन जाहु ॥ ३३ ॥

जानकी वचन श्रीराम जू प्रति राग केदारा ॥ ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई । तुमसों तजि प्रभु मोसी दासी अनत न कहूं समाई ॥ तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखौं । ता छिन हृदय कमल परफुल्लित जन्म सफल करि लखौं ॥ तुमरे चरनकमल सुखसागर यह ब्रत हौं प्रतिपलिहौं । सूर सकल सुख छांडि आपनो वन बिपदा सँग चलिहौं ॥ ३४ ॥

श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति विदा करन हेतु । राग गूजरी ॥ तुम लछमन निज पुरहि सिधारो । बिछुरन भेंट देहु लघु बंधू जियत न जैहै शूल तुम्हारो ॥ यह भावी कछु और काज है सो को जो याको मेटनहारो ॥ तुम मति करो अवज्ञा नृपकी यह दूषण तो आगे भारो ॥ याको कहा परेखा हरषो मधु छीलर सरितापति खारो । सूर सुमित्रा अंक दीजियो कौशल्या परणाम हमारो ॥ ३५ ॥

लक्ष्मण संग ले । राग सारंग ॥ लछमन नैन नीर भरि आयो । उत्तर कहत कछु नहिं आयो रह्यो चरण लपटायो ॥ अंतर्यामी प्रीति जानिकै लक्ष्मण लीनो साथ । सूरदास रघुनाथ चले बन पितावचन धरि माथ ॥ ३६ ॥

अहल्या तरन । राग सारंग ॥ गंगातट आए श्रीराम । तहँ पाषाण रूप पग परसे गौतम ऋषिकी वाम॥ गई अकास देब तनु धरिकै अतिसुन्दर अभिराम । सूरदास प्रभु पतित उधारन विरद कितक यह काम ॥ ३७ ॥

लक्ष्मण केवट संवाद ॥ राग मारू ॥ रे भैया केवट ले उतराई । रघुपति महाराज इत ठाढे तैं कित नाव दुराई ॥ अबहिं शिलाते भई देव गति जब पगुरेणु छुआई । हौं कुटुंब काहे प्रतिपारौ वैसी यह ह्वै जाई ॥ जाके चरण रेणुकी महिमा सुनियतु अधिक बड़ाई । सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुरानकी गाई ॥ ३८ ॥

केवट विनय । राग कान्हरा ॥ नवका नाहीं हौं लै आऊं । प्रगट प्रताप चरणको देखौं ताहि कहां लौं गाऊं ॥ कृपा सिंधुपै केवट आयो कम्पत करत जु बात । चरण परसि पाषान उड़त है मति मेरी उड़िजात ॥ जो यह बधू होय काहूकी दार स्वरूप धरै । छूटे देह जाइ सरिता तजि पगसों परस करे ॥ मेरो सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजै । सूरदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजै ॥ ३९ ॥

केवट बचन राम प्रति । राग रामकली ॥ मेरी नवका जिन चढ़ौ त्रिभुवनपति राई । मो देखत पाहन उडे मेरी काठ कि नाई ॥ मैं खेवीही पारको तुम उलटि मँगाई । मेरो जिय-योंहीं डरै मति होहि शिलहाई ॥ मैं निर्बल मेरे बल नहीं जो और गढ़ाऊं । मेरो कुटुँब माहीं लग्यो ऐसी कहां पाऊं ॥ मैं निर्धन मेरे धन नहीं परिवार घनेरो । सेमर ढाक पलास काटि बांधो तुम बेरो ॥ बार बार श्रीपति कहै केवट नहिं मानै । मन परतीति न आवै उडतीही जानै ॥ नियरे हीं जल थाह है चलो तुमैं बताऊं । सूरदासकी बीनती नीके पहुँचाऊँ ॥ ४० ॥

पुरबासी वचन जानकी प्रति ॥ सखीरी कौन तिहारी जात । राजिव नैन धनुष कर लीने वदन मनोहर गात ॥ लज्जित रही पर बधू पूँछें अंग अंग मुसक्यात । अति मृदु वचन पंथ बन बिहरत सुनियत अद्भुत बात ॥ सुन्दर नैन कुँवर सुन्दर दोउ सूर किरन कुम्हि-लात । देखि मनोहर तीनों मूरति त्रिबिधि ताप तनुजात ॥ ४१ ॥

सीता सैन, पति जतावन राग धनाश्री ॥ कहि धौं सखी बटोहीको हैं । अद्भुत बधू लिये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं ॥ परम सुशील सुलक्षण जोरी विधिकी रची न होई । काकी अब उपमा यह दीजै देह धरे धौं कोई ॥ यहिमेंको पति त्रिया तुम्हारो पुरजन पूछैं धाई । राजिव नैन मैनकी मूरति सैनन माहिं बताई ॥ गए सकल मिलि संग दूरि लों मन न फिरत पुरवास । सूरदास स्वामीके बिछुरत भरि २ लेत उसाँस ॥ ४२ ॥

दशरथ प्राणतजन श्रीरामहेतु ॥ तात वचन रघुनाथ जबै बन गौन कियो । मन्त्री गयौ फिरावन रथ लै रघुवर फेरि दियो ॥ भुजा छुड़ाई तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो । सुरत साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहिं पियो ॥ यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात वियो । इहि विधि बिकल सकल पुरवासी नाहीं चाहत जियो ॥ पशु पंछी तृण कण त्याग्यो अरु बालक पय न पियो । सूरदास सियनाथ बोल हित पतिव्रत सुख जु कियो ॥ ४३ ॥

राजाको तेल घट स्थापन, मन्त्रीगमन ॥ भरत निकट ॥ राग सारंग ॥ राजा तेल द्रोनिमें डारे । सात दिवस मारगमें बीते देखे भरत पियारे ॥ जाइ निकट हिय लाइ दोउ शिशु नैन उमँग जल धारे । कुशल क्षेम पूँछत कौशल्या राजा कुशल तिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही ते हैं प्राण हमारे । कुशल क्षेम अवधके पुरजन दासि दास प्रतिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही तुम हित काज हँकारे । सूर सुमंत ज्ञानि ज्ञानाद्भुत महिमा समय बिचारे ॥ ४४ ॥

कौशल्या विलाप, भरत अवन, मातापर अतिक्रोध । राग गूजरी ॥ रामहिं राखौ कोऊ जाई । जबलौं भरत अयोध्या आवैं कहत कौशल्या माई ॥ पठवो दूत भरतको ल्यावन वचन कह्यो

शिरनाई । दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई ॥ आए भरत दीन ह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई । हम सेवक वा त्रिभुवन पतिके सिंहहि बलि कौवा क्यों खाई ॥ आजु अयोध्या जल नहिं अचवों ना मुख देखौं माई । सूरदास राघवके बिछुरे मरों भवन दौलाई ॥ ४९ ॥

भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति । राग केदारा ॥ तैं कैकई कुमंत्र कियो । अपने मुख करि काल हँकारयो हठ करि नृप अपराध लियो ॥ श्रीपति चलत रह्यो कहि कैसे तेरो पाहन कठिन हियो । हम अपराधिनके हित कारन तैं रामहिं वनवास दियो ॥ कौन काज यह राज हमारे इहि पावक परि कौन जियो । लोटत सूर धरणि दोउ बन्धू मनो तपत विष विषय पियो ॥ ४६ ॥

राग सोरठ ॥ राम कहां गए री माता । सूनो भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता ॥ धिग तेरो जन्म जिवन धृग तेरो कही कपट मुखबाता । सेवक राज साहिब बन पठये यह कब लिखी विधाता ॥ मुखारविंद हम देखि जीवते ज्यों चकोर शशिराता । सूरदास कौशल्यानन्द बन कहा अयोध्या तेरो नाता ॥ ४७ ॥

राग कान्हरा ॥ गुरू वसिष्ठ भरत समुझायो ॥ राजाको परलोक सँवारो युग युग यह चलि आयो ॥ चन्दन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो । चले बिमान संग गुरु पुरजन तापर राज पुढायो ॥ दिन दशलौं जल कुंभ साजि शुचि दीपदान करवायो । भस्म अन्त तिल अंजलि दीनों देव बिमान चढ़ायो ॥ जानि एकादश बिप्र बुलायो भोजन बहुत करायो दीनो दान बहुत नाना विधि इहि बिधि कर्म पुजायो ॥ सब करतूति कैकयीके शिर जिन अभिलाष उपायो । इहि विधि सूर अयोध्यावासी दिन दिन काल गँवायो ॥ ४८ ॥

भरत गमन रामजी विकट बन विषे परस्पर संवाद । राग सारंग ॥ राम पै भरत चले अकुलाई । मनही मन सोचत मारगमें दई फिरैं क्यों राघवराई ॥ देखि दरश चरणन लपटानो गदगद कण्ठ न कछु कहि आई । लीनो हृदय लगाइ सूर प्रभु पूंछत भद्र भए क्यों भाई ॥ ४९ ॥

रामसीता मिलाप दशरथ परलोकश्रवण राग केदारा ॥ भरत मुख निरखि राम बिलखाने ॥ मुंडित केश शीश बिहबल दोउ उमँगि कण्ठ लपटाने ॥ तात मरन सुनि श्रवण कृपानिधि धरणि परे मुरझाई । मोह गमन लोचन जलधारा बिपत्ति हृदय न समाई ॥ लोटति धरणि परी सुनि सीता समुझति नहिं समुझाई । दारुण दुःख दया ज्यों तृणवन नाहीं बुझति बुझाई ॥ दुर्लभ भयो दरश दशरथको भयो अपराध हमारो । सूरदास स्वामी करुणामय नैनन जात उधारो ॥ ५० ॥

श्रीराम भरत संवाद राग केदारा ॥ तुम विमुख रघुनाथ कौन विधि जीवन कहा बनै ॥ चरण सरोज बिना अवलोकेको सुख धरणि गनै ॥ हठ करि रह्यो चरण नहिं छांडे नाथ तजौ निठुराई । परम दुखी कौशल्या जननी चलो सदन रघुराई ॥ चौदह वर्ष तातकी आज्ञा मोपै मेटि न जाई । सूर स्वामी पाँवरी शीश धरि भरत चले बिलखाई ॥ ५१ ॥

रामउपदेश भरत प्रति । राग मारू ॥ बंधू करियो राज सँभारे । राजनीति अरु गुरुकी सेवा गाइ विप्र प्रतिपारे ॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा दरशन सांझ सवारे । गुरु वसिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों परजा हेतु बिचारे ॥ भरत गात शीतल ह्वै आयो नैन उमँगि जलधारे ॥ सूरदास प्रभु दई पाँवरी अवध पुरी पग धारे ॥ ५२ ॥

भरत विदाकरण । राग सारंग ॥ राम यों भरत बहुत समुझायो । कौशल्या कैकई सुमित्राको पुनि पुनि शिर नायो ॥ गुरु वशिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों अतिही प्रेम बढ़ायो । बालक प्रतिपालक तुम दोऊ दशरथ लाड लडायो ॥ भरत शत्रुघन करि प्रणाम रघुवर हित कंठ लगायो ॥ गद्गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जस छायो ॥ कीजै यहै बिचार परस्पर राजनीति समुझायो । सेवा मात प्रजाप्रतिपालन यह युग युग चलिआयो ॥ चित्रकूटते चले तिंहि वन मन विश्राम न पायो । सूरदास बलि गयो रामके निगम नेति जेहि गायो ॥ ५३ ॥

दंडकवनमें शूर्पणखाको नाकछेद । राग मारू ॥ दंडकवन आए रघुराई । काम विवश व्याकुल उर अंतर राक्षसि इक तहां आई ॥ हँसिकरि राम कह्यो सीतासो इहि लक्ष्मणके निकट पठाई ॥ भ्रुकुटी कुटिल अरुण अति लोचन अग्निशिखा मुख कह्यो फिराई ॥ बौरी भई मदन विवश मेरे ध्यान चरण रघुराई । विरह व्यथा तनु लाज छुटि बार बार अकुलाई ॥ रघुपति कह्यो निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी ह्यांते जाई । सूरज प्रभु पत्नीव्रत एकै काट्यो नाक गई खिसिआई ॥ ५४ ॥

खर दूषण वध मारीच रावणको वनमें आवन । राग सारंग ॥ खर दूषण यह सुनि उठि धाए । तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आये ॥ श्रीरघुनाथ लछनके मारे कोउ एक गए पराए । शूर्पणखा ये समाचार सब लंका जाय सुनाये ॥ दशकंधर मारीच निशाचर यह सुनिकै अकुलाये । दंडकवन आये छलके हित सूर ठग्यो रघुराये ॥ ५५ ॥

मारीचवध सीताहरण मार्गमें गृध्रसों युद्ध ॥ राग केदारा ॥ सीता पुहुप बाटिका लाई । नानाविधि पांति पांति सुन्दर मनु कंचनकी है लता बनाई ॥ बार बार शोकादिकके तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई । अंकुर मूल भए सो पोषै कर्मभोगफल लागे आई ॥ मृगस्वरूप मारीच धरचो तब फेरि चल्यो मारग जु दिखाई । श्रीरघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बाणदेव गति पाई ॥ टेर लषण सुनि बिकल जानकी अति आतुर उठि धाई । रेखा खैंची बार बधनकी हा रघुबीर कहांहौ भाई ॥ रावण तुरत विभूति लगाए कहत हस्त भिक्षा दै माई । दीन जानि सुधि आनि भजनकी प्रेम भिक्षा लै जाई । हरि सीता लै चल्यो डरत जिय मानो रंक महानिधि पाई ॥ सूरसंग पछतात यहै कहि कर्मदशा मेटी नहिं जाई ॥ ५६ ॥

राम स्वरूप वर्णन ॥ मृग पाछे धावन समय ॥ राग सारंग ॥ रामधनुष अरु सायक साधे सियहित मृग पाछे उठि धाए वसन बहुत ढिग बांधे ॥ नवघननील सरोज वरण वपु बिपुल बाहु क्षत्रीगुन कांधे ॥ इन्दु बदन राजीव नैन वर शीश जटा शिवसम शिर बांधे ॥

पालत सृजत संहारत संतत अंड अनेक अवधि पल आधे ॥ सूरभजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरण अवराधे ॥ ५७ ॥

सीता छाया हरन रावण गिद्धसे युद्ध ॥ राग मारू ॥ इहिविधि बन बसे रघुराई । डासिकै तृण भूमि सोवत द्रुमनिकै फल खाई । जगत जननी करीबारी मृगा चरिचरि जाइ । कोपिकै प्रभु बान लीनो तबहिं धनूष चढाइ ॥ जनक तनया धरि अगिनिमें छायारूप बनाइ ॥ इह कोऊ नहिं भेद जानैं बिना श्रीरघुराइ । कह्यो अनुजसों रहौ यहां तुम छांडि जिनि कहुँ जाइ । कनक मृग मारीच मारयो गिरयो लक्षण सुनाय ॥ खोदि दई सुरेख सीता कह्यो सुकह्यो न जाइ ॥ तबहिं निशिचर कियो यह छललियो सीय चुराई ॥ गिद्ध ताको देखि धायो लख्यो सूर बनाइ । कटे पंख गिरयो असुर तब गयो लंका धाइ ॥ ५८ ॥

अशोकवनमें सीताकी स्थापना । राग सारंग । वन अशोकमें जनकसुताको रावण रख्यो जाइ । भूख रु प्यास नींद आवैगई बहुत मुरझाइ । रखवारीको बहुत निशिचरी दीन्ही तुरत पठाइ । सूरदास सीता तेहि निरखत मनही मन सकुचाइ ॥ ५९ ॥

राम विलाप सीता वियोग ॥ राग केदारा ॥ रघुपति कहि प्रियनाम पुकारत । हाथ धनुष लै मुक्त मृगहिं किये चकृत भये दिशि विदिश निहारत ॥ निरखत सून भँवन जड़ ह्वै रहे खन लोटत धर बपु न सँमारत । हा सीता सीता कहि श्रीपति उमगि नयनजल भरि भरि ढारत ॥ लागि शेष उर विलखि जगत गुरु अद्भुतगति नहिं परत बिचारत । चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरत न टारत ॥ ६० ॥

सुनो अनुज इहि बन इतननि मिलि जानकी प्रिया हरी । कछु इक अंगनिकी सहिदानी मेरी दृष्टि परी । कटिकेहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा धरी । मृगमूसी नैननिकी शोभा जाति न गुप्तकरी ॥ चंपक बरनचरन करि कमलनि दाडिम दशन लरी । गति मराल अरु बिंब अधर छबि आहि अनूप कबरी ॥ अति करुणा रघुनाथ गुसाईं युगभर जात घरी ॥ सूरदास प्रभु प्रिया प्रेम वश महिमा बिसरी ॥ ६१ ॥

फिरत प्रभु पूछत बन तुम बेली । अहो बंधु काहू अवलोकी इहि मग बधू अकेली ॥ अहो विहंग अहो पन्नग नृप या कंदर गई । अबकी बार मम विपतिमिटाओ जानकी देहु बताई ॥ चंपक पुहुप बरन तनु सुन्दर मनो चित्र अवरेखी । हो रघुनाथनिशाचर के संग चलीजाति हौं देखी ॥ यह सुनि धावत धरनि चरनकी प्रतिमा खगी पंथ मेंपाई । नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव ज्यों गात चढाई ॥ कहुँ हियहार कहूँ कर कंकन कहुँ अंचर कहुँ चीरा । सूरदास बन बन अवलोकत बिलखि बदन रघुवीरा ॥ ६२ ॥

रामजीको गृध्रसों मिलाप सीता समाचार श्रवण ॥ राग केदारा ॥ तुम लक्ष्मण या कुंज कुटीमें देखो नैन निहारि । कोउ एक जीव नाम मम लैलै उठत पुकारि पुकारि ॥ इतनी कहत कंधते कर गहि लीनो धनुष सँभारि । कृपानिधान नाम हित धाए अपनी बिपति बिसारि ॥ अहो विहँग कहो आपनो दुख पूँछत तब जु मुरारी । किहि मतिमूढ बध्यो तनु तेरो किधौं बिछोही नारि ॥ श्रीरघुनाथ रमनि जगजननी

जनकनेरश कुमारि । ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लग्यो गुहारि ॥ इतनी सुनि कृपालु कोमलप्रभु दियो धनुष कर झारि । मानो सूर प्रान ले रावन गयो देहको डारि ॥ ६३ ॥

गिद्ध हरि पद प्राप्ति ॥ राग केदारा ॥ रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो । कहिकै बात सकल सीताकी तनु तजि चरण कमल चित लायो । श्रीरघुनाथ जानि जन अपनो अपने कर करि ताहि जरायो । सूरदास प्रभु दरश परश करि हरिके लोक सिधायो॥६४॥

शबरीको हरिपद प्राप्ति ॥ शबरी आश्रम रघुवर आए । अर्घ्यासन दै प्रभु बैठाए ॥ खाटे तजि फल मीठे लाई । जूँठे भये सु सहज सुनाई ॥ अन्तर्यामी अति हित जानैं । भोजन कीने स्वाद बखानैं ॥ जात न काहूकी प्रभु जानत । भक्त भाव हरियुग युग मानत । करि दंडवत भई बलिहारी । पुनि तनु तजि हरिलोक सिधारी ॥ सूर प्रभू करुणामय भये । निज कर करि तिल अंजलिं दये ॥ ६५ ॥

किष्किंधाकाण्ड ॥ सुग्रीव आज्ञा हनुमान रामको मिला ॥ राग सारंग ॥ ऋष्यमूक पर्वत विख्याता । इक दिन अनुज सहित तहां आये सीतापति रघुनाथा ॥ कपि सुग्रीव बालिके भयते बस्यो हुतो तहँ आई । त्रास मानि तब पवनपुत्रको दीनो तुरत पठाई ॥ को यह बीर फिरै वन भीतर किहि कारण इहां आए । सूर प्रभूके निकट आइ कपि हाथ जोरि शिर नाए ॥ ६६ ॥

हनुमान राम संवाद ॥ सुग्रीवको रामजीका दर्शन ॥ राग मारू ॥ मिले हनु पूछी असि प्रभु बात । महा मधुर प्रियवाणी बोलत शाखामृग कौनै ते तात ॥ अंजनिको सुत केसरिके कुल पवन गवन उपजायो गात । तुमको बीर नीरभरि लोचत मीन हीनजल ज्यों मुरझात॥ दशरथकुल कोशलपुर बासी त्रिया हरी ताते अकुलात । ये गिरिपरी कपिपति सुनियत है बालि त्रास कैसे दिन जात ॥ महादीन बलछीन बिकल अति पवनपूत देखत बिलखात । सूर सुनत सुग्रीव चले उठि चरण गहे पूछो कुशलात ॥ ६७ ॥

वालिवध सीता भूषण दर्शन सप्तताल भेद ॥ राग मारू ॥ भाग्य बड़े इहि मारग आये । गदगद कंठ शोकसों रोवत वारि बिलोचन छाए । महाधीर गंभीर बचन सुनि जाम्बवंत वचन समुझाए । बढी परस्पर प्रीति रीति तब भूषण सिया दिखाए ॥ सप्त ताल शर साधि बालि हति मन अभिलाष बढाए । सूरदास प्रभु भुजनिके बलिबलि बिमल बिमल यश गाए ॥ ६८ ॥

सुग्रीव राज अंगध समाधान । राग सारंग ॥ राज दियो सुग्रीवको तिन हरि यश गायो । पुनि अंगदको बोलि ढिग या बिधि समुझायो ॥ होनिहार सोइ होति है नाहिं जात मिटायो । सूरदास प्रभु चतुर मास ता ठौर बितायो ॥ ६९ ॥

पवनपुत्र अंगदादि मुद्रिका सहित सीता सुधि हित संपाति मिलाप । राग सारंग ॥ श्रीरघुपति सुग्रीव को निज निकट बुलायो । लीजै सुधि अब सीयकी यह कहि समुझायो ॥ जाम्बवंत अंगद हनू उठि माथो नायो । हाथ मुद्रिका दई प्रभुसंदेश सुनायो ॥ आए तीर समुद्रके कछु शोध न पायो । संपाती तहँ मिल्यो सूर यह बचन सुनायो ॥ ७० ॥

संपातीका सीता अवस्था वर्णन कपिन प्रति । राग सारंग ॥ बिछुरी मनोसंगते हिरनी । चितवति रहित चकित चारों दिशि उपजी बिरह तनु जरनी ॥ तरुवर मूल अकेली ठाढी दुखित रामकी घरनी । बसन कुचील चिहुर लपटाने देह पीतांबर बरनी ॥ लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि जु परी धरिधरिनी । सूर शोच जिय पोच निशाचर रामनामकी शरनी ॥ ७१ ॥

सुंदर कांड समुद्रतीर परस्पर मंत्र हनु विदा सुरसामुखप्रवेश । राग केदारा ॥ तब अगंद इक वचन कह्यो । को तरि सिंधु सिया सुधि लावै किहि बल इतो लह्यो । इतनो वचन श्रवण सुनि हरष्यो हँसि बोल्यो जमुवंत । यादल मध्य प्रगट केशरि सुत जाहि नाम हनुमंत ॥ वहै लाइ है सिय सुधि छिनमें अरु आइ है तुरंत । प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके बलहिं न अंत ॥ जो मन करै एक बासर में छिन आवै छिन जाइ । स्वर्ग पताल महागत ताको कहिये कहा बनाइ ॥ केतिक लंक उपारि वामकर लै आवै उचकाइ । पवनपुत्र बलवंत व्रज तन काके होय समुदाइ ॥ लियो बुलाय मुदित चित ह्वैके बच्छ तंबोलहिं लेहु । ल्यावहु जाइ जनकतनया सुधि रघुपतिको सुख देहु ॥ पौरि पौरि प्रति फिरौ बिलोकत गिरि कंदर बन गेह । समय विचारि मुद्रिका दीजो सुनौ मंत्र सुत येह ॥ लयो तंबोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुण गात । चढ़ि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो गगन उठयो आघात ॥ कंपत कमठ शेष वसुधा नभ रवि रथ भयो उतपात । मानो पच्छ सुमेरहि लागे उडयो अकासहि जात ॥ सुकृत सकल परस्पर वानर बीच करी किलकार । तहां इक अद्भुत देखि निशिचरी सुरसा मुख विस्तार ॥ पवनपुत्र मुख पैठि पधारे तहाँ लगी कछु बार । सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरयो जलनिधि पार ॥ ७२ ॥

हनुमत लङ्का दर्शन, सीता मिलाप हित अशोकवन प्रवेश । राग धनाश्री ॥ लखि लोचन सोचे हनुमान । चहुँ दिशि लंक दुर्ग दानवदल कैसे पाऊं जान ॥ सौ योजन विस्तार कनक पुरि चकरी योजन बीस । मनो विश्वकर्माकर अपुने रचि राखी गिरि शीश ॥ गरजत रहत मत्त गज चहुँ दिशि छत्रध्वज चहुँ दीश । भरमत भयो देखि मारुतसुत दई महाबल ईश ॥ उडि हनुमंत गयो आकासहि पहुँचो नगर मँझारि । वन उपवन गम अगम अगोचर मंदिर फिरयो निहारि । भई पैज अब हीन हमारी जिय में करै बिचारि । पटकि पूँछ माथो ध्वनि लौटे लखी न राघव नारि ॥ नाना रूप निशाचर अद्भुत सदा करत मद पान । ठौर ठौर अभ्यास महामल नट पेषने पुरान ॥ जियजिय शोच करत मारुत सुत जियत न मेरे जान । कै वह भाजि समुद्रमें बूडी कै उन तज्यो पिरान ॥ कैसे नाथ बदन दिखराऊं जो बिन देखे जाऊँ । वानर बीर हँसैंगे मोसों तैं बोरयो पितु नाऊँ ॥ ते सब तर्क बोलिहैं मोको तासों बहुत डराऊँ ॥ भली रामको सिया मिलाई जीति कनकपुरगाऊँ । जब मोहिं अंगद कुशल पूछिहै कहा कहौंगो वाहि । या जीवनते मरन भलोहै मैं देख्यों अवगाहि । मारौं आजु लंकापति लै दिखराऊं ताहि । चौदहसहस अंतःपुर ते लैहैं राघव चाहि ॥ बहुरि बीर जब गयो अवा-

सहिं जहां बसै दशकंध । कनक जटि मगि खंभ बनाए पूरण बास सुगंध ॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर मनो इच्छको बंध । दश सिर मुकुट विराजत मणि कृत भानुउदय दस-संध ॥ चौदह सहस नागकन्या रति परचो सुरत मत अंध ॥ बीणानाद पखावज आवज और राजको भोग । पुहुप प्रयंक परीनव योजन सुख परिमल रस जोग ॥ जिय जिय गढै करै विश्वासहि जानै लंका लोग । इहि सुख सेज परी है सीता रावव विपति वियोग ॥ बैठ्यो जाइ एक तरुवर पर जाकी शीतल छाहिं । बहु निशाचरी मध्य जानकी मलिन बसन तनु माहिं ॥ पुनि आयो सीता जहां बैठी वन अशोकके माहिं । चारहु ओर निशि-चरी घेरे नर जेहि देखि डराहिं ॥ बारंबार बिसूरि सूर दुख जपति नाम रघुनाह । मलिन अर्धपट देखि बदन पर चन्द्र गह्यो ज्यों राह ॥ ७३ ॥

आकाशवाणी हनुमतप्रति, सीय निश्चय । राग मारू ॥ गयो कूदि हनुमंत जब सिंधुपारा ॥ शेषके शीश लागे कमठ पीठिसों धस्यो गिरिवर सबै ता सँभारा ॥ शोच लाग्यो करन यहै धौं जानकी कै कोऊ और मोहि नहिं चिन्हारा । लंक गढ़माहिं आकाश मारग गयो चहूं दिशि बज्र लागे किंवारा ॥ पौरि सब देखि आशोकवनमें गयो निरखि सीता छप्यो वृक्ष डारा । सूर आकाशवाणी भई तब तहां है यहै करि जुहारा ॥ ७४ ॥

निशिचरी रावण बड़ाई, सीताकी निंदा ॥ समुझि अब निरखि जानकी मोहि । बड़ो भाग्य गुण अगम दशानन शिव वर दीनो तोहिं । केतक राम कृष्ण ताकी पितु मातु घटाई कानि । तेरे पिता जनककी सीता कीरति कहौं बखानि ॥ विधि संयोग टरत नहिं टारचो बन दुख देख्यो आनि । अब रावण घर विलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि ॥ इतनो वचन सुनत सिरधुनिकै बोली सिया रिसाइ । अहो ढीठ मति मुग्ध निशिचरी सम्मुख बैठी आइ ॥ तब रावणको बदन देखि हौं दश शिर शोणित हाइ ॥ कैतन देउँ मध्य पावकके कै विलसैं रघुराइ ॥ जो पै पतिव्रता व्रत तेरे जीवत बिछुरी काइ ॥ तब किन मुई कहौ तुम मोसों भुजागही जब राइ । अब झूठो अभिमान करति सिय झुकति हमारे ताइ । सुखहीं रहसि मिलो रावणको अपने सहज सुभाइ ॥ जो तू रामहि दोष लगावै करौ प्राणके घात । तुमरो कुलको बेर न लागै होत भस्म संघात ॥ उनके क्रोध जरै लंकापति तेरे हृदय समाई । तोपै सूर पतिव्रत सांचो जो देखौं रघुराई ॥ ७५ ॥

निशिचरी सीता सत प्रगट करन रावण निज उद्धार ज्ञान ॥ राग धनाश्री ॥ सुनो क्यों न कनकपुरीके राइ । हौं बुधि बल छल करिपचि हारी लख्यो नशीश उचाइ । डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जगजाइ ॥ नशै धर्म मम वचन काय करि शंभु अचंभु कराइ । अचला चलै चलत पुनि थाकै चिरंजीव सो मरइ । श्रीरघुनाथ प्रताप पतिव्रता सीता सत नहिं टरई ॥ ऐसी त्रिया हरित क्यों आई जाके यह सतभाइ । मन बच क्रम और नहिं दूजो तजि रघुनन्दन राइ ॥ इनके क्रोध भस्म है जै होकरहु न सीता चाउ । अब तुम काका शरन उबरि हौं सो बल मोहिं बताउ ॥ जो सीता सतते बिचलैतौ श्रीपति

काहि सँभारै । मोसे मुग्ध महा पापीको कौन क्रोध करि तारै ॥ यह जननी वे प्रभु रघुनन्दन हम सेवक प्रतिहार । सीताराम सूर संगम बिनु कौन उतारै पार ॥ ७६ ॥

रावण लोभ दिखावन जानकी निरादर करना । राग मारू ॥ जनक सुता तू समुझि चित्तमें निरखि मोहि तन हेरी । चौदह सहस किन्नरी जेती सब दासी हैं तेरी ॥ कहै तो जनक गेह दै पठवौ अर्ध लंकको राज । तोहिं देखि चतुरानन मोहे तू सुन्दरि शिरताज ॥ छाडि राम तपसीके मोहै उठि आभूषण साजु । चोदह सहस तिया मैं तोको पटा बँधाऊं आज ॥ कठिन वचन सुनि श्रवन जानकी सकी न वचन सहार । तृण अंतर दै दृष्टि तिरौछी दई नैन जलधार ॥ पापी जाउ जीभ गलि तेरी अजुगत बात बिचारी । सिंहको भक्ष शृगाल न पावै हौं समरथ की नारी ॥ चौदह सहस दुष्ट खर दूषण रघुपति एकहि बान । लक्ष्मण राम धनुष सन्मुख करि काके रहि हैं प्राण ॥ तेरी अवधि कहत सब कोऊ ताते कहियत बात । बिन विश्वास मारिहैं तोको आजु रैनिकै प्रात ॥ मेरो हरन मरन है तेरो सो कुटुंब संतान । जरिहै लंक कनकपुर तेरो उदित रघूकुल भान ॥ यह राक्षसकी जाति हमारी मोहन न उपजै गात । परत्रिय रमै धर्म कहां जानैं डोलत मानुष खात ॥ मनमें डरी कानि जिनि तोरै मुहि अबला जिय जानि । नख शिख बसन संभारि सकुचि तनु कुच कपोल गहि पानि ॥ रे मशकंध अंध मति तेरी आयु तुलानी आनि । सूर रामको विरद गर्व हत डारै शंभु भुज भानि ॥ ७७ ॥

त्रिजटाने सीताका समाधान किया । राग मारू ॥ त्रिजटा सीता पै चलि आई ॥ मनमैं सोच न कर तू माता यह कहिकै समुझाई ॥ नल कूबरको शाप रावनहिं तोपर बल न बसाई ॥ सूरदास मनु जरी सजीवन श्री रघुनाथ पठाई ॥ ७८ ॥

त्रिजटा प्रति सीता मनोरथ वर्णन । राग कान्हरा ॥ सो दिन त्रिजटी कहि कब ह्वै है । जादिन चरन कमल रघुपतिके हरषि जानकी हृदय लगै है ॥ कबहुँक लक्ष्मण पाय सुमित्रा माइ माह कहि मोहिं सुनै हैं । कबहुँक कृपावंत कौशल्या वधू वधू कहि मोहिं बुलै हैं ॥ जादिन राम रावणहिं मारैं ईशहिं दै दशशीश चढै हैं । तादिन जन्म सफल करि जानो मेरे हृदयकी कालिम जैहै ॥ जादिन कंचन पुर प्रभु एहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरैहैं । तादिन सूर राम पर सीता सरबसु वारि बधाई देहैं ॥ ॥ ७९ ॥

राग सारंग ॥ मैं रामके चरणन चित दीनो । मनसा वाचा और कर्मणा बहुरि मिलनको आगम कीनो ॥ डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै बासर पति । सुनि त्रिजटी तौहू नाहिं छोड़ौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति ॥ सीता करति बिचार मनै मन आजु कालिह कोशल पति आवैं सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों बिसरावैं ॥८०॥

सीताप्रति त्रिजटास्वप्न वर्णके हनू सियदरश परस्पर संवाद मुद्रिका अर्पण ॥ राग धनाश्री ॥ सुन सीता सपनेकी बात । रामचंद्र लछमन मैं देखे ऐसी बिधि परभात ॥ कुसुम बिमान बैठि

बैदेही देखी रावव पास। श्वेतछत्र रघुनाथ शीशपर दिनकर किरण प्रकाश॥ भयो पलायमान दानवकुल व्याकुलता इक त्रास। पंजरत ध्वजा पताक छत्र रथ मनिमय कनक अवास॥ रावन शीश पुहुमिपर लोटत मंदोदरि बिलखाइ। कुम्भकर्ण तनु खंग लगाई लंक बिभीषण पाई॥ प्रकट्यो आइ लंक दल कपिको फिरि रघुबीर दुहाई। यह सपनेको भाव सखीरी क्योंहूं बिफल न जाई॥ त्रिजटी वचन सुनत बैदेही अति दुख लेत उसांस। हाहा रामचन्द्र हा लछिमन हा कौशल्या सास॥ त्रिभुवननाथ नाह ज्यों पायो सुयों रहै बनवास। हा कैकई सुमित्रा रानी कठिन निशाचर त्रास॥ कौन पाप मैं पापिन कीनो प्रकट्योहै इहिबार। धिग धिग जीवन है अब इहि तनु क्यों न होइ जरिछार। द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृगके हित दीने हथियार॥ जान्यो नहीं निशाचरके छल नांघी धनुष अकार॥ पंछी एक सुहृद जानतहो करचो निशाचर भंग। तातें बिरमि रह्यो रघुनंदन करि मनसा मन पंग॥ इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग। आज लहौं रघुनाथ सँदेशो मिटे बिरह दुख संग॥ तिहि छिन पवनपूत तहँ प्रगटेउ सिया अकेली जानि। श्री दशरथकुमार दोउ बंधू धरे धनुष दोउ पानि॥ प्रिया वियोग फिरत मारे मन परे सिंधु तट आनि। ता सुन्दरि हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिंचानि॥ बारंबार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति पछिताइ। देव जीव पशु पक्षी को तू नाम लेत रघुराइ॥ बोलै नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुममें देह छुपाइ। कै अपराध औढ अब मेरो कै तू देहि दिखाइ॥ तरुवर त्यागि चपल शाखामृग सन्मुख बैठ्यो आइ। माता पुत्र जानि दे उत्तर कहु किहि विधि बिलखाइ॥ किन्नर नाग देवि सुरकन्या कासों हित उपजाई। कै तू जनककुमारि जानकी राम वियोगिनि आई॥ राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता बंधु तू होहि। मैं सीता रावन हरिल्यायो त्रास दिखावत मोहि॥ अब मैं मरौं सिंधुमें बूडौं चितमें आवै कोह। सुनो बच्छ जीवन धिग मेरो लक्षण राम बिछोह॥ कुशल जानकीजू रघुनंदन कुशल लक्ष्मण भाई। तुमहित नाथ कठिन व्रत कीनो नहिं जल भोजन खाई॥ मुरै न अंग कोऊ जो काठै निशिवासर सम जाई। तुमघट प्राण देखियत सीता बिना प्राण रघुराई॥ वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूँढ़ैं गिरि बनचारी। सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिन्धुके पारी॥ उद्यम मेरो सफल भयो अब मैं देखो तुम आइ। अब रघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरिसोग सिराइ॥ यह सुनि सियमन शंका उपजी रावनदूत बिचारी। छल करि आयो निश्चर कोऊ नानारूप निधारि॥ श्रवणमूंदि अंचरमुख ढाँक्यो अरे निशाचर चोर। काहेको छल करि करिआवत धर्म बिनाशन मोर॥ पावक परौं सिंधुमहँ बूडौं नहिं मुख देखौं तोर। पापी क्यों न पीठिदै मोको पाहनसरिस कठोर॥ जियमें डरचो मोहिं मति शापै व्याकुलवचन कहंत। जो वर दियो सकल देवन मोहिं नाउँ धरचो हनुमंत॥ सुग्रीवको तारका मिलाई बध्यो बालि भयमंत। अंजनिकुँवर रामको पाइक ताके बल गर्जंत॥ लेहु मातु मुद्रिका निसानी दई प्रीति करि नाथ। सावधान ह्वै शोक-निवारो ओढहु दक्षिण हाथ॥ खिन मुँदरी खिनही हनुमतसों कहति बिसूरि बिसूरि। कहि मुद्रिकै कहां तैं छांडे मेरे जीवनमूरि॥ कहियो वच्छसँदेशो इतनो जब हम एकत

थान। सोवत काग छुयो तनु मेरो बाहिर कीनोबान ॥ फोरचो नयन काग नहिं छाँड्यो सुरपतिके विद्‌मान। अब वह कोप कहां रघुनन्दन दशशिरकंठ बिरान ॥ निकट बुलाइ बैठाइ निरखि मुख अचर लेत बलाइ। चिरजीयो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ ॥ बहुत भुजनि बल होइ तुमारे ये अमृत फल खाहु। अबकी बेर सूर प्रभु मिलिहो बहुरि प्राण किन ज्राहु ॥ ८१ ॥

हनुमत सीता समाधान ॥ राग मारू ॥ जननी हौं अनुचर रघुपति को। मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मति को ॥ आज्ञा होइ दोउँ कर मुँदरी कहौं संदेशो पतिको। मति हिय बिलख करो सिय रघुवर बधिहैं कुल दैयत को ॥ कहौ तु लंक उखारि डारि देउँ जहां पिता संपति को। कहो तुमारि सँहारि निशाचर रावण करौं अगति को ॥ सागर तीर भीर बनचरकी देखि कटक रघुपतिको। लै मिलाइहौं अबहिं सूर प्रभु राम रोष डर अतिको ॥ ८२ ॥

राग मारू ॥ अनुचर रघुनाथ तेरे दरश काज आयो। पवनपूत कपि स्वरूप भक्तनमें गायो ॥ तपसी जहां तपन करैं सोइ बनमें झांक्यो। जाकी तुम छांह बैठी सोइ द्रुम मैं राख्यो ॥ आयसु जो होइ जननि सकल असुर मारौं। लंकेश्वर बांधि राम चरणन तर डारौं ॥ चढ़ि चलो जु पीठि मेरी अबहिं लै मिलाऊं। सूर श्रीरघुनाथजूके लीला गुण गाऊं ॥ ८३ ॥

हनुमत निरखि सीता संदेह मुद्रिका असत प्रतीति ॥ राग मारू ॥ तुम्ह पहिचानति नाहीं वीर। इहि नैननि कबहूं नहिं देख्यो रामचन्द्रके तीर ॥ लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम शरीर। तोहिं देखि मेरो जिय डरपत नैननि आवत नीर ॥ जब कर काढि अँगूठी दीनी तो जिय उपजी धीर। सूरदास प्रभु लंकाकारण आए सागर तीर ॥ ८४ ॥

हनूका रामलक्ष्मणके समाचार कहना, अपनो पराक्रम वर्णन। राग सारंग ॥ जननी हौं रघुनाथ पठायो। रामचन्द्र आयेकी तुमको देन बधाई आयो ॥ हौं हनुमंत कपट जिनि समुझो बात कहत समुझाई। मुँदरी दूब धरीलै आगे तब प्रतीति जिय आई ॥ अति सुख पाइ उठाइ लई तब बार बार ठर भेंटति। ज्यौं मलयागिरि पाइ आपनी जरनि हृदयकी मेटति ॥ लक्ष्मण पालागनि करि पठयो हेतु बहुत करि माता। दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिर जीयो दोउ भ्राता ॥ बिछुरनको संताप हमारो तुम दरशनतें काट्यो। ज्यों रवि तेज पाइ दशहूं दिशि दोष कुहरको बाट्यो ॥ ठाढे बिनती करत पवनसुत अब जो आज्ञा पाऊं। अपने देख चलेको यह सुख उनहूं जाइ सुनाऊं ॥ कल्प समान एकछन राघव कर्म कर्म करि बितवत। ताते हौं अकुलात कृपानिधि ह्वैहै पैंडो चितवत ॥ रावण हतिलै चलौं साथही लंका धरौं अपूठी। याते जिय अकुलात कृपानिधि करौं प्रतिज्ञा झूठी ॥ यहां

जोइ सब दशा हमारी सूर सो कहियो जाई । बिनती बहुत कहा कहौं रघुपति जिहि-बिधि देखौं पाई ॥ ८५ ॥

सीता आगमन प्रसन्न हनू धीरजदेन ॥ राग मलार ॥ बनचर कौन देशते आयो । कहँ वे राम कहां वे लक्ष्मण क्यों करि मुद्रा पायो ॥ हौं हनुमंत रामके सेवक तुवं सुधि लेन पठायो । रावण मारि तुम्हैं लै जातो रामनिदेश न पायो ॥ तुम मति डरियो मेरी मैया राम जोरि दल ल्यायो । सूरदास रावण कुल खोवन सोवत सिंह जगायो ॥ ८६ ॥

अन्यच्च राग सारंग ॥ कहो कपि कैसे उतरचो पार । दुस्तर अति गंभीर बारिनिधि शत योजन बिस्तार ॥ इतउत क्रोध दैत्य कपि मारत महा अबुधि अधिकार । हाटकपुरी कठिन पथ वानर आये कौन अधार । राम प्रताप सत्य सीताको यहै नाउ कंधार । बिनअधार छनमें अवलंघ्यो आवत भई न बार ॥ पृष्ठभाग चढि जनकनन्दिनी पौरुष देख हमार । सूरदास लै जहाँ तहाँ जहँ रघुपति कंत तुम्हार ॥ ८७ ॥

हनू मिलापते सीता आनंद । राग मारू ॥ हनुमंत भली करी तुम आए । बार बार कहती बैदेही दुख संताप मिटाए ॥ श्रीरघुनाथ और लक्ष्मणके समाचार सब पाये । अब परतीति भई मन मेरे संग मुद्रिका लाये ॥ क्यों करि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये । सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहाँ पठाए ॥ ८८ ॥

सीता रामपराक्रम वर्णन उराहना समेत वेगि मिलाप हित । राग कान्हरा ॥ सुन कपि वे रघुनाथ नहीं । जिन रघुनाथ पिनाक पिनान्यो तोरचो निमिष महीं ॥ जिन रघुनाथ फेरि भृगुपतिगति डारि काटि तहीं । जिहिं रघुनाथ हार खरदूषण हरे प्राणशरहीं ॥ कै रघुनाथ तज्यो प्रण अपनो योगिन दशा गही । कैरघुनाथ दुखित कानन कै नृप भये रघुकुलहीं ॥ कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं । छाँडी नारि बिचारि पवनसुत लंक बाग बसहीं ॥ किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौ कंतहि न चही ॥ सूरदास स्वामीसों कहियो अब बिरमियो नहीं ॥ ८९ ॥

सीता निज दुःख वर्ण्यो हनूप्रति । राग मारू ॥ देखे यह दति जात सँदेशो कैसेंकै जु कहौं । सुन कपि इन प्राणनको पहरो कबलों देति रहौं ॥ ये अति चपल चल्यो चाहत हैं करत न कछू विचार । कहि धौं प्राण कहांलौं राखौं रोकि रोकि मुखद्वार ॥ अपनी बात जनावति तुमसों सकुचति हों हनुमंत ॥ नाहींसूर सुन्यो दुख कबहुँ प्रभु करुणामय कंत ॥ ९० ॥

सीता विनय निज दुख निवारण निमित्त श्रीराम प्रति । राग मारू ॥ कहियो कपि रघुनाथ राजसों यह इक बिनती मेरी । नाहीं सही परति यह मोपै दारुण त्रास निशाचरकेरी ॥ यह जो अंध बीसहूँ लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी । आइ शृगाल सिंह-बलि मांगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी ॥ जेहि भुज परशुराम बल करष्यो ते भुज क्यों न सँभारत फेरी । सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुडाइ जानकी चेरी ॥ ९१ ॥

सीता निज अपराध प्रगटन ॥ राग मारू ॥ मैं परदेशिन नारि अकेली । बिनु रघुनाथ और नाहिं कोऊ मातु पिता न सहेली ॥ भेष धरचो तपसीको कत मैं भिक्षा रावण मेली । अति अज्ञान मूढ मति मेरी रामरेख पाइन मैं पेली ॥ बिरहताप तनु अधिक जरावत जैसे दो द्रुम बेली । सूरदास प्रभु बेगि मिलाओ प्राण जात हैं खेली ॥ ९२ ॥

हनुमत वचन राग मारू ॥ तू जननी जिय दुख जिन मानहि । रामचन्द्र नाहिं दूर कहूं पुनि भूलिहु चित चिंतामति आनहि ॥ अबहिं लिवाइजाउँ सब रिपु हति डरपतहौं आज्ञा अपमानहिं । राख्यो सुफल सँवारि सान दै कैसे निफल करौं वा बानहिं ॥ हैं केतक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुकुल के भानहि । काटन दे दशशीश समर मुख अपनो कृत एऊ जो जानहि ॥ देहिं दरश शुभनैन निकट निज रिपुको नाश सहित संतानहिं । सूर प्राप्त मोहि इनहिं दिननिमें लै जु आइहौं कृपानिधानहिं ॥ ९३ ॥

अशोकवन भंग इन्द्रजीत हनुमतप्रति ब्रह्मशरबंधन ॥ राग मारू ॥ हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाइ । जनकसुता चरण बंदि फूल्यो न समाइ ॥ अगणित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे । मनसा करि प्रभुहिं अर्पि भोजनको डाटे ॥ द्रुमन गहि उपाटिलिये दैदै किलकारी । दानव बिन प्राण भये देखि चरित भारी ॥ विह्वल मतिहीन गए जोरे सब हाथा । बानर वन विघ्न कियो त्रिभुवनके नाथा ॥ है निशंक अतिहि ढीठ बिडरै नाहिं भाजै । मानो बन कदलि मध्य उनमत गाजै ॥ भाने मठ कूप वाय सरवरको पानी । गौरिकित पूजत जहां नवतन दल आनी ॥ कांप्यो सुनि असुर सैन शाखामृग जान्यो । मानो जलजीव सिमिटि जाल में समान्यो ॥ तरुवर तहँ इक उपारि हनुमंतकर लीनो । किंकर कर पकरि बाण तीन खंड कीनो ॥ योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी । किंकर करि लक्ष्मान अंतरिक्ष काटी ॥ आगर इक लोह जरित लीनो बरबंड । दुहूं करनि असुर हयो भयो मानस पिंड ॥ दुर्धर परहस्त संग आई सैन भारी । पवनपूत दानव बल बाहर चल कारी ॥ रोम रोम हनूमंत लच्छ लच्छ बान । जहां तहां देखत कपि करत राम आन ॥ मंत्रीसुत पाँच सैन अक्षय कुँवर सूर । धीर सहित सबै हते झपटिकै लंगूर ॥ चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो । मानो घन पावस में नगपति है छायो देख्यो ॥ जब दिव्य बान नागफांस आन्यो । छांडचो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो ॥ ९४ ॥

हनुमान रावण संवाद ब्रह्मशर शक्ति राग मारू ॥ सीतापति सेवक तोहिं देखनको आयो । काके बल बैर तैं जु रामते बढायो ॥ जे जे तुव सूर सुभट कीटसम न लेखों । तेरे दशकंध अन्ध प्राणनि बिनुदेखों ॥ नख शिख ज्यों मीन जाल जडचो अंग अंगा । अजहुं नाहिं शंक धरत बनचर मति भंगा ॥ जोई सोइ मुखहि कहत मरण निज न जानै । जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखानै ॥ तब तू गयो सून भवन भस्म अंग पोते । करितो बिनुप्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते ॥ पाछे तैं सीय हरी बिधिमर्याद राखी । जो पै दशकंध बली रेख क्यों न राखी ॥ अजहूं सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै । रघुपति यह पैज करी भूतल धरि पानै ॥ ब्रह्म बाण कानि करी बल करि नाहिं बांध्यो । कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो ॥ देखत कपि बाहुदंड तनु प्रस्वेद छूटै । जै जै रघुनाथ नाथ कहत

बंध टूटै ॥ देखत बल दूरि कर्‍यो मेघनाद गारो। आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो ॥ ९५ ॥

हनुमान लंकाजारन। राग मारू ॥ मंत्रिन नीको मंत्र विचार्‍यो। राजन् कहो दूत काहूको कौन नृपति है मार्‍यो ॥ इतनी कहत विभीषण बोल्यो बंधू पांइ परौं। यह अनरीति सुनी नहिं श्रवणनि अब पै कहा करौं ॥ तेल तूल पावक वपु धरिकै देखत तुसै जरौं। अब मेरे जिय यहै बसी है रघुपति काज करौं ॥ हरी विधाता बुद्धि सबनिकी अति आतुर ह्वै धाये। सन अरु सूत चीर पाटंबर लै लंगूर बँधाये ॥ बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी। रघुपति चरण प्रताप सूर प्रभु लंका सकल जरी ॥ ९६ ॥

आकाशवाणी, सीताकुशल। राग धनाश्री ॥ सोचि जिय पवन पूत पछिताई। अगम अपार सिंधु दुस्तर तरि कहा कियो मैं आई ॥ सेवकको सेवापन इतनो आज्ञाकारी होई। या भय भीति देखि लंकामें सीय जरी मति होई ॥ बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे अपयश करि है लोइ। वे रघुनाथ चतुर कहियत हैं अंतर्यामी सोइ ॥ इतनी कहत गगनवाणी भई हनू सोच कत करि है। चिरंजीव सीता तरुवर तर अटल न कबहूं टरि है ॥ फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुवमें रोम न परि है। जाके हिय अंतर रघुनंदन सो क्यों पावक जरि है ॥ ९७ ॥

लंकादग्धि पुनः सियदर्शन। राग मारू ॥ लंका हनूमान सब जारी। रामकाज सीताकी सुधि लगि अंगद प्रीति विचारी ॥ जा रावणकी शक्ति तिहूं पुर कहूं न आज्ञा टारी। ता रावणके अछत अक्षय सुत पालक सृष्टि पछारी ॥ पूंछ बुझाइ गये सागर तट है जहँ सीतावारी। करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै सुनि राघवकी प्यारी ॥ तुमही तेज प्रताप रही है तुमरी यहै अटारी। सूरदास स्वामीके आगे जाइ कहौं सुख भारी ॥ ९८ ॥

रामचन्द्र प्रति सीता संदेश हनुमंत बिदा ॥ राग सारंग ॥ मेरी केती बिनती करनी। पहिले करि परणाम पाँइ परि मणि रघुनाथ हाथ लै धरनी ॥ मंदाकिनि तट फटिक शिला पर सुख मुख जोरि तिलककी करनी। कहा कहौं कपि कहत न आवै सुमिरत प्रीति होई उर अरनी ॥ तुम हनुमंत पवित्र पवन सुत कहियो जाइ जोइ मैं बरनी। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति दुसह दुःखभयहरनी ॥ ९९ ॥

अंगदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीता सुधि देन। राग मारू ॥ हनूमान अंगदके आगे लंक कथा सब भाषी। अंगद कह्यो भली तुम कीनी हम सबकी पति राखी ॥ हर्षवंत ह्वै चले तहां ते मगमें बिलम न लाई। पहुँचे आइ निकट रघुवरके सुग्रीव आयो धाई ॥ सबन प्रणाम कियो रघुपतिको अंगद वचन सुनायो। सूरदास प्रभुपद प्रताप करि हनू सिया सुधि ल्यायो ॥ १०० ॥

सुग्रीवादि कृत हनूमान प्रशंसा। राग मारू ॥ हनू तैं सबको काज सँवार्‍यो। बार बार अंगद्यों भाषै मेरो प्राण उबार्‍यो ॥ तुरतहि गमन कियो सागरते बाचहि बाग उजार्‍यो ॥ कियो मधुवनको चूर चहूं दिशि माली जाइ पुकार्‍यो ॥ धनि हनुमंत सुग्रीव कहत है रावणको दल मार्‍यो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सार्‍यो ॥ १०१ ॥

श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी । राग मारू ॥ कहौ कपि जनकसुता कुशलात । आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमें सुख गात ॥ सुनो पिता जल अंतर ह्वैकै रोक्यो मग इक नारि । धर अंबर घन रूप निशाचरि गरजी बदन पसारि ॥ तब मैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मँझारि । खरभर परी देव आनंदे जीत्यो पहिली रारि ॥ गिरि मैनाक उदधिमें अद्भुत आगे रोक्यो जात । पवनपिताको मित्र न जानत धोखे मारीलात ॥ तबहीं और रह्यो सरितापति आगे योजन सात । तुव प्रताप पेलि निशि पहुँच्यो कौन बढ़ावै बात । लंका पौरि पौरि मैं ढूँढ़ी अरु बन उपवन जाइ । तरुवरतर अवलोकि जानकी तब हौं रह्यो लुकाइ ॥ रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई । तबहीं अवधि जानिकै राख्यो मन्दोदरि समुझाई ॥ तब हौं गयो सु फुलबारीमें देखी दृष्टि पसारि । असी सहस किंकर दल जिहिके दौरे मोहिं निहारि ॥ तुम परताप देव छिन भीतर जुरत भई नहिं बार । तिनको मारि तुरंतहि कीनो मेघनादसों रार ॥ ब्रह्मफाँस जब लई हाथ करि मैं चेत्यो कर जोरि । तज्यो कोप मर्यादा राखी बँध्यो आपही मोर ॥ रावण पै लै गयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल । करुवो वचन श्रवण सुनि मेरो तब रिस गही भुवाल ॥ आपुन ही मुद्गर लै धायो करि लोचन बिकराल । चहुँदिशि सूर शोर करि धावै ज्यों केहरिहि सियाल ॥ १०२ ॥

राम वचन । राग मारू ॥ कैसे पुरी जरी कपिराय । बड़े दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुमैं बचाय ॥ प्रगट कपाट बड़े दीने हैं बहु जोधा रखवारे । तैंतिस कोटि देव बश कीने ते तुमसे क्यों हारे ॥ तीनि लोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न पेखे । तुमरे क्रोध शाप सीताके दूरि जरत हम देखे ॥ हो जगदीश कहा कहौं तुमसों तुम बर तेज मुरारी । सूरज दास सुनो सब सन्तो अवगतिकी गति न्यारी ॥ १०३ ॥

सेना समेत सिन्धु तट राम पयान । राग मारू ॥ सीय सुधि सुनत रघुवीर धाये । चल्यो तब लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनू जाम्बवंत नील नल सबै आये ॥ भूमि अति डगमगी योगनी सुनि जगी सहस फन शेष सों शीश कांप्यो । कटक अगणित जुरचो लंक खरभर परचो सूरको तेज धर धूर ढांप्यो ॥ जलधि तट आइ रघुराइ ठाढे भए ऋच्छ कपि गरजि ह्वै ध्वनि सुनायो । सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि आइ तिन तुरतही शीश नायो ॥ १०४ ॥

हनूमान निज शरीर बल कथन । राग केदारा ॥ राघव जू कितक बात तजि चिंत । केतक रावण कुम्भकर्ण दल सुनिहो देव अनंत ॥ कहो तु लंक लकुटज्यों फेरों फिर फेरि कहूँ लैंडारौं । कहो तु पर्वत चापि चरणतर नीर खारमें गारौं ॥ कहो तो असुर लंगूर लपेटौं कहौ तु नखनबिदारौं । कहोतु शैल उपारि पेडते दैसुमेरुसो मारौं ॥ जेतक शैल सुमेरु धरणिमें भुजभरि आनि मिलाऊं । सप्त समुद्र देइ छातीतर इतनक देह बढाऊं । चली जाहु सेना सब मोपर धरो चरण रघुवीर । मोहि अशीश जगत जननीकी तुव तनु वज्र शरीर ॥ जितक बोल बोले तुम आगे राम प्रताप तुमारे । सूरदास प्रभुकी सब साँची जनकी पैज पुकारै ॥ १०५ ॥

हनूमान निज पराक्रम युद्ध निमित्त कथन ॥ राग मारू ॥ रावण से गहि कोटिक मारौं । जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तो यह परहित सारौं ॥ कहो तो जननि जानकी ल्याऊं कहोतो लंक उदारौं । कहो तु अबहीं पैठि सुभट हति अनल सकल परजारौं ॥ कहो सचिव सबंधु सकल अरि एकहि एक पछारौं । कहो तो तुम प्रताप श्रीरघुबर उदधि पषाननि तारौं ॥ कहो तो दशो शीश बीसों भुज काटि छिनकमें डारौं । कहो तो ताको तृण गहाइकै जीवत पाँइन डारौं ॥ कहो तु सेना चारि रचों कपि धरनी व्योम पतारौं । शैल शिला द्रुम बरषि व्योम चढि शत्रु समूह सँहारौं ॥ बार बार पद परसि कहतहौं हौं कबहूँ नहिं हारौं । सूरदास प्रभु तुमरे वचन लगि शिव वचननको टारौं ॥ १०६ ॥

अन्यच्च ॥ राग मारू ॥ हौं हरिजूको आयसु पाऊं । अबहीं जाइ उपारि लंक गढ उदधि पार लै आऊं ॥ अबहीं जंबूद्वीप यहांते लै लंका पहुँचाऊँ । सोखि समुद्र उतारों कपिदल छिनक विलंब न लाऊं ॥ अब आवै रघुवीर जीतिदल तौ हनुमंत कहाऊं । सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश बसाऊं ॥ १०७ ॥

सिंधु सेतु निमित्त हनुमान विनय ॥ राग सारंग ॥ रघुपति बेगि जतन अब कीजै । बांधैं सिंधु सकल सैना मिल आपुन आयसुदीजै । तबलगि तुरत एक तौ बांधौं द्रुम पाषान निछाई । छिति सिंधु सिय नैन नीरहै जबलौं मिलै न आई ॥ यह विनती हौं करौं कृपानिधि बारबार अकुलाई । सूरज दास अकाल प्रलय प्रभु मेटो दरशदिखाई ॥१८०॥

सीता देन निमित्त विभीषण वचन रावण प्रति । राग मारू ॥ लंकापतीको अनुज शीश नायो ॥ परम गंभीर रणधीर दशरथ तनय कोपि करि सिंधुके तीर आयो ॥ सियाको लै मिलो यह मतो है भलो कृपा करि मम वचन मानिलीजै । ईशको ईश करतार करुणामयी तासु पदकमल पर शीश दीजै ॥ कह्यो लंकेश दै शीशपग तासुके जाहि मत मूढ कायर डरानो । जानि अशरण शरण सूरके प्रभूको तुरंतहि जाइ द्वारे बुझानो ॥१०९॥

रामचन्द्रसौ विभीषण मिलाप । राग सारंग ॥ आय विभीषण शीश नवायो । देखत ही रघुबीर धीर कहँ लंकपती तिहि नाम बुलायो ॥ कह्यो सु बहुरि कह्यो नाहिं रघुवर यहै बिरद चलि आयो । भक्तबछल करुणामय प्रभुको सूरदास यश गायो ॥११०॥

सभामध्य श्रीरामचन्द्र बचन । राग मारू ॥ तब हौं नगर अयोध्या जैहौं । एक बात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य विभीषण दैहौं ॥ कपिदल जोरि और सब सेनासागर सेतु बंधैहौं । काटि दशों शिर बीस भुजा तब दशरथ सुत जु कहैहौं ॥ छन इक माहिं लंक गढ तोरौं कंचन कोट ढहैहौं । सूरदास प्रभु कहत बिभीषण रिपुहति सीता लैहौं ॥ १११ ॥

सिय दे मिलन निमित्त मंदोदरी शिक्षा रावण प्रति । राग मारू ॥ वे देखि आये रामराजा । जलके निकट आय भये ठाढे दीखत बिमल ध्वजा ॥ सोवत कहा चेत हो रावण मैं जु कहति कत खात दगा । कहति मँदोदरी सुनु पिय रावण मेरी बात अगा ॥ तृण दशनन लैमिलि दशकंधर कंठहिं मेलि पगा । सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होय लंका ॥ ११२ ॥

अन्यच्च ॥ शरण परि मन वच कर्म बिचारि ॥ ऐसो कौन और त्रिभुवन में जो अब लेइ उबारि ॥ सुनि शिव कंत दंत तृण धरिकै स्यो परिवार सिधारो । परमपुनीत जानकी सँग ले कुल कलंक किन टारो ॥ ये दशशीश चरणतर राखो मेटो सब अपराध । महा प्रभु कृपाकरन रघुनंदन रिस न गहैं पल आध ॥ तोरि धनुष मुख मोरि नृपनको सीय स्वयंबर कीनो । छिन इकमें भृगुपति प्रताप बल करषि हृदय धारि लीनो ॥ लीला करत कनकमृग मारचो बध्यो बालि अभिमानी । सोइ दशरथकुलचन्द अमित बल आए शारँग-पानी ॥ जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रबल यूथपति भारी । महासुभट रणजीत पवनसुत बडो वज्र बपुधारी ॥ करिहै लंक पंक छिन भीतर वज्र शिला लै धावै । कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत बिलम न लावै ॥ अजहूं जिन बल कर शंकरको मान वचन हित मेरो । जाइ मिलो कौशल नरेशको भ्रात विभीषण तेरो । कटक शोर अति दूरि दशोंदिश देखत बनचर भीर । सूर समुझि रघुवंशतिलक दोउ उतरे सागरतीर ॥ ११३ ॥

अन्यच्च ॥ काहे परतिरिया हरि आनी । यह सीता जू जनककी कन्या रमा अपुन रघुनंदन रानी ॥ रावण मुग्ध कर्मको हीनो जनकसुता तैं त्रिय करि मानी । जाके क्रोध भूमिजल पटके कहाकहैगो सिंधुज पानी ॥ मूरख सुखहिं नीद नहिं आवै लेहैं लंक बीस भुज भानी । सूर नमिटत भागकी रेखा अल्प मृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ ११४ ॥

अन्यच्च ॥ राग मारू ॥ तोहिं कौन मति रावण आई । आजु कालिह दिन चारि पांचमें लंका होति पराई ॥ लंका कोट देखि जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई । जाकी नारि सदा नवयौवन सो क्यों हरै पराई ॥ काके हित सीतापति आये राम लक्ष्मण दोउ भाई । सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दुहाई ॥ ११५ ॥

मंदोदरीरावण संवाद । राग मारू ॥ आयो रघुनाथ बली सीख सुनो मेरी । सीता लै जाइ मिलो पति जु रहै तेरी ॥ तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यायो । घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो ॥ चेतत क्यों नाहिं मूढ एक बात मेरी । अजहुं सिंधु नाहिं बंध्यो लंका है तेरी ॥ सागरको पाजि बांधि पार उतारि आवैं । सैना कछु अंत नाहिं इतनो दल ल्यावैं ॥ देखि त्रिया करिकै बल कैसी दिखराऊं । रीछ कीश वश्यकरौं रामहिं गहि ल्याऊं । जानति हौं बलहिं बालिसों न छूटि पाई । तुम्हें कहा दोष दीजै काल अवधि आई ॥ बलि जब बहु यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो । छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो ॥ हिरणकशिपु अति प्रचंड ब्रह्मा वर पायो । नारसिंह रूप धरे छिन न बिलम लायो ॥ पाहनसों बांधि सिंधु लंका गढ तोरैं । सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरैं ॥ ११६ ॥

सेतुबंध आरंभ सिंधु मिलन । राग धनाश्री ॥ रघुपति चन्द्र बिचार करचो । नातो मानि सगर सागरसों कुश साथरे परचो ॥ तीनि याम अरु बासर बीते सिंधु गुमान भरचो । कीन्यो कोप कुवँर कमलापति तब कर धनुष धरचो ॥ ब्रह्म भेष आयो अति

व्याकुल देख्यो बान डरचो । द्रुम पषान प्रभुबेगि मँगायो रचना सेतु करचो ॥ नल अरु नील सुत विश्वकर्माके छुवत पषान तरचो । सूरदास स्वामी प्रतापते सब संताप हरचो ॥ ११७ ॥

सेतु बंधन राग मारू ॥ आपुन तरि तरि और न तारत । असम अचेत पाशाण प्रगट पानीमें बनचर डारत ॥ इहि विधि उपलै सुतरु पात ज्यों यदपि सेन अति भारत । बुडि न सकें तु सेतु रचना रचि राम प्रताप विचारत ॥ जिहि जल तृण पशु वार बूडि आपुन सँग और न बोरत । तिहि जल भाजत महावीर सब तरत अंग नहिं मोरत ॥ रघुपति चरण प्रताप प्रगट सुर व्योम बिमाननि गावत । सूरदास प्रभु सकल कलाविधि सायर पैज बढ़ावत ॥ ११८ ॥

(लंकाकाण्ड) रावण दूत ग्रहण, पहिरावनि दे बिदा करन । राग सारंग ॥ शुक सारन द्वै दूत पठाये । वानर वेष फिरत सेनामें सुनत विभीषण तुरत बँधाये ॥ बीचहि मार परी अति भारी राम लछन जब दरशन पाये । दीन दयालु बिहाल देखिकै छोरी भुजा कहांते आये । हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीरको जात अन्हाये । सूर कृपालु भये करुणा-मय आपुन हाथ दूत पहिराये ॥ ११९ ॥

राम सागर संवाद, रावण दूत पुनः लंका गमन, युद्ध निमित्त कुम्भकर्ण मन्त्र । राग धनाश्री ॥ रघुपति जबै सिंधु तट आये । कुश साथरी बैठि इक आसन बासर तीनि गँवाये ॥ सागर गर्व धरचो उर भीतर रघुपति नर करि जान्यो । तब रघुवीर तीर अपने कर अग्नि बरण गहि तान्यो । तब जलधर खरभरो त्रास गहि जंतु उठे अकुलाई । कह्यो न नाथ बाण मोहि जारो शरण परचो हौं आई ॥ आज्ञा होइ एक छिन भीतर जल दश दिशि करि डारौं । अंतर मारग होइ सबनिको इहि विधि पार उतारौं ॥ और मन्त्र जो करै देवमणि बांधौ सेतु विचार । दीन जानि धरि चाप बिहँसिकै दियो कण्ठते हार ॥ यहै मन्त्र सबहिन मन आयो सेतु बन्ध प्रभु कीजै । सब दल उतरि होइ पारंगत ज्यों न कोऊ इक छीजै ॥ यह सुन दूत गयो लंकामहँ सुनत नगर अकुलानो । रामचन्द्र प्रताप दशौं दिशि जल पर तरत पषानो । दश शिर बोलि निकट बैठायो कहि धावन सतभाउ । उद्यम कहा होत लंकाको कौने कियो उपाउ ॥ जाम्बवंत अंगद बंधू मिलि कैसे इहि पुर ऐहैं । मो देखत जानकी नैन भरि कैसे देखन पैहैं ॥ हौं सत भाउ कहत लंकापति जो जिय उत्तम मानो । सकल कहों व्योहार कटकको कपि उमहे सो मानो ॥ बार बार यों कहत सकत नहिं तो हति लैहैं प्राण । मेरे जान कनकपुर फिरि हैं रामचन्द्रकी आन ॥ कुम्भकर्ण हँसि कह्यो सभामें सुनौ आदि उत्पात । एक दिवस हम ब्रह्म सभामें चलत सुनी यह बात ॥ काम अंध है सब कुटुंब धन खोवै एकहि बार । सो अब सत्य होत एहि अवसर कौन जु मेटन हार ॥ और मन्त्र कछु उरजिनि आनो आजु सुकपि रण मांडहि । गहै बांह रघुपतिके सन्मुख ह्वै करि यह तनु छांडहि ॥ यह यश जीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई । सूर सकुचि जो शरन सँभारौ क्षत्री धर्म न होई ॥ १२० ॥

रघुपति सेतु उलंघन । राग धनाश्री ॥ सिंधु तट उतरत राम उदार । रोष विषम कीनो रघुनंदन सब विपरीत विचार ॥ सागर पर गिरि गिरि पर अंबर कपि घनके आकार । गरज किलक आघात उठत मनु दामिनि पावक झार ॥ परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई । मनु रघुपति भय भीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई । बाला विरह दुसह सबहुनको जान्यो राजकुमार । बाण वृष्टि शोणित करि सरिता व्याहत लगी न बार ॥ श्रवणनि कनक कलश आभूषन मनि मुक्ता गन हार । सेतु बंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार ॥ १२१ ॥

मन्दोदरी वचन । राग धनाश्री ॥ देखि रे वह शारंगधर आयो । सायर तीर भीर वानरकी शिरपर छत्र बनायो ॥ शंख कुलाहल सुनियत लागे लीला सिंधु बंधायो । सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिखायो ॥ पद्मकोटि जाकी सेना सुनियत जन्तु जु एक पठाको । सूरदास रघुनाथ विमुख भये तिहि केतक सुख पायो ॥ १२२ ॥

अन्यच्च । राग मारू ॥ मेरे जान अजहूं जानकी दीजै । लंकापति पिय कहत तियासों यामें कछू न छीजै ॥ पाहन तारे सागर बाँध्यो तापर चरण न भीजै । वनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों लीजै ॥ चरण टेकि दोउ हाथ जोरिकै बिनती काहे न कीजै । वे त्रिभुवन पति करैं कृपा अति कुटुंब सहित सुख जीजै ॥ आवत देखि बाण रघुपतिके तेरो मन न पतीजै । सूरदास प्रभु लंक जारिकै राज्य विभीषण दीजै ॥ १२३ ॥

मन्दोदरी प्रति रावण गर्व वचन ॥ कहा तू कहति त्रिया बार बारी । कोटि तेंतीस सुर सेव अहनिशि करत राम अरु लक्ष्मण हैं कहा री ॥ मृत्युको बांधि मैं राखियो कूपमें देन आवत कहा डरत नारी । कहत मन्दोदरी मेटि को सकै तेहि जो रची सूर प्रभु होनहारी ॥ १२४ ॥

रावणके पास अंगद दूतत्व ॥ लंकपति पास अंगद पठायो । सुन अरे अंध दशकंध लै सिया मिलि सेतु करिबंध रघुबीर आयो ॥ वह सुनत परि जरचो वचन नहिं मन धरचो कहा तैं राम ते मुहि डरायो । सुर असुर जीति मैं सब कियो आपु वश सूर मम सुयश तिहुँलोक गायो ॥ १२५ ॥

रावण तबलौं है रण गाजत । जबलौं कर शारंग पानीके नाहीं बाण विराजत ॥ यम कुबेर इन्द्र हैं जानत रचि पचिके रथ साजत ॥ रघुपति रवि प्रकाश सो देखौ उड़गन ज्यों तोहि भाजत ॥ ज्यों सहगमन सुन्दरीके सँग बहु बाजन हैं बाजत । तैसे सूर असुर आदिक सब सँग तेरे हैं लाजत ॥ १२६ ॥

रावण प्रति श्रीराम संदेश ॥ जानिहौं बल तेरो रावण । पठवों कुटुम सहित यम आगे नेक देहि धौं मोको आवन ॥ दारुण कीश सुभट वर सन्मुख लैहों संग त्रिदश बल पवन । अगिनि पुंज सित बाण धनुष धरि तोहिं असुर कुल सहित जरावन ॥ करिहौं नाम अचल पशुपतिको पूजा विधि कौतुक देखरावन । असुर मुख छेदि पक नवफल ज्यों अरु शंकर दशशीश चढावन ॥ देहौं राज्य विभीषण जनको लंकापुर रघुआन चलावन । सूरदास निस्तरि हैं इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥ १२७ ॥

रावण प्रति अंगद उत्तर ॥ मोको राम रजायसु नाहीं । नातर सुन दशकंध निशाचर प्रलय करौं छिन माहीं ॥ पलटि धरौं नव खंड पुहुमि पर जो बल भुजा सँभारौं । राखों मेलि भँडार सूर शशि नभ कागद ज्यों फारौं॥जारौं लंक छेदि दशमस्तक सुर संकोच निवारौं॥ श्रीरघुनाथ प्रताप चरणते उरते भुजा उपारौं ॥ रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरो । चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारौं तेरो ॥ गये सशंक युगल बंधूवन जान्यो असुर अहेरो । तीनि लोक बिख्यात विशद यश प्रलय नामहै मेरो ॥ रे रे अंध बीसहू लोचन परत्रियहरन बिकारी । सुने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी ॥ अजहूं कह्यो सुनैजो मेरो आये निकट मुरारी । जनकसुता लै चलि पाँइन पर श्रीरघुनाथ पियारी ॥ संकट परेजु शरण पुकारों तौ क्षत्री न कहाऊं । जन्महिते तापस आराध्यो कैसे हित उपजाऊं ॥ अब तो सूर यहै बनिआई हरिको निजपद पाऊं । ये दशशीश ईश निर्मायल कैसे चरण छुआऊं ॥ १२८ ॥

अंगदवचन राग मारू ॥ मूरख रघुपति शत्रु कहावत । जाके नाम ध्यान सुमिरणते कोटि यज्ञ फल पावत ॥ नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मन शुचि ध्यावत । अंबरीष प्रह्लाद भक्त बलि निगम नेति जिहि गावत ॥ जाकी घरनि हरी छल बल करि ताते बिलम न लावत । दश अरु आठ शंक बनचर लै लीला सिंधु बँधावत ॥ जाइ मिलौ कौशलनरेशको मन अभिलाष बढावत । कंध उपारि डारि भूतलमें सूर सकल दुख पावत ॥ १२९ ॥

रावण भेद उपजावन अंगद राम प्रशंसा । राग मारू ॥ रे कपि क्यों पितु बैर बिसारचो । तो सम कुलकन्या किन उपजी जो कुलशत्रु न मारचो ॥ ऐसो सुभट नहीं इहि मंडल देख्यो बालि समान । तासों कियो बैर मैं हारचो कीनी पैज प्रमान ॥ ताको वधन कियो इहि रघुपति तो देखत विदमान । ताकी शरण रह्यो क्यों भावै शब्द सुनौ दै कान ॥ रे दशकंध अंध मति मूरख क्यों भूल्यो इहि रूप । सूझत नहीं बीस हू लोचन परचो तिमिरके कूप ॥ धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप । वा प्रतापकी मधुर विलोकनि गहि वारौं सतरूप ॥ जो तुहि नाहिं बांह बल पौरुष अर्ध राज देऊँ लंक । मो समेत ये सकल निशाचर लगत न मानें शंक ॥ जब रथ साजिचढों रणसन्मुख जीय न आनों दंग । राघव सैन समेत सँहारों करों रुधिरमय अंग ॥ श्रीरघुनाथचरण व्रत उर धरि क्यों नाहिं लागत पाइ । सबके ईश परम करुणामय सबहीको सुख दाइ ॥ हौं जु कहत लै चलो जानकी छांडि सबै दंभान । सन्मुख होई सूरके स्वामी भक्तन कृपानिधान ॥ १३० ॥

इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अंगद पायरोपन । राग मारू ॥ लंकपती इन्द्रजीतको बुलायो । कह्यो तिहि जाहु रणभूमि दल साजिकै कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो ॥ कोपि अंगद कह्यो धरों धर चरण मैं ताहि जो सकै कोऊ उठाई । तौ बिना युद्ध किये जाहिं रघुबीर फिरि यह सुनत उठे जोधा रिसाई ॥ रहे पचिहारि नहिं पार कोऊ सक्यो उठचो तब आप रावण खिसाई । कह्यो अंगद कहा मम चरणको गहत चरण रघुबीर गहु क्यों न

जाई ॥ सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवनको बालिसुत हूँ वहां ते सिधायो । सूरके प्रभुको पॉइ परि यों कह्यो अंध दशकंधको काल आयो ॥ १३१ ॥

अंगद आवन राघव निकट ॥ बालिनन्दन आइ शीश नायो । अन्ध दशकंधको काल सूझत प्रभु मैं कई भेदविधि कहि जनायों ॥ इंद्रजित चढचो निज सैन सब साजिकै रावरी सैन हू साज कीजै । सूर प्रभु मारि दशकन्ध थपि बंधु तिहि जानकी छोरि यश गात लीजै ॥ १३२ ॥

श्रीरघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त ॥ रघुपति जो न इंद्रजित मारौं । तौ न होऊँ चरणनको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं ॥ जो दृढ़ बात जानिये प्रभुजू धर्म गये कहि बान निवारों । शपथ राम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं ॥ कुंभकर्ण दशशीश बीसभुज दानव दलहि बिडारौं । तबै सूर संधान सफल है रिपुको शीश उपारौं ॥ १३३ ॥

लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गवन ॥ लछन दल संग लये लंक घेरी । वसुमति षष्ठ अरु अष्ट आकाश भये दिश विदिश कोउ नाहिं जात हेरी ॥ ऋच्छ पलवंग किलकार लागे करन आन रघुनाथकी जाई फेरी । पाट गये टूटि परी लूट सब नगरमें सूर दरवान कह्यो जाइ टेरी ॥ १३४ ॥

मंदोदरी वचन रावण प्रति ॥ रावन उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी । कोटि जतन करि रही नहिं सीख सुनि मेरी ॥ गहि गहात किलकिलात अन्धकार आयो । रविको रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो ॥ तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना । लंकामें शोर परचो अजहुँ तैं न जाना ॥ फोरि फारि तोरि तारि गगन होत गाजै । सूरदास लंकापर चक्र शंक बाजै ॥ १३५ ॥

अन्यच्च ॥ लंका फिरि गई राम दुहाई । कहति मँदोदरि सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई ॥ दश मस्तक मेरे वीस भुजा हैं सौ योजनकी खाई । मेघनादसे पुत्र महाबल कुम्भकर्णसे भाई ॥ रहु रहु अबला बोल न बोलौ उनकी करत बडाई । तीनि लोकते पकरि मंगाऊं वै तपसी दोउ भाई ॥ तुम्हें मारि महारावण मारैं देयँ विभीषण राई । पवनको पूत महाबल जोधा पलमें लंक जराई ॥ जनकसुतापति हैं रघुवरसे संग लक्ष्मण से भाई ॥ सूरदास प्रभुको यश प्रगट्यो देवनि बंदि छुड़ाई ॥ १३६ ॥

मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फाँस मोचन ॥ राग मारू ॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो । आहुति अगिनि जिवाइ सँतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बानायो ॥ आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चढचो रणभूमिहि आयो । मनो मेघनायक ऋतु पावस बाणवृष्टि करि सेन खपायो ॥ कीनो कोप कुँवर कोशलपति पंथ अकास सायकनि छायो । हँसि हँसि नागफांस शर साधन बंधन बंधु समेत बँधायो ॥ नारद स्वामी कह्यो निकट ह्वै गरुडासन काहे बिसरायो । भयो तोष दशरथके सुतको मुनिको ज्ञान लखायो ॥ सुमिरन ध्यान जानिकै अपनो नागफांसने सैन छुडायो । सूर विमान चढे सुरपुर लौं आनँद अभय निसान बजायो ॥ १३७ ।

कुम्भकर्ण रावण संवाद । राग मारू ॥ लंकपति अनुज सोवत जगायो । लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो त्रिया जाकी सिया मैं ले आयो ॥ तैं बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं कहौं छांडि

यश जगत अपयश बढ़ायो । सूर अब डर न करि युद्धको साज करि होइ है सोइ जो दई भायो ॥ १३८ ॥

लक्ष्मण वचन खड्गधारण । राग मारू ॥ लछन कह्यो करवार सँभारों । कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीतको टूक टूक करि डारों ॥ महाबली रावण जिहि बोलत पलमें शीश सँभारों । सब राक्षस रघुवीर कृपाते एकहि बाण निवारों ॥ हँसि हँसि कहत विभीषणसों प्रभु महाबली रण भारों । सूर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारों ॥ १३९ ॥

रावण लक्ष्मण युद्ध, लक्ष्मण मूर्च्छा । राग मारू॥ रावण चल्यो गुमान भरचो । श्रीरघुनाथ अनाथ बंधुसों सन्मुख कहत खरचो ॥ कोप धरो रघुवीर धीर तब लक्ष्मण पाँय परचो । तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुष धरचो ॥ सारथि सहित असुर बहु मारे रावण क्रोध जरचो । इन्द्रजीत लीनी जब सेंथी देवन हहा करचो ॥ छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परचो । करुणा करत कुँवर कौशलपति नैनन नीर झरचो । सूरदास हनुमान दीन ह्वै अंजलि जोरि खरचो । आज्ञा देहु सजीवन लाऊं गिरि उचाय सिगरचो ॥ १४० ॥

श्रीराम करुणा । राग मारू ॥ निरखि मुख राघव धरत न धीर । भये अरुण विकराल कमलदल लोचन मोचत नीर ॥ बारह बरस नींद है साधी ताते विकल शरीर । बोलत नहीं मौन कहा साधी बिपति बढावन बीर ॥ दशरथ मरन हरन सीताको रन वीरनकी भीर । दूजो सूर सुमित्रासुत बिनु कौन धरावै धीर ॥ १४१ ॥

अन्यच ॥ अबहीं कौनको मुख हेरों । रिपुसैना समूह जल उमड़े काहि संगलै फेरों ॥ दुख समुद्र जिहि बारपार नहिं तामें नाव चलाई । केवट थक्यो रह्यो अधबीचक कौन आपदा आई ॥ नाहिंन भरत शत्रुघन सुन्दर जासों चित्त लगायो । बीचहि भई औरकी औरै भयो शत्रुको भायो ॥ मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि तजि है जानकि सुनिकै । ह्वैहै कहा बिभीषणकी गति यहै सोच जिय गुनिकै ॥ बारबार शिर लै लक्ष्मणको निरखि गोदपर राखैं । सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमानसों भाखैं ॥ १४२ ॥

श्रीराम हनू प्रशंसा ॥ कहां गयो मारुत पुत्र कुमार । ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारैं संकट मित्र हमार ॥ इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं दलहि सजूथ । कर गहि धनुष जगतको जीतैं कितक निशाचर यूथ ॥ नाहिंन और बियो कोउ समरथ जाहि पठाऊं दूत । वह अबहीं पौरुष दिखवावै होइ पवनके पूत ॥ इतनो वचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात । लै लै चरण रेणु निज प्रभुकी रिपुके शोणित न्हात ॥ हो परबल पुनीत केशरि सुत तुम हितबंधु हमारो ॥ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुष गनौं तुम्हारो ॥ जहां जहां जेहि काल सँभारे तहँ तहँ त्रास निवारे । सूर सहाय कियो बन बसिकै वन बिपदा-दुख टारै ॥ १४३ ॥

राघव प्रति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्च्छा उपाय ॥ रघुपति मन संदेह न कीजे । मो देखत लक्ष्मण क्यों मरि है मोको आज्ञा दीजै ॥ कहोतु सूरज उगन देहुँ नहिं दिशि दिशि बाढै ताम । कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यमपुर जाइन राम ॥ कहो तु कालहि खण्ड खण्ड करि टूक टूक करि काटों । कहोतु मृत्युहि मारि डारिकै खोदि पतालहिं पाटों ॥ कहोतु

चन्दहि लै अकाशते लक्ष्मण मुखहि निचोरों । कहो तुपैंठि सुधाके सागर जल समेतमैं घोरों ॥ श्रीरघुवर मोसो जन जाके ताहि कहा सकराई । सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोहिं रघुनाथ दुहाई ॥ १४४ ॥

सजीवन निमित्त हनुमत गवन ॥ कह्यो तब हनुमतसों रघुराई । द्रोणगिरि पर आहि सजीवनि वैद सुषेन बताई ॥ तुरत जाइ लै ह्वांते आवो विलंब न करि अब भाई ॥ सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुमंत चल्यो अतुराई ॥ १४५ ॥

हनू परवत लावन भरत मिलाप । राग मारू ॥ दौनागिरि हनुमान सिधायो । संजीवनिको भेद न पायो तब सब शैल उचायो ॥ चिंते रह्यो तब भरत देखिकै अवधपुरी जब आयो । मनमें जानि उपद्रव भारी बाण अक्राम चलायो ॥ राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट तब आयो । पूछ्यो सूर कौन है कहि तू हनुमत नाम सुनायो ॥ १४६ ॥

भरत कुशल प्रश्न पूछन हनू लक्ष्मण मूर्छा कथन, सुमित्रा धैर्य ॥ कहो कपि रघुपतिको संदेश । कुशल बंधु लक्ष्मण बैदेही श्रीपति सकल नरेश ॥ जिन पूछो तुम कुशल सुनो भरत बलवीर । बिलख वदन दुख धरे सियाको हैं जलनिधिके तीर ॥ बनमें बसत निशाचर छल करि हरी सिया मम मात । ता कारन लक्ष्मण शर लाग्यो भये राम बिन भ्रात ॥ इतनो वचन श्रवण सुनि सुनिकै सबनि पुहुमि तन जोयो । त्राहि त्राहि कहि पुत्र पुत्र कहि लोटि सुमित्रा रोयो ॥ धन्य सुपुत्र पितापन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज । सेवक धन्य अंतके अवसर आवै प्रभुके काज ॥ कत रघुनाथ सूरके कारण मोको लेन पठाये । थक्यो सुमध्य अर्धनिशि बीतीको लक्ष्मणहि जियावै ॥ पुनि धरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण रामकाज जो आवै । सूर जियैतौ जग यज पावै मरि सुरलोक सिधावै ॥ १४७ ॥

धैर्य सहित सुमित्रा वचन । राग मारू ॥ धनि जननी जो सुभटहि जावै । भीर परे रिपुको दल दलि मलि कौतुक करि दिखरावै ॥ कौशल्यासों कहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै । लक्ष्मण जनि हौं भई सपूती रामकाज जो आवै ॥ जीयें तो सुख बिलसै जगमें कीरति लोगनि गावै । मरै तु मंडल भेदि भानुको सुरपुर जाय बसावै ॥ लोह गहे लालच करि जियको औरौ सुभट लजावै । सूरदास प्रभु जीति शत्रुको कुशल क्षेम घर आवै ॥ १४८ ॥

हनुमंत भरत प्रति उत्तर ॥ राग मारू ॥ पवन पुत्र बोल्यो सतभाय । जाति सिराति राति बातनि हीं सुनो भरत चित लाय ॥ श्रीरघुनाथ सजीवन कारण मोको यहां पठायो । भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो ॥ स्यों पर्वत शर बैठि पवन सुत द्वौं प्रभुपै पहुँचाऊँ । सूरदास पांवरि मम शिर है इहि बल भरत कहाऊं ॥ १४९ ॥

कौशल्या संदेश राम प्रति । राग मारू ॥ सुनो कपि कौशल्याकी बात । इहिपुर जनि आवहु बिनु लछमन सुनो बच्छ रघुनाथ ॥ जिन तज्यो राजकाज माता हित तुम चरननि चित मानै । कहा कहूं कछु कहत न आवै सज्जन होइ सु जानै ॥ लछमन सहित सकल सेनापति आनि राजपुर कीजै । नातरु सूर सुमित्रा सुत पर वारि आपुन खोदीजै ॥१५०॥

बिनति जाइ कहिये पवनसुत तुम रघुपतिके आगे । या पुरजिनि आवहु बिनु लक्ष्मण जननी लाज न लागे ॥ मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि समुझावै । सेवक जूझि परै रन विग्रह ठाकुर तौ घर आवै ॥ जबते तुम गौने काननको भरत भोग सब छांडे । सूरदास प्रभु तुमरे दरश बिनु दुख समूह उरगाडे ॥ १९१ ॥

हनुमान सजीवन लावन लक्ष्मण चेत होन ॥ राग सारंग ॥ हनुमान सजीवन ल्यायो । महाराज रघुवीर धीरको हाथ जोरि शिर नायो ॥ पर्वत आनि धरचो सागर तट भरत सँदेश सुनायो ॥ सूर सजीवन दै लक्ष्मणको मूर्छित फिरि जगायो ॥ १९२ ॥

श्रीराम वचन जय प्रतिज्ञा सहित ॥ राग कान्हरा ॥ दूसरे कर बाण न लेहौं । सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब है हों ॥ शिवपूजा जिहि भांति करीहै सोइ पद्धति परतक्ष दिखै हौं । देत प्रहार पाय फल वार्जित शिर माला कुल सहित चढैहौं ॥ मनो तूलगन परत अगिन मुख जानि जडनि यमपंथ पठैहौं । कारिहौं नहीं बिलंब कछू अब उठि रावण सन्मुख ह्वै धैहौं ॥ इमि दमि दुष्ट देव द्विजमोचन लंक विभीषण तुमको देहौं । लक्ष्मण सिया समेत सूर कपि सब सुख सहित अयोध्या जैहौं ॥ १९३ ॥

रावण कुलवध ॥ राग मारू ॥ आजु अति कोपे हैं रन राम । ब्रह्मादिक आरूढ विमानन देखें सुर संग्राम ॥ धर तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारचो शारंग । शुचि करि सकल बान सूधे करि कटितट कस्यो निषंग ॥ सुरपुरते आयो रथ सजिके रघुपति भयो सवांर । पापी भूमि कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि ॥ क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवनगती भइ पंग । इन्द्र हँस्यो हर हँसि बिलखान्यो जानि वचन भयो भंग ॥ धर अंबर दिशि विदिशि बढे अतिसायक किरन समान । मानों महाप्रलयके कारन उदित उभय षट भान ॥ टूटत ध्वजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिर त्रान । जूझत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम बिनु शाखाबिनु पान ॥ शोणित छिंछ उछरि आकाशहि गज बाजिन शर लागी । मनो नगर रन तननि धगतिते उपजी है अति आगी॥ उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसत हैं जरि जागि । फिरत शृगाल सच्यो सो काटत चलत बिसरि लै भागि ॥ रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता श्वास समीर । रावण कुल अरु कुम्भकर्ण वन सकल सुभट रणधीर ॥ भये भस्म कछु बार न लागी ज्यों ज्वाला पट चीर । सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर ॥ १९४ ॥

रघुपति अपुनो प्रण प्रति पारचो । तोरचो कोपि प्रबल गढ रावण टूट टूटकरि डारचो ॥ कहुँ भुज कहुँ धर कहुँ शिर लोटत मनो मद्य मतवारो । डरपत वरुण कुबेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो ॥ रह्यो मांसको पिंड प्राण लैगयो बाण अनियारो । जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपे काल उसारचो ॥ सो रावण रघुनाथ छिनकमें कियो गिद्धको चारो । शिर सँभारि लै गयो उमापति रह्यो रुधिरको गारो ॥ छोरे और सकल सुखसागर बाँधि उदधि जल खारो । सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारचो ॥ दियो विभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारचो । बंधु सहित जानकी संग लै अवधपुरी पग धारचो ॥ १९५ ॥

रावण मरण समय मंदोदरी आदि बिलाप ॥ करुणा करति मंदोदरी रानी । चौदह सहस सुंदरी ऊभी उठै न कंत महा अभिमानी ॥ बार बार बरज्यो नहिं मानत जनकसुता तैं कत घर आनी । ये जगदीश ईश कमलापति सीता तिया तैं जु करि जानी ॥ लीन्हे गोद बिभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी । चोरी करी राजहू खोयो अल्पमृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ कुम्भकर्ण समुझाई रहे पचि दे सीता मिलि शारंगपानी । सूर सबनिको कह्यो न मान्यो त्यों खाई अपनी रजधानी ॥ १५६ ॥

आकाशसे अमृत वर्षा ॥ ॥ सुरपतिहि बोलि रघुवीर बोले । अमृतकी वृष्टि रणखेत ऊपर करो सुनत तिन अमियभंडार खोले ॥ उठे कपि भालु तत्काल जय जय करत असुर भये मुक्त रघुवर निहारे । सूर प्रभु अगम महिमा कछु कहि परत सिद्ध गंधर्व जय जय पुकारे ॥ १५७ ॥

सीता मिलाप ॥ लक्ष्मण सीता देखी जाई । अति कृश दीन छीन तन प्रभु बिन नैननि नीर बढाई ॥ जाम्बवंत सुग्रीव बिभीषण करी दण्डवत आई । आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई ॥ बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई । पुहुप बिमान बैठि बैदेही त्रिजटा तब गुहराई ॥ देखत दरश राम मुख मोरचो सिय परी मुरछाई । सूरदास स्वामी तिहुँपुरके जग उपहास डराई ॥ १५८ ॥

परीक्षा हेतु सीता अग्नि प्रवेश ॥ राग सोरठा ॥ लक्ष्मण रचो हुताशन भाई । यह सुनि हनूमान दुख पाये मोपै लख्यो न जाई ॥ आसन एक हुताशन बैठी मानो कुंदनकी अरुणाई । जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरिजाई ॥ लै उछंग उत्संग हुताशन निष्कलंक रघुराई । लै विमान बैठारि जानकी कोटि बदन छबि छाई ॥ दशरथ कही देवहू भाषी व्योम बिमान निकाई । सियाराम लै चले अवधको सूरदास बलि जाई ॥१५९॥

कौशिल्या शकुन बिचार काग वचन । राग सारंग ॥ बैठी जननि करति शगुनौती । लक्ष्मण राम अब मिलैं मोको दोउ अमोलक मोती ॥ इतनी कहत सुहाग उहांते हरी डार उडि बैठ्यो । अंचल गांठ दुई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो ॥ जौलों हौं जीवन भर जीवों सदा नाम तुव जपिहौं ॥ दधि ओदन दोना करि देहौं अरु माइनमें थपिहौं ॥ अबके जो परचो करि पाऊं अरु देखौं भरि आंखैं । सूरदास सोनेके पानी मढि हौं चोंच अरु पांखैं ॥ १६० ॥

अंगद बसीठी रावण-वध आदि पर्यन्त लीला । राग मारू॥बालिनंदन बली बिकट बनचर महा द्वार रघुवीर को आयो । और ते दौर दरवान दशशीशसों जाय शिर नाय यों कह सुनायो॥ सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैनकी सैन अंगद बुलायो । देखि लंकेश कपि भेश दर हँस्यो सुन्यो भट कटकको पार पायो॥विविध आयुध धारे सुभट सेवत खरे छत्रकी छांह निर्भय जनायो । देव दानव महाराज रावण सभा कहनको मंत्र तहां कपि पठायो ॥ रंक रावण कहा टेक तेरो इतो दोउ कर जोरि बिनती बिचारो । परम अभिराम रघुनाथके रोमपर

बीज भुज शीश दश वारि डारो। झटकि हाटक मुकुट पटकि भट भूमिसों झारि तरवारि तेरो शिर संहारों। जानकीनाथके हाथ तेरो मरण कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारों॥ पाक पावक करै वारि सुरपति भरै पवन पावन करै द्वार मेरे। गान नारद करै ज्ञान सुरगुरु कहै वेद ब्रह्मा पढै पौरि टेरे॥ शेष बासुकि प्रभृति नाग गंधर्व गण सकल वसुजीति मैं करे चेरे। सुनि अरे शठ दशकंधको कौन भय राम तपसी दये आनि डेरे॥ तपबली सत्यतापस बली तपबिना वारि पर कौंन पाषाण तारै। कौन ऐसो बली सुभट जननी जन्यो एकही बाण तकि वालि मारै॥ परमगंभीर रणधीर दशरथतनय शरण गये कोटि अवगुण बिसारै। जाइ मिलि अंध दशकंध गहि दंत गुण तौ भलै मृत्यु मुखते उबारै॥ कोपि करिवार गहि काल लंकाधिपति मूढ कहा रामको शीशनाऊं। शंभुकी सप्त सुनि कुकपि कायर कृपण श्वास आकाश बनचर उड़ाऊं॥ होइ सन्मुख भिरौं शंक नहिं मन धरौं मारि सब कटक सागर बहाऊं। कोटि तेंतीस मम सेवनिशिदिन करत कहा अब राम नरसों डराऊं॥ परो भहराय भभकत रिपु घायसों करि कदन रुधिर भैरों अघाऊं। सूर साजैं सब देव दुंदुभि अबै एकते एक रण करि बिताऊं॥ १६१॥

बध्यो रावण सुन्यो शीश तब शिव धुन्यो उमडि रण रंग रघुवीर आये। रुंडभक रुंड धुकि धकत धरणी परे रुधिर सरिता नहीं पार पाये॥ राम शर लागि मनु आगि गिरिपर जरी उछलि छिंछिन शरनि भानु छाये॥ मारि दशकंध पथ बंधुको सूर प्रभु राजीवनैन घर सिया ल्याए॥ १६२॥

(उत्तर कांड) अयोध्या प्रशंसा॥ राग मारू॥ हमारो जन्मभूमि यह गाउँ। सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाउँ॥ देखत बन उपबन सरिता सर परम मनोहर ठाउँ। अपनो प्रकृति लिये बोलत हौं सुरपुरमें न रहाउं॥ ह्यांके बासी अवलोकत हौं आँनद उर न समाउँ। सूरदास जो बिधि न सकोचे तो बैकुंठ न जाउँ॥१६३॥

राम आगमन श्रवण सुनि भरत रचना करन उत्सव प्रकाश॥ राग वसंत॥ राघव आवति हैं अवधि आजु। रिपु जीते साधे देवकाजु प्रभु कुशल बधू सीतासमेत। जस सकल देश आनंद देत॥ कपि शोभित सकल अनेक संग। ज्यौं पूरण शशि सागर तरंग॥ सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत। अंगद केदारसुखेन संत॥ नल नील द्विविद केसरि गवच्छ। कपि कहे मुख्य और अनेक लच्छ॥ जब कही पवनसुत विविध बात। तब उठी सभा सब हर्षगात॥ ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर। जल जीवक दादुर रटत मोर॥ जब सुने भरत पुर निकट भूप। तब रच्यौ नगर रचना अनूप॥ प्रतिप्रति गृह तोरण ध्वजा धूप। सजे सकल कलश अरु कदलि जूप। दधि हरद दूब फल फूलपान। कर कनकथार त्रिय कर तगान॥ सुनि भरे वेद ध्वनि शंख नाद। सुनि निरखि पुलक आनँद प्रसाद॥ देखत प्रभुकी महिमा अपार। सब बिसरि गये मन बुधि बिकार॥ जय जय दशरथ कुल कमल भान। जय कुमुद जननि शशि प्रजा प्रान॥ जयदिव भूतल शोभा समान। जय जय जय सूर न शब्द आन॥ १६४॥

श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति भरत दरशावन परस्पर मिलाप । राग मारू ॥ देखो कपिराज भरत वे आये । मम पांवरी शीश पर जाके कर अँगुरी रघुनाथ बताए ॥ क्षीन शरीर बीरके बिछुरे राग भोग चितते बिसराए ॥ लघु दीरघ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाये ॥ पुहुप विमान दूरिही छांडे चरण चपल प्रभु प्रण करिधाये । आनँद मगन सदन सुत कैकई कनक दंड ज्यों गिरत उठाये ॥ भेंटत आंसू परत पीठिपर गद्गद गिरा नैन जल छाए । ऐसे मिली सुमित्रा सुतको विरह अग्नि तनु जरत बुझाए ॥ यथा-योग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुखसिंधु पठाए । सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूर-दासके नैन सिराए ॥ १६५ ॥

कौशल्या सुमित्रा आदि आरती मंगलाचार । राग मारू ॥ अति सुख कौशल्या उठि धाई । उदित वदन अरु मुदित सदनते आरति साजि सुमित्रा ल्याई ॥ ज्यों सुरभी बन बसति बच्छ बिनु परवश पशुपनिकी बहराई । चली साँझ समुहाय स्रवत थन उमगि मिलन जननी दोउ आई ॥ अमी वचन सुनि होत कुलाहल देवन दिवि दुंदुभी बजाई । दधिफल दुब कनकके कोपर आरति युवति विचित्र बनाई ॥ वरण २ पट पवत पाँवडे नैननि सफल सुखद ही छाई । पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई ॥ निज मन्दिरमें आनि तिलक दै द्विजन अशीश सुनाई । सिया सहित सुख लेहो ह्यां तुम सूर-दास बलि जाई ॥ १६६ ॥

श्रीराम राज्याभिषेक ॥ रागमारू ॥ मणि मय आसन आनि धरे । दधि मधु नीर कनकके कोपर आपुन भरत भरे ॥ प्रथम भरत बैठाइ बंधुको यह कहि पाँइ परे । हौं पावन प्रभु चरण पखारौं रुचि करि आप करे । निज कर चरण पखारि प्रेम रस आनँद आँसु ढरे । ज्यौं शीतल संताप सलिल दै शुद्धि समूह करे ॥ परसत पाणि चरण पावन दुख अँग अँग सकल हरे । सूर सहित आमोद चरण जल लैकर शीश धरे ॥ १६७ ॥

राग आसावरी ॥ राज समाज वर्णन ॥ बिनती केहि बिधि प्रभुहि सुनाऊं । महाराज रघुवीर धीरको समय न कबहूं पाऊं ॥ याम रहत यामिनके बीते तिहि औसर उठि धाऊं । सकुच होत सुकुमार नींदसे कैसे प्रभुही जगाऊं ॥ दिनकर किरण उदित ब्रह्मा-दिक इक ठाऊं । अगणित भीर अमर मुनिगनकी तिहिते ठौर न पाऊं ॥ उठत सभा दिनमध्य सियापति देखि भीर फिरि आऊं । न्हात खात सुख करत साहिबी कैसेकर अनसाऊं ॥ रजनीमुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं । तुमहीं कहा कृपणहौं रघुपति किहिविधि दुख समझाऊं ॥ एक उपाय करौं कमलापति कहो तो कहि समझाऊं । पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुंचाऊं ॥ १६८ ॥

इन्द्र दुराचार इन्द्र अहल्या पति गौतम । राग बिलावल ॥ सुरपति गौतम नारि निहारि । आतुर ह्वै गयो बिनाबिचार ॥ काग रूपकरि ऋषि गृह आयो । अर्धनिशा तेहिं बोल सुनायो॥गौतम लख्यो प्राप्त है भयो । न्हान काज सो सरिता गयो ॥ तब सुरपति मन माहिं

बिचारी। पतिव्रता है गौतम नारी॥गौतम रूप बिना जो जैये। ताके शाप अग्निसों दहिये॥ गौतम रूप धारि तहँ आयो। मूर्छित भयो अहिल्या पायो॥ कह्यो अहिल्या तूको आहि। वेगि यहाँ ते बाहिर जाहि॥ यहि अंतर गौतम ऋषि आयो। इन्द्र जानि यह बचन सुनायो॥ तू इन्द्राणी तजि ह्यां आयो। मूरख तैं परत्रिय मन लायो॥ इक भगकी तोहिं इच्छा भई। भग सहस मैं तो तन दई॥ इन्द्र शरीर सहस तन भई। छुप्यो सो कमल नालमें जई॥ काल बहुत ता ठौर बितायो। सुनि गुरु ऋषिन सहित तब आयो॥ कराइ प्रयाग न्हवायो। तौहू पूरब तनु नहिं पायो॥ तब सब ऋषिन दई आशीश। भगते नेत्र करो जगदीश॥ भगस्थान नेत्र तब भये। ऋषि इन्द्रहिलै सुरपुर गये॥ परत्रिय मोह इन्द्र दुख पायो। सो नृप मैं तोहि कहि समझायो॥ परत्रिय नेह करै जो कोई। जीवत नरक परत है सोई॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समझायो। सूरदास त्योंहि कहि गायो॥ १६९॥

राजा नहुष राज्य प्राप्ति। इन्द्राणी चाह। ब्रह्म शापते सर्प देह पावन। राग बिलावल॥

सुरपति को शाप जब भयो॥ सो सुरपुर लज्जित नहिं पायो॥ नहुष नृपतिपै ऋषि सब आई। कह्यो सुरराज करौ तुम जाई॥ नहुष इन्द्र राज जब पायो। इन्द्राणीको देखि लुभायो॥ कह्यो इन्द्राणी मोपै आवै। नृपसों ताको कहा बसावै॥ सुरगुरुसों यह बात सुनाई। अवधि करन तिहि कहि समुझाई॥ शची नृपतिसों सोई भाषी। नृप सुनिकै हृदयमें राखी॥ शची अग्निको तुरत पठायो। सुरपति दशा देखि सो आयो॥ इन्द्राणी सुनि व्याकुल भई। अवधि घरी व्यतीत ह्वै गई॥ तब तिन ऐसी बुधि उपजाई। इहि अंतर सो नहुष बुलाई॥ कह्यो तुम अश्वमेध नहिं कियो। ऋषि आज्ञा तुम सुरपति भयो॥ विप्रन पर चढिकै जो आवहु। तो तुम मेरो दर्शन पावहु॥ नृपति ऋषिन पर ह्वै असवार। चलियो तुरत शचीके द्वार॥ काम अंध कछु रहि न सँभार। दुर्वासा ऋषिको पग मार॥ सर्प सर्प कहि बारम्बार। तब ऋषि दीन्हो ताको डार॥ कह्यो सर्प तैं भाष्यो मोहि। सर्प रूपही तू नृप होहि॥ जबै शाप ऋषिसों नृप पायो। तब ऋषि चरण माथो नायो॥ इह शराप मुक्ति ज्यों होइ। ऋषि मोको अब भाषो सोइ॥ कह्यो युधिष्ठिर देखै जोइ। तब उद्धार तेरो नृप होइ॥ ऐसो है परत्रिय प्यार। मूर्ख करत सो बिना बिचार॥ जो शुक नृप सों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥ १७०॥

कच संजीवनी विद्या हेतु शुक्र गेह गवन, देवयानी लोभावन परस्पर शाप। राग भैरव॥

अविगति कछु समुझि न परै। जो कछु प्रभु चाहै सो करै॥ जिवको किये कछू नहिं होई। कोटि उपाय करो किन कोई॥ एक बार सुरपति मन आई। शुक्र असुरको लेत जिवाई॥ मम गुरु[1] विद्या पढि आवैं। मृतक सुरनको फेरि जिवावैं॥ निज गुरुसों भाष्यो तिन जाई। शुक्र असुरको लेत जिवाई॥ तुमहू यह विद्या सिखि आवहु। मृतक सुरनको

१ सुत।

तुमहु जिआवहु ॥ तब तिन कचको दियो पठाइ । कह्यो शुक्रको तिन शिर नाइ ॥ मैं आयो तुम पै शिर नाइ । तुम मुहिं विद्या देहु पढाइ ॥ शुक्र कह्यो तासों या भाई । देहौं विद्या तोहि पढाई ॥ विद्या पढै करै गुरुसेव । सब विधि सुधरैं ताके टेव ॥ शुक्रसुता देवयानी नाम । सब गुण पूर्ण रूप अभिराम ॥ सुरगुर सुतको देखि लुभाई । देखै ताहि पुरुषकी नाई ॥ कितक काल व्यतीत जब भयो । गाइ चरावनको सो गयो ॥ असुर मिलि यह कियो बिचार । सुरगुरु सुतको डारें मारि ॥ जो यह संजीवनि पढि जाई ॥ तौ हम शत्रुनि देय जिआई ॥ यह विचार करि कचको मारचो ॥ शुक्र सुता दिन पंथ निवारचो ॥ साँझ भये हू जब आयो । शुक्र पास तिन जाइ सुनायो ॥ शुक्र हृदयमें करी विचार । कह्यो असुरन वहि डारो मार ॥ सुता कह्यो तिहि फेरि जिवावहु । मेरे जियके सोच मिटावहु ॥ शुक्र ताहि पढ़ि मन्त्र जिवायो । भयो तासु तनयाको भायो ॥ पुनि मदिरा माहिं मिलाई । दिये दानवतिहि शुक्र पियाई ॥ तबते हत्या मदकी लागी । यहै जानि सब देवन त्यागी ॥ शाप दिये ताको या भाई । जो तोहि पियै सु नरकहिं जाई ॥ कच बिनु शुक्रसुता दुख पायो । तब ऋषि तासों कहि समुझायो ॥ मारचो कचको असुरन धाई । मदिरामें मुहि दियो पियाई ॥ ताहि जिवाऊं तौ मैं मरों । जो तुम कहो सु अब मैं करों ॥ कह्यो विनय करि सुनि ऋषिराई । दोऊ जिवैं सो करो उपाई ॥ संजीवनि तब कचहिं पढाई । तासेती यों कह्यो समुझाई ॥ जब तुम निकरि उदरते आवहु । या विद्याकरि मोहिं जिवावहु ॥ उदर फारि तिहिं बाहर कियो । मृतक कच ऐसी विधि जियो । सुजब उदरते बाहर आयो । संजीवनि पढि शुक्र जिवायो ॥ बहुत काल व्यतीत जब भयो । कच ऋषि ऋषितनयासों कह्यो ॥ जो तुमरी मोहिं आज्ञा होई । तात मातको देखौं जोई ॥ ऋषितनया कह्यो मोहिं विवाह । कच कह्यो तू गुरुभगनी आहि । तब तिन शाप दियो या भाई । विद्या पढी सु वृथा जाई ॥ कचहूं ताहि कहचो या भाई । विप्र पुरुष तोहि मिले न आई ॥ यह कहि कच अपने गृह आयो । पिता पास वृत्तान्त सुनायो ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७१ ॥

देवयानी कूप निपातन, राजा ययाति पाणिग्रहण, शुक्र शाप, राजपुत्रयौवन भोग, वैराग्य करि मोक्ष प्राप्ति । राग भैरों ॥ दानव वृषपर्वा बलभारी नाम शरमिष्ठा तासु कुमारी ॥ देवयानीसों प्यार । रहे न तासों पल भरि न्यार ॥ एक बार ताके मन आई । न्हावन काज प्रयाग सिधाई । तासँग दासी गईं अपार । न्हान लगीं सब कपड़े डार ॥ दनुज सुता तिहि नहीं निहारी । अँधियारी आई अति भारी ॥ बसन शुक्रतनयाके लीने । करत उतावलि परत न चीने ॥ शुक्रसुता जब आई बाहर । बसन न पाए तिन तिहि ठाहर ॥ असुरसुताको पहिरे देखि । मनमें कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो मम बसन नहीं तुव योग । तुम दानव हम तपसी लोग ॥ मम पितु दियो राज नृप करत । तू मम बसन हरत नाहिं डरत ॥ तिन कह्यो तुव पितु भिक्षा खात । बहुरि कहति हमसों ये वात ॥ या विधि कहि करि क्रोध अपार । दीनों ताहि कूपमें डार ॥ नृपति ययाति अचानक

आयो। शुक्रसुताको दरशन पायो ॥ दियो तब बसन आपनो डारि। हाथ पकरिके लियो निकारि ॥ बहुरो नृप निज गेहसिधायो। सुता शुक्रसों जाइ सुनायो ॥ शुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यो। असुर नृपति सुनि ऋषिसँग लाग्यो ॥ जब बहुभाँति बिनय नृप करी। तब ऋषि यह बाणी उच्चरी ॥ मम कन्या प्रसन्न ज्यों होय। करो असुरपति अब तुम सोय ॥ शुक्रसुतासों कह्यो तिन आई। आज्ञा होइ करौं सु उपाई ॥ जो तुम कहौ करौं अब सोइ। तब पुत्री मम दासी होइ ॥ दासी सहस ताहिसँग भई। नृपपुत्री दासी करि-दई ॥ सो सब ताकी सेवा करैं। दासी भाव हृदयमें धरैं ॥ इक दिन शुक्रसुतामन आई। देखौं जाइ फूल फुलवाई ॥ लै दासा फुलवारी गई। पुहुप सेज रचि सोवत भई ॥ असुर-सुता तेहि व्यजन डुलावै। सोवत सेज सु अति सुख पावै ॥ तेहि अवसर ययाति नृप आयो। शुक्रसुता तेहि बचन सुनायो ॥ नृप मम पाणिग्रहण तुम करो। शुक्र सकुच हृदय मति धरो ॥ कचको प्रथमदियो मैं शाप। उनहु मोहि दियो करि दाप ॥ ताको कोइ न सकै मिटाई। ताते व्याह करो तुम राई ॥ नृपकह्यो कहो शुक्रसों जाइ। करिहौं जो वहिहैं ऋषिराइ ॥ तब तिन कह्यो शुक्रसों जाइ। कियो ब्याह ऋषि नृपति बुलाइ ॥ असुरसुता ताके सँग दई। दासी सहस तासु सँग भई ॥ दंपति भोग करत सुख पाए। शुक्रसुता यों द्वै सुत जाए ॥ कह्यो शरमिष्ठा अवसर पाइ। रतिको दान देहु मोहिं राइ ॥ नृप ताहूसों कीनो भोग। तीन पुत्र भये विधि संयोग ॥ शुक्रसुता तिहि पुत्रन देखि। मनसों कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो शरमिष्ठा सुत कहाँ पायो। उन कह्यो ऋषि किरपाते जायो ॥ बहुरि कह्यो ऋषिको कह नाम। कह्यो स्वप्न देख्यो अभिराम ॥ पुनि पुत्रन सों पूछ्यो जाई। पिता नाम मोहिं कहो बुझाई ॥ बडे पुत्र भाष्यो पुनि ताहि। नृपति पिता ययाति मम आहि ॥ सुनि नृपसों कियो युद्ध बनाई। बहुरि शुक्र सेती कह्यो जाई ॥ पाछेते ययातिहू आयो। ऋषि तासों यह वचन सुनायो ॥ तैं यौवन मदते यह कीनो। तातै शाप तोहिं मैं दीनो ॥ जरा अबहिं तोहिं व्यापै आइ। भयो वृद्ध तब कह्यो शिर नाइ ॥ ऋषि तुम तो शराप मोहिं दियो। पूरण काम नाहिं मैं कियो ॥ ताते जो मोहिं आज्ञा होई। आयसु मानि करौं अब सोई ॥ कह्यो जरा तेरी सुत लेय। अपुनो तरुनापा तोहिं देय ॥ भोग मनोरथ तब तू पावै। मेरे वचन वृथा नहिं जावै ॥ बडे पुत्र यदुसों कह्यो आइ। उन कह्यो वृद्ध भयो नहिं जाइ ॥ नृप कह्यो तोहि राज नहिं होई। वृद्धपनो लै राजा सोई ॥ औरनहू सों जब नृप भाख्यो। नृपति वचन काहू नहिं राख्यो ॥ लघु सुत नृपति बुढापो लयो। अपुनो तरुनापो तेहि दियो ॥ वर्ष सहस्र भोग नृप कियो। पै संतोष न आयो हियो ॥ कह्यो विषय तै तृप्ति न होई। भोग करौ कैसो किन कोई ॥ तब तरुनापा सुतको दीनो। वृद्धपनो अपनो फिरि लीनो ॥ बनमें करी तपस्या जाइ। रह्यो हरिचरनसों चित लाइ ॥ या विधि नृपति कृतारथ भयो। सो राजा मैं तुमसों कह्यो ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो ॥ सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७२ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते नवमः स्कन्धः समाप्तः ॥ ९ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–

श्री सूरसागर

दशम स्कन्ध ।

राग सारंग ॥ व्यास कह्यो शुकदेवसों श्रीभागवत बखान । द्वादशस्कंध परम सुभग प्रेम भक्तिकी खान ॥ नवस्कंध नृप सों कही श्री शुकदेव सुजान । सूर कहत अब दशमको उरमें धरि हरि ध्यान ॥ १ ॥

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ जय अरु विजय पार्षद दोई । विप्रनशाप असुर भये सोई ॥ दोइ जन्म ज्यों हरि उद्धारी । सो शुक तुमसों कहि उच्चारी ॥ दंतवक्र शिशुपाल जोभये । वासुदेव होइ सो पुनि हए ॥ औरौ लीला बहु विस्तार । कीन्हे जीवन ज्यों निस्तार ॥ सो अब तुमसों सकल बखानौं । प्रेमसहित सुनि हृदये आनौं ॥ जो यह कथा सुनै चितलाई । सो भव तरि वैकुंठहिं जाई ॥ जैसे शुक नृपको समुझायो । सूरदास त्योंहीं कहि गायो ॥ २ ॥

भगवान जन्मलीला । राग सारंग ॥

बालविनोद भावती लीला अतिपुनीत मुनिभाखी हो ।
सावधान ह्वै सुनहु परीक्षित सकलदेव मुनि साखी हो ॥ १ ॥
कालिन्दीके कूल बसत एक मधुपुरी नगर रसाला हो ।
कालनेमि उग्रसेन वंश कुल उपजे कंस भुवाला हो ॥ २ ॥
आदिब्रह्म जननी सुर देवी नामदेवकी बाला हो ।
दई विवाहि कंस वसुदेवको अघभंजन उरमाला हो ॥ ३ ॥
यह गज रत्न हेम पाटंबर आनँद मंगलचारा हो ।
समदत भई अनाहद वाणी कंसकान झनकारा हो ॥ ४ ॥
याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहैं प्राण प्रहारा हो ।
रथतें उतरि केश गहि राजा कियो खड्ग पटतारा हो ॥ ५ ॥
तब वसुदेव दीन ह्वै भाष्यो पुरुष न त्रियवध करई हो ।
मैं सुनी कान मंद विधि वाणी तातें संच न परई हो ॥ ६ ॥
आगे वृक्ष फरै जो विषफल वृक्षहि बिनकिन सरई हो ।
ताहि मारि तोहि और विवाहों अग्रसोच क्यों मरई हो ॥ ७ ॥
बालक काज धर्म जनि छाँडौ राय न ऐसी कीजै हो ।
तुम मानी वसुदेव देवकी जीवदान इन दीजै हो ॥ ८ ॥

कीन्हो यज्ञ होत है निःफल वेद भंग नहिं कीजै हो ।
याके गर्भ अवतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजै हो ॥ ९ ॥
वाचाबंध कंस करि छांडयो तब वसुदेव पतीजे हो ।
मानौ मृगी चरत गहि वनमें नैन नीर उर भीजे हो ॥१०॥
प्रथम पुत्र देवकी जु जायोलै वसुदेव दिखायो हो ।
बालक देखि कंस हँसि दीन्हे सब अपराध क्षमायो हो ॥
कंस कहा लरिकाई कीन्ही कहि नारद समझायो हो ।
जाको भरम करतहो राजा मनि पहिले सो आयो हो ॥११॥
यह सुनि कंस पुत्र फिरि मारयो येहिविधि सबनि सँहारो हो ।
तब देवकी भई तनु व्याकुल कहँले प्राण प्रहारो हो ॥१२॥
कंस वंशको नाश करत है कहांलै जीव उबारौं हो ।
इहि दुख कहा मेटि है श्रीपति अरु हौं काहि पुकारौं हो ॥१३॥
धेनुरूप धरि पुहुमि पुकारी शिव विरंचिके द्वारा हो ।
सब मिलि गये जहां पुरुषोत्तम सोवत अगम अपारा हो ॥१४॥
क्षीर समुद्र मध्यते यों कहि दीरघ वचन उचारा हो ।
उधरौ धरणि असुर कुल मारौ धरि नरतनु अवतारा हो ॥१५॥
छूँछी मसक पवन पानी ज्यों तैसोई जन्म विकारी हो ।
पाखंड धर्म करत हैं पाँवर नाहिन चलत तुम्हारी हो ॥१६॥
मारग छाँडि कुमारगसों रत बुधि विपरीति बिचारी हो ।
अमृत छाँडि विषय विष अचवत देत अधमगति गारी हो ॥१७॥
सुर नर नाग तथा पशु पंछी सबको आयसु दीन्हों हो ।
गोकुल जन्म लेहु मेरे सँग जो चाहत सुख कीन्हो हो ॥१८॥
दैवैकोष अकर्ख रोहिणी आपुन अंश जो लीन्हों हो ।
जेहि माया विरंचिशिव मोह्यो वोहि वाणि करि चीन्हों हो ॥१९॥
अपनेहि गेह मधुपुरी आवन देवकि प्राण अधाराहो ।
असुर मारि सुरसाध बढावन ब्रजजन सुखदातारा हो ॥२०॥
हरिके गर्भवास जननीको बदन उजारा लाग्यो हो ।
मानहु शरदचंद्रमा प्रगटयो शोच तिमिर तनु भाग्यो हो ॥२१॥
तेहि खन कंसआनि भयो ठाढो देखि महातम जाग्यो हो ।
अबकीवार अरी आयो है आपु अपनपौ त्याग्यो हो ॥२२॥
दिन दश गए देवकी अपनो वदन विलोकन लागी हो ।
कंसकाल जिय जानि गर्भमें अति आनंद सभागी हो ॥२३॥
सुर नर देव वंदना आये सोवत ते उठि जागी हो ।
अबिनासी को आगम जानी सकल देव अनुरागी हो ॥२४॥

कछु दिन गए गर्भको आगम उर देवकी जनायो हो ।
कासों कहैं सखी कोउ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो हो ॥२५॥
बुध रोहिणी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलायो हो ।
सकल लोकनायक सुखदायक अजन जन्म धारि आयो हो ॥२६॥
माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर शोभित भृगुरेखा हो ।
शंख चक्र भुज चारि बिराजत अति प्रताप शिशुभेषा हो ॥२७॥
जननी निरखिभई तनु व्याकुल यह न चरित कहुँ देखा हो ।
बैठी सकुच निकट पति बोले दुहुँन पुत्र मुख पेखाहो ॥२८॥
सुनि देवै एक आन जन्मकी तोसों कथा चलाउं हो ।
तुम माँग्यो मैं दियो नाथ हौं तुमसो बालकपाऊं हो ॥ २९ ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहू न आऊं हो ।
भक्तबछल वानो है मेरो बिरदहि कहा लजाऊं हो ॥ ३० ॥
यह कहि माया मोह अरुझायो शिशु है रोवन लागे हो ।
अहो वसुदेव जाहु लैगो कुल तुमको परम सभागे हो ॥ ३१ ॥
घनदामिनि धरणी मिलि गरजै महाकठिन दुखभारे हो ।
आगे जाउँ यमुन जल बूडों पाछे सिंह देहारो हो ॥ ३२ ॥
लै वसुदेव धँसे दहसामुहि तिहूँ लोक उजियारे हो ।
जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहि बिचारे हो ॥ ३३ ॥
चरण पसारि परसि कालिंदी तरवा नीरते आगे हो ।
शेष सहसफन ऊपर छायो लै गोकुलको भागे हो ॥ ३४ ॥
पहुँचे जाइ महरमंदिरमें मनहि न शंका कीनी हो ।
देखी परी योगमाया वसुदेव गोद करि लीनी हो ॥ ३५ ॥
तुरत वेग मधुपुरी पहूँचे सकल प्रगट पुर कीनी हो ।
देवै गर्भ भई है कन्या राइन बात पतीनी हो ॥ ३६ ॥
यह सुनि कंस खड्ग लै धायो तब देवै आधीनी हो ।
यह कन्या जूबक सुबधु मोहिं दासी जान करि दीनी हो ॥ ३७ ॥
क्रूर कंस अववंश न समुझै नवै नहीं रिसि कीनी हो ।
ना जानी होई छल कीन्हे अविगति गतिको चीन्ही हो ॥ ३८ ॥
पटकत शिला गई आकाशहि दोउ भुज चरण लगाई हो ।
गगन गई बोली, सुरदेवी कंस मृत्यु नियराई हो ॥ ३९ ॥
जैसे मीन जालमों कूदत गनै न आपु लखाई हो ।
तैसे कंस काल ठूक्यो है ब्रजमें यादवराई हो ॥ ४० ॥
जैसे व्याल वेगको ठूकै बेग पखारी ताकै हो ।
जैसे सिंह आपु मुख निरखै परै कूपमें द्राकै हो ॥ ४१ ॥

तैसेहि कंस परम अभिमानी भूल्यो राज सभाके हो।
गतिकी गति पतिकी पति तेरी हाथ मींजु है ताके हो ॥ ४२ ॥
यह सुनि कंस देवकी आगे रह्यो चरण शिरनाई हो।
बहु अपराध करी शिशु मारे लिख्यो न मेट्यो जाई हो ॥ ४३ ॥
काके शत्रु जन्म लीनो है बूझहु मतो बुलाई हो।
चारि पहर सुख सेज परेनिशि नेक नींद नहिं आई हो ॥ ४४ ॥
देश देशके दूत बुलावहु कासों है छल कैसो हो।
अविगत अजर अजीत अमरता करताको बल जैसो हो ॥ ४५ ॥
दिनही दिन सो पुरुष होत है बढत असुर बल जैसो हो।
बूझत महि तृणभार बुझायो षवली कर्षन तैसो हो ॥ ४६ ॥
जागी महरि पुत्रमुख देख्यौ आनँद तूर बजायो हो।
कंचनकलश होम द्विज पूजा चन्दन भवन लिपायो हो ॥ ४७ ॥
वरण बरण रँग ग्वाल बने मिलि गोपिन मंगल गायो हो।
बहुविधि व्योम कुसुम सुर बर्षत फूलन मंडप छायो हो ॥ ४८ ॥
आनँद भरे करत कौतूहल प्रेम मगन नर नारी हो।
अभय निभय नीसान बजावत देत महरिको गारी हो ॥ ४९ ॥
नाचत महर मुदित मन कीन्हे ग्वाल बजावत तारी हो।
सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा गर्व प्रहारी हो ॥ ५० ॥

अथ प्रथम लीला मथुराते गोकुल आये। राग बिलावल ॥ हरिमुख देखिये वसुदेव। कोटि काम स्वरूप सुन्दर कोउ नजानत भेव ॥ चारिभुजा जाके चार आयुध निरखि लै करताउ। जोपै मन परतीत आवै नंदघर लैजाउ ॥ श्वान सूते पहरुआ सब नींद उपजी गेह। निशि अंधेरी बीजु चमकै सघन वरषै मेह ॥ झरे ताला पहरु पौढे खुलि गये वज्रकेंवार। बंदि-बेरी सबै छूटी कहौ कौन बिचार ॥ सिंह आगे शेष पाछे यमुनभई भरपूर। नासिका बहु नीर आए पार पहिलो दूर ॥ कृष्णने हुँकार छोड्यो यमुन मान्यो हेत। चरण परसत थाह दीन्हों वसुदेव उतरे सेत ॥ देत अमर और कमर फूली अँग न समाइ। भिक्षुक भाट सब द्वार ठाढे देखै यशोमति आइ ॥ नंदसों मनुहार करिहौ सुनिन लेहु वसुदेव। सूर सुतही जानि अपनो कृष्णको करि सेव ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

राग केदारा ॥ हो पिय सो उपाय कछु कीजे। जेहि तेहि विधि दुराय इह बालक राखि कंससों लीजै। मनसा वाचा कहत कर्मना नृपतिहि नहीं पतीजै। बुधि बल छल कल कैसेहूँ करिके काटि अनत लैहीजै ॥ नाहिन यतनो भाग सो यह रस नित लोचन पट पीजै। सुनहु सूर ऐसे सुतको मुख निरखि २ जग जीजै ॥ ५ ॥

राग केदारा ॥ सुन देवकीको हितू हमारे । असुर कंस अपवंश बिनाशन शिरपर बैठे हैं रखवारे ॥ ऐसोको समरथ त्रिभुवनमें जो यह बालक नेक उबारै । खड्ग धरे आयो तो देखत अपने कर क्षणमाहँ पछारै ॥ यह सुनतहि अकुलाइ गिरीधर नैन नीर भरि भरि दोउ डारे । दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकै भुज चारे ॥ बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मा॰ उबरै तब मोहिं जुमारे । अतिदुखमें सुख दै पितु मातहि सूरको प्रभु नन्द-भवन सिधारे ॥ ६ ॥

भादों भरकी राति अँधियारी । द्वार कपाट कोट भट रोके दशहुँ दिशि कंस भय भारी ॥ गर्जत मेघ महा डर लागत बीच बढ़ी यमुना जल कारी । तबते इहै शोच जिय मेरे क्यों दुरि है शशिवदन उज्यारी ॥ कतपिय बोल वचन करि राखी वरु ताही दिन जीवनमारी । कहि जाको ऐसो सुत बिछुरै सो कैसे जीवै महतारी ॥ करि न बिलाप देवकीसों कहि दीन-दयालु भक्त भयहारी । छुटि गयो निविड़ तबहि गये गोकुल सूर सुमति दे बिपति निवारी ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ॥ अँधियारी भादौंकी राति । बालकको वसुदेव देवकी पठै पठै पछिताति ॥ बीच नदी घन गर्जत वर्षत दामिनि कोंधत जाति । बैठत उठत सेज सोवरिमें कंस डरनि अकुलाती ॥ गोकुल बाजत सुनी बधाई लोगन हेरि सिहाति । सूरदास आनंद नंदके देत कनक नगदाति ॥ ८ ॥

विहांगरा ॥ देवकी मन मन चकृत भई । देखहु आइ पुत्र मुख काहेन ऐसी कहूँ देखि नदई ॥ शिरपर मुकुट पीत उपरेना भृगुपद उर भुजचारि करे । पूरब कथा सुनाई कही हरि तुम माँग्यो वह वेषधरे ॥ छूट निगड सो आये पहरू द्वारेको कपाट उघरचो । तुरत मोहिं गोकुल जावहु ले यह कहति शिशुभेष धरचो ॥ वसुदेव यह सुनतहि हर्षवंत नन्दभवन गये । बालक धरचो लई सुरदेवी आइ सूर मधुपुरी भये ॥ ९ ॥

राग विलावल ॥ आनंदे आनंद बढचो अति । देवन दइ दुन्दुभी बजाई सुनि मथुरा प्रगटे यादवपति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठ धर उपजावत अनुराग अमित अति । गावत गगन धरणि ध्वनि सुनियत गर्जत घन तेहि काल जतन जति ॥ वर्षत सुमन सुदेश सूर सुर जयजयकार करत मानत रति । शिव विरंचि इन्द्रादि सनक मुनि फूले सुख न समात मुदितमति ॥ १० ॥

कमलनयन शशिवदन मनोहर देखिये हो पति अति विचित्र गति । श्याम सुभगतनु पीतवसन दुति उर वाने सोहै अद्भुत अति ॥ नख मणि मुकुट प्रभा अति उद्दित चितै चकृत उनमान नयावति । अति प्रकाश निशि विमल तिमिर छुटि कलमलि मलिनि जपति हि जगावति ॥ दरशन सुखि दुखी अति शोचत षट्सुत शोक सुरति उर आवति । सूरदास प्रभु लेहु पुराकृत भुजके चिह्न दुरावति ॥ ११ ॥

गोकुल प्रगट भए हरि आई। अमर उधारन असुर सँहारन अंतर्यामी त्रिभुवनराई॥ माथेपर धरि वसुदेव ल्याए नंदमहर घरगे पहुँचाई। जागी महरि पुत्रमुख देखत पुलक अंग उर में न समाई॥ गद्गद कंठ बोल नहिं आवे हर्षवंत ह्वै नंद बुलाई। आवहु कंत देव परसन भए पुत्र भयो मुख देखौ धाई॥ दौरि नंद गए सुतमुख देख्यो सो शोभा सुख बरणि न जाई। सूरदास पहिले यह माँग्यो दूध पिआवन यशुमति माई॥ १२॥

जागी महरि पुत्रमुख देख्यो आनँद तूर बजाई। कंचन कलश हेम द्विज पूजा चंदन भवन लिपाइ॥ दिन दशहीते वर्षे कुसुमनि फूलन गोकुल छाइ। नंद कहै इच्छा सब पूजी मन वांछित फल पाई॥ आनँदभरे करत कौतुहल उदित मुदित नर नारी। निर्भय भए निशान बजावत देत निशंके गारी॥ नाचत महर मुदित मन कीनो ग्वाल बजावत तारी। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी॥ १३॥

नंदगाइके नवनिधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतबसन भुजचारु सुहाई। बाजत ताल मृदंग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढाई॥ अक्षत दूब लिए शिर बंदत घर घर बंदनवार बधाई॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भरि लेत उठाई। सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई॥ १४॥

आजु वन कोऊ जिनि जाइ। सबै गाइ और बछरा समेत सब आनहु चित्र बनाइ॥ ढोटा है रे भयो महरिके कहत सुनाइ सुनाइ। सबहि घोषमें भयो कोलाहल आनँद उर न समाइ॥ कतहौ गहर करत रे भैया वेगी चलौ उठि धाइ। अपने अपने मनको चीत्यौ नैननि देखो आइ॥ एक फिरत दधि दूब बँधावत एक रहत गहि पाइ। एक परस्पर करत बधाई एक उठत हँसि गाइ॥ तरुण किशोर वृद्ध अरु बालक बैठ चौगुन चाइ। सूरदास सब प्रेम मगन भए गनत न राजाराइ॥ १५॥

राग रामकली॥ हौं एक बात नई सुनि आई। महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत बधाई॥ द्वारे भीर गोप गोपिनके महिमा वरणि न जाई। अति आनंद होत गोकुलमें रतन भूमिसब छाई॥ नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई॥ हौं सखी नई चाह एकपाई॥ ऐसे दिनन नंदके सुनियत उपजे पूत कन्हाई॥ बाजत पवन निसान पंचविधि रुंज मुरज सहनाई। महर महरि ब्रज हाट लुटावत आनँद उर न समाई॥ चलौ सखी हमहूं मिलि जय बेगि करो अतुराई। कोउ भूषण पहिरचो कोउ पहरति कोउ वैसेहि उठिधाई॥ कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चली बधाई। भाँति भाँति बनि चलीं युवतिगण यह उपमा मोपै नहिं आई॥ अमर विमान चढे सुर देखत जयध्वनि शब्द सुनाई। सूरदास प्रभु भक्तहेतु हित दुष्टनके सुखदाई॥ १६॥

राग गूजरी॥ सखीरी काहेको गहरु लगावति। सुतको जन्म यशोदाके गृह तालगि तुमहिं बुलावति॥ कनकथार भरि लैदधि रोचन वेगि चलौ मिलि गावति। साँचहु सुत

भयो नँदनायकके हौं नाहिन बौरावती ॥ आनँद उर अंचल न सँभारति शीश सुमन बरषावति । सूरदास शोभा तेहि अवसर जहाँ तहाँते आवति ॥ १७ ॥

राग आसावरी ॥ ब्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी । सुनी आनंदे सब लोग गोकुल गनक गुनि ॥ अति पूरबपूरे पुण्यरूप कुल अटल थुनी । ग्रहलग्न नक्षत्र बल शोधि कीनी वेद ध्वनी ॥ सुनि धाई सबै ब्रज नारी सहज शृंगार किए । तनु पहिरे नौतन चीर काजर नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक शिलार शोभित हार हिये । करकंकन कंचनथार मंगल साज लिये ॥ शुभ श्रवणनि तरल बनाइ वेनी शिथल गुही । सुर वर्षत सुमन सुदेश मानौ मेघ फुही ॥ मुख मंडित रोरी रंग सेंदुर माँग छुही ॥ ते अपने २ मेलि निकसी भांति भली । मनु लाल मनिंनकी पांति पिंजर चूरि चली ॥ गुण गावहिं मंगल गीत मिलि दश पांच अलि । मनु भोर भए रवि देखि फूली कमलकली ॥ पिय पहिले पहुँचि जाइ अति आनंद भरी । लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशु पाइ परी ॥ एक वदन उवारि निहारि देहि अशीश खरी । चिर जिवो यशोदानँद पूरणकाम करी ॥ धनि धनि दिन धनि रात धनि यह पहर घरी । धनधन्य महरिकी कूख भाग सुहाग भरी ॥ जिन जायो ऐसो पूत सब सुखफलनिफरी । थाप्यो थिर परिवार मनकी शूल हरी ॥ सुनि ग्वालिन गाय बहोरि बालक बोलि लये । गुहि गुंजा घसि वन धातु अंगनि चित्र ठये ॥ शिर दधि माखनके माट गावत गीत नये । कर झाँझ मृदंग बजाइ सब नंदभवन गये ॥ मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरद दही । मानो वर्षत भादों मास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित जाइ कौतुक तहीं तहीं । सब आनंद मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥ एक धाय नंदपै जाइ पुनि पुनि पाँय परै । एक आपुन आपुहि माहिं हँसि हँसि अंक भरै ॥ एक अंबर उतारत अंग देत न शंक करै । इक दधि अक्षत अरु दूब सबनके शीश धरै । तब न्हाइ नंद भए ठाढ़े अरु कुश हाथ लिये । घसि चन्दन चारु मँगाइ विप्रन तिलक किए ॥ नान्दीमुख पित्र पुजाइ अंतर शोच हरे । गुरुजन द्विजन पहिराइ सबनिके पाइ परे ॥ गैयां गनी न जाहिं तरुणि सब बच्छ बढीं । ते चरहिं यमुनाके कच्छ दूने दूध चढीं ॥ खुर ताँबे रूपे पीठि सोने शृंग मढीं । ते दीनी द्विजन अनेक हरषि अशीश पढीं ॥ तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिए । मथि मृगमद मलय कपूर सबनके तिलक किए ॥ उरं मणिमाला पहिराय सबन विचित्र ठए । दान मान परधान पूरणकाम किए ॥ वर मागध बंदी सूत आँगन भवन भरे । ते बोले लैलै नाम क्रीडत विवशपरे ॥ जिन यांच्यो जोइ दीन रस नँदराय ढरे । मानो वर्षत मास अषाढ दादुर मोर ररे ॥ तब अंमर और मँगाइ सारी सुरंग घनी । ते दीनी बधुन बोलाइ जैसी जाहि बनी ते बहुरी अति आनंद निज गृह गोप घनी । ते निकसीं देत अशीश रुचि अपनी अपनी ॥ घर घर भेरि मृदंग पटह निशान बजे ॥ वारन बंदनवार अरु ध्वज कलश सजे ॥ ता दिन वे लोग सुख संपति न तजे । कहि सूर सबनकी यह गति जे हरिचरण भजे ॥१८॥

राग धनाश्री ॥ आजु नंदके द्वारे भीर । एक आवत एक जात बिदा होइ एक ठाढे मंदिरके तीर ॥ कोउ केसर कोउ तिलक बनावत कोउ पहिरत कंचुकी चीर । एकनको दे दान समर्पित एकनको पहिरावत चीर ॥ एकनको भूषण पाटम्बर एकनको जो देत नग हीर । एकनको पुहुपनकी माला एकनको चंदन घसि वीर ॥ एकनको तुलसीकी माला एकनको राखत दै धीर । सूरश्याम घनश्याम सनेही धन्य यशोदा पुण्यशरीर ॥१९॥

गौरी ॥ गोपी गावहिं मंगलचार बधायो ब्रजराजको । अब भयउ अमर सब काज बधायो ब्रजराजको ॥ रानी जायो है मोहन पूत बधायो ब्रजराजको । बहुत नारि सुभाग सुंदरि और घोषकुमारि । सजन प्रीतम नाउ लैलै देहिं परसपर गारि ॥ आनँद स्तुति अतिशय भयो घर घर नृत्य कामहि ठाउं । नंदद्वारे भेंट लैलै उमह्यो है गोकुल गाउँ ॥ साथिये बनाइकै देहिं द्वारे सात सींक बनाय । नवकिशोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजीके पाँय ॥ चौके चंदन लीपिकै आरति धरी सँजोइ ॥ कहत घोषकुमारि ऐसो आनँद जो नित होई ॥ करि करि अलंकृत गोपिका पहिरे सुभूषण चीर । गाइ बच्छ सँवारि ल्याये ग्वालनकी भै भीर ॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल । हरद अक्षत दूब दधि लै तिलक करहिं ब्रजबाल ॥ एक हेरी देहि गावहिं एक भेटहिं थाइ । एकएक न गनै काहू इक खेलावत गाइ ॥ एक बिरध किशोर बालक एक यौवन योग । कृष्ण जन्म सुप्रेम सागर क्रीडत सब ब्रजलोग ॥ प्रभु मुकुंदके हेतु नवतनु होहि घोष विलास । देखि ब्रजकी संपदा फूले हैं सूर दास ॥ २० ॥

आजु बधायो नंदराइके गोपी गावहिं मंगलचार ॥ आई मंगलकलश साजिकै ता ऊपर फलडार । अक्षत रोचन दूब लै चली बहु विधि फल भरे थार ॥ छरनघरन ते गावत चलीं ब्रजवधू झुंड अपार । चलीं सब मिलि महरके घर देखन नंदकुमार ॥ देखि मोहन आश पूरी सबै देति अशीश । नंदमहरके लाडिले तुम जिऔ कोटि बरीश ॥ उरमें लैहैं नंदरायके गोपसखन मिलि हार । मागध बंदी जन अति क्रीडत बोलत जैजैकार ॥ महरि दान जु बहुत दीनो अरु दियो नंदराइ । ऐसो सुख देखौ सखी जन सूरदास बलि जाइ ॥ २१ ॥

धनि धनि नंद यशोमति धनि जगपावन रे । धनि हरि लियो अवतार सुधनि दिन आवन रे ॥ दशमें मास भयो पूत पुनीत सुहावनरे । शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज भावन रे ॥ बनि बनि ब्रजसुंदरि चली सुगाइ बधावन रे । कनकथार रोचन दधि तिलक बनवन रे ॥ नंद घरहिं चलि गाइ महरि जहां पावन रे । पाँइनि परि सब वधू महरि बैठावन रे ॥ यशुमति धनि यह कोखि जहां रहे बावन रे । भले सुदिन भयो पूत अमर अजरावन रे ॥ युग युग जीवहु कान्ह सबनि मनभावन रे ॥ गोकुल हाट बजार करत जु लुटावन रे ॥ घरघर बजै बधाव नगर हरि आवन रे । अमर नगर उत्साह अप्सरा गावन रे ॥ ब्रह्म लियो अवतार दुष्टके दावन रे । दान सबै जो देत वर्षि जनु सावन रे ॥ मागध सूत भाट धन लेत जुरावन रे । चोवा चंदन अबीर गली छिरकावन रे ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक

गगन भरावन रे । कश्यप ऋषि सुर तात सुलगन गनावन रे ॥ तीनि भुवन आनंद कंसहि डरावन रे । सूरदास प्रभु जन्मे भक्तहुलसावन रे ॥ २२ ॥

राग कल्याण ॥ शोभासिंधु न अंत रही री । नंदभवन भरिपूर उमंग चली ब्रजकी बीथिनि फिरति बही री ॥ देखी जाइ आजु गोकुलमें घर घर बेचत फिरति दही री । कहाँ लगि कहौं बनाइ बहुत विधि कहत न मुखसहसहु निबही री ॥ यशुमति उदधिते उपजी ऐसी सबन कही री । सूरश्याम प्रभु इन्द्रनील मणि ब्रजबनिता उरलाइ गही री ॥ २३ ॥

राग काफी ॥ आजु निशान बाजै नंद महरिके । आनंद मगन नर गोकुल शहरके ॥ आनँद भरी यशोदा उमँगि अंग न समाति आनंदित भई गोपी गावति चहरके ॥ दूब दधि रोचन कनकथार लैलै चलीं मानों इंद्रवधू जुरि पांतिनि बहरके । आनंदित भये ग्वाल बाल करत विनोद ख्याल भुजभरि धरि अंकमदै बरहरिके ॥ आनंद मगन धेनु थन स्रवै पय फेनु उमँग्यो यमुनजल उछलै लहरके । अंकुरित तरु पात उकठि रहे जेगात बनबेली प्रफुलित कलिन कहरके । आनंदित विप्रसूत मागध याचक गण उमँगे अशीश देत तरहतरह हरिके ॥ आनंदमगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढे पहर पहरके । सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए संतन भयो हरष दुष्टजन मनदहरके ॥ २४ ॥

माई आजु हो बधायो बाजै नंदगोपराइके । यदुकुल यादव जन्मे हैं आइके ॥ आनंदित गोपी ग्वाल नाचें कर दैदै ताल अति अहलाद भयो यशुमति माइके । शिर पर दूत धरि बैठे नंद सभा मधि द्विजनको गाइ दीनी बहुत मँगाइके ॥ कनक माट मँगाइ हरद दही मिलाय छिरकै परस्पर छलबल धाइके । आठैं कृष्णपक्ष भादौं महरके दधि कादौं मोतिन बँधायो वार महलमें जाइकै ॥ ढाढी और ढाढिनि गावैं हरिके ठाढे बजावैं हरषि अशीश देत मस्तक नवाइकै । जोई जोई माँग्यो जिनि सोई सोई पायो तिनि दीजै सूरदास दर्श भक्तन बुलाइकै ॥ २५ ॥

राग जैतश्री ॥ आजु बधाई नंदके माई । सुन्दर नंद महरके मंदिर । प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर ॥ यशुमति ढोंटा ब्रजकी शोभा । देखि सखी कछु औरै लोभा ॥ लक्ष्मीसी जहां मालिन बोलै । बंदन माला बांधत डोलै ॥ द्वार बुहारत फिरत अष्ट सिधि कौरेन सथिया चींतत नवनिधि ॥ गृह गृहते गोपी गावतीं जब । रंगीली गलिन बिच भीर भई तब ॥ सोवरनथाल रही ह्वाथन लसि । कमलन चढि आए मानो शशि ॥ उमंगे प्रेमनदी छबि पावै । नंद नंद सागरको धावै ॥ कंचन कलश जगमगे नग के । भागे सकल अमंगल जगके ॥ डोलत ग्वाल मानो रणजीते । भये सबहिके मनके चीते ॥ अति आनंद नंद रस भीने । पर्वत सात रतनके दीने ॥ कामधेनुते नेक नवीने । द्वैलख धेनु द्विजनको दीने ॥ नंदद्वार जे याचन आए । बहुरो फिरि याचक न कहाए ॥ घरके ठाकुरके सुत जायो । सूरदास तब सब सुख पायो ॥ २६ ॥

राग बिलावल ॥ आज गृहनंद महरिके बधाई । प्रात समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद्र छवि पाई ॥ मिलि ब्रजनारी मंगल गावत नंदभवन मैं आई । देति अशीश जियो यशुदासुत कोटि वर्ष कुँवर कन्हाई ॥ अति आनंद बढ्यो गोगुलमें उपमा कही न जाई । सूरदास धनि नंदघरनि है देखत नैन सिराई ॥ २७ ॥

राग जैजैवंती ॥ माई आजु तो बधाई बाजै मंदिर महरके । फूले फिरैं गोपी ग्वाल ठहर ठहरके फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग अंग । फिर फूले तरुवर आनंद लहरके ॥ फूले बंदी जनद्वारे । फूले जहां जोइ सोइ गोकुल शहरके ॥ फूले फिरैं यादव कुल आनँद समूल मूल । अंकुरित पुण्य फूले पिछले पहरके ॥ उमगे यमुनाजल प्रफुल्लित कुंज पुंज । गरजत कारे भारे यूथ जलधरके ॥ नृत्यत मदन फूले फूली रति अंग अंग । मनके मनोज फूले हलधर हरिके ॥ फूले द्विजसंत वेद मिटिगयो कंस खेद । गावत बधाई सूर भीतर बहरके । फूलीहै यशोदा रानी सुत जायो शारंग पानी । भूपति उदार फूल भार फरे घरके ॥ २८ ॥

जैतश्री ॥ नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्धनते आयो । तुमरे पुत्र भयो मैं सुनिकै अति आतुर उठि धायो ॥ बंदीजन अरु भिक्षुक सुनिसुनि ॥ दूरि दूरिते आये । इक पहि-लेही आशा लागे बहुत दिननके छाये ॥ ते पहिरे कंचन मणि भूषण नानावसन अनूप । मोहिं मिले मारगमें आवत मानों जात कहूके भूप ॥ तुमतौ परम उदार नंदजू जिन जो मांग्यो सो दीनो । ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साको कीनो ॥ कोटि देहुतौ रुचि नहिं मानों बिन देखे नहिं जैहौं । नन्दराय सुनि बिनती मेरी तबहिं बिदा भले ह्वैहौं ॥ दीजै मोहिं कृपा करि सोई जो हौं आयो मांगन । यशुमतिसुत अपने पाँइन जब खेलत आवै आंगन । जब तुम मदन मोहन करिटेरो इहि सुनिकै घर जाऊँ । हों तो तेरो घरको ढाढी सूरदास मेरो नाऊँ ॥ २९ ॥

मैं घरको ढाढी हौं तिहारो को मोसर करै आन । सोई लैहौं जो मो मनभावै नंदमह-रकी आन ॥ धन्य नन्द धनि धन्य यशोदा धनिधनि जायो पूत धन्य भूमि ब्रजवासी धनि धनि आनन्द करत अकूत ॥ घरघर होत आनन्द बधाई जहाँ तहाँ मागध सूत । मणि माणिक पाटंबर देते लेत न बनत बहूत ॥ हय गय सबन भंडार दिये सब फेरि भरेसे भाति । जबहिं देत तबहीं फिरि देखत संपति घर न समाति ॥ ते मोहि मिले जात घर अपने मैं बूझि तब जाति । हँसि हँसि दौरि मिले अंकम भरि हम तुम एकै ज्ञाति ॥ संपति देहु लेहुँ नहिं एको अन्न वस्त्र केहि काज । जोहों तुमसों मांगन आयो सो लेहौं नँदराज ॥ अपने सुतको वदन देखावहु बड़े महर शिरताज । तुम साहब मैं ढाढी तेरो प्रभु मेरे ब्रजराज ॥ चन्द्रवदन दरशन संपति दैसो मैं लै पुर जाऊं । जो संपति सनकादिक दुर्लभ सो है तुमरे ठाऊं ॥ जाको नेति नेति श्रुति गावत तेउ कमलपद धाऊं । हौं तेरो जन्म जन्मको ढाढी सूरदास कहि गाऊं ॥ ३० ॥

राग केदारो ॥ नंद उदौ सुनि आयो हो वृषभानुको जगा । देवेको बड़ो महर देत न लावै गहर लालकी बधाई पाऊं लालको झगा ॥ प्रफुल्लित ह्वैकै आनदीनहै यशोदा रानी

झीनीए झगुली तामें कंचनको तगा । नाचै फूल्यो आँगनाइ सूर बखशीश पाइ माथेकै चढाइ लीनो लालको बगा । ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री ॥ यशोमति लटकति पाँइ परै । तेरो भलो मनाइहौं झगरिन तू मति मनहि डरै ॥ दीन्हौं हार सबै कर कंकण मोतिन थार भरै । सूरदास स्वामी प्रगटे हैं अवसर पाइ झगरै ॥ ३२ ॥

नंदजू दुःख गयो सुख आयो सबन्हको दियो पुत्र फल मानौ । तुमरो पुत्र प्राण सबहिनको भवन चतुर्दश जानौ ॥ हौं तो तुम्हारो घरको ढाढी नावसेन सज पाऊँ । गृह गोवर्धन वास हमारो घर तजि अनत न जाऊँ ॥ ढाढिनि मेरी नाचै गावै हौंही ठाढो बजावैं । हमरो चीत्यो भयो तुम्हारे जो मांगौं सोपावैं ॥ अब तुम मोको करो अयाची जो ग्रह गेह बिसारौं । द्वारे रहौं देहु एक मंदिर श्यामस्वरूप निहारौं ॥ हँसि ढाढिनि ढाढीसों बोली अब तू बरणि बधाई । ऐसो दियो न देहै सूर कोउ यशोमति हौं पहिराई ॥३३॥

ढाढिनि दान मानकी भाई । नंद उदार भए पहिरावत बहुत भलै बनिआई ॥ जब जब जन्म धरौं ढाढिको जन्म कर्म गुण गाऊँ । अर्थ धर्म कामना मुक्त फल चार पदारथ पाऊं ॥ लै ढाढिनि कंचन मणि मुक्ता नाना वसन अनूप । हीरा रतन पाटंबर हमको दीन्हें ब्रजके भूप ॥ अब तो भली नारायण दरशे नैन निरखि निधि पाई । जहं तहं बंदन वार बिराजत घर घर बजत बधाई ॥ जो याच्यो सोई तिन पायो तुम रिव भई बिदाई । भक्ति देहु पालने झुलावों सूरदास बलिजाई ॥ ३४ ॥

छठी व्यवहार ॥ राग सारंग ॥ गौरि गणेश बिनऊं हो देवी शारद तोहि ॥ गाऊं हरिजीको सोहलो मन और आवै मोहि ॥ बधावो हरिको मनरहिबो रानी जायो है मोहन पूत । घर आँगन बाहेर सब मांगे ठाढे मागध सूत ॥ आठ मास चंदन पियो हो नवएं पियो कपूर । दशयें मास मोहन भए मेरे आंगन री बाजै धतूर ॥ हर्षी पार परोसिनि भए हरष नगरके लोग । हर्षी सखी सहेलरी सब आनँद भयो सुखयोग ॥ बाजन बाजे गहगहे मिलि बाजै शारद भेरि । मालिनि बाँधै तोरन मेरे आँगन री रोपै आछेकेरि ॥ आने गढ़ि सोना ढोलना मढिलाये चतुर सुनार । बीच बीच हीरा लगे नंदलाल गरेको हार ॥ यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरिसो पूत । करहु ललनकी आरती री अरु दधि काँदौ सूत ॥ नाउनि बोलहु नवरंगीलै आवहु महावर वेग । लाखटका अरु झूमक सारी देहु दाईको नेग ॥ अगर चंदनको पालनो गढई गुर ढार सुढार । लैआयो गढि ढोलनी विश्वकर्मा सोसुतधार ॥ धन्य सो दिन धन्य सो घरी धन्य सो धन्य मथुरापुरी हो धनि धनि महरिको भाग ॥ मातु देवकी धनि धनि जोतिक जाग । धन्य धनि धनि वसुदेव सुजान । धनि धनि भादौं अष्टमी धनि जन्म लियो जब कान्ह॥काढहु कोरे कापर हो अरु काढो घीकी मौन। जाति पाँति पहिरायकै सब समदि छतीसौ पौन । काजर रोरी आनोरी मिलि करौ छठीको जार । एपनकीसी पूतरी सब सखियन कियोहै श्रृंगार ॥ क्रीट मुकुट

शोभा बनी शुभ अंग बनी वनमाल । सूरदास प्रभु गोकुल जनमे मोहन मदन गोपाल ॥ ३५ ॥

राग काफी ॥ अति परम सुन्दर पालना गढि ल्यावरे बढैया । शीतल चन्दन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी बनाउ रंग रेशम लगाउ हीरा मोती लाल मढैया । विश्वकर्मा सुढार रच्यो है काम सुनार मणि गणि लागे अपार नंदमहर सुत काज अढैया । आनि धरचो नंदद्वार अतिही सुन्दर सुढार ब्रजबन्धू देखैं बारबार शोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्य है गढैया ॥ पालनो आन्यो सबहि अति मनमान्यो नीको सो दिन धराइ सखिन मंगल गवाय रंगमहलमें पौढ्योहै कन्हैया । सूरदास प्रभुकी मैया यशुमति नंदरानी जोई माँगत सोई लेत बधैया ॥ ३६ ॥

राग जयतश्री ॥ ब्रजको जीवन नँदलाल । असुरनिकंदन भक्तपाल ॥ कनक रतन मणि पालनौ अति गढचो काम सुतहार । विविध खेलौना भाँति भाँतिके गजमुक्ता बहुधार ॥ सुभग पालने झूलैं हो नँदलाल मात पिता सुकृत फल जगपाल ॥ जननि उबटि अन्ह-वायकै अति क्रमसों लीनों गोद । पौढाये पट पालने शिशु निरखि जननि मनमोद ॥ अति कोमल दिन सातके अधर चरण कर लाल । सूर श्याम छबि अरुणता निरखि हरषि ब्रजलाल ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ॥ यशोदा हरि पालने झुलावै । हलरावै दुलराइ मल्हावै जोई सोई कछु गावै ॥ मेरे लालकी आउ निदरिया काहे न आनि सुवावै । तू काहे न वेगिसी आवै तोको कान्ह बुलावै ॥ कबहूं पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहूं अधर फरकावै । सोवत जानि मौन ह्वै ह्वै रही कर करि सैन बतावै ॥ इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि यशुमति मधुरै गावै । जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनि पावै ॥ ३८ ॥

राग गौरी ॥ हालरो हलरावै माता । बलि बलि जाऊं घोष सुख दाता ॥ यशुमति अपनो पुण्य विचारै । बारबार शिशुवदन निहारै ॥ अंग फरकाय अलप मुसकानो । या छबि पर उपमाको जानो ॥ हलरावति गावति कहि प्यारे । बालदशाके कौतुक भारे ॥ महरि निरखिमुख हिय हुलसानी । सूरदास प्रभु शारंगपानी ॥ ३९ ॥

राग धनाश्री ॥ कन्हैया हालरु रे । गढिगुढि ल्यायो बढ़ई बलि हालरुरे ॥ धरनि पर डिलाइ एक लख माँगै बढ़ई बलि हालरुरे । दुइ लख बाबा नंदजी देहीं काहेको तेरो पालना बलि हालरुरे ॥ कहि लागी डोर रतन जडितको पालना बलि हालरुरे । रेसम लगी डोर कबहुँक झूलै पालना बलि हालरुरे । कबहुँक नंदजीकी गोद झूलैं सखी झुला-वहीं ॥ बलि हालरुरे सूरदास बलि जाहीं जाहीं ॥ ४० ॥

अथ पूतनावध ॥ आजु हौं राजकाज करि आऊँ । बेगि सँहारौं सकल घोष शिशु जो मुख आयसु पाऊँ ॥ तौ मोहन मूर्छन बशीकरन पढ़ि अमित देह बढ़ाऊं । अंग सुभग सजिकै मधु मूरति नयननि माहँ समाऊँ ॥ घसिकै गरल चढ़ाइ उरोजनि लै रुचिसों पय प्याऊँ । सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊँ तौ पूतना कहाऊं ॥ ४१ ॥

बिहागरो ॥ कंसराय जिय शोच परी । कहा करौं काको ब्रज पठऊँ विधना कहा करी ॥ बारंबार विचारत मनमें भूप नींद बिसरी । सूर बुलाइ पूतनासों कह्यो करुन विलम्ब घरी ॥ ४२ ॥

राग धनाश्री ॥ रूप मोहनी धरि ब्रज आई । अद्भुत साजि शृँगार मनोहर असुर कंस दै पान पठाई ॥ कुच विष बाँटि लगाइ कपट करि बाल घातनी परम सुहाई । बैठी हुती यशोदा मंदिर दुलरावति सुत श्याम कन्हाई ॥ प्रगट भई तहां आइ पूतना प्रेरित काल अवधि नियराई । आवत पीढ़ा बैठन दीनो कुशल बूझि अति निकट बुलाई ॥ पौढाये हरि सुभग पालने नंद घरनि कछु काज सिधाई । बालक लियो उछंद दुष्टमति हर्षित अस्तन पान कराई ॥ वदन निहारि प्राण हरिलीनो परी राक्षसी योजन ताई । सूरज दै जननीगति ताको कृपा करि निज धाम पठाई ॥ ४३ ॥

प्रथम कंस पूतना पठाई । नंदघरनि जहँ सुत लिए बैठी चलि तेहि धामहि आई ॥ अति मोहनी रूप धरि लीनो देखत सबहीके मन भाई । यशुमति रही देखि वाको मुख काकी बधू कौनधौं आई ॥ नंदसुवन तबही पहिचानी असुर घरनि असुरनकी जाई । आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भरपाई ॥ अहो महरि पालागन मेरो हों तुम्हरो सुत देखन आई । यह कहि गोद लियो अपने तब त्रिभुवनपति मन मन मुसकाई ॥ मुख चूंब्यो गहि कण्ठ लगाए विष लपट्यो अस्तन मुख लाई । पयसँग प्राण ऐंचि हरि लीन्हें योजन एक परी मुरझाई ॥ त्राहि त्राहि कहि ब्रजजन धाए अति बालक क्यों बच्यो कन्हाई । अति आनंद सहित सुत पायो हृदये माँझ रहे लपटाई ॥ करवर टरी बड़ी मेरेकी घरघर आनन्द करत बधाई । सूर श्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यो नृपराई ॥ ४४ ॥

राग सारंग ॥ कपट करि ब्रजहि पूतना आई । रूप स्वरूप विषम स्तन लाए राजा कंस पठाई ॥ मुख चूंबत अरु नैन निहारत राखत कण्ठ लगाई । भाग्य बड़े तुमरे नँदरानी जिनके कुँवर कन्हाई ॥ करगहि क्षीर पियावत अपनो जानत केशव राई । बाहर होइके असुर पुकारी अब बलि लेहु छोड़ाई । गई मुर्च्छाइ परी धरनी पर मानों भुवंगम खाई । सूरदास प्रभु तुमरी लीला भक्तन गाइ सुनाई ॥ ४५ ॥

राग धनाश्री ॥ देखो यह विपरीत भई । अद्भुत रूप नारि करि आई कपट हेत क्यों सहै दई ॥ कान्है लै यशुमतिको रातें रुचि करि कण्ठ लगाई । तब वह देह धरी योजनलौं श्याम रहे लपटाई ॥ बड़े भाग्य हैं नंद महरके बड़ भागिन नँदरानी । सूर श्याम उर ऊपर वारे यह सब घर घर जानी ॥ ४६ ॥

बिहागरो ॥ नेक गोपालै मोको दै री ॥ देखों कमल वदन नीके करि ता पाछे तू कनिया लै री ॥ अति कोमल कर चरण सरोरुह अधर दशन नासा सोहैरी । लटकन शीश कंठ मणि भ्राजत मन्मथ कोटि वारने गैरी ॥ वासर निशा विचारत हौं सखि यह सुख कबहुं न पायो मैं री । निगमन धन सनकादिक सर्वसु भाग्य बड़े पायो तैं हैरी ॥ जाको रूप जगत्के लोचन कोटि चन्द्र रवि लाजत भैरी । सूरदास बलि जाइ यशोदा गोपिन प्राण पूतना बैरी ॥ ४७ ॥

राग जैतश्री ॥ कन्हैया हालरो हालरोई । हौं वारी तेरे इंदु वदनपर अति छबि अलस निरोई ॥ कमलनयनको कपट किये माई इहि व्रज आवै जोई । पालागों विधि ताहि बकीजों तू तिहि तुरत बिगोई ॥ सुन देवता बड़े जगपावन तू पति या कुल कोई । पय पूजिहौं बेगि यह बालक करिदै मोहि बडोई ॥ द्वितियेके शशिलौं बाढे शिशु देखै जननि जसोई । यह सुख सूरदासके नयनन दिन दिन दूनो होई ॥ ४८ ॥

राग कान्हारो ॥ पालने श्याम हलावति जननी । अति अनुराग परस्पर गावत प्रफुलित मगन मुदित नँद घरनी ॥ उमँगि उमँगि प्रभु भुजा पसारत हरष यशोमति अंकम भरनी । सूरदास प्रभु मुदित यशोदा पूरण भई पुरातन करनी ॥ ४९ ॥

राग बिलावल ॥ गोपाल माई पालने झुलाए । सुरमुनि कोटि देव तंतीसों देखन कौतुक अंमर छाए ॥ जाको अंत न ब्रह्मा जानत शिव सनकादि न पाए । सो अब देखो नंद यशोदा हरषि हरषि हलराये ॥ हुलसत हुलसि करत किलकारी मन अभिलाख बढ़ाए । सूरश्याम भक्तन हित कारन नाना वेष बनाए ॥ ५० ॥

सिद्धर ब्राँभन करम कसाई । कह्यो कंससों वचन सुनाई ॥ प्रभु मैं तुम्हरो आज्ञाकारा नंदसुवनको आवों मारी कंस कह्यो तुमते इह होई । तुरइ जाहु कर बिलँब न कोई ॥ शिरधर नन्दभवन चलि आयो । यशुदा उठिकै माथो नायो ॥ करो रसोई मैं चलि जावों । तुम्हरे हेतु यमनजल ल्यावों ॥ इह कहि यशुदा यमुना गई । सिद्धर कही भली इह भई ॥ उन अपने मन मारन ठानो । हरिजी ताको तबही जानो ॥ ब्राह्मण मारे नहीं भलाई । अंग याको मैं देउँ नशाई । जबहीं ब्राह्मण हरिढिग आयो । हाथ पकर हरि ताहि गिरायो ॥ गोड चाप लै जीभ मरोरी । दधि ढरकायो भाजन फोरी ॥ राख्यो कछु तेहि मुख लपटाई ॥ आपु रहे पलनापर आई ॥ रोवन लागे कृष्ण बिनानी । यशुमति आइ गई लै पानी ॥ रोवत देखि कह्यो अकुलाई । कहा कर्यो तैं विप्र अन्याई ॥ ब्राह्मणके मुख बात न आवै । जीभ होइ तौ कहि समुझावै ॥ ब्राह्मणको घर बाहर कीन्हों । गोद उठाइ कृष्णको लीन्हों ॥ पुरवासी सब देखन आए । सूरदास हरिके गुण गाए ॥ ५१ ॥

सुन्यो कंस पूतना मारी । शोच भयो ताके जिय भारी ॥ कागासुरको निकट बुलायो । तासों कहि सब वचन सुनायो ॥ मम आयसु तुम माथे धरौ । छल बल करि मम कारज करौ ॥ इह सुनिकै तिन्ह माथो नायो । सूर तुरत ब्रजको उठि धायो ॥ ५२ ॥

अथ कागासुरको आयबो ॥ राग सारंग ॥ कागरूप एक दनुज धर्यो । नृप आयसु लैकर माथेपर हर्षवंत उर गर्व भर्यो ॥ किंतिक बात प्रभु तुम आयसु लै यह जानो मो जात मर्यो । इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नंदघर छाज रह्यो ॥ पलना पर पौढे हरि देखे तुरत आइ नैननिसों अर्यो । कंठ चापि बहु बार फिरायो गहि पटक्यो नृपपास पर्यो ॥ तुरत कंस तेहि पूँछन लाग्यो क्यों आयो नहिं काज सर्यो । बीत्यो जाम ज्वाब जब आयो सुनहु कंस तेरो आयु सर्यो ॥ धरि अवतार महाबल कोऊ एकहि कर मेरो गर्व हर्यो । सूरदास प्रभु कंस निकन्दन भक्त हेतु अवतार धर्यो ॥ ५३ ॥

राग बिलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डेरान्यौ । सभामाँज असुरनिके आगे बार बार शिर धुनि पछितान्यौ । ब्रज भीतर उपज्यो मेरो रिपु मैं जानी यह बात । दिनही दिन बहु बढ़त जातु है मोको करिहै घात ॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिन कहि मांझ सँहारी । बीच मरोरी कागसुर दीनो मेरे ढिग फटकारी ॥ अबहींते यह हाल करतु है दिन दिन होत प्रकाश । सेनापति सुनाइ बात यह नृप मन भयो उदास ॥ ऐसो कौन मारिहै ताको मोहिं कहै सो आय । वाको मारि अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सो जाइ ॥ ५४ ॥

अथ शकटासुरको कंस आज्ञा मांगन । गौड मलार ॥ नृपति बात यह सबनि सुनायो । मुहां चही सेनापति कीनो शकटासुर मन गर्व बढायो ॥ दोउ कर जोरि भयो तब ठाढो प्रभु आयसु मैं पाऊं । ह्यांते जाइ तुरतही मारों कहौ तो जीवत ल्याऊँ ॥ यह सुनि नृपति हर्ष मन कीनो तुरतहि बीरा दीनों । बारम्बार सूर कहि ताको आपु प्रशंसा कीनो ॥५५॥

गौड मलार ॥ पान लै चल्यो नृप आन कीन्हों । गयो शिर नाइकै गर्वही बढ़ाइकै शकटको रूप धरि असुर लीन्हों ॥ सुनत घहरानि ब्रजलोग चकृत भए कहा आघात ध्वनि करतु आवै । देखि आकाश चहुँ पास दशहूँ दिशा डरे नर नारि तनु सुधि भुलावै ॥ आपु गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने कर गहे चरण अंगुठ चचोरहि । किलकि किलकि हँसत बाल शोभा लसत जानि तिहि कसत रिपु आयो भोरहि ॥ नेक फटक्यो लात शब्द भयो आघात गिरचो भहरात शकटा संहारचो । सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारचो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उबारचो ॥ ५६ ॥

राग बिभास ॥ देखो सखी अद्भुत रूप अनूथ । एक अंबुज मध्य देखियत बीस उदधि सुत यूथ ॥ एक शुक है जलचर उभय अर्क अनूप। पंच विराजे एकहि ढिग बहु सखि कौन स्वरूप ॥ शिशुता मैं शोभा भई करो अर्थ विचारी । सूर श्रीगोपालकी छबि राखिय उरधारी ॥ ५७ ॥

राग विलावल ॥ कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हरषि २ अपने रंग खेलत ॥ शिव शोचत विधि बुद्धि बिचारत वट बाढचो सागर जल झेलत । बिडरि चले घन प्रलय जानिकै दिगपति दिगदंतौ न सकेलत ॥ मुनिमन भीत भए भव कंपित शेष सकुचि सहसौ फन फेलत । उन ब्रजवासिन बात न जानी समुझे सूर शकट पग पेलत ॥ ५८ ॥

चरण गहे अँगुठा मुख मेलत । नंद घरनि गावति हलरावति पलना पर किलकत हरि खेलत ॥ जो चरणारविंद श्रीभूषण उरते नेकु न टारति । देखो धौंकार सु चरणनमें मुख मेलत करि आरति ॥ जा चरणारविंदके रसको सुर नर करत विवाद । यह रस है मोको दुर्लभता ताते लेत सवाद ॥ उछलत सिंधु धराधर कांप्यो कमठ पीठ अकुलाइ । शेष सहस फन डोलन लाग्यो हरि पीवत जब पाइ ॥ बढचो वृक्षवर सुर अकुलाने गगन भयो उत्पात । महा प्रलयके मेघ उठे करि जहाँ तहाँ आघात ॥ करुणा करी छांडि पग दीनो जानि सुरन मन संस ॥ सूरदास प्रभु असुर निकंदन दुष्टनके उर गंस ॥ ५९ ॥

राग विहाग ॥ यशोदा मदनगुपाल सुवावै । देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंप्यो ईश विरंचि भ्रमावै ॥ असित अरुण सित आलस लोचन उभै पलक पर आवै । जनु रविगति संकुचित कमलयुग निशि अलि उडन न पावै ॥ चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रगट करि छबि मनमें नाहिं आवै । जानौ निशिपति धरिकरि अमृत श्रुतिभंडार भरावै ॥ श्वास उदर उरसति यों मानो दुग्धसिंधु छबि पावै । नाभिसरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै॥ कर शिर तर करि श्याम मनोहर अलक अधिक सोभावै । सूरदास मानौ पन्नगपति प्रभु-ऊपर फन छावै ॥ ६० ॥

राग बिलावल ॥ अजिर प्रभातिहि श्यामको पलका पौढाए । आपु चली गृहकाजको तहाँ नंद बुलाए ॥ निरखि हरखि सुख चूनिकै मंदिर पग धारी । आतुर नंद आए तहां जहँ ब्रह्म मुरारी ॥ हँसे तात मुख हेरिकै कर पग चतुराई । किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनि राई ॥ सो छबि नंद निहारिकै तहाँ महरि बुलाई । निरखि चरित गोपालके सूरज बलि जाई ॥ ६१ ॥

रामकली ॥ हरखे नंद टेरत महरि । आइ सुत मुख देखि आतुर डारिदै दधि टहरि ॥ मथति दधि यशुमति मथानी ध्वनि रही घर गहरि । श्रवण सुनति न महरि बातैं जहाँ तहाँ गई चहरि ॥ यह सुनत तब मातु धाई गिरे जाने झहरि । हँसत नंत मुख देखि धीरज तब कह्यो ज्यों ठहरि ॥ श्याम उलटे परे देखे बढी शोभा लहरि । सूर प्रभु कर सेज टेकत कबहुँ टेकत ढहरि ॥ ६२ ॥

महरि मुदित उलटाइकै मुख चुंबन लागी। चिरु जीवो मेरो लाडिलो मैं भई सभागी ॥ एक पाख त्रय मासके मेरो भयो कन्हाई । पट करानि उलटे परे मैं करौं बधाई ॥ नंदघरनि आनँद भरी बोली ब्रजनारी । यह सुख सुनि आई सबै सूरज बलिहारी ॥६३॥

यह सुख सुनि आई ब्रजनारी । देखनकौं धाई बनवारी ॥ कोइ युवती आई कोइ आवति । कोउ उठि चलति सुनत सुख पावति ॥ घर घर होत आनंद बधाई । सूरदास प्रभुकी बलि जाई ॥ ६४ ॥

रामकली ॥ जननी देखि छबि बलिजाति ॥ जैसे निधनी धनहि पाइ हरषदिन अरुराति ॥ बाललीला निरखि हरषि धनि धनि धनि ब्रजनारि । निरखि जननीवदन किलकत त्रिदशपति दै तारि ॥ धन्य नंद धनि धन्य गोपीधन्य ब्रजके वास । धन्य धरनीकरन पावन जन्म सूरजदास ॥ ६५ ॥

राग बिलावल ॥ यशुमति भागि सुहागिनि हरिको सुत जानै । मुखमुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै ॥ मो निधनीके धन रहै किलकत मनमोहन । बलिहारी छबिपर भई ऐसी विधि जीवन ॥ लहकत बेसरि जननिकी इकटक चख लावै ॥ पकरत बदन उठाइकै मनही मन भावै ॥ महरि मुदित हित उर भरे यह कहि मैं वारी । नंदसुवनके चरितपर सूरज बलिहारी ॥ ६६ ॥

राग आसावरी ॥ गोद लिये हरिको नन्दरानी अस्तन पान करावति है । बार बार रोहिणिको कहि कहि पलिका अजिर मँगावति है ॥ प्रातसमय रविकिरण कौवरी सो कहि सुतहि बतावतिहै । आउ धाम मेरे श्यामलाल आँगन बालकेलिको गावति है ॥ रुचिर

सेज लैगई मोहनको भुजा उछंगि सुवावति है ॥ सूरदास प्रभु सोई कन्हैया लहरावति मल्हरावति है ॥ ६७ ॥

राग बिलावल ॥ नंदघरनि आनन्दभरी सुत श्याम खिलावै । कबहुँ घुटुरवनि चलहिंगे कहि बिधिहि मनावै ॥ कबहूँ दंतुली द्वै दूधकी देखौं इन नैननि । कबहूँ कमलमुख बोलिहैं सुनि हौं इन बैननि ॥ चूमति कर पग अधर पान लटकति लट चूमति । कहा वरणि सूरज कहै कहां पावै सो मति ॥ ६८ ॥

राग बिलावल ॥ मेरो नान्हरिया गोपाल वेगि बड़ो किनि होहि इहि मुख मधुरे बयन हँसि कबहूँ जननि कहोगे मोहि ॥ यह लालसा अधिक दिनदिन प्रति कबहूँ ईशकरै । मो देखत कबहूँ हँसि माधव पगु द्वै धरनि धरै ॥ हलधर सहित फिरै जब आँगन चरण शब्द सुख पाऊं । छिन छिन क्षुधित जाय पय कारन हौं हठि निकट बुलाऊं ॥ आगम निगम नेति करि गायो शिव उनमान न पायो । सूरदास बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायो ॥ ६९ ॥

अथ सप्तम अध्याय तृणावर्त बध गोंडा तोरन ॥ राग बिलावल ॥ यशुमति मन अभिलाष करै । कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै ॥ कब द्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख बैन झरै । कब नंदहि कहि बाबा बोले कब जननी कहि मोहि रहै ॥ कब मेरो अचरागहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरे । कब धौं तनक कछु खैहै अपने करसों मुखहि भरै ॥ कब हँसि बात कहैंगे मोहिसों छबि पेखत दुख दूरि करै । श्याम अकेले आँगन छाड़े आपु गई कछु काज घरै ॥ एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत गगन सहित घहरै । सूरदास ब्रज लोग सुनत ध्वनि जो जहाँ तहाँ सब अतिहि डरै ॥७०॥

राग सूही ॥ अति विपरीत तृणावर्त आयो । बातचक्र मिस ब्रजके ऊपरि नंद पँवरिके भीतर धायो ॥ पौढे श्याम अकेले आँगन लेत उठ्यौ आकाश चढायो । अंधधुंध भयो सब गोकुल जो जहाँ रह्यो सो तहाँ छपायो ॥ यशुमति आइ धाइ जो देखै श्याम श्याम करि शोर उठायो । धावहु नंद गोहारी लागौ किनि तेरो सुत अँधवाइ उडायो ॥ इहि अंतर आकाशते आवत पर्वतसम कहि सबनि बतायो । मारचो असुर शिलासों पटक्यो आप चढे ता ऊपर भायो ॥ दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठ लगायो । सूरदास यह कहत यशोदा ना जानौं विधिनाहिं कह भायो ॥ ७१ ॥

राग बिलावल शोभित सुभग नंदजूकी रानी । अति आनँद आंगनमें ठाढी गोद लिये सुत शारँगपानी ॥ तृणावर्तकी सुरति आनिजिय पठयो असुर कंस अभिमानी । गरू भये महिमें बैठाय सहि न परै जननी अकुलानी ॥ आपुन गई सदनही दौरी काहू एक काज लपटानी ।। बौंड रु महाभयावन आयो गोकुल सबै प्रलयकै जानी ॥ महादुष्ट लै उड्यो गोपालहिं चल्यो आकाश कृष्ण यह ठानी । चापि ग्रीव हरि प्राण हरे दृग करत प्रवाह चल्यो अधिकानी ॥ पाहन शिला निरखि हरि डारचो ऊपर खेलत श्याम बिनानी । देति अभूषण वारि वारि सब सूरज पियत वारि सब पानी ॥ ७२ ॥

राग धनाश्री ॥ उबरयो श्याम महरी बड़भागी । बहुत दूरिते आइ परचो धर देखहुँ मैं कहुँचोट न लागी ॥ रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हैया यह कहि कंठ लगाई । तुमहीं हौ ब्रजके जीवन धन देखत नैन सिराई ॥ भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा छांड़ि अकेलो जाति । गृहको काज इनहुते प्यारो नेकहु नहीं डेराति ॥ भली भई अबकै हरि बाच्यो अबहूँ सुरति सम्हारि । सूरदास खिझि कहति ग्वालिनी मनमें महरि बिचारि ॥ ७३ ॥

राग बिलावल ॥ अब हौं श्याम बलि जाउँ हरी । निशि दिन रहति बिलोकति हरिमुख छांडि सकति नहिं एक घरी ॥ हौं अपने गोपाल लडैहौं भौन चाउ सब रहौ धरी । पाए कहां खेलावनको सुख मैं दुखिया दुख कोटि भरी ॥ जा सुखको शिव गौरी मनाई व्रियव्रत नेम करी । सूर श्याम पाए पैडेमें निधि रांक परी ॥ ७४ ॥

राग धनाश्री ॥ हरि किलकत यशुदाकी कनियां । निरखि निरखि मुख हँसति श्यामसों मो निधनीके धनियां ॥ अति कोमल तनु श्यामको बार बार पछितात । कैसे बच्यो जाउँ बलि तेरी तृणावर्तके घात ॥ ना जानौं धौं कौन पुण्यते को करि लेत सहाइ । वैसो काम पूतना कीनो इहि ऐसो करि आइ ॥ माता दुखित जानि हरि बिहँसे नान्हीं दँतुली दिखाइ । सूरदास प्रभु माता चितते दुख डारचो बिसराइ ॥ ७५ ॥

सुत मुख देखि यशोदा फूली । हर्षित देखि दूधकी दँतिया प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ॥ बाहिरते तब नंद बुलाये देखो धौं सुन्दर सुखदाइ । तनक तनकसी दूधकी दँतियां देखो नैन सुफल करौ आइ ॥ आनंद सहित महर तब आए मुख चितवत दोउ नैन अघाइ । सूरश्याम किलकत द्विज देख्यो मानो कमल पर बीज जमाइ ॥ ७६ ॥

रागनी श्रीहठी ॥ जन बलि जाय हालरु हालरो गोपाल । दधिहि बिलोइ सद माखन राख्यो मिश्री सानि चढावै नँदलाल ॥ कंचनके खम्भ मयारि मरुवाडांडी खचि हीरा बिच लाल प्रवाल । रेशम बुनाइ नव रतन लाइ पालनो लटकन बहुत पिरोजा लाल ॥ मोतिन झालरि नानाभांति खिलौना रचे विश्वकर्मा सुतिहार । देखि देखि किलकत दँतिया दो राजत क्रीडत विविध विहार ॥ कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजैं मसबिन्दुका मृगमद भाल ॥ देखत देत अशीष ब्रजजन नर नारी चिर जीवो यशोदा तेरो बाल । सुर नर मुनि कौतूहल फूले झूलत देखत नन्दकुमार ॥ हरषत सुमन अपार वर्षत नभ ध्वनि छायो जै जै कार ॥ ७७ ॥

अथ अष्टम अध्याय नामकर्म । राग बिलावल ॥ महर भवन ऋषिराज गए । चरण धोइ चरणोदक लीनो अरघ आसन करि हेतु दए ॥ धन्य आजु बड़ भाग्य हमारे ऋषि आए अति कृपा करी । हम कहँ धनि धनि नन्द यशोदा धनि यह ब्रज जहां प्रगट हरी ॥ आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते प्रभु नाहिं और वियो । देवकी उदर अवतार लेन कह्यो दूध पिवत तब मांगि लियो ॥ बालक करि इनको जनि जानौं कंसको बध ए करिहैं ॥ सूर देह धरि सुरन उधारन भूमि भार ए हरिहैं ॥ ७८ ॥

धन्य यशोदा भाग्य तुम्हारो जिन ऐसो सुत जायो । जाके दरस परस सुख तन मन कुलको तिमिर नशायो ॥ विप्र सुजन चारण बन्दीजन सकल नन्द गृह आए । नौतम

सुभग हरद दूर्बा दधि हर्षित शीश बँधाए ॥ गर्ग निरूप कह सब लक्षण अविगति हैं अविनाशी । सूरदास यश सुनै हरिके आनन्दे ब्रजवासी ॥ ७९ ॥

अन्न प्राशनलीला ॥ कान्ह कुँवरकी करहु अन्न प्राशनी कछु दिन घटि षटमास गए । नन्द महरि यह सुनि जिय हरि अन्न प्राशन योग भए ॥ विप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यो राशि शोधि इक दिनहिं धरो । आछो दिन सुनि महर यशोदा सखिन बोलि शुभ गान करौ ॥ युवति महरिको गारी गावति और महरिको नाम लियो । ब्रज घरघर आनन्द बढ्यो अति प्रेम पुलक न समात हियो ॥ जाको नेति नेति श्रुति गावत ध्यावत शिव मुनि ध्यान धरे । सूरदास तिनको ब्रज युवती झक झोरति उर अंक भरे ॥ ८० ॥

राग सारंग ॥ आजु कान्ह करि हैं अन्न प्राशन । मणि कंचनके थार भराए भांति भांतिके बासन ॥ नन्द घरनि सब बधू बुलाई जे सब अपनी जाति । कोउ जेवनार करति कोउ घृतपक षटरसके बहुभांति ॥ बहुत प्रकार किये सब व्यञ्जन अनेक बरन मिष्टान । अति उज्ज्वल कोमल सुठि सुन्दर महरि देखि मनमान ॥ यशुमति नन्दहि बोलि कह्यो तब महर बुलाइ बहु जाति । आप गए नँद सकुउ महर लै आये सब ज्ञाति ॥ आदर करि बैठाइ सबनिको भीतर गये नँदराइ । यशुमति उबटि न्हवाइ कान्हको पट भूषण पहिराइ ॥ तन झँगुली शिर लाल चौतनी कर चूरा दुहुँ पाइ । बार बार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत बलाइ ॥ घरी जानि सुत मुख जुठरावन नन्द बैठे लै गोद । महर बोलि बैठारि मण्डली आनंद करत विनोद ॥ कंचन थार लै खीर धरी भरि तापर घृत मधु नाइ । नन्द लै लै हरि मुख जुठरावत नारि उठीं सब गाइ ॥ षटरसके परकार जहां लगि लै लै अधर छुडावत । विश्वम्भर जगदीश जगत गुरु परसत मुख करुवावत ॥ तनक तनक जल अधर पोंछिकै यशुमति पै पहुँचाए । हर्षवन्त युवती सब लै लै मुख चूमति उर लाए ॥ महर गोप सबही मिलि बैठे पनवारे परुसाए । भोजन करत अधिक रुचि उपजी जो जेहिके मन भाए ॥ इहि विधि सुख विलसत ब्रजवासी धनि गोकुल नरनारी । नन्द सुवन की या छबि ऊपर सूरदास बलिहारी ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ हरिको मुख माई मोहिं अनुदिन अति भावै । चितवत चित नैननकी मति सब गति बिसरावै ॥ ललना लै लै उछंग अधिक लोभ सो लागे । निरखति निन्दति निमेष करत ओट आगे ॥ शोभित शुभ कपोल अधर अलप अलप दसना । किलकि बैन कहत मोहन मृदु रसना ॥ नासिका लोचन विशाल संतत सुखकारी । सूरदास धन्य भाग्य देखत ब्रजनारी ॥ ८२ ॥

लालन तेरे मुख पर हों वारी । बाल गोपाल लगौ इन नैननि रोग बलाइ तुम्हारी ॥ लट लटकनि मोहन मसि बिंदुका तिलक भाल सुखकारी । मनहुँ कमल अलिशावक पंगति उठति मधुप छबि भारी । लोचन ललित कपोलनि काजर छबि उपजत अधिकारी । मुखमें मुख औरै रुचि बाढति हँसत दै दै किलकारी ॥ अलप दसन कलबल करि

बोलनि विधि नहिं परत विचारी । निकसति ज्योति अधरनिके बिच ह्वै मानो विधुमें बीजु उज्यारी ॥ सुन्दरताको पार न पावति रूप देखि महतारी । सूर सिंधुकी बूँद भई मिलि मति गति दृष्टि हमारी ॥ ८३ ॥

राग धनाश्री ॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी ॥ बलि कैसे मेरे नैननि लागै लेउँ बलाइ तिहारी ॥ सुन्दरताको पार आवति रूप देखि महतारी । उरअन्तर आनन्द बढावत हँसत देत किलकारी ॥ अल्पदशन तोतरावत बोलत छबि चितहू न जाति विचारी । सूर सिंधुकी बूँद भई मिलि मनसा मगन हमारी ॥ ८४ ॥

राग जैतश्री ॥ लालन हौं वारी तेरे या मुख ऊपर । माई मोरि हि न लागै ताते मसिबिन्दा दयो भूपर ॥ सर्वसु मैं पहले ही दीनी नान्हीं दँतुली दूपर । अब कह करौं निछावरि सूर यशोमति अपने लालन ऊपर ॥ ८५ ॥

लाला हौं वारी तेरे मुखपर । कुटिल अलक मोहन मन विहँसत भृकुटी विकट नैननि पर ॥ दमकति द्वै द्वै दँतुलिया बिहँसति मानो सीपिज घरु कियो वारिजपर । लघु लघु शिर लट घूँघरवारी लटकि लटकि रह्यो लिलारपर ॥ यह उपमा कहि कापै आवै कछुक कहौ सकुचति हौं हियपर । नृपन चंद्ररेखमधि राजति सुरगुरु शुक्र उदोत परस्पर ॥ लोचन लोल कपोल ललित अति नासिकको मुक्ता रदछंदपर । सूर कहा न्यौछावरि करिये अपने लाल ललित लर ऊपर ॥ ८६ ॥

अथ बरगांठिलीला ॥ राग बिलावल ॥ आजु भोर तमचुरकी रोल । गोकुलमें आनन्द होत है मंगल ध्वनि महराने टोल ॥ फूले फिरत नंद अति सुख भयो हर्षि मंगावत फूल तमोल । फूली फिरत यशोदा घर घर उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल ॥ तनक वदन दोउ तनक तनक कर तनक चरन पोछत पटझोल । कान्ह गले सोहै कंठमाला अंग अभूषण अंगुरिन गोल ॥ शिर चौतनी दिठौंना दीने आंखि आंजि पहिराइ निचोल । श्याम करत मातासों झगरो अटपटात कलबल कर बोल ॥ दोउ कपोल गहिकै मुख चुंबति वर्ष दिवस कहि करत कलोल । सूर श्याम ब्रजजन मन मोहन वरष गांठिको डोरा खोल ॥ ८७ ॥

राग धनाश्री ॥ अलि मेरे लालनकी आजु वरष गांठि सब सखनि बोलावो । शुभ करि मंगल गान करावो । चन्दन अंगन सबन लिपावो ॥ मोतिअनको तुम चौक पुरावो । उमँग अंगनि आनंद तूर बजावो । मेरे कहे तुम विप्र बुलावो । शुभ घरी एक आनि धरावो ॥ वागे बीरे बनि ठनि बनावो । आभूषण पहिरावो ॥ अक्षत दूब बधावो । लालनको वर्ष गांठि जुरावो ईहै मोहि नैनन लाहो देखावो । पंचरंग सारी मँगावो ॥ बंधुजन सब पहिरावो । नचैं सब उमँगि अंग बढावो ॥ नंद रानी सब ग्वाल बुलावो । इहै रीति कहि कहि सुनावो ॥ वेगि करौ किनि बिलँब लगावो । यशुमति तब नंद बोलावो ॥ लाल लिए कनियां देखरावो । लग्नकी घरी तुरत अब आवो ॥ मैंतो अन्हवाय बनावो । अति सुख भयो बर गांठि जुरावो ॥ सूर श्याम मुख छविहि निहारति । तन मन धन युवती जन वारति ॥ ८८ ॥

राग आसावरी ॥ उमँगनि उमंगी है व्रजनारी कान्हकी बरषगांठि बरष वरषनि। गावहिं मंगलगान नीके सुर नीकी तान आनंद हरषनि ॥ कंचनमणि जटित थार दधि रोचन फूल डार देखन चलीं नंदकुमार मिलिबेकी तर्सनि ॥ सूरदास प्रभुकी बरष गांठि जोरति यह छबिपर तृन तोरति अरस परसनि ॥ १ ॥

श्रीकृष्णजीको कनछेदन लीला । राग धनाश्री ॥ कान्ह कुँवरको कनछेदनो है हाथ सुहारी भेली गुरुकी । बिधि बिहँसत हरि हँसत होरि हरि यशुमतिके धुकधुकी उरकी ॥ रोचन भरि लै देत सींकसों श्रवण निकट अतिही चतुरकी ॥ कंचनके द्वै दुर मँगाइ लिये कहै कहा छेदन आतुरकी । लोचन भरि भरि दोउ माताके कनछेदन देखत जिय मुरकी ॥ रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौवाको झरकी । हँसत नंदयुवती सब बिहँसी झमकि चली सब भीतर दुरकी ॥ सूरदास नंद करत बधाई अति आनंद बाला ब्रज पुरकी ॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको । सुर वनिता सब कहत परस्पर ब्रजवासी दासी समसरि को ॥ गोपी मगन भई सब गावति हलरावत सुत महर महरिको । जो सुख मुनि जन ध्यान न पावत सो सुख नंद करत सब घरको ॥ मणि मुक्तागण करत न्यछावरि तुरत देत बिलम नहिं घरिको । सूर नंद ब्रज जन पहिरावत उमँगि चल्यो सुखसिंधु लहरको ॥ २ ॥

अथ घुटुरवनि कीलबो ॥ खेलत नंद आंगन गोविंद । निरखि निरखि यशुमति सुख पावति वदन मनोहर चंद ॥ कटि किंकिनी कंठ मणिकी द्युति लट मुकुता भरि भाल । परम सुदेश कंठ केहरि नख बिच बिच बज्र प्रवाल ॥ कर पहुँचियाँ पांयन पैंजनी सुरतन रंजित रजपीत । घुटुरुनि चलत अजिरमें विहरत मुखमंडित नवनीत ॥ सूर विचित्र कान्हकी बानक बाणी कहत नहीं बनि आवै । बाल दशा अवलोकि सकल मुनि योग विरति बिसरावै ॥ ३ ॥

राग आसावरी ॥ घुटुरवन चलत श्याम मणि आंगन मात पिता दोउ देखत री ॥ कबहुँक किलकिलात मुख हेरत कबहुं जननि मुखपेखत री ॥ लटकत ललित भालपर काजरबिंदु भ्रुव ऊपर री । यह शोभा नैननि भरि देखैं नहिं उपमा तिहुँ भूपर री ॥ कबहुँक दौरि घुटुरुवन लटकत गिरत परत फिरि धावति री । इतने नंद बुलाइ लेत हैं उतते जननि बुलावत री ॥ दंपति होड करत आपसमें श्याम खिलोना कीनो री । सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीनो री ॥ ८९ ॥

राग सारंग ॥ निरखि छवि फूलत है ब्रजराज । उत यशुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज ॥ किंकिनि कटि मध्य प्रसारित भुज उभय मिलत फुनि लाज । झुमत लरत अलि सैन सरोज पर मन मकरंदके काज ॥ अर्धगिरामृत स्रवत सुधा जनु पिवत श्रुति निपट आज । सूरदास प्रभु सुत रति करि २ लै लै ऊपर भाज ॥ ९० ॥

राग बिलावल ॥ शोभित कर नवनीत लिये ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनुमंडित मुख दधि लेप कियो ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किये । लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिये ॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये । धन्य सूर एको पल या सुखका शत कल्प जिये ॥ ९१ ॥

राग ललित ॥ माई बिहरत गोपाललाल मणिमय रच्यो अंगना परिरांगना घुटुरवनि डोलै । निरखि निरखि अपनो प्रतिबिंब हँसत किलकत पाछे फिर फिर चितै मैयामैया बोलै ॥ ज्यों ज्यों अलिगण सहित विमलजल धाइ रहे कुटिल अलक बदनकी छवि अवनी प्रति लोलै । सूरदास छवि निहारि थकित रहे सब घोषनारि तनमनधन देति वारि वारि ओलै ॥ ९२ ॥

राग बिलावल ॥ बाल विनोद खरो जिय भावत । मुख प्रतिबिंब पकरिवे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत ॥ छिनक माँझ त्रिभुवनकी लीला शिशुतामाहँ दुरावत । शब्दएक बोल्यो चाहतहैं प्रगट वचन नहिं आवत ॥ कमलनैन माखन माँगत हैं ग्वालिन सैन बतावत । सूर श्याम सु सनेह मनोहर यशुमति प्रीति बढावत ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ बलिजाऊं श्याम मनोहर नैन । अब चितवत मोहन करि अँखियन मधुप देत मनौं सैन ॥ कुंचित अलक तिलक गोरोचन शशिपूरहरषे ऐन ॥ कबहुँक खेलत जात घुटुरुवनि उपजावत सुख चैन ॥ कबहुँक रोवत हँसतहैं बलिगई बोलत मधुरे बैन ॥ कबहुँक ठाढे होत टेकि कर चलि न सकत इत गैन ॥ देखत वदन करौं न्योछावरि तात मात सुखदैन ॥ सूर बाललीलाके ऊपर वारौं कोटिक मैन ॥ ९४ ॥

कान्हरो ॥ आँगन चलत घुटुरुवन धाए । नीलजलद तनुश्याममुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए ॥ बंधुकसुमन अरुण पदपंकज अंकुश राम चिह्न बसिआए ॥ नूपुर कलरव मनों सुतहँसनि रचे नीठ दै बाँह बसाए ॥ कटि किंकिनि वरहार ग्रीवदर रुचिर बाहुभूषण पहिराए । उर श्रीवक्ष मनोहर केहरि नखनमें मध्य मणिगण बहु लाए ॥ सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोलमोहिं सुठि भाए ॥ भ्रुव सुंदर करुणारसपूरन लोचन मनहु युगल जलजाए ॥ भाल विशाल ललित लटकनमनि बालदशाके चिकुर सुहाए ॥ मानो गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गण भाए ॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत उढाए ॥ नील जलद पर उडगन निरखत तजि सुभाउ मनौ तडित छपाए ॥ अंग अंग प्रति मार निकर मिलि छबि समूह लैलै जुनु छाए ॥ सूरदास सौ क्योंकरि वरणैं जो छवि निगम नेति करि गाए ॥ ९५ ॥

धनाश्री ॥ हौं बलि जाऊँ छबीले लालकी ॥ धूसरि धूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन वचन रसालकी ॥ छिटकिरहीं चहुँदिशि जु लटुरियां लटकन लटकत मालकी । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमलदल मालकी ॥ कछुके हाथ कछू मुखमाखन चितवनि नैन विशालकी ॥ सूर सु प्रभुके प्रेम मगन भई ढिग न तजति व्रजबालकी ॥ ९६ ॥

कान्हरो ॥ सादर सहित विलोकि श्याममुख नंदरूप लिये कनियाँ ॥ सुंदरश्याम सरोज नील तनु अंग अंग सकल सुभग सुखदनियाँ ॥ अरुण तरनि नखज्योति जगमगति झुन झुन करत पाइँ पैंजनियाँ । कनकरतन मणि जटित रचित कटि किंकिनि कलित पीनपट तनियाँ ॥ पहुँची करनिपदिक उर हरिनख कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ ॥ रुचिर चिबुक

द्विज अधर नासिका अतिसुंदर राजत सोवनियाँ ॥ कुटिल भृकुटि सुखकी निधि आनन कपोलकी छबि न उपनियाँ ॥ भाल तिलक मसिबिंदु बिराजत शोभित शीशलाल चौतनियाँ ॥ मनमोहनकी तुतरी बोलन मुनिमन हरतसुहँसि मुसकनियाँ ॥ बाल स्वभाउ बिलोकि बिलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियाँ ॥ निरखति ब्रजयुवती सब ठाढी नंदसुवनछबि चन्द्रवदनियाँ ॥ सूरदास प्रभु निरखि गमन भए प्रेमविवश कछु सुधि न अपनियाँ ॥ ९७ ॥

कान्हरो ॥ बोलि लिए यशुमति यदुनंदहि ॥ पीत झँगुलियाकी छबि छाजति विद्युलता सोहति मनौकंदहि ॥ वाजापति अग्रज अंबाते अरजथानसुत मालागंदहि ॥ मनौसुरगृहते सुररिपु कन्या सौते आवति. ठुरिसंदहि ॥ आरि करत कर चपल करतुतो नंदनारि आनन लुवैमंदिहि । मनो भुजंगअरि परमलालची फिर फिर चाटत सुभग सुचंदहि ॥ गुंगी बातनि यों अनुरागति भँवर गुंजरत कमलमौ बंदहि । सूरदास प्रभु सुतप किये बड़े भाग्य यशोदा अरु नंदहि ॥ ९८ ॥

राग धनाश्री ॥ कहां लौं वरनौं सुंदरताई ॥ खेलत कुँवर कनक आँगनमें नैन निरखि छबिछाई ॥ कुलहि लसतशिर श्याम सुभग अति बहुविधि सुरंग बनाइ । मानो नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाइ । अति सुदेश मृदु हरत चिकुर मनमोहन मुख वगराइ । मानो प्रगट कंज पर मंजुल अलि अवली फिरि आइ । नील श्वेत पर पीत लालमणि लटकनि भालरुनाइ ॥ शनि गुरु असुर देवगुरु मिलि मनौ भौम सहित समुदाइ ॥ दूधदंत दुति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाइ ॥ किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनौ घनमें विद्यु छपाइ ॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अल्प जलपाइ ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित सूरदास बलिजाइ ॥ ९९ ॥

नटनारायण ॥ हरिजूकी बाल छबि कहौं वरनि । सकल सुखकी सींव कोटि मनोज शोभा हरनि ॥ भुज भुंजग सरोज नयननि वदन विधु जित लरनि । रहे विवरन सलिल नभ उपमा अपर दुति डरनि ॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषण भरनि । मनहुँ सुभग शृंगार शिशु तरु फरयौ अद्भुत फरनि । चलत पद प्रतिबिंब मणि आँगन घुटुरुवन करनि । जलजसंपुट सुभग छबि भरि लेत उर जनु धरनि ॥ पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकिकै नंदघरनि । सूर प्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लरखरनि ॥ १०० ॥

राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत । मणिमय कनक नंदके आँगनमुख प्रतिबिंब पकरवेहि धावत ॥ कबहुँ निरखि हरि आप छांहको करसों पकरनको चित चाहत । किलकि हँसत राजत द्वै दतियां पुनि पुनि तिहि अवगाहत । कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा एक राजत । कर कर प्रति पदप्रतिमणि वसुधा कमल बैठकी साजत ॥ बालदशासुख निरखि यशोदा पुनि पुनि बुलावत । अचरा तर लै ढांकि सूरके प्रभुको जननी दूध पियावत ॥ १०१ ॥

राग बिलावल ॥ नंद धाम खेलत हरि डोलत। यशुमति करत रसोंई भीतर आपुन किलकत बोलत ॥ टेरि उठी यशुमति मोहनको आवहु घुटुरुवन धाए। बैन सुनत माता पहिचानी चलै घुटुरुवनि पाए ॥ लै उठाय अंचल गहि पोंछे धूर भरी सब देह। सूरज प्रभु यशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ॥ २ ॥

अथ पाँयन चलन समय। सुहो विलावल ॥ धनि यशुमति बड़ भागिनी लिये श्याम खिलावै। तनक तनक भुज पकरिकै ठाढ़ो होन सिखावै ॥ लर खरात गिरि परत हैं चलि घुटुरुवनि धावै। पुनि क्रमक्रम भुज टेकिकै पग द्वैक चलावै ॥ अपने पाँयन कबहिंलौं मो देखत धावै। सूरदास यशुमति यह बिधि सौंज मनावै ॥ ३ ॥

कान्हरो ॥ हरिको विमल यश गावत गोपंगना। मणिमय आँगन नंदरायके बाल गोपाल तहां करैं रंगना ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत-खेलत हैं दोउ छगन मंगना। धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मातु यशोदा लेत उछंगना ॥ वसुधा त्रयपद करत न आलस भयो कठिन परचोदे हरी उलंघना। सूरदास प्रभु ब्रजवधू निरखत रुचिर हार हिए सो तु बंधना ॥ ४ ॥

सुहो बिलावल ॥ चलन चहत पाँइन गोपाल। लै लगाइ अँगुरी नँदरानी मोहन मूरति श्याम तमाल ॥ डगमगात गिरि परत पाँइ पर भुज भ्राजत नँदलाल। जनो श्रीधर श्रीधरत अधोमुख धुकत धरनि मानौ मनि माल ॥ धूरि धौति तनु नैनन अंजन चलत लटपटी चाल। चरणरुणित नूपुरध्वनि मानो सर विहरत है बाल मराल ॥ लट लटकनि शिर चारु चषोडा सुठि शोभा सोहै शिशु भाल। सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजै जगमें बहुकाल ॥ ५ ॥

बिलावल ॥ सिखवत चलन यशोदा मैया। अरबराइ कर पाणि गहावत डगमगाइ धरणी धरै पैया। कबहुँक सुन्दर बदन विलोकति उर आँनद भरि लेत बलैया। कबहुँक बलिको टेरि बुलावति इहि अंगन खेलो दोउ भैया ॥ कबहुंक कुलदेवता मनावत चिरजीवै मेरो बाल कन्हैया। सूरदास प्रभु सब सुखदायक अति प्रताप बालक नंदरैया ॥ ६ ॥

सूहो बिलावल ॥ मणिमय आंगन नंदके खेलत दोउ भैया। गौर श्याम जोरी बनी बलराम कन्हैया ॥ लटकन ललित लटुरियाँ मसि बिंदु गोरोचन। हरि नख उर अति राजहिं संतनि दुख मोचन ॥ संग संग यशुमति रोहिणी हितकारनि मैया। चुटकी देहि नचावहि सुत जानि नन्हैया ॥ नील पीतपट ओढनी देखत जिय भावै। बालविनोद अनंदसों सूरज जन गावै ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ॥ आँगन खेलैं नंदके नंदा। यदुकुल कुमुद सुखद चारु चंदा ॥ संग संग बलमोहन सोहैं। शिशुभूषण सबको मन मोहै ॥ तनुद्युति मोरचंद्र जिमि झलकै। उमंगि उमंगि अँग अँग छबि छलकै कटि किंकिनि पग नूपर बाजै। पंकज पाणि पहुँचिया राजै ॥ कठुला कंठ बघनहा नीके। नयन सरोज मयन सरसीके लटकन ललित ललाट लटूरी। दमकत द्वै द्वै दँतुरियारूरी ॥ मुनिमन हरत मंजु मसि बिंदा। ललित वदन बल बाल गोविंदा ॥ कुलही चित्र विचित्र झगूली। निरखि यशोदा रोहिणि फूली ॥ गहिमणि खम्भ डिंभ डग डोलैं। कलबल वचन तोतरे बोलैं ॥ निरखत छबि झांकत प्रतिबिंबै।

देत परम सुख पितु अरु अंबै ॥ ब्रजजन देखत हिय हुलसाने । सूर श्याम महिमाको जाने ॥ ८ ॥

राग नटनारायण ॥ बलि गई बालरूप मुरारी । पाँयपैजन रुनु झुन नचावति नंदनारि ॥ कबहूं हरिको लाइ अंगुरी चलन सिखावति ग्वारि । कबहूं हिर दै लगाइ हितकरि लेति अंचल डारि ॥ कबहुंक हरिको चितै चूमति कबहूं गावति गारि । कबहूं लै पाछे दुरावति ह्यां नहीं बनवारि ॥ कबहूं अंग भूषण, बनावति राई लोन उतारि । सूर सुर नर सबै मोहे निरखि यह अनुहारि ॥ ९ ॥

बिलावल ॥ भावत हरिको बाल विनोद । श्यामराम मुख निरखि प्रमोदित रोहिणि जननि यशोद ॥ आँगन पकरागतनु शोभित चले नूपुरध्वनि सुनि मनमोद । परमसनेह बढ़ावत मातनि रवकि २ हरि बैठत गोद ॥ अति श्रीचपल सकल सुखदायक निशिदिन रहत केलिरस श्रोद । सूर श्याम अंबुजदल लोचन फिरि चितवत ब्रजवनिता कोद ॥ बालविनोद आँगनकी डोलनि । मणिमय भूमि नंदके आलय बलि बलि जाउँ तोतरी बोलनि ॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख ब्रजमोल बहुलाल अमोलनि । बदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधु पंकति लोलनि ॥ लौनी कर आनन परसत हैं कछुक खाइ कछु लग्यो कपोलनि । कहि जन सूर कहांलौं वरणौं धन्य नन्द जीवन युग तोलनि ॥ ११० ॥

राग बिलावल ॥ गहे अंगुरिया तातकी नंद चलन सिखावत । अरब राइ गिरि परत हैं कर टेकि उठावत ॥ बारबार बकि श्यामसों कछु बोल बकावत । दुहुंघा द्वै दँतुली भई अति मुखछबि पावत ॥ कबहुँ कान्ह कर छांडि नंद पग द्वै करि गावत । कबहुं धरणिपर बैठिकै मनमें कछु गावत ॥ कबहुं उलटि चलैं धामको घुटुरुन करि धावत । सूर श्याम मुख देखि महर मन हर्ष बढ़ावत ॥ ११ ॥

धनाश्री ॥ कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी । जो मनमें अभिलाष करतही सो देखत नंद घरनी ॥ रुनुक झुनुक नूपुर बाजत पग यह अति है मन हरनी । बैठ जात पुनि उठत तुरतही सो छबि जाइ न बरनी ॥ ब्रज युवती सब देखि थकित भई सुंदरताकी सरनी । चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदासको तरनी ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ चलत श्याम घन राजति पैंजन पग पग चारु मनोहर । डगमगात डोलत आंगनमें निरखि विनोद मोहे सुर मुनि नर ॥ अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरत गहे अंगुरी कर । मनो धेनु तृण छांडि बच्छहित प्रेम पुलकि चित स्रवत पयोधर ॥ कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भूपर । सूर श्याम सुंदर बिलोकनि रहत बाल गोपाल नंदघर ॥ १३ ॥

राग गोरी ॥ भीतरते बाहरलौं आवत घर आंगन अति चलत सुगम भयो देहरीमें अटकावत ॥ गिरि परत जात नहिं उलँघी अति श्रम होत न धावत । अहुठ पैर वसुधा सब कीन्ही धाम अवधि बिरमावत ॥ मनहीमन बलवीर कहत हैं ऐसे रंग बनावत । सूरदास प्रभु अगणित महिमा भक्तनके मन भावत ॥ १४ ॥

राग धनाश्री ॥ चलत देखि यशुमति सुख पावै । ठुमुकु ठुमुकु धरनी धर रेंगत जननी देखि दिखावै ॥ देहरी लौं चलि जात बहुरि फिरि फिरि इतहीको आवै । गिरि गिरि परत बनत नहिं नांघत सुर मुनि शोच करावै ॥ कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हस्त विलंब न लावै ॥ ताको लिए नंदकी रानी नानारूप खिलावै ॥ तब यशुमति कर टेंकि श्यामको क्रमक्रमकै उतरावै । सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि मन बुद्धि भुलावै ॥ १५ ॥

राग भैरव ॥ सो बल कहाँ गयो भगवान । जिहि बल मीनरूप जल थाह्यो लियो निगम हति असुर पुरान ॥ जेहि बल कमठपीठ पर गिरिधर सजलसिंधु नथि कियो विमान । जिहिबल रूप वराह दशनपर राखी पुहुमी पुहुपसमान ॥ जेहि बल हिरणकशिपु तनु फारचो भए भक्तको कृपानिधान । जेहि बल बलि बंधन करि पठयो त्रैपद वसुधा करी प्रमान ॥ जेहि बल विप्र तिलकदै थापे रक्षा आपु करी विदमान । जेहि बल रावणके शिर काटे कियो विभीषण नृपति समान ॥ जेहि बल जाम्बवंत मद मेट्यो जेहि बल ध्रुवबिनती सुनि कान । सूरदास अब धाम देहरी चढि न सकत हरि खरेई अयान॥१६॥

आसावरी ॥ देखो अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरचो हैहो ॥ तीनलोक जाके उदर भवन सा सूपके कोन परचो है हो ॥ जाके नाल रुद्रब्रह्मादिक सकल योगव्रत साधैं हो । तिनको नालछिनी ब्रजयुवती बाँटि तगासों बाँधैं हो॥जाके मुख सनकादिक तप कियो सकल चतुराई ठानीहो । सो मुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटानी हो ॥ जिन कानन गजसंकट सुनिकै गरुडासन बिसरावै हो । तिन कानन ह्वै निकट यशोदा हलरावै (दुलरावै) गुन गावै हो ॥ विश्वभरण पोषण सब समरथ माखनकाज अरे हैं हो । रूप विराट रोम प्रति कोटि सुपलना माँझ परेहैं हो ॥ जिन्हहि भुजा प्रहलाद उबारचो हिरणकशिपु तनु फारे हो । भुज पकरि कहतब्रज युवती ठाठे होहु ललारे हो ॥ जाको ध्यान धरें सुर मुनिजन शंभु समाधि न टारी हो । सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारीहो ॥ १७ ॥

आसावरी ॥ आनंदप्रेम उमँगी यशोदा लाल री खिलावै ॥ शिवसनकादिक शुकादि ब्रह्मादिक खोजत अंत न पावै ॥ गोदलिए हँसिकै हलरावत तोतरे बोल बोलावै ॥ दैकर ताल बजावति गावति रागअनूप मल्हावै । कर हुँक करपल्लव आनि गहावति आँगन माँझरिझावै । मोहिलियो सुरव्योम विमानन रवि नहिं रथहि चलावै ॥ कबहुँक हिलकै किलकै जननी मनसुखसिंधु बढावै । मोहिरही ब्रजकी युवती सब सूरदास यश गावै॥१८॥

राग कान्हरा ॥ हरिहित मेरो मावैया । देहरी चढत परत हरि गिरिगिरि करपल्लव जो गहतहैरी मैया ॥ भक्ति हेतु यशुदाके आये चरण धरणिपर धारैया । जिनहि चरण छलियो बलिराजा नखप्रदेस गंगा जो बहैया ॥ जिहि स्वरूपमोहे ब्रह्मादिक कोटि भानु शशि उगैया । सूरदास प्रभु इन चरणनकी मैं बलि मैं बलिजैया ॥ १९ ॥

राग सूहो ॥ आँगनश्याम नचावहि यशोमति नंदरानी । तारी दैदै गावही मधुर मृदु-वानी ॥ पाँयन नूपुर बाजई कटि किंकिनी कूजै । नन्ही नन्ही एडिअन अरुणता फल-

बिंबनपूजै ॥ यशुमतिगान सुनै श्रवण तब आपुन गावै । तारी बजावत देखहि पुनितारी बजावै॥ केहरिनख उरपर सुठि शोभाकारी । मानौ श्याम घन मध्यमें नौ शशि उजियारी । गभुआरे शिर केशहैं ते बधूसँवारे । लटकन लटकै भालपर विधू मधि गण तारे ॥ कठुला कंठ चिबुक तरे मुख हँसनि विराजै । खंजन मीन शुक आनिकै मानौ परे दुरावे ॥ यशु मति सुतहि नचावई छबि देखत जियते । सूरदास प्रभुश्यामके सुख टरत न हियते ॥२०॥

राग बिलावल ॥ त्यों त्यों नाचोरी मनमोहन धाम मधुर सुर होई । सिंयै किंकिनि हरि पगनेपुर रसहि मिले सुर दोई॥कंचनको कठुला मनमोहत तिन बघनहा बिचपोई । निरखि निरखि सुख नंद सुवनको सुर मन आनँद होई ॥ देख न बनै कहत नहिं आवै उपमाको नाहिं कोई । सूर भवनको तिमिर नसायो निरखत जननि यशोई ॥ २१ ॥

राग आसावरी ॥ जबते मैं खेलत देखो आँगन री यशुदाको पूत री । तबते ग्रहसों नाहिननातौ टूट्यो जैसो काचोसूतरी ॥ अतिविशाल वारिजदललोचन राजति काजररेख री । इच्छासौं मकरंद लेत मनों अलिगोकुलके वेषरी ॥ श्रवणन नहिं उपकंठ रहतहै अरु बोलत तुतरात री । उमँगे प्रेम नैन मगह्वैकै कांपै रोके जातरी ॥ दमकत दोउ दूधकी दतियां जगमग जगमग होत री । मानौ सुंदरता मंदिरमें रूपरतनकी ज्योतिरी ॥ सूरदास देखौ सुंदर मुख आनँद उर न समाइरी । मानौ कुमुद कामनापूरण पूरण इंदुहि पाइ री ॥ २२ ॥

अद्भुत एक चितयो हौं सजनी नंदमहरके आंगनरी । सो मैं निरखि अपनपो खोयो गई मथनियां मांगनरी ॥ बालदशा मुखकमल बिलोकत कछु जननीसों बोलै री । प्रगटत हँसत दँतुलिया मानौ सीपदुरेदलओलैरी ॥ सुन्दरभालतिलक गोरोचनमिलि मसि बिंदुक लाग्यौरी । मनो मकरंद अचै रुचिके अलिसावक सोइ न जाग्यौ री ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत मनो दर्पणमें झाई री । रही बिलोकि विचारि चारुछबि परमितिकाहुन पाई री ॥ मंजुल तारनकी चपलाई चितु चतुरानन करषै री । मनो शरासन समर धरे कर भौंह चढे शरवरषै री ॥ जलधि थकित जनौं कागदपोत ज्यों कूलन कबहूँ आयो री । ना जानौं केहि अंग मगन मन चाहि रह्यो नहिं पायोरी ॥ कहां लगि कहौं बताइ वरणि जितनी छबि निरखत हारी री । सूर श्यामके एक रोमपर देहुँ प्राण बलिहारी री ॥ २३ ॥

राग धनाश्री ॥ यशोदा तेरो चिरजीवहु गोपाल । बेगि बढो बलसहित वृद्धलठ महरि मनोहर बाल ॥ उपजि परचो इह कोख कर्मवश मुँदी सीप ज्यों लाल । या गोकुलके प्राणजीवन वैरिनके उर शाल ॥ सूर कितो मन सुख पावत हैं देखे श्याम तमाल । रुजि आरति लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल ॥ २४ ॥

सारंग ॥ आसावरी ॥ आजु गई हौं नंदभवनमें कहा कहों ग्रहचैनु री । बहुअंग चतुरंग छलमो कोटिक दुहियतु धेनु री ॥ घूमिरहे जित तित दधि मथना सुतत मेघ ध्वनि लाजै री । वरणौं कहासदन की शोभा वैकुंठहुते राजैरी॥बोलि लई नववधू जानिक खेलत जहाँ कन्हाई री॥

मुख देखत मोहनीसी लागत रूप न वरण्यो जाई री ॥ लटकनलटकि रहे भ्रूऊपर पँचरँग मणि गग पोहैरी । मानहु गुरु शनि शुक्र एक होइ लाल भाल पर सोहै री ॥ गोरोचनको तिलक निकटही काजरबिंदुक लाग्यौ री । मनहु कमलगुन पीयराग रस निशि अलिसुत सोइ जाग्यौ री ॥ विधु आनन पर दीरघ लोचन नासा लटकत मोती री । मानौं सोम संगकरिलीनो जानि आपनो गोती री ॥ सीपजमाल श्याम उर सोहै बिच बघना छवि पावैरी । मानौं द्वैजशशि नखत सहित है उपमा कहत न आवै री ॥ वरणों कहा अंग अंग शोभा भाव धरौ जलराशी री । बाल लाल गोपाल हि वर्णत कविकुल करिहै हांसीरी॥ शोभासिंधु अगाधबोध बुधउपमा नाहिन औररी । रूपदेखि तनु थकितरही हो मनौ भेइ भरे कौचौर री ॥ जोमेरी अँखिया रसनाहोती कहती रूप बनाइरी । चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदास बलि जाइ री ॥ २५ ॥

वलभद्र वचन राग बिलावल ॥ कलबलते हरि हारपरे । नवरंग विमल जलद पर मानौ द्वै शशि आनि अरे ॥ तब गिरि कमठ सुरासुर सर्पहि धर तनमनमें नेक डरे । तिन भुज भूषण भार परत कर गोविनके आधार धरे॥ चंद्रवदन मानौं मथि काढ्यो विहँसनि ममहु प्रकाश करै । सूरश्याम दधिभाजनभीतर निरखत मुख मुखते न टरै ॥ २६ ॥

मथन दधि मथनी टेक रह्यो । आरि करत मटुकी गहि मोहन वासुकि शंभु डरचो ॥ मंदर तरत सिंधु पुनि कांपत फिरि जनि मथन करै । प्रलय होत जनि गहो मथानी प्रभु मर्याद टरै ॥ सुरअरि सुर ठाढे सब चितवैं नैनन नीर ढरै । सूरदास प्रभु मुग्ध यशोदा मुख दधिबिंधु गिरै ॥ २७ ॥

जब दधिरिपु हरि हाथ लियो । खगपतिअरि डर लै शंकत बासरपति आनंद कियो॥ विधि शिर धुनि सकुचित शिव सोचत गरलादिक कैसे जात पियो । अति अनुराग संग कमलातन प्रफुलित अंगन अमित हियो ॥ एकन दुख एकन सुख उपजत को ऐसो न विनोद कियो । सूरदास प्रभु तुमरे महतहि एक एकते होत बियो ॥ २८ ॥

राग धनाश्री ॥ जब मोहन कर गही मथानी । परसतकर दधिमाट नेत चित उदधि शैल वासुकि भय मानी ॥ कबहुँक अहुठ परग कारि वसुधा कबहुँक देहरि उलंघि न जानी ॥ कबहुँक सुर मुनि ध्यान न पावत कबहुँ खिलावति नंदकी रानी । कबहुँक अपर खीर नहिं भावत कबहुँ मेखली उदर समानी ॥ कबहुँक आर करत माखनको कबहुँक भेष दिखाइ बिनानी । कबहुँ अखिल उदर नहिं तर्पित कबहुँक दल माखन रुचि मानी॥ सूरदास प्रभुकी यह लीला परतनमहि शेष बखानी ॥ २९ ॥

राग बिलावल ॥ नंदजूके वारे कन्हैया छांडिदे मथनियां । बार बार कहै मात यशोमति रनियां ॥ नेक रहौ माखन देऊँ मेरे प्राण धनियां । आरि जिनि करौ बलिजाऊंहौ निधनी के धनियां ॥ सूर नर जाको ध्यान धरैं गावैं मुनि जनियां । ताको नँदरानी मुख चुंबतिहै लिए कनियां ॥ सहसानन गुणगाने गनत नहीं बनियां । सूरश्याम देखि सब भूली गोप धनियां ॥ १३० ॥

यशुमति दधि मथन करति बैठी वरधाम अजिर ठाढे हरि हँसत नान्हीसी दतिआन छबिछाजै ॥ चितवत चितलेइ चोराई शोभा बरणि न जाई मुनिनके मनहरनको मनमोहनि दलसाजै ॥ जननि कहति नाचौ तुम देहौं नवनीत मोहन रुनुकु झुनुकु चलत पांइन चायन नूपुर बाजै । गावत गुण सूरदास यश बाढ्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोकनाथ माखनके काजै ॥ १३१ ॥

प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमलनयन गुणगावति ॥ अतिहि मधुर गति कंठ सुघर अति नंदसुवन चित हितहि करावति ॥ नीलवसनतनु सजल जलद मानौ दामिनिविविभुजदंड चलावति । चंद्रवदन लटलटकी छवीली मनहुँ अमृतरस राहुचुरावति ॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनिधुनि सुनि श्रवण रमावति ॥ सूरश्याम अचराधरे ठाढे काम कसौटी कसिदेखरावती ॥ ३२ ॥

ललिता ॥ छोटी छोटी गुडियां अंगुरियां छोटी छबीली नख ज्योति मोती मानौ कंज-दलनपर ॥ ललित आँगन खेलै ठुमुकु डौलै झुनुक झुनुक बाजै पैजनी मृदुमुखर । किंकनी कलित कटि हाटक रजत जटित मृदु कर कमल पहुँचियारुचिर वर ॥ पियरी पिछौरी झीनी और उपमा भीनी बालक दामिनि मानौं ओढे बारो बारिधर ॥ उरब-घनहाकंठकठुला झडूले बार बेनीलटकन मस बिंदु मुनिमनहर ॥ अजन रंजित नयनाचित-वनि चितचोरैमुखशोभा परवारौं अमित असमसर । चुटुकि बजावति नचावति नंद घरनि बाल केलि गावत मल्हावति प्रेम सुघर ॥ किलकि किलकि हँसैं द्वैद्वै दंतुरिया लसैं सूरदास मन वसै तोतरे वचन वर ॥ ३३ ॥

राग बिलावल ॥ माधव तनकसे वदन तनकसे चरन भुज तनकसे करन पर तनकमाखन । तनकसी बात जो कहत तनकसे तनक रीझि रहे तनक सुधन ॥ तनक कपोल तनकसी दंतुलिया तनक अधर अरु तनक हंसन पर हरत हो मन । तनकहि तनक जो सूर निकट आवै तनक कृपा करि दीजै तनक शरन ॥ माधव तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक बदन बोलै तनकसे बोल । तनक कपोल तन कसी दँतिया तनक हँसन पर लेतहौ मन मोल ॥ तनक करनपर तनक माखन लिये देखत तनक जाके सकल भुवन । तनक सुनै सुयश पावत परमगति तनक कहत तासों नंदसुवन ॥ तनक रीझ पर देत सकल तन तनक चितै चितवन चितके हरन ॥ तनकहि तनक तनक करि आवै सूर तनक तनक दीजै तनक शरन ॥ ३४ ॥

राग कान्हरो ॥ गोद खिलावति कान्ह सुनो बडभागिनिहो नँदरानी ॥ आनँदकी निधि मुख लालको ताहि निरखि निशिबासर सोतो छबि क्योंहूँ न जाति बखानी ॥ गुण अपार बहु विस्तार कहि न परत निगमागमबानी । सूरदास प्रभुको लिये यशुमति गोद खिलावति चितै मुसुक्यानी ॥ ३५ ॥

राग गौरी ॥ मेरे माई श्याम मनोहर जीवनि ॥ निरखि नयन भूलेते वदन छबि मधुर हँसनि पैपीवनि ॥ कुंतल कुटिल मकर कुंडल ध्रुव नैनविलोकनि बंक । सिंधु-

सुधाते निकसि नयो शशि राजत मनौ मृगअंक ॥ शोभित सुमन मयूर चंद्रिका नीलनलिन तनुश्याम । मानहु नक्षत्र समेत इंद्र धनु सुभग मेघ अभिराम ॥ परमकुशल कोविद लीलानटमुसुकनि मन हरिलेत । कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत ॥३६॥

राग आसावरी ॥ वेदकमल मुख परसत जननी अंक लिये सुतरति करि श्याम । परमसुभग जु अरुनकोमल रुचि आनंदित मनु पूरणकाम ॥ आलंबित जु पृष्ठ बल सुंदर परस्पर चितवत हरि राम । झाँकि उझकि हँसत दोऊ सुत प्रेम मगन भई इकटक जाम ॥ देखि स्वरूप न रही कछू सुधि टूरी तबहि कंठते दाम । सूरदास प्रभु शिशुलीला रस आवहु नंद देखि सुखधाम ॥ ३७ ॥

राग गौरी ॥ शोभा मेरे श्यामहिपै सोहै । बलि बलि जाऊँ छबीले मुखकी या पटरतको को है ॥ या बानक उपमा दीबेको सुकविकहा टकटोहै । देखत अंग थके मनमें शशिगण गारि कियो विधि आनन बंकभौंह मिलि जोहै । सूर श्याम सुंदरता निरखत मुनिजनको मन मोहै ॥ ३८ ॥

राग बिलावल ॥ बाल गोपाल खेलौ मेरे तात । बलि बलि जाऊँ मुखारविंदकी अमी वचन बोलत तुतरात ॥ उनीदे नयन विशालकी शोभा कहत न बनि आवै कछु बात । दूर खरे सब सखा बुलावत नयनमींडि उठि आए प्रभात ॥ दुहुँकर माठ गह्यो नँदनंदन छिटकि बूँद दधि परत अघात ॥ मानहु गजमुक्ता मर्कत पर शोभित सुभग सांवरे गात ॥ जननी प्रति मागत मनमोहन दे माखन रोटी उठि प्रात । लोटत पुहुमि सूर सुन्दर घन चारि पदारथ जाके हाथ ॥ ३९ ॥

पालने झूलो मेरे लाल पियारे ॥ मुसकनिकी हौं बलि बलि करौ तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे ॥ काजर हाथ भरो जिनि मोहन ह्वैहैं नैन अतिही रतनारे । शिर कुलही पहिराय पैजनी तहां जाहु जहाँ नंदबबारे ॥ यह बिनोद देखत धरणीधर मात पिता बलभद्रददारे । सुर नर मुनि कौतूहल भले देखत सूर श्याम हैं कारे ॥ ४० ॥

क्रीडत प्रात समय दोउ बीर ॥ माखन माँगत बात न मानत झकत यशोदा जननी तीर ॥ जननी मध्य सन्मुख संकर्षण ऐंचत कान्ह खस्यो तनुचीर । मानो सरस्वती संग उभै द्विज राम कृष्ण अरु नील कंठीर ॥ सूरश्याम गही कुबरी करमुक्तामांग गही बलवीर । ताहन भखुलीनो अप अपनो मानहु लेतनिबरनि सीर ॥ ४१ ॥

गोपालराइ दधिमांगत अरु रोटी । माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समंगल मोटी ॥ कतहो आरिकरत मेरे मोहन कत तुम आंगन लोटी । जो मांगहु सो देहुँ मनोहर यहै बात तेरी खोटी ॥ प्रातकाल उठि देहुँ कलेऊ वदन चुपरि अरु चोटी । सूरदासको ठाकुर ठाढो हाथ लकुट लिये छोटी ॥ ४२ ॥

हरिकर राजत माखन रोटी । मनौ वारिज शनि वैरु जानि जियगह्यो सुधा शिशुधोटी ॥ मनौ बराह भूधर सहपति धरी दशमनकी कोटी । शनि शशि मेलि मुख अंबुज भीतर उपजी उपमामोटी ॥ नग्न गात मुसक्यात तात ढिग निरत करत गहि चोटी ॥ सूरज प्रभुकी इहै जु जूठनि लालनललित लपेटी ॥ ४३ ॥

दोउ भैया मैयापै माँगत दे माँ माखन रोटी । सुनी भावती एकबात सुतनकी झूठेहि धामके काम आगोटी ॥ बलजू गह्यो नासिका मोती कान्ह कुँवरगही दृढकर चोटी। मानहु हंस मोरभख लीने कविजन कहैं उपमा कछु छोटी ॥ यह छबि देखत महरि अनंदित महर हँसत लोटिलोटी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा भाग बड़े करमनिकीमोटी॥४४॥

राग आसावरी ॥ तनक दैरी माइ । माखन तलक दैरी माइ ॥ तनिक करपर तनिक रोटी मांगन चरन चलाइ ॥ कनक भूपर रतनकी रेखा नेक पकरचो धाइ । कंपिआगिरिशेषशंक्योउदधिचलोअकुलाइ ॥ जामुखको ब्रह्मादिक लोचैं सो मांगत ललचाइ । ईशके वेग दरश दीजै ब्रज बालक लेत बलाइ ॥ माखन मांगत श्याम सुंदर देत पग पटकाइ । तनक मुखकी तनकबतियां मांगत हैं तोतराइ ॥ मेरे मनको तनिक मोहन लागु मोहि बलाइ । श्यामसुंदर गिरिधरनिऊपर सूर बलिबलिजाइ ॥ ४५ ॥

राग बिलावल ॥ नेकरहौ माखनद्यों तुमको । ठाढी मथति जननि दधि आतुर लवनीं नंद सुअनको ॥ मैं बलिजाऊँ श्यामघन सुन्दर भूख लगी तुम भारी। बात कहूंकी बूझति श्यामहि फेर करत महतारी ॥ कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि देत हुँकारी। सूरदास प्रभुके गुण गावत तुरतहि बिसरिगई नँदनारी ॥ ४६ ॥

बातनहीं सुत लाइ लियो । तबलौं मथि जननि यशोदा माखन करि हरि हाथ दियो ॥ लैलै अधर परसकरि जेंवत देखत फूल्यो गात हियो । आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं माखन रोटी बहुत प्रियो ॥ जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वश करि नंदत्रियो। यह सुख निरखत सूरज प्रभुको धन्य धन्य फल सुफल जियो ॥ ४७ ॥

अथ बालवेष निर्णय ॥ वरनौं बालभेष मुरारि । थकित जित कित अमर मुनि गण नंदलाल निहारि ॥ केश शिर बिन पवनके चहुँ दिशा छिटके झारि। शीशपर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि ॥ तिलक ललित ललाट केशर बिंदु शोभाकारि। रेखा अरुन ज्यों त्रितय लोचन रह्यो जनु रिपु जारि ॥ कंठ कठुला नील मणि अंभोज माल सँवारि। गरल ग्रीव कपाल उर यहि भाय भए मदनारि ॥ कुटिल हरिनख हिये हरिके हरषि निरखति नारि। ईश जनु रजनीश राख्यो भालहूते उतारि ॥ सदन रजतन श्याम शोभित सुभग इहि अनुहारि । मनहु अंग बिभूति राजत शंभुसो मधुहारि ॥ त्रिदशपति पति अशनको अति जननिसों करआरि। सूरदास बिरंचि जाको जपत निजमुख चारि ॥४८॥

सखीरी नंदनंदन देखु। धूरिधूसरि जटाजूटलि हरि किए हरभेषु ॥ नील पाट पुरोइ मणिगण फणिग धोखे जाइ। खुनखुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ ॥ जलजमाल गोपाल पहिरे कहौं कहा बनाइ। मुण्डमाला मनो हरगर ऐसि शोभा पाइ। स्वातिसुत माला बिराजत श्याम तन यों भाइ। मनो गंगा गौरिडर हर लिए कंठ लगाइ ॥ केहरीके नखहि निरखत रही नारि बिचारि॥ बाल शशि मनौ भालते लै उर धरचो त्रिपुरारि ॥ देखि अंग अनंग डरप्यो नंदसुतको जान। सूरदासके हृदय बसि रहचो श्याम शिवको ध्यान ॥ ४९ ॥

राग नटनारायण ॥ विहरत विविध बालक संग । डगर डगर डोलत मग निमग धूरिधूसर अंग ॥ ललित गति पग परत पैंजनि परस्पर किलकानि । मनहु मधुर मराल शावक सुभग बैन विहानि ॥ ललित श्रीगोपाल लोचन श्याम शोभा दून । मनु मयंकहि अंक दीन्ही सिंहिकाके सून ॥ दूर दमकत श्रवण शोभा जलजयुग डहडहत । मनहुं वासव बलि पठाए जीव कवि कछु कहत ॥ कबहुं द्वारे दौरि आवत कबहुँ नंदनिकेत । सूर प्रभुकी गहत ग्वालिनि चारु चुंबन हेत ॥ १५० ॥

राग विलावल ॥ देखो मैं दधिसुतमें दधिजात । एक अचंभो देखि सखि री रिपुमें रिपु जु समात ॥ दधिपर कीर कीरपर पंकज पंकजके द्वै पात । यह शोभा देखत पशु पालक फूले अंग न समात ॥ सुंदर बदन विलोकि श्यामको नंद निरखि मुसकात । ऐसो ध्यान धरै जो हरिको सूरदास बलिजात ॥ ५१ ॥

राग धनाश्री ॥ दधिसुत जामें नंददुवार । निरखि नैन अरुझ्यो मनमोहन रटत देहु कर बारंबार ॥ दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगेसे कौतुक हार । कर ऊपर लै राखि रहे हरि देत न मुक्ता परमसुढार ॥ गोकुलनाथ बए यशुमतिके आँगन भीतर भवन मँझार । शाखापत्र भए जलमेलत फूलत फरत न लागी बार ॥ जानत नहीं मर्म सुर नरमुनि ब्रह्मादिक नहिं परत विचार । सूरदास प्रभुकी यह लीला ब्रजवनिता गुहि पहिरे हार ॥ ५२ ॥

कजरीको पय पिअहु लाल तेरी चोटी बढै । सब लरिकनमें सुन सुंदर सुततो श्री अधिक चढै ॥ जैसे देखि और ब्रजबालक त्यों बलवैस बढै । कंस केशि बक वैरिनके उर अनुदिन अनल उठै ॥ यह सुनिकै हरि पीवन लागे त्योंत्यों लियो लटै । अचवन पै तातो जब लाग्यो रोवत जीभ उठै ॥ पुनि पीवतही कच टकटोवे झूठे जननि रटै । सूर निरखि मुख हँसत यशोदा सो सुख उर न कढै ॥ ५३ ॥

रामकली ॥ यशोदा कबहिं बढैगी चोटी । किती बार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूँ हैं छोटी ॥ तू जु कहति बलकी बेनी ज्यों ह्वैहै लाँबी मोटी । काढत गुहत न्हवावत ओछत नागिनिसी भुइँ लोटी ॥ काचो दूध पिवावत पचिपचि देत न माखन रोटी । सूर श्याम चिर जीव दोउ भैया हरि हलधरकी जोटी ॥५४॥

देवगंधार ॥ कहन लगे मोहन मैया मैया । पिता नंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया ॥ ऊंचे चढि चढ़ि कहत यशोदा लैलै नाम कन्हैया । दूरि कहूं जिन जाहु लला रे मारैगी काहूकी गैया ॥ गोपी ग्वाल करत कौतूहल घरघर लेत बधैया । मणिखंभन प्रतिबिंब विलोकत पुनि अवनीत कुँवर हरि पइया ॥ नंद यशोदाजीके उरते इह छवि अनत न जइआ । सूरदास प्रभु तुमरे दरशको चरणनकी बलि गइआ ॥ ५५ ॥

राग सारंग ॥ मैया मोहिं बडो करिबेरी ॥ दूध दही घृत माखन मेवा जो मांगों सों देरी ॥ कछू हवस राखै जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचेरी ॥ रंगभूमिमें कंस पछारौं कहौं कहाँ लौं मैं री । सूरदास स्वामीकी लीला मथुरा राखौ जो री ॥ सुन्दर श्याम हंसत जननी सों नंद बबाकी सौं री ॥ ५६ ॥

राग रामकली॥हरि अपने आगे कछु गावत। तनक तनक चरणनसों नाचत मनहीं मनहिं रिझावत ॥ बांह उँचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत। कबहुँक बाबा नंद बुलावत कबहुँक घरमें आवत ॥ माखन तनक आपने करले तनक बदनमें नावत । कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभमें लवनी लिए खवावत ॥ दुरि देखत यशुमति यह लीला हर्ष अनंद बढावत। सूर श्यामके बालचरित नितही नित देखत भावत ॥ ९७ ॥

राग बिलावल ॥ आजु सखी हौं प्रातसमय दधि मथन उठी अकुलाइ । भरि भाजन मणिखंभ निकट धरि नेत लियो कर जाइ ॥ सुनत शब्द तेहि छिन समीप में महरि हँसि आए धाइ। मोहे बालविनोद मोद करि नयनन नृत्य देखाइ॥ चितवनि चलति हरयो चित चंचल चितैरही चित लाइ । पुलकित तब प्रतिबिंब देखि करि सबही एक सुभाइ ॥ माखन पिंड विभाग दुहूँकर आपत मुहँ मुसुकाइ। सूरदास प्रभु ता सुतके सुख सकै न हृदय समाइ ॥ ९८ ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावहु। अबकी बार मेरे कुंवर कन्हैया नंदहि नाचि देखावहु ॥ तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु। आन यंत्रध्वनि डरपति कत मो भुज कंठ लगावहु ॥ जिन शंक जियकरो लाल मेरे काहेको भरमावहु। बांह उंचाइ कालिकी नाईं धौरी धेनु बुलावहु ॥ नाचहु नेकु जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावहु। रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावहु ॥ कनकखंभ प्रतिबिंबत शिशु इकलौनी ताहि खवावहु। सूरश्याम मेरे उरते कहुं टारे नेक न भावहु ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ कान्ह बलिजाउँ ऐसी आरि न कीजै। जोइ २ भावै सोइ लीजै ॥ कहत यशोदा रानी। को खिझवै शारँगपानी ॥ मेरे जो लाल खिजावै। सो अपनो कियो भलो पावै ॥ तिहि देहौं देश निकारो। ताको ब्रज नाहिं नगारो ॥ अति रिसही ते तनु छीजै। सुठि कोमल अंग पसीजै। बर्जत बर्जत बिरुझाने। करि क्रोध मनहि अकुलाने ॥ धरत धरणि धरलोटे माताको चीर नखोटे ॥ अंग आभूषण सब तोरे । लवनी दधि भाजन फोरे ॥ देखि तप्त जल तरसै। यशुदाके चरणन परसै ॥ महरि बाँह गहि आने। तब तेल उबटने साने ॥ तब गिरत परत उठि भागे । कहूं नेक निकट नहिंलागे ॥ तब नंदघरनि चुचकारे। आवहु बलि जाऊँ तुम्हारे ॥ नाहिं आवहु तो भले लाल। पुनि जानहुगे मदनगोपाल ॥ तुम मेरी रिस नाहिं जानौ। मोको नाहिं तुम पहिचानौ ॥ मैं आजु तुम्हैं गहि बांधौं। हाहा करि अनुराधौं ॥ बाबा नंद उतहिते आए । कौने हरि अतिहि खिझाए ॥ मुख चूमि हरखि लै आए। यशुमतिपै पहुँचाए ॥ मोहन कत खिझत अयानी। लिये लाइ हिये नँदरानी ॥ क्योंहूं जतन जतन करि पाए। तब उबटन तेल लगाए॥ तातो जल आनि समोयो। अन्हवाइ दियो मुख धोयो ॥ अति सरसवसन तन पोंछे। लैकै मुखकमल अँगोछे ॥ अंजन दोउ दृग भरि दीनों॥ भ्रुव चारु चखोडा कीनों ॥ अँग आभूषण जे बनाए। लालहि क्रम क्रम ले पहिराए॥ ऐसी रिस न करो मेरे कान्हा।

अब खाहु कुंवर कछु नान्हा ॥ तुतरात कह्यो का है री । जो मोहिं भावै सो देरी ॥ जोइ जोइ भावे मेरे प्यारे । सोइ सोइ देहौं जु ललारे ॥ कह्यो है सिरावन सीरा । कछु हठ न करौ बलवीरा ॥ सद दधि माखन दै आनी । तापर मधु मिश्री सानी ॥ खोवामें मधुर मिठाई ॥ सो देखत अतिरुचि पाई ॥ कछु बलदाऊको दीजै । अरु दूध अधावट पीजै ॥ सब हेरि धरीहै साढी । लै उपर उपरते कढी ॥ अति प्योस रस रिस बनाई । तेहि सोंठि मिरच रुचिताई । दूध बरा दही बोरी । सो खात अमृत इक कोरी ॥ सुठि सरस जलेबी बोरी । जेहि जेंवत रुचि नहिं थोरी ॥ अरु खुरमा सरस सँवारे । ते परसि धरेहैं न्यारे ॥ संकरपाले सद पागे । ते जेंवत परम समागे ॥ सेवलाडू रुचि रसवारे । जेमुख मेलत सुकुमारे ॥ सुतिलाडू हैं सुठि मीठे ॥ वै खात न कबहुं उबीठे॥ खीरलाडू लै गए नाए । ते करि बहु जतन बनाए ॥ गोझा बहु पूरन पूरे । 'भरि भरि कपूर रस चूरे ॥ अरु तैसियगाल मसूरी । जो खातहि मुख दुख दूरी ॥ अरु है समि सरस सँवारी । अति खात परम सुखकारी । पापर बरणे नहिं जाही । जेहि देखत अतिसुख पाही ॥ माल-पुवा मधु साने । ते तुरत तपत करि आने ॥ सुन्दर अतिसरस अंदरसे । ते घृत मधु दधि मिलि सरसे ॥ घेबर अति विरत चभोरे ॥ लै खांड उपर तर बोरे ॥ माधुरि अति सरस सजूरी । सद परसि धरी घृतपूरी ॥ जबपूरी सुनि हरि हरष्यो । तब भोजन पर मन करष्यो ॥ सुनि तुरत यशोदा ल्याई । अति रुचि समेत हरि खाई ॥ बलदाऊको टेरि बुलाए । यह सुनि हलधर तहां आए ॥ षटरस परकार मँगाए । जे वरणि यशोदा गाए ॥ मनमोहन हलधर वीरा । जेंवत रुचि राख्यो सीरा ॥ शीतल जल लियो मँगाई । भरि झारी यशुमति ल्याई ॥ अचवत तब नयन जुडाने । दोऊ हरषि हरषि मुसकाने ॥ हँसि जननी चुरु भरवाए । तब कछु कछु मुख पखराए ॥ तब बीरी तनक मुख नाए । अति लाल अधर ह्वै आए ॥ तब सूरदास बलिहारी । माँगत कछु जूंठनि थारी ॥ हरि तनक तनक कछु खाये । जूंठनि सब भक्त निपाए ॥ १६० ॥

राग धनाश्री ॥ पाहुनी करिदै तनक मह्यो । हौं लागी गृहकाज रसोई यशुमति बिनय कह्यो ॥ आरि करै मनमोहन मेरो अंचल आनि गह्यो । व्याकुल मथति मथनियां रीति दधि भ्वैं ढरकि रह्यो ॥ माखन जात जानि नँदरानी सखिन सम्हारि कह्यो । सूर श्याम मुख निरखि मगन भई दुहुनि सकोच सह्यो ॥ ६१ ॥

आसावरी ॥ यशुमति जबहि कह्यो अन्हवावन रोइ गए हरि लोटतरी । लेत उबटनो लै आगे दधि कहि लालहि चोटत पोटत री ॥ मैं बलिजाउँ न्हाउ जिनि मोहन कत रोवत बिनकाजैरी । पाछे धरि राखौ छुपाइकै उबटन तेल समाजै री ॥ महरि बहुत बिनती करि राखति मानत नहीं कन्हाई री । सूरश्याम अतिही बिरुझाने सुर मुनि अन्त न पाई री ॥ ६२ ॥

अथ चन्द्र प्रस्ताव ॥ कान्हरो ॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा देखरा-वत । रोवत कत बलिजाउं तुम्हारी देखौं धौं भरि नयन जुडावत ॥ चितैरहै तब आपुन

शशितन अपने कर लै लै जु बतावत। मीठो लगतकिधौं यह खाटो देखत अतिसुंदर मनभावत॥ मनमनही हरि बुद्धि करतहैं माताको कहि ताहि मँगावत। लागी भूख चंद में खैहौं देहु देहु रिसकरि बिरुझावत॥ यशुमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अति दुखपावत। सूरश्यामको यशुदा बोधति गगन चिरैयां उडत लखावत॥ ६३॥

राग कान्हरो॥ किहिबिधि करि कान्है समुझैहौं। मैं ही भूलिचंद्र दिखरायो ताहि कहत मोहि दैमैं खैहौं॥ अनहोनी कहुँ होत कन्हैया देखी सुनी न बात। यह तौ आहि खिलौना सबको खान कहत तेहि तात॥ यहै देत लवनी नित मोको छिन छिन सांझ सवारे। बार बार तुम माखन माँगत देउँ कहांते प्यारे॥ देखत रहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई॥ सूर श्याम लियो महरि यशोदा नंदहि कहत बुझाई॥ ६४॥

राग धनाश्री॥ आछे मेरे लालहौ ऐसी आरि न कीजै। मधु मेवा पकवान मिठाई जोई भावै सोइ लीजै॥ सद माखन घृत दह्यो सजायो अरु मीठो पय पीजै। पाला गोंहठ अधिक करो जिनि अति रिसमें तनु छीजै॥ आन बतावत आन दिखावत बालक तौ न पतीजै। खिझ खिझ कान्ह खसत कनियांते सुसुकि मन खीजै॥ जलपुट आनि धरचो आँगन में मोहन नेक तौ लीजै। सूर श्याम हठि चंदहि मांगै चंद कहाँते दीजै॥ ६५॥

राग कान्हरो॥ बार बार यशुमति सुत बोधति आउ चंद तोहिं लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खैहै तोहिं खवावै॥ हाथहि पर तोहिं लीने खेलै नहिं धरणी बैठावै। जलभाजन करलै जु उठावति याहीमें तू तनु धरि आवै॥ जलपुट आनि धरणि पर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै। सूरदास प्रभु हँसि मुसकाने बार बार दोऊकर नावै॥ ६६॥

राग रामकली॥ मेरो माई ऐसो हठी बाल गोविंदा॥ अपने कर गहि गगन बतावत खेलनको माँगै चंदा॥ वासन कै जल धरचो यशोदा हरिको आनि दिखावै। रुदन करत ढूँढै नहिं पावत धरणि चन्द कैसे आवै॥ दूध दही पकवान मिठाई जु कछु: मांगि मेरे छौना। भौंरा चकई लाल पाटको लेंडुवा मांगु खिलौना॥ दैत्यदलन गजदंत उपारन कंसकेश धरि फंदा। सूरदास बलिजाइ यशोमति सुखके सागर दुखके खंदा॥ ६७॥

लेहौं री मा चंदा चहौंगो। कहा करौं जलपुट भीतरको बाहर ओकि गहौंगो॥ इहतो झलमलात झकझोरत कैसेकै जु लहौंगो। वहतो निपट निकटही देखत वरज्यो हौं न रहौंगो॥ तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो वौराएन बहौंगो। सूरश्याम कहै करगहि ल्याऊँ शशि तनु दाप दहौंगो॥ ६८॥

राग धनाश्री॥ लाल यह चंदा लेलैहो। कमलनयन बलिजाइ यशोदानीचे नेकचितैहो॥ जा कारण सुनि सुत सुंदर वर कीन्हो इती अनैहो। सोइ सुधाकर देखि दमोदर या भाजनमें हैहो॥ नभते निकट आनि राख्योहै जलपुट जतन जोगैहो। लै अपने कर काढि दमोदर जो भावै सो कैहो॥ गगन मँडलते गहि आन्यो है पंछी एक पठै हो सूरदास प्रभु इती बातको कंत मेरो लाल हठैहो॥ ६९॥

राग विहागरो ॥ तुम मुख देखि डरतु शशि भारी । कर करिके हरि हेरचो चाहत भाजि पताल गयो अपहारी ॥ वह शशितो कैसेहुं नहिं आवत यह ऐसी कछु बुद्धि बिचारी। वदन देखि बिधु बिधि सकातमन नैनकंज कुंडल उजियारी ॥ सुनहु श्याम तुमको शशि डरपत है कहत ए शरन तुम्हारी । सूर श्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी ॥ १७० ॥

राग केदारो ॥ यशुमति लै पलिका पौढावति । मेरो आजु अतिही विरुझानो यह कहि कहि मधुरे सुर गावति ॥ पौढि गई पुनि हरुये करिकै अंग मोरि तब हरि जमुहाने। कर-सों ठोंकि सुतहि दुलरावति चटपटाइ अतुराने ॥ पौढौ लाल कथा एक कहिहौं अतिमीठी श्रवणनको प्यारी ॥ यह सुनि सूरश्याम मन हरषे पौढि गए हँसि देत हुँकारी ॥ ७१ ॥

सुनसुत एककथा कहौं प्यारी । कमलनयन मन आनँद उपज्यो चतुर शिरोमणि देत हुँकारी ॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बडे महल जहँ अगम अटारी । बहुत गली पुर बीच विराजत भाँतिभाँति सब हाटबजारी ॥ तहाँ नृपति दशरथ रघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी । कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिनके जन्म भए सुत चारी ॥ चारि पुत्र राजाके प्रगट तिनमें एक राम व्रतधारी । जनक धनुष व्रत देखि जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी ॥ राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि व्रत जनक तहाँ पगधारी । धनुष तोरि मुख मोरि नृपनको जनकसुता तिनकी वरनारी ॥ पग अँगुठा जब पीर नृपतिके तब कैकयी मुख मेलि निवारी । वचन माँगि नृपसों तब लीनो रघुपतिके अभिषेक सँवारी ॥ तातवचन सुनि तज्योराज्य तिन भ्रातासहित घरनि वनचारी । उनके जात पिता तनु त्याग्यो अति-व्याकुल करि जीव बिसारी ॥ चित्रकूट गए भरत मिलन जब पगपाँवरी दे करी कृपारी । युवतीहेतु कनक मृग मारी राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण करचो सीताको सुनि करुणामय नींद बिसारी । सूर श्याम कर उठे चापको लछिमन देहु जननी भ्रमभारी ॥ ७२ ॥

राग विहागरो ॥ नंदनँदन तुम सुनहु कहानी । पहली कथा पुरातन सुन सुत जननि पास मुखवानी ॥ रामचन्द्र राजा दशरथसुत जनकसुता ताके गृह रानी । कहि पंचतत्त्व अरु पंचवटी वन छाँडि चले रजधानी ॥ तहां बसत सीता हरलीनो रजनीचर अभिमानी । लछिमन धनुष देहु कहि उठि हरि यशुमति सूर डरानी ॥ ७३ ॥

राग केदारो ॥ यशुमति मनमें यहै विचारति । झझकि उठ्यो, सोवत हरि अबहीं कछु पढिपढि तनु दोष निवारति ॥ खेलतमें कहुँ डीठि लगाई लैलै राई लोन उतारति । सांझहिते मेरो विरझान्यो चंदहि देखि करी अति आरति ॥ बारबार कुलदेव मनावति दोउ कर जोरि शिरहि ले धारति । सूरदास यशुमति नँदरानी निरखि वदन त्रयताप विसारति॥७४॥

नहिन जगाइ सकति सुनि सोवावत सजनी। अपने जान अजहुँ कान्ह मानत हैं रजनी॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागी लोभा । तनुकी गति बिसरि जाति निरखत मुख

शोभा ॥ वचननिको बहुत करति साजति जिय ठाढी । नैननि विचार परति देखत रुचि बाढी ॥ इहिविधि वदनारविंद यशुमति मनभावै । सूरदास सुखकी राशि कहत न बनिआवै ॥ ७५ ॥

राग बिलावल ॥ जागि ये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले । कुमुद वृंद सुकुचित भए भृंग.लता भूले ॥ तमचुर खग रौर सुनुहु बोलत वनराई । राभति गौ खिरकनमें बछराहित धाई ॥ विधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी । सूर श्याम प्रात उठौ अंबुज करधारी ॥ ७६ ॥

राग रामकली ॥ प्रात समय उठि सोवत हरिको वदन उघारयो नंद । रही न सकत देखनको आतुर नैन निशाके द्वंद ॥ स्वच्छ सेजमेंते मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद । मानौं मथि सुर सिंधु फेन फटि दरश दिखाई चंद ॥ धायो चतुर चकोर सूर सुनि सब सखि सखा सुछंद । रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरन मकरंद ॥ ७७ ॥

भोरभए निरखत हरिको मुख प्रमुदित यशुमति हरषित नंद । दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उर उपजत आनंद ॥ बदन उघारि निहारति जननी जागहु बलिगई आनँद कंद । मनहु मथत सुर सिंधु फेन फटि दई दिखाई पूरन चंद ॥ जाको यश ब्रह्मादिक मुनिजन नेति नेति गावति श्रुति छंद । सो गोपाल ब्रजके सुनि सूरज प्रगटे पूरण परमानंद ॥ ७८ ॥

ललित ॥ जागिये गुपाल लाल आनँद निधि नंदबाल यशुमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे । नैन कमलसे विशाल प्रीति वापिका मराल मदन ललित वदन ऊपर कोटि वारि डारे ॥ उगत अरुन विगत शर्वरी शशांक किरनहीन दीन दीपक मलीन छीन दुति समूह तारे । मनहु ज्ञान घनप्रकाश बीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग मुखर निकर मधुर ह्वै प्रतीत सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे । मनौ वेद बंदी मुनि सूत वृन्द मागधगण विरद वदत जैजैजैजैत कैटभारे ॥ विकसत कमलावलीय चलि प्रफंद चंचरीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्यागि कंज न्यारे । मानौ वैरागपाइ सकल कुलग्रह विहाई प्रेमवंत शिरत भृत्य गुनत गुन तिहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुखकदम्ब टारे । त्यागे भ्रम फंद द्वंद निरखिके मुखारविंद सूरदास अति अनंत मेटे मद भारे ॥ ७९ ॥

प्रात भयो जागो गोपाल । नवल सुंदरी आई बोलत तुमहिं सबैं ब्रजबाल ॥ प्रगटो भानु मंद उडुपति भयो फूले तरुन तमाल दरशनको ठाढी ब्रजवनिता ल्याई कुसुम गुंज वनमाल ॥ मुखहि धोइ सुन्दर बलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल । सूरदास प्रभु आनंदके निधि अंबुजलोचन नयन विशाल ॥ १८० ॥

ललित ॥ जागो जागोहो गोपाल । नाहिन इतो सोइये सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाल ॥ दिन विकसत मनौ कमलकोशप्रति छवि ज्यों मधुपन माल । फिरि फिरि निरखि निरखि छिन छिन छिन सब गोपनके बाल ॥ तौ तुमहीं आपुन उठि देखौ निद्रा नैन विशाल । ज्यो तुम मुहिं न पत्याहु सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल ॥ ८१ ॥

राग भैरव ॥ उठौ नंदकुमार भयो भिनुसार जगावति नंदकी रानी । झारीकै जल बदन पखारौ कहि कहि शारँगपानी ॥ माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावै सो लेउ आनी । सूर श्याममुख निरखि यशोदा मनही मनही सिहानी ॥ ८२ ॥

राग बिलावल ॥ नंदके लाल उठे जब सोइ । निरखि मुखारविंदकी शोभा कहि काके मन धीरज होइ ॥ मुनि मन हरन हरन युवतीके रति मनि जाइ सब खोइ ।. ईषदहांस दशन द्युति दामिनि मनि गनि ओपि धरे जनु पोइ ॥ नागर नवल कुँवर वर सुंदर मारग जात लेत मनगोइ ॥ सूर श्याम मनहरण मनोहर गोकुल वसि मोहे सब लोइ ॥ ८३ ॥

अथ कलेवाभोजनसमय ॥ राग भैरव ॥ उठिये श्याम कलेऊ कीजै । मन मोहन मुख निरखत जीजै ॥ खारिक दाख खोपरा खीरा । केरा आम ऊखरस सीरा ॥ श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी । सफरी चिरुआ अरुन खुबानी ॥ घेवर फेनी खौर सुहारी । खोवा सहित खाहु बलिहारी ॥ रचि पिराक लाडू दधि आनौं । तुमको भावन पुरी सधानौं ॥ तब तमोररुचि तुमहिं खवावों । सूरदास पनवारो पावों ॥ ८४ ॥

कमलनयन हरि करौ कलेवा । माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भाँति भाँतिके मेवा ॥ चारक दाख चिरौंजी किसिमिस मिश्री उज्ज्वल गरीबदाम । सफरीसेव छुहारे पिस्ता जे तरबूजा नाम ॥ अरु मेवा बहु भांति भांतिहैं षटरसके मिष्टान । सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ ८५ ॥

अथ खेलन समय ॥ राग रामकली ॥ खेलत श्याम ग्वालन संग । सुबल हलधर अरु सुदामा करत नानारंग ॥ हाथ तारी देत भाजत सबै करि करि होड । बरजै हलधर श्याम तुम जिनि चोट लगिहै गोड ॥ तब कह्यो मैं दौरि जानत बहुतबल मोगात । मोरी जोरी है सुदामा हाथ मारे जात ॥ बोलि तबै उठे श्रीसुदामा जाहुँ तारी मारि । आगे हरि पाछे सुदामा धरयो श्याम हँकारि ॥ जानिक मैं रह्यो ठाढो छुवत कहा जु मोहि । सूर हरि खीझत सखासों मनहिं कीनो कोहि ॥ ८६ ॥

राग गौरी ॥ सखा कहतहै श्याम खिसाने । आपुहि आपु ललकि भये ठाढे अब तुम कहा रिसाने ॥ बीचहि बोलि उठे हलधर तब इनके माय न बाप । हारि जीति कछु नेक जानत लरिकन लावत पाप ॥ आपुन हारि सखासों झगरत यह कहि दिये पठाई । सूर श्याम उठि चले रोइकै जननी पूँछति धाई ॥ ८७ ॥

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो । मोसों कहत मोलको लीनो तू यशुमति कब जायो ॥ कहा कहौं रिसके मारे खेलन हौं नहिं जातु । पुनिपुनि कहत कौन है माता कोहै तुमरो तातु ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर । चुटुकी दैदे हँसत ग्वाल सब सिखै देत बल वीर ॥ तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै । मोहनको मुख रिससमेत लखि यशुमति सुनि सुनि रीझै ॥ सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमतहीको धूत । सूर श्याम मो गोधनकी सौंहौं माता तू पूत ॥ ८८ ॥

राग नट ॥ मोहन मान मनायो मेरो । मैं बलिहारी नंदनंदनकी नेक इतै हँसिहेरो कारो कहि कहि मोहि खिझावत बरजत खरो अनेरो । आनन बिमल शशिते तनु सुन्दर

कहा कहै बलि चेरो ॥ न्यारो जो पै हठै हाँकलै अपनो न्यारी गैयां तेरो । मेरो सुत सरदार सबनको इहुते कान्है ही मेरो ॥ बनमें जाइ करौ कौतूहल इह अपनोहै खेरो । सूरदास द्वारे गावत हैं विमल २ यश तेरो ॥ ८९ ॥

राग गौरी ॥ खेलन अब मेरी जात बलैया । जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया ॥ मोसों कहत तात बसुदेवको देवकी तेरी मैया । मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि करि जतन बढैया ॥ अब बाबा कहि कहत नंदसों यशुमतिको कहै मैया । ऐसेही कहि सब मोहिं खिझावत उठि चलो खिसैया ॥ पाछे नंद सुनतैं ठाढे हँसत हँसत उर लैया । सूर नंदबलिरामहि धिरयो सुनि मन हरष कन्हैया ॥ १९० ॥

राग रामकली ॥ खेलन चलिये बाल गोविंद । सखा प्रिय द्वारे बुलावत घोष बालक वृंद ॥ तृषित है सब दरश कारन चतुर चातक दास । बरषि छबि नव बारिधरही हरहु लोचन प्यास ॥ विनय वचन सुने कृपानिधि चले मनोहर चाल । ललित लघु लघु चरण कर उर बाहु नयन विशाल ॥ अजिर पद प्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज । प्रतिचरण मानहु हेम वसुधा देत आसन कंज ॥ सूर प्रभुकी निरखि शोभा रहे सुर अवलोकि । शरद चंद चकोर मानौं रहे थकित विलोकि ॥ ९१ ॥

राग धनाश्री ॥ खेलनको हरि दूरि गयो । संग संग धावत डोलत हैं कहाँ धौं बहुत अबेर भयो ॥ पालक ओट भावत नहिं मोको कहा कहौं तोको बात । नंदहि तात तात कह बोलत मोहिं कहत हैं मात ॥ इतनी कहत श्याम घन आए ग्वाल सखा सब चीन्हें । दौरि जाइ उर लाइ सूर प्रभु हरषि यशोदा लीन्हें ॥ ९२ ॥

विहागरो ॥ खेलन दूरि जात कित कान्हा । आजु सुन्यो बन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ इक लरिका अबहीं भजि आयो बोलि बुझावहु ताहि । कान तोर वह लेत सबनके लरिका जानत जाहि ॥ चलहु वेग सवेरे जैये भजि अपने अपने धाम । सूरदास यह बात सुनतही बोलि लिए बलराम ॥ ९३ ॥

जैतश्री ॥ दूरि खेलन जनि जाहु लला वन मेरे हाऊ आयो है । तब हँसि बोले कन्हरि मैया इनको किनहि पठायो है ॥ अब डरपत सुनि सुनि ये बातैं कहत हँसत बलदाऊ । सप्त रसातल शेषासन रहे तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चारि वेद लेगयो शंखासुर जलमें रहे लुकाऊ । मीनरूप धरिकै जब मारयो तबहि रहे कहाँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलधि धसाऊ । कमठरूप धरि धरनि पीठकर सुख पायो सहिराऊ ॥ जब हिरणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अनि गरवाऊ । फरि वाराहरूप रिपु मारयो लै क्षिति दंत अगाऊ ॥ बिकट रूप अवतार धरयो जब सो प्रहलादहि नाऊ । धरि नरसिंह जब असुर विदारयो तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ वामन रूप धरयो बलि छलिकै तीन परग वसुधाऊ । श्रमजलब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊ ॥ मारयो मुनि विनही अपराधहि कामधेनु लेआऊ । इकइस बार निछत्र जब कीनी तहांन देखे हाऊ ॥ शूर्पणखा तारका मारी हिमकुल सहित

सो बहाऊ। सिंधु सेतु बांध्यो पाषाणसों तहीं न देखेहाऊ ॥ राम रूप रावन जब मारचो दशशिर बीस भुजाऊ। लंक जराय छार जब कीनी तहाँ न देखे हाऊ ॥ नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहाँ वह भाव बताऊ। तुरत चीर द्वै टूक कियो धरि ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत तहाँ सघन बन झाऊ। पैठि पताल व्याल गहि नाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ ॥ माटीके मिस वदन बिगारयो जब जननी डरपाऊ। मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबउ प्रतीत न आऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरे सब असुरन मारि बहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाऊ ॥ ९४ ॥

रामकली ॥ यशुमति कान्हहि यहै सिखावति। सुनहु श्याम अब बड़े भय तुम अस्तन पान छुड़ावति ॥ ब्रजलरिका तोहिं पीवत देखें हँसत लाज नहिं आवति। जैहैं बिगरि दांतहैं आछे ताते कहि समुझावति ॥ अजहुँ छांड़ि कह्यो करि मेरो ऐसी बात न भावति। सूर श्याम यह सुनि मुसकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥ ९५ ॥

नंद बुलावत हैं गोपाल। आवहु वेगि बलैया लेहौं सुन्दर नैन बिशाल ॥ परस्यो थार धरचो मग चितवत वेगि चलौ तुम लाल। भात सिरात तात दुख पावत क्यों न चलौ ततकाल ॥ हौं बलिजाऊँ नान्हे पाइनिकी दौरि दिखावहु बाल। छाँड़िदेहु तुम ललित अटपटी यह गति मन्द मराल ॥ सो राजा जो आगम दौरे सूर सुभौन उताल। जो जैहैं बलदेव पहिलेही तौ हँसिहैं सब ग्वाल ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ जेंवत कान्ह नंद इकठौरे। कछुक खात लपटात दुहूँकर बालक हैं अतिभोरे ॥ बड़ो कौर मेलत मुख भीतर मिरच दशन टकटोरे। तीक्षण लगी नयन भरि आए रोवत बाहर दौरे ॥ फूँकति वदन रोहिणी ठाढी लिये लगाइ अकोरे। सूर श्यामको मधुर कौर दै कीन्हे तात निहोरे ॥ ९७ ॥

रागनट ॥ हरिके बालचरित्र अनूप। निरखि रही ब्रजनारी एकटक अंग अंग प्रतिरूप बिथुरी अलकैं रहीं वदनपर बिनही बिपिन सुभाइ। देखि खंजन चंदके वश मधुप करत सहाइ ॥ सुलछ लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ ॥ अरुण अधरनि दशन भाई कहौं उपमा थोरि। नीलपट बिच मोति-मानौं धरे चन्दन बोरि ॥ सुभग बालमुकुन्दकी छबि बरणि कापै जाइ ॥ भृकुटि पर मसिबिन्दु सोहै सकै सूर न गाइ ॥ ९८ ॥

राग कान्हरो ॥ सांझ भई घर आवहु प्यारे दौरत कहाँ चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलौगे होत सकारे ॥ आपुहि जाइ बाँह महि ल्याई खेह रही लपटाई। धूरि झारि तातो जल ल्याई तेल परासि अन्हवाई ॥ सरसवसन तनु पोंछि श्यामको, भीतर गई लिवाई। सूर-श्याम कछु करौ बियारू पुनि राख्यो पौढ़ाई ॥ ९९ ॥

राग विहागरो ॥ कमल नयन कछु करौ बियारी। लुचुईलपसी सद्य जलेबी सोई जेवहु जो लगै पियारी ॥ घेवर मालपुवा मुतिलाडू सब रस जूरी सरस सवारी। बरा उत्तम दधि बाटी दाल मसूरीकी रुचि न्यारी ॥ आछो दूध औटि धौरीको ल्याईहै रोहिणि महतारी। सूरदास बलराम श्याम दोउ जेंवैं हैं जननि जाहि बलिहारी ॥ २०० ॥

विहागरो ॥ बल मोहन दोउ करत बियारी । प्रेम सहित दोउ सुतनि जिमावत रोहणि अरु यशुमति महतारी ॥ दोउ भैया मिलि खात एकसँग रतनजटित कंचनकी थारी । आलससों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकि रही भारी ॥ दोउ माता निरखत आलससों छबि पर तन मन डारति वारी । बारबार जमुहात सूर प्रभु इह उपमा कवि कहै कहारी ॥ १ ॥

राग केदारो ॥ कीजै पयपान ललारे ल्याई है दूध यशुमति मैया । कनक कटोरा भरिलीजै यह पीजै अतिसुख दीजै कन्हैया ॥ आछेमैं औट्यो सुठि नीको अरु मिठाई रुचि करि अचवत क्योंन नन्हैया । बहुत जतन करिकरि राख्यो ब्रजराज लडैते तुम कारण बल भैया ॥ फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति आनँद उर न समैया । सूरदास प्रभु पय पीवत बलराम श्याम दोऊ जननी लेत बलैया ॥ २ ॥

बल मोहन दोऊ अलसाने । कछुक खाय दूध लै अचयो मुख जँभात जननी जिय जाने ॥ उठहु लाल कहि मुख पखरायो तुमको लै पौढ़ाऊँ । तुम सोवहु मैं तुमहिं सुवाऊँ कछु मधुरे सुर गाऊँ ॥ तुरत जाय पौढे दोनों भैया सोवत आई नीद । सूरदास यशुमति सुख पावति पौढे बालगोविंद ॥ ३ ॥

माखन बाल गोपालहि भावै । भूखे छिनुन रहत मन मोहन ताहि बदौं जो गहरु लगावै ॥ आनि मथानी दह्यो बिलोये जौलगि लालन उठन न पावै । जागतही उठि रारि करत अति नहिं मानै जो इंदु मनावै ॥ हौं यह जानति बानि श्यामकी अँखियां मीचै वदन चलावै । नन्दसुवनकी लागै बलैया यह जूठनि कछु सूरज पावै ॥ ४ ॥

राग विलावल ॥ भोर भयो मेरे लाडिले जागौं कुँवर कन्हाई । सखा द्वार ठाढ़े सबै खेलौ यदुराई ॥ मोको मुख देखराबहु त्रयताप निवारहु । तुव मुख चन्द्र चकोर नैन मधु पान करावहु ॥ तब हरि पट मुख दूरिकै भक्तन सुखकारी । हँसत उठे प्रभु सेजते सूरज बलिहारी ॥ ५ ॥

राग विलावल ॥ भोर भयो जागौ नँदनंदन । संग सखा ठाढे जगवंदन ॥ सुरभी पय हित बच्छ पियावै । पंछी तरु तजि दुहुँदिश धावै ॥ अरु नगगन तमचुरनि पुकारे । शिथिल धनुक रतिपति गहि डारे ॥ निशनि घटी रवि रथ रुचि साजी । चंद मलिन चकई रति राजी ॥ कुमुदिनि सकुची वारिज फूले । गुंजत फिरत अलीगन झूले ॥ दरशन देहु मुदित नरनारी । सूरज प्रभु दिन देव मुरारी ॥ ६ ॥

राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग । नन्दलाल निहारि शोभा निरखि थकित अनंग ॥ चरणकी छबि निरखि डरप्यो अरुन गगन छपाइ ॥ जनु रंभाकी सबै छबि निदरि लई छडाइ ॥ युगल जंघनि खम्भ रंभा नहिन सम सरि ताहि । कटि निरखि केहरि लजाने रहे वन घन चाहि ॥ हृदय हरिनख अति बिराजति छबि न वरनी जाइ । मनौं बालक वारिधर नव चन्द्र लई छपाइ ॥ मुकुतमाल विशाल उरपर कछु कहौं उपमाइ । मनौं तारागनन पृष्ठित गगन रह्यो छपाइ ॥ अधर अरुन अनूप नासा निरखि जनसुखदाइ । मनौ शुक

फल बिंब कारन लेन बैठो आइ ॥ कुटिल अलक बिना बिपिनके मनौं अलि शशि-जाल। सूर प्रभुकी ललित शोभा निरखि रही ब्रजबाल ॥ ७ ॥

राग सारङ्ग ॥ न्हात नंद सुधिकरी श्यामकी ल्यावहु बोलि कान्ह बलराम ॥ खेलत कान्ह वार बडि लागी ब्रज भीतर काहूके धाम ॥ मेरे संग आइ दोउ बैठें उन बिनु भोजन कौने काम। यशुमति सुनत चली आतुर ह्वै ब्रज घरघर टेरत लै नाम ॥ आजु अबेर भई कहुँ खेलत बोलिलेहु हरिको कोउ वाम। ढूँढि फिरी नाहिं पावत हरिको अति अकुलानी आवत धाम ॥ बारबार पछिताति यशोदा वासर बीति गए युग याम। सूर श्यामको कहूँ न पावत देखे बहु बालक इक ठाम ॥ ८ ॥

राग सारङ्ग ॥ कोउ माई बोलि लेहु गोपालहि। मैं आवनको पंथ निहारति खेलत बेर भई नँदलालहि ॥ हेरत बेरबडीभई मोकहुँ नाहिं पावत घनश्याम तमालहि। सिध जेंवन सिरात नँद बैठे ल्यावहु बोलि कान्ह ततकालहि ॥ भोजन करहिं नँद सँग मिलिकै भूँख लगी ह्वैहै मेरे बालहि। सूर श्याम मग जोवति यशुदा आइ गए सुनि वचन रसालहि॥९॥

राग नटनारायण ॥ हरिको टेरतहै नँदरानी। बहुत अबार कतहुँ खेलत भइ कहां रहे मेरे शारंगपानी ॥ सुनत हि टेर दौरि तहँ आए कबके निकसे लाल। जेंवत नहीं नंदजू तुम बिनु बेगि चलो गोपाल ॥ श्यामहि ल्याई महरि यशोदा तुरतहि पाँइ पखारे। सूर-दास प्रभु संग नंदके बैठे हैं दोउ बारे ॥ २१० ॥

राग सारङ्ग ॥ जेंवत श्याम नंदकी कनियां। कछुक खात कछु धरणि गिरावत छबि निरखत नँदरनियाँ ॥ बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यञ्जन विविध अनगनियाँ। डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधिदनियां ॥ मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छबियनियां। आपुन खात नंदमुख नावत सो सुख कहत न बनियां ॥ जो रस नंद यशोदा बिलसत सो नहिं तिहूं भुवनियां। भोजन करि नंद अचवन कियो मांगत सूर जुठनियां ॥ ११ ॥

राग कान्हारो ॥ बोलि लेहु हलधर भैयाको। मेरे आगे खेल करौ कछु नैननि सुख दीजे मैयाको ॥ मैं मूंदौं हरि आंखि तुम्हारी बालक रहैं लुकाई। हरषि श्याम सब सखा बुलाए खेलो आंखि मुंदाई ॥ हलधर कहै आंखि को मूंदे हरि कह्यो जननि यशोदा। सूर श्याम लिये जननि खेलावति हर्ष सहित मनमोदा ॥ १२ ॥

राग गौरी ॥ हरि तब आपनि आंखि मुंदाई। सखा सहित बलराम छपाने तहं जहं गए भगाई ॥ कान लागि कह जननि यशोदा वा घरमें बलराम। बलदाऊको आव न दे हौं श्रीदामासों है काम ॥ दौरि-दौरि बालक सब आवत छुवत महरिके गात। सब आए रहे सु बल श्रीदामा हारे अबके तात ॥ शोर पारि हरि सुबलहि धाए गह्यो श्रीदामा जाइ। दैदै सौंहैं नंद बबाकी जननीपै लैआइ ॥ हंसि हंसि तारी देत सखा सब भए श्रीदामा चोर। सूरदास हंसि कहति यशोदा जीत्यो है सुत मोर ॥ १३ ॥

राग केदारो ॥ चलो लाल कछु करो बियारी। रुचि नाहीं काहूपर मेरे तू कहि भोजन करयो कहारी ॥ बेसन मिलै उरस मैदासों अति कोमल पूरी है भारी। जेंवहु श्याम

मोहिं सुख दीजै तातै करी तुमहिं पियारी ॥ निंबुवा चूरन आंब संधानो और करौंदनकी रुचि न्यारी । बार बार तूँ कहति यशोदा कहिल्याए रोहिणि महतारी ॥ जननी सुनत तुरत लैआइ तनक तनक धरि कंचनथारी । सूर श्याम कछु कछु लै खायो जल अचयो अरु वदन पखारी ॥ १४ ॥

पौढिए लाल मैं रचि सेज बिछाई । अति उज्ज्वल है सेज तुम्हारी सोवत सुखदाई ॥ खेलत तुम निशि अधिक गई सुत नैननि नींद झमाई । वदन जंभात अंग ऐंडावत जननी पलोटत पांई ॥ मधुरे सुर गावत केदारो सुनत श्याम चित लाई । सूर श्याम प्रभु नंद-सुवनको नींद गई तब आई ॥ १५ ॥

राग सारङ्ग ॥ खेलन जाहु बाल सब टेरत । यह सुनि कान्ह भए अति आतुर द्वारे तन फिरि हेरत ॥ बारबार हरि मातहि कहि कह मेरी चौगान कहां है । दधिमथनीके पाछे देखो लै मैं धरी तहां है ॥ लै चौगान बटाकर आगे प्रभु आए जब बाहर । सूर श्याम पूंछत सब ग्वालन खेलौगे केहि ठाहर ॥ १६ ॥

खेलत बैन घोष निकास । सुनहु श्याम तुम चतुर शिरोमणि इहां है घर पास ॥ कान्ह हलधर वीर दोऊ भुजाबल अतिजोर । सुबल श्रीदामा और सुदामा वै भए इक ओर ॥ और सखा बटाइ लीन्हें गोप बालक वृंद । चले ब्रजकी खोरि खेलन अति उमंग नंद-नंद ॥ बटा धरणी डारदीनों लेचले ढरकाइ । आपु अपनी घात निरखत खेल जम्यो बनाइ ॥ सखा जीतत श्याम जाने तब करी कछु पेल । सूरदास तब कहत सुदामा कौन ऐसो खेल ॥ १७ ॥

खेलतमें को काको गोसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा बरबसही कत करत रिसैयां ॥ जाति पांति हमते कछु नाहि न बसत तुम्हारी छहियां । अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे हैं कछु गइयां ॥ रुहठि करैं तासों को खेलै रहे पौढि जहां तहां सब ग्वैयां । सूरदास प्रभु खेलोई चाहत दांव दबो करि नंददोहैयां ॥ १८ ॥

राग कान्हरो ॥ आवहु कान्ह साँझकी बिरियां । गाइन मांझ भएहौ ठाढे कहत जननि यह बड़ी कुबेरियाँ ॥ लरिकांई कहुं नेक न छांडत सोइरहो सुथरीं सेजरियां । आए हरि यह बात सुनतहीं धाइ लिये यशुमति महतरियां ॥ लैपौढी आंगनही सुतको छिटकिरही आछी उजियरियां । सूरदास कछु कहत कहतही वश करि लिए आइ निदरियां ॥१९॥

आंगनमें हरि सोइगयो री ॥ दोउ जननी मिलिकै हरुये करि सेज सहित तब भवन लियो री ॥ नेक नहीं घरमें बैठत है खेलहिके अब रंग रए री । बिधि श्याम कबहूं नाहिं सोए बहुत नींदके वशहि भए री ॥ कहत रोहणी सोवन देह न खेलत दौरत हारि गए री । सूरदास प्रभुको मुख निरखत यह छबि नितनित होत नए री ॥ २२० ॥

अथ ब्राह्मणको प्रस्ताव ॥ राग धनाश्री ॥ महरानेते पांडे आयो । ब्रज घर घर बूझत नंदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठि धायो ॥ पहुंच्यो आइ नंदके द्वारे यशुमति देखि अनन्द बढायो । पाय धोइ भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो ॥ जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहि अति हर्ष बढ़ायो । वयसि बड़ी

विधि भयो दाहिनो धनि यशुमति ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाइ दूध लैंआई पांडे रुचिकै खीर चढ़ायो । घृत मिष्टान खीर मिश्रित करि परुसि कृष्ण हित ध्यान लगायो ॥ नैन उघारि विप्र जो देखै खात कन्हैया देखन पायो । देखो आइ यशोदा सुतकृत सिद्ध पाख इहि आइ जुठायो ॥ महरि बिनय दोऊ कर जोरे घृत मिष्टान पय बहुत मँगायो । सूर श्याम कत करत अचगरी बारबार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ २१ ॥

रामकली ॥ पांडे नहिं भोग लगावन पावै । करि करि पाक जबै अर्पत है तबहिं तबहिं छै आवै ॥ इच्छा करि मैं ब्राह्मण न्योत्यौं तू गोपाल खिझावै । वह अपने ठाकुरहि जेंवावत तू ऐसे उठि धावै ॥ जननी दोष देहु जनि मोको करि बिधान बहु ध्यावै । नैन मूँदि कर जोरि नाम लै बारहि बार बुलावै ॥ कह अंतर क्यों होइ भक्तको जो मेरे मन भावै । सूरदास बलि हौं ताकी जो जन्म पाइ यश गावै ॥ २२ ॥

राग बिलावल ॥ सफल जन्म प्रभु आजु भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल दीनबंधु मोहिं दरश दियो । बारंबार नंदके आंगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जानेको जानै कहि भेष जँयो । सूरदास प्रभु भक्तहेत वश यशुमति हित अवतार लयो ॥ २३ ॥

राग धनाश्री ॥ अहो नाथ जेइ जेइ तेरे शरण आए तेइ तेइ भए पावन । महापतित कुल तारन एक नाम अध जारन दुख विसरावन ॥ मोते को हो अनाथ दरशनते भयो सनाथ देखत नैनजुडावन । भक्तहेत देह धरण पुहुमीको भार हरण जन्म जन्म जन मुक्तावन ॥ अशरन शरन दीनबंधु यशुमति सुखकारन देहधरावन । द्दितके चितकी मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभुमनभावन ॥ २४ ॥

राग बिलावल ॥ मया करिये कृपाल प्रतिपाल संसारउदधि जंजालते पारपारं । काहूके ब्रह्मा काहूके महेश काहूके गणेशप्रभु मेरे तौ तुमहि आधारं ॥ दीनदयालु कृपाकरि मोको यह कहि कहि लोटत बार बारं । सूरश्याम अंतर्यामी स्वामीहो जगतके कहा कहौं करो निरवारं ॥ २५ ॥

अथ माटीको प्रसंग राग बिलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहर ब्रज लरिका सोहत सँग जोरी । जैसेइ आपु तैसेई लरिका सब अति अज्ञ सबनि मति थोरी ॥ गावत हांक देत किलकारत दुरि देखत नँदरानी अति पुलकित गदगद मृदुवानी मन मन महरि सिहानी ॥ माटी लै मुख मेलिदई हरि तबहिं यशोदा जानी । साँटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लँगरई ठानी ॥ लरिकनको तुम सबदिन झुठवत मोसों कहा कहोगे । मैया मैं माटी नहिं खाई मुख देखे निबहोगे ॥ वदन उघारि देखायो त्रिभुवन वन घन नदी सुमेर । नभ शशि रवि मुखभीतर है सबसागर धरनी फेर ॥ यह देखत जननी जिय व्याकुल बालकमुख का आहि । नैन उघारि वदन हरि मूँद्यो माता मन अवगाहि ॥ झूठे लोग लगावत मोको माटी मोहिं न सुहावै । सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन इह भावै ॥ २६ ॥

राग धनाश्री ॥ मोहन काहे न उगिलो माटी । बारबार अनरुचि उपजावत महरिहाथ लिये साँटी । महतारीको कह्यो न मानत कपट चतुरई ठाटी । वदन पसारि दिखाइ आपनो नाटककी परिपाटी ॥ बड़ी बार भई लोचन उघरे भ्रम या मनकी फाटी । सूरदास नँदरानि भ्रमित भई कहत न मीठी खाटी ॥ २७ ॥

रामकली ॥ मो देखत यशुमति तेरे ढोटा अबहीं माटी खाई । इह सुनिकै रिस करि उठि धाई बांह पकर लैआई ॥ इक करसों भुज गहि गाढेकरि इककर लीने साँटी । मारतिहों तोहि अबहि कन्हैया वेगि न उगलो मांटी ॥ ब्रजलरिका सब तेरे आगे झूठी कहत बनाई । मेरे कहे नहीं तू मानत दिखरावो मुख बाई ॥ अखिल ब्रह्मांडखंडकी महिमा देखरायो मुखमाहीं । सिंधु सुमेरु नदी वन पर्वत चकृत भई मनमाहीं ॥ करते साँटि गिरत नहिं जानी भुजा छांडि अकुलानी । सूर कहै यशुमति मुख मूँदहु बलि गइ शारँगपानी ॥ २८ ॥

राग सारंग ॥ नंदहि कहति यशोदा रानी । माटीके मिस मुख देखरायो तिहूँलोक रजधानी ॥ स्वर्ग पताल धरनि वन पर्वत वदनमांझ रहे आनी । नदी सुमेरु देखि चकृत भाई याकी अकथ कहानी ॥ चितैरहे तब नंद युवतिमुख मन मन करत विनानी । सूरदास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह वानी ॥ २९ ॥

राग बिलावल ॥ कहत नंद यशुमति सुन बौरी । ना जानिये कहाँ तैं देख्यो मेरे कान्हहि लावति सौरी ॥ पाँचवर्षको मेरो कन्हैया अचरज तेरी बात । बेही काज साँटि लै धावति ता पाछे बिललात ॥ कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात सूर श्यामको कहा लगावति बालक कोमल गात ॥ २३० ॥

राग बिलावल ॥ देखौ रे यशुमति बौरानी । घरघर हाथ दियावत डोलत गोद लिये गोपाल बिनानी ॥ जानत नाहिं जगतगुरु माधो यहि आये आपदा नशानी । जाको नाव शक्ति पुनि ताकी ताही देत मंत्र पढ़ि पानी ॥ अखिल ब्रह्माँड उदर गति जाकी जाकी ज्योति जल थलहि समानी । सूरसकल साँची मोहिं लागत जो कछु कही मुखगर्ग कहानी ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री ॥ गोपालराइ हो चरननिह हौं काटी । हम अबला रिस बाँचि न जानी बहुत लागि गइ साँटी ॥ वारौं कर जु कठिन अति कोमल जरहु नयन जिन डाटी । मधु मेवा पकवान छाँडिकै काहे खात लाल तुम माटी ॥ सिगरोई दूध पियो मेरे मोहन बलहि न देवहु बाँटी । सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लालकी नाटी ॥ ३२ ॥

अथ माखनचोरी प्रथम ॥ गौरी ॥ मैया री मोहिं माखन भावै । मधु मेवा पकवान मिठाई मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ ब्रज युवती इक पाछेठाढ़ी सुनति श्यामकी बात । मन मन कहति कबहुँ मेरे घर देखौं माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग मैं तब रही छिपानी । सूरदास प्रभु अंतरयामी ग्वालि मनहिंकी जानी ॥ ३३ ॥

गौरी ॥ गए श्याम तिहि ग्वालिनिके घर । देख्यो जाइ द्वार नहिं कोई इत उत चितै चले घरभीतर ॥ हरि आवत गोपी तब जान्यो आपुन रही छिपाई । सूने सदन मथनियांके ढिग बैठिरहे अरगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लैलै लागे खान । चितैरहत मणिखंभ

छाँहतन तासों करत सयान ॥ प्रथम आजुमैं चोरी आयो भल्यो बन्योहै संगु । आपु खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंगु ॥ जो चाहो सब देउँ कमोरी अतिमीठो कत डारत । तुमहि देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुनि सुनि बातैं श्यामसुँदरकी उमँगि हंसि ब्रजनारि । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारि ॥ ३४ ॥

फूली फिरति ग्वालि मनमें री । पूछति सखी परस्पर बातैं पायो परचो कछुकहै तैंरी ॥ पुलकित रोम रोम गदगद मुख वाणी कहत न आवै । ऐसो कहा आहि सो सखिरी मोको क्यों न सुनावै ॥ तनु न्यारो जो एक हमारो हम तुम एकै रूप । सूरदास कहै ग्वालि सखीसों देख्यो रूप अनूप ॥

राग गूजरी ॥ आजु सखी मणिखंभनिकट हरि जहाँ गोरसको गोरी । निजप्रतिबिंब सिखावत ज्यों शिशु प्रगट करै जिनि चोरी ॥ आध विभाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी । माखन खाहु कितहि डारत हौ छाँडिदेहु मति भोरी ॥ हिसा न लेहु सबै चाहतहौ इहै बात है थोरी । मीठो अधिक परम रुचि लागै देहौं काढि कमोरी ॥ प्रेम उमंगि धीरज न रह्यो तब प्रगट हंसी मुखमोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख कुंज गहि खोरी । ३५ ॥

राग बिलावल ॥ प्रथम करी हरि माखन चोरी । ग्वालिन मन इच्छा करि पूरण आपु भजे हरि ब्रजकी खोरी ॥ मनमें इहै विचार करत हरि ब्रज घर घर सब गाऊं । गोकुल जन्म लियो सुखकारण सबकर माखन खाऊं ॥ बाल रूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिलि सुख भोगू । सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों घेरो रे ब्रज लोगू ॥ ३६ ॥

राग रामकली ॥ करत हरि ग्वालनसंग विचार । चोरि माखन खाहु सब मिलिकरो बालबिहार ॥ यह सुनत सब सखा हर्षे भली कही कन्हाइ । हंसि परस्पर देत तारी सौंह करि नंदराइ ॥ कहां तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान ॥ सूर प्रभु मिल ग्वालबालक करत हैं अनुमान ॥ ३७ ॥

राग गौरी ॥ सखासहित गए माखन चोरी । देख्यो श्याम गवाक्षपंथ ह्वै गोपी एक मथति दधि भोरी ॥ हेरि मथानी धरी माटते माखन हौं उतरात । आपुन गई कमोरी मागन हरिहू पाई घात ॥ पैठे सखनसहित घर सूने माखन दधि सब खाई । छूंछिछांडि मटुकिया दधिकी हंसि सब बाहिर आई ॥ आइगई कर लिये मटुकिया घरते निकरे ग्वाल । माखन कर दधि मुख लपटानो देखि रही नंदलाल ॥ काहे आजु ब्रजबालक संगलै माखन कर दधि मुख लपटानो । देखतते उठि भजो सखा एक इहि घर आई छिपानो ॥ भुज गहिलियो कान्ह इक बालक निकरे ब्रजकी खोरि । सूरदासप्रभु ठगिरही ग्वालिनिमनुहरिलियो अजोरि ॥ ३८ ॥

राग गौरी ॥ चकित भई ग्वालिनितन हेरचो । माखन छांडि गई मथि वैसहि तबते कियो अबेरचो ॥ देखौ जाइ मटुकिया रीतीमैं राख्यौ कहुं हेरी । चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूंढति घर फिरि फेरी ॥ देखति पुनिपुनि वरके वासन मन हरिलियो गोपाल । सूरदास रसभरी ग्वालिनी जानै हरिके ख्याल ॥ ३९ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रजघर घर प्रगटी यह बात । दधि माखन चोरीकै लै हरि ग्वालसखा संग खात ॥ ब्रजवनिता यह सुनि मन हर्षी सदन हमारे आवैं । माखन खात अचानक पावैं भुज भरि उरहि छुवावैं ॥ मनही मन अभिलाष करत सब हृदय करत यह ध्यान । सूरदास प्रभुको घरते लै देहौं माखन खान ॥ २४० ॥

राग सारंग ॥ गोपालहि माखन खानदै । सुनुरी सखी कोऊ जिनि बोलै वदन दही लपटानदै ॥ गहि बहियां हौं लैके जैहौं नयनन तपति बुझानदै । वापै जाइ चौगुनौ लेहौं मो यशुमति लौं जानदै ॥ तुम जानति हरि कछुव न जानत सुनत मनोहर कानदै । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको राखोंगी तन मन प्रानदै ॥ ४१ ॥

राग कान्हरो ॥ चली ब्रज घरघरनि यह बात । नंदसुत संग सखा लीने चोरि माखन खात ॥ कोउ कहति मेरे भवनभीतर अबहिं पैठे धाइ । कोउ कहति मुहि देखि द्वारे गयउ ताहि पराइ ॥ कोउ कहति केहि भाँति हरिको देखों अपने धाम । हेरि माखन देउं आछो खाहि जितनो श्याम ॥ कोउ कहति मैं देखिपाऊं भरि धरौं अंकवारि । कोउ कहति मैं बांधिराखौं को सकै निरवारि ॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि विचार । जोरि कर बिधिको मनावति पुरुष नन्दकुमार ॥ ४२ ॥

राग कान्हरो ॥ ग्वालनिघर गये जानि सांझकी अन्धेरी । मंदिरमें गये समाइ श्यामलतनु लखि न जाइ, देह गेह रूप कहौ को कहै निवेरी ॥ दीपक गृह दान करचो भुजा चारि प्रगट धरचो, देखत भई चकृत ग्वालि इत उतको हेरी । श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल, मनमोह्यो नंदलाल बलहि बूझेरी ॥ युवति अति भइ विहाल भुज भरिदै अंकमाल, सूरज प्रभु अति कृपाल डारचो मन फेरी । करसों कर लै लगाइ महरिपै गई लिवाय आनँद उरमें न समाय बात है अनेरी ॥ ४३ ॥

राग कल्याण ॥ यशुमति धौं देखि आनिआगेह्वै लेपिछानि बहियाँ गहिल्याई कुँवर औरको कि तेरो । अबलौं मैं करी कानि सही दूध दही हानि, अजहूं जियजानि मानि कान्हहै अनेरो ॥ दीपक मैं धरचो बारि देखत भुज भये चारि, हारी हौं धरति करति दिन दिनको झेरो । देखियत नहिं भवनमांझ तैसोइ तनु तैसि साँझ छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो ॥ गोरस तनु छीटरही शोभा नहिं जात कही, मानौं जलयमुन बिंब उडगन पथुफेरो । उरहनौं दिन देउँ काहिका हेतू इतनो रिसाइ, नाहीं ब्रजबास सासु ऐसी बिधि मेरो ॥ गोपी निरखति सुमार यशुमतिको है कुमार, भूली भ्रम रूपमानौ आनि कोऊ हेरो । मनमन विहँसत गोपालभक्तपाल दुष्टशाल, जानै को सूरदास चरित कान्हकेरो ॥ ४४ ॥

राग गौरी ॥ देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे । तबइक बुद्धिरची अपने मन भीतर साँझ परे पिछवारे ॥ सूने भवन कहूँ कोउ नाहीं मनौ याहिको राजू । भाँडे धरतु उघारतु मूदतु दधिमाखनके काजू ॥ रैनि जमाइ धरचो सो गोरस परचो श्यामके हाथ । लैलै खात अकेले आपुन सखा नहीं कोउ साथ ॥ आहट सुनि युवती घर आई देख्यो नंदकुमार । सूरश्याममंदिर अँधियारे निरखत बारंबार ॥ ४५ ॥

अँधियारे घर श्याम रहे दुरि । अबहीं मैं देख्यो नँदनंदन चरित भयो मनहीमन झुरि ॥ पुनिपुनि चक्रत होति अपनेजी कैसीहै यह बात । मटुकीके ढिग बैठिरहे हरि करैं आपनी घात ॥ सकल जीउ जलथलके स्वामी चींटी दई उपाइ । सूरदास प्रभु देखि ग्वालिनी भुज पकरे तब आइ ॥ ४६ ॥

श्याम कहा चाहतसे डोलत । बूझेहूते वदन दुरावत सूधे बोल न बोलत ॥ सूने निपट अँध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ । अब कहि कहा बनैहौ उत्तर कोऊ नाहिन साथ ॥ मैं जान्यो यह घर अपनो है या धोखे मैं आयो । देखतुहौं गोरसमें चींटी काढनको कर नायो ॥ सुनि मृदु वचन निरखि मुख शोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी । सूरश्याम तुम हो रतिनागर बात तिहारी जानी ॥ ४७ ॥

राग सारंग ॥ यशोदा कहां लौं कीजै कानि । दिनप्रति कैसे सही परतिहै दूध दहीकी हानि ॥ अपने या बालककी करनी जो तुम देखो आनि । गोरस खाइ ढूँढि सब बासन भली करी यह बानि ॥ मैं अपने मंदिरके कोने माखन राख्यो जानि । सोई जाइ तुम्हारे लरिका लीनोंहै पहिचानि ॥ बूझी ग्वालिनि घरमें आयो नेकुन शंका मानी । सूरश्याम तब उतर बनायो चींटी काढतु पानी ॥ ४८ ॥

राग गौरी ॥ आप गए हरुए सूने घर । सखा सबहिं बाहरही छांडे देख्यौ दधि माखन हरि भीतर ॥ तुरत मथ्यो दधि माखन पायो लैलै खात धरत अधरनिपर । सैनहु दै सब सखा बुलाए तिनहिं देत भरि भरि अपने कर ॥ छिटकिरहीं दधिबूँद हृदयपर इत उत चितवत करि मनमें डर । उठत ओटते लेत सबनि लै पुनिलै खात देत ग्वालिनि वर ॥ अंतरभई ग्वालि यह देखति मगन भई अति उर आनँद भरि । सूरश्यामसुख निरखि थकित भइ कहत न बनै रही मनमें धरि ॥ ४९ ॥

राग धनाश्री ॥ गोपाल दुरेहैं माखन खात । देखि सखी शोभा जु बनी है श्याम मनोहरगात ॥ उठि अवलोकि ओट ठाढ़े ह्वै जिहि बिधिहै लखिलेत । चकृतवदन चहूंदिशि चितवत और सखनको देत ॥ सुन्दर कर आनन समीप अति राजत इहि आकार । मनौ सरोज विधुबैर बंचि करि लिये मिलत उपहार ॥ गिरिगिरि परत वदनके ऊपर द्वै दधिसुतके बिंदु । मानहु सुभग सुधाकन बरषत बिजमौ आगम इंदु ॥ बालविनोद विलोकि सूर प्रभु शिथिल भई ब्रजनारी । फुरै न वचन बरजिबे कारन रही बिचारि बिचारि ॥ २५० ॥

राग सारंग ॥ ग्वालिनि जो घर देखे आइ । माखन खाइ चुराइ श्यामतब आपुन रह्यो छपाइ ॥ ठाढ़ीभई मथनियांके ढिग रीती परी कमोरी । अबहि गई आई इन पांइनि लैगयो को करि चोरी ॥ भीतर गई तहां हरिपाए श्याम रहे गहि पाई । सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाई ॥ ५१ ॥

राग गौरी ॥ जो तुम सुनहु यशोदा गोरी । नंदनंदन मेरे मंदिरमें आजु करन गए चोरी ॥ हौं भई आनि अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें को री । रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहज मति भोरी ॥ जब बांह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी । लागे लै नैनन भरि

आंसू तब मैं कान न तोरी ॥ मोहिं भयो माखनको संशय रीती देखि कमोरी । सूरदास प्रभु देत दिनहुं दिन ऐसी लरिकसलोरी ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ जानि जु पाए हौहरि नीके । चोरि चोरि दधि माखन मेरो नितप्रति गीधिरहे या छींके ॥ रोयो भवनद्वार ब्रजसुन्दरि नूपुर मूंदि अचानक हीके । अब कैसे जैयतु अपने बल भाजत दूध दही मेरो पीके ॥ सूर श्याम प्रभु भले परे फँद देउँ न जान भावते जीके । भरि गंडूक छिरकदै नैननि गिरिधर भागि चले दै कीके ॥ ९३ ॥

राग रामकली ॥ माखनचोर री मैं पायो । जु कही सखीहो तु कहाहै भाजन लगत झुझायो ॥ जौ चाहौ तौ जान क्यों पैये बहुत दिननुहै खायो । बारबार हौं ढूंका लागी मेरी घात न आयो ॥ नोईनेतकी करौं चमोटी घूँघटमें डरवायो । बिहँसत निकसि रहीं दोदँतियाँ तब लै कंठ लगायो ॥ मेरे लालको मारिसकै को रोहिनि गहि हलरायो । सूरदास प्रभु बालकलीला विमल विमल यश गायो ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ देखि ग्वालिनि यमुना जात । आपु ता घर गए पूँछत कौन है कहि बात ॥ जाइ देखे भवनमहियाँ ग्वालबालक दोइ । भीर देखत अति डेराने दुहूँ दीनो रोइ ॥ ग्वाल के काँधे चढे तब लिए छींके उतारि । दह्यो माखन खात सब मिलि दूध दीनो ढारि ॥ बच्छ लै सब जोरिदीने गए बन समुदाइ । छिरकि लरिकनु दहीसों भरि ग्वाल दीनै चलाइ ॥ देखि आवत सखी घरको सखा गए सब दौरि । आनि देखे श्याम घरमें भई ठाढी पौरि ॥ प्रेम अंतर रिस भरयो मुख युवति बूझति बात । चितै मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात ॥ अतिहि रिसवस भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि । सूर प्रभु भुजगहे ल्याई महरिसों अनुहारि ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ महरि तुम मानौ मेरी बात । ढूँढि ढूँढि गोरस सब घरको हरचो तुम्हारे तात । और काढि सींकेते लीनो ग्वाल कँधा दै लात । असंभाषु बोलन आई है ढीठ ग्वालिनी प्रात ॥ चाखन नहीं दूध धौरीको तेरे कैसे खात । औरो कहति कछू सकुचति हौं कहा दिखाऊं गात ॥ ऐसो तौ मेरो नाहिं अचगरो कहा बनावति बात । चितवत चकित ओट भए ठाढे यशुदातन मुसुकात ॥ हैं गुण बड़े सूरके प्रभुके ह्यां लरिका ह्वैजात ॥ ९६ ॥

राग गौरी ॥ साँवरेहि बरजति क्यों जु नहीं । कहा करौं दिन प्रतिकी बातैं नाहिन परत सही ॥ माखन खात दूध लै डारत लेपत देह दही । तापाछे घरहूके लरिकनु भाजत छिरकि मही ॥ जो कछु धरहिं दुराय दूर लै जानत ताहि तँही । सुनहु महरि तेरे यासुतसों हम पचिहारि रही ॥ चोर अधिक चतुराई सीखी जाइ न कथा कही । तापर सूर बछरु बनि ढीलत बन बन फिरत बही ॥ ९७ ॥

राग कान्हरो ॥ अब ये झूठेहु बोलत लोग । पांच बरष अरु कछुक दिनिनिको कब भयो चोरी योग ॥ इहि मिस देखन आवति ग्वालिनी मुँह फाटे जुगवारी । अनदेखेको दोष लगावति दई देइगो टारी ॥ कैसेकरि याकी भुज पहुँची कौन वेग ह्यां आयो । ऊखल ऊपर आनि पीठ धरि तापर सखा चढ़ायो ॥ जो न पत्याहु चलो सँग यशुमति देखो नयन निहारी । सूरदास प्रभु नेकु न बरजो मनमें महरि बिचारी ॥ ९८ ॥

मेरो गुपाल तनकसो कहा करि जानै दधिकी चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिनि जीभुन करही थोरी॥ कब सींके चढ़ि माखन खायो कब दधिमटुकी फोरी। अँगुरिन करि कबहूं नहिं चाखतु घरही भरी कमोरि॥ इतनी सुनत घोषकी नारी बिहँसि चलीं मुख मोरि। सूरदास यशुदाको नंदन जो कछु करै सु थोरी॥ ५९॥

राग कान्हरो॥ इनु अँखियनुआगेते मोहन एकौ पल जिनि होहिं नियारे। हौं बलि गई दरश देखे बिनु तलफत हैं नैननिके तारे॥ आनों सखा बुलाय आपने यहि आँगन खेलौ मेरे बारे। निरखति रहौं फणिककी मणि ज्यों सुंदर श्यामविनोद तिहारे॥ मधु-मेवा पकवान मिठाई खाटे मीठे व्यंजन खारे। सूरदास प्रभु जो मन इच्छा सोइ सोइ माँगिलेहु मेरे प्यारे॥ २६०॥

राग नटनारायण॥ मेरे लाडिलेहो जननि कहत जानिजाहु कहूं। तेरेहि काजे गुपाल सुनहु लाडिले लाल राखे हैं भाजन भरि सुरस छहूं॥ काहेको पराये जाइकरै इतने उपाइ दूध दधी घृत मधु माखन तहूं। करति कछू न कानि बकतिहै कटुबानि निपट निलज बैन बिलखतहूं॥ ब्रजकी ढीठी ग्वारी हाटकी बेचनहारी सकुच नदेति गारी झगरिकहूं। कहाँ लौं मैं करौं रिस बकत धौं इही कृश इही मिससूर श्यामबदन चहूं॥ ६१॥

राग धनाश्री॥ चोरी करत कान्ह धीर पाये। निशिवासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हाथहि आये॥ माखन दधिमेरो सब खायो बहुत अचगरी कीन्ही। अब तौ आइ परेहौ ललना तुम्हें भले मैं चीन्ही॥ दोउ भुज पकरि कह्योकित जैहो माखन लेउँ मँगाइ। तेरीसों मैं नेकु न चाख्यो सखा गये सब खाइ॥ मुखतन चितै बिहँसि हँसिदीनो रिस तब गई बुझाइ। लियो उर लाइ ग्वालिनी हरिको सूरदास बलिजाइ॥ ६२॥

राग धनाश्री॥ मथति ग्वालि हरि देखा जाइ। गये हुते माखन की चोरी देखत छवि रहे नयन लगाइ॥ डोलत तनु शिर अंचलु उघरचो बेनी पीठि डोलत इहि भाइ। बदन इंदु पय पान करनको मनहुँ उरग उठि लागत धाइ॥ निरखि श्याम अंग पुनि शोभा भुज भरि धरि लीनो उर लाइ। चितै रही युवती हरिको मुख नयन सैनदै चितहि चुराइ॥ तन मन धन मति मति बिसराई सुख दीनो कछु माखन खाइ। सूरदास प्रभु रसिकशिरो मणि तुम्हरी लीला को कहै गाइ ६३॥

राग ललित॥ देख्यो हरि मथति ग्वालि दधि भेदसों ठाढी। यौवनमदमाती इतराती बेनी ढुरत कटिपर छवि बाढी॥ दिन थोरी भोरी अति कोरी देखतही जु श्याम भये चाढी। कर्षति है दुहुँकरन मथानी शोभाराशि भुजा गहि गाढी॥ इत उत अंग मुरति झकझोरति अँगिया बनी कुचनसों माढी। सूरदास प्रभु रीझि थकित भये मनहुँ काम साँचे भरि काढी॥ ६४॥

राग बिलावल॥ गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर। देखो जाइ मथत दधि ठाढी आपु लगे खेलन द्वारे पर॥ फिरि चितई हरि दृष्टि परि गए बोलि लिए हरुवे सूने घर। लिये लगाइ कठिन कुचके बिच गाढे चापि रही अपने कर॥ उमँगि अंग अँगिया उर दरकी

सुधि बिसरी तनकी तिहि औंसर । तब भये श्याम वरष द्वादशके रिझै लई युवती वा छबि पर । मन हरि लियो तनकसे ह्वै देखि रहीं शिशु रूप मनोहर । माखन लै मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागरवर ॥ ६५ ॥

ग्वालिनि उरहनके मिस आइ । नँदनन्दन तनु मनु हरि लीनो बिन देखे क्षण रह्यो न जाइ ॥ सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहौ किहि भांति बनाइ । चोली फारि हार गहि तोरचो इन बातन कहौ कौन बडाइ ॥ माखन खाय खवावत ग्वालन जो उबरचो सो दियो लुढाइ । सुनहु चोरी सहलीनी अब कैसे सहि जात ढिठाइ ॥ ६६ ॥

राग सारंग ॥ झूँठहिं मोहिं लगावति ग्वारि । खेलतमें मोहि बोलि लियो है दोउ भुज भरि दीनी अँकवारि ॥ मेरे कर अपने कुच धारति आपुहि चोली फारि । माखन आपुहि मोहि खवायो मैं कब दीन्हों ढारि ॥ कहा जानै मेरो बारो भोरो झुकी महरि दै दै मुख गारि । सूरश्याम ग्वालिनि मन मोह्यो चितै रही इक टकहि निहारि ॥ ६७ ॥

राग गौरी ॥ कबहिं करन गये माखन चोरी । जानति हौं जु कटाक्ष तिहारे कमलनयन मोरोइ तनक सो री ॥ दै दै दगा बुलाइ भुवनमें भेटति भुज भरि उरज कटोरी । उर नख चिह्न दिखावति डोलति कान्ह चतुरभये तू अति भोरी । मोघर आवत उरहन के मिस चितै रहति ज्यों चन्द्रचकोरी । सूरसनेह जात नहिं हटक्यो नैननि प्रीति जाति नहिं तोरी ॥ ६८ ॥

राग गौरी ॥ कहा कहौं हरिके गुण तोसों । सुनहु महरि अबहीं मेरे घर जे कीने मोसों ॥ मैं दधि मथति आपने मन्दिर गए तहां इहि भांति । मोसों कह्यो बात सुन मेरी मैं सुनिकै मुसुकाति ॥ बांह पकरि चोली गहि फारी भरि लीनी अँकवारी । कहत न बनैं सकुचकी बातैं देखौ हृदय उघारी ॥ माखन खाइ निदरि नीकी विधि इह तेरे सुतकी वात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सुकुचतनक ह्वै जात ॥ ६९ ॥

राग गौडमलार ॥ ग्वालिनी श्याम तनु देखती आपु तन देखिये । भीति जब होइ तब चित्र अवरेखिये ॥ कहां मेरो कुँवर है पांचही बरषको रोय अजहूँ पयपान मांगे । कहां तू ढीठ यौवन मद सुन्दरी फिरति अठिलाति गोपाल आगे ॥ कहां मेरे कान्हकी तनक सी आंगुली बड़े बड़े नखनिके चिह्न तेरे । मष्ट करु हँसैगो लोगु अँकवार भुज अहां पाए तैं श्याम मेरे ॥ टगटगै मुख झुकी नयनहूँ नागरी उराहनो देत रुचि अधिक बाढी । सुनहु सूर सर्वसु हरचो सांवरे अनउत्तर महरि ढिग देत ठाढी ॥ २७० ॥

राग गौरी ॥ कतहो कान्ह काहुके जात । ये सब बढी गर्व गोरसके मुख सँभारि बोलत नहिं बात ॥ जोइ जोइ रुचै सोइ सोइ तब मोपै मांगि लेहु किन तात । ज्यों ज्यों बचन सुन्यौ मुख अमृत त्यों त्यों सुख पावत सब गात ॥ कैसी टेव परी इन गोपिन उरहनके मिस आवति प्रात । सूर सकति हठि दोष लगावति घरहूको माखन नहिं खात ॥ ७१ ॥

राग बिलावल ॥ कान्हको ग्वालिनि दोष लगावति चोर । तनक दही माखनके कारण कबै गयो तेरी ओर ॥ तुम तो धन यौवनकी माती निलज भई उठि आवत भोर । लालकुँवर

मेरो कछू न जाने तूहै तरुणि किशोर ॥ कापर नयन चढाये डोलति या ब्रजमें तिनका सो तोर ।. सूरदास यशुदा अनखानी इह जीवन धनमोर ॥ ७२ ॥

राग देवगंधार ॥ कान्हहिं बरजति क्यों न नँदरानी ॥ एक गांवके बसत कहां लौ करौं नन्दकी कानी ॥ तुम जो कहत हो मेरो कन्हैया गंगाको सो पानी । बाहर तरुण किशोर बैस वर बाट घाटको दानी ॥ वचन विचित्र कमलदल लोचन कहत सरस वंर वानी । अचरज महरि तुम्हारे आगे आवै जीभ तुतरानी ॥ कहाँ मेरो कान्ह कहाँ तुम ग्वालिनि इह विपरीति न जानी । आवत सूर उरहनेके मिसु देखि कुँवर मुसुकानी ॥ ७३ ॥

राग धनाश्री ॥ माखन माँगत हैं यशुमतिसों । माता सुनत तुरत लै आई देति खवाइ मगन मन रतिसों ॥ मैया मैं अपने कर लैहौं धरिदे मेरे हाथ । माखन खात चले उठि खेलत सखा जुरे सब साथ ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आइ । सूर श्याम ता घरके पीछे बैठि रहे अरगाइ ॥ ७४ ॥

राग धनश्री ॥ मथुरा जात हौं बेंचन दधियो । मेरे घरको द्वार सखीरी तबलौं देखति रहियो ॥ दधि माखन द्वैमाठ कछूते सौंपतिहौं तुहि सहियो । और तौ डर नाहीं या ब्रजमें नंदसुवन सखि आवत लहियो ॥ ये शुभवचन निकट ह्वै मोहन सुनि करि उर सब गहियो । सूर पौंरिलौं गईन ग्वालिनि कूदि परयो दै धरियो ॥ ७५ ॥

राग नट ॥ देख्यो जाइ श्याम घर भीतर । अबहीं निकसि कहति भई सौ फिरि आई पुनि तुम्हरे डर ॥ सखा साथके चमकि गए सब गह्यो श्यामकर धाई । औरनि जानि जान मैं दीन्ह्यों तुम कहँ जाहु पराई ॥ बहुत अचगरी करत फिरतहौ मैं पाए करि घात । बाँह पकरि लैचली महरिपै करत रहत उतपात ॥ देखो महरि आपने सुतको कबहूँ नाहिं पत्याति । बैठे श्याम आपने भवनहिं चितै पछिताति ॥ बाँह पकरि तू ल्याई काको अति बेशरम गवाँरि । सूर श्याम मेरे खेलत यौवनमद मतवारि ॥ ७६ ॥

राग सारंग ॥ यशुदा तू जो कहतिही मोसों । दिनप्रति देन उरहनो आवति कहा तिहारे कोसों ॥ यहै उरहनो सत्य करनको गोविंदहि गहिल्याई । देखन चली यशोदा सुतको ह्वैगए सुता पराई ॥ तेरे हृदय नेक मति नाहीं वदन पेखि पहिचान्है । सुनरी सखी कहति डोलति है या कन्या सो कान्है । तैं जो नाम कान्ह मेरेको सूधो है करि पायो । सूरदास स्वामी यह देखौ तुरत त्रिया ह्वै आयो ॥ ७७ ॥

राग गौरी ॥ रही ग्वालि हरिको मुख चाहि । कैसे चरित किये हरि अबही बार बार सुमिरति करताहि ॥ बांह पकरि धरते लै आई कहा चरित कीन्हे हैं श्याम । जात न बनै कहत नहिं आवै कहत महरि तू ऐसी बात ॥ जानी बात तिहारी सबकी यशुमति कह्यो इहांते जाहि । सूरदास प्रभुके गुण ऐसे बुद्धि करी तब जीती ताहि ॥ ७८ ॥

राग गौरी ॥ श्याम गए ग्वालिनिघर सूनो । माखन खाइ डारि सब गोरस बासन फेरि सोरु हटि दूनो । बडो माट इक बहुत दिननिको तासु किय दश टूक । सोवत लरिकन छिरकि महिसों हँसत चले दैकूक ॥ आइगई ग्वालिनि तिहि औसर निकसत

हरि धरि पायो । देखत घर बासन सब फूटे दहीदूध ढरकायो ॥ दोउभुज धरि गाढे करिलीन्हे गई महरिके आगे । सूरदास अब बसै कौन ह्यां पतिरहिहै ब्रज त्यागे ॥ ७९ ॥

राग बिलावल ॥ ऐसे हाल कियो घरघरके । हौंलै आई तुम पास पकरिकै फोरे सब बासन घरके । दधि माखन खायो जो उबरयो सो डरयो रिस करिकै ॥ लरिका छिरकि महीसों देखो उपज्यो पूत सपूत महरिके । बडो माट घर धरयो युगनिको सोउ टूक पांच दश करिकै ॥ पारि सपाट चले तब पाये हौं ल्याई तुम पास पकरिकै । सूरदास प्रभुको यों राखो ज्यों राखिये गज मदको जकरिकै ॥ २८० ॥

राग कान्हरो ॥ करत कान्ह ब्रजघरनि अचगरी । खीझति महरि कान्हसो पुनिपुनि उरहन लै आवतिहैं िगरी ॥ बडे बापके पूत कहावत हम वै वास बसत इक नगरी । नंदहुते ये बडे कहैहैं फेरि बसैं हैं ये ब्रज नगरी ॥ जननीके खीझत हरि रोये झूठेहि मोहिं लगावत धगरी । सूरश्याम मुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ नित सब आवति उठि भोर । मेरे बारेहि दोष लगावत ग्वालिन यौव नजोर ॥ दूध दही माखनके कारण कब गयो तेरी ओर । धनमाती इतरानी डोलति सकुचति नाहिं करै अति शोर ॥ मेरो कन्हैया कहां तनकसो तू है कुचन कठोर । तेरे मनको इहाँ कौन है पायो आजु कटकको छोर ॥ कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं ब्रज तिनका तोर । सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातैं बसत कान्ह जीवन धन मोर ॥ ८२ ॥

राग नट ॥ मेरो माई कौनको दधि चोरै । मेरे बहुत दईको दीनो लोग पियत हैं औरै ॥ कहा भयो तेरे भवन गये जो पियो तनकुलैभोरै । ता ऊपर काहे गरजतिहौ मनो आई चढि धौरै माखन खाइ मह्यो सब धारयो बहुरो भाजन फोरै । सूरदास ये रसिक ग्वालिनी नेह नवल सँग जोरै ॥ ८३ ॥

राग रामकली ॥ अपनो गाउँ लेहु नँदरानी । बडे बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढावती बानी ॥ सखा भीर लै पैठत घरमें आपु खाइ तौ सहिये । मैं जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कह कहिये ॥ भाजि गये दुरि देखत कतहूँ मैं घर पौढी आई । हेर हेर बेनी गहि पाछे बांधी पाटी लाई ॥ सुनु मैया याके गुण मोसों इन मोहिं लियो बुलाई । दधिमें परी सेतिकी चींटी मोपै सबै कढाई ॥ टहल करत याके घरकी मैं इह पति सँग मिलि सोई । सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रही मुख गोई ॥ ८४ ॥

राग सारंग ॥ महरि तुम ब्रज चाहति कछु और ॥ बात एक मैं कहीकि नाहीं आपु लगावति झौर । जहां बसें पति नहीं आपनी तजन कह्यो सो ठौर ॥ सुतके भए बधाई पाई लोगन देखति हौर । कान्ह पठाइ देति घर लूटन कहत करौ या गौर ॥ ब्रज घर समुझि लेहु महरि जू हहा करति कर जोरि । सूर सुनत ग्वालिनिकी बातैं रहि यशुमति मुख मोरि ॥ ८५ ॥

लोगन कहति झुकति तू बौरी । दधि माखन गांठी दै राखत करनि फिरत सुत चोरी ॥ जाके घरकी हानि होत नित सो नहिं आन कहैरी । जाति पांतिके लोगन देखत और बसैहै

नेरी ॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि कृपण तू हैरी । सूर श्यामको जब जोइ भावै सोई तबहीं तू दैरी ॥ ८६ ॥

राग मलार ॥ महरि तैं बडी कृपण है माई । दूध दही विधिको है दीनो सुत डर धरति छिपाई ॥ बालक बहुत नाहिं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोलत माखन खात चुराई ॥ वृद्ध बसै पूरे पुण्यनिते तैं बहुतै निधि पाई । ताहूको खैबे पियबेको कहा करति चतुराई ॥ सुनहु न वचन चतुर नागरिके यशुमति नंद सुनाई । सूरश्यामको चोरीके मिस देखनकोरी आई ॥ ८७ ॥

राग नट ॥ अनत सुत गोरसको कत जात । घर सुरभी नव लाख दुधारी और गनी नहिं जात ॥ नितप्रति सबै उरहनेके मिस आवति हैं उठि प्रात । अनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात ॥ अतिहि निशंक विवादति सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात । मोसों कृपण कहत तेरे गृह ढोटाऊ न अघात ॥ करि मनुहारि उठाय गोदलै सुतको बरजति मात । सूर श्याम नित सुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ भाजिगये मेरे भाजन फोरी । लरिका सहस एक सँग लीने नाचत फिरत सांकरी खोरी ॥ माखन खाइ जगाइ बालकन्ह बनचर सहित बछरुवा छोरी । सकुच न करत फागुसी खेलत गारी देत हँसत मुख मोरी । बात कहौं तेरे ढोटाकी सब ब्रज बांध्यो प्रेमकी डोरी । टोनासी पढि नावत शिरपर जो भावत सो लेत अजोरी ॥ आपु खाय तो सब हम मानैं और न देत सिकहरो तोरी । सूर सुतहिं देखो नँदरानी अब तोरत चोली बँद जोरी ॥ ८९ ॥

राग नट ॥ श्याम सब भाजन फोरि पराने । हांक देत पैठत हैं पैला नेकु न मनहिं डेराने । सीके तोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाई । भवन मच्यो दधिकांदौ लरिकन रोवत पाये जाई ॥ सुनहु २ सबहिनके लरिका तेरोंसो कहुँ नाहीं । हाटन बाटन गलिन कहूं कोउ चलत नहीं डरुपाहीं ॥ ऋतु आयेको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फाग । रोकि रहत गहि गली सांकरी टेढी बांधत पाग । बारे ते सुत ये ढँग लाये मनही मनहि सिहात ॥ सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातैं सकुचि महरि पछितात ॥ २९० ॥

राग सारंग ॥ कन्हैया तू नहिं मोहिं डेरात । षटरस धरे छांडि कत पर घर चारो करि करि खात ॥ बकति बकति तोसों पचिहारी नेकहु लाज न आई । ब्रजपरगन सरदार महर तू ताकी करत नन्हाई ॥ पूत सपूत भयो कुल मेरो अब मैं जानी बात । सूरश्याम अबलौं तोहिं बकस्यो तेरी जानी घात ॥ ९१ ॥

राग गौरी ॥ सुनरी ग्वारी कहौं एक बात । मेरी सौं तुम याहि मारियो जबहीं पावो घात ॥ अब मैं याहि जकरि बांधौंगी बहुतै मोहिं खिझाई । साटिन्ह मारि करौं पहुनाई चितवत वदन कन्हाई । अजहूं मानु कह्यो सुनु मेरो घर घर तू जनि जाहि । सूर श्याम कह्यो कबहुँ न जैहौं माता मुख तनु चाहि ॥ ९२ ॥

राग बिलावल ॥ तेरे लाल मेरो माखन खायो । दुपहर दिवस जानि घर सूनी ढूँढि ढँढोरि आपही आयो ॥ खोल किंवार सून मंदिरमें दूध दही सब सखन खवायो । सीके

काढि खाट चढि मोहन कछु खायो कछु लै ढरकायो ॥ दिनप्रति हानि होत गोरसकी यह ढोटा कौन ढँग लायो । सूरदास कहती व्रजनारी पूत अनोखो जायो ॥ ९३ ॥

राग रामकली ॥ माखन खात पराये घरको । नितप्रति सहस मथानी मथिये मेघ शब्द दधि माठ घमरको ॥ कितने अहिर जियतहैं मेरे गृह दधि लै बेंचत मही महरको । नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति बडो भाग्यहै नंद महरको ॥ ताके पूत कहावत हौ जी चोरी करत उघारत फरको । सूरश्याम कितनी तुम खैहौ दधि माखन मेरे जहँ तहँ ढरको ॥९४॥

मैया मैं नाही दधि खायो । ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो ॥ देखि तुही सीकेपर भाजन ऊंचे घर लटकायो । तुही निरखि नान्हे कर अपने मैं कैसे करि पायो ॥ मुख दधि पोंछि कहत नँदनंदन दोना पीठ दुरायो । डारि साट मुसुकाइ तबहिं गहि सुतको कंठ लगायो ॥ बालविनोद मोद मन मोह्यो भक्तप्रताप देखायो । सूरदास प्रभु यशुमतिके सुख शिव विरंचि बौरायो ॥ ९५ ॥

यशुमति तेरो बारो नान्हो अतिहि अचगरो । दूध दही माखन लै डारिदेत सगरो ॥ भोरहि उठि नितप्रति मोसों करतहै झगरो । ग्वालबाल संग सबलिये घेरि रहैं बगरो ॥ हम तुमहैं सब बैस एकके को काते अगरो । लियो दियो सोई कछु डारिदेहु झगरो ॥ सूरश्याम तेरो गुननिमें अति नगरो । चोली अरु हार तोरि कियो झगरो ॥ ९६ ॥

देखो माई या बालककी बात । वन उपवन सरिता सब मोहे देखत श्यामल गात ॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखन खात । पीत बर वै शिरते ओढत अंचलदै मुसुकात ॥ तेरी सौं कहा कहों यशोदा उरहन देत लजात । जब हरि आवत तेरे आगे सकुचित तनक ह्वैजात ॥ कौन २ गुण कहौं श्यामके नेक न काहु डरात । सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा इह बात ॥ ९७ ॥

राग नट ॥ नंदघरनि सुत भलो पढायो । ब्रजकी बीथिनि पुरनि घरनि घर बाट घाट सब शोर मचायो ॥ लरिकन मारि भजत काहूके काहूको दधि दूध लुटायो । काहूके घरकरत बडाई मैं ज्यों त्यों करि पकरन पायो ॥ अबतौ इन्हैं जकरि बांधौंगी इहिं सब तुम्हरो गाऊँ भँडायो । सूर श्याम भुज गहि नँदरानी बहुरि कान्ह अपने ढिग आयो ॥ ९८ ॥

राग बिलावल ॥ सुनिसुनि री तू महरि यशोदा तैं सुत बडो लडायो । काके नहीं अनोखे ढोंटा केहि न कठिन करि जायो ॥ मैंहू अपने औसरपैंत बहुत दिननमें पायो । यहि ढोंटा लै ग्वाल भवनमें कछु बगरचो कछु खायो ॥ तैं तो ग्वालि पकरि भुज याकी वदन दही लपटायो । सूरदास ग्वालिनि अति रूठी बरबस कान्ह बँधायो ॥ ९९ ॥

अथ नवम अध्याय हरि दाँवरि बँधाए ॥ राग गौरी ॥ ऐसी रिसमें जो धरि पाऊं । कैसे हाल करौं धरि हरिके तुमको प्रगट देखाऊं ॥ सटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात । मारे बिना आजु जो छाँडों लागै मेरे तात ॥ यहि अंतर ग्वालिनि इक औरै धरे बाँह हरि ल्यावति । भली महरि सूधो सुत जायो चोली

हार बतावति ॥ रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभिलाष । सूर श्याम भुज गहे यशोदा अब बांधौं कहि माख ॥ ३०० ॥

राग सोरठ ॥ यशुमति रिसकरि कारि रजु करषै । सुत हित क्रोध देखि माताके मनही मन हरि हरषै ॥ उफनत क्षीर जननि करि व्याकुल इहि विधि भुजा छुड़ायो । भाजन फोरि दही सब डारचो माखन मुँह लपटायो ॥ लै आई जेवरि अब बांधौं गरबजानि न बँधायो । आंगुर द्वै घटि होत सबनिसों पुनि पुनि और मँगायो ॥ नारद शाप भये यमलार्ज्जुन इनको अब जो उधारौं । सूरदास प्रभु कहत भक्तहित युग युग मैं तनु धारौं ॥ ३०१ ॥

राग बिलावल ॥ यशोदा हरि गहि राजत करषै । गावत गोविंद चरित मनोहर प्रेम पुलकि चित वरषै ॥ उफनत क्षीर शरीर तन व्याकुल तबही भुजा छुड़ायो । भाजन फोरि दही सब डारेव लवनी मुख लपटायो ॥ लैकर दांवर यशोदा दौरी बांधन कृष्ण न पायो । द्वै द्वै अंगुर घटै जेवरी ताते अंधबुध आयो ॥ नारद शाप भए यमलार्जुन तिन हित आपु बँधायो । सूरदास बलि जाइ यशोदा साँचे देवल आयो ॥ ३०२ ॥

राग धनाश्री ॥ देख सखी यशुमति बौरानी । घर घर डोलति लेत दामरी बांह गहे हरिकी वितितानी ॥ जानति नहीं जगतपति माधव जितने आपदा नशानी । जाके नाम सकति पुनि ताकी ताहि देखि बांधत नंदरानी ॥ अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके जिनकी ज्योति जल थलहु समानी । मुख जम्हात त्रिभुवन देखरायो अचरज कथा न जात बखानी ॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहू नहिं जानी । सूरदास मोहिं ऐसी लागत जो कछु कही गर्गमुनि बानी ॥ ३०३ ॥

राग रामकली ॥ यशोदा ये तो कहा रिसानी । कहा भयो जो अपने सुतपै महि ढरि परी मथानी ॥ रोस रोस सँभरे दृग तेरे कीरति पय लए पानी । मनहु शरदके कमल-कोशपर मधुकर मीन सकानी ॥ श्रम जलकण किंचित निरखि वदनपर यह छबि कहत न मानी । मनौं चन्द्र नव उमंगि सुधा भुव ऊपर बरषा ठानी ॥ गृह गृह गोकुल दई दांवरी बांधति भुज नंदरानी । आपु बँधावत भक्तन छोरत वदन विदित श्रमपानी ॥ गुण लघु चरचि करति श्रम जितनी निरखि वदन मुसुकानी । शिथिल अंग सब देखि सूर प्रभु शोभासिंधु तिरानी ॥ ४ ॥

राग सारंग ॥ बांधौं आजु कौन तोहि छोरै । बहुत लँगरई कीनी मोसों भुज गहि रजु ऊखलसों जोरै ॥ जननी अतिरिस जानि बँधायोचितै वदन लोचन जल ढोरै । यह सुनि ब्रज युवती उठि धाई कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै ॥ ऊखलसों गहि बांधि यशोदा मारनको साँटी कर तोरै । साँटी लखि ग्वालिनि पछितानी विकल भई जहँ तहँ मुख मोरै । सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बांधत माखन दधि थोरै । सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरै ॥ ५ ॥

राग आसावरी ॥ जाहु चली अपने अपने घर । तुमहीं सब मिलि ढीठ करायो अब आई बन्धन छोरनवर ॥ मोहिं अपने बाबाकी सौहैं कान्हैं अब न पत्याऊं । भवन जाहु

अपने अपने सब लागति हौं मैं पाऊं ॥ मोको जिनि बरजौ युवती कोउ देखौं हरिके ख्याल । सूर श्यामसो कहति यशोदा बड़े नन्दके लाल ॥ ६ ॥

राग सोरठ ॥ यशोदा तेरो मुख हरि जोवै । कमलनयन हरि हिचकनि रोवै बन्धन छोरि जु सोवै ॥ जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखिको जायो । कहा भयो जो घरको ढोटा चोरी माखन खायो ॥ कोरी मटकी दही जमायो जामन पूजन पायो । तेहि घर देव पितर काहेको जेहि घर कान्ह रुवायो ॥ जाकर नाम लेत भ्रम छूटै कर्मफन्द सब काटै । सो हरि प्रेम जेवरी बांध्यो जननि सांट लै डाटै ॥ दुखित जानि दोउ सुत कुबेरके ता हित आपु बँधायो । सूरदास प्रभु भक्त हेतु ही देह धारि तहां आयो ॥ ७ ॥

राग बिहागरो ॥ देखो माई कान्ह हिचकियन रोवै । तनक मुखहि माखन लपटान्यो डरनिते अंसुअन धोवै ॥ माखन लागि उलूखल बांध्यो सकल लोग ब्रज जोवै । निरखि कुरुषि उन बालकनिकी दिशि लाजन अँखियन धोवै ॥ ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी सुकरसुरभि नित नोवै । बरबसही बैठारि गोदमें धारै वदन निचोवै ॥ ग्वालिनि कहैं या गोरस कारण कत सुतकी पति खोवै । आनि देहिं हम अपने घरते चाहति जितकु यशोवै ॥ जब जब बंधन छोर्यो चाहत सूर कहै यह कोवै । मन माधो तनु चित गोरसमें इहि विधि महरि बिलोवै ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ माई नेकहुँ नहिं दरद करति हिलकिनि हरि रोवै । ब्रजहूते कठिन हियो तेरोहै यशोवै ॥ पलना पौढाइ जिनहिं बिकट वाउ काटै । उलटे भुज बांधि तिनहिं लकुट लिये डाँटै ॥ नेकहू न थकित पानि निर्दयी अहीरी । अहो नंदरानी सीख कौनपै लहीरी ॥ जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा । सूरदास प्रभुको मुख निरखि देखि शोभा ॥९॥

राग बिहागरो ॥ कुंवर जल लोचन भरि भरि लेत । बालक वदन विलोकि यशोदा कत रिस करत अचेत ॥ छोरी कमरते दुसह दांवरी डारि कठिन कर बेत । कहि तोको कैसे आवतु है शिशुपर तामस एत ॥ मुख आंसू मोखनके कनिका निरखि नैन सुख देत । मनु शशि स्त्रवत सुधा निधि मोती उडुगण अवलि समेत ॥ सरबसु तौ न्यवछावरि कीजै सूर श्यामके हेत । नाजानों केहि हेतु प्रगट भये इहि ब्रज नंदनिकेत ॥ २१० ॥

राग केदारो ॥ हरिके वदन तनधौं चाहि । तनक दधि कारण यशोदा एतो कहा रिसाहि ॥ लकुटके डर डरत जैसे सजल शोभित डोल । नील नीरज दृग लसैं मनो ओसकन कृत लोल ॥ वातवश सु मृणाल जैसे प्रात पंकज कोष । नमित मुखपर अधर सूचित सकुचमें कछु रोष ॥ कतिक गोरस हानि जाको करति हौ अपमान । सूर ऐसे वदन ऊपर वारिये धन प्रान ॥ ११ ॥

राग केदारो ॥ मुख छवि देखि हो नंदघरनि । शरद निशिके अंशु अगणित इंदु आभा हरनि ॥ ललित श्रीगोपाल लोचन लोल आंसू ढरनि । मनहुं वारिज विलखि विभ्रम परे परवश परनि ॥ कनकमणिमय मकर कुण्डल ज्योति जगमग करनि । मित्र लोचन मनहुं आए तरल गति दोउ तरनि । कुटिल कुंतल मधुप मिलि मनौ कियो चाहत लरनि । बदन कांति अनुप शोभा सकै सूर न वरनि ॥ १२ ॥

राग केदारो ॥ हरिमुख देखि हो नंदनारि । महरि ऐसे सुभग सुतसों इतो कोह निवारि जलज मंजुल लोल लोचन शरद चितवनिदीन । मनहुँ खेलतहैं परस्पर मकरध्वज द्वै मीन ॥ ललित कण संयुत कपोलनि ललित कज्जल अंक । मनहुँ राजत रजनि पूरणकला अति अकलंक ॥ बेगि बंधन छोरि तन मन वारि लै हिय लाइ । नवल श्याम किशोर ऊपर सूरजन बलिजाइ ॥ १३ ॥

राग बिहागरो ॥ कहौ तौ माखन ल्याऊं घरते । जा कारण तू छोरति नाहिंन लकुट न डारति करते ॥ महरि सुनहु ऐसी न बूझिये सकुचि गयो मुख डरते । मनहुँ कमल दधिसुतसम पोतकि फूलत नाहिं न सरते ॥ ऊखल लाइ भुजा धरि बाँधे मोहन मूरति वरते । सूर श्याम लोचन जल वरषत जनु मुक्ता हिमकरते ॥ १४ ॥

राग कल्याण ॥ कहनलगी अब बढि बढि बात । ढोटा मेरो तुमहिं बंधायो तनकहि माखन खात ॥ अब मोहिं माखन देति मंगाए मेरे घर कछु नाहीं । उरहन करिकरि सांझ सबारे तुमहिं बंधायो याहीं ॥ रिसहीमें मोको गहि दीनो अब लागी पछितान । सूरदास हंसि कहत यशोदा बूझौ सबको ज्ञान ॥ १५ ॥

राग धनाश्री ॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो । अहो यशोदा कत त्रासति हौ इहै कोखको जायो ॥ बालक जौन अजान न जानै केतिक दह्यो लुटायो । तेरो सखी कहा खायो गोरस गोकुल अंत न पायो ॥ हाहा लकुट त्रास देखरावत आपन पाश बंधायो । रुदन करत दोउ नयन रचैहैं मनहु कमल तन छायो ॥ पौढिरहे धरणीपर तिरछे बिलखि वदन कर जाहु । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि हंसिकै कंठ लगाहु ॥१६॥

सु चित दै चितै तनै तन ओर । सकुचत शीत भीत ज्यों जलरुह तुव कर लकुट निरखि सखि चोर ॥ आनन ललित श्रवण जल शोभित अरुण चपल लोचनकी कोर । डारत मनौं गंडूक सुधा भरि विधुमंडल ज्यों उभय चकोर ॥ सुभग मृणाल युगलभुज ऊपर बांधे ऊखल दाम कठोर । मनु भुवंग भीतर बांबीपर उरझिरही केचुरि गरजोर ॥ लघु अपराध देखि बहुशोचति निर्दय हृदय वज्रसम तोर । सूर कहा सुतपर इतनी रिस कहि इतनै कछु माखन चोर ॥ १७ ॥

राग विलावल ॥ यशुदा देखि सुतकी ओर । बाल वैस रिसालपर रिस इती कहाके पोर ॥ बार बार निहारि तव तन निमिष दधिमुख चोर । तरनि किरनिके परशि मानौ कुमुदि विधुमति भोर ॥ त्रासते अति चपल गोलक सजल शोभित छोर । मीन मानो वेधि वंशी करत जल झकझोर ॥ नंदनंदन जगतबंदन करत आसू कोर । सूरदास सु महरि मुख हित निरखि नंदकिशोर ॥ १८ ॥

राग धनाश्री ॥ चितै धौं कमलनयनकी ओर । कोटि चंद वारों या मुख छवि येहैं शाहके चोर ॥ उज्ज्वल अरुण असित देखतिहै दुहूं नैनकी कोर । मानौ सुधापानके कारण बैठे निकट चकोर ॥ कतहि रिसात यशोदा इन्हसों कौन ज्ञान है तोर । सूर श्याम बालक मनमोहन नाहिन तरुण किशोर ॥ १९ ॥

राग सारंग ॥ कबके बांधे ऊखल दाम । कमलनयन बाहिर करि राखे तू बैठी सुख-धाम ॥ हौ निर्दयी दया कछु नाहीं लागि गई गृहकाम । देखि क्षुधाते मुख कुंभिलानो अतिकोमल तनु श्याम ॥ छोरहु वेगि बडी बिरियां भई बीतगये युग याम । तेरे त्रास निकट नहिं आवत बोलि सकत नहिं राम ॥ जेहि कारण भुज आप बंधाये बचन कियो ऋषि ताम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदरसो नाम ॥ ३२० ॥

राग गौरी ॥ वारौं हों वे कर जिन हरिको वदन छुवोरी । वारौं वह रसना जिन बोल्यो तुकारी ॥ ऐसी निर्मोही भई यशुदा न तोसी निरमोही देख्यो गोपाललाल आयो क्यों न हाथ पसारी ॥ कुलिशते कठिनबाहि चितैरी छतियां अजहूं द्रवति ज्यों देखत उर मुरारी ॥ किंतिक गोरस हानि जाको तू तोरति कानि डारचो तुहिं सूर श्यामके रोम-रोमपर वारी ॥ २१ ॥

राग सोरठ ॥ यशोदा तेरो भलो हियो है माई । कमलनयन माखनके कारण बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपद देव मुनि दुर्लभ सपनेहुं देइ न देखाई । याहीते तू गर्व भुलानी वर बैठे निधि पाई ॥ सुत काहूको रोवत देखति दौरी लेत हिय लाई । अब अपने घरके लरिकासों इती कहा जडताई ॥ बारंबार सजल लोचन भरि चितवत कुंवर कन्हाई । कहा करों बलि जाउं छोरति तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरति जल थलमों व्यापक निगम न खोजत पाई । सो मूरति तू अपने आंगन चुटकी दैदै नचाई ॥ सुरपालक सब असुर-संहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाई ॥२२॥

राग केदारो ॥ देख री नंदनंदन ओर । त्रासते तनु त्रसित भोर हरि तकत आननतोर ॥ वारवार डरात तो।ो वरन वदनहि थोर । मुकुर मुख दोउ नैन ढारत क्षणहि क्षण छवि छोर॥ सजल चपल कनीन पलकै अरुण ऐसेडोर । सरस अंबुज भंवर भीतर भ्रमतहै जनु भोर ॥ लकुटके डर देखि जैसे भये शोणितबोर । उर लगाइ बहाइ रिस जिय तजहु प्रकृति कठोर ॥ कछुक करुणा करि यशोदा करति निपट निहोर । सूरश्याम विलोकि यशुमति कहति माखनचोर ॥ २३ ॥

राग धनाश्री ॥ तबते बांधे ऊखल आनि । बालमुकुंदको कत तरसावति अति अंग कोमल जानि ॥ प्रातकालते बांधे मोहन तरनि चढै मध्यानि । कुम्हिलानो मुख इंदु दिखावति देखौ धौं नंदरानी ॥ तेरे त्रासते कोऊ न छोरत अब छोरहु तुम आनि । कमल-नैन बांधेई छोडे तू बैठी मन मानि ॥ यशुमतिके मन सुखके कारण आपु बंधावत पानि । यमलार्जुनकी मुक्ति करनको सूर श्याम हह ठानि ॥ २४ ॥

राग नट ॥ कान्हसों आवत क्यों बिरसात । लैलै लकुट कठिन अपने कर परशति कोमल गात ॥ देखि जु आंसू गिरत नैनते शोभित है ढरिजात । मुक्ता मनौ चुगत खग खंजन चोंचि पुटी न समात ॥ उरनि डोल डोलत हैं इहि विधि निरखि सुभव सुनि बात । मानहुँ सूर सकेत शरासन उडिबेको अकुलात ॥ २५ ॥

राग रामकली ॥ यशोदा यह न बूझिको काम । कमलनयनकी भुजादेखि धौं तैं बांधे हैदाम ॥ पूतहुते प्रीतम नाहिं कोऊ कुलदीपक मणि धाम । हरिपर वारि डारु सब तन मन धन गोरस अरु ग्राम ॥ दिखियत कमलवदन कुँभिलानो तू निर्मोही बाम । तू बैठी मंदिर सुख छाहैं सुत दुखपावत घाम ॥ अति सुकुमार मनोहर मूरति ताहि । करत तुम ताम ॥ एई हैं सब ब्रजके जीवन सुख पावत लिए नाम ॥ इह सुनि ग्वालि जगतके बोहित पतित-पावन नाम । सूरदास प्रभु भक्तके वश हैं जगतविश्राम ॥ २६ ॥

राग धनाश्री ॥ ऐसी रिस तोकों नँदरानी । भली बुद्धि तेरे जिय उपजी बडी बैस अब भई सयानी ॥ ढोंटा एक भए कैसेहुँ करि कौन २ करवर विधि भानी । कर्म कर्म करि अबलौं उबरचो ताको मारि पितर दै पानी ॥ को निर्दयी रहै तेरे घर को तेरे सँग बैठे आनी । सुनहु सूर कहि कहि पचिहारी युवती चलीं घरहि बिरुझानी ॥ २७ ॥

राग सारंग ॥ हलधरसों कहि ग्वालि सुनायो । प्रातहिते तुमरो लघुभैया यशुमति ऊखल बाँधि लगायो ॥ काहूके लरिकहि हरि मारचो भोरहि आनि तिनहिं गोहरायो । तबहींते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आनि जनायो ॥ हम बरजी बरजो नहिं मानत सुनतहि बल आतुर ह्वै धायो । सूर श्याम बाँधे ऊखल गहि माता डर तन अतिहि त्रसायो ॥ २८ ॥

राग सारंग ॥ यह सुनिकै हलधर तहँ धाए । देखि श्याम ऊखलसों बांधे तबहीं दोउ लोचन भरि आए ॥ मैं बरज्यो कै बार कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाए । अजहूँ छोडोगे लँगराई दोउ कर जोरि जननिपै आए ॥ श्यामहि छोरि मोहिं बरु बांधै निकसत सगुन भले नाहिं पाए । मेरे प्राण जीवनधन कान्हा तिनको भुज मोहिं बंधे देखाए ॥ माता सों कह करौं ढिठाई शेषरूप कहि नाम सुनाए । सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इकमत भाए ॥ २९ ॥

राग सारंग ॥ एतौ कियो कहा रिस मैया । कौन काज धन दूध दही यह क्षोभ करायो कन्हैया ॥ आए सिखावन सबै पराए स्यानी ग्वालि बौरैया । दिन दिन देन उरहनो आवैं ढुँकि ढुँकि करत लरैया ॥ सूरदास सुन्दरहि लगाने वह बलभद्र औ भैया ॥ ३० ॥

राग केदारो ॥ काहेको कलहु नाध्यो दारुण दांवरि बांध्यो कठिन लकुट लै त्रास्यो भैया । नाहीं कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधि काज भलीरी तू मैया ॥ हौं तो न भयो घर देखतो तेरीयो अरि फोरतो बासन सब जानत बलैया । सूरदास सहित हरि लोचन आयेएं भरि बलहूको बल जाको सोईही गन्हैया ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ॥ काहेको यशोदा मैया त्रास्यो है बारो कन्हैया मोहन मेरो भैया कितनो दधि पियतौ । हौंतो न भयो घर सांटी दीनी सरसर बांध्यौ कर जेवरी नीके कैसे दीखै जियतौ । गोपालतो सबनि प्यारो ताको तैं कीनो प्रहारो जाको है मोको गारो अजुगुत कियतौ । ठाढो बांधे बलबीर नैनोंसे ढरतु नीर हरिजूते प्यारो तोको दूध दही वियतौ ॥ सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधर यह छबि सदाई रहौ मेरे जियतौ ॥ ३२ ॥

राग सोरठ ॥ यशोदा तोहिं बांधे क्यों आयो । कसको नाहिं नेकु तन तेरो यह कहि काहि खिझायो ॥ शिव विरञ्चि महिमा नहिं जानत सो गाइन सँग धायो । ताते तू पहि-

चानति नाहीं कौन पुण्यते पायो ॥ इतनी कहत रसिकमणि तबहीं रोषसहित बलधायो । जननी छांडि और जो होती करत आपनो भायो ॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो । अपने कर सब बन्धन खोले प्रेम सहित उर लायो ॥ सरस वचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल विसरायो । सूरदास प्रभु भक्तनके हित निजकर आपु बँधायो ॥ ३३ ॥

राग सोरठ ॥ काहेको हरि इतनो त्रास्यो । सुनुरी मैया मेरो भैया कितनो गोरस नाश्यो ॥ जब रजुसों कर गाढो बाँधे छर छर मारी साटी । सूने घर बाबा नँद नाहीं ऐसो करि हरि डाटी ॥ और न कछु देखै तन श्यामहि ताको करौं निपातु । तू जो करै बात सोइ साँची कहा करौं तोहि मातु ॥ गाढ़े वदत बात सब हलधर माखन प्यारो तोहीं । ब्रज प्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहेन ओही ॥ काको ब्रज माखन दधि केहिको बांधे जकरि कन्हाई । सुनत सूर हलधरकी बातैं जननी सैन बताई ॥ ३४ ॥

राग सारंग ॥ सुनहु बात मेरी बलराम । करत देहु इनकी मोहिं सेवा चोरी प्रगटत नाम॥ तुमहीं कहौ कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम । मैं बरजति सुत जाहु कहूंजनि कहि हारी निशि याम ॥ तुमहुँ मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम । सुनु मैया तुहि छांडि कहौं किहि को राखै मेरो ताम ॥ तेरी सौं उरहनो लै आवति झूठहि ब्रह्मकी वाम । सूरश्याम अतिही अकुलाने कबके बाँधे दाम ॥ ३५ ॥

कहा करौं हरि बहुत खिझाई । सहि न सकी रिसहीरिस भरि गई बहुते ढीठ कन्हाई । मेरे कह्यो नेकु नहिं मानत करत आपनी टेक । भोरहोत उरहनलै आवत ब्रजकी वधू अनेक ॥ फिरत जहाँ तहँ द्वंद मचावत घर न रहत क्षण एक। सूर श्याम त्रिभुवनको करता यशुमति कहति जनेक ॥ ३६ ॥

राग गौरी ॥ निरखि श्याम हलधर मुसुकाने । को बांधै को छोरै इनको यह महिमा येईपै जाने ॥ उत्पति प्रलय करतहैं येई शेष सहसमुख सुयश बखानै । यमलार्ज्जुन तोरि उधारन कारन करन करत मनमाने ॥ असुरसँहारन भक्तहितारन पावनपतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भाव भक्तके अतिहित यशुमति हाथ बिकाने ॥ ३७ ॥

हरि चितये यमलार्ज्जुन तन । अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं ये हैं मेरेई जन ॥ इनके हेतु भुजन बँधवाई अब बिलम्ब नहिं लाऊँ । परश करौं तनु तरुहिं गिराऊँ मुनिवर शाप मिटाऊँ ॥ ये सुकुमार बहुत दुख पायो सुत कुबेरके तारौं । सूरदास प्रभु कहत मनहिं मन करबन्धन निरवारौं ॥ ३८ ॥

राग रामकली ॥ यशोदा ऊखल बांधे श्याम । मनमोहन बाहिरही छोडे आपु गई गृह काम ॥ दह्यो मथति मुखते कछु बकरति गारी दै दै नाम । घर घर डोलत माखन चोरत षटरस मेरे धाम ॥ ब्रजके लरिकन मारि भजतु है जाहु तुमहु बलराम । सूर श्याम ऊखल सों बांधे निरखति ब्रजकी बाम ॥ ३९ ॥

राग गूजरी ॥ यशोदा कान्हरते दधि प्यारो । डारि देहु कर मथत मथानी तरसत नन्दुलारो ॥ दूध दही माखन वारौं सब जाहि करति तू गारो । कुँभिलाने मुखचंद

देखि छबि काहे न नैन निहारो । ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो । सूर श्यामपर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो ॥ ३४० ॥.

राग धनाश्री ॥ यशुमति केहि यह सीख दई । सुतहिं बांधि तू मथत मथानी ऐसी निठुर भई ॥ हरे बोल युवतिनिको लीनौ सुन सब तरुणी नई । लरिकहु त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई ॥ मेरे प्राण जीवन धन माधव बांधे बेर भई । सूर श्याम कहुँ त्रास दिखावत तुम कहा कहत दई ॥ ४१ ॥

राग धनाश्री ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई । युवती गई घरनि सब अपने गृहकारज जननी अटकाई ॥ आपुन गये यमलार्ज्जुनके तरु परसत पात उठे झहराई । दिये गिराय धरणि दोउ तरु तब कुबेर सुत प्रगटे आई ॥ दोउ कर जोरि करत दोउ अस्तुति चारि भुजा तिन्हें प्रगट दिखाई । सूर धन्य ब्रज जन्म लियो हरि धरणीकी आपदा नशाई ॥४२॥

राग बिलावल ॥ धनि गोविन्द धनि गोकुल आये । धनि धनि नन्द धन्य निशिबासर धनि यशुमति जिन श्रीधर जाये ॥ धनि धनि बालकेलि यमुना धनि धनि बन सुरभीवृंद चराये । धनि यह समौ धन्य ब्रजवासी धनि धनि वेणु मधुर ध्वनि गाये ॥ धनि धनि अनख उरहनो धनि धनि धनि माखन धनि मोहन खाए । धन्य सूर ऊखल तरु गोविंद हमहिं हेत धनि भुजा बँधाए ॥ ४३ ॥

राग सोरठ ॥ धन्य धन्य ऋषि शाप हमारे । आदि अनादि निगम नाहिं जानत ते हरि प्रगट देह ब्रज धारे ॥ धन्य नंद धनि मातु यशोदा धनि आँगनमें खेलनवारे । धन्य श्याम धनि दाम बँधाए धनि ऊखल धनि माखनप्यारे ॥ दीनबंधु करुणानिधि हौ प्रभु राखिलेहु हम शरण तिहारे । सूर श्यामके चरण शीश धरि अस्तुति करि निजधाम सिधारे ॥ ४४ ॥

राग बिलावल ॥ यह जिय जानि गोपाल बँधाये । शापदग्ध द्वै सुत कुबेरके आनि भये तरुयुगल सुहाये ॥ व्याज रुदन लोचन जल ढारत ऊखल दाम सहित चलि आये । विटप भंजि यमलार्जुन तारे करि अस्तुति गोविंद रिझाये ॥ तुमबिनु कौन दीन खल तारै निर्गुण सगुण रूप धरि आये । सूरदास श्याम गुण गावत हर्षवंत निजपुरी सिधाये ॥४५॥

राग रामकली ॥ तरु दोउ धरणि परे भहराई । जर सहित अरराइकै आघात शब्द सुनाइ ॥ भए चकृत लोग सब ब्रजके रहे सकुचि डराइ । कोउ रहे अकाश देखत कोउ रहे शिरनाइ॥घरिकलौं जकि रहे जहँ तहँ देहगति बिसराइ । निरखि यशुमति अजिर देखै बँधे नाहिं कन्हाइ ॥ वृक्ष दोउ महि परे देखे महरि कीन्ह पुकार । अबहिं आँगन छोडि आई चप्यो तरुके डार ॥ मैं अभागिनि बांधि राखे नंदप्राणअधार । शोर सुनि नँद दौरि आये बिकल गोपी ग्वार ॥ देखि तरु सब अति डराने हैं बडे बिस्तार । गिरे कैसे बडो अचरज नेकु नहीं बयार ॥ दुहूँतरुबिच श्याम बैठे रहे ऊखल लागि । भुजा छोरि उठाय लीने महर हैं बडभागि ॥ निरखि युवती अंग हरिके चोट जनि कहुँ लागि । कबहुँ

बाँधति कबहुँ मारति महरि बडी अभागि ॥ नयन जल भरि ढारि यशुमति सुतहि कंठ लगाइ । जरहु रिस जिन तुमहिं बांध्यो लगै मोहिं बलाइ ॥ नंद मोहिं कहा कहैंगे देखि तरु दोउ आइ । मैं मरौं तुम कुशल रहौ दोऊ श्याम हलधर भाइ ॥ आइ घर जो नंद देखें तरु गिरे दोउ भारि । बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरिहि गारि ॥ तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अँकवारि । कैसे उबरे कृष्ण तरुते सूरले बलिहारि ॥ ४६ ॥

राग नट ॥ मेरे मोहन हौं तुमपर वारी । कंठ लगाइ लिये मुख चूमत सुंदर श्याम विहारी ॥ काहेको दाम ऊखलसों बांध्यो है कैसी महतारी । अतिहि उतंग बयारि न लागत क्यों टूटे दोऊ तरु भारी ॥ बारंबार बिचारि यशोदा यह लीला अवतारी । सूरदासस्वामीकी महिमा कापर जात बिचारी ॥ ४७ ॥

राग सारंग ॥ अब घर काहूके जिनि जाहु । तुम्हरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहि खाहु ॥ बरै जेवँरी जिन तुम बांधे बरै हाथ भहराई । नंद मोहिं अतिही त्रासत हैं बांधे कुँवर कन्हाई ॥ रोग जाउ अपने हलधरकी छोरत है तब श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो जिनि माखन दधि तुव धाम ॥ ४८ ॥

ब्रजयुवती श्यामहिं उर लावति । बारम्बार निरखि कोमल तनु करजोरति बिधिको जु मनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुके तर मुख चुंबति यह कहि पछितावति । उरहनों लै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरणकरि पावति ॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधनचिह्न दिखावति । सूरदास प्रभु अति रतिनागर गोपी हरषि हृदय लपटावति ॥ ४९ ॥

अथ यमलार्जुनउद्धारन दूसरीलीला ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई । यशुमति कहाँ गयो तेरो कन्हाई ॥ माखन मथि भरि धरी कमोरी । अबही मोहन लैगयो चोरी ॥ भलो कर्म तैं सुतहि पढ़ायो । बाहेहीते मूँड चढायो ॥ यह सुनतहि यशुमति रिसमानी । कहां गयो कहि सारंगपानी ॥ खेलतते औचक हरि आये । जननी बांह पकरि बैठाये ॥ मुखदेखत यशुमति पहिचानों । माखन वदन कहाँ लपटानों । फिरिदेखै तौ ग्वालिनि पाछे । माता मुख चितवत नहिं आछे ॥ चोरीके सब भाव बताये । माता सँटिया द्वैक लगाये ॥ माखनखान जात परघरको । बाधत तोहिं नेकु नहिं धरको ॥ बाँह गहे ढूँढति फिरै डोरी । बाँधौं तोहिं सकै को छोरी ॥ बाँधि पची डोरी नहिं पूरै । बार बार खीझत रिस झूरै ॥ घरघरते जेंवरि लै आई । मिसहीमिस देखनको धाई ॥ चकित भई देखैं ढिग ठाढी । मनौचितेरे लिखिलिखि काढी ॥ यशुमति जोरि जोरि रजु बाँधै । आँगुर द्वै द्वै जेंवरि साँधै । जबजानी जननी अकुलानी । आपु बँधायो सारँगपानी ॥ भक्तहेत दाँवरी बँधाई । यमला अर्जुनकी सुधि आई ॥ माता हेतु जनाहिं सुखकारी । जानि बँधायो श्रीबनवारी ॥ मुख जँभात त्रिभुवन दिखरायो । चकित कियो तुरतहिं बिसरायो ॥ बाँधि श्याम बाहर लै आई । गोरस घरघर खात चुराई ॥ ऊखलसों गहि बाँधि कन्हाई । नितहि उरहनो सह्यो न जाई ॥ इक कहि जाति एक फिरिआवै । रैनि दिना तू मोहिं खिझावै ॥ माखन दधि तेरे घर नाहीं । धाम भरो चोरी

करिखाहीं ॥ नवलख धेनु दुहत घर मेरे । केते ग्वाल रहत घर घेरे ॥ मथत नंदवर सहत मथानी । ताके सुतचोरीकी बानी ॥ मोसों कहति आनि जब नारी । बोलि जातु नहिं लाजन मारी ॥ नंदमहरकी करै नन्हाई । वृद्धबैससुत भयो कन्हाई ॥ तुम्हरे गुण सब नीके जानै । नित बरजौं कबहूं नहिं मानै ॥ कोउ छोरैजनि ढीठ कन्हाई । बांधे भुज दोउ ऊखललाई ॥ भवनकाजको गइ नंदरानी । आंगन छांडे श्यामबिनानी ॥ उरहन देन ग्वालि जे आई । तिन्है यशोदा दियो बहराई ॥ चलीं सबै मिलि सोचति मनमें । श्यामहिं गहि बांधेहैं छनमें ॥ हँसतबाद इक कही कि नाहीं । ऊखलसों बांध्यो सुत वाहीं ॥ कहा कहैंवा छविको माई । बांबी परअहि करत लराई ॥ कान्हवदन अतिही कुँभिलान्यो । मानयौं कमलहि हिम तरसान्यौ ॥ डरते दीरघ नैन चपल अति । बदन सुधारस मीनकरति गति ॥ यह सुनि और युवति सब आई । यशुमति बाँधे कहत कन्हाई ॥ भलीबुद्धि तेरेजियउपजी । ज्यों ज्यो दिनी भई त्योंनिपजी ॥ छोरहु श्याम करहु मनलाहो । अतिनिर्दयी भईतूकाहो ॥ देखोश्याम ओर नँदरानी । सकुचि रह्यो मुख सारंगपानी ॥ बाहिर बांधि सुतहि बैठारो । मथत दही माखन तोहिं प्यारो ॥ छांड़ि देहु बहि जाइ मथानी । सौंह दिवावति छोरहु आनी ॥ हांसी करन सबै तुम आई । अब छोरहुँ नहिं कुँवर कन्हाई ॥ तुमहीं मिलि रसवाद बढायो । उरहन देदै मूड पिरायो ॥ सबहिन गोधन सौंह दिवाई । चितैरहे मुख कुँवर कन्हाई ॥ कब तुमको मैं बोलि बुलाई । केहि कारण तुम धाई आई ॥ इह सुनि बहुरि चलीं मुरझाई । कहा करौं बलिजाऊं कन्हाई ॥ मूरखको कोइ कहा सिखावै । याकी मति कछु कहत न आवै । नारि गईं फिरि भवन आतुरी । नंदघरनि अब भइ चातुरी ॥ ओछी बुद्धि यशोदा कीनी । याकी जाति अबै हम चीन्ही ॥ इहै कहत अपने घर आई । मानै नहीं कितै समुझाई ॥ मथत यशोदा दही मथानी । तबहिं कान्ह ऐसी मति ठानी ॥ भक्त वछल हरि अन्तर्यामी । सुत कुबेरके ये दोउ नामी ॥ यहि अवतार कह्यो इन तारण । इनको दुख अब करौं निवारण ॥ जो जेहि ढँग तिहि ढंग सब लायो । यमलार्जुनपै प्रभु तब आयो॥ वृक्ष बीच ऊखल लै अटक्यो । आगे निकसि नेक गहि झटक्यो ॥ अरररात दोउ वृक्ष गिरे घर । अति आघात भयो ब्रज ऊपर ॥ भए चकृत ब्रजके सब बासी । यहि अन्तर दोउ कुंवर प्रकाशी ॥ शंख चक्र कर सारंगधारी । भक्तहेतु प्रगटे बनवारी । देखि दरश मन हरष बढायो । तुमहि बिना प्रभु कौन सहायो ॥ धनि ब्रज जहां कृष्ण वपुधारी । धनि यशुमति ब्रह्महिं अवतारी । धन्य नन्द धनि धनि गोपाला । धन्य धन्य गोकुलकी बाला ॥ धन्य गाइ धनि द्रुम वन चारन । धनि यमुना हरि करत विहारन ॥ धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई । धनि माखन चोरत यदुराई ॥ धन्य सुजन ऊखल गढि ल्याये । धन्य दाम भुज कृष्ण बँधाये ॥ गद्गदकण्ठ वचन मुख भारी । शरण राखि लेहु गर्वप्रहारी ॥ बार बार चरणन परे धाई । कृपाकरी भक्तन सुखदाई ॥ साधु साधु कहि श्रीमुखवानी । बिदा भये इहि भाँति बखानी ॥ यमलार्जुन प्रभु तारि पठाये । नंदद्वार दोउवृक्ष गिराये ॥

निरखि यशोदा आंगन आई। दुहूं वृक्षविच बचे कन्हाई॥ दौरिपरे ब्रजके नर नारी। नंदद्वार कछु होत गोहारी॥ देखे आइ वृक्ष दोउ डारे। ये गुण यशुमति आहिं तुम्हारे॥ तुरत छोरि ऊखलते ल्यायो। देखत जननि नैन भरिआयो॥ बज्रदेह हरिकी हैमाई। जहां तहां विधि होत सहाई॥ प्रथम पूतना मारन आई। पयपीवत वह तहां नशाई॥ तृणावर्त लैगयो उड़ाई। आपुहि गिरचो शिलापर आई॥ कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनी कहत ज्यों लेउ परान्यो॥ शकटासुर पलना ढिग आयो। को जानै केहि ताहि गिरायो॥ खेलतमें केशीको मारचो। घींच मरोरि वहि धरनि पछारचो॥ ग्वालनके सँग गये गोचारन। तहां बकासुर लाग्यो मारन॥ कौन कौन करिवर हरि टारचो। यशुमति बांधि अजिर लै डारचो॥ बहुतै उबरचो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्ष गिरो भहराई॥ कहा कहौं कहत न बनिआवै। तुरत आय हरि कौन बचावै॥ सबहिन पेलि करत मनभाई। पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई॥ मुख चूमति लै लै उर लाए। युवतिन कर आपु मनभाए॥ लै जननी सुत कंठ लगावति। चोरीकी बातें समुझावति॥ मैं रिसही रिस करत लालसों। भुज बांधे मन हँसति ख्यालसों॥ मेरे जो तुम करत अचगरी। उरहनको ठाढी रहैं सगरी। बारबार तन देखत माई। गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई॥ कहत श्याम मैं अतिहि डेरान्यो। ऊखलतर मैं रह्यो छिपान्यो॥ बात सुतहि बूझत नँदरानी। कान्ह कहै मुख उरकी बानी॥ हरिके चरितकथा नहिं जानै। यशुमति अतिबालक करिमानै॥ अखिलब्रह्मांड जीवके दाता। माखनको बाँधतिहै माता॥ गुण अपार अविगति अविनाशी। सो प्रभु घरघर घोष विलासी॥ ऊखलबंध्यो हेतु भक्तनके। येइ माता येइ पिता जगतके। यमलार्जुनको मोक्ष कराये। पुत्रहेतु यशुदागृह आये॥ ऐसे हरि जनके सुखकारी। प्रगटे रूप चतुर्भुज धारी॥ जो जेहि भावभजै प्रभु जैसे प्रेमवश्य हरि मिलहीं तैसे॥ सूरदास यह लीला गावै। कहत सुनत सबके मन भावै॥ जो हरिचरित ध्यान उर राखै। आनंद सदा दुरित दुख नाखै॥ ३९०॥

राग मलार॥ निगमस्वरूप देखि गोकुल हरि। जाको दूरिदरश देवनकोसो बाँध्यो यशुदा ऊखल धरि॥ चुटकिन दै दै ग्वाल नचावत नाचत कान्ह बाल लीला धरि। जेहि डर भ्रमत पवन रवि शशि जल सो क्यों डरै लकुटियाके डरि॥ क्षीरसमुद्र शैन संतत जेहि माँगत दूध पतौखी दै भरि। सूरदास गुणके गाहक हरि रसना गाइ गये अनेकतरि॥ ९१॥

राग सोरठ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावै। तापै नंदकी नारि यशोदा घरकी टहल करावै॥ शेष सनक नारद गणेश मुनि जाको गुण नित गावै। निशिवासर खोजत पचिहारे मनसाध्यान न आवे॥ धन्यधन्य गोकुल धनि वनिता निरखति श्याम बँधावै। सूरदास प्रभु प्रेमहिके वश संतन दरश दिखावै॥ ९२॥

राग बिलावल ॥ गोविंदतेरोइ स्वरूप निगम नेतिनेतिगावै । भक्तके वश श्यामसुँदर देहधरेआवै ॥ योगी जन ध्यान धरत सपनेहुँ नहिं पावै । नंद घरनि बांधि बांधि कपि ज्यों नचावै ॥ गोपिजन प्रेमातुर तिनको सुख दीनो । अपने अपने रसविलास काहू नहिं चीनो ॥ श्रुति स्मृति पुरान कहत शुनि बिचारी । सूरदास प्रेमकथा सबहीते न्यारी ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो बारो । भोरहिं ग्वालिनि उरहन ल्याई उहि यह कियो पसारो ॥ पहिले रोहिणिसों कहि राख्यो तुरत करहु जेवनार । ग्वाल बाल सब बोलि लिये मिलि बैठे नन्दकुमार ॥ भोजन बेगि ल्याउ कछु मैया भूख लगी मोहिं भारी । आजु सबारे कछु नहिं खायो सुनत हँसी महतारी ॥ रोहिणी चितै रही यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछितानी । परसहु बेगि बेर कत लावत भूखे साँरगपानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोई षटरसके परकार । सूर श्याम हलधर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ॥ ९४ ॥

राग सारंग ॥ नंदनभवनमें कान्ह अरोगै । यशुदा ल्याई षटरस भोगै ॥ आसन दै चौकी आगे धरि । यमुना जल राख्यो झारी भरि ॥ कनकथारमैं हाथ धुवाए । सत्रहसै तहँ भोजन आए ॥ लै लै धरति सबनके आगे । मातु परोसे जो हरि मांगे ॥ खीर खांड घृत लावज लाडू । ऐसे होइँ न अमृत खांडू ॥ और लेहु कछु सुत ब्रजराजा । लुचुई लपसी घेवर खाजा ॥ पेठा पाक जलेबी पेरा । गोंद पाग तिनगरी गिंदोरा ॥ गोंझा इलाइचीपाग अमिरती । सीरो साजो लै ब्रजपती ॥ छोली धरे खरबूजा केरा । शीतल वायु करत अति घेरा ॥ खारिक दाख अरु गरी चिरारी । पिंड बदाम लेत बनवारी ॥ बेसन पुरी सुखपुरी लीजै । आछो दूध कमलमुख पीजै ॥ मैया मोहि और किन प्यावै ॥ धौरीको पय मोकों भावै ॥ बेला भरि हलधरको दीनो । पीवत पय बल अस्तुति कीनो ॥ ग्वाल सखा सबहीं पै अँचयो । नीके औटि यशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धरेहै खजुवा । हौस होइ तौ ल्याऊं पूवा ॥ मीठे अति कोमल है नीके । ताते तुरत चभोरे घीके ॥ फेनी सेव अँदरसे प्यारे । लै आऊँ जेंवहु मेरे वारे ॥ हलधर कही ल्याउ री मैया । मोकों दे नाहिं लेत कन्हैया ॥ यशुमति हरष भरी लै परसति । जेवतेंह अपनी रुचिसोंअति ॥ कान्ह मांगि शीतल जल लीयो । भोजन बीच नीर लै पीयो ॥ भातु पसाइ रोहिणी लाई । घृतसुगंध सुन्दर दै ताई ॥ नीलावति चाँवर दिवि दुर्लभ । भात परोस्यो माता सुर्लभ । मूँग मसूर उरद चना दारी । कनकवरण धार फटक पछारी ॥ रोटी बाटी पोरी झोरी । एक कोरी एक घीव चभोरी ॥ गायो घृत भरि धरी कचोरी । कछु खायो कछु फेटो छोरी ॥ मीठे तेल चनाकी भाजी । एक मकूनी दै मोहि साजी ॥ मीठे चरपर उज्ज्वल कौंरा । हौस होइ तोल्याऊं औरा ॥ मुगौरा पकौरा पनौए पतोरा । एक कोरे भीजे गुरु बोरा ॥ पापर बरी फुलौरि पिथौरी । कूर बरी कचरी पीठौरी ॥ बहुत मिरिचि दै किये निमोना । बेसनके दश बीसक दोना ॥ बनकोरा पिडिसा चीचींडी । खीप पिंडारू कोमल भींडी ॥ चौलाई लालहाअरू पोई । मध्य मेलि निबुआनि निचोई ॥ रुचितर जान

लोनिका फांगी । कढी कृपालु दूसरे मांगी ॥ सरसों मेथी सोवा पालक । बथुवा रांधि उियो जु उतालक ॥ हींग हर्दि मृच छौंके तेले । अदरख और आँवरे मेले ॥ सालन सकल कपूर सुवासित ॥ स्वाद लेत सुंदर हरि आसित । आँब आदि दै सबे सँधाने । सब चाखे गोवर्धनराने ॥ कान्ह कहै हौं मातु अघानो । अब मोको शीतल जल आनो ॥ अचवन ले. तब धोये कर मुख । शेष न बरने भोजनको सुख ॥ उज्ज्वल पान कपूर कस्तूरी । आरोगत मुखकी छबि रूरी ॥ चंदन अंग सखनके चरच्यो । यशुमतिको सुख कानहिं परच्यो ॥ मांगि जूठ सूरजु लै लीनों । बांटि प्रसाद सबनको दीनों ॥ जन्मजन्म बाढचो जूठनिको । चेरो नंद महरके घरको ॥ ५५ ॥

राग कान्हरो ॥ मोहिं कहत युवती सब चोर । खेलतरहौं कतहुंमैं बाहिर चितै रहति सब मेरी ओर ॥ बोलिलेत भीतर घर अपने मुख चूमति भरिलेत अंकोर । माखन हेरि देति अपने कर कछु कहि विधिसो करति निहोर ॥ जहां मोहिं देखति तहँ टेरति मैं नहिं जात दोहाई तोर । सूरश्याम हँसि कंठ लगायो वे तरुणी कहां बालक मोर ॥ ५६ ॥

राग केदारो ॥ यशुमति कहति कान्हसों मेरे अपने ही आंगन तुम खेलौ । बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कह्यो कबहुं जनि पेलौ ॥ ब्रजबनिता सब चोर कहति तोहिं लाजन सकुचि जातु मन मेरो । आज मोहिं बलराम कहतहै रूठेहि नाम लेतहै तेरो ॥ जब मोहिं रिस लागति तब त्रासति बांधति जैसे चेरो । सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी चोर नाम कैसेहु सुत फेरो ॥ ५७ ॥

अथ धेनु दुहन सीखन समै ॥ अध्याय एकादश ॥ राग बिलावल ॥ धेनु दुहत हरि देखत ग्वालिनि । आपुन बैठिगए तिनके सँग सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि ॥ कालिह तुम्हैं गोदोहन सिखैवें दुही सबै अब गाई । भोर दुहो जे नंद दोहाई उनसों कहत सुनाई ॥ बडो भयो अब दुहत रहौंगो अपनी धेनुनिवेरी । सूरदास प्रभु कहत सोंह दै मुहिं लीजौ तुम टेरी ॥ ५८ ॥

राग कान्हरो ॥ मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु । कैसे धार दूधकी बाजत सोइ सोइ विधि तुम मोहि बतावहु ॥ कैसे दुहत दोहनी घुटुवन कैसे बछरा थनहि लगावहु । कैसेलै नोईपग बाँधत कैसे ले पग या अटकावहु ॥ निकट भई अब साँझ कन्हैया गाइनपैं कहुँ चोट लगावहु । सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु ॥ ५९ ॥

राग सारंग ॥ महर महरिके मन यह आई । गोकुल बहुत उपद्रव दिन प्रति बसिये वृन्दावन अब जाई ॥ सब गोपन मिलि शकटासाजी सबहिनके मनमें इह भाई ॥ सूर यमुनतट डेरा देई पांच बरसके कुँअर कन्हाई ॥ ३६० ॥

राग बिलावल ॥ जागहु हो तुम नन्दकुमार । हौं बलि जाउं मुखारबिन्दकी गोसुत मेलो खरिक सँभार ॥ इतनो कहा सोये मनमोहन और बार तुम उठत सवार । बारहिं बार जगावति माता अम्बुजनयन भयो भिनुसार ॥ दधि मथिकै माखन बहु दीनो सकलग्वाल ठाढे दरबार । उठिकै मोहन बदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार ॥ ६१ ॥

राग बिलावल ॥ जागहु हो ब्रजराज हरी । लै मुरली आंगन ह्वै देखो दिन मणि उदित भयो द्वै घरी ॥ गोसुत गूढ बंधन सब लागे गोदोहन की जून टरी । निठुर वचन कहि सुतहिं जगावति जननि यशोदा पास खरी । भोर भयो दधि मथन होतु सब ग्वाल सखाकी हांक परी । सूरदास प्रभु दरशन कारण नींद छुड़ाई चरण धरी ॥ ६२ ।

राग बिलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत । कबहुं पीतांबर डारि वदन पर कबहुं उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवंतमें जागत मनमोहन बात सुनत सबकी अब टेरत । बारम्बार जगावति माता लोचन खोलि पलक पुनि घेरत ॥ पुनि कहि उठी यशोदा मैया उठहु कान्ह रविकिरण उजेरत । सूर श्याम हंसि चितै मात मुख पट कर लै पुनि पुनि मुख फेरत ॥ ६३ ॥

राग सूहो विलावल ॥ जननि जगावति उठौ कन्हाई । प्रगट्यो तरणि किरणिगण छाई ॥ आवहु चन्द्र वदन देखराई । बारबार जननी बलिजाई ॥ सखा द्वार सब तुमहि बुलावत । तुम कारण हम धाए आवत ॥ सूर श्याम उठि दरशन दीनो । माता देखि मुदित मन कीनो ॥ ६४ ॥

राग रामकली ॥ दाऊजू कहि श्याम पुकारचो । नीलाम्बर पट ऐंचि लियो हरि मनु बादरते चन्द उतारचो ॥ हँसत हँसत दोउ बाहर आये माता लै जल वदन पखारचो । दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी नैननिको आलस जु बिसारचो ॥ माखन खाहु दहुन कर दीन्ह्यो तुरत मथो मीठो अति भारचो । सूरदास प्रभु खात परस्पर माता अन्तर हेत बिचारचो ॥ ६५ ॥

राग बिलावल ॥ जागहु जागहु नन्दकुमार । रवि बहु चढे रैनि सब निघटी उघरे सकल किवार ॥ वारि वारि जल पियति यशोदा उठु मेरे प्राण अधार । घर घर गोपी दह्यो विलोवहिं कर कंकन झनकार ॥ सांझ दुहन तुम कह्यो गाइकौ ताते होत अबार । सूरदास प्रभु उठे सुनतही लीला अगम अपार ॥ ६६ ॥

तनक कनककी दोहनी दै दै री मैया । तात दुहन तुम कह्यो मोहिं धौरी गैया ॥ अटपटे आसन बैठिकै गोथन कर लीनो । धार अनतही देखिकै ब्रजपति हँसि दीनो ॥ घर घरते आई सबै देखन ब्रजनारी । चितै चोरि चित हरि लियो हँसि गोपविहारी ॥ विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी । सूर श्याम सुरभी दुही सन्तन हितकारी ॥ ६७ ॥

अथ वत्सासुर वध । राग नटनारायण ॥ चले बछरु चरावन ग्वाल । वृन्दावन सब छांडिकै लै गये जहँ घनताल ॥ परम सुन्दर भूमि देखत हँसत मनहिं बढाइ । आपु लागे तहां खेलन बच्छ दिये बगराइ ॥ जानिकै हलधर गये तहँ बाल बछरा पास । रोहिणी नन्द नाहिं देखत हरष भए हुलास ॥ तालरस बलराम चाख्यो मन भयो आनन्द ॥ गोप सुत सब टेरि लीने सुधि भई नँदनन्द ॥ कह्यो बछरा हांकि ल्यावहु चलहु जहां कन्हाइ । तालरसके पानते अतिमत्त भे बलराइ ॥ तहां छल करि दनुज धायो धरे बछरा भेषि । फिरत ढूँढत श्यामको अति प्रबल बलको देखि ॥ सबै बछरनि घेरि ल्याए बहुन घेरचो

जाइ । दाऊ कहि बालकनि टेरचो वृषभ सुत न धराइ ॥ कह्यो मन इहि अबहिं मारौं उठे बलहिं सँभारि । टेरि लिये सब ग्वाल बालक गये आपु प्रचारि ॥ आगे ह्वै इतको बिडारचो पूछ हाथ लगाइ । पकरिकै भुजसों फिरायो तालके तर आइ ॥ असुर लै तरुसों पछारचो गिरचो तरु झहराइ । तालसों तरुताल लाग्यो उत्यो बन वहराइ ॥ बछ असुरको मारि हलधर चले सबनि लिवाइ । सूर प्रभुको वीर जाकी तिहूँ भुवन बडाइ ॥ ६८ ॥

राग देवगंधार ॥ बछरा चालन चले गोपाल । सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिये सब ग्वाल॥दनुज एक तहँ आइ पहुँचेउ धरे वत्सको रूप । हरि हलधर दिशि चितइ कह तुम जानत हो इह वीर ॥ कहेव आहि दानो इहि धारे वत्स शरीर । तब हरि सींग गह्यो यक करसों यक करसों गहे पांइ । थोरे कहि बलसों छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ ॥ गिरत धरनि पर प्राण गए चितवत फिरि नहिं आयो श्वास । सूरदास ग्वालन सँग मिलि हरि लागे करन विलास ॥ ६९ ॥

अथ बकासुर वध । राग सारंग ॥ बन बन फिरत चरावत धेनु । श्याम हलधर सँग हैं बहु गोप बालक सेनु ॥ तृषित भई सब जानि मोहन सखन टेरत वेनु । बोलि ल्यावो सुरभिगण सब चलौ यमुन जल देन ॥ सुनतही सब हांकि ल्याए गाइ करि इकठेन । हेरि दे दे ग्वाल बालक कियो जमुन तट गेन ॥ बकासुर रचि रूपमाया रह्यो छलकरि आइ । चांचु इक पुहुमी लगाई इक आकाश समाइ ॥ आगे बालक जात हैं ते पाछे आए धाइ । श्यामसों सब कहन लागे आगे एक बलाइ ॥ नितहिं आवत सुरभि लीने सँग । कबहुं नाहिं इहि भांति देख्यो आजको सो रंग ॥ मनहिं मन तब कृष्ण जान्यो बका असुर विहंग । चोंच फारि विदारि डारौं पलकमें करौं भंग ॥ निदरि चले गुपाल आगे बकासुरके पास । सखा सब मिलि कहन लागे तुमन जियके आस ॥ अजहुँ नाहिं डरात मोहन बचे कितने गास । तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहिं निवास ॥ चले सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन विकरार । इत धरणि उत व्योमके बिच गुहाके आकार ॥ पैठि बदनु विदारि डारचो अति भए विस्तार । मरत असुर चिकार पारचो मारचो नन्दकुमार ॥ सुनत ध्वनि सब ग्वाल डरपे अब न उबरे श्याम ॥ हमहिं बरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालन विकलता तब कहि उठे बलराम । बका बदन विदारि डारचो अबहिं आवत श्याम ॥ सखा हरि तब टेरि लीने सबै आवहु धाइ । चोंच फारि बका सँहारचो तुमहूँ करौ सहाइ ॥ निकट आए गोप बालक देखि हरि सुख पाइ । सूर प्रभुके चरित अगणित नेति निगमन गाइ ॥ ३७० ॥

ब्रजमें को उपज्यो है यह भैया । संग सखा सब कहत परस्पर इनको गुण अग मैया ॥ जबते ब्रज अवतार धरचो इन कोउ नहिं घात करैया । किती बात यह बका विदारचो धनि यशुमति जिन जैया ॥ तृणावर्त पूतना पछारी तब अति रहे नन्हैया । सूरदास प्रभुकी लीला यह हम कित जिय पछितैया ॥ ७१ ॥

राग धनाश्री ॥ बका विदारि चले ब्रजको हरि । सखासंग आनंद करत सब अंग अंग बन धातु चित्र करि ॥ बनवाला पहिरावत श्यामहि बारबार अँकवारि भरत धरि । कंस निपात करोगे तुमहीं हम जानी यह बात सही परि ॥ पुनिपुनि कहत धन्य नँद यशुमति जिन इनको जन्मौ सो धन्यघरि । कहत इहैसब जात सूरप्रभु आनँद आंसूभरित लोचनभरि ॥ ७२ ॥

राग कान्हरो ॥ ब्रजबालक सब जाइ तुरतही महर महरिको पाँइ परे । एसो पूत जनौ जग तुमहीं धन्यकोउ जहँ श्याम धरे ॥ गाइ लिवाइ गए वृंदावन चरत चलीं यमुना तट हेरि । असुर एकखगरूप रह्यो धरि बैठो तीर बाइ मुख घेरि ॥ चोंच एक पुहुमी करि राखी एक रह्यो तौ गगन लगाई । हरि हम बरजत पहलेहि धायो बदन चीरि पलमाहिं गिराई ॥ सुनत नन्द यशुमति चकृत चित सुन चकृत नरनारी । सूरदास प्रभु मन हरि-लीनो तब जननी भरि लई अंकवारी ॥ ७३ ॥

अथ द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥ अघासुरवध धनाश्री ॥ नंदसुत लाडिलेहौ सब ब्रजजीवन प्रान । बारबार माता कहै जागौ श्यामसुजान ॥ यशुमति लेति बलाइ भोर भयो उठौ कन्हाई । संग लिये सब सखा द्वारे ठाढे बल भाई ॥ सुन्दर वदन दिखाइये हरौ नैननको तापु । नैन कमल मुख धोइये कछु करौ कलेऊ आपु ॥ माखन रोटी लेहु सद्यदधि रैनि जमायो । षट रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो ॥ मौपै लीजै मांगिकै जोइ जोइ भावै तोहिं । संग जेंवहि बलराम तुम रुचि उपजावहु मोहिं ॥ तब हँसि चितए श्याम सेजते वदन उघारचो । मानहु पयनिधि मथत फेन फटि चंद उजारचो ॥ सखा सुनत देखन चले मानहुं नैन चकोर । युगल कमल मानौ इंदु पर बैठ रहे अति भोर ॥ तब उठि आए कान्ह मातु जल वदन पखारचो ॥ बोलिउठे बलराम श्याम कत उत्योसवारचो ॥ दाऊजू कहि हँसि मिले बाहँगहि बैठाइ । माखन रोटी सद्यदही हो जेंवत रुचि उपजाइ ॥ जल अचयो मुख धोइ उठे बल मोहन भाई । गाइ लई सब घेरि चले बन कुँवर कन्हाई ॥ टेर सुनत बलरामकी आए बालक धाइ । लैआए सब घेरिकै घरते बछरा गाइ ॥ सखन्ह कान्हसों कही आजु वृंदावन जैए । यमुना तट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये ॥ ग्वाल गाइ सब लै गए वृंदावन समुहाइ । अतिही सघन बन देखिकै हरषि उठै सब गाइ ॥ कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत । कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत ॥ अंतर्यामी कहत जीव सब हमहिं सिखावत ढेरी । श्याम कहत अबके गई पुनि धौली जहु फेरी ॥ कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृंगीको पूरै । कृष्ण कियो मन ध्यान असुर इकु बस्यो अधूरै ॥ बालक बछरा राखिहौं एक बार लै जाऊ । कछुक जनाऊँ अपनपौ हो अबलौं रहो सुभाऊ ॥ असुरकुलहिं संहारि धरणिको भार उतारों । कपटरूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारों ॥ गिरि समान धरि अगम तन बैठो बदन पसारि । मुखभीतर बन घन नदी माया छल करिभारि ॥ पैठिगए मुखग्वाल धेनु बछरा सँगलीने । देखि महाबन भूमि हरे तन द्रुम कृत कीने ॥ कहनलगे सब आपुसमें सुरभी रची अघाई । मानहु पर्वत कंदरा मुख सब गये समाई ॥ मुख सब गए समाय असुर तब चोंच सकेरचो । अंधकार होयगयो मनहुँ निशि बादर घेरचो ॥

अतिहि उठे अकुलाइकै ग्वाल बच्छ सब गाइ । त्राहित्राहि कहि कहि उठेपरे कहाँ हम आइ ॥ धरिधरि कहि कान्ह असुर यह कंदर नाहीं । अनजानत सब परे अघामुख भीतर माहीं ॥ जिय त्याग्यो यह सुनतही अब को सकै उबारि । बातें दूनी देह धरी तब असुर न सक्यो सँभारि ॥ शब्द करचो आघात अघासुर टेरि पुकारचो । रह्यो अधर दोउ चापि बुद्धि बल सुरति बिसारचो ॥ ब्रह्मद्वार फिरि फूटिकै निकसे गोकुलराइ । बाहिर आवहु निकसिकै मैं करिलियो सहाइ ॥ बालक बछरा धेनु सबै मन सब मन अतिहि सकाने । अंधकार मिटिगये देखि जहां तहां अतुराने ॥ आये बाहर निकसिकै मन सब कियो हुलास । हम अज्ञान कत डरतहैं कान्ह हमारे पास ॥ धन्य कान्ह धनि नंद धन्य यशुमति महतारी । धन्यलियो अवतार कोखि धनि जियहि दैतारी ॥ गिरि समान तन अगम अति पन्नगकी अनुहारि । हम देखत पल एकमें मारचो दनुज प्रचारि ॥ हरि हँसि बोले बैन संग जौ तुम नहिं होते । तुम सब किए सहाय भयो तब कारज मोते ॥ हमहुँ तुमहुँ मिलि बैठिकै वन भोजन करिये जाइ । बंशीबट भोजन बहुत यशुमति दियो पठाइ ॥ ग्वाल परमसुख पाइ कोटि मुख करत प्रशंसा । कहा बहुत जो भए सपूत तौ एकै वंसा ॥ चढि बिमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाइ । जै जै ध्वनि नभ करतहैं हरषि पुहुप बरषाइ ॥ ब्रह्म सुनी यह बात अमरवर घरनि कहानी । गोकुल लीनौ जनम कौन यह मैं नहिंजानी । देखौं इनकी खोजलै शोच परचो मनमाहँ । सूर श्याम ग्वालन लिये चले बंशीबटकी छाहँ ॥ ७४ ॥

अथ तेरह अध्याय ब्रह्मा वत्स बालक हरन ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ हरष भये नंदलाल बैठि तरुछाँहकी । ग्वाल बाल संग करत कोलाहल छाँहकी ॥ बंशीबट अति सुखद और द्रुम पास चहूं है । सखनलिये तहां गए धेनु वन चरति कहूँ है ॥ बैठिगए सुख पाइकै ग्वाल बाल लिये साथ । अति आनँद पुलकित हिये गावत हैं गुणनाथ ॥ १ ॥

अहिर लिये मधु छाक तुरत वृन्दावन आए । व्यंजन सहस प्रकार यशोदा बनहि पठाए ॥ श्याम कही वन चलतही मातासों समुझाइ । उतने वै आए सबै देखतही सुख पाइ ॥ २ ॥

कान्ह देखि मधु छाक पुलकि अंग अंग बढायो । हरि हँसि बोले तबै प्रेमसों जननि पठायो ॥ नीके पहुँचे आनिकै भलो बनो संयोग । बार बार कहि सबनको आजु करौ सुखभोग ॥ ३ ॥

वन भोजन विधि करत कमलके पात मँगाये। तोरे पात पलाश सरस दोना बहु ल्याये॥ भांति २ भोजन धरे दधि लवनी मिष्टान । वनफल लये मँगाइकै लागे भोजन खान ॥४॥

वन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा । श्याम कुँवर परसन्न महर सुत अरु श्रीदामा । श्याम सबै मिलि खातहै लै लै कौर छुडाय । औरन देत बुलाइके डहकि आपु मुख नाइ ॥ ५ ॥

ब्रह्मा देखि बिचार सृष्टि कोई नई चलाई । मुहि पठयो जिहि सौंपी ताहि कहिहौं का जाई ॥ देखौं धौं यह कौन है बाल वत्स हरि लेउं । ब्रह्मलो लै जाऊंगो यह बुधि करि दुख देऊँ ॥ ६ ॥

अन्तर्यामी नाथ तुरत विधि मनकी जानी। बालक दै दिये पठै धेनु बन कहूँ हिरानी॥जहां तहां बन ढूँढिकै फिरि आये हरि पास। श्याम सखन बैठारि करि आपुन गये उदास॥७॥

हरि लै बालक वत्स ब्रह्मलोकहिं पहुँचाये। फिरि आवै जो कान्ह कहूँ कोउ नाहि न पाये॥ प्रभु तबहीं जानो यह विधि लै गयो चुराइ। जो जेहि रँग जेहि रूपको बालक बच्छ बनाइ॥ ८॥

ताते कीन्हे और ब्रह्म हृदनाल उपायो। अपनो करि तेहि जानि कियो ताको मन भायो॥ उद्धारन मारन समर्थ मन हरि कीनो ज्ञान। अब जाने विधि यह करी नये रचे भगवान॥ ९॥

उहै बुद्धि उहै प्रकृति वहै पौरुष तन सबके। उहै नाउँ उहि भाउ धेनु बछरा मिलि रबके॥ श्याम कह्यो सब सखनको ल्यावहु गोधन ल्यावहु फेरि। सन्ध्याको आगम भयो ब्रजतन हांको घेरि॥ १०॥

सुनत ग्वाल ले धेनु चले ब्रजवृंदावनते। कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वालमनहिते॥ मध्य किये लै श्यामको सखा भये चहुँ पास। बच्छ धेनु आगै किये आवत करत विलास॥ ११॥

बाजत वेणु विषाण सबै अपने रँग गावत। मुरली ध्वनि गौ चलत पग धूरि उडावत॥ मोरमुकुट शिर सोहई बनमाला पट पीत। गोरज मुखपर सोहई मनहु चंद्रकण शीत॥१२॥

देखि हरषि ब्रजनारि श्यामपर तनमनवारति। इकटक रूप निहारि रहीं मेटति चित आरति॥ कहा कहैं छबि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि। मानहु पूरन चंद्रमा कुहू रह्यो आपूरि॥ १३॥

गोकुल पहुँचे जाइ गये बालक अपने घर। गोसुत अरु नर नारि मिलीं अतिहेतु लाइ गर॥ प्रेम सहित वे मिलतहैं जेउ सुत जायो आजु। यशुमति मिलि सुतसों कहति रैनि करत केहि काजु॥ १४॥

मैं घर आवन कहौं सखासँग कोउ नहिं आवै।देखत बन अति अगम डरौं वै मोहि डरपावै॥बारबार उर लाइकै लइ बलाइ पछिताइ।कालिहिते वेई सबै ल्यावहिं गाइ चराइ॥१५॥

यह सुनिकै हरि हँसे कालि मेरि जाइ बलैया। भूख लगी मोहिं बहुत तुरतही दै कछु मैया॥ माखन दीयो हाथकै यह तबलौं पुन खाहु। तातो जल है घामको तनक तेलसों न्हाहु॥ १६॥

तब यशुमति गहि बाँह तुरत हरि लै अन्हवाए। रोहिणि करि जिवनार श्याम बलराम बुलाए॥ जेंवत अतिरुचि पावहीं परुसति माता हेत। जेंय उठे अँचवन लियो दुहुँ कर बीरा देत॥ १७॥

श्याम उनींदे जानि मात रचि सेज बिछायो। तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो॥ अघमर्दन विधिगर्व हत करत न लागी बार। सूरदास प्रभुके चरित पावत कोउ न पार॥ १८॥

राग ललिता॥ हौं नाहिंन जगाइ सकति सुनु सुबात सजनीरी। अपने जान अजहुँ कान्ह मानत हैं रजनीरी॥ ७५॥

जब जब हौं निकट जाति रहति लागि लोभा। तनकी गति बिसरि जाति निरखत मुखशोभा॥ ७६॥

वचननिकौ बहुत करति शोचति जिय ठाढी। नैननि सुविचार करति देखत रुचि बाढी ॥ ७७ ॥

यहि विधि वदनारविंद यशुमति जिय भावै। सूरदास सुखकी राशि कापै वरणि आवै ॥७८॥

राग बिलावल ॥ नंदमहरके भावते जागो मेरे बारे। प्रात भयो उठि देखिये रविकिरणि उज्यारे ॥ ग्वालबाल सब टेरहिं गैया बनचागन। लाउ उठौ मुख धोइये लागी बदन उघारन ॥ मुखत पटु न्यारो कियो माता कर अपने। देखि बदन चकृत भई सौंतुक कि सपने ॥ कहा कहौं वह रूपकी को वरणि बतावै। सूर सु हरिके गुण अपार नंदसुवन कहावै ॥ ७९ ॥

राग ललित ॥ उठे नंदलाल सुनत जननीकी बानी। आलस भरे नैन दोउ सकल शोभाकी खानी ॥ गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढी। नैन कर चकोर चंद्रवदन प्रीति बाढी ॥ माता उलझारी लै कमलमुख पखारचो। नैन नीर परसि करत आलसहि विसारचो ॥ सखा द्वार ठाढे सब टेरतहैं बनको। यमुनातट चलौ कान्ह चारन गोधनको ॥ सखा सहित जेंवहु मैं भोजन कछु कीनो ॥ सूरश्याम हलधर सब सखा बोलि लीनो ॥२८०॥

राग बिलावल ॥ दोउ भैया जेंवत माँआगे। पुनिपुनि लै दधि खात कन्हाई और जननी पै मांगे ॥ अति मीठो दधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु। देखौ धौं दधिस्वाद आपु लै ता पाछे मोहिं देहु ॥ बलमोहन दोउ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नंदरानी। सूरश्याम अब कहत अघाने अँचवन मांगत पानी ॥

राग रामकली ॥ द्वारे टेरतहैं सब ग्वाल कन्हैया आवहु बार भई। आवहु वेगि विलम जनि लावहु गैयां दूरि गई ॥ इह सुनतहि दोऊ उठिधाए कछु अंचयो कछु नाहीं कितिक दूरि सुरभी तुम छांडी वनतो पहुंची आहीं ॥ ग्वाल कह्यो कछु पहुंची ह्वैहैं कछु मिलिहैं मग-माहीं। सूरश्याम बल मोहन भैया भैयन पूंछत जाहीं ॥ ८१ ॥

राग बिलावल ॥ वन पहुँचत सुरभी लई जाई। जैहौ कहां सखनको टेरत हलधर संग कन्हाई ॥ जेंवत परखलियो नाहिं हमको तुम अति करी चँडाई। अब हम जैहैं दूरि चरा-वन तुम संग रैहैं बलाई ॥ यह सुनि ग्वाल धाए आए श्यामहिं अंकमलाई। सखा कहत यह नंदसुवनसों तुम सबके सुखदाई ॥ आज चलौ वृन्दावन जैए गैया चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए घरके छाक मँगाई ॥ ८२ ॥

राग बिलावल ॥ चले सब वृन्दावन समुहाइ। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत लावहु गाइ फिराइ ॥ अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहँ तहँ आये धाइ। बूझत बात ग्वाल केहि कारण बोले कुँवर कन्हाइ ॥ सुरभीवृंद तहांको हांकी औरन लेहु बोलाइ। सूरश्याम यह कही सबनिसों आप चले अतुराइ ॥ ८३ ॥

राग धनाश्री ॥ गैयन घेरि सखा सब ल्याए। देख्यो कान्ह जात वृन्दावन याते मम अतिहरष बढाए ॥ आपुसमें सब करत कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बोलाए। सुरभी हाँकि देत सब जहँतहँ टेरि हेरि सुरगाए ॥ पहुँचे आइ विपिन घन वृंदा देखत द्रुम दुख सबनि गवाँए। सूरश्याम गए अघा मारि जब तादिनते यहि बन अब आए ॥ ८४ ॥

राग नटनारायणी ॥ चरावत बृंदावन हरि धेनु । ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलत हैं करि चैनु ॥ कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ विषान कोउ वेनु । कोउ निर्तत कोउ उघटि तार दै जुरि ब्रजबालक सेनु ॥ त्रिविध पवन जहँ बहत निशिदिन सुभग कुंज घन एनु । सूरश्याम निज धाम बिसारत आवत यह सुख लेनु ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ॥ बृंदावन मोको अति भावत । सुनहु सखा तुम सुबल श्रीदामा ब्रजते बन गऊ चारन आवत ॥ कामधेनु सुरतरु सुख जितने सभासहित वैकुंठ बोलावत । यह बृंदावन यह यमुनातट ये सुरभी अति सुखद चरावत ॥ पुनि पुनि कहत श्याम श्रीमुखते तुम मेरे मन अतिहि सुहावत । सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीला हरि प्रगट देखावत ॥ ८६ ॥

राग बिलावल ॥ ग्वालसखा कर जोरि कहत हैं हमहिं श्याम तुम जिनि बिसरावहु । जहां जहां तुम देह धरत हौ तहां तहां जनि चरन छुडावहु ॥ ब्रजते तुमहिं कहूं नहिं टारौं इहै पाइ मैं हुं ब्रज आवत । यह सुख नाहीं भुवन चतुर्दश यहि ब्रज यह अवतार बतावत ॥ अवर गोप जे बहुरि चले घर तिनसों कहि मुखछाक मँगावत । सूरदास प्रभु गुप्त बात सब ग्वालनसों कहि कहि सुख पावत ॥ ८७ ॥

राग बिलावल ॥ कन्हैया हेरिदे सुभग सांवरे गातकी मैं शोभा कहत उजाउँ । मोरपंख शिर मुकुटकी मुख मटकनिकी बलि जाउँ ॥ कुंडल लोल कपोलनि झांई बिहँसनि चितहि चुरावै । दशन दमक मोतिन्ह लर ग्रीवा शोभा कहत न आवै ॥ उरपर पदिक कुसुम बनमाला अँग धुकधुकी बिराजै । चित्रित बाहु पौंचिआ पौंचे हाथ मुरलिका छाजै ॥ कटि पट पीत मेखला मुकुलित पाइन नूपुरु सोहै । आसपास बर ग्वालमंडली देखत त्रिभुवन मोहै ॥ सब मिलि आनंद प्रेम बढावत गावत गुण गोपाल । यह सुख देखत श्याम संगको सूरदास सब ग्वाल ॥ ८८ ॥

कान्ह कांधे कामरि लकुट लिए कर घेरैहो । वृन्दावनमें गऊ चरावे धौरी धूमरि टेरैहो ॥ लिये लिवाइ ग्वाल बुलाइ जहँ तहँ बन बन हेरैहो । सूरदास प्रभु सकल लोकपति पीतांबर कर फेरैहो ॥ ८९ ॥

सोई हरि कांधे कामरी काछे किये नाँगे पाइन गाइनकी टहल करत हैं । त्रिभुवनपति दिनपति नारीनरपति पंछिनपति रवि शशि जेहि डरत हैं ॥ शिव विरंचि ध्यान धरत भक्त त्रिविधि ताप हरत तेहि तब उधरत हैं । सूरदास प्रभुके गुण निगम नेति नेति गावत तेई वन बिहरत हैं ॥ ३९० ॥

राग नट ॥ छाक लेन जे ग्वाल पठाए । तिनसों बूझति महरि यशोदा छांडि कन्हैयहि आए ॥ हमहिं पठायदिये नँदनंदन भूखे अति अकुलाए । धेनु चरावत हैं बृंदावन हम यहि कारण आए ॥ यहि कहि ग्वाल गए अपने गृह वनको खबरि सुनाए । सूर श्याम बलराम प्रातही अधजेंवत उठि धाए ॥ ९१ ॥

राग सारंग ॥ और ग्वाल सब गृह आए गोपालहि बेर भई । अतिहि अबेर भई लालनको अजहुं न छाक मँगाई ॥ तबहींते भोजन करि राख्यो उत्तम दूध जँमाई । ना जानौं

कान्ह कौन वन चारत अतिहि अबेर लगाई ॥ राज्य करैं वै धेनु तुम्हारी नंदहि कहत सुनाई । पंचकी भीख सूर बलमोहन कहति यशोदा माई ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ जोरति छाक प्रेमसों मैया । ग्वालन बोलि लए अध जेंवत उठि दौरे दोउ भैया ॥ तबहींते भोजन नहिं कीनो चाहत दियो पठाई । भूखे भए आजु दोउ भैया आपहि बोलि मँगाई ॥ सद माखन साजो दधि मीठो मधु मेवा पकवान । सूर श्यामको छाक पठावत कहति ग्वारिसों जान ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ घरहीकी यक ग्वारि बोलाई । छाक सामग्री सबै जोरिकै वाके कर दै तुरत पठाई ॥ कह्यो ताहि वृन्दाबन जैये तू जानति सब प्रकृत कन्हाई । प्रेमसहित ले चली छाक वह कहाँ वैहैं भूखे दोउ भाई ॥ तुरत जाइ वृन्दावन पहुँची ग्वालबाल कहुँ कोउ न बताई । सूर श्यामको टेरति डोलति कत हौ लाल छाक मैं ल्याई ॥ ९४ ॥

राग टोडी ॥ आजु कौने धौं बन चरावत गाइ कहां भई अबेर । बैठे कहां सुधि लेउँ कौन विधि ग्वारि करत अवसेर ॥ वृन्दावन दै आदि सकल बन ढूंढ्यो जहां गायनकी टेर । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कैसे दुरत दुराये कहौ धौं डुँगरनकी ओट सुमेर ॥ ९५ ॥

छाक लिये शिर श्याम बुलावति । ढूँढति फिरति ग्वारि नीकेकरि कहूं भेद नाहिं पावति ॥ टेर सुनत काहूकी श्रवणनि तहीं तुरत उठि धावति । पावति नहीं श्याम बलरामहिं ब्याकुल ह्वै पछितावति ॥ वृन्दावन फिरिफिरि देखति है बोलि उठे तहां ग्वाल । सूरश्याम बलराम इहाँ हैं छाक लेहु किन लाल ॥ ९६ ॥

राग कान्हरो ॥ फिरत बन बन बृंदावन बंशीबट संकेत बट नटनागर कटि काछे खौरि केसरिकी किये । पीत वसन चंदन तिलक मोरमुकुट कुण्डल श्यामघन यह छबि लिये । तनु त्रिभंग सुगंध अंग निरखि लज्जत रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रमुदित सबहिये । सूर श्याम अति सुजान मुरलीध्वनि करत गान ब्रजजन मनको सुख दिये ॥ ९७ ॥

हरिको टेरति फिरति गुआरि । आई लेहु तुम छाक आपनी बालकबल बनवारि ॥ आजु कलेऊ करत बन्यो नाहिं गैयन सँग उठि धाये । तुम कारण बन छाक यशोदा मेरेहि हाथ पठाए ॥ यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरिगए तेहि काजू । सूर श्याम कह्यो नीके आई भूख बहुतही आजू ॥ ९८ ॥

बहुत फिरी तुमकाज कन्हाई । टेरिटेरि मैं भई बावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई ॥ जे सब ग्वाल गये ब्रजघरको तिनसों कहि तुम छाक मँगाई । लवनी दधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई ॥ ऐसी भूख मांझ तू ल्याई तेरी केहि विधि करौं बड़ाई । सूर श्याम सब सखन पुकारत आवहु क्यों न छाक है आई ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ गिरिपर चढि गिरिवरधर टेरे । अहो सुबल श्रीदामा भैया ल्यावहु गाइ खरिकके नेरे ॥ आई छाक अबार भई है नेसकु धैया पिअहु सबेरे । सूरदास प्रभु बैठि शिलनिपर भोजन करैं ग्वाल चहुँफेरे ॥ ४०० ॥

राग नट ॥ बिहारी लाल आवहु आई छाक । भई अबार गाइ बहुरावहु उलटावहु दै हांक ॥ अर्जुन भोज अरु सुबल श्रीदामा मधु मंगल इततक । मिलि बैठे सब

जेंवन लागे बहुत बन्यो कहि पाक ॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहँ तहँ फेनी पिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वालसँग ब्रह्मलोक यह धाक ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ आई छाक बुलाए श्याम। यह सुनि सखा सबै जुरि आए सुबल सुदामा अरु श्रीदाम ॥ कमलपत्र दोना पलाशके सब आगे धरि परुसत जात। ग्वालमंडलीमध्य श्यामघन सब मिलि भोजन रुचिकर खात ॥ ऐसी भूखमांझ इह भोजन पठैदियो करि यशुमति मात। सूर श्याम अपनो नहिं जेंवत ग्वालन करते लैलै खात ॥ २ ॥

सखनसंग हरि जेंवत छाक। प्रेमसहित मैया दैपठए सबै बनाएहैं एकताक ॥ सुबल सुदामा श्रीदामासँग सब मिलि भोजन रुचिसों खात। ग्वालन करते कौर छुडावत मुख लै मेलि सराहत जात ॥ जो सुख कान्ह करत बृंदावन सो सुख नहीं लोकहूं सात। सूर श्याम भक्तनवश ऐसे ब्रजहि कहावतहैं नँदतात ॥ ३ ॥

ग्वालमंडलीमें बैठेहैं मोहन बडकी छहियाँ दुपहरीकी बिरियां संग लीने। एक मथत दोहनी दूध एक बँटावत फल चवैने ॥ एक निकर हरि झगरि लेत ऐसे बनि आपनी कमरके आसन कीने। जेंवतहैं अरु गावत कान्ह सारंगीकी ताने ॥ लेत सखनिके मध्य विराजत छाकलेतकर छीने। सूरदास प्रभुको मुख निरखत सूर रीझि हेरें सुमननि वरषत सभीने ॥ ४ ॥

ग्वालन करते कौर छँडावत। जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुख लै नावत ॥ षट-रसके पकवान धरे सब तामें नहिं रुचि पावत। हाहा करिकरि माँगि लेत हैं कहत मोहिं अति भावत ॥ यह महिमा एई पै जानैं जाते आप बँधावत। सूर श्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजन ध्यान लगावत ॥ ५ ॥

ब्रजबासी पटतर कोउ नाहिं। ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत इनकी जूँठनि लैलै खाहिं ॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई। धन्य धन्य वृंदावनके तरु जहां विहरत त्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छाँक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई। सूरदास प्रभु विश्वंभर हैं ते ग्वालनके कौर अघाई ॥ ६ ॥

राग सारंग ॥ शीतल छहियाँ श्याम बैठे जानि भोजनकी बेरिआ। वामभुजा सखा-अंसपर दीने दक्षिणकर द्रुम डरिआ ॥ चलिये जू नेक गइनघेरौ जू बलरामसों कहत बोलिलेहु अपनी ओरिआ। प्रभु बैठे कदमतर गाइयाको दूध निकरिया ॥ ७ ॥

राग नटनारायण ॥ विधि मनहीमन शोच परचो। गोकुलकी रचना सब देखत अति जियमांहि डरचो ॥ मैं विरंचि विरच्यो जस मेरो यह कहि गर्व बढायो। ब्रज नर नारि ग्वालबालक कहि कौने ठाट रचायो ॥ बृंदावन वट सघन वृक्षतर मोहन सबै बोलाये। सखासंग मिलिकरि भोजी विधि विधि मन भरम उपाये ॥ धेनु रहीं बनमें भूली ह्वै बालक भ्रमत न पाये ॥ याते श्याम अतिहि अनुराने तुरंत तहां उठिधाये ॥ बालक बच्छ हरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्वविनाशन नवकृत फेरि बनाये ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ जेवत छांक गाइ बिसराई। सखा श्रीदामा कहत सबनिसों छाँकहिमें तुम रहे भुलाई। धेनु नहीं देखियत कहुँनियरे भोजनहीमें सांझ लगाई। सुरभि काज जहँ तहँ

उठि धाये आपु तहाँ उठि चले कन्हाई ॥ ल्याये ग्वाल घेरि गोगोसुत देखि श्याम मनहरष बढाई । सूरदास प्रभु कहत चलौ घर बनमें आजु अबार कराई ॥ ९ ॥

राग गौरी ॥ ब्रजहि चलौ आई अब सांझ । सुरभी सबै लेहु आगे करि रैनि होई पुनि बनही मांझ ॥ भली कही यह बात कन्हाई अतिहि सघन आरण्य उजारि । गैयाँ हांकि चलाई ब्रजको और ग्वाल सब लिए पुकारि ॥ निकसि गए बनते सब बाहिर अतिआनंद भए सब ग्वाल । सूरदास प्रभु मुरलि बजावत ब्रज आवत नटवर गोपाल ॥ ४१० ॥

राग कल्याण ॥ सुंदरश्याम सुँदर वर लीला सुन्दर बोलत वचनरसाल ॥ सुंदर चारु कपोल विराजत सुंदर उरज बनी बनमाल ॥ सुंदर चरण सुँदर हैं नखमनि सुंदर है कुंडल मकराल । सुंदर मोहन नैन चपल किए सुन्दर ग्रीवा बाहु विशाल ॥ सुंदर मुरली मधुर बजावत सुंदर हैं मोहन गोपाल । सूरदास जोरी अति राजति ब्रजको आवत सुंदर चाल ॥ ११ ॥

सुंदर श्याम सखा सब सुंदर सुंदर भेष धरे गोपाल । सुंदर पथ सुंदर गति आवनि सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥ सुंदर लोग सकल ब्रज सुन्दर सुंदर हलधर सुंदर चाल । सुंदर बदन विलोकनि सुंदर सुन्दर गुण सुंदर बनमाल ॥ सुन्दर गोप गाइ अति सुंदर सुन्दर गुण सब करत विचार । सूर श्याम सँग सब सुख सुंदर सुंदर भक्तहेत अवतार ॥

राग बिलावल ॥ सुन्दर ढोटा कौन को सुंदर मृदुबानी । कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी ॥ सुन्दरि मूरति देखकै घनघटा लजानी । सुंदर नैन निहार लियो कमलनको पानी ॥ सुन्दरता तिहुँ लोककी ब्रजपुरमें आनी । सूरदास यशुमति भई सुन्दरता रजधानी ॥ १२ ॥

राग गौरी ॥ देखि सखी बनते जु बने ब्रज आवत हैं नँदनंदन । शिखी शीश मुख-मुरलि बजावत बन्यो तिलक उर चंदन ॥ कुटिल अलक मुख चंचल लोचन निरखत अतिआनंदन । कमल मध्य मनो द्वै खग खंजन बँधे आइ उडि फंदन ॥ अरुण अधर छबि दशन बिराजति जब गावत कल मंदन । मुक्ता मनौं लालमणिमें पुट धरे सुरकि वर-वंदन ॥ गोपवेष गोकुल गो चारत हैं प्रभु असुरनिकंदन । सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुतिछंदन ॥ १३ ॥

मेरे नैन निरखि सुख पावत । संध्या सबै गोपगोधनसँग बनते बने लालब्रज आवत ॥ बलिबलि जाउँ मुखारविंदकी मंद मंद गति धावत । नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मन भावत ॥ गुंजा उर बनमाल मुकुट शिर वेणु बजावत । कोटि किरण मणि मुखपर कासत उडपति कोटि लजावत ॥ चंदन खौरि काछनीकी छबि सबके मनहिं चुरावत । सूर श्याम नागर नारिनको वासर बिरह नशावत ॥ १४ ॥

राग केदारो ॥ शोभा कहत कहै नहिं आवै । अचवत अति आदर लोचनपुट मनन रूपको पावै ॥ सजल मेघ घनश्याम सुभगवपु तडितवसन उरमाल । शिखी शिखिर तनु धातु विराजति सुमन सुगंध प्रवाल ॥ कछुक कुटिलको विपिन सघन शिर गोरज मंडित केश । शोभित मनु अंबुज परागरस राजत अली सुदेश ॥ कुंडल किरिन कपोल कुटिल

छबि नैन कमलदल मीन। प्रतिप्रति अंगअंग कोटिक छवि सुनुसखि परमप्रवीन॥ अधर मधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन। सूरदास जहां दृष्टिपरतहै होत तहीं लवलीन॥ १५॥

बहुरि बाल वत्सहरन॥ राग धनाश्री॥ ब्रजकीलीला देखि ज्ञानु विधिको भयो भारी। त्रिभुवननायक आनि भयो गोकुल अवतारी॥ खेलत ग्वालनसंग रंग आनंद मुरारी। शोभित सँग ब्रजबाल लाल गोवर्धनधारी॥ घरघरते छाकैं चलीं मानसरोवरतीर। नारायण भोजन करैं बालक संग अहीर॥ १६॥

व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगे राखे। खाटे मीठे स्वाद सबे रस लैलै चाखे॥ रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात॥भोजनको सबस्वाद लै कहत परस्पर बात॥१७॥

देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके बासी। आपुसमें वै कहत हँसत एई अविनासी॥ देखि सबै अचरजु भए कहौ ब्रह्मसों जाइ। जाको अविनाशी कहत सो ग्वालन सँग खाइ॥१८॥

इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो। देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो॥ परम सुभग यमुना बहै तह त्रिविध समीर। पुहुपलता द्रुम देखिकै चकृतभयो मतिधीर॥ १९॥

अतिरमणीक कदंबछाँह रुचिपरमसुहाई। राजतमोहनमध्य अवलि बालक छबिपाई॥ प्रेममगन ह्वै परसपर भोजन करत गुपाल। ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभु पठए द्वै ग्वाल॥४२०॥

बन उपवन सब ढूँढि सखा हरि पै फिरि आए। बछरा भए अदृष्ट कहूं खोजत नाहिं पाए॥ सबै सखा बैठेरहौ मैं देखौंधौं जाइ। बच्छहरन जिय जानि प्रभु आपु गए बहराइ॥ २१॥

जब गोविंद गए दूरि बालकन हर्यो विधाता। लैहैं तुरत मँगाइ आपुहै हैं जगत्राता॥ ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो बालक बच्छा संग। प्रभुकी लीला गमनहीं कियो गर्व अतिअंग॥२२॥

तब चिंतामणि चितै चित्त इक बुद्धि विचारी। बालक बच्छ बनाइ रचे वेही उनिहारी॥ करत कुलाहल सब गए ब्रजघर अपने धाइ। अतिआदर करिकरि लिये अपनी अपनी माइ॥ २३॥

ब्रह्मा कियो विचार जाय ब्रज गोकुल देख्यो।करिहैं शोकु सँताप जाइ पितु मातहि देखों॥ आए तहां बिधना चले घरघर देखौ आइ। संध्या समै होत कौतूहल जहँ तहँ दुहिये गाइ॥ २४॥

यह गोकुल किधौं और किधौं हौंही भ्रमभूल्यो। यहअविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥ अंतर्यामी जानिधौं हरौ बच्छ लैआइ। जगत पिता मैं सभ्रम्यो गए लोक फिरि धाइ॥२५॥

देख्यो जाइ जगाइ बाल गोसुत जहँ राखे। विधि मन चक्रित भये बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥ छिन भूतल छिन लोकमें छिन आवे छिन जाइ। ऐसेहि करत वरषदिन बीतो थकित भये विधि पाइ॥ २६॥

तब हरि प्रगट्यो जानि ज्ञान चितमें जब आयो। धृगधृग मेरी बुद्धि कृष्णसों बैर बढायो॥ लैगो सुत गोपाल शिशु शरन गयो ह्वै साधु। चारिहु मुख अस्तुति करत प्रभु क्षमौ मोहिं अपराधु॥ २७॥

अनजामत यह करी मैं तुमसों बरि आई । ये मेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवनके राई ॥ ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति सँभारि।शरन गए राखत सदा अवगुण सकल बिसारि२२८॥

जोर उदित खद्योत ताहि क्यों तिमिर नशावै।दीपक बहुत प्रकाशत रनिसम क्यों कहवावै॥ मैं ब्रह्मा इकलोकको ज्यों गूलरिबिच जीव।प्रभु तुमरे इक रोमप्रति कोटि ब्रह्म अरु शीव॥२९॥

मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया।मिथ्या है यह देह कहौ क्यों हरि बिसराया॥ तुम जाने बिन जीव सब उत्पति प्रलय समाहिं । शरण मोहिं प्रभु राखिये चरणकमलकी छाहिं ॥ ४३० ॥

करहु मोहिं ब्रजरेणु देहु वृंदावन बासा । माँगौं यहै प्रसाद और नाहिं मेरे आसा॥जोइ भावै सो करहु तुम लता सलिल द्रुम गेहु।ग्वाल गाइको भृतु करौ मनौ सत्यव्रत एहु॥३१॥

जो दरशन नर नाग अमर सुरपतिहुँ न पायो । खोजत युग गए बीति अंत मोहूं न दिखायो ॥ यह ब्रज पारस नित्य है मैं अब समुझो आइ । वृंदावन रज ह्वै रहौं मोहिं नाहिं लोक सुहाइ ॥ ३२ ॥

माँगत बारंबार शेष ग्वालनिको पाऊं।आप लियो कछु जानि भक्ष करि उदर जिआऊं ॥ अब मेरे निज ध्यान यह रहिहौं जूंठनि खाइ।और विधाता कीजिये मैं नाहिंते छाँडौं पाइ३३॥

तब प्रभु बोले आपु वचन मेरो अब मानो । और काहि विधि करों तुमहिंते कौन सयानो ॥ तुम ज्ञाता हौ कर्म धर्मके तुमते तब संसार । मेरी माया अति अगम कोउ न पावै पार ॥ ३४ ॥

श्रीमुख वाणी कहत विलँब अब नेक न लावहु । ब्रज परिकर्मा करहु देहको पाप नशावहु ॥ तुरत जाहु कही लोकको यहि विधि करि मनुहार । ब्रह्मा करि अस्तुति चले हरि दीनो उर हार ॥ ३५ ॥

धनि बछरा धनि बाल जिनहिंते दरशन पायो।डर मेरो गयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो ॥ धनि यशुमति जिन वश किए अविनाशी अवतार। धनि गोपी जिनके सदन माखन खात मुरार ॥ ३६ ॥

धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य ये ब्रजके बासी । धन्य यशोदा नंद भक्तिवश किये अविनाशी ॥ धनि गोसुत धनि गाइ ये कृष्ण चराये आपु । धनि कालिंदी मधुपुरी जा दरशन नशे पापु ॥ ३७ ॥

मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आए । धनि देवै वसुदेव पुत्र तुम मांगे पाए ॥ चारि वदन मैं कहा कहौं सहसानन नाहिं जान।गाइ चरावत ग्वालसँग करत नंदकीआन३८॥

योगीजन अवराधिफिरत जिहिध्यान लगाए । ते ब्रजवासिन संगफिरत अति प्रेम बढाए॥ वृंदावन ब्रजको महतु कापै बरण्यो जाइ।चतुरानन पग परशिकै लोक गयो सुख पाइ ॥३९॥

हरि लीनो अवतार कहत शारद नाहिं पावै । सत गुरु कृपा प्रसाद कछुक ताते कहिआवै॥ सूरदास कैसे कहै महापतित अवतार । शेष सहसमुख जपत है सोउ न पावै पार ॥४४०॥

राग सारंग ॥ कह्यो गोपाल चरतहैं गोकुत हम सब बैठि कलेऊ कीजै । शीतल छांह वृक्षकी सुंदर निर्मल यमुनाको जल पीजै ॥ भोजन करत सखा इक बोल्यो बछरू कतहूं दूरि गये।यदुपतिकह्यो घेरि हौं आनौं तुम जेंवहु निश्चिंतभए।चतुरानन बछरा लै गोए फिरिमाधौ

आए वहि ठाउं। बालक बच्छ हरे लोकेश्वर बारबार टेरत लै नाउं॥जान्यो छल ब्रह्मा मन मोहन गोपी गाइ बहुत दुख पैहैं। तजिहैं प्राण सबै मिलि सुतको निश्चय गृह जो आजु न जैहैं॥ वाही भांति वरन बपु वैसहि शिशु सब रचे नंद सुत आन। आगे बछ पाछे ब्रज बालक करत चले मधुरे सुर गान॥ पूरब प्रीति अधिक ताहूते करती ब्रज वनिता अरु धेनु। सूरज प्रभु अच्युत ब्रज मंगल घरही घर लागे सुख देनु॥ ४१॥

राग कान्हरो॥ आज बने बनते ब्रज आवत। नानारंग सुमनकी माला नंदनंदन उरपर छबि पावत॥ संग गोप गोधन सँग लीने नाना गति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करत कोउ उघटत कोउ ताल बजावत॥ रांभत गाइ बच्छहित सुधि करि प्रेम उमंगि थन दूध चुवावत। यशुमति बोली उठि हरषित ह्वै कान्हो धेनु चराये आवत॥ इतनी कहत आइ गये मोहन जननी दौरि हिये लैलावत। सूर श्यामके कृत यशुमतिसों ग्वालबाल कहि प्रगट सुनावत॥ ४२॥

गोविंद चलत देखियतु नीके। मध्य गुपाल मंडली विराजति कांधे धरि लिएसीके॥ बछरा बृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग बजाए। जानौं बन कमल सरोवर तजिकै मधुप उनींदे आए॥ बृन्दावन प्रवेश अघ मारचो बालक यशुमति तेरो। सूरदास प्रभु सुनति यशोदा चितै वदन प्रभुकेरो॥ ४३॥

राग बिलावल॥ आजु यशोदा जाइ कन्हैया महादुष्ट इकु मारचो। पन्नग रूप गिले शिशु गोसुत यहि सब साथ उबारचो॥ गिरि कंदरा समान भयो बड़ जब अघ वदन पसारचो। निदरि गुपाल बैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारचो॥ याके बल हम वदत न काहू सकल भुवन तृण चारचो। जीते सबै असुर हम आगे यह कह उनहि निहारचो॥ हरषि गए सब कहत महरिसों अबहिं अघासुर मारचो। सूरदास प्रभुकी यह लीलाको को भुलए न पारचो॥ ४४॥

यशुमति सुनि सुनि चकित भई। मैं बरजति बन जात कन्हैया का धौं करै दई॥ कहां कहांते उबरचो मोहन नेकन तऊ डरात। आप जे कहीं तनकसों बातैं सुनहु वनहुमें घात॥ मेरो कह्यो सुनो जो श्रवणन कहति यशोदा खीझति। सूर श्याम कह्यो बनहि न जैहों यह कहि मन मन रीझति॥ ४५॥

राग गौरी॥ मैया बहुत बुरो बलदाऊ। कहन लगे बन बड़ो तमाशो सब मौंडा मिलि आऊ॥ मोहूंको चुचकार गए लै जहाँ सघन बन झाऊ। भागि चले कहि गयो वहाँते काटि खाइहे हाऊ॥ हौंहू डरप्यो कांपौ पुकारौ दाऊ कोउ नहिं धीर धराऊ। थरस गयो नहिं भाग सकौं वे भागे जात अगाऊ॥ मोसों कहत मोलको लीनो आपु कहावत साहु। सूरदास बल बड़े चवाई तैसे मिले सखाहु॥ ४६॥

राग नट॥ हरिकी लीला कहत न आवै। कोटि ब्रह्मांड छनकमें नाशै छिनहीमें उपजावै। बालक बच्छ ब्रह्म हरि लै गयो ताको गर्व नवावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझति फिरि पछितावै॥ शिव सनकादि अंत नहिं पावै भक्त बछल कहवावै। सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाइ चरावै॥ ४७॥

राग सारंग ॥ ब्रह्मा बालक बच्छ हरे । आदि अंत प्रभु अंतर्यामी मनसाते जो करे ॥ सोई रूप वै बालक गोसुत गोकुल जाइ परे । एक वरष निशिवासर रहि सँग काहुन जानि परे ॥ त्रास भयो अपराध आप लखि अस्तुति करत खरे । सूरदास स्वामी मन-मोहन तामें मन न धरे ॥ ४८ ॥

राग नट ॥ तब हरि हरचो विधिको गर्व । बच्छ बालक लै गयो धरि तुरत कीन्हों सर्व ॥ ब्रह्मलोक चुराइ राख्यो चरित देखन आपु । बच्छ बालक देखिकै मन करत पश्चात्तापु ॥ तब गयो विधि लोक अपने दृष्टिकै फिरि आइ । जानि जिय अवतार पूरण परचो पाँयनि धाइ ॥ बहुत मैं अपराध कीनो क्षमा कीजै नाथ । जानि यह मैं नहीं कीन्ही जोरि कर रह्यो माथ ॥ बच्छ बालक आनि सन्मुख शरण शरण पुकारि । सूर प्रभुके चरण गहिक निकट राखु मुरारि ॥ ४९ ॥

राग धनाश्री ॥ ब्रज व्यवहार निरखिकै नैननि ब्रह्माको अभिमान गयो । गोपी ग्वाल फिरत सँग चारत हौं हूं क्नों न भयो ॥ व्यंजन वर करवर पर राखत ओदन मधुर दयो । आपन खात खवावत और न कवन विनोद ठयो ॥ सखा संग पयपान करावत अपनी हाथ लयो । शंकर ध्यान धरत युग बीते इह रस तउन दयो॥अहो भाग अहो भाग नंद सुत तपको पुंज लियो । लीला सुभग सूरकी ब्रजमें सब कोउ गाइ जियो ॥ ४५० ॥

राग जयतश्री ॥ वदत विरंचि विशेष सुकृत ब्रजवासिनके । श्रीहरि जिनके भेष सुकृत ब्रजवासिनके ॥ ज्योति रूप जगनाथ जगत् गुरु जगत् पिता जगदीश । योग यज्ञ जप तपमें दुर्लभ गइयां गोकुल ईश॥ इक इक रोम बिराट कोटि कोटि तन कोटि ब्रह्मंड । सो लीन्हो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड ॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि । सो बालक ह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि ॥ क्षीति मिति त्रिपद करी करुनामै बलि छलि दियो पतार । देहरि उलँघि सकत नहिं सो अब खेलत नंददुआर ॥ अनुदिन सुरतरु पंच सुधारस चिंतामणि सुरधेनु । सो तजि यशुमतिको पै पीवत भक्तनको सुख देनु ॥ रवि शशि कोटि कला अवलोकन त्रिविध ताप क्षय जाइ । सो अंजन कर लै सुत कहि चछु आँजति यशुमति माइ ॥ दाता भुक्ता हरता करता विश्वंभर जग जानि । ताहि लाहि माखनकी चोरी बांधे यशुमति रानि ॥ वेद वेदांत उपनिषद अरपै सो भख भुक्ता नाहिं । गोपी ग्वालनिके मंडलमें सो हँसि जूंटनि खाहिं ॥ कमलानायक त्रिभुवनदायक दुख सुख जिनके हाथ । कांधे कमरिआ कांख लकुटिया बिहरत बन बछ साथ ॥ बकी बकासुर शकट तृणावर्त अघ प्रलंब विष भास । केशी कंसको वह गति दीनी राखे चरन निवास ॥ भक्तवछल अखिल अंतर्यामी रहे सकल भरपूर । मारग रोकि रह्यो द्वारे परि पतित शिरोमणि सूर ॥ ५१ ॥

राग गूढमलार ॥ आदि सनातन हरि अविनासी । सदा निरंतर घट घटवासी ॥ पूरण ब्रह्म पुराण बखानै । चतुरानन शिव अंत न जानै ॥ गुणगण अगम निगम नहिं पावै । ताहि यशोदा गोद खिलावै ॥ एक निरंतर ध्यावै ध्यानी । पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ जप तप संयम

ध्यान न आवै । सोई नंदके आँगन धावै ॥ लोचन श्रवणन रसना नासा । नापद पानिन गुण परगासा ॥ विश्वंभर निज नाम कहावै । घरघर गोरस जाय चुरावै ॥ शुक शारदसे करत विचारा । नारदसे पावहिं नहिं पारा॥अवर बरन सुर तीनहि धारै । गोपिनको सो वदन निहारै ॥ जरामरनते रहित आमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ ज्ञान रूप हृदयमें बोलै । सो नंदमहरके आंगन डोलै ॥ जल घर अनिल अनल नभ छायो । पंच तत्त्व मिलि जगत उपायो । काल डरै जाके डर भारी । सो ऊखल बांध्यो महतारी ॥ माया प्रगट सकल जग मोहै । कारन करन करै सो सोहै ॥ ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावै ॥ सो गोकुलमें गाइ चरावै ॥ अच्युत रहै आद्य जलशाई । परमानंद परम सुखदाई ॥ लोक रचै राखै प्रतिपारै । सो ग्वालन संग लीला धारै ॥ गुण अतीत अविगत न जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ जाकी महिमा कहत न आवै । सो गोपिन सँग रास रमावै ॥ जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरै वपु सोई ॥ चौदह भुवन पलक में टारै सो बन बीथिन कुटी सँवारै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नैनभरि जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधावश कुंजबिहारी ॥ भाग बड़े उन सब ब्रजवासी । जिनके संग रमे अविनासी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहिं पावैं । सो रस गोकुल गली बहावैं ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंदकी गति गोविंद जानै ॥ ५२ ॥

राग मलार ॥ बिनवै चतुरानन कहि भोरैं ॥ तुव प्रताप जान्यो नहिं प्रभुजू करि अस्तुति कर जोरैं ॥ अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूकपरी निज धोरैं । हंकृत दोषु क्षमौ करुणामय ज्यों भूपरसत ओरैं ॥ युग युग बिरद इहै चलि आयो सत्य कहतु अब होरैं । सूरदास प्रभु पछिलै लेखें अब नवनै मुख मोरैं ॥ ५३ ॥

राग सारंग ॥ माधव मोहिं करौ वृन्दाबन रेनु । जिन चरणन डोलत नँदनंदन दिन प्रति चारत धेनु ॥ कहा भयोहै देव देह धरि अरु ऊंचो पद पायो ऐनु । सब जीवनलै उदर मांझ प्रभु महाप्रलय जल करत है सेनु ॥ हमते धन्य सदा वै तृण द्रुम बालक बच्छ वृषानरु वेन । सूरश्याम जिनके सँग डोलत हँसि बोलत मथि पियतहैं फेन ॥५४॥

राग सारंग ॥ ऐसे बसिए ब्रजकी बीथिनि । ग्वालनके पनवारे चुनि चुनि उदर भरै एसी थिनि ॥ पैडेके सब वृक्ष बिराजत छाया परम पुनीतनि । कुंजकुंज प्रति लोटि लोटि रति रज लागै रंग रीतनि ॥ निशि दिन निरखि यशोदानंदनु अरु यमुनाजन तीतनि । परसत सूर होत तन पावन दरशन करत अतीतनि ॥ ५५ ॥

धनि यह वृन्दावनकी रेनु । नंदकिशोर चराई गैया मुखहि बजाई बेनु ॥ मदन मोहनको ध्यान धरैं जो अतिसुख पावत चैनु । चलत कहा मन वसत पुरातन जहां लेन नाहिं दैनु ॥ इहां रहौं जहँ जूठनि पावै ब्रजबासी के एनु । सूरदास ह्यांकी सरवरि नहिं कल्पवृक्ष सुरधेनु ॥ ५६ ॥

राग गौरी ॥ अघा मारि आए नँदलाल । व्रज युवती सुनिकै उठि धाई घर घर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत वदन चकित भईं सुंदरि मनहीमन इह करि अनुमान ।

कहति परस्पर सत्य बात यह कौन करै इनकी सरि आन ॥ एई हैं रतिपतिके मोहन एई हैं हमरे पति प्रानसूर श्याम जननी मन मोहत बारबार माँगत कछु खान ।।५७।।

माँगिलेहु जो भावै प्यारे । बहुत भांति मेवा सब मेरे षटरसके परकार हैं न्यारे ॥ सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैं जानति तुव बानि । तुरत मथो माखन दधि आछो खाहु देउँ सो आनि ॥ माखन दधि मोहिं लागत प्यारो और न भावै मोहि । सूर जननि माखन दधि दीनो खात हँसतु मुख जोहि ॥ ५८ ॥

चकईभौरा खेलनसमय ॥ बिलावल ॥ दै मैया भँवरा चकडोरी । जाइलेहु आरेपर राखो कालिह मोल लै राखे कोरी ॥ लै आये हँसि श्याम तुरतही देखि रहे रँगरँग बहु डोरी । मैया बिना और को राखै बारबार हरि करत निहोरी ॥ बोलिलिए सब सखा संगके खेलत श्याम नंदकी पोरी । जैसेइ हरि तैसेइ सब बालक कर भँवरा चकरिनिकी जोरी ॥ देखति जननि यशोदा यह छबि विहँसत बारबार मुखमोरी । सूरदास प्रभु हँसिहँसि खेलत ब्रजबनिता तृण डारत तोरी ॥ ५९ ॥

राग कान्हरो ॥ मेरे हियरे मांझ लगौ मनमोहन लैगयो मन चोरी । अबहीं इहि मारग ह्वै निकसे छबि निरखत तृण तोरी ॥ मोर मुकुट श्रवणन मणि कुंडल उर बनमाला पीत पिछोरी । दशन चमक अधरन अरुणाई देखत परी ठगोरी ॥ ब्रज लरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लिए फेरत चकडोरी । सूर श्याम चितवत गए मोतन तन मन लिए अजोरी ॥ ४६० ॥

राग टोडी ॥ तबते मेरो जिव न रहि सकत । जित देखो तितही वह मूरति नैननिमें नित लग्योई रहत ॥ ग्वालबाल सब संग लगाए खेलतमें करि भाव चलत । उरझिपरचो मेरो मनु तबते कर झटकत चकडोरी हलत ॥ अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरति होत तब मदन दहत । सूर श्याम मेरो चित हरि लीन्हों सकुच छांडि अब तोहिसों कहत ॥६१॥

श्रीराधाकृष्णजीका प्रथम मिलाप । राग टोडी ॥ खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी । कटि कछनी पीतांबर ओढे हाथ लिए भौंरा चकडोरी ॥ मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छबि थोरी । गए श्याम रवितनयाके तट अंग लसति चंदनकी खोरी ॥ औचकही देखी तहां राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी । नील बसन फरिया कटि पहिरे बेनी पीठि रुचिर झकझोरी ॥ संग लरिकिनी चली इत आवति दिन थोरी अतिछबि जन गोरी । सूर श्याम देखतही रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी ॥ ६२ ॥

राग टोरी ॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी । कहां रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी । काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी । सुनति रहति श्रवणनि नँदढोटा करत रहत माखन दधि चोरी ॥ तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि बातन भुरइ राधिका भोरी ॥ ६३ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो । सैन सैन कीनी सब बातें गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कबहुँ हमारे आवहु नंदसदन ब्रजगांव । द्वारे आइ टेरि मोहिं लीजो कान्ह है मेरे नाउं ॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिए टेर । तुमहि सौंह वृषभानु बबाकी प्रातसांझ एक फेर ।' सूधी निपट देखियत तुमकौं ताते करियत साथ । सूरश्याम नागर उत नागरि राधा दोउ मिलि गाथ ॥ ६४ ॥

राग नट ॥ सैननि नागरी समुझाई । खरिक आवहु दोहनीलै यहै मिस छल पाइ ॥ गाइ गिनति करन जैहैं मोहिं लै नँदराइ । बोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताई ॥ कनकवदन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसुकाइ । श्याम प्यारी नैनराचे अति विशाल चलाइ ॥ गुप्तप्रीति जु प्रगट कीन्ह्यो हृदय दुहुँन छिपाइ । सूर प्रभुके वचन सुनिसुनि हरी कुँवरि लजाइ ॥ ६५ ॥

राग सारंग ॥ गइ वृषभानुसुता अपने घर । संग सखीसों कहति चली यह को जैहै खेलन इनके दुर ॥ बडी बेर भइ यमुना आए खीझति ह्वैहै मैया । वचन कहति मुख हृदय प्रेमसुख मन हरि लियो कन्हैया ॥ माती कही कहां हुती प्यारी कहां अबार लगाई । सूरदास तब कहति राधिका खरिक देखि मैं आई ॥ ६६ ॥

राग रामकली ॥ नागरि मनहिं गई अरुझाइ । अतिविरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ ॥ श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनीसी लाइ । चित्त चंचल कुँवरि राधा खान पान भुलाइ ॥ कबहुं बिलपति कबहुं बिहँसति सकुचि बहुरि लजाइ । मात पितुको त्रास मानति मन बिना भई बाइ ॥ जननिसों दोहनी माँगति बेगि देरी माइ । सूर प्रभुको खरिक मिलिहौं गए मोहिं बोलाइ ॥ ६७ ॥

राग धनाश्री ॥ मोहिं दोहनी दै री मैया । खरिकमाहिं अबहीं ह्वै आई अहिर दुहत अपनी सब गैया ॥ ग्वाल दुहत तब गाइ हमारी जब अपनी दुहिलेत । घरिक मोहिं लगि है खरिकामें तू आवै जनिहेत ॥ शोचति चली कुँवरि घरहीते खरिका गइ समुहाइ । कब देखौं वह मोहन मूरति जिन मन लियो चुराइ ॥ देखी जाइ तहां हरि नाहीं चकृत भई सुकुमारि । कबहूं इत कबहूँ उत डोलत लागी प्रीति खमारि ॥ नंद लिए आवतहरि देखे तब पायो विश्राम । सूरदास प्रभु अंतर्यामी कीन्हो पूरणकाम ॥ ६८ ॥

नंद गये खरिकै हरि लीन्हे । देखि तहां राधिका ठाढी श्याम बुलाइलई तहँ चीन्हे ॥ गहर कह्यो खेलहु तुम दोउ दूरि कहूं जनि जैहौ । गनती करत ग्वाल गैइनकी मुहिं तियरे तुम रहियो ॥ सुनु बेटी वृषभानु महरिकी कान्हहि लिये खिलाइ । सूर श्यामको देखे रहिहौ मारै जनि कोउ गाइ ॥ ६९ ॥

राग नट ॥ नंदबबाकी बात सुनौ हरि । मोहि छांडिकै कबहुं जाहुगे ल्याउंगी तुमको धरि ॥ भली भई तुम्हें सौंपि गये मोहिं जान न दैहौं तुमको । बाँह तुम्हारी नेकुन न छडिहौं महरि खीझि हैं हमको ॥ मेरी बाहँ छाँडि दे राधा करत उपर फटबातैं ॥ सूरश्याम नागर नागरिसों करत प्रेमकी घातैं ॥ ४७० ॥

राग नट ॥ नीवी ललित गही यदुराई । जबहिं सरोज धरो श्रीफलपर तब यशुमति गइ आई ॥ तत्क्षण रुदन करत मनमोहन मनमें बुधि उपजाई । देखो ढीठि देति नाहिं

माता राखी गेंद चुराई ॥ काहेको झकझोरत नोखे चलहु न देउँ बताई । देखि विनोद बालसुतको तब महरि चली मुसुकाई ॥ सूरदासके प्रभुकी लीला को जानै इहि भाई ॥७१॥

राग धनाश्री ॥ बातनमें लइ राधालाइ । चलहु जैये विपिन वृन्दा कहत श्याम बुझाइ ॥ जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ । नेकहू नाहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ ॥ तुव परशि तन ताप मेटैं काम द्वंद्व बहाइ । चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्रवदन नवाइ ॥ मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ । श्यामश्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहै गाइ ॥ ७२ ॥

अथ सुखविलास ॥ राग गौडमलार ॥ गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी ॥ पौन झकझोर चपला चमकि चहुँ ओर सुवनतन चितै नंद डरत भारी ॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसों बोलिकै राधिका कान्ह घर लिये जारी । दोउ घर जाहु संग नभ भयो श्याम रंग कुँवर गह्यो वृषभानवारी ॥ गये वन घन ओर नवल नँदनँद किशोर नवल राधा नए कुंज भारी । अंग पुलकित भए मदन तिनतन जए सूर प्रभु श्याम श्मामाबिहारी॥७३॥

राग कमोद ॥ नयो नेहु नयो गेहु नयो रस नवल कुंवरि वृषभानु किशोरी । नयो पीतांबर नई चूनरी नईनई बूँदनि भीजति गोरी ॥ नए कुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुनजल पवन हिलोरी । सूरदास प्रभु नवरस विलसत नवल राधिका यौवन भोरी ॥७४॥

राग कान्हरो ॥ नवल गुपाल नबेली राधा नये प्रेमरस पागे । नव तरु बनविहार दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे ॥ शोभित शिथिल वसन मनमोहन सुखवत सुखके वागे । मानहुँ बुझी मदनकी ज्वाला बहुरि प्रजारन लागे ॥ कबहुँक बैठि अंश भुज धरिकै पीक कपोलनि दागे । अति रसराशि लुटावत लूटत लालच लगे सभागे ॥ मानहुँ सूर कलपद्रुमकी निधि लै उतरी फल आगे । नहिं छूटति रति रुचिर भामिनि ता सुखमें दोउ पागे॥७५॥

राग मलार ॥ उतारत हैं कंठनिते हार । हरि हरमिलत होत है अंतर यह मन कियो विचार ॥ भुजा वामपर कर छवि लागति उपमा अंत न पार । मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार ॥ चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार । रसन दशन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुण सागर अरु रस सागर निधि मानत सुखव्यहार । सूर श्याम श्यामानवरस मिलि रीझे नंद कुमार ॥ ७६ ॥

राग कान्हरो ॥ नवल किशोर नवल नागरिया । अपनी भुजा श्यामभुज ऊपर श्यामभुजा अपने उर धरिया ॥ क्रीडा करत तमालतरुन तर श्यामा श्याम उमगि रसभरिया । यों लपटाइरहे उर उर ज्यों मरकतमणि कंचनमें जरिया ॥ उपमा काहि देउँ को लायक मन्मथ कोटि वारने करिया । सूरदास बलिबलि जोरीपर नंदकुमर वृषभानदुलरिया ॥ ७७ ॥

राग गौरी ॥ आजु नँदनंदन रंगभरे । विधि लोचन सुविशाल दो उनके चितवन चित्तहरे ॥ भामिनी मिले परम सुख पायो मंगल प्रथम करे । करसों करज करचो कंचनज्यों अंबुज उरज धरे ॥ आलिंगन दै अधरपान कर खंजन खंज लरे । हठ करि मान कियो

नव भामिनि तब गहि पाइँपरे ॥ लैगए पुलिन मध्य कालिंदी रसवश अनंग अरे । पुहुपमंजरी मुक्तनि माला अँग अनुराग भरे ॥ सुरतिनाद मुख बेनु सुधा सुनि तपि अनतप जो टरे । रचना सूररची बृंदावन आनँद काज करे ॥ ७८ ॥

राग नट ॥ हरि हँसि भामिनि उर लाइ । सुरतिवंत गुपाल रीझे जानि अतिसुख दाइ ॥ हरषि प्यारी अंक भरि पिय रही कंठ लगाइ । हाव भाव कटाक्ष लोचन कला कोक सुभाइ ॥ देखि बाला अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाइ । सूर प्रभु रतिपतिके नायक राधिका समुझाइ ॥ ७९ ॥

गौड मलार ॥ नवल सुनि नवलप्रिया नयो नयो दरश विवि तन मलमले प्राणपतिपीय को अधर धरचो री । प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरि नैतचिबुक सो मोरी । तब कामकेलि कमनीय चंदपै चकोर चातक स्वाति बूँद परचोरी । सुनि सूरदास रसराशि रस बरसिकै चली जनुहरति ले कुहुसि गोरी ॥ ४८० ॥

गृहगवन ॥ राग गौरी ॥ तुरत गए नँदसदन कन्हाई । अंकम दै राधा घर पठई बादर जँहतहँ दिए उडाई ॥ प्यारीकी सारी आपुनलै पीतांबर राधा उर लाई । जो देखै यशुमति हरि ओढे मनयह कहति कहाँ धौं पाई ॥ जननी नैन जबहिं लखि लीने तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई । सूरदास सुतसों यशुमति कहै पीत उढनियां कहां गँवाई ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ पीत उढ़नियां कहां बिसारी । यह तौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी ॥ हौं गोधन लैगयो यमुनतट तहां हुतीं पनिहारी । भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी ॥ हौं लैगयो और काहूकी सो लैगई हमारी । सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमति महतारी ॥ ८२ ॥

राग धनाश्री ॥ मैयारी मैं जानत वाकौ । पीत उढ़नियां जी मेरी लैगई लैआनौं धरि ताको ॥ हरिकी माया कोउ न जानै आँखि धूरिसी दीनी । लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उढ़नियां कीनी ॥ पीतांबर लै जननि दिखाओ लै आन्यो तेहि पास । सूर मनहिं मन कहति यशोदा तरुनि पढ़ावत गास ॥ ८३ ॥

श्यामहिं देखि महरि मुसुकानी । पीतांबर काके घर बिसरचो लाल ढिगनकी सारी आनी ॥ ओढ़नी आनि दिखाई मोको तरुनिनकी सिखई बुधि ठानी । घर घर लै मेरो सुत भुरवति ऐसी सबै दिननकी जानी ॥ हरि अंतर्यामी रतिनागर जानिलई जननी पहिचानी । सूर निरखि मुख सकुचि भगाने या लीलाकी यहै सयानी ॥ ८४ ॥

राग कल्याण ॥ सुंदरी गई गृह समुहाइ । दोहनी कर दूध लीन्हे जननिटेरि बुलाइ ॥ प्रेमप्रीति निचोल हरिको कहूं धरचो छिपाइ । औरकी औरै कहति कछु मात मनहि डराइ ॥ कुँवरिकों कहुँ डीठि लागी निरखिकै पछिताइ । सूर तब वृषभानु घरनी राधिका उर लाइ ॥ ८५ ॥

जननी कहति कहाभयो प्यारी । अबही खरिक गई तू नीके आवतही भई कौन बिथा री ॥ एक बिटिनियां सँग मेरे थी कारे खाई ताहितां री । मों देखत वह परी धरणि गिरि मैं डरपी अपने जिय भारी ॥ श्याम वरण एक धोटा आयो यह नाहिं जानत रहत कहाँ री । कहत सुनैं वह नंदको बारो कछु पढ़िकै वह तुरतहि झारी ॥ मेरो मन भरिगयो

त्रासते अब नीको मोहि लागतु मा री। सूरदास अतिचतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी ॥ ८६ ॥

गौडमलार ॥ कुँवरिसो कहति बृषभानुघरनी। नेक नहिं घर रहति तोहि कितनो कहति, रिसनि मुहि दहति बन भई हरनी ॥ लरिकिनी सबनि घर तोसी नहि कोउ निडर, चलति नभ चितै जो तकै धरनी। बड़ी करवर टरी सांपसों उबरी, बातके कहत तोहि लगति जरनी ॥ लिखी मेटै कौन कर्ता करै जौन, सोइ ह्वैहै होनहारी करनी। सुतालई उरलाइ तन निरखि पछिताइ, डरनि गई कुँभिलाइ सूर बरनी ॥ ८७ ॥

महर वृषभानके यह कुमारी। देवधामीकरत द्वारद्वारे परत. पुत्र द्वै तीसरी यहै बारी ॥ भई बरष सातकी शुभ घरी जातकी, प्यारी दुहुँ भ्रातकी बची भारी। कुँवरि दई अन्हवाइ गई तन मुरझाइ, वसन पहिराइ कछु कहति खारी ॥ जाहि जनि खरिकतन खेलि अपने सदन, यह सुनत हँसति मन श्यामनारी। सूर प्रभुध्यान धरि हरषि आनंदभरि, गांव घर खेलिहौं कहति कारी ॥ ८८ ॥

श्रीराधिकाजीको यशोदा गृह गवन ॥ राग आसावरी ॥ खेलनके मिस कुंवरि राधिका नंदमहरके आई हो ॥ सकुच सहित मधुरे करि बोली घर हौ कुंवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिलसम बाणी निकसे अति अतुराई हो। मातासों कछु करत कलह हरि सो डारयो बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो। यमुना तीर काल्हि मैं भूल्यौं बांह पकरि लै आई हो ॥ आवति यहां तोहिं सकुचतिहै मैं दै सौंह बुलाई हो। सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ ८९ ॥

को जानै हरिकी चतुराई। नैनसैन संभाषण कीनो प्यारीकी उर तपनि बुझाई ॥ मनही मन दोउ रीझि मगन भए अति आनंद उरमें न समाई। करपल्लव हरि भाव बतावत एक प्राण द्वै देह बनाई ॥ जननी हृदय प्रेम उपजायौ कहति कान्हसो लेहु बुलाई। सूरश्याम गहि बांह राधिका ल्याए महरि निकट बैठाई ॥ ४९० ॥

राग सूहो ॥ देखि महरि मनहीं जु सिहानी। बोलिलई बूझति नंदरानी कुंवर कहति मधुरे मधुवानी ॥ ब्रजमें तोहिं कहूं नहिं देखी कौन गाऊं है तेरो। भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यो हतो सुत मेरो ॥ नयन विशाल बदन अतिसुंदर नीकी छोटी। सूर महरि सवितासों बिनवति भली श्यामकी जौटी ॥ ९१ ॥

राग नट ॥ नामु कहा है तेरो प्यारी। बेटी कौन महरकी है तू कहि सु कौन तेरी महतारी ॥ धन्य कोंख जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जिहि तू अवतारी। धन्य पिता माता धनि तेरो छबि निरखति हरिकी महतारी। मैं बेटी वृषभानु महरिकी मैया तुमको जानति। यमुनातट बहुबार मिलन भयो तुम नाहिन पहिंचानति ॥ ऐसी कहि वाको मैं जानति वै तो बडी छिनारि। महर बडो लंगर सब दिनको हँसत देति मुखगारि ॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठी कीनी। ऐसे समरथ कब मैं देखे हंसि प्यारी उर लीनी ॥ महरि कुंवरिसों यह करि भाषति आउ करौं तेरी चोटी। सूरदास हरषी नंदरानी कहति महरि हम जोटी ॥ ९२ ॥

राग गौरी ॥ यशुमति राधा कुँवरि सँवारति । बडे बार श्रीवंत शीशके प्रेमसहित लैलै निरवारति ॥ माँग पारि बेनीहि सँवारति गूंथी सुंदर भांति । गोरे भाल बिंदु चंदन मनौ इंदु प्रातरविकांति ॥ सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाय । अंचलसौं मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराइ ॥ तिल चाँवरी बतासे मेवा दियो कुँवरिके गोद । सूर श्याम राधा तन चितवत यशुमति मनमन मोद ॥ ९३ ॥

अथ श्याम राधा खेलनसमय ॥ राग कल्याण ॥ खेलो जाइ श्याम सँग राधा ॥ यह सुनि कुँवरि हरष मन कीनों मिटी जु अंतरबाधा ॥ जननी निरखि चकित भई ठाढी दंपतिरूप अंगांधा । देखत भाव दुहुनको सोई जो चितकरि अवराधा ॥ सँग खेलत दोउ झगरन लागे शोभा बढी अगाधा । मनहु तडित घन इंदु तरनिहै बाल करत रस साधा॥ निरखत बिधि भ्रम भूलि परयो तब मन मन करत समाधा । सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा ॥ ९४ ॥

राग केदारो ॥ विधिके आनविधिको शोचु । निरखि छवि वृषभानुतनया सकल मन कृत पोचु ॥ रमा गौरी उर्वशी रति इंदिरा विभव समेति । तुल्य दिनमणि कहा सारँग नाहिं उपमा देति ॥ चरण निरखि निहारि नखछबि अजित देखैं तोकि । चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखति रोकि ॥ सूर आन विरंचि विरचे भक्त निज अवतार । अबलके बल सबल देखि अधीन सकल शृंगार ॥ ९५ ॥

राधा गृहगवन ॥ राग नट ॥ राधे महरिसों कहि चली । आनि खेलौ रहसि प्यारी श्याम तुम हिलमिली ॥ बोलि उठे गुपाल राधा सकुच जिय कत करति । मैं बुलाऊं नहीं आवति जननिको कत डरति ॥ मैया यशोदा देखि तोको करति कितनो छोहु । सुनत हरिकी बात प्यारी रही मुख तन जोहु ॥ हँसि चली वृषभानु तनया भई बहुत अबार । सूर प्रभु चितते टरत नहिं गई घरके द्वार ॥ ९६ ॥

राग बिहारो ॥ बूझति जननी कहां हुती प्यारी । किनतेरे भाल तिलकरचि कीनों किहि कचगूंदि मांग शिर पारी ॥ खेलतरही नंदके आंगन यशुमतिकही कुँवरि ह्यां आरी । तिल चावँरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी ॥ मेरो नाउँबूझि बाबाको तेरो बूझि दई हँसि गारी । मोतन चितै चितै ढोटातन कछु सवितासों गोद पसारी ॥ यह सुनिकैं वृषभानु मुदितचित हँसिहँसि बूझति बात दुलारी । सूर सुनत रससिंधु बढ्योअति दंपति मनमें यहै बिचारी ॥ ९७ ॥

राग गौरी ॥ मेरे आगे महरि यशोदा मैया री तोहिं गारी दीन्ही । वाकी बात सबै मैंजानति वै जैसी तैसी मैं चीन्ही ॥ तोको कहि पुनि कह्यो बबाको बडो धूर्त वृषभानु । तब मैं कह्यो ठग्यो कब तुमको हँसि लागी लपटान ॥ भली कही तैं मेरी बेटी लयो आपनो दाउ । जो मुहि कह्यो सबै उनके गुण हँसिहँसि कहत सुभाउ ॥ फेरि फेरि बूझति राधासों सुनत हँसत सब नारि । सूरदास वृषभानुघरनि यशुमतिको गावति गारि ॥ ९८ ॥

राग गौरी ॥ कहत कान्ह जननी समुझाई । जहँ तहँ डारै रहत खिलौना राधा जनि लैजाइ चुराई ॥ सांझ सवारे आवन लागी चितै रहति मुरली तन आइ । इनहीमें मेरो

प्राण बसतु है तेरे भाए नेकु न माइ ॥ राखि छपाइ कह्यो करि मेरौ बलदाऊको जनि पतिआइ। सूरदास यह कहति यशोदा को लैहैं मुहि लगो बलाइ ॥ ९९ ॥

राग आसावरी ॥ मेरे लालके प्राण खिलौना ऐसो को लैजैहै री। नेक सुनन जो पैहौं ताको सोकैसे व्रजरैहैरी ॥ बिनदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रगटैहै राखि री। अजहुँ उठाइ री मैया मांगेते कहा दैहैरी ॥ आवतही लैजैहै राधा पुनि पाछे पछितैहैरी। सूरदास तब कहत यशोदा बहुरि श्याम बिरुझै हैरी ॥ ५०० ॥

रागनट ॥ सैंतति महरि खिलौना हरिके। जानति टेउ आपने सुतकी रोवतिहै पुनि लरिकै ॥ धरि चौगानु वेन मुरली धरि अरु भौंरा चकडोरी। प्रेमसहित धरि धरि लै राखति जे सब मेरे कोरी ॥ श्रवणनि सुनत अधिक रुचि लागति हरिकी बनियां भोरी। सूर श्यामसों कहति यशोदा दूध पियहु बलि तोरी ॥ १ ॥

आजु सवारे धेनु दुहीमैं वहै दूध मोहिं प्यावैरी। सुन मैया मैंतो पय पीवों मोहिं अधिक रुचि आवै री ॥ और धेनुको दूध न पीवों जो करि कोटि बनावै री। जननी कहति दूध धौरीको मोको सौंह करावै री ॥ तुमते मोहिं और को प्यारो बारंबार मनावै री। सूरश्यामको पय धौरीको माता हितसों ल्यावै री ॥ २ ॥

आछो दूध पियो मेरे तात। तातो लगत वदन नाहिं परशत फूकि देतहै मात ॥ औटि धरयो अबहीं मनमोहन तुम्हरे हेत बनाइ। तुम पीवो मैं नयनन देखों मेरे कुवँर कन्हाइ ॥ दूध अकेली धौरीको है तनको अति हितकारी। सूर श्याम पय पीवनलागे अति तातो दियो डारी ॥ ३ ॥

राग बिहागरो ॥ देखत पय पीवत बलराम। तातो लगत डारि तुम दीनों दावानल पीवत नहिं ताम ॥ कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरत बँधावत दाम। कबहूं अघासुर वदन समाने कबहुँ अंध्यारे जात न धाम ॥ कबहुँ करत बसुधा सब त्रय पद कबहूं देहरि उलंघि न जाइ। षट दश सहस गोपिका विलसत वृंदावन रसरास रमाइ ॥ इहै जानि अवतार धरत ब्रज सुर नर मुनि यह भेद न पाई। राजा छोरि बंदिते ल्याए तिहूं लोकमें विदित बडाई ॥ युगयुग ब्रज अवतार लेत प्रभु अखिल लोक ब्रह्मांडके नाथ। यई गोप यह ग्वाल इहै सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ ॥ यई कान्ह इहै वृंदाबन यह यमुना यह कुंज बिहार। यहै बिहार करत निशिबासर येई हैं जनके प्रतिपार ॥ येई हैं श्रीपति बहुनायक यई हैं कर्ता संसार। रोम प्रति अंग कोटि रवि मुख चूमति यशुमति कहि बार ॥ एई कंस कैबेर सँहारयो ब्रह्म धरयो कृष्ण अवतार। माखन खात चुराइ घरनते बहुत बार भए नंदकुमार ॥ आदिअंत कोऊ नहिं जानतु हरता करता सबके सार। सूरदास प्रभु बाल अवस्था तरुण वृद्धको करे निवार ॥ ४ ॥

राग केदारा ॥ बलिबलि चरित गोकुल राइ। दावानलको पान कीन्हो पीवत दूध सिराइ ॥ पूतनाहठि प्राण लीन्हें अपुन उर लपटाइ। कहति जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ ॥ धरयो गिरिवर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ। शकट भंजन मथन

कुचयुग कठिन लागत पाइ ॥ तृणावर्त अकाशते पटक्यो शिलापर जाइ । डरत लाल हिंडोर झूलत हरे देत झुलाइ ॥ बकासुरकी चोंच फारे सबै दिष्ट देखाइ । कीर पिंजरा गहत मोहन अँगुरि लेत भगाइ ॥ बिना दीपक सदनमहियां तहां धरत न पाइ । अघासुर मुख पैठि निकसे बालबच्छ छुड़ाइ । लिख्यो कौरे नाग काजर ताहि देखि डराइ । नृतत काली नाग फल प्रति सुहथ ताल बजाइ ॥ यमल अर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढ़ाइ । झटकि पात पलाश पल्लव देह देत दिखाइ ॥ हरे बालक वत्स नवकृत हेत दौरी माइ । चरत धेनु न मिलीं तिनको आप दौरे धाइ ॥ वृषभ गंजन मथन केशी हने पूंछ फिराइ । भजत सखा समेत मोहन देखि ब्याई गाइ ॥ गोपनारी संग मोहन कियो रास बनाइ । कहति जननी व्याहको तब रहत बदन दुराइ ॥ कहा वरणौं कोटि रसना हिये बुधि उपजाइ । सूरके प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग विहाइ ॥ ५ ॥

अथ गौचारन । राग रामकली ॥ आज मैं गाइ चरावन जैहौं । बृंदावनके भांति भांति फल अपने कर मैं खैहौं ॥ ऐसी अबहिं कहो जानि बारे देखौ अपनी भांति । तनक तनक पाँइन चलिहौ कस आवत ह्वै है राति ॥ प्रात जात गैयां लै चारन घर आवत हैं सांझ । तुम्हरो कमल वदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं मांझ ॥ तेरी सों मोहिं घामु न लागत भूख नहीं कछु नेक । सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक ॥ ६ ॥

मैया हौं गाय चरावत जैहौं । तू कहि महर नंद बाबासों बड़ो भयो न डरै हौं ॥ तेरे हेत मात मन सुख अरु हलधर संगहि रैहौं । वंशी बट तर गाइनके सँग खेलन अति सुख पैहौं ॥ ओदन भोजन दै दधि कांबरि भूख लगै तौ खैहौं । सूरदास मैं साथ सौंह दै जो यमुनाजल न्हैहौं ॥ ७ ॥

चले सब गाइ चरावन ग्वाल । हेरी टेर सुनत लरिकनकी दौरि गए नँदलाल ॥ फिरि इत उत ह्वै देखै यशुमति दृष्टि न परे कन्हाइ । जान्यो जात ग्वाल सँग दौरयो टेरति यशुमति धाइ ॥ जात चल्यो गैयनके पाछे बलदाऊ कहि टेरत । पाछे आवत जननी देखि फिरि फिरि इतको हेरत ॥ बल देख्यो मोहनको आवत सखा किए सब ठाढे । पहुँची आइ यशोदा रिससों दोउ भुज पकरे गाढे ॥ हलधर कह्यो जान दे मोसँग आवहिं आज सवारे । सूरदास बलसों कहै यशुमति देखे रहियो प्यारे ॥ ८ ॥

राग बिलावल ॥ खेलत श्याम चले ग्वालन सँग । यशुमति कहति ईहै घर आई देखौ हरि कीने जे जे रंग ॥ प्रातहिते लागै एही ढंग अपनी टेक परयो है । देखौ जाइ आज बनको सुख कहा परोसि धरयो है ॥ माखन रोटी अरु शीतल जल यशुमति दियो पठाइ । सूर नंद हंसि कहत महरिसों आवत कान्ह चराइ ॥ ९ ॥

राग सारंग ॥ हरिजूको ग्वालिनि भोजन ल्याई । वृन्दाविपिन विशद यमुना तट शुचि ज्योंनार बनाई ॥ सानि सानि दधि भातु लियो कर सुहृद सबनि कर देत । मध्य गुपाल मण्डली मोहन छाँक बांटिकै लेत ॥ देव लोग देखत सब कौतुक बालकेलि अनुरागी ॥ गावत सुरत सुरन सुख करि मनो सूर दुरित दुख भागी ॥ ५१० ॥

राग सारंग ॥ वृंदावन देखे नंदनंद अतिहि परम सुख पायो । जहं जहं बाल गाइ संग डोलत तहं तहं आपुन धायो ॥ बलदाऊ मोको जिन छांड़ो संग तुम्हारे ऐहौं ॥ कैसेहु आज यशोदा छांड्यो कालिह न आवन पैहौं ॥ सोवत मोकों हेरि लेइंगे बाबानंद दुहाई । सूरश्याम बिनती करै बलसों सखन समेत सुनाई ॥ ११ ॥

अथ धेनुकबध राग भैरव ॥ सखा कहन लागे हरिसों तब । चलौ तालवनको जैये अब ॥ ता बनमें फल बहुत सुहाये । वैसे हम कबहूं नाहिं खाए ॥ असुर धेनुक तहाँ है रखवारी । चलो कहैं हँसि बलि बनवारी ॥ बिहँसत हारि सँग चले गुआला । नाचत गावत गुण गोपाला ॥ सो यो हुतो असुर तरुछाया । सुनत शोर तरुते उठि धाया ॥ हलधरको देखे तिन आवत । ये दोउ बलकर जोर चलावत ॥ पकरि बाहँ बलभद्र फिरायो । मारि ताहि तरुमाहिं गिरायो ॥ और बहुत ताको परिवारो । हरि हलधर तिन सबको मारो ॥ ग्वालन बनफल रुचिसों खाए । बहुरौ वृन्दावनहिं सिधाए ॥ हरि हलधर छबि वरणि न जाई । सूरदास इह लीला गाई ॥ १२ ॥

राग गौरी ॥ बनते आवत धेनु चराये । संध्या समय सांवरे मुखपर गोपदरज लपटाये ॥ बरह मुकुटके निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये । बिलसत सुधा जलद आननपर उड़त न जात उड़ाये ॥ विधिबाहन भक्षनकी माला राजत उर पहिराये ॥ इकवपु रही नाहि बड़ छोटे ग्वाल बने इक दाये । सूरदास मिलि लीला प्रभुकी जीवत जन यश गाए ॥ १३ ॥

आजु हरि धेनु चराये आवत । मोर मुकुट वनमाल विराजत पीतांबर फंहरांवत ॥ जिहि जिहि भांति ग्वाल सब बोलत सुनि श्रवण न मन राखत । आंपुनें टेरिलेत नान्हेसुर हरषित मुख पुनि भाषत ॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रज लोग । सूरं श्यामं गाइन सँग आये मैया लीनो रोग ॥ १४ ॥

यशुमति दौरि लए हरि कनियां । आजु गयो मेरी गाइ चरावन हौं बलिगई निछं-नियाँ ॥ मोकारण कछु आन्यो है बलि बनफल तोरि कन्हैया । तुमहिं मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुँवर कन्हैया ॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन देरी माखन रोटी । सूरदास प्रभु जीवहु युगयुग हरि हलधरकी जोटी ॥ १५ ॥

राग सारङ्ग ॥ मैं अपनी सब गाइ चरै हौं । प्रात होत बलके सँग जैहौं तेरे कहे न भरै हौं ॥ ग्वाल बाल लै गाइन भीतर नेकहु नहिं डर लागत । आजु न सोवों नंद दुहाई रैनि रहौं गो जागत ॥ और ग्वाल सब गाइ चरै हैं मैं घर बैठो रैहौं । सूर श्याम अब सोइ रहौं तुम प्रात जान मैं दैहौं ॥ १६ ॥

राग केदारो ॥ बहुतै दुख हरि सोइ गयोरी । सांझहिते लग्यो यहि बातहि क्रम क्रमते मन बोधि लयो री ॥ एक दिवस गयो गाइ चरावन ग्वालन साथ सबारै । अब तौ सोइ रह्यो है कहिकै प्रातहि कहा बिचारै ॥ यह तौ सब बलरामहिं लागै सँग लै गयो लिवाइ । सूर नंद यह कहत महरिसों आवन दे फिरि धाइ ॥ १७ ॥

राग बिलावल ॥ करहु कलेऊ कान्ह पियारे । माखन रोटी दियो हाथपर बलि बलि जाऊँ हौं खाहु ललारे ॥ टेरत ग्वाल द्वारके ठाढे आए तबके होत सबारे । खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहूँ जनि जैयहु प्यारे ॥ टेरि उठे बलराम श्यामको आवहु धाइ धेनु बन चारे । सूर श्याम कर जोरि मातसों गाइ चरावन कहत हमारे ॥ १८ ॥

राग बिलावल ॥ मैया री मोहि दाऊ टेरत । मोंको वनफल तोरि देत हैं आपुन गैयन घेरत ॥ और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहौं वे सब मोहिं खिझावत । मैं अपने दाऊसँग जैहौं बन देखत सुख पावत ॥ आगे दै पुनि ल्यावत घरको तू मुहिं जान न देति । सूर श्याम कहै यशुमति मैया हा हा करिकरि केति ॥ १९ ॥

राग सारंग ॥ बोलि लियो बलरामहिं यशुमति आवहु लाल सुनहु हरिके गुण कालिहिते लंगरचौ करत अति ॥ श्यामहिं जान देहु मेरे सँग तू काहे डरपावति । मैं अपने ढिगते नाहिं टारौं जियहि प्रतीति न आवति॥ हँसी महरि बलकी बातैं सुनि बलिहारी या मुखकी । जाहु लिवाय सूरके प्रभुको कहत वीरके रुखकी ॥ ५२० ॥

राग नट ॥ अति आनंद भयो हरि धाए । टेरत ग्वालबाल सब आवहु मैया मोहिं पठाए ॥ उतते सखा हँसत सब आवत चलहु कान्ह बन देखहु । बनमाला तुमको पहिरावहिं धातुचित्र तन रेखहु ॥ गाइ लेन सब घेरि घरनते महर गोपके बालक । सूर श्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिके शालक ॥ २१ ॥

राग सारंग ॥ चरावत बृंदावन हरि गाइ । सखा लिए सँग सुबल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ ॥ क्रीडा करत जहां तहां सब मिलि आनंद बढइ बढाइ । बगरिगईं गैयां बनवीथिनि देखी अतिबहुताइ ॥ कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन कोउ गए बछरु लिवाइ । आपुहि रहे अकेले बनमें कहुँ हलधर रहे जाइ ॥ बंशीवट शीतल यमुनातट अतिहि परम सुखदाइ । सूर श्याम तब बैठि विचारत सखा कहां बिरमाइ ॥ २२ ॥

बार बार हरि कहत मनहिं मन अबहिं रहे सँग चारत धेनु । ग्वालबाल कोउ कतहुँ न देख्यो टेरत नाँउ लेत दै सैनु ॥ आलस गात जानि मनमोहन बैठे छाँह करत सुख चैनु । अकनि रहत कहुँ सुनत नहीं कछु नाहिं गौरंभन ग्वालके बैनु ॥ तृषावंत सुरभी बालकगण कालीदह अचयो जलजाइ । निकसि आइ सब तट ठाढे भए बैठि गए जहाँ तहाँ अकुलाइ ॥ बन घन ढूँढि श्याम तहँ आए गोसुत ग्वाल रहे मुरझाइ । मनमहँ ध्यान करतही जान्यो काली उरग रह्यो ह्यां आइ ॥ गरुड त्रास करि आइ रह्यो दुरि अंतर्यामी सबके नाथ । अमृत दृष्टि भरि चितै सूर प्रभु बोलि उठे गावत हरि नाथ॥२३॥

आवहु आवहु कान्ह जू पाई है सब धेनु । कुंज कुंजमें देखि रहे तृणवरति परम सुख चैन ॥ द्रुमन चढ़े सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन । जनि धावहु बलि चरन मनोहर कठिन कंठ मनऐन ॥ बार बार ब्रज कौन उबारै पियो कालीदह फैन । सूर श्याम संतन हित कारन प्रगट भये सुख दैन ॥ २४ ॥

राग सारंग ॥ पाई २ है भैया कुञ्ज वृन्दनमैं टाली । अबके अपनी हटकि चरावहु जैहैं इटकी घाली ॥ आवहु वेगि सकल दुहुँ दिशिते कत डोलत अकुलाने । सुनि मृदु वचन देखि उन्नत कर हरषि सबै समुहाने ॥ तुम तौ फिरत अनतहीं ढूँढत ये बन फिरति

अकेली । ढांकी गाइ कौन पर लैहौं सघन बहुत द्रुम बेली ॥ सूरदास प्रभु मधुर बचन कहि राखत सबहि बुलाए ॥ नृत्य करत आनँद गौ चारत सबै कृष्णपै आए ॥ २५ ॥

राग रामकली ॥ ताते तरकि कह्यो बनमाली । पशु तन चपल स्वरूप न जानत डोलत चाली चाली ॥ धरि तन सगुण त्रिपद पूरण प्रभु आपु कमल प्रतिपाली । यद्यपि वृषभ सुता पति तजिकै फिरति कुमति घाली ॥ अति श्रम भयो सकल बन ढूँढत बन बेली दौ जाली । सूरदास संतन जन हित हरि इहि अब सबते टाली ॥ २६ ॥

नट नारायणी ॥ मोहिं बन छाँडि आए सब ग्वाल । कहांते कहां आइ निकसे करे कैसे ख्याल ॥ मुरछि काहे गिरे धरणी कहा यह जंजाल । मैं यहां जो आइ देखोपरे सब बेहाल ॥ आनि अँचयो जल यमुनको तबहि गए अकुलाइ । निकसिकै जब कूल आए गिरि परे सब आइ ॥ प्राणबिनु हम सब भये ते, तुमहिं दियो जिवाइ । सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥ २७ ॥

राग गौरी ॥ बलदाऊ कहि श्याम पुकारचो । आवहु बेगि चलौ बर जैयै बनहींमें पुनि होत अंध्यारो ॥ ल्याए बोलि सखा हलधरको हँसे, श्याम मुख चाही । बडी बेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाही ॥ हेरी देत चले सब बनते गोधन दिए चलाई । सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ व्रजजनके सुखदाई ॥ २८ ॥

बृन्दावन प्रवेश शोभा । राग गौरी ॥ वै मुरलीकी टेर सुनावत । बृन्दाबन बसि बासर सब निशि आगम जानि चले व्रजआवत ॥ सुबल सुदामा अरु श्रीदामासंग सखा मोहन छबि पावत । सुरभीगण सब लै आगे करि कोउ टेरत कोउ बेणु बजावत ॥ केकीपच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत । सूरश्यामके ललित बदनपर गोरजछवि कहुँ चंद छपावत ॥ २९ ॥

हरि आवत गाइनके पाछे । मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं बनमाला पीतांबर काछे । ग्वालबाल सब वरणबरणके कोटि मदनकी छबि कियो पाछे ॥ पहुँचे आइ श्याम व्रजपुरमें घरहि चलै मोहनबल आछे । सूरदासप्रभु दोउ जननी मिलि लेति बलाइ बोलि मुख बाछे ॥ ५३० ॥

राग कल्याण ॥ आनँदसहित सबै घर आए । धन्य यशोदा तेरो बारो हम सब मरत जिवाए ॥ नरवपु धरे देव यह कोऊ आइ लियो अवतार । गोकुल ग्वाल, गाइ गोसुतके एई राखन हार ॥ पय पीवत पूतना निपाती तृणावर्त इहि भाँति । वृषभासुर वत्सासुर मारचो रामकृष्ण दोउ भ्रात ॥ जबते जन्म लियो व्रजभीतर तबते इहै उपाइ । सूर श्यामके बल प्रतापते बन बन चारत गाइ ॥ ३१ ॥

तुम कत गाइ चरावत जात । पिता तुम्हारो नंदमहरसो जाके यशुमतिसी है मात ॥ खेलत रहौ आपने घरमें माखन दधि भावै तब खात । अमृतवचन कहौ मुख अपने रोम २ पुलकित सब गात ॥ अब काहूके जाहु कहूं जनि आवतहैं युवती इतरात । सूर श्याम नैननआगे रहो काहे कहूं जातहौ तात ॥ ३२ ॥

मैया हौं न चरैहौं गाइ।सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाँइ पिराइ॥न पत्यहि पूछिबलदाउहि अपनी सौंह दिवाइ । यह सुनिसुनि यशुमति ग्वालनिको गारी देत रिसाइ॥ मैं पठवत अपने लरिकाको आवै मन बहराइ । सूरश्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ३३॥

बल मोहन बनते दोउ आए। जननि यशोदा मात रोहिणी हरषि दुहुँनि दोउ कंठ लगाए ॥ काहे आजु अबार लगाई काहे कमलवदन कुँभिलाए। भूखे भए आजु दोउ भैया प्रातकलेऊ करन न पाए ॥ देखहु जाइ कहा जेंवन कियो यशुमति रोहिणि तुरत पठाई । मैं अन्हवाए देति दुहुँनको तुम भीतर अति करौ चँडाई ॥ लकुट लियो मुरली कर लीन्हे हलधर दियो बिषान। नीलांबर पीतांबर लीन्हें सैंति धरति करि प्रान ॥ मुकुट उतारि धरचो मंदिर लै पोंछति है अंगधात । अरु बनमाल उतारति गरसे सूर श्याम की मात ॥ ३४ ॥

अंग अभूषण जननि उतारति। दुलरी ग्रीव माल मोतिनकी केउर लै भुज श्याम निहारति ॥ छुद्रावली उतारति। कटिसे सैंति धरति मनहीमन वारति । रोहिणि भोजन करहु चँढ़ाइ बारबार कहिकहि करि आरति ॥ भूखे भए श्याम हलधर ए यह कहि अंतर प्रेम विचारति । सूरदास प्रभु मात यशोदा पट लै दुहुँनि अंगरज झारति ॥३५॥

ए दोऊ मेरे गाइ चरैया । मोल बिसाहि लये मैं तुमको तब दोउ रहे नन्हैया। तुमसों टहल करावति निशिदिन और न टहल करैया । यह सुनि श्याम हँसे कहि दाऊ झूठहि कहतिहै मैया॥ जानिपरत नहिं साँच झुठाई धेनु चरावत रहे झुरैया । सूरदास प्रभु कहनि यशोदा मैं चेरी कहि लेति बलैया ॥ ३६ ॥

राग कल्याण ॥ यह कहि जननि दुहुँनि उर लावति । सुमनसुता अंगपरसि तरनिजल बलि बलि गई कहिकहि अन्हवावति ॥ सरसंबसन तनु पोछि गई लै षटरसके जेवनार जेंवावति । शीतल जल कपूर रस रचयो झारी कनक लए अँचवावति ॥ भरचो चरू मुख धोय तुरतही पीरेपान बीरी मुख नावति । सूर श्याम सुख जानि मुदित मन सेज्यापर सँग लै पौढावति ॥ ३७ ॥

राग बिहारी ॥ सोवत नींद आइगई श्यामहिं । महरि उठी पौढाइ दुहुँनको आपु लगी गृहकामहिं ॥ बरजति है घरके सब लोग निहरुये लैलै नामहिं । गाढे बोलि न पावत कोऊ डर मोहन बलरामहिं ॥ शिव सनकादि अंत नहिं पावत ध्यावतहैं निशि जामहिं । सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नँदधामहिं ॥ देखत नंद कान्ह अतिसोवत।भूखे भए आजु बनभीतर यह कहिकहि मुख जोवत ॥ कह्यो नहीं मानत काहूको आप हठी दोउ बीर । बार बार तनु पोछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर ॥ सेज मँगाइलई तहँ अपनी जहां श्याम बलराम । सूरदास प्रभुके ढिग सोये सँग पौढी नँदवाम ॥ ३८ ॥

जागि उठे तब कुवर कन्हाई। मैया कहां गई मो ढिगते सँग सोवत जान्यो बलभाई ॥ जागे नंद यशोदा जागी बोलिलिए हरि पास । सोवत झिझकि उठचो काहेते दीपक दियो प्रकास ॥ सपने कूदिपरचो यमुनादह काहू दियो गिराई । सूरश्यामसों कहति यशोदा जिनिहो लाल डराई ॥ ३९ ॥

राग गौरी ॥ मैं बरजौं यमुनातट जात ॥ सुधि रहिगई न्हातकी तेरे जिन डरपो मेरे तात ॥ नंद उठाइ लियो कोराकरि अपने सँग पौढाइ । वृंदावनमें फिरत जहाँ तहँ केहि कारण तू जाइ ॥ अब जिनि जैहौ गाइ चरावन कहँकी रहत बलाइ ॥ सूर श्याम दंपति बिच सोए नींद गई तब आइ ॥ ५४० ॥

राग कल्याण ॥ सपनो सुनि जननी अकुलाई ॥ दंपति बात कहत आपुसमें सोवति शारँगपानी ॥ या व्रजको जीवनि यह ढोंटा कह देख्यो यहि आजु ॥ गाइ चरावन जान न दीजै याको है कह काजु ॥ गृह संपति है तनक ढोंटौना इनहीलों सुख भोग । सूर श्याम बन जात चरावन हँसी करत सब लोग ॥ ४१ ॥

राग भैरवी ॥ यहि अंतर भिनुसार भयो । तारागण सब गगन छपाने अरुन उदित अंधकार गयो ॥ जागी महरि-काज गृह लागी निशिको सब दुख भूलि गयो । प्रातस्नान करन यमुनाको नंदहि तुरत उठाइदयो ॥ मथनि हारि सब ग्वालि बोलाई भोर भयो उठि मथो दह्यो । सूर नंदघरनी आपुनहू मथति मथानी नेति गह्यो ॥ ४२ ॥

अथ कंस कमलके फूल मँगाए कालीदमनलीला अध्याय षोडश ॥ १६ ॥ राग विलावल ॥

नारदसों नृप करत विचार । ब्रजमें ये दोउ कोउ अवतार ॥ नंदसुवन बलराम कन्हाई । इनकी गति मैं कछू न पाई ॥ तृणावर्तसो दूत पठाए ॥ ता पाछे कागासुर धाए ॥ बका पठाइ दई पहिलेही । ऐसेनको बलु वैसेहि लेही ॥ उनते कछू भयो नहिं काजा । यह सुनिसुनि मोहिं आवति लाजा ॥ अब मुनि तुम इक बुद्धि बिचारहु । सूर श्याम बल-रामहि मारहु ॥ ४३ ॥

नारदऋषि नृपसों यह भाषत । वैहैं काल तुम्हारे प्रगटे काहेते तुम उनको राखत ॥ काली उरग रह्यो यमुनामें तहँते कमल मँगावहु । दूत पठायदेहु व्रजऊपर नंदहि अति डर-पावहु ॥ यह सुनिके ब्रज लोग डरैंगे वोउ सुनिहैं यह बात । पुहुप लेन जैहैं नँदढोटा उरग करै तहां घात ॥ यहसुनि कंस बहुत सुख पायो भली कही इह मोहिं । सूरदास प्रभुको मुनि जानत ध्यान करत मन एहि ॥ ४४ ॥

राग सूहो ॥ कंस बुलाइ दूत एक लीन्हो । कालीदहके फूल मँगाए पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हो ॥ यह कहिये ब्रज जाइ नंदसों कंसराज अतिकाज मँगाए । तुरत पठाइदियेही बनिहै भलीभांति कहि कहि समुझाए ॥ यह अंतर्यामी जानि जिय आपु रहे बन ग्वाल पठाए । सूरश्याम ब्रजजनसुखदायक कंसकाल जिय हरष बढाए ॥ ४५ ॥

राग रामकली ॥ खेलन नंदकुमार । दूत आवत जानि ब्रजमें आपु दीन्ह्यों टार ॥ नंद यमुना न्हाइ आए महरि ठाढी द्वार । नृपति दूत पठाइ दीन्ह्यों चल्यो व्रज अहंकार ॥ महर पैठत सदन भीतर छीक बाईं धार । सूर नंद कहत महरिसों आजु कहाविचार ॥४६॥

राग सूहो ॥ यह सुनि कंस मुदितमन कीन्हों । दूतहि प्रगट कही यह बानी पत्र लिखाइ नंदको दीन्हों ॥ कालीदहके कमल मँगावहु तुरत देखि यह पाती । जैसे कालिह कमल ह्यां पहुँचै तू कहियो यहि भांति ॥ यह सुनि दूत तुरतही धायो तब पहुँच्यो ब्रज जाय । सूर नंदकर पाती दीन्हीं दूत कह्यो समझाय ॥ ४७ ॥

राग सूहो ॥ पाती बांचत नंद डेराने। कालीदहके फूल मँगाए सुनी सबनि ब्रजलोग घराने ॥ जो मोको नहिं फूल पठावहु तौ ब्रज करौं उजारी । महर गोप उपनंद न राखौं सबहि न डारौं मारी ॥ पुहुप देहु तौ बनै तुम्हारी नातरुगए बिलाइ । सूरश्याम बल-मोहन तेरे माँगौं उनहिं धराइ ॥ ४८ ॥

राग बिलावल ॥ नंदसुनत मुरझाइगए । पातीबांची सुनी दूतमुख यह बाणी सुनि चकितभए। बलमोहन खटकत वाके मन आजु कहि यह बात। कालीदहके फूल कहौंवौं को आन पछितात ॥ और गोप सब नंद बुलाए कहत सुनो यह बात। सुनहुँ सूर नृप ढँग यह आयो बल मोहनपर घात ॥ ४९ ॥

राग जैश्रती ॥ आपु चढै ब्रजऊपर काली । कहांनिकसि जैए कोराखें नंदकहत बेहाली ॥ मोहिंनहीं जियको डर नेकहु दोउ सुतको डरपाऊँ। गाउँ तजौं कहुँ जाउँ निकसि लै इनहीं काज पराऊँ ॥ अब उबारि नहिं दीखतकतहू शरणराखि को लेइ। सूर श्यामको बरजति माता बाहिर जान नदेइ ॥ ५५० ॥

राग असावरी ॥ नंदघरनि ब्रजनारि बिचारति। ब्रजहि बसत सब जनम सिराने ऐसे कंस करी नहिं आरति ॥ कालीदहके फूल मँगावत को आनै धौंजाई । ब्रजवासी नातरु सब मारौं बांधौं बलन कन्हाई ॥ यह कहतहि दोउ नैन ढराने नंदघरनि दुख पाइ। सूर श्याम चितवत मातामुख बूझत बात बनाइ ॥ ५१ ॥

बूझहु जाइ तातसों बात । मैं बलिजाउँ मुखारबिंदकी तुमही काज कंस अकुलात ॥ आए श्याम नंदपै धाए जान्यो मात पिता अकुलात । अबहीं दूरि करौं दुख इनको कंसहिं पठै देउँ जलजात ॥ मोसों कहौ बात बाबा यह बहुत करत तुम सोच विचार। कहा कहौं तुमसों मेरे प्यारे कंस करत कछु तुमको झार ॥ जबते जनम भयो हरि तेरो कितने करवरटरे कन्हाई। सूर श्याम कुलदेवनि तोको जहां तहां करिलिए सहाई ॥ ५२ ॥

राग बिलावल ॥ तुमहिं कहत जो करै सहाई। सो देवता संगही मेरे ब्रजते अनत कहूं नहि जाई ॥ वह देवता कंस मारैगो केश धरे धरणी घिसिआई। वह देवता मनावहु सब मिलि तुरत कमल जो देइ पठाई ॥ बाबा नंद झखत केहि कारण यह कहि माया मोह अरुझाई। सूरदास प्रभु मात पिताको तुरतहि दुख डारयो बिसराई ॥ ५३ ॥

राग नट ॥ खेलन चले कुँवर कन्हाइ। कहत घोष निकसाजैए तहां खेलें धाइ ॥ गेंद-खेलत बहुत बनि है आनो कोई जाइ। वरही गए सखा श्रीदामा गेंद तुरतही ल्याइ ॥ अपनेकर लै श्याम देख्यो अतिहि हरषवढाइ । सूरके प्रभु सखा लीन्हे करत खेल बनाइ ॥ ५४ ॥

खेलत श्याम सखा लिये संग। इक मारत इक रोवत गेंदहि इक भागत करि नाना-रंग ॥ मारु परस्पर करत आपुमैं अति आनंद भए मनमाहिं। खेलतहीमें श्याम सबनिको यमुनातटको लीन्हें जाहिं ॥ मारि भजत जो जाहि ताहि सो मारत लेत आपनो दाव। सूर श्यामके गुण को जानै कहत और कछु और उपाव ॥ ५५ ॥

राग गौरी ॥ लै गए टारि यमुनातटग्वालनि । आपुन जात कमलके काजहि सखा लिए सँग ख्यालनि ॥ जोरी मारि भजत उतहीको जात यमुनके तीर। इक धावत पाछे

उनहींके पावत नहीं अधीर ॥ रोंगटि करत तुम खेलतहीमें परी कहा यह बानि । सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब तुमहिं भले कर जानि ॥ ९६ ॥

श्याम सखाको गेंद चलाई । श्रीदामा मुरि अंग बचायो गेंद परचो कालीदह जाई ॥ धाइ गह्यो तब फेंट श्यामकी देहु न मेरो गेंद मँगाई । और सखा जिनि मोको जानो मोसों जिनि तुम करौ ढिठाई ॥ जानि बूझि तुम गेंद गिरायो अब दीन्हेही बनै कन्हाई । सूर सखा सब हँसत परस्पर भली करी हरिगेंद गिराई ॥ ९७ ॥

राग सोरठ ॥ फेट छांडि देहु मेरी श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके कामा ॥ मेरो गेंद लेहु ता बदले बांह गहत कत धाइ । छोटो बड़ो न जानत काहू करत बराबरि आइ ॥ हम काहेको तुमहिं बराबरि बड़े नंदके पूत । सूर श्याम दीन्हेंही बनि है बहुत कहावत धूत ॥

राग कल्याण ॥ तोसों कहा धुताई करिहैं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहां तोसों मैं लरिहैं ॥ मुँह सँभारि तू बोलत नाहीं कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसन कँपावत गात ॥ सुनहु श्याम तुमहूँ सरि नाहीं ऐसे गये बिलाई । हमसों सैंतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ ॥ ९८ ॥

हमहींपर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंसको दीजै डारहु हमहिं मराई ॥ सांच कहों मैं तुमहिं श्रीदामा कमलकाज मैं आयो । कहा कंस बपुरो केहि लायक जाको मोहिं डरायो ॥ अघा बका केशी शकटासुर तृणा शिला पर डारचो । बकी कपटकारि प्यावन आई ताको तुरत पछारचो ॥ कालीदह जलछुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊँ । सूरदास प्रभु देह धरेको गुण प्रगटौं एहि ठाऊँ ॥ ९९ ॥

राग सोरठ ॥ रिसि करि लीन्हीं फेंट छुड़ाई । सखा सबै देखत है ठाढे आपुन चढे कदमपर धाई ॥ तारी दैदै हँसत सबै मिलि श्याम गए तुम भाजि डराई । रोवत चले श्रीदामा घरको यशुमति आगे कैहौं जाई ॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारचो गेंद आपनो लेहु न आई । सूर श्याम पीताम्बर काछे कूदिपरे दहमें भहराई ॥ ९६० ॥

राग गौरी ॥ हाइहाइ करि सखनि पुकारचो । गेंदकाज यह करी श्रीदामा नंदमहरको ढोंटा मारचो ॥ यशुमति चली रसोई भीतर तबहिं ग्वालि इक छीकी । ठिठकिरही द्वारेपर ठाढी बात नहां कछु नीकी ॥ आइ अजिर निकसी नँदरानी बहुरो दोष मिटाइ । मंजारी आगे दै निकसी पुनि फिरि आँगन आइ ॥ व्याकुल भई निकसि गई बाहिर कहां धौं गयो कन्हाई । बांयों काग दहिन खर सूकर व्याकुल घर फिरि आई ॥ खनभीतर खन बाहिर आवति खन आंगन इहि भाँति । सूर श्यामको टेरत जननी नेक नहीं मन शांति ॥ ६१ ॥

देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौरि छींक भई बांई रोई दाहिने धाह सुनावत ॥ फटकत श्रवन श्वान द्वारेपर गगरी करत लराई । माथेपर दै काग उड़ानो कुशकुन बहुतक पाई ॥ आए नंद घरहि मनमारे व्याकुल देखी नारी । सूर नंद युवतीसों बूझत बिन छबि बदन निहारी ॥ ६२ ॥

राग नट ॥ नंद घरनिसों बूझत बात । बदन झुराय गयों क्यों तेरो कहां गयो बल मोहन तात ॥ भीतर चली रसोई कारण छींक परी तब आँगन आई । पुनि आगे ह्वै गई मंजारी और बहुत कुशकुन मैं पाई ॥ मोहिं भए कुशकुन घर पैठत आजु कहा यह समुझि न जाई । सूर श्याम गए आजु कहां धौं बार बार बूझत नँदराई ॥ ६३ ॥

महरि महर मन गए जनाइ । खन भीतर खन आंगन ठाढे खन बाहर देखतहै जाइ ॥ यहि अंतर सब सखा पुकारत रोवत आए ब्रजको धाइ । आतुर गए नंद घरहीको महर महरिसों बात सुनाइ ॥ चकित भई दोउ बूझनलागे कहौ बात हमको समुझाई । सूर श्याम खेलतहि कदम चढि कूदिपरे कालीदह जाइ ॥ ६४ ॥

राग सोरठ ॥ सपनो प्रगट कियो कन्हाई । सोवतही निशि आज डराने हमसों यह कहि बात सुनाई ॥ धरणि परी मुरझाइ यशोदा नंद गए यमुनातट धाई । बालक सब नंदहि सँग धाए ब्रज घर जहँतहँ शोर मचाई ॥ त्राहित्राहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरे भहराई । लोटत धरणि परत जलभीतर सूर श्याम दुख दियो बुढाई ॥ ६५ ॥

राग गौरी ॥ ब्रजबासी यह सुनि सब आये । कहां परचो गिरि कुँवर कन्हाई बालक लै सो ठौर दिखाये ॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ । नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत बदन नीर लै धोइ ॥ ब्रजबासी तब कहत नंदसों मरण भयो सबहीको आइ । सूर श्याम बिनु को बसिहै ब्रज धृग जीवन तिहुँ भुवन कहाइ ॥६६॥

महरि पुकारति कुँवर कन्हाई । माखन धरचो तिहारेहि कारण आजु कहाँ अवसेर लगाई । अतिकोमल तुम्हरे सुखलायक तुम जेंवहु मेरे नैनजुडाई । धौरीदूध औटि है राख्यौ अपने कर दुहि गए बनाई ॥ बरजत ग्वारि यशोदाको सब यह कहिकहि नीके यदुराई । सूर श्याम सुतविरह मातके यह वियोग बरण्यो नहिं जाई ॥ ६७ ॥

राग गौरी ॥ माखन खाहु लाल मेरे आई । खेलत आजु अबार लगाई ॥ बैठहु आइ संग दोउ भाई । तुम जेवहु मैया बलि जाई ॥ सद माखन अति हित मैं राख्यो । आजु नहीं नेकहु तैं चाख्यो ॥ प्रातहिते मैं दियो जगाइ । दँतवनि करि जु गए दोउ भाइ ॥ मैं बैठी तुव पंथ निहारों । आवहु तुमपर तनु मनु वारों ॥ ब्रज युवती सब सुनि ए बानी । रोवत धरणि परीं अकुलानी ॥ शोकसिंधु बैठी नँदरानी । सुधि बुधि तनकी सबै भुलानी ॥ सूरश्याम लीला यह कीन्हो । सुखके हेत जननि दुख दीन्हो ॥ ६८ ॥

चौंकि परी तनकी सुधि आई । आज कहा ब्रज शोर मचायो तब जान्यो दह गिरो कन्हाई ॥ पुत्रपुत्र कहिकै उठि दौरी व्याकुल यमुनातीरहि धाई । ब्रज वनिता सब संगहि लागीं आइगए बल अग्रज भाई ॥ जननी व्याकुल देखि प्रबोधत धीरज करि नीके यदु-राई । सूर श्यामको नेक नहीं डर जिनि तू रोवै यशुमति माई ॥ ६९ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रजवासी सब उठे पुकारी । जलभीतर कहा करत मुरारी ॥ संकटमें तुम करत सहाय । अब क्यों नहीं बचावत आय ॥ माता पिता अतिहि दुख पावत । रोइ रोइ सब कृष्ण बुलावत ॥ हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी । वै अंतर्यामी अविनासी ॥ सूरदास प्रभु आँनदरासी । रमासहित जलहीके वासी ॥ ५७० ॥

राग सूहो ॥ अतिकोमल तनु धरचो कान्हई । गए तहां जहां काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई ॥ कह्यो कौनको बालकहै तू बारबार कहि भागन जाई । छिनकहिमें जरि भस्म होयगो जब देखै उठि जागिजँभाई ॥ उरगनारिकी बाणी सुनिकै आप हँसे मनमें मुसुकाई । मोको कंस पठायो देखन तू याको अब देहि जगाई ॥ कहा कंस दिखरावत इनको एक फूंकहीमें जरिजाई । पुनि पुनि कहत सूरके प्रभुको तू अब काहे न जाइ पराई ॥ ७१ ॥

राग गौड मलार ॥ कहा डर करौं यहि फनीको बावरी । कह्यो मेरोमानि छाँडि अपनी बानि अबहीं परिहै जानि टेक सब रावरी ॥ तोहिं देखि मोहिं मया अति भई कौनको सुवन तू कहाँ आयो । मरौ वह कंस निर्वंश वाको होइ कह्यो यह कंस तोकों पठायो ॥ कंसको मारिहौं धरणि निरवारिहौं अमर उद्धारिहौं उरगधरनी । सूर प्रभुके बचन सुनत उरगनि कह्यो जाहि अब क्यों न मति भई मरनी ॥ ७२ ॥

राग मारू ॥ झिरकिकै नारि दै गारि गिरिधारि तब पूछपर लात दै अहि जगायो । उठ्यौ अकुलाइ डरपाइ खगराइको देखि बालकगर्व अति बढ़ायो ॥ पूँछ राखी जुचाँपि रिसनि काली कांपि देखै सब सांपि औसान भूले । पूँछ लीन्हों झटकि धरनिसों गहि पटकि फूँ कह्यो लटकि करि क्रोध फूले ॥ करत फनघात विषजात अतुरात अति नीर जरिजात नहिं गात परसै । सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिन जानि अहिराज विष ज्वाल परसै ॥ ७३ ॥

राग नट ॥ इनको लै ब्रजलोग दिखाऊं । कमलभार इनहीपै लादौं इनको आपु जनाऊं ॥ मातपिता अतिही दुख पावत दरशन दै मन हरष कराऊं । कमल पठाइ देउँ नृपराजहि कालि कह्यो ब्रजऊपर धाऊं ॥ मनमन करत बिचार श्याम यह अब कालीको दांव दिखाऊं । सूरदास प्रभुकी यह बानी ब्रजवासिनको दुख बिसराऊं ॥ ७४ ॥

राग कान्हरा ॥ उरगनारि सब कहत परस्पर देखहु या बालककी बात । विषज्वाला जल जरत यमुनको याके तन लागत नहिं तात ॥ यह कछु यन्त्र मन्त्र है जानत अतिही सुन्दर कोमलगात । यह अहिराज महाविषज्वाला कितने करत सहसफन घात ॥ छुअत नहीं तनु याको विष कहुँ अबलौं बच्यो पुण्य पितुमात । सूर श्यामसों दांव बतायो काली अंग लपेटत जात ॥ ७५ ॥

राग बिलावल ॥ उरग लियो हरिको लपटाई । गर्ववचन कहि कहि मुख भाषत मोकों नहिं जानत अहिराई ॥ लियो लपेटि चरणते शिखलौं अति यहि मोसों करी ढिठाई । चांपी पूंछ लुकावत अपनी युवतिनको नाहिं सकत दिखाई ॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब डारों यहि सकुच मिटाई ॥ सूरदास प्रभु तनु विस्तारचो काली बिकल भयो तव जाई ॥ ७६ ॥

राग कान्हरो ॥ जबहिं श्यामतनु अतिविस्तारचौ । पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण-शरण अहिराज पुकारचो ॥ यह बाणी सुनतहि करुणामय तबहिं गए सकुचाई । इहै वचन सुन द्रुपदसुतामुख दीनों बसन बढ़ाई ॥ इहै वचन गजराज सुनायो गरुड़ छांड़ि तहँ धाये । यहै वचन सुनि लाखा गृहमें पांडव जरत बचाये ॥ यह बाणी सहि-

जात न प्रभुसों ऐसे परमकृपाल। सूरदास प्रभु अंग सकोरचो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ ७७ ॥

राग गोरी ॥ नाथत व्याल बिलंब न कीन्हो। पगसों चापि घींच बल तोरचो फोरि नाक करसों गहिलीन्हों ॥ कूदिचढ़े ताके माथेपर काली करत बिचार । श्रवणन सुनी रही यहै बाणी ब्रज है है अवतार ॥ तेइ अवतरे आइ गोकुलमें मैं जानी यह बात। अस्तुति करनलग्यो सहसौं फन धन्य धन्य जगतात ॥ बारबार कहि शरण पुकारचो राखिराखि गोपाल। प्रभु कहत सकुचि गए शरण कहत तब व्याल ॥ ७८ ॥

राग बिलावल ॥ देखि दरश मन हरष भयो। पूरणब्रह्म सनातन तुमहीं ब्रजहिं कृष्ण अवतार लयो ॥ श्रीमुख कह्यो अजौंलौं तुम नाहिं जानो ब्रह्मअवतार। और कौन जो तुमसों बाँचै सहसफननिकी झार ॥ अनजानत अपराध किये बहु राखि शरण मोहि लेहु सूरदास प्रभु धनि मेरे फन चरण कमल जहाँ देहु ॥ ७९ ॥

राग गौरी ॥ अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथ। कोटिकोटि कीटहु सम नाहीं दरशन दिये जगतके नाथ ॥ अशरनशरन कहावतहौ तुम कहत सुनी भक्तनिमुख बात। ये अपराध क्षमा सब कीजै धृग मेरी बुधि कहत डरात ॥ दीन वचन सुनि कालीमुखते चरण धरे फन फन प्रति आप। सूर श्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीनो मेटे त्रय ताप ॥ ६.८० ॥

यशुमति टेरति कुँवर कन्हैया। आगे देखि कहति बलरामहिं कहां रह्यौ तुम भैया ॥ मेरे भैया आवत अबहीं तोहि दिखाऊँ मैया। धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति बलैया ॥ पुनि यह कहति मोहिं परबोधत धरणिगिरी मुरझैया। सूर बिना सुत भइ अति व्याकुल मेरो बाल नन्हैया ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ भरोसे कान्हकोहै मोहि। सुन यशुदाकालीके भयते तू जिनि व्याकुल होहि ॥ पहिले पूतना कपटकै आई अस्तन विषयापोहि। वह वसी ज्यों प्रबल द्वै दिनके बालकमारि दिखावत तोहि ॥ अघा बका धेनुक तृणावर्त केसीको कल देख्यो जोहि। सात दिवस गोवर्धन राख्यो इन्द्र गयो द्रपु छोहि ॥ सुनिसुनि कथा नंदनन्दनकी मन आयो अवरोहि। सूरदास प्रभु जो कहिये कछु सो आवै सब सोहि ॥ ८२ ॥

राग सारंग ॥ यमुना तोहि बह्यो क्यों भावै। तोमें कृष्णहेलुवा खेले सो सुरत्यो नहिं आवै ॥ तेरे नीर शुची जल जो हैं खार पनार कहावै। हारिवियोग कोउ पाँउ न देहै को तट बेणु बजावै ॥ भरि भाशैं जो रति अष्टमी सो दिन क्यों न जनावै। सूरदासके ऐसे ठाकुर कमल फूल लै आवै ॥ ८३ ॥

ब्रजवासी सब भए बिहाल। कान्हकान्ह कहि कहि टेरतहैं व्याकुल गोपी ग्वाल ॥ अब को बसै जाइ ब्रज हरि बिनु धृग जीवन नर नारी। तुमबिनु यह गति भई सबनिकी कहां गए बनवारी ॥ प्रातहिते जलभीतर पैठे होन लग्यो युग याम। कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥ ८४ ॥

राग नट ॥ आवत उरग नाथे श्याम। नंद यशुदा गोपि गोपनि कहतहैं बलराम ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवन कुंडल लोल। कटि पितांबर भेष नटवर नृतत फनप्रति डोल ॥ देव दिवि दुंदुभि बजावत सुमनगन वरषाइ । सूर श्याम विलोकि ब्रजजन मात पितु सुख पाइ ॥ ८५ ॥

राग नट ॥ मात पिता मन हरष बढ़ायो । मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो अति हि निकट जब आयो ॥ देव व्योम दुंदभी बजावत गावत फनपर निरतत श्याम । ब्रजवासी सब मरत जिवाए हरषि उठीं सब वाम ॥ शोकसिंधु बहिगयो तुरतही सुखको सिंधु बढायो ॥ सूरदास प्रभु कंसनिकन्दन कमल उरगपर ल्यायो ॥ ८६ ॥

राग कान्हरो॥फन फन प्रति निर्तत नँदनन्दन । जलभीतर युगयाम रहे कहुँ मिट्यो नहीं तनुचन्दन ॥ उहै काछनी कटि पीतांबर शीश मुकुटअति सोहत ॥ मनु गिरिऊपर मोर अनंदित देखत ब्रजजनमोहत ॥ अंमरथके अमर ललनासँग जयजयध्वनि तिहुँलोक । सूर श्याम कालीपर निर्तत आवत ब्रजकी ओक ॥ ८७ ॥

राग सोरठ ॥ गोपालराइ निर्तत फन प्रति ऐसे । मनो गिरिवर पर बादर देखत मोर अनन्दत जैसे ॥ डोलत मुकुट शीशपर कुंडल मंडित गंड । पीत वसन दामिनि तनुघनपर तापर सुरको दंड ॥ उरगनारि आगे सब ठाढी मुखमुख अस्तुति गावै । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब हम मांग्यो पति पावैं ॥ ८८ ॥

बहुत कृपा एहि करी गुसाँई । इतनी कृपाकरी नाहिं काहू जितनेलिये राखि शरनाई ॥ कृपाकरी प्रह्लादभक्तको द्रुपदसुता पति राखी । ग्राह मुखते गजराज छुड़ायो वेद पुराणन भाषी ॥ जोकछुकृपाकरी कालीको सोकाहू नहिं कीन्हों । कोटि ब्रह्माण्ड रोमप्रति अङ्गनि ते पग फन प्रति दीन्हों ॥ धरणि शीशधरिशेष गर्व करि भार अधिक संभारयो । पूरण कृपा करी सूरजप्रभु पग फनफनप्रति धारयो ॥ ८९ ॥

राग सोरठ ॥ ठाढ़े देखतहैं ब्रजवासी । करजोरे अहिनारि विनयकरैं कहत धन्य अविनासी ॥ जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसरी आई । जे पद कमल शम्भुकी संपति फन प्रति धरे कन्हाई ॥ जे पद परसि शिला उद्धारी पांडव गृह फिरि आए । जे पद कमल भजन महिमाते जन प्रहलाद बँचाए ॥ जे पद ब्रज युवतिन सुखदायक तिहूँ भुवन धरे बावन । सूर श्याम ते पद फनफन प्रति निर्तत अहि कियो पावन ॥ ५९० ॥

ऐसी कृपाकरी नाहिं काहू । खंभप्रगटि प्रहलाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहिं तब तिय नगनसमय पति राखी । ऐसी कृपा करी नहिं भीषम परतिज्ञा सतभाषी ॥ पूरण कृपा नंद यशुमतिको सो पूरण एहि पायो । सूरदास प्रभु धन्य कंस जिन तुमसों कमल मँगायो ॥ ९१ ॥

राग कान्हरो ॥ सुनहु कृपानिधि जैसी कृपा तुम या काली पै कीन्हो । इती बड़ाई कबहुं न कैसो नहिं काहूको दीन्हों ॥ जिन पदकमल सुकृतजल परस्यो अजहुं धरे शिवशीश । ते पद प्रगट धरे फनफनप्रति धन्यकृपा जगदीश ॥ एकअंडको भार बहतहै गर्व धरयो जिय शेष । येही भार अधिक सह्यो अपने शिर अमित अण्डमय भेष ॥ सुर नर असुर कीटपशु पंछी सब सेवक प्रभु तेरे । सूरश्याम अपराध क्षमहु अब या अपने जनकेरे ॥ ९२ ॥

चरणकमल बंदौं जगदीश जे गोधनके संग धाए । जे पदकमल धूरि लपटानो कर गहिकै गोपी उर लाए ॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजे राजसूयपै चलिआए । जे पदकमल पितामह भीषम भारतमैं देखनपाये ॥ जे पदकमल शंभु चतुरारन हृदयकमल अंतर राखे ।

जे पद कमल रमा उर भूषण वेद भागवत मुनि भाखे । जे पद कमल लोकपावन त्रय बलिराजाके पीठ धरे ॥ ते पद कमल सूरके स्वामी कालीफनपर निर्त करे ॥ ९३ ॥

गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांबर धर मुकुटधर गोपधर उरगधर । शंखधर सारंग धर चक्रधर गदाधर रसधर अधर सुधाधर ॥ कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर बनमाला-धर कालीफनमति चरणधर । सूरदासके प्रभु जगतधर भक्तधर दुष्टकंसकेशधर ॥ ९४ ॥

गरुड त्रासते जो ह्यां आयो । तौ प्रभु चरण कमल फन फन प्रति अपने शीश धरायो ॥ धनि ऋषि शाप दियो खग पतिकौ ह्यां तब रह्यो छपाइ । प्रभुवाहन डर भाजि बँच्यो अहि नातर लेतो खाइ ॥ यह सुनि कृपा करी नँदनंदन चरणचिह्न प्रगटाये । सूरदास प्रभु अभय ताहि करि उरग द्वीप पहुँचाए ॥ ९५ ॥

अतिबल करि करि काली हारयो । लपट गयो सब अंग अंग प्रति निर्विष कियो सकलअल झारयो ॥ निर्तत पद पटकत फन फन प्रति बमत रुधिर नाहिं जात सँभारयो । अति बलहीन छीन भए तेहिछिन देखियत हैं ज्वाला समढारयो ॥ तिय विनती करुणा उपजी जिय राख्यो श्याम नहीं तेहि मारयो । सूरदास प्रभु प्राणदान कियो पठयो सिंधु वहांते टारयो ॥ ९६ ॥

खेलत खेलत जाइ कदम चढि झप यमुनाजल लीनो । सोवत काली जाइ जगायो फिरि भारत हरि कीनो ॥ उठि युवती करजोरि विनती करि श्याम दान हम दीजे । टूटत फन फाटत तनु देही दुहुँ दिशि कान्ह निहोरे लीजे ॥ तब अहि छाँड़ि दियो करुणामय मोहनमदन मुरारी ॥ सागरवास दियो कालीको सूरदास बलिहारी ॥ ९७ ॥

राग कल्याण ॥ जयजय ध्वनि अमरननभ कीन्हों । धन्यधन्य जगदीश गुसांई अपनो करि अहि लीन्हों ॥ अभय कियो फन चिह्न चरण धरि जानि आपनो दास । जलते काढि कृपाकरि पठ्यो मेटि गरुडको त्रास ॥ अस्तुति करत अमरगण बहुरे गए अपने लोग । सूर श्याम मिलि मात पिताको दूरि कियो तनुशोक ॥ ९८ ॥

राग कान्हरो ॥ लीन्हों जननी कंठलगाइ । अंगपुलकित रोमगदगद सुखदअंशु बहाइ ॥ मैं तुमहिं बरजतिहौं हरि यमुनतट जिनजाइ । कह्यो मेरो कियो कान्ह नाहिं गये खेलन धाए ॥ कंस कमल मँगाइ पठए तात गएउ डराइ । मैं कह्यो निशि स्वप्नतोसों प्रगट भयो सो आइ ॥ ग्वाल सँग मिलि गेंद खेलत आए यमुनातीर । काहू लै मोहिं डारि दीन्हों कालिया दह नीर ॥ यह कही तब उरग मोसों किनि पठायो तोहिं । मैं कही नृपकंस-पठयो कमलकारण मोहिं ॥ यह सुनत डर कमल दीन्हों मोहिं लियो पीठ चढाइ । सूर यह कहि जननि बोधी देखो तुमही आइ ॥ ९९ ॥

राग गौरी ॥ व्रजवासिनसों कहत कन्हाई । यमुनातीर आजु सुख कीजे यह मेरे मन आई ॥ गोपाल सुनि अति हर्ष बढायो सुख पायो नँदराई । घर घरते पकवान मँगायो ग्वालन दिये पठाई ॥ दधि माखन षटरसके भोजन तुरतहि ल्याए जाइ । मात पिता गोपी ग्वालनको सूरज प्रभु सुखदाई ॥ ६०० ॥

तुरत कमल अब देहु पठाइ । सुनहु तात अब बिलम न कीजै कंस चढै व्रज ऊपर आइ ॥ कमल मँगाइ लिये तट ऊपर कोटि कमल तब दिये पठाई । बहुत विनय करि

पाती पठई नृप लीजै सब पुहुप गनाइ ॥ तैसी मोकों आज्ञा दीजै बहुत धारे जलमांझ सजाइ । सूरदास नृप तुव प्रतापते काली आप गयो पहुँचाइ ॥ १ ॥

राग सोरठ ॥ सहस शकट भरि कमल चलाए । अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाए ॥ और बहुत कांवरि माखन दधि अहिरन कांधे जोरी । बहुत बीनती मेरी कहियो और घरे जलजमाल तोरी ॥ नृपके हाथ पत्र यह दीजो श्याम कमल लै आयो । कोटि कमल आपुन नृप मांगे तीनि कोटिहै पायो ॥ नृपति हमहिं अपनो करि जानों तुम लायक हम नाहीं । सूरदास कहियो नृप आगे तुमहिं छोंडि कहां जाहीं ॥ २ ॥

राग गंड ॥ कमलके भार दधिभार माखनभार लिये सबग्वार नृपद्वार आए । तुरतही टारि गनिकरि शकटनिजोरि भये ठाढे पौंरि तब सुनाए ॥ सुनत यह बात अतुरात औ डरात हिय महलते निकसि नृप आपु आए । देखि दरबार सब ग्वार नहिं कहूं पार कमलके भार शकटनि सजाए ॥ अतिही चकित भयो ज्ञान हरि हरिलयो सोच मनमें ठयो कहा कीन्हों । गोप शिरमोर नृपओर कर जोरिकै पुहुपके काज प्रभु पत्रदीन्हों ॥ यह कह्यो नंद नृप बंद अहि इन्द्रपै गयो मेरो नंदन तुव नाम लीन्हों । उठ्यो अकुलाइ डरपाइ तुरतहि धाइ गयो पहुँचाइ तट आइ दीन्हों ॥ यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहिं कीन्हों । और सब गोप आवत जान नृप बात कहत सूर मोहिं नहिं चीन्हों ॥ ३ ॥

राग बिलावल ॥ ग्वालन हरिकी बात चलाइ । यह सुनि कंस गयो अकुलाई ॥ तब मनही मन करत बिचार । यह कोउ भयो नहीं अवतार ॥ यासों मेरो नहीं उबार । मोहिं मारत मारै परिवार ॥ दैत्य गए ते बहुरि न आए । कालीते ये क्यों बचि आए ॥ ताही पर धरि कमल लदाए । सहस शकट भरि व्याल पठाए ॥ एक व्याल मैं उनहिं बताए । कोटिव्याल मम सदन चलाए ॥ ग्वालन देखि मनहिं रिस काँपे । पुनि मनमें यह अटकर नापै ॥ आपहि आप नृपहिं तनु त्याग्यो । सूर देखि कमलन उठि भाग्यो ॥ ४ ॥

राग नट ॥ भीतर लए गोप बुलाइ । हृदय दुख मुख हलभली करि ब्रजहि दिए पठाइ ॥ नंदको शिरोपाव दीन्हों गोप सब पहिराइ । यह कह्यो बलराम श्यामहिं देखिहौं दोउ भाइ ॥ अतिहि पुरुषारथ करै उन कमल उनहिं लियाइ । सूरप्रभुको देखिहौं मैं एक दिवस बुलाइ ॥ ५ ॥

कमल शकटनि भरे व्याल मानो । श्यामके वचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो घुनि तन भुलानो ॥ भयो बेहाल नँदलालके ख्याल यह उरगते बाँचि फिरि ब्रजहि आयो । कह्यो दावानल हि देखौं तेरै बलहि भस्मकरि ब्रजपालहि कहि पठायो ॥ चल्यो सिरपाइ चतुराइ तब धाइके ब्रज लोग वनसहित मैं जारि आऊँ । नृपतिकेले पान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहुँ पास धाऊँ ॥ वृंदावन आदि ब्रज आदि गोकुल आदि आदि बुन्यादि सब अहिर जारौं । चल्यो मग जात कहि बात इतरात अति सूर प्रभु सहित संहारि डारौं ॥ ६ ॥

राग गौड मलार ॥ कमल पहुँचाइ सब गोप आए । गए यमुनातीर भई अतिही भीर देखि नंदतीर तुरतही बोलाए ॥ दियो शिरोपाव नृपराउने महरको आप परहावनी सब

दिखाए। अतिहि सुख पाइकै लियो शिर नाइकै हरष नँदराइकै मन बढाए॥ श्याम बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुख कियो उन कमल ल्याये। सूर नंदसुवन दोउ एक दिवस देखिहौं पुहुप लिए सुखपाइ इनि बोलाए॥ ७॥

राग धनाश्री॥ यह सुनि नंद बहुत सुख पाये। कमल पठाइ दये नृप लीन्हे देखनको दुहुँ सुनत बुलाये॥ सेवा बहुत मानि है लीन्हीं ब्रजनारिन मन हरष बढाये। बड़ी बात भई कमल पठाए आनहु आपुन जलते ल्याये॥ आनंद करत यमुन तट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस बिहाए। एक मुख श्याम बचे कालीते यकमुख कंसहि कमल चलाए॥ हँसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपनि मँगाए। सूरदास प्रभु मात पिता हित कमल कोटि दै ब्रजहि बचाए॥ ८॥

अथ कालीलीला दूसरी। राग धनाश्री॥ नारद कहि समुझाइ कंस नृपराजको। तब पठयो ब्रज दूत पुहुप एक काजको॥ १॥

तब पठयो ब्रज दूत सुनी नारद मुख बानी। बार बार ऋषिकाज कंस मुख अस्तुति गानी॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मन्त्र दियो मोहिं। दूत चलायो तुरतही अबहिं जाहि ब्रज जोहि॥ २॥

इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो। पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहु भांति जनायो॥ कालि कमल नहिं आवई तौ तुमको नहिं चैन। शिर नवाइ कर जोरिकै चल्यो दूत सुनि बैन॥ ३॥

तुरत पठायो दूत नंद घरहीमें आयो। कमल फूलके भार कंस नृप वेगि मँगायो॥ कालिह न पहुँचै आइकै तब बसियो ब्रज लोग। गोकुलमें जे सुख किये ते करि दैहौं सोग॥ ४॥

जो न पठावहु पुहुप कहौगे तैसी मोको। यह जानहु गोपन समेत धरि ल्याऊं तोको॥ बल मोहन तेरे दोउन को पकरि मँगाऊँ कालि। पुहुप वेगि पठए बनै जौरे बसौ ब्रजपालि॥ ५॥

यह सुनि नंद डराय अतिहि मन मन अकुलानो। यह कारज क्यों होइ काल अपनो करि जानो॥ और महर सब बोलिलै कैसी करैं उपाइ। कालि प्रात ब्रज मारि है बांधि सबनि लै जाइ॥ ६॥

बल मोहनको नाउँ धर्‍यो कहि पकरि मँगावन॥ जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिं डरावन॥ यह सुनि शिरनाये सबन मुखहि न आवै बात। बार बार नंद कहत हैं यह लरिकन पर घात॥ ७॥

की बालकनि भगाइ जाहिं लै आन देशपर। वरु हमको लै जाइ श्याम बलराम बचैं घर॥ महरि सबै ब्रज नारिनसों पूछत कौन उपाउ। जनमहिते करवर टरी अबके नहीं बचाउ॥ ८॥

कोउ कहै दैहैं दाम नृपति जितनो धन चाहै। कोउ कहै जैये शरन सबै मिलि बुधि अवगाहै॥ यही सोच सब पगि रहे कहूँ नहीं निरवार। ब्रज भीतर नंद भवनमें घरघर इहै बिचार॥ ९॥

अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत बात। कहा करत हौ सोच कहौ कछु मोसों तात॥ कहा कहौं मेरे लाडिले कहत बड़ो सन्ताप। मथुरा पतिके जो कछू तुमपर उपज्यो पाप॥ १०॥

काली दहके पुहुप मांगि पठये हमसों उनि । तबते मोजिय सोच जबहिंते बात बरी सुनि । जो नहिं पठवहु कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ। मो समेत दोउ बंधु तुम कालिहि लेइ बंधाइ ॥ ११ ॥

यह कहि पठयो कंस तबहिते सोच परचो मोहिं । प्रथम पूतना आइ बहुत दुख दै ज़ु गई तोहिं ॥ तृणावर्तके घातते बहुत बच्यो दुख पाइ । शकटा केशीते बच्यो अब को करै सहाइ ॥ १२ ॥

अघा उदरते बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाई । बका रह्यो मुख बाइ तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने करवर हैं टरे देवन किये सहाइ । तबते अब गाढी परी मोको कछु न सुहाइ ॥ १३ ॥

बाबा तुमहीं कहत कौन धौं तोहिं उबारै । सोइ ब्रज देवता प्रगट कंस गहि केश पछारै ॥ यह जबहीं हरिसों सुनी नन्द मनहिं पति आइ । गगन गिरत जो सँग रह्यो सो करिलेइ सहाइ ॥ १४ ॥

नन्दहि यह समुझाइ कान्ह उठि खेलन धाए । जहँ ब्रज बालक बहुत तुरत तहँ आपुन आए ॥ गोपसुतनिसों यह कह्यो खेलै गेंद मँगाइ । श्रीदामा इह सुनतही घरते लाये जाइ ॥ १५ ॥

सखा परस्पर मार करैं कोउ कानि न मानैं । कौन बड़ो को छोट भेद भेदा नहिं जानैं ॥ खेलत यमुना तट गए आपुहि ल्याये टारि । श्रीदामाके हाथते लैं गेंद दयो दहडारि ॥ १६ ॥

श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा । कहा भये जो नन्द बड़े तुम तिनके ढोटा ॥ खेलतमें कहा छोट बड हमहुं महरके पूत । गेंद दिये ही पै बनै छांड़ि देहु मद धूत ॥ १७ ॥

तुमसों धूत्यो कहा करौं धूत्यौ नहिं देख्यो । प्रथम पूतना मारि काग शकटासुर पेख्यो । तृणावर्त पटक्यो शिला अघा बका संहारि । तुम तादिन संगहि रहे अब धूतन कहत सँभारि ॥ १८ ॥

टेढे कहा बतात कंसको कमल देहु अब । कालिहि पटए माँगि पुहुप अब लै देहौं जब ॥ बहुत अचगरी जिन करौ अजहूं तजौ झबारि । पकरि कंस लै जाइगो कालिहि परै खँभारि ॥ १९ ॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोष निवारौं । तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरि मारौं ॥ फेट लियो तब झटकिकै चढे कदम पर आइ । सखा हँसत ठाढे सबै मोहन गए पराइ ॥ ६२० ॥

श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नन्द आगे । गेंद लेहु तुम आइ मोहिं डर पावन लागे ॥ यह कहिकै कूदे सलिल कीन्हें नटवर साज । कोमल तनु धरिकै गए जहँ सोवत अहिराज ॥ २१ ॥

यहि अन्तर नन्द घरनि कह्यो हरि भूखे ह्वैहैं । खेलत ते अब आइ भूख कहि मोहिं सुनै हैं ॥ अति आतुर भीतर चली जेंवन कारन आप । छीक सुनत कुसगुन कह्यो कहा भयो यह पाप ॥ २२ ॥

अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारण। मंजारी गई काटि तबहिं निकसतही वारण ॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाइ। कुसगुन आजु बहुत भए कुशल रहैं दोउ भाइ ॥ २३ ॥

श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई। आतुर आए नंद घरहि बूझत दोउ भाई ॥ नंद घरनिसों यह कहत मोको लगत उदास। एहि अंतर हरि कहँ गए जहँ कालीको वास ॥ २४ ॥

देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत। बैठि तहां अहिनारि डरी बालकको जोवत ॥ भागि भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात। एक फूकको नहीं तू विषज्वाला अतितात ॥ २५ ॥

तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाई। आयो देखन वाहि कंस मोहिं दियो पठाई ॥ कंसकोटि जरिजाहिंगे विषकी एकफुकार। कहा करै मरिजाहि तू अति बालक सुकुमार ॥ २६ ॥

यहि अंतर सब सखा जाइ ब्रजनंद सुनायो। हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझ धायो ॥ सायो बूडिगयो उबरचो नहीं तब ताहि बड़ि बेर। कूदि परचो चढि कदमते खबरि न करो सबेर ॥ २७ ॥

त्राहि त्राहिं करि नंद सुनत दौरे यमुना तट। यशुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति लट ॥ व्रजवासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ। बूडचो कान्ह सबनि सुनी अतिव्याकुल मुरझाइ ॥ २८ ॥

जहँ तहँ परी पुकार कान्ह बिन भए उदासी। कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल व्रजवासी ॥ नंद यशोदा अतिविकल परत यमुनमें धाइ। और गोप उपनंद मिलि बांह पकरि लै आइ ॥ २९ ॥

धेनु फिरत बिललात बच्छ न कोउ लगावै।नंद यशोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै ॥ यहसुनि व्रजवासी सबै परे धरणि अकुलाइ।हाइ हाइ करिकहत सब कान्ह रह्यो कहांजाइ॥३०

नंद पुकारत रोइ बुढ़ापा मोको छाधो। कछुदिन मोह लगाइ जाई जल भीतर माधो ॥ यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ।नंदघरनि तब देखिकै कान्हहि टेरि बुलाइ ॥३१॥

निठुरभए सुत आजु तातकी छोह न आवति। यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतरको धावति ॥ परत धाइ यमुनासलिल गहि आनति ब्रजनारि।नेक रहौ सब मरहिंगी कोहै जीवनहारि ॥ ३२ ॥

श्याम गयो जल बूडि वृथा जगजीवन गनको। शिरफोरति गिरिजाति अभूषणतोरति अँगको॥मुरछि परि तनु सुधि गई प्राण रह्यो कहुँजाइ। हलधर आए धाइकै जननि गई मुरछाइ ॥ ३३ ॥

नाकमूँदि जल सींचि जननि जननी कहि टेरचौ। बारबार झकझोरि नेक हलधरतन हेरचौ ॥ कहत उठी बलरामसों बनहिं तज्यो लघुभ्रात। कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात ॥ ३४ ॥

अब तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई॥कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अवसेर कराई ॥ छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोक सरमांझ। प्रात कछू खाया नहीं भूखे है गई सांझ ॥३५॥

कबहूं कहति बन गए कबहुँ कहि घरहि बतावति। कहँ खेलतहौ लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥ जागिपरी दुख मोइते रोवत देखे लोग। तब जान्यो हरि दह गिरचो उपज्यो बहुरि बियोग ॥ ३६ ॥

धृग धृग नंदहिकह्यो और कितने दिन जीहौ । मरत नहीं मोहिं मारि बहुरि व्रज बसिहौ कीहौ । ऐसे दुखसों मरन सुख मन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरणी गिरिपैरे नंद भए विनप्रान ॥ ३७ ॥

हरिको अग्रज बंधु तुरतही पिता जगायो । माताको परबोधि दुहुँनि धीरज धरवायो ॥ मोहिं दोहाई नंदकी अबहीं आवत श्याम । नाथि नाग लै आइहै तब कहियो बलराम॥३८॥

हलधर कह्यो सुनाइ नंद यशुमति ब्रजवासी । वृथामरत केहि काज मरै क्यों वह अबिनाशी ॥ आदिपुरुष मैं कहतहौं गयो कमलके काज । गिरिधरको डर करतहौ वह देवन शिरताज ॥ ३९ ॥

वह अबिनाशी आहिकरो धीरज अपने मन । काली छेदै नाक लिये आवत निर्तंतफन ॥ कंसहि कमल पठाइहै काली पठवै द्वीप । एक घरी धीरज धरौ बैठो सब तरुनीप ॥ ६४० ॥

वहां नागिनसों कहत श्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति पति क्यों न उठावै ॥ कहावति कहा कंस कहा उरग अबहिं दिखाऊं तोहिं । दै जगाइ मैं कहत हौं तु नहिं जानति मोहिं ॥ ४१ ॥

छोटे मुँह बडी बात कहत अबहीं मरिजैहै।जो चितवै करिक्रोध अरे इतनहि जरिजैहै ॥ छोहलगति तोहिं देखि मोहिं काको बालक आहि । खगपतिसों सरवरकरी तू बपुरो को आहि ॥ ४२ ॥

बपुरा मोसों कहति तोहिं बपुरी करिडारौं । एक लातसों चापि खसम तेरेको मारौं॥सोवत काहु न मारिए चलि आई यह बात । खगपतिको मैंही कियो कहति कहा तू बात ॥ ४३ ॥

तुमहिं विधाता भए और कर्ता कोउ नाहीं।अहि मारोगे आप तनकसे तनकसी बाहीं।कहा करौं कहत न बनै अति कोमल सकुमार । देति अबहिं जगाइकै जरि बरि हो तो छार ॥४४॥

तू धौं देहि जगाइ तोहि दोषन कछु नाहीं ।परी कहा तोहि द्वारि पाप अपने जरि जाहीं ॥ इमको बालक कहतिहै आप बडेकी नारि । बादतिहै बिनकाजही वृथा बढावति रारि ॥४५॥

तुही न लेहि जगाइ बहुत जो करत ढिठाई । पुनि मरिहै पछिताइ मात पित तेरे भाई ॥ अजहुं कह्यो करि जाहि घर मरि लेहै सुख कौन।पांच बरष कै सातको आगे तोको होन४६

झिरकि नारि दै गारि आपु अहि जाय जगायो।पगसों चापी पूंछ सबै अवसान भुलायो॥ चरण मसकि धरणी दली उरग गयो अकुलाइ।काली मनमें तब कही यह आयो खगराइ४७

देख्यो नयन उघारि तहां बालक इक ठाढो।बिषधर झटकी पूंछ फटकि सहसौ फन काढो॥ बार बार फन घातकै विष ज्वालाकी झार । सहसौ फन फन फूंकरै नेक न तनहि लगार४८

तब काली मन कहत पूंछ चांपी एहि पगसों ।अतिहि उठो अकुलाइ डरचौ बाहन हरि खगसों॥यह बालक धौं कौनको कीन्हौं युद्ध अघाइ । दाँव घाव बहुतै कियो मरत नहीं यदुराइ ॥ ४९ ॥

पुनि देखै हरि ओर पूंछ चांपी इहि मेरी।मन मन करत विचार लेउँ याको मैं घेरी॥ दाउँ परचो अहि जानिकै लियो अंग लपटाइ।काली तब गर्वितभयो प्रभु दियो दाउ बताइ ६५०॥

कहति उरगकी नारि गर्व अतिही करि आयो । आइत पहुँचो बाल कालबश पगहि चढायो ॥ अहिनारिनसों यह कही मोहिं सम सरि कोउ नाहिं । एक फूंक विषज्वालके जल डोंगर जरि जाहिं ॥ ५१ ॥

गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतहीं तनु विस्तारचो। हाइ हाइ करि उरग बार बारही पुकारचो ॥ शरन शरन अब मरतहौं मैं नहिं जान्यो तोहिं। चटचटात अंग फूटही राखु राखु प्रभु मोहिं ॥ ५२ ॥

श्रवण शरन ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई। क्षमहु मोहि अपराध न जाने करी ढिठाई ॥ ब्रजै कृष्ण अवतारहो मैं जानी प्रभु आजु । बहुत किये फन घात मैं वेंदन दुरावत लाजु ॥ ५३ ॥

रह्यो जानि यहि ठौर गरुडको त्रास गोसाँई। बहुत कृपा मोहिं करी दरश दीन्हों जगसाँई ॥ नाक फोरि फनपर चढे कृपा करी सुरराई ॥ फन फन प्रति प्रति चरण धरि निर्तत हरष बढाई ॥ ५४ ॥

धन्य कृष्ण धनि उरग जानि जग कृपा करी हरि। धन्य धन्य दिन आजु दरशते पाप गये जरि ॥ धन्य कंस धनि कमल ये धन्य कृष्ण अवतार। बडी कृपा उरगहि करी फनप्रति चरण बिहार ॥ ५५ ॥

शेष करत जिय गर्व अंडको भार शीशधरि। ब्रह्म मुकुन्द अनंत नाम को सकै पार करि ॥ फनफन प्रति अति भार भरि अमित अंडमें गात। उरगनारि कर जोरिकै कहत कृष्णसों बात ॥ ५६ ॥

देखत ब्रज नर नारि नंदयशोदा समेत सब।संकर्षणसों कहत सुनहु सुत कान्ह नहीं अब॥ एहि अंतर जल कमलबिच उठो कछू अकुलाइ । रोवतते बरजे सबै मोहन अग्रज भाइ५७॥

आवतहैं वे श्याम पुहुप काली शिर लीन्हें।मात पिता व्रज दुखित जानि हरि दरशन दीन्हें॥ निर्तत काली फननिपर देव दुंदुभी बजाइ। नटवर बपु काछेरहे सब देख्यो वह भाइ ॥५८॥

आवत देखे श्याम हरष कीन्हो व्रजवासी। शोकसिंधु बहिगयो सुखैको सिंधु प्रकाशी ॥ जलबूडत नवका मिलै ज्यों तनु होत अनंद। त्यों ब्रजजन हुलसे सबै आवतहैं नँदनंद ५९॥

सुत देखत पित मात रोम गदगद पुलकित भयो। उर उपज्यो आनंद प्रेमजल लोचन दुहुँ अयो ॥ देव दुंदुभी बजावहीं फन प्रति निर्तत श्याम। व्रजवासी सब कहतहैं धन्य धन्य बलराम ॥ ६६० ॥

उरगनारि कर जोरि करति अस्तुति मुखठाढ़ी। गोपीजन अवलोकि रूप वह अति रति बाढी ॥ सुर अंबर ललनासहित जय ध्वनि मुखमुख गाइ। बडी कृपा एहि उरगको ऐसी काहु न पाइ ॥ ६१ ॥

कृपा करी प्रह्लाद खंभ वै प्रगट भए तब। कृपा करी गजराज गरुड तजि धाइ गये जब। द्रुपदसुताको करीकृपा वसन समुद्र बढाइ। नंदयशोदहि जो कृपा सोई कृपा एहि पाइ ॥६२॥

तब काली करजोरि कह्यो प्रभु गरुड त्रासैहे मोहिं । अब करिहैं ते दंडवत नैन भरि देखैंगे तोहिं ॥ चरण चिह्न दरशन करत गहि रहैं तेरे पाइ। उरग द्वीपको करि बिदा कह्यो करौ सुख जाइ ॥ ६३ ॥

प्रभु याने कियो कहा चरण जे फनफन परसे। रमाहृदय जे वसत सुरसुरी शिवशिर हरसे॥ जन्म जन्म पावन भयो फन पदचिह्न धराइ।पाँइ परचो उरगिनि सहित चल्यो द्वीप समुहाइ ६४

काली पठयो द्वीप सुरनि सुरलोक पढाए।आपुन आए निकसि कमल सब तटहि धराए॥ जलते आए श्याम तब मिले सखा सब धाइ।मात पिता दोउ धाइक लीनो कंठलगाइ॥६५॥

फेर जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आए। जहां तहां ब्रज गोपनारि आतुर ह्वै धाए॥ अंकम भरि भरि मिलतहैं मनो निधनी धन पाइ। मिली धाइ रोहिणि जननि चूमति लेति बलाइ॥ ६६॥

सखा दौरिकै मिले गये हरि हमपर रिसकरि। धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि॥ तुम ब्रज जीवनि प्राणहौ यह सुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढि कदमते तुम खेलत ए ख्याल॥ ६७॥

काली ल्याए नाथि कमल ताही पर ल्याए।जैसी कहिगए श्याम प्रगट सो हमहिंदिखाए॥ कंस मरचो निश्चय भई हम जानी ब्रजराज। सिंहिनिको छौंना भलो कहा बडो गजराज ६८

हरि हलधर तब मिले हँसे मनही मन दोऊ। बंधुमिलत सब कहत भेद नहिं जानै कोऊ॥ मात पिता ब्रजलोगसों हरषि कह्यो नँदलाल।आजु रहौ बसि सब इहां मेटहु दुख जंजाल६९

सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिए यमुनातट। शीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरु बंसीवट॥ नँदघरते मिष्टान्न बहु षटरस लिए मँगाइ। महर गोप उपनंद जे सबको दियो बँटाइ॥ ६७०॥

दुख कीन्हों सब दूरि तुरत सुख दियो कन्हाई। हर्ष भयो ब्रजलोग कंसको डर बिसराई॥ कमलकाज ब्रजमारतो कितने लेइ गनाइ।नृप गजको अब डर कहा प्रगटचो सिंह कन्हाइ७१

नंद कह्यो करि गर्व कंसको कमल पठावहु। और कमल जल धरहु कमल कोटिक दै आवहु॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोठि। कोटि द्वैक जलही धरे यह बिनति इक छोटि॥ ७२॥

अपने सम जो गोप कमल तिन साथ चलाए। मन सबके आनंद कान्ह जलते बचि आए॥ खेलत खात अन्हात ही बासर गयो बिहाइ। सूर श्याम ब्रज लोगको जहां तहां सुखदाइ॥ ७३॥

राग सोरठ॥ तुम जाहु बालकछांडि यमुनास्वामि मेरो जागिहै। अंगकारो मुख बिकारो दृष्टि परे तोहि लागिहै॥ तुम केरि बालक युवा खेले केरि दौरत दूरियां। लेहु बालक हीरा पदारथ जागिहै मेरो स्वामियां॥ ना मैं नागिन युवाकर खेले न वारे दुरत दुगइयां। कंसकारण गेंद खेले कमल कारण आइयां॥ तब धाइ धायो जाइ जगायो मानो छूटी हस्तियां। सहसफन फुंकार छौंडे जाइ कालीनाथियां॥ जब कान्हकाली लेचले तब नागिन बिनवै देवहो। अबके चेरी अहिवात दीजै करहि तुमरे सेवहो॥ तब लादि पंकज बाहिर काढ्यो भयो ब्रज मन भावना। मथुरा नगरी कृष्णराजा सूर तिनहि बधावना॥७४॥

राग देवगंधार॥ काली विष गंजन दह आए॥ देखि मृतक बछ बालक सब लै कटाक्ष जिवाए॥ बहु उतपात होत गोकुलमें सविता रहौ भुलाइ॥ बडी बेरभई अजहुँ न आए गृहकृत कछु न सुहाइ॥ नंदादिक सब गोप गोपि मिलि चले सकल बन धाई। दरशे जाइ उरग लपटाने प्राण तजत अकुलाई॥ अतिगंभीर धीर निज जानत संकर्षनको भाइ वश कियो नाग सूरदास प्रभु अतिआनंद न समाइ॥ ७५॥

राग कान्हरो॥ सबै ब्रजहै यमुनाके तीर। कालीनागके फनपर निर्तत संकर्षणको बीर॥ लाग मान थेई थेई करि उघटत ताल मृदंग गँभीर। प्रेम मगन गावत गण गंधर्व

व्योम विमानन धीर ॥ उरग नारि आगे भई ठाढ़ी नैननि ढारति नीर। हमको दान देइ पति छांडहु सुंदर श्याम शरीर। आए निकसि पहिरि मणि भूषण पीतबसन कटि चीर। सूर श्यामको भुज भरि भेंटत अंकम देत अहीर ॥ ७६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः ॥ दावानलके पानकी लीला ॥ राग कान्हरो ॥ दावानल ब्रज जनपर धायो। गोकुल ब्रज वृन्दावन तृण द्रुम चाहतहै चहुँपास जरायो॥ घेरत आवत दशहुं दिशाते अति कीने तनुक्रोध। नरनारी सब देखि चकित भये दावा लग्यो चहुँ कोध ॥ बहुत असुर घात किये आवत धावत पवन समाज। सूरदास ब्रजलोग कहत इह उठ्यो दवा अति आज ॥ ७७ ॥

आइ गई दव अतिहि निकटही। यह जानत अब ब्रज न बांचिहै कहत सबै चलिये जलतटही ॥ करि बिचार उठि चनर चहतहै जो देखैं चहुं पास। चक्कृतभए नर नारि जहां तहां भरि २ लेत उसांस ॥ झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार। देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलों पहुंची झार ॥ ७८ ॥

दशहुं दिशाते बरत दवानल आवतहै ब्रजजनपर धायो। ज्वाला उठी अकाश बराबरी घात आपने करि सब पायोरि। बीरा लै आयो सनमुखते आदर करि नृपकंस पठायो जारि। करौं परलय क्षणभीतर ब्रज बपुरो केतिक कहवायो ॥ धरणि अकाश भयो परिपूरण नेक नहीं कहुँ संधि बचायो। सूर श्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो ॥ ७९ ॥

ब्रजके लोग उठे अकुलाइ। ज्वाला देखि अकाश बराबरि दशहुँ दिशाकहुँ पारु न पाइ ॥ झरहरात बनपात गिरत तरु धरणी तरकि तडाकि सुनाइ। जल बरषत गिरिवर तर बाचे अब कैसे गिरि होतु सहाइ ॥ लटकि जात जरिजरि द्रुम बेली पटकत बांस कांस कुशताल। उचटत फर अंगार गगनलौं सूर निरखि ब्रजजन बेहाल ॥ ६८० ॥

नंदघरनि यह कहति पुकारे। कोउ बरषत कोउ अगिनि जरावतदई परचो है खोज हमारे ॥ तब गिरिवर कर धरचो कन्हैया अब न बांचिहै मारत जारे। जेंवन करन चली जब भीतर छींक परी तिय आजु सवारे ॥ ताको फल तुरतहि यक पायो सो उबरचो भए धर्म सहारे। अब सबको संहार होतहै छींक किये ·येक काज बिचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरे पुनिपुनि सोचति परी खँभारे। सूर श्याम यह कहत जननिसों रहि री माँ धीरज उरधारे ॥ ८१ ॥

राग गौड ॥ भहरात झहरात दवानल आयो। घेरि चहुँ ओर करिशोर अंदोर बन धरणि आकाश चहुँपास छायो॥ बरत बन बाँस थरहरत कुश कांस जरि उडतहै बांस अतिप्रबल वायो। झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फटि चटकि लट लटकि द्रुमन वायो ॥ अतिअगिनि झार भार धुंधारकरि उचटि अंगार झंझार छायो। बरत बन पात भहरात झहरात अरुरात तरु महा धरणी गिरायो ॥ भए बेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरन गोपाल कहिकै पुकारचो। तृणा केशी शकट बकी बका अघासुर बामकर गिरि-

राखि ज्यों उबारचो । नेक धीरज करौ जियहि कोऊ जिनि डरौ कहा यह सुरो लोचन मुदायो ॥ सुठी भरि लियो सब नाइ मुखही दयो सूरप्रभु पियो दावा ब्रजजन बचायो॥८२॥

राग कान्हरो ॥ अबकै राखिलेउ गोपाल । दशहुँ दिशाते दुसह दवागिनि उपजीहै यहि काल ॥ षटकत बांस कास कुश चटकत लटकत ताल तमाल । उचटत अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल ॥ धूप धूँधि बाढी घर अंमर चमकत बिच बिच जाल । हरिण बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसि बोले गोपाल । सूर अनलसब प्रदन सयानी अभयकरे ब्रजबाल ॥ ८३ ॥

राग गुंड ॥ दावानल अचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो । धरणि आकाशलौं ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रजवास आयो ॥ भये बेहाल सब सबदेखि नंदलाल तब हँसतही ख्याल तत्काल कीन्हों । सबनि मूँदे नयन ताहि चितये सैन तृषा ज्यों नीरदव अचै लीन्हों ॥ लखो अब नैनभरि बुझिगई अग्निझरि चितै नर नारि आनंदभारी । सूर प्रभु सुखदियो दवानल पीलियो कहत सब ग्वाल धनिमुरारी ॥ ८४ ॥

राग बिहागरो ॥ चकित देखि यह कहि नर नारी । धरणि अकासबराबरि ज्वालाझपट-तलपटकरारी ॥ नहिं बरष्योनहिं छिरक्यो काहूकहुँ धौंगयो बिलाइ । अतिआघात करत वनभीतर कैसे गयो बुझाइ ॥ तृणकी आगिबरतही बुझिगई हँसिहँसि कहत गुपाल । सुनहु सूर वह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुके ख्याल ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ॥ जाके सदा सहाइ कन्हाई । ताहि कहो काको डर भाई ॥ वन घर जहां तहां सँग डोलैं । खेलत खात सबनिसों बोलैं ॥ जाको ध्यान न पावैं योगी । सोब्र-जमें माखनको भोगी ॥ जाकी माया त्रिभुवन छावै । सो यशुमतिके प्रेम बँधावैं ॥ मुनिजन जाको ध्यान न पावैं । ब्रजजन लैलै नाम बुलावैं ॥ सूर ताहि सुर अंदर देखैं । जीवन जन्म ब्रजहिको लेखैं ॥ ८६ ॥

राग कान्हरो ॥ ब्रजवनिता सब कहति परस्पर नंदमहरको सुत बड़ वीर । देखहु धौं पुरुषारथ इनको अति कोमल तनुश्याम शरीर ॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमल लदाइ । कमलकाज नृपब्रज मारतहौ कोटि जलज तेहि दिये पठाइ ॥ दावा-गिनि नभ धरणि बराबरि दशहू दिशते लीनो घेरि । नयन मुँदाइ कहा तेहि कीन्हों कहूं नहीं जो देखै हेरि ॥ ए उत्पात मिटत इनहीपै कंस कहा बपुरोहै छार । सूर श्याम अवतार बडो ब्रज येईहैं करतासंसार ॥ ८७ ॥

राग सोरठ ॥ अति सुंदर नँद महर डिठोना । निरखिनिरखि ब्रजनारि कहति सब ये जानत कछुटोना ॥ कपटरूपकी त्रिया निजाती तबहिं रहे अति छौना । द्वारशिलापर पटकि तृणाको द्वै आयो अब पौना ॥ अघा बकासुर तबहिं सँहारचो प्रथम कियो बन गौना । सूर प्रगट गिरि धरचो बामकर मैं जानति बलिवौना ॥ ८८ ॥

राग मारू ॥ दावतेजरत ब्रजजन उबारे । पैठि जलगयो गहि उरग आन्यो नाथि प्रगट फन फननि प्रति चरण धारे ॥ देखैं मुनि लोक सुरलोक शिवलोकके नंद यशुमति हेतु वश मुरारी । जहां तहां करत अस्तुति मुखनिदेव नर धन्य शब्द तिहुँ जय भुवन धारी ॥

सुख कियो यमुनतट एक बार रैनि प्रातही ब्रज गये गोप नारी। सूर प्रभुश्याम बलराम-नन्द धाम गयो मात पित ब्रजजनहिसुखदकारी ॥ ८९ ॥

राग रामकली ॥ हरिब्रजजनके दुखविसरावन । कहा कंस करि कमल मँगाये कहा दवानल दावन ॥ जल कब गिरे उरग कब नाथ्यो नहिं जानतब्रज लोग । कहां बसे यक रैनि दिवस भरि कबहिं भयो यह सोग ॥ यह जानत हम ऐसेहिं ब्रजमें वैसहि करत बिहार । सूर श्याम जननीसों मांगत माखन बारंबार ॥ ६९० ॥

अष्टादश अध्याय ॥ प्रलंबवध ॥ भैरवी ॥ एक दिवस प्रलंब दावको लीन्हों कंसबुलाइ । कह्यो जाइ मारो नँदढोंटा देहौं बहुत बडाई ॥ तेहि कहिकै आयो ब्रज भीतर करत बडो उतपात । नरनारी देखत सब डरपे कीन्हो हृदय संताप ॥ हरि ताको दै सैन बुलायो मोपै काहे न आवत । तब वह दोऊ हाथ उठाये आयो हरि देखि धावत ॥ हरि दोउ हाथ पकरिकै ताके दियो दूरि फटकारी । गिरो धरणि पर अति विहबल होइ रह्यो न देह सँभारी ॥ बहुरो उठ्यो सँभारि असुरवहधायो निज मुख बाई । देखि भयानक रूप असुरकी सुरनरगणडराई ॥ चहुँधाफेरि असुरधरिपटक्यो शब्द उठ्यो आघात । चौंकि परयो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो हहरात ॥ पुहुदपवृष्टि करि देवन मिलि आनंद मोद बढाइ । ब्रजजन नंद यशोदा हरषित सूर सुमंगल गाइ ॥ ९१ ॥

राग सारंग ॥ यशुमति बूझतिफिरति गोपालहि । सांझ कि विरियां भई सखीरीमैं डरपाति जंजालहि ॥ जबते तृणावर्तब्रजआयो तबते मोहिं जिय शंक । नैननि ओट होत पल एकौ मैं मनमरति अदंक ॥ इहि अंतर बालक सब आये नंदहि करत गुहारी । सूर श्यामको आइ कौन धौं लेगयो कांधे डारी ॥ ९२ ॥

राग कान्हरो ॥ आजु कन्हैया बहुत बच्यो री । खेलत रह्यो घोषके बाहर कोउ आयो शिशुरूपरच्योरी॥मिलिगयोमनहि सखा की नाईं ले चढाइहरि कंध सच्यो री । धर्म सहाय होत है जहँ तहँ श्रमकरि पूरबपुण्य बच्योरी ॥ गगन उडाइ गयो ले श्यामहि आइ धरणि पर आपु दच्यो री । सूर श्याम अबकै बचि आये ब्रजघर घर सब सुखहि मच्योरी॥९३॥

बडे भाग्य हैं महर महरिकी । लै गयो पीठि चढाइ असुर इक का कहौं उबरनि या हरिकी ॥ नँदघरनि कुलदेव नावति तुमहि लाज सुत घरी पहरकी । जहाँ तहाँ तुमहिं सहाय सदा हौ जीवनि है यह श्याम शहरकी ॥ हरष भए नंद करत बधाई दान देत कहा कहौं महरकी । पंच शब्दकी ध्वनि बाजत नाचत गावत मंगलाचरण चहरकी ॥ अंकम भरि भरि लेत श्यामको ब्रजनर नारि अतिहि मन हरषी । सूर श्याम संतन सुखदायक दुष्टनके उरशालक करषी ॥ ९४ ॥

राग सारंग ॥ खेलन दूरिजात कतप्यारे जबते । जन्म भयो है तेरो तबहीते इहिभांति ललारे ॥ कोउ आवति युवती मिलि करिकै कोउ लैजातब तासकला रे । अबलगि बचे कृपा देवनकी बहुत गएमारि शत्रु तुम्हारे ॥ हाहा करति पाँइ तेरे लागति अब जनि जाहु दूरि मेरे प्यारे । सुनहु सूर यशुमति सुत बोधतिविधिके चरित सबै हैं न्यारे ॥ ९५ ॥

उन्निसवां अध्याय ॥ कल्याण ॥ कबकीटेरति कुँवर कन्हाई । बालसखा सब टेरत ठाढे अरु अग्रज बलभाई ॥ दाऊजू तुमह्यां नहिं आवत करोमुखारी आई । माता दुहुँनिद-

तौनी कर दै जलझारी भरिल्याई ॥ उत्तमविधिसों मुखपखरायो वोदे बसन अँगोछि। दोउ भैया कछु करौ कलेऊ लई बलाइ करपोंछि ॥ सद माखन दधि तुरत जमायो मधु-मेवा मिष्टान। सूरश्याम बलराम संग मिलि रुचिकरि लागे खान ॥ ९६ ॥

राग नट ॥ चले बन धेनु चरावत कान्ह। गोपबालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह ॥ हर्षसों यशुमति पठाए श्याम मन आनंद। गाइ गोसुत गोप बालक मध्य श्रीनँदनंद ॥ सखा हरिको यह सिखावत छांडि जिनिकहुँ जाहुँ ॥ सघन वृंदावन अगम अति जाइ कहुँ भुलाहु ॥ सूरके प्रभु हँसत मनमें सुनतही यह बात। मैं कहूं नहिं संग छाडौं बनहि बहुत डेरात ॥ ९७ ॥

राग धनाश्री ॥ हेरी देत चले सब बालक। आनँद सहित जात हरि खेलत संग मिले पशुपालक ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ नाचत कोउ धावत। किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उर लावत ॥ भली करी तुम मोको ल्याए मैया हरषि पठाए। गोधनवृंद लिये व्रजबालक यमुनातट पहुँचाए ॥ चरति धेनु अपने अपने रँग अतिहि सघन वन चारो। सूर संग मिलि गाइ चरावत यशुमतिकौ सुत बारो ॥ ९८ ॥

देवगन्धार ॥ द्रुमचढि काहेन टेरौ कान्हा गइयां दूरि गईं। धाई जात सबनके आगे जे वृषभान दईं ॥ घेरे न घिरत तुम बिनु माधवजू मिलत नहीं बगदईं। बिडरत फिरत सकल बन महियां एकइ एक भईं ॥ छाँडि खेल सब दूरि जात हैं बोलौ जोसके थोक कईं। सूरदास प्रभु प्रेम समुझिकै मुरली सुनत सब अहगईं ॥ ९९ ॥

राग मारू ॥ कहि कहि बोलत धौरी कारी। देखो धान्य भाग्य गाइनके प्रीति करत बनवारी ॥ मोटी भईं चरत वृन्दावन नंदकुँवरकी पाली। काहेन दूध देहिं व्रजपोषन हस्त-कमलके लाली ॥ बैन श्रवण सुनि गोवर्धन तृण दीन्हो धरि चाली। तबहीं वेगि आइ सूरज प्रभुपै क्यों भजैं जे पाली ॥ ७०० ॥

राग कल्याण ॥ जब सब गाइ भईं एक ठाईं। ग्वालन घरको घेरि चलाईं ॥ मारगमें तब उपजी आगि। दशहू दिशा जरन सब लागि। ग्वाल डरपि हरि शरणै आये। सूर राखि अब त्रिभुवनराये ॥ १ ॥

राग गौरी ॥ साँवरो मनमोहन माई देख सखी बनते जब आवत सुंदर नंदकुमार कन्हाई ॥ मोरपंख शिर मुकुट विराजत मुख मुरली सुर सुभग सोहाई। कुंडल लोल कपोलनिकी छबि मधुरी बोलनि बरणि न जाई ॥ लोचन ललित ललाट भ्रुकुटिविच ताकि तिलककी रेख बनाई। मनौ मर्याद उलंघि अधिक बल उमँगि. चली अति सुंदर-ताई ॥ कुंचितकेश सुदेश बदनपर मानौ मधुप माल फिरि आई। मंदमंद मुसुकात मनौ घन दामिनि दुरि दुरि देत दिखाई ॥ शोभित सूर निकट नासाके अनुपम अधरनिकी अरुनाई। जनु शुक सुरँग विलोकि बिंबफल चाखन कारन चोंच चलाई ॥ २ ॥

देखो री नँदनंदन आवत। वृंदावनते धेनु वृंदमें बेनु अधर धरे गावत ॥ तनु घनश्याम कमलदल लोचन अंग अंग छबि पावत। सुरभी कारी गोरी धूमरि धौरी लैलै नाम बलावत ॥ संग ग्वाल गोपाल संग सब शोभित मिलि कर पत्र बजावत। सूरदास सुख निरखतही सुख गोपी प्रेम बढावत ॥ ३ ॥

रजनी मुख बनते बने आवत भावत मंद गयंदकी लटकनि। बालक वृन्द विनोद हंसावत करतल कुट धेनुकी हटकनि॥ विकसत गोपी मनो कुमुद सर रूप सुधा लोचन पुट घटकनि। पूरण कला उदित मनौ उडुपति तँहि छिन विरह व्यथाकी चटकनि॥ लज्जित मन्मथ निरखि विमल छबि रसिक रंग भौंहनकी मटकनि। मोहन लाल छबीलो गिरिधर सूरदास बलिनागर नटकनि॥ ४॥

गौचारन राग बिलावल॥ जागिए गोपाललाल प्रगट भई हंसमाल मिट्यो अन्धकाल उठौ जननि मुख दिखाई। मुकुलित भए कमलजाल कुमुदवृन्द विहाल मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तन नशाई॥ ठाढे सब सखा द्वार कहत नन्दके कुमार टेरतहैं बारबार आइये कन्हाई। गैयनि भई बड़ी बार भरिभरि पै थननि भार बछरागन करैं पुकार तुमबिनु यदुराई॥ ताते यह अटकपरी दुहनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई। मुखते पट झटकिडारि चंद्रवदन दे उधारि यशुमति बलिहारि वारिज-लोचन सुखदाई॥ धेनुदुहन चले धाइ रोहिणि तबलै बुलाइ दोहनी मुहिदै मँगाइ तबहीं लै आई। बछरा थन दियो लगाइ दुहत बैठिकै कन्हाइ हँसत नंदराइ तहां मात दोउ आई॥ दोहनि कहुं दूधधार सिखवत नंद बारबार यह छबि नाहिं वारपार नंदघर बधाई। तब हलधर कह्यो सुनाइ गाइन बन चलौ लिवाइ मेवा लीनो मँगाइ विविधरस मिठाई॥ जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखद धाम धेनुकाज नहिं विश्राम यशुदा जल ल्याई। श्याम राम मुख पखारि ग्वालबाल लिये हँकारि यमुनातट मन बिचारि गाइन हँकराई॥ शृंग वेणु नाद करत मुरली मुख अधर धरत जननी मन हरत ग्वाल गावत सुरसाई। बृंदावन तुरत जाइ धेनु चरति तृण अघाइ श्याम हरष पाइ निरखि सूरज बलि जाई॥ ५॥

मुरलीस्तुति राग सारंग॥ जब हरि मुरली अधर धरत। खग मोहे मृगयूथ भुलाने निरखि मदन छबि छरत॥ पशु मोहे सुरभीहु थकी तृण दंतहि टेकि रहत॥ शुक सन-कादि सकल मन मोहे ध्यानिउँ ध्यान बहत॥ सूरजदास भाग्य हैं तिनकै जो या सुखहि लहत॥ ६॥

राग विहागरो॥ कहौं कहा अंगन की सुधि बिसारि गई। श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई॥ जो जैसे सो तैसे रहिगई सुख दुख कह्यो न जाई। लिखी चित्रसी सूर सो रहिगई एकटक पल बिसराइ॥ ७॥

राग मलार॥ सुतन वन मुरली ध्वनिकी बाजन। पपिहा गुञ्ज कोकिल वन कुंजत अरु मोरनके गाजन॥ यही शब्द सुनि अत गोकुलमें मोहन रूप विराजन। सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग करि साजन॥ ८॥

राग मारू॥ मेरे सांवरे जब मुरली अधर धरी। सुनि ध्वनि सिद्ध समाधि टरी॥ सुनि थके देव विमान। सुरवधू चित्र समान॥ ग्रह नक्षत्र तजत न रास। याही वधे ध्वनिपास॥ सुनि आँनद उमँगिभरे। जल थलके अचल टरे॥ चराचर गति विपरीति। सुनि वेनु कल्पित गीति॥ झरना झरत पाषान। गंधर्व मोहे कलगान॥ सुनि खग मृग

मौन धरे । फल तृण सुधि बिसरे ॥ सुनि धेनु अति थकित रहीं । तृण दंतहु नहीं ॥ बछरा न पीवैं क्षीर । पंछी न मनमें धीर ॥ द्रुम बेलि चपल भए । सुनि पल्लव प्रगटि नए ॥ जेविटप चंचल पात । ते निकटको अकुलात ॥ अँकुलित जे पुलकित गात । अनुराग नैन चुचात ॥ सुनि चंचल पवन थके । सरिता जल चलि न सके ॥ सुनि ध्वनि चलीं ब्रजनारि । सुत देह गेह बिसारि ॥ सुनि थकित भयो समीर । उलटो बह्यो यमुनानीर ॥ मनमोहन मदनगोपाल । तन श्याम नयन विशाल ॥ नव नील तनु घनश्याम । नव पीत पट अभिराम ॥ नवमुकुट नववनदाम । लावण्य कोटिक काम ॥ मनमोहनरूप धरयो । तब कामको गर्व हरयो ॥ मेरे मदनमोहन लाल । सँग नागरी ब्रजबाल । नवकुंज यमुनाकूल । देखत सूरदास जन फूल ॥ ९ ॥

रागपूरवी ॥ तरु तमालतरे त्रिभंगी तरुण कान्ह कुँवर ठाढे हैं साँवरे बरन । मोर मुकुट पीतांबर वनमाल विराजित देखत ब्रजजन मनहरन ॥ सखा अंशपर भुज दीन्हे मुरली अधरमधुर तान विश्वंभरन । सूरश्याम कमलनयन कौनकौन कीन्हे वश विलोकनि श्रीगोवर्धनधरन ॥ ७१० ॥

राग बिलावल ॥ श्याम हृदय वर मोति माला । विथकित भईं निरखि ब्रजबाला ॥ श्रवण थके सुनि वचन रसाला । नैन थके दरशन नँदलाला । कुंबुकंठ भुज नैन विशाला । करके उर कंचन नगजाला ॥ पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजे । कौस्तुभ मणि हृदयस्थल छाजै॥ रोमावली बरणि नहिं जाई । नाभि स्थलकी सुन्दरताई ॥ कटि किंकिणी चंद्रमणि संयुत । पीतांबर कटितट छबि अद्भुत ॥ युगल जंघकी पटतर कोहै । तरुनी मन धीरजको जोहै॥ जान जानुकी छबि न सँभारै । नारिनिकर मन बुद्धि विचारै ॥ रत्नजटित कंचन कल नेपुर । मंदमंद गतिचलत मधुर सुर ॥ युगल कमल पद नखमणि आभा । संतनि मन संतत यह लाभा ॥ जो जेहि अंग सो तहां भुलानी । सूरश्याम गति काहु न जानी॥११॥

अध्याय ॥ २० ॥ राग गौरी ॥ नँदनंदनमुख देख्यो माई । अंगअंग छबि मनहु उये रवि शशि । अरु समर लजाई ॥ खंजन मीन कुरंग भृंग वारिजपर अति रुचि पाई । श्रुति-मंडल कुंडल विवि मकर सु बिलसत सदन सदाई ॥ कंठकपोत कीरि विद्रुमपर दारिम कननि चुनाई । दुइ सारँग बाहनपर मुरली आई देत दोहाई ॥ मोहेथिर चर विटप बिहंगम व्योम बिमान थकाई । कुसुमंजुलि बरषत सुर ऊपर सूरदास बलिजाई ॥ १२ ॥

राग केदारो ॥ देखि री देखि आनँदकंद । चित्त चातक प्रेमघन लोचन चकोरको चंद॥ चलित कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल । सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दह दह डोल ॥ सुभग कर आनन समापै मुरलिका एहि भाइ । मनो अंभोज भाजन लेत सुधा भराइ ॥ श्यामदेह दुकूल द्युति छबि लसत तुलसीमाल । तडित घन सयोग मानो सेनिका शुकजाउ ॥ अलक अबिरल चारु हास विलास भ्रुकुटी भंग । सूर हरिकी निरखि शोभा भई मनसा पंग ॥ १३ ॥

राग मलार ॥ देखौ माई सुंदरताको सागर । बुधि विवेक बल पार न पावत गगन होत मननागर ॥ तनु अतिश्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीत तरंग । चितवत चलत अधिक

रुचि उपजत भँवर परत सब अंग ॥ नैन मीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग । मुकुतमाल मिलि मानो सुरसरि द्वै सरिता लिये संग ॥ मोर मुकुट मणिनग आभूषण कटि किंकिनि नखचंद । मनु अडोल वारिधिमें बिंबित राका उडुगणवृन्द ॥ वदन चंद्र मंडलकी शोभा अवलोकनि सुखदेत । जनु जल निधि मथि प्रगट कियो शशि श्री अरु सुधासमेत ॥ देखि स्वरूप सकल गोपीजन रहीं बिचारि बिचारि । तदपि सूर तरिसकीं न शोभा रहीं प्रेम पचिहारि ॥ १४ ॥

राग भैरवी ॥ जैसी २ बातैं करै कहत न आवैरी । श्याम सुंदर अति मन मन भावै री ॥ मदनमोहन मृग बेन बजावै री । तानतरंग रस रसिक रिझावै री ॥ जंगम थावर करै थावर चलावै री । लहरि भुजंग तजि सनमुख आवै री ॥ व्योमजन अतिगति फूल वरषावै री ॥ कामिनि जो धीर धरै सो को जो कहावै री ॥ नंदलाल ललना लालच ललचावै री । सूरदास प्रेम हरि हिये न समावै री ॥ १५ ॥

राग कल्याण ॥ बने बिशाल हरि लोचन लोल । चितै चितै हरि चारु बिलोकनि मानहुँ माँगत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल ललित सुदेश कपोल । मुख मुसकात महाछबि लागत श्रवण सुनत सुठि मीठे बोल ॥ चितवत रहत चकोर चंद्र ज्यों नेक न पलक लगावत डोल । सूरदास प्रभुके वश ऐसे दासी सकल भईं बिनु मोल ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ॥ ब्रजयुवती हरिचरण मनावैं । जे पद कमल महामुनि दुर्लभ ते सपनेहु न पावैं ॥ तनु त्रिभंग युग जानु एक पग ठाढे एक दरशायो । अंकुश कुलिश वज्र ध्वज परगट तरुणी मन भरमायो ॥ वह छबि देखि रही एकटकही यह मन करति बिचार । सूरदास मनौ अरुण कमलपर सुखमय करत बिहार ॥१७ ॥

राग बिलावल ॥ देखि सखी हरि अंग अनूप । जानु युगल युग जंघ बिराजत को वरणै यह रूप ॥ लकुट लपेटि लटकि भए ठाढे एक चरण धरधारे । मनहुँ नीलमणि खंभ काम रचि एक लपेटि सुधारे ॥ कबहुँ लकुटते जानू हरिलै अपने सहज चलावत । सूरदास मानहु करभा कर बारंबार डोलावत ॥ १८ ॥

राग नटनारायण ॥ कटितटि पीत वसन सुदेश । मनहुँ नवघन दामिनी तजि रही सहज सुवेष ॥ कनक मणि मेखला राजत सुभग श्यामल अंग । मनो हंस रिसाल पंगति नारि बालक संग ॥ सुभग कटि काछनी राजत जलज केसरि खंड । सूर प्रभु अंग निरखि माधुरि मदनतनु परचो दंड ॥ १९ ॥

राग नट ॥ तरुणी निरखि हरि प्रति अंग । कोउ निरखि युग जंघ शोभा करति मन अनुमान ॥ कोउ निरखि कटि पीत कछनी मेखला रुचिकारि । कोउ निरखि हृद नाभिकी छवि डारि तन मन वारि ॥ रुचिर रोमावली हरिकी चारु उदर सुदेश । मनो अलिसेनी विराजत बनै एकहि भेष । रही एकटक नारि ठाडी करत बुद्धिबिचार । सूर आगम कियो नभते यमुन सूक्षमधार ॥ ७२० ॥

राजत रोम राजिव रेष ॥ नीलघन मनों धूमधारा रही सूक्षमशेष ॥ निरखि सुंदर हृदयपर भृगुपद परम सलेष । मनहु शोभित अभ्रअंतर शंभु भूषण भेष ॥ मुक्तमाल

नक्षत्र गणसम अर्धचंद्र विशेष ॥ सजल उज्ज्वल जलद मलजय प्रबल बलनि अलेश ॥ केकि कच सुरचापकी छबि दशन तडित सपेष । सूर प्रभु अवलोकि आतुर तजे नैन निमेष ॥ २१ ॥

राग गौरी ॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली पर रहि बनत नाहिन परखि ॥ कोउ कहत यह कामश्रेनी कोउ कहति नहिं योग । कोउ कहति अलि बाल पंगति जुरे एक संयोग ॥ कोउ कहति अहि काम पठयो डसै जिनि यह काहु । श्याम रोमावलीकी छबि सूर नहीं निबाहु ॥ २२ ॥

राग आसावरी ॥ चतुर नारि सब कहति बिचारि । रोमावली अनूप बिराजति यमुनाकी अनुहारि ॥ उर कलिंदते धँसि जलधारा उदर धरणि परवाह । जाति चली अतिते जलधारा नाभि हृद अवगाह । भुजादंड तट सुभग घटा घन बनमाला तरुकूल । मोतिन माल दुहूँघा मानो फेन लेहरि रसफूल ॥ सूर श्याम रोमावलिकी छबि देखति करति बिचारि । बुद्धि रचति तरि सकति न शोभा प्रेम विवश ब्रजनारि ॥ २३ ॥

राग कल्याण ॥ रोमावली रेख अतिराजत । सूक्षम शेष धूमकी धारा नवघन ऊपर भ्राजत ॥ भृगुपद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्यों छाजत । मनहु मेघ भीतर शशिकी द्युति कोटि काम तनु लाजत ॥ मुकतामाल नंदनंदन उर अर्ध सुधाधर कांति । तनु श्रीखंड मेघ उज्ज्वल अति देखि महाबल भांति ॥ बरही मुकुट इंद्रधनु मानहु तडित दशन छबि लाजत । एकटक रही बिलोकि सूरप्रभु तनुकी है कहहाजत ॥ २४ ॥

राग सारंग ॥ मुख छबि कहौं कहां लगि माई । मनो कंज परकाश प्रातही रवि शशि दोऊ जात छपाई ॥ अधर बिंब नासा ऊपर मनौं शुक चाखनको चोंच चलाई । बिकसत बदन दशन अति चमकनि दामिनि द्युति दुरिदेत देखाई ॥ शोभित श्रीकुंडलकी डोलन मकराकृत अति श्री बनाई । निशदिन रटत सूरके स्वामी ब्रजवनिता देहैं बिसराई ॥ २५ ॥

राग केदारो ॥ सखीरी सुंदरताको रंग । छिनछिन मांह परत छबि औरै कमलनयनके अंग ॥ परमित करि राख्यो चाहति है तुमहु लागि डोलत है संग । चलत निमेष विशेष जानियत भूलि भई मति भंग ॥ श्याम सुभगके ऊपर वारों आली कोटि अनंग । सूरदास कछु कहत न आवै गिरा भई गतिपंग ॥ २६ ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम भुजाकी सुंदरताई । बडे बिशाल जानुलों परसत यक उपमा मन आई ॥ मनो भुजंग गगनते उतरत अधमुख रह्यो झुलाई । चंदन खौरि अनूपम राजत सो छबि कही न जाई ॥ रत्नजटित पहुँची कर राजत अँगुरी सुंदर भारी । सूर मनो फनि शिर मणि शोभित फनफनकी छबि न्यारी ॥ २७ ॥

राग धनाश्री ॥ गोपी तजि लाज संग श्याम रंगभूली । पूरण मुख चंद्र देखि नैनकमल फूली ॥ कीधौं नवजलस्वाति चातक मन लाये । किधौं नारिवृंद सीप हृदय हर्ष पाये ॥ रवि छबि कुंडल निहारि पंकज बिगसाने । किधौं चक्रवाक निरखि अतिही रतिमाने ॥ कीधौं मृगयूथजुरे मुरलीध्वनि रीझे । सूर श्याम मुख कुंडल छबिके रस भीजे ॥ २८ ॥

राग सोरठ ॥ बडो निठुर बिधना यह देख्यो । जबते आजु नंदनंदन छबि बारबार करि पेख्यो ॥ नख अँगुरी पगजानु जंघकटि रचि कीन्हों निर्मान । हृदयबाहु कर हस्त अंग अंग मुख सुन्दर अतिबान ॥ अधर दशन रसना रसवाणी श्रवण नयन अरु भाल । सूर रोमप्रति लोचन दे तो देखन बनै गोपाल ॥ २९ ॥

राग गूजरी ॥ श्याम अंग युवती निरखि भुलानी । कोउ निरखति कुंडलकी आभा यतनेहिं मांझ बिकानी ॥ ललित कपोल निरखि कोउ अटकी शिथिल भई ज्यों पानी । देह गेहकी सुधि नहिं काहू हरषनको पछितानी ॥ कोउ निरखति रही ललित नासिका यह काहू नहिं जानी । कोउ निरखति अधरनकी शोभा फुरत नहीं मुखबानी ॥ कोउ चकृत भई दशन चमक पर चक चौंधी अकुलानी । कोउ निरखति द्युति चिबुक चारुकी सूर तरुनि बिततानी ॥ ७३० ॥

राग नट ॥ श्याम कर मुरली अतिहि बिराजत । परसत अधर सुधारस प्रगटत मधुर मधुर सुर बाजत ॥ लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नैन सैन अति छाजत । ग्रीव नवाइ अटकि बंसी पर कोटिमदन छबि लाजत ॥ लोल कपोल झलक कुंडलकी यह उपमा कछु लागत । मानहुँ मकर सुधारस क्रीडत आप आप अनुरागत । वृंदावन विहरत नँदनदन ग्वालसखा सँग सोहत । सूरदास प्रभुकी छबि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री ॥ तब लगि सबै सयान रही । जबलगि नवल किशोरी मुरली बदन समीर बही ॥ तब ही लैं अभिमान चातुरी पतिव्रत कुलहि चही । जबलगि श्रवणरंध्र मग मिलकै नाहीं इहै बही । तब लगि तरुनितरल चंचलाता बुधि बल सकुचि रही । सूरदास जबलगि वह ध्वनि सुनि नाहिं न बनत कही ॥ ३२ ॥

राग गौरी ॥ ब्रजललना देखति गिरि धरको । एकएक अंग अंगपर रीझी अरुझी मुरलीधरको ॥ मनो चित्रकीसी लिखि काढी सुधि नाहीं मन घरको । लोकलाज कुल कानि भुलानी लुब्धी श्याम सुंदरको ॥ कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु डरी न काहू डरको । सूरदास प्रभुसों मन मान्यो जन्मजन्म परतरको ॥ ३३ ॥

राग सारंग ॥ बंसी वन कान्ह बजावत । आइ सुनो श्रवणनि मधुरे सुर राग रागिनि ल्यावत ॥ सुरश्रुति तान बँधान अमित अति सप्त अतीत अनागत आवत । जनु युग जुरि वरवेष सजलमथि बदन पयोधि अमृत उपजावत ॥ मनो मोहनी भेष धरे धारि मुरली मोहन मुख मधु प्यावत । सुर नर मुनि वश किये रागरस अधरसुधारस मदन जगावत ॥ महामनोहर नाथ सूर थिर चर मोहे मिलि मरन न पावत । मानहु मूक मिठाईके गुन कहि न सकत मुख शीश डोलावत ॥ ३४ ॥

राग केदारो ॥ बंसीवन राज आज आई रणजीति । मेटतिहै अपने बल सब हिनकी रीति ॥ बिडरे गजयूथ शीलसैन लाज भाजी । घूँघइपट कवच कहो छूटे मान ताजी ॥ किनहूं पति गेह तजै किनहूं तन प्रान । किनहुन सुख शरण पायो सुमत सुयश कान ॥

कोऊ पद परसि गए अपने २ देशैं । कोउ मारि रंक भए हुते जे नरेश ॥ देत मदन मारुत मिलि दशौ दिशि दोहाई । सूर श्याम श्रीगोपाल बंसीवश माई ॥ ३५ ॥

राग सारंग ॥ जबते बंसी श्रवण परी । तबहीते मन और भयो सखिमोतन सुधिबिसरी ॥ हौं अपने अभिमान रूप योवनके गर्वभरी । नेक न कह्यो कियो सुनि सजनी वादिहि आपु ढरी ॥ बिन देखे अब श्याम मनोहर युगभरि जात घरी । सूरदास सुनु आरज पंथते कछू न चाँड टरी ॥ मुरली ध्वनि श्रवण सुनि भवन रह्यौ नाहिं परै । ऐसी को चतुर नारि धीरज मन धरै ॥ खग मृग तरु सुर नर मुनि शिवसमाधि ढरै । अपनी गति तजो पौन सरिता उन टरै ॥ मोहनके मनको अपने वश करै ॥ सूरदास सप्तसुरन सिंधु सुधा भरे ॥ ३६ ॥

राग कान्हरो ॥ माई री मुरली अनिगर्व काहू वदति नहिं आजु । हरिको मुखकमल देख पायो सुखराजु ॥ बैठति करि पीठ ढीठ अधरछत्र छाहीं । चमरचिकुर राजत तहँ सुंदर सभामाहीं ॥ यमुनाके जलहि नाहिं जलधि जान देति । सुरपुरते सुर विमान भुवि बुलाइलेति ॥ स्थावर चर जंगम जहँ करति जीति अजीति । देवकी विधि मेटि चलति आपनेही रीति ॥ वंशीवश सकल सूर नर मुनि नाग । श्रीपतिहू श्रीबिसारी एही अनुराग ॥ ३७ ॥

राग गौरी ॥ मुरली मोहे कुँवर कन्हाई । अचवति अधरसुधावश कीन्ही अब हम कहा करैं कहिमाई ॥ सर्वसु हरयो धरयो कबहूँ औसरहूँ न देति अघाई । गाजति बाजति चढी दुहूँ कर अपने शब्द न सुनत पराई ॥ जिहि तन अनल दह्यो कुल अपनो तासों कैसे होत भलाई । अब कहि सूर कौन विधि कीजै वनकी व्याधि मांझ घर आई ॥ ३८ ॥

राग मलार ॥ मुरली तऊ गुपालहि भावति । सुनरी सखी यदपि नँदनंदन नानाभाँति नचावति ॥ राखत एक पाँइ ठाढे करि अतिअधिकार जनावति । कोमल अंग आपु आज्ञागुरु कटि टेढी ह्वै आवति ॥ अति आधीन सुजान कनौडे गिरिधर नारि नवावति । आपुन पौढि अधरसेज्यापर करपल्लव सन पद पलुटावति ॥ भृकुटी कुटिल कोप नासापुट हमपर कोप कुपावति । सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन अधर सुशीश डोलावति ॥ ३९ ॥

श्याम तुम्हारी मदन मुरलिका नेकसी जग मोह्यो । जे सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सब पोह्यो ॥ जे तीरथ तप करे तरनि सुत पन गहि पीठि न दीन्ही । ता तीरथ तपके फल लैके श्याम सोहागिनि कीन्हीं ॥ धरणिधरि गोवर्धन राख्यो कोमल प्राण अधार । अब हरि लटकि रहत है टेढे तनक मुरलिके भार ॥ निदरि हमहिं अधरन रस पीवत पठै दूतिका माई । सूर श्याम निकुञ्जते प्रगटी बसुरी सौति भइ आई ॥७४०॥

सखी री मुरली लीजै चौर । जिन गोपाल कीन्हें अपने वश प्रीति सबनिकी तोर ॥ छिन एक घोर फेरिव सुतासुर धरत न कबहूँ छोर । कबहूँ कर कबहूँ अधरन पर कबहूँ कटिमें खोसत जोर ॥ ना जानौं कछु मेलि मोहिनी राखी अंग अंभोर । सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर ॥ ४१ ॥

राग केदार ॥ मुरली अधर सजी बल वीर। नादप्रति वनिता विमोही डर बिसारे चीर ॥ खग नैन मूँदि समाधि धरि ज्यों करत मुनि तप धीर। डोलति नहीं द्रुमलता विथकी मंद गन्ध समीर ॥ मृग धेनु तृण तजि रहे ठाढ़े बच्छ तजि मुखक्षीर। सूर मुरलीनाद सुनि थकिरहत यमुनानीर ॥ ४२ ॥

राग मलार ॥ जब मोहन मुरली अधर धरी। गृह व्यवहार थके आरज पथ, चलत न शङ्करी ॥ पदरिपु टप अटक्यो आतुर ज्यों उलटत पलट मरी। शिवसुत वाहन आइ मिले हैं मन चित बुद्धि हरी ॥ दुरि गए कीर कपोत मधुप पिक सारंग सुधि बिसरी ॥ उडुपति विद्रुम बिंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी। निरखे श्याम पतंग सुतातट आनन्द उमँगि भरी ॥ सूरदास प्रभु प्रीति परस्पर प्रेमप्रवाह परी ॥ ४३ ॥

अध्याय २१ गोपिकावचन। राग सारंग ॥ हम न भईं वृन्दावन रेनु। जिन चरणन डोलत नँदनंदन नितप्रति चारत धेनु ॥ हमते धन्य परम ए द्रुम वन बालक बच्छ अरु धेनु। सूर सकल खेलत हंसि बोलत ग्वालन सँग मथि पीवत फेनु ॥ ४४ ॥

राग केदारो ॥ कहा भयो यादव जनमते ऊंचे पद कह्यो ऐन । सब जीवनको इहैं एक फल छिनक मीन जल करते सैन ॥ अधर मधुर पीवत मोहनको सबै कलंक नशाइ। अति कठोर मणिका इनहींमें छेदि विशाल बनाइ ॥ अंतर बिन सो सदा देखत हैं निज कुल वंश विहाइ । लिख्यो बिन अंक नहीं कछु करनी निरखत ताहि जो नयन लगाइ। सूरदास प्रभु बल परसन नित कामावलि अधिकाइ ॥ ४५ ॥

राग सारंग ॥ ऐसो गुपाल निरखि तन मन वारौं। नवल किशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं ॥ अरुन तरुन कमल नैन मुरली कर राजै । ब्रजजन मनहरन बेन मधुर मधुर बाजै ॥ ललित त्रिभङ्ग सो तन बनमाला सोहै । अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कहै ॥ चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणी कल कूजै ॥ मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजै ॥४६॥

सुन्दर मुखकी बलि बलि जाऊं । लावनिनिधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाऊँ। अंग अंग प्रति अमित माधुरी प्रगटित रस रुचि ठाऊँ ठाऊँ ॥ तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कबि मोहन नाऊं। नैनसैन दैदै जब हेरत तापर हौं बिन मोल बिकाऊँ। सूरदास प्रभु मदन मोहन छबि यह शोभा उपमा नहिं पाऊँ ॥ ४७ ॥

राग सूही ॥ मैं बलि जाउं श्याम मुख छबिपर। बलि बलि जाउँ कुटिल कच विथुरी बलि बलि जाउं भृकुटि लिलाटतर ॥ बलि बलि जाउं चारु अवलोकनि बलिहारी कुण्डलकी। बलि बलि जाउं नासिका सुललित बलिहारी वा छबिकी ॥ बलि बलि जाउं अरुन अधरनकी विद्रुम बिंब लजावन। मैं बलि जाउं दशन चमकनकी वारौं तडित नसावन ॥ मैं बलि जाउँ ललित ठोढीपर बलि मोतिनकी माल। सूर निरखि तन मन बलि हारों बलि बलि यशुमति लाल ॥ ४८ ॥

राग कान्हरो ॥ अलकनकी छबि अलिकुल गावत। खंजन मीन मृगज लज्जित भए नैन नचावनि गतिहि न पावत ॥ मुख मुसकानि आनि उर अंतर अंबुज बुधि उपजावत। सकुचत अरु विगसित वा छबिपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको

यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदै आवत ॥ मुकतादाम बिलोकि बिलखि करि अवलि बलाक बनावत । सूरदास प्रभु ललित त्रिभङ्गी मनमथ मनहिं लजावत ॥ ४९ ॥

राग मारू ॥ निगमते अगम हरि कृपा न्यारी । प्रीति वश श्यामकी राइकी रंक कोउ पुरुषकी नारि नहिं भेदकारी ॥ प्रीतिवश देवकी गर्भ लीन्हो वास प्रीतिके हेतु ब्रज भेष कीन्हो । प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो ॥ प्रीतिके हेतु वन धेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नंदसुवन नामा । सूर प्रभुको प्रीतिके हेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा ॥ ७५० ॥

प्रीतिके वश्य एहैं मुरारी । प्रीतिके वश्य नटवर भेष धारचो प्रीतिवश करज गिरिराज धारी ॥ प्रीतिके वश्य ब्रज भए माखन चोर प्रीतिके वश्य दाँवरि बंधाई । प्रीतिके वश्य गोपीरवँन प्रिय नाम प्रीतिके वश्य तरु जमल मोक्षदाई ॥ प्रीतिवश नंदबंधन वरुण सदन गये प्रीतिके वश्य वन धाम कामी । प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित प्रीतिवश सदा राधिकास्वामी ॥

राग धनाश्री ॥ दैदैरी मैया दोहनी दुहिहौं मैं गैया । माखन खाये बल भयो करि नंद-दुहैया ॥ कजरी धुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया । दुहिल्याऊं मैं तुरतही तू करिदै धैया ॥ ग्वालनकी सारि दुहतहौं बूझहु बल भैया । सूर निरखि जननी हँसी तब लेति बलैया ॥५१॥

राग सारंग ॥ बाबा मोको दुहन सिखायो । तेरे मन परतीति न आवै दुहत अँगुरियन भाव बतायो ॥ अँगुरी भेवि दाख जननी तब हँसिकै श्यामहिं कंठ लगायो । आठ वर्षको कुँवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो ॥ माता लै दोहनी कर दीन्हों जब हरि हँसत दुहनको धायो । सूर श्यामको दुहत देखि तब जननी मन अतिहर्ष बढ़ायो ॥

राग धनाश्री ॥ जननी मथति दधि गो दुहत कन्हाई । सखा परस्पर कहत श्यामसों हमहूंते तुम करत चँडाई ॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ मोसम सरि आई । जबलौं एक दुहौगे तबलौं चारि दुहौं तौ नंद दोहाई ॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो कालि दुहेंगे हमहूं तुम मिलि होड़ लगाई ॥ ५२ ॥

राधा यशोदाके आई । राग बिलावल ॥ उठी प्रातहि राधिका दोहनी कर ल्याइ । महरि सुतासों तब कह्यो कहां चली अतुराइ ॥ खरिक दुहावन जातिहौं तुम्हरी सेवकाइ । तुम ठकुराइनि घर रहौ मौहि चेरी पाइ ॥ रीती देखी दोहनी कत खीझत धाइ । कालि गई अवसे रकैह्यां उठी रिसाइ ॥ गाइ गईं सब प्याइकै प्रातहि नहिं आइ । ताकारण मैं जाति हौं अति करत चँडाइ ॥ यह कहि जननीसों चली ब्रजको समुहाइ । सूर श्याम गृहद्वा-रही गौ करत दुहाइ । ५३ ॥

राग बिलावल ॥ सुता महर वृषभानुकी नँदसदनहि आई । गृहद्वारेही अजिरमें गो दुहत कन्हाई ॥ श्याम चितै सुख राधिका मनहर्ष बढ़ाई । राधा हरिमुख देखिकै तनु सुरति भुलाई ॥ महरि देखि कीरति सुता तेहि लियो बुलाई । दंपतिको सुख देखिकै सूरज बलि जाई ॥ ५४ ॥

आजु राधिका भौरही यशुमतिके आई । महरि मुदित हँसियों कह्यो मथि भान दोहाई । आयसु लै ठाढी भई करनेति सुहाई । रीतो माट बिलोवरी चित जहां कन्हाई ॥ उनके मनकी कह कहौं ज्यों दृष्टिलगाई । लेइ आनो एक वृषभसो गैया बिसराई ॥ नैननिमें यशुमति लखी दुहुँकी चतुराई । सूरदास दंपतिदशा वरणी नहिं जाई ॥९५॥

महरि कह्योरी लाडिली केहिं मथन सिखायो । कहँ मथनी कहँ माटहै चित कहां लगायो ॥ अपने घर योंहीं मथै कहि प्रगट देखायो । की मेरे घर आइकै ह्यां सब बिसरायो ॥ मथन नहीं मोहिं आवतही तुम सौंह दिवायो । तेहि कारणमैं आइकै तुव बोल रखायो ॥ तब नँदघरनी मथि दह्यो यहि भांति बतायो । सूर निरखि मुख श्यामको तहां ध्यान लगायो ॥ ९६ ॥

राग सुहो ॥ दुहत श्याम गैयां बिसराई । नोआ लै पग बांधि वृषभके दोहनी मांगत कुँवर कन्हाई ॥ ग्वाल एक दोहनी लै दीनी दुहौ श्याम अति करौ चँडाई । हँसत परस्पर तारी दैदै आजु कहाँ तुम रहे भुलाई ॥ कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारीसों रहे चित अरुझाई । सूर श्याम राधातन चितवत बडे चतुरकी गई चतुराई ॥ ९७ ॥

राग रामकली ॥ राधा एढँग हैं री तेरे । वैसे हाल मथत दधि कीन्हे हरि मनो लिखे चितेरे ॥ तेरो मुख देखत शशि लाजै और कहो क्यों बाचैं । नैना तेरे जलज जितेहैं खंजनते अति नाचैं । चपलाते चमकत अति प्यारी कहा करौगी श्यामहिं । सुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति काज नहीं कछु तेरे धामहिं ॥ ९८ ॥

राग गूजरी ॥ मेरो कह्यो नाहिन सुनति । तबहिंते एकटक रही है कहा मन धौं गुनति॥ अबहिंते तू करति ए ढंग तोहि है कछु हौन । श्यामको तू ऐसे ठगि लिये कछु न जानै जौन ॥ सुता है वृषभानुकी री बडो उनको नाउ । सूर प्रभु नँदनँदन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥ ॥ ९९ ॥

राग सूहो ॥ प्रगटी प्रीति न रही छिपाई । परी दृष्टि वृषभानुसुताकी दोउ अरुझे निरवारि न जाई ॥ बछरा छोरि खरिकको दीनों आपु कान्ह तनु सुधि बिसराई । नोवत वृषभ निकसि गैयाँ गईं हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई । चारौं नैन भए एकठाहर मनहीमन दुहुँ रुचि उपजाई । सूरदास स्वामी रतिनागर नागरि देखि गई नगराई ॥७६०॥

चितैबो छांडिदै री राधा । हिलिमिलि खेलि श्यामसुंदरसों करति कामको बाधा ॥ की बैठी रहि भवन आपने काहेको बनिआवै । मृगनैनी हरिको मनमोहति जब तू देखिदुहावै ॥ कबहुँक करते गिरति दोहनी कबहुँक बिसरत नोई । कबहुँक वृषभ दुहतहै मोहन ना जानों का होई ॥ कौन मंत्र जानति तू प्यारी पढि डारति हरिगात । सूर श्यामको धेनु दुहनदे कहति यशोदामात ॥ ६१ ॥

राग धनाश्री ॥ धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं । जो आवै तौ सहज रूपसों बनि आवति बेकामहिं ॥ सूधे आइ श्यामसँग खेलो बोलो बैठो धामहिं । ऐसो ढंग मोहिं नहिं भावै लेउ न ताकें नामहिं ॥ घर अपने तू जाहि राधिका कहति महरि मन तामहिं । सूर आइ तू करति अचगरी को बकही निशि यामहिं ॥ ६२ ॥

राग जैतश्री ॥ बारबार तू जिनि ह्यां आवै । मैं कहा करौं सुतहि नहिं बरजति घरते मोहिं बोलावै ॥ मोसों कहत तोहिं विनु देखे रहत न मेरो प्रान। छोहलगति मोको सुनि बाणी महरि तुम्हारी आन। मुँह पावति तबहींलौं आवति औरै लावति मोहिं। सूर समुझि यशुमति उरलाई हँसति कहति हौ तोहिं ॥ ६३ ॥

राग गौरी ॥ हँसत कह्यो मैं तोसों प्यारी। मनमें कछू बिलगु जिनि मानहु मैं तेरी महतारी ॥ बहुते दिवस आज तू आई राधा मेरे धाम । महरि बडी मैं सुघरि सुनी है कछु सिखयो गृहकाम ॥ मैया जब मोहिं टहल कहत कछु खिझत बबा वृषभानु। सूर महरिसों कहति राधिका मानो अतिहि अजान ॥ ६४ ॥

राग रामकली ॥ दूध दोहनी लै री मैया। दाऊ टेरत सुनि मैं आऊँ तबलौं करि विधि धैया ॥ मुरली मुकुट पीतांबर दै मोहिं लैआई महतारी। मुकुट धरयो शिरे कटि पीतांबर मुरली कर लियो धारी ॥ राधाराधा कहि मुरलीमें खरि कहिं लई बुलाई। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई ॥ ६५ ॥

कुँवरि कह्यो मैं जाति महरिघर। प्रातहि आई खरिक दुहावन कहति दोहनी लैकर ॥ तब खरि कहिं कोऊ ग्वाल गये नहिं तिन कारण ब्रज आई। जौ देखौं तौ अजिरहि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥ तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखि अधिक रुचि लागी। तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी ॥ ६६ ॥

राग गूजरी ॥ जा घर प्यारी आवत रहियो। महरि हमारी बात चलावति मिलन हमारो कहियो ॥ एक दिवस मैं गई यमुनतट तहां उन देखी आई। मोको देखि बहुत सुख पायो मिलि अंकम लपटाई ॥ यह सुनिकै चली कुँवरि राधिका मोको भई अबार। सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों मोहन नंदकुमार ॥ ६७ ॥

राग गूजरी ॥ सैनदै प्यारी लई बोलाइ। खेलनको मिस करिकै निकसे खरि कहि गए कन्हाइ ॥ यशुमतिको कहि प्यारी निकसि घरको नाउँ सुनाई। कनक दोहनी लै तहँ आई जहँ हल धरको भाई ॥ तहां मिलीं सब संग सहेली कुँवरि कहां तू आई । प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिर नहीं तहँ पाई ॥ तबहिं गई मैं ब्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाई। सूरश्याम दुहिदेन कह्यो सुनि राधा गई मुसकाई ॥ ६८ ॥

राग धनाश्री ॥ धेनु दुहन जब श्याम बोलाई। श्रवन सुनत तहां गई राधिका मन हरि लीयो कन्हाई ॥ सखी संगकी कहति परस्पर कहँ यह प्रीति लगाई। यह वृषभानु पुराये ब्रजमें कहां दुहावन आई ॥ मुख देखत हरिको चकृत भई तनुकी सुधि बिसराई । सूर-दास प्रभुके रसवश भई काम करी कठिनाई ॥ ६९ ॥

गाउँ बसत एते दिवसनिमें आजु श्याम मैं देखे। जेदिन गए बिना ब्रजनाथहि तेई वृथाकरि लेखे ॥ कहिये जो कछु होइ सयानी कहिबेको अनुमानै। सुंदर श्याम निकाईको सुख नैनाई पै जानै ॥ तबते रूप ठगोरी लागी युग समान पल बितवति। तजि कुललाज सूरके प्रभुको फिरि फिरि मुखतन चितवति ॥ ७७० ॥

राग देवगन्धार ॥ मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरे। हाथ धेनुमथ बदन त्रियातनु छीर छाछि छल छोरे ॥ आनन रहीं ललिन पयछींटैं छाजति छबि तृण तोरे।

मनहुँ निकसि निकलंक कलानिधि दुग्धसिंधुके बोरे ॥ दै घूँघटपट ओट नील हँसि कुँवरि मुदित मुख मोरे । मनहुँ शरदशशिको मिलि दामिनि घेरिलियो घनघोरे ॥ यहि विधि हरसति बिलसति दंपति हेतु हिये नाहिं थोरे । सूर उमँगि आनंदसुधानिधि मनो बिलावल फोरे ॥ ७१ ॥

राग रामकली ॥ हरसो धेनु दुहावत प्यारी । करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महरकी बारी ॥ दूधधार मुखपर छबि लागति सो उपमा अतिभारी । मानो चंद कलंकहि धोवत जहँ तहँ बूँध सुधारी ॥ हावभाव रस मगन है दोऊ छबि निरखति ललिता री । गौदोहन सुख करत सूर प्रभु तीनिहुँ भुवन कहा री ॥ ७२ ॥

राग सूहो ॥ तुमपै कौन दुहावै गैया । लिहे रहत कर कनकदोहनी बैठतहौ अधपैया ॥ अति रस कामकि प्रीति जानिकै आवत खरक दुहैया । इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया ॥ गुप्त प्रीति तासों करि मोहन जोहै तेरी दैया । सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो ज्यों घर खसम गुसैयाँ ॥ ७३ ॥

राग धनाश्री ॥ करिलो न्यारी हरि आपनि गैयां । नहिन बसात लाल कछु तुमसों सबै ग्वाल इकठैयां ॥ नहिन अधिक तेरे बाबाके नाहिं तुम हमरे नाथ गुसैयाँ । हम तुम जाति पांतिके एकै कहा भयो अधिकी द्वै गैयां ॥ जादिनते सबरे गोपनमें तादिनते तू करत लँगरैया । मानी हार सूरके प्रभुसों बहुरि न करिहौं नंददुहैया ॥ ७४ ॥

राग सूहो ॥ धेनुदुहत अतिही रति बाढी । एकधार दोहनि पहुँचावत एक धार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहनकरते धार चलत पय मोहनीमुख अतिहि छबि गाढी । मनो जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनिपुनि प्रेम चंदपर बाढी ॥ सखी संगकी निरखति यह छबि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी । सूरदास प्रभुके वश भई सब भवनकाजते भई उचाढी ॥ ७५ ॥

राग बिलावल ॥ दुहिदीनी राधाकी गैयां । दोहनी नहीं देत करते हरि हाहा करति परतिहै पैयां ॥ ज्यों ज्यों प्यारी हाहा बोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया । बहुरिकरौ प्यारी तुम हाहा देहौं नंददुहैया ॥ तब दीनी प्यारीकर दोहनी हाहा बहुरि करैया । सूरश्याम रस हावभाव करि दीनि कुँवरि पठैया ॥ ७६ ॥

चलन चहति पग चलै न घरको । छांडत बनत नहीं कैसेहू मोहन सुंदरवरको ॥ अंतर नेक करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको । कछु दिन जैसे तैसे खोऊं दूरि करौं पुनि डरको ॥ मनमें यह बिचार करि सुंदरि चली आपने पुरको । सूरदास प्रभु कह्यो जाहु घर घात करचो नख उरको ॥

राग मलार ॥ मुरि चितवति नंदगली । डग न परत ब्रजनाथ साथ विनु विरह व्यथा मचली ॥ बारबार मोहन मुख कारण आवत फिरि जु अली । चली पीठि दै दृष्टि फिरावति अंग अंग आनंद रली ॥ सूरदास प्रभु पास दुहायो श्रीवृषभानु लली ॥ ७७ ॥

राग बिलावल ॥ शिर दोहनी चली लै प्यारी । फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखियनलौं ब्रजको गए कन्हाई । और अहिर सब कहां तुम्हारे हरिसों धेनु दुहाई ॥ यह सुनिकै चकृत भई प्यारी धरणि परी मुरझाई । सूरदास तब सखियन उरभरि लीनी कुँवरि उठाई ॥ ७८ ॥

क्यों री कुवँरि गिरी मुरझाई । यह वाणी कहि सखियन आगे मोको कारे खाई ॥ चलीं लिवाइ सुता वृषभानुहिं घरहीतन समुहाई । डार दियो भरि दूध दोहनियां अबहीं नीके आई ॥ यह कारो सुत नंदमहरको सब हम फूंक लगाई । सूर सखिन मुख सुनि यह बाणी तब यह बात सुनाई ॥ ७९ ॥

राग सारंग ॥ मोहिलई नैननि की सैन । श्रवन सुनत सुधि बुधि बिसरी सब हो लुबधी मोहन मुख बैन ॥ आवत हुते कुमार खरिकते तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नखशिख सुन्दरताको ऐन ॥ मृदु मुसकान हरयौ मनको मनि तबते तिल न रहत चित चैन । सूर श्याम यह वचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहिदैन ॥ ७८० ॥

राग धनाश्री ॥ सखियन मिलि राधा घर लाई । देखहु महरि सुता अपनीको कहूं यहि कारे खाई । हम आगे आवति यह पाछे धरणि परी भहराई । शिरत गई दोहनी ढरिकै आपु रही मुरझाई ॥ श्याम भुजंग डस्यो हम देखत ल्यावहु गुणी बुलाई । रोवत जननि कण्ठ लपटानी सूर श्याम गुनराई ८१ ॥

राग सारंग ॥ प्रात गई नीके उठि घरते । मैं बरजी कहाँ जाति री प्यारी तब खीझी रिस झरते ॥ शीतल अंग खेदसों बूड़ी सोच परचो मन डरते । अतिहि हठीली कह्यो न मानति करति आपने बरते ॥ औरै दशा भई क्षण भीतर बोली गुनी नगरते । सूर गारुड़ी गुणकरि थाके मंत्रन लागत थरते ॥ ८२ ॥

राग नटनारायण ॥ चले सब गारुड़ी पछिताइ । नेकहू नहिं मंत्र लागत समुझि काहु न जाइ ॥ बात बूझत संग सखियन कहौ हमहिं बुझाइ । कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसों आई ॥ महाविषधर श्याम अहिवर देखि सबहीं धाइ । फूक ज्वाला हमहुँ लागी कुवँरि उर परी खाइ ॥ गिरि धरनी मुरछि तबहीं लई तुरत उठाइ । सूर प्रभुको बेगि ल्यावहु बड़ो गारुडिराइ ॥ ८३ ॥

राग आसावरी ॥ नंद सुवन गारुड़ी बोलावहु । कह्यो हमारो सुनत न कोऊ तुरत जाहु ब्रज अब लै आवहु ॥ ऐसे गुनी नहीं त्रिभुवन कहुँ हम जानत हैं नीके । आय जाय तौ तुरत जियावै नेक छुवतही उठिहै जीके ॥ देखौ धौं यह बात हमारी एकहि मंत्र जियावै । नंद महरको सुत सूरज प्रभु जो कैसेहुँ करिह्यालैं आवै ॥ ८४ ॥

राग आसावरी ॥ डसीरी माई श्याम भुअंगम कारे ॥ मोहन मुख मुसकानि मनहुँ विष जाते मरे सो मारे ॥ फुरै न मंत्र यंत्र दइ नाहीं चले गुणी गुण डारे । प्रेमप्रीति विष हिरदै लागी डारत है तनु जारे ॥ निर्विष होत नहीं कैसेहुँ करि बहुत गुणी पचि हारे । सूर श्याम गारुड़ी बिनाको सोशिर गाडूटारे ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ॥ वेगि चलो पिय कुँवर कन्हाई । जा कारण तुम यह वन सेयो सो त्रिय मदन भुअंगम खाई ॥ नैन शिथिल शीतल नासापुट अंग तपति कछु सुधि न रहाई । सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तन तोरि जँभाई ॥ बिन देखे मूरतिको जित-तित उठि दौरी जिन जहां बताई । ताहि कछू उपचार न लागत कर मींजै सहचरि पछिताई ॥ बारबार बूझति है ऐसे कमलनयनकी सुन्दरताई । जोपै सूर जिवायो चाहत तौ ताको अब देहु दिखाई ॥ ८६ ॥

राग नट ॥ सुनत तुम्हरी बात मोहन चुइचले दोउ नैन । छुटि गई लोकलाज आतुरता रहि न सकति चित चैन ॥ उर कांप्यो तनु पुलकि पसीज्यो बिसरि गई सुख बैन । ठाढी है जैसे तैसे धुकि परी धरणि तिहि ऐन ॥ कोउ शिर गहि कोउ कमल कुंकुमा कोउ धाई जल लैन । ताहि कछु उपचार न लागै डसी कठिन अहि मैन ॥ हौं पठई एक सखी सयानी अब बोली दै सैन । सूर श्याम राधिका मिले बिन कहा लगे दुख दैन ॥८७॥

राग केदारो ॥ भरि भरि लेत लोचन नीर । तुम बिना ब्रजनाथ सुंदरि विरहखेद अधीर ॥ कमल उरपर धरत छिनुछिनु छिरकि चंदन चीर । जालमग शशिकिरिन रोकित मलय मंद समीर ॥ हौं जु तुम्हरे पास पठई देखि मनसिज भीर । सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरहु तनुपीर ॥ ८८ ॥

राग सारंग ॥ तनु बिष रह्यो है बहु छहरि । नंद सुअन अति गारुडी कहत हैं पठवै धौं महरि ॥ गए अवसान भीर नहिं भावै भावै नाहिं चहरि । ल्यावो गुणी जाइ गोविंदको बाढी है अति लहरि ॥ देखी उरहि बीचही खाई माती है जहरि । सूर श्याम बिषहर कहुँ खाई यह कहि चली डहरि ॥ ८९ ॥

राग सुघराइ ॥ वृषभानुकी घरनी यशोमति पुकारचो । पठै सुतकाज मैं कहति हौं लाज तजि पाँइ परिकै महरि करति आरचो ॥ प्रात खरिकहि गई आय विह्वल भई राधिका कुँअरि कहुँ डस्यो कारो । सुनी यह बात मैं आइ अतुरात ह्यां गारुडी बडो है सुत तुम्हारो ॥ यह बडो धर्म नँदघरनि तुम पाइहौ नेक काहे न सुतको हँकारो । सूर सुनि महरि यह कहि उठी सहजही कहा तुम कह मेरो अतिहि बारो ॥ ९० ॥

कान्हहि पठै महरि कहति पाइँन परि ॥ आजु कहुँ कारे काहू खाई है काम कुँवरि ॥ सब दिन आवै जाइ जहां तहां फेरि फिरि । अबहीं खरिक गई आई है जिय बिसरि ॥ निशिके उनींदे नैन तैसे रहै टरि टरि ॥ किधौं कहूं प्यारीको तटकी लागी नजरि । तेरो सुत गारुडी सुन्योहै बातरी महरि । सूरदास प्रभु देखे जैहै री गरल झरि ॥ ९१ ॥

राग आसावरी ॥ यंत्र मंत्र कहा करि जानै मेरो । यह तुम जाइ गुणिनको बूझहु बिन कारण कत करत हौ झेरो ॥ आठ बरषको कुँवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि । किन बहकाइ दई है तुमको ताहि पकरि लैजाहि ॥ मैं तो चकृत भई हौं सुनिकै अति अचरज यह बात । सूर श्याम गारुडी कहांको कह आई बितताात ॥ ९२ ॥

राग टोडी ॥ महरि गारुडी कुँवर कन्हाई । एक बिटिनियां कारे खाई ताको श्याम तुरतही ज्याई । बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिकै नेकहु पठाई । कुँवरि राधिका प्रात खरिक गई कहा कहूँ धौं कारे खाई । यह सुनि महरि मनहिं मुसकानी अबहिं रही मेरे गृह आई । सूर श्याम राधहि कछु कारण यशुमति समुझिरही अरगाई ॥ ९३ ॥

राग आसावरी ॥ तब हरिको टेरति नँदरानी । भली भई सुत भयो गारुडी आजु सुनी श्रवणन यह बानी ॥ जननी टेर सुनत हरि आए कहा कहति री मैया । कीरति महरि बुलावन आई जाहु न कुँवर कन्हैया ॥ कहूं राधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारी । यंत्रमंत्र कछु जानतहौ तुम सूर श्याम बनवारी ॥ ९४ ॥

राग गूजरी ॥ मैया एक मंत्र मोहिं आवै । विषहर खाइ मरै जो कोऊ मोसों मरन न आवै ॥ एक दिवस राधासँग आई खरिक बिटिनियां और । तहां ताहि विषहरने खाई गिरी धरणि वहि ठौर ॥ यह वाणी वृषभानुघरनि कहि यशुमति तब पतिआई । सूर श्याम मेरो बडो गारुडी राधा ज्यावहु जाई ॥ ९५ ॥

राग सुघराइ ॥ यशुमति कह्यौ सुत जाहु कन्हाई । कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई ॥ आजुहि मेरे गृह खेलन आई । जात कहूं कारे तेहि खाई ॥ कीरति महरि लिवावन आई । जाहु न श्याम करहु अतुराई ॥ सूर श्यामको चली लिवाई । गई वृषभानुपुरहि समुहाई ॥ ९६ ॥

राग देवगंधार ॥ हरि गारुडी तहां तब आए । यह बानी वृषभानुसुता सुनि मनहीमन अति हर्ष बढाए ॥ धन्यधन्य आपुनको कीन्हों अतिहि गई मुरझाई । तनु पुलकित रोमांच प्रगट भए आँनद अंशु बहाई ॥ विह्वल देखि जननि भई व्याकुल अंग विष गए समाई । सूर श्याम प्यारी दोउ जानत अंतरगतिकी भाई ॥ ९७ ॥

राग रामकली ॥ रोवत महरि फिरति बितताती । बार बार लै कंठ लगावति अतिहि शिथिल भई पानी ॥ नंदसुवनके पाँइ परी लै दौरि महरि तब आई । व्याकुल भई लाडिली मेरी मोहन देहु जिवाई ॥ कछु पढि पढिकरि अंग परस करि विष अपनो लियो झारि । सूरदास प्रभु बडे गारुडी शिरपर गाडू डारि ॥ ९८ ॥

लोचन दियो कुँवरि उघारि । कुँवरि देख्यो नंदको तब सकुचि अंग सँभारि ॥ बात बूझति जननिसों री कहा है यह आजु । मरतते तू बची प्यारी करतिहै कहा लाजु ॥ तब कहति तोहिं कारे खाई कछु न रही सुधि गात । सूर प्रभु तोहिं ज्याइ लीन्ही की कुँवरिसों नात ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ बडो मंत्र कियो कुँवर कन्हाई । बार बार लै कंठ लगायो मुख चूम्यो दियो घरहि पठाई ॥ धन्य कोखि वह महरि यशोमति जहां अवतरचो यह सुत आई । ऐसो चरित तुरतही कीन्हों कुँवरि हमारी मरी जिवाई ॥ मनहींमन अनुमान कियो यह बिधना जोरी भली बनाई सूरदास प्रभु बडे गारुडी जे घरघर यह घेर चलाई ॥८००॥

राग सुघराई ॥ भलेभले हौ भले कान्ह विषही उतारो । आजुते गारुडी नावँ प्रगटचो बिहारो ॥ जननि कहति मेरो सुत बारौ । युवती कहति हमतन धौं निहारौ ॥ अब को निकरै सांझ सवारो । जान्यो व्रज वसत कठिन ऐसो कारो । यह निजु मंत्र जनि जियते बिसारो ॥ बहुरि कारो कहु करैगो पसारो । सूरदास प्रभु सवहिन प्यारो ॥ ताहीको डसत जाको हियो है उज्यारो ॥ १ ॥

राग रामकली ॥ नीके विषहि उतारचो श्याम । बडे गारुडी अब हम जाने संगहि रहत सु काम ॥ ऐसो मंत्र कहां तुम पायो बहुत कियो यह काम । मरी आनि राधिका जिवाई टेरत एकहि नाम ॥ हम समुझी यह बात तुम्हारी जाहु अपने धाम । सूर श्याम मनमोहन नागर हँसि वश कीन्हों वाम ॥ २ ॥

हसि वश कीन्हीं घोषकुमारी । विवश भई तनुकी सुधि बिसरी मन हरि लियो मुरारी ॥ गए श्याम ब्रज धाम आपने युवति मदनशर मारी । लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुनिनपै डारी ॥ करत विचार सुंदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारी । मांगहु इहै देहुपति हमको सूर शरन बनवारी ॥ ३ ॥

अध्याय ॥ १२ ॥ चीरहरनलीला ॥ राग जयतश्री ॥ भवन रवैंन सबहै बिसरायो । नंद-नँदन जबते मन हरिलियो कहति वृथा यह जनम गँवायो ॥ जप तप व्रत संयम साधनते प्रगट होत पाषान । जैसेहि मिलैं श्यामसुंदर वर सोइ कीजे नहिं आन ॥ इहै मंत्र दृढ कह्यो सबन मिलि याते होइ सुहोई । वृथा जन्म जगमें जिनि खोवहु इहां अपनो नहिं कोई ॥ तब परतीति सबनिके आई कीन्हों दृढ विश्वास । सूर श्यामसुंदर पति पावैं इहै हमारे आस ॥ ४ ॥

राग आसावरी ॥ गौरीपति पूजति ब्रजनारि । नेम धर्मसों रहति क्रियायुत बहुत करति मनुहारि ॥ इहैं कहति पति देहु उमापति गिरिधर नंदकुमार । शरन राखिलेव्हु शिव शंकर तनहिं नशावत मार ॥ कमलपुहुप माल्हरपत्र फल नानासुमन सुवास । शंकर पूजति मन बच क्रम करि सूर श्यामकी आस ॥ ५ ॥

राग रामकली ॥ शिवसों विनय करति कुमारि । जोरि कर मुख करति अस्तुति बडे प्रभु त्रिपुरारि ॥ शीतभीत न करत सुंदरि कृश भई सुकुमारि । छहौ ऋतु तप करति नीके गृहको नेह बिसारि ॥ ध्यान धरि कर जोरि लोचन मूँदि एक एक याम । विनय अंचल छोरि रविसों करति हैं सब वाम ॥ हमहिं होहु कृपालु दिनमणि तुम विदित संसार । काम अति तनु दहत दीजे सूर श्याम भतार ॥ ६ ॥

राग नटनारायण ॥ रविसों बिनय करति कर जोरैं । प्रभु अंतर्यामी यह जानी हम कारण जप तप जल खोरैं ॥ प्रगट भए प्रभु जलही भीतर देखि सबनको प्रेम । मींडत पीठि सबनिकी पाछे पूरण कीन्हे नेम ॥ फिरि देखै तो कुँवर कन्हाई रुचिसों मींजत पीठि । सूर निरखि सकुचीं ब्रजयुवती परी श्यामतनु दीठि ॥ ७ ॥

राग देवगंधार ॥ अति तप देखि कृपा हरि कीन्हों । तनुकी जरनि दूरि भई सबकी मिलि तरुणिन सुख दीन्हों ॥ नवलकिशोर ध्यान युवती मन ऊहै प्रगट सिखायो । सुकु-चिगईं अँग बसन सँभारति भयो सबनि मनभायो ॥ मनमन कहति भयो तप पूरण आनंद उर न समाई । सूरदास प्रभु लाज न आवति युवतिन माँझ कन्हाई ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ हँसत श्याम ब्रज घरको भागे । लोगनको यह कहति सुनावति मोहन करन लँगरई लागे ॥ हम अस्नान करत जलभीतर आपुन मींजत पीठि कन्हाई । कहा भयो जो नँदमहरसुत हमसों करते अधिक ढिठाई ॥ लरिकाई तबहींलौं नीकी चारि वरष की पांच । सूर जाइ कहि हैं यशुमतिसों श्याम करत ए नाच ॥ ९ ॥

प्रेम विवश सब ग्वालि भईं । उरहन दैन चलीं यशुमतिको मनमोहनके रूप रईं ॥ पुलकि अँग अंगिया उरदरकी हार तोरि कर आपु लईं । अंचल चीरि घात नख उर करि यहि मिस करि नँदसदन गईं ॥ यशुमति माई कहा सुत सिखयो हमको जैसे हाल कियो । चोलीफारि हार गहि तोर्‌यो देखो उर नखघात दियो ॥ आंचर चीरि अभूषण

तोरे घेरि धरत उटि भागि गयो । सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहिं भयो ॥ ८१० ॥

राग गौरी ॥ महरि श्यामको बरजति काहि न । ऐसे हाल किये हरि हमको भई कहूं जग आहि न ॥ और बात एक सुनहुँ श्यामकी अतिहि भए हैं ढीठ । वसनबिना अस्नान करति हम आपुन मींजत पीठ ॥ आपु कहति मेरो सुत वारो हियो उघारि दिखायो । सुनतहु लाज कहत नहिं अवै तुमको कहा लजायो ॥ यह बाणी युवतिनमुख सुनिकै हँसिबोली नँदरानी । सूर श्याम तुमलायक नाहीं बात तुम्हारी जानी ॥ ११ ॥

राग गौरी ॥ बात कहौ जो लहै बहै री । बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहै री ॥ तुम चाहतहौ गगनतरैया मांगे कैसे पावहु । आवतही मैं तुम लखि लीन्हीं कहि मोहिं कहा सुनावहु ॥ चोरी रही छिनारो अब भयो जान्यो ज्ञान तुम्हारो । और गोपसुतन नहिं देखौ सूर श्याम है बारो ॥ १२ ॥

राग मलार ॥ ग्वालिनि घरहीकी बाढी । निशि दिनि देखत अपनही आँगन ठाढी ॥ कबहिं गुपाल कंचुकी फारी कब भै ऐसे योग । अबहीं संग खेल ना सीखे यह जानत सब लोग ॥ नितही झगरतहैं मनमोहन मूरति देखि प्रेमरस चाखी । सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबैहैं साखी ॥ १३ ॥

राग गौरी ॥ यहि अंतर हरि आइगए । मोर मुकुट पीतांबर काछे अति कोमल छबि अंग भए ॥ जननि बुलाइ बांह गहि लीन्ही देखहुरी मदमाती । इनहीको अपराध लगावति कहा फिरत इतराती ॥ सुनिहै लोग मष्ट अबहुं करि तुमहिं कहांकी लाज । सूर श्याम मेरो माखन भोगी तुम आवति बेकाज ॥ १४ ॥

राग केदारो ॥ अबहीं देखे नवल किशोर । घर आवतही तनक भए हैं ऐसे तनके चोर ॥ कछु दिन करि दधिमाखन चोरी अब चोरत मन मोर । विवश भई तनु सुधि न सँभारति कहत बात भई भोर ॥ यह बाणी कहतही लजानी समुझि भई जिय ओर । सूर श्याम मुख निरखि चली घर आनँद लोचन लोर ॥ १५ ॥

राग नटनारायण ॥ ब्रजघर गईं गोपकुमारि । नेकहूँकहुँ मन न लागत काम धाम बिसारि ॥ मातपितको डर न मानत सुनत नाहिंन गारि । हठ करति विरुझाति तब जिय जननि जानत वारि ॥ प्रातही उठि चलीं सब मिलि यमुन तट सुकुमारि । सूर प्रभु ब्रत देखि इनको नाहिंन परत सँभारि ॥ १६ ॥

राग गौरी ॥ यमुनातट देखे नँदनंदन । मोरमुकुट मकराकृत कुंडल पीत वसन मनु-चंदन ॥ लोचन तृप्त भए दरशनते उरकी तपनि बुझानी । प्रेममगन तब भईं सुंदरी उर गदगद मुख बानी ॥ कमलनयन तटपर हैं ठाढे सकुचहिं मिलि ब्रजनारी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी ब्रजपूरण पगधारी ॥ १७ ॥

राग नट ॥ बनत नहीं यमुनाको ऐबो । सुंदर श्याम घाटपर ठाढे कहौ कौनबिधि जैबो ॥ कैसे बसन उतारि धरैं हम कैसे जलहि समैबो । नंदनँदन हमको देखैंगे कैसेकरि जो अन्हैबो ॥ चोली चीर हार लै भाजत सो कैसेकरि पैबो । अंकम भरिभरिलेत सूर प्रभु कालि न एहि पथ ऐबो ॥

राग रामकली ॥ कैसे बनै यमुन अस्नान । नंदको सुत तीर बैठो बड़ो चतुर सुजान ॥ हार तोरै चीर फारै नयनचलै चुराइ । कालि धोखे कान्ह मेरी पीठ मीजे आइ ॥ कहति युवती बात सुनि सब थकित भई ब्रजनारि । सूर प्रभुको ध्यान धरि मन रविहि बांह पसारि ॥ १८ ॥

राग गूजरी ॥ अतितप करति घोष कुमारि । कृष्ण पति हम तुरत पावैं काम आतुर नारि ॥ नैन मूँदति दरशकारण श्रवणशब्द विचारि । भुजा जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अंकवारि ॥ शरद ग्रीषम डरति नाहीं करति तपु तनु गारि । सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझेभारि ॥ १९ ॥

राग धनाश्री ॥ ब्रजबनिता रविको कर जोरैं । शीत भीत नहिं करनि छहौं ऋतु त्रिविध काल यमुनाजल खोरैं ॥ गौरीपति पूजति तप साधति करति रहति नित नेमू । भोगरहित निशि जागि चतुर्दशि यशुमति सुतके प्रेमू ॥ हमको देहु कृष्ण पति ईश्वर और नहीं मन आन । मनसा बाचा कर्मणा हमरे सूर श्यामको ध्यान ॥ ८२० ॥

नीके तप कियो तनु गारि । आपु देखत कदमपर चढि मानिलई मुरारि ॥ बर्षभारि ब्रतनेम संयम श्रम कियो मोहिंकाज । कैसेहु मोहिं भजै कोऊ मोहिं बिरदकी लाज ॥ धन्य ब्रत इन कियो पूरण शीत तपनि निवारि । काम आतुर भजैं मोकों नवतरुनि ब्रजनारि ॥ कृपानाथ कृपालुमय तब जानि जनकीपीर । सूरप्रभु अनुमान कीन्हों हरौं इनको चीर ॥ २१ ॥

राग बिलावल ॥ बसन हरे सब कदम चढाये । सोरह सहस गोपकन्यनके अंगअभूषन सहित चोराये ॥ अतिबिस्तार नीपतरु तामें लैलै जहां तहां लपटाये । मणिआभरन डार-डारन प्रति देखत छबि मनहीं अटकाये ॥ नीलांबर पाटंबर सारी श्वेत पीत चूनरि अरु-नाए । सूरश्याम युवतिन ब्रत पूरनको फल कदमडार फलदाये ॥ २२ ॥

राग सुगही ॥ आपु कदम चढि देखत श्याम । बसन अभूषन सब हरि लीन्हे बिना बसन जल भीतर बाम ॥ मूंदत नयन ध्यान धरि हरिको अंतर्यामी लीन्हों जान । बार-बार सवितासों मांगैं हम पावैं पति सुन्दर श्याम ॥ जलते निकसि आइ तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाहिं । इतउत हरि चकृत भईं सुन्दरि सकुचि गईं फिरि जलही माहिं ॥ नाभिप्रयंत नीरमें ठाढी थरथर अंग कँपति सुकुमारि । को लै गयो बसन आभूषन सूर श्याम उर प्रीति बिचारि ॥ २३ ॥

आवहु निकसि घोष कुमारि । कदम परते दरश दीन्हों गिरिधरन बनवारि ॥ नैन भरि ब्रत फलहि देख्यो फरचो है द्रुमडार । ब्रत तुम्हारो भयो पूरण कह्यो नंदकुमार ॥ सलिलते सब निकसि आवहु वृथा सहत तुषार । देतहौं किन लेउ मोसों चीर चोली हार ॥ बाँह टेकि विनय करौ मोहि कहत बारंबार । सूर प्रभु कह्यो मेरे आगे आनि करहु शृंगार ॥ २४ ॥

राग रामकली ॥ ग्वालिनि अपनो चीर लै री ॥ जलते निकसि निकसि तट द्वै करजोरी शीशदै री ॥ कतहौ शीत सहति ब्रज सुन्दरि ब्रत पूरण भै री । मेरे कहे आइ पहिरौ पट कृशतनु हेमजरै री ॥ हौं अंतर्यामी जानत सब अति यह पै जकरै री । करिहौं पूरण काम

तुम्हारो शरद रास टेरी ॥ संतत सूर स्वभाव हमारो कत भय काम डरी । कवनेहुँ भाव भजै कोउ हमको तिन तनु ताप हरै री ॥ २५ ॥

हमारो अंबर देहु मुरारी । लै सब चीर कदम चढि बैठे हम जलमांझ उघारी ॥ तुम तौ कहावतहौ नँदनंदन हम वृषभान दुलारी । तुम्हरो तौ अंबर जबहीं देहौं जलते निकसि होहु सब न्यारी ॥ तटपर बिना वसन क्यों आवै लाज लगति है भारी चोली हार तुमहिंको दीन्हीं चीर हमहिं देहु डारी ॥ तुम यही बात अचंभो भाषत नांगी आनहु नारी । सूर श्याम कछु छोह करौ जू शीत गई तन मारी ॥ २६ ॥

राग आसावरी ॥ हाहा करति घोषकुमारि । शीतते तन कँपत थरथर वसन देहु मुरारि ॥ मनहिं मन अतिही भयो सुख देखिकै गिरिधारि । जो पुरुष तियअंग देखै कहत दोष है भारि । नेक नहिं तुम छोह आवत गई हिम सब मारि । सूर प्रभु अतिही निठुर हो नंद सुत बनवारि ॥ २७ ॥

राग बिलावल ॥ लाज ओट यह दूरि करौ । जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई सकुच बापुरेहि कहा करौ ॥ जलते तीर आइ कर जोरहु मैं देखौं तुम बिनय करौ । पूरण व्रत अब भयो तुम्हारो गुरुजन शंका दूरि करौ ॥ अब अंतर मोसों जिन राखौ बारबार हठ वृथा करौ । सूर श्याम कह चीर देतहौं मो आगे शृंगार करौ ॥ २८ ॥

जलते निकसि तीर सब आवहु । जैसे सवितासों कर जोरौ तैसेहि जोरि देखावहु ॥ नव बालाहम तरुन कान्ह तुम कैसे अंग दिखावैं । जलहीमें सब बाँह टेकिकै देखहु श्याम रिझावैं ॥ ऐसे नाहिं रीझौं मैं तुमको तटही बाँह उठावहु । सूरदास प्रभु कहत हार चोली वस्तर तब पावहु ॥ २९ ॥

राग बिलावल ॥ हमारो देहु मनोहर चीर । कांपत शीत तनहिं अति व्यापत हिमसम यमुनानीर ॥ मानहिंगी उपकार रावरो करो कृपा बलबीर । अतिही दुखित प्राण वपु परसत प्रबल प्रचंड समीर ॥ हम दासी तुम नाथ हमारे बिनवति जलमें ठाढी । मानहुं विकसि कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति उर बाढी ॥ जो तुम हमैं नाथ कै जान्यो यह मांगे हम देहु । जलते निकसि आइ बाहेर ह्वै वसन आपने लेहु ॥ कर धरि शीश गई हरि सन्मुख मनमें करि आनंद ॥ ह्वै कृपालु सूरज प्रभु अंबर दीने परमानंद ॥ ८३० ॥

राग जैतश्री ॥ तरुनी निकसि तट आई । पुनि पुनि कहत लेहु पट भूषण युवती श्याम बुलाई ॥ जलते निकसि भई सब ठाढी कर अँग ऊपर दीन्हे । बरुन देहु आभुषन राखहु हाहा पुनि पुनि कीन्हे ॥ ऐसे कहा बतावतिहौ मोहिं बाहँ उठाय निहारों कहा अंग उर मूँदौ मेरे कहे उघारौ ॥ सूर श्याम सोई हम करिहैं जोइ जोइ तुम सब कैहौ । लैहैं दाऊँ कबहुं हम तुमसौं बहुरि कहां तुम जैहौ ॥ ३१ ॥

राग रामकली ॥ ललना तुम ऐसे लाड़ लडाए । लैकर चीर कमरपर बैठे किहिं ऐसे ढँगलाए ॥ हाहा करति कंचुकी मांगति अंबर दिए मन भाए । कीनी प्रीति प्रगट मिलबेकी अँखियन शर्म गँवाए ॥ दुख अरु हाँसी सुनहु सखी री कान्ह अचानक आए । सूरदासके प्रभुको मिलनो अब कैसे दुरत दुराए ॥ ३२ ॥

राग नट ॥ सोरहसहस घोषकुमारि । देखि सबको श्याम रीझे रहीं भुजा पसारि । बोलिलीन्हों कदमके तर इहां आवहु नारि । प्रगट भए तहां सबनिको हरि काम द्वंद निवारि ॥ बसन भूषन सबन पहिरे हरष भै सुकुमारि । सूर प्रभु ये गुण भले हैं ऐसे तुम बनवारि ॥ ३३ ॥

दृढव्रत कियो मेरे हेत । धन्य धनि कहि नंदनंदन जाहु सबै निकेत ॥ करौं पूरण काम तुम्हरो शरद रास रमाइ । हरषभई यह सुनत गोपी रहीं शीशनवाइ ॥ सबनिको अँगपरस कीन्हों ब्रतकियो तनुगारि । सूर प्रभु सुख दियो मिलिकै ब्रज चलीं सुकुमारि ॥ ३४ ॥

राग सूहो ॥ व्रत पूरण कियो नंदकुमार । युवतिनके मेटे जंजार ॥ जपतप करि अब तनजिनिगारो । तुम घरनी मैं भर्ता तुम्हारो ॥ अंतरशोच दूरि करिडारहु । मेरे कह्यो सत्य उर धारहु ॥ शरद रास तुम आश पुरावहुँ । अंकम भरि सबको उर लावहुँ ॥ यह सुनि सब मनहर्ष बढायो । मनमन कह्यो कृष्ण पति रायो ॥ जाहु सबै घर घोषकुमारी । शरदा सदैहौं सुख भारी । सूर श्याम प्रगटे गिरिधारी ॥ आनँद सहित गईं घर नारी ॥ ३५ ॥

राग आसावरी ॥ शिवशंकर हमको फल दीन्हों । पुहुप पाननाना रस मेवा षटरस अर्पण लैलै कीन्हों ॥ पाइँ धरी युवती सब यह कहि धन्य धन्य त्रिपुरारी । तुरतहि फल पूरन हमपायो नंदसुवन गिरिधारी ॥ बिनय करति सविता तुम सरि को पयअंजलि कर जोरि । सूर श्याम पति तुमते पायो यह कहि घरहि बहोरि ॥ ३६ ॥

अथ वस्त्रहरनलीला दूसरी ॥ राग सूही ॥ नँदनंदन वर गिरिवर धारी । देखत रीझीं घोषकुमारी ॥ मोरमुकुट पीतांबर काछे । आवत देखे गाइन पाछे ॥ कोटि इंदु छबि वदन बिराजै । निरखि अंग प्रति मन्मथ लाजै ॥ रवि शत छवि कुण्डल नाहिं तूलै दशन दमक द्युति दामिनि भूलै ॥ नैन कमल मृगशावक मोहै । शुकनासा पटतरको कोहै ॥ अधर बिंब फल पटतर नाहीं । विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं ॥ देखत रीझिरहीं ब्रजनारी । देह गहेकी सुरति बिसारी ॥ यह मनमें अनुमान कियो तब जप तप संयम प्रेम करौं अब॥ बारबार सविताहि मनावति । नँदनंदन पति देहु सुनवति । नेम धर्म तप साधन कीजै । शिवसों मांगि कृष्णपति दीजै ॥ वरष दिवसको नेम लियो सब । रुद्रहि सेवहु मन वच क्रम अब ॥ दृढविश्वास व्रतहिको कीन्हों । गौरीपति पूजन मन दीन्हों ॥ षटदश सहस जुरीं सुकुमारी । व्रत साधत नीके तनु गारी ॥ प्रात उठैं यमुनाजल खोरैं । शीत उष्ण कहुँ अंग न मोरैं ॥ पतिके हेत नेक तप साधैं । शंकरसों यह कहि अवराधैं ॥ कमल पत्र मलर चढावैं । नयन मूँदि यह ध्यान लगावैं ॥ हमको पति दीजै गिरिधारी । बडे देव तुम हौ त्रिपुरारी ॥ और कछू नाहिं तुमसों मांगौं । कृष्णहेतु यह कहि पालागौं । ऐसेहि करत बहुत दिन बीते । प्रभु अंतर्यामी मन चीते ॥ एकदिवस आपुन आए तहँ । नवतरुनी अस्नान करत

जहँ ॥ बसन धरे जलतीर उतारी आपुन जल पैठीं सुकुमारी ॥ कृष्णहेतु अस्नान करैं जहँ । सबके पाछे आपुन हैं तहँ । मींजत प्रेम अति बाढ़ी । चकृत भई युवती सब ठाढी ॥ देखे नँदनंदन गिरिधारी । ब्रतफल प्रगट भये बनवारी ॥ सकुचि अंग जल पैठि लुकावैं । बारबार हरि अंकम लावैं ॥ लाज नहीं आवतिहै तुमको । देखत बसन बिना सब हमको ॥ हँसंत चले. तब नंदकुमार । लोगन सुनेवति करत पुकार ॥ हार चीर लै चले पराई । हांक दियो नंददोहाई ॥ डारि बसन भूषन तब भागे श्याम करन अब ढीठो लागे ॥ भाजे कहां चलोगे मोहन । पाछे आइगई तुव गोहन ॥ तनुकी सुधि सँभार कछु नाहीं । वसन अभूषण पहिरत जाहीं । चीर फटे कंचुकिबँद छूटे । लेत न बनत हारहैं टूटे ॥ प्रेमसहित मुख खीझर जाहीं । झूठहि बारबार पछिताहीं ॥ गईं सबै तिय नंदमहर घर । यशुमतिपास गईं सब दरदर ॥ देखहु महरि श्यामके एगुन । जैसे हाल करे सबके उन॥ चोली चीर हार देखरायो । आपुन भागि इतहिको आयो ॥ यमुनातट कोउ जान न पावै । संग सखा लिये पाछे धावै ॥ तुम सुतको बरजहु नँदरानी । गिरधर करत नहीं भलि बानी ॥ लाज लगति एक बात सुनावति । अंचल छोरि हियो दिखरावति यह देखंत हँसिउठी यशोदा । कछु रिसि कछु मनमें करि मोदा ॥ आइगए तेहि समय कन्हाई । बाहँ गही लै तुरत देखाई ॥ तनक तनक कर तनक अँगुरिया । तुम यौवन भरि नवल बहुरिया ॥ जाहु घरहि तुमको मैं चीन्ही । तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं ॥ तुम चाहति सो ह्यां ना पैहौ । और बहुत व्रज भीतर लैहौ ॥ बारबार कहि कहा सुनावति । इन बातन कछु जानि न आवति ॥ देखहु री ए भाव कन्हाई । कहां गईं तबकी तरुनाई । महरि तुमहिं कछु दूषन नाहीं । हमको देखि देखि मुसकाहीं ॥ इनके गुण कैसे कोउ जानैं । करत और धरि ठानैं देन उरहनो तुमकों आई । नीकी पहिरावति हम पाई ॥ चलीं सबै युवती घरघरको । मनमें ध्यान करति हैं हरिको ॥ वरषदिवस तप पूरण कीन्हें । नन्द-सुवनको तन मनदीन्हें ॥ प्रात होत यमुना फिरि आई । प्रथम रहे चढि कदम कन्हाई ॥ तीर आइ युवतीभईं ठाढी । उर अंतर हरिसों रति बाढी ॥ कह्यो चलो यमुनाजल खोरैं । अंगन आभूषण सब छोरैं ॥ चोली छोरैं हार उतारैं करसों शिथि केश निरवारैं ॥ इतउत चितवत लोग निहारैं । कह्यो सबन अब चीर उतारैं ॥ बसन अभूषण धरयौ उतारी । जलभीतर सब गईं कुमारी ॥ माघ शीतको भीत न मानैं । षटऋतुको गुण समकरि जानैं ॥ बारबार बूडैं जलमाहीं । तेकहु जलकों डरपँति नाहीं॥ प्रातहिते यक याम नहाहीं । नेम धर्महीमें दिन जाहीं ॥ इतनी कष्ट करैं सुकुमारी । पतिके हेतु गोवर्द्धनधारी ॥ अति तप करति देखि गोपाला । मनमें कह्यों धन्य ब्रजबाला ॥ हरि अंतर्यामी सब जानैं । छिन-छिनकी यह सेवा मानैं॥ व्रतफल इनहिं प्रगट देखरावों । बसन हरों लै कदम चढ़ावों ॥ तनु साधन तप कियो कुमारी। भजैं मोहिं कामातुर नारी॥ सोरह सहस गोप सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी ॥ हरत बसन कछु बार न लागी। जलभीतर युवती सब नाँगी॥ भूषन वसन सबै हरिल्याये। कदमडार जहँ तहँ लटकाये॥ ऐसो नीपवृक्ष विस्तारा। चीर हार धौं कित कहँ डारा॥

सबै समाने तनु प्रतिडारा। यह लीला रचि नंदकुमारा॥ हार चीर मानों तरु फूल्या। निरखि श्याम आपुन अनुकूल्या॥ नेमसहित युवती सब न्हाई। मन मन सविता विनय सुनाई॥ मूँदहिं नैन ध्यान उर धारे। नंद नँदन पति होय हमारे॥ रवि करि विनय शिवहि मन दीन्हों॥ त्रिपुरसदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघमोचन॥ गरलअशन अहिभूषण धारी। जटाधरन गंगा शिर प्यारी॥ करति विनय यह मांगति तुमसों। करहु कृपा हँसिके आपुनसों॥ हम पावैं सुत यशुमतिको पति। इहै देहु करि कृपा देव रति॥ नित्यनेम करि चलीं कुमारी। एक याम तनको हि मजारी॥ ब्रजललना कह्यो नीर जडाई। अतिआतुर ह्वै तटको धाई॥ जलते निकसि तरुणि सब आई। चीर अभूषन तहां न पाई॥ सकुचि गई जल भीतर धाई। देखि हँसत तरु चढे कन्हाई॥ बारबार युवती पछिताहीं। सबके बसन अभूषन नाहीं ऐसो कौन सबै लै भाग्यो॥ लेतहु ताहि बिलम नहिं लाग्यो॥ माघ तुषार युवति अकुलाहीं। ह्यां कहुँ नंदसुवन तौ नाहीं॥ हम जानी यह बात बनाई। अंबर हरि लैगए कन्हाई॥ हौ कहुँ श्याम विनय सुनि लीजै। अंबर देहुकृपा करि दीजै॥ थरथर अंग कँपति सुकुमारी। देखि श्याम नहि सके सँभारी॥ एहि अंतर प्रभु वचन सुनाए। व्रतको फल दरशन सब पाए॥ कहा कहति मोसों ब्रजबाला। माघशीत कत होत बिहाला॥ अंबर जहां बताऊं तुमको। तौ तुम कहा देहुगी हमको॥ तन मन अर्पण तुमको कीन्हों। जो कछु हतो सो तुमहीं दीन्हों॥ और कहा लैहो जू हमसों। हम मांगत हैं अंबर तुमसों॥ यह सुनि हँसे दयालु मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी॥ जलते निकसी सबैं तट आवहु। तबहि भले अंबर तुम पावहु॥ भुजा पसारी दीनह्वै भाषहु। दोउकर जोरि जोरि तुम राखहु॥ सुनहु श्याम इकबात हमारी। नगन कहूँ देखिये न नारी॥ यह मति आपु कहां धौं पाई॥ आजु सुनी यह बात नवाँई॥ ऐसी साध मनहिंमें राखहु। यह बाणी मुखते जनि भाषहु॥ हम तरुनी तुम तरुण कन्हाई। बिना बसन क्यों देहिं देखाई॥ पुरुष जाति तुम यह का जानौ। हाहा यह मुखमें जनिआनौ। तौ तुम बैठिरहौ जलही सब। बसन अभूषण नहिं चाहति अब॥ तबहि देहुँ जलबाहिर आवहु। बाहँ उठाई अंग देखरावहु॥ कत हौ शीत सहति सुकुमारी। सकुच देहु जलहीमें डारी॥ फरचो कदम ब्रतफरनि तुम्हारो। अब कहा-लज्जा करति हमारो॥ लेहु न आइ आपुने व्रतको। मैं जानत या व्रतके घतको॥ नीके व्रत कीन्हो तनु गारी। व्रत ल्यायो धरि मैं गिरि धारी॥ तुम मनकामन पूरण करिहौं। रासरंग रचि रतिसुख भरि हौं। यह सुनिकै मन हर्ष बढायो। व्रतको पूरण फल हम पायो॥ छांडहु तुम यह टेक कन्हाई। नीरमापहु हौंगईं जडाई॥ आभूषण सब आपुहि लेहू। चीर कृपाकै हमको देहू॥ हाहा लागैं पाइँ तुम्हरे। पाप होतहै जाडन मारे॥ आजुहितै हम दासी तुम्हरी। कैसे अंग देखावैं उघरी॥ अंग देखायेहि अंबर पैहौ। नातरु वैसेहि दिवस गँवैहौ॥ मेरे कहे निकसि सब आवहु। थोरेहि हमको भलो मनावहु॥

मुहां चही तरुनी मुसुकानी। यह आपुन थोरीकरि जानी॥ जोइ जोइ कहो सो तुमको सोहै। आजु तुम्हारे पटतर को है॥ हमरी पति सब तुम्हरे हाथा। तुमहि कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥ तप तनु गारिकियो जेहि कारण। सो फल लग्यो नीपतरु डारन॥ आवहु निकसि लेहुपट भूषण। यह लागै हमको सबदूषन॥ अब अंतर कत राखत हमसों। बारंबार कहतहौं तुमसों॥ गोपिन मिलि यहबात बिचारी। अबतौ टेक परे बनवारी॥ चलहु न जाइ चीर अब लेहू। लाज छांडि उनको सुख देहू॥ जलते निकसि तीरसब आई। बारबार हरि हर्षि बुलाई॥ बैठि गई तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी॥ छाँडि देहु यह बात सयानी। वैसेहि करौ कहीजो बानी॥ कर चुक अंग ढाँकि भई ठाढी। वदन नवाइ लाज अति बाढी॥ देहु श्याम अंवर अब डारी। हाहा दासी सबै तुम्हारी॥ ऐसे नहीं वसन तुम पावहु। बाहँ उठाइ अंग देखरावहु॥ कह्यो मानि युवतिन कर जोरे। पुनि पुनि युवती करति निहोरे॥ धन्यधन्य कहि श्रीगोपाला। निहचै व्रत कीन्हों ब्रजबाला। आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरंग पटंबर॥ निकट गई सुनिकै यह बानी। तरुणी नग्न अंग अकुलानी॥ भूषन बसन सबनको दीन्हों। तियके हेतु कृपाहरि कीन्हों॥ चीर अभूषन पहिरे नारी॥ कह्यो ताहि ऐसे बनवारी॥ तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी॥ मैं पति तुम मेरी सब प्यारी॥ तुमहिं हेतु यह वपु व्रज धारचो। तुम कारण वैकुंठ बिसारचो॥ अब व्रत करि तुम तनुहिं न गारौ। मैं तुमते कहुँ होत न न्यारो॥ मोहिं कारण तुम अति तप साध्यो। मन मनके मोको अवराध्यो॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला। अंग परसि मेटे जंजाला॥ युवतिन बिदा दई गिरिधारी। गई घरनि सब घोष कुमारी॥ बस्त्रहरनलीला प्रभु कीन्हों। ब्रजतरुणी व्रतको फल दीन्हों॥ यह लीलाश्रवणनि सुनि भावै॥ औरनि सिखवै आपुन गावै। सूर श्याम जनके सुखदाई। दृढ़ताईमें प्रगट कन्हाई॥ ३७॥

अथ पनघटको प्रस्ताव॥ राग अडानो॥ हौं गईही यमुनजल लेन माईहो सांवरेसे मोही। सुरंग केसरि खौरि कुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरी झलकत पीतांबर की खोही॥ नान्ही २ बूँदनमें ठाढोरी बजावै गावै मलारकी मीठी तान मैं तो लालाकी छबि नेकहु न जोही। सूरश्याम मुरिमुसकानि छबीरी अँखियनमें रही तब न जानों हौं को ही॥ ३८॥

चटकीलो पट लपटानो कटि बंसीवट यमुनाके तट नागरनट। मुकुट लटकि अरु भृकुटि मटक देखौ कुंडलकी चटकसों अटकिपरी दृगनि लपट॥ आछी चरणनि कंचन लकुट ठटकीली बनमाल करटेके द्रुमडार टेढे ठाढे नँदलाल छबिछाई घट घट। सूरदास प्रभुकी बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सौंधेकी लपट॥ ३९॥

राग सुघराई॥ बजावै मुरलीकी तान सुनावै यहि बिधि कान्ह रिझावै। नटवर वेष बनाये चटक सो ठाढो रहै: यमुनाके तीर नित नव मृत निकट बौलावै॥

ऐसो को जो जाइ यमुनते जल भरि ल्यावै ॥ मोर मुकुट कुण्डल बनमाला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भरि आवै ॥ सूर श्यामके अंग अंग प्रति कोटि काम छबिछावै ॥ ४० ॥

राग पूरवी ॥ पनघट रोकेहि रहत कन्हाई । यमुनाजल कोउ भरन न पावत देखतही फिरि जाई ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छुपाई । बत ठाढे जे सखा संगके तिनको लिये बोलाई ॥ बैठारे ग्वालनको द्रुमतर आपुन फिरफिर देखत । बड़ी बार भई कोऊ न आई सूरश्याम मन खेलत ॥ ४१ ॥

राग देवगन्धार ॥ युवति इक आवत देखी श्याम । द्रुमके आटे रहे हरि आपुन यमुना तट गई बाम ॥ जल हलोरि गागरि भरि नागरि जबही शीश उठायो । घरको चली जाइ ता पाछे शिरते घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर कह्यो श्यामको कनक लकुटिया पाई । औरनिसों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ॥ गागरि लै हँसि देत ग्वालिकर रीतो घट नहिं लैहौं । सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तबहिं लकुट कर दैहौं ॥ ४२ ॥

राग कल्याण ॥ लकुट करकी हौं तब देहौं घट मेरो जब भरि देहो । कहा जो नंद बड़े वृषभानु आन हमहूँ तुमसी हैं समसरि मिलि करिकै हो । एक गाँव एक ठाँवको वास एक तुम कैहौ क्यों मैं सैहौं । सूर श्याम मैं तुम न डरैहौं जवाबको जवाब देहौं ॥ ४३ ॥

घट भरि देहु लकुट तब दैहौं । हमहूँ बड़े महरकी बेटी तुमको नहीं डरैहौं । मेरी कनक लकुटिया दै री मैं भरि दैहौं नीर । बिसरि गई सुधि तादिनकी तोहि हरे सबनके चीर ॥ यह बाणी सुनि ग्वारि विवश भई तनुकी सुधि विसराइ । सूर लकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगौरी लाइ ॥ ४४ ॥

राग हमीर ॥ घट भरि दियो श्याम उठाइ । नेक तनुकी सुधि न ताको चली ब्रज समुहाइ ॥ श्यामसुंदर नयन भीतर रहे आनि समाइ । जहां जहां भरि दृष्टि देखौं तहां तहां कन्हाइ ॥ उतहिते एक सखी आई कहति कहा भुलाई । सूर अबहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ ॥ ४५ ॥

राग टोडी ॥ अबहीं गई जल भरन अकेली अरी हौं श्याम मोहनी घाली री । नँद-नन्दन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवन उर शाली री ॥ कहा री कहौं कछु कहत न आवै लगी मरमकी भाली री । सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों विवश भई हौं कासों कहौं आली री ॥ ४६ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनत बात यह सखी अतुरानी । ताहि बाहँ गहि घर पहुँचाई आपु चली यमुनाके पानी ॥ देखे आइ तहां हरि नाहीं चितवति जहां तहां विततानी । जल भरि ठिठकत चली घरहि तन बारबार हरिको पछितानी ॥ ग्वालिनि विकल देखि प्रभु प्रगटे हर्ष भयो तनतपति बुझानी । सूर श्याम अंकम भरि लीन्ही गोपी अंतर गति की जानी ॥ ४७ ॥

राग आसावरी ॥ मिलि हरि सुख दियो तेहि बाल । तपति मिटि गई प्रेमछाकी भई रस बेहाल ॥ मगन हो डग धरति नागरि भवन गई भुलाइ । जल भरन व्रजनारि आवति देखि ताहि बोलाइ ॥ जाति कित है डगर छाँडे कह्यो इतको आइ । सूर प्रभुके रंग राची चितै रही चितलाइ ॥ ४८ ॥

राग धनाश्री ॥ काहू तोहिं ठगोरी लाई । बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरी खाई ॥ चौंकि परी सपने जनु जागी तब बाणी कहि सखिन सुनाई । श्यामबरन एक मिल्यो ढोंटौना तेहि मोको मोहनी लगाई ॥ मैं जल भरे इतहिको आवति आनि अचानक अंकम लाई ॥ सूर ग्वारि सखियनके आगे बात कहै सब लाज गँवाई ॥ ४९ ॥

राग टोडी ॥ आवत ही यमुना भरे पानी । श्यामवरन काहूको ढोटा निरखि वदन घर गई भुलानी ॥ उन मोतन मैं उनतन चितयो तबहीते उन हाथ बिकानी । उर धकधकी टकटकी लागी तनु व्याकुल मुख फुरत न बानी ॥ कह्यो मोहन मोहनी तू कहि या ब्रजमें नहिं मैं पहिचानी । सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु वारिधि जल बूँद हेरानी ॥ ५० ॥

नेक न मनते टरत कन्हाई । यक ऐसेहिं छकिरही श्यामरस तापर इह इहि बात सुनाई । वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई । मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥ कुण्डल झलकत ललित कपोलनि सुंदर नैन विशाल सुहाई । कह्यो सूर प्रभु ए ढंग सीखे ठगत फिरतहौ नारि पराई ॥ ५१ ॥

कहा ठग्यो तुम्हरो ठगि लीन्हों । क्यों नहिं ठग्यो और कहा ठगिहौ औरहिके ठग तुमको चीन्हों ॥ कहो नाउँ धरि कहा ठगायो सुनि राखैं यह बात । ठगके लक्षन मोहिं बतावहु कैसे ठगके घात ॥ ठगके लक्षण हमसों सुनिए मृदुमुसकनि मन चोरत । नैन सैन दे चलत सूर प्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत ॥ ५२ ॥

राग सूही ॥ अतिहि करत तुम श्याम अचगरी । काहूकी छीनतहौ गेंडुरी काहूकी फोरतहौ गगरी ॥ भरन देहु यमुनाजल हमको दूरि करौ बातैं ए लँगरी । पैंडे चलन न पावैं कोऊ रोकि रहत लरिकन लै डगरी । घाट बाट सब देखत आवत युवती डरन मरति हैं सिगरी । सूर श्याम तेहि गारी दीनो जो कोउ आवै तुमरी बगरी ॥ ५३ ॥

राग रामकली ॥ नीके देहु न मेरी गिंडुरी । लै जैहौं धीर यशुमति आगे आवहु री सब मिलि एक झुण्डरी ॥ काहू नहीं डरात कन्हाई बाट घाट तुम करत अचगरी । जमुनादह गेंडुरी फटकारी फोरी सब शिरकी अस गगरी ॥ भली करी यह कुँवर कन्हाई आजु मेटिहौं तुम्हरी लँगरी । चलीं सूर यशुमतिके आगे उरहन लै तरुनी ब्रज सगरी ॥ ५४ ॥

आनि न देहु ढोटौना ढीठ गेंडुरी पराई । तेरे कोऊ कहा करैगो धौं लरिहै हमसों भौजाई ॥ मेरे संगकी और गईं ते जल भरि भरि घरते फिर आईं । सूर श्याम गेंडुरी दीजैं न तौ यशुमतिसों कैहौं जाई ॥ ५५ ॥

राग धनाश्री ॥ आपुन चढे कदम पर धाई । बदन सकोरि भौंह मोरत हैं हांक देत करि नंद दोहाई ॥ जाइ कहौ मैयाके आगे लेहु सबै मिलि मोहिं बँधाई । मोको जुरि मारन जब आईं तब दीनी गेंडुरी फटिकाई ॥ ऐसे करि मोको तुम पायो मनौ इनकी मैं करौं चेराई । सूरश्याम वे दिन बिसराए जब बांधे तुम ऊखल लाई ॥ ५६ ॥

राग आसावरी ॥ इहँई रहौ तो बदौं कन्हाई । आपु गई यशुमतिहि सुनावन दै गई श्यामहिं नंद दोहाई ॥ महरि मथति दधि सदन आपने एहि अंतर युवती सब आई । चितै रही युवतिनको आवत कहां आवतिहैं भीर लगाई ॥ मैं जानति तुमको हरि खिझई ताते सब उरहन लै धाई । सूरदास रसभरी ग्वालिनी ऐसो ढीठ कियो सुत माई ॥५७॥

राग बिलावल ॥ सुनहु महरि तेरो लाडिलो अति करत अचगरी । यमुन भरन जल हम गईं तहां रोकत डगरी ॥ शिरते नीर ढराइ देत फोरी सब गगरी । गेंडुरि दई फटकारिकै हरि करतहै लँगरी । नितप्रति ऐसेई ढंगकरै हमसों कहै अगरी । अब बस बास नहीं बनै यहि तुव ब्रजनगरी ॥ आपु गयो चढि कदमही चितवत रहीं सिगरी । सूरश्याम ऐसे ही सदा हमसों करै झगरी ॥ ५८ ॥

राग रामकली ॥ सुतको बरजि राखहु महरि । डगर चलन न देत काहुहि फोरिडारत दहरि ॥ श्यामके गुण कुछ न जानति जाति हमसों गहरि । इहै लालच गाइ दश लिए बसत हैं ब्रज थहरि ॥ यमुनतट हरि देखे ठाढे डरनि आवैं बहरि । सूर श्यामहिं नेक बरजौ करतहै अतिचहरि ॥ ५९ ॥

तुमसों कहति सकुचति महरि । श्यामके गुण नहीं जानति जाति हमसों गहरि ॥ नेकहू नाहिं सुनति श्रवणनि करति हैं हम चहरि । जलभरन कोउ नहीं पावति रोकि राखत डहरि ॥ अति अचगरी करत मोहन फटकि गेंडुरी दहरि । सूरप्रभुको कहा सिखयो रिसनि युवती झहरि ॥ ६० ॥

राग धनाश्री ॥ कहा करौं मोसों कहौ तुमहीं । जो पाऊँ तौ तुमहिं देखाऊँ हाहा करि है अबहीं ॥ तुमहू गुण जानतिहौ हरिके ऊखल बाँधे जबहीं । सँटियालै मारन जब लागी तब बरज्यो मोहि सबहीं ॥ लरिकाईते करत अचगरी मैं जानै गुण तबहीं । सूरदास कैसे करिहौं घर आवै धौं हरि अबहीं ॥ ६१ ॥

राग सारङ्ग ॥ मैं जानतिहौं ढीठ कन्हैया । आवन तौ घर देहु श्यामको जैसी करौं सजैया ॥ मोसों करत ढिठाई मोहन मैं वाकी हौं मैया । और न काहूको वह मानै कछु सकुचत बल भैया ॥ अब जो जाउँ कहां तेहि पावों कासों देह धरैया । सूर श्याम दिन दिन लंगर भयो दूरिकरौं लँगरैया ॥ ६२ ॥

राग सूही ॥ युवति बोधि सब घरहि पठाई । यह अपराध मोहिं बकसौरी इहै कहतिहौं मेरी माई ॥ इतते चलीं धरनि सब गोपी उतते आवत कुँवरकन्हाई । बीचहि भेंट भई युवतिन हरि नैनन जोरत गए लजाई ॥ जाहु कान्ह महतारी टेरति बहुत बड़ाई करि हम आई । सूर श्याम मुख निरखि निरखि हँसि मैं कैहौं जननी समुझाई ॥ ६३ ॥

राग नट ॥ सकुचत गए घरको श्याम । द्वारहीते निरखि देख्यो जननि लागी काम ॥ इहै बाणी कहति मुखते कहां गयो कन्हाइ । आप ठाढे जननि पाछे सुनत हैं चितलाइ ॥ जलभरन युवती न पावैं घाट रोकत जाइ । सूर सबके फोरि गागरि श्याम गयो पराइ ॥ ६४ ॥

राग नटनारायण ॥ यशुमति यह कहिकै रिस पावति । रोहिणि करति रसोई भीतर कहि कहि तिनहिं सुनावति ॥ गारी देत बहू बेटिनको वै धाई ह्यां आवति । हाहा करति सबनि

सों मैंही कैसेहु खूँट छँडावति ॥ जाति पांतिसों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति । सूर श्यामको सिखवत हारी मारेहु लाज न आवति ॥ ६५ ॥

राग सारंग ॥ तू मोहींको मारन जानति । उनके चरित कहा कोउ जानै उनहिं कही तू मानति ॥ कदम तीरते मोहिं बुलायो गढि गढि बातें बानति । मटकत गिरी गागरी शिरते अब ऐसी बुधि ठानति ॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहिं तोको जानति । सूर सुतहि देखतही रिस गइ मुख चूमति उर आनति ॥ ६६ ॥

राग गौरी ॥ झूठहि सुतहि लगावति खोरि । मैं जानति उनके ढंग नीके बातें मिलवति जोरि ॥ वे यौवन मदकी सब माती कहां मेरो तनक कन्हाई । आपुहि फोरि गागरी शिरते उरहन लीन्हे आई ॥ तू उनके ढिग जात कितहिहै वै पापिनि सब सारि । सूर श्याम अब कह्यो मानि तू हैं सब ढीठ गुवारि ॥ ६७ ॥

राग मोहन ॥ मोहन बाल गोविंदा माई मेरो कहा जानै बोलि । उरहन लै युवती सब आवति झूठी बतियां जोरि ॥ कोऊ कहति गेंडुरि मेरी लीन्ही कोऊ कहति गगरी गयो फोरी । कोऊ चोली हार बतावति कान्हा तेरो भोरी ॥ अब आवैं जो उरहन लैकै तो पठऊँ मुँह मोरी । सूर कहां तेरो तनक कन्हाई आपुन यौवन जोरी ॥ ६८ ॥

राग कान्हरो ॥ ब्रज घरघर यह बात चलावत । यशुमतिको सुत करत अचगरी यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥ श्याम बरन नटवर वपु काछे मुरली राग मलार बजावत । कुंडलछवि रविकिरनहुंते द्युति मुकुट इंद्रधनुते शोभावत ॥ मानत काहु न करत अचगरी गागरि धरि जल भुइँ ढरकावत । सूर श्यामको मातपिता दोउ ऐसे ढँग आपुनहिं पढावत ॥ ६९ ॥

राग गौरी ॥ करत अचगरी नंदमहरको । सखा लिये यमुनातट बैठो निबहत नहिं सब लोग डहरको ॥ कोउ खीझो कोउ कितने बरजो युवतिनके मनध्यान । मन क्रम वचन श्यामसुंदरते और न जानति आन ॥ इह लीला सब श्याम करतहैं ब्रज युवतिनके हेत । सूर भजे जेहि भाव कृष्णको ताको सोइ फल देत ॥ यमुनाजल कोउ भरन न पावै । आपुन बैठे कदमडारचढि गारी दैदै सबनि बोलावै ॥ काहूकी गगरी गहि फोरत काहू शिरते नीर ढरावै । काहूसों करि प्रीति मिलतुहै नैनसैन दै चितहि चुरावै ॥ बरबस ही अँकवारि भरत धरि काहूसों अपनो मन लावै । सूर श्याम अति अचगरी कैसेहूं काहू हाथ न आवै ॥ ७० ॥

राग धनाश्री ॥ ब्रजगैंडे कोउ चलन न पावत । ग्वालसखा सँग लीने डोलत दैदै हांक जहां तहां धावत ॥ काहूकी गेंडुरी फटकारत छाहूकी गगरी ढरकावत ॥ काहूको गारी दै भाजत काहूको उठि अंकम लावत ॥ काहू नाहिं मानत ब्रजभीतर नंदमहरको कुँवर कहावत । सूर श्याम नटवर वपु काछे यमुनाके तट मुरली बजावत ॥ ७१ ॥

राग टोडी ॥ गोकुलके गैंडे एक सांवरो सो ढोटा माई अँखियनके पैंडे पैठिजीके पैंडे परचो है । कल न परत छन गृह भयो सम बन तन मन धन प्राण सरबस हरचो है ॥ भवन न भावै माइ आंगन न रह्योजाइ करै हाइहाइ देखो जैसे हाल करचोहै । सूरदास प्रभु नीके गावत मधुर सुर मानहु मुरलीमें पियूषरस भरचो है ॥ ७२ ॥

राग नट ॥ राधा सखियन लई बोलाइ । चलहु यमुना जलहि जैये चलीं सब सुख पाइ ॥ सबनि एक एक कलश लीन्हों तुरत पहुँचीं जाइ । तहां देख्यो श्यामसुंदर कुँवरि मन हरषाइ ॥ नंदनंदन देखि रीझे चितै रहे चितलाइ । सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरत जल मुसुकाइ ॥ ७३ ॥

राग गूजरी ॥ घरहि चली यमुनाजल भरिकै । सखिन बीच नागरी बिराजति भई प्रीति उर हरिकै ॥ मंदमंद गति चलत अधिक छबि अंजल रह्यो फहरिकै । मोहन मोको मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै ॥ बेनीकी छबि कहत न आवै रही नितंबनि ढरिकै । सूर श्याम प्यारीके वश भए रोमरोम रस भरिकै ॥ ७४ ॥

राग जयतश्री ॥ गागरि नागरि जलभरि घर लीन्हे आवै । सखियन बीच भरचो घट शिरपर तापर नैनचलावै ॥ ढुलति ग्रीव लटकति नकबेसरि मंदमंद गति आवै । भ्रुकुटी धनुष कटाक्ष बाण मनो पुनिपुनि हरिहि लगावै ॥ जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग बढावै । सूर श्याम प्यारी छबि निरखत आपुहि धन्य कहावै ॥ ७५ ॥

गागरि नागरि लिये पनि घटते चली घरहि आवै । ग्रीवा डोलत लोचन लोलत हरिके चितहि चुरावै ॥ ठिठकति चलै मटकि मुहँ मोरै बंकट भौंह चलावै । मनहु काम सैना अँग शोभा अंचल ध्वज फहरावै ॥ गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झह-नावै । मोतिन हार जलाजल मानौ खुमी दंत झलकावै ॥ मानहु चंद महावत मुखपर अंकुश बेसरि लावै । रोमावली सूँडि तिरनीलौं नाभि सरोवर आवै ॥ पग जेहरि जंजी-रनि जकरचो यह उपमा कछु पावै । घटजल छलकि कपोलनि किनुका मानों मदहि चुवावै ॥ बेनी डोलति दुहुँ नितंबपर मानहुँ पूंछ हलावै । गज सरदार सूरको स्वामी देखि २ सुख पावैं ॥ ७६ ॥

सखियन बीच नागरी आवै । छबि निरखत रीझे नँदनंदन प्यारी मनहिं रिझावै ॥ कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाव बतावै । राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे चितहि चोरावै ॥ आगे जाइ कनक लकुटै लै पंथ सवारि बतावै । निरखत छाँह जहां प्यारीकी तहँ लै छांह छुवावै ॥ छबि निरखत तनु वारत अपनो नागर जियहि जनावैं । अपने शिर पीतांबर वारत ऐसे रुचि उपजावै ॥ ओढि ओढनियां चलत देखावत यहि मिस निकटहि आवै । सूर श्याम ऐसे भावनिसों राधा मनहिं रिझावै ॥ ७७ ॥

राग सारंग ॥ लग लागन नाहिं पावत श्याम । तब एक भाव कियो कछु ऐसो प्यारी तनु उपजायो काम ॥ मिस करि निकट आइ मुख हेरचो पीतांबर डारचो शिर वारि । यह छल करि मन हरचो कन्हाई कामविवश कीन्ही सुकुमारि ॥ पुलकि अंग अँगिया दरकानी उर आनँद अंचल फहरात । गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि उचटि लागत प्रियगात ॥ मोहन मन मोहनी लगाई सखिन संग पहुँची घर जाइ । सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि बिसराइ ॥ ७८ ॥

राग नट ॥ ग्वालिनि चली यमुन बहोरि । वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि ॥ ज्वाब देति न हमहिं नागरि रही बदनहिं मोरि । ठगिरही मन कहा सोचति

कोउ लियो कछु चोरि ॥ भुजा धरिकरि कह्यो चलहि न आवै अबहीं खोरि । सूर प्रभुके चरित सखियन कहत लोचन ढोरि ॥ ७९ ॥

राग मलार ॥ मेरी गैल न छोंडै सांवरो मैं क्योंकरि पनिघट जाउँरी । यहि सकुचनि डरपतिरहौं मोहिं धरै न कोऊ नाउँरी ॥ जित देखौं तित दीखै री रसिया नंदकुमार री । इतउत नैन चुराइकै मोहिं पलकन करत जुहार री लकुट लिये आगे चलै हो पथ सँवारत जाइ री । मोहि निहोरो लाइकै वह फिरि चितवै मुसुकाइ री ॥ सो कंचुकि अँचरा उचै मेरो हियरा तकि ललचाइ री । यमुनजल भरि गागरी लै जब शिर चलत उचाइ री ॥ गागरि मारै कांकरी सो लागै मेरे गात री । गैलमाँझ ठाढो रहै मोहिं खुँवटै आवत जात री ॥ हों सकुचनि बोलौं नहीं लोकलाजकी शंक री । मोतन छ्वै वैहरि चलै वह छबि भरतु है अंक री ॥ निकट आइ मुख निरखिकै सकुचै बहुरि निहारि री । अब ढँग ओढी ओढनी पीतांबर मोपै वारि री ॥ जब कहुँ लग लागै नहीं तब वाको जिव अकुलाइ री । तब हठि मेरी छाँहसों वह राखै छाँह छुआइरी ॥ को जौन कित होत है री घर गुरुजनकी शोर री ' मेरौ जिव गांठी वंध्यो पीतांबरकी छोर री ॥ अबलौं सकुच अटक रही अब प्रगट करौं अनुराग री । हिमिमिलिकै संग खेलिहौं मानि आपनो भाग री ॥ घर घर ब्रजवासी सबै कोउ किन करै पुकारि री । गुप्त प्रीति परगट करौं कुलकी कानि निवारि री जबलगि मन मिलयो नहीं तब नची चौपके नाच री । सूर श्याम संगही रहौं सब करौं मनोरथ सांच री ॥ ८० ॥

राग कान्हरो ॥ मोहन बिन मन ना रहै कहा कहौं माई री । कोटि भांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौन काज मनमें नहिं आई री । हृदयते टरति नाहिन ऐसी मोहनी लाई री ॥ सुंदर वर त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूरदास प्रभु बिन मोसों नेक रह्यो ना जाई री ॥ ८१ ॥

राग सूही ॥ नँदको नंदन सँावरो मेरो चित्तचोरे जाइ री । रूप अनूप दिखायइकै वह औचक गयो आइ री ॥ मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढनी फहराइ री । अधरनिपर मुरली धरे मधुर तान बजाइ री ॥ चंदन खौरि किए नटवर कटि काछनी बनाइ री । सूरदास प्रभु बैठे यमुना तट पूरण ब्रह्म कन्हाइ री ॥ ८२ ॥

राग गौरी ॥ परचो तबते ठग मूरि ठगौरी । देख्यो मैं यमुनातट बैठो ढोटा यशुमतिको री ॥ अतिसांवरो भरचो सो साँचे कीन्हे चंदन खौरी । मन्मथ कोटि कोटि गहि वारौं ओढे पीतपिछौरी ॥ दुलरी कंठ नयन रतनारे मोमन चितै हरचो री । बिकट भृकुटिकी ओर कोरते मन्मथबाण धरचो री ॥ दमकत दशन कनककुंडल मुख मुरली गावत गौरी । श्रवणन सुनत देहगति भूली भई विकल मति बौरी ॥ नहिं कल परत बिना दरशनते नैननि लगी ठगौरी । सूर श्माम चित टरत न नेकहु निशि दिन रहत लगौ री ॥ ८३ ॥

राग कल्याण ॥ युवति इक यमुनाजलको आइ । निरखत अंग अंगप्रति शोभा रीझे कुँवर कन्हाइ ॥ गोरे वचन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ । करनि चरि चरी चुरी

विराजति कर कंकन झलकाइ ॥ सहज शृंगार उठत यौवनतन विधिसों हाथ बनाइ । सूर श्याम आये ढिग आपुन घट भरि चलि झमकाइ ॥ ८४ ॥

राग गौरी ॥ ग्वारि घट शिर धरि चली झमकाइ । श्याम अचानक लट गही कहि अति कहा चली अतुराइ ॥ मोहनकर त्रिय मुखकी अलकैं यह उपमा अधिकाइ । मनहु सुधा शशि राहु चोरावत धरचो ताहि हरिआइ ॥ कुच परसो अंकम भरिलीनी दुहुँ मन हरष बढाइ । सूर श्याम मनो अमृत घटनिको देखतहै कर लाइ ॥ ८५ ॥

छाँडि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनि पुनि सकुचत नहिं कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखिहैं कोऊ कहत बंक भरि भौंहन । बार बार कह बीर दोहाई तुम मानत नहिं सौंहन ॥ यतनेहीको सौंह दिवावत मैं आयो मुख जोहन । सूर श्याम नागरि वश कीन्ही विवश चली धरिकोहन ॥ ८६ ॥

राग धनाश्री ॥ चली भवन मन हरि हरिलीन्हों ॥ पग द्वै जाति ठिटकि फिरि हेरति जिय यह कहति कहा हरि कीन्हों ॥ मारग गई भूलि जेहि आई आवतकै नहिं पावत चीन्हों । रिस करि खीझि सुभगलट झटकति श्याम भुजनि छटकाय सु दीन्हों ॥ प्रेम-सिंधुमें मगनभई त्रिय हरिके रंग भई अतिलीन्हों । सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवत नहिं इत उतहि पतीन्हों ॥ ८७ ॥

राग गौरी ॥ घर गुरुजनकी सुधि जब आई । तब मारग सूझ्यो नैननि कछु जिय अपने तियगई लजाई ॥ पहुँची आय सदन ज्योंत्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई । सखी संगकी बूझत लागीं यमुनातट अतिझेर लगाई । औरै दशा भई कछु तेरी कहति नहीं हमसों समुझाई । कहा कहौं कहत न बनिआवै सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ८८ ॥

राग सोरठ ॥ कैसे जल भरन मैं जाउँ गैल मेरी परचो सखिरी कान्ह जाको नाउँ ॥ घरते निकसत बनत नाहीं लोकलाज लजाउँ । तन इहां मन जाइ अटक्यो नंदनंदन ठाउँ ॥ जो रहौं घर बैठिकै तौ रह्यो नाहिं न जाइ । सीख तैसी देहु तुमहीं करौं कहा उपाइ ॥ जात बाहिर बनत नाहीं घर न नेकु सुहाइ । मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाइ ॥ लाज अरु मरजाद जीलौं करतिहौं यह सोच । जाहि बिन तन प्राण छांडे कौन बुधि यह पोच ॥ मनहिं यह परतीति आई दूरि करिहौं दोच । सूर प्रभु हिलिमिलि रहौंगी लाज डारों मोच ॥ ८९ ॥

राग गौरी ॥ सुनहु सखी री वा यमुनातट । हौं जल भरति अकेली पनघट गही श्याम मेरी लट ॥ लै गागरि शिर मारग डगरी इन पहिरे पीरे पट । देखत रूप अधिक रुचि उपजी काछ बनी किंकिनि रट ॥ फूल एक ग्वालिनिके ज्यों रन जीते फिरै महाभट । सूर लरचो गोपाल अलिंगन सफल किये कंचनघट ॥ ९० ॥

राग आसावरी ॥ कहा कहों सखि कहत बनै नहिं नँदनँदन मेरो मन जो हरचो । मात पिता पति बंधु सकुच तजि मगनभई नहिं सिंधु तरचो ॥ अरुन अधर युग नयन रुचिर रुचिर मदन मुदित मन संग लरचो । देखि दशा कुलकानि लाज सब सहजसुभाउ रह्यो सु धरचो ॥ आनँदकंद चंद मुख निशि दिन अवलोकत यह अमल परचो । सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक कर मीन तरचो ॥ ९१ ॥

राग नट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मानो। मन मोह्यो सुन्दर ब्रजनायक भली भई सब जग जानो ॥ बिसरी देह गेह सुधि बिसरी बिसरि गई कुकली कानो। सूर आश पूजै या मनकी तब भावै भोजन पानो ॥ ९२ ॥

राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी मोहिं गृहबन कछु न सुहाइ। यमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाइ ॥ ओढे पीरी पावरी हो परिके लाल निचोल। भौंहैं काट कटीलियां मोहिं मोल लई बिन मोल ॥ मोर मुकुटशिर बिराजई हो अधर धरे सुखवेन। हरिकी मूरति माधुरी ताते लागिरहे दोउ नैन ॥ मदनमूर्तिके वश भये अब भलो बुरो कह कोइ। सूरदास प्रभुको मिलि करिके मन एकै तन दोइ ॥ ९३ ॥

राग रामकली ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनी। बिन गोपाल और नहिं जानों सुनि मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हरि जो अमोल मनी। विष सुमेर कछु काज न आवै अमृत एककनी ॥ मन वच क्रम मोहि और न भावै अब मेरे श्याम धनी। सूर-दास स्वामीके कारण तजी जाति अपनी ॥ ९४ ॥

राग गूजरी ॥ अब दृढकरी धरी यह बानि। कहा कीजै सो नफा जेहि होय जियकी हानि ॥ लोकलज्जा कांच किरिचक श्याम कंचनखानि। कौन लीजै कौन तजिए सखि तुमहिं कहो जानि ॥ मोहिंतो नहिं और सूझत बिना मृदु मुसकानि। रंग कापै होत न्यारो हरद चूनो सानि ॥ इहै करिहौं और तजिहौं परी ऐसी बानि। सूर प्रभु पतिबरत राखै मेटिकै कुलकानि ॥ ९५ ॥

अध्याय ॥ २३ ॥ लीला यज्ञपत्नी ॥ राग बिलावल ॥ एक दिन हरि हलधर संग ग्वालन। गये बन भीतर गोधन चारन ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपै आए। भूख लगी कहि वचन सुनाए ॥ हरि कह्यो यज्ञकरत तहां ब्राह्मण। जाहु उनहि ढिग भोजन मांगन॥ग्वाल तुरत तिनके ढिग आए। हरि हलधरके वचन सुनाए ॥ भोजन देहु भए वै भूखे। यह सुनिके ह्वैगए वै रूखे ॥ यज्ञहेतु हम करी रसोई। ग्वालन पहले देहिं न सोई ॥ ग्वाल सकल हरिपै चलि आए। हरिसों तिनके वचन सुनाए ॥ हरि हलधरसों हँसि कह्यो बानी। अवि गतिकी गति उन नहिं जानी ॥ तब ग्वालनसों कह्यो बुझाई। त्रियन पान तुम माँगहु जाई ॥ उनके तन दृढभक्ति हमारी। मानिलेहिं वै बात तुम्हारी ॥ ग्वाल बाल तिरियनपै आए ॥हाथ जोरिकै शीश नवाये ॥ हरि भोजन माँग्यो है तुमसों। आज्ञा देहु कहैं सोउनसों ॥ तिन धनिभाग्य आपनो जान्यो। जीवन जन्म सफल करि मान्यो ॥ भोजन बहु प्रकार तिन्ह दीन्हों। काहू अपने शिर धरि लीन्हों। ग्वालन सँग तुरत वै धाईं। मन अपने मैं हर्ष बढाईं॥ काहू पुरुष निवारयो आइ। कहां जात हरी अतुराइ ॥ तिनकोकह्यो न कीन्हो कान।तनु तजि चली विरह अकुलान॥ धन्य धन्य वै प्रेम सभागे ॥ मिलि जाइ सबहिनते आगे ॥ तब हरि तिनसों कहि समुझाई। सुनो त्रिया तुम काहे आई।नारी पतिव्रत मानै जोई। चारि पदा-रथ पावै सोई॥त्रियनकह्यो जग झूठि सगाई। हम तौ हैं तुमरे शरनाई।प्रभु पतिव्रत तुम करौ

सदाई । तुमको इहै धर्म सुखदाई ॥ प्रभु आज्ञा लै घरको आई । पुरुष करत तिनकी जु बडाई ॥ धनिधनि तुम हरि दरशन पायो । हम पढि गुनिकै सब बिसरायो ॥ ब्रह्मादिक खोजत नित जिनको । साक्षात तुम देख्यो तिनको ॥ वै हैं सकल जगतके स्वामी । और सभनके अंतर्यामी ॥ अब हम चरण शरणही आए । तब हरि उनके दोष क्षमाए ॥ ग्वालन मिलि हरि भोजन कीन्हों । भाव तियनको धरि हरि लीन्हो ॥ भक्ति भावसों जो हरि ध्यावै । सो नर नारि अभयपद पावै ॥ इह लीला सुनि गावै जोई । हरिकी भक्ति सूर तेहि होई ॥ ९६ ॥

यज्ञपत्नीवचन । राग बिलावल ॥ जानदे जानदे पिय हौं गोपाल बोलाई । औरै प्रीति प्राणके लालच नाहिंन परत दुराई ॥ राखौ रोकि बाँधि दृढ बंधन कैसेहुँ करौ जु त्रास । वह हठ अब कैसे छूटतहै जबलगि है उर सास ॥ सांची कहौं कर्म मन वच करि अपने मनकी बात । देह छाँडि मिलिहौं अबहीं छिन तोहिं कैसी कुशलात ॥ औसर गए बहुरि सुनि सूरज कहा कीजैगी देह । बिछुरति सहति विरहके शूलनि झूठे सबै सनेह ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ देखनदै पिय मदनगोपालहि । हाहा हो पिय पा लागतहौं जाइ सुनौं बन बेनु रसालहि ॥ लकुट लिये काहेको त्रासत पतिबिन मति विरहिनि बेहालहि । अति आतुर आरोवि अतिक दुख तोहिं कहा डरति न यम काल हि ॥ मनतौ पिय पहिलेही पहुँच्यो प्राण तहीं चाहत चित चालहि । कहि तू अपने स्वारथ सुखको रोकि कहा करिहै खल खालहि ॥ लेहु सँभारि सुखेह देहकी को राखै इतने जंजालहि । सूर सकल सखियनते आगे अबहीं मूढ मिलति नँदलालहि ॥ ९८ ॥

राग सारंग ॥ देखनदे बृंदावन चंदहि । हाहा कंत मानि विनती यह कुल अभिमान छांडि मतिमंदहि ॥ कहि क्यों भूलि धरत जिय औरै जानत नहिं पावन नँदनँदहि । दरशन पाइ आइहौं अबहीं करन सकल तेरे दुखद्वंदहि ॥ शठ समुझै यहु समुझत नाहिं न खोलत नहीं कपटके फंदहि । देह छोडि प्राणनि भई प्रापति सूर सु प्रभु आनँद निधिकंदहि ॥९९॥

राग कल्याण ॥ रति बाढी गोपालसों । हाहा हरिलैं जानदेहु प्रभु पद परसातिहौं भालसों ॥ संगकी सखी श्यामसन्मुख भई मोहिं परी पशुपालसों । परवश देह नेह अंतर्गति क्यों मिलौं नयनविशालसों ॥ शठ हठ करि तूही पछितैहै इहै भेट तोहिं बालसों । सूरदास गोपी तनु तजिकै तनमय भइ नँदलालसों ॥ १०० ॥

राग सारगं ॥ पिय जनि रोकहु अब जानदै । हौं हरिविरह जरे जाचतिहौं इतनी बात मोहिं दान दै ॥ बैन सुनौं विहरत बन देखौं इह सुख हृदय सिरान दै । पुनि जो रुचै सोई तू कीजै साँच कहति हौं आन दै ॥ जो कछु कपट किए याचति हौं सुनहि कथा हित कान दै । मन क्रम वचन सूर अपनो प्रण राखौंगी तन मन प्रान दै ॥ १ ॥

राग बिलावल ॥ हरि देखनकी साध भरी । जान न दई श्याम सुंदरपै सुनु सोई तैं पोच करी । कुलअभिमान हटकि हठि राख्यो तैं जियमें कछु और धरी । यज्ञपुरुष तजि करत

यज्ञविधि तामें कहि कछु चाँड सरी ॥ कहँ लगि समुझाऊँ सूरज सुनि जाति मिलनकी औधि टरी। लेहु सँभारि देहपिय अपनी बिन प्राणन सब सौजधरी ॥ २ ॥

हरिहि मिलत काहेको फेरि। देखौं बदन जाइ श्रीपतिको जानदेहु हौं ह्वैहौं चेरी॥ पालागौं छाँडहु अब अंचल बारबार बिनती करौं तेरी। तिरछो करम भयो पूरबको पीतम भयो पाँइकी बेरी । इहले देह मारू शिर अपने जासों कहत कंत तुम मेरी। सूरदास सो गई अगमनै सब सखियनसों हरिमुख हेरी ॥ ३ ॥

जानदे श्यामसुंदरलौं आजु। सुनि हो कंत लोकलाजनते बिगरतुहै सब काजु॥ राखो रोंकि पाँइ बंधन कै रोकौ अरु जलनाजु। हौं तो तुरतै मिलौंगी हरिको तू घरबैठेगाजु॥ चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साजु। सूरदास तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंतको राजु ॥ ४ ॥

अध्याय ॥ २४ ॥ गोवर्धनपूजा ॥ राग बिलावल ॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई। जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर जाकी दीनी भई बडाई ॥ जाकी कृपा दूध दहि पूरन सहस मथानी मथति सदाई । जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवौ निधि आई ॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहौ बलराम कन्हाई । सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करहु चँडाई ॥ ५ ॥

राग गौरी ॥ एई हैं कुलदेव हमारे। काहू नहीं और हम जानति गोधन हैं ब्रजके रखवारे ॥ दीपमालिकाके दिन पाँचेक गोपन कहौ बुलाई। बलिसामग्री करैं चँडाई अबहीं कहौ सुनाई ॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आईं धाई । नंदघरनि तब कहति सखिनसों कत हौ रही भुलाई॥ भूली कहा कहौ सो हमसों कहति कहा डरपाई। सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराई ॥ ६ ॥

चौंकि परीं सब गोकुल नारि। भली कही सबहि सुधि भूली तुमहिं करी सुधि भारि॥ कह्यो महरिसों करौ चँडाई हम अपने घर जाति। तुमहूं करौ भोगसामग्री कुलदेवता अमाति॥यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहुं संग महिं दीजो।सूर हँसति ब्रजनारि महरिसों ए हैं साँचु पतीजौ ॥ ७ ॥

राग कल्याण॥ कही मोहिं भली कीनी महरि । राजकाज हि रहत डोलत लोभहीकी लहरि ॥ क्षमा कीजै मोहिं हौं प्रभु तुमहिं गयो भुलाइ। ग्वालसों कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ ॥ नंद कह्यो उपनंद ब्रजके अरु महर बृषभान। अबहिं जाइ बुलाइ आनउ करत दिन अनुमान ॥ आइगए दिन अबहि नेरे करत मनइह ज्ञान ॥ सूर नंद बिनय करत कर जोरि सुरपति ध्यान ॥ ८ ॥

राग बिलावल ॥ नंदमहर उपनंद बुलाए। आदर करि बैठनको दीनो महर महर मिलि शीश नवाए ॥ मनहींमन सब सोच करतहैं कंस नृपति कछु मांगि पठाए । राज अंश धन जो कछु उनको बिनुमाँगे सो हम दैआए॥ बूझत महर बात नँदगहरहि कौन काज हमसबनि बुलाए। सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपतिपूजाके दिन आए ॥ ९ ॥

हँसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई। हमहिं सबनि तुम बोलिपठाए अपने जिय सब गए डराई ॥ काहेको डरपे हम बोलत हँसत कहत बातैं नंदराई।

बड़ो सनेह कियो हम तुमको ब्रजवासी हम तुम सब भाई ॥ करो विचार इन्द्र पूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई । वरष दिवसको दिवस हमारो घरघर नेवज करौं चँड़ाई ॥ अन्नकूट विधि करत लोग सब नेम सहित करिकरि पकवान्ह । महरि जोरि कर बिनय इन्द्रसों सूर अमर करि कीजै कान्ह ॥ १० ॥

गावत मंगल चार महर घर । यशुमति भोजन करति चँड़ाई नेवज करिकरि धरति श्यामडर ॥ देखे रहौ न छुवै कन्हैया कह जानै वह देवकाज पर । और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन कै वै सुरपतिवर ॥ करति विनय कर जोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणा-कर । और देव तुमसरि कोउ नाहीं सूर करौ सेवा चरणनतर ॥ ११ ॥

राग सूही ॥ बाजति नंद अवास बधाई बैठे खेलत द्वार आपने सात वरषके कुँवर कन्हाई ॥ बैठे नंद सहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई । थापे देत घर नके द्वारे गावति मंगल नारि सुहाई ॥ पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई । बूझत बारबार हरि नंदहि कौन देवकी करत पुजाई ॥ इन्द्र बड़े कुलदेव हमारे उनते सब यह होत बड़ाई । सूर श्याम तुमरे हित कारण यह पूजा हम करत सदाई ॥ १२ ॥

राग आसावरी ॥ नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई । ऐसेमें तुम जैहो जिनि कहुँ अहो महरि सुत लेहु बुलाई ॥ सोइ रहौ हमरे पलिकापर कहति महरि हरिसों समुझाई । वरष दिव-सको महामहोत्सव को आवै को कौन सुनाई ॥ और महरढिग श्याम बैठिकै कीनो एक विचार बनाई । सपने आजु मिल्यो मोकों इक बड़ो पुरुष अवतार जनाई ॥ कहन लग्यो मोसों बातैं पूजतहौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्धन देवनको मणि सेवहु ताको भोग चढाई ॥ भोजन करै सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास गोपन आगे यह लीला कहि कहि प्रगट सुनाई ॥ १३ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत बड़ाई ॥ फैलि गई यह बात घरनि घर हरि कह जानै देव पुजाई । हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥ कोउ कोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत बरजत सुरपतिहि डराई ॥ १४ ॥

मेरो कह्यो सत्य कै जानौ । जो चाहौ ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानौ ॥ दूध दही तुम कितनो लैहौ गोसुत बढैं अनेक । कहा पूजि सुरपतिको पावै छांड़ि देहु यह टेक ॥ मुँहमांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहि । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन कहिदोहि ॥ १५ ॥

छांडि देहु सुरपतिकी पूजा । कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नहिं दूजा ॥ गोपनि सत्य मानि यह लीनी बड़े देव गिरि राजा । मोहिं छांड़ि पर्वत पूजत हैं गर्व कियो सुर-राजा ॥ पर्वत सहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनकी करौं सजाई ॥ राखौं नहीं इन्हैं भूतलमें गोकुल देउँ बुड़ाई । सूरदास प्रभु जाके रक्षक सँगहि रहाई ॥ १६ ॥

राग बिलावल ॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल । कमलनयन घन साँवरो वपु बाहु विशाल॥हलधर ठाढ कहतहैं हरिजूके ख्याल।करता हरता आप ही आपुहि प्रतिपाल॥ वेगि करौ मेरो कह्यो पकवान रसाल । वह मघवा बलि लेतुहै नित करिकरि गाल ॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल । जाके दीने बाढहीं गैया गण जाल ॥ सब मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ पशुपाल । सूर सुरहि डरपत रहै जिय जिय प्रति बाल ॥१७॥

राग सारंग ॥ तात गोवर्धन पूजहु जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय॥ यहि पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरैं सुख गाय । कान्ह कहो सोइ कीजिये जैसे मघवा जाइ रिसाय ॥ भरि भरि शकट चले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय । सूरदास प्रभु अपवश भोगी धरि स्वरूप पहरिराय ॥ १८ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रज घरघर अति होत कोलाहल । ग्वाल फिरत उमँगे जहँ तहँ सब अति आनंद भरे जु उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत । दधि लवनी मधु माट धरत लै राम श्याम सँग राजत ॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर षटरसकी जिवनार । डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार ॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न बहु नंदमहर घरहीको । सूर चले सब लै घरघरते सँग सुवन नँदजीको ॥

राग नट ॥ अति आनंद ब्रजबासी लोग । भांति भांति पकवान शकट भरि लैलै चले छहौं रस भोग ॥ तीनि लोकको ठाकुर सँगहि तासों कहत सखा हम योग । आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धन पूजा संयोग ॥ कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मग्में कोउ घरमेंते निकसे नाहिं । कोउ पहुँचाइ शकट घर घरते भोजन लैजाहिं ॥ मारगमें कोउ निर्तत आवत कोउ गावत अपने रसमाहिं । सूर श्यामको यशुमति टेरति बहुत भीर है हरि न भुलाहिं ॥ १९ ॥

राग कान्हरो ॥ शकट साजि सब ग्वाल चले गिरि गोवर्धन पूजाके काज । घरघरते मिष्टान्न चले लै भांति भांति बहु बाजन बाज ॥ अति आनंद भरे गुण गावत उमड़े फिरत अहीर । पैंडो नहिं पावत तहँ कोऊ ब्रजवासिन भीर ॥ एक चले आवत ब्रजतनको एक ब्रजते बनकाज । सूरदास तहँ श्याम सबनिको देखियत है शिरताज ॥ ९२० ॥

राग नट नारायण ॥ चलीं घर घरनिते ब्रजनारि । मनौं इंद्रवधून पंगति शोभा लागति भारि ॥ पहिरि सारि सुरंग पँचरंग छदश करि श्रृंगारि । वहै इच्छा सबनिके मन श्याम रूप निहारि ॥ ललिता चन्द्रावली सहित राधा सँग कीरति महतारि । चले पूजा करन गिरिकी सूर सँग नर नारि ॥ २१ ॥

बहुत जुरे ब्रजबासी लोग । सुरपति पूजा मेटि गोवर्धन कीनो यह संयोग ॥ योजन बीस एक अरु अगरो डेरा इहि अनुमान । ब्रजबासी नर नारि अंत नहिं मानो सिंधु-समान ॥ इक आवत ब्रजते इतहिको इक इतते ब्रज जात । नंद लिए तब ग्वाल सूर प्रभु आइ गए तहां प्रात ॥ २२ ॥

राग आसावरी ॥ नंद करत गिरिकी पूजा विधि । भोजन सब लै धरे छहौं रस कान्ह सँग अष्टौ सिधि ॥ लै लै आवत ग्वाल घरनिते भोजन बहुत प्रकार । व्यंजन देखि बहुत सुख पावत तुरत करौ जिवनार ॥ जो हरि कहत करत सोई विधि पूजाकी बहु भांति ॥ माखन दधि पय तक्र धरत लै जोरि जोरि सब पांति । बरनै नानाविधि व्यंजन जे बनए नँदराइ । सूर श्यामकी लीला अद्भुत वरणै नहिं मुखचारि ॥ २३ ॥

राग नट नारायण ॥ विप्र बुलाइ लिये नँदराइ । प्रथम अरंभ यज्ञको कीनो उठे वेदध्वनि गाइ ॥ गोवर्धन शिर तिलक बंदियो मेटि इंद्रठकुराइ । अन्नकूट ऐसो रचि राख्यो गिरिकी उपमा पाइ ॥ भाँति भाँति व्यंजन परसाए कापै वरण्यो जाइ । सूर श्यामके कहत ग्वाल गिरि जेंवहिं कहौ बुझाइ ॥ २४ ॥

राग बिलावल ॥ इन्द्र सोचकरि मनहिं आपने चक्रत पुनिपुनि बुद्धि विचारत ॥ देखौं इनको मैं कौन विलंबु लगत पुनि मारत ॥ अब ए करैं आपने मन सुख मोको बनै सम्हारे । तबलौं रहौं पूजि निवैं ये बचिहैं बैर हमारे ॥ इतनो सुख इनके कर रैहै दुख है बहुत अगाध । सूरदास सुरपतिकी वाणी झूठी मनकी साध ॥ २५ ॥

राग गौरी ॥ चढ़ि विमान सुरगन नभ देखत । करत श्याम नूतन यह फिरि गिरि गोवर्धन पेखत ॥ थकित भए सब जहँ तहँ मुनिजन ठौरठौर नर नारि । चितै रहे सब श्यामवदन तन गति मति सुरति विसारि ॥ पूजा मेटि इंद्रकी पूजत गिरि गोवर्धनराज । सूरदास सुरपति गर्वित भयो मैं देवन शिरताज ॥ २६ ॥

राग केदारो ॥ कहत कान्ह नँदबाबा आवहु । भोजन परसि धरे सब आगे प्रेम सहित गिरिराज मनावहु ॥ और नंद उपनंद बुलाए कह्यो सबनिसों भोग लगावहु । सपनेमें देखौ यहि मूरति यहै रूप धरि ध्यान मनावहु ॥ इकमन इक चित करि अर्पन करौ प्रगट देव तुम दरशन पावहु । सूर श्याम कहि प्रगट सबनिसों अपने कर लै लै जु जिमावहु ॥ २७ ॥

विनती करत सकल अहीर । शकट भरिभरि ग्वाल लैलै शिखर डारत क्षीर ॥ चल्यौ बहि चहुँ पासते पय सुरसरी जल टारि । वसन भूषन लै चढाए भीर अति नर नारि । मूंदि लोचन भोग अर्प्यो प्रेमसों रुचि भारि ॥ सबनि देखि प्रगट मूरति सहस भुजा-पसारि ॥ रुचिसहित गिरि सबनि आगे करनि लैलै खाइ । नंदसुतमहिमा अगोचर सूर क्यों कहै गाइ ॥ २८ ॥

राग नट ॥ गिरिवर श्यामकी अनुहारि । करत भोजन अति अधिकई भुजा सहस पसारि ॥ नंदको कर गहे ठाढे यहै गिरिको रूप । सखी ललिता राधिकासों कहति देखि स्वरूप ॥ यहै कुंडल यहै माला यहै पीत पिछौरि । शिखर शोभा श्यामकी छवि श्याम छवि गिरि जोरि ॥ नारि बदरौला रही वृषभानुघर रखवारि । तहाते उहि भोग अर्पेउ लियो भुजा पसारि ॥ राधिका छवि देखि भूलि श्याम निरखी ताहि । सूर प्रभुवश भई प्यारी कोर लोचन चाहि ॥ २९ ॥

राग धनाश्री ॥ देखहु री हरि भोजन खात ॥ सहजभुजा धरि उत जेंवत हैं इतहि कहत गोपनिसों बात ॥ ललिता कहत देखि हो राधा जो तेरे मन बात समाइ । धन्यधन्य सब

गोकुलवासी संग रहत त्रिभुवनके राइ ॥ जेंवत देखि नंद सुख पायो अति आनँद गोकुल नर नारी । सूरदास स्वामी सुखसागर गुण आगर नागर दैतारी ॥३०॥

राग गौरी ॥ इह लीला सब करत कन्हाई । उत जेंवत गिरि गोवर्धनसंग इत राधासों प्रीति लगाई ॥ इतगोपनसों कहत जिमावहु उत आपुहि जेंवत मन लाई । आगे धरे छवौं रस व्यंजन बदरौलाको लियो मँगाई ॥ अमर बिमान चढे सुख देखत जय ध्वनि करि सुमननि बरषाई । सूर श्याम सबके सुखदाता भक्तहेतु अवतार सदाई ॥ ३१ ॥

गोपनिसों यह कहत कन्हाई । जो मैं कहत रह्यो भयो सोई सपनंतरकी प्रगट बताई ॥ जो मांग्यो चाहौ सो मांगौ पावहुगे जो जा मन आई । कहन नंद सब तुमही दीन्हों मांगतहौं हरिकी कुशलाई ॥ करजोरे नंद आगे ठाढे गोवर्धनकी करत बढाई । ऐसे देव कहूं नाहिं देखे सहसभुजा धरि खात मिठाई ॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहौं और देव नहिं करौं पुजाई । सूर श्यामको नीके राखहु कहत महर ये हलधर भाई ॥ ३२ ॥

अपने अपने टोल कहत ब्रजवासी आई । भावभक्ति लै चलौ सुरपतिको आसी आई ॥ शरदकाल ऋतु जानि दीपमालिका बनाई । गोपनके उनमाद फिरत उनमदे कन्हाई॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार । सात वर्षको सांवरो खेलत नंददुआर ॥१॥२॥

बैठि नंद उपनंद बोलि बृषभानु पठाए । सुरपति पूजा देखि जानि तहँ गोविंद आए ॥ बारबार हाहा करहिं कहि बाबा यह बात । घरघर भोजन होतहै कौन देवकी जात ॥३॥

श्याम तुम्हारी कुशल जानि एक मंत्र उपैहौं । षटरस भोजन साजि भोग सुरपतिको देहौं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिके जाइ दमोदर सोइ । वर्षदिवसको दिवस है महामहोत्सव होइ।४

हरिबोले सब गोप मन्त्र बहुरचो फिरि कीनो । एक पुरुष मोहि आइ आजु सपनो निशि दीनो ॥ सब देवनको देवता गिरिगोवर्धन राजु । ताहि भोगु किनि दीजिये सुरपतिको कह काजु ॥ ५ ॥

बाढैं गोसुत गाइ दूध दधिको कहालेखो । यह परचा बिदमान नैन अपने किन देखो ॥ तौ देखत बलि खाइगो मुँहमाँगे फलदेइ । गोप कुशल जो चाहिये गिरिगोवर्धन सेइ ॥६॥

दिवस दिवारी प्रातही सब मिलि पूजन जाइ । नंद प्रतीति न मानहू तुम देखत बलि खाइ ॥ गोपन करचो विचार शकट प्रति सबही साजे । बहुबिधिके पकवान जहां तहँ बाजत बाजे ॥ ७ ॥

एक बाटते उबटिचल एकनदी सुरभीर । एक न पैंडो पावहीं उमँडे फिरहिं अहीर ॥ एक घरते उठि चले एक घरको फिरि जाहीं। गावत गुण गोपाल ग्वाल उमँगे न समाहीं८

गोपनको सागर गिरि भयो मंदरचाल । रत्न भईं सब गोपिका श्याम बिलोवनहार ॥ ब्रज चौरासी कोश परे गोपनके डेरा । लावैं चौवन कोश आजु ब्रजवासिन घेरा ॥९॥

सबहीकैं मन साँवलो देखौं सबनि मॆझारि । कौतुक देखन देवता आए लोक बिसारि॥ लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभन कीनो । सुरपतिपूजा मेटि भोग गोवर्धन दीनो ॥१०॥

प्रथम दूध अन्हवाइ बहुरि गंगाजल डारे । बडो देवता जानि कान्हको मतौं बिचारे ॥ जैसे बने गिरिराजजू तैसो उनको कोट । मगन भए पूजा करै नर नारी बडछोट ॥११॥

सहस भुजा उर धरे करै भोजन अधिकाई। नख शिखलौं पर्यंत मनो दूसरो कन्हाई॥ राधासों ललिताकहै तेरे हियन समाइ। गहे अंगुरिया तातकी ढोंटा भोजनखाइ॥ १२॥

पीत रुमाल्यो श्वेत कंठ मोतिनकी माला। भूषण भुजा अनूप झलमलति नैन विशाला॥ श्यामकि शोभा गिरि बन्यो गिरिकी शोभा श्याम। जैसे पर्वत भातुको सँग भैया बलराम॥ १३॥

जैसिय कनकपुरी जु दिव्य रतननिसों छाई। बलि दीनी परभात छांह पूरब चलि आई॥ चहूं और चक्रा धरे चंदहि पटतर सोइ। ठौर ठौर वेदीरची बहुविधि पूजा होइ॥ १४॥

जहां तहां दधिधरचो कहौं कहा उज्ज्वलताई। उदधि शिखर है रह्यो भातमें देह छपाई॥ बदरौला वृषभानुके एक बिलोवन हारि। ताकी बलि वहि देवता लीन्ही भुजा पसारि॥ १५॥

लै सब भोजन अरपि अरपि गोपन कर जोरे। अगणित कीने स्वाद दास बरणे कछु थोरे॥ यहि विधि पूजा पूजिकै गोविंद पूंछो जाइ। कान्ह कह्यो हँसि सूरसों लीला सरस बनाइ॥ १६॥

राग गौरी॥ श्याम कहत पूजा गिरिमानी। जो तुम भक्तिभावसों अर्प्यो देवराज सब जानी॥ तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने। बड़ो देव गिरिराज गोवर्धन इनैं रहौ तुम माने॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह बानी। सूर नंद मुखचूमत हरिको यह पूजा तुम ठानी॥ ३३॥

और कछू मांगो नँद हमसों। जो मांगौ सो देऊँ तुरतही यहै कहत गोपनसों॥ बल मोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रहि हैं। इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जोई ये कहि हैं॥ सेवा बहुत करी तुम मेरी अब तुम सब घर जाहू। भोग प्रसाद लेहु तुम मेरी गोप सबै मिलि खाहू॥ सपनो मैंही कह्यो श्यामसों करहु हमारी पूजा। सुरपति कौन बापुरो मोते और देव नाहिं दूजा॥ इंद्र आइ बरषै जो ब्रजपर तुम जिनि जाहु ड़राई। सुनहु सूर सुत कान्ह तुम्हारो कहि हैं मोहिं सुनाई॥ ३४॥

राग सारंग॥ भली करी पूजा तुम मेरी। बहुत भाव करि भोजन अर्प्यो इह सब मानि लई मैं तेरी॥ सहसभुजा धरि भोजन कीनों तुम देखत विदमान मोहिं जानत है कुँवर कन्हैया यही नहीं कोउ आन॥ पूजा सबकी मानि मैं लीनी जाहु घरनि ब्रजलोग। सूर श्याम अपने कर लीने बांटत जूठनि भोग॥ ३५॥

राग बिलावल॥ बिनती करत नंद कर जोरे पूजा कह हम जानैं नाथ। हम हैं जीव सदा मायाके दरश दियो हम किए सनाथ॥ महापतितमैं तुम पावन प्रभु शरण तुम्हारी आयौ तात। तुमसे देव और नाहिं दूजो कोटि ब्रह्मांड रोमप्रति गात। तुम दाता अरु तुमहिं भोकता हरता करता तुमहीं सार। सूर कहा हम भोग लगायो तुमहीं भुलै दियो संसार॥ ३६॥

यह पूजा मोहिं कान्ह बताई। भूल्यो फिरत द्वार देवनिके त्रिभुवन पति तुमको बिसराई॥ आपुहि कृपा करी स्वप्नंतर श्यामहिं दरश दियो तुम आई। ऐसे प्रभु कृपालु करुणामय बालककी अति करी बडाई गिरिपाँयन लै हरिको पारत हलधरको पांयन लै नाई। सूर श्याम बलराम तुम्हारे इनको कृपा करौ गिरिराई॥ ३७॥

ग्वाल कहत धनिधन्य कन्हैया । बड़ो देवता प्रगट बतायो यह कहिकहि सब लेत बलैया॥ धन्य धन्य गिरिराजनके मणि तुम सम आन न दूजा । तुम लायक कछु नाहिं हमारे को जानै तुम पूजा ॥ गोप सबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कह्यो सो कीनो । सूर श्याम कहि कहि यह वाणी देव मानि सुखलीनो ॥ ३८ ॥

राग गौड मलार ॥ गोपनँद उपनंद वृषभानु आए बिनय सब करत गिरिराजसों जोरि कर गए तंनुपाप तुव दरश पाए । ॥ देवता बडो तुम प्रगट दरशन दियो प्रगट भोजन कियो सबनि देख्यो । प्रगट वाणी कही राजगिरि तुमसही और नाहिं तिहुँ भुवनकहूँ पेख्यो ॥ हँसत हरि मनहिमन तकत गिरिराजतन देव परसन भए करो काजा । सूर प्रभु प्रगट लीला कही सबनिसों चले घरघरनि अपने समाजा ॥ ३९ ॥

देखि थकित गण गंधर्व सुरमुनि । धन्य नंदको सुकृत पुरातन धन्य कही कहि जैजैजै धुनि ॥ धन्य धन्य गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुरमुनि पुनिपुनि । आपुहि खात कहतहै गिरिको यह महिमा देखी न कहूं सुनि ॥ यहै कहत अपने लोकनि गए धनि ब्रजवासी वश कीनों उनि । सूर श्याम धनिधनि ब्रजविहरत धन्यधन्य सब कहतहैं गुनिगुनि ॥ ९४० ॥

राग नटनारायणी ॥ चले ब्रजघरनिको नरनारि । इंद्रकी पूजा मिटाई तिलक गिरिको सारि ॥ पुलक अंग न समात उरमें महर महरि समाज । अब बड़े हम देव पाए गिरिगोवर्धन राज ॥ इनहिंते व्रज चैन रहिहै मांगि भोजन खात । यह घेरा चलत ब्रजजन सबनि मुख यह बात ॥ सबै सदनन आइ पहुँचे करत केलिबिलास । सूर प्रभु यह करी लीला इंद्र रिस परकास ॥ ४१ ॥

अध्याय ॥ २५ ॥ इंद्र विचार ॥ राग सारंग ॥ ब्रजके वासिन मो बिसरायो । भली करी बलि मेरी जो कछु सो लै सब पर्वतहि जिमायो ॥ मोसों गर्व कियो लघु प्राणी ना जानिये कहा मन आयो । त्रिदशकोटि अमरनको नायक जानि बूझि इन मोहिं भुलायो ॥ अब गोपन भूतल नाहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढायो । सुनहु सूर मेरे मारत धौं पर्वत कैसे होत सहायो ॥ ४२ ॥

राग सोरठ ॥ प्रथमहि दउँ गिरिहि बहाइ । बज्र घातनि करौं चूरन देउँ धरणि मिलाइ ॥ मेरी इन महिमा न जानी प्रगट देउँ दिखाय । जलबरषि ब्रज धोइ डारौं लोग देउँ बहाइ ॥ खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाइ ॥ बरष दिवस मोहिं देत पूजा दई सोउ मिटाइ ॥ रिस सहित सुरराज लीन्हें प्रबल मेघ बुलाई । सूर सुरपति कहत पुनि पुनि परौ ब्रजपर धाइ ॥ ४३ ॥

राग मेघमलार ॥ सुनत मेघवर्तक माजि सैन लै आए । जलवर्त वरिवर्त पवनवर्त ब्रजवर्त आगिवर्तक जलद संग ल्याए ॥ घहरात तरतरात गररात हहरात झहरात परात माथ नाए । कौन ऐसो काज बोले हम सुरराज प्रलयके साज हमको बुलाए ॥ बरषदिन संयोग देत मोको भोग क्षुद्र मति ब्रज लोग गर्व कीनो । मोहिं गए बिसराइ पूज्यो गिरिवर जाइ ब्रज पर धाइ आयसु ये दीनो ॥ कितक ब्रजके लोग रिस करत किहिं योग गिरि लियो भोग फल तुरत पैहैं । सूर सुरपति सुन्यो बयो जैसो लुन्यो प्रभु कहा गुन्यो गिरिसहित बैहैं॥ ४४ ॥

राग मलार बिनती सुनहु देव मघवापति । कितिक बात गोकुल ब्रजवासी बारबार रिस करत जाहि अति ॥ आपुन बैठि देखियो कौतुक बहुतै आयसु दीनो । छिनमें बरषि प्रलयजल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो ॥ महाप्रलय हमरे जल बरषे गगन रहै भरि छाइ । अक्षय वृक्ष बट बढतु निरंतर कहा ब्रज गोकुल गाइ ॥ चले मेघ माथे करि धरिकै मनमें क्रोध बढाइ । उमडत चले इंद्रके पायक सूर गगन रहे छाइ ॥ ४५ ॥

राग गौडमलार ॥ मेघदल प्रबल ब्रज लोग देखैं । चकित जहँ तहँ भए निरखि बादर नए ग्वाल गोपाल डरि गगनपेखैं । ऐसे बादर सजल करत अति महाबल चलत घहरात करि अंधकाला । चकृत भए नंद सब महर चकृत नरनारि हरि करत ख्याला ॥ घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात ब्रज लोग डरपैं । तडित आघात तररात उतपात सुनि नरनारि सकुचि तनु प्राणअरपैं । कहा चाहत हौन भई न कबहूं जौन कबहूं आँगनभौन विकल डोलैं । मेटि पूजा इंद्र नंदसुत गोविंद सूर प्रभु करै आनँदकलोलैं ॥ ४६ ॥

सैन साजि ब्रजपर चढिधावहिं ! प्रथम बहाइ देउँ गोवर्धन ता पाछे ब्रज खोदि बहावहिं । अहिरन करी अवज्ञा प्रभुकी सो फल उनकहँ तुरत देखावहिं । इंद्रहि पेलिकरी गिरिपूजा सलिल बरषि ब्रज नाउँ मिटावहिं ॥ बलसमेत निशिवासर बरषहुँ गोकुलबोरि पताल पठावहिं । सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूलत कतहूं रहन न पावहिं ॥ ४७ ॥

राग मेघ मलार ॥ बादर घुमडि उमडि आए ब्रज पर वर्षत कारे धूमरे घटा अतिही जल । चपला अति चपचमाति ब्रजजन सब डर डरात टेरत शिशु पिता मात ब्रज गजबल ॥ गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकार चकृत भए ग्वाल बाल घहरत नभ करत चहल । पूजामेटि गोपाल इंद्र करत इहै हाल सूर श्याम राखहु अब गिरिवर बल ॥ ४८ ॥

राग गौडमलार ॥ गिरिपर बरषन आए बादर । मेघवर्त जलवर्तसैन सजि आये लैलै आदर ॥ सलिल अखंड धार धर टूटत कियो इंद्र मन सादर । मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोइ करहु गिरि खादर ॥ देखि देखि डरपत ब्रज बासी अतिहि भए मनकादर । यहै कहत ब्रज कौन उबारै सुरपति किए निरादर ॥ सूर श्याम देखे गिरि अपने मेघनि कीनो दादर । देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्रसों ठादर ॥ ४९ ॥

राग मलार ॥ गए बितताइ ब्रज नरनारि । धरत सैंतत धाम बासन नाहिं सुरति सम्हारि ॥ पूजि आए गिरि गोवर्धन देति पुरुषनि गारि । आपनो कुलदेव सुरपति धरचो ताहि बिसारि ॥ दियो फल यह गिरि गोवर्धन लेहु गोद पसारि । सूर कौन सम्हारि लै है चढचो इंद्र प्रचारि ॥ ९५० ॥

राग सोरठ ॥ ब्रजके लोग फिरत बितताने । गैयनि लै बन ग्वाल गए ते धाए आवत ब्रजहि पराने ॥ कोउ चितवत नभतन चकृत ह्वै कोउ गिरि परत धरनि अकुलाने । कोउ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोउ ढूंढत गृह नाहिं पहिचाने सूरदास गोवर्धन पूजा कीनेकर फल लेहु बिहाने ॥ ९१ ॥

राग नाट ॥ तरपत नभ डरपत व्रज लोग । सुरपतिकी पूजा बिसराई लै दीनो पर्वत को भोग ॥ नंदसुवन यह बुधि उपजाई कौन देव कह्यो पर्वतयोग । सूरदास गिरि बडो देवता प्रगट होइ ऐसे संयोग ॥ ९२ ॥

व्रज नरनारि नंद यशुमतिसों कहत श्याम ए काज करे । कुलदेवता हमारे सुरपति तिनको सब मिलि मेटिधरे ॥ इंद्रहि मेटि गोवर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे । सैंतत फिरत जहाँ तहाँ बासन लरिकनु लैलै गोद भरे ॥ को करि लेइ सहाइ हमारो प्रलय-कालके मेघ अरे । सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा बिसरे ॥ ९३ ॥

राग बिलावल ॥ राखिलेहु गोकुलके नायक । भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब विषम बूँद लागत जनु सायक ॥ बरषत मुसलधार सैनापति महामेघ मघवाके पायक । तुम बिनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मिटावन लायक ॥ अघमरदन बकवदनविदारन वकी विनाशन सब सुखदायक । सूरदास प्रभु ताकी यह गति जाके तुमसे सदा सहायक ॥ ९४ ॥

अध्याय ॥ २६ ॥ तथा ॥ २७ ॥ राग मलार ॥ शरण राखि लेहो नंदताता । घटा आई गरजि युवति गई मन लरजि बीजु चमकति तरजि डरत गाता ॥ और कोउ नहीं तुम त्रिभुवन धनी बिकल ह्वैकै कही तुमहिं नाता ॥ सूर प्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें वसत इंद्रको कसत हरि जगत धाता ॥ ९५ ॥

राग बिलावल ॥ राखिलेहु अब नंदकिशोर । तुम जु इंद्रकी मेटी पूजा बरषत है अति जोर ॥ व्रजबासी तुम तन चितवत हैं ज्यों करि चंद्र चकोर । जनि जिय डरौ नैन जनि मूँदौ धरि हों नखकी कोर ॥ करि अभिमान इंद्र झरिलायो करत घटा घनघोर । सूर श्याम कहि तुमको राखौं बूँद न आवै छोर ॥ ९६ ॥

राग मलार ॥ माधवजू कांपत डरत हियो । दामिनि चाप बूँद सायक मनों ह्वै योधा लै संग ॥ ह्वै गयो सरस समीर दुहूं दिशि धनुष धुजा बहु रंग । शोभित सुभट प्रचारि पैज करि भिरत न मोरत अंग ॥ कहत तुम्हार कियो नँदनंदन सुरपतिको व्रज भंग । बरषत प्रलयमेघ धर अंबर डरपत गोकुल गाउँ । समरथ नाथ शरण हौं तुम बिनु और कौनपै जाउँ ॥ जो तुम अनल व्यालमुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाइ । हमरे तौ तुमहीं चिंतामणि सब विधि दाइ उपाइ ॥ जनि डर करहु सबै मिलि आवहु या पर्वतकी छाहँ । वर्षतमें गोपाल बुलाए अभय किये दै बाहँ ॥ एक हाथ गोवर्धन राख्यो सात दिवस बल-बीर । सूरदास प्रभु ब्रजवासिनके ए हरता सब पीर ॥ ९७ ॥

माधव मेघ घेरि कितौ आए घरको गाय बहोरो मोहन ग्वालन टेर सुनाए ॥ कारी घटा सघूम देखियति अति गति पवन चलायो । चारौं दिशा चितै किन देखौ दामिनि कौंधा लायो ॥ अति घन श्याम सुदेश सूर प्रभु करगहि शैल उठायो ॥ राखें सुखी सकल व्रजवासी इंद्रको कोप नवायो ॥ ९८ ॥

आजु व्रज महाघटा घन घेरो । अब व्रज राखि कान्ह इहि औसर सब चितवत मुख तेरो ॥ कोटि छयानबे मेघबुलाए आनि कियो व्रज डेरो । मुसलधार टूटै चहुँदिशिते ह्वै गयो दिवस अँधेरो ॥ इतनी कहत यशोदानंदन गोवर्धन तन हेरो । कियो उपाय गिरि-

वर धरिबेको महिते पकरि उखेरो ॥ सात दिवस जल वर्षि सिराने हारि मानि मुख फेरो। श्रीपति कियो सहाय सूर प्रभु बूँद न आवत नेरो ॥ ५९ ॥

राग मेघमलार ॥ गगन मेघ घहरात थहरात गात। चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न ब्रजनंदतात ॥ सुनत करुणाबैन उठि हरि चले ऐन नैनकी सैन गिरितन निहारचो। सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारचो ॥ करजके अग्र भुज वाम गिरिवर धरचो नाम गिरिधर परचो भक्तकाजै। सूर प्रभु कहत ब्रिजवासीनसों राखि तुमलिए गिरिराज राजै ॥ ९६० ॥

राग गौरी ॥ श्याम लियो गिरिजात उठाई। धरि धीरज हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई ॥ नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई ॥ काहेको व्याकुल भए डोलत रक्षा करी देवता आई ॥ सत्यवचन गिरिदेव कहत है कान्ह लेइ मुहि कर उचकाई। सूरदास नारी नर ब्रजके कहत धन्य तुम कुवँर कन्हाई ॥ ६१ ॥

राग मलार ॥ वामकर घढे क्यों गिरिराज। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दुख बिसरचो सुख करत समाज ॥ आनँद करत लकल गिरिवरतर दुख डारचो सबही बिसराइ। चकृत भए देखत यह लीला सबै परत हरिचरणन धाइ ॥ गिरिवर टेकिरहे बायें कर दक्षिणकर लियो सखनि उठाइ। कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ ॥ गोपग्वाल नंदादिक जहँलौं नंद सुवन लिए निकट बुलाइ। सूरदास प्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलि टेकौ गिरिआइ ॥ ६२ ॥

गिरिजनिगिरै श्यामके करते। करत बिचार सबै ब्रजबासी भय उपजत अति डरते ॥ लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठे हैं तुरते। यह अति प्रबल श्याम अति कोमल रवँकि रवँकि उर परते ॥ सप्तदिवस करपर गिरि धारचो बरषि बरषि हारचो अंबरते। गोपीग्वाल नंदसुत राख्यों बरषत मेघधार जलधरते ॥ यमलार्जुन दोउ सुतकुबेरके तेउ उखारे जरते। सूरदास प्रभु इंद्रगवन कियो ब्रज राख्यो है बरते ॥ ६३ ॥

राग मलार ॥ नीके धरो नँदनंदन बलवीर। गिरिजनिपरै टरै नखते तब कौन सहैगो भीर ॥ चहुँदिशि पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर। उनै उनै बरषतु गिरिऊपर धार अखंडित नीर ॥ अंधधुंध अंबरते गिरिपर मानौ परत वज्रके तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर ॥ कर जोरत कुलदेव मनावत ब्रजके गोप अहीर। पय पकवान बिहान पूजि हैं लै दधि मधु घृत खीर ॥ गोपीग्वाल गाइ गोसुत रहैं सुखसहित शरीर। सूर श्याम गिरि धरचो वामकर मेघ भए अति सीर ॥ ६४ ॥

गिरिवर नीके धरचो कन्हैया। देखतरहौ टरै जनि नखते भुजा तनकसी भैया ॥ जबजब गाढ परत ब्रजलोगन तब करिलेत सहैया। जननि यशोदा कर लै चांपति अति-श्रम होति रि दैया ॥ देखत प्रगट धरचो गोवर्धन चकित भए नंदरैया। पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब एक बुद्धि उपैया ॥ आवहु तात गहहु गोवर्धन गोपन संग लिवैया। जहां तहां सबहुन गिरि टेक्यो कान्हहि बोधदिवैया ॥ श्यामकहत सब नंदगोपसों भलो करचो उचकैया। सूरदास प्रभु अंतर्यामी नंदहि हरष बढैया ॥ ६५ ॥

गिरिवर धरचो सखा सब करते । सब मिलि ग्वाल लकुटियनि टेको अपने भुजके वरते ॥ सात दिवस मूसल जलधारा बरषतु हैं निशिदिन अंबरते । अंतरिक्ष जलजात कहाँ ये क्रोधसहित फिरि बरषत झरते ॥ गाइ गोप नंदादिक राख्यो बृथाबून्दसब नेकु न थरते । सूर गोपाल राखि गिरिवरतर गोकुल नर नारी व्रजघरते ॥ ६६ ॥

व्रषत मेघवर्त व्रज ऊपर । मूसल धार सलिल बरषतु है बून्द न आवत भूपर ॥ चपला चमकि २ चकचौंधति करति शब्द आघात । अंधाधुंध पवनवर्तक घन करत फिरत उत्पात ॥ निशिसम गगन भयो आच्छादित बरषि बरषि झर इंदु । व्रजवासी सुख-चैन करत हैं करगिरिवर गोविंद ॥ मेघ बरषि जल सबै बढाने विविगुण गए सिराइ । वैसोइ गिरि वैसोइ व्रजवासी दूनो हरष बढाइ ॥ सात दिवस जल बर्षि निशा दिन व्रज घरघर आनंद । सूरदास व्रज राखिलियो धरि गिरिबर कर नँदनंद ॥ ६७ ॥

बादर व्रजपर आनि अरे । तबते वाम करजपर राख्यो बहुरि फेरि घुमरे ॥ सात दिवस मूसल जलधारा सायर समुद्र भरे । नहिं परवाह नंदके ढोटहि पूरत वेनु धरे ॥ लियो उठाइ कोरिकै गिरिवर सकल शरन उबरे । सूरदास बलिबलि चरणनकी सुरपति पाइँ परे ॥ ६८ ॥

बरषि बरषि व्रजतन घन हेरत । मेघवर्त अपनी सेनाको खीझत है फिरि टेरत ॥ कहा बरषि अबलौं तुम कीनो राखत जलहि छपाइ । मूसलधार बरषि जल पाटौ सात दिवस भए आइ ॥ रिस करिकरि गर्जत नभ वर्षत चाहत व्रजहि बहाइ । सूर श्याम गिरि गोवर्धन धरि व्रजजनको सुखदाइ ॥ ६९ ॥

बरषि बरषि हहरे सब बादर । व्रजके लोगन धोइ बहावहु इंद्र हमहिं कहि आदर ॥ कहा जाइ कैहैं प्रभु आगे करिहैं बहुत निआदर । हम बर्षत पर्वत व्रजवासी सब सादर ॥ पुनि रिस करत प्रलय जल बरषत कहत भए सब कादर । सूर गाइ गोसुत सब राख्यो गिरिवर धरि व्रजनागर ॥ ९७० ॥

राग धनाश्री ॥ कहा होतजल महाप्रलयको । राख्यो सैंति सैंति जेहि कारज बचत नहीं कहुँपयको ॥ भुवपर एक बुन्द नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह । बासर सात अखंडित धारा बरषत हारे देह ॥ बरुन भयो बिन नीर सबनिको नाम रह्यो है बादर । सूर चले फिरि अमरराजपर व्रजते भए निरादर ॥ ७१ ॥

राग मल्लार ॥ मघवनि हारि मानि मुख फेरो । नीके गोप बढे गोवर्धन जब नीके व्रज हेरो ॥ नीके गाइ बच्छ सब नीके नीके बालगोपाल । नीको बन वैसी ये यमुना मनमन भयो विहाल ॥ गोकुल व्रज बृंदावन मारग नेक नहीं जलधार । सूरदास प्रभु अगणित-महिमा कहा भयो जल सार ॥ ७२ ॥

राग नटनारायण ॥ मघवन जाइ कही पुकारि । दीनह्वै सुरराज आगे अस्त्र दीने डारि ॥ सात दिन भरि बरषि व्रजपर गई नेक न झार । अखंडधारा सलिल निझरो मिटी नहीं लगार ॥ धरणि नेकु न बूँद पहुँच्यो हरषे व्रजनरनारि । सूरमेघन इंद्र आगे करत यहै गुहारि ॥ ७३ ॥

राग गौरी ॥ तुम बरषै ब्रज कुशल परचो । तुम बरषत जल महाप्रलयको यह कहि मनमन सोच परचो ॥ एक घरी जाके बरषेते गगन अच्छादित होइ । ते मघवाबिह्वल मोआगे बात कहत हैं रोइ ॥ सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास । सूरदास सुरपति शंकित भयो सुरन बुलायो पास ॥ ७४ ॥

अमरराज सब अमर बुलाए । आज्ञा सुनि घरघरते आए कछु बिलंब ना लाए ॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होइ । देखौ मेघवर्त्तकनिकी गति ब्रजते आए रोइ ॥ गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डारचो बिसराइ । मेघवर्त जलवर्त पठाय आवहु ब्रजहि बहाइ ॥ धार अखंडित बरषि सात दिन ब्रज पहुँची नाहिं बुंद । सुगनि कही गोकुल प्रगटे हैं पूरण ब्रह्म मुकुंद ॥ मोसों क्यों न कही तुम तबहीं गोकुलमें ब्रजराज । सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे शरन चलौ दिवराज ॥ ७५ ॥

राग सोरठ ॥ शरण गए जो होइसु होई वे करता वेई हैं हरता अब नरहौं मुखगोई ॥ ब्रंज अवतार कह्यो है श्रीमुख तेई करत बिहार । पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार ॥ उनके आगे चाहौं पूजा ज्यों मणि दीपप्रकाश । रविआगे खद्योत उज्यारी चंदनसंग कुवास ॥ कोटिइंद्र छिनहीमें राचैं छिनमें करैं बिनाश । सूर रच्यो उनहींको सुरपति मैं भूल्यो तिहि आश ॥ ७६ ॥

राग सारंग ॥ प्रगटभए ब्रज त्रिभुवनराइ । युगगुण बीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ ॥ सपनेको धनजागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ । कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपितासों करी ढिठाइ ॥ शिव बिरंचि रचि इंद्र वरुण यम लिए अमरगण संग लगाइ । बारबार शिर धुनत जातु मग कैहौं कहा वदन दिखराइ ॥ वे हैं परमकृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणनतर नाइ । सूरदास प्रभु पिता मात मैं ओछी बुद्धि करी लरिकाइ ॥ ७७ ॥

इंद्र शरणचले ॥ राग कान्हरो ॥ सुरगणसहित इंद्र ब्रज आवत । धवलवरन ऐरावति देख्यो उतरि गगनते धरणि धँसावत ॥ अंमर शिव रवि शशि चतुरानन हय गय वसह हंस मृग जावत । धर्मराज बनराज अनल दिव शारद नारद शिवसुत भावत ॥ मेंढामढी मगर गुडरारो मोर आपु मन वाह गनावत । ब्रजके लोग देखि डरपे मन हरि आगे कहि कहि जु सुनावत ॥ सात दिवस जल बरषि सिरान्यो आवत चल्यो ब्रजहि अत्रावत । घेरा करत जहांतहँ ठाठे ब्रजबासिनको नहीं बचावत ॥ दूरहिते बाहनसों उतरचो देवन सहित चल्यो शिर नावत। आइ परचो चरणनतर आतुर सूरदास प्रभु शीश उठावत॥७८॥

सुरपति चरण परचो गहि धाइ । युगगुण धोइ शेषगुण जान्यो शरणहि राखिलेहु शरनाइ ॥ हम बिसरे तुमरी मायामें तुम बिनु नाहीं और सहाइ । शरन २ पुनिपुनि कहिकहि मोहिं । राखिराखि त्रिभुवनके राइ ॥ मोते चूक परी बिनुजाने मैं कीने अपराध बनाइ । तुम माता तुमहीं जगदाता तुम भ्राता अपराध क्षमाइ ॥ जो बालक जननीसे बिरुझै माता ताको लेइ मनाइ । ऐसेहि मोहिं करौ करुणामय सूरश्याम ज्यों सुतहितमाइ ॥ ७९ ॥

राग बिलावल ॥ व्याकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजा करि लियो उठाइ । अभय निभय कर माथे दीनो श्रीमुखवचन कह्यो मुसिक्याइ ॥ कहाभयो जु चढे ब्रज ऊपर मैं तुरतति करिलियो सहाइ । हमको जानि नहीं तुम कीनों बिन जाने यह करी ढिठाइ ॥ अब अपने जिय सोच करौ जिनि यह मेरी दीनी ठकुराइ । सूर श्याम गिरिधर सब लायक इंद्रहि कह्यो करो सुख जाइ ॥ ९८० ॥

राग नट ॥ सुरगण करत अस्तुति मुखनि । दरशते तनुताप खोयो मेटि अघके दुखनि ॥ अंग पुलकित रोम गदगद कहत बाणी मुखनि । वामभुजकर टेकि राख्यो करज लघुके नखनि ॥ प्रेमके बश तुमहिं कीन्हों ग्वालबालक सखनि । योगिजन बन तपन जापन नहीं पावत मखनि ॥ धन्य नँद धनि मातु यशुमति चलत जाके रुखनि । सूर प्रभुमहिमा अगोचर जाति कापै लखनि ॥ ८१ ॥

राग भैरव ॥ जय माधव गोविंद मुकुन्द हरि । कृपासिंधु कल्याण कंसअरि ॥ प्रणतपाल केशव कमलापति । कृष्ण कमललोचन अनन्यगति ॥ श्रीरामचन्द्र राजीवनैन वर । शरणसाधु श्रीपति सारँगधर ॥ वनमाली बिठ्ठल वामन बल । वासुदेव बासी ब्रजभूतल ॥ खरदूषण त्रिशिरा शिरखंडन । चरणचिह्न दंडकभुअ मंडन ॥ बकी वधन बकवदन विदारन । वरुन विषाद नंद निस्तारन ॥ ऋषिमख तृणा तारका तारन । बनबसि तात बचन प्रतिपालन ॥ कालीदमन केशिकरपातन । अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥ रघुपति प्रबलपिनाक बिभंजन । जगहित जनकसुतामनरंजन ॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर । गोपीरमन रासरतिनागर ॥ करुणामय कपिकुल हितकारी । बालिविरोध कपटमृगहारी ॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन । दुष्टन दुख भक्तन दुखचूरन ॥ रावण कुम्भकर्ण शिरछेदन । तरुवर सात एक शर बेधन ॥ शंखचूड चाणूर सँहारन । शक्र कहै मोहि रक्षाकारन ॥ उत्तरकृपा गीधहितकारी । दरशन दे शबरी उद्धारी ॥ जे पद सदा शंभुहितकारी । जे पद परसि सुरसरी गारी ॥ जे पद रमा हृदय नाहिं टारी । जे पद तिहूँ भुवन प्रतिपारी ॥ जे पद अहि फनफनप्रति धारी । जे पद बृंदावनहिं बिहारी ॥ जे पद शकटासुर संहारी । जे पद पांडवगृह पगुधारी ॥ जे पद रज गोतम तिय तारी । जे पद भक्तनके सुखकारी ॥ सूरदास सुर याचत ते पद । करहु कृपा अपने जनपर सद ॥ ८२ ॥

राग आसावरी ॥ अस्तुति करि सुर घरनि चले । यहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रकट फले ॥ शिव विरँचि सुरपति कहँ भाषत पूरण ब्रह्महि प्रकट मिले । धन्य धन्य यह दिवस आजुको जात हैं मारग करत मिले ॥ पहुँचे जाइ आपुने लोकनि अमरनारि सब हरष भरे । सूर श्यामकी लीला सुनिसुनि अतिहित मंगलगान करे ॥ ८३ ॥

राग मलार ॥ दिखियत दोउ घन उनए । उतघन वासव भक्तिवश्य इत नर इक रोष भए ॥ उत सुरचाप कला प्रचंड इत तडित पीत पट श्याम नए । उत सेनापति वरषि मुसल सम इत प्रभु अभियदृष्टि चितए ॥ युगलबीच गिरिराज बिराजत कर जु उठाइ लए । मनु बिबि मरकत बीच महा नग चतुर नारि बनए ॥ छुटत शक्रके शीश

चरणतर युग गुण गत समए । मानहु कनकपुरीपतिके शिर रघुपति फेरि दए ॥ भए प्रसन्न सकल सुरपुरको प्रमुदित फेरि गए । सूरदास गिरिधर करुणामय इंद्र थापि पठए ॥ ८४ ॥

देखौ भाई बदरनिकी बरियाई । मदनगोपाल धरचो गिरिवरकर इंद्र ढीठ झरि लाई ॥ जाके राज सदासुख कीनों तासों कौन बडाई । सेवकु करै स्वामिसों सरबरि इनिबातनि पतिजाई ॥ इंद्र ढीठ बलिखाइ हमारी देखौ अकल गमाई । सूरदास तेहिको काको डर जिहिवन सिंह कन्हाई ॥ ८५ ॥

राग सोरठ ॥ जहां तहां तुम हमहिं उबारचो । ग्वालसखा सब कहत श्यामसों धनि यशुमति अवतारचो ॥ तृणावर्त्त ब्रजपर चढिआयो लाग्यो देन उडाइ । अतिशिशुतामें ताहि सँहारचो परचो शिलापर आइ ॥ फलजनवै बालकसँग खेलत केशी आयो साथ । वाहि मारि तुम हमहिं उबारचो ऐसे त्रिभुवन नाथ ॥ कागासुर शकटासुर मारचो पय पीवत दनुनारि । अघा असुरते हमहिं निकास्यो बकावदन धरि फारि ॥ कालीदहजल अचै गए मरि तब तुम लिये जिवाय । सूरश्याम सुरपतिते राखे देतो सबनि बहाइ ॥ ८६ ॥

हमको नंदनँदनको गारो । इंद्रकोप ब्रज बहोजातहै गिरिधर सकल उबारो ॥ राम कृष्ण बलवदनन काहू निडर चरावत चारो । बिगरै सब हमरे शिर ऊपर बलको वीर रखवारो ॥ तबहीं हमहिं भरोसो आयो केशी तृणावर्त जब मारचो । सूरदास प्रभु रंगभूमिमें हरि जीत्यौ नृप हारचो ॥ ८७ ॥

राग मलार ॥ तुम सुरपतिको मान हरचो ॥ बरषत शुंडदंडधर धारा छिन छिन एकमें प्रलय करचो । ऐरावतआरूढ अग्र घन लघुता जानि जु रोषभरचो ॥ देखे दीन दुखित नंदादिक लीला गिरिवर कर जु धरचो । सूरदास करुनामय माधव ब्रजसुख उनको गरब हरचो ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रजयुवती ब्रजजन ब्रजवासी कहत श्यामसरि कौन करै । ब्रज मारत व्रजनाथहि आगे वज्रायुध मन क्रोध करै ॥ बलसमेत बरष्यो व्रजऊपर बलमोहनकी सुधि न करै । हारि मानि हहरचो हरिचरणनि हरषि हिये अब हेतु करै ॥ गरजिगरजि घहरात गुसांकरि गिरिवारो यह पैजु करै । सूरदास गिरिधर करुणामय तुमबिनु को प्रभु क्षमाकरै ॥ ८९ ॥

राग मेघ मलार ॥ श्याम गिरिराज क्यों धरचो करसों । अतिहि विस्तार अतिभार तुम बार अति वामभुज टेकि लघुजात करसों ॥ कहत सबग्वाल धनि धन्य नँदलाल व्रज धन्य गोपाल बल कितिक करसों । धन्य यशुमति मात जिन जान्यो तुम तात बोरि माखन खात बाँधे करसों ॥ कान्ह हँसिकै कह्यो तुमसबन गिरि गह्यो रह्यो हो ब्रज बह्यो लकुट करसों । सूर प्रभुके चरित कहा बल गिरिधरत चरणरजलेत सुरराजकरसों ॥ ९९० ॥

राग मलार ॥ हाहारे ठठीले हरि । अपनी जननीको कह्यो करि इंद्र बरषिगयो अब गिरिवर धरि । सात द्यौस कीनी छाँह नेकु न पिरानी बाँह अतिहि कठिन कटु राख्योरे छतनि करि । सुनिकै यशोदा धाइ निकट गोपाल राइ करौरे सबै सहाइ नैन रहे जलभरि ॥

कुलके देवै मनाए देवेको द्विजै बुलाये पियो जाहि जोई भायो जियो रे कन्हैया प्यारो जाके राज सुख करि। सूरदास प्रभु गिरिधरको कौतुक देखि कामधेनु आयो धायो इंद्र अपडर डरि ॥ ९१ ॥

राग सोरठ ॥ जब करते गिरि धरयो उतारि। श्याम कह्यो बहुरो गिरि पूजहु ब्रजजन लिए उवारि ॥ यह सुनतहि मन हर्ष बढ़ायो किये पकवानु सँवारि। बहु मिष्टान्न बहुत विधि भोजन बहु व्यंजन अनुहारि ॥ परसि धरो गोवर्धन आगे जेवत अति रुचि भारि। सूर श्याम गिरिधर वर मांगत रविसों घोषकुमारि ॥ ९२ ॥

राग कान्हरो ॥ घरघरते ब्रजयुवती आवति। दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरषि श्यामशिर तिलक बनावति ॥ बारंबार निरखि छबि अँगअँग श्यामरूप उरमाहँ दुरावति ॥ नँदसुवन गिरि धरचौ वामकर यह कहिकै मन हरष बढावति ॥ जेहिं पूजत सब जन्म गँवायो सो कैसेहुं पग छुवन न पावति। सूर श्याम गिरिधरन मांगि वर कर जोरति कहि विधिहि मनावति ॥ ९३ ॥

राग सोरठा ॥ नीके धरणिधरयो गोपाल। प्रलयघन जल बरषि सुरपति परयो चरण बिहाल ॥ करत अस्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल। जहांतहां सहाय हमको होतहैं नँदलाल ॥ जाहि पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन। त्रिदशपति सब सुरको नायक सो भयो आधीन। देखि छबि अति नंदसुतकी नारि तन मन वारि। सूरप्रभु करते गुवर्धन धरयो धरणि उतारि ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ करते धरयो धरणीधरन। देखि ब्रजजन चकित ह्वैरहे रूप रतिपतिहरन ॥ लेत बेर न धरत जान्यो कहत ब्रजनर घरन। तनु ललित भुज अतिहि कोमल कियो बल बहु करन ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवण कुण्डल वरन। बन जलद सुरचापकी छबि अमल स्वजनन तरन ॥ बरषि निकरे मेघ पाइक बहुत कीने अरन। सूर सुरपति हारि मानी तब परयो दुहुँ चरन ॥ ॥ ९५ ॥

राग बिलावल ॥ घरनि घरनि व्रज होत बधाई ॥ सातवरषके कुँवर कन्हैया गिरिवर धरि जीत्यो सुरराई ॥ गर्वसहित आयो ब्रज बोरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई। सात दिवस जल बरषि सिराने तब आयो पाइँनतर धाई ॥ कहाँकहाँ संकट नाहिं मेटत नर नारी सब करत बडाई ॥ सूरश्याम अबकै ब्रज राख्यो ग्वाल करत सब नंददोहाई ॥ ९६ ॥

राग नट ॥ क्यों राख्यो गोवर्धन श्याम। अति ऊंचो बिस्तार अतिहि बहु लीनो उचकि करज भुजवाम ॥ यह आघात महापरलय जल डर आवत मुख लेतहि नाम। नीके राखिलियो ब्रज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ ब्रज अवतार लियो जबते तुम यहै करत निशि बासर याम। सूर श्याम बनघन हमकारण बहुत करत श्रम नहिं विश्राम ॥ ९७ ॥

राखिलियो ब्रज नंदकिशोर। आयो इंद्र गर्व करि चढिकै सात दिवस बरषत भयो भोर॥ वाम भुजा गोवर्धन राख्यो अतिकोमल नखहिकी कोर। गोपी ग्वालगाइ ब्रज राख्यो नेकु न आई बूंद झकोर॥ अमरापति चरणन लै पारयो जब बीते युग गुनको जोर। सूर श्याम करुणा कै ताको पठैदियो घर मानि निहोर ॥ ९८ ॥

राग मलार ॥ मेरो मोहन जल प्रवाह क्यों टारचो । बूझत मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करि हारचो ॥ मेघवर्त्त जल वरषि निशा दिन नेकु न नैन उघारचो । बार बार यह कहति कान्हसों कैसे गिरि नख धारचो ॥ सुरपति आनि गिरचो गहि पांइन ताको शरन उवारचो । सूर श्याम जनके सुखदाता करते धरणि उतारचो ॥ ९९ ॥

राग सोरठ ॥ मेरे सांवरे मैं बलि जाऊँ भुजनकी । क्यों गिरि सबल धरचो कोमलकर बूझतिहौं गति तनकी ॥ इंद्र कोपि आयो ब्रजऊपर बहुत पैज करि हारे । ठाढे गोप कहत भैयाहो तैं हम भले उबारे ॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरषि यशोदा ल्याई । करे शिर तिलक चरण रजवंदित मनहु रंक निधि पाई ॥ चरणन कमल परत ब्रजसुंदरि हरषि हरषि मुसुकाई । फिरि फिरि दरश करति एही मिस प्रेम न प्रीति अघाई ॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब बार बार अकुलाहीं । निरखि निरखि सुंदर मुख शोभा प्रेम तृषा न बुझाहीं ॥ सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुरन लिये सँग आयो । तुम जु अनंत अखिल अविनाशी काहू मरम न पायो ॥ १००० ॥

राग सोरठ ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाई । कोमल कर चांपति यशुदा यह कहि २ लेत बलाई ॥ महाप्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी । नेक नहीं हाल्यो नख-परते मेरो सुत हंकारी ॥ कंचनथार दूब दधि रोचन सजि तमोर लै आई । हरषति तिलक करति मुख निरखति भुजभरि कंठ लगाई ॥ रिस करिकै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि बहाई । सूर श्यामसों कहति यशोदा गिरिधर बड़ो कन्हाई ॥ १ ॥

धरणीधर क्यों राख्यो दिन सात । अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चांपति यशुमति मात ॥ ऊँचो अति बिस्तार भार बहु यह कहिकहि पछितात । वह अघात तेरे तनक तनक कर कैसे राख्यो तात ॥ मुख चूमति हारि कंठ लगावति देखि हँसे बल भ्रात । सूर श्यामको कतिक बात यह जननी जोरति नात ॥ २ ॥

राग कान्हरो ॥ जननी चांपति भुजा श्यामकी ठाढे देखि हँसत बलराम । चौदह भुवन उदरमें जाके गिरिवर धरचो बहुत यह काम ॥ कोटि ब्रह्मांड रोम रोमनि प्रति जहां तहां निशि बासर घाम । जोइ आवति सोइ देखि चकृत ह्वै कहत करे हरि कैसे काम ॥ नाभि कमल ब्रह्मा प्रगटाये देखि जलार्णव तज्यो बिश्राम । आवत जात बीचही भटक्यो दुखित भयो खोजत निज धाम ॥ तिनसों कहत सकल ब्रजवासी कैसे कर राख्यो गिरि श्याम । सूरदास प्रभु त्रिभुवननायक फिरि फिरि जन्म लेत नँदधाम ॥ ३ ॥

राग गौरी ॥ मात पिता इनके नहिं कोई । आपुहि करता आपुहि हरता त्रिभुवन गए रहतहैं जोई ॥ कितक बार अवतार लियो ब्रज ए हैं ऐसे वोई । जल थल कीट ब्रह्मके व्यापक और न इनसरि होई ॥ बसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तनु गोई । सूर श्याम माताहितकारी भोजन मांगत रोई ॥ ४ ॥

अथ गोवर्धनकी दूसरी लीला । राग बिलावल ॥ नंदहि कहति यशोदा रानी । सुरपति पूजा तुमहि भुलानी ॥ यह नहिं भली तुम्हारी बानी । मैं गृह काज रहौं लपटानी ॥

लोभहि लोभ रहे हौ सानी । देवकाजकी सुधि बिसरानी ॥ महरि कहति पुनि पुनि यह बानी । पूजाके दिन पहुँचे आनी ॥ सूरदास यशुमतिकी बानी । नन्दहि खीझि खीझि पछितानी ॥ १ ॥

नन्द कह्यो सुधि भली देवाई । मैं तो राजकाज मन लाई ॥ नितप्रति करत इहै अधमाई । कुल देवता सुरति बिसराई ॥ कंस दई इह लोक बड़ाई । गाउँ दशक सिरदार कहाई ॥ जलधिबूँद ज्यों जलहि समाई । माया जहँकी तहां बिलाई ॥ सूरदास यह कहि नँदराई । चरण तुम्हारे सदा सहाई ॥ २ ॥

कहत महरि तब ऐसी बानी । इंद्रहिकी दीनी रजधानी ॥ कंस डरत तुम्हरी अति कानी । यह प्रभुकी है आशिष बानी ॥ गोपन बहुत बड़ाई मानी । जहां तहां यह चलति कहानी ॥ तुम घरमथिये सहस मथानी । ग्वालिनि रहत सदा बिततानी ॥ तृण उपजत उनहींके पानी । ऐसे प्रभुकी सुरति भुलानी ॥ सूर नन्द मनमें तब आनी । सत्य कहत तुम देव कहानी ॥ ३ ॥

महर लियो इक ग्वाल बुलाई । गोपनंद उपनंद बुलाई ॥ अरु आनो वृषभानु लिवाई । तुरत जाहु तुम करहु चँड़ाई ॥ यह सुनि ग्वाल गए तहँ धाई । नँदमहरकी कही सुनाई ॥ नेक करहु अब जिनि बिलमाई ॥ मोहिं कह्यौ सब देहु पठाई ॥ यह सुनिकै सब चले अतुराई । मन मन सोच करत पछिताई ॥ कंसकाज जियमांझ डराई । राजअंश धन दियो चलाई ॥ सूर नंदगृह पहुँचे आई । आदर करि बैठे नँदराई ॥ ४ ॥

गोप सबै उपनंद बोलाए । कौन काजको हम हँकराए ॥ सुनतेही हम आतुर आए । कंस कछू कहि मांगि पठाए ॥ इहै जानि अति आतुर आए । सब मिलि कह्यो बहुत डर पाए ॥ कालिहि राजअंश दै आए । ग्वाल कहत तुरतहि उठि धाए ॥ महर कह्यो हम तुम डरवाए । हँसिहँसि कहत अनंद बढ़ाये ॥ हम तुमको सुखकाज मँगाए । बार बार यह कहि दुख पाए ॥ सूर इन्द्र पूजा बिसराये । यह सुनतहि शिर सबनि नवाये ॥ ५ ॥

पूजा सुनत बहुत सुख कीन्हों । भली करी हमको सुधि दीन्हों ॥ यह बाणी सबहिन सुख लीन्हो । बड़े देव सब दिनको चीन्हो ॥ इनहीते ब्रजबास बसीनो । हम सब अहिर जाति मतिहीनो ॥ पूजाकी बिधि करत सबै मिलि । जेहि जेहि भांति सदा जैसी चलि ॥ बिदा माँगि नंदसों गृह आए । घरनि घरनि यह बात चलाए ॥ सूरदास गोपनकी बानी । ब्रज नर नारि सबन यह जानी ॥ ६ ॥

नंद घरनि ब्रजबधू बोलाईं ॥ यह सुनिकै तुरतहि सब आईं ॥ कौन काज हम महरि हँकारी । तुम नहिं जानत यौवन भारी ॥ बिहँसि कहति कहा देतिहौ गारी । सुरपति पूजा करो सवारी ॥ देखौ हम सब सुरति बिसारी । औरौ हमहिं बूझिए गारी ॥ यह सुनि हरषित भइ नंदनारी ॥ सखियन बचन कह्यो जब प्यारी ॥ सूर इंद्र पूजा अनुसारी । तुरत करौ सब भोग सँवारी ॥ ७ ॥

घरनि चलीं सब कहि यशुमतिसों । देव मनावति वचन बिनतिसों ॥ तुम बिन और नहीं हम जानैं । मुखमुख अस्तुति करत बखानैं ॥ जहां तहां ब्रज मंगल गाने । बाजत ढोल

मृदंग निसाने ॥ बहुत भांति सब करि पकवानै । नेवज करि धरि सांझ बिहानै ॥ छुवत नहीं देवकाज सकानै । देवभोगको रहत डेरानै ॥ सूरदास हम सुरपति जानैं । और कौन ऐसो जेहि मानैं ॥ ८ ॥

नंदमहरघर होत बधाई । करत सबै विधि देव पुजाई ॥ नेवज करत यशोदा आतुर । अष्टौ सिद्धि घरहि अति चातुर ॥ मैदा उज्ज्वल करिकै छान्यो । बेसन दारि चनककरि बान्यो ॥ घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन । मिश्रित करत पागको चूरन ॥ कटुवा करत मिठाई घृतपक । रोहिणी करत अन्नभोजन तक ॥ संग और ब्रजनारी लागी । भोजन करत हैं बडी सभागी ॥ महरि करत ऊपर तरकारी । जोरत सब विधि न्यारी न्यारी ॥ सूरदास जो मांगत जबहीं । भीतरते लै देत है तबहीं ॥ ९ ॥

महरि सबै नेवज लै सैंतति । श्याम छुवै कहुँ ताको डरपति ॥ कान्हहि कहति यहां जनि आवै । लरिकनको यहदेव डरावै ॥ श्यामरहै आंगनाहिं डराई । मनमन हँसत मात-सुखदाई ॥ मैयारी मोहिदेव देखै है । इतनो भोजन सब वह खैहै ॥ यह सुनिकै खीझति नँदरानी । बारबार सुतसों बिरुझानी ॥ ऐसी बात न कहौ कन्हाई । तू कत करत श्याम लँगराई ॥ कर जोरत अपराध छमावति । बालकको यह दोष मिटावति ॥ सूरदास प्रभुको नहिं जानै । हँसत चले मनमें न रिसानै ॥ १० ॥

युवती कहति कान्ह रिस पायो । जान देहु सुरकाज बतायो ॥ बालक आय छुवै कहुँ भोजन । उनकी पूजा जानै को जन ॥ यह कहि कहि देवता मनावति । भोगसमग्री धरत उठावति ॥ उनकी कृपा गऊगण घेरे । उनकी कृपा धाम धन मेरे ॥ उनकी कृपा पुत्रफल पायो । देखहु श्यामहि खीझि पठायो ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी । ब्रह्माकीट आदिके स्वामी ॥ ११ ॥

नंदनिकट तब गए कन्हाई । सुनत बात तहँ इंद्रपुजाई ॥ महर नंद उपनंद तहाँ सब । बोलि लिए वृषभानुमहर तब ॥ दीपमालिका रचि रचि साजत । पुहुपमाल मंडली बिराजत ॥ बरष सातके कुँवर कन्हाई । खेलत मन आनंद बढाई ॥ घर घर देति युवतिजन हाथा । पूजा देखि हँसत ब्रजनाथा ॥ मो आगे सूरपतिकी पूजा । मोते और देवको दूजा ॥ शत शत इंद्र रोमप्रति लोमनि । शतलोमनि मेरे इकरोमनि ॥ सूर श्याम एमनसों बातैं । लीनो भोग बहुत दिन जातैं ॥ १२ ॥

सुरपति पूजा जानि कन्हाई । बारबार बूझत नँदराई ॥ कौन देवकी करत पुजाई । सो मोसो तुम कहहु बुझाई ॥ महर कह्यो तब कान्ह सुनाई । सुरपति सब देवनके राई ॥ तुमरे हित मैं करत पुजाई । जाते तुम रहो कुशल कन्हाई ॥ सूर नंद कहि भेद बताई । भीर बहुत घर जाहु सिखाई ॥ १३ ॥

जाहु घरहि बलिहारी तेरी । सेज जाइ सोवो तुम मेरी ॥ मैं आवत हौं तुम्हरे पाछे । भवन जाहु तुम मेरे बाछे ॥ गोपन लीन्हें कान्ह बुलाई । मंत्र कहौं एक मनहि समाई ॥ आजु एक सपने कोउ आयो । शंखचतुर्भुज चारि बतायो ॥ मोसों यह कहि कहि समुझायो । यह पूजा तुम किनहिं सिखायो ॥ सूर श्याम कहि प्रगट सुनायो । गिरि गोवर्धन देव बतायो ॥ १४ ॥

यह तब कहनलगे दिवराई । इंद्रहि पूजे कौन बडाई ॥ कोटि इंद्र हम छिनमें मारैं। छिनहीमें फिरि कोटि सँवारैं॥जाके पूजे फल तुम पावहु । ता देवहि तुम भोग लगावहु तुम आगे वह भोजन खैहै।मुँहमाँग्यो फल तुमको दैहै॥ऐसो देवप्रगट गोवर्धन । जाके पूजे बाढैं गोधन ॥ समुझिपरी कैसी यह बानी । ग्वाल कही यह अकथ कहानी । सूर श्याम यह सपनो पायो । भोजन कौन देवही खायो ॥ १५ ॥

मानहु कह्यो सत्य यह बानी । जो चाहौ ब्रजकी राजधानी ॥ जो तुम मुँहमांग्यो। फल पावहु । तौ तुम अपने करन जेंवाहु ॥ भोजन सब खैहैं मुँहमांगे । पूजत सुरपति तिनके आगे ॥ मेरी कही सत्यकरि मानहु । गोवर्धनकी पूजा ठानहु । सूर श्याम कहि कहि समुझायो । नंद गोप सबके मन आयो ॥ १६ ॥

सुरपति पूजा मेटि धराई । गोवर्धनकी करत पुजाई ॥ पांचदिनालौं करी मिठाई । नंद-महरघरकी ठकुराई ॥ जाके घरनी महरि यशोदा । अष्ट सिद्धि नव निधि चहुँकोदा ॥ घृतपक बहुत भांति पकवाना । व्यंजन बहुको करे बखाना ॥ भोग अन्न बहुभार सजायो । अपने कुल सब अहिर बोलायो ॥ सहज शकट भरि भरत मिठाई। गोवर्धनकी प्रथम पुजाई ॥ सूर श्याम यह पूजा ठानी । गिरिगोवर्धनकी रजधानी ॥ १७ ॥

ब्रज घरघर सब भोजन साजत । सबके द्वार बधाई बाजत ॥ शकट जोरि लै चले देवबलि । गोकुलब्रजबासी सब हिलिमिलि ॥ दधिलवनी मधु साजि मिठाई । कहँलगि कहौं सबै बहुताई ॥ घरघरते पकवान चलाए । निकसि गांवके गैंडे आये ॥ ब्रजवासी तहँ जुरे अपारा । सिंधुसमान पार ना बारा ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत । शकटभरे सब भोजन आवत ॥ सहस शकट चले नंदमहरके । और शकट कितने घरघरके ॥ सूर-दास प्रभु महिमासागर । गोकुल प्रगटे हैं हरिनागर ॥ १८ ॥

इक आवत घरते चले धाई । एक जात फिरि घर समुहाई ॥ इक टेरत इक दौरे आवत । एक गिरावत एक उठावत ॥ एक कहत आवहु रे भाई । बैल देतहैं शकट गिराई ॥ कौन काहिको कहै सँभारै । जहाँ तहाँ सब लोग पुकारै ॥ कोउ गावत कोउ निर्तत आवैं । श्याम सखासंग खेलत धावैं ॥ सूरदास प्रभु सबके नायक । जो मन करैं सो करिवें लायक ॥ १९ ॥

सजि शृंगार चलीं ब्रजनारी । युवतिन भीर भई अति भारी ॥ जगमगात अंगन प्रति गहनो । सबके भाव दरश हरि लहनो ॥ यहि मिस देखनको सब आई । देखत एकटक रूप कन्हाई ॥ वै नाहिं जानत देवपुजाई । केवल श्यामहिसों लव लाई ॥ को मग जाति कहां को बोलत । नंदसुवनते चित नाहिं डोलत ॥ सूर भजै हरि जो जेहि भाउ । मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाउ ॥ २० ॥

गोपनंद उपनंद गए तहँ । गिरि गोवर्धन बडे देव जहँ ॥ शिखर देखि तब रीझे मन-मन । ग्वाल कहत आजुहि अचरज बन ॥ अति ऊंचो गिरिराज बिराजत । कोटि मदन निरखत छवि लाजत ॥ पहुँचे शकटनि भरि भरि भोजन । कोउ आए कोउ नाहिं कहुँ खोजन ॥ तिनके काज अहीर पठाए । बिलम करहु जिनि तुरत धवाए ॥ आवत मारग पाये

तिनको। आतुर करि बोले नँद जिनको॥ तुरत लिवाइ तिनहिं तहां आए। महर मनहिं अति हरष बढाए॥ सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी। बूझत हैं पूजा परकारी॥ २१॥

आइ जुरे सब ब्रजके बासी। डेरा परचो कोश चौरासी॥ एक फिरत कहुँ ठौर न पावै। एते पर आनंद बढावै॥ कोउ काहूसों बैर न ताकै। बैठत मन जहँ भावत जाकै॥ खेलत हँसत करैं कौतूहल। जुरे लोग जहँ तहां अकूहल॥ नंद कह्यो सब भोग मँगावहु। अपने कर सब लैलै आवहु॥भोग बहुत वृषभानु हिं घरको। को करि बरनै अतिहिं बहरको॥ सूर श्याम जो आयसु दीन्हों विप्र बुलाइ नंद तब लीन्हों॥ २२॥

तुरत तहां सब विप्र बोलाए। यज्ञ अरंभ तहां करवाए॥ सामवेद द्विज गान करत तहँ। देखत सुर विथके अमरन जहँ॥ सुरपति पूजा तबहि मिटाई। गिरि गोवर्धन तिलक चढ़ाई॥ कन्ह कह्यो गिरि दूध अन्हावहु। बडे देवता इनहिं मनावहु॥ गोवर्धन दूधहि अन्हवाए। देवराज कहँ माथ नवाए॥ नये देवता कान्ह पुजावत। नर नारी सब देखन आवत॥ सूर श्याम गोबर्धन थाप्यो। इंद्र देखि रिसकरि तनु कांप्यो॥ २३॥

देखि इंद्र मन गर्व बढायो। ब्रजलोगन सब मोहिं बिसरायो॥ अहिरजाति ओछी मति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रगट करि दीन्ही॥ पूजत गिरिहि कहामन आई। गिरिसमेत ब्रज देउँ बहाई॥ देखौं धौं कितनों सुख पैहैं। मेरे मारत काहि मनै हैं॥ पर्वत तब इनको क्यों राखत। बारंबार कहै इह भाषत॥ पूजत गिरि अतिप्रेम बढाए। सपनेको सुख लेत मनाए॥ सूरदास सुरपतिकी बानी। ब्रज बोरौं परलयके पानी॥ २४॥

श्याम कह्यो तब भोजन लावहु। गिरि आगे सब आनि धरावहु॥ सुनत नंद तहँ ग्वाल बोलाए। भोग समग्री सबै मँगाए॥ षटरसके बहुभांति मिठाई। अन्नभोग अतिही बहुताई॥ व्यंजन बहुत भाँति पहुँचाए। दधि लवनी मधु माट धराए॥ दही बरा बहुतै परसाए। चन्द्रहि सम पटतर तेहि पाए॥ अन्नकूट जैसो गोवर्धन। अरु पकवान धरे चहुँकोनन॥ परसत भोजन प्रातहिते सब। रवि माथेते ढरकि गयो अब॥ गोपन कह्यो श्याम ह्यांआवहु। भोग धरचो सब गिरिहि जिमावहु॥ सूर श्याम आपुनही भोगी। आपुहि माया आपुहि योगी॥ २५॥

कान्ह कह्यो नंद भोग लगावहु। गोपमहर उपनंद बोलावहु॥ नैन मूंदि कर जोरि मनावहु। प्रेमसहित देवहि न चढावहु॥ मनमें नेक खुटक जनि राखहु। दीन बचन मुखते तुम भाषहु॥ ऐसी विधिगिरि परसन ह्वैहै। सहस भुजा धरि भोजन खैहै॥ सूरदास प्रभु आपु पुजावत। यह महिमा कैसे कोउ पावत॥ २६॥

श्यामकही सोई सब मानी। पूजाकी विधि हम अब जानी॥ नैन मूंदिकर जोरि बोलायो। भावभक्तिसों भोग लगायो॥ बडे देव गिरिराज सबनके। भोजन करहु कृपाकरि इनके॥ सहसभुजा धरि दरशन दीन्हों। जैजै ध्वनि नभ देवन कीन्हों॥ भोजन करत सबनके आगे। सुर नर मुनि सब देखन लागे॥ देखि थकित ब्रजकी सब बाला। देखत नंद गोप सब ग्वाला॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। सहस भुजा धरि भोजन खाई॥ २७॥

जेंवत देव नंद सुख पायो ॥ कान्ह देवता प्रगट देखायो ॥ ब्रजवासी गिरि जेंवत देख्यो । जीवन जन्म सफल करि लेख्यो ॥ ललिता कहनि राधिका आगे । जेंवत कान्ह नंदकर लागे । मैं जानी हरिकी चतुराई । सुरपति मेटि आपु बलि खाइ ॥ उत जेंवत इत बातन लागे । कहत श्याम गिरि जेंवन लागे ॥ मैं जो बात कही सो आई । सहसभुजा धरि भोजन खाई ॥ और देव इनकी सरि नाहीं । इत बोधत उत भोजन खाहीं ॥ सूरदास प्रभुकी यह लीला । सदा करत ब्रजमें यह क्रीला ॥ २८ ॥

यह छबि देखि राधिका भूली । बात कहत सखियनसों फूली ॥ आपुहि देव आपुही पुजेगी । आपुहि भोजन जेंवत ढेरी ॥ अति आतुर जेंवत हैं भारी । एक वृषभानु बिलो वनहारी । नाम ताहि बदरौला नारी । ताकी बलि लई भुजा पसारी ॥ उत गिरि संग खात बलि सारी । बदरौलाकी बलि रुचिकारी ॥ सूरदास प्रभु जेवँनहारी । गिरि बपुरेसों को अधिकारी ॥ २९ ॥

इतहि श्याम गोपन सँग ठाढे । भोजन करत अधिक रुचि बाढे ॥ गिरितन शोभा श्याम बिराजै । श्यामहि छबि गिरिवरकी छाजै ॥ गिरिवर उर पीतांबर डारे । मोतिनकी उर माला भारे ॥ अँग भूषण श्रवणन मणि कुण्डल । मोरमुकुट शिर अलक हैं झुण्डल ॥ छबि निरखत सब घोषकुमारी । गोवर्धन छबि श्याम अनुहारी ॥ सूरश्याम लीला रस नायक । जन्म जन्म भक्तन सुखदायक ॥ ३० ॥

भोजन करत देव भए परसन । माँगहु नंद तुम्हारे जो मन ॥ भली करी तुम मेरी पूजा । सेवक तुमते और न दूजा ॥ जो मांगौ सोइ फल मैं देहौं । जहां भाव ताहीपै रैहौं ॥ मैं सेवावश भयो तुम्हारे । जोइ फल चाहो लेहु सँवारे ॥ यह सुनि चकृत भए नर नारी । भोजन कियो प्रथमही भारी ॥ अब देखौ मुख बात कहत हैं । ऐसे देव कह त्रिभुवन हैं ॥ कान्ह कह्यो कछु माँगहु इनसों । गिरि देवता देत परसनसों ॥ सूरश्याम देवता आप है । ब्रजजनके त्रयताप हरत है ॥ ३१ ॥

नंद कह्यो कहा मांगौं स्वामी । तुम जानत सब अंतर्यामी ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि तुम दीनो । कृपासिंधु तुमरोई कीनो ॥ कुशल रहैं बलराम कन्हाई । हम इहि कारण करैं पुजाई ॥ देवनको मणि गिरिवर तुम हौ । जहँ तहँ व्यापक पूरन सम हौ ॥ तुम हरता तुम करता सबके । देखि थकित नर नारिनगरके ॥ बडो देवता श्याम बतायो । प्रगट भए सब भोजन खायो ॥ सूर श्यामके जोइ मन आवै । सोइ सोइ नानारूप बनावै ॥ ३२ ॥

मांगि लेहु कछु और पदारथ ॥ सेवा सबै भई अब स्वारथ ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई । ये द्वै रहैं कुशल जु सदाई ॥ इनहीते हम तुमको जान्यो । तब तुम गिरि गोवर्धन मान्यो ॥ करत वृथाही इंद्र पुजाई । मेरी दीनी है ठकुराई । कान्ह तुम्हारो मोको जाने इनको रैहौ सबै तुम माने ॥ इंद्र आइ चढि है ब्रज ऊपर । यह कहि है नहिं राखौं भूपर ॥ नेक कछू नहिं वासों ह्वैहै । श्याम उठाइ मोहि कर लैहै ॥ सूर श्याम गिरिवरकी बानी । ब्रजजन सुनत सत्यकरि मानी ॥ ३३ ॥

कौतुक देखत सुर नर भूले । रोमरोम गदगद सब फूले ॥ सुर विमान सुमनन बरषाए । जयध्वनि शब्द देव नर गाए ॥ देव कह्यो व्रजवासिनसों तब । पूजा भली करी मेरी सब ॥ जाहु सबै मिलि सदन करौ सुख । श्याम कह्यो गिरिगोवर्धन मुख ॥ ग्वाल करत अस्तुति सब ठाढे । भाव प्रेम सबके चित बाढे ॥ भवन जाहु कहि श्रीमुखबानी । भोजन शेष श्याम कर आनी ॥ बाँटि प्रसाद सबनिको दीन्हो । ब्रजनारी नर आनँद कीन्हो ॥ सूर श्याम गोपन सुखकारी । चलौ कह्यो ब्रजको नर नारी ॥ ३४ ॥

दोउ कर जोरि भए सब ठाढे । धन्यधन्य भक्तनके चाढे ॥ तुम भोगता तुमहिं प्रभु दाता । अखिल ब्रह्मांड लोकके ज्ञाता ॥ तुमको भोजन कौन करावै । हितके वश तुमको कोउ पावै । तुम लायक हमरे कछु नाहीं । सुनत श्याम ठाढे मुसकाहीं ॥ ललितासखी देवता चीन्हो । चंद्रावली राधिकहि दीन्हो ॥ देव बडो इह कुँवरकन्हाई । कृपा जानि हरि ताहि चिन्हाई ॥ सूर श्याम कहि प्रगट सुनाई । भये तृप्त भोजन दिवराई ॥३५॥

परसत चरण चलत सब घरको । जात चले सब घोष शहरको । सुखसमेत मग जात चले सब ॥ दूनी भीर भई तबते अब ॥ कोउ आगे कोउ पाछे आवत । मारगमें कहुँ ठौर न पावत ॥ प्रथमहिं गयो डगरतिनपायो । पाछेके लोगन पछितायो ॥ घर पहुँचे अबहीं नहिं कोई । मारगमें अटके सब लोई ॥ डेरो परचो कोस चौरासी । इतने लोग जुरे ब्रजवासी ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत । कितक दूरि ब्रज पूँछन आवत ॥ सूरश्याम गुणसार नागर । उत्तम लीला करी उजागर ॥ ३६ ॥

कोउ पहुँचे कोउ मारग माहीं । बहुत गए घर बहुतक जाहीं ॥ काहूके मत कछु दुख नाहीं । अरसपरस हँसि हँसि लपटाहीं ॥ आनँद करत सबै ब्रज आए । निकट आनि लोगन नियराये ॥ भीर भई बहु खोरि जहाँतहँ । जैसे नदी मिलत सागर महँ ॥ नर नारी सरिता सब आगर । सिंधु मनौ इह घोष उजागर ॥ मथनहार हरि रतन कुमारी । चंद्रवदनराधा सुकुमारी ॥ सूरश्याम आए नँदशाला । पहुँचे घरनि आइ नर बाला ॥३७॥

बड़ो देवता कान्ह पुजायो । ग्वाल गोप हँसि अंग मिलायो । कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो । ब्रज धनिधनि तुमते कहवायो ॥ धन्य नंद जिन तुम सुत पायो । धनिधनि देव प्रगट दरशायो ॥ पूजा मेटि इन्द्र गिरि पूज्यो । परसन हमहिं सदा प्रभु हूज्यो ॥ कहा इन्द्र वपुरो केहि लायक । गिरि देवता सबहिके नायक ॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे । भक्तन वश दुष्टनको नैसे ॥ ३८ ॥

हरि सबके मन यह उपजाई । सुरपति निंदत गिरिहि बडाई ॥ वर्ष वर्ष प्रति इन्द्र पुजाइ ॥ कबहूं परसन भयो न आई ॥ पूजत रहौ वृथाही सुरपति । सब मुख यह वाणी घर निंदति ॥ बड़ो देव यह गिरि गोवर्धन । इहै कहत गोकुल ब्रजपुरजन ॥ तहां दूत इक इन्द्र पठायो । व्रजकौतुक देखन वह आयो ॥ घरघर कहत बात नर नारी । दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥ मानत गिरि निंदत सुरपतिको । हँसत दूत व्रजजन गई मतिको ॥ सूर सुनत इतनी रिस पाये । उठि तुरतहि सुरलोकहि आये ॥ ३९ ॥

ब्रह्म दई जाको ठकुराई । त्रिदशकोटि देवनके राई ॥ गिरि पूज्यो तिनिही बिसराई । जातिबुद्धि इनके मन आई ॥ शिव विरंचि जाको कहैं लायक । जाके मैं मघवासे पायक ॥ यह कहतहि आये सुरलोकहि ॥ पहुँचे जाइ इन्द्रके ओकहि ॥ दूतन ऐसिय जाइ सुनाई । बैठे जहां सुरनके राई ॥ कर जोरे सन्मुख भे आई । पूछि उठे ब्रजकी कुशलाई ॥ दूतन ब्रजकी बात सुनाई । तुमहि मेटि पूज्यो गिरि जाइ ॥ तुमहि निदरि गिरि वरहि बड़ाई । इह सुनतहि रहे देह कँपाई ॥ सूर श्याम इह बुद्धि उपाई । ज्यों जानै ब्रजमें यदुराई॥४०॥

ग्वालन मोसों करी ढिठाई । मोको अपनी जाति देखाई ॥ तंतीस कोटि सुरनको राई । तिंहू भुवनभरि चलत बड़ाई ॥ साहबसों जो करै धुताई । ताको नहिं कोऊ पतिआई ॥ इनि अपनी परतीति घटाई । मेरे बैर बांचिहैं भाई ॥ नई रीति इन अबहिं चलाई । काहू इनहिं दियो बहिकाई ॥ ऐसी मति इन अबकै पाई । काके शरन रहैंगे जाई ॥ इन दीनो मोको बिसराई । नंद आपनीप्रकृति गँवाई ॥ जानी बात बुढाई आई । अहिर जाति कोई न पत्याई ॥ मातपिता नहिं मानैं भाई । जानि बूझि इन करी धिंगाई ॥ मेरी बलि पर्वतहि चढाई । गिरिवरसहितै ब्रजहिं बहाई ॥ सूरदास सुरपति रिस पाई । कीडीतनु ज्यों पांख उपाई ॥ ४१ ॥

मोको निंदि पर्वतहि वंदत । चारौं कपट पंछि ज्यों फंदत ॥ मरनकाल ऐसी बुधि होई । कछू करत कछुवै वह जोई ॥ खेलत खात रहे ब्रजभीतर । नान्हे लोग तनक धन ईतर ॥ समय समय बरषौं प्रतिपालौं । इनकी बुधि इनको अब घालौं ॥ मेरे मारत कौन राखिहैं । अहिरनके मन यहै कांखिहैं ॥ जो मन जाके सोई फल पावै । नींब लगाइ आंब क्यों खावै ॥ विषके वृक्ष विषहि फल फलिहै । तामें दाख कहौ क्यों मिलिहै ॥ अग्निवर्त देखै करनावै । कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास इह सब कोउ जानै । जो जाको सो ताको मानै ॥ ४२ ॥

पर्वत पहिले खोदि बहाऊँ । ब्रजजन मारि पताल पठाऊं ॥ फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हों । नेक न राखौं ताको चीन्हों ॥ नंद गोप नैनन यह देखैं । बड़े देवताको सुख पेखैं ॥ निंदत मोहिं करी गिरिपूजा । जासों कहत और नहिं दूजा ॥ गर्व करत गोवर्धन गिरिको । पर्वतमाहं आइ वह किरको ॥ डोंगरिको बल उनहिं बताऊं । ता पाछे ब्रज खोदि बहाऊं ॥ राखौं नहीं काहु सब मारौं । ब्रज गोकुलको खोजि निरारौं ॥ को जानै कहँ गिरि कहँ गोकुल । भुवपर नहिं राखौं उनको कुल ॥ सूरदास इह इंद्र प्रतिज्ञा । ब्रज-बासिन सब करी अवज्ञा ॥ ४३ ॥

सुरपति क्रोध कियो अतिभारी । फरकत अधर नैन रतनारी ॥ भृतनि बोलाये दैदै गारी । मेघनि ल्यावो तुरत हँकारी ॥ एक कहत धाए सौचारी । अति डरपे ततुकी सुधि हारी ॥ मेघवर्त जलवर्त बोलावहु । सैन साजि तुरतहि लै आवहु ॥ कापर क्रोध कियो अमरा-पति । महाप्रलय जिय जानि डरे अति ॥ मेघनसों यह बात सुनाई । तुरत चलौ बोले सुरराई ॥ सैनासहित बोलाए तुमको । रिस करि तुरत पठाए हमको ॥ बेगि

चलौ कछु बिलम न लावहु । हमहिं कह्यो अबहीं लै आवहु ॥ मेघवर्त सब सैन्य बोलाए । महाप्रलयके जे सब आए ॥ कछु हर्ष कछु मनहिं सकाने । प्रलय आहि की हमहिं रिसाने ॥ चूक परी हमते कछु नाहीं । यह कहिकहि सब आतुर जाहीं ॥ मेघवर्त जलवर्त वारिवर्त्त । अनिलवर्त्त वज्रवर्त प्रवर्त्त ॥ बोलत चले आपनी बानी । प्रभुसन्मुख सब पहुँचे आनी ॥ गर्जि गर्जि घहरातहि आए । देवदेव कहि माथ नवाए ॥ सूरदास डरपत सब जलधर । हमपर क्रोध किधौं काहूपर ॥ ४४ ॥

चितवतही सब गए झुराई । सकुचि कह्यो कापर रिस पाई ॥ क्षमा करहु आयसु हम पावैं । जापर कहो ताहिपर धावैं ॥ सैनसहित प्रभु हमहिं बोलाए । आज्ञा सुनत तुरत उठि धाए ॥ ऐसो कवन जाहि प्रभु कोपे । जीवनाम सब तुम्हरेइ रोपे ॥ सूर कही यह मेघन बानी । यह सुनिसुनि रिस कछुक बुझानी ॥ ४५ ॥

मेघनिसों बोले सुरसाई । अहिरन मोसों करी ढिटाई ॥ मेरी दीन्हीं करत बडाई । जानिबूझि मोहिं दियो भुलाई ॥ सदा करत मेरी सेवकाई । अब सेवत पर्वतकहँ जाई ॥ इही काज तुमको हँकराये । भली करी सैना लिये आए ॥ गाइ गोप ब्रज सबै बहावहु । पहिले पर्वत दोंदि ढहावहु ॥ जब यह सुनी इंद्रकी बानी । मेघन मन तब धीरज आनी ॥ सूरदास यह सुनि घन तमके । कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥ ४६ ॥

रिसलायक तापर रिस कीजै । यहि रिसते प्रभु देही छीजै ॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके । ऐसो कवन रहै तुम ताके ॥ छिनहीमें ब्रज धोइ बहावैं । डूंगरको कहिं नाउं न पावैं ॥ आपु क्षमा करिये दिवराई । हम करिहैं उनकी पहुनाई ॥ यह सुनिकै हरषित चित कीन्हों । आदरसहित पान कर दीन्हों ॥ प्रथमहिं देहु पहार बहाई । मेरी बलि वोही सब खाई ॥ सूर इंद्र मेघनि समुझावत । हरखि चले घन आदर पावत ॥ ४७ ॥

आयसु पाइ तुरतही धाये । अपनी सैना सबहि बुलाये ॥ कह्यो सबनि ब्रजऊपर धावहु । घटाघोर करि गगन छपावहु ॥ मेघवर्त जलवर्तक आगे । और मेघ सब पाछे लागे ॥ गरजि उठे ब्रजऊपर जाई । शब्द कियो आघात सुनाई ॥ ब्रजके लोग डरे अतिभारी । आजु घटा दीखतिहै कारी ॥ देखत देखत अति अधिकायो । नेकहिंमें रवि गगन छपायो ॥ ऐसे मेघ कबहुँ नहिं देखे । अतिकारे काजर अवरेखे ॥ सुनहु सूर ए मेघ डरावन । ब्रजवासी सब कहत भयावन ॥ ४८ ॥

गरजि गरजि ब्रज घेरत आवैं । तरपि तरपि चपला चमकावैं ॥ नर नारी सब देखत ठाढे । ये बादर परलयके काढे ॥ दरदरात घहरात प्रलय अति । गोपी ग्वाल भए औरै गति ॥ कहा होन अबहीं यह चाहत । जहँ तहँ लोग इहै अवगाहत ॥ खन भीतर खन बाहिर आवत । गगन देखि धीरज बिसरावत ॥ सूरश्याम यह करी पुजाई । ताते सुरपति चढ्यो रिसाई ॥ ४९ ॥

फिरत लोग जहँ तहँ बितताने । कोहैं अपने कौन बिराने ॥ ग्वाल गए जे धेनु चरावन । तिनहिं परयो बनमांझ परावन ॥ गाइ बच्छ कोऊ न सँभारैं । जियकी सबको परी खँभारैं ॥ भागे आवत ब्रजही तनको । बिपति परी अति बन ग्वालनको ॥ अंध धुंध

मग कहूं न सूझै । ब्रज भीतर ब्रजहीको बूझै ॥ जैसे तैसे ब्रज पहिचानत । अटकरही अटकर करि आनत ॥ खोजत फिरैं आपने घरको । कहा भयो भैया घोष शहरको॥रोवत डोलैं घरहि न पावैं । द्वारद्वार घरको बिसरावैं ॥ सूरश्याम सुरपति बिसरायो । गिरिके पूजे यह फल पायो ॥ ९० ॥

यमुनाजलहि गई जो नारी ॥ डारि चलीं शिर गागरि भारी ॥ देखो मैं बालक कत छांड्यो । एक कहत अंगन दधि मांड्यो ॥ एक कहत मारग नहिं पावति । एक सामुहे बोलि बतावति ॥ ब्रजवासी सब अति अकुलाने । कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने । कहां रहे अब कुँवर कन्हाई । गिरिगोवर्धन लेहिं बोलाई ॥ जेंवन सहस भुजाधरि आवै । अब द्वै भुज हमको देखरावै ॥ यह देवता खातही लैंके । पाछे पुनि तुम कौन कहाँके ॥ सूरश्याम सपनो प्रगटायो । घरके देव सबनि बिसरायो ॥ ९१ ॥

गर्जत घन अतिही घहरावत । कान्ह सुनत आनंद बढावत । कौतुक देखत ब्रजलोगनके । निकट रहत संगहि सँग जनके ॥ यक सैंतत घरके सब बासन । लीने फिरत घरहिंके पासन ॥ एक कहत जिनकी नहिं आसा । देखत सबै दुष्टके नाशा ॥ सूर श्याम जानत ए गासा । कह पानी कह करै हुतासा ॥ ९२ ॥

मेघवर्त मेघनि समुझावत । बारबार गिरितनहिं बतावत ॥ पर्वतपर बरषहु तुम जाई । इहै कही हमको सुरराई ॥ ऐसे देहु पहार बहाई । नाउँ रहै नहिं ठौर जनाई ॥ सुरपतिकी बलि ये सब खाई ॥ ताके फल पावै गिरिराई ॥ जेंवत कालि अधिक रुचि पाई । सलिल देहु जेहिं तृषा बुझाई ॥ दिना चारि रहते जगऊपर । अब न रहन पावहु या भूपर ॥ सूर मेघ सुरपतिहि पठाये । ब्रजके लोगन तुमहिं बहाये ॥ ९३ ॥

वर्षतहैं घन गिरिके ऊपर । देखि २ ब्रजलोग करत डर ॥ ब्रजवासी सब कान्ह बतावत । महाप्रलय जल गिरिहि ढहावत ॥ झरहरात झारत झरि लावत । गिरिहि धोइ ब्रज ऊपर आवत ॥ विकल देखि गोकुलके बासी । दरश दियो सबको अविनाशी ॥ अविनाशीको दरशन पाये । तब सब मन परताप बढाये ॥ नंद यशोदा सुतहित जानै । और सबै सुख अस्तुति गानै ॥ वर्षत गिरि झरपत ब्रज ऊपर । सो जल जहँ तहँ पूरन भूपर ॥ सूरदास प्रभु राखिलेहु अब । जैसे रीख अघावदन तब ॥ ९४ ॥

राखिलेहु अब नंदकुमारा । गोसुत गाइ फिरत बिकरारा ॥ वर्षत बूँद लगै जनु सायक । राखि लेहु अब गोकुलनायक ॥ तुमबिनु कौन सहाय हमारे । नंदसुवन अब शरण तुम्हारे ॥ शरणशरण जब ब्रजजन बोले । धीरवचन दैदै दुख मोले ॥ यह बोले हँसि कृष्ण मुरारी । गिरि कर धरि राखौं नर नारी ॥ सूर श्याम चितए गिरिवर तन । विकल देखिकै गोसुत ब्रजजन ॥ ९५ ॥

गोवर्धन लीन्हो उचकाई । देखि विकल नर नारि कन्हाई ॥ अपने सुख ब्रजजन बितताये । बुन्द कइक ब्रजपर बरषाये ॥ वै डरपत आपुन हरषत मन । राखे रहैं जहाँ तहँ ब्रजजन ॥ घरिक देखि मनहीं सुख दीन्हों । वामभुजा धरि गिरिवर लीन्हों ॥ सूरश्याम गिरि कर गहि राख्यो । धीर धीर सबसों कहि भाख्यो ॥ ९६ ॥

इयाम धरचो गिरि गोवर्धन कर। राखिलिए ब्रजके नारी नर ॥ गोकुल ब्रज राख्यो सब घर घर। आनँद करत सबै ताही तर ॥ बरषत मुसलाधर मघवावर। बूंद न आवत नेकहु भूपर ॥ धार अखंडित बरषत झरझर ॥ कहत मेघ धौं बहु ब्रज गिरवर ॥ सलिल प्रलयको ढूंढत तरतर। बाजत शब्द नीरको धरधर ॥ वै जानत जल जात है दरदर। बीचहि जरत जात जल अम्बर ॥ सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर। बरषत कहत गयो गिरिको जर ॥ ५७ ॥

बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई। टेरहु गिरि गोवर्धन राई ॥ आज सबै मिलि होहु सहाई। हँसत देखि बलराम कन्हाई ॥ लकुट लिए कर टेकत जाई। कहत परस्पर लेहु उठाई ॥ बरषत इंद्र महाझरि लाई। अतिजल देखि सखा डरपाई ॥ नँदनंदन बिन को गिरि धारै। ऐसे बल बिन कौन सँभारै ॥ न रखते गिरै कौन गिरिराखै। बारबार कहि कहि यह भाषै ॥ सूर इयाम गिरिवर कर लीन्हों। वर्षत मेघ चकृत मन कीन्हों ॥ ५८ ॥

बात कहत आपुसमें बादर। इंद्र पठाए करि हम आदर ॥ अब देखत कछु होत निरादर। बरषि बरषि घन भए मन कादर ॥ खीझत कहत मेघ सबहिनसों। बरषि कहा कीन्हो तबहिनसों ॥ महाप्रलयको जल कहँ राखत। डारिदेहु ब्रजपर कहा ताकत ॥ क्रोध सहित फिरि बर्षन लागे। ब्रजवासी आनँद अनुरागे ॥ ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया। वाम भुजा गिरि लिए उठैया ॥ सूर इयाम तुमसरि कोउ नाहीं। वर्षत घन गिरि देखि खिसाहीं ॥ ५९ ॥

प्रलय मेघ आए लैवाने। आपुसहीमें सबै रिसाने। सात दिवस जल बरषि बुढाने। चकृत भए तनसुरति भुलाने ॥ फिरि देखत जल कहां टराने। झुरि झुरि सबबादर बित-ताने ॥ बूँद नहीं घन नेक बचाने। जलद अपुनकों धृगकारै माने ॥ फिरि सब चले अतिहि बिकलाने। मनमें हारि मानि सकुचाने ॥ सूर इयाम गोवर्धनराने। मूरख सुरपति अजहुँ न जाने ॥ ६० ॥

मेघ चले मुख फेरि अमरपुर। करी पुकार जाइ आगे सुर ॥ श्रमते टूटिगये सबके उर। जलबिनु भए सबै घन धूंधर। की मारौ कै शरण उबारौ ॥ हममें कहा रह्यो अब गारौ। जहँ तहँ बादर रोवत बोले। श्रम अपने प्रभु आगे खोले ॥ सात दिवस नहिं मिटी लगारा। बरष्यो सलिल अखंडित धारा ॥ महाप्रलयजल नेक न उबरचो। ब्रजवासी नीके अब निदरचो ॥ वैसोइ गिरि वैसेई ब्रजबासी। नेक बूंद नहिं धरणि प्रगासी ॥ सूर सुतन सुरपती उदासी ॥ देखहु ए आए जलरासी ॥ ६१ ॥

चकृत भयो ब्रज चाह सुनाई। पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥ कहां गयो जल प्रलय-कालको। कहा कहौं सब तन बेहालको ॥ कहा करैं अपनो बल कीन्हौं। व्याकुल रोइ रोइ तब दीन्हों ॥ दंड एक बरषै मन लाइ। पूरण होत गगनलौं आइ ॥ पर्वतमें है कोउ अवतार। सुरपति मन यह करतबिचार ॥ सूर इंद्र सुरगण हँकराये। आज्ञा सुनत तुरत उठि आये ॥ ६२ ॥

सुरपति आगे भए सब ठाढे । चिंता सबहिनके मन बाढे ॥ कौन काज सुरराज बोलाए । सकुच सहित पूछत ते आए ॥ कहा कहौं कछु कहत न आवै । मघवनकी गति सुरन बतावै ॥ ब्रजबासिन मोको बिसरायो । भोजन लै सब गिरिहि चढायो ॥ मोको मेटि पर्वतहि थाप्यो ॥ तब मैं थरथराय रिस कांप्यो ॥ सूर दास यह सुरन सुनाई । या कारज तुमलिए बोलाई ॥ ६३ ॥

सुरन कही सुरपतिके आगे । सन्मुख कहत सकुच हम लागे ॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु । नीके करि मोको समुझावहु ॥ नीकी भांति सुनौ सुर राई । ब्रजमें ब्रह्म प्रकट भए आई ॥ तुम जानत जब धरणि पुकारी । पापही पाप भई अति भारी ॥ पौढे शेष संग श्री प्यारी । ते ब्रज भीतर हैं वपुधारी ॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी । तिनसों हमकीनी अधिकारी ॥ सूरदास प्रभु गिरि कर धारी । यह सुनि इंद्र डरचो मन भारी॥६४॥

यह मोको तबही न सुनाई । मैं बहुतै कीन्ही अधमाई ॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई । काहू तौ मोहिं सुधि न दिवाई । सुरनि कही नहिं करी भलाई । आजु कह्यो जब महत गँवाई ॥ यह सुनि अमर गए सरमाई । सुनहु राज हम जानि न पाई ॥ अब सुनिए आपुन मनलाई । ब्रजहि चलौं नहिं और उपाई ॥ वै हैं कृपासिंधु करुणाकर । क्षमा करहिंगे श्रीसुंदरबर ॥ और कछू मनमें जिनि आनहु । हमजो कहैं सत्य करि मानहु ॥ सूर सुरन यह बात सुनाई । सुरपति शरण चले अकुलाई ॥ ६५ ॥

जब जान्यो ब्रज देव मुरारी । उतरिगई तब गर्वखुमारी ॥ व्याकुल भयो डरचो जिय भारी । अनजानत कीन्हीं अधिकारी ॥ बैठि रहेते नहिं बनिआवै । ऐसोको जो मोहिं बचावै ॥ बार बार यह कहि पछितावै । जाउँ शरण बलमनहि धरावै ॥ जाइ परौं चरणन शिरधारो । की मारौ की मोहि उधारो ॥ अमरन कह्योकरौ अवसारी । ऐरावतको लेहु हँकारी ॥ सूर शरणसुरपति चले धाई । लिये अमरगण संग लगाई ॥ ६६ ॥

करत बिचार चल्यो सन्मुख ब्रज । लटपटात पग धरणि धरत गज ॥ कोटि इंद्र जाके रोमनि रज । ब्रज अवतार लियो माया तज ॥ उतरि गगन पुहुमी पर आए । श्वेतवरन ऐरावति लाए ॥ ब्रजबासी सब देखन पाए । चकृत भए मन सबहि भ्रमाए ॥ कहत सुनी लोगन मुख बाता । येई हैं सुरपतिसुर ज्ञाता ॥ देखि सैन ब्रजलोग सकात । यह आयो कीन्हे कछु घात ॥ सूर श्यामको जाइ सुनाए । सुरपतिसैन साजि ब्रज आए ॥६७॥

निकट जानि त्यागे वाहनको । सकुचत चले कृष्ण सन्मुखको । कछु आनंद कछुक मनमें दुख । हर्ष विषाद तक्यो हरिसन्मुख ॥ परचो धाइ चरणन शिरनाई । कृपासिंधु राखहु शरणाई ॥ किए अपराध बहुत बिन जाने । प्रभु उठा लिए कछु मुसकाने ॥ श्रीमुख कह्यो उठहु सुरराजा । बदन उठाइ सकत नहिं लाजा ॥ ये दिन बृथा गए बिनकाजा । तुमको नहिं जान्यों ब्रजराजा ॥ सूर श्याम लीन्हे उरलाई । अशरनशरन निगम यह गाई ॥ ६८ ॥

हँसि हँसि कहत कृष्ण मुखबानी । हम नाहिन रिस तुमपर आनी ॥ तुमकत अति शंका जिय जानी । भली करी ब्रजराख्यो पानी ॥ यह सुनि इंद्र अतिहि सकुचान्यो ।

ब्रज अवतार नहीं मैं जान्यो ॥ राखिराखि त्रिभुवनके नाथा । नहिं मोते कोउ अवर अनाथा ॥ फिरि फिरि चरण धरत लै माथा । क्षमा करहु राखहु मोहिं साथा ॥ रवि आगे खद्योत प्रकाशा । मणिआगे ज्यों दीपक नाशा ॥ कोटि इंद्र रचि कोटि विनाशा ॥ मोहिं गरीबकी केतिक आशा ॥ दीनवचन सुनि भवके बासा । क्षमा भयो जल पर हुतासा ॥ अमरापति चरणन तर लोटत । रहीनहीं मनमें कहुँ खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाई । सुरपति शीश अभय कर नाई हँसि दीन्ही प्रभु लोकबडाई । श्रीमुख कह्यो करौ सुख जाई ॥ धन्यधन्य जनके सुखदाई । जय जय ध्वनि देवन मुख गाई ॥ शिव विरंचि चतुरानन नारद । गौरीसुत दोऊ सँग शारद ॥ रविशशि वरुण अनल यमराजा । आजु भए सब पूरनकाजा ॥ अशरनशरन सदा तुव बानो । यह लीला प्रभु तुमही जानो ॥ मातासों सुत करै ढिठाई । माता फिरि ताको सुखदाई ॥ ज्यों धरनीहल खोदि बिनाशै । सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशै ॥ कर कुठार लै तरुहि गिरावै । वह काटे वह छायाछावै ॥ जैसे दशन जीभ दलिजाइ । तब कासों सो कहै रिसाइ ॥ धनि ब्रजधनि गोकुल वृन्दावन । धनि यमुना धनि लता कुंजवन ॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा । बालकेलि हरिके रसमोदा ॥ अस्तुति सुनि मन हर्ष बढ़ायो । साधुसाधु कहि सुरनि सुनायो ॥ तुमहि जाइ जब मोहि जगायो । तुम्हरेहि काज देह धरिआयो ॥ तुमैं राखि असुरन संहारौं । तनु धरि धरणीभार उतारौं ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो । जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर शिर धरि धरि चले देवगन । पहुँचे अमरलोक आनँद मन ॥ यह लीला सुर बरनि सुनाई । गाइ उहीं सुरनारि बधाई ॥ अमरलोक आनंद भए सब । हर्षसहित आए सुरपति जब सूरदास सुरपति अति हरष्यो । जैजै ध्वनि सुमननि ब्रज बरष्यो ॥ ६९ ॥

हरि करते गिरिराज उतारचो । सात दिवस जलप्रलय सँभारचो ॥ ग्वाल कहत कैसे गिरि धारचो । कैसे सुरपति गर्व निवारचो ॥ वज्रायुध जल वर्षि सिराने । परचो चरण तब प्रभुकरि जाने ॥ हम सँग सदा रहत हैं ऐसे । यह करतूति करत तुम कैसे ॥ हम हिलिमिलि तुम गाइ चरावत । नंद यशोदा सुवन कहावत ॥ देखिरहीं सब घोषकुमारी । कोटि काम छबिपर बलिहारी ॥ कर जोरत रवि गोद पसारैं । गिरिवरपति प्रभु होहिं हमारैं ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी । कब लीन्हों कब धरचो उतारी ॥ तनकतनक भुज तनक कन्हाई । यह कहि उठी यशोदा माई ॥ कैसे पर्वत लियो उचकाई । भुज चापति चूमति बलिजाई ॥ बारंबार निरखि पछिताइ । हँसत देखि ठाढे बल भाई ॥ इनकी महिमा काहु न पाई । गिरिवर धरचो इहै बहुताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मंडा । रवि शशि धरणीधर नव खंडा ॥ यहि ब्रज जन्म लियो कै बारा । जहांतहां जल थल अवतारा ॥ प्रगट होत भक्तहिके काजा । ब्रह्म कीट सम सबके राजा ॥ जहँ २ गाढ परै तहँ आवैं । गरुड छांडि तब सन्मुख धावैं ॥ ब्रजहीमें नित करत विहार । सहज स्वभाव भक्त हितकार ॥ यह लीला इनको अति भावै । देह धरत पुनि पुनि प्रगटावै ॥ नेक तजत नहिं ब्रज नर नारी । इनके सुख गिरि धरत मुरारी ॥ गर्ववंत सुरपति चढि आयो । वामकरज गिरि टेकि दिखायो ॥ ऐसे हैं प्रभु गर्वप्रहारी । मुख चूमति यशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नितप्रति

गावैं ॥ आपुन सीखि औरनि सिखरावैं ॥ सुनैं सीख पढि मनमें राखैं । प्रेमसहित मुखते पुनि भाखैं ॥ भक्ति मुक्तिकी केतिक आसा । सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ चतुरानन जाको रस मानै । शेष सहस मुख जाहि बखानै ॥ आदि अंत कोऊ नहिं पावै । जाको निगम नेति नित गावै ॥ सूरदास प्रभु सबके स्वामी । शरन राखि मोहिं अंतर्यामी ॥७०॥

राग सोरठ ॥ तेरे भुजन बहुत बल होइ कन्हैया । बारबार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया ॥ श्याम कहत नहिं भुजा पिरानी ग्वालन कियो सहैया । लकुटन टेकि सबन मिलि राख्यो अरु बाबा नँदरैया ॥ मोसों क्यों रहतो गोबर्धन अतिहि बडो वह भारी । सूरश्याम यह यहि परबोध्यो देखि चकृत महतारी ॥ ७१ ॥

राग देवगंधार॥सबै मिलि पूजौ हरिकी बँहियाँ । जो नहिं लेत उठाइ गोबर्धनको बांचत ब्रजमहियाँ ॥ कोमल कर गिरि धरचो घोष पर शरद कमलकी नहियाँ । सूरदास प्रभु तुमरे दरशको अनँद होत ब्रजमहियाँ ॥ १ ॥

अध्याय ॥ २८ ॥ अथ नंदको वरुण लेगये ॥ राग बिलावल ॥ उत्तम शुक्ल एकादशि आई । भक्ति मुक्ति दायक सुखदाई ॥ निराहार जलपान बिवर्जित । पाप न रहत धर्मफल अर्जित ॥ नारायणहित ध्यान लगायो । और नहीं कहुँ मन बिरमायो ॥ बासर ध्यान करत सब बीत्यो । निशि जागरण करन मन चीत्यो ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायो । शालि-ग्राम तहां बैठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढ़ायो । पुहुपमंडली तापर छायो ॥ प्रेमसहित करि भोग लगायो । आरति करि तब माथो नायो ॥ सादर सहित करी नँद पूजा तुम तजि देव और नहिं दूजा ॥ तृतिय पहर जब रैनि गमाई । नंदमहरिसों कही बुझाई ॥ दंड एक द्वादशी सकारै । पारनकी बिधि करौ सवारै ॥ यह कहि नंद गए यमुनातट । लैधोती बिधि कियो कर्म षट ॥ झारी भरि यमुनाजल लीनो । बाहिरजाइ देहकृत कीनो ॥ लै माटीकर चरन पखारी । अति उत्तमसों करि मुखारी ॥ अँचवन लै पैठे नंद पानी । जल बाजत दूतन तब जानी ॥ बरुनपास लाए ततकालहि । नंदहि बाँधि लैगये पतालहिं ॥ जान्यो वरुण कृष्णके तातहिं । मनहीं मन हर्षित इहि बातहिं ॥ भीतर लै राखे नँद नीके । अंतरपुर महलन रानीके ॥ रानीसबन नंदको देख्यो । धन्य जन्म अपनो करि लेख्यो ॥ जिनके सुत त्रैलोकगुसाईं । सुर नरमुनि सबके हैं साईं ॥ वरुण कही मन हर्ष बढाए । बडी बात भई नंदहि ल्याए॥अंतर्यामी जानत बाता । अब आवत ह्वैहैं जगत्राता ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पायो । जाको मुनि जन ध्यान लगायो ॥ जाको नेति निगम गावत हैं । जाको मुनि-वर जन ध्यावत हैं॥जाको ध्यानकरैं शिव योगी । जाको सेवत सुरपति भोगी॥जो प्रभुहैं जलथल सब व्यापक । जो हैं कंसदर्पको दापक । गुण अतीत अविगत अविनाशी ॥ सो ब्रजमें खेलत सुखरासी ॥ धनि मेरे भृत नंदहि ल्याए । करुणामय अब आवत धाए ॥ महरि कही तब सब ग्वालनिको । बड़ी बार भइ नंद महरको ॥ गए ग्वाल तब नंद बोलावन । देख्यो जाइ यमुनाजल पावन ॥ जहँतहँ ग्वाल ढूँढ़ि घर आए । धोती अरु झारी वै लाए ॥ मनमन शोच करैं अकुलाए । कहि यशुदासों नंद न पाए ॥ धोती झारी

तटमें पाई । सुनत महरि मुख गयो सुखाई ॥ निशा अकेले आजु सिधाए । काहू धौं जलचर धरि खाए ॥ यह कहि यशुमति रोइ पुकारचो । मों बरजत कत रैनि सिधारचो ॥ ब्रजजन लोग सबै उठिधाए ॥ यमुनाके तट नंद न पाए ॥ बनबन ढूंढ़त गाउँ मझारैं । नंदनंद कहि लोग पुकारैं ॥ खेलतते हरि हलधर आए । रोवत मात देखि दुख पाए ॥ कत रोवत है यशुदा मैया । पूछत जननीसों दोउ भैया ॥ कहत श्याम जनि रोवहु माता । अबहीं आवत हैं नंद ताता ॥ मोसों कहि गए अबहीं आवन । रोवै मति मैं जात बोलावन ॥ सबके अंतर्यामी हैं हरि । लैगयो बांधि बरुन नंदहि धरि ॥ यह कारज मैं वाको दीन्हों । वाके दूतन नंदन चीन्हों ॥ तरुन लोक तबहीं प्रभु आए । सुनत बरुन आतुर ह्वै धाए ॥ आनँद कियो देखि हमको सुख । कोटि जन्मके गए सबै दुख । धन्य भाग्य मेरे बड़े आजु । चरण कमल दरशन सुखकाजु ॥ पाटंबर.पाँवडे डसाए । महलन बंदन वार बँधाये ॥ रत्नखचित सिंहासन धारचो । तिहिपर कृष्णहि लै बैठारचो ॥ अपने कर प्रभु चरण पखारे । जे कमला उरते नहिं टारे ॥ जे पद परसि सुरसरी आई । तिहूं लोक है विदित बड़ाई ॥ ते पद बरुन हाथ लै धोए । जन्म जन्मके पातक खोये ॥ कृपासिंधु अब शरन तुम्हारी । इहि कारण अपराध बिचारी ॥ आपु चले हरि नंदहि देखन । बैठे नंद राजवर भेषन ॥ नृपरानी सब आगे ठाढीं । मुखमुख ते सब अस्तुति काढीं ॥ पांइन परीं कृष्णके रानी । धन्य जन्म सबहिन कहि मानी ॥ धन्य नंद धनि धन्य यशोदा । धनि धनि तुमैं खिलावति गोदा ॥ धनि ब्रज धनि गोकुलकी नारी । पूरन ब्रह्म तहां वपु धारी ॥ शेष सहस मुख बरनि न जाई । सहस रूपको करै बड़ाई ॥ देखि नन्द तब करत विचारा । यह कोउ आहि बड़ो अवतारा ॥ नन्द मनहि अति हर्ष बढ़ायो । कृपासिंधु मेरे गृह आयो ॥ बरुनहिं दीनी लोक बड़ाई । तुम हौ एहि पतालके राई ॥ कहा देत मोहिं लोक बड़ाई । वृंदावन रज करौ सदाई ॥ बरुन थाप नंदहि लै आए । महर गोप सब देखन धाए ॥ नंदहि बूझत हैं सब बाता । हम अति दुखित भए सब गाता ॥ एकादशी काल्हि मैं कीनों । निशि जागरन नेम यह लीनों ॥ तीन पहर निशि जागि गँवाई । तब लीनी मैं महरि बुलाई ॥ एक दण्ड द्वादशी सुनाई । ता कारण मैं करी चँड़ाई । एक दण्ड द्वादशि कैयो पल । रैनि अछत मैं गयो यमुनजल ॥ गयो यमुन कटिलौं भीतर भरि । बरुन दूत लै गयो मोहिं धरि ॥ तहँते जाइ कृष्ण मोहिं ल्यायो । हम कोउ बड़े पुरुष है पायो ॥ इनकी महिमा कोउ न जानै । बरुन कोटि मुख कहै बखानै ॥ रानिन सहित परचो चरणनतर । बंदनवार बँधे महलनि घर ॥ मेरो कह्यो सत्यकै मानों । इनको नर देही जिनि जानों ॥ यशुमति सुनि चकृत इह बानी । कहत कहा यह अकथ कहानी ॥ ब्रज नर नारि सुनत जे गाथा । इनते हम सब भए सनाथा ॥ माया मोह करि सबै भुलाए । नंदहि बरुन लोकते ल्याए ॥ नन्द एकादशि बरणि सुनाई । कहत सुनत सबके मन भाई ॥ जो या पदको सुनै सुनावै । एकादशि ब्रतको फल पावै ॥ यह प्रताप नंदहि दिखराई । सूरदास प्रभु गोकुलराई ॥ १ ॥

राग कान्हरो ॥ नंदहि कहति यशोदारानी । मोहिं बरजत निशिगए यमुन तट पैठे जाइ अकेले पानी ॥ अब तो कुशल परी पुण्यनिते द्विजन करौ बहुदान । बोलि लेहु

बाजने बजावहु देहु मिठाई पान ॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंददुआर । सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे इहिवार ॥ २ ॥

राग बिलावल ॥ कहत नन्द यशुमति सुनि बात । अब अपने जिय सोचु करति कत जाके त्रिभुवन पतिसो तात ॥ गर्ग सुनाइ कही जो बाणी सोई प्रगट होति है जात । इनते नहीं और कोउ समरथ एई हैं सबहीके तात ॥ माया रूप मोहिनी लगाइ डरि भूले सबै जे गाथं । सूर श्याम खेलतते आए माखन दे माँ हाथ ॥ ३ ॥

राग गौरी ॥ तबहिं यशोदा माखन ल्याइ । मैं मथिकै अबहीं धरि राख्यो तुमरे काज मेरे कुँवर कन्हाइ ॥ मांगिलेहु एही बिधि मोसे मो आगे तुम खाहू । बाहेर जिन कबहूं खेये सुत डीठि लगैनी काहू ॥ तनक तनक कछु खाहु लाल मेरे ज्यों बढिआवै देह । सूर श्याम अब होहु सयाने वैरिनके मुखखेह ॥ ४ ॥

अथ दानलीला । राग बिलावल ॥ भक्तनके सुखदायक श्याम । इस्त्री पुरुष नहीं कछु नाम संकटमें जिनि जहां पुकारे । तहां प्रगटि तिनको उद्धारे ॥ सुख भीतर जिमि सुमिरन कीन्हों । तिनको दरश तहां हरि दीन्हों ॥ दुख सुखमें जो हरिको ध्यावै । तिनको नेक न हरि बिसरावै ॥ चितदै भजै कौनहू भाउ । ताको तैसो त्रिभुवन राइ ॥ कामातुर गोपी हरि ध्यायो । मन वच कर्महिसों मन लायो । षटऋतु तप कीनों तनु गारी । होहिं हमारे पति गिरिधारी ॥ अंतर्यामी जानत सबकी । प्रीति पुरातन शाली तबकी ॥ बसन हरे गोपिन सुख दीनो । नाना विधि कौतुकरस कीनो ॥ युवतिनके इह ध्यान सदाई । नेक न अंतर होइ कन्हाई । घाट बाट यमुनातट रोकै । मारग चलत जहां तहँ टोकै ॥ काहूकी गागरि धरि फोरै । काहूसों हंसि बदन सकोरै ॥ काहूको अंकम भरि भेंटै । कामव्यथा तरुणिनके मेटै ॥ ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी । प्रभुहैं निरलोभी निहकामी ॥ भाववश्य सँगही सँग डोलैं । खेलैं हँसैं तिनहिसों बोलैं ॥ ब्रजयुवती नहिं नेक बिसारैं । भवनकाजचित हरिसों धारैं ॥ गोरसलै निकसीं ब्रजबाला । तहँतिनि देखे मदनगोपाला ॥ अंग अंग सजि शृंगार वर कामिनि । चलीं मनहुयूथनि जुरि दामिनि ॥ कटि किंकिनिनूपुर बिछियाधुनि मनहु मदनके गजघंटा सुनि ॥ जाति माट मटुकी शिर धरिकै । मुखमुख गान करति गुण हरिकै ॥ चन्द्रबदनि तनु अति सुकुमारी । अपने मन सब कृष्ण पियारी ॥ देखि सबनि रीझे बनवारी । तब मनमें इक बुद्धि बिचारी ॥ अब दधि दान रचौं इक लीला । युवतिन संग करौं रस लीला ॥ सूर श्याम सँग सखन बोलायो । यह लीला कहि सुख उपजायो ॥ ५ ॥

राग जयतश्री ॥ सुनत हँसीं सुख होहि दान दहीको लाग्यो । निशिदिन मथुरा दधि बेचैं श्यामदान अब मांग्यो ॥ प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बोलाए । तेइतेइ लीने साथ मिले जे प्रकृति बनाए ॥ डगरि गए अनजानही गह्यो जाइ बन घात । पेड पेड तरुके लगे ठाटि ठगनको ठाट ॥ ६ ॥

इहां ग्वालि बनि बनि जुरीं सब सखी सहेली । शिरनि लिए दधि दूध सबै यौवन अलबेली ॥ हँसत परस्पर आपुमें चली जाहिं जिय भोर । तबहि आनि घातहि परीं छेकिलिए चहुँओर ॥ ७ ॥

देखि अचानक भीर भई सब चकृत किशोरी । ज्यों मृगशावकयूथमध्य बागुरि चहुँ ओरी ॥ शंकित ह्वै ठाढी भई हाथ पाँव नहिं डोल । मनहुँ चित्रकीसी लिखी मुखहि न आवै बोल ॥ ८ ॥

तब उठि बोले ग्वाल डरहु जिनि कान्ह दुहाई । ठग तस्कर कोउ नाहिं दान यदुपति सुखदाई ॥ आवत निशि रहौ श्यामराज भय नाहीं । जो कछु लागै दानको तुम घाटि देहु तेहिमाहीं ॥ ९ ॥

तब हँसि बोली ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो । चोरी भग्यो न पेट आनि अब दान लगायो ॥ तब उलटी पलटी फवी जब शिशु गेहे कन्हाइ । अब ओहि कछु धोखे करौं तौ छिनकमाहँ पति जाइ ॥ १० ॥

तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोच सदाइ । महरि महर सुखपाइ शंकतजि करहु ढिठाई ॥ अब वह धोखो मेटिकै छांडि देहु अभिमान । करि लेखो अब दानको दियहि पाइहौ जान ॥ ११ ॥

तब हँसि बोलीं ग्वालि डरनि तुम तजी ढिठाई । बहुतै नंद निकाज भयो तुव तप अधिकाई ॥ कालिहि घर घर डोलते खाते दही चुराइ । गति कछू सपनों भयो प्रात भई ठकुराइ ॥ १२ ॥

भली कही नहिं ग्वालि बातको भेद न पायो । पितारचित धन धाम पुत्रके काजहि आयो ॥ तुमसे प्रजा बसाइकै राखे हैं इह पाइ । ते तुम हम सरबस भई अब मिलहु छाँडि चतुराइ ॥ १३ ॥

तब झुकि बोली ग्वालि बात किन कहौ सम्हारे । ऐसो को वहि गयो प्रजा ह्वै बसै तुम्हारे ॥ हमहूं तुम नृपकंसकै बसैं बास इक ठाउँ । देखौ धौं घर जाइकै हम तजैं तुम्हारो गाउँ ॥ १४ ॥

गाउँ हमारो छाँडि जाइ बसिहौ केहिकेरे । तीन लोकमें कौन जीव नाहिन बश मेरे ॥ कंसहि को गनती गनै जाके हमहि कहाहु । दिये दान पै बांचिहो नातरु नहीं निबाहु ॥१५॥

छोटे मुँह बडी बात कहौ किनि आपु सँभारे । तीन लोक अरु कंस कबहिं वश भए तुम्हारे ॥ यह बाणी तिनसों कहो जो कोउ होइ अजान । ऐसे होहु जु रावरे हम जानति परवान ॥ १६ ॥

लेखौ जैहै भूलि कहूंकी बात चलावत । झूठी मिलवत आनि सुनत हमको नहिं भावत ॥हमसों लीजै दानके दाम सबै परखाइ । थैली मांगि पठाइए पीतांबर फटिजाइ॥१७॥

काहेको सतरात बात मैं सांची भाषत । झूँठी सब तुम ग्वारि बात मेरी गहि नाखत ॥ कह्यो मानि लेखो करौ देहु हमारो दान । सौंह बबा मोहिं नंदकी ऐसी देउँ न जान ॥१८॥

नंद दोहाई देत कहा तुम कंस दोहाई । काहेको अठिलात कान्ह छाँडौ लरिकाई । पहिली परिपाटी चलौ नई चलौ क्यों आजु । नृपति जानि जो पावई पुनि पै होइ अकाजु ॥ १९ ॥

लरिका मोको कहति नाहिं देखी लरिकाई । पय पीवत संहारि पूतना स्वर्ग पठाई ॥ अघा बका शकटा तृणा केशीमुख कर नाइ । गिरि गोवर्धन कर धरयो यह मेरी लरिकाइ ॥ २० ॥

सबै भली तुम करी हमैं अब कहत कहा हो । ऐसी बात करौ हो मोहन जैसी होइ लहाहो ॥ हँसी पलक द्वै चारिकी बीतन लागे याम । बनमें राखी रोकिकै नारि पराई श्याम ॥ २१ ॥

हँसी करत हौ तुमहि भली गइ मति ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहि दई बिन काजहि गारी ॥ बात कहौ कछु जानिकै वृथा बढावत शोर । सदाजाहु चोरटी भई आजु परी फँद मोर ॥ २२ ॥

माँगि लेहु दधि देहिं दानको नाउँ मिटावहु । देत दुहाई नंदराइकी दान न सदा लगावहु ॥ हमहिं कहत हौ चोरटी आपु भये हौ साहु । चोरी करत बडे भए मही छाक लै खाहु ॥ २३. ॥

दही लेत हौं छीनि दान अंगनिको लैहौं । लैहौं रूपहि दान दान यौवनपै कैहौं ॥ तुम सब कंचन भार लै मेरे मारग जाहु । महीदही दिखरावहू कैसे होत निबाहु ॥ २४ ॥

जाहु भले हो कान्ह दान अँग अँगको मांगत । हमरो यौवन रूप आंखि इनके गडि-लागत ॥ सबै चलीं झहराइकै मटुकी शीश उठाइ । रिस करि कसि कटि पीतपट ग्वारि गही हरि धाइ ॥ २५ ॥

मटुकी लई छिडाइ हार चोली बंद तोरयो । भुजभरि धरि अंकवारि बांह गहिकै झकझोरयो ॥ माखन दधि लियो छीनिकै कह्यो ग्वाल सब खाहु । मुख झगरति आनंद उर धिरवत हैं घर जाहु ॥ २६ ॥

देखो हरिको काम झटकि चोली बंद तोरयो । हमको भरि अँकवारि बांह धरि धरि झकझोरयो ॥ यशुमतिसों कहिये चलौ अब प्रगटी तरुनाइ । दधि माखन सब छीनिलै ग्वालनि दए खवाइ ॥ २७ ॥

जाइ कहौ जू भली बात मैयाके आगे । तुमको जोवन रूप दान देती नाहिं मांगे ॥ तुम जो कैहौ जाइकै जननी नहीं पत्याइ । सूर सुन हुरी ग्वालिनी आवहुगी पछिताइ। २८॥

राग काफी ॥ ऐसे दान न मांगिये जो हमपै दियो न जाइ । बनमें पाइ अकेली युवतिनि मारग रोकत धाइ ॥ घाट बाट अवघट यमुनातट बातैं कहत बनाइ । कोऊ ऐसो दान लेत है कौने सिखै पठाइ ॥ हम नाहिं जानति तुम यों नाहीं रैहौ गारी खाइ । जो रस चाहौ सो रस नाहीं गोरस पियहु अघाइ ॥ औरनसों लै लीजिये गिरिधर तब हम देहिं बोलाई । सूर श्याम कत करत अचगरी हमसों कुँवर कन्हाई ॥ २९ ॥

राग नट ॥ दान लेहु देहु जान काहेको कान्ह देत हौ गारी । जो कोऊ कह्यो करैरी हठि याही मारग आवै ब्रजनारी ॥ भली करी दधि माखन खायो चोली हार तोरि सब डारी । जोवन दान कहूं कोउ माँगत यह सुनि लाजन मारी ॥ होत अवार दूरि घर जैवे पैया लागै डरति हैं भारी । हमहिं तुमहिं कैसोई झगरो सूर सुजान हम गँवारी ॥ ३० ॥

राग भैरव ॥ भोरहिते कान्ह करत मोसों झगरो । औरन छांडि परे हठ हमसों दिनप्रति कलह करत गहि डगरो ॥ अन बोहनी तनक नहिं देहौं ऐसेहि छीनि लेहु बरु सगरो । सब कोऊ जात मधुपुरी बेचन कौने दियो दिखावहुकगरो ॥ अंचल ऐंचि राखत हौ जान देहु अब होत है दगरो । मुख चूमति हँसि कंठ लगावति आपुहि कहति न लाल अचगरो ॥ सूर सनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडहु दियो परत नहिं पगरो । परम मगन ह्वै रही चितै मुख सबते भाग याहिको अगरो ॥ ३१ ॥

राग कान्हरो ॥ दान लेहौं सब अंगनिको । अति मदगलित तालफलते गुरु इनि युग उरज उतंगनिको ॥ खंजनको कंज मीन मृगशावक भवँर जवँर भ्रुवभंगिनको । कुंदकली बंधूक बिंबफल बर ताटंक तरंगनिको ॥ कोकिल कीर कपोत किसलता हाटक हंस फनिंगनिको । सूरदास प्रभु हँसि वश कीन्हों नायक कोटि अनंगनिको ॥ ३२ ॥

राग काफी ॥ कान्ह भलेहो भलेहो । अंगदान हमसों तुम मांगत उलटी रीति चलेहो ॥ कौन दोष कीन्हों माखन छीनों काहेको तुम औरहि भाव मिलेहो । दान लेहु कछु और कहतहो कौन प्रकृतिही लेहो ॥ हारै तोरचो चरिहि फारचो बोलत बोल हठीलेहो । ऐसो हाल हमारो कीन्हों जातिहुती दही लेहो ॥ हमहैं तुम्हरे गाउँकी कछुयाते ऐंड गही लेहो । सूरदास प्रभु और भए अब तुम नाहिं होहु पहीलेहो ॥ ३३ ॥

राग पूरबी ॥ तू मोसों दान माँगि किनु लैहो नंदके लाला । ऐसी बातनि झगरो ठानोंहो मूरख तेरो कौन हवाला ॥ नंदमहरकी कानि करत हैं छांडि देहु ऐसो ख्याला । सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों हँसतहि ग्वारिनि भई बिहाला ॥ ३४ ॥

राग गूजरी ॥ सूधे दान काहे न लेत । और अटपटी छांडि नंदसुत रहहु कँपावत बेत ॥ बृंदावनकी बीथिनि तकि तकि रहत गुमान समेत । इनि बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत ॥ अबलनि रवँकि रवँकि पकरतहो मारग चलन न देत । सोई तुम कछु कहि न जनावत कहा तुम्हारे हेत ॥ आजु न जानदेहुं री ग्वालिनि बहुत दिननिको नेत । सूरदास प्रभु कुंजनभवन चलि जोर उरनि नख देत ॥ ३५ ॥

राग कान्हरो ॥ जोबनदान लेउँगो तुमसों । जाके बल तुमवदतिन काहुहि कहा दुरावति हमसों ॥ ऐसो धन तुम लिये फिरतिहौ दानदेत सतराति । अतिहि गर्वते कह्यो न मोसों नितप्रति आवतिजाति ॥ कंचन कलश महारसभारे हमहूं तनक चखावहु । सूर सुनहु करि भार मरति कत हमहि न मोल दिवावहु ॥ ३६ ॥

कहा कहत तू नंदढिठौना । सखी सुनहु री बातैं जैसी करत अतिहि अचभौना ॥ वदन सकोरत भौंह मरोरत नैननिमें कछु टोना ॥ जोबनदान कहाधौं मांगत भई कहूं नाहिं होना ॥ हम कहैं बात सुनहु मनमोहन कालि रहे तुम छौना । सूर श्याम गारी कहा दीजै इक बुधिहै घर खोना ॥ ३७ ॥

राग पूरबी ॥ ऐसे जिन बोलहु नंदलाला । छाँडि देहु अचरा मेरो नीके जानत औरसी बाला ॥ बार बार मैं तुमहि कहतिहौं परिहैं बहुरि जंजाला । जोबनरूप देख ललचाने

अबहीते ए ख्याला ॥ तरुणाई तनु आवन दीजै कित जिय होत बिहाला। सूरश्याम उरते कर टारहु टूटे मोतिनमाला ॥ ३८ ॥

राग सुघराइ॥ कहागति प्रकृति परी हो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत राखत वेरे। जे बतियां तुम हँसि हँसि भाषत इहै चलै चहुँ फेरे ॥ अब सुनिहै इह बात आजुकी बनमें कान्ह युवति सब नेरे। सकुचति हैं घरघर घेराको नेक लाज नाहिं तेरे ॥ अति हि अबेरभई घर छोडे चितै हँसत मुखतन हरि हेरे। सूरदास प्रभु झुकत कहा हौ चेरी हे कहुकेरे ॥ ३९ ॥

राग टोडी ॥ कहा कहतु तुमसों मैं ग्वारिनि। दान देहु सब जाहु चली घर अतिकल होत गँवारिनि ॥ कबहूं बातनहीं घर खोवति कबहुँ उठति दैगारिनि। लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवनको ऐनोखीबनिजारिनि ॥ पेलाकरति देति नहिं नीके तुमहो बडी बंजारनि। सूरदास ऐसो गुन जाके ताके बुद्धि पसारनि ॥ ४० ॥

पुरिया कान्हरो ॥ कान अब नारि गह्योहै जानि । मांगत दान दहीको अबलौं लैकछु अबेरै ठानि ॥ औरनिसों तुम कहा लियो है सो सब हमहि देखावहु आनी ॥ मांगतहैं दधि सो हम दैहैं कहत कहा यह बानी ॥ छांडि देहु अचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पॅहिचानी। सूर श्याम तुम रति पति नागर नागरि अतिहि सयानी ॥ ४१ ॥

राग कान्हरो ॥ लैहौं दान अंग अंगनको। गोरे भाल लाल सेंदुरछवि मुक्ता बर शिर सुभग मंगको ॥ नकवेसरि खुटिला तरिवनको गरहमेल कुच युग उतंगको। कंठ सिरि दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रंगको ॥ बहु नग लगे जरावकी अंगिया भुजा बहू- टनि वलय संगको। कटि किंकिणिको दान जु लैहौं तिन रीझत मन अनंगको। जेहरि पग जकरयो गाढे मनो मंद मंद गति यह मतंगको। जोबन रूप अंग पाटंबर सुनहु सूर सब यह प्रसंगको ॥ ४२ ॥

राग टोडी ॥ अरी यह ढीठ कान्ह बोलि न जानै बरवस झगरो ठानै। जो भावत सोइ सोइ कहि डारत ऐसो निधरक नहिं कहूं देख्यो रूप जोवन अनुमानै। अंग अंगको दान लेत नहिं घरकेको पहिचानै। हम दधि बेचन जाति हैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि अंचल कंसकी आन न मानै ॥ ऐसी बात सँभारि कहौ हरि हम तुमको पहिचानै। सूर श्याम जो हमसों मांगत सो पैहौ कहूँ और त्रियनपै ये बातैं गढि बानै ॥ ४३ ॥

राग मलार ॥ तोहिं कमरी लकुटिया भूलगई पीतवसन दुहुँ करन बलासी। गोकुलकी गाइनि चरैबो छोडि दोन्हौं कीन्हौं नवलबधू संग नवल नेह आयो परम बिलासी ॥ गोरस चोराई खाइ वदन दुराइ राखै मन न धरत वृंदाबनको निवासी। सूर श्याम तोहिं घरघर सब जानै इहां कोहै तिहारि दासी ॥ ४४ ॥

वै बातैं भूलिगई नंदमहरके सुवन करतहौ अचगरी। बनबन धेनु चरावत फिरत निशि बासर धावत बैन बजावत दानी भए गहि डगरी ॥ बनमें पराई नारि रोकि राखी बनवारी जान नहीं देत ह्यां कौन ऐसी लंगरी। मांगत योबनदान भलेहौ जुभले

कान्ह मानत न कंस आन को बसिहै ब्रजनगरी। कबहुं गहत दधि मटुकी अचानक कबहुं गहतहो अचानक गगरी ॥ सूर श्याम जहँ तहां खिझावत जो मनभावत दूरि करौ लंगर सगरी ॥ ४५ ॥

राग पूरवी ॥ तुम कबते भये हो जू दानी। मटुकी फोरि हार गहि तोरचो इन बातन पहिचानी ॥ नंदमहरकी कान करति हौं नातर करती मेहमानी। भूलिगए सुधि ता दिनकी जब बांधे यशोदा रानी ॥ अबलौं सही तुम्हारी ढीठो तुम यह कहत डरानी। सूर श्याम कछु करत न बनिहै नृप पावै कहुँ जानी ॥ ४६ ॥

दधि मटुकी हरि छीनि लई। हार तोरि चोली बंद तोरचो जोबनकै बल ढीठ भई ॥ ज्यों ही ज्यों हम सूधे बोलत त्यों त्यों अतिही सतरगई। बाद करति अबहीं रोवहुगी बार बार कहि दई दई ॥ अंश परायो देहु न नीके मांगतहि सब करत खई। सूर सुनहुँ मैं कहत अजहुँ लौं प्रीति करहु जो भई सो भई ॥ ४७ ॥

राग काफी ॥ कन्हैया हार हमारो देहु। दधि लवनी घृत जो कछु चाहौ सो तुम ऐसेहि लेहु ॥ कहा करैं दधि दूध तिहारो मोसों नाहीं काम। जोबनरूप दुराइ धरचो है ताको लेति न नाम ॥ नीके मन ह्वै मांगत तुमसों बैर नहीं उर नाखति। सूर सुनहु री ग्वारि अयानी अंतर हमसों राखति ॥ ४८ ॥

राग गौरी ॥ हमको लाज न तुमहि कन्हाई। जो हम एहि मारग सब आई तौ तुम हमसों करत ढिठाई ॥ हाहा करति पांइ तुम लागति रीती मटुकी देहु मँगाई। काको वदन प्रातही देख्यो घरते हम छींकतहु न आई ॥ उतहि जात हीं सखी सहेली मैंही सबको इतहि फिराई। सूरश्याम अधम ईहमहि सब लागै तुमहि भलाई ॥ ४९ ॥

राग बिलावल ॥ मैं भरुहाये लागत हौं कनककलश रस मोहिं चखावहु जो मैं तुमसों मागत हौं ॥ वोही ढंग तुम रहे कन्हाई उठीं सबै झिझिकारि। लेहु अशीश सबनके मुखते कतहि दिवावत गारि ॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहत नहिं जानत। कैहैं जाइ यशोदासों प्रभु सूर अचगरी टानत ॥ ५० ॥

हार तोरि बिथराइ दियो। मैया पै तुम कहन चली कत दधि माखन सब छीनिलियो ॥ रिस करि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नाउँ भयो। कालि नहीं एहि मारग पैहौ ऐसो मोसो बैर ठयो ॥ भलीबात घर जाहु आजु तुम मांगत जोवन दान नयो। सूरदास मुखहीसि युवतिन उर उर अंतर काम जयो ॥ ५१ ॥

राग नट ॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनंदन जब वृंदावनते गोकुल जैबो। सखिन कहति छीनिलै मेरी मटकिया गारी देबो ॥ मुहँमोरिबो बाउ अधिकाई सो लैबो। एक गांउ एकहि सँग बनिये कैसे री यहि मग ऐबो ॥ युवतिनको मुख देखि रहतहौ ललचाने कैसे पैबो। कैसे हार तोरि मेरो डारचो बिसरत नहिं रिसकर धैबो ॥ सुन री सखी ढीठ नँद-नंदन चलो सबै यशोमतिसों हम लरिबो। सूर श्याम दधि माखन लीन्हो हारन देहौ बैर समुझि कहिबो ॥ ५२ ॥

राग सारंग ॥ तैं कत तोरचो हार नौसरिको। मोती बगरि रहे सब बनमें गयो कान को तरिको ॥ ए अवगुण जु करत गोकुलमें तिलक दिये केसरिको ॥ ढीठ गुवाल दहीके

माते वोढनहार कमरिको ॥ जाइ पुकारै यशुमति आगे कहत जो मोहन लरिको । सूरज श्याम जानि चतुराई जेहि अभ्यास मढुवरिको ॥ ९३ ॥

राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम हम अब चली यशोमतिके आगे ! तौ वदियो हमको अवहीं तुमको धरि मांगे ॥ इक इक करि बिथराइकै मोतिन लर तोरयो । यह सुनि सुनि मुसुकाइकै हरि भौंह सकोरयो ॥ चलीं महरिपै सुंदरी उरहनलै हरिको । अवहीं बोलि बँधाए लंगर यह लरिको ॥ गईं नंद घरको सबै यशुमति जहां भीतर । देखि महरिको कहि उठीं सुत कीन्हों ईतर ॥ मारग चलन न पाइए री हरिके आगे । सूरदास प्रभु त्रासते ब्रज तजि हम भागे ॥ ९४ ॥

अपने री कुँवर कन्हाईसों माई तू कहति काहि न । आनकी आन कहत नित हमसों उन मनकी कछु जानति नाहिंन ॥ बहुत बचति ब्रजराजकी कानि न हिसति कहां ह्वांते जाहिन । ऐसो भयो कुल कौन तिहारे यौवन दान लियो मोपै चाहिन ॥ अति उत्पात कहां लौं कीजे पीपरको बनदाहिन । आनकी आन कहत नित हमसों उन मनकी कछु जानत नाहिन ॥ काहू बिलोकनि बानि सिखायो मैं अब पहिचानति ताहिन । बूझिधौं देखिह्यां कौन सयानी हरिमेरो मन चुरवायो कापहिचाहिन ॥ जाइ न मिलो सूरके प्रभुको अरुझेनसों अरुझाहिन ॥ ९५ ॥

राग सुघडाई ॥ यशुमति तेरो बारो अतिहि अचगरो । दूध दही माखन लै ढारि दियो सगरो ॥ भोर होत नितप्रति करैहै झगरो । ग्वालबाल संग लये जाइ गहै डगरो ॥ हम तुम एक सम कौन काते अगरो । लियो दियो कछु सोऊ डारि देहु कगरो ॥ सूरदास प्रभु सब गुणनि अगरो । और कहूं जाइ रहैं छांडि व्रज बगरो ॥ ९६ ॥

राग सूही ॥ मैं तुम्हरे मनकी सब जानी । आपु सबै इतराति है दोषन देत श्यामको आनी ॥ मेरो हरि कहँ दशहि बरषको तुम्हरी यौवन मद उदमानी । लाज नहीं आवति इन लँगरिनि कैसे धौं कहि आवति बानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली बँद उर नखघात बनाइ निशानी । कहां कान्हकी तनक अंगुरियां यह कहि बार बार पछितानी ॥ देखहु जाइ और काहूको हरि पर सबै रहत मँडरानी । सूरदास प्रभु मेरो नान्हो तुम तरुणी डोलति अठिलानी ॥ ९७ ॥

राग जयतश्री ॥ जब दधि बेचन जाहि तब मारग रोंकि रहै । ग्वालिनि देखति धाइरी अंचल आइ गहै ॥ अहो नंदकी नारि गारि ऐसी क्यों दीजै । एकठौर बस वास सुनहु ऐसी नहिं कीजै ॥ सुत वैसो तुमहू तो खीझति करैहै यहि गाउँ । जैहैं व्रज तजि अनतही बहुरि सुनो नहिं नाउँ ॥ ९८ ॥

कहाकहति डरपाइ कछू मेरो घटिजै है । तुम बांधति आकाश बात झूठी को सैहै ॥ यौवन दिन द्वै सबहिको तुम ऐसी इतराति । झूठेहि कन्हाई दोषदै तुमहि ब्रज तजि जाति ॥ ९९ ॥

हम यह झूठी कही औरसों बूझि न देखौ । हमसों मांगत दान करहि कौडिनको लेखौ ॥ मटुकी डारै शीशते मर्कट लेइ बुलाइ । महाढीठ मानै नहीं सखन सहित दधि खाइ ॥ ६० ॥

ग्वारिन ढीठि गँवारि कान्ह मेरो अति भोरो। तेरे गोरस बहुत भयो री मेरे थोरो॥ बोलत लाज नहीं तुमहिं सबही भई गँवारि। ऐसी कैसे हरि करै कतहि बढावति रारि॥ ६१॥

अहो यशोदा महरि पूतकी मानी पीवै। हमहिं कहा है होत बहुत दिन मोहन जीवै॥ सुतके कर्म न जनाई करै आपनी टेक। दश गैयन करि कोउ अधिक अहिर जाति सब एक॥६२॥

कहा गैयनकी चली कहा अब चली जानिकी। चकृत भई मैं तुमहिं कहत अनमिलत बातकी॥ जैसी मोसों कहतिहौ को सुनिकै पतिआइ। कौन प्रकृति तुमको परी मोहिं कहौ समुझाइ॥ ६३॥

अहो यशोदा बात कालिकी सुनी कि नाहीं। बंशीबटकी छांह गही हरि मेरी बाहीं। हौं सकुचनि बोली नहीं बहु सखियनकी भीर। गहि बहियां मोहि लै चले हंससुताके तीर॥ ६४॥

येरी मदमत ग्वालि फिरति जोबन मदमाती। गोरस बेचन हारि गूजरी अति इतराती॥ अनमिलती बातैं कहति सुनिपैहै तेरो नाँह। कहँ मोहन कहूँ तू रहै कबहि गही तेरी बाँह॥ ६५॥

सांची सब मैं कहति झूठ नहिं कहिहौं तुमसों। सुतकी राखति कानि बिलग मानतिहौ हमसों॥ कुंजनमें क्रीडा करै मनु वाहीको राज। कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो शिरताज॥ ६६॥

ऐसी बातैं कहति मनहुँ हरि बरष तीसको। दुसह सह्यो नहिं जाइ नेक डर करहु ईशको॥ धनि धनि तुम यह कहतिहो मोको आवै लाज। माखन मांगत रोइकै तेहि दोष देत बिन काज॥ ६७॥

हरि जानतहैं मंत्र यंत्र सीखो कहुँ टोना। बनमें तरुण कन्हाइ घरहि आवत है छोना॥ एक दिवस किन देखहू अंतर रहौ छपाइ। दशको है धौं बीसको नैनकि देखौ जाइ॥६८॥

जाहु चली घर आपने नैननि भरि हम देख्योहै। तीस बीस दश बरष एक दिन सब लेख्योहै॥ डीठि लगावति कन्हको जरैंबरैंवै आंखि। धिंगरि धींग चाचरि करैं मोहि बुलावति साखि॥ ६९॥

धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीन्हीं। सुतको हटकति नाहिं कोटि इक गारी दीन्हीं॥ महतारी सुत दोउ बने वे गम रोकत जाइ। इनहिं कहन दुख आइये ये सबको उठति रिसाइ॥ ७०॥

कहा करौं तुम बात कहूंकी कहूं लगावति। तरुणिन इहै सोहात मोहिं कैसे यह भावति॥ बहुत उरहनो मोहिं दियो अब ऐसो जनि देहु। तुम तरुणी हरि तरुण नहिं मन अपने गुणिलेहु॥ ७१॥

निरउत्तर भई ग्वालि बहुरि कहि कछू न आयो। मन उपज्यो कछु लाज गुप्त हरिसों चित लायो॥ लीला ललित गोपालकी कहतसुनत सुखदाइ। दान चरित सुख देखिकै सूरदास बलिजाइ॥ ७२॥ १०३६॥

राग रामकली॥ नँदनंदन इक बुद्धि उपाई। जे जे सखा प्रकृतिके जाने ते सब लए बोलाई॥ सुबल सुदामा श्रीदामामिलि और महर सुत आए। जो कछु मंत्र हृदय हरि

कीन्हीं ग्वालन प्रगट सुनाए ॥ ब्रजयुवती नितप्रति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति। राधा चंद्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यकभांति ॥ कालिंदीतट कालि प्रातही द्रुम चढ़ि रहौ लुकाइ। गोरस लै जबहीं सब आवैं मारग रोकहु जाइ ॥ भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाइ। सूरदास प्रभु प्रीति हृदयकी सब मनगए जनाइ ॥ ७३ ॥

प्रातहि उठीं गोपकुमारि। परस्पर बोलीं जहां तहाँ यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमही उठिसखा आये नंदके दरबार। आइये उठिकै कन्हाई कह्यो बारंबार ॥ ग्वालटेर सुनत यशोदा कुँवर दियो जगाइ। रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ ॥ मुकुट शिर कटि कसि पितांबर मुरलि लीन्हीं हाथ। सूर प्रभु कालिंदी तट गए सखा लीने साथ ॥ ७४ ॥

राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आए। मैं जानत सब ग्वारि उठीं जब तब तुम मोहिं बोलाए ॥ अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हें घर घर ते ब्रजनारी। हँसे सबै कर तारी दैदै आनँद कौतुक भारी ॥ प्रकृति प्रकृति अपने ढिग राखे संगी पांच हजार। और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥ ७५ ॥

राग बिलावल ॥ हँसत सखनि यह कहत कन्हाई। जाइ चढौ तुम सघन द्रुमनि पर जहँ तहँ रहौ छिपाई ॥ तबलौं बैठिरहौ मुहँ मूंदे जब जानहु अब आई। कूदिपरोगे द्रुमनि द्रुमनिते दैदै नंद दोहाई ॥ चकित होहिं जैसे युवती गण डरनि जाहिं अकुलाई। बेनु विषान मुरलि ध्वनि कीजो शंख शब्द घहनाई ॥ नितप्रति जाति हमारे मारग इह कहियो समुझाई। सूर श्याम माखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ७६ ॥

श्याम सखन ऐसो समुझावत। ब्रजबनिता ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत ॥ कालि जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धि उपाई। अब आवति ह्वैहैं बनि बनि सब मोहीसों चितलाई ॥ तुमसों कछू दुरावत नाहीं कहत प्रगटकरि बात। सुनहु सूर लोचन मेरे बिनु राधा मुख अकुलात ॥ ७७ ॥

ब्रजयुवती मिलि करति विचार। चलो आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति अबार। तुरत चलो अबहीं फिरि आवैं गोरस बेचि सवारै। माखन दधि घृत साजति मटुकी मथुरा जान बिचारै ॥ षटदशसहस शृंगार करतिहैं अंग अंग सब निरखि सँवारति। सूरदास प्रभु प्रीति सबनिकी नेकन हृदय बिसारति ॥ ७८ ॥

राग धनाश्री ॥ युवती अंग शृंगार सँवारति। बेनी गूथि मांग मोतिनकी शीशफूल शिर धारति। गोरे भाल बिंद सेंदुरपर टीका धरयो जराउ। वदन चंद्र पर रवि तारागण मानों उदित सुभाउ। सुभग श्रवण तरिवन मणि भूषित यह उपमा नहिं पार। मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारण नंदकुमार ॥ नासा नथ मुकुताकी शोभा रह्यो अधर तट जाइ। दाडिम कनशुक लेत बन्यो नहिं कनक फंद रह्यो आइ ॥ दमकत दशन अरुण धरणीतर चिबुक डिठौना भ्राजत। दुलरी अरु तिलरी बन्द तापर सुभग हमेल बिराजत ॥ कुच कंचुकी हार मोतिन अरु भुजन विजयठे सोहत। डारन चुरी करनफुंदना बनि कंज पास अलि जोहत ॥ क्षुद्रघंटिका कटि लहँगा रंग तन तनसुखकी सारी। सूर ग्वालि दधि बेचन निकरी पग नूपुरध्वनि भारी ॥ ७९ ॥

राग नटनारायणी ॥ दधि बेचन चलीं ब्रजनारि। शीश धरि धरि माट मटुकी बडी शोभा भारि ॥ निकसि ब्रजके गईं गोंडे हरष भई सुकुमारि। चलीं गावति कृष्णके गुण

हृदय ध्यान बिचारि ॥ सबनके मनजो मिलैं हरि कोउ न कहति उघारि । सूर प्रभु घट घटके व्यापी जानि लई बनवारि ॥ ८० ॥

राग जयतश्री ॥ हरि देखी युवति आवति जब । सखन कह्यो तुम जाइचढौ द्रुम बैठि रहौ दुरि जहां तहां सब ॥ चढे सबै द्रुम डार ग्वाल गण सुनत श्याम मुख बानी । धोखे धोखे रहे सबै हम श्याम भली यह जानी ॥ नव सत साजि शृंगार युवति सब दधि मटुकी लिये आवत । सूर श्याम छबि देखत रीझे मन मन हरष बढावत ॥ ८१ ॥

राग धनाश्री ॥ सखा और संगलिये कन्हाई । आपुन निकसि गये आगेको मारग रोक्यो जाई ॥ यहि अंतर युवती सब आई बन लाग्यो कछु भारी । पछि युवति रहीं तिन टेरत अबहिं गईं तुम हारी ॥ तरुणी जुरि यक संग भई सब इत उत चलीं निहारत । सूरदास प्रभु सखा लिये सँग ठाढे इहै बिचारत ॥ ८२ ॥

राग गौरी ॥ ग्वारिन तब देखे नँदनंदन । मोर मुकुट पीतांबर काछे खौरि किये तनु चंदन ॥ तबयह कह्यो कहाँ अब जैहौ आगे कुँवर कन्हाई । यह सुनि मन आनंद बढायो मुख कहैं बात डराई ॥ कोउ कोउ कहति चलौ री जाई कोउ कहै फिरि घर जाई । कोउ कोउ कहति कहा करि है हरि इनको कहाँ पराई ॥ कोउ कोउ कहति कालीही हमको लूटि लई नँदलाल । सूर श्यामके ऐसे गुण हैं घरहि फिरो ब्रजबाल ॥ ८३ ॥

राग सोरठ ॥ ग्वालन सैन दियो तब श्याम । कूदिकूदि सब परहु द्रुमनते जात चली घर बाम ॥ सैन जानि तब ग्वाल जहां तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए । वेनु विषान शंख मुरली ध्वनि सब एक शब्द बजाए ॥ चकृत भईं तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सब परे धरणिमें घेरि लई ब्रजबाल ॥ नित प्रति जात दूध दधि बेचन आजु पकरि हम पाई । सूर श्यामको दान देहु तब जैहौं नंद दोहाई ॥ ८४ ॥

राग नट ॥ ग्वारिनि यह भली नहिंकराति । दूध दधि घृत नितहि बेचत दान देते डरति ॥ प्रातही लै जाति गोरस बेचि आवति राति । कहौ कैसे जानिये तुम दान मारे जाति ॥ कालिंदी तट श्याम बैठे हमहिं दियो पठाय । यह कह्यो हरि दान माँगहु जाति नितहि चुराय ॥ तुम सुतावृषभानुकी वै बड़े नंदकुमार । सूर प्रभुको नाहिं जानति दान हाट बजार ॥ ८५ ॥

राग कान्हरो ॥ यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी । आनि सुनहु री बात नई इक सिखयेहैं महतारी ॥ दधि माखन खैबेको चाहत मांगि लेहु हम पास । सूधे बात कहौ सुखपावैं बांधन कहत अकास ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी पढे एक चटशार । सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नंदकुमार ॥ ८६ ॥

राग धनाश्री ॥ बात कहति ग्वालिनि इतराति । हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति ॥ इहै बड़ो दुख गाँव वासको चीन्हे कोउ न सकात । हरि मांगत हैं दान आपनो कहत मांगि किन खात ॥ हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात । सूरदासको लेखो दीजै कोउ न कहै पुनि बात ॥ ८७ ॥

राग कान्हरो ॥ कौन कान्हको तुम कहा मांगत । नीके करि सबको हम जानति बातैं कहत अनागत छांडिदेहु हेमका जनि रोकहु वृथा बढावति रारि । जैहै बात दूरि लौं

ऐसी परिहै बहुरि खँभारि ॥ आजुहि दान पहरि ह्यां आए कहां दिखावहु छाप । सूर श्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारो बाप ॥ ८८ ॥

राग कान्हरो ॥ कान्ह कहत दधिदान न दैहौ । लेहौं छीनि दूध दधि माखन देखतही तुम रैहौ ॥ सब दिनको भरि लेहुँ आजुही तब छांडौं मैं तुमको । उघटतिहौ तुम मात पितालौं नहिं जानो तुम हमको ॥ हम जानतिहैं तुमको मोहन लैलै गोद खिलाए । सूर श्याम अब भए जगाती वै दिन सब बिसराए ॥ ८९ ॥

अजहूं मांगिलेहु दधि देहौं । दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुख पैहौं ॥ तुम दानी है आए हमपर यह हमको नाहिं भावत । करौ तहीं लै निबहै जोई जाते सब सुख पावत ॥ हमको जानदेहु दधि बेंचन पुनि कोउ नाहिन लैहै । गोरस लेत प्रातही सब कोउ सूर धरचो पुनि रैहै ॥ ९० ॥

राग कान्हरो ॥ दान दिये बिन जान नपैहौ । जब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुम दैहौ ॥ तुमसों बहुत लेनहै मोको यह लै ताहि सुनावहु । चोरी आवति बेंचि जाति सब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु ॥ मांगत छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमको जानत । सूर श्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत ॥ ९१ ॥

राग रामकली ॥ कहा हमहिं रिस करत कन्हाई । यह रिस जाय करौ मथुरापर जहां है कंस बसाई ॥ हम अब कहां जाय गुहरावैं बसत तुम्हारे गाऊँ । ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहै यहि ठाउँ ॥ अपने घरके तुम राजा हौ सबको राजा कंस । सूर श्याम हम देखत ठाढे अब सीखे ए गंस ॥ ९२ ॥

राग देवगंधारी ॥ कापर दान पहिरि तुम आए । चलहु जु मिलि उनहीपै जैए जिन तुम रोकन पंथ पठाए ॥ सखासंग लीन्हेजु सेंतिके फिरत रैनि दिन बनमें धाए । नाहिन राज कंसको जान्यो बाट रोकते फिरत पराए ॥ लीन्हे छीनि बसन सबहीके सबही लै कुंजनि अरुझाए । सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट भूमि ढरकाए ॥ ९३ ॥

राग सूही ॥ जाइ सबै कंसहि गुहरावहु । दधि माखन घृत लेत छँडाए आजुहि मोहिं हजूर बोलावहु ॥ ऐसेको कह मोहिं बतावति पल भीतर गहि मारौं । मथुरापतिहि सुनोगी तुमहीं जब वाके धरि केश पछारौं ॥ बार बार दिन हमहिं बतावत अपनो दिन न बिचारो । सूर इंद्र ब्रज जबहिं बहावत तब गिरि राखि उबारो ॥ ९४ ॥

राग गूजरी ॥ गिरि वर धरचो आपने घरको । ताहीके बल तुम दान लेतहौ रोंकि रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बड़े कहावत हमहू जानति तुमको । यह जानति पुनि गाइ चरावत नितप्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषन सब बनको । सूरदास कांधे कामरिहू जानति हाथ लकुट कंचनको ॥ ९५ ॥

राग बिलावल ॥ यह कमरी कमरी करि जानति । जाके जितनी बुद्धि हृदयमैं सो तितनी अनुमानति ॥ या कमरीके एक रोमपर वारौं चीर नील पाटंबर । सो कमरी तुम निंदति गोपी जो तीनिलोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर संहारे कमरिहिते सब भोग । जाति पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ९६ ॥

राग बिलावल ॥ धनि धनि यह कामरिहो मोहन श्याम लालकी। इहै ओढि जात बनहि इहै सेज करत हौं तुम मेह बूंद निरवारन इहै छांह घामकी ॥ इहै उठि गुन करत है पुनि शिशिर शीत इहै हरति गहनेलै धरति ओट कोट वामकी । इहै जाति इहै पाँति परिपाटी यह सिखवति सूरदास प्रभुके यह सब विसरामकी ॥ ९७ ॥

अब तुम सांची बात कही। एतेपर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहि कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो। नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुम कमरीके ओढनहारे पीतांबर नहिं छाजत । सूरदास कारे तनु ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥ ९८ ॥

मोसों बात सुनहु ब्रजनारि। एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आज उघारि ॥ कबहूँ बालक मुँह न दीजिये मुँह न दीजिये नारि। जोइ मन करै सोइ करिडारै मूँड़ चढतहै भारि ॥ बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति कर तारि । सूर कहाए हमको जानैं छाहिहि बेचनहारि ॥ ९९ ॥

यह जानति तुम नंदमहरसुत। धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जात खरिकहि उत ॥ चोरी करत रहौ पुनि जानति घर घर ढूँढत भांडे। मारग रोकि भये अब दानी वै ढँग कबते छांडे ॥ और सुनहु यशुमति जब बांधे तब हम कियो सहाई। सूरदास प्रभु यह जानति हम तुम ब्रज रहत कन्हाई ॥ ११०० ॥

राग आसावरी ॥ को माता को पिता हमारे। कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे महतारी। दुहत कौनकी गैया चारत बात कही यह भारी। तुम जानति मोहिं नंद ढुटौना नंद कहांते आए। मैं पूरन अविगति अविनाशी माया सबनि भुलाए ॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसकानी ऐसे गुण हौ जानत। सूर श्याम जो निदरचो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ १ ॥

राग सोरठ ॥ तुमको नंदमहर भरुहाए। माता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहौ कहांते आए ॥ घर घर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बँधाए। हाहा करि यशुमतिके आगे तुमको हमहि छुड़ाये ॥ ग्वालनि संग संग वृन्दावन तुम नहिं गाइ चराये। सूर श्याम दशमास गर्भ धरि जननि नहीं तुम जाये ॥ २ ॥

राग टोरी ॥ भक्त हेतु अवतार धरचो। कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग जग्य मनमैं न करचो ॥ दीनगुहारि सुनौं श्रवणनि भरि गर्व वचन सुनि हृदयजरौं। भाव अधीन रहौं सबहीके और न काहू नेक डरौं ॥ ब्रह्मा कीट आदिलौं व्यापक सबको सुख दै दुखहि हरौं। सूर श्याम तब कही प्रगटही जहां भाव तहँते न टरौं ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत। स्वर्ग पताल एक करि राखौ युवतिनको कहि कहा बतावत ॥ जो लायक तौ अपने घरको वनभीतर डरपावत। कहा दान गोरसको द्वै है सबै न लेहु देखावत ॥ रीती जान देहु घर हमको यतनेही सुख पावत। सूर श्याम माखन दधि लीजै युवतिन कत अरुझावत ॥ ४ ॥

माखन दधि कहा करौं तुम्हारो में मनमें अनुमान करौं नित मोसों कैहै बनिज पसारो॥ काहेको तुम मोहिं कहतहौ जोबन धन ताको करि गारो। अब कैसे घरजान पाइहौ मोको यह समुझाइ। सिधारो सूर बनिज तुम करत सदाई लेखो करिहैं आजु तिहारो॥

राग सूहवी॥ ऐसी कहौ बनिजको अटकी। मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैन सैन दै दै सब मटकी॥ हमहू कह्यो दान दधिको कहा मांगत कुँवर कन्हाई। अबलौं कहा मौन धरि बैठे तबहीं नहीं सुनाई॥ हँसि वृषभानुसुता तब बोली कहा बनिज हम पास। सूर श्याम लेखो करि लीजे जाहिं सबै ब्रजवास॥ ५॥

राग बिलावल॥ कहौ तुमहि हमको कहा बूझति। लैलै नाम सुनावहु तुमहीं मोसों काहे अरूझति॥ तुम जानति मैंहू कछु जानत जो जो माल तुम्हारे। डारिदेहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे॥ इतनेहीको सोर लगायो अब समुझी यह बात। सूर श्यामके वचन सुनहु री कछु समुझति हौ घात॥ ६॥

इनहीं धौं बूझौ यह लेखो। कहा कहैंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक तुम देखो॥ मनमन हरष भई सब युवती मुख ये बात चलावति। ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदुबानी त्यों त्यों अति सुख पावति॥ कोउ काहूको भेद न जानत लोग सकुच उर मानत। सूरदास प्रभु अंतर्यामी अंतर्गतिकी जानत॥ ७॥

कहो कान्ह कह गथलै हमसों। जो कारण युवती सब अटकीं सो बूझत हैं तुमसों॥ लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवैं। हींग मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावैं॥ कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत। आलमजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत॥ बाइ बिरंग बहेरा हरैं कहुँ बेल गोंद व्यापारी। सूर श्याम लरिकाई भूलीं जोबन भए मुरारी॥ ८॥

राग सूही॥ कवन बनिज कहि मोहिं सुनावति।तुम्हरो गथलादों गयंदपर हींग मिरच पीपरि कहा गावति॥ अपनो बनिज दुरावतहौ कत नाउँ लियो यतनोही। कहा दुरावति हौ मो आगे सत जानत तुव गोही॥ बहुत मोलको बाबा तुम्हरो कैसे दुरत राए। सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु इक दान भराए॥ ९॥

राग टोडी॥ दधिको दान मेटि यह ठान्यो। सुनहु श्याम अतिचतुर भएहौ आजु तुमहि हम जान्यो॥ जो कछु दूध दह्यौ हम देती लैखाते तुम ग्वाल। सोऊ खोइ हाथतै बैठे हँसति कहति ब्रजबाल। यह सुनि श्याम सबनि करते दधि मटकी लई छँडाई। आपन खाइ सखनको दीन्हों अति मन हरष बढाई॥ कछु खायो कछु भुँइ ढरकायो चितै रहीं ब्रजनारि। सूर श्याम वन भीतर युवतिन एढंग करत मुरारि॥ १०॥

राग रामकली॥ प्यारी पीतांबर उर झटक्यो। हरि तोरी मोतिनकी माला कछु गर कछुकर लटक्यो। ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट। आपु श्याम रिस करि अंकम भरि भई प्रेमकी भेट॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तव भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि॥ हांक दियो करि नंददोहाई आइ गए सबग्वाल। सूर श्यामको जानत नाहीं ढीठ भई हैं बाल॥ ११॥

राग भैरवी ॥ हम भई ढीठ भले तुम्ह ग्वाल । दीन्हों ज्वाब दईको चैहौ देखो री यह कहा जञ्जाल ॥ बन भीतर युवतिनको रोंकत हम खोटी तुम्हरे ये हाल बात कहनको यो आवत है बड़े सुधर्मा धर्महिपाल ॥ साखि सखाकी ऐसिन भरिहौ तब आवहु ते जीति-भुआल । आयेहैं चढि रिसकरि हमपर सूर हमहि जानत बेहाल ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ जानी बात तुम्हारी सबकी । लरिकाईके ख्याल तजौ अब गई बात वह तबकी ॥ मारग रोंकत रहे यमुनको तेहि धोखेहौ आये । पावहुगे पुनि कियो आपनो युवतिन हाथ लगाये ॥ जो सुनिहैं यह बात मात पितु तब हमसे कहा कैहैं । सूर श्याम मोतिन लर तोरी कौन ज्वाब हम देहैं ॥ १३ ॥

राग बिलावल नट ॥ आपुन भई सबै अब भोरी । तुम हरिको पीतांबर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिन लर तोरी ॥ मांगत दान ज्वाब नाहिं देती ऐसी तुम जोबनकी जोरी । डर नहिं मानति नँदनंदनको करति आनि झकझोरा झोरी ॥ एक तुम नारि गँवारि भली हौ त्रिभुवन में इनकी सरिको री । सूर सुनहु लेहैं छँडाइ सब अबहिं फिरौगी दौरी दौरी ॥ १४ ॥

राग नट ॥ कहा बड़ाई इनकी सरि मैं । नंद यशोदाके प्रतिपाले जानति नीके करि मैं ॥ तुम्हरे कहे सबन डर मान्यो हरिहि गई अति डरि मैं । बसुदेव डारि रातिही भागे आये हैं शुभ घरिमैं । अंग अंगको दान करत हैं सुनत उठी रिस जरिमैं । तब पीतांबर झटकि लियो मैं सूर श्यामको धरि मैं ॥ १५ ॥

राग गौरी ॥ याते तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई झिरकन हारी एतेपर पुनि हारि नही ॥ तबते हमहिं देतहौ गारी हमको दाहति आपु दही । बनिज करति हमसों झगरति हौ कहा कहै हम बहुत सही ॥ समुझि परी अब कछु जिय जाग्यो ताते हौं सब मौन रही । सूर श्याम ब्रज ऊपर दानी यहि मारग अब तुम निबही ॥ १६ ॥

राग कल्याण ॥ तुम देखत रैहौ हम जैहैं । गोरस बेंचि मधुपुरीते पुनि येही मारग ऐहैं ॥ ऐसेही बैठे सब रैहौ बोले ज्वाब न देहैं । धरिलैहैं यशुमतिपै हरिको तब धौं कैसे कैहैं ॥ काहेको मोतिन लर तोरी हम पीताम्बर लैहैं । सूर श्याम इतरात इते पर घर बैठे तब रैहैं ॥ १७ ॥

हठ क्यों निबतन पैहौ । अब तो रोकि सबनिको राख्यो कैसे करि तुम जैहौ ॥ दान लेउँगो भरि दिन दिनको लेखो करि सब देहौ । सौंह करतहौं नंदबबाकी मैं कैहौं तब जैहौ ॥ आवत जात रहत येही पथ मोसों बैर बढैहौ । सुनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहौ ॥ १८ ॥

राग कान्हरो । कौन बात यह कहत कन्हाई । समुझति नहीं कहा तुम मांगत डर पावत करि नंद दोहाई ॥ डर पावहु तिनको जे डरपाहिं तुमते घटि हम नाहीं । मारग छांडि देहु मनमोहन दधि बेचन हम जाहीं ॥ भली करी मोतिनलर तोरी यशुमतिसों हम लैहैं । सूरदास प्रभु इहां बनत नहिं इतनो धन कहां पैहैं ॥ १९ ॥

एक हार मोहिं कहा देखावति । नख शिखते अंग अंग निहारहु ए सब कतहि दुरावति ॥ मोतिन माल जराइको टीको कर्णफूल नकबेसर । कंठसिरी दुलरी तिलरीको और हार

एक नवसर ॥ सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी । बाहुढाड कर कङ्कन बाजू बंद येतेपर तौकी ॥ छुद्रघंटिका पग नूपुर जेहरि बिछिया सब लेखौ । सहज अंग शोभा सब न्यारी कहत सूर ये देखौ ॥ २० ॥

राग जैतश्री ॥ याहूमें कछु बांट तुम्हारो । अचरज आइ सुनहु री माई भूषण देखि न सकत हमारो ॥ कहो ढिठाई हिएते आपुन की यशुमति की नंद । घाटधरचो तुम इहै जानिकै करत ठगनके छन्द ॥ जितनो पहिरि आपु हम आई घरहै याते दूनो । सूर श्याम हौ बहुत लोभाने बन देख्यो धौं सूनो ॥ २१ ॥

राग गौरी ॥ बाँट कहा अब सबै हमारो । जबलौं दान नहीं हम पायो तबलौं कैसे होत तिहारो ॥ आभूषणकी कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो । मदन दूत मोहिं बात सुनाई इनमें भरचो महारस भारो ॥ एक ओर यह अंग भूषण सब एक ओर यह दान बिचारो । सुनहु सूर कहा बांट करैं हम दान देहु पुनि जहां सिधारो ॥२२॥

राग कल्याण ॥ श्याम भये ऐसे रसनागर । दिन द्वै घाट रोकि यमुनाको युवतिनमें तुम भए उजाजर ॥ कांधे कामरि हाथ लकुटिया गाइ चरावन जाते । दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ॥ अब तुम कर नवलासी लीने पीतांबर कटि सोहत । सूर श्याम अब नवल भए तुम नवल नारि मन मोहत ॥ २३ ॥

राग गौरी ॥ दान देतकी झगरो करिहौ । प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरिहौ ॥ कहत कहा निदरेसे हौ तुम सहज कहति हम बात । आदि बुन्यादि सबै हम जानति काहेको इतरात ॥ रिसि करि करि मटुकी शिर धरि धरि डगरि चलीं सब ग्वालिनि । सूर श्याम अंचल गहि झरकी जैहो कहां बजारिनि ॥ २४ ॥

राग कल्याण ॥ अब तुमको मैं जान न दैहौं ॥ दान लेउँ कौडी कौडी करि बैर आपनो लैहौं ॥ गोरस खाइ बच्योसो डारचो मटुकी डारी फोरि । दैदै गारि नारि झकझोरी चोलीके बँद तोरि ॥ हँसत सखा कर तारी दैदै बनमें रोकी नारि । सुनत लोग घरते आवहिंगे सकिहौ नहीं सम्हारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावत कंसहि आनि बुलाइ । सूर सबै युवतिनके देखत पूजा करौं बनाइ ॥ २५ ॥

राग गौरी ॥ जो तुमही हौ सबके राजा । तौ बैठौ सिंहासन चढिकै चमर छत्र शिर-भ्राजा ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर छांड़ि देहु नटवरको साजा । बेनु बिषान शृंग क्यों पूरत बाजै नौबति बाजा ॥ यह जो सुनैं हमहु सुख पावैं सँग करैं कछु काजा । सूरश्याम ऐसी बातें सुनि हमको आवति लाजा ॥ २६ ॥

राग कल्याण ॥ तुम्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दासनिके चेरे तिनको लागति फीकी ॥ ऐसी कहि मोहिं कहा सुनावति तुमको इहै अगाध । कंस मारि शिर छत्र धरावौं कहा तुच्छ यह साध ॥ तबहीं लौं यह संगतिहारो जब लगि जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुनि तब मनमन कीन्हों संस ॥ २७ ॥

राग जैतश्री ॥ भली करी हरि माखन खायो । इहौ मानि लीनी अपने शिर उबरो सो ढरकायो ॥ राखी रही दुराइ कमोरी सोलै प्रगट देखायो । यह लीजै कछु और मँगावें दान सुनत रिसपायो ॥ दान दिये बिनु जान न पैहौ कब मैं दान छुटायो । सूर श्याम हठ परे हमारे कहो न कहा लदायो ॥ २८ ॥

राग धनाश्री ॥ लेहौं दान इननको तुमसों । मत्तगयंद हंस हम सोहैं कहा दुरावति तुम सो ॥ केहरि कनककलश अमृतके कैसे दुरैदुरावति । विद्रुम हेम वज्रके किनुका नाहिन हमहि सुनावति ॥ खग कपोत कोकिला कीर खंजन हूं शुक मृगजानति । मणि कंचनके चित्र जरेहैं एतेपर नहिं मानति ॥ सायक चाप तुरय बनिजतिहौ लिये सबै तुम जाहू । चंदन चमर सुगंध जहाँ तहँ कैसे होत निबाहू ॥ यह बनिजति वृषभानुसुता तुम हमसों बैर बढावति । सुनहु सूर एतेपर कहतिहैं हम धौं कहालदावति ॥ २९ ॥

राग सोरठ ॥ यह सुनि चकृत भईं ब्रजबाला । तरुणी सब आपसमें बूझति कहा कहत गोपाला ॥ कहां तुरंग कहां गजकेहरि कहां हंस सरोवर सुनिये । कंचनकलश गढाये कब हम देखे धौं यह शुनिये ॥ कोकिल कीर कपोत बननमें मृग खंजन शुक संग । तिनको दान लेत हैं हमसों देखहु इनको रंग ॥ चंदन चौर सुगंध बतावत कहां हमारे पास । सूरदास जो ऐसे दानी देखिलेहु चहुँ पास ॥ ३० ॥

राग गुनकरी ॥ भूलिरहे तुम कहाँ कन्हाई । तिनको नाउं लेत हम आगे जो सपने कहुँ दृष्टि न आई ॥ हैवर गैवरसिंह हंस बर खग मृग कहँ हम लीन्हे । सायक धनुष चक्र सुनि चकृत चमर न देखे चीन्हें । चंदन और सुगंध कहतहौ कंचन कलश बतावहु । सूर श्याम ये सब जो ह्वैहैं तबहिं दान तुम पावहु ॥ ३१ ॥

राग गूजरी ॥ इतने सबै तुम्हारे पास । निरखि न देखहु अंग अंग अब चतुराईके गांस ॥ तुरतही निरुवारि डारहु करति कहत अबेर । तुम कहो कछु हमहुँ बोलैं घरहि जाहु सबेर । कनक तुम परतक्ष देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमसो रूप जौबन धरचो एकहि संग ॥

राग बिलावल ॥ प्रगट करौ सब तुमहिं बतावैं । चिकुर चमर घूंघट है बरबर भुवसारंग देखावैं ॥ ३२ ॥

बाणकटाक्ष नयन खंजन मृग नासा शुक उपमाउं । तरिवन चक्र अधर विद्रुम छवि दशन वज्र कनठाउं ॥ ग्रीव कपोत कोकिला बाणी कुच घट कनक सुभाउ । जोवन मह रस अमृत भरेहैं रूप रंग झलकाउ ॥ अंग सुगंध बसन पाटंबर गनि २ तुमहि सुनाउँ । कटि केहरि गयंदगति शोभा हंस सहित यकताउँ ॥ फेर किये कैसे निबहति है घरहि गए कहा पाउँ । सुनहु सूर यह बनिज तुम्हारे फिरि २ तुमहि मनाउँ ॥ ३३ ॥

राग नट ॥ माँगत ऐसे दान कन्हाई । अब समुझी हम बात तुम्हारी प्रगटभई कछु धौं तरुनाई ॥ यहि लालच अँकवारि भरत हौ हार तोरि चोली झटकाई । अपनी ओर देखि धौं लीजै ता पाछे करियै बरि आई ॥ सखालिये तुम घेरत पुनि पुनि बनभीतर सब नारि पराई । सूर श्याम ऐसी न बूझियै इनि बातमि मर्यादा जाई ॥ ३४ ॥

राग नट ॥ हमपर रिसकरति ब्रजनारि । बात सूधे हम बतावत आपु उठत पुकारि ॥ कबहुँ मर्यादा घटावति कबहुँ दैहै गारि । प्रातते झगरो पसारो दानदेहु निवारि ॥ बडे घरकी बहु बेटी करति वृथा झवारि । सूर अपनो अंश पावैं जाहिं घर झखमारि ॥३५॥

राग लारंग ॥ तुमहि उलटि हमपर सतराने । जो कछु हमको कहन बूझिय सो तुम कहि आगे अतुराने ॥ यह चतुराई कहां पढी हरि थोरे दिन अति भये सयाने । तुमको लाज

होत की हमको बात परै जो कहुँ महराने ॥ ऐसो दान और पै मांगहु जो हमसों कहौ छबि-छाने । सूरदास प्रभु जानदेहु अब बहुरि कहौगे कालि बिहाने ॥ ३६ ॥

श्यामहि बोलि लियो ढिग प्यारी । ऐसी बात प्रगट कहुँ कहिये सखनि मांझ कत लाजन मारी ॥ एक ऐसेहि उपहास करत सब तापर तुम यह बात पसारी । जाति पांतिके लोग हँसिहिंगे प्रगट जानिहैं श्याम भतारी ॥ लाजत मारतहौ कत हमको हाहा करति जाति बलिहारी । सूरश्याम सर्वज्ञ कहावत मात पितासों द्यावत गारी ॥ ३७ ॥

जबहि ग्वारि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबहीं लखि लीन्हीं सदा श्यामके प्रकृत सुभाई ॥ सुनहु प्यारि एक बात सुनावों जो तुम्हरे मन आवै । तुम प्रति अंग अंगकी शोभा देखत हरि सुख पावै ॥ तुम नागरी नवल नागर वै दोउ मिलि करौ बिहार । सूरश्याम श्यामा तुम एकै कहा हँसिहै संसार ॥ ३८ ॥

राग नट ॥ नंदसुवन यह बात कहावत।आपुन जोबनदान लेतहै तापर जोइ सोइ सखनि सिखावत ॥ वै दिन भूलिगए हरि तुमको चोरी माखन खाते । खीझतही भरि नयन लेतहै डरडरात भजि जाते ॥ यशुमति जब ऊखलसों बांधति हमही छोरति जाइ । सूर श्याम अब बडे भये हौ जोबनदान सुहाइ ॥ ३९ ॥

राग टोडी ॥ लरिकाईकी बात चलावति । कैसी भई कहा हम जानैं नेकहु सुधि नहिं आवति ॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे धौं मैया । भले बुरेको मात पिता तन हरषतही दिनजैया ॥ अपनी बात खबर करि देखहु न्हात यमुनके तीर । सूर श्याम तव कहत सबनिके कदम चढाए चीर ॥ ४० ॥

राग गूजरी ॥ सब रही जल मांझ उघारी । बारबार हाहा करि थाकी मैं तट लिये हँकारी ॥ आई निकसि बसन बिनु तरुनी बहुत करी मनुहारी । कैसे हास भए तब सबके सो तुम सुरति बिसारी ॥ हमहि कहति दधि दूध चुराये अरु बांधे महतारी । सूर श्यामके भेद वचन सुनि हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥ ४१ ॥

कहा भए अति ढीठ कन्हाई । ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहाधौं अपनी लाज गँवाई ॥ जाहु चले लोगनिके आगे झूठी वाणी कहत सुनाई । तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिकै सब घरघर कैहैं जाई ॥ बहुत होहुगे दशहि बरसके बात कहतहौ बनै बनाई । सूरश्याम यशुमतिके आगे इहै बात सब कैहैं जाई ॥ ४२ ॥

राग हमीर ॥ झूठी बात कहा मैं जानौं । जो हमको जैसेही भजेरी ताको तैसेहि मानौं ॥ तुम पति कियो मोहिको मनदै मैं हौं अंतर्यामी । योगीको योगी ह्वै दरसौं कामीको ह्वै कामी ॥ हमको तुम झूठे करि जानति तौ काहे तप कीन्हों । सुनहु सूर अब निठुर भई कत दान जात नहीं दीन्हों ॥ ४३ ॥

राग गौरी ॥ दान सुनत रिस होइ कन्हाई । और कहौ सो सब सहि लेहैं जो कछु भली बुराई ॥ महतारी तुम्हरीके वैगुण उरहन देत रिसाई । तुम नीके ढँग सीखे बनमें रोकत नारि पराई ॥ आवन जाव न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई । सूरश्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी माई ॥ ४४ ॥

काहेको तुम झेर लगावति । दान देहु घर जाहु बेंचि दधि तुमहींको यह भावति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहे न बनिज करति ब्रजगाउँ । आवहु जाहु सबै यहि मारग लेत हमारो नाउँ ॥ लेखो करौ तुमहि अपने मन जोइ देहौ सोइ लेहौं । सूर सुभाइ चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कह कैहौं ॥ ४५ ॥

राग कान्हरो ॥ सुनहु आइके हरिगुण माई । हम भईं बनिजारिनि आपुन दानि भए कुँवर कन्हाई ॥ कहा बनिज लै आई धौं हम ताको मांगत दान । कालिहिके ढँग पुनि आए हैं नहिं जानत कछु आन ॥ तुम गवाँरि एही मग आवति जानि बूझि गुण इनिके । सूर श्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिनके ॥ ४६ ॥

राग टोडी ॥ काहेको हमसों हरि लागत । बातहि कछू खोल रस नाहीं को जानै कहा मांगत ॥ कहा स्वभाव परचो अबहींते इनि बातन कछु पावत । निपट हमारे ख्याल परे हरि बनमें नितहिं खिझावत ॥ पैंडो देहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग । सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे बोग ॥ ४७ ॥

राग सूही ॥ अबलों इहै करचो तुम लेखो । मोको ऐसी बुद्धि बतावत कर कंकण दर्पन लै देखो ॥ आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमको करति गवाँर । ओगहै लेत फिरों इनके घर ठाढे हैहैं द्वार ॥ घाटे छांडि जैहो तबलैहौं ज्वाब नृपति कहा देहों । जादिनते यहि मारग आवति तादिनते भरिलैहों ॥ इनिकी बुद्धि दान हम पहिरो काहे न घर घर जैहो । सूर श्याम तब कहत सखिनसों जान कौनविधि पैहौ ॥ ४८ ॥

राग ठोडी ॥ भली भई नृप मान्यो तुमहू । लेखो कैरैं जाइ कंसहिपै चलैं संग तुम हमहू ॥ अबलों हम जानीही घरही पहिरचो है तुम दान । कालि कह्यो हो दान लेनको नंदम हरकी आन ॥ तो तुम कंस पठाए हैं ह्यां अब जानी यह बात । सूर श्याम सुनि सुनि यह बाणी भौंह मोरि मुसकात ॥ ४९ ॥

राग आसावरी ॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह । सोई कह्यो मनहि कहि आई तुमहि नंद की सौंह ॥ और सौंह तुमको गोधनकी सौंह माई यशुमतिकी । सौंह तुमहि बलदाऊकी है कहो बात वा मनकी ॥ बार बार तुम भौंह सकोरचो कहा आपु हँसि रीझे । सूर श्याम हम पर सुख पायो की मनही मन खीझे ॥ ५० ॥

राग रामकली ॥ हँसत सखनसों कहत कन्हाई । मैयाकी बाबाकी दाऊजीकी सौंह दिवाई ॥ कहति कहा काहे हँसि हेरचो काहे भौंह सकोरचो । यह अचरज देखो तुम इनिको कब हम वदन मरोरचो ॥ ऐसी बातनि सौंह दिवावति अधिक हँसी मोहिं आवत । सूर श्याम कहि श्रीदामासों तुम काहे न समुझावत ॥ ५१ ॥

राग धनाश्री ॥ श्रीदामा गोपिन समुझावत । हँसत श्यामके तुम कहा जान्यो काहे सौंह दिवावत ॥ तुमहूँ हँसो आपने संग मिलि हम नाहिं सौंह दिवावैं । तरुणिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात बिसावैं ॥ नान्हे लोगनि सौंह दिवावहु वै दानी प्रभुसबके । सूर श्यामको दान देहु री मांगत ठाढे कबके ॥ ५२ ॥

राग जैतश्री ॥ हम जानतिवै कुँवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होति इनि बातनि मही दहीके दान । वै ठाकुर तुम सेवक

उनके जान्यों सबको ज्ञान ॥ दधि खायो मोतिन लर तोरचो घृत माखन सोउ लीजे। सूरदास प्रभु अपने सदका घरहि जान हम दीजै ॥ ५३ ॥

तुम घर जाहु दानको देहै। जेहि बीरा दै मोहिं पठायो सो मोसों कहा लैहै ॥ तुम गृह जाइ बैठि सुख करिहौ नृप गारी को खैहै। अबहीं बोलि पठावैगो री ता सन्मुख को जैहै ॥ जान कहैं तुमको तुम जैहों विधिना कैसे सैहै। सूर मोहिं अटक्यो है नृपवर तुम बिनु कौन छँडैहै ॥ ५४ ॥

नृपको नाँउ लेततेही मुख जेहि मुख निंदा कालि करी। आपुन तौ राजनिके राजा आजु कहा सुधि मनहि परी ॥ भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंसको नाउँ लियो। जब हम सौंह दिवावन लागीं तबहिं कंसपर रोष कियो ॥ जाको निंदि बंदिये सो पुनि वह ताको निंदरै। सूरसुनी वह बात कालिकी तब जानी इनि कंस डरै ॥ ५५ ॥

राग आसावरी ॥ कहा कहति कछु जानि न पायो। कब कंसहिं धौं हम कर जोरचो कब वाको हम माथ नवायो ॥ कबहूं सौंह करत देख्यो मोहिं लेत कबहुं मुँख नाऊँ। निपटहि ग्वारि गँवारि भई तुम बसति हमारे गाऊँ ॥ कहा कंस केतने लायकको जाको मोहिं देखावति। सुनहु सूर यहि नृपके हम हैं इह तुम्हरे मन आवति ॥ ५६ ॥

राग टोडी ॥ कौन नृपति जाके तुमहौ ॥ ताको नाऊँ सुनावहु हमको यह सुनिकै अति पावभौ ॥ यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहिते नहिं दूजो। सो नृप कहा रहत सुनि पावैं तब ताहीको पूजो ॥ कहा नाउँ केहि गाँउ बसत है ताहीके ह्वै रहिए। सूरदास प्रभु कहे बनैगा झूठे हमहि निदरिए ॥ ५७ ॥

मोसों सुनहु नृपतिको नाउँ। तिहूँ भुवन भरि गम्य है जाको नर नारी सब गाउँ ॥ गण गंधर्व वश्य वाहीके अवर नहीं सरि ताहि ॥ उनकी अस्तुति करौं कहां लगि मैं सकुचत हौं जाहि ॥ तिनहीको पठयो मैं आयो दियो दानको वीरा। सूर रूप जोबन धन सुनिकै देखत भयो अधीरा ॥ ५८ ॥

राग गौरी ॥ पाई जाति तुम्हारे नृपकी जैसे तुम तैसे वोऊ हैं। कहां रहे दुरि जाइ आजुलौं एई ढंग गुणके सोऊ हैं ॥ यह अनुमान कियो मनमें हम एकहि दिन जनमें दोऊ हैं। चोरी अपमारग बट पारचो इनि पटतरके नाहिं कोऊ हैं ॥ श्याम बनी अब जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोऊ हैं। सूर श्याम जितने रँग काछत युवती जन मनके गोऊ हैं ॥ ५९ ॥

ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी। जोइ आवति सोइ सोइ कह डारति जाति जनावत दै दै गारी ॥ फँसिहारिनि बटपारिनि हम भईं आपुन भए सुधर्मा भारी। फंदा फांसि कमान बानसों काहू डारत देख्यो मारी ॥ जाके मन जैसोई बरतै मुख बानी कहि देत उघारी। सुनहु सूर प्रभु नीके जान्यो ब्रज युवती तुम सब बटपारी ॥ ६० ॥

राग सूही ॥ अपने नृपको ईहै सुनायो। ब्रजनारी बटपारिनि हैं सब चुगली आपुनि जाइ लगायो ॥ राजा बडे बात यह समुझी तुमको हम पर धौंस पठायो। फँसिहारिनि कैसे तुव जानी हम कहुँ नाहिंन प्रगट देखायो ॥ ब्रजवनिता फँसि हारी जो सब महतारी काहे न गनायो। फंदा फांसि धनुष विषलाडू सूर श्याम मनहिं हमहिं बतायो ॥ ६१ ॥

राग भैरव ॥ फंदाफँसि बतावहु जो । अंगनि धरे छपाइ जहां जो प्रगट करौ सब दीहौं तौ ॥ प्रथमहि शीश मोहनी डारति ऐसे ताहि करत बशहौ । विष लाडू दरशावति ले पुनि देह दशापुनि बिसरति ज्यों ॥ ता पाछे फंदा गर डारति एहि भांति निकारि मा.ति हौ । सुनहु सूर ऐसे गुण तुम्हरे मोसों कहा उचारति हौ ॥ ६२ ॥

प्रगट करौ यह बात कन्हाई । बान कमान कहां केहि मारचो काके गर हम फांसि लगाई ॥ काके शिर पढि मंत्र दियो हम कहां हमारे पाशदिनाई । मिलवत कहां कहांकी बातैं हँसत कहति अति गइ सकुचाई ॥ तब मानैं सब हमहुँ बतावहु कहो नहीं जो नंद दोहाई । सूर श्याम तब कह्यो सुनहुगी एक एक करि देउँ बताई ॥ ६३ ॥

राग रागिनी ॥ मोसों कहा दुरावति नारी । नयन शयन दै चितहि चुरावति इहै मंत्र टोना शिरडारी ॥ भौंह धनुष अंजन गुन बान कटाक्षनि डारति मारि । तरिवन श्रवन फांसि गर डारति कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि ॥ पीन उरज मुख नैन चखावति इह विष-मोदक जात न झारि । घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदास को सकै सँभारि ॥ ६४ ॥

राग टोडी ॥ अपनो गुण औरनि शिरडारत । मोहन जोहन मंत्र यंत्र टोना सब तुमपर वारत ॥ तनुत्रिभंग अंग अंगमरोरनि भौंह बंक करि हेरत । मुरली अधर बजाइ मधुर सुर तरुनी मृग बन घेरत ॥ नटवर भेष पीतांबर काछे छैल भए तुम डोलत । सूर श्याम रावरे ढंगए अवरनिको ढँगबोलत ॥ ६५ ॥

जानी बात मौन धरि रहिए । इहै जानि हमपर चढि आए जो भावै सो कहिए ॥ हम नहिं बिलग तुम्हारो मान्यो मौन तुम जनि कछु मन आनो । देवहु एक दोइ जनि भाषहु चारि देखि दुइ गानो ॥ दोवल देति सबै मोहीको उन पठयों मैं आयो । सूर रूप जोबनकी चुगली नैननि जाइ सुनायो ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ॥ तब रिस करिकै मोहिं बोलायो । लोचन दूत तुमहिं इहि मारग देखत जाइ सुनायो ॥ सोइ सब महलनते सुनि बानी जोवन महलनि आयो । अपने कर बीरा मोहिं दीन्हों तुरत मोहिं पहिरायो ॥ बैठ्यो है सिंहासन चढिकै चतुराई उपजायो । मन-तरंग आज्ञाकारी भृत तिनको तुमहि लगायो ॥ तिनको नाम अनंद नृपतिवर सुनहु बात सुखपायो । सूर श्याम मुख बात सुनत यह युवतिन तनु बिसरायो ॥ ६७ ॥

राग सूही ॥ ब्रज युवती सुनि मगन भईं । यह बानी सुनि नंदसुवन मुख मन व्याकुल तन सुद्धि गईं ॥ को हम कहां रहति कहँ आईं युवतिनके यह सोच परचो । लागी काम नृपतिकी सांटी जोवन रूपहि आनि अरचो ॥ तृषित भईं तरुणी अनंगडर सकुचि रूप जोबनहिं दियो सूर श्याम अब शरन तुम्हारे हृदय सबनि यह ध्यान कियो ॥ ६८ ॥

राग जैतश्री ॥ मन यह कहति देह बिसराये । यह धन तुमहीको सँचि राख्यो तेहि लीजै सुख पाये ॥ जोबन रूप नहीं तुम लायक तुमको देत लजाति । ज्यों बारिधि आगे जल कनिका बिनय करति एहि भांति ॥ अमृतरस आगे मधुरंचक मनहिं करत अनुमान । सूर श्याम शोभाकी सीवाँको पटतरको आन ॥ ६९ ॥

अंतर्यामी जानि लई । मनमें मिले सबनि सुख दीन्हों तब तनुकी कछु सुरति भई ॥ तब जान्यो बनमें हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचि गई । कहति परस्पर आपु समें सब कहां रहीं हम काहि रई ॥ श्याम बिनाये चरित करै को यह कहिकै तनु सौंपदई । सूरदास प्रभु अंतर्यामी गुप्तहि जोवन दान लई ॥ ७० ॥

राग रामकली ॥ यह कहि उठे नंदकुमार । कहा ठगि सी रही बाला परचो कौन बिचार दानको कछु कियो लेखो रही जहं तहं सोचि । प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जिहिदै दोचि ॥ बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकार । सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहि रोकनहार ॥ ७१ ॥

राग गूजरी ॥ हमहिं और सो रोकै कौन । रोकनहारो नंदमहर सुत कान्ह नाम जाको है तौन ॥ जाके बल है काम नृपतिको ठगत फिरत युवतिनको जौन । टोना डारि देत शिर ऊपर आपु रहत ठाढो ह्वै मौन ॥ सुनहु श्याम ऐसी न बूझिए बानि परी तुमको यह कौन । सूरदास प्रभु कृपा करहु अब कैसेहु जाहिं आपने भौन ॥ ७२ ॥

राग सूही ॥ दान मानि घरको सब जाहु । लेखो मैं कहुँ कहुँ जानत हौं तुम समुझे सब होत निबाहु ॥ पछिली देहु निवारि आजु सब पुनि दीजो जब जानौ कालि । अब मैं कहत भली हौं तुमसों जो तुम मोको मानौ ग्वालि ॥ वृन्दावन तुम आवत डरपति मैं देहौं तुमको पहुँचाइ । सुनहु सूर त्रिभुवन वश जाके सो प्रभु युवतिनके वश आइ ॥ ७३ ॥

को जानै हरि चरित तुम्हारे । अबहूं दान नहीं तुम पायो मन हरि लिये हमारे ॥ लेखो करि लीजै मनमोहन दूध दह्यो कछु खाहु । सद माखन तुम्हरेहि मुख लायक लीजै दान उगाहु ॥ तुम खैहौ माखन दधि मोहन हम सब देखि देखि सुख पावें । सूर श्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रगट सुनावैं ॥ ७४ ॥

राग गुंड ॥ कान्ह माखन खाहु हम सब देखैं । सद्य दधि दूध ल्याई अबटि अबहिं हम खाहु तुम सफल करि जन्म लेखैं ॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मंडली वनहिंके पात दोना लगाये । देत दधि परुसि ब्रजनारि जेंवत कान्ह ग्वाल सँग बैठि अति रुचि बढाये । धन्य दधि धन्य माखन धन्य गोपिका धन्य राधा वश्य है मुरारी । सूर प्रभुके चरित देखि सुरगन थकित कृष्ण सँग सुख करति घोषनारी ॥ ७५ ॥

राग जैतश्री ॥ माखन दधि हरि खात ग्वाल सँग । पातनिके दोना, सबके कर लेत पतौखनि मुख मेलत रँग ॥ मटुकिनते लै लै परुसति हैं हर्षभरी ब्रजनारि । यह सुख तिहूं भुवन कहुँ नाहीं दधि जेंवत बनवारि ॥ गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि माखन । जाको कान्ह लेत मुख मेलत कियो सबनि संभाषन ॥ जो हम साध करति अपने मन सो सुख पायो नीके । सूर श्याम पर तन मन वारति आँनद जी सबहीके ॥७६॥

राग देवगंधार ॥ गोपिका अति आनंद भरी । माखन दधि हरि खात प्रेमसों निरखति नारि खरी ॥ कर लै लै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ । मानहु कंज मिलतहूं शशिको लिये सुधाकर आइ ॥ जाकारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस मुख गावत । सोई सूर प्रगट ब्रजभीतर राधा मनहिं चुरावत ॥ ७७ ॥

राग रामकली ॥ राधासों माखन हरि माँगत। औरनकी मटुकीको खायो तुम्हरो कैसो लागत ॥ लैआई वृषभानुसुता हँसि सद लोनीहै मेरी। लै दीन्हों अपने कर हरि मुख खात अल्प हँसि हेरी ॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ। सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रजललना मन भाइ ॥ ७८ ॥

राग रामकली ॥ मेरे दधिको हरि स्वाद न पायो। जानत इन गुजरि निको सोहै लयो छिडा इमिलि ग्वालनि खायो। धौरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर आंचमैं अवटि सिरायो ॥ नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खिरनिपर तायो। तामें मिलि मिश्रित मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो ॥ सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छीके समदायो ॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहूं दरशायो। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कियो कान्ह ग्वालिनी मन भायो ॥ ७९ ॥

राग नट ॥ गोपिन हेतु माखन खात। प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात ॥ सबै मटुकी भरी वैसिहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात ॥ एक कर दधि दूध लीने एककर दधि जात। सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात ॥ ८० ॥

राग बिहागरो ॥ गोपी कहति धन्य हम नारि। धन्य दूध धनि दधि धनि माखन हम परुसति जेंवत गिरधारि ॥ धन्य घोष धनि निशि धनि वह घरि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि। धन्य सुकृत पाछिलो धन्य धनि धन्य नंद यशुमति महतारि ॥ धनि धनि ग्वाल धन्य बृंदावन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्ह मँगैया धन्य सूर तृण द्रुम बन डारि ॥ ८१ ॥

राग नट ॥ गण गंधर्व देखि सिहात। धन्य ब्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात ॥ नहीं रेख न रूप नहिं तनु बरन नहिं अनुहारि। मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि ॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ। आपही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ ॥ अंग प्रति प्रतिरोम जाके कोटि कोटि ब्रह्मंड। कीट ब्रह्म प्रयंत जल थल इनहिते यह मंड ॥ विश्व विश्वंभरन एई ग्वाल संग विलास। सोइ प्रभु दधि दान मांगत धन्य सूरजदास ॥ ८२ ॥

राग रामकली ॥ कंसहेतु हरि जन्म लियो। पापहि पाप धरा भई भारी तब हमसबनि पुकार कियो ॥ शेष शैन जहँ रमासंग मिलि तहां आकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी ॥ गर्भ देवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं पूरब तप बहु कियो कष्ट करिइनको बहुत ऋनीहैं।' यह बानी कहि सूर सुरनको अब कृष्णा अवतार। कह्यो सबनि ब्रजजन्म लेहु सँग हमरे करहु विहार ॥ ८३ ॥

राग गौरी ॥ ब्रह्म जिनहिं यह आयसु दीन्हों। तिनतिन संग जन्म लियो ब्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हों ॥ गोपी ग्वाल कान्ह दुइ नाहीं ये कहुँ नेक न न्यारे। जहां जहां अवतार धरत हरि ये नहिं नेक बिसारे ॥ एकै देह पिहार करि राखे गोपी ग्वाल मुरारि। यह सुख देखि सूरके प्रभुको थकित अमर सँग नारि ॥ ८४ ॥

राग गौरी ॥ अमरनारि अस्तुति करैं भारी। एक निमिष ब्रजवासिनको सुख नहिं तिहुँभुवन बिचारी ॥ धन्य कान्ह नटवर वपु काछे धन्य गोपिका नारी। एक एकते गुण

रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी ॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी । सूर श्याम दधिदानी कहि कहि आनँद घोषकुमारी ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ॥ धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो । रेखन रूप प्रगट दरशन दियो ॥ जल थलमें कोउ और नहीं बियो । दुष्टन बधि संतनिको सुख दियो ॥ १ ॥

· जो प्रभु नरदेही नहिं धरते । देवै गर्भ नहीं अवतरते ॥ कंसशोक कैसे उर टरते । माता पिता दुरित क्यों हरते ॥ २ ॥

जो प्रभु ब्रजभीतर नहिं आवैं । नंद यशोदा क्यों सुख पावैं ॥ पूरब तप कैसे प्रगटावैं । बेदवचन कैसे ठहरावैं ॥ ३ ॥

जो प्रभु भेष धरैं नहिं बालक । कैसे होइ पूतना घालक ॥ अँगुठा पिवत शकट संहारक । तृणा अकाश शिलापर टारक ॥ ४ ॥

जो प्रभु ब्रज माखन न चोरावैं । क्यों गोपिनको आपु जनावैं ॥ भुजा उलूखल नहीं बँधावैं ॥ जमला मोक्ष कौन विधि पावैं ॥ ५ ॥

सो प्रभु दधिदानी कहवावैं । गोपिनको मारग अटकावैं ॥ करि लेखो के दान सुनावैं । आपुन खीझैं उनहिं खिझावैं ॥ ६ ॥

ब्रजवासी जो धन्य कहावैं । जहां श्याम दधिदान लगावैं ॥ मांगि खात आनंद बढावैं । युवतिनसों कहि कहि परुसावैं ॥ ७ ॥

तेई हरि नटवर वपु काछे । मोर मुकुट पीतांबर आछे ॥ ग्वाल सखा ठाढे सब पाछे । सूरश्याम गोपिन सुख साछे ॥ ८ ॥ ८६ ॥

राग सूही ॥ यह महिमा येई पै जानैं । योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानैं ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठो कहि कहि आपु बखाने । विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधि दोना माँझ अघाने ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावत आपुहि भाने । ऐसे सूरदास के स्वामी ते गोपिनके हाथ बिकाने ॥ ८७ ॥

राग रामकली ॥ धनि बडभागिनी ब्रजनारि । खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि । शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि ॥ देखि सुख ब्रजनारि हरिसंग अमर रहे भुलाइ । सूर प्रभुके चरित अगनित बरनि कापैजाइ ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रजवनिता यह कहति श्यामसों माखन दूध दह्यो अरु ल्यावैं । मटुकिनते हम देहिं खाहु तुम देखि देखि नैननि सुख पावैं ॥ गोरस बहुत हमारे घरघर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहिको मांगत हैं सब देहु ॥ सबै लेहु राखहु जिनि बाकी पुनि न पाइहौ मांगे । आजुहि लेहु सबै भरि देहैं कहति तुम्हारे आगे ॥ कह्यो श्याम अब भई हमारी मनहिं भई परतीति । जब चैहैं तब मांगि लेहिंगे हमहिं तुम्हैं भइ प्रीति ॥ बेचहु जाइ दूध दधि निधरक घाट बाट डर नाहीं । सूर श्याम बश भई ग्वारिनी जात बनत घर नाहीं ॥ ८९ ॥

राग टोडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों । एक एकसों कहति बात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों ॥ यह तौ नाहिं बदी हम उनसों बूझहुँ धौं यह बात । चकृत भई बिचार

करत यह बिसरिगई सुधि गात ॥ उमचिजाति तबहीं सब सकुचति बहुरि मगन ह्वै जाति। सूर श्यामसों कहौं कहा यह कहत न बनत लजाति ॥ ९० ॥

राग धनाश्री ॥ श्याम सुनहु एक बात हमारी। ढीठो बहुत कियो हम तुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी ॥ मुख जो कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहीं। हँसि हँसि कहति खिझावति तुमको अति आनँद मनमाहीं ॥ दधि माखनको दान और जो जानो सबै तुम्हारो। सूर श्याम तुमको सब दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥

नंदकुमार कहा यह कीन्हौं। बूझति तुमहिं कहौ धौं हमसों दान लियो की मन हरिलीन्हौं ॥ कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारे आई। येतेपर तुमहीं अब जानौ करनी भली बुराई ॥ जो जासों अंतर नहिं राखै सो क्यों अंतर राखै। सूर श्याम तुम अंतर्यामी वेद उपनिषद भाषै ॥ ९२ ॥

राग टोडी ॥ सुनहु बात युवती इक मेरी। तुमते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी ॥ तुम कारण बैकुंठ तजतहौं जनम लेत ब्रज आई। वृंदावन राधासँग गोपी यह बिसरयों जाई ॥ तुम अंतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यों राधा ब्रज बसे बिसारयो सुमिरि पुरातन नेह ॥ अब घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाइ। सूर श्याम हँसिहँसि युवतिनसों ऐसी कहत बनाइ ॥ ९३ ॥

राग नट ॥ घर तनु मनहिं बिना नहिं जात। आपु हँसिहँसि कहतहौ जू चतुराईकी बात ॥ तनहिंपर है मनहि राजा जोइ करै सोइ होइ। कहौ घर हम जाहिं कैसे मन धरयो तुम गोइ ॥ नयन श्रवन विचार सुधि बुधि रहे मनहिं लुभाइ। जाहिं अबही तनहिं लै घर परत नाहिंन पाइ ॥ प्रीति करि दुबिधा करी कत तुमहि जानौं नाथ। सूरके प्रभु दीजिये मन जाँइ घर लै साथ ॥ ९४ ॥

राग कान्हरो ॥ मनभीतर है बास हमारो। हमको लै करि तुमहिं छिपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहुँ कहौ रहैं हम अनतहि तुम अपनो मन लेहु। अब पछितानी लोक लाज डर हमहिं छांडि तुम देहु ॥ घटती होइ जाहिते अपनी ताको कीजै त्याग। धोखे कियो बास मन भीतर अब समुझे भइ जाग ॥ मन दीन्हो मोको तब लीन्हों मन लैहो मैं जाउ। सूर श्याम ऐसी जनि कहिये हम यह कही सुभाउ ॥ ९५ ॥

तुमहि बिना मन धिक अरु धिक घर। तुमहि बिना धिक धिक माता पितु धिक कुल-कानि लाज डर ॥ धिक सुत पति धिक जीवन जगको धिक तुम बिन संसार ॥ धिक सो दिवस पहर घटिका पल धिक धिक यह कहि नंदकुमार॥धिक धिक श्रवण कथा बिनु हरिके धिक लोचन बिन रूप। सूरदास प्रभु धिक तुम बिनु घर धिक यौवन भीतरके कूप॥९६॥

अथ दानलीला ॥ राग राज्ञी हठीली ॥ सुनि तमचुरको शोर घोषकी बागरी। नवसत साजि शृंगार चलीं बन नागरी ॥ १ ॥

नवसत साजि शृंगार अंग पाटंबर सोहै। एकते एक विचित्र रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥ इंदा बिंदा राधिका श्यामा कामा नारि। ललिता अरु चंद्रावली सखिन मध्य सुकुमारि॥२॥

कोउ दूध कोउ दह्यो मह्यो लै चलीं सयानी। कोउ मटुकी कोउ माट भरी नवनीत मथानी ॥ गृहगृहते सब सुन्दरी जुरि यमुनातट जाइ। सबनि हरष मनमें कियो उठीं श्याम गुण गाइ ॥ ३ ॥

यह सुनि नंदकुमार सैन दै सखा बोलाए । मन हरषित भए आपु जाइ सब ग्वाल जगाए ॥ यह कहिकै तब साँवरे राखे द्रुमनि चढाइ । और सखा कछु संग लै रोकिरहे मग जाइ ॥ ४ ॥

एक सखी अवलोकतही सब सखी बोलाई । यहि बनमें इक बार लूटि हम लई कन्हाई ॥ तनक फेर फिरि आइए अपने सुखहि विलास । यह झगरो सुनि होइगो गोकुलमें उपहास ॥ ५ ॥

उलटि चलीं तब सखी तहां कोउ जान न पावै । रोकिरहे सब सखा और बातनि बिरमावै ॥ सुबल सखा तब यह कह्यो तुम ग्वालिनि हरियोग । कैसे बातैं दुरति हौं तुम उनके संयोग ॥ किनहु शृंग कोउ बेनु किनहु बनपत्र बजाये । छांडि छांडि द्रुमडार कूदि धरनी धँसि धाये ॥ सखिनमध्य इत राधिका सखामध्य बलबीर । झगरो ठान्यो दानको कालिंदीके तीर ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ७ ॥

दैनारिन दधिदान कान्ह ठाढे वृंदावन । और सखा हरिसंग बच्छ चारत अरु गोधन ॥ वै बडे नंदके लाडिले तुम बृषभानु कुमारि । दह्यो बह्योके कारने हतहि बढावति रारि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ८ ॥

सूधे गोरस मांगि कछू लै हमपै खाहू । ऐसे ढीठ गँवार कान्ह बरजत नहिं काहू ॥ एहि मग गोरस लै सबै दिन प्रति आवहिं जाहिं । हमहिं छाप देखरावहु दान चहत केहि पाहिं ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ९ ॥

इते मान सतरात ग्वारि हम जान न दैहैं । अन उत्तर कहा कहति तुमहिं वश कान्ह भये हैं ॥ अब तुम ऐसी जनि करौ या वृंदावन बीच । पुहुमि माहँ ढरकाइ हैं मचिहै गोरस कीच ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १० ॥

कान्ह अचगरचो देत लेहु सब आँगवारी । कापहिं माँगत दान भए कबते अधिकारी ॥ मात पिता जैसे चलैं तैसे चलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसैं को कहि लेइ सँतापु ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ११ ॥

कहै न जाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । हौं वृंदावन चंद्र कहा कोउ करै हमारो ॥ शेष सहसफन नाथि ज्यों सुरपति करे निरंस । अग्नि पान किये सांवरे केतिक बपुरो कंस ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १२ ॥

जाके तुम सुकुमार ताहि हम नीके जानैं । जो पूछो सति भाउ आदि अद्यावलि भानैं ॥ बातनि बडे न हूजिये सुनहु श्याम उतापति ॥ गर्भसाटि यशुदालियो तब तुम आए राति ॥ कहत नंदलाडिले ॥ १३ ॥

अरी ग्वारि मैमंत वचन बोलत जु अनेरो । कब हरि बालक भए गर्भ कब लियो बसेरो ॥ प्रबल असुर पुहुमी बडे बिधि कीन्हे ये ख्याल । कमलकोस अलिभोरए त्यों तुम भुरचो गुपाल ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १४ ॥

तुम भुर एहौ नंद कहत है तुमसों ढोटा । दधि ओदनके काज देह धरि आए ॥ गढिगढि मिलवत लाडिले भली नहीं यह श्याम । या धोखे जिनि सूलहू हम समरथकी बाम ॥ कहत नँदलाडिले ॥ १५ ॥

तुम समरथकी बाम कहा काहूको करिहौ । चोरी जाती बेचि दान सब दिनको भरिहौ॥ जो प्रभु देह न धरै दीन खल कौन उधारै । कंसकेश को गहै विघ्न ब्रजको टारै ॥ कहा निगम कहि ध्यावतो कहा मुनिजन धरते ध्यान । दरशपरश बिन नामगुणको पावै पद निर्वान । कहत ब्रजनागरी ॥ १६ ॥

जो पै दरशन परस नाम गुण केलि कन्हाई । तुम निर्भयपद हेत वेदविधि इहै बताई ॥ योग युक्ति तप ध्यावहीं तिन गति कौन दयाल । जलतरंग ज्यों मीनगति विधे कर्मके जाल ॥ कहतनंदलाडिले ॥ १७ ॥

जटा भस्म तनुदहै वृथा करि कर्म बँधावै । पुहुमि दाहिनी देहि गुफाबसि मोहिं न पावै ॥ तजि अभिमान जो गावही गदगद सुरहि प्रकाश । तासु मगन हो ग्वालिनी ता घट मेरो बास ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १८ ॥

जु पैचाहि लै श्याम करत उपहास घनेरो । हम अहीरि गृह नारि लोक लज्जाके जेरो ॥ ता दिन हम भई बावरी दियो कंठते हार । तबते घर घेरा चल्यो श्याम तुम्हारो जार ॥ कहत नँदलाडिले ॥ १९ ॥

सखा सबनि मिलि कह्यो ग्वारि एक बात सुनावै । तो तनु ज्योति सुभाउ रूम उपमा को पावै ॥ गुप्त प्रीति विधना करी रसिक साँवरे योग । यह बिचार सुनि ग्वारिनी न्याउ हँसैगो लोग ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २० ॥

ऐसी बातैंकान्ह कहत हमसों काहेते । चोरी खाते छांछि नयन भरि लेत गहेते ॥ देत उरहनो रावरे बछरा दाँवरि जोरि । जननी ऊखल बांधती हम ही देती छोरि ॥ कहत नँदलाडिले ॥ २१ ॥

बालकरूप अजान कहा काहू पहिचाने । अन उत्तर कोउ कहैं भली अनभली न मानै ॥ वह दिन सुमिरौ आपनो न्हाति यमुनके पानि । सब मिलि मो हाहा करी वस्त्र हरचो मैं जानि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २२ ॥

बहुत भए हौ ढीठ देत मुख ऊपर गारी । जेहि छाजै तेहि कहो इहां कोउ दासि तुम्हारी ॥ तुमसों अब दधि कारने कौन बढ़ावै रारि । काहेको इतरातहौ रोकि पराई नारि ॥ कहत नँदलाडिले ॥ २३ ॥

लियो उपरना छीनि दूरि डारनि अटकायो । दियो सखनि दधि बाँटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ फेंट पीतपट साँवरे कर पलाशके पात । हँसत परस्पर ग्वाल सब विमल विमल दधिखात ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २४ ॥

कान्ह बहोरि न देहु दही काहेको माते । बसिये एकहि गाउँ कानि राखतिहैं ताते ॥ तब न कछू बनिआइहै जब बिरुझैं सब नारि । करि लरिकनिके बर करत यहपुनि धरिहैं लाड उतारि ॥ कहत नँदलाडिले ॥ २५ ॥

गहि अँचल झकझोरि तोरि हारावलि डारी । मटुकी लई उतारि मोरि भुज कंचुकि फारी ॥ लैलै ठाढे ग्वार सब दोना एक एक हाथ । खात जात दधि दूध लै हँसत मिलैं इकसाथ ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २६ ॥

झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजे । काचपोत गिरिजाइ नंदवर गयौ न पूजे ॥ बिनही लीने आपिये सो कामरिको तोल । लाख मुँदरिया जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल ॥ कहत नंदलाडिले ॥ २७ ॥

शिव विरंचि सनकादि आदि तिनहूं नाहिं जानी । शेष सहसफन थक्यो निगम कीरति न बखानी ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मनमांह । भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरिकी छांह ॥ शेष न पायो अंत पुहुमि जाकी फनवारी । पवन बुहारत द्वार सदा शंकर कुतवारी ॥ धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार । मेघ छ्यानवे कोटि सब जल ढोवहिं प्रतिवार ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ २८ ॥

जिनहिं इतो परताप गाइ सो कनहि चरावै । परदाराके जाइ आपु कत लज्जा पावै ॥ घरके बाढे रावरे बातैं कहत बनाइ । ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥ कहत नँदलाडिले२९॥

धेनुरूप मम देह करत कौतूहल न्यारे । गोकुल गुप्त विलास जानि को सकै हमारे ॥ या बृंदावन ग्वारिनी जित तित अमृतबेलि। तिहूंलोकमें गाइये मेरे रसकी केलि। कहतब्रजनागरी३०

अबलौं कीन्ही कानि कान्ह अब तुमसों लरिहैं । अधर नयन रस कोप विरचि अनउत्तर करिहैं ॥ मो आगेको छोहरा जीत्यो चाहै मोहिं । काके बलइतरातहौ देहुँ न नख भरि तोहिं ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३१ ॥

चितै वदन मुसकाइ हाथ दधि पूरन दोना । इत सुंदरी विचित्र उतहि घनश्याम सलौना॥ अति तामस तोहि ग्वालिनी मैं सब जानतआदि। खोटी करनी जाहि मेरेकी सोई करे उपादि॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३२ ॥

तोहिं न छांडौं कान्ह दान तुमको नहिं देहौं । बिना कहे ब्रजलोग कहा काहू पतिऐहैं ॥ लाज नहीं तुम आवई बोलत जब सतराइ । कहूं कंस सुनि पाइहै गहत फिरहुगे पाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३३ ॥

सुनत हँसे नँदलाल ग्वारि जिय तामस मान्यो । सींच्यो अमृतबैन कोप कर्षत नहिं जान्यों ॥ कहां बसतिहौ बावरी सुनहु न मुग्ध गँवारि । ब्रजवासी कहा जानि हीं तामसको व्यवहारी ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३४ ॥

जननी जन परिहरचो तात कुलधर्म नशायो। गोपराइके गेह पुत्र ह्वै नाम धरायो ॥ इतनेते इतनो कियो खाटी छांछि पिवाइ। तुमहि दोष नहिं लाडिले ओछो गुण क्यों जाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३५ ॥

अविगत अगम अपार आदि नाहीं अविनासी। परम पुरुष अवतार माया जिनकी हैदासी॥ तुमहि मिलेओछे भए कहा रही करि मौन । तुम्हरे आगे न्यावहै दुइमें ओछो कौन ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३६ ॥

हमहि ओछांई भई जबहि तुमको प्रतिपाले । तुम पूरे सब भांति मात पितु संकट घाले ॥ कहा चलत उपरावटे अजहूं खिसी न गात । कंस सौंह दै पूछिये जिन पटके हैं सात ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ३७ ॥

कंसकेश निग्रहौं पुहुमिको भार उतारौं। उग्रसेन शिरछत्र चमर अपने कर ढारौं ॥ मथुरा सुरनि बसाइहौं असुर करौं यमहाथ । दनुज वदन बिरदावली सांचो त्रिभुवननाथ ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३८ ॥

तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भार उतारचो। चोरी जायो मातु गोद गोकुलपगधारचो ॥ अब बहुतै बातें कहौ दही दूधके मात। जो ऐसे बलवंत हौ मथुरा काहे न जात ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३९ ॥

जो जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं ऐहौं। यह अपनो परताप नंद यशुमतिहि सुनै हौं ॥ वचनलागि मैं है कियो यशुमतिको पयपान । मोहि ग्वार जनि जानहू ग्वारिनि सुनहु निदान ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ४० ॥

हम ग्वाली तुम तरनिरूप रस रवि शशि मोहै । तीन लोक परताप छत्र सिंहासन सोहैं ॥ गयो गर्व गति ग्वालिनी देखि चरित तेहि काल । हम अहीर ढीगे दई तुम जैजे मदन गोपाल ॥ और दिननते आजु दह्यो हम ऊखा ल्याई । देखत ज्योति बिलास दई मुख वचन ढिठाई ॥ कान्ह बिलग जिनि मानहु राखहु पिछलो नेहु । दही दूधकी को गनै कछु हमहू पैते लेहु ॥ धन्य नँदको गेह धन्य गोकुल जहँ आये । धनि गोपनकी नारि जहां तुम रोकन धाये ॥ धनि धनि झगरो आजुको इह सुख नाहिंन पार । नंदनँदन पर कीजिये तन मन धन बलिहार ॥ लै दधि आगे धर्यो कान्ह लीजै जो भावै । खाइ जाइ मँजार काज एकौ नहिं आवै ॥ हम अनखी या बातको लेत दानको नाउँ । सहज भाव रहो लाडिले बसत एकही गाउँ । कहत नँद लाडिले ॥ ४१ ॥

अभरन दियो मँगाइ कियो गोपिन मनभायो । हिलिमिलि बढ्यो सनेह आपु कर माट उठायो ॥ नंदनँदन छबि देखिकै गोपिन वारो प्रान । कुंजकेलि मनमें बसी गायो सूर सुजान ॥ ४२ ॥ ११६० ॥

राग बिलावल ॥ जबहिं कान्ह यह बात सुनाई । ब्रज युवती अति गई मुरझाई ॥ कंस सँहारन मथुरा जैहौं । बहुरौ फिरि ब्रजको नहिं ऐहौं ॥ देवै गर्भवास हौं लीन्हौं । तुमको गोकुल दरशन दीन्हौं ॥ नंद यशोदा अति तप कीन्हों । मोसो पुत्र मांगि मांगि तब लीन्हों ॥ मोसों दूजो औरन कोई । हरता करता मैंही सोई ॥ तुमसो सुत पयपान कराऊँ । यह तुमसों मैं माँगे पाऊँ ॥ मोसो सुत तुमको मैं देहौं । मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहौं ॥ नंद यशोदा बचन बँधायो । ता कारण देही धरि आयो ॥ यह बाणी सुनि ग्वारि झुरानी । मीन भये मानो बिन पानी ॥ इहै कथा तब गर्ग सुनाई । सोई आपु कहत री माई ॥ नरदेही करि मोहि न जानो । ब्रह्मरूप करि मोको मानो ॥ षोडश बरष मिले सुख करिहौं । मथुरा जाइ देव उद्धरिहौं ॥ केश गहे अरि कंस पछरिहौं । असुर कठोर यमुन लै डरिहौं ॥ रंगभूमि करि मल्लन मारौं । प्रबल कुवलियादंत उपारौं ॥ सुनहु नारि हरि-मुखकी बानी । यह सुनि सुनि तरुणी बिकलानी ॥ तन मन धन इनपर सब वारहु । जोबन दान देहु रिसि टारहु । षोडश वर्ष गए धौं जैहैं । ब्रजते जाइ मधुपुरी रैहैं ॥ राजा उग्रसेनको करिहैं । कनक दंड आपुन कर धरिहैं ॥ मात पिता वसुदेव देवकी । यशुमति धाइ कहति हैं इनकी ॥ अब तिनके बंधन मोचहिंगे । दरश बिना पुनि हम लोचहिंगे ॥ मथुरा नारिनको सुख देहैं । तब घट प्राण कहौ क्यों रैहैं ॥ कहत हँसी यह बात अयानी । जानतिहौ तुम कछुक सयानी ॥ जोबन दान लेहिंगे तुमसों । चतुराई मिलवति हैं हमसों ॥ इनके गांस कहा री जानौ । इतनी कही एक जनि मानौ ॥ जो चाहै सो दीजै इनको । ज्यों बिन देखे रहत न जिनको ॥ आपु आपु यह बात बिचारैं । नारि नारि मन धीर न धारैं ॥ आगे धरैं दूध दधि माखन । प्रथमहिं यह कीजै संभाषन ॥ बड़े चतुर तुम अहो कन्हाई । तरुनि सबनि कहि इहै सुनाई ॥ जानी बात तुम्हारे मनकी । दूरि न

कीजै यह रिस तनकी ॥ सबनि धरयो दधि माखन आगे । लेहु सबै अब बिनही माँगे ॥ तुम रिस करत देखि सुख पावैं । याते बारहि बार खिझावैं ॥ तनु जोबन धन अर्पन कीन्हों । मन दै मन हरिको सुख दीन्हों ॥ सुभग पात दोना लिये हाथनि । बैठे सखा श्याम एक साथनि ॥ मोहन खात खवावत नारी । माँगि लेत दधि गिरिवरधारी ॥ आपुहि धन्य कहति ब्रजनारी । रुचिकरि माँगि खात बनवारी ॥ और खाउ मोहन दधिदानी ॥ यह कहि रे तरुणी मुसुकानी ॥ सुख दीनो हरि अंतर्यामी । ब्रज युवतिनके पूरनकामी ॥ देखत रूप थकित ब्रजनारी । देह गेहकी सुद्धि बिसारी ॥ सूर श्याम सबके सुखकारी । कह्यो जाहु घर घोषकुमारी ॥ ६१ ॥

राग रामकली ॥ युवति ब्रज घर जान बिचारति । कबहुंक मटुकी लेत शीशपर कबहुं धरणि फिरि धारति ॥ देखत श्याम सखा सब देखत चितैरहीं ब्रजनारि । रीती मटुकिनमें कछु नाहीं सकुचति मनहिं बिचारि ॥ तब हँसि बोले श्याम जाहुघर तुमको भई अबार । सकुचति दान पाछिलेको तुम मैं करिहौं निर्वार ॥ यह कहिकै हरि ब्रजहि सिधारे युवतिन दान मनाई । सूर श्याम नागर नारिनके चित लैगए चुराई ॥ ६२ ॥

राग बिलावल । अलहिआ ॥ रीती मटकी शीश लै चलीं घोषकुमारी । एक एककी सुधि नहीं को कैसी नारी ॥ बनहीमें बेंचति फिरैं घरकी सुधि डारी । लोक लाज कुल-कानिकी मर्यादा टारी ॥ लेहुलेहु दधि कहतिहैं बनशोर पसारी । द्रुम सब घर करि जानहीं तिनको दै गारी ॥ दूध दह्यो नहिं लेहुरी कहि कहि पचिहारी । कहति सूर घर कोउ नहीं कहां गई दई मारी ॥६३॥

राग टोडी ॥ या घरमें कोउ है की नाहीं । बारबार बूझति वृक्षनको गोरस लैहौ कि नाहीं ॥ आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमन तर जाती । मिलति परस्पर विवश देखि तेहि कहति कहा इतराती ॥ ताको कहति आपु सुधि नाहीं सो पुनि जानत नाहीं । सूर श्याम रसभरी गोपिका बनमें यों बितताहीं ॥ ६४ ॥

रीती मटुकी शीश धरैं । बनकी घरकी सुरति न काहू लेहु दही यह कहत फिरैं ॥ कबहुँक जाति कुंज भीतरको तहां श्यामकी सुरति करैं । चौंकि परति कछु तनु सुधि आवति जहां तहां सखि सुनति ररैं ॥ तब यह कहति कहाँ मैं इनिसों भ्रमि भ्रमि बनमें वृथा मरैं । सूर श्यामके रस पुनि छाकति वैसेही ढंग बहुरि ढरैं ॥ ६५ ॥

राग नट ॥ तरुणी श्याम रस मतवारि । प्रथम जोबन रस चढ़ायो अतिहि भई खुमारि ॥ दूध नहिं दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट । महारस अंग अंग पूरण कहां घर कहां बाट ॥ मातु पितु गुरुजन कहांको कौन पति को नारि । सूर प्रभुके प्रेम पूरन छकि-रहीं ब्रजनारि ॥ ६६ ॥

राग रामकली ॥ गोरस लेहुरि कोउ आइ । द्रुमनिसों यह कहति डोलति कौन लेहु बुलाइ ॥ कबहुं यमुनातीरको सब जातिहैं अकुलाइ । कबहुं बँसीवट निकट जुरि होति ठाढी धाइ ॥ लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छपाइ । डरनि तुम्हरे जाति नाहीं लेत दह्यो छिड़ाइ ॥

मांगिलीजै दान अपनो कहतिहैं समुझाइ। आइहौ पुनि रिस करत हरि दह्यो देत बहाइ॥ एक एकहि बात बूझत कहां गए कन्हाइ। सूरप्रभुके रंग राची जिय गयो भरमाइ ॥६७॥

राग जैतश्री ॥ बैठिगईं मटुकी सब धरिकै। यह जानत अबहींहैं आवत ग्वाल सखा सँग हरिकै। अंचलसों दधिमाट दुरावति दृष्टि गई तहां परिकै। सबनिमटुकिया रीती देखी तरुनी गईं भभरिकै॥ कहिकहि उठीं जहां तहँ सब मिलि गोरस गयो कहुँ ढरिकै। कोउ कोउ कहैं श्याम ढरकायो जान देहु री जरिकै॥ यहि मारग कोऊ जिनि आवहु रिस करि चलीं डगरिकै। सूर सुरति तनुकी कछु आई उतरत काम लहरिकै॥६८॥

राग नट ॥ चकृत भईं घोषकुमारि। हम नहीं घर गईं तबते रहीं बिचारि बिचारि॥ घरहिते हम प्रात आईं सकुचि वदन निहारि। कछु हँसति कछु डरति गुरुजन देतिहैहैं गारि॥ जो भई सो भई हम कहँ रहीं इतनी नारि। सखासँग मिलि खाइ दधि तबही गए बनवारि॥ इहांलौंकी बात जानति यह अचंभो मारि। इहै जानति सूरके प्रभु गए शिर कछु डारि॥ ६९॥

राग धनाश्री ॥ श्याम बिना यह कौन करै। चितवतही मोहनी लगावत नेक हँसनिपर मनहिं हरै॥ रोकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधिदान लियो। तनुकी सुधि तब-हींते भूली कछु पढिकै शिर नाइदियो॥ मनके किरति मनोरथ पूरण चतुर नारि एहिभांति कहै। सूर श्याम मन हरचो हमारो तेहि बिनु कहु कैसे निबहै॥ ७०॥

मन हरिसों तनु घरहि चलावति। ज्यों गज मत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवति॥ हरिसरूप इहै मद आवत डर डारचो जु महावत। गेह नेह बंधन पग तोरचो प्रेम सरोवर धावत॥ रोमावली सूँड विविकुच मनों कुंभस्थल छविपावत। सूर श्यामके हरि सुनिके जोबन गज दर्प नवावत ॥७१॥

युवति गईं घर नेक न भावत। मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरे और बतावत॥ गारी देति सुनति नाहिं नेकहु श्रवण शब्द हरि पूरे। नैन नहीं देखति काहूको जो कहुँ होहिं अधूरे॥ वचन कहति हरिहीके गुनको उतही चरण चलावै। सूर श्याम बिन और न भावै कोउ जितनो समुझावै॥ ७२॥

सोरठ ॥ लोक सकुच कुलकानि तजी। जैसे नदी सिंधुको धावै तैसे श्याम भजी॥ मात पिता बहु त्रास दिखायो नेक न डरी लजी। हारि मानि बैठे नाहिं लागति बहुतै बुद्धि सजी॥ मानत नहीं लोकमर्यादा हरिके रंग मजी। सूर श्यामको मिलि चूने हरदी ज्यों रंग रजी॥ ७३॥

बारबार जननी समुझावति। काहेको तुम जहँतहँ डोलति हमको अतिहि लजावति॥ अपने कुलकी खबरि करौ धौं सकुच नहीं जिय आवति। दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति॥ यह सुनिकै मन हर्ष बढायो तब इक बुद्धि बनावति। सुनि मैया दधिमाट ढरायो तेहि डर बात न आवति॥ जानदेहि कितनो दधि डारचो ऐसे तब न सुनावति। सुनहु सूर यहि बात डरानी माता उर लै लावति॥ ७४॥

राग सारङ्ग ॥ नेक नहीं घरमों मन लागत । पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन बाणसम लागत ॥ तिनको धिग धिग कहति मनहिंमन इनको बनै भलेही त्यागत । श्याम बिमुख नर नारि वृथा सब कैसे मन इनिसों अनुरागत ॥ इनको बदन प्रात दरशै जिनि बारबार विधिसों यइ मांगत । यह तनु सूर श्यामको अर्प्यो नेक टरत नहिं सोवत जागत ॥ ७५ ॥

राग धनाश्री ॥ पलक ओट नहिं होत कन्हाई । घर गुरुजन बहुतै बिधि त्रासति लाज करावत लाज न आई ॥ नयन जहां दरशन हरि अटके श्रवण थके सुनि वचन सोहाई । रसना और नहीं कछु भाषत श्याम श्याम रट इहै लगाई ॥ चित चंचल संगहिसँग डोलत लोक लाज मर्याद मिटाई । मन हरिलियो सूरप्रभु तबहीं तनु बपुरेकी कहा बसाई ॥७६॥

राग बिलावल ॥ चलीं प्रातंही गोपिका मटुकिनलै गोरस । नयन श्रवन मन चित बुधि ये नाहिं काहूके बश ॥ तनु लीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो जस । गोरस नाम न आवई कोऊ लैहै हरिरस ॥ जीव परचो या ख्यालमें अरु गए दृशा दृश । बझे जाइ खग-बृंद ज्यों प्रिय छवि लटकनि लस ॥ छांडि देहु डरात नाहिं कीन्हों पावै तस । सूर श्याम प्रभु भौंहकी मोरनि फांसी गस ॥ ७७ ॥

राग कान्हरो ॥ दधि बेचत ब्रज गलिन फिरैं । गोरस लेन बोलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं । उनकी बात सुनत नाहिं श्रवणनि कहति कहा ये घर न जरैं । दूध दह्यो ह्यां लेत न कोऊ प्रातहिंते शिर शिर लिये ररैं ॥ बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोकलाज निदरैं । सूर श्यामको रूप महारस जाके बल काहू न डरैं ॥ ७८ ॥

गोरसको निजनाम भुलायो । लेहुलेहु कोऊ गोपालहि गलिनगलिन यह शोर लगायो ॥ कोउ कहै श्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरश नाहीं हम पायो । जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिनहि सुनायो ॥ एक कहि उठत दान मांगत हरि कहूँ भई की तुमहिं चलायो । सुनहु सूर तरुणी जोबनमद तापर श्याम महारस पायो ॥ ७९ ॥

ग्वालिनि फिरति बेहालहिसों । दधि मटुकी शिर लीन्हे डोलति रसना रटति गोपाल-हिसों ॥ गेह नेह सुधि देह बिसारे जीव परचो हरिख्यालहिसों । श्याम धाम निजबास रच्यो रचि रहित भई जंजालहिसों ॥ छलकत तक्र उफनि अंग आवत नाहिं जानति तेहि कालहिसों । सूरदास चित ठौर नहीं कहुँ मन लाग्यो नँदलालहिसों ॥ ८० ॥

राग मलार ॥ कोऊ माई लैहैरी गोपालहि । दधिको नाम श्यामसुंदर रस बिसरिगई ब्रजबालहि ॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहि । उफनत तक्र चहूँदिशि चितवति चित लाग्यो नँदलालहि ॥ हँसति रिसाति बोलावति बरजति देखहु उलटी चालहि ॥ सूर श्यामबिनु और न भावै या बिरहिनि बेहालहि ॥८१॥

राग गौडमलार ॥ ग्वालिनि प्रगट्यो पूरन नेहु । दधिभाजन शिरपर धरे कहति गुपा-लहि लेहु ॥ बन बीथिन निजपुर गली जहीं तहीं हरिनाउँ । समुझाई समुझत नहीं सिख दै बियक्यो गाउँ ॥ कौन सुनै काके श्रवण काकी सुरति सकोच । कौन निडर डर

आपको को उत्तम को पोच ॥ प्रेम पिये बर बारुनी बलकत बल न सँभार । पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अकल लिलार ॥ मंदिरमें दीपक दिये बाहेर लखै न कोइ । तिन्हैं प्रेम परगट भए गुप्त कौनपै होइ ॥ लज्जा तरलतरंगिनी गुरुजन गहरी धार । दुहूँ कूल तरुनी मिलीं तिहि तरत न लागी बार ॥ विधि भाजन ओछो रच्यो शोभासिंधु अपार । उलटि मगन तामें भई तब कौन निकास निहार ॥ जैसे सरिता सिंधुमें मिली जु कूल बिदारि । नाम मिट्यो सलिलै भई तब कौन निबेरै बारि ॥ चित आकर्ष्यौ नंदसुत मुरली मधुर बजाइ । जिहि लज्जा जग लज्जियो सो लज्जा गई लजाइ ॥ प्रेम मगन ग्वालिनि भई सूर सु प्रभुके संग । नैन बैन मुख नासिका ज्यों केंचुलि तजै भुजंग ॥८२॥

राग सुघराइ ॥ छोटी मटकिया मधुर चाल लेचलोरी गोरस बेंचन रसाल । हरबराइ उठि आइ प्रातते बिथुरी अलक अरु बसन मरगजे तैसीये सोहति कुँभिलानी माल ॥ गेह नेह सुधि नेक न आवति मोहि रही तजि भव जंजाल । औरै कहति और कहि आवति मनमोहनके परी ख्याल ॥ जोइ जोइ बूझत है री कहा· यामें कहति फिरति कोऊ लेहु गोपाल । सूरदास प्रभुके रसवश भई चतुर ग्वालिनी तनु मनु गति बेहाल ॥ ८३ ॥

राग कान्हरो ॥ दधि मटुकी शिरधरे ग्वालिनी कान्हकान्ह करती डोलै । बिवश भई तनु न सँभारै री गोरस सुधि बिसारि गई आपु बिकानी बिनु मोलै ॥ जोइ जोइ पूछत यामें है री कहा लेहु लेहु करति फिरति डोल डोलै ॥ सूरदास प्रभुके रस वश भई ग्वालिनी बिरहावश तनुगति भई डोलै ॥ ८४ ॥

राग धनाश्री ॥ बेचतिही दधि ब्रजकी खोरि । शिरको भार सुरति नहिं आवति श्याम श्याम टेरत भई भोरि ॥ घरघर फिरति गोपालहि बेंचति मगन भई मन ग्वारि किशोरि । सुन्दर वदन निहारन कारन अन्तर लगी सुरतिकी डोरि ॥ ठाढी भई बिथकि मारगमें मांझ हाट मटकी सो फोरि । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि चित चिंतामणि लियो अजोरि ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ॥ नरनारी सब बूझत जाई । दही मही मटुकी शिर लीन्हें बोलतिहो गोपाल सुनाई ॥ हमहिं कहौ तुम करति यह फिरति प्रातहीते हो आई । गृह द्वारौ कहुँ है की नाहीं पिता मात पति बंधु न भाई ॥ इतते उत उतते इत आवति विधि मर्यादा सबै मिटाई । सूर श्याम मन हरचो तुम्हारो हम जानी इह बात बनाई ॥ ८६ ॥

राग धनाश्री ॥ कहति नंदघर मोहिं बतावहु । द्वारहि मांझ बात इह कहती है कहां मोहिं दिखावहु ॥ याही गांव किधौं औरै कहुँ जहां महरको गेहु । बहुत दूरिते मैं आईहौं कहि काहे न यश लेहु ॥ अतिहि संभ्रम भई ग्वालिनी द्वारे ही पर ठाढी । सूरदास स्वामी सों अटकी प्रीति प्रगट अतिबाढी ॥ ८७ ॥

राग गुडमलार ॥ ग्वारिनि नंददुआर नंदगृह बूझै । इतहिते जाति उत उतहिते फिरै इत निकटहै जाति नाहिं नेक सूझै ॥ भई बेहाल ब्रजबाल नँदलाल हित अर्पि तनमन सबै तिन्हैं दीन्हों । लोकलज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हों ॥

भूलि गयो दधि नाम कहति लैहौ श्याम नहीं सुधि धाम कहुँ है कि नाहीं । सूर प्रभुको मिली मेटि भलि अनभली चून हरदी रंगी देह छाहीं ॥ ८८ ॥

राग रामकली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति । प्रेम ऐसो प्रगट कीन्हों धीर काहे न गहति ॥ ब्रज घरनि उपहास जहँतहँ समुझि मन किनु रहति । बात मेरी सुनत नाहिन कतहि निंदासहति ॥ मातु पितु गुरुजननि जान्यो भली खोई महति । सूर प्रभुको ध्यान चितधरि अतिहि काहे बहति ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री ॥ आपु कहावति बड़ी सयानी ॥ तब तू कहति सबनिसों हँसि हँसि अब तू प्रगट हि भई दिवानी ॥ कहां गई चतुराई तेरी अतिहि काहे भई अयानी । गुप्त प्रीति परगट तैं कीन्हीं सुनति कछू घरघरकी बानी ॥ एक हि बेर तजी मर्यादा मात पिता गुरुजनहिं भुलानी । सुनहु सूर ऐसी न बूझिए शीश धरे मटुकी बिततानी ॥ ९० ॥

राग नट ॥ सुनु री ग्वारि मुगुध गवाँरि । श्यामसों हित भले कीन्हों राखिसकै उबारि ॥ ओछी बुधि तैं करी सजनी लाज दीन्ही डारि । लाज आवति मोहिं सुनिरी तोहि कहत गँवारि ॥ कृष्णधन कहाप्रगट कीजै दियो ताहि उघारि । अजहुँ काहेन समुझि देखति कह्यो सुनुरी नारि ॥ ज्वाब नाहिंन आवई मुख कहतिहौं जो पुकारि । सूर प्रभुको पाइकै यह ज्ञान हृदय विचारि ॥ ९१ ॥

राग कान्हरो ॥ कछु कैहै की मौनहिं रैहै । कहा कहतिहौं तोसों कबकी ताको ज्वाब कछू मोहि दैहै ॥ सुनि है मात पितालोगनि मुख यह लीला उनि सबै जनै है । प्रातहिते आई दधि बेंचन घरहि आजु जैहै कि न जैहै ॥ मेरो कह्यो मानिहै नाहीं ऐसेहि भ्रमि भ्रमि द्योसबितै है । मुखतौ खोलि सुनौं तेरी बानी भली बुरी कैसी घर कैहै ॥ गुप्तप्रीति काहे न करि हरिसों प्रगट किए कछु नफा बढै है । सूर श्यामसों प्रीति निरंतर लाज किये अंतर कछु ह्वैहै ॥ ९२ ॥

कहा कहति तू मोहि री माई । नंदनँदन मन हरिलियो मेरो तबते मोको कछु न सोहाई ॥ अबलौं नहिं जानति मैं कोही कबते तू मेरे ढिग आई । कहां गेह कहां मात पिता हैं कहां सजन गुरुजन को भाई ॥ कैसी लाज कानि है कैसी कहा कहति ह्वैहै रिसिआई । अबतौ सूर भजी नँदलालहि की लघुता की होउ बड़ाई ॥

राग धनाश्री ॥ बारबार मोहिं कहा सुनावति । नेकहु टरत नहीं हृदयते अनेक भांति मनको समुझावति ॥ दो बल कहा देति मोहि सजनी तूतो बड़ी सुजान । अपनीसी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन ॥ लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूरश्यामको बेगि मिलावहु कहति रहत घट प्रान ॥ ९३ ॥

सबै हिरानी हरिमुख हेरे । घुँघट ओट पटओट करे सखि हाथौ हाथ न मेरे ॥ को है लाज कौनको डर है कहा कहैं भौतेरे । को अब सुनै श्रवन हैं काके निपट निगमके टेरे ॥ मेरे नैनन हो नैननकी जोपै जानत फेरे । सूरदास है चेरी कीनी मन मनसिजके चेरे ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ मेरे कहेमें कोऊ नाहीं । कहा कहौं कछु कहि नहिं आवै एकहु नहीं डराहीं ॥ नयन ए हरिदरशनलोभी श्रवण शब्द रसाल । प्रथमही मन गयो तनुतजि तब भई बेहाल ॥ इँद्रियनपर भूप मनहै सबनि लिये बुलाइ । सूर प्रभुको मिले सब ए मोहिं करिगये बाइ ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ कहा करौं मन हाथ नहीं । तू मोसों यह कहत भलीरी अपनो चित मोहिं देत नहीं ॥ नयन रूप अटके नहिं आवत श्रवन रहे सुनि बात तहीं । इंद्री धाइ मिलीं सब उनको तनुमें जीव रह्यो सँगही ॥ मेरे हाथ नहीं ये कोऊ घटलीन्हें इक रही मही । सूरश्याम संगते कहूँ टरत न आनिदेहि जौ मोहि तुही ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ बिकानी हरि मुखकी मुसकानि परवश भई फिरति संग निशि दिन सहज परी यह बानि ॥ नैननि निरखि बसीठी कीन्ही मनुमिलयो पय पानि । गहि रतिनाथ लाज निजपुरते हरिको सौंपी आनि ॥ सुनि सखि सुमुखि नंदनंदनकी दासी सबजग जानि । जोइ २ कहत करत सोई कृत आयसु माथे मानि ॥ गयो ज्ञाति अभिमान मोह मद पति परजन पहिचानि । सूर सिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूँद हिरानि ॥ ९७ ॥

अबतो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों व रहेगी छपानी ॥ कहा करौं सुंदरि मूरति इनि नयननिमांझ समानी । निकसत नहीं बहुत पचि हारी रोमरोम अरुझानी ॥ अब कैसे निरवारि जाति है मिली दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी उर अंतरकी मानी ॥ ९८ ॥

कहा करैगो कोऊ मेरो । हौं अपने पतिव्रतहि न टरि हौं जग उपहास करौ बहुतेरो ॥ कोउ किन लै पाछे मुख मोरै कोउ कहै श्रवन सुनाइ न टेरो । हौं मति कुशल नाहिनै काची हरिसँग छांडि फिरों भवफेरो ॥ अबतौ जी ऐसी बनिआई श्यामधाम मैं करौं बसेरो । तेहिरँग सूर रँग्यो मिलिकैं मन होइ न श्वेत अरुन फिरि पेरो ॥ ९९ ॥

राग धनाश्री ॥ माई री गोविंदासों प्रीति करत तबहीं काहे न हटकी री । यह तौ अब बात फैलगई बईबीज वटकीरी ॥ घरघर नित इहै घेर बानी घटघटकी । मैं तो यह सबै सही लोकलाज पटकी ॥ मदते हस्ती समान फिरति प्रेम लटकी ॥ खेलतमें चूकि जाति होति कला नटकी । जल रजु मिलि गांठि परी रसना हरिरटकी ॥ छोरेते नहीं छुटति कइक बेर झटकी ॥ मेटे क्योंहू न मिटति छाप परी टटकी । सूरदास प्रभुकी छबि हिरदै मेरे अटकी ॥ १२०० ॥

राग आसावरी ॥ मैं अपनो मन हरिसों जोरचो । हरिसों जोरि सबनिसों तोरचो ॥ नाच कछ्यो तब घूँघुट छोरचो । लोकलाज सब फटकि पिछोरचो ॥ आगे पाछे नीके हेरचो । मांझबाट मटुकी शिर फोरचो ॥ कहि कहि कासों करति निहोरचो । कहा भयो कोऊ मुख मोरचो ॥ सूरदास प्रभुसों चित जोरचो । लोक वेद तिनुकासो तोरचो ॥ १ ॥

सखीरी श्यामसों मन मान्यो । नीके करि चित कमलनैनसों घालि एकठो सान्यो ॥ लोकलाज उपहास न मान्यो न्योति आपुनही आन्यो । या गोविंद चंदके कारन बैर सबनिसों ठान्यो ॥ अब क्यों जाति निबेरि सखी री मिलो एकपय पान्यो । सूरदास प्रभु मेरो जीवन है पहिली पहिचान्यो ॥ २ ॥

नंदलालसों मेरो मन मान्यो कहा करैगो कोई री। मैं तो चरण कमल लपटानी जो भावै सो होईरी॥ बाप रिसाइ माइ घर मारै हँसै बिरानो लोग री। अब तौ श्यामहिसों रति बाढी बिधिना रच्यो संयोग री॥ जाति महति पति जा इन मेरी अरु परलोक नशाईरी। गिरिधरवर मैं नेक न छाँडौं मिलीनिशान बजाईरी॥ बहुरि कबहिं यह तनु धरि पैहौं कहाँ पुनि श्रीबनवारी री। सूरदास स्वामीके ऊपर यह तनु डारौं वारी री॥ ३॥

राग सारंग॥ करनदै लोगनको उपहास। मन क्रम वचन नंदनंदनको नेक न छाँडौं पास॥ सब या ब्रजके लोग चिकनियां मेरे भाए घास। अबतो इहै बसी री माई नहिं मानौंगी त्रास॥ कैसे रह्यो परै री सजनी एकगाँवको बास। श्याममिलनकी प्रीति सखी री जानत सूरजदास॥ ४॥

राग रामकली॥ एक गाउँको बास धीरज कैसेकै धरौं। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि जतन करौं॥ वे येहि मग नितप्रति आवतहैं हौं दधि लै निकरौं। पुलकित रोम रोम गदगद सुर आनँद उमँगि भरौं॥ पल अंतर चलिजात कलपभरि बिरहाअनल जरौं। सूर सकुच कुलकानि कहाँलगि आरजपथहि डरौं॥ ५॥

मेरो मन हरिचितवनि अरुझानो। फेरत कमलद्वार ह्वै निकसे करत शृंगार भुलानो॥ अरुन अधर दशननि द्युति राजति मोहन मुरि मुसकानो। उदधितनया सुत पांति कमलके बंदन भुरके मानो॥ सुभग कपोल लोल मणिकुंडल इह उपमा केहि बानो। उभय अंक अति पान अमीरस मीन ग्रसत बिधि भानो॥ यहि रस मगन रहति निशि वासर हारि जीति नहिं जानों। सूरदास चितभंग होत क्यों जो जेहि रूप समानो॥ ६॥

राग रामकली॥ हौं सँग साँवरेके जैहौं। होनी हाइ सो होवै अबहीं यश अपयश काहू न डरैहौं॥ कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्राण तेहि दैहौं। दैहौं त्यागि राखिहौं यह ब्रत हरिरति बीज बहुरि कब बैहौं॥ का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि अगास पियभवन समैहौं। का यह ब्रजवापीक्रीडा जलभजि नँदनंद सबै सुखलैहौं॥ ७॥

राग धनाश्री॥ तैं मेरे हित कहंत सही री। यह मोको सुधि भली दिवाई तनु बिसरे मैं बहुत बही री॥ जबते दान लियो हरि हमसों हँसिहँसि री कछु बात कहीरी। काके घर काके पितु माता काके तनुकी सुरति रहीरी॥ अब समुझति कछु तेरी बाणी आई हौं लइ दही महीरी। सुनहु सूर प्रातहिते आई यह कहिकहि जिय लाज गही री॥ ८॥

सुनरी सखी बात एक मेरी। तोसों धरौं दुराइ कहौं केहि तू जानहि सब चितकी मेरी॥ मैं गोरस लै जाति अकेली कालि कान्ह बहियाँ गहि मेरी। हारसहित अचरा गहो गाढे एक कर गही मटुकिया मेरी॥ तब मैं कह्यो खीझि हरि छांडहु टूटैगी मोतिनलर मेरी। सूर श्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तू मोसों मेरी॥ ९॥

तऊ न गोरस छांडिदयो। चहुँ फल भवन गह्यो साँगरिपु वाजि धरा अथयो॥ अमी वचन रुचि रचतकपट हठि झगरो फेरि ठयो। कुमुदिनि प्रफुलितहौं जिय सकुची लै मृगचंद जयो॥ जानि निशा शशिरूप विलोकत नवलकिशोर भयो। तबते सूर नेक नहिं छूटत मन अपनाइलयो॥ १०॥

राग नट ॥ सखी वह गई हरिपै धाइ । तुरतही हरि मिलो ताको प्रगट कही सुनाइ ॥ नारि एक अति परम सुंदरि बरनि कापै जाइ । प्राततें शिर धरे मटुकी नंदगृह भरमाइ ॥ लेहु लेहु गोपाल कोऊ दह्यो गई भुलाइ । सूर प्रभु कहुँ मिले ताको कहति कारि चतुराइ ॥ ११ ॥

राग कान्हरो ॥ नंदग्रामको मारग बूझै है कोऊ दधि बेंचनहारी । सुनहु न श्याम कठिन तनुगारै बिधुबदनी अरु हाट कढारी ॥ अब याको सुर ताहि बिरंचै याहि बिरंचि शीश पग धारी । कमल कुरंग चलत बरुना भष राख्यो निकट निषंग सँवारी ॥ गति मराल शावक ता पाछे जावक मुक्ता चुनत बिसारी । सूरदास प्रभु कहत बनै नहिं सुख-संपति वृषभानुदुलारी ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ शिर मटुकी मुख मौन गही । भ्रमि भ्रमि बिवश भई नवग्वालिनि नवलकान्हके रस उमही ॥ तनुकी सुधि आवति जब मनहीं तबहिं कहति को लेत दही । द्वारे आइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किन सरस मही ॥ इत उत ह्वै आवति फिरि इहई महरि तहाँ लगि द्वार रही । अवर बोलावत ताहि न हेरत बोलति आनि नंद दरही ॥ अंग अंग यशुमति तेहि चरची कहा करति यह ग्वारि बही । सुनहु सूर यह ग्वारि भ्रमानी कबकी एही ढग रही ॥ १३ ॥

राग रामकली ॥ कबकी मह्यो लिये शिर डोलै ॥ झूठेही इत उत फिरि आवै इहां आनि पै बोलै ॥ मुँहसों भरी मथनियाँ तेरी तोहिं रटत भई सांझ । जानतिहौ गोरसको लैबो याही बाखरि मांझ ॥ इत धौं आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनि मानै । तेरे घरमें तुही सयानी और बेचि नहिं जानै ॥ भ्रमतहि भ्रमत भ्रमि गई ग्वालिनि बिकलभई बेहाल । सूरदास प्रभु अंतर्यामी आइ मिले गोपाल ॥ १४ ॥

भयो मन माधवकी अवसेर । मौनधरे मुख चितवति ठाढी ज्वाब न आवै फेर ॥ तब अकुलाइ चली उठि बनको बोलै सुनत न टेर । बिरहविवश चहुंघा भरमति है श्याम कहा कियो झेर ॥ अबहूं बेगि मिलो नँदनंदन दान करो निरबेर । सूर श्याम अंकम भरि लीन्ही दूरि कियो दुख ढेर ॥ १५ ॥

राग बिलावल ॥ सांची प्रीति जानि हरि आए । पूरन नेह प्रगट दरशाए ॥ लई उठाइ अंक भरि प्यारी । भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनु भारी ॥ मुखमुख जोरि आलिंगन दीन्हों । बारबार भुज भरिभरि लीन्हों ॥ वृंदावन घन कुंजलतातर । श्याम श्याम नवल नवला बर ॥ मनमोहन मोहनि सुखकारी । कोककलागुण प्रगटे भारी ॥ छूटे बंद अलक शिर छूटे । मोतिनहार टूटि सुख लूटे ॥ सूर श्याम बिपरीत बढाई । नागरि सकुचि रही लपटाई ॥ १६ ॥

राग रामकली ॥ यह कहि मौन साध्यो ग्वारि । श्यामरस घटपूरि उछलित बहुरि धरयो सँभारि ॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देहदशा बिसारि । लेहु री कोउ नंदनंदन कहै पुकारि पुकारि ॥ सखीसों तब कहति तू री को कहांकी नारि । नंदके गृह जाउँ कित ह्वै जहां हैं बनवारि ॥ देखि वाको चकृत भई सखि बिकल भ्रम गई मारि । सूर श्यामहि कहि सुनाऊं गए शिर कहा डारि ॥ १७ ॥

राग नट ॥ श्यामा श्याम करत बिहार । कुंजगृह रचि कुसुम शैया छबि बरनि को पार ॥ सुरति सुख करि अंग आलस सकुचि बसन सँभारि । परसि पद भुज कंठ दीन्हें बैठे हैं बर नारि ॥ पीत कंचन बरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि । सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रगट सुख बिस्तारि ॥ १८

राग कान्हरो ॥ राधा बसन श्यामतनुचीन्ही । सारँगबदनबिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही ॥ सारँग वचन कहत सारंगसों सारँगरिपु दै राखति झीनी । सारँगपानि कहत रिपु सारँग सारँग कहा कहति लियो छीनी । सुधापान करि कुच नीकी बिधि रह्यो शेष फिरि मुद्रा दीन्ही । सूर सुदेश आहि रति नागर भुज आकर्षि बान कर लीन्ही ॥१९॥

तुमसों कहा कहौं सुंदरघन । या ब्रजमें उपहास चलत है सुनि सुनि श्रवन रहति मन-हीमन । जा दिन सबनि बछरु नोई करि मो दुहिदई धेनु बंसीबन । तुम गही बाँह सुभाइ आपने हौं चितई हँसि नेक बदन तन ॥ ता दिनते घर मारग जित तित करत चबाउ सकल गोपीजन । सूरश्यामसों सांच पारिहौं यह पतिबरत सुनहु नँदनंदन ॥२०॥

राग भैरव ॥ कहा कहौं सुंदर घन तुमसों । घेरा इहै चलावत घर घर श्रवण सुनत जिय खुनसों ॥ भैनी मात पिता बंधव गुरु गुरुजन यह कहैं मोसों । राधा कान्ह एक सँग बिलसत मनहींमन अपसोसों ॥ कबहुँक कहौं सबनिपरि त्यागौं बूझति हौं अब गोसों । सूर श्याम दरशन बिन पाये नयन देत मोहिं दोसों ॥ २१ ॥

राग रामकली ॥ बात यह तुमसों कहत लजाउँ । सुनि न जात घरघरको घेरा काहू मुख न समाउँ ॥ नर नारी सब इहै चलावत राधा मोहन एक । मात पिता सुनि सुनि अति त्रासत मैं एकै वे अनेक ॥ आपु जबहि द्वारे ह्वै निकसत देखत सबै सुगात । निंदति तुमहिं सुनावति मोको सुनत न नेक सोहात ॥ धिग नर धिग नारी धिग जीवन तुमहि बिमुख धिग देह । सूर श्याम यह कोऊ न जानत तनु ह्वै है जरिखेह ॥ २२ ॥

राग गूजरी ॥ श्याम यह तुमसों क्यों न कहौं । जहाँ तहाँ घरघरको घेरा कौनी भांति सहौं ॥ पिता कोपि करवाल लेत कर बंधु बधनको धावै । मात कहै कन्या कुलको दुख जनि कोऊ जग जावै । बिनती एक करौं कर जोरे यहि बीथिन जिनि आवैं । जे जन सब आपुनको जानत ते जय जन्म न पावैं ॥ मनक्रम वचन कहति हौं सांची मैं मन तुमहि लगायो । सूरदास प्रभु अंतर्यामी क्यों न करहु मनभायो ॥ २३ ॥

राग रामकली ॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी । गुरुजन खिझत कतहि रिस पावति काहेको पछितानी ॥ देहधरेको धर्म इहै है सजन कुटुंब गृहप्रानी । कहन देहु कहि कहा करैंगे अपनी सुरति हिरानी ॥ लोकलाज काहेको छाँडति ब्रजही बसे भुलानी । सूरदास घट द्वै करि मनये भेद नहीं कछु जानी ॥ २४ ॥

राग जयतश्री ॥ ब्रजबासि काके बोल सहौं । तुम बिन श्याम और नहिं जानौं सकु-चनि तुमहिं कहौं ॥ कुलकी कानि कहाँलौं करिहौं तुमको कहां लहौं । धिग माता धिग पिता बिमुख तुव भावै तहां बहौं ॥ कोउ करै कहै कछु कोऊ हरष न शोक गहौं । सूर श्याम तुमको बिनु देखे तनमन जीव दहौं ॥ २५ ॥

ब्रजहि बसे आपुहि बिसरायो । प्रकृति पुरुष एकैकरि जानहु बातनि भेद करायो ॥ जल थल जहां रहों तुम बिनु नाहिं वेद उपनिषद गायो । द्वै तनु जीव एक हम तुम दोऊ सुख कारण उपजायो ॥ ब्रह्मरूप द्वितिया नहिं कोई तब मन त्रिया जनायो । सूर श्याम मुख देखि अलप हँसि आनँदपुंज बढायो ॥ २६ ॥

राग रामकली ॥ तब नागरि मन हरष भई । नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनंदमई ॥ प्रकृति पुरुष नारी मैं वे पति काहे भूलिगई । को माता को पिता बंधु को यह तो भेट नई ॥ जन्म जन्म युग युग यह लीला प्यारी जानिलई । सूरदास प्रभुकी यह महिमा याते विवश भई ॥ २७ ॥

राग सूही ॥ सुनहु श्याम मेरी इक बिनती । तुम हरता तुम करता प्रभुजू मात पिता कौने गनती ॥ गैवर भेति चढावत रासभ प्रभुता मेटि करत हिनती । अबलौं करी लोक मर्यादा मानहु थोरहि दिनती । बहुरि बहुरि ब्रज जन्म लेतहैं इह लीला जानी किनती । सूर श्याम चरणनिते मोकौ राखत रहै कहा मिनती ॥ २८ ॥

राग धनाश्री ॥ देह धरेको यह फल प्यारी । लोकलाज कुलकानि मानिये डरिये बंधु-पिता महतारी ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु घर सुंदरि बडे महर वृषभानु दुलारी । तुम अवसेर करत सब ह्वै हैं जाहु बेगि देहैं पुनि गारी ॥ हमहुँ जाहिं ब्रज तुमहु जाहु अब गेह नेह क्यों दीजै डारी । सूरदास प्रभु कहत प्रियासों नेकु नहीं मोते तुम न्यारी ॥ २९ ॥

राग धनाश्री ॥ देह धरेकौ कारण सोई । लोक लाज कुल कानि न तजिये जाते भलो कहै सबकोई ॥ मातपिताके डरको माने मानैं सजन कुटुंब सब लोई । तात मात मोहूको भावत तनु धरिकै मायावश होई ॥ सुनि वृषभानुसुता मेरी बानी प्रीति पुरातन राखहु गोई । सूर श्याम नागरिहि सुनावत मैं तुम एक नहीं हो दोई ॥ ३० ॥

राग सारंग ॥ अब कैसे दूजे हाथ बिकाऊं । मन मधुकर कीन्हो वा दिनते चरणकमल निज ठाऊं ॥ जो जानौं और कोई करता तऊ न मन पछिताऊं । जो जाको सोई सो जानै अघतारन नर नाऊं ॥ जब परतीति होइ या युगकी परमिति छुटत डेराऊं । सूरदास प्रभु सिंधु शरण तजि नदी शरन कत जाऊं ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ॥ घर पठई प्यारी अंकम भरि । कर अपने मुख परसि त्रियाके प्रेमसहित दोऊ भुज धरिधरि ॥ सँग सुख लूटि हरष भई हिरदय चली भवन भामिनि गजगति ढरि । अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत रीझत ठाढे हरि ॥ बेनी डुलति नितंबनि पर दोउ छीन लंकपर वारों केहरि । फिरि चितयो तब प्यारी पियतन दुहुँ मनै आनंद हरष करि ॥ राधा हरि आधा आधा तनु एकै द्वै ब्रजमें ह्वै अवतरि । सूर श्याम रसभरी उमँग अँग वह छबि देखि रह्यो रतिपति डरि ॥ ३२ ॥

राग बिलावल ॥ घरहि जाति मन हरष बढायो ॥ दुख डारचो सुख अंग भारभरि चली लूहिसो पाये ॥ भौंह सकोरति चलति मंदगति नेक वदन मुसुकाए । तहँ एक सखी मिलि राधाको कहति भये मनभाए ॥ कुंजभवन हरिसंग बिलसि रस मनके सुफल कराए । सूर सुगंध चुनावन हारे कैसे दुरत दुराए ॥ ३३ ॥

राग जयतश्री ॥ कहा फूली आवत री राधा । मानहुँ मिला अंक भरि माधव प्रगटत प्रेम अगाधा ॥ भ्रुकुटी धनुष नैन सर साधे बदन विकास अगाधा । चंचल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन साधा । सो रस दिये सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ॥ ३४ ॥

राग सोरठ ॥ राधेसों रस बरनि न जाई । जा रसको सुर भान शीश दियो सो तैं पियो अकुलाई ॥ पचिहारे सब बाल कमलमुख चंद्रवदन ठहराई । अजहुँ कमंध फिरत तेहि लालच सुंदरि सैन बुझाई ॥ मोहनते रसरूप आगरी कटति न जानि निकाई । सूरदास पपिहाके मुखमें कैसे सिंधु समाई ॥ ३५ ॥

राग नट ॥ मोसों कहा दुरावति राधा । कहां मिली नँदनंदनको जिन पुरयो मनको साधा ॥ व्याकुलभई फिरतहीं अबहीं काम व्यथा तनु बाधा । पुलकित रोमरोम गदगद अत्र अँगअँग रूप अगाधा ॥ नहिं पावत जो रस योगीजन तब तप करत समाधा । सुनहु सूर तेहि रस परिपूरन दूरि कियो तनु दाधा ॥ ३६ ॥

राग आसावरी ॥ कहा कहति तू भई बावरी ॥ तू हँसि कहति सुनै कोउ औरै कहा कीन्हों चाहति उपाव री ॥ सो तो सांच मानि यह लैहै हमहिं तुमहिं बाते सुभावरी । मेरी प्रकृति भलेकरि जानति मै तोसों करिहौं दुराव री ॥ ऐसी कैसे होइ सखी री घर पुनि मेरो है बचावरी । सूर कहति राधा सखि आगे चकित भई सुनि कथा रावरि ॥३७॥

राग सारंग ॥ श्याम कौन कारेकी गोरे । कहां रहत काके वै ढोंटा वृद्ध तरुण की वोहैं भोरे ॥ इहईं रहत कि और गाँउ कहुँ मैं देखे नाहिंन कहुँ उनको । कहै नहीं समुझाइ बात इह मोहि लगावति हौ तुम जिनको ॥ कहांरहौ मैं वै धौं कहँके तुम मिलवतिहौ काहे ऐसी । सुनहु सूर मोसी भोरीको जोरिजोरि लावति हौ कैसी ॥ ३८ ॥

जाहु चली मैं जानी तोको । आजुहि पढिलीन्ही चतुराई कहा दुरावति मोको ॥ एही ब्रज तुम हम नँदनंदन दूरि कतहुँ नहिं जैहैं । मेरे फंद कबहुँ तौ परिहौ मुजरा तबहीं देहैं ॥ उनहिं मिले वितपन्न भई अब वै दिन गए भुलाई । सूर श्याम सँगते उठि आई मोसों कहति दुराई ॥ ३९ ॥

राग सोरठ ॥ हँसत कहत कीधौं सतभाव । तेरीसौं मैं कछू न समुझति कहा कह्यो मोहि बहुरि सुनाउ॥मेरी शपथ तोहिं री सजनी कबहूँ कछु पायो यहि भाउ । देख्यो नयन सुन्यो कहुँ श्रवणनि झूठे कहति फिरतिहौ दाउ ॥ यह कहती औरै जो कोऊ तासों मैं करती अपडाउ । सूरदास यह मोहि लगावति सपनेहुँ जासों नहिं दरशाउ ॥ ४० ॥

राग धनाश्री ॥ राधे तेरो वदन विराजत नीको । जब तू इतउत बंक बिलोकति होत निशापति फीको ॥ भ्रुकुटी धनुष नैन शर साधे शिर केसरिको टीको । मनु घूँघट पट मैं दुरि बैठो पारधिपति रतिहीको ॥ गति मैं मत नागज्यों नागरि करे कहतिहौं लीको । सूरदास प्रभु विविधभांतिकरि मन रिझयो हरिपीको ॥ ४१ ॥

राग बिहागरो ॥ राजति राधे अलक भलीरी। मुक्ता मांग तिलक पनगिनि शिर सुतसमेत भष लेन चली री ॥ कुमकुम आड स्त्रवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छबिछीट चली री। चारु उरोज उपर यों राजत अरुझे अलिकुल कमलकली री ॥ रोमावलि त्रिबली उर परशत वंश चढै नट काम बलीरी। प्रीति सोहाग भुजा शिरमंडन जघन सघन विपरीत कदली री ॥ जावक चरण पंचशरसायक समर जीति लै शरन चली री। सूरदास प्रभुको सुख दीन्हो नखसिख राधे सुखनि फलीरी ॥ ४२ ॥

राग रामकली ॥ सजनी कत यहबात दुरैहौं। ऐसी मोहिं कहै जिनि कबहूं झूठेपर दुख पैहौं ॥ तोते पीतम और कौनहै जाके आगे कैहौं। मोको उचटाए कछु पैहौ बहुरि नाउँ नहिं लैहौं ॥ यह परतीति नहीं जिय तेरे सो कहा तोहि चुरैहौं। सूरश्याम धौं कहां रहत हैं काहेको तहां जैहौं ॥ ४३ ॥

राग धनाश्री ॥ चतुर सखी मन जानिलई। मोसों तौ दुराव यह कीन्हों याके जिय कछुत्रास भई ॥ तब यह कह्यो हँसत री तोसों जिनि मनमें कछु आनै। मानी बात कहां वै कहं तू हमहूं उनहिं न जानै ॥ अबै तनक तू भई सयानी हम आगेकी बारी। सूर श्याम ब्रजमें नहिं देखे हँसत कह्यो घर जा री ॥ ४४ ॥

राग बिलावल ॥ सकुच सहित घरको गई वृषभानुदुलारी। महरि देखि तासों कह्यो कहँ रही री प्यारी ॥ घर तोहि नेक न देखऊँ मेरी महतारी। डोलत लाज न आवई अजहूँ है बारी ॥ पिता आजु रिस करतहै दैदै कहै गारी। सुता बडे वृषभानुकी कुल खोवनहारी ॥ बंधव मारन कहतहैं तेरे ढँग कारी। सूर श्यामसँग फिरतिहै जोवन मतवारी ॥ ४५ ॥

राग गुंडमलार ॥ कहारी कहति तू मातु मोसों। ऐसी बहिगई को श्यामसँग फिरै जो वृथा रिस करति कहा कहौं तोसों ॥ कही कौने बात बोलिये तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखों। तात रिस करत भ्राता कहै मारिहौं भीति बिन चित्र तुम करति रेखो ॥ तुमहुं रिस करति कछु कहा मोहिं मारिहौ धन्य पितु भ्रात माता अरुन ही। ऐसे लायक नंदमहरको सुत भयो तिनहीं मोहिं कहनि प्रभु सूर सुनही ॥ ४६ ॥

राग गूजरी ॥ कहिको परघर छिनछिन जाति। गृहमें डाटि देति शिख जननी नाहिंन नेक डराति ॥ राधा कान्ह कान्ह राधा ब्रज ह्वै रह्यो अतिहि लजाति। अब गोकुलको जैबो छाँडौ अपयशहू न अघाति ॥ तू बृषभानु बडेकी बेटी उनके जाति न पांति। सूर सुता समुझावति जननी सकुचत नहिं मुसकाति ॥ ४७ ॥

राग कान्हरो ॥ खेलनको मैं जाउँ नहीं। और लरिकनी घरघर खेलति मोहीको पै कहति तुही ॥ उनके मात पिता नहिं कोई खेलति डोलति जहीं तहीं। तोसी महतारी बहि जाई मैं रैहौं तुमही बिनहीं ॥ कबहूं मोको कछू लगावति कबहुं कहति जिन जाहु कहीं। सूरदास बातैं अनखोही नाहिंन मोपै जात सही ॥ ४८ ॥

राग सारंग ॥ मनही मन रीझति महतारी। कहा भई जो बाढि तनक गई अबहीं तौ मेरी है बारी ॥ झूठेही वह बात उडी है राधा कान्ह कहत नर नारी। रिसकी बात सुताके

मुखकी सुनत हँसी मनही मन भारी ॥ अबलौं नहीं कछू इहि जान्यो खेलत देखि लगावैं गारी । सूरदास जननी उर लावति मुख चूमति पोछति रिस टारी ॥ ४९ ॥

राग सुहा ॥ सुता लये जननी समुझावति । संग बिटिनिअनके मिलि खेलौ श्यामसाथ सुनिसुनि रिस पावति ॥ जाते निंदा होइ आपनी जाते कुलको गारी आवति । सुनि लाडिली कहति यह तासों तोको याते रिस करि धावति ॥ अब समुझी मैं बात सबनकी झूठेही यह बात उठावति । सूरदास सुनिसुनि यह बातैं राधा मन अति हरष बढावति॥५०॥

राग नट ॥ राधा विनय करति मनहीमन सुनहु श्याम अंतरके यामी । मात पिता कुल कानिहि मानत तुमहिं न जानतहैं जगस्वामी ॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतहैं ऐसे ठौर रहीं हौं आनी । गुरुपरिजनकी कानि मानियो बारंबार कही मुख बानी ॥ कैसे संग रहौं बिमुखनके यह कहि कहि नागरि पछितानी । सूरदास प्रभुको हिरदय धरि गृहजन देखि देखि मुसुकानी ॥ ५१ ॥

राग धनाश्री ॥ जब प्यारी मन ध्यान धरचो । पुलकित उर रोमांच प्रगट भए अंचर टरि मुख उघरि परचो ॥ जननी निरखि रही ता छबिको कहन चहै कछु कहि नहिं आवै ॥ चकृत भई अँगअंग बिलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावै ॥ पुनि मन कहति सुता काहूकी कीधौं यह मेरी है जाई । राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जिये भरमाई ॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब ज्ञान कियो । सूरदास प्रभु प्यारीकी छबि देखि चहति कछु सीख दियो ॥ ५२ ॥

राग सोरठ ॥ राधा दधिसुत क्यों न दुरावति । हौंज कहति वृषभानुनंदिनी काहेको तू जीव सतावति ॥ जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर द्वै पंछीदुख पावत । सारँग दुखीहोत सारँगबिनु तोहि दया नहिं आवत ॥ सारँग रिपुको नेक ओट कहि ज्यों सारँग सुगपावत । सूरदास सारँग केहि कारण सारँग कुलहि लजावत ॥ ५३ ॥

राग बिहागरो ॥ मेरी सिख श्रवण काहे न करति । अजहुं भोरी भई रैहै कहति तोसों डरति ॥ शशि निरखि मुख चलत नाहिंन नयन निरखि कुरंग । कमल खंजन मीन मधुकर होतहै चितभंग ॥ देखि नासा कीर लज्जित अधर दशन निहारि । बिंब अरु बंधूक विद्रुम दामिनी डर भारि ॥ उर निरखि चक्रवाक बिथके कटि निरखि बनराज । चाल देखि मराल भूले चलत तब गजराज ॥ अंग अंग अवलोकि शोभा मनहिं देखि विचारि । सूर मुख पट देति काहेन बरष दश युग भारि ॥ ५४ ॥

राग सूही बिलावल ॥ अब राधा तू भई सयानी । मेरी सीख मानि हिरदय धरि जहँ तहँ डोलति बुद्धि अयानी ॥ भई लाजकी सीमा तनुमें सुनि यह बात कुँवरि मुसकानी । हँसति कहा मैं कहति भली तोहिं सुनत नहीं लोगनकी बानी ॥ आजुहिते कहुँ जान न दैहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी । सूर श्यामके संग न जैहौं जाकारण तू मोहिं सुगानी ॥ ५५ ॥

राग टोडी ॥ भलीबात बाबा आवनदे । कान्ह लगाइ देति मोहिं गारी ऐसे बडे भए कबते वे ॥ कालि मोहिं मारगमें रोकी जातरही सखियन संग दधि लै । कहनलगे मेरो देहु खिलौना

तादिन लै भागी चुराइकै ॥ छठि आठैं मोहिं कान्ह कुँवरसों तिनकों कहति प्रीति तोसों है । सूर जननि सुनि सुनि यह बानी पुनि पुनि मुख निरखति बिहँसतिहै ॥ ५६ ॥

राग गौरी ॥ बड़ी भई नाहिं गई लरिकाई । बारेहीके ढंग आजुलौं सदा आपनी टेक चलाई ॥ अबहीं मचलि जाइगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई । मानी हारि महरि मन अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई ॥ कंठ लगाइ लई अति हितसों पुनिपुनि कहि मेरी रिसहाई । सूरदास अति चतुर राधिका राखिलई नीके चतुराई ॥ ५७ ॥

राग गुण्ड मलार ॥ श्याम नगजानि हिरदै चुरायो । चतुर बर नागरी महामणि लखि लियौ प्रिय सखी संग नाहिन जनायो ॥ कृपिनि ज्यों धरति धन ऐसे डिठ कियो मन जननि सुनि बात हँसि कंठ लायो । गांसदियो डारि कह्यो कुँवरि मेरी बारि सूर प्रभु नाम झूठे डरायो ॥ ५८ ॥

राग कल्याण ॥ सखियन इहै बिचार परचो । राधा कान्ह एक भए दोऊ हमसों गोप करचो ॥ वृंदावनते अबहीं आई अति जिय हरष बढाये । औरै भाव अंग छबि औरै श्याम मिले मनभाये ॥ तब वह सखी कहति मैं बूझी मोतन फिरि हँसि हेरचो । जबहिं हरि तब रिस करि मुख फैरचो ॥ औरै बात चलावन लागी मैं वाको पहिचानी । सूर श्यामके मिलत आजही ऐसी भई सयानी ॥ ५९ ॥

राग सोरठ ॥ सुनहु सखी राधाकी बातें । मोसों कहति श्याम हैं कैसे ऐसी मिलई घातें । की गोरे की कारे रँग हरि की जोबन की भोरे । की यहि गाउँ बसतकी अनतहि दिननि बहुत की थोरे ॥ की तू कहति बात हँसि मोसों की बूझति सतिभाऊ । सपनेहू उनको नहिं देखे वाके सुनहु उपाऊ ॥ मोसों कही कौन तोसी प्रिय तोसों बात दुरैहौं । सूर कही राधा मोआगे कैसे मुख दरशैहौं ॥ ६० ॥

राग गौरी ॥ वह निधरक मैं सकुचि गई । तब यह कह्यो जाहि घर राधा मैं झूठो तैं सांच भई ॥ त्यौंरी भौंहन मोतन चितवै नेक रहौं तो करै खई । काम भँडार लूटि नीके करि निदरि गई मैं चकृत भई ॥ घर धौं जाइ कहा अब कैहै अब कछु अवरै बुद्धि नई । सूर श्याम अंग सँग रंग राची मनमानो सुख लूटिलई ॥ ६१ ॥

राग बिलावल ॥ सुनि सुनि बात सखी मुसकानी । अबहीं जाइ प्रगट करि दैहैं कहाँ रहै यह बात छपानी ॥ औरनिसों दुराव जो करती तौ हम कहति भली सयानी । दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी ॥ हम जातहि वह उघरि परैगी दूध दूध पानीसो पानी । सूरदास अब करति चतुरई हमहिं दुरावति बातन ठानी ॥ ६२ ॥

राग रामकली ॥ अपनो भेद तुम्हैं नहिं कैहै । देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै ॥ बड़े गुरुकी बुद्धि पढी वह काहूको न पत्यैहै । एकौ बात मानिहै नाहीं सबकी सोहैं खैहै ॥ मैं नीके करि बूझि रही हौं अब बूझे रिस पैहै । सुनहु सूर रसछकी राधिका बातन बैर बढैहै ॥ ६३ ॥

राग बिलावल ॥ कहा बैर हमसों वह करिहै । वाकी जाति भले करि पाई हमको कहा निदरिहै ॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातै बात उघरिहै । दूरि करौं लँगराई वाकी मेरे फँद जो परिहै ॥ हमसों बैर किये कहा पैहै काज कहा पुनि सरिहै । सूरदास मटुकी शिर लीन्हें बहुरि बैसही रहिहै ॥ ६४ ॥

चलहु सखी जैये राधाघर । बूझे बात कहा धौं कैहै निधरक है कीधौं मनमें डर ॥ कीधौं हमहिं देखि भजि जैहै की उठि हमको मिलिहै । कीधौं बात उघारि कहैगी की मनहीमन मिलिहै ॥ कीधौं हँसि बोलै की रिस करि कीधौं सहज सुभाई । कीधौं सूर श्याम रसमाती जोबन गर्व बढ़ाई ॥ ६५ ॥

युवती जुरि राधा ढिग आई । लखिलीनी तब चतुर नागरी ये मोपर सब हैं रिसहाई ॥ आदर नहीं कियो काहूको मनमें एक बुद्धि उपजाई । मौन गह्यो नहिं बोलति तिनसों बैठि रही करिकै चतुराई ॥ आपुहि बैठि गई ढिग सिगरी जब जानी यह तौ चतुराई । सूरदास वै सखी सयानी और कहूंकी बात चलाई ॥ ६६ ॥

राग जैतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेंट भई । वै तौ निठुर मौनह्वै बैठी इन सबहिन लखि ताहि लई ॥ मुहांचही युवतिन तब कीन्हीं देखौ उलटी रीति भई । कहा हमारो मन यह राखैं अरु हमहींरर सतारि गई ॥ बूझहु याहि खूट धरिकै तू कहा आजु यह मौन लई । सुनहु सूर हमसों कहा परदा हम करि दीन्हीं साट सई ॥ ६७ ॥

राग गंड ॥ राधिका मौन व्रत किन सधायो । धन्य ऐसौ गुरू कानके लागतै मंत्र दै आजुही वह लखायो ॥ कालि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहिं कछु और ह्वै गई प्यारी । सुनत यह बात दौरि आई सबै तोहिं देखत भई चकृत भारी ॥ अब कहो बात या मौनको फल कहा सुनि तू लीजै कछू हमहु जानैं । एकही संग भई सबै जोबन नई अब होहु गुरु हम तुमहिं मानैं ॥ देहि उपदेश हमहूं धरैं मौन सब मन्त्र जब लियो तब हम न बोली । सूर प्रभुकी नारि राधिका नागरी चरचि लीन्हो मोहि करति ढोली ॥ ६८ ॥

राग मारू ॥ की गुरु कहौ कि मौनै छांडो । हमहिं मूरख वदति आपु ए ढंग सदति पाइ अब मदति हठ कतहि मांडौ ॥ एकही संग हम तुम सदा रहतिहैं आजुही चटकि तू भई न्यारी । भेद हमसों कियो और कोऊ वियो कहा धौं कहै कहा देहि गारी ॥ कहा तोहि भयो तेरी प्रकृति कौनै हरी रीति यह नई तैंही चलायो । सूर सुनि नागरी निठुरई सों बात कहि सुनायो ॥ ६९ ॥

राग गौरी ॥ तुम प्रीतम की बैरनि मेरी । वासों कहति मिलि जो मारग यह मोसों अति कही अनेरी ॥ कहति कहा श्यामहिं मिलि आई मैं चकि रही सौंह मोहिं तेरी । मेरे अंग छवि और कहति कछु युवति सुनत रहीं मुख हेरी । मैं जिनको सपनेहू न देखे तिनकी बात कहत फिरि फेरी । सूरदास गुण भरी राधिका महिमा को जानै यहि केरी ॥ ७० ॥

राग कल्याण ॥ तुमसों कछु दुराव है मेरो । कहां कान्ह कहां मैं सुनि सजनी ब्रज घर घर यह चलत है घेरो ॥ और कहत सब मोहिं न व्यापै तुमहुँ कहौ यह बानी । आदर नहीं कियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी ॥ हम तौ नहीं कह्यो कछु तोसों ताहीपर रिस करती । सूर तबहिं हमसों जो कहती तेरी घां ह्वै लरती ॥ ७१ ॥

राग रामकली ॥ सखी तू राधहि दोष लगावति । तैंरी श्याम कहां ए देखे बातन बैर बढावति ॥ हम आगे झूठी नहिं कैहै सखियन सैन बतावति । ऐसी बात अरी मुख तेरे कैसी

धौं कहि आवति ॥ भेदहि भेद कहति है बातैं ऐसे मनहिं जनावति। सूर श्याम तैं देखे नाहीं कीधौं हमहिं दुरावति ॥ ७२ ॥

राग नटनारायण ॥ काको काको मुख माई बातनको गहिए। पांचकी सात लगायो झूठी झूंठीकै बनायो सांची जो तनक होइ तौलौं सब सहिये ॥ बातनि गहौ अकास सुनत न आवै सांच बोलि तौ कछू न आवै ताते मौन गहिये। ऐसे कहैं नर नारि विना भीति चित्रकारि काहेको देखे मैं कान्ह कहा कहौ सहिये ॥ घरघर इहै घेर वृथा मोसों करैं बैर यह सुनि श्रवणनि हृदय सहि दहिये। सूरदास बरु उपहास सहौं ईसुर मेरे नंद-सुवन मिलैं तोपै कहा चहिये ॥ ७३ ॥

राग गुडमलार ॥ दुरत नहिं नेह अरु सुगंध चोरी। कहा कोउ कहै तू सुनतिकाहे न रहै तनहि कत दहै सुनि सीखमोरी ॥ लोग तोहि कहत हैं पापको गहत हैं कहाधौं लहत हैं सुनहु भोरी। खरिकहू नहिं मिलै कहै कह अनभले करनदे गिले तू दिननि थोरी ॥ नंदको सुवन अरु सुता वृषभानुकी हँसत सब कहैं चिरजिवे जोरी। सूर प्रभु कहां तू कहां वे अपने भवन मैं लखी तोहि तोसी नवोरी ॥ ७४ ॥

राग बिलावल ॥ कैसेहैं नंदसुवन कन्हाई। देखे नहीं नयन भरिकबहूं ब्रजमें रहत सदाई ॥ सकुचतिहौं एकबात कहत तोहिं सो नाहिं जात सुनाई। कैसेहुं मोहिं देखावहु उनको यह मेरे मन आई ॥ अतिही सुंदर कहियत हैं वै मोकों देहि बताई। सूरदास राधाकी बानी सुनत सखी भरमाई ॥ ७५ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनहु सखी राधाकी बानी। ब्रज वसि हरि देखे नाहिं कबहुँ लोगें कहत कछु अद्भुतबानी ॥ ये अब कहति देखावहु हरिको देखहु री यह अकथ कहानी। जो हम सुनत रहीं सो नाहीं अब ऐसेहि यह बात बहानी ॥ ज्वाब न देत बनै काहूसों मनमें काहु न मानी। सूर सबै तरुणीसुख चाहत चतुर चतुरईठानी ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ सुनिराधे तोहिं श्याम देखावैं। जहां तहां ब्रजगलिन फिरतहैं जबहीं वे यहि मारग आवैं ॥ जबहीं हम उनको देखैंगी तहांई तोहिं बोलै हैं। उनहूंके लालसा बहुत यह तो देखे सुख पैहैं ॥ दरशनते धीरज जब रैहै तब हम तोहिं बतै हैं। तुमको देखि श्याम सुंदर घर मुरली मधुर बजैहैं ॥ तनु त्रिभंग करि अंग अंगमों नाना भाउ जनै हैं। सूरदास प्रभु नवल कान्हवर पीतांबर फहरै हैं ॥ ७७ ॥

राग गुंडमलार ॥ नंदनँदन दरशन जब पैहो। एक द्वै तीनि तजि चारि बानी पांच छह निदरि तबहिं सातैं भुलैहो ॥ आठहू गाँठि परिहै नवहुं दशदिशा भूलिहौ ग्यारहों रुद्रजैसे। बारहहौं कला ते तपनि तपते मिटत तेरहों रतन मुख छबिन तैसे ॥ निपुन चौदह बरन पंद्रहौं सुभग अति बरष षोडश सतरहौं न रैहै। जपत अठारहों भेद उनईस नाहिं बीसहूं बिसौ तैं सुखहि पैहै॥नैनभरि देखि जीवन सफल करि लेखि ब्रजहिंमें रहति तैं नहीं जाने। सूर प्रभु चतुर तुमहूं महाचतुर हो जैसि तुम तैसे वोऊ सयाने ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार ॥ मन मन हँसति राधिका गोरी। ऐसे श्याम रहत ब्रजभीतर बूझति है भै भौरी। तुम उनको कहुँ देखेहैंकी सुनी कहतिहौ बात। चतुराई नीके गहि राखी कहत सखी मुसिकात ॥ कबहूँ तौ काहु फंदपरिहौ तबहीं लीजौ चीन्हि। सूरश्यामको पीतांबर बेसरि लीजो मेरी छीनि ॥ ७९ ॥

राग नट ॥ यह सुनि हँसि चलीं ब्रजनारि । अतिहि आईं गर्व कीन्हें गईं घर झख-मारि ॥ कबहुँ तौ हम देखिहैं एक संग राधा कान्ह । भेद हमसों कियो राधा निठुर भई निदान्ह ॥ बीस बिरियां चोरकीतौ कबहुँ मिलिहै साहु । सूर सब दिन चोरको कहुँ होत है निरबाहु ॥ ८० ॥

राग कान्हरो ॥ भेद लियो चाहति राधासों । बैठिरहौ अपने घर चुपकै काम कहा काहू बाधासों ॥ यह मन दूरि धरौ अपनो लै अति बर बोलि गई कह कीन्हों । कैसे निर्भय रही सबनिसों भेद न काहुहि दीन्हों ॥ वह कैसे फँद परै तुम्हारे वाके घात न जानौ । सूर सबै तुम बडी सयानी मोहिं नहीं तुम मानौ ॥ ८१ ॥

राग बिलावल ॥ फेरिपाइ देखौ मैं धरिहौं । सुनु री सखी प्रतिज्ञा मेरी तेरी दिन तासों लरिहौं ॥ हमको निदरि रही है राधा रिसनि रही मैं जरिहौं । तब मेरे मन धीरज ऐहै चोरीकरत पकरिहौं ॥ राति दिवस मोहि चैन नहीं अब उनको देखत फिरिहौं । सूरदास स्वामीके आगे नीके ताहि निदरिहौं ॥ ८२ ॥

राग नटनारायण ॥ गोपी इहै करति चबाउ । देखौं धौं चतुर वाकी हमहिं कियो दुराउ ॥ लरिकईते करत एढँग तबै रह सतिभाउ । अब करति चतुरई जाने श्याम पढाये दाउ ॥ कहांलौं करिहै अचगरी सबै ए उपजाउ । आजु बाची मौन धरिजो सदा होत बचाउ ॥ दिवस चारिक भोर पारहु रहौ एक सुभाउ । सूर कालिहि प्रगट ह्वै है करनदै अपडाउ ॥ ८३ ॥

राग सूही बिलावल ॥ कहा कहति तू बात अयानी । तुम इह कहति सबै वह जानति हम सबते वह बडी सयानी ॥ सात वरषते ये ढँग सीखे तुम तौ यह आजुहि है जानी । वाके छंद भेद को जान मीन कबहि धौं पीवत पानी ॥ हरिके चरित सबै उहि सीखे दोऊ हैं वे बारहबानी । काल्हिगई वाके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मौनकी ठानी ॥ केती कही नेकु नहिं बोली फिरी आइ तब हमहिं खिसानी । सूर श्याम संगतिकी महिमा काहूको नेकहु न पत्यानी ॥ ८४ ॥

राग मारू ॥ तब राधा सखियनपै आई । आवत देखि सबनि मुख मूँदो जहँ तहँ रहीं अरगाई ॥ मुख देखत सब सकुचिगई यह कहां अचानक आई । करति रहीं चुगुली हम याकी तरुनी गई लजाई ॥ अति आदर करि बैठक दीन्हों कह्यो कहां तुम आई । कहा आजु सुधि करी हमारी सूर श्याम सुखदाई ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ॥ मैं कह आजु निबेरी आई । बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुनेकी करिये पहुनाई ॥ कैसी बात कहति तू राधा बैठनको नहिं कहिये । तुम आई अपने घरते ह्याँ हमहुँ मौन धरि रहिये ॥ जानिलई वृषभानुसुता हँसि कह्यो तरक तुम कीन्हों । सूर-दास ता दिनको बदलो दाउँ आपनो लीन्हों ॥८६॥

राग धनाश्री ॥ दाउघाउ तुमहीं सब जानति । सदा मानि तुमको हम आईं अबहूं तैसे मानति ॥ तुम वह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई । ता दिन कह्यो नहीं मैं जानौं मानि लई सति भाई ॥ चोर सबनि चोरी करि जानै ज्ञानीमन सब ज्ञानी । सूरदास गोपिनकी बाणी राधा सुनि मुसकानी ॥ ८७ ॥

सखी तुम बात कही यह सांची । जाके हृदय जौन कहे मुखते तौन कैसे हरि कौन कहि लीकखांची ॥ हरषि ब्रजनारि भरि लेत अँकवारि सब कहति तू कहा इह बात जानै । हम हँसति कहति तू रिस कहा गहतिरी नागरी राधिका बिलगु मानै ॥ तुमहिं उलटी कहौ तुमहिं पलटी कहौ तुमहिं रिस करति मैं कछु न जानौं । सूर प्रभुको नाम मोहिं तुमही कह्यो श्रवन यह सुन्यों तुम कछू मानौ ॥ ८८ ॥

अथ ग्रीष्मलीला ॥ सखिन सहित यमुना विहार ॥ टोडी ॥ पुनि कहियौ अब न्हान चलौगी । तब अपनो मन भायो कीजो जब मोको हरि संग मिलौगी ॥ उहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुँ न बिसरौगी । बड़ी बार मोको भई आए न्हान चलतकी बहुरि लरौगी ॥ गहिगहि बांह सबनि करि ठाढी कैसेहू घरते निसरौगी । सूर राधिका कहति सखिनसों बहुरि आइ घरकाज करौगी ॥ ८९ ॥

राग मारू ॥ राधिका संग मिलि गोपनारी । चलीं हिलिमिलि सबै रहसि बिहँसति तरुनि परस्पर कौतुहल करत भारी ॥ मध्य ब्रजनागरी रूप रस आगरी घोष उज्जागरी श्याम प्यारी । जुरीं ब्रजसुन्दरी दशन छबि कुंदरी काम तनु दुन्द्री व.रनहारी ॥ अंग अँग सुभग अति मग चलति गजगति कृष्णसों एकमति यमुन जाहीं । कोउ निकसि जाति कोउ ठठकि ठाढी रहति कोउ कहति संग मिलि चलहु नाहीं ॥ युवति आनंदभरी भई जुरिकै खरी नई छरहरी सुठिवैस थोरी । सूर प्रभु सुनि सुनि श्रवण तहां कीन्हों गवन तरुणि मन रवन सब ब्रजकिशोरी ॥ ९० ॥

राग नटनारायण ॥ गईं ब्रजनारि यमुनातीर । देखि लहरितरंग हरषीं रहत नाहिं मन-धीर ॥ संग राजति कुँवरि राधा भई शोभा भीर । स्नानको वे भईं आतुर सुभग जल-गम्भीर ॥ कोउ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर । तिनहि लइ बोलाइ राधा करति सुख तनक्रीर ॥ एक एकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर । सूर राधा हँसति बाढी बढी छबि तन चीर ॥ ९१ ॥

राग जयतश्री ॥ राधा जल विहरत सखियन संग । ग्रीवप्रयंत नीरमें ठाढी छिरकत जल अपने अपने रंग ॥ मुखपर नीर परस्पर डारति शोभा अतिहि अनूप बढी तब । मनहु चंद्र गन सुधा गई खनि डारत हैं आनंद भरे सब ॥ आईं निकसि जानु कटिलों सब अंजुरिनते जल डारत । मानहुं सूर कनकवल्ली जरि अमृत पवन मिस झारत ॥ ९२ ॥

राग नट ॥ यमुनाजल बिहरत ब्रजनारी । तट ठाढे देखत नँदनंदन मधुर मुरलि कर धारा ॥ मोरमुकुट श्रवणन मणिकुंडल जलजमाल उर भ्राजत । सुन्दर सुभग श्याम तनु नव घन बिच बगपांति बिराजत । उर बनमाल सुभग बहुभांतिनु श्वेत लाल सित पीत । मानों सुरसरितट बैठे शुक बरनबरन तजि भीत । पीतांबर कटिमैं छुद्रावलि बाजत परम रसाल । सूरदास मनों कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ॥ ९३ ॥

राग बिहागरो ॥ नटवर भेष काछे श्याम । पद कमल नख इंदु शोभा ध्यान पूरण काम ॥ जानु जंघ सुघटनि करभो नाहिं रंभा तूल । पीतपट काछनी मानहु जलजकेशर झूल । कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर । मनहु हंस रसाल पंगति रहेहैं हद तीर ॥

झलक रोमावली शोभा ग्रीव मोतिन हार। मनहु गंगा बीच यमुना चली मिलि त्रिय धार ॥ बाहुदण्ड विशाल तट दोउ अंगचंदनुरेनु। तीरतरु वनमालकी छबि ब्रजयुवति सुखदेन। चिबुक पर अधरनि दशनद्युति बिंबु बीज जलाइ। नासिका शुक नयन खंजन कहत कबि सरमाइ ॥ श्रवण कुंडल कोटि रबि छबि भ्रुकुटि कामकोदंड। सूर प्रभु है नीप के तर शीश धरे श्रीखंड ॥ ९४ ॥

राग पूरबी ॥ उपमा धीरज तज्यो निरखि छबि। कोटि मदन अपनो बल हारचो कुंडल किरनि बीच जो छप्योरवि ॥ खंजन कंज मधुप विधु तड़िघन दिनकर रहत कहूं दबि। हरिपटतर दै हमहि लजावत सकुच नहीं आवत खोटे कवि ॥ अरुन अधर दशनानि दुति निरखत विद्रुमशिखर लजाने सब। सूर श्याम आछे वपु काछे पटतर मेटि बिराने अब ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ उपमा हरि तन देखि लजाने। कोउ जलमें कोउ वनमें रहे दुरि कोऊ गगन समाने ॥ मुख निरखत शशि गयो अंबरको तडित दशन छबि हेरो। मीन कमल करचरन नयन डर जलसों कियो बसेरो ॥ भुजा देखि अहिराज लजाने बिवरनि पैठे धाइ। कटि निरखत केहरि डर मान्यो बनबन रहे दुराइ ॥ गारीदेहि कविनके वर्णत श्री अंगपटतर देत। सूरदास हमको विरमावत नाउँ हमारो लेत ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ ऐसे गोपाल निरखि तिल तिल तनु वारौं। नवकिशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं ॥ अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजै। ब्रजजन मन हरन बेन मधुर मधुर बाजै। ललितबर त्रिभंग सुतन बनमाला सोहैं। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको को है ॥ चरण रुनित नूपुर कटिकिंकिन कलकूजै। मकराकृत कुंडलछबि सूर कौन पूजै ॥ ९७ ॥

राग कान्हरो ॥ बनि मोतिनकी माल मनोहर। शोभित श्याम सुभग उर ऊपर मनो गिरिते सुरसरी धसी धर ॥ तट भुजदंड भौंर भृगुरेखा चंदन चित्रि तरंगनि सुंदर। मणि की किरणि मीन कुंडल छबि मनों मकर मिलन आवत त्यागे सर। ता ऊपर रोमावलि राजत मणिवर तीखन ज्योति सिताबर। संतहि ध्यान स्नान करत नित कर्मकीच धोवत नीकेकर ॥ यज्ञोपवीत विचित्र सूर सुनि मध्यधार धारा जो वानीवर। शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कूल हंसनि कीन्हे घर ॥ ९८ ॥

राग नटनारायण ॥ राधे निरखि भूली अंग। नंदनंदन रूपपर गतिमति भई तनुपंग ॥ इत सकुच अति सखिनको उत होत अपनी हानि। ज्ञानकरि अनुमान कीन्हों अबहि लैहै जानि ॥ चतुर सखियन परखि लीन्ही समुझि भई गँवारि। सब मिलि इतन्हान लागीं ताहि दियो बिसारि ॥ नागरी मुख श्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि। सूर राधा लखति नाहीं इन दई अब टेरि ॥ ९९ ॥

राग कान्हरो ॥ जब जान्यो ये न्हाति सबै। हरि प्रति अंग अंगकी शोभा अँखियन मगह्वै लेउँ अबै ॥ कमल कोशमैं आनि दुरावों बहुरि दरश धौं होइ कबै। यह मन करि

युवतिन तनु हेरति सकुचति है पुनि नहीं फबै ॥ कबहुँक कहै तजौ मर्यादा इनिसोंमैं करि गोप तबै । सूर श्याम तबहीं मनमानै संगहि रैहौं जाइ जबै ॥

राग गौरी ॥ चित राधारति नागर ओर । नयन वदन छवि यों उपजत मानों शशि अनुराग चकोर ॥ सारस सर अचवनको मानहु फिरत मधुप युग जोर । पान करत त्रियतन मानत पलकन देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि रजनि गए पुनि भोर । सूर परस्पर प्रीति निरंतर दंपति है चितचोर ॥

राग कल्याण ॥ यह कछु भोरेहि भाइभई । निरखत वदन नंदनंदनको अब रहती सोगई॥ हिरदै जामि प्रेम अंकुर जरि सप्त पतार गई । सो द्रुम पसरि शिखर अंबरलों सब जग छाइ लई ॥ बचन सुजंत्र मुकुल अवलोकनि गुन निधि पुहुप मई । परस परम अनुराग सींचि सुखलगी प्रमोदजई ॥ मनके सकल मनोरथ पूरण समर भरी नई । सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ढई ॥ १०० ॥

राग रामकली ॥ चितवन रोके हूं न रही । श्याम सुंदर सिंधु सन्मुख सरित उमँगि वही ॥ प्रेम सलिल प्रवाह भँवरनि मिलि कबहुँ न थाह लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूँघट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नाहिंन गही । हिलमिल सूर स्वभाव-श्यामहि फेरिहून चही ॥

राग जैतश्री ॥ देखी हरि राधा उत अटकी । चितै रही एकटक हरिहीं तन ना जाइय कौन अँग लटकी ॥ कालि हमैं कैसे निदरतिही मेरे चित वह टरति न खटकी । न्हातरही कैसे सँग मिलिकै सँग चित चंचल विरहाकी चटकी ॥ बात करत तुलसी मुख मेलै नयन शयन दै मुँह मटकी । सूर श्यामके रूपभुलानी राधाके चित सुधि न घटी ॥ १ ॥

राग बिलावल ॥ चितै रही राधा हरिको मुख । भ्रुकुटी बिकट विशालनयनयुग देखत मनहिं भयो रतिपति दुख ॥ उतहि श्याम एकटक प्यारी छवि अंग अंग अवलोकत । रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभानु सुतासों देखे कुँवर कन्हाई । सूर श्याम एई हैं ब्रजमें जिनकी होति बडाई ॥ २ ॥

राग रामकली ॥ हमहि कह्यो हो श्याम देखावहु । देखहु दरश नयन भरि नीके पुनि पुनि दरश न पावहु ॥ बहुत लालसा करत रही तुम वे तुम कारण आए । पूरी साध मिली तुम उनको याते हमहिं बोलाये ॥ नीके सगुण आजु ह्यां आई भयो तुम्हारो काज । सुनहु सूर हमको कछु देहौ तुमहि मिले ब्रजराज ॥ ३ ॥

राधा कह्यो आजु इन जानी । बारबार मैं हरितन चितई तबहीं ये मुसकानी ॥ कालि कह्यो मैं इनसों वैसे अब तो बात न ठानी । इहि चतुरई परी मोही पर मनमन अतिहि लजानी ॥ मेरी बात गई इनि आगे अबहिं करति बिनपानी । सूरदास प्रभु कहा कहौं मैं तू अब हाथ बिकानी ॥ ४ ॥

राग बिलावल ॥ मैं अतिही यह पोच करी । ये मेरी मर्यादा लैहैं ता दिन इनसों बहुत लरी ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन तुम अब होहु सहाइ । ऐसी कहौं बात इन आगे मेरी पति जिन जाइ ॥ तब यक बुद्धि रची मनही मन अति आनंद हुलास । सूर श्याम राधा आधातन कीन्हों बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥

राग गूजरी ॥ राधा चल न भवनहि जाहिं । कबहिकी हम यमुन आई कहहिं अरु पछितांहिं ॥ कियो दरशन श्यामको तुम चलोगी की नाहिं । बहुरि मिलिहो चीन्हि राखहु कहति सब मुसकाहिं ॥ हम चली घर तुमहुँ आवहु सोच भयो मनमाहिं । सूर राधासहित गोपी चलीं ब्रज समुहाहिं ॥ ६ ॥

राग बिलावल ॥ कहि राधा हरि कैसे हैं । तेरे मन भायेकी नाहीं की सुंदरकी नैसे हैं ॥ की पुनि हमहि दुराव करोगी कीकैहौ वै जैसे हैं । की हम तुमसों कहत रही ज्यों सांच कहौकी तैसे हैं ॥ नटवर भेष काछनी काछे अंगनि रतिपति सैसेहैं । सूर श्याम तुम नीके देखे हम जानति हरि ऐसे हैं ॥ ७ ॥

राधा मनमें इहै बिचारति । ये सब मेरे ख्याल परी हैं अबहीं बातनलै निरुवारति ॥ मोहूते ये चतुर कहावति ये मनही मन मोको नारति । ऐसे वचन कहैंगी इनको चतुराई इनकी मैं झारति ॥ जाके नंदनँदन शिर समरथ बार बार तनु मन धन वारति ॥ सूर श्यामके गर्व राधिका सूधे काहूतन न निहारति ॥ ८ ॥

राग सूही ॥ राधा हरिके गर्व गही ली । मंद मंद गति मत्त मतंग ज्यों अंग अंग सुख पुंज भरीली ॥ पग द्वै चलति ठटकि रहैं ठाढी मौन धरे हरिके रसगीली । धरनी नख चरननि कुरवारति सौतिन भागसुहाग डहीली ॥ नेक नहीं पियते कहुँ बिछुरति तातेनाहिंन काम दहीली । सूरसखी बूझे यह कैहों आजु भई इह भेट पहीली ॥ ९ ॥

राग आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि मौन गह्योरी । जैसे नउआ अंध झँवर खर तैसेहि तैं यह मौन कह्योरी ॥ बात नहीं मुखते कहि आवति की तेरौ मन श्याम हरचोरी । जानि नहीं पहिचानि न कबहूँ देखतही चित तिनहि ठरचोरी ॥ साँची बात कहौ तुम हमसों कहा सोच सो जियहि परचोरी । सूर श्यामतन देखि रही कहा लोचन इकटकते न टरचोरी ॥ १० ॥

राग धनाश्री ॥ कहा कहति तुम बात अलेखे । मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम नीके करि देखे ॥ कैसो बरन भेष है कैसो कैसे अंग त्रिभंग । मों आगे वह भेद कहौ धौंकै सोहै तनु रंग ॥ मैं देखे की नाहीं देखे तुम तो बारहजार । सूर श्याम द्वै अँखियन देखति जाको वार न पार ॥ ११ ॥

राग कान्हरो ॥ हम देखे यहि भाँति कन्हाई । शीश श्रीखंड अलकबिथुरे मुख श्रवणनि कुंडल चारु सोहाई ॥ कुटिल भ्रुकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिका राजत । अरुन अधर दशनावलिकी द्युति दाडम कन तन लाजत ॥ ग्रीवहार मुक्ता वनमाला बाहुदंड गजशुंड । रोमावली सुभग बगपंगति जात नाभि ह्रद झुण्ड ॥ कटि पटपीत मेखला कंचन सुभग जंघ युग जान । चरन कमल नखचंद्र नहीं सम ऐसे सूर सुजान ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ बने हैं बिशाल कमल दल नैन । ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढ भाव सूचत सखि सैन ॥ वदन सरोज निकट कुंचित कच मनहुँ मधुप आए मधुलैन । तिलक तरनि शशि कहत कछुक हँसि बोलत मधुर मनोहर बैन ॥ मदननृपतिको देश महामद बुधि बल बसि न सकस उर चैन । सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरित चुनौती दैन ॥ १३ ॥

राग देवगन्धार ॥ मोहन बदन विलोकत अँखियन उपजत है अनुराग । तरनि ताप तलफत चकोरगति पिवत पियूष पराग ॥ लोचन नलिन नये राजत रति पूरण मधुकर भाग । मानहु अलि आनंद मिले मकरंद पिवत रतिफाग ॥ भँवरिभाग भ्रुकुटीपर कुमकुम चंदनबिन्दु विभाग । चातक सोम शक्र धनु घनमें निरखत मनु वैराग ॥ कुंचित केश मयूर चंद्रिका मंडल सुमन सुपाग । मानहु मदन धनुष शर लीन्हें बरषतहै वन बाग ॥ अधरबिंब बिहँसान मनोहर मोहन मुरली राग । मानहु सुधापयोधि घेरि घन ब्रजपर बरषन लाग ॥ कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रम सीकरके दाग । मानहु मीन मकर मिलि क्रीडत शोभित शरद तड़ाग । नासा तिलक प्रसून पदविपर चिबुक चारु चित खाग । दाडिम दशन मंदगति मुसकनि मोहत सुर नर नाग ॥ श्रीगोपाल रसरूप भरीहै सूर सनेह सोहाग । ऐसी शोभा सिंधु विलोकत इन अँखियनके भाग ॥ १४ ॥

राग धनाश्री ॥ हम देखे यहि भांति गोपाल । छंदकपट कछु जानति नाहीं सूधी हैं ब्रजकी सब बाल ॥ झूठीकी सांची नाहिं भाषैं सांची झूठी कबहुँ न होइ । सांचीकी झूठी करिडारैं यह सोई जानैं धनि जोइ ॥ इतननिमें दुराव कछु नाहीं भेदाभेद विचार । सूरदासते झूठी मिलवैं तिनकी गति जानै करतार ॥ १५ ॥

राग आसावरी ॥ झूठी बात न होति भलाई । चोर जुआर संग बरु करिये झूठीको नहिं कोउ पतिआई ॥ सांचीकी झूठी करिडारैं पंचनमें मर्यादा जाई । बोलि उठी एक सखी बीचही तैं कह जानै लाज बडाई ॥ यामें कछू नफा है उनको जाते मन ऐसीयै भाई । सूरस्वभाउ पर्‍यो ऐसोई को जानैरी बुद्धिपराई ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ॥ ऐसे हम देखे नँदनंदन । श्याम सुभग तनु पीत बसन जनु मनहु जलदपर तडित सुछंदन ॥ मंद मंद मुरली मुख गरजनि सुधावृष्टि बरषत आनंदन । बिबिध सुमन बनमाला उर मनु सुरपति धनुष नहीं येहि छंदन ॥ मुक्तावली मनहुँ बगपंगति सुभग अंग चरचित छबि चंदन । सूर नीप तरुवरतर ठाढे प्रभु सुरनरमुनि बंदन ॥ १७ ॥

राग देवगन्धार ॥ तुमको कैसे श्याम लगे न्हातरहीं जलमें सब तरुनी तब तुअ नैना- कहां खगे ॥ अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अंग पर रहे पगे । भूल्यो स्नान ज्ञान तनु भूली नंदसुवन उतते न डगे ॥ जानति नहीं कहूँ नहिं देखे मिलिगई ऐसे मनहिं सगे । सूर श्याम ऐसे तैं देखे मैं जानति दुख दूरभगे ॥ १८ ॥

राग गौरी ॥ तुम देखे मैं नहीं पत्यानी । मैं जानति मेरी गति सबही इहै सांच अपने मन आनी । :जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी । मैं तौ अंग अंग अवलोकति दोऊ नयन भये भरपानी ॥ कुण्डल झलक कपोलनि आभा इतनहिं माँझ बिकानी । एकटक रही नैन दोउ रूंधे सूरश्यामको नहिं पहिंचानी ॥ १९ ॥

राग नट ॥ मेरी अँखियां अजान भई । एक अंग अवलोकत हरिके औरै अंगरई ॥ ये भूली ज्यों चोर भरे घर नौनिधि नहीं लई । फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छांडिदई ॥ पहिलेहि रति करिकै आरति करि ताहि रई ॥ सूर सकति हठि दोष लगावति पल पल पीर नई ॥ २० ॥

राग सारंग ॥ विधातहि चूक परी मैं जानी । आजु गोविंदहि देखि देखि हौं इहै समुझि पछितानी ॥ रचि पचि सोचि सँवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानी । दृष्टि न दई रोम रोमनि प्रति इतनिहि कला नशानी ॥ कहाकरौं अतिसुख द्वै नयना उमँगि चलत पग पानी । सूर सुमेर समाइ कहां धा बुधिवासना पुरानी ॥ २१ ॥

राग धनाश्री ॥ द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे । तुम प्रतिअंग बिलोकन कीन्हों मैं भई मगन एक अँग हेरे ॥ अपनो भाग्य सखी री तुम तनमय मैं कहूँ न नेरे । जो बुनिये सोइ पुनि लुनिय और नहीं त्रिभुवन भट भेरे ॥ श्यामरूप अवगाहि सिंधुते पार होत चढि डोंगन केरे । सूरदास तैसे ए लोचन कृपा जहाज बिना को पेरे ॥ २२ ॥

राग आसावरी ॥ पावै कौन लिखे बिन भाल ॥ काहूको षटरस नाहिं भावत कोउ भोजनकहुँ फिरत बिहाल ॥ तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नाहिं देख्यो कौन गोपाल । जैसे रंक तनक धन पाए ताहिमहां वह होत निहाल ॥ तुमहि मोहि इतनो अंतर धन्य धन्य ब्रजकी तुम बाल । सूरदास प्रभुकी तुम संगनि तुमहिं मिले यह दरश गोपाल ॥२३॥

राग कल्याण ॥ सुनहु सखी राधाकी बानी । हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी ॥ आपुन रंग भई हरिधनको हमहि कहति धनवंत । यह पूरण हम निपट अधूरी हम असंत यह संत ॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि । सूर श्यामको एहि पहिचानी हम भईं अंत गँवारि ॥ २४ ॥

राग गुंडमलार ॥ धन्य राधा बुद्धि हेरी । धन्य माता धन्य धनि भगति तुव धिगति तुव धिग हमहिं नहीं सम दासि तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धनि ध्यान धनि परमान नहीं जानति आन ब्रह्मरूपी । धन्य अनुराग धनि भाग धनि सौभाग धन्य जोबन रूप अति अनूपी ॥ हम बिमुख तुम सुमुख कृष्णप्यारी सदा निगम मुखसहस अस्तुति बखानैं । सूर श्याम श्याम नवल जोरी अटल तुमहिं बिन कान्ह धीरज न आनैं ॥ २५ ॥

राग बिहागरो ॥ जैसे कहै श्याम हैं तैसे । कृष्णरूप अवलोकनको सखि नयन होहिं जो ऐसे ॥ तैं जु कहति लोचन भरिआये श्याम कियो तेहि ठौर । पुण्यस्थली जानि सु बिराजे बात नहीं है और ॥ तेरे नयन वास हरि कीन्हों राधा आधा जानि । सूर श्याम नटवर वपु काछे निकसे वहि मग आनि ॥ २६ ॥

राग कान्हरो ॥ अचानक आइगए तहां श्याम । कृष्णकथा सब कहत परस्पर राधा-संग मिली ब्रजबाम ॥ मुरली अधर धरे नटवरवपु कटि कछनीपर वारौंकाम । सुभग मोर चंद्रिका शीशपर आइगए पूरण सुख धाम ॥ तरु तमालतरु तरुन कन्हाई दूरी करन युवतिनतनुताम । सूर श्याम वंशीध्वनि पूरत श्रीराधाराधा लै नाम ॥ २७ ॥

राग सूही बिलावल ॥ थकित भई राधा ब्रजनारि । जो मन ध्यान करति अवलोकन ते अंतर्यामी बनवारि ॥ रतनजटित पग सुभग पाँवरी नूपुरध्वनि कल परम रसाल । मानहुँ

चरणकमलदललोभी निकटहि बैठेबालमराल ॥ युगलजंघ मरकतमणिशोभा विपरित भांति सँवारे । कटिकाछनीकन कछु द्रावलि पहिरे नंददुलारे ॥ हृदयविशाल माल मोतिनबिच कौस्तुभमणि अतिभ्राजत । मानहु नभनिर्मल तारागन तामधि चंद्र विराजत । दुहुँकर मुरलि अधर परसाये मोहन राग बजावत ॥ चमकत दशन मटकि नासापुटलटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ मीन सुधासर क्रीडत । भ्रुकुटी धनुष नैन खंजन मानो उडत नहीं मन ब्रीडत ॥ देखि रूप ब्रजनारि थकित भईं क्रीटमुकुट शिर सोहत । ऐसे सूर श्याम शोभानिधि गोपीजन मन मोहत ॥ २८ ॥

राग कल्याण ॥ जबते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी देराखे मनबोल ॥ निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे नील निचोल । रतन जटित शिर मुकुट विराजत मणिमय कुंडल लोल ॥ कहा करौं वारिजमुखऊपर बिथके षटपद जोल । सूरश्याम करिये उत्कर्षा वश कीन्ही बिनमोल ॥ २९ ॥

राग पूरवी ॥ चारु चितौनि चंचल डोल । कहि न जाति मनमें अति भावति कछु जो एक उपजत गति गोल ॥ मुरली मधुर बजावत गावत चलत करजु अरु कुण्डल लोल । सब छवि मिलि प्रतिबिंब विराजत इंद्रनील मणि मुकुर कपोल ॥ कुंचित केश सुगंध सुवसु मनु उडिआए मधुपनके टोल । सूर सुभग नासिका मनोहर अनुमानत अनुराग अमोल ॥ ३० ॥

राग गौरी ॥ नँदनंदन बृंदावनचंद । यदुकुलनभ तिथिद्वितियदेवकी प्रगटे त्रिभुवनबंद ॥ जठर कुहूते बहरि बारिनिधि दिशिमधुपुरी सुछंद । बसुदेव शंभु शीश धरि आने गोकुल आनँदकंद ॥ ब्रज प्राची राकातिथि यशुमति शरद सरस ऋतु नंद । उडुगन सकल सखा संकर्षन तम दनुकुल योनिकंद ॥ गोपीजन तेहि धरत चकोरगति निरखि मेटि पल द्वंद । सूर सुदेश कला षोडश परिपूरन परमानंद ॥ ३१ ॥

राग गौरी ॥ देखि सखि हरिको मुख चारु । मनहु छिडाइलिये नँदनंदन वा शशिको सत सारु । रूप तिलक कच कुटिल किरनि छवि कुंडल कल विस्तारु । पत्रावलि परिवेष सुमन सरि मिल्यो मनहु उडदारु ॥ नयनचकोर विहंग सूरसुनि पिवत न पावत पारु । अब अंबर ऐसो लागत है जैसो झूठोथारु ॥ ३२ ॥

राग कान्हरो ॥ देखि री हरिके चंचल तारे । कमल मीनको कहाँ एती छवि खंजनहू न जात अनुहारे ॥ वै देखि निरखि नमित मुरलीपर कर मुख भए वारे । मनु सरोज विधु वैर विरचिकरि करत नाद बाहन चुचुकारे ॥ उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे । विडरत विझुकि जानि रथते मृग जनु सशंकि शशि लंगर सारे । हरि प्रतिअंग विलोकि मानि रुचि ब्रजवनितानि प्राण धन वारे । सूर श्याममुख निरखि मगन भईं यह विचारि चितअनत न टारे ॥ ३३ ॥

राग सोरठ ॥ हरिमुखनिरखत नैन भुलाने । ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उडाने ॥ कुंडल मकर कपोलनके ढिग जनु रवि रैनि विहाने । भ्रुव सुन्दर नैननि गति निरखत खंजन मीन लजाने ॥ अरुणअधर ध्वज कोटि वज्रद्युति शशिगन रूप समाने ।

कुंचित अलक सिलीमुख मानौ लै मकरंद निदाने ॥ तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि भूषनमय मनि साने । सूरदास स्वामी अँग नागर ते गुण नातन जाने ॥ ३४ ॥

राग केदारो ॥ देखिरी नवल नंदकिशोर । लकुटसों लपटाइ ठाढे युवतिजन मन चोर ॥ चारु लोचन हँसि विलोकनि देखिकै चित भोर । मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर ॥ श्रवण ध्वनि सुर नाद मोहत करत हिरदे कोर । सूर अंग त्रिभंग सुन्दर छबि निरखि तृण तोर ॥ ३५ ॥

राग कान्हरो ॥ ब्रजवनिता देखति नँदनंदन । नवघन नील वरन ता ऊपर खौर कियो तनु चंदन ॥ कनकवरन कटि पीत पिछोरी उर भ्राजत वनमाला । निर्मल गगन श्वेत बादरपर मनो दामिनीजाला । मुक्तमाल विपुल वग पंगति उडत एक भई जोति । सूर श्याम छबि निरखति युवती हरष परस्पर होति ॥ ३६ ॥

राग सूही ॥ प्रातसमय आवत हरि राजत । रत्नजटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी किरननि सुरतन लाजत ॥ सातैं राशि मेलि द्वादशमें कटि मेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मथि पिता सो लैकर मुख समीप मुरली ध्वनि बाजत ॥ जलधि तात तेहि नाम कंठ केकिनके पंख मुकुट शिरभ्राजत । सूरदास कहैं सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत ॥ ३७ ॥

राग नट ॥ हरितन मोहिनी माई । अंग अंग अनंग शत शत वरनि नहिं जाई ॥ कोउ निरखि शिर मुकुटकी छबि सुरति बिसराई । कोउ निरखि बिथुरी अलक मुख अधिक सुखदाई ॥ कोउ निरखि रही भालचंदन एकचित लाई । कोउ निरखि बिथुरी भ्रुकुटिपर नैन ठहराई ॥ कोउ निरखिरही चारुलोचन निमिष भरमाई । सूर प्रभुकी निरखि शोभा कहत नहिं आई ॥ ३८ ॥

राग सारंग ॥ हरिमुख किधौं मोहनी माई । अवलोकत अघात नहिं मेरे नैना ठगे ठगोरी लाई ॥ कुण्डलकिरनि निकट भ्रूलोचन आरति मीन दृग सम चपलाई । श्रवणरंध्र नहिं निपुन दास जनु काम कुवैनी कलित बनाई ॥ छाजत रदन रदनकी छबि मंद माधुरी गिरा सुहाई । जया कुसुम दल मनहु कमलपर तडिजुथ कोश कोकिला गाई ॥ सबबिधि वशीकरनकी बाकी वलितबलाक अनुज बलझाई। सूरदास प्रभु वदन विलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ॥ ३९ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम सुखराशि रसराशि भारी । रूपकी राशि गुणराशि यौवनराशि थकित भई निरखि नवतरुनि नारी ॥ शीलकी राशि जलराशि आनंदराशि नीलनव जलद छबि बरनकारी । दयाकी राशि विद्याराशि बलराशि निर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी ॥ चतुरई राशि छलराशि कलराशिहरी भजै जेहि हेतु तेहि हेतु तेहि देनहारी । सूरप्रभुश्याम सुखधाम पूरण काम लसति कटि पीत मुखमुरलिधारी ॥

राग बिहागरो ॥ सुन्दर बोलत आवत बैन । नाजानौं तेहि समय सखीरी सबतन श्रवन कि नैन ॥ रोमरोममें शब्द सुरतिकी नखशिखज्यों चखऐन । येते मान बनी चंचलता सुनी न समुझी सैन ॥ तबतकि जकि ह्वैरही चित्रसी पल न लगत चितचैन । सुनहु सूर यह सांच कि संभ्रम सपन किधौं दिन रैन ॥ ४० ॥

राग मलार ॥ नैना माई भूले अनतन जात । देखि सखी शोभा जो बनी है माधवके मुसकात ॥ दाडिम दशन निकट नासा शुक चोंच चलाइ न खात । मनो रतिनाथ भ्रुकुटी धनु ता अवलोकि डरात ॥ वदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनँद उर न समात । मानहु भौंह युवारथ जोते शशि न चलतमृग मात ॥ कुंचित केश मधुर ध्वनि मुरली सूरदास सुर सात ॥ मनहु कमलपर कोकिल कूजत अलिगण उपर उडात ॥ ४१ ॥

राग कान्हरो ॥ श्याम कमलपद नखकी शोभा । जे नखचंद्र इंद्र शिर परसे शिव विरंचि मन लोभा ॥ जे नखचंद्र सनक मुनि ध्यावत नहिं पावत भरमाहीं । ते नख चंद्र प्रगट ब्रज युवती निरखिनिरखि हरषाहीं ॥ जे नख चंद्र फनीन्द्र हृदयते एकौ निमिष न टारत । जे नखचंद्र महामुनि नारद पलकन कहूँ बिसारत ॥ जे नखचंद्र भजन खल नाखत रमाहृदय जेहि परसत । सूर श्याम नखचंद्र विमल छबि गोपीजनमिलि दरशत ॥ ४२ ॥

राग आसावरी ॥ श्याम हृदय जल सुतकी माला अतिहि अनूपम छाजै री । मनहु बलाकपांति नवघनपर यह उपमा कछु भ्राजै री ॥ पीत हरित सित अरुण मालबन राजत हृदय विशाल री । मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रगट भयो तिहिकाल री ॥ भृगुपदचिह्न उरस्थल प्रगटे कौस्तुभमणि ढिग दरसत री । बैठे मनु वरवधू एक सँग अर्धनिशा मिलि-हरषत री ॥ भुजाविशाल श्यामसुंदरकी चंदनखौरि चढाए री । सूर सुभग अँग अँगकी शोभा ब्रजललना ललचाए री ॥ ४३ ॥

राग मलार ॥ निरखि सखि सुंदरताकी सीवँ । अधर अनूप मुरलिका राजति लटकि रहनि अधग्रीवँ ॥ मंदमंद सुर पूरत मोहन राग मलार बजावत । कबहुँक रीझि मुरलिपर गिरिधर आपुहि रस भरि गावत ॥ हर्षत लखि दशनावलि पंगति ब्रज वनिता मन मोहत । मर्कतमणि पुट बिच मुकुताहल बदन धरे मनु सोहत ॥ मुख विकसत शोभा एक आवत मनो राजीव प्रकाश । सूर अरुण आगमन देखिकै प्रफुलित भये हुलास ॥ ४४ ॥

राग टोडी ॥ गोपीजन हरिबदन निहारति।कुंचितअलक बिथुरि रहे भुवपर तापर तनमन वारति ॥ वदन सुधा सरसीरुह लोचन भ्रुकुटी दोउ रखवारी । मनोमधुप मधुपानहि आवत देखि डरत जिय भारी ॥ एक एक अलक लटकि लोचनपर यह उपमा एक आवत । मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावत ॥ मुरली अधर धरे कल पूरत मंद-मंद सुरगावत । सूर श्याम नागर नारिनके चंचल चितहि चोरावत ॥ ४५ ॥

राग सूही बिलावल ॥ देखिसखी यह सुन्दरताई । चपलनैन बिच चारुनासिका यक टक नैन रही तहां लाई ॥ करति बिचार परस्पर युवती उपमा आननि बुद्धि बनाई । मानहु खंजन बिच शुक बैठो यह कहिकै मन जात लजाई ॥ कछु एक तिलक प्रसूनकी आभा मन मधुकर जहां रह्यो लुभाई । सूर श्याम नासिका मनोहर यह सुंदरता उन कहां पाई ॥ ४६ ॥

राग रामकली ॥ मनोहरहै नैननकी भांति । मानहुं दूरिकरतबल अपने शरद कमलकी कांति ॥ इंदीवर राजीव कसेसे जीते सब गुण जाति । अतिआनंद सप्रौढा ताते विकसत

दिन अरु राति ॥ खंजरीट मृग मीन बिचारति उपमाको अकुलाति । चंचल चारु चपल अवलोकनि चितहि न एक समाति ॥ जबलगि परत निमेष अंतरा युग समान पल जात। सूरदास वह रसिक राधिका निमिष परति अनखात ॥ ४७ ॥

आजु सखी देखे श्याम नएरी । निकसे आनि अचानक अबहीं इत फिरि फिरि चितए री ॥ मैं तबते पछिताति इहै तनु नैनन बहुत भए री । जो बिधिना इतनी जानतहैं कत दृग दोइ दये री ॥ सबदै लेऊँ लाख लोचनकहे जो कोउ करत नये री । हरिप्रतिअंग विलोकनको मन मैं पन कै पठए री ॥ अपने चोप बहुत कहँ पइये ये हरिसंग गये री ॥ थके चरण सुनि सूरमनो गुण मदनबाण विधये री ॥ ४८ ॥

राग गूजरी ॥ देखिगी हरिके चंचल नैन । खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एक सैन ॥ राजिवदल इंदीवर शतदल कमलकुशेशय जाति । निशि मुद्रित प्रातहि ए बिगसत ए बिगसत दिनराति ॥ अरुण श्वेत सित झलक पलकप्रति को बरणै उपमाइ । मनो सरस्वति गंगायमुना मिलि आगम कीन्हों आइ ॥ अवलोकनि जलधार तेज अति तहां नं मन ठहरात । सूर श्याम लोचन अपार छबि उपमा सुनि शरमात ॥ ४९ ॥

राग सोरठ ॥ देखु सखी मोहन मन चोरत । नैनकटाक्ष बिलोकन मधुरी सुभग भ्रुकुटि बिबि मोरत ॥ चंदनखौरि ललाट श्यामके निरखत अति सुखदाई । मानहुं अर्धचंद्रतट अहिनी सुधा चोरावन आई ॥ मलयज भाल भ्रुकुटीकी रेखा करि उपमा एक ल्यावत । मनो एक संग गंग यमुन नभ तिरछी धार बहावत ॥ भ्रुकुटी चारु निरखि ब्रजसुंदरि यह मन करति बिचार । सूरदास प्रभु शोभा सागरकोउ न पावतपार ॥ ५० ॥

राग रामकली ॥ देखि री देखि कुण्डललोल । चारुश्रवणनि ग्रहित कीन्हीं झलक ललित कपोल ॥ बदन मंडलसुधा सरवर निरखि मन भयो भोर । मकर क्रीडत गुप्त परगट रूप जल झकझोर ॥ नैन मीन भुवंगिनी भुअ नासिका थलबीच । सरस मृगमद तिलक शोभा लसतिहै गल कीच ॥ मुखविकास सरोज मानहु युवतिलोचन भृंग ॥ बिथुरि अलकैं परीं मानहु प्रेमलहरि तरंग ॥ श्याम तुम छबि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग । सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रजतरुणि बडभाग ॥ ५१ ॥

राग धनाश्री ॥ हरिमुख निरखति नागरि नारि । कमलनयनके कमल बदनपर वारिज वारिज वारि ॥ सुमति सुंदरी परस प्रियारस लंपट माडी आरि । हारि जोहारि जो करत बसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि ॥ राखत ओट कोटि यतननिकरि झांपति अँचल झबारि। खंजन मनहु उडनको आतुर सकत न पंख पसारि ॥ देखि स्वरूप श्यामसुंदरको रही न पलकसँभारि । देखहु सूर अधिकसूरति तिन अजहुँ न मानी हारि ॥ ५२ ॥

हरिमुख किधौं मोहनी माई । बोलत बचन मंत्रसो लागत गति मति जाति भलाई ॥ कुटिल अलक राजत भ्रुव ऊपर जहँ तहँ रहे बगराई । श्याम फांसि मन कर्‍यो हमरो अब समुझी चतुराई ॥ कुंडल ललित कपोलनि झलकत इनकी गति मैं पाई । सूर श्याम युवती मन मोहन ये सँगकरत सहाई ॥ ५३ ॥

राग नट ॥ निरखति रूप नागरि नारि । मुकुटपर मन अटकि लटक्यो जात नहिं निरुआरि ॥ श्याम तनुकी झलक आभा चद्रिका झलकाइ । बारबार विलोकि थकि रहीं नयनहीं ठहराइ ॥ श्याम मर्कतमणि महानग शिखिनि निर्त्तत मोर । देखि जलधर हर्ष उरपर नहीं आनंद थोर ॥ कोउ कहति सुरचाप मानो गगन भयो प्रकाश । थकित ब्रजललना जहां तहँ हरष कबहुं उदास ॥ निरखि जो जेहि अंग राचीं तहीं रहीं भुलाइ । सूर प्रभु गुण राशि शोभा रसिक जन सुखदाइ ॥ ९४ ॥

राग बिहागरो ॥ देखिरी देखि शोभा राशि । काम पटतर कहा दीजै रमा जिनकी दासि ॥ मुकुट शिर श्रीखंड सोहै निरखि रहीं ब्रजनारि । कोटि सुरको दंड आभा छिरकि डारै वारि ॥ केशकुंचित बिथुरि भुवपर बीच शोभा भाल । मनहुं चंद्रहि अबल जान्यो राहु घेरो जाल ॥ चारु कुण्डल सुभग श्रवणनि को सकै उपमाइ । कोटि कोटि कला तरनि छबि देखि तनु भरमाइ ॥ सुभग मुखपर चारु लोचन नासिका यहि भाँति । मनो खञ्जनबीच शुक मिलि बैठे हैं एक पांति । सुभग नासा तर अधर छबि रसभरे अरुनाइ । मनो बिंब निहारि शुक भ्रुव धनुष देखि डेराइ ॥ हँसत दशननि चमकताई वज्रकन रुचिपांति । दामिनी दारिम नहीं सम कियो मन मन अति भ्रांति ॥ चिबुकपर चितवत चोरावत नवल नंदकिशोर । सूर प्रभुकी निरखि शोभा भई तरुनी भोर ॥ ९५ ॥

राग सोरठ ॥ तन मन नारि डारत वारि । श्याम शोभा सिंधु जान्यो अंग अंग निहारि ॥ पचि रहीं मन ज्ञान करि करि लहति नाहिंन तीर । श्यामतन जलराशि पूरण महा गुण गम्भीर ॥ पीत पट फहरानि मानो लहरि उठत अपार निरखि छबि थकि तीर बैठीं कहूं वार न पार ॥ चलत अंगत्रिभंग करिकै भौंह भाव चलाइ । मनो बिचबिच भौंर डोलत चित परत भरमाइ ॥ श्रवण कुण्डल मकर मानो नैन मीन विशाल । सलिल झलकनि रूप आभा देखरी नँदलाल ॥ बाहुदंड भुजंग मानो जलधि मध्य बिहार । मुक्तमाला मनो सुरसरि द्वै चली द्वय धार ॥ अंग अंग भूषण विराजत कनक मुकुट प्रभास । उदधि मथि नग प्रगट कीन्ही श्रीसुधा परगास ॥ चकृत भई तिय निरखि शोभा देहगति बिसराइ । सूर प्रभु छबिरासि नागर जानि जानि न जाइ ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ बैठी कहा मदन मोहनको सुन्दर बदन विलोकि । जा कारण घूँघटपट अब लौं अँखियां राखी रोकि ॥ फबि रही मोरचंद्रिका माथे छबिकी उठत तरंग । मनहु अमरपति धनुष बिराज नवजल धरके संग ॥ रुचिर चारु कमनीय भाल कुंकुमको तिलक दिये । मानहु अखिल भुवनकी शोभा राजत उदय किये ॥ मणिमय जड़ित लोल कुंडलकी आभा झलकत गण्ड । मनहु कमल ऊपर दिनकरकी पसरी किरनि प्रचंड ॥ भ्रुकुटी कुटिल निकट नैननके चपल होत यहि भाँति । मनहु तामरस पारस खेलत बालभृंगकी पांति ॥ कोमल श्याम कुटिल अलकावलि ललित कपोलन तीर । मानहु सुभग शरद इंदु ऊपर मधुपनिकी अति भीर ॥ अरुण अधर नासिका निकाई बदत परस्पर होड । सूर सो मनसा भई पांगुरी निरखि डगमगे गोड ॥ ९७ ॥

राग केदारो ॥ करि मन नंदनंदन ध्यान । सेइ चरण सरोज शीतल तजि विषै रस पान ॥ जानुजंघ त्रिभङ्ग सुन्दर कलित कंचन दंड । काछिनी कटि पीतपटु दुति कमल केसर खंड ॥ मनुमलार प्रबाल छौना किंकिनी कलराउ । नाभिहृद रोमावली अलि चले सैन सुभाउ ॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बने बनमाल । सुरसरीके तीर मानो लता श्याम तमाल ॥ बाहु पानि सरोज पल्लव गहे मुख मृदु बेनु । अति बिराजत बदन विधु-पर सुरभि रंजित रेनु ॥ अरुण अदर कपोल नासा परम सुंदर नैन । चलित कुंडल गंड-मंडल मनहु निर्तत मैन ॥ कुटिल कच भ्रू तिलक रेखा शीश शिखि श्रीखंड । मनु मदन धनुशर सँधाने देखि धनु कोदंड ॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरिभरि लेत । प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन नदेत ॥ ९८ ॥

राग नट नारायण ॥ सजनी निरखि हरिको रूप । मनसि वचसि बिचारि देखो अंग अंग अनूप ॥ कुटिलकेश सुदेश अलिगन वदन शरद सरोज । मकर कुण्डल किंकिनि छवि दुरति फिरति मनोज ॥ अरुण अधर कपोल नासा सुभग ईषद हास । दशनकी द्युति तडित नवशशि भ्रुकुटि मदन विलास । अंगअंग अनंग जीते रुचिर उर बनमाल । सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल ॥ ९९ ॥

राग नट ॥ नैननि ध्यान नंदकुमार । शीश मुकुट श्रीखंड भ्राजित नहीं उपमा पार ॥ कुटिल केश सुदेश राजत मनहुँ मधुकर जाल । रुचिर केसरि तिलक दीन्हों परम शोभा भाल ॥ भ्रुकुटि बंकट चारु लोचन रहीं युवती देखि । मनौ खंजन चाप डरिडरि उड़त नहिं तेहि पेखि ॥ मकर कुंडल गंड झलमल निरखि लज्जित काम । नासिका छवि कीर लज्जित कवि न बरनत नाम ॥ अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर । सूर प्रभु मुख चंद्र पूरण नारि नैन चकोर ॥ १४०० ॥

राग केदारो ॥ हमारे श्याम लालहो । नैन विशालहो मोही तेरी चालहो ॥ मोर मुकुट डोलनि मुख मुरली कल मंद । मनो तमाल शिखा शिखि नाचत आनंद ॥ मकराकृत कुण्डल छबि राजत लोल कपोल । ईषद अधर मुसुकनि बिच मधुर २ बोल ॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुवभंग । धनुष बाण डारिके बशहोत कोटि अनंग ॥ बदन सुधाको सरोवर कुटिल अलक वारि ॥ ब्रज युवती मृगिनीरचि तिनके फल पारि ॥ पीतां-बर छबि निरखत दामिनि द्युति लजाइ । चमकि चमकि सावन मनो घनमें दुरिजाई ॥ चरण कमल अवलंबित राजित बनमाल । प्रफुलित द्वै लता मनो चढ़ी तरुतमाल ॥ सूरदास वा छबिपै वारौं तन मन प्राण । गिरिधर पिय देखि देखि कहा करौं अनुमान ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ देख सखी सुंदर घनश्याम । सुंदर मुकुट कुटिल कच सुंदर सुंदर भाल तिलक छबि धाम ॥ सुंदर भ्रुव सुंदर अति लोचन सुंदर अवलोकनि विश्राम । अति सुंदर कुंडल श्रवण निवर सुंदर झलकनि रीझत काम ॥ सुंदर चारु नासिका सुंदर सुंदर मुरली

अधर उपाम । सुंदर दशन चिबुक अति सुंदर सुंदर हृदय बिराजत दाम ॥ सुंदर भुजा पीत कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाम । सुंदर जंघ जानु पद सुंदर सूरउधारन नाम ॥ २ ॥

राग धनाश्री ॥ देखि देखि री नंदकुलके उधारी । मात पितु दुरित उद्धरन ब्रज उद्धरन धरनि उद्धरन शिर मुकुटधारी ॥ पतित उद्धरन अपने भक्त उद्धरन दीन उद्धरन कुंडलनि धारी । जगत उद्धरन तिहुँ लोकके उद्धरन बलिहि उद्धरन पग पीठ धारी ॥ पूतना उद्धरन दनुजकुल उद्धरन तृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी ॥ शकट उद्धरन केशी प्रबल उद्धरन बका उद्धरन अरुण अधर धारी ॥ अघा उद्धरन गाइ ग्वालके उद्धरन वृषभ उद्धरन बन-मालधारी । बच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येइ प्रभु यज्ञके पति यज्ञोपवीतधारी ॥ काली उद्धरन फनफन सहित उद्धरन दवा उद्धरन अंग मलय धारी। ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन ये शिला उद्धरन कटि पीत धारी ॥ यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन रुक्मिणी उद्धरन कर लकुट धारी । सिंधु उद्धरन सीता प्यारी उद्धरन जय विजयके उद्धरन धनुष-धारी ॥ त्रास उद्धरन प्रहलादके उद्धरन प्रबलनरसिंह अवतार धारी । हिरणकश्यप उद्धरन हिरण्याक्षके उद्धरन वेद उद्धरन बलखुजाधारी ॥ धरम उद्धरन यह कर्म उद्धरन प्रभु सुभग कटि किंकिनी पीत धारी । सूर उद्धरन सुरलोकके उद्धरन हरि कंस उद्धरन एई मुरारी ॥ ३ ॥

नंदनँदन मुख देख्यो नीके । अंगअंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके ॥ सुभग श्रवण कुंडलकी आभा झलक कपोलनि पीके । दहदह अमृत मकर क्रीडत मनौ यह उपमा कछु हीके ॥ और अंगकी सुधि नहिं जानैं करे कहति हौंलीके। सूरदास प्रभु नटवर काछे रहतहैं रतिपति वीके ॥ ४ ॥

राग रामकली ॥ देखि री देखि कुंडल झलक । नैन द्वै छबि धरौं कैसे लगत तापर पलक ॥ लसत चारुकपोल दुहुँबिच सजललोचन चार । मुख सुधासर मीन मानौं मकर-संग विहार ॥ कुटिल अलक सुभाइ हरिके भ्रुवनिपर रहे आइ । मनो मन्मथ फाँदि फंदनि मीन विवि तट ल्याइ ॥ चपल लोचन चपल कुंडल चपल भ्रुकुटीवंक । सखी व्याकुल देखि अपने लेत बनत न शंक ॥ सूर प्रभु नंदसुवनकी छबि बरनि कापै जाइ । निरखि गोपीनिकरि विथकी विधिहि अति रिस पाइ ॥ ५ ॥

राग जयतश्री ॥ विधिना अतिही पोच कियो री । कहा बिगार कियो हम वाको ब्रज काहे अवतार दियो री ॥ यह तौ मन अपने जानत हौं येते पर क्यों निठुर हियो री । रोमरोम लोचन एकटक करि युवतिन प्रति काहे न ठयोरी ॥ अँखियाँ द्वै छबिकी चमकनि वह हम तौ चाहति सबै पियोरी । सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनेही शिर मानि लियो री ॥ हम तौ पाप कियो भुगतें को पुण्य प्रगट क्यों निठुर हियो री ॥ सूरदास प्रभुरूप सुधानिधि पुटथोरो विधि नहीं वियोरी ॥ ६ ॥

राग धनाश्री ॥ सुन री सखी बचन एक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावित हैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहौं कछू नहिं नितप्रति निमको कोसों । यों जो नीके

दोऊ रहते निरखत रहती होसों ॥ एक एक अंग अंग छबि धरती मैं जो कहती तोसों। सूर कहा तू कहति अयानी काम परचो सब जोसों ॥ ७ ॥

राग कान्हरो ॥ कहा काहूको दोष लगावै। निमिषौ कहा कहति कहो विधिसों कहा नैननि पछितावै ॥ श्याम हितू कैसे करि जानति औरौ निठुर कहावै। क्षणमें और और अँग शोभा जो ए देखन पावै ॥ जबही एकटक करि अवलोकत तबहीं वै झलकावै। सूर श्यामके चरित लखै को एई बैर ॥ ८ ॥

राग नट ॥ लहनी करमके पाछे। दियो अपनों लहै सोई मिलै नहिं पाछे प्रगटहीहैं श्याम ठाढे कौन अंग केहि रूप। लह्यो काहू कहो मोसों श्याम हैं ठगभूप ॥ प्रेम जावक धनी हरिसे नैन पुट कह लेहि ! अमृतसिंधु हिलोरि पूरण कृपा दरशन देहि ॥ पाइए सोई सखी री लिखो जितनो भाल। सूर उत कछु कमी नाहीं छबि समुद्र गोपाल ॥ ९ ॥

राग सूही बिलावल ॥ देखि सखी अधरनकी लाली । मणि मरकतते सुभग कलेवर ऐसेहैं वनमाली ॥ मनो प्रातकी घटा साँवरी तापर अरुन प्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकि रहत है फहरत पीत सवास ॥ कीधौं तरुन तमाल बेलि चढि युग फल बिंब सु पाक्यो। नासा कीर आय मनों बैठो लेत बनत नहिं ताक्यो ॥ हँसत दशन एक शोभा उपजत उपमा यदपि लजाइ। मनों नीलमणि पुट मुकुतागन बंदन भरि बगराइ ॥ किधौं वज्रकन लाल नगनि खचि तापर विद्रुम पांति। किधौं सुभग बंधूक कुसुमपर झलकत जलकन कांति ॥ किधौं अरुन अंबुज बिच बैठी सुंदरताई आई। सूर अरुण अधरनकी शोभा वर्णत बरनि नजाई ॥ १० ॥

राग धनाश्री ॥ श्यामरूप देखनकी साध मेरी माई। कितनो पचिहारि रही देत नहिं दिखाई ॥ मनतौ निरखत सुअंग मैं रही भुलाई। मोसों यह भेद कहौ कैसे वहि पाई ॥ आपुन अंग अंग बिधो मोको बिसराई। बारबार कहत इहै तू क्यों नहिं आई ॥ अचहूं लै जात साथ वाहि बोले लाई। सूर श्याम छबि अगाध निरखत भरमाई ॥ ११ ॥

राग बिलावल ॥ सुनहु सखीमैं बूझति तुमको काहू हरिको देखेहैं। कैसो तन कसो रँग देखियत कैसी बिधि करि भेषेहैं ॥ कैसो मुकुट कुटिल कच कैसे सुभग भाल भ्रुव नीके। हैं। कैसे नैन नासिका कैसी श्रवणनि कुंडल पीके हैं ॥ कैसे अधरदशन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरतहैं। कैसे निरखि हँसत काहू तन कैसे बदन सकोरत हैं ॥ कैसी उरमाला है शोभित कैसी भुजा बिराजतहैं। कैसे कर पहुँची हैं कैसी कैसी अंगुरिआ राजत हैं ॥ कैसी रोमावली श्यामके नाभि चारु कटि सुनियतहैं ॥ कैसी कनक मेखला कैसी कछनी यह मन गुनियतहैं ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसी वद नख निरखि जानतिहै। सूर श्याम अंग अंगकी शोभा देखे की अनुमानति है ॥ १२ ॥

राग रामकली ॥ ऐसे सुने नंद कुमार। नख निरखि शशि कोटि वारत चरण कमल अपार ॥ जानु जंघ निहारि रंभा करनि डारत वारि । काछनीपर प्राण वारत देखि शोभा भारि ॥ कटि निरखि तनु सिंह वारत किंकिनी जु मराल । नाभि पर हृद आपु

वारत रोमावलि अतिमाल ॥ हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलिवलाक । करजकरपर कमलवारत चलति जहँ तहँ साक ॥ भुजापर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कहुँ लखति परम रसाल ॥ चिबुकपर चित वारि डारत अधर अंबुज लाल । वंधूक विद्रुम बिंब वारत ते भये बेहाल ॥ बचन सुनि कोकिलावारत दशन दामिनि कांति नासिकापर कीर वारत चारु लोचन भांति ॥ कंज खंजन मीन मृग शावकनि डारति वारि। भ्रुकुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलकपर वारत अँध्यारी तिलक भाल सुदेश । सूर प्रभु शिर मुकुट धारे धरे नटवर भेष ॥ १३ ॥

राग सारंग ॥ ऐसी बिधि नंदलाल कहत सुने माई री । देखे जो नैन रोम रोम प्रति सुभाई री ॥ बिधिने द्वै नैन रचे अंग ठानि ठान्यो । लोचन नहिं बहुत दिये जानिकै भुलान्यो ॥ चतुरता प्रवीनता विधाताको जानै । अब कैसे लगत हमहि वाते न अयाने ॥ त्रिभुवनपति तरुन कान्ह नटवर वपु काछे । हमको द्वै नैन दिये तेऊ नहिं आछे ॥ ऐसो बिधिको विवेक कहौं कहा वाको । सूर कबहूं पाऊं जो कर अपने ताको ॥ १४ ॥

राग नट ॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि । कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि ॥ भाल केसरि तिलक छबिपर मदन शत शर वारि ॥ मनु चली बहि सुधा धारा निरखि मन धौं वारि ॥ नैन खंजन मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि ॥ मनों सुरसति यमुन गंगा उपमा डारौं वारि ॥ निरखि कुंडल तरनि वारौं कूप श्रवणननि वारि॥झलक ललित कपोल छबिपर मुकुर शतशत वारि ॥ नासिका पर कीर वारौं अधर विद्रुम वारि । दशन एकन वज्र वारौं बीज दाडिम वारि ॥ चिबुकपर चित बित्त वारौं प्राण डारौं वारि । सूर हरिकी अंग शोभा कोसकै निरवारि ॥ १५ ॥

राग सोरठ ॥ श्याम उर सुधादह मानौ । मलय चंदन लेप कीन्हों बरन यह जानौ ॥ मलय तनु मिलि लसति शोभा महाजल गंभीर । निरखि लोचन भ्रमत पुनि २ धरत नहिं मन धीर ॥ उरज भँवरी भँवर मानों मीनमणिकी कांति । भृगुचरण हृदय चिह्न ये सब जीव जल बहुभांति ॥ श्यामबाहु बिशाल केसरि खौरि बिविधि बनाइ । सहज निकसे मगर मानों कूल खेलत आइ । सुभग रोमावलीकी छबि चली दहते धार । सूर प्रभुकी निरखि शोभा युवति बारंबार ॥ १६ ॥

मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो । चित्त चकोर चन्द्र नख अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो ॥ बिनही कहे गये उठि मोते जात नहीं मैं जान्यो । अब देखो तनमें वे नाहीं कहा जियहि धौं आन्यो ॥ तबते फेरि तके नहिं मोतन नखचरणन हित मान्यो । सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिं जान्यो ॥ १७ ॥

राग मारू ॥ श्याम सखि नीके देखे नाहीं । चितवतही लोचन भरि आए बार बार पछिताहीं ॥ कैसेहू करि यकटक राखति नेकहिं अकुलाहीं । निमिष मनो छबिपर रखवारे ताते अतिहि डराहीं ॥ कहा करैं इनको कहा दोषन इन अपनीसी कीन्हीं । सूर श्याम छबिपर मन अटक्यो उन सब शोभा कीन्हीं ॥ १८ ॥

राग गौरी ॥ मन लुबध्यो हरिरूप निहारि ॥ जादिन श्याम अचानक आयो तबते मोहिं बिसारि ॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो ह्यां डेरा निकसे झारि । ऐसे हाल करति री कोऊ रही अकेली नारि ॥ फेर न मेरी उहि सुधि लीन्हीं आपु करत दुख भारि । सूर श्यामको उरहनो देहौं पठवत काहे न मारि ॥ १९ ॥

अथ अनुराग समयके पद ।। रामकली ॥ पुनि पुनि कहतिहै ब्रजनारि । धन्य बड़भागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि ॥ धन्य नंदकुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति धन्य तुम दोउ नवल-जोगी कोक कला निजीति ॥ हम बिमुख तुम कृष्ण संगिनि प्राण एक द्वै देह । एक मन एक बुद्धि एक चित दुहुनि एक सनेह ॥ एक छिनुबिन तुमहि देखे श्याम धरत न धीर । मुरलिमें तुम नाम पुनिपुनि कहत हैं बलबीर ॥ श्याममणि मैं परखि लीन्हों महाचतुर सुजान । सूर प्रभुके प्रेमही वश कौन तोसारि आन ॥ २० ॥

राग बिहागरो ॥ राधा परम निर्मल नारि । कहतिहौं मन कर्मना करि हृदय दुविधा टारि ॥ श्यामको एक तुही जान्यो दुराचरनी और । जैसे घट पूरण न डोलै अध खुलो डग-डौर ॥ धनी धन कबहूं न प्रगटै धरै धनहि छिपाइ । तैं महानग श्याम पायो प्रगटि कैसे जाइ ॥ कहतिहौं यह बात तोसों प्रगट करिहौं नाहिं । सूर सखी सुजान राधा परस्पर मुसुकांहि ॥ २१ ॥

राग गौरी ॥ श्यामको तैंहीं है पहिचाने । सांची प्रीति जानि मनमोहन तेरेहि हाथ बिकाने ॥ हम अपराध कियो कहि तुमसों हमही कुलटी नारि । तुमसों उनसों बीच नहीं कछु तुम दोऊ बरनारि ॥ धन्य सुहाग भाग है तेरी धनि बड़भागी श्याम । सूरदास प्रभुसे पति जाके तोसी जाके वाम ॥ २२ ॥

राग सोरठ ॥ राधा श्यामकी प्यारी । कृष्णपति सर्वदा तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत बाणी सखीमुखकी जिय भयो अनुराग । प्रेम गदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग ॥ प्रीति परगट कियो चाहै बचन बोलि न जाइ । नंदनंदन कामना यक रहे नैननि छाइ ॥ हृदयते कहुँ टरत नाहीं कियो निहचल वास । सूर प्रभु रसभरी राधा दुरत नाहिं प्रकास ॥ २३ ॥

राग जयतश्री ॥ सुनि सजनी मेरी एक बात । तुम तौ अतिही करति बडाई मन मेरो सरमात ॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात । एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात ॥ वह मूरति द्वै नयन हमारो लिखी नही करमात । सूर रोमप्रति लोचन देतो विधना पर तरमात ॥ २४ ॥

राग कल्याण ॥ जो बिधना अपबश करिपाऊँ । तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोमरोमप्रति माँगौं पुनिपुनि त्रास दिखाऊं । यक टक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धनि नई चलाऊँ ॥ कहा करौं छबिराशि श्यामघन लोचन द्वै नाहिं ठाऊं । एतेपर ये निमिष सूर सुनि यह दुख काहि सुनाऊं ॥ २५ ॥

राग बिलावल ॥ कहाकरौं बिधि हाथ नहीं । वह सुख यह तनु दशा हमारी नैननि को रिस मरत मही ॥ अंगअंग नीकी बिधि बनये द्वै नैनादेखति जबहीं । ऐसो कौन ताहि धरि आनै कहा करौं खीझति मनहीं ॥ बड़ी सुजान चतुराई नीकी जगत पिता कहियत सबहीं । सूर श्याम अवतार जानि ब्रज लोचन बहुत न दिये हमहीं ॥ २६ ॥

अब समुझी यह निठुर विधाता । ऐसेहि जगत पिता कहवावत ऐसे घात करै सो दाता ॥ कैसो ज्ञान चतुराई कैसी कौन बिबेक कहांको ज्ञाता । जैसो दुख हमको एहि दीन्हों तैसै याको होत निपाता । द्वै लोचन तनुमें करि दीन्हों याहीते जान्यो पितु माता । सूर श्याम छबिते अघात नाहिं बारबार आवत अकुलाता ॥ २७ ॥

राग सूही बिलावल ॥ द्वै लोचन साबित नहिं तेउ । बिनु देखे कल परत नहीं छन येते पर कीन्हे यह टेउ ॥ बारबार छबि देख्यो चाहत साथी निमिष मिले हैं येउ । ते तो ओट करत छिनही छिन देखत ही भरि आवत दोउ ॥ कैसे मैं उनको पहिचानौं नैन बिना लखिये क्यों भेउ । ये तौ निमिष परत भरि आवत निठुर बिधाता दीन्हे येउ ॥ कहा भई जो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सब कोउ । सूर श्यामको नाम श्रवण सुनि दरशन नीके देत न वोउ ॥ २८ ॥

राग सूही ॥ श्यामहिं मैं कैसे पहिचानौं । क्रम क्रमकरि एक अंग निहारति पलक ओट ताको नहिं जानौं ॥ पुनि लोचन ठहराइ निहारति निमिष मेटि वह छबि अनुमानौं । औरै भाव और कछु शोभा कहौ सखी कैसे उर आनौं ॥ छिनछिन अंग अंग छबि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठ ठानौं । सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक बखानौं ॥ २९ ॥

राग सारंग ॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि । निमिष निमिष वह रूप न वह छबि रति कीजै जेहि जानि ॥ यकटक रहत निरंतर निशिदिन मन मतिसों चित सानि । एकौ पल शोभा कि सींवाँ सकत न उरमहँ आनि ॥ समुझि न परै प्रगटहि निरखत आँनँदकी निधि खानि । सखि यह बिरह संयोग कि सम रस दुखसुख लाभ कि हानि ॥ मिटति न घृतते होम अग्नि रुचि सूर सुलोचनि बानि । इत लोभी उत रूप परमनिधि कोउ न रहत मिति मानि ॥ ३० ॥

राग रामकली ॥ कहा करौं नीके करि हरिको रूपरेख नहिं पावति । संगहिसंग फिरति निशिवासर नैन निमेष न लावति ॥ बँधी दृष्टि ज्यों डोर गुडीवश पाछे लागी धावति । निकट भये मेरी ये छाया मोको दुख उपजावति ॥ नखशिख :निरखि निहारचोइ चाहति मन मूरति अति भावति । जानौं नहीं कहांते निजछबि अंगअंगमें आवति ॥ अपनी देह आपको वैरिनि दुरत न दुरी दुरावति।सूर श्यामसों प्रीति निरंतर अंतर मोहिं करावति ॥३१॥

राग धनाश्री ॥ जो देखौं तो प्रीति करौंरी । संगहि रहौं फिरौं निशिबासर चितते नेक नहीं बिसरौं री ॥ कैसे दुरति दुराये मेरे उनबिन धीरज नहीं धरौंरी । जाउँ तहीं जहँ रहैं श्यामघन निरखत यकटकते न टरौं री ॥ सुनि री सखी दशा यह मेरी सो कहि धौं अब कहा मरौं री । सूर श्याम लोचनभरि देखौं कैसे इतनी साध भरौं री ॥ ३२ ॥

राग बिलावल ॥ हरि दरशन की साध मुई । उडियै उडी फिरति नैननि सँग फर फूटे ज्यों आक रुई ॥ जानौं नहीं कहाँते आवति वह मूरति मन माँह उई । बिन देखेकी व्यथा

बिरहिनी अति जुर जरति न जाति छुई ॥ कछुवै कहत कछू कहि आवत प्रेमपुलकि श्रमस्वेद चुई ॥ सुखति सूर धान अंकुरसी बिनुबरषा ज्यों मूल तुई ॥ ३३ ॥

राग धनाश्री ॥ सुन री सखी दशा यह मेरी । जबते मिले श्यामघन सुंदर संगहि फिरति भई जनु चेरी ॥ नीके दरश देत नहिं मोकों अंगन प्रति अंगनकी टेरी । चपलाते अतिही चंचलता दशन चमक चकचौंधि घनेरी ॥ चमकत अंग पीतपट चमकत चमकति माला मोतिन केरी । सूर समुझि बिधिना की करनी अतिरिस करति सौंह मुँह तेरी ॥ ३४॥

राग मारू ॥ आजुके दिनाको सखी अति नहीं जो लाख लोचन अँग अंग होते । पूरती साध मेरे हृदय माँझ देखत सबै छबि श्यामको ते ॥ चित्तलोभी नैनद्वार अतिही सूक्ष्म कहाँ वह सिंधु छबि है अगाधा । रोम जितने अंग नैन होते संग रूप लेती निदरि कहति राधा ॥ श्रवण सुनि सुनि दहै रूप कैसे लहै नैन कछु गहै रसना न ताके । देखि कोउ रहै कोउ सुनि रहै जीभ बिन सो कहै कहा नहिं नैन जाके ॥ अंगबिनु है सबै नहीं एकौ फबै सुनत देखत जबै कहन लोरे । कहै रसना सुनत श्रवन देखत नैन सूर सब भेद गुनि मनहिं तोरे ॥ ३५ ॥

राग धनाश्री ॥ इनहूं में घटिताई कीन्हीं । रसना श्रवण नैनके होते की रसनाहीको नहिं दीन्हीं ॥ बैर कियो बिधना हमको रचि याकी जाति अबै हम चीन्हीं । निठुर निर्दयी याते औगन श्यामबैर हमसों है लीन्हीं ॥ या रसहीमें मगन राधिका चतुर सखी तबहीं लखि भीनी । सूर श्यामके रंगहि राची टरत नहीं जलते ज्यों मीनी ॥ ३६ ॥

राग सोरठ ॥ धन्य धन्य बडभागिनि राधा । नीके भजी नंदनंदनको मेटि भवन जन बाधा ॥ नवल श्याम नवला तुम हूं हौ दोउ तुम रूप अगाधा । मैं जानी यह बात हृदयकी रही नहीं कछु साधा ॥ संगहि रहति सदा पिय प्यारी क्रीडत करति उपाधा । कोककला वितपन्न भई हौ कान्हरूप तन आधा ॥ प्रेम उमँगि तेरे मुख प्रगट्यो अरस परस अवलाधा । सूरदास प्रभु मिले कृपाकरि गये दुरित दुखदाधा ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ॥ कहि राधिका बात अब सांची । तुम अब प्रगट कही मो आगे श्याम प्रेमरस मांची ॥ तुमको कहां मिले नँदनंदन जब उनके रंगरांची । खरिक मिले की गोरस बेचत की बिषहरते बांची ॥ कहे बनै छांडौ चतुराई बात नहीं यह कांची । सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रस खांची ॥ ३८ ॥

राग गौरी ॥ कबरी मिले श्याम नहीं जानैं । तेरी सौं कहि कहत सखी री अबहूं कहति कहारी आलि ॥ एकौ पल हरि होत न न्यारे नीके देखे नाहीं । सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाहीं ॥ ३९ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम मिले मोहिं ऐसे माई । मैं जलको यमुनातट आई ॥ औचक आये तहां कन्हाई । देखतही मोहनी लगाई ॥ तबहीते तनु सुरति गँवाई । सूधे मारग गई भुलाई । बिनदेखे कल परै न माई । सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ४० ॥

तबहीते हरिहाथ बिकानी। देह गेह सुधि सबै भुलानी॥अंग शिथिल भई जैसे पानी।ज्यों त्यों करि गृह पहुँची आनी॥ बोले तहां अचानक बानी। द्वारे देखे श्याम बिनानी॥ कहा कहौं सुनि सखी सयानी। सूर श्याम ऐसे मति ठानी॥ ४१॥

राग धनाश्री॥ जा दिनते हरि दृष्टि परे री। ता दिनते इन मेरे नैननि दुख सुख सब बिसरेरी॥ मोहन अंग गोपाललालके प्रेम पियूष भरे री। धसै उहां मुसुकानि बाहुले रचि रुचि भवन करै री॥ पठवति हौं मन तिनहिं मनावत निशि दिन रहत अरे री। ज्यों ज्यों मान करति उलटावत त्यों त्यों होत खरे री॥ पचिहारी समुझाइ सोचि पचि पुनि-पुनि पाँइ परे री। सो सुख सूर कहांलौं बरनौं यक टकते न टरे री॥

राम सारंग॥ जबते प्रीति श्यामसों कीन्हीं। ता दिनते मेरे इन नैननि नेकहु नींद न लीन्हीं॥ सदा रहैं मन चाक चढ्यो सो और न कछू सोहाइ। करत उपाइ बहुत मिलि-बेको इहै बिचारत जाइ॥ सूर सकल लागत ऐसी यह सो दुख कासों कहिये। ज्यों अचेत बालक की बेदन अपनेही तन सहिये॥ ४२॥

राग अडानो॥ को जानै हरि कहा कियो री। मन समुझति मुख कहत न आवै कछु एक रस लोचन जु पियो री॥ ठाढीहुती अकेली आँगन आनि अचानक दरश दियो री। सुधि बुधि कछु न रही तेहि अवसर मेरो मन किधौं पलटि लयो री॥ ता सुख हेतु दहति दुख दारुण छिन छिन जरति जुडात हियो री। सूर सकल आनत उर अंतर उपमाको पावति न वियोरी॥ ४३॥

राग सारंग॥ मेरे हरि अँगनाह्वै जु गए री। निकसे आइ अचानक सजनी इत फिरि-फिरि चितये री॥ अतिदुखमें पछितातति यहै कहि नैनन बहुत ठये री। जो विधि इहै कियो चाहतहो द्वैमुहि कत बनए री॥ सब देखेउँ लाख लोचन सखि जो कोउ जडत नए री। थाके सूर पथिक मग मानो मदन व्याध बिधए री॥ ४४॥

राग कान्हरो॥ पीतांबरकी शोभा सखी री मोपै कही न जाई। सागरसुतापति आयुध मानो वनरिपु रिपुमें देति दिखाई॥ जा अरि पवन ताहिमहिं सुव स्वामी आभा कुंडल कोटि दिखाई। छायापति तनु बदन बिराजत बंधुक अधरन गए लजाई॥ नाकीनायक बाहनकी गति मुरली सुधुन बजाई। सूरदासप्रभु हरिसुत बाहन तासुत हरिलै सरह बनाई॥ ४५॥

राग सारंग॥ टरति न टारे इह छबि मनमें चुभी। श्याम सुघन पीतांबर दामिनि चातक अँखियाहो जाइ तुभी॥ है जलधार हार मुकुता मनों बक पंगति कुमुद माल सुभी। गिरा गंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखुभी॥ मोहन बानी हौं ठगी रही इकटक हौं जु उभी। सूरदास मोहन मुख निरखत उपजी सकल तन काम गुँभी॥ ४६॥

राग बिलावल॥ नंदके लाल हरचो मन मोर। हौं बैठी पोवति मोतिअनलर कांकरि डारि चले सखि भोर॥ बंक बिलोकनि चाल छबीली रसिक शिरोमणि नंदकिशोर। कहि काको मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर मुरलीकी घोर॥ इंदु गोविंदु बदनके कारन चितवति नैन बिहंग चकोर। सूरदास प्रभुके जु मिलनको कुच श्रीफलहो करति अकोर॥ ४७॥

राग अडानो ॥ मेरो मन गोपाल हरचो री । चितवतही उर पैठि नैन मग नाजानोंधौं कहा करचो री । मात पिता पति बंधु सजन जन सखि आँगन सब भवन भरचो री । लोक वेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूंपै राख्यो न परचो री ॥ धर्म धीर कुलकानि कुंचि करि तेहि तारौंदै दूरि धरचो री । पलक कपाट कठिन उर अंतर इतेहु जतन कछुवै न सरचोरी । बुधि बिबेक बल सहित सच्यो पचि सुध न अटल कबहूं न टरचो री । लियो चुराइ चितै चित सजनी सूर सो मोतन जात जरचो री ॥ ४८ ॥

राग अडानो ॥ मेरो मन तबते न फिरचोरी । गयो जु संग श्यामसुंदरके तहांके कबहूं न टरचो री ॥ जोबन रूप गर्व धन सचिसचि हौं उरमें जु धरचो री । कहा कहौं कुल शील सकुच सचि सरबस हाथ परचो री ॥ बिनु देखे मुख मनु हरिको यह निशिदिन रहत अरचो री ॥ सूरदास या वृथा लाजते कछुअन काज सरचो री ॥ ४९ ॥

राग सारंग ॥ यह सब मैंही पोच करी । श्याम रूप निरखत नैननि भरि भौंहनि फंद परी ॥ वै किशोर कमनीय मुगध मैं लुबुधतहूं न डरी । अब छबि गई समाइ हियेमें टारतहू न टरी ॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधुमुख सनमुखरी । बुधि विवेक बल बचन विवशह्वै आनँद उमँगि भरी । यद्यपि शूल सहित सुनि सूर सु अंगहउदैन अरी । तद्यपि मुख मुरलिका विलोकति उलटि अनंग जरी ॥ ५० ॥

राग आसावरी ॥ सखी री ना जानौं तबहीते मोको श्याम कहाधौं कीन्हो री । मेरी दृष्टि परे जादिनते ज्ञान जान हरिलीन्हो री ॥ द्वारे आइगए औचकही मैं आंगनही ठाढी री । मनमोहन मुख देखिरही तब काम व्यथा तनु बाढी री ॥ नैन सैन दैदै हरि मोतन कछु एक बात बतायो री । पीतांबर उपरैना कर गहि अपने शीश फिरायोरी ॥ लोकलाज गुरुजनकी शंका कहत न आवै बानी री । सूर श्याम मेरे आँगन आए जात बहुत पछितानी री ॥ ५१ ॥

सोरठ ॥ मन हरिलीन्हों कुँवर कन्हाई । जबते श्याम द्वारह्वै निकसे तबते री मोहिं घर न सुहाई ॥ मेरे हित आइ भये हरि ठाढे मोते कछु न भई री माई । तबहींते व्याकुल भई डोलति बैरी भए मातपितु भाई ॥ मो देखत शिरपाग सँवारी हँसि चितये छबि कही न जाई । सूर श्यामगिरिधर बर नागर मेरो मन लैगए चोराई ॥ ५२ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रेमसहित हरि तेरे आये । कछु सेवा तैं करी कि नाहीं कीधौं वैसेहि उनहि पठाये ॥ काहेते हरिपाग सँवारी क्यों पीतांबर शीश फिराये । गुप्तभाव तोसों कछु कीन्हों घर आए काहे बिसराये ॥ अतिही चतुर कहावत राधा बातनहीं हरि क्यों न भुराये । सूर श्यामको बस करि लेती काहेको रहते पछताये ॥ ५३ ॥

गुरुजनमें बैठी आये हरि वेंदी संवारन मिस पाइलागी । चतुर नायकहु पाग मसकि मनहीमन रीझे गुप्तभेद प्रीति तन जागी ॥ हस्तकमल हरि हेरि हृदय धरे भामिनि उत आप कंठलागी । सूरदास अति चतुर नागरी पिय अति नागर दुहुँ कह्यो मनमें सुहाग भागी ॥ ५४ ॥

श्याम अचानक आइगये री। मैं बैठी गुरुजन बिच सजनी देखतही मेरे नैन नयेरी॥ तब इक बुद्धि करी मैं ऐसी बेंदीसों कर परस कियो री। आपु हँसे उत पाग मसकि हरि अंतर्यामी जानिलियो री॥ लैकर कमल परसायो देखि हरषि पुनि हृदय धरचो री। चरण छुवै दोउ नैन लगायो मैं अपने भुज अंक भरचो री॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तबहीते मन चोरी गयोरी। सूरदास कछु दोष न मेरो उत गुरुजन इत हेतु नयोरी॥९५॥

करत मोहिं कछुवै तौ न बनी। हरि आए चितवतहि रही सखि जैसे चित्र धनी॥ अति आनंद हरष आसन उर कमल कुटी अपनी। न्योछावर अंचलको फहरनि अर्धनैन जलधार घनी॥ गुरुजन लाज कछू न सकी कहि सुनि मन बुधि सजनी। हृदय उमँगि कुच कलश प्रकट भये टूटी तरकि तनी॥ अब उपजति अति लाज मनहि मन समुझति निजकरनी। सूरदास मेरी जडमति मंगल प्रभु मांझ गुनी॥ ९६॥

सेवा मानि लई हरि तेरी। अब काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी॥ गुरुजनमें भावहिकी पूजा और कहौ कछु टेरी। मोहन अति सुख पाय गये री चाहति हौं कह मेरी॥ तेरे वशभय कुँवर कन्हाई करति कहा अवसे री। सूर श्याम तुमको अति चाहत तुम प्यारी हरिके री॥ ९७॥

राग आसावरी॥ राधा भाव कियो यह नीको तुम बेंदी उन पाग छुआई। ऐसे भेद कहा कोउ जानै तुमही जानौ शुमदुराई॥ तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुमको उनहु जुहार कियो। एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वै एकै नहीं बियो। तुम पग परसि नैनपर राख्यो उनि करकमलकी हृदय धरचो। सूर श्याम हृदय तुम राखे तुम उनको लै कंठभरचो॥ ९८॥

राग बिहागरो॥ अरी माई एक गाँवके बसत एकबार हरि कीन्ही पहिचानि। निशिदिनरहै दरशकी आशा मिले अचानक आनि॥ भाग्य दशा आँगनही आये सुन्दर सरबस जानि। नीके करिदेखनहुँ न पाए बहि न जाइ कुलकानि। कल न परत हरि दरशन बिन री मोहिं परी यह बानि। सूरजदास बिकानी री हौं नंदसुवनके पानि॥ ९९॥

कहा करौं गुरुजन डर मान्यो। आए श्याम कौन हित करिकै मैं अपराधिनि कछू न जान्यो॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आँगन तबते मन उन हाथ बिकान्यो। चूकपरी मोको सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यो॥ वे उतहीको गये हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यो। सूर श्याम सँग मन उठि लाग्यो मोपर बारंबार रिसान्यो॥ ६०॥

राग सारंग॥ अचानक आये री हरि मेरे चितै तब होंगही छबि निहारि। कुंडल लोक कपोल रहे कच श्रमजलसों कर कंजसों टरि॥ गुरुजन बिच मैं आँगन ठाढी अति हित दरशन दियो मया करि। सूरदास स्वामी अंतर्यामी वै हँसि चितये सुख करि॥६१॥

राग गौरी॥ मैं अपने कुलकानि डरानी। कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहिं जानी॥ उहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लैगए चुराइ। तनते जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाइ॥ ऐसे ढंग फिरत हरि घरघर भूल कियो अपराध! सूरश्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध॥ ६२॥

राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी तबते गृह मोको न सोहाई । द्वार अचानक ह्वै गये री सुन्दर बदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल । भोहैं कांट कटीलियां सखिवश कीन्ही बिनमोल ॥ मोर मुकुटशिर सोहई अरु अधर धरे मुख बैन । मोहन मूरति हृदय बसै छबि लागिरही दोउनैन ॥ श्यामरूपमें मन गिध्यो भलो बुरो कहौ कोइ । सूरदास प्रभु संग गयो मन मनों उनहींको होइ ॥ ६३ ॥

मोहन बिनु मन न रहै कहा करौं माई री । कोटि भांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौन काज मानत यदुराईरी । हृदयते टरत नाहिं मुख सुन्दरताई री ॥ ऐसेहैं त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूर श्याम बिन न रहों ऐसी बनि आई री ॥ ६४ ॥

मेरो मन न रहै कान्ह बिना नैन तपै माई । नवकिशोर श्याम बरन मोहनी लगाई ॥ बनकी धातु चित्रित तनु मोर चंद्र सोहै । बनमाला लुब्ध भँवर सुर नरमुनि मोहै ॥ नट-वर वपु भेष ललित कटि किंकिनि राजै । मणि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै ॥ कुटिलकेश अति सुदेश गोरज लपटानी । तडित बसन कुंद दशन देखिहों भुलानी ॥ अरुन श्वेत कुंभ वज्रखचित पदिक शोभा । मणि कौस्तुभ कंट लसत चितवत चित लोभा ॥ अधर सधर मधुर बोल मुरली कलगावै । ध्रुव विलास मंदहास गोपिन्ह जिय भावै ॥ कमलनैन चितके चैन निरखि मन वारों । प्रेम अंश अरुझि रहो उरते नहिं टारों ॥ गोप भेष धरि सखी री संग संग डोलौं । तन मन अनुराग भरी मोहन संग बोलौं ॥ नवकिशोर चितके चोर पलक ओट न करिहौं । सुभग चरन कमल अरुन अपने उर धरिहौं ॥ असन वसन शयन भवन हरिबिनु न सुहाइ । बिनु देखे कल न परै कहा करौं माइ ॥ यशोमति सुत सुन्दर तनु निरखि हौं लोभानी । हरिदरशन अमल परचो लाजन लजानी ॥ रूपराशि सुख बिलास देखत बनि आवै । सूर प्रभु रूपकी सीवा उपमा नहिं पावै ॥ ६५ ॥

राग गौरी ॥ मन मेरो हरि साथ गयो री । द्वारे आय श्याम घन सजनी हँसि मोतनते संग लयो री ॥ ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ उनही पोषि जयो री । सेवा चूक-परी जो मोत मन उनको धौं कहा कियो री ॥ मोको देखि रिसात हते यह तेरे जिय कछु गर्व भयो री । सूर श्याम छबि अंग भुलानो मन वच कर्म मोहिं छाँडि दयो री ॥ ६६ ॥

राग रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करौं दरशनमें अटक्यो बहुरि नहीं घटआयो ॥ इन नैननके भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो । बरजतही बेकाज सु पत ज्यों पलट्यो जोन सिधायो ॥ लोक वेद कुल तिदरि निडरह्वै करत आपनो भायो । मुख छबि निरखि बाँधि निशि खग ज्यों हठि अपुनपो बँधायो ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो । अति विपरीत भई सुनि सूरप्रभु मुरझ्यो वदन जगायो ॥६७॥

राग बिलावल ॥ मनहि बिना कहा करौं सखी री । घर तजिकै कोउ रहत पराये मैं तबहींते फिरत बही री ॥ आइ अचानकही लैगए हरि बारबार मैं हटकिरही री ।

मेरो कह्यो सुनत काहेको लेगये हरि हरिके उतही री ॥ ऐसी करत कोऊ कहाकरौं मैं हारि रही री । सूर श्यामको यह न बूझिये ढीठ कियो मनको उनहीं री ॥ ६८ ॥

राग टोडी ॥ माखनकी चोरी तैं सीखे करनलगे अब चितहूकी चोरी । जाके दृष्टिपरे नँदनंदन सोउ फिरति गोहन डोरी डोरी॥ लोकलाज कुलकानि मेटि करि बन बन डोलति नवल किशोरी । सूरदास प्रभु रसिकशोरोमणि जबते देखे निगम वानि भई भोरी ॥६९॥

राग आसावरी ॥ क्यों सुरझाऊँ री नँदलालसों अरुझिरह्यो मन मेरो । मोहन मूरति कहूं नैक न बिसरति कहिकहि हारि रही कैसेहु करत न फेरो ॥ बहुत यतन घेरिघेरि राखति फेरिफेरि लरत सुनत नहिं टेरो । सूरदास प्रभुके सँग रसवश भई डोलत निशि वासरकहुँ निरखत पायो न डेरो ॥ ७० ॥

राग बिलावल ॥ मैं अपनो मन हरत न जान्यो । कब धौं गयो संग हरिके वह की धौं पंथ भुलान्यो ॥ कीधौं श्याम हटकि है राख्यो कीधौं आपु रतान्यो । काहेते सुधि करी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो ॥ जबहीते हरि ह्यां ह्वै निकरे बैर तबहिते ठान्यो । सूर श्याम संग चलन कह्यो मोहिं कह्यो नहीं तब मान्यो ॥ ७१ ॥

राग गूजरी ॥ श्याम करतहै मनकी चोरी । कैसे मिलत आनि पहिलेही कहि कहि बतियां भोरी ॥ लोकलाजकी कानि गमाई फिरत गुडीवश डोरी । ऐसे ढंग श्याम अब सीखे चोर भयो चितकोरी ॥ माखनकी चोरी ॥ माखनकी चोरी सहि लीन्हौ बात रही वह थोरी । सूरश्याम भए निडर तबहिते गोरस लेत अजोरी ॥ ७२ ॥

राग टोडी ॥ सुनहु सखी हरि करत न नीकी । आप स्वारथी हैं मन मोहन पीर नहीं औरनकी ॥ वैतो निठुर सदा मैं जानति बात कहत मनही की । कैसे उनहिं वहां करि पाऊं रिस मेटैं सब जीकी ॥ चितवत नहीं मोहिं सपने हूँ को जानै उनहीकी ऐसे मिले सूरके प्रभुको मनहुँ मोल लै बीकी ॥ ७३ ॥

राग आसावरी ॥ माई री कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्यो री तबते भूली री भवन बावरीसी भईरी । भरिभरि आवै नैन चित न रहत चैन बैननिहू सुध्यौ भूली मनकी दशा सब औरै ह्वै गई री ॥ को माता कौन पिता कौन भ्राता कौन प्राण कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हई री । सूर श्याम जबते परेरी मेरे दृष्टि वाम काम धाम निशि याम लोक-लाज कुलकानि नईरी ॥ ७४ ॥

राग रामकली ॥ राधातैं हरिके रँग राची । तोते चतुर और नहिं कोऊ बात कहों मैं सांची ॥ तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसी है तू काची । हरि तेरो मन अबहि चुरायो प्रथम तुहीहै नाची ॥ तुम अरुश्याम एकहौ दोऊ बाकी नाहीं बाची । सूर श्याम तेरे वश राधा कहति लीक मैं खांची ॥ ७५ ॥

राग जयतश्री ॥ तू काहेको करति सयानी । श्याम भए वश पहिले तेरे तब तू उनके हाथ बिकानी ॥ बाकी नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी । नँदनंदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी कौन बड़िभागिनि राधा यह नीके करि जानी । सूर श्याम सँग हिलि मिलि खेलो अजहुँ रहति बौरानी ॥ ७६ ॥

राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । तबहीते मैं भई बौरानी कहा करों री माई ॥ कुटिल अलक भीतर अरुझाने अब निरुवारि न जाई । नैन कटाक्ष चारु

अवलोकनि मोतन गये बसाई ॥ निलजभई कुलकानि गँवाई कहा ठगोरी लाई । बारंबार कहति मैं तोको तेरे हिये न आई ॥ अपनीसी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहांपाई। सूरश्याम ऐसी गति कीन्ही देह दशा बिसराई ॥ ७७ ॥

राग रामकली ॥ राधा हरि अनुराग भरी । गदगद मुख बाणी परकाशत देह दशा बिसरी ॥ कहति इहै मन हरि हरिलैगये एही परनिपरी । लोक सकुचशंका नहिं मानति श्यामहि रंग ढरी ॥ सखी सखीसों कहति बावरी येहि हमको निदरी । सूरश्याम सँग सदा रहतिहै बूझेहू न करी ॥ ७८ ॥

राग सूही बिलावल ॥ तुम जानति राधाहै छोटी । चतुराई अँग अंग भरीहै पूरण ज्ञान न बुद्धिकी मोटी ॥ हमसों सदा दुरावति सोइहि बात कहै मुख चोटी पोटी । कबहुँ श्यामते नेक न बिछुरति किये रहति हमसों हठ ओटी ॥ नँदनंदन याहीके वश हैं विवश देखि वेंदीछबि चोटी । सूरदास प्रभु वै अति खोटे यह उनहूते अतिही खोटी ॥ ७९ ॥

राग बिलावल ॥ सखी कहति तू बात गँवारी । याकी सरि कैसे कोउ ह्वैहै जाके वश हैं श्रीवनवारी ॥ ब्रज भीतर इह रूप आगरी व्रत लीन्हों दृढ गिरिवरधारी । प्रीति गुप्तही की है नीकी यापर मैं री झी हौं भारी ॥ सांची कहौं नेह ऐसोई पाछे मोको दीजो गारी । सूरदास राधा जो खोटी तौ देखो यह कृष्ण पियारी ॥ ८० ॥

राग गूजरी ॥ सुनहु सखी राधा सरि को है । जे हरिहैं रतिपति मनमोहन याको मुख सो जोहै ॥ जैसे श्याम नारि यह तैसी सुंदर जोरी सोहै । इह द्वादश वेऊ दशद्वैके ब्रज-युवतिन मन मोहै । मैं इनको घटि बढि नहिं जानति भेद करै सो को है । सूर श्याम नागर इह नागरि एक प्राण तनु द्वै है ॥ ८१ ॥

राग गूजरी ॥ सुनि सजनी ए ऐसे लागत । एक प्राण युग तन सुखकारण एकौ निमिष न त्यागत ॥ बिछुरत नहीं संगते दोऊ बैठे सोवत जागत । पूरव नेह आजु यह नाहीं मोसों सुनहु अनागत ॥ मेरी कही सांची तुम जानो कीजै आगत स्वागत । सूर श्याम राधावर ऐसे प्रीति हिते अनुरागत ॥ ८२ ॥

राग जैतश्री ॥ सखी सखीसों धन्य कहैं । इनको हम ऐसे नहिं जाने ब्रज भीतर ए गुप्त रहैं ॥ धन्य धन्य तेरी मति साँची हम इनको कछु और कहैं । राधा कान्ह एकहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहैं । वै दोऊ एक दूसरी तू है तोहूको सखि श्याम चहैं । सूर श्याम धनि अरु राधा धनि तुहूं धन्य हम वृथा बहैं ॥ ८३ ॥

राग धनाश्री ॥ धन्य धन्य यह तेरी बानी । तैं नीके हरिको पहिचानें अब हम तुमको जानी ॥ राधा आधा देह श्यामकी तू उनकी बिचवानी । राधाहूते अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी ॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि नेह क्यों मानी । सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि यह रसकथा बखानी ॥ ८४ ॥

राग पूरवी ॥ हे माई राधा मोहन सहज सनेही । सहज रूपगुण सहज लाडिली एक प्राणद्वै देही ॥ सहज माधुरी अंग अंगप्रति सहज सदा वन गेही । सूर श्याम श्यामा दोउ सहजहि सहज प्रीति करिलेही ॥ ८५ ॥

राग आसावरी राधा नंदनँदन अनुरागी । भव चिंता हिरदै नहिं एको श्यामरंगरस-पागी ॥ हरदचून रँग पय पानी ज्यों दुविधा दुहुँकी भागी । तनमन प्राण समर्पण कीन्हों अंग अंग रतिखागी ॥ ब्रजवनिता अवलोकन करि करि प्रेम विवश तन त्यागी । सूरदास प्रभुसों चितलाग्यो सोवतते मनु जागी ॥

राग मारू ॥ गोपी श्याम रंग राची । देह गेह सुधि बिसारी बढी प्रीति सांची ॥ दुविधा उर दूरि भई गई मति वह काची । राधाते आपु विवश भई उघरि नाची ॥ हरि तजि जो और भजे पुहुमि लीक खांची । मात पिता लोक भीत वाकी नहिं बाची ॥ सकुच जबहिं आवै उर बार बार झांची । सूर श्याम पद पराग ताहीमें माची ॥ ८६ ॥

राग मारू ॥ श्याम जल सुजल ब्रज नारि खोरैं । नदी माला जु जल तट भुजा अति सबल धार रोमावली यमुन भोरैं ॥ नयन ठहरत नहिं बहत अति तेजसी तहां गयो चित्त धीरज सँभारैं । मन गयो तहीं आपुन रहीं निकट जल एक एक अंग छवि सुधि विचारैं । करति अस्नान सब प्रेम बुडकी देहि समुझि जिय होइ भजि तीर आवै । सूर प्रभु श्याम जलराशि ब्रजवासिनी करति अनुमान नहिं पार पावैं ॥ ८७ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम रंग राची ब्रजनारी और रंग सब दीन्ही डारी ॥ कुसुम रंग गुरुजन पितुमाता । हरितरंग भैनी अरु भ्राता ॥ दिनाचारि में सब मिटि जैहैं । श्यामरंग अजरायल रैहैं ॥ उज्ज्वल रंग गोपिका नारी । श्याम रंग गिरिवरके धारी ॥ श्यामहिमें सब रंग वसेरो । प्रगट बताइ देउ कहि झेरो ॥ अरुण श्वेत सित सुंदर तारे । पीतरंग पीतांबर धारे ॥ नाना रंग श्याम गुणकारी । सूर श्याम रँग घोषकुमारी ॥ ८८ ॥

राग बिहागरो ॥ श्यामसलोने रूपमें अरी मन अरंचो । ऐसे ह्वै लटक्यो तहां ते फिरि नहिं मटक्यो बहुत जतन मैं करचो ॥ ज्यों ज्यों खैंचति त्यों त्यों मगनहोत ऐसी धरनि धरचो । मोसों वैर करत उन कीह्यां देख्यो जाइ ढरचो ॥ ज्यों शिव छत दरशन रवि पाये जेही गरनि गरचो । सूरदास प्रभु रूप थक्यो मन कुंजल पंक परचो ॥ ८९ ॥

राग देसाष ॥ निशि दिना इनि नैननिको री नंदलालकी लागी रहै लालसाई । मुरली रसतान भरी श्रवनगरी जबतेरी परी कैसैहू टरति नहीं हृदयते विहारी यदुराई ॥ कहा कहौं तोसों यह सजनी मन मेरो लैगयो चोराई । सूर श्यामको नाम धरौं पुनि धरचो न जाइ सुधि न रहै तनुमाई ॥ ९० ॥

देखि सखी मेरो मन न रहै श्याम बिना । अतिहि चतुर जान जाननि मनि वह छवि-पर मैं भई लीना ॥ अपनी दशा कहौं मैं कासों बन बन डोलति रैनिदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेही झुरिह्वै रही छीना ॥ वै मोहन मन हरत सहजही हरिलै ताको करत हीना । सूरदास रसिक रसीले बहुनायक हैं नाउँ जीना ॥ ९१ ॥

राग सारंग ॥ नैननि नींदौ गईरी निशिदिन पल पल छतियां लाग्यौ रहै धरको । उत मोहन मुख मुरली सुनत सुध्यो नरही इत घेरा घरको ॥ ननदी तौन दिये बिनुगारी नैकहू रहति सासु सपनेहूमें आमि गोउति काननिमें लए रहै मेरे पाइँनकौ खरको । निकसनहूं ना पाइये री कासों दुख कहिये देखहू न पाइयेरी सूरदास प्रभुके तन मेरो ज्यो ऐसी भयो जैसो हाथ पाथरतरको ॥ ९२ ॥

राग सुघराई ॥ मोहन मुरली बजाइ हौं रिझाई । तिनही मोहीरी हौं मोहीरी सांझ समै देखे कन्हाई ॥ आनि निकसे मेरे आँगनह्वै तबते चितवत यह पीर भई री । काकी देह गेह सुधि काके हेहारि कैसे मैं ही री ॥ तेरे कहे कहतिहौं बानी मैं हरिहाथ बिकानी तबते यकटक जोइरही री । मिलत नहीं नाहिं संगते त्यागत कहा करौं बूझो तोही ॥ सूर श्याम तबते नाहिं आये मन जबते हरि लीन्हों वैतौ ऐसेहैं द्रोही ॥ ९३ ॥

राग अडानो ॥ ब्रजकी खोरि ठाढो साँवरो ढोटौना तब हौं मोहीरी हौं मोही री । जबते मैं देखे श्यामसुंदर री चलि न सकत पगदइहै काम नृप द्रोही री ॥ को लै आइ कौने चरन चलाइ कौने बहियां गही सोधों कोही री । सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नाहिं अति विदेह भई अब मैं बूझति तोही री ॥

राग सुघराई ॥ आंखिन मैं बसै हियरेमें बसत निशि दिन प्यारो । मनमें बसै तनमें बसै रसनामें बसै अंग अंग में बसत नंदवारो ॥ सुधिमें बसै बुधिहूमें बसै उरजनमें बसत पिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम बनहूं मैं बसत घरहूमें बसत संग ज्यों जलरंग न होत न्यारो ॥ ९४ ॥

राग सोरठ ॥ नँदनंदन बिन कल न परै । अति अनुराग भरी युवती सब जहां श्याम तहां चित्त ढरै ॥ भवन गई मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै । वै कछु कहैं करैं कछु और सासु ननँद तिनपर झहरै ॥ इहै तुमहि पितु मात सिखायो बोल करति नाहिं रिसन जरै । सूरदास प्रभुसे चित अरुझ्यो यह समुझो जिय ज्ञान धरै ॥ ९५ ॥

राग जैतश्री ॥ सासुननँद घर त्रास दिखावै । तुम कुलवधू लाज नहिं आवति बार बार यह कहि समुझावै ॥ कबही गई न्हान तुम यमुना यह कहि कहि रिस पावै । राधाको तुम संग करतिहौ ब्रज उपासन उडावै ॥ वेहैं बडेमहरकी बेटी तौ ऐसी कहवावै । सुनहुं सूर यह उनही फावै ऐसी कहति डरावै ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ हम अहीर ब्रजबासी लोग । ऐसे चलो हँसै नाहिं कोऊ घरमें बैठि करो सुख भोग । दही मही लवनी घृत बेंचो सबै करौ अपने उतयोग । शिरपर कंस मधुपुरी बैठो छिनकहिंमें करिडारो सोग ॥ फूंकि फूंकि धरणी पग धारौ अब लागी तुमकरन अयोग । सुनहु सूर अब जानोगी तब जब देखै राधा संयोग ॥ ९७ ॥

राग धनाश्री ॥ तुम कुलवधू निलज जिनि ह्वैहौ । यह करनी उनहींको छाजै उनके संग न जैहौ ॥ राधा कान्ह कथा ब्रज घर घर ऐसे जनि कहवैहौ ॥ यह करनी उन नई चलाई तुम जनि हमहिं हँसैहौ । तुमहौ बडे महरकी बेटी कुल जिन नाम धरैहौ। सूर श्याम राधाकी महिमा इहै जानि सरमैहौ ॥ ९८ ॥

राग टोडी ॥ यह सुनिकै हँसि मौन रही री । ब्रज उपहास कान्ह राधाको यह महिमा जानी उनही री ॥ जैसी बुद्धि हृदय है इनके तैसी यै मुख बात कही री । रविके तेज उलूक न जानै तरनि सदा पूरन नभही री ॥ विषको कीट विषहि रुचि मानै जानै कहा सुधारसही री । सूरदास तिल तेल सुवादी स्वाद कहा जानै घृतही री ॥ ९९ ॥

राग सोरठ ॥ अहिर जाति गोधन को मानैं । नँदनंदन सुर नर मुनि वंदन तिनकी महिमा क्यों ये जानैं ॥ धनि राधा उपहास धन्य यह सदा श्यामहीके गुण गानैं । परम पुनीत हृदय अतिनिर्मल बारबार बाजही बखानैं ॥ श्याम कामकी पूरनहारी ताको कुलटी- करि पहिचानैं । सूरदास ऐसे लोगनको नाउँ न लीजे होत बिहानैं ॥ १५०० ॥

राग बिहागरो ॥ बिधिना संगति मोहिं यह दीनी । इनको नाम प्रात नहिं लीजे कहा निठुरई कीनी ॥ मनमोहन गोहन बिन अबलौं मानो बिते युगचारि ॥ बिमुखनमेंते कबधौं छूटौं कब मिलिहौं बनवारि ॥ एक एक दिन बिहात कैसेहूँ अब तौ रह्यो न जाइ । सूर श्याम दरशन बिन पाये बारबार अकुलाइ ॥ १ ॥

बिमुख जननिको सँग न कीजै । इनके बिमुख वचन सुनि श्रवननि दिन दिन देही छीजै ॥ मोको नेक नहीं ये भावत परवशको कहा कीजै । धिग जीवन ऐसो बहु दिनको श्याम भजन पल जीजै ॥ धिग ये घर धिग ये गुरुजनको इनमें नहीं बसीजै । सूरदास प्रभु अंतर्यामी इहै जानि मन लीजै ॥ २ ॥

राग नट ॥ राधा श्याम रंग रँगी । रोमरोमनि भिदि गयो सब अंग अंग पगी ॥ प्रीति दै मन लै गए हरि नंदनंदन आप । श्यामरस उनमत्त नागरि दुरत नहिं परताप ॥ चली यमुना जाति मारग हृदय इहै बिचार । सूर प्रभुको दरश पावैं निगम अगम अपार ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ॥ चितको चोर अबहिं जो पाऊं । हृदय कपाट लगाइ जतनकरि अपने मनहिं मनाऊं ॥ जबहिं निशंक होति गुरुजनते तेहि औसर जो आवै । भुजनि धरौं भरि सुदृढ मनोहर बहु दिनको फलपावै ॥ लै राखौं कुचबीच चापिकरि प्रति दिनको तनुताप बिसारौं । सूरदास नंदनंदको गृहगृह डोलनिको श्रम टारौं ॥ ४ ॥

राग बिलावल ॥ इतने राधा जाति यमुनतट उतते हरि आवत घरको । कछि काछिनी भेष नटवरको बीच मिली मुरली धरको ॥ चितैरही मुख इंदु मनोहर वा छबिपर वारति तनको । दूरिहुते देखतही जाने प्राणनाथ सुंदर घनको ॥ रोम पुलकि गदगद बाणी कहि कहाँ जात चोरे मनको । सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखनते चितवित धनको ॥ ५ ॥

इह न होइ जैसे माखन चोरी । तब वह मुख पहिचानि मानि सुख देती जान हानि हुती थोरी ॥ उनहि दिननि सुकुँवार हते हरिहौं जानत अपनो मन भोरी । ब्रजबसि बास बड़ेके ढोटा गोरस कारण कानि न तोरी ॥ अब भए कुशल किशोर नंदसुत हौं भई सजग समान किशोरी । जात कहाँ बलि बाँह छडाए मूसे मन संपति सब मोरी ॥ नख शिखलौं चित चोर सकल अँग चीन्हेपर कत करत मरोरी । एक सुनि सूर हर्‍यो मेरो सर्वस अरु उलटी डोलैं सँगडोरी ॥ ६ ॥

राग गौरी ॥ भुजा पकरि ठाढे हरि कीन्हें । बाँह मरोरी जाहुगे कैसे मैं तुमको नीके करि चीन्हें ॥ माखन चोरी करत रहे तुम अब तौ भए मन चोर । सुनत रही मन चोरतहैं हरि प्रगट लियो मन मोर ॥ ऐसे ढीठ भए तुम डोलत निदरे ब्रजकी नारि । सूर श्याम मोहू निदरौगे देत प्रेमकी गारि ॥ ७ ॥

राग सारंग ॥ बहु बल कितकु जानौ यदुराइ। तुम जो तरकि मोहि अबलापै तौ चलिहौ भुजा छड़ाइ ॥ कहि अत हौ अति चतुर सकल अंग आवत बहुत उपाइ । तौ जानौं जो अबके ए ढँग को सकै देते जाइ ॥ सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अंतर भाइ। सहि न सके रति वचन उलटि हँसि लीनी कंठ लगाइ ॥ ८ ॥

राग ईमन॥मैं तुमरे गुण जाने श्याम । औरनको मन चोरि रहे हौ मेरो मन चोरे किहि काम ॥ वै डरपति तुमको धौं काहे मोको जानत वैसी वाम । मैं तुमको अबहीं बांधौंगी मोहिं बूझि जैहौ तब धाम ॥ मन लैहौ पहुनाई करिहौ राखौं अटकि घोस अरु याम। सूर श्याम यह कौन भलाई चोर रह्यो तहां तुम्हरो नाम ॥ ९ ॥

राग कल्याण ॥ ब्रजमें ढीठ भए तुम डोलत। अब तो श्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत ॥ मन दीजै मर्यादा जैहै रहत चतुरई कीन्हें। दुखकरि देहु कि सुखकरि दीजै अब तौ बनिहै दीन्हें ॥ ऐसे ढँग तुम करत कन्हाई जीति रहे ब्रजगाउँ। सूर आजु बहुतै दुख पाये मन कारण पछिताउँ ॥ १० ॥

राग गुण्डमलार ॥ सुनरी कुलकी कानि ललनसों मैं झगरो मांडौंगी । मेरे इनके कोउ बीच परौ जिनि अधर दशन खांडौंगी ॥ चतुर नाइकसों काम परचोहै कैसे है छांडौंगी। सूरदास प्रभु नंदनंदनको रसलै डांडौंगी ॥ ११ ॥

राग कान्हरो ॥ चोरीके फल तुमहिं दिखाऊं। कंचन खंभ डोर कंचनकी देखो तुमहिं बँधाऊं ॥ खंडौं एक अंग कछु तुमरो चोरी नाउँ मिटाऊं। जो चाहौ सोई सब लैहौं यह कहि डांड मँगाऊं ॥ बीच करन जो आवै कोऊ ताको सौंह दिवाऊं । सूरश्याम चोरनके राजा बहुरि कहां मैं पाऊं ॥ १२ ॥

राग गंधारी॥रहि री लाज नहिं काज आज हरि पाये पकरन चोरी। मूसि मूसि लै गए मन माखन जो मेरे धन हो री ॥ बांधौं कंचन खंभ कलेवर उभै भुजा दृढ़ डोरी। चांपौं कठिन कुलिश कुच अंतर सकै कौन धौं छोरी ॥ खंडौं अधर भूलि रस गोरस हरै न काहू कोरी। दंडौं काम दंड पर घरको नाउँ न लेइ बहोरी ॥ तब कुलकानि आनि भई तिरछी क्षमि अपराध किशोरी । शिर परपानि धराइ सूर डर सकुचि मोचि शिर डोरी ॥ १३ ॥

राग बिहागरो ॥ बीच कियो कुल लज्जा आई। सुनि नागरि बकसी यह मोको सन्मुख आए धाई ॥ चूकपरी हरितै मैं जानी मन लै गए चुराई । ठाढे रहे सकुचि तो आगे राख्यो वदन दुराई ॥ तुम हौ बड़े महरकी बेटी काहे गई भुलाई । सूरश्याम हैं चोर तुम्हरे छांड़ि देहु डरपाई ॥ १४ ॥

राग गौरी ॥ कुलकी लाज अकाज कियो। तुम बिन श्याम सोहात नहीं कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्त करि राखी मोको मैं आयसु शिर मानि लियो । देह गेह सुधि रहत बिसारे तुमते हितु नहिं और बियो ॥ अब मोको चरणनि तर राखो हंसि नँदनंदन अंग छियो। सूर श्याम श्रीमुखकी वाणी तुमपै प्यारी बसत जियो ॥१५॥

राग जतयश्री ॥ मात पिता अति त्रास दिखावत । भ्राता मारन मोहिं धिरावै देखे मोहिं न भावत ॥ जननी कहति बड़ेकी बेटी तोकों लाज न आवत । पिता कहै कैसी कुल उपजी मनही मन रिस पावत ॥ भैनी देखि देती मोहिं गारी काहे कुलहि लजावति । सूरदास प्रभुसों यह काहे कहि अपनी विपति जनावति ॥ १६ ॥

राग बिहागरो ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन । बिमुख जननकी संगतिको दुख कबधौं करिहौं मोचन ॥ भवन मोहिं भाठीसों लागत मरति सोचही सोचन । ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जिय दोचन ॥ धिग वै मातपिता धिग भ्राता देति रहत मोहिं खोचन । सूर श्याम मन तुमहिं लुभानो हरदि चून रँग रोचन ॥ १७ ॥

राग रामकली ॥ कुलकी कानि कहांलौं करिहौं । तुम आगे मैं कहौं न साँची अब काहू नाहिं डरिहौं ॥ लोग कुटुँब जगके जे कहियत पेला सबहि निदरिहौं । अब यह दुख सहि जात न मोपै बिमुख बचन सुनि मरिहौं ॥ आपु सुखी तो सब नीके हैं उनके सुख कहा सरिहौं । सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि अबकै हौं कछु लरिहौं ॥ १८ ॥

राग कान्हरो । प्राणनाथ हो मेरी सुरति क्यों न करौ । मैं जो दुख पावति हौं अपने तन मन मेरी सुरति करौ । दीनदयालु कृपा करो मोको काम द्वंद्व दुख बिरह हरौ ॥ तुम बहुवरानि खन मैं जानति याहीके धोखे मोसों काहेको लरौ । सूरदास स्वामी तुमहो अंतर्यामी मनसा वाचा ध्यान तुमसों धरौ ॥ १९ ॥

राग कान्हरो ॥ हौं या मायाही लागी तुम कत तोरत । मेरो ज्यो तिहारे चरननि ही लाग्यो धीरज क्यों रहै रावरे मुख मोरत । को लै बनाइ बातैं मिलवति तुम आगे सो किन आइ मोसों अब जोरत । सूर श्याम पिय मेरे तौ तुमहि जिय तुम बिनु देखे मेरो हियो कोरत ॥ २० ॥

राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम मेरी एक बात । हरि प्यारीके मुखतन चितवत मनही मनहु सिहात ॥ कहा कहति वृषभानुनंदिनी बूझत हैं मुसुकात । कनक बरन सुंदरी राधिका कटि कृश कोमल गात ॥ तुमही मेरे प्राण जिवन धन अहो चंद्र तुम भ्रात । सुनहु सूर जो कहति रही तुम कहौ न कहा लजात ॥ २१ ॥

राग गुंड ॥ नागरी श्यामसों कहत बानी । सुनहु गिरिधर नवल शीश श्रीखंडधर जयति सुर नागरस सहस बानी ॥ रुद्रपति क्षुद्रपति लोकपति वोकपति धरनिपति गगनपति अगम बानी ॥ अखिल ब्रह्मांडपति तिहुँभुवन अधिपति नीरपति पवनपति अगम बानी ॥ सिंहके शरन जंबुक त्रास करै अब कृष्ण राधा एक जग बतानी ॥ सूर प्रभु श्याम तुवनाम करुणाधाम करौ मन काम सुनि दीनबानी ॥ २२ ॥

राग गुंडमलार बिहँसि राधा कृष्ण अंक लीनी । अधरसों अधरजुरी नैनसों नैन मिलि हृदैसों हृदय लगि हरष कीन्ही ॥ कंठ भुज जोरि नारि उछंग लीन्हीं भवन दुखटारि सुख दियो भारी । हरषि बोले श्याम कुंजबन घन धाम तहां हमतुम संग मिलैं प्यारी ॥ जाहु गृह परमधन हमहु जैहैं सदन आइ कहुँपास मोहि सैन दैहौ । सूर यह भाव दै तुरतही गमन करि कुंजगृह सदन तुम जाइ रैहौ ॥ २३ ॥

राग गुंडमलार ॥ यह सुनत नागरी माथ नायो । श्याम रसवश्च भरे मदन जियमें डरे सुंदरी बातको भेद पायो । खरे ब्रजयमुनबिच दुहुँनि मन अति सकुच और कछु बनै

नहिं बनिठानी । तबहि ब्रजनारि आवत देखि यमुनाते एक ब्रजाहिते जु राधा लजानी ॥ श्याम हँसिकै चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हों । भाव यह करि गए सूरप्रभु गुन नए नागरी रसिक जिय जानि लीन्हों ॥ २४ ॥

राग टोडी ॥ राधा हरिके भावहि जान्यो । ईहै बात कैहौं इन आगे मनही मन अनुमान्यो ॥ उन देखी राधा मग ठाढी श्याम पठाए टारि । बूझतही कछु बुद्धि रचैगी बड़ी चतुर यह नारि ॥ इत वृषभानुसुता मन सोचति मोहि देखि हरिसंग । सूर अबहिं बातनि करि धरिहैं जानति इनके रंग ॥ २५ ॥

राग गुंडमलार ॥ चतुर वर नागरी बुद्धि ठानी । अबहिं मोहिं बूझिहैं इनहि कैहौं कहा श्याम सँग आजु मोहिं प्रगट जानी ॥ भावकरि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जियलई अति चतुर रासी । यह रचौं बुद्धि एक कहा ए कहैं मोहिं मेरे मन सबै घोषवासी ॥ उतहुँ की इतहुँकी सबै जुरि एकठी कहति राधा कहां जाति है री । सूरप्रभुको अबहिं देखे हम तेरे ढिग कहां गए तिनहिं पछिताति हैरी ॥ २६ ॥

राग गूजरी ॥ कान्ह कहा बूझत हैं तुमको । ह्वांहीते लखि लीन्हीं तबहीं कहा दुरावति हमको ॥ मन लैगए चुराइ तुम्हारो सो अपनो तुम पायो । अपनो काज सारि तुम लीन्हों हम देखतहि पठायो ॥ सदा चतुरई फबती नाहीं अतिही निझरि रहीहौ । सूर श्यामधौं कहां रहतहैं यह कहि कहियुतहीहौ ॥ २७ ॥

राग अलहिया ॥ कहति रही तब राधिका जब हरिसंग पेखो । बेसरि लीज्यो छीनिकै मुख तन कहा देखो ॥ देहो बेसरि की नहीं की लेहिं छड़ाइ । चतुराई प्रगटी अबै ऐसी हौ माइ ॥ बार बार नागरि हँसे तरुनि बेहानी । ऐसहि बेसरि लेहुगी सब भई अयानी ॥ हम मूरख तुम चतुरहौ कछु लाज न आवै । सूर श्याम सँग नहीं रही अब कहा दुरावै॥२८॥

राग सोरठ ॥ ईहे कहन मोको तुम आई । इतते ये उतते तुम सब मिलि काहे ऐसी धाई ॥ बेसरि एक लेहुगी को को पीतांबर न देखावहु । बेसरि अरु पीतांबर लै तब घर घर जाइ सुनावहु ॥ तारी एक बजत की दोऊ इतनोइ ज्ञान बिचारो । सुनहु सूर ए बेसरि लैहैं जानो ज्ञान तुम्हारो ॥ २९ ॥

राग जयतश्री ॥ सुनि राधा तोसों हम हारी । तेरे चरित नहीं कोइ जानैं वशकीन्हों गिरिधारी ॥ अबहीं कान्ह टारिकरि पठए धनि तेरी महतारी । अंग अंग रचि कपट चतुरई बिधिना आपु सँवारी ॥ अबहीं प्रगट दुहुँनि हम देख्यो जानतिदै मोगारी । सूर श्यामके यह बुधि नाहीं जितनीहै तौ घारी ॥ ३० ॥

राग कान्हरो ॥ श्याम भले अरु तुमहुँ भली हौ । बेसरि छीनातिहौ बेकाजहि जाहु न घरहि चली हो ॥ कैसे दौरिपरी मेरेपर मानहुँ संग मिली हो । और भई सब बनकी बेली आपुन कमल कली हो ॥ तब कहती गहि बाँह दुहुँनकी जो तुम चतुर अली हो । सूरदास राधा गुण आगरि नागरि नारिछलीहो ॥ ३१ ॥

अहलिया राग बिलावल॥अब हमसों सांची कहो वृषभानुदुलारी । कछु तो तोसों कहत हैं ठाढे गिरिधारी॥हाहा हमसों सोइ कहो देहौ जिनि गारी । हमको देखतही गए उत ग्वाल हँकारी॥भेदकरै जो लाडिली तोहि सौंह हमारी । तू ठाढी काहे रही मग मेरी प्यारी॥सहज होइ तू कहि अबै उरते रिस टारी । सूर श्यामकी भावती कहै कहौं कहा री ॥ ३२ ॥

राग सूहो ॥ मैं यमुना तट जात सही री । ब्रजते आवत देखि सखिनको इन कारण ह्यां परखि रही री ॥ उतते आइगए हरि तिरछे मैं तुमही तन चितै रहीरी । बूझन लगे कान्ह ग्वालनको तुम तो देखे उनहि नहीं री ॥ कछु इनसों बोली नाहिं सन्मुख नाहि तहां कछु बैन कहीरी । सूर श्याम गए ग्वालनि टेरत ना जानौं तुम कहागही री ॥ ३३ ॥

राग टोडी ॥ तुम मेरी बेसरिको धाई । सकुचि गई सुनि सुनि यह बानी तरुनिन राधा भले लजाई ॥ यह तौ बात लगति कछु साँची हमपर न्याइ रिसाई । टेरत कान्ह गए ग्वालनको श्रवन परी ध्वनि आई ॥ बेसरि नाउं लेत सरमानी तब राधा झहरानी । सूरदास ब्रजनारि मनहि मन यह सुनि सुनि पछितानी ॥ ३४ ॥

राग गूजरी ॥ राधा तू अतिही है भोरी । झूठेहि लोग उठावत घर घर हम जान्यो अति तोरी ॥ कंठ लगाइ लई रिस छांडौ चूक परी हम वोंगी । तुम निर्मल गंगाजलहूते दुरत नहीं वह चोरी ॥ घर जैहौ की यमुना जैहौ हम आवैं सँग गोरी । सूरदास प्रभु प्यारी भुरी राधा चतुर दिननकी थोरी ॥ ३५ ॥

राग आसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसी हौ । अबलौं तुम कुलटी करि जानति मोको री सब तैसीहो ॥ अपने मन जैसी तैसेइ सब मोहु जनावत तैसी हो । जोरी भली बनैगी हरिसों छांह निहारो कैसी हो ॥ अब लागी मोको दुलरावन प्रेम करति टरि वैसी हौ । सुनहु सूर तुमरे छिन छिन मति बडी प्रेम की गैसी हौ ॥ ३६ ॥

राग टोडी ॥ हँसति नारि सब घरहि चली । हम जानी राधा है खोटी हम खोटी राधिका भली ॥ इतते युवति जाति यमुना जे तिनको मगमें परखि रही । श्याम कहूँते आइ कढे ह्या चले गए उत हेरतही ॥ इतनी तबहि नहीं यह जानी झूँठेही सब आनि गही । सूर श्याम अपने रँग आये हम वाको नहिं भली कही ॥ ३७ ॥

राग बिलावल ॥ राधा श्याम सनेहिनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तन बसे हरि राधा देही ॥ राधा हरिके नैनमें हरि राधा नैननि । कुंज भवन रति युद्धके जोरति बल मैननि ॥ और न काहूको रुचै घरघर गए दोऊ । मात पिता सति भाइसों यह जानै न कोऊ ॥ कैसे हूं करि करि दिन गयो निशि कटत न क्योंहूं । दोउ रस विरह मगन भए निशि भई अगोंहूं ॥ विरह सरोवर बूडई अंधकार सिवार । सुधि अवलंबन टेकही कहुँ वार न पार ॥ तमचुर टेरि पुकारई बूडे जिनि कोई ॥ सूर प्रात नवका मिल्यो आनन्द मन दोई ॥ ३८ ॥

राग धनाश्री ॥ मन मृग बेध्यो मोहन नैन बानसों । गूढ बावकी सैन अचानक तकि ताक्यो भ्रुकुटी कमानसों ॥ प्रथम नादबल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधानसों । पाछे बंक चितै मधुरै हँसि घात किये उलटे सुठानसों ॥ सूर सुमार बिथा या तनुकी घटतनहीं औषधी आनसों । ह्वैहै सुख तबहीं उर अंतर आलिंगन गिरिधर सुजानसों ॥ ३९ ॥

राग बिलावल ॥ कान्ह उठे अति प्रातही तलवेली लागी । प्रिया प्रेमके रस भरे रति अंतर खागी ॥ श्याम उठत अवलोकिकै जननी तब जागी ॥ सुन्दर वदन विलोकिकै

अंग अंग अनुरागी ॥ माता पूँछति सुअनको बलि गई मेरे बारे । कहा आजु आचरज कियो तुम उठे सवारे ॥ झारी जल दँतवन दियो छवि परत न वारचो ॥ उत्तम जलकै प्रेमसों सुत वदन पखारचो ॥ करी मुखारी अतुरई नागरि रसछाके । सूर श्याम ऐसी दशा त्रिभुवन वश जाके ॥ ४० ॥

राग बिलावल ॥ उत वृषभानु सुता उठी वह भाव विचारे । रैनि बिहानी कठिनसों मन्मथ बल भारे ॥ ग्रीव मुतसरी तोरिकै अचरासों बांध्यो । इहै बहानो करिलियो हरि मन अनुराध्यो ॥ जननी उठी अकुलाइके क्यों राधा जागी । कहां चली उठि भोरही सोवै न सभागी ॥ अब जननी सोऊं नहीं रवि किरनि प्रकाशी । तूहु उठे काहे नहीं जागे ब्रजवासी ॥ आपु उठी आँगन गई फिरि घरही आई । कबधौं मिलि हैं श्यामको पल रह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलबेली लागी ॥ सूर श्यामके रसभरी राधा अनुरागी ॥ ४१ ॥

राग गुंडमलार ॥ सुतासों कहति वृषभानु घरनी । कहा तू राधिका भोरते फिरति है तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी ॥ तोरि मोतिसरी तब गुप्त करि धरचो कहुँ एहि मिसि सकुचि रही मुख न बोलै । मनहु खंजन चपल चन्द फंदा परचो उडत नाहिं बनत उतहि डोलै ॥ कहा तेरी प्रकृति परी धौं लाडिली अबहिते कहां तू जाहिगी री । सूर कहे जननि बोले नहीं आज तू परुसि धरिहौं खाइगी री ॥ ४२ ॥

राग नट ॥ जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै । देखों नहीं मुतसरी माला सो जिनि कतहूं डारै ॥ बोलै नहीं बात यह सुनि रही मनलागी मुसकान । अबही मोको खीझि पठै है बनि है काको जान ॥ भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्ण प्रीति है साँची । सूरदास राधिका नागरी नागरके रँगराँची ॥ ४३ ॥

राग सोरठ ॥ जननी अतिहि भई रिसहाई । बार बार कहै कुँवरि राधिका मोतिसरी कहां गमाई ॥ बूझेते तोहि ज्वाब न आवै कहा रही अरगाई । चौसर हार अमोल गरेको देहु न मेरी माई ॥ कालिहिते रीतो गर तेरो डारि कहूँ तू आई । सुनहु सूर माता रिस देखत राधा हँसति डेराई ॥ ४४ ॥

राग बिलावल ॥ सुन रीमैयाकालही मोतिसरी गँवाई । सखिन मिले यमुना गई धौं उनहि चुराई ॥ कीधौं जलहीमें गई यह सुधिनाहिं मेरे । तबते मैं पछितातिहौं कहति न डर तेरे ॥ पलक नहीं निशि कहुँ लगी मोहिशपथ रीतेरी । येहि डरते मैं आजुही अति उठी सबेरी ॥ महरि सुनत चकृत भई मुख ज्वाब न आवै । सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै ॥ ४५ ॥

राग गुंडमलार ॥ क्रोध करि सुतासों कहति माता । तोहिं बरजत मैं री अचगरी गिस परी गर्व गंजन नाम है विधाता ॥ तेरो दोष नहीं भ्रमती तू जहीं तहीं नदी डोंगर बन वन पात पाता । मात पिता लोककी कानि मानै नहीं निलजभई रहति नहीं लाज गाता ॥ भली नहिं उन करी शीशतोको धरी जगतमें सुता तू महरताता । बात सुनि है श्रवण भई बिनही भवन सूर डारै मारि आजु भ्राता ॥ ४६ ॥

राग धनाश्री ॥ जाहु तहीं मोतिसरी गमाई । तबहींतौ घर पैठन पैहौ अब ऐसे ढंग आई ॥ जो बरजों आपुन सोई फरै देखो री गुन माई ॥ एकएक नग सतसत दामनिके लाख टका दै ल्याई ॥ जाके हाथ परचो सो देहै घर बैठे निधि पाई । सूरसुनत री कुँवरि राधिका तोको नहीं भलाई ॥ ४७ ॥

राग टोडी ॥ भरि भरि नैन लेतिहै माता । मुखते कछु आवै नहिं बाता ॥ गीतौ ग्रीव निहारत जबही । हियो उमँगि आवतहै तबही ॥ मोतिसरीते मुख परम विराजै । मानों शशि पारसबिच भ्राजै ॥ मोतिसरी माला कहां गँवाई । जीव बिना करिहै वह भाई ॥ जाधौं देखि कहूंधौ पावै । सूर जोरिकर विधिहि मनावै ॥ ४८ ॥

राग गुन्डमलार ॥ कहा वह मोतिसरी जो गँवाई री । बाबासों और लेहौं मँगाई री ॥ वै कहा करैंगी सैंति राखैरी । तादिना तूहीधौं कितिक भाषै री ॥ नैन भरिलेति कह और नाहीं री ॥ छोर मोतिसरीको मोहिं रिसाही री ॥ संदूकन भरिधरे ते न खोलै री । कहा मोसों खीझ २ बोलै री ॥ सुता वृषभानुकी हरषमनहीरी । सूर प्रभु सैन दै बोले वनही री ॥ ४९ ॥

राग गौरी ॥ सुनि राधा अब तोहि न पत्यैहौं । और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं ॥ लाख टकाकी हानि करी तैं सो अब तोसों लैहौं । हार विना ल्याये लरिहौं री घर नहिं पैठन देहौं ॥ जब देखों ग्रीवहै मोतिसरी तबहीं तो सचुपैहौं । नातर सूर जनम-भरि तेरो नाउँ नहीं मुख लैहौं ॥ ५० ॥

राग कल्याण ॥ सुनि री राधा अतिलडबौरी यमुन गई जब संग को नहीं । बूझति नहीं जाइ अपनिनको न्हातरही जब जोन जोन हीं ॥ काको नाउँ धरौं तो आगे ललिता चंद्रावली नहीं नहीं । बहुत रहीं सँग सखी सहेली कहौं कहा मैं सैन सैनहीं ॥ देखौं जाइ यमुनतटहीमें जहां धरिकै मैं न्हात रही ही । सूर जाइ बूझौं धौं वाको ब्रजयुवती एक देखि रही ही ॥ ५१ ॥

राग कल्याण ॥ जैहै कहां मोतिसरी मेरी । अब सुधि भई लई वाहीने हँसत चली वृषभानुकिशोरी ॥ अबही मैं लीन्हे आवतिहौं मेरे संग आवै जिनि को री । देखोधौं कह करिहौं वाको बड़े लोग सीखतहैं चोरी ॥ मोको आजु अबेर लागिहै ढूँढूँगी ब्रज घर घर खोरी । सूर चली निधरकह्वै सबसों चतुर राधिका बातन भोरी ॥ ५२ ॥

नंदसुअन बारबार रवनीपथ जोहै री । लोचन हरि करि चकोर राधामुख चंद्र ओर देखत नहिं तिमिर भार मनही मन मोहै री ॥ नैना दोउ भृंगरूप वदन कमल शरदरूप तरनिको प्रकाश मिलन विनाचपल डोलै री । लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भए भौंर भौंहैं धनुष शर कटाक्ष सुरति व्याध तौलै री ॥ कीधौं एक बच्छ प्यारी मुख रूप सार श्याम देखि रीझे मन इहै सांच मानी । सूरश्याम सुखदधाम राधाहैजाहिनामआतुर-पियाजानिगवनप्यारी अतुरानी ॥ ५३ ॥

राग देवगन्धार ॥ श्याम अतिराधाविरहभरे । कबहूँ सदन कबहुं आंगनही कबहूँ पौरि खरे ॥ जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरि जात । कहा अबेर करति तू अब री

भूख लगी अतिमात ॥ मैं बलिजाउँ श्यामघन सुंदर अब बैठौ तुम आई । सूर सखा सँग सबै बोलावहु हलधर नहीं बताई ॥ ९४ ॥

राग बिलावल ॥ महरि कह्यो नँदलाडिले सँग सखा बोलावहु । करैं कलेऊ आइकै हलधरहुबोलावहु ॥ हलधर लयोबोलाइकै मोहन करि आदर । दाऊजी चलि जेंइये यह कहि मनसादर ॥ कान्ह जाइ तुम जेवहू मोको रुचि नाहीं । सखा संग हरिलैगए बैठे एकठाहीं ॥ षटरस व्यंजन को गनै बहुभांति रसोई । सरस कनिक बेसन मिलै रुचि रोटी पोई ॥ प्रेमसहित परुसन लगी हलधरकी माता । ग्वाल सखा सब जोरिके बैठे नँदताता ॥ सखासबै जेंवन लगे हरि आयसु दीन्हों । सूरदास प्रभु आपुहूकर जोरहि लीन्हों ॥ ९५ ॥

राग आसावरी ॥ नंदमहर घरके पिछावारे राधा आइ बतानीहो । मनौ आँबदल मोर देखिकै कुहकि कोकिला बानीहो ॥ झूठेहिनामलेत ललिताको काहे जाहु परानी हो । वृंदावन मग जाति अकेली शिरलिये दही मथानीहो ॥ मैं बैठी परखति ह्यौं रैहों श्याम तबहिते जानीहो । कोककला गुणआगरिनागरि सूरचतुई ठानीहो ॥ ९६ ॥

राग रामकली ॥ श्यामसखाजेंवतहीछाँडे । करको कौरडारि पनवारे नागर आपु चले अति चाँडे ॥ चकृतभई देखत जननीदोउ चकृतभए सबग्वाल । अति आतुर तुम चले कहांहो हमहि कहो गोपाल ॥ अबही एक सखा यहँ कहिगयो गाइ रही बन व्याइ । सुनहु सूर मैं जेंवत बैठो वह सुधि गई भुलाइ ॥ ९७ ॥

राग ललित ॥ धौरी मेरी गाइ बियानी । सखन कह्यो तुम जेंवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी ॥ गाइ नहीं ह्वां बछरा नाहीं वहँ है राधारानी । सखा हँसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुणनि निधानी ॥ जननी भेद नहीं कछु जानै बार बार अकुलानी । सूर श्याम भूखो उठि धायो मरै न गाइ बियानी ॥ ९८ ॥

राग कल्याण ॥ सैनदै नारि गई वन धामको । तबहिं करकौर दियो डारि नाहिं राहिसकै ग्वाल जेंवत तजे मोहि गई श्यामको ॥ चले अकुलाइ बनधाइ व्यानी गाय देखिहों जाइमनहरष कीन्हों । प्रिया निरखति पंथ मिलैं कबहरिकंतगे यहि अंतर हँसि अंक लीन्हों ॥ अतिहि सुखपाइ अतुराइ मिले धाइ दोउ मनो अति रंक नव निधिपाई । सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अनि नवल नवल नंदलालके मनहि भाई ॥ ९९ ॥

राग धनाश्री ॥ पिछवारे ह्वै बोलि सुनायो । कमलनयन हरि करत कलेऊ करनाहिन आतन लायो ॥ गाइ एक वन व्याइ रहीहै येहि मिस आतुर उठिधायो । बेनु न कियो लकुट नहिं लीन्हों हरबराइ कोउ सखन बोलायो ॥ चौंकि परे चकृत ह्वै जित कित सत्य आहिकी सपन भयो ज्ञायो । फूले फिरत शंकना मानहु सुधा किरनि छबि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत लतातर कियो सबै जितनोमनभायो । सूरदास सुन्दरी सयानी उलटि अंक गिरिधर पर नायो ॥ ६० ॥

राग देवगंधार ॥ दोऊ राजत रति रणधीर । महासुभट प्रगटे भूतल वृषभानु सुता बलबीर ॥ भौहैं धनुष चढाइ परस्पर सजें कवच तनुचीर । गुण संधान निमेष घटत नहिं छुटे कटाक्षनितीर ॥ नखनेजा आकृत उरलागे नेक न मानत पीर । मुरली धरनि डारि आयुधलै गहे सुभुज भटभीर ॥ प्रेम समुद्र छांडि मर्यादा उमँगि मिले

तजि तीर। करत विहार दुहूँ दिशते मानो सींचत सुधा शरीर ॥ अति बल जोबन धाइ रुचिर रचि वदन मिली श्रमनीर। सूरदास स्वामी अरु प्यारी विहरत कुंज कुटीर ॥ ६१ ॥

राग कान्हरो ॥ नवल निकुंज नवल नवला मिलि नवलनिकेतनि रुचिर बनाये। विलसतविपिनविलास विविधवर वारिजवदन विकच सचुपाये। लागत चंद्रमयूष सुतौ तनु लताभवन रंध्रनि मग आये ॥ मनहुँ मदनवल्ली पर हिमकर सींचत सुधाधार सत नाये ॥ सुनि सुनि सूचति श्रवन सुंदरी मौन किये मोदति मनलाये। सूरसखी राधा माधौ मिलि क्रीडतहैं रतिपतिहि लजाये ॥ ६२ ॥

राग कल्याण ॥ हरषि पिय प्रेम तिय अंक लीन्हीं। पियै विनवसनकरि उलटिधरि भुजन भरि सुरति रति पूर प्रति निवलकीन्हीं ॥ आपने कर नखनि अलक कुरवारही कबहुँ बाँधे अतिहि लगतलोभा। कबहुँ मुख मोरि चुंबन देत हरष ह्वै अधर भरि दशन वह उनहि शोभा ॥ बहुरि उपज्यो काम राधिकापति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सँभारैं। सूर प्रभु नवल नवला नवलकुंजगृह अन्त नहिं लहत दोउ रति विहारैं ॥ ६३ ॥

राग नट ॥ नागर श्याम नागरी नारि। सुरतिरतिरणजीत दोऊ अंगमन्मथधारि ॥ श्याम तनु घन नील मानो तडित तन सुकुमारि। मनो मर्कत कनक संयुत खच्यो काम सँवारि ॥ कोक गुण करि कुशल श्यामा उत कुशलनन्दलाल। सूर श्याम अनंगनायक विवश कीन्हों बाल ॥ ६४ ॥

राग मलार ॥ उलहरि आयो शीतल बूँद पवन पुरवाई। बाढे द्रुम सघन बन दोउहो चहुँ और घटा छाई ॥ अनमने भए कन्हाई भीजत देखि राधिका माधव कारी कामरि ओढाई ॥ अति दरेरकी झरेर टपकत सब अँबराई ॥ कांपत तनु त्रियाके पिय हँसिकै ग्रीवा लगाई। भए एक ठौर सूर श्याम श्यामा भरि कोर अरस परस रीझत उपरै नाहीं मैं समाई ॥ ६५ ॥

राग मलार ॥ दीजै कान्ह काँधेहूको कंवर। नान्ही नान्ही बूँदन बरषन लागौ भीजत कुसुंभी अंबर ॥ बार बार अकुलाइ राधिका देखि मेघ आडंबर। हँसि हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढि सुभग पीताम्बर ॥ शिवसनकादिन नारद शारद अंत न पावैं तुम्बर। सूर श्याम गति लखि न परत कछु खात ग्वालन तजि संबर ॥ ६६ ॥

राग गौरी ॥ सुरति अंत बैठे बनवारी। प्यारी नैन जुरत नहिं सन्मुख सकुचि हँसत गिरिधारी ॥ बसन सँभारि तन लेत गये दोऊ आनँद उर न समाइ। चितवन दुरि दुरि नैन लजौंही सो छवि बरनि न जाइ ॥ नागरि अंग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अंग। सूरज प्रभु प्यारी बश कीन्ही हाव भाव रति रंग ॥ ६७ ॥

राग सोरठ ॥ रीझे श्याम नागरी छवि पर। प्यारी एक अंग पर अटकी यह गति भई परस्पर ॥ देह दशाकी सुधि नाहिं काहू नैन नैन मिलि अटके। इन्दी वर राजीव कमल पर युग खंजन जनु लटके ॥ चकृत भए तनुकी सुधि आई बनहीमें भई राति। सूर श्याम श्यामा विहार करि सो छविकी एक भांति ॥ ६८ ॥

राग आसावरी ॥ कान्ह कह्यो बन रैनि न कीजै सुनहु राधिका प्यारी हो। अति हितसों उरलाइ कह्यो अब भवन आपने जारी हो ॥ मात पिता जिय जान न कोई गुप्त प्रीति रस भारी हो। करते कौर डारि मैं आयो देखत दोउ महतारी हो ॥ तुम जो प्यारी मोही लागत चन्द्र चकोर कहारी हो। सूरदास स्वामी इन बातन नागरि रिझई भारी हो ॥६९॥

राग कल्याण ॥ प्यारी उठि पियके उर लागी। आलस अंग लटकि लट आई देखि श्याम बड़भागी ॥ सुरति मौन निशि बीती मानों हँसनि प्रात भयो जागी। अति सुख कंठ लगाइ लई हरि अरस परस अनुरागी ॥ नवतनमें घनबेली दामिनि सहज मेंटि मिलि पागी। सूरदास प्रभुको अंकम भरि कामद्वंद्व तनु त्यागी ॥ ७० ॥

राग गौरी ॥ कहा करौं पग चलत न घरको। नैन विमुख जिन देखे जात न लुब्धे अरुन अधरको ॥ श्रवण कहत वे वचन सुनैं नहिं रिस पावत मो परको। मन अटक्यो रस मधुर हँसनि पर डरत न काहू डरको ॥ इंद्री अंग अंग अरुझानी श्याम रंग नट वरको। सुनहु सूर प्रभु रही अकेली कहा करौं सुंदर वरको ॥ ७१ ॥

श्याम अपनी चितवनिबरजो अरु मुखकी मुसकानि। तुम्हरे तनक सहजके कारन सहियत सरवस हानि ॥ इजै बिजै दोऊ आपुसमें निरये बिधना आनि। विद्यमान सबही इन देखत बशकरबेकी बानि ॥ आपुनही डहकाय अपुनपो कहियत कहा बखानि। सूर सुगंध गँवाइ गांठिको रही बोरईमानि ॥ ७२ ॥

राग बिहागरो ॥ अतिहित श्याम बोले बैन। तुम बदन देखे बिना ये तृप्तहोत न नैन ॥ पलक नहिं चितते टरति तुम प्राणवल्लभ नारि। सुनति श्रवननि बचन अमृत हरष अंतर भारि ॥ मात पित अवसेर करिहैं गवन कीजै गेह। सूर प्रभु प्रिय त्रिया आगे प्रगटिपूरन नेह ॥ ७३ ॥

श्याम प्रगट कीन्हों अनुराग। अति आनंद मनहि मन नागरि बदति आपने भाग ॥ सुंदर घन उत ब्रजहि सिधारे इतहि गमन करि नारि। दंपति नैन रहे दोउ भरि भरि गये सुरति रति सारि ॥ जननी मन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहि काल। सूर श्यामको मात अंकभरि कहति जाउँ बलिलाल ॥ ७४ ॥

मैं बलि जाऊं कन्हैयाकी। करते कौन डारि उठिधायो ब्यात सुनी बनगैयाकी ॥ धौरी गाइ आपनी जानी उपजति प्रीति लवैयाकी। तातो जल समोइ पग धोवति श्याम देखि हित मैयाकी ॥ जो अनुराग यशोदाकेउर मुखकी कहति नन्हैयाकी। यह मुख सूर और कहुँ नाहीं सौंह करत बलभैयाकी ॥ ७५ ॥

राग ईमन ॥ कान्ह प्यारे वारने जाऊं श्याम सुंदर मूरति पर। छबिसों छबीली लटकि वदनपर ॥ चंद्रिकाकी लटकनि अतिहि बिराजत मुरली सुभग धरेकर। सुंदर नैन बिशाल भौंह सुरचाप मनो तिलकबिराजित ललित भालपर। सूर श्याम मेरो अति बानक बन्यो बनमाला अतिही उर राजत कटि तट सोहत पीतांबर ॥ ७६ ॥

राग बिहागरो ॥ वह तो मेरी गाह न होई। सुन मैया मैं वृथा भरम्यो बन जो देखों नैनन भरिजोई ॥ वृंदावन ढूँढ्यो यमुनातट देख्यो बन डोगरी मंझारी। सखा संग कोउ नहीं अकेलो कांधे कामरि कर लकुटधारी ॥ वहतौ धेनु और काहूकी युवती एक मिली धौं कौन। सूर संग मेरे वह आई मोको उहि पहुँचायो मौन ॥ ७७ ॥

राग रामकली ॥ राधा अतिहि चतुर प्रवीन । कृष्णको सुख दे चली हँसि हंसगति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणिके काज । भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीब्रजराज ॥ गाँठि आँचर छोरि कै मोतसरी लीन्ही हाथ । सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ ॥ युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एकयाम । सूर व्यौरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम ॥ ७८ ॥

राग कान्हरो ॥ ऐसी री निधरक तू राधा । ब्रज घरघर बनबन डोली तू नहीं कियो कहुँ बाधा ॥ मोको संग बोलि तू लेती करनीकरी अगाधा । प्रातहिते तू अब आवतिहै रैनि याम लगि आधा ॥ पायो हार किधौं पुनि नाहीं देखौं री मोहिं साधा । आंचर हेरिग्रीव देखरायो दामन मोल उपाधा ॥ मनमन कहति बात यह मिलवति गई श्याम अवराधा । सूर सखी लखि लीनी ताको यह तौहै कछु दुविदाधा ॥ ७९ ॥

राग धनाश्री ॥ कहि राधा किनहार चोरायो । ब्रजयुवतिनि सबहिन मैं जानति घरघर लैलै नाम बतायो ॥ श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा समदा नारी । सुखमा शीला अवधा नंदा वृंदा यमुना सारी ॥ कमला तारा विमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारी । अमला अबला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारी ॥ सुमना बहुला चंपा जुहिला ज्ञाना भाना भाऊ । प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाऊ ॥ दर्वा रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूपा । रत्ना कुमुदा मोहा करुना ललना लोभानूपा ॥ इतनिनमें कहि कौने लीन्हो ताको नाउं बताउ । सूर श्याम हैं चोर तिहारे मैं जानति सब दाउ ॥ ८० ॥

शंकराभरन ॥ सुरति रति मानि आइ पियपै तैं गजगति गामिनी । मरगज हार बिथुरे बार देखियत आइगई एक याम यामिनी ॥ और शोभा सोहाइ अंगअंग अरसाइ बोलतिहै कहा अलसामिनी । सूरदास छवि निरखति रही रसवश हैरी धनि धनि तू भामिनी ॥ ८१ ॥

राग कान्हरो ॥ उरझारी लटैंछूटी आननपरभीजी फुलेलनसों आली हरिसंग केलि । सोधे अरगजी अरु मरगजी सारी केसरि खोरि बिराजित कहुँकहुँ कुचनि पर दरकी अँगिया घन बेलि ॥ आलस हैं भरे नैनबैन अटपटात जात ऐंडात जम्हात गात अंगमोरि बहियां झेलि । सूरज प्रभुप्यारी प्यारे संग करि रसबिलास अरसपरस दोउ अंकौ मेलि ॥ ८२ ॥

राग ललित ॥ आइ तू डगमगात ऐंडात जँभावति रगमगी रंग मगी रंग भरिके । चंद उदै मुख देखतहौं कर दर्पन प्रतिबिंब निहारि धौं पीक लीक नैननि छबि परके ॥ बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर अति आनंद उर हरिके । सुखकेलि करिकै सूरज प्रभु रसिकराइ रसवश कीन्ही बनाइ नवला नवल रीझे मन ढरिकै ॥ ८३ ॥

राग बिलावल ॥ सुनि री राधा अबहिं नई । बातैं कहा बनावति मोसों हमहूंते तुम चतुर भई ॥ कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहां तहां तू आजु गई । मनहीं जानिलेह मैं जान्यो जाके रंग तू सदा रई ॥ तेरे गुण परगट करिहौं मैं ऐसी रीति कहूँ न भई । सूर श्याम जबते सँग कीन्हों तबहीते मैं जानि लई ॥ ८४ ॥

राग बिलावल ॥ इन बातन कछु पावति री । बिनदेखे लोगनसों सुनि सुनि काहे बैर बढावति री ॥ मोको जहां अकेली देखति तबहीये उपजावति री । ब्रजयुवतिनकी संगति त्यागो पुनिपुनि क्रोध करावति री ॥ कैसी बुद्धि तुम्हारी सबकी ऐसिहि तुमको भावति री । सूर शीश तृण दै बूझति हौं सांचकहतकी बनावति री ॥ ८५ ॥

राग गुंडमलार ॥ करति अवसेर बृषभानुनारी । प्रातते गई वासर गयो बीति एक यामनिशिगईधौं कहांवारी ॥ हारके त्रास मैं कुँवरि त्रासी बहुत तिहि डरन अजहुँ नहिं सदन आई । कहाँ मैं जाउँ कहाँ धौं रही रूसिकै सखिनसों कहति कहीं मिली माई ॥ हार बहिजाइ अति गई अकुलाइकै सुताके नाउँ इक उहै मेरे । सूर यह बात जो सुनै अबहीं महर कहैंगे मोहिं ये ढंग तेरे ॥ ८६ ॥

राग सोरठ ॥ राधा उर डरात गृह आई । देखतही कीरति महतारी । हरषि कुँवरि उर लाई ॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि गयो तनु सोच । मेरीको मैं काहे त्रासी कहा कियो यह पोच ॥ लै री मैया हार मोतसरी जाकारण मोहिं त्रासी । सूर राधिकाके गुण ऐसे मिलि आई अविनाशी ॥ ८७ ॥

राग बिहागरो ॥ परमचतुर बृषभानुदुलारी । यह मति रची कृष्ण मिलिबेको परमपुनीत महा री । उत सुख दियो नंदनंदको इतहि हरष महतारी । हार इतो उपकार करायो कबहुँ न उरते टारी ॥ जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश कियो मुरारी । सूरदास प्रभु कृपा अगोचर निगमनहूँ ते न्यारी ॥ ८८ ॥

राग भैरवी ॥ श्याम भए वश नागरिके । नैन कटाक्ष बंक अवलोकनि रीझे घोष उजागरिके॥चित मधुर कर रस कमल कोशको प्यारी वदन सुधागरिके । लोकलाज संपुट नहिं छूटत फिरि फिरि आवत वागरिके ॥ मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहौं अनुरागरिको । सूर श्याम वशवाम भए हैं धनि ऐसी बडभागरिको ॥ ८९ ॥

राग आसावरी ॥ श्याम भए बृषभानुसुतावश और नहीं कछुभावै हो । जो प्रभु तिंहू भुवनको नायक सुरमुनि अंत न पावै हो ॥ जाको शिव ध्यावत निशि वासर सहसानन जेहि गावै हो । सो हरि राधावदन चंदको नैनचकोर त्रसावै हो ॥ जाको देखिअनंग अनागतनगारि छवि भरमावैहो । सूरश्याम श्यामावश ऐसे ज्यों सँग छांहडुलावै हो ॥९०॥

राग जैतश्री ॥ कबहूँ श्यामयमुनतट जात ॥ कबहूं कदम चढत मग देखतमन राधा बिन अति अकुलात । कबहुं जात वन कुंजधामको देखि रहत कछु नहीं सुहात । तब आवत बृषभानुपुराको अति अनुराग भरे नँदतात ॥ प्यारी हृदय प्रगटही जानति तब मन मांझ सिहात । सूरदास प्रभु नागरिके उर नागर श्यामल गात ॥ ९१ ॥

राग गूजरी ॥ राधा श्याम श्यामराधा रँग । पियाप्यारीको हृदयेगखतप्यारी रहति सदाहरिके सँग ॥ नागरि नैन चकोर वदन शशि पिय मधुकर अंबुज सुंदरि मुख । चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागरि नागरि नागरसुख ॥ सुख दुख सोचि रहत मनही मन तब जानत तनको यह कारन । सुनहुँ सूर कुलकानिजीय दुख दोऊ फलदोउ करत बिचारन ॥ ९२

राग सूही बिलावल ॥ यमुना चली राधिका गोरी । युवति वृंद बिच चतुरनागरी देखे नंदसुअन तेहि खोरी ॥ व्याकुल दशा जानि मोहनकी मनही मन डरपी उन ओरी । चतुर काम फंग परे कन्हाई अब धौं इनहि बुझावै को री ॥ इतसखियनसों बात बनावति अति ह्वै गई तनकसी भोरी। सूर उतहि हरि भाव बतावत धीर धरौ मिलिहै दोउ जोरी॥९३॥

राग जयतश्री ॥ तब राधा इक भाव बतावति । मुखमुसकाइ सकुचि पुनि लीन्हो सहज चली अलकै निरुवारति ॥ एक सखी आवत जल लीन्हें तासों कहति सुनावति । टेरि कह्यो घर मेरे जैंहो मैं यमुनाते आवति ॥ तब सुखपाइ चले हरि घरको हरि प्यारीहि मनावत । सूरज प्रभु बितपन्न कोकगुन ताते हरि हरि ध्यावत ॥ ९४ ॥

राग धनाश्री ॥ श्यामको भाव दै गई राधा । नारि नागरिन काहू लख्यो कोउ नहीं कान्ह कछु करतहै बहु अनुराधा ॥ चितै हरिवदन याको हँसत मैं लखी वेउ ताहिं गए कछु हरष किये । भावतौ भावके सँग नाहीं सने ये महाचतुर चतुराईलिये ॥ आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे रहे कहि परसपर मनहि जानी । सूर ब्रजनागरी नारि नागरिन सँग फिरीब्रज तुरत लै यमुनपानी ॥ ९५ ॥

राग टोडी ॥ भाव दियो आवैंगे श्याम । अंग अंग आभूषन साजति राजति अपने धाम ॥ रतिरण जानि अनंग नृपतिसों आप नृपति राजति बलजोरति । अति सुगंध मर्दन अँग अँग ठनि बनिबनि भूषन भेषति ॥ बीराहार चीरचोलीछबिसैना सजि शृंगार । पान वचन सन्नाह कवच दै जोरो सूर अपार ॥ ९६ ॥

राग कान्हरो ॥ प्यारी अंग शृंगारकियो । बेनीरची सुभग कर अपने टीका भाल दियो ॥ मोतियन मांग सँवारि प्रथमही केसरि आड सँवारि । लोचन आँजि श्रवण तरवन छबिको कबि कहै निवारि ॥ नासा नथ अतिही छबि राजत बीरा अधरनि रंग । नवसत साजि चीर चोली बनि सूर मिलनि हरि संग ॥ ९७ ॥

राग कल्याण ॥ नागरि नागरपंथनिहारै । उदै बाल शशि अस्तभयो अब जिय जिय इहै बिचारै ॥ कीधौं अबहीं आवत ह्वै हैं की आवन नाहिं पैहैं । मात पिताकी त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरै हैं ॥ अंग शृंगार श्यामसहित कीन्हें वृथा होन ये चाहत । सूर श्याम आवैं की नाहीं मन मन इह अवगाहत ॥ ९८ ॥

राग कान्हरो ॥ श्यामा निशिमें सरस बनी री । मृगरिपु लंक तासु रिपु गज ता ऊपर मधु केलि ठनी री । कीर कपोत मधुप पिक तुंबर रिपु सुत रेख बनी री । उडुपति बिंब धरे अति शोभा सुख बाला जोरि चिनी री ॥ कनक खंभ रचि नवसत साजे जलधर भख जब श्रवन सुनी री । करगहि सत्र सात परिसारँग दंपतिहीकी सुरति ठनी री ॥ उमापतिहि रिपुको ललचानी वनरिपु तनमें अधिक जरी री । सूरदास प्रभु मिलो राधिका तन मन शीतल रोमभरी री ॥

राग बिहागरो ॥ राधा रचिरचि सेज सँवारति । तापर सुमन सुगंध बिछावति बारंबार निहारति ॥ भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरष दुखहि निरुवारति । आवैं कबहुँ अचानकही

जो सुभग पावँडे डारति ॥ यह अभिलाषहिमें हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी। वह सुख श्रीराधा माधोको सूर उरहि यह जानी ॥ ९९ ॥

कहाकहौं सुखकह्यो न जाइ । वह अभिलाष श्यामकी आवनि दुहुँ उर आनन्द उर न समाइ॥ द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वह निशि वै हरि राधा योग । वह रसकी झझकनि वह महिमा वह मुसकति वैसो संयोग । वै हितबोल परस्पर दोऊ ठटकत कहत प्रेम पहिचानि। सूर श्याम कर वाम भुजा धरि उछंगलई वह मुख पहिचानि ॥ १६०० ॥

राग कान्हरो ॥ श्याम सकुच प्यारी उर जानी । लई उछंगि वाम भुज भरिकै बार बार कहि बानी ॥ निरखति सकुच बदन हरिप्यारी प्रेमसहित दोऊ ज्ञानी । करत कहा पियअति उताइली मैं कहुँ जात परानी ॥ कुटिल कटाक्ष बंक करि भृकुटी आनन मुरि मुसकानी। सूरश्यामगिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी ॥ १ ॥

नागरि नागर करत बिहार । कामनृपति सैना दुहुँ अंगनि शोभा वार न पार ॥ अधर अधर नैननिनैननि भ्रुव भाल कियो इकठौर । मनइंदीवर कमल कसेसे चारि भँवर रंग और ॥ बंदन भाल बिहँसनि दोऊ अरस परस वरनारि । मनों बिच चंद चकोर परस्पर कमल अरुन रविधारि ॥ हावभाव रति उपजायो पियप्यारी मन एक । सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कलानि अनेक ॥ २ ॥

राग गुंडमलार॥श्यामा श्याम परम कुशल जोरी । मनों नव जलद पर दामिनिकी कला सहज गति मेटि श्रुति भई भोरी ॥ अलक बिथुरी श्याम मुखपर रहे मनों बल राहु शशि घेरि लीन्हों । चितै मुख चारु चुंबन कराति सकुच तजि दशन छत अधर पिय मगन दीन्हों ॥ परत श्रम बूँद टप टपकि आनन बाल भई बेहाल रति मोह भारी । बिधुपर सुदन विध्वंत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीडि नारी ॥ ३ ॥

राग कुरंग ॥ कुंजके निकट कुंज सुरति निरसिसों सेज राजत सुख गात । छूटिगई तनकी चोली दरकि तरकि गये चारो याम रजनी विहानी भोर रे भोर प्रात ॥ आलससों उठि बैठे अरस परस दोउ दंपति अति मन मन मुसकात । सूर आस पूरी श्यामा श्याम बनी जोरी निशिरस सुधि आये नैन नैननिजात ॥ ४ ॥

राग ललित ॥ राजत दोउ रतिरंग भरे । सहज प्रीति विपरीति निशा सब आलस सेज परे ॥ अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे। अंग अंग बल अपने अरिनिसों रति संग्राम लरे ॥ मगन मुरछि रहे खेत सेज पर इत उत कोउ न परै। सूर श्याम श्यामा रति रणते एक पग पल न टरे ॥ ५ ॥ :

राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परत दोउ करत बिहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरयो नवसरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीतै भूषण शृंगार ॥ ६ ॥

राग ललित ॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानों शूर खेत सम लरिकै गिरे उठत फिरि गिरे लजाने ॥ ७ ॥

राग ललित ॥ बोले तमचुर चारो यामको गजर मारयो पौन भयो शीतल तम तमता गई ॥ प्राची अरुनानी धानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन बिछोहि ग्वाल चरै चलीं गाय द्विज पैंती करको दई ॥ सूरदास राधिका सरसबानी बोलि कहै जागो प्राण प्यारे जू सवारेकी समै भई ॥ ८ ॥

राग विभास ॥ चिरई चुहचुहानी चन्दकी ज्योति परानी रजनी विहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारका दुरानी तमघटे चुर बोले श्रवण भनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरी जोरी कोक मिले उतरी पनच अब कामके कमानकी । अथवत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राण नाथ महा जान मणि जानकी ॥ ब्रज घर घर ईहै करत चवाव लोग बार बार कहनि करनि पग आनकी । सूरदास प्रभु नंद सुवन सिधारो धाम सुनत उठनि छबि कृपाके निधानकी ॥ ९ ॥

राग बिलावल ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती । चंद्रकी द्युति गई पहै पीरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती ॥ मात पितु बंधु गुरुजन अबहिं जानिहैं लखैं जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइके निकसि गए श्याम ब्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंदनंदन दरश दे गये निरखि यकटक रही पल भुलान्यो ॥ १० ॥

राग बिलावल ॥ प्रगट दरश दै गए कन्हाई । राधा गृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुराई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिराई । श्याम बरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छबि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरि माई । सूर श्याम निशि नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ११ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम गये देखै जिनि कोई । सखियनसों निबहन पुनि पैहौं इनि आगे राखौं रसगोई ॥ देखै आइ द्वारकै नागरि जहां तहां ब्रजनारी । सकुचि गई युवतिनके देखत दुख कीन्ही जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो बार बार पछितानी । सूर श्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सबनि इन जानी ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ बार बार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी ॥ नितही नित बूझति ये मोसों मैं इनपर सतराति । अब तौ हरि प्रगटही देखे पुनि पुनि कहति लजाति ॥ यक ऐसेहि झक झोरति मोको पायो नीको दोउ । सूर आजु केहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ ॥ १३ ॥

सोच परयो मन राधिका कछु कहत न आवै । कछु हरषे कछु दुख करै मन मौज बढावै ॥ निशि रस रँगहिमें पगी तनु सुधि बिसरावै । कबहुं बिचारति निठुर ह्वै सखि ज्वाब न आवै ॥ अबहीं मोको बूझिहैं युवती चतुरावै ॥ तिन सन्मुख कैहौं कहा प्रभु सूर मनावै ॥ १४ ॥

राग नटनारायण ॥ कबहूं मगन हरिके नेह । श्याम सँग निशि सुरतिको सुख भूलि अपनी देह ॥ जबहिं आवति सुधि सखिनकी रहति अति सरमाइ । तब करति हरि ध्यान हिरदै चरण कमल मनाइ ॥ होइज्यों परबोध उनको मेरी पति जिन जाइ । निदरि निदरि सबको रहीहूं आजुलौं यहि भाइ । अबहिं सब जुरि आइहैं ह्यां तुम बिना न उपाइ । सूर प्रभु ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहुं लगाइ ॥ १५ ॥

राग टोडी ॥ ज्वाब कहा मैं देहौं उनको । की आवति अबहीं की छिन कहि चोर कहैंगी मोको॥कैसे हूं पति रहै विधाता अब यह करौं सँभारि । घेरहि रहति दुराऊं कबलौं ऐसी नागरि नारि । नैना भए चकोर रहत हैं मुख शशि पूरण श्याम । सुनहु सूर यह दशाह-मारीये व्रजकी सब वाम ॥ १६ ॥

राग जैतश्री ॥ ये सब मेरेहि खोज परी । में तो श्याम मिली नहिं नीके आजु रही निशि सँग हरी ॥ युवतीहैं सब दई सँवारी घर बनहू में रहति भरी । कैसे धौं यह साध मिटैगी कहां मिलैं जो एक घरी ॥ प्रगट करैं तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लाज मरी । ते परगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु ब्रजराज हरी ॥ १७ ॥

राग धनाश्री ॥ तब नागरि मन हरष बढायो । परम कुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो ॥ अब आवैं कैसेहु अँग बूझे ज्वाब मनहि ठहरायो । अति आनंद पुलक तनु कीन्ही सोच मोच बिसरायो ॥ प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो । सूरदास प्रभु रूप बखानों इनको जो दरशायो ॥ १८ ॥

राग ललित ॥ राधा हरिके गर्व भरी । सखियनको आगम जब जान्यौ बैठी रही खरी ॥ उत ब्रजनारि सँग जुरिकै वै हँसति करति परिहास । चलौ न जाइ देखिये री वैं राधाको जु अवास ॥ कैसो वदन शृंगार कौन विधि अंग दशा भइ कैसी । सूर श्याम सँग निशि रस कीये निधरक ह्वैहै वैसी ॥ १९ ॥

राग जैतश्री ॥ सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखियन नहिं जान्यो । जब हम जाति चली यमुनाको तबही मैं वाको पहिचान्यो ॥ तबहि सैन दै श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ । उनके गुण धौं को नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ ॥ सुनहु सखी अन्तर नहिं कीजिय मूड़ परै अपनेही । सूर श्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही ॥ २० ॥

राग सारंग ॥ तुम जो कहति राधिका भोरी । आजु रही अब कहां दुराई कौन दिन नकी थोरी ॥ जे छोटी तेई हैं खोटी साजति माजति जोरी । बेंदी भाल नयन नित आंजति निरखि रहति तनु गोरी ॥ चमकति चलै बदन मटकावै ऐसी जोबन जोरी । सूर सखी तेहि कहति अयानी मनमोहनहिं ठगोरी ॥ २१ ॥

राग रामकली ॥ राधाको मैं तबहीं जानि । अपने कर जे मांग सँवारै रचि रचि बेनी बानी ॥ मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी । लोचन आंजि सुधारति कारज छांह निरखि मुसुकानी ॥ बार बार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी । सूरदास जैसी है तैसी मैं वाको पहिचानी ॥ २२ ॥

राग गुण्डमलार ॥ राधिका सदन ब्रजनारि आई । रही मुख मूँदि वचन बोलै नहिं नैनकी सैन दैदै बुलाई ॥ इनितबहिं लखि लई रचति है चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहै । चोर चोरी करै आपने जंघबल प्रगट कैहै तुमहिं नाहिं पत्यैहै ॥ भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ राखति गर्व बोलि देखौ । सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन मुख और तुम नहीं पेखौ ॥ २३ ॥

राग सूही ॥ आजु कहा मुख मूँदि रही री । सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौनगही री । हमको यह काहे न सुनावति हम हैं तेरी संग सखीरी । यह कहि कहि मुसकात परस्पर चतुर नारि यह तबहिं लखी री॥कीधौं ध्यान करति देवनिको कीधौं ऐसी पकृति परी री । सूर जबहिं आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरनि धरी री ॥ २४ ॥

राग बिलावल ॥ बार बार युवती सब राधासों भाखैं । तुम दुराव करती हौ हम तुमसों राखैं ॥ इतनो सोच परचो कहा मुख ज्वाव न आवै । हम तो हैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै ॥ कछु दिनते तेरी दशा तनु रहति भुलाये । निठुर भई काप इतो कह सूर सुभाये ॥ २५ ॥

राग गुंडमलार ॥ राधिका कहति ये करति हांसी । रहति मुखमुख हेरि नैनकी सैन दै कहति मोको कृष्ण उपासी ॥ सुनहुँ री सखी मैं कहा तुमसों कहौं कहा बूझति मोहिं कहति राधा । आजुही प्रात इक चरित देख्यो नयो तबहिते मोहिं यह भई बाधा कहौं जो एक करि देखती नैन भरि भोरते भोर ह्वै रही माई । सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघकी यहै जिय सोच कछु नहिं सोहाई ॥ २६ ॥

राग रामकली ॥ कर धरकी घर सैर सखी री । की स्रक सीपजकी बगपंगति मयूर की पीड पखी री ॥ की सुरचाप किधौं बनमाला तडित किधौं पटु पीत किधौं मंदगरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत ॥ की जलधरकी श्याम सुभग तनु इहै भोरते सोचति सूर श्याम रसभरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति ॥ २७ ॥

राग रामकली ॥ आजु सखी अरुणोदय मेरे नैनन धोख भयो । की हरि आजु पंथ यहि गौने की धौं श्याम जलद उनयो । की बगपंगति भ्रांति उरपरकी मुकतमाल बहुमोल । की धौं मोर मुदित नाचत की बरहि मुकुट की डोल ॥ की घनघोर गंभीर प्रात उठि की ग्वालनकी टेरनि । की दामिनि कौंधति चहुँदिश की सुभग पीतपट फेरनि ॥ की बनमाल लाल उरराजत की सुरपति धनु चारु । सूरदास प्रभु रस भरि उमँगी राधा कहति बिचारु ॥ २८ ॥

राग बिलावल ॥ सुनहु सखी राधा कहनावति । हम देख्यो सोई इन देवे ऐसेहि दोष लगावति ॥ यह पुनीत हमही अपराधिनि तनु अपराध बढावत । श्यामाश्याम सबके सुखदायकताते कहि मन भावत ॥ इतनेही रहौ और जिनि भाषहु अजहूं लाज न आवत । सूर श्याम राधा जो एकै तऊ नहीं कहि आवत ॥ २९ ॥

राग सूही बिलावल ॥ राधाको कछु और सुभाउ । हम देखति हरिको औरहि रँग यह निरखति सतिभाउ ॥ यह है बिन कलंककी सांची हम कलंकमें सानी ॥ हम हरिकी दासी सम नाहीं यह हरिकी पटरानी ॥ याकी स्तुति हम कहा करी हैं रसना एक न आवै । सूर श्याम कोई नाहिं जाने भजन प्रताप बतावै ॥ ३० ॥

राग गुण्डमलार ॥ राधिका हृदयते दोष टारौ । नंदके लाल देखे प्रात काल ते मेघ नाहिं श्याम तनु छबि बिचारौ ॥ इंद्रधनु नहीं वन दाम बहु सुमनके बगपंक्ति नहीं वर मोतीमाला । शिखी वह नहीं शिरमुकुट श्रीखंड पछ तडित नहिं पीत पट छबि रसाला ॥ मंद गर्जनि नहीं चरण नूपुर शबद भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों । सूर प्रभु भामिनी भवन करि गवन मनरवन दुखके दवन जानि लीन्हों ॥ ३१ ॥

भोरजे गये तेइ श्यामबैरी । धोखो मोहिं भयो तब लखे नहिं एक करि नीलवन मेघ छबि चीन्ह तनु लै री ॥ शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभग चापते अधिक वन माल-शोभा । सांवरीघटा बगपांतिहूते रुचिर मोतिबरदामउर देखिलोभा ॥ तडिततै पीतपटु क्रीट मकराजई गरज नाहिं प्रातही ग्वाल बोले । सूर प्रभु सखी यह बात सांची कही पवनबशमेघ ज्यों अंग डोले ॥ ३२ ॥

राग कल्याण ॥ धन्य हो धन्य तुम घोषनारी । मोहिं धोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहि मोहिं देखो री बीच भारी ॥ जा दिना संग मैं गई अस्नानको यमुनके तीर देखे कन्हाई ॥ पीत श्रीखंड शिर भेष नटवर कछे अंग इक छटा मैंही भुलाई ॥ एकद्योस आइ ठाढे भए द्वार हरि आजहू द्वार ह्वै गए मेरे । सूर प्रभु तादिना तुमहिं कहि दियो मोहिं आजमैं लखे सोउ कहे तेरे ॥ ३३ ॥

राग आसावरी ॥ तुम कैसे दरशन पावति री । कैसे श्याम अंग अवलोकति क्यों नैन नको ठहरावत री ॥ कैसें रूप हृदय राखतिहौ वै तो अति झलकावत री । मोको जहां मिलत हैं माई तहँ तहँ अति भरमावत री ॥ मैं कबहूं नीके नहिं देखे कहा कहौं कहत न आवत री । सूर श्याम कैसे तुम देखतिमोहिं दरश नहिं द्यावत री ॥ ३४ ॥

राग आसावरी ॥ धन्य धन्य वृषभानुकुमारी । धनि माता धनि पिता धन्य तुम धनि तोसी उपजाई री ॥ धन्य दिवस धनि निशा तबहिकी धन्य घरी धनि याम । धन्य कान्ह तेरे वश जे हैं धनि कीन्हें वश श्याम ॥ धनि मति धनि, गति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाउ । सूर श्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाउ ॥ ३५ ॥

राग जैयतश्री ॥ तोहिं श्याम हम कहाँ देखावें । तुमते न्यारे रहत कबहुँ वै नैक नहीं बिसरावें ॥ एक जीव देही द्वै राची यह कहि कहि जु सुनावें । उनकी पटतर तुमको दीजै तुम पटतर वे पावें ॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटे सो हम कहा बतावें । सूरदास गूँगेको गुर ज्यों बूझति कहा बुझावें ॥ ३६ ॥

राग टोडी ॥ सुनि राधा यह कहा विचारै । वे तेरे रँग तु उनके रँग अपनो मुख काहे न निहारै ॥ जो देखै तौ छांह आपनी श्याम हृदय ह्यां छाया । ऐसी दशा नंदनंदनकी तुम दोउ निर्मल काया ॥ नीलांबर श्यामलतनुकी छबि तुवछबि पीत सुवास । घन भीतर दामिनी प्रकाशत दामिनिघन चहुँ पास । सुनरी सखी बिछल कहौं तोसों चाहति हरिको रूप । सूर सुनहु तुम दोउ समजोरी एक एक रूप अनूप ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनि ललिता चंद्रावलि बात । मोसों श्याम नेह मानत हैं तुमसों कहति लजात ॥ तुमतो सदा रहति हरि संगही भेद कहो यह मोहिं । हाहा करति

पाइँहों लागति शपथहै मेरी तोहिं ॥ काहेको इतरात सखीरी तोते प्यारी कौन। सूर श्याम तेरे बश ऐसे ज्यों पर्वतवश पौन ॥ ३८ ॥

राग नट ॥ पिय तेरे वश योंरी माई। ज्यों संगहि सँग छाँह देहवश प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥ ज्यों चकोर वश शरद चंद्रके चक्रवाक बश भान। जैसे मधुकर कमलकोश बश त्यों बश श्याम सुजान ॥ ज्यों चातक वश स्वाति बूंदके तनके वश ज्यों जीय। सूरदास प्रभु अतिबश तेरे समझि देखि धौं हीय ॥ ३९ ॥

राग धनाश्री ॥ तू री छांह किये हरि राखति। अपनेमन तू जानति नीके मुख मोसों यह भाषति ॥ अतिबश रहत कान्ह री तोको मुकुर हाथ लै देखो। तैसीयै मनमोहनकी गति उहै भाव मन लेखो ॥ तुम हौ वाम अंग दक्षिण वै ऐसे करि एक देह। सूर मीन मधुकर चकोरको इतनो नहीं सनेह ॥ ४० ॥

राग देसाष ॥ नँदनंदन बश तेरे री। सुनि राधिका परम बडभागिनि अनुरागिनि हरि केरे री ॥ जा दिनते तोहिं खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आई री। ता दिनते बश भये कन्हाई कहा ठगोरी लाई री ॥ अब तू कहति कहा मो आगे बातन मोहिं भुलावै री। सूरदास ललिताकी बाणी सुनि सुनि हरष बढावै री ॥ ४१ ॥

राग टोडी ॥ ललिता मुख सुनि सुनि वै बानी। मैं ऐसी जियमें यह आनी ॥ और नहीं कोउ ब्रज मोसरिकी। हौंराधा आधा अँग हरिकी ॥ अपनेही बश पियको करिहौं। कहूं जात देखौं तब लरिहौं ॥ घरघर सबै गईं ब्रजनारी। यहि अंतर आये गिरिधारी ॥ हरि अंतर्यामी अविनाशी। जानि राधिका गर्व उदासी ॥ सूर श्याम राधा तन हेरचो। नागरि देखत ही मुख फेरचो ॥ ४२ ॥

राग सारंग ॥ बरज्यो नाहिं मानत उझकत फिरत हौ कान्ह घर घर। तुम मिषही मिष देखत फिरत युवतिनके बदन कौन कौनके घर। कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ दर दर। सूरदास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलन नेक नहीं जियमें डर ॥ ४३ ॥

राग बिलावल ॥ यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे ॥ बैठिरही अभिमानसों यह ठौर न पायो। हृदय श्याम सुखधाममें अभिमान बसायो। राधा के यह जानिकै आपुन पछिताहीं। जहां गर्व अभिमान है तहां गोबिंद नाहीं ॥ तहां नेकहूँ नाहिं रहै नहीं दरशन दीन्हों। सूरश्याम अन्तरभये जब गर्वहिं चीन्हों ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ॥ राधा चकित भई मनमाहीं। अबहीं श्याम द्वारहै झांके ह्यां आये क्यों नाहीं ॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिले न नंदकुमार। आवत हैं फिरि गये श्याम घन अतिही भयो बिचार ॥ सूने भवन अकेली मैंहीं नीके उलकि निहारचो। मोते चूक परी मैं जानी ताते मोहिं बिसारचो ॥ एक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी। सूरदास प्रभु गये द्वारके तब व्याकुल पछितानी ॥ ४५ ॥

राग सारंग ॥ मैं अपने जिय गर्व कियो। वै अंतर्यामी सब जानत देखतही उन चरचि लियो ॥ कासों कहौं मिलावै अब को नेक न धीरज धरत हियो। वै तो निठुर भये या

बुधिते अहंकार फल इहै दियो ॥ तब आपुनको निठुर करावति प्रीतिसुमरि भरिलेत हियो । सूर श्याम प्रभु वे बहुनायक मोसी उनके कोटि त्रियो ॥ ४६ ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम बिरह बन मांझ हेरानी । संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई देवानी ॥ श्याम धाम मैं गर्वहि राखति दुराचारिनी जानी । ताते त्यागि गये आपुहि सब अंग २ रति मानी ॥ अहंकार लंपट अपकाजी संगन रह्यो निदानी । सूर श्याम बिन नागरि राधा नागर चित्त भुलानी ॥ ४७ ॥

राग बिहागरो ॥ महाविरहबन मांझ परी । चकृत भई ज्यों चित्रपूतरी हरि मारग बिसरी ॥ संग बटपार गर्व जब देख्यो साथी छोंडि पराने । श्याम सहज अँग अंग माधुरी तहां वै जाइ लुकाने ॥ यह बन माँझ अकेली व्याकुल संपति गर्व छँडाये । सूर श्याम सुधि टरत न उरते यह मनो जीव बचाये ॥ ४८ ॥

राग मारू ॥ विरहवन मिलन सुधि त्रास भारी । नैन जल नदी पर्वत उरज येई मनो सुभग वेनी भई अहिनि कारी ॥ नैन मृग श्रवन बन कूप जहँ तहँ मिले भ्रम गली सघन नहिं पार पावै । सिंह कटि व्याघ्र अंग अंग भूषन मनो दुसह भये भार अतिही डरावै ॥ शरन करि अत्रडरि डरलहत कोउ नहीं अंग सुख श्याम बिन भये ऐसे । सूर प्रभु नाम करुनाधाम जाउँ क्यों कृपा मारग बहुरि मिलै कैसे ॥ ४९ ॥

राग टोडी ॥ राधा भवन सखी मिलि आई । अति व्याकुल सुधि बुधि कछु नाहीं देह दशा बिसराई । बांह गही तेहि बूझन लागी कहा भयो री माई । ऐसी विवश भई तुम काहे काहे न हमहि सुनाई । कालिहि और बरन तोहिं देखी आजु गई मुरझाई । सूर श्याम देखे की बहुरो उनहि ठगोरी लाई ॥ ५० ॥

राग हमीर ॥ श्याम नाम चकृत भई श्रवन सुनत जागी । आये हरि यह कहि कहि सखिन कंठ लागी ॥ मोते यह चूक परी मैं बड़ी अभागी ॥ अबकै अपराध क्षमहु गये मोहिं त्यागी ॥ चरण कमल शरन देहु बार बार मांगी । सूरदास प्रभुके वश राधा अनुरागी ॥ ५१ ॥

राग बिहागरो ॥ सखी रहीं राधा मुख हेरी । चकृत भई कछु कहत न आवै करन लगीं अवसेरी ॥ बार बार जल परसि वदनसों वचन सुनावत टेरी । आजु भई कैसी गति तेरी व्रजमें चतुर निवेरी ॥ तब जान्यो यह तौ चंद्रावलि लाज सहित मुख फेरी । सूर तबहिं सुधि भई आपनी मेटी मोह अँधेरी ॥ ५२ ॥

राग जैतश्री ॥ कहा भयो तू आजु अयानी । अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनमें तू बडी सयानी ॥ कहिधौं बात हृदयकी मोसों ऐसी तू काहे वितितानी । मुख मलीन तनु की गति औरै बूझति बारबार सो बानी ॥ कहादुराव करौं री तोसों मैं तो हरिके हाथ बिकानी । सूर श्याम मोको परत्यागी जा कारण मैं भई देवानी ॥ ५३ ॥

अब मैं तोसों कहा दुराऊँ । अपनी कथा श्यामकी करनी तो आगे कहि प्रगट सुनाऊँ ॥ मैं बैठेही भवन आपने आपुन द्वार दियो दरशाऊँ । जानि लई मेरे जियकी उन गर्वप्रहारन उनको नाऊँ । तबहीं ते व्याकुल भई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊँ । सुनहु सूर गृह बन भयो मोको अब कैसे हरि दरशन पाऊं ॥ ५४ ॥

राग नटनारायण ॥ सखीमिलि करौ कछु उपाउ । मार मारन चढचो बिरहिनि निदरि पायो दाउं ॥ हुताशन धुजजात उन्नत बह्यो हरि दिशवाउ । कुसुमशर रिपुनंद बाहन हरषि हरषित गाउ ॥ वारिभवसुत तासु भावरि अब न करिहैं काउ । बार अबकी प्राण प्रीतम बिजै सखी मिलाउ ॥ ऋतुबिचारि जु मान कीजै सोउ बहि किन जाउ। सूर सखी सुभाउ रैहैं संग शिरोमणि राउ ॥ ५५ ॥

राग नट ॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि । जलजसुताके सुतकी रुचि करे भई हितकी हानि ॥ दधिसुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुध जानि । गिरिसुता पति तिलक करकस हनत सायक तानि ॥ पिनाकि पति सुत तासु बाहन भषक भष विषखानि । शाखा मृग रिपु बसन मलयज हित हुताशन बानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिर पानि। सूरदास विचित्र बिरहिनि चूक मनमन मानि ॥ ५६ ॥

राग टोडी ॥ सुनि सजनी यह करनी तेरी । हमसों भेद करै हित उनसों ऐसे गुन उनके री ॥ आजुहिते ऐसे ढँग आये अबहींतो दिन है री । ऐते टूटिपरी उन ऊपर तुमही कीन्हों वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानि है मेरे कीधौं नहीं करै री ॥ सूरश्यामसों मानु करै किन काहे वृथा मरै री ॥ ५७ ॥

राग सोरठ ॥ तैंही उनको मूंड चढायो । भवन विपिन सँगही सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभँवर दिनचारि आपने अपनो चाउ सरायो । नँदनंदन बहुरवनि रवन वै इहै जानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने करहै हमको तब न सुनायो । सुनहु सूर बिन मान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥ ५८ ॥

राग कान्हरो ॥ हैनिमो जागत बिहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई अधिक तनु-तपति । सेज सुगंध तलप लागत पावकहूँ दाह सखी री त्रिविध पवन उडुपति ॥ ऐसीकै व्यापी हौं मन्मथ मेरो जी जानै माई श्यामश्याम कहि रैनि जपति । वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलि भिमान करौं कबहूं नाहिं मदन बानते कँपति ॥ ५९ ॥

राग धनाश्री ॥ मान बिना नहिं प्रीति रहैरी । धाइ मिलेकी गति तेरी सी प्रगट देखि मोहिं कहा कहै री ॥ अपनो चाउ सारि उन लीन्हों तू काहे अब वृथा बहै री । बैठि रहै काहे नाहिं दृढ ह्वै फिरि काहे न तू मान गहै री ॥ अपनो पेट दियो तैं उनको नाक बुद्धि तिय सबै कहै री । सूर श्याम ऐसे हैं माई उनको बिनु अभिमान लहै री ॥ ६० ॥

राग मलार ॥ सजौं क्यों मान मन न मेरे हाथ पियकी सुरति करि उमँगी भरत । मोसों मानत वाम श्याम गुनिगुनि अभिलाष करत ॥ जो मो कानि न मानि आनि जु वरत तिन बिनु न सरत । अपमानतहूं मुदित मूढ यश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस बिषदे चरचत नँदलाल हठि प्राणहरत । भ्रममें तो रिस करत न रसबश मोहिसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री सगहूं पर बिरहा धीर धरत । सूरदास घरकी फूटैडी कैसे धीर धरत ॥ ६१ ॥

राग कान्हरो ॥ चारिचारि दिन सबै सुहागिनि ह्वैचुकी मैं स्वरूप अपनी । कोउ अपने जिय मान करै माई मोहि तौ छूटति अति कँपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धरि छांडि देहु अति तपनी । सूर श्याम तबही मानैंगे तबहिं करैंगे जपनी ॥ ६२ ॥

हमारी सुरति बिसारी बन वारि हम सरबस दैदै हारी। सखिपै वै न भये अपने सपनेहुँ वै मुरारी गिरि धारी॥ वै मोहन मधुकर समान अनबोली मन लावत री। धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीरज नैना ढारि ढारि॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वै अति निठुर रहत हैं मुरारि। सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहु रवनि रवनपिय हम यकब्रत धरि मदन अगिनि तनु जारिजारि॥ ६३॥

राग गौरी॥ मैं अपनीसी बहुत करी री। मोसों कहा कहति तू माई मनके सँग मैं बहुत लडी री। राखौं अटकि उतहिको धावै उनको वैसिय परनि परी री॥ मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खडीरी। अजहूं मान करौं मन पाऊं यह कहि इत उत चितै डरी री। सुनहू सूर पांच मत एकै मोमें मैंही रही परी री॥ ६४॥

राग गौरी॥ मन जिनि सुनै बात यह माई। कौरै लग्यो होइगो कितहूं कहि दैहै को जाई॥ ऐसे डरति रहति हौं वाको चुगुली जाइ करैगो। उनसों कहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो। पंच संग लीन्हें वह डोलत कोऊ मोहिं न मानैं। सूरश्याम कोउ उनहिं सिखायो वै इतनो कह जानैं॥ ६५॥

राग ईमन॥ मेरो मन कहिबेको है। जबहींते हरिदरशन कीन्हें नैनभेद कियो जो है॥ इंद्री सहित चित्तहू लैगयो रही अकेली हमही। येतेपर तुम मान करावत तौ मन देहु न तुमही॥ मोको दोवल देति कहाहौ तुम तौ सबै अयानी। सूर श्यामको वेगि मिलावहु हारि आपनी मानी॥ ६६॥

राग रामकली॥ साँरग सारंग धरहि मिलावहु। साँरग विनय करत सारंगसों सारंग दुख बिसरावहु॥ सारंग समय दहत अति सारंग सारंग तिनहिं दिखावहु। सारंगपति सारंगधर जैहै सारंग जाइ मनावहु॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बोलावहु। सूरदास सारंग उपकारिनि सारंग मरत जिवावहु॥ ६७॥

राग बिहागरो॥ मोते यह अपराध परयो। आये श्याम द्वार भये ठाढे मैं अपने जिय गर्व धरयो॥ जानि बूझि मैं यह कृत कीन्हों सो मेरेही शीश परयो। मन अपने ढँगहीमें मोसों बारंबार लरयो॥ मैं अति बिमुख रही ये सन्मुख नीके उनहिं ठरयो। सूरदास मन आपु स्वारथी अपनो काज करयो॥ ६८॥

राग सोरठ॥ मन जो कह्यो करै री माई। तेरी कही बात सब होती मिलौ उनहिंको धाई॥ निलज भई तनुसुधि बिसराई गुरुजन करत लराई। इत कुलकानि उतहि हरिको रस मनतो अति अपुडाई॥ आप स्वारथी सबै देखियत है मोको दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकहि गये रिसाई॥ ६९॥

राग देशाख॥ मैं अबहीं करौं मान पैमन थिर न रहै। कोटियतन करि करि पचिहारी मोहिं बिसारि गये को उनसों जु कहै॥ मोको निदरि मिल्यो है हरिको येतेपर तनु मदन दहै। सूर श्यामसंग नेक न त्यागत सोवत जागत वरु अपमान सहै॥ ७०॥

मनहिं कह्यो करि मानपै कह्यो न करै। बारबार हरिसों गुहरावत मोहिं मंगावत पुनिपुनि आनि लरै॥ घटहूमें इंद्री बश ताके लै निकस्यो मोहिं कौन डरै। सुनि सजनी मैं रही अकेली विरहदहेली इत गुरुजन झहरै॥ अब बिनु मिले बनत नहिं आली निशिदिन पलपल रह्यो न परे। सूर श्याम बहुरवनि रचन जो भलेही रहैं वे चित यह नहीं धरै॥ ७१॥

राग बिलावल॥ भूलि नहीं अब मान करौं री। जाते होई अकाज आपनो काहे बृथा मरौं री॥ ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिंतामणि बिसरौं री। ऐसी बात कहै जो कोऊ ताके संग लरौं री॥ आरजपंथ चले कहा सरिहै श्यामहि संग फिरौं री॥ सूर श्याम जो आप स्वारथी दरशन नैन भरौं री॥ ७२॥

राग आसावरी॥ चूकपरी मोते मैं जानी मिलैं श्याम बकसाऊं री। हाहा करि दशननि तृण धरिधरि लोचनजलनि ढराऊं री॥ चरणगहौं गाढे करि करसों पुनिपुनि शीश छुवाऊं री। मुख चितवौं फिरि धरणि निहारौं ऐसी रुचि उपजाऊं री॥ मिलौं धाइ अकुलाइ भुजनिभरि उरकी तपति जनाऊं री॥ सूर श्याम अपराध क्षमहु अब यह कहि कहि जु सुनाऊं री॥ ७३॥

राग गौरी॥ माई मेरो मन पियसों यों लग्यो ज्यों सँग लागी छांहि। मेरो मन पियके जीव बसत है पियको जीव मोमें नाँहिं॥ ज्यों चकोर चंदाको निरखै इतउत दृष्टि न जाहिं। सूर श्याम बिनु छिनछिन युगसम क्योंकरि रैनि विहाहिं॥ ७४॥

राग जयतश्री॥ उनको यह अपराध नहीं। वै आवतहैं नीके मेरे मैंही गर्व कियो तनहीं॥ मेरे गर्वते सह्यो कछू नाहिं एक भई तनुदशा नहीं। सुख मिटिगयो हिये दुखपूरन अबरैहों इनहीं बिनहीं॥ अब जो दरश देहिं कैसेहू फिरत रहौं सँगहीं सँगहीं। सूरदास प्रभुको हियरेते अंतर करौं नहीं छिनहीं॥ ७५॥

राग बिलावल॥ अबके जो पिय पाऊं तो हिरदय मांझ दुराऊं। हरिको दरशन पाऊं अभूषण अंग बनाऊं॥ ऐसो को जो आनि मिलावै ताहि निहाल कराऊं। जो पाऊं तौ मंगल गाऊं मोतिनचौक पुराऊं॥ रसकरि नाचौं गाऊं बजाऊं चंदन भवन लिपाऊं। जो मोहन वश मेरे होवहिं हीरालाल लुटाऊं॥ मणि माणिक न्यवौछावरि करिहौं सो दिन सुदिन कहाऊं। केतकि करनवेलि चम्मेली फूलन सेज बिछाऊं॥ तापर पियको पौढाऊं मैं अचरा वायु डुलाऊं। चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि बनाऊं॥ जो बिधना कबहूं यह करतो कामको काम पुराऊं। सूर श्याम बिन देखे सजनी कैसे मन अपनाऊं॥ ७६॥

राग सांकरण॥ अरी मोहिं पिव भावै को ऐसी जो आनि मिलावै। चौदह विद्या प्रवीन अतिही सुंदर नवीन बहुनायक कौन मनावै॥ नेक दृष्टि भरि चितवै मो विरहिनिको माई कामद्वंद्व बिरह तपनि तनुते बुझावै। सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अब नितप्रति विरह जरावै॥ ७७॥

राग बिलावल॥ धीरज करि री नागरी अब श्यामहिं ल्याऊं। अति व्याकुल जिनि होहि री सुख अबहिं कराऊं॥ देखि दशा सहि नहिं सकी मनहीं अकुलानी। मैं राधाकी

प्रिय सखी यह कहि पछितानी ॥ झुरि झुरि पियरी भई है यह तौ सुकुमारी। ऐसी चूक परीहै मोपै कहा करौं गिरिधारी ॥ प्यारीको मुख धोइकै पट पोंछि सँवारचो। तरक बात बहुतै कही कछु सुधि न सँभारचो ॥ सावधान करिकै गई ल्याऊं गिरिधरको। सूर तहां आतुर गई पाये हरिवरको ॥ ७८ ॥

राग टोडी ॥ ललिता मुख चितवत मुसुकाने। आपु हँसी पिय मुख अवलोकत दुहुँनि मनहिं मन जाने ॥ अति आतुर धाई कहाँ आई काहे वदन झुराये। बूझति हैं पुनि पुनि नँदनंदन चितवत नैन चुराये ॥ तब बोली वह चतुर नागरी अचरज कथा सुनाऊं। सूरश्याम जो चलौ तुरतही नैननि जाइ दिखाऊं ॥ ७९ ॥

राग सारंग ॥ अद्भुत एक अनूपम बाग। युगल कमलपर गज क्रीडत है तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरिपर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंज पराग। रुचिर कपोत बसे ता ऊपर ता ऊपर अंमृत फल लाग ॥ फलपर पुहुप पुहुपपर पल्लव तापर शुक पिक मृग मद काग। खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अंग अंग प्रति और और छबि उपमा ताको करत न त्याग। सूरदास प्रभु पिवहु सुधारस मानो अधरनिके बड भाग ॥ ८० ॥

राग रामकली ॥ पझिनि सारँग एक मझारि। आपहि सारंग नाम कहावै सारंग बरनी बारि ॥ तामें एक छबीलो सारंग अधसारंग उन हारि। अध सारँग पर सकलइ सारंग अधसारंग बिचारि ॥ तामहिं सारंग सुत शोभित है ठाढी सारंग संभारि। सूरदास प्रभु तुमहूं सारंग बनी छबीली नारि ॥ ८१ ॥

राग रामकली ॥ बिराजत अंग अंग इति बात। अपने कर करि धरे बिधाता षट खग नव जलजात ॥ द्वै पतंग शशि बीस एक फनि चारि विविधरँग धात। द्वै पिक बिंब बतीस वज्रकन एक जलजपर थात ॥ इक सायक इक चाप चपल अति चिबुकमें चित्त बिकात। दुइ मृणाल मातुल ऊभै द्वै कदलिखंभ बिनपात ॥ इक केहरि इक हंस गुप्त रहैं तिनहिं लग्यो यह गात। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात ॥ ८२ ॥

राग सारंग ॥ आजु मैं देखी एक बाम नईसी। ठाढी हुती अंगना द्वारे बिधना रची किधौं मदनमइसी ॥ हम तन चितै सकुचि अंचल दै वारिज वदन परि वारि वईसी। मनौ द्वै ढंग चले हैं दृगनिलै ललित वलित हरि मनहिं नई सी ॥ जनु पावसते निकसि दामिनी नेक दमकि दुरि ओट लई सी। भोजन भवन कछू नाहिं भावत पलकन मानो करत खई सी ॥ यह मूरति कबहूँ नाहिं देखी मेरी अँखियन कछु भूल भई सी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहन मोहनी अचई सी ॥ ८३ ॥

राग सारंग ॥ बरणौं श्रीवृषभानुकुमारी। चितदै सुनहु श्यामसुंदर छबि रति नाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहिं सुभग श्याम बेनीकी शोभा कही बिचारि। मनो फनिंग रह्यो पीवनको शशिमुख सुधा निहारि ॥ कहिये कहा शीश सेंदुरको कितौ रही पचिहारि। मानो अरुन किरनि दिनकरकी पसरी तिमिर बिदारि ॥ भ्रुकुटी बिकट निकट नैननिके राजत अति वरनारि। मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि ॥ ता बिच बनी आड

केसरिकी दीन्ही सखिन सँवारि । मानो बंदि इंदु मंडलमें रूप सुधाकी पारि ॥ चपल नैन नासाबिच शोभा अधर सुरंग सुठारि । मनो मध्य खंजन शुक बैठ्यो लुबध्यो बिंब बिचारि ॥ तरिवन सधर अधर नकबेसारि चिबुक चारि रुचिकारि । कंठसरी दुलरी तिलरीपर नाहिं उपमा कहुँ चारि ॥ सुरंग गुलाब माल कुचमण्डल निरखत तन मन वारि । मानों दिशि निर्धूम अग्निके तप बैठी त्रिपुरारि ॥ जो मेरो कृत मानहु मोहन करि ल्याऊं मनुहारि । सूर रसिक तबहीपै बदिहौं मुरली सकौ सँभारि ॥ ८४ ॥

राग मलार ॥ लाल उनि सुनी मनोहर वंसी । नाहिं संभार अजहुँ युवतिन बल मदन भुवंगम डंसी ॥ कैसे ल्याऊं संगीत सरोवर मगन भई गति हंसी । अंके उटरि चलहु आपुनपै मेलि भौंह दृग फंसी ॥ वृंदावनकी माल कलेवर लता माधुरी गंसी । सूरदास प्रभु सबसुख दाता लै भुजबीज प्रशंसी ॥ ८५ ॥

राग धनाश्री ॥ मनसिज माधव मानिनिहि मारि है । त्रोटि परलवअरतपरमौ अर निरखिनि मुखको तारि है ॥ किसलय कुसुम कुंतसम सायक पायक पवन विचारिहै । द्रुम बल्ली यह दीप युग बनी जनति अनल त्रिय जारि है ॥ भँवर जु एक चकृत चामरकर भरि बंडुष खग डारि है । पुनि पुनि बाज साज सुनि सुंदरि त्रसित तिनहिं देखे मारि है ॥ बिरह बिभूति बढी वनितावपु शीश जटा बनवारि है । मुख शशि शेष रह्यो सित मानौं भई तभौं उनहारि है । जो न इतेपर चलहु कृपानिधि तो वह निजकर सारि है । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम तजि काहि पुकारि है ॥ ८६ ॥

राग सारंग ॥ सिवन अवधि सुंदरी वधो जिन । मुकुता मांग अनंग गगनमें नवसत साजे अर्थ श्याम घन । भाल तिलक उडुपति न होय इह कबरिग्रथित अहिपति न सहसफन । नहिं विभूति दधि सुत न कंठ जड इह मृगमद चंदनचरचित तन ॥ नहिं गजचर्मसे असित कंचुकी देखि बिचारि कहां नंदीगन । सूर सुहरि अब मिलहु कृपा करि बरवस सरम करत हठ हम सन ॥ ८७ ॥

राग सारंग ॥ नेक कुंज कृपा करि आइये । अतिरिसकृश ह्वै रही किशोरी करि मनुहारि मनाइये ॥ कर कपोल अंतर नाहिं पावत अति उसास तन ताइये । छूटे चिहुर वदन कुंभिलानी सुहथ सँवारि बनाइये ॥ इतनो कहा गाँठिको लागत जो बातनि यश पाइये । रूठे हि आदर देत सयाने इहै सूर जस गाइये ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रियमुख देखो श्याम निहारि । कहि न जाइ आननकी शोभा रही बिचारि बिचारि ॥ क्षीरोदक घूँघट हातो करि सन्मुख दियो उघारि । मनो सुधाकर दुग्धसिंधुते कढ्यो कलंक पखारि ॥ मुक्तामांग शीशपर शोभित राजत डुहि आकारि । मानो उडगन जानि नवल शशि आये करन जुहारि ॥ भाललाल सेंदूर बिंदपर मृगमद दियो सुधारि । मनो बंधूक कुसुमऊपर अलि बैठो पंख पसारि ॥ चंचल नैन चहूं दिश चितवत युगखंजन अनुहारि । मनहुँ परस्पर करत लराई कीर बचाई रारि ॥ बेसरिके मुकतामें झाईं बरन बिराजत चारि । मानो सुरगुरु शुक्र भौम शनि चमकत चंद्र मझारि ॥

अधर बिंब दशनकी शोभा दुति दामिनि चमकारि। चिबुक बिंदु बिच दियो बिधाता रूपसींव निरुवारि॥ ज्योति पुंज पटतर देवेको दीजे कहा अनुहारि। जनु युग भानु दुहूँ दिश उगए तम दुरि गयो पतारि॥ लाल सुमाल हार हीरावलि सखियन गुही सुढारि। मनहुँ धुईं निर्धूम अग्निपर तप बैठे त्रिपुरारि॥ सन्मुख दृष्टि परे मनमोहन लजित भईं सुकुमारि। लीन्ही उमँगि उठाइ अंकभरि सूरदास बलिहारि॥ ८९॥

राग नट। भुजभरि लई हृदय लाइ। बिरह व्याकुल देखि बाला नयन दोउ भरि आइ॥ रैनि बासर बीचहीमें दोउ गए मुरुझाइ। मनो वृक्ष तमाल बेली कनक सुधा सिचाइ॥ हरष डहडह मुसुकि फूले प्रेमफलनि लगाइ॥ काम मुरछनि बेलि तरुकी तुरतही बिसराइ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनंद नहीं समाइ। सूरके प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नशाइ॥ ९०॥

राग रामकली॥ ललिता प्रेमविवश भई भारी। वह चितवनि वह मिलनि परस्पर अति शोभा वरनारी॥ यकटक अंगअंग अवलोकति उत वश भए बिहारी। वह आतुर छवि लेत देति वै इकते इक अधिकारी॥ ललिता संग सखिन शोभा सखि देख्यो छबि पिय-प्यारी। सुनहु सूर जो अग्नि होम घृत ताहूते यह न्यारी॥ ९१॥

राग धनाश्री॥ देखि सखी राधा अकुलानी। ऐसे अंगअंग छबि लूटत मिलेहुँ श्यामको नहीं पत्यानी॥ जैसे तृषावंत जल अचवत वहतौ पुनि ठहरात। यह आतुर छबि लै उर धारति नेक नहीं तृपितात॥ जो चकोर इकटक निशि चितवत याकी सरि सोउ नाहिं। ज्यों घृतहोम वह्निकी महिमा सूरप्रगट या माहीं॥ ९२॥

राग केदारो॥ यद्यपि राधिका हरिसंग हाव भाव कटाक्ष लोचन करत नानारंग॥ हृदय व्याकुल धीर नाहीं वदन कमल विलास। तृषामें जल नाम सुनिज्यों अधिक अधिकहि प्यास॥ श्यामरूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार। सूर मिलनन लहत कोऊ दुहुँनि बल अधिकार॥ ९३॥

राग केदारो॥ राधेहि मिलेहुँ प्रतीत न आवति॥ यदपि नाथ बिधुबदन बिलोकति दर-शनको सुख पावति॥ भरिभरि लोचन रूप परमनिधि उरमें आनि दुरावति। बिरहबिकल मति दृष्टि दुहूँ दिशि सचि सरघा ज्यों धावति॥ चितवत चकित रहति चितअंतर नैन-निमेष न लावति। सपनो आहि कि सत्य ईश इह बुद्धि वितर्क बनावति॥ कबहुँक करत विचार कौन हौं को हरि केहि यह भावति। सूर प्रेमकी बात अटपटी मनतरंग उपजावति॥ ९४॥

राग रामकली॥ देखेहुँ अन देखेसे लागत। यद्यपि करत रंग भरे एकहि इकटक रहे निमिष नहिं त्यागत॥ इत रुचि दृष्टि मनोज महासुख उत शोभागुण अमित अनागत। बाढ्यो वैर कर्ण अर्जुन ज्यों दुइमहँ एक भूलि नहिं भागत॥ उत सन्मुख सो सावधान सजि इत सनाह अँग अँग अनुरागत। ऐसे सूर सुभट ए लोचन अधिक श्याम सुखमागत॥ ९५॥

राग कान्हरो॥ देखियत दोउ अहँकार परे। उत हरिरूप नैन याके इत मानहु सुभट अरे॥ रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन इत एक करे। उन उत भूषणभेद विविध रचि

अँग अँग धनुर धरे ॥ ए अतिरिरिणरोष न मानत निमिष निषंग झरे । बाहु व्यथहि न वदत पुलकारुह सब अँग सरसचरे ॥ ये श्री अनुराग सूर सजि छिनु र बढत खरे । मानहु उमँगि चल्यो चाहतहै सागर सुधा भरे ॥ ९६ ॥

राग बिहागरो ॥ नखशिखते अँगअंग रूप छबि देखि देखि नैना न अघाने । निशि अरु दिन यक टकही राखे पलक लगाइ न जाने ॥ छबितरंग अगनित सरिताएँ जलनिधि लोचन तृप्ति न माने । सूरदास प्रभु शोभाको अति लालिची रहे ललचाने ॥ ९७ ॥

राग बिभास ॥ ललिता संग सखिनको लीन्हें । दंपतिसुख देखत अति भावत एकटक लोचन दीन्हें ॥ प्यारी श्याम अंगकी शोभा निदरे देख्योइ चाहति । उत नागर नागरि नैननिको निदरि रूप अवगाहति ॥ उत उदार शोभाकी सीवाँ इत लोभहि नाहिं पार । सूर श्याम अँगअँगकी शोभा निरखत बारहिंबार ॥ ९८ ॥

राग गुंडमलार ॥ निदरि अंग छबि लेति राधा । यह कहति कितिक शोभा करैंगे श्याम मेटिहौं आज मन सबै साधा ॥ उतहि हरि रूपकी राशि नाहिं पार कहुँ दुहुँनि मन परस्पर होड कीन्हों । इतहि लुब्धे वै उतहि उदार चित दुहुँन बल अंत नहिं परत चीन्हों ॥ जुरे रणवीर ज्यों एकते एक सरस मुरत कोउ नहीं दोउ रूप भारी । सूर स्वामी स्वामिनी राधिकासरस निरस कोउ नहीं लखि लई नारी ॥ ९९ ॥

राग मारू ॥ रुँधे रति संग्राम खेत नीके । एकते एक रणवीर जोधा प्रबल मुरत नहिं नेक अति सबल जीके ॥ भौंह कोदंड शर नैन जोधानुकी काम छूटनि कटाक्षनि निहारैं । हँसनि द्विज चमक करिवरनि लोहन झलक नखन छत घात नेजा सँभारैं ॥ पीतपट डारि कंचुकी मोचित करनि कवच सन्नाह ए छुटे तनते । भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुंडनि लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनते ॥ लटकि लपटानि मानो सुभट लरिपरे खेत रति सेज चुंबितान कीन्हों । सूर प्रभु रसिक प्रिय राधिका रसिकिनी कोकगुन सहित सुख लूटि लीन्हों ॥ १७०० ॥

राग नट ॥ किशोरी अँग अँग भेंटी श्यामहिं । कृष्ण तमाल तरलभुज शाखा लटकि मिली जैसे दामहिं ॥ अचरज एक लतागिरि उपजै सोउ दीने करुणामहिं । कछुक श्यामता सांवल गिरिकी छायो कनक अगामहिं ॥ गिरिवर धरन सुरति रतिनायक रति जीते संग्रामहिं । सूर कहै ये उभय सुभटबिच क्यों जु बसै रिपु कामहिं ॥

राग नट ॥ रसना युगल रस निधि बोलि । कनक बेलि तमाल अरुझी सुभुज बंधन खोलि ॥ भृंगयूथ सुधाकरनि मनो घनमें आवत जात । सुरसरीपर तरनितनया उमँगि तटन समात ॥ कोकनदपर तरनि तांडव मीन खंजन संग । करति लजै शिखर मिलिकै युग्म संगम रंग ॥ जलदते तारा गिरत मनो परत पयनिधि माहिं । युग भुजंग प्रसन्नमुख ह्वै कनकघट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिलारव विवश ह्वै दे दान । विकच कंजअनारलगि अधर लसि करत पयपान ॥ दामिनी थिर घनघटा चर कबहुँ ह्वै एहि भांति । कबहुँ दिन उद्योत कबहूं होत अतिकुहुराति ॥ सिंह मध्य सनाह मणिगण सरस सरके तीर । कमल

मनु बिननाच उलटै कछुक तीक्षन नीर ॥ हंस सारस शिखर चढि दोउ करत नाना नाद । मकर निजपद निकट बिहरत मिलन अतिअहलाद ॥ प्रेम हित करि क्षीरसागर भई मनसा एक । श्याम मणिके अँग चंदन अमीने अभिषेक ॥ सूरदास सखीसभा मिलि करत बुद्धि विचार । समय शोभा लगि रही मनो सूमको संसार ॥

राग रामकली ॥ शोभा सुभग आनन ओर । त्रासते तनु त्रसित तिरछे चितै देत अकोर ॥ निरखि सन्मुख कियो चाहत बदन बिधुकी जोर । तुलाबिच लै केश तोलै गरुअ आनन गोर ॥ दरशपति रुचि मुदित मनसिज चपल द्दग द्दग कोर । कोस क्रीडत मन मानों नीर नीरज भोर ॥ श्यामसुंदर नैन युग बर झलक कज्जल कोर । सुधा सर संकेत मानो कूप दानव ओर ॥ श्रवण मणि ताटंक मंजुल कुटिल कुंतल छोर । मकर संकट काम वापी अलक फंदनि डोर ॥ चिकुर अध नव मोतिमंडल तरल लट तृण तोर जनु विध्वंसित ब्यालबालक अमीकी झक झोर । श्रमस्वेद सीकर गंड मंडित रूप अंबुज कोर । उमँगि ईषद् श्रम तज्यो पीयूष कुंभ हिलोर ॥ हँसत दशननि चमक बिज्जुल लसित कठिन कठोर । मुदित मधुपन बिंदगन मकरंद मध्य न थोर ॥ निरखि शोभा समर लज्जित इंदु भयो भ्रमभोर । सूर धन्य सुवन किशोरी धन्य नंदकिशोर ॥

राग बिलावल ॥ धन्य कान्ह धनि राधा गोरी । धनि वह भाग सुहाग धन्य वह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी । धनि यह अरस परस छबि लूटनि महाचतुर मुख मोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकनि पिय अबलोकत लगत ठगोरी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए नागरि पर डारत तृण तोरी ॥

राग धनाश्री ॥ नागरी छबिपर रीझत श्याम । कबहुँक वारत हैं पीतांबर कबहुँक वारत मुकुतादाम ॥ कबहुँक वारत हैं कर मुरली कबहुँक वारत मोहन नाम । निरखि रूप मुख अंत लहत नहिं तनु मनु वारत पूरणकाम ॥ बारंबार सिहात सूर प्रभु देखि देखि राधासी बाम । इनको पलक ओट नहिं करि हौं मन इह कहत बासरहु याम ॥

राग बिलावल ॥ श्याम निरखि प्यारी अंगअंग । सकुचिरहतमुखतन नहिं चितवत जेहि बश रहत अनंत अनंग ॥ चपल नैन दीरघ अनियारे हावभावनानामतिभंग ॥ वारों मीन कोटि अंबुजगण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥ लोचन नाहिं ठहरात श्यामके कबहुँ अंग नैना मुख रंग । सूरदास प्रभु यों प्यारी बश ज्यों बशडोर फिरत सँग चंग ॥

राग टोडी ॥ श्याम भए राधावश ऐसे । चातक स्वाति चकोर रहत ज्यों चक्रवाक रवि जैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति ज्यों तनुके बस छाया । यकटक नैन अंगछबि पोहै थकित भए पति जाया ॥ उठे उठत बैठे बैठतहैं चले चलत सुधि नाहीं । सूरदास बडभागिनि राधा समुझि मनहिं मुसुकाहीं ॥

राग आसावरी ॥ निरखि श्याम प्यारी अंग शोभा मन अभिलाष बढावत हैं । प्रिया अभूषण मांगत पुनिपुनि अपने अंग बनावत हैं ॥ कुंडलतट तरिवन

लै साजत नासा बेसरि धारत हैं ॥ बेंदी भाल मांग शिर पारत बेनी गूँथि सँवारत हैं ॥ प्यारी नैननिको अंजन लै अपने लोचन अंजत हैं । पीतांबर ओढनी शीशदै राधाको मनरंजत हैं ॥ कंचुकि भुजनि भरत उर धारत कण्ठ हमेल भ्रजावत हैं । सूर श्याम लालच तियतनुपर करि शृँगार सुख पावत हैं ॥

राग नट ॥ श्यामा श्याम छविकी साध । मुकुट मंडल पीतपटछवि देखि रूप अगाध ॥ प्रिया हाहा करति पुनि पुनि देहु प्रीतम मोहि । अंग अंग सँवारि भूषण रहति वह छवि जोहि ॥ काछि कछनी पीत पटु कटि किंकिनी अति शोभ । हृदय वनमाला बनावत देखि छबि मन लोभ ॥ श्रवण कुंडल धारि शोभा शीश रचि श्रीखंड । सूर श्याम सुहागिनी रुचि कनक कर लै दंड ॥

राग रागिनी कर्णाटकी ॥ श्रीगोपाललालजी बन्सी नेक मैं.पाऊं । हो मदनगुपाल तुम्हारी मुरली मैं नेकु बजाऊं ॥ टेक ॥ मुरली बजाऊं रिझाऊँ गिरिधर गाऊं आज सुनाऊं । जेइ जेइ तान तुमसी गीत गावत तेइ कर्णाटी गौरी मैं गाय सुनाऊं ॥ हो० ॥ तहां लगि गान गाऊं मोहन जहां लगि सात सुरन मैं पाऊं । सुरन विमान थकित करि राखौं कालिंदी थिर नीर बहाऊं ॥ हो० ॥ बेनी शीश फूल पहिरो हरि मैं शिर मुकुट बनाऊं । तुम वृष-भानु सुता ह्वै बैठो मैं नंदलाल कहाऊं ॥ हो० ॥ तिहारो आभूषण मैं पहिरौं अपनो तुमहिं पहिराऊं । तुम मानिनिको मान करि बैठौ मैं गहि चरण मनाऊं ॥ हो० ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको भक्ति भाव नीके करि पाऊं । कीजै कृपा अनेक अनुचर पर अनुपम लीला गाऊं ॥ हो० ॥

राग नट ॥ तिहारी लाल मुरली नेक बजाऊं । जो जिय होत प्रीति कहिबेकी सो धरि अधर सुनाऊं ॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर उपाऊं । जैसे फिरत रंध्र मगु कँगुरी तैसे मैंहु फिराऊं ॥ जैसे आपु अधर धरि फूँकत मैं अधरनि परसाऊं । हाहा करति पाय हौं लागति बांस बँसुरिया पाऊं ॥ सारंग नट पूरवी मिलैकै राग अनूपम गाऊँ । तुम्हरे भूषण मोको दीजै अपने तुमहि बनाऊं ॥ तुम बैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं । तुम्ह राधे हौं माधोई माधो ऐसी प्रीति जनाऊं ॥ यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नैननि इहै देखाऊं । सूरश्याम गिरिधरन छबीले भुजभरि कंठ लगाऊँ ॥

राग नट ॥ हरिजी मुरली तुम्हैं सुनाऊं । तुम सुरपुरको प्राणनाथ प्रभु हौं अँगुरियन चलाऊं ॥ मधुरे सुर गति राग रागिनी भलीतान उपजाऊं । जेहि जेहि भांति रिझहुँ नँद-नंदन तेहि तेहि भांति रिझाऊं ॥ अंश बाहु धरि करिविक्रम ज्यों ते मनु सुख हौं पाऊं । सूरज अटक्यो मन चलै न पगु मन अभिलाष बढाऊं ॥

राग नट ॥ प्यारी कर बांसुरी लई । सन्मुख होइ तुम सुनहु रसिक पिय ललित त्रिभंग भई ॥ उठत राग रागिनी तरंगन छिनु छिनु उपजि नई । आलबाल नँदलाल श्रवन वर जनु मोहनी वई ॥ नमित सुधाकर बदन अमित छवि मनमोहन चितई । मानहुँ मत्त चकोर मेचक मृग तनु सुधि बिसरि गई ॥ कटि पीतांबर छाइ नाहको छलबल कै रिझई । सूर सखी हंसि कमल नैन कह राधे अंक दई ॥

राग गूजरी ॥ मुरली लई करते छीनि । ता समय छबि कही जाति न चतुर नारि नवीन । कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहि देउ सिखाइ । मुरलिपर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ ॥ कृष्ण पूरत नाद उछरत प्यारी रिझकरि गात । बार बारहि अधर धरि धरि बजत नहिं अकुलात ॥ प्रिया भूषण श्याम पहिरत श्याम भूषण नारि । सूर प्रभु करि मानु बैठे त्रिय करति मनुहारि ॥

राग बिलावल ॥ कहति नागरी श्यामसों तजौ मानु हठीली । हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली ॥ हँसतहिंमें तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी । बार बार कर धरतिहैं कहि कहि सुकुमारी ॥ वृथा मान नहिं कीजिये शिर चरणन धारति । आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति ॥ निठुर भई हौ लाडिली कबके हम ठाढे । तुम हमपर रिसि करत हौ हम हैं तुव चाढे॥श्याम कियो हठ जानिकै इक चरित बनाऊं सुनहु । सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ॥

राग बिलावल ॥ लाल निठुर ह्वै बैठि रहे । प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुखतन धरणी नखत करोवत । आपु हँसति पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत ए बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु । सूर श्याम मुख कोटि चन्द्रछबि हँसिकै मोहिं देखावहु ॥

राग धनाश्री ॥ नागरि हँसति हृदय डर भारी । कबहुं अंक भरि लेति उरजबिच कबहुं करति मनुहारी ॥ मान करत नीके नहिं लागै दूरि करौ यह ख्याल । नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नँदलाल ॥ शीश धरति चरणनि लै पुनि पुनि त्रियको रूप निहारत । सूरदास प्रभु मान धरचो दृढ धरणी नखन बिदारत ॥

राग गुंड ॥ निरखि त्रियरूप पिय चकित भारी । कि धौं वे पुरुष मैं नारिकी वै नारि मैंहिं हौं पुरुष तनु सुधि बिसारी ॥ आपतन चितै शिर मुकुट कुण्डल श्रवन अधर मुरली माल बन बिराजै । उतहि प्रियरूप शिर मांग बेनी सुभग भाल बेंदी बिंद महाछाजै ॥ नागरी हठ तजौ कृपा करि मोहिं भजौ परी कह चूक सो कहौ प्यारी । सूर प्रभु नागरी रस बिरह मगन भई देखि छबि हँसत गिरिराजधारी ॥

राग धनाश्री ॥ निरखत पिय प्यारी अंग अंग बिरह शोभा । कबहूं पिय चरण परति कबहूं भुज अंक भरति कबहूं जिय डरति वचन सुनिबेकी लोभा ॥ कबहुं कहति पियसों पिय कबहुं कहति प्यारी हो हाहा करि पाँइ परति विकल भई बाला । कबहुं उठति कबहुं बैठ पाछे ह्वै रहति कबहुं आगे ह्वै वदन हरि परी बिरह ज्वाला॥काहे तुम कियो मान बोले बिनै जात प्रान दंपति है सँग दशा ऐसी उपजाई । रीझे प्रिय सूर श्याम अंकम भरि लई वांम बिरह द्वंद्व मेटि हरष हृदय उपजाई ॥

राग धनाश्री ॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकम लाइ । खेलतमें तुम बिरह बढ़ायो गई कहा बितताइ ॥ तुमही कह्यो मान करिबेको आपुहि बुद्धि उपाइ । काहे विवश भई बिन कारण

ऐसी गई डराइ ॥ सुन प्यारी हम भाव बतायो अंतर गए जनाइ । बारंबार अलिंगन दीन्हो अबहिं रही मुरझाइ । सींची कनकलता सूरज प्रभु अमृत वचन सुनाइ । अति सुखद दुखको बिसरायो राधारवन कन्हाइ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम तनु पिया भूषण बिराजै । कनकमणि मुकुट कुंडल श्रवन बनमाल अधर मुरली धरे नारि छाजै ॥ निरखि छबि परस्पर रीझे दोउ नारि वर गयो तजि विरह उर प्रेम पागे । सूर प्रभु नागरी हँसति मन मन रसति बसत मन श्यामके बडे भागे ॥

राग नट ॥ नागरि भूषण श्याम बनावत । श्रीनागर नागरि अँगशोभा कियो निरखि मन भावत ॥ इयामा कनक लकुट कर लीन्हे पीतांबर उर धारे । उत गिरिधर नीलांबर सारी घूँघट ओट निहारे ॥ वचन परस्पर कोकिल वाणी श्याम नारि पति राधा । सूर स्वरूप नारि पति काछे पति नारी तनु साधा ॥

राग नट ॥ नीके श्याम मान तुम धार्‍यो । तुम बैठे दृढ़मान ठानि मैं देख्यो मान तुम्हारो ॥ यह मन साध बहुतही मेरे तुम बिन कौन निवारै । नागरि पियतन अपनी शोभा बारहि बार निहारै ॥ बेनीमांग भाल बेंदी छबि नैननि अंजन रंग । सूर निरखि पिय घूँघट की छबि पुलकनमावति अंग ॥

राग धनाश्री ॥ कुंजबन गमन दंपती बिचारै । नारिको वेशकरि नारिको मनहि हरि मुकुर लै भावती छबि निहारै ॥ भामिनी अंग वह निरखि नटवर भेष हँसतही हँसत सब मेटि डारे । सहज अपनो रूप धरो मन भावती और भूषण तुरत अंग धारे ॥ त्रियाको रूप धरि संग राधा कुँवरि जात ब्रज खोरि नहिं लखत कोऊ । सूर स्वामी स्वामिनी बने ऐकसे कोउ न पटतर अरस परस दोऊ ॥

राग गौरी ॥ नँदनंदन त्रिय छबि तनु काछे । मनो गोरी साँवरी नारि दोउ जात सहजमें आछे ॥ श्याम अंग कुसुँभी नई सारी फलगुंजाकी भाति । इत नागरि नीलांबर पहिरे जनु दामिनी घन कांति ॥ आतुर चले जात बनधामहि अतिमन हरष बढाए । सूर श्याम वा छबिको नागरि निरखति नैन चुराए ॥

राग कान्हरो ॥ मनही मन रीझति है राधा बार बार पिय रूप निहारै । निरखि भाल बेंदी सेंदुरकी वा छबि पर तन मन धन वारै ॥ यह मन कहति सखी जिन देखैं बूझे पर कहा कैहौं । तिहूं भुवन शोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरैहौं ॥ पग जे हरि बिछिअन की झमकनि चलत परस्पर बाजत । सूर श्याम श्यामा सुख जोरी मणि कंचन छबि लाजत ॥

राग कल्याण ॥ श्यामा श्याम कुंजबन आवत । भुज भुजकंठ परस्पर दीन्हें यह छबि उनही पावत । इतते चंद्रावली जात ब्रज उतते ए दोउ आए । दूरिहिते चितवत उनही तन इक टक नैन लगाए ॥ एक राधिका दूसरि कोहै याको नहिं पहिचानौं । ब्रज वृषभानु पुरा युवतिनको इकइक करि मैं जानौं ॥ यह आई कहुँ और गाँवते छबि सांवरी सलोनी । सूर आजु इह नई बतानी एकै अंग न विलोनी ॥

राग सोरठ ॥ राधा सकुचि श्याम मुख हेरति । चंद्रावली देखिकै आवति ब्रजही को पिय फेरति ॥ जाहु जाहु मुखते कहि भाषति करते कर नहिं छूटति । उतहि सखी आवत

सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति ॥ दुख सुख हरष कछू नहिं जानति श्याम महा रस-माती । सूर उतहि चंद्रावलि इक टक उनहीके रँग राती ॥

राग गौरी ॥ यह वृषभानुसुता वह को है । याकी सरि युवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मन मोहै ॥ अति आतुर देखनको आवति निकट जाय पहिचानों । ब्रजमें रहति किधौं कहुँ औरै बूझेते तब जानों ॥ यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारि । सूर श्याम देखत मुसुकानी करी चतुरई भारि ॥

राग गौरी ॥ इनते निधरक और न कोइ । कैसी बुद्धि रचीहै नोखी देखी सुनी न होइ ॥ इह राधासों हाथ बिधाता बुद्धि चतुरई ठानी । कैसे श्याम चुराइ चली लै अपने भूषण ठानी ॥ और कहा इनिको पहिचाने मोपै लखे न जात । सूर श्याम चंद्रावलि जाने मनहीं मन मुसुकात ॥

राग कान्हरो ॥ सकुच छांडि अब इनहि जनाऊँ । एतौ चले आपने काजहि मैं काहे न समझाऊं ॥ मनहीं मनमें जीति जाहिंग जानि बूझि निदराऊँ । यह चतुरई काछिके आये सो अब प्रगट देखाऊं ॥ बडे गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं । सूर श्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं ॥

राग सारंग ॥ कहि राधा ये कोहै री । अति सुंदरि साँवरी सलोनी त्रिभुवन जनमन मोहैरी ॥ और नारि इनकी सरि नाहीं कहौ न हम तन जोहै री । काकी सुता वधू है काकी काकी युवती धौं है री ॥ जैसी तुम तैसी हैं एऊ भली बनी तुमसौं है री । सुनहु सूर अति चतुर राधिका एई चतुरनीकी गौंहै री ॥

राग इमन ॥ मथुराते ये आई है । कछु सम्बन्ध हमारी इनसों ताते इनहि बुलाई है ॥ ललिता संग गई दधि बेचन उनही इनहिं चिन्हाई है । उहै सनेह जानि री सजनी भवन आजु हम आई है ॥ तबहीं की पहिचान हमारी ऐसी सहज सुभाई है । सूर मोहिं देखन इहां आवत आपु संग उठि धाई है ॥

राग सोरठ ॥ इनको ब्रजही क्यों न बुलावहु । की वृषभानुपुरा की गोकुल निकटहि आनि बसावहु ॥ वोहु नवल नवल तुमहू हौ मोहनको दोउ भावहु । मोको देखि कियो अति घूँघट काहे न लाज छुडावहु ॥ यह अचरज देख्यो नहिं कबहूं युवतिहि युवति दुरा-वहु । सूर सखी राधासों पुनि पुनि कहति जु हमहिं मिलावहु ॥

राग हमीर ॥ सांवरे तनु कुसुंभी सारी सोहत है नीकी री । मानो रति पति सँवारि बनी रवनी जीकी री ॥ राधाते अतिहि सरस श्याम देखि पावै री । ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावै री ॥ घूंघट पट बदन ढांकि काहे इन राख्यो री । चितवहु मोतन कुमारि चंद्रावलि भाष्यो री ॥ आपुहि पट दूरि कियो तरुणि बदन देखै री । मनही मन सफल जानि जीवन जग लेखै री ॥ नैन नैन जोरति नहिं भावसों लजाने री । सूर श्याम नागरि मुख चितवत मुसुकाने री ॥

राग बिहागरो ॥ मथुरामें बस वास हमारो । राधाते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो ॥ बार बार कर गहि गहि निरखत घूंघट वोट करो किन न्यारो । कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्यां हमहिं निहारो ॥ कछु मैं हूं पहिचानति तुमको तुमहि मिलाऊं नंददुलारो । काहेको तुम सकुचति हौ जी कहौ काह है नाम

तुम्हारो ॥ ऐसी सखी मिलि तोहिं राधा तौ हमको काहे न बिसारो । सूरदास दंपति मन जान्यो यासे कैसे होत उबारो ॥

राग रामकली ॥ राधा सखी मिली मनभाई । जबते इनसों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥ और भई इतने तुमको सखी गृहजनसों निठुराई । काहूके मनमें नाहिं आनति हमहुँ सबन बिसराई ॥ तुम हौ कुशल कुशल हैं एऊ आपु स्वारथी माई । सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥

राग रामकली ॥ इह सखि अबलौं कहां दुराई । राति दिवस हम कबहुँ न देखी अब जु कहांते आई ॥ त्रिभुवनकी शोभा सब गुण निधि है बिधि एक उपाई । विद्यमान वृषभानुनंदिनी सहचरि सब सुखदाई ॥ अपने मन तकि तकि तनु तोलति विय जन सुंदरताई । दुसर रूपकी राशि राधिका कहौ कौन प्रभुताई ॥ राचिरही रस सुरति सूर दोउ निरखी नैन निकाई । चीन्हे हौं चले जाहु कुंज गृह छांडि देहु चतुराई ॥

राग रामकली ॥ ऐसी कुँवरि कहां तुम पाई । राधाहूते नख शिख सुंदरि अबलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कौनकी बेटी कौन गाउँते आई । देखी सुनी न ब्रज वृंदावन सुधि बुधि रहति पराई ॥ धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिनके मन भाई । सूरदास प्रभु हरषि मिले हँसि लै उर कंठ लगाई ॥

राग गुंडमलार ॥ नंदनंदन हँसे नागरी मुख चितै हरषि चंद्रावली कंठ लाई । वाम भुज रवनि दक्षिण भुजा सखी पर चले वन धाम सुख कहि न जाई ॥ मनो बिबिदामिनी बीच नव घन सुभग देखि छबि काम रति सहित लाजै । किधौं कंचन लता बीच तमाल तरु भामिनी बीच गिरिधर बिराजै । गए गृहकुंज अलिगुंज सुमनन पुंज देखि आनंद भरे सूर स्वामी । राधिका रवन युवती रवन मन हरन निरखि छबि होत मन काम कामी ॥

राग्नी वैराटी ॥ बसेरी हेली नयननिमें षटइंदु । नँदनंदन वृषभानुनंदिनी सखी सहित शोभित जगबंदु । द्वादशही पतंग शशि सौ बीस षट फणि चौबीस धातु चतुरंग छंदु ॥ द्वादशी पिकु बिंब सौ बानवै वज्र कन षट कमलनि मुसिक्यात मंदु ॥ द्वादशही मृणाल कदलो खंभ द्वादश द्वादशते मातु लैहि गिंनदु । द्वादशही सायक द्वादश चाप चंप ई खग ब्यालीस माधुरी कंदु ॥ चौबिसही चतुष्पद शोभा अति कीनी मानौ चलत चुवत करभा मकरंदु ॥ नील गौर दामिनी बिच पीत घन षोडश राजत अनूपम छबि श्रीगोकुलचंदु । साठि जलजही अरु द्वादश सरवर अंगही अंग सरस रस कंदु सूर श्याम पग तनु मनुहि वारत ललिता इति देखि भयो आनंदु ॥

राग केदारो ॥ कुंज सुहावनो भवन बांने ठनि बैठे राधावरन । वरनवरन कुसुम प्रफुल्लित शशिकी किरनि जगमगात तैसोई बहै त्रिविध पवन ॥ आलिंगन पिक मंगल गावत ध्वनि सुनि सुनि मननहि भावत देखत दम्पति विवश अयन । सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत साजत सखी वारति रति पति शयन ॥

राग बिलावल ॥ सँग शोभित वृषभानु किशोरी सारंग नैन बैन वर सारंग सारंग बदन कहै छबि कोरी ॥ सारंग अधर सधर कर सारंग सारंग जति सारंग मति भोरी । सारंग दशन बसन पुनि सारंग सारंग बसन पीतपट डोरी ॥ सारंग चरन पीठपर सारंग

कनक खंभ अहि मनहुँ चढो री । सारंग बरन पीठि पर सारंग सारंग गति सारंग कटि थोरी ॥ सारंग पुलिन रजति रुचि सारंग सारंग अंग सुभग भुज जोरी । बिहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी ॥

राग बिलावल ॥ कुंज भवन राधा मनमोहन । रति विलास करि मगन भए अति निरखत नैन लजोहन ॥ त्रियतनु को दुख दूरि कियो पिय दैदै अपनी सोंहन । बार बार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठे दोउ गोहन ॥ पीतांबर पटसों मुख पोछत हरषि परस्पर जोहन । सूर श्याम श्यामा मन मन रिझवत पीन कुचनि टक टोहन ॥

राग बिहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि बिहाई । तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई ॥ जैसोइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसोइ मन्द सुगन्ध । जैसोइ कंठ कोकिला कुहुकनि तैसोइ सुख सम्बंध ॥ रति बिहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रजधाम । सूरदास दोउ बांहां जोरी राजंत श्यामा श्याम ॥

राग ललित ॥ नवल निकुंज नवल रस दोऊ राजत हैं रंग भीने । कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुज दीने ॥ अरुन नैन कुच रेख बिराजत श्रम जल वसन पलटि तनु लीने । सूरज प्रभु पिय प्यारीको सुख निरखत सखिन सहित ललिता दृगदीने ॥

राग कान्हरो ॥ बरन बरन बादर मनहरण उदय करन बन धामते निकसत ऐसे दोऊ लागे श्याम घटा मध्य मानो दामिनि भामिनि राजति लाजति दुरिजाति कबहुँ प्रगट होत हारी तामें अरुन भए नैन सो सबै निशिके जागे ॥ मोर मुकुट पीत वसन इंद्र धनुष बीच बीच मंद मंद गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे । सूरदास प्रभु पिय प्यारीकी छबि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ बडभागे ॥

राग अडानो ॥ बांहां जोरी निकसे कुंजते प्रात रीझि रीझि कहैं बात । कुंडल झलमलात झलकत विवि गात चकचौंधीसी लागति मेरे इन नैननि आली रपटत पग नहिं ठहरात ॥ राधा मोहन बने घन चपला ज्यों चमकि चमकि मेरी पूतरीनमें समात । सूरदास प्रभुके वै वचन सुनहु मधुरमधुर अब मोहिं भूलीरी पांच और सात ॥

राग बिलावल ॥ नवल किशोर किशोरी बांहां जोरी आवत हैं रतिरंग अनुरागे । कबहुँ चरनगति डगति लगत छबि नैन बैन अलसात जम्हात ऐंडात गति आनंद निशासुख जागे ॥ बानक देखत रीझि रही हौं चंदन वंदन माल बिना गुन अंजन पीक पलट लागे । सूरदास प्रभु प्यारी राजत आवत भ्राजत बने हैं मरगजे बागे ॥

राग सारंग ॥ अरुझि रहे मुकुताहल निरवारत सोहत घूँघरवारे बार । रतिमानी सँग नँदनंदनके छूटे बंद कंचुकी टूटे हार ॥ निशिके जागे दोउ नैना ढरकि रहे चलति जोबन मदभार । सूर श्याम सँग इह सुख देखत रीझे बारंबार ॥

राग बिलावल ॥ नवल श्याम नवला श्रीश्यामा । दोउ राजत बांहांजोरी चले जात ब्रजधामा ॥ या छबिकी उपमा देवेको त्रिभुवन नाहिं अभिरामा । दामिनि घनपटतर दीवेको सकुचत कवि लिये नामा ॥ सुधा शरीर परस्पर दोऊ सुख दायक दिन जामा । सूरदास प्रभु नागर नागरि जीते रतिपति कामा ॥

राग ललित ॥ दोउ बनते ब्रजधाम गये । रति संग्राम जीति पिय प्यारी भूषन सजति नए ॥ वै ब्रज गये गृह चितते आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत । मन वाचा कर्मना एक दोउ एकौ पल न बिसारत ॥ जैसे मीन नीर नहिं त्यागत एखंडित ए पूरन । सूर श्याम श्यामा दोउ देखो इत उत कोउन अधूरन ॥

राग धनाश्री ॥ बहुरि फिरि राधा सजति शृंगार । मानहु काम हार पहिरावति अंग रण जीते सुरति अपार ॥ कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूषन उरहार । कर कंकन काजर नकबेसरि दीन्हों तिलक लिलार ॥ बीरा बिंहँसि देत अधरनिको सन्मुख सहे महार । सूर दास प्रभुके जु बिमुख भए बांधति कायर वार ॥

राग कान्हरो ॥ आज अति राधा नारि बनी । प्रतिप्रति अंग अनंग जात रसवश त्रैलोक्य धनी ॥ शोभित केश विचित्र भांति द्युति शिखि शिखंड हरनी । रची मांग सभाग रागनिधि काम धाम सरनी ॥ अलक तिलक राजत अकलंकित मृगमद अंक बनी । खुभी नजराव फूलदुति यौं मनौ दुर्द्धर गति रजनि ॥ भौंह कमान समान बान मनो हैं युग नैनअनी । नासा तिलक प्रसून बिंबधर अमल कमल बदनी ॥ चिबुक मध्य मेचक रुचि राजति बिंद कुंद रदनी । कंबु कंठ बिधि लोक बिलोकत सुन्दरि एक गनी ॥ बाँह मृणाल लाल कर पल्लव मद गज गति गवनी । पतिमन मणि कंचन संपुट कुच रोमराजि तटनी ॥ नाभि भँवर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी । कृशकटि पृथु नितंब किंकिनि युत कदलिखंभ जघनी ॥ रचि आभरण शृंगार अंग सजि रतिपति ज्यों सजनी । जीते सूर श्याम गुण कारण सुख न मुरचो लजनी ॥

राग बिलावल ॥ नँदनंदन बश कीन्हें राधा भवन गए चित नेक न लागत । श्यामा श्याम रूपमंदिर सुख अंतरते सो नेक न त्यागत ॥ जा कारण बैकुंठ बिसर रत निज अस्थल मनमें नाहिं भावत । राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि या सुखको वृन्दावन आवत ॥ बिछुरन मिलन बिरह सुख नवतन दिन दिन प्रीति प्रकाशत । सूर श्याम श्यामा बिलास रस निगम नेति नित भाषत ॥

राग टोडी ॥ निगम नेति नेति गावतहैं जाको । राधा बश कीन्हींहै ताको ॥ निशि बनधाम संग रहे दोऊ । एकै सँग नैक टरैं न कोऊ ॥ प्रात गए घर घर रस पागे । अरस परस दोऊ अनुरागे ॥ अपनी अपनी दशा बिचारैं । भाग बडे कहि बारंबारैं ॥ प्यारी फेरी अभूषण साजति । बैठी रंगमहल में राजति ॥ ज्यों चकोर चंदाको आतुर । त्यों नागरि बश गिरिधर चातुर ॥ आये उझकि झरोखे झाँक्यो । करत शृङ्गार सुन्दरी ताक्यो ॥ जालरंध्र मग नैन लगायो । सूर श्याम मनको फल पायो ॥

राग टोडी ॥ आधो मुख नीलांबर सों ढांकि बिथुरी अलकैं सोहैं ॥ एक दिशा मनो मकर चाँदिनी एक दिशा सघन बीजरी ऐसे हरि मन मोहैं ॥ कबहुँक करपल्लवनसों केश निरुवारति पाछे लै डारति निकसत शशि संपूरण सन्मुख जब जोहै ॥ सूरदास प्रभु यह छबि न्यारे दुरि देखतहैं त्रिभुवनमें उपमा सो को है ॥

राग टोडी ॥ एक कर दर्पण एक कर अचरा कजराहि सँवारति ललना मुख कालिम दूरि करतिहै उलटि भँवर फिरि कमल परत । शीशफूल अतिराजत नगनि जड्यो ताकी उपमा कहे शेष शीश मणि मनो वरत ॥ करनफूल करननिहि सँवारति अलकै निरवारति वंदन बिंदु ललाट करत । सूर श्याम दुरि देखत दर्पणको मुख यकटकते पलकहु न टरत॥

राग गुंडमलार ॥ करति शृंगार वृषभानु वारी । रहे यकटक जाल रंध्र मग हेरिकै श्याम मन भावति परमप्यारी ॥ कबहुँ बेनी रचति फूलसों मिलै कच कबहुँ रचि मांग मोति सँवारै । कबहुँ राखति शीशफूल लटकाइके कबहुँ बंदन बिंदु भाल भारै ॥ कबहुँ केसरि आड रचति दर्पण हेरि कबहुँ भ्रू निरखि रिसकरि सकोरै । निरखि अपनो रूप आपुही विवश भई सूर परछाँहको नैनजोरै ॥

राग टोडी ॥ इह सुन्दरी कहांते आई । बार बार प्रतिबिंब निहारति नागरि मन मन रही लुभाई ॥ करते मुकुर दूरि नहिं डारति हृदय माँझ कछु रिस उपजाई । देखै कहूं नैन भरि याको नागर सुन्दर कुँवर कन्हाई ॥ मेरी कहा चलै या आगे यह धौं आजु अरसते आई । सूरदास याको या ब्रजमें ऐसी को बैरनि जो ल्याई ॥

राग हमीर ॥ मुकुर छांह निरखि देहकी दशा गँवाइ । बोली धौं कौनेकी आपुनही गमन कियो ऐसीको वैरनिहै या ब्रजमेंमाइ ॥ बिथकी अंग अंग निरखि बारबार है परखि ललिता चंद्रावलिकहँ इतनी छबिपाइ । मनमें कछु कहन चहै देखतही ठठुकि रहै सूर श्याम निरखत द्युति तनु सुधि बिसराइ ॥

राग बिलावल ॥ कहति छाँहसों नागरी कोहै तू माई । मिली नहीं ब्रजगाँवमेंरी कहो कहां ते आई ॥ नाम कहाहै सुन्दरी कहि सोंह दिवाई । कहौ न मेरे साथहै मुख वचन सुनाई ॥ दिननि हमहुँ तुम सरबरी तुव छबि अधिकाई । और संग नहिं कोउ लई यह कहि डरपाई ॥ जानति हौं यह नहिं सुनी ह्यांकी अधमाई । अभरन लेत छिडाइकै ब्रज ढीठ कन्हाई ॥ सदन जाहु मेरे कहे पटु अंग छपाई । सूर श्याम जो देखिहै करिहै बरिआई॥

राग धनाश्री ॥ मैं उनके गुण नीके जानति । सदन जाहु मर्यादा जैहै कह्यो न काहे मानति ॥ अपनी दशा कहौं तो आगे जैसी बिपति बनाइ । मथुरा चली जाति दधि बेचन घेरि लई इन आइ ॥ गोरस लियो अभूषण छीन्यो तुम एक हम अनेक । सूर श्याम जो देखन पैहै करिहै अपनी टेक ॥

राग बिलावल ॥ तेरे हित को कहतिहौं मानो जिनि मानो । तू आई है आजुही उनको का जानौ ॥ ऐसो ढीठ नहीं कहूं त्रिभुवनमें माई । नारि पराई देखिकै हँसि लेत बोलाई॥ सो अपने सहजहि मिलै उनके गुण ऐसे । भूषण लेत मँगाइके औरौ गुण नैसे ॥ काहू को नहिं डरपही मथुरापति धरकै । मनको भायो करत है कबहूं नहिं हरकै ॥ तुम सुन्दरि काकी वधू घर जाहू सवारी । सूर श्याम सुनि सुनि हँसैं मनही मन भारी ॥

राग मारू ॥ नागरी चरित पिय चकित भारी। अंगकी छबि निरखि प्रथमही बिवस ह्वै प्रतिबिंब निरखत देह सुधि बिसारी ॥ एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय नागरी पास आवत लजाही। नैन ठहराइ ठहराइ पुनि पुनि रहै कहै नहिं कछू हरषत डराही ॥ पुनि उठत जागि देखै मुकुर नारि कर ललचात अंकभरि लैन लोरै। सूर प्रभु भावतीके सदा रसभरे नैन भरि भरि प्रिया रूप चोरै ॥

राग गुडमलार ॥ धन्य हरि नैन धनि रूपराधा ॥ धन्य वह मुकुर धनि धन्य प्रतिबिंब मुख धन्य दंपति रहति भेष आधा ॥ धन्य शृंगार धनि धन्य निरखनि श्याम धन्य छबि लूटि लूटत मुरारी। सूर प्रभु चतुर चतुरी नवल नागरी रहै प्रतिबिंब पर नैन जोरी ॥

राग केदारो ॥ श्यामाजू आपनो रूप देखि रीझि रीझि नेकहु दर्पण दूरि न करति। अपनी छबि जु निहारति अपनो तन मन वारति विवस ह्वै प्रतिबिंब के पांइन परति ॥ कबहूं श्यामकी सकुच मानति यह जिय अनुमानति यासों जिनि प्रीति करै एही डर डरति। सूरदास प्रभु प्यारीकी छबि निरखत न्यारे ह्वै दृष्टिन इतउत टरति ॥

राग आसावरी ॥ नाम कहा सुंदरी तुम्हारो क्यों मोसों नहिं बोलति हौ। हँसे हँसति चितय चितवति तुम तनु डोले तनु डोलति हौ ॥ परम चतुर मैं जानति तुमको मोपर भौंह मरोरति हौ। लटकति सुभग नासिका बेसरि पुनिपुनि वदन सकोरति हौ ॥ अरुन अधर चित हरन चिबुक अतिदामिनि दशन लजावति हौ। ऐसे वचन मुखकी माधुरी काहे न हमहि सुनावति हौ ॥ कहौ वचन काकी तुम घरनी काके मनको चोरति हौ। सुनहु सूर सहजहि कीधौं रिस मोसों लोचन जोरति हौ ॥

राग सोरठ ॥ कछुरिस कछु नागरि जियधरकी। यह तो जोवन रूप गहीली शंकन मानति हरकी ॥ यह विपरीत होनहै चाहत ब्रज यह आयसु मानी। यह तौ गुणनि उजागरि नागरि वैतो चतुरबिनानी ॥ कर दर्पण प्रतिबिंब निहारति चकित भई सुकुमारी। सूर श्याम अंग निरखत वाछबि मग नागरि भोरी भारी ॥

राग बिलावल ॥ सुता बिवस वृषभानुकी देखि गिरिधारी। लोचन यकटक दैरही प्रतिबिंब निहारी ॥ अपनी छबिपर आपनो तन मन धन वारै। बार बार हाहा करै त्रिय नाम न सारै ॥ बूझति ताकौ कौन तू को है री प्यारी। मैं देखी तौ आजुही सुंदरि गुणभारी ॥ त्रिभुवन में कोउ नहीं तेरी उपमा री। यह कहि मुख मन सोचई भई सौति हमाही ॥ दृष्टि परै जिनि श्यामके तबही बश ह्वै है। सोच करै पछिताति है सँगही सँग रैहै ॥ ऐसी सुंदरि नारिको जबहीं वै पैहै। दोउ भुज भरि अंकवारि कै हँसि कंठ लगैहै ॥ यह वैरिनि मोको भई धौं कहँते आई। मोतन यक टक हेरई मैं रही लजाई ॥ श्यामहि बश करि लेइगी मैं जानी माई। देखि दशा यह वामकी प्रतिबिंब भुलाई ॥ इक टक नैन टरै नहीं छबिकी अधिकाई। पिय हरषे आनँद भरे शोभा यह पाई ॥ कबहुँ चलत त्रिय पासको फिरि रहत लुभाई। सूर श्याम तृण तोरही मनमन मुसुकाई ॥

राग बिहागरो ॥ नागरि रही मुकुर निहारि। आनि औचक नैन मूँदे कमल कर गिरिधारि ॥ चौंक चकृत भई मनमें श्यामको जिय जानि। मैं डरतिही अबहिं जाको

मिले ताको आनि ॥ तबहिं तनुकी सुरति आई लख्यो तनु प्रतिछाहिं । सकुचि मनही मन दुरावति परस्पर मुसुकाहिं ॥ समुझि चितमें कहति सखि अनि विपुल लै लै नाम । सूर प्रभु उर शीश परसे बीच बेनी श्याम ॥

राग बिहागरो ॥ मूँदिरहे पिय प्यारी लोचन । अति हित बेनी उर परसाए वेष्टित भुजा अमोचन ॥ कंचन मणि सुमेर अँग दोऊ शोभा कही नजाइ । मनों पन्नगी निकसि ताबिच रही हाटक गिरि लपटाइ ॥ चपल नैन दीरघ अति सुंदर खंजनते अधिकाई । अति अतुर भष कारण धाई धरती फनन समाई ॥ मन हरषति मुख खिझति सखिन कहि चतुर चतुरई भाव । सूर श्याम मन कामनेक फल लूटि तहै एहि दाव ॥

राग रामकली ॥ करत मनकाम फल लूटि दोऊ । रहे दोउ नैन पिय मूँदि कोमल करनि बरनि नहिं सकत वह उपम कोऊ ॥ हृदय भरि वाम सुख धाम मोहन काम मनो घन दामिनि झकोर लीन्हें । महा आनंद सुखसिंधु उछलत दोऊ सूर प्रभु नागरी तुरत चीन्हें ॥

राग कान्हरो ॥ बैठी रही कुँवरि राधा हरि अँखिया मूँदि आइ । अतिहि विशाल चपल अनियारे नहिं पिय पानि समाइ ॥ खन खेलत खन ढांकत नागरि मुख रिस मन मुसुकाइ । ज्यों मणि धर मणि छांडि फिरि फन तर धरत छपाइ ॥ श्याम अंगुरि अनि अंतर राजत आतुर दुरि दरशाइ । मानो मरकतमणि पिंजरनिमें विवि खंजन अकुलाइ ॥ कर कपोल बिच सुभग तरौना शोभा बढी सुभाइ । मनो सरोज द्वै मिलत सुधानिधि विवि रवि संग सहाइ ॥ अपने पानि पकरि मोहनके कर धरि लिए छिड़ाइ । कमल चकोर चंचरि जनु द्वै शशि दिन कर जुरति सगाइ ॥ उपमा काहि देउँ को लायक देखी बहुत बनाइ । सूर दास प्रभु दंपति देखत रतिसों काम लजाइ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम भुज वाम गहि सन्मुख आने । भले जू भले मैं सखी धोखे रही रहे लोचन मूँदि अति कर पिराने ॥ दौरि पैठे भवनकहि कबहिं कीन्हों गवन नारि मन खन तुमहौ कन्हाई । सूर प्रभु हरषि प्यारी अंक भरिलई मुकुरकी कथा तब कहि सुनाई ॥

राग गूजरी ॥ नागरि यह सुनिकै मुसकानी । को जानै पिय महिमा तुम्हरी नैननि चितै लजानी ॥ मैं बैठी प्रतिबिंब विलोकति अपने सहज सुहाइ । आपुन कहाँ अचानक आये तुव गति लखी न जाइ ॥ इक सुन्दर दूजे अति नागर तीजे कोक प्रवीन । सूरदास प्रभु अबहीं तौ तुम यशुमति सुवन नवीन ॥

राग बिलावल ॥ हँसत चले तब कुँवर कन्हाई । मनके करे मनोरथ पूरण राधाके सुखदाई ॥ उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि हरष बढाई । जब आवत सुधि मुकुर बिलोकनि तब तब रहति लजाई ॥ यहि अंतर सखियन सँगलीन्हें चंद्रावलि तहँ आई । सूर तुरत राधिका सबनिको आदर करि बैठाई ॥

राग रामकली ॥ अति आदरसों बैठक दीन्हों । मेरे गृह चंद्रावलि आई अतिही आनँद कीन्हों ॥ श्याम संग सुख प्रगट्यो चाहति पुनि धीरज धरि राखति । जोइ जोइ कहति वचन

गदगदसों बार बार मुख भाषति ॥ सखी संगकी कहति राधिका आजु कहा तैं पायो । सुनहु सूर इतने आदरसों कबहूं नहीं बोलायो ॥

राग आसावरी ॥ हम तेरे नितही प्रति आवैं सुनहु राधिका गोरी हो । ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलक सलोरी हो ॥ काहे आजु हरष जिय उपज्यो कहा विभव तुम पायो हो । कीधौं आजु मिले नँदनंदन पछिलहु दुख बिसरायो हो ॥ उमँग्यो प्रेम रहत नहिं रोके सखियन कहति सुनावै हो । सूर श्याम मेरे भवन पधारे यह कहि कहि मन भावै हो ॥

राग बिहागरो ॥ आये श्याम अबहिं मेरे गेह । कही जाति न सखी मोपै मिले जौन सनेह ॥ करति अंग शृंगार बैठी मुकुर लीन्हें हाथ । आइ पाछे भए ठाढे चतुर बर ब्रजनाथ ॥ भाव इक मैं कियो भोरे ताहि कहत लजाउँ ॥ निरखि अपनी छाँह को त्रिय और जानि डराउँ ॥ जालरंध्रनि रहे ठाढे निरखि कौतुक श्याम । नैन औचक आनि मूँदे सुनहु हरिके काम ॥ देतिहौं उरहनों तुमको भये डोलत चोर । सूर प्रभु आये अचानक भवन बैठी भोर ॥

राग बिलावल ॥ श्याम संग सुख लूटति हौ । सुनि राधे रीझे हरि तोको अब उनते तुम छूटति हौ ॥ भली भई हरिके रस पागी वे तुमसों रति मानतहैं । आवत जात रहत घर तेरे अंतरही पहिचानत हैं ॥ तुम अति चतुर वे तुमते रूप गुणनि दोउ नीके हो । सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ परम भावते जीके हो ॥

राग अडानो ॥ भलेही मेरे लालन आये री आजु मैं फूली अंग न समाई । गाऊं बजाऊं रसप्रेम भरि नाचौं तन मन धन न्यवछावर करि डारों एहि विधि करति बधाई ॥ धनि धनि भाग धनि धनि री सुहाग धनि अनुराग धनि धन्य कन्हाई । धनि धनि रैनि धनि वनि दिन जैसो आजु धनि घरी धनि पल धनि धनि धनि माई ॥ धनि गेह धनि देह धनि री शृंगार वह धनि प्रतिबिंब धनि रही मैं भुलाई । धनि धनि सूर प्रभु धनि अवलोकनि धनि नैन मूँदे कर धनि धनि पिय सुखदाई ॥

राग ईमन ॥ बनि बनि आवत हैं लाल भाग बडेरो मेरे । दरश देखनको अति सुख उपजत और सन्मुख जब हेरे ॥ तब मैं हँसति जब मंद मुसुकात वै आनंद मानि पिय आवत नेरे । सूरदास प्रभुकी सुरति है महारसाल टरति न सांझ सबेरे ॥

राग ईमन ॥ श्याम अचानक आए री । पाछेते लोचन दोउ मूँदे मोको हृदय लगाए री ॥ लहनो ताके जाके आवै मैं बड भागिनि पाए री । यह उपकार तुम्हारो सजनी रूसे कान्ह मिलाए री ॥ ल्याइ तुरत जादिन तू हरिको मैं अपराध क्षमाए री । सूरदास प्रभु नैननि लागे भावत नाहिं बिसराए री ॥ अथ नैननि समयके पद ॥

राग टोडी ॥ हरि अनुराग भरी ब्रजनारी । लोक सकुच कुलकानि बिसारी ॥ सासु नदँन हारी दैगारी । सुनत नहीं कोउ कहत कहारी ॥ सुत पति नेह जगत इह जान्यो । ब्रजयुवती तिनुकासो मान्यो ॥ काचो सूत तोरिसो डारचो । उरग कंचुकी फिरि न निहारचो ॥ ज्यों जलधार फिरे पुनि नाहीं । जैसे नदी समुद्र समाहीं ॥ जैसे सुभट खेत

चढि धावै जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥ ऐसे भजो नंदनंदनकी । सकुची नाहिं त्यागत गृह जनको ॥ सूरज प्रभु सब घोषकुमारी । ज्यों गज पंक न सकैं निवारी ॥

राग सोरठ ॥ एहि अंतर तेहि खोरिही नँदनंदन आए । सखिन सहित ब्रजनागरी पल बिनु टकलाए ॥ मोरमुकुट शिरसोहई श्रवणनि वर कुंडल । ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल ॥ तरुनि गँई चकचौंधिकै नाहिं नैन थिराही॥ सूर श्याम छबि निरखिकै युवती भरमाही ॥

राग सोरठ ॥ देखो श्याम अचानक जात ॥ ब्रजकी खोरि अकेले निकसे पीतांबर कटिपर फहरात ॥ लटकत मुकुट मटक भौंहनि की चटकत चलत मंद मुसुकात । पग द्वैजात बहुरि फिरि हेरत नैन सैन देके नँदतात ॥ निरखत नारि निकर विथकित भए दुख सुख व्याकुल झुलति सिहात।सूर श्याम अँगअंग माधुरी चमकिचमकि चकचौंधत गात॥

राग सोरठ ॥ सघन कल्पतरु तर मनमोहन । दक्षिण चरनपर दीन्हें तनु त्रिभंग मृदु जोहन ॥ मणिमय जडित मनोहर कुंडल शिखी चंद्रिका शीश रही फवि । मृगमद तिलक अलक घुँघरारी उर बनमाल कहौं जो वै छबि ॥ तनु घन श्याम पीत पट शोभित हृदय पदिक की पांति दिपत द्युति । वन तनु धात विचित्र विराजित वंशी अधरनि धरे ललित गति ॥ कारज मुद्रिका कर कंचन छबि कटि किंकिणि नूपुर पग भ्राजत । नख शिख कांति विलोकि सखी री शशि औ भान मगन तनु लाजत ॥ नख शिख रूप अनूप विलोकति नटवर भेष धरे जु ललित अति । रूपराशि यशुमतिको ढोंटा वरणि सकै नाहिं सूर अलप मति ॥

राग सोरठ ॥ लोचन हरत अंबुज मान । चकित मन्मथ शरन चाहत धनुष तजि निज बान ॥ चिकुर कोमल कुटिल राजत रुचिर विमल कपोल । नील नलिन सुगंध ज्यों रस थकित मधुकर लोल । श्याम उर पर परम सुंदर सजल मोतिन हार । मनो मर्कत शैलते बहिचली सुरसरि धार ॥ सूर कटि पट पीत राजत सुभग छबि नँदलाल । मनो कनकलता अवलि बिच तरल विटप तमाल ॥

राग रामकली ॥ मोहन माई री हठ करि मनहि हरत । अंग अंग प्रति और और गति अतिहि छबि जु धरत ॥ सुंदर सुभग श्याम कर दोऊ तिनसों मुरली अधर धरत । राजत ललित नील कर पल्लव उभै उरग मनो सुभट लरत ॥ कुंडल मुकुट भाल भ्रुव लोचन मनों शरद शशि उदै करत ॥ सूरदास प्रभु तनु अवलोकत नैन थकै इत उत न टरत ॥

राग रामकली ॥ मन तो हरिहि हाथ बिकानो । निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो ॥ नैननि साँटि करी मिलि नैननि उनहींसों रुचि मानो । बहुत जतन करि हौं पचिहारी इतको नहीं फिरानो । सहज सुभाइ ठगोरी डारी शीश फिरत अरगानो ॥ सूरदास प्रभु रसवश गोपी बिसरि गयो तनु मानो ॥

राग सोरठ ॥ मनतो गये नैन हैं मेरे । अब इनसों वहि भेद कियो कछु एउ भय हरिके चेरे ॥ तनिक सहाय रहेहैं मोको येऊ दिन मिलि घेरे । क्रम क्रम गए कह्यो नहिं काहू श्याम संग अरुझे रे ॥ ज्यों दोवाल गिले परकारक डारतही युग डेरे । सूर लटकि लागे अँग छबि पर निठुर न जात उखेरे ॥

राग बिहागरो ॥ सजनी मनहिं अकाश कियो । आपुन जाइ भेद करि हमसों इन्द्रिन्ह बोलि लियो ॥ मैं उनकी करनी नहिं जानी मोसों वैर कियो ॥ जैसे करि अनाथ मोहिं त्यागी ज्यों त्यों मानि लियो ॥ अब देखौ उनकी निठुराई सो शुनि मरति हियो । सूरदास न नैन रहेहैं तिनहूँ कियो वियो ॥

राग बिहागरो ॥ मेरे जिय इहई सोच परचो ॥ मनके ढंग सुनो री सजनी जैसे मोहिं निदरचो ॥ आपुन गयो पंच सँग लीन्हें प्रथमहि इहै करचो । मोसों वैर प्रीति करि हरिसों ऐसी लरनि लरचो ॥ ज्यों त्यों नैन रहे लपटाने तिनहुँ भेद भरचो । सुनहु सूर अपनाइ इनहुँको अबलौं रह्यो डरचो ॥

राग गौरी ॥ मन बिगरचो ए नैन बिगारे । ऐसो निठुर भयो देखौ री तब ए मोते टरत न टारे ॥ इन्द्री लई नैन अब लीन्हें श्यामहि गीधे भारे । ए सब कहौ कौनहैं मेरे खानाजाद विचारे ॥ इतनेते इतनेमें कीन्हें कैसे आजु बिसारे । सुरहु सूर जे आप स्वारथी ते आपुनही मारे ॥

राग गौरी ॥ आपु स्वारथी की गति नाहीं । विधिना ह्यां काहे अवतारे युवति शुनि पछिताहीं ॥ जनमें संग संग प्रतिपाले कंगहि बडेभए । जब उनको आसरो कियो जिय तबहीं छोडि गए ॥ ऐसेहैं ए स्वामि कारजी जिनको मानत श्याम । सुनहु सूर अब परगट कहिये ऐसे उनके काम ॥

राग कान्हरो ॥ हमते गए उनहुते खोवैं । ह्यांते खेदि देहिं वै हम तन हम उन तन नाहिं जौवैं ॥ जैसी दशा हमारी कीन्हीं तैसे उनहि विगोवैं । भटके फिरे द्वार द्वारिनि सब हम देखे वै रोवैं आवहु इहै मतोरी करिए निधरक वै सुख सोवैं । सूर श्यामको मिले जाइकै कैसे उनको धोवैं ॥

राग धनाश्री ॥ मनके भेद नैन गए माई । लुब्धे जाइ श्यामसुन्दर रस करी न कछु भलाई । जबहीं श्याम अचानक आए इकटक रहे लगाई । लोक सकुच मर्यादा कुलकी छिनहीमें बिसराई ॥ व्याकुल फिरति भवन जहँ तहँ तूल आक उधराइ । देह नहीं अपनीसी लागति यह है मनो पराइ ॥ सुनहु सखी मनके ढँग ऐसे ऐसी बुद्धि उपाइ । सूर श्याम लोचन वश कीने रूप ठगोरी लाइ ॥

राग नट ॥ नैन न मेरे हाथ रहे । देखत दरश श्यामसुंदरको जलकी ढरनि बहे ॥ वह नीचेको धावत आतुर ऐसेहि नैन भए। वह तौ जाइ समात उदधिमेंए प्रति अंग रए ॥ वह अगाध कहुँ वार न पार न एउ शोभा नहिं पार।लोचन मिले त्रिवेनी ह्वैके सूरसमुद्र अपार॥

राग बिहागरो ॥ मनते ए अति ढीठ भए । वे तो आइ बोलते कबहूं एजु गए सुगए ॥ ज्यों भुवंग काँचरी बिसारत फिरि नहिं ताहि निहारत । तैसेहि जाइ मिले इकटक ह्वै डरत लाज निरवारत ॥ इंद्रिन सहित मिल्यो मन तबहीं नैन रहे मोहिं शालत । सूर श्याम सँगही सँग डोलत औरनिके घर घालत ॥

राग सोरठ॥ लोचन गए निदरिके मोकों । तोहुको व्यापी री माई कहा कहति है मोकों ॥ मैं आई दुख कहन आपनी तेरे दुख अधिकारी । जैसे दीन दीनसों याचै वृथा होइ श्रम भारी ॥ मन अपनो वश कैसे हुँ कीजै याहीते सचुपावै । सूरदास इंद्रिन समेत अरु लोचन अबहिं मँगावै ॥

राग गौरी ॥ नैना नीके उमहि रहे । मन जब गयो नहीं मैं जान्यो ए दोउ निदरि गहे ॥ एतौ भए भावते हरिके सदा रहत इनमाहीं । कर मीडति शिर धुनति नारि सब यह कहि कहि पछिताहीं ॥ मूरखके ज्यों बुद्धि पाछिली हमहूं करि दियो आगे । अब तौ मिले सूरके प्रभुको पावति हौ अब मांगे ॥

राग पूरवी ॥ नैना नाहिं आवैं तुव पास । कैसेहूं करि निकसे ह्यांते अति ही भए उदास ॥ अपने स्वारथके सब कोई मैं जानी यह बात । यह शोभा सुख लूटि पाइकै अब वै काहि पत्यात ॥ षटरस भोजन त्यागि कहौको रूखी रोटी खात । सूरश्याम रसरूपमाधुरी एतेपर न अघात ॥

राग जैतश्री ॥ नैन परे रस श्याम सुधामें । शिव सनकादि ब्रह्मनारदमुनि ए लुब्धे हैं जामें ऐसो रस विलास नाना विधि खात खवावत डारत । सुनहु सखी वैसी निधि तजिकै क्यों वै तुमहि निहारत ॥ जिनि वह सुधापान मुख कीन्हों ते कैसे कटु देखत । त्यों ए नैन भए गर्बीले अब काहे हम लेखत ॥ काहेको अपसोच मरति हौ नैन तुम्हारे नाहीं । मिले जाइ सूरजके प्रभुको इत उत कहूं न जाहीं ॥

राग भैरव ॥ नैन परे हरि पाछेरी । मिले अतिहि अतुराइ श्यामको रीझे नटवरकाछे री॥ निमिष नहीं लागत इकटकही निशि बासर नहिं जानत री । निरखत अंग अंगकी शोभा ताही पर रुचि मानत री॥ नैन परे परवशरी माई उनको इनि बश कीन्हे री। सूरज प्रभु सेवा करि रिझए उन अपने करि लीन्हे री ॥

राग कल्याण ॥ नैना हरि अंगरूप लुब्धे री माई । लोकलाज कुलकी मर्यादा बिसराई ॥ जैसे चंदा चकोर मृगीनाद जैसे । कंचुरि ज्यों त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे॥सरिताप्रवाह सागरको धावै । कोऊ श्रम कोटि करै तहां फिरि न आवै ॥ तनुकी गति पंगु किए सोचति ब्रजनारी । तैसेई मिले जाइ सूरज प्रभु ढारी ॥

राग कल्याण ॥ लोचन भए श्याम वश्य कहा करौं माई री । जितही वै चलत तितहि आपु जात धाई री ॥ मुसुकनि दै मोल लिय किए प्रगट चेरी । जोइ जोइ वै कहत करत रहत सदा नेरी ॥ उनकी परतीत श्याम मानत नहिं अजहूं । अलकनि रजु बांधि धरे भाजै जिनि कबहूं ॥ मन लै इन उनहि दयो रहत सदा सँगही । सूर श्याम रूप राशि रीझे वा रँगही ॥

राग बिहागरो ॥ नैना भए बजाइ गुलाम । मन बेच्यो लै वस्तु हमारी सुनहु सखी ए काम ॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन माँगि पठायो श्याम । बेचि दिये निधरक हरि लीन्हें मृदुमुसुकनि दै दाम ॥ यह वाणी जहँ तहँ परकाशी मोल लिएको नाम । सुनहु सूर यह दोष कौनको यह तुम कहौ न वाम ॥

राग मारू ॥ कियो वह भेद मन और नाहीं । पहिलेही जाइ हरिसों कियो भेद यहि और वे काज कासों बताहीं ॥ दूसरे आइकै इन्द्रियनि लै गयो ऐसे अपदाँव सब इनहिं कीन्हें । मैं कह्यो नैन मोको संग देहिंगे इन्हहुँ लै जाइ हरि हाथ दीन्हें ॥ जो कहूँ कछू सो मनहिंसों कहि रहैं इहां कछु श्यामको दोष नाहिं । सूर प्रभु नैन लै मोल अपवश किए आपु बैठे रहत तिनहिं माहि ॥

राग बिलावल ॥ कहा भए जो ऐसे लोचन मेरे तो कछु काज नहीं । मैं तो व्याकुल भई पुकारति वै सँग लै जु गए मनहीं ॥ त्रिभुवनमें अति नाम जगायो फिरत श्याम सँगही सँगहीं । अपने सुखको कहा चाहिये बहुरि न आए मोत नहीं ॥ सो सुपूत परिवार चलावै ए तौ लोभी धृग इनहीं । एते पर ए सूर कहावत लाज नहीं ऐसे जनहीं ॥

राग कान्हरो ॥ इन बातन कहुँ होत बड़ाई । लूटत हैं छवि राशि श्यामकी मनो परी निधि पाई ॥ थोरेहीमें उघरि परैंगे अतिहि चले इतराई । डारत खात देत नहिं काहू बोछे घर निधि आई॥ यह संपति हैं तिहूं भुवनकी सबै इनहि अपनाई । धोखे रहत सूरके स्वामी काहू नहीं जनाई ॥

राग बिलावल ॥ नैन परे हैं बहु लूटनिमें मैं नोखे निधि पाए । छोह लगत वह समुझिकै इन हमहिं जिवाए ॥ इनके नेक दया नहीं हम पर रिस पावें । श्याम अक्षय निधि पाइकै तउ कृपण कहावैं ॥ ऐसे लोभी ए भए तब इनहि न जान्यो । संगहि संग सदा रहैं अतिहित करि मान्यो ॥ जैसी हमको इन करी यह करै न कोई । सूर अनल कर जो गहे डाढै पुनि सोई ॥

राग कान्हरो ॥ नैन आपने घरके री । लूटन देहु श्याम अँग शोभा जो हमपर वै तरकेरी ॥ यह जानी नीके कर सजनी नहीं हमारे डरके री । वै जानत हम सारि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधरके री ॥ ऐसी रिस आवत है उन पर करैं उनहि घर घरके री । सूर श्यामके गर्व भुलाने वै उनपर हैं ढरके री ॥

राग गौरी ॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो । मो बरजत उठि धाए बहुरि कियो नहिं केरो ॥ निकसे जल प्रवाहकी नाईं पाछे फिरि न निहारयो । भवजंजाल तोरि तरुवनके पल्लव हृदय विदारयो ॥ तबहीते यह दशा हमारी जब एऊ गए त्यागी । सूरदास प्रभुसों वे लुब्धे ऐसे बड़े सभागी ॥

राग टोड़ी ॥ इन नैननि मोहिं बहुत सतायो । अबलौं कानि करी मैं सजनी बहुतै मूंड चढ़ायो ॥ निदरे रहत गहे रिस मोसों मोहीं दोष लगायो । लूटत आपुन श्री अँग शोभा मनो निधनि धन पायो ॥ निशहू दिन ए करत अचगरी मनहि कहा धौं आयो । सुनहु सूर इनको प्रतिपालत आलस नैक न आयो ॥

राग रामकली ॥ लोचन भए श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मो तन फेरि न हेरे ॥ हाहा करत मरत हरि चरणन ऐसे वश्य भए उनहीं । उनको वदन विलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललित त्रिभंगी छवि पर अटके फटके मोसों तोरि । सूर दशा यह मेरी कीन्ही आपुन हरिसों जोरि ॥

राग धनाश्री ॥ हरि छवि देखि नैन ललचाने । इकटक रहे चकोर चन्द ज्यों निमिष बिसारि ठहराने ॥ मेरो कह्यो सुनत नाहिं श्रवनन लोकलाज न लजाने । गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहु नहीं सकाने ॥ जैसे सुभट जात रण सन्मुख लडत न कबहुं पराने । सूरदास ऐसी इन कीनी श्याम रंग लपटाने ॥

राग गुंडमलार ॥ नैन तो कहेमें नहीं मेरे । बारहीं बार कहि हटकि राखति निकसि गये हरि सँग नाहिं रहे घेरे ॥ ज्यों व्याध फंदते छूटत खग उडि चलत तहां फिरि तकत नाहिं

त्रास माने । जाइ वन द्रुमनिमें दुरत योंही गये श्याम तनु रूप बनमें समाने ॥ पालि इतने किए आज उनके भए मोल करि लए अब श्याम उनको । सूर यह कहति ब्रजनारि व्याकुल प्रेम नैन लै गये पछितात मनको ॥

राग जैतश्री ॥ नैना हाथ न मेरे आली । इत ह्वै गये ठगोरी लावत सुन्दर कमल नैन बनमाली ॥ वे पाछे ए आगे धाये मैं बरजत बरजत पचिहारी । मेरे तन ह्वै फेरि न चितए आतुरता वह कहौं कहा री ॥ जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसेहि गये फेरि नहिं हरयो । सूर श्याम रस रसे रसीले पय पानीको करै निबेरयो ॥

राग रामकली ॥ श्याम रंग रंग रँगीले नैन । धोए छुटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पघिलि ह्वै मैन ॥ औचकही आँगन ह्वै निकसे दै गये नैननि सैन । नख शिख अंग अंगकी शोभा निरखि लजत शत मैन ॥ ए गीधे नहिं टरत वहांके मोसों लैन न दैन । सूरज प्रभुके सँग सँग डोलत नेकहु करत न चैन ॥

राग ईमन ॥ नैन भए हरिहीके री । जबते गए फेरि नहिं चितए ऐसे गुण इनहीके री ॥ और सुनौ उनके गुण सजनी सोऊ तुमहिं सुनाऊं री । मोसों कहत तुहूं नहिं आवै सुनत अचंभो पाऊं री ॥ मन भयो ढीठ इनहिके कीन्हे ऐसे लोन हमारी री । सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बड़े निकामी री ॥

राग बिलावल ॥ नैन लुब्धे रूपको अपने सुख माई । अपराधी अपस्वारथी मोको बिसर ई ॥ मन इन्द्री तहँई गए कीन्ही अधमाई । मिले धाइ अकुलाइकै मैं करति लराई ॥ अतिहि करी उन अपतई हरिसों समताई । वै इनसों सुख पाइकै अति करत बड़ाई ॥ अब वै भरुहाने फिरैं कहुँ डरत न माई । सूरज प्रभु मुँह पाइकै भए ढीठ बजाई ॥

राग सारंग ॥ ढीठ भए ए डोलत हैं । मौन रहत मोपर रिसपाई हरिसों खेलत बोलत हैं ॥ कहा कहौं निठुराई उनकी सपनेहुँ ह्यां नहिं आवतहैं । लुब्धे जाइ श्याम सुन्दरको उनहीके गुण गावत हैं । जैसे उन मोको पर तेजी कबहूं फिरि न निहारत हैं । सूर भलेको भलो होइगौ वे तो पंथ बिगारत हैं ॥

राग बिलावल ॥ सुन सजनी तू भई अयानी । या कलियुगकी बात सुनाऊं मैं तोहिं जानति बड़ी सयानी ॥ जो तुम करौ भलाई कोटिक सो नहिं मानै कोई । जे अन भले बड़ाई ताकी मानै जोई सोई ॥ प्रगट देखि कहुँ दूरि बताऊं हमहुं श्यामको ध्यावैं । सुनहु सूर सब व्याकुल डोलैं नैन तुरत फल पावैं ॥

राग बिलावल ॥ नैन करैं सुख हम दुख पावैं । ऐसो को परवेदन जानै जासों कहि जु जनावैं ॥ ताते मौन भलो सबहीते कहिकै मान गँवावैं । लोचन मन इन्द्री हरिको भजि तजि हमको रिस पावैं ॥ वै तौ गए आपने करते वृथा जीव भरमावैं । सूर श्याम हैं चतुर शिरोमणि तिनसों भेद सुनावै ॥

राग धनाश्री ॥ इन नैननिकी कथा सुनावैं इनको गुण अवगुन हरि आगे तिन लै भेद जनावैं ॥ इनसों तुम परतीत बढ़ावत एहैं अपने काजी । स्वारथ मानि लेत रति करिकै बोलत हांजी हांजी ॥ ए गुण नहिं मानत काहूको अपने सुख भरि लेत । सूरज प्रभु ए ऐसे हैं सब फिरि पाछे दुख देत ॥

राग सोरठ ॥ ये नैना यों आहिं हमारे । इतनेते इतने हम कीन्हें बारेते प्रतिपारे ॥ धोवति पुनि अंचल लै पोछति आंजति इनहिं बनाई । बडे भए तबलो न मानि यह जहं तहं चलत भगाई ॥ ऐसे सेवक कहां पाइहौ इहै कहैं हरिआगे । ए अब ढीठ भये ह्यां डोलत इनहिं बनै परित्यागे ॥ सूर श्याम तुम त्रिभुवननायक दुखदायक तुम नाहीं ॥ ज्यों त्योंकरि यह हमहि मिलावहु इहै कहति बलि जाहीं ॥

राग सूही ॥ नैननिको अब नाहीं पत्याउँ । बहुरचो उनको बोलति हौं तुम हाइ हाइ लीजै नहिं नाउँ ॥ अब उनको मैं नाहिं बसाऊं मेरे उनको नाहीं ठाऊं । ब्याकुल भई डोलि हौं ऐसेहि वे जहँ रहैं तहां नहिं जाऊँ ॥ खाइ खवाइ बड़े जब कीन्हें बसे जाइ अब औरहि गाऊँ । अपनो कियो फलहि पावैंगे मैं काहे उनको पछिताऊँ । जैसे लोन हमारो मान्यो कहा कहौ कहि काहि सुनाउं । सूरदास मैं इन बिन रैहौं कृपा करैं उनको शरमाउँ ॥

राग सूही ॥ सतर होति काहको माई । आए नैन धाइकै लीजै आवत अब ह्यां वै बेहाई ॥ जिनि अपनो घर डर परित्याग्यो तौ उनि वहां कछू निधि पाई । परे जाइ व रूप लूटिमें जानति हौं उनकी चतुराई ॥ बिन कारण तुम शोर लगावति बृथा होति कापर रिसयाई । सूर श्याममुख मधुर हँसनिपर बिवस भए वै तन बिसराई ॥

राग विहागरो ॥ लोचन आइ कहा ह्यां पावैं । कुंडलझलक कपोलनि रीझे श्याम पठाए उनहीं आवैं ॥ जिनि पायो अमृत घट पूरण छिनु छिनु खात अघात । ते तुमसों फिरिकै रुचि मानैं कहति अचंभव बात ॥ रस लंपट वै भए रहतहैं ब्रज घरघर यह बानी । हमहूं को अपराध लगावहिं एऊ भई देवानी ॥ लूटहिं ए इंद्रीमन मिलिकै त्रिभुवन नाम हमारो । सूर कहां हरि रहत कहां हम यह काहे न बिचारो ॥

राग धनाश्री ॥ नैननते यह भई बडाई । घरघर इहै चवाव चलावत हमसों भेट न माई ॥ कहां श्याम मिलि बैठी कबहूं कहनावति ब्रज ऐसी । लूटहिं ए उपहास हमारो यह तौ बात अनैसी ॥ एई घर घर कहत फिरत हैं कहा करैं पचिहारी । सूर श्याम यह सुनत हँसतहैं नैन किये अधिकारी ॥

राग सारंग ॥ नैन भए अधिकारी जाइ । यह तुम बात सुनी सखि नाहीं मन आए गए भेद बताइ ॥ जब आवैं कबहूं ढिग मेरे तबतब इहै कहत हैं आइ ॥ हमहीं लै मिलयो हम देखत श्यामरूपमें गए समाइ ॥ अब वोऊ पछितात बात कहि उनहूंको वै भए बलाइ । अपनो कियो तुरत फल पायो जैसी मन कीन्हीं अधमाइ ॥ इंद्री मन अब नैनन पाछे ऐसे उन वश किए कन्हाइ । सूरदास लोचनकी महिमा कहा कहैं कछु कही न जाइ ॥

राग रामकली ॥ जबते हरि अधिकार कियो । तबहींते चतुरई प्रकाशी नैनन अतिहि कियो ॥ इंद्रिनपर मन नृपति कहावत नैनन इहै डरात । काहेको मैं इनहि मिलाए जानि बूझि पछितात ॥ अब सुधि करन हमारी लागे उनकी प्रभुता देखि । हियौ भरत कहि इनहि ढराऊं वे इकटक रहे पेखि ॥ अबमानी हौं दोष आपनी हमहीं बेच्यो आइ । सूरदास प्रभुके अधिकारी एई भए बजाइ ॥

राग बिलावल ॥ यद्यपि नैन भरत ढरि जात । इकटक नैक नहीं कहुँ टारत तृप्ति न होत अघात ॥ अपनेही सुख भरत निशादिन यद्यपि पूरणगात । लैलै भरत आपने भीतर औरहि नहीं पत्यात ॥ जोइ लीजै सोई है अपनो जैसे चोर भगात । सुनहु सूर ऐसे लोभी धनि इनको पितु अरु मात ॥

राग सोरठ ॥ नैना अतिही लोभ भरे । संगहि संग रहत वै जहँ तहँ बैठत चलत खरे ॥ काहूकी परतीति न मानत जानत सबहिन चोर । लूटत रूप अखूट दामको इयामवश्य यो भोर ॥ बडे भाग मानी यह जानी कृपिण न इनते और । ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हों कह लैहै कहँ ठौर ॥ आपन लेहिं औरहू देते यश लेते संसार । सूरदास प्रभु इनहि पत्याने को कहै बारहि बार ॥

राग कान्हरो ॥ ऐसे आप स्वारथी नैन । अपनोई पेट भरत हैं निशिदिन और न लैन न दैन ॥ वस्तु अपार परचो वोछे कर ए जानत घटि जैहै । को इनसों समुझाइ कहै यह दीन्हेही अधिकैहै ॥ सदा नहीं रैहो अधिकारी नाउँ राखि जो लेते । सूर इयाम सुख लूटै आपुन औरनहूको देते ॥

राग बिलावल ॥ जे लोभी ते देहिं कहारी । ऐसे नैननहीं मैं जाने जैसे निठुर महा री ॥ मन अपनो कबहूं बरु ह्वैहै ए नाहिं होहिं हमारे । जबते गए नंदनंदन ढिग तबते फिर न निहारे ॥ कोटि करौं वै हमहिं न मानैं गाधे रूप अगाध ॥ सूर इयाम जो कबहूं त्रासैं रहै हमारी साध ॥

राग नट ॥ नैना भये घरके चोर । लेत नाहिं कछु बनै इनसों देखि छबि भए भोर ॥ नहीं त्यागत नहीं भागत रूप जाग प्रकाश । अलक डोरनि बांधि राखे तजौ उनकी आश॥ मैं बहुत करि बरजि हारी निदरि निकसे हेरि । सूर इयाम बँधाइ राखे अंगके छबि घेरि ॥

राग बिलावल ॥ भली करी उन इयाम बँधाए । बरज्यो नहीं करचो उन मेरो अति आतुर उठि धाए ॥ अल्पचोर बहुमाल लुभाने संगी सबन धराए ॥ निदरि गए तैसो फल पायो अब वै भए पराए ॥ हमसों इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि बुझाए । सूर गए हरि रूप चुरावन उन अपवश करि पाए ॥

राग बिहागरो ॥ लोचन चोर बांधे इयाम । जातही उन तुरत पकरे कुटिल अलकनि दाम ॥ सुभग ललित कपोल आभा गीधे दाम अपार । और अंग छबि लोग जागे अब नहीं निरवार ॥ संग गए वै सबै अटके लटक अंग अनूप । एक एकहि नहीं जानत परे शोभा कूप ॥ जो जहां सो तहां डारचो नेक तनु सुधि नाहिं । सूर गुरुजन डरहि मानत इहै कहि पछिताहिं ॥

राग जैतश्री ॥ लोचन भए पखेरू माइ । लुब्धे इयाम रूप चाराको अलक फंद परे जाइ । मोर मुकुट टाटी मानो यह बैठनि ललित त्रिभंग । चितवनि ललित लकुट लामा लट कांपै अलक तरंग ॥ दौरि गहनि मुख मृदु मुसुकावनि लोभ पींजर डारे । सूरदास मन व्याध हमारो गृह बनते जु बिसारे ॥

राग गुंडमलार ॥ कपट कन दरश खग नैन मेरे । चुनत निरखनि तुरत आपुही उडि मिले परचो चारा पेट मंत्र केरे ॥ निरखि सुंदर वदन मोहनी शिर परी रहे एकटक निरखि डरत नाहीं । लाज कुलकानि वश फेरि आवत कबहुँ रहत नहिं नेकहू उतहि

जाहीं ॥ मृदु हँसनि व्याध पढि मंत्र बोलनि मधुर श्रवण ध्वनि सुनत इत कौन आवैं। सूर प्रभु श्यामछवि धामहीमें रहैं गेह बन नाम मनते भुलावैं ॥

राग मारू ॥ नैन खग श्याम नीके पठाए । किये वश कपट कनमंत्रके डारि कै लए अपनाइ मनो इन पठाए ॥ बेगिधे उनहिंसों रूपरस पान करि नेकहू टरत नहिं चीन्हि लीन्हें । गये हमको त्यागि बहुरि कबहूं न फिरे केचुरी उरग ज्यों छोंडि दीन्हें ॥ एक ह्वै गए हरदी चून रंगज्यों कौनपै जात निरुवारि माई। सूर प्रभु कृपामय कियो उन वास रुचि निज देह बन सघन सुधि भुलाई ॥

राग बिहागरो ॥ नैना ऐसे हैं विश्वासी । आप काज गौने हमको तजि तबते भए निरासी ॥ प्रतिपालन करि बडे कराये जानि आपनो अंग । निमिष निमिषमें धोवति आंजति सिखए भाव तरंग ॥ हम जान्यो हमको ये ह्वै हैं ऐसे गए पराई । सुनहु सूर बरजतही बरजत चेरे भए बजाई ॥

राग जैतश्री ॥ नैना भए प्रगटही चेरे । ताको कछु उपरकार न मानत हम ए किए बडेरे ॥ जो बरजों यह बात भली नहिं हँसत न नेक लजात । फूले फिरत सुनावत सबको एते पर न डरात ॥ इहौ कही हमको जिनि छाँडौ तुम बिनु तनु बेहाल । तमकि उठे यह बात सुनतही गीधे गुण गोपाल ॥ मुकुट लटक भौंहनकी मटकनि कुंडल झलक कपोल। सूर श्याम मृदु मुसुकनि ऊपर लोचन लीन्हें मोल ॥

राग सोरठ ॥ लोचन भृंग भए री मेरे । लोक लाज बन घन बेली तजि आतुर ह्वै जु गडेरे ॥ श्याम रूप रस बारिज लोचन तहां जाइ लुब्धे रे । लपटे लटकि पराग बिलोकनि संपुट लोभ परे रे ॥ हँसनि प्रकाश विभास देखिकै निकसत पुनि तहां बैठत । सूर श्याम अंबुज कर चरणनि जहँ तहँ भ्रमि भ्रमि पैठत ॥

राग रामकली ॥ लोचनभृंगको सरस पागे । श्याम कमलपदसों अनुरागे ॥ सकुचकानि बनवेली त्यागी । चले उडाइ सुरति रति पागी ॥ मुक्तिपराग रसहि इन चाख्यो । नव सुख फूल रसहि इति नाख्यो ॥ इतने लोभी और न कोई । जो पटतर दीजै कहि सोई ॥ गए तबहिते फेरि न आए । सूर श्याम बेगहि अटकाए ॥

राग सारंग ॥ नैना पंकज पंग खचे । मोहन मदन श्याम मुख निरखत भ्रूवबिलास रचे ॥ बोलनि हँसनि विराजमान अति श्रुति अवतंस सचे । जनु पिनाककी आशलगि शशि सारंग शरन बचे ॥ चंद चकोर चातक ज्यों जलधर हररिपु हरषि नचे ॥ पुहुपवास लै मधुप शैलवन धनु करि भवन रचे ॥ परमप्रीतिके कुंड महागज काढत बहुत पचे। सूरदास प्रभु तुम्हारे दरशको मुनिजन मानि मचे ॥

राग सारंग ॥ नैना बींधे दोऊ मेरे । मानौ परे गयंद पंकमाहिं महासबल बलकेरे ॥ निकसत नहीं अधिक बल कीने जतन न बने घनेरे । श्यामसुन्दरके दरश परसमें इत उत फिरत न फेरे ॥ लंपट लवनि अटक नहिं मानति चंचल चपल अरेरे । सूरदास प्रभु निगम अगम सुनि सुनि सुमिरत बहुतेरे ॥

राग धनाश्री ॥ मेरे नैन कुरंग भए । जोबन बनते निकसि चले ए मुरली नाद रए ॥ रूप व्याध कुंडल दुति ज्वाला किंकिनि घंटा घोष । व्याकुल ह्वै एकहि टक देखत गुरु-

जन तजि सतोष ॥ भौंह कमानन शर साधनि मारनि चितवनि चार । ठौर रहैं नहिं टरत सूर वै मंद हँसनि शरधार ॥

राग रामकली ॥ नैन भए वश मोहनके । ज्यों कुरंग वश होत नादके टरत नहीं ता गोहनते । ज्यों मधुकर वश कमलकोशके ज्यों वश चन्द चकोर ॥ तैंसेहि ए वश भये श्यामके गुडी वश्य ज्यों डोर ॥ ज्यों वश स्वातिबून्दके चातक ज्यों वश जलके मीन । सूरजप्रभुके वश्य भए ए छिनु २ प्रतिजु नवीन ॥

राग टोडी ॥ ऐसे वश्य ए काहुहि कोउ । जैसे वश नँदनंदनको ए नैना मेरे दोउ ॥ चन्द्रचकोर नहीं सरि इनकी एको पल न बिसारत । नाद कुरंग कहा पटतर इन व्याध तुरतही मारत ॥ ए वश भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीन्हों । सूरदास प्रभु त्रिभुवनके पति ते इन वश करि लीन्हों ॥

राग जैतश्री ॥ ए नैना अपस्वारथके । और इनहिं पटतर क्यों दीजै वे हैं सब परमा रथके ॥ बिना दोष हमको परित्याग्यो सुख कारण भए चेरे । मिले धाइ बरज्यो नहिं मान्यों तके न दाबि न डेरे ॥ इनको भलो होइगो कैसे नैक न सेवा मानी । सूर श्याम इन पर कहा रीझे इनकी गति नहिं जानी ॥

राग सूही ॥ नैना लोनहरामी ए । चोर ढुँढ बटपार अन्याई अपमारगी कहावैं जे ॥ निलज निर्दयी निशंक पातकी जैसे आप स्वारथी तजिकै । बारेते प्रतिपालि बढाए बडे भए गए तब तजि कै ॥ हमको निदरि करत सुख हरिसँग वै उनि लीन्हो हित करिकै ॥ मिले जाइ सूरजके प्रभुको जैसे मिलत नील अरुपै ॥

राग जैतश्री ॥ नैन मिले हरिको ढरि भारी । जैसे नीर नीर मिलि एकै कौन सके ताको निरुवारी ॥ वातचक्र ज्यों तृणहिं उडत लै देह संग ज्यों छांह । पवन वश्य ज्यों उडत पताका ए तैसे छबि मांह । मन पाछे ए आगे धावत इंद्री इनहि लजाने । सूर श्याम जैसे इन जाने त्यों काहू नहिं जाने ॥

राग नट ॥ लोचन भए अतिही ढीठ । रहत हैं हरि संग निशि दिन अतिहि नवल अहीठ ॥ वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत । बार बार बुझाइ हारी भौंह मोपर तनत ॥ ज्यों सुभट रण देखि टरत न लरत खेत प्रचारि । सूर छबि सन्मुखहि धावत निमिष अत्रनि डारि ॥

राग बिलावल ॥ सुभट भए डोलत ए नैन । सन्मुख भिरत मुरत नहिं पाछे शोभा शूर डरैन ॥ आपुन लोभ अत्र लै धावत पलक कवच नहिं अंग । हाव भाव रस लरत कटाक्षनि भ्रुकुटी धनुष अपंग ॥ महाबीर ए उत अंग अंग बल रूप सैन पर धावत । सुनहु सूर ए लोचन मेरे यक टक पलक न लावत ॥

राग जैतश्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी । ऐसे भए दुखदायक हमको एही सोच मरी ॥ घूँघट ओट महलमें राखति पलक कपाट दिए । ए जोइ कहैं करैं हम सोई नाहिंन भेद हिए ॥ अब पाई इनकी लँगराई रहते पेट समाने । सुनहु सूर लोचन बटपारी गुण जोइ सोइ प्रगटाने ॥

राग गौरी ॥ नैना हैं री ए बटपारी । कपट नेह करि करि इन हमसों गुरुजनते करी न्यारी ॥ श्याम दरश लाडू करि दीन्हो प्रेम ठगौरी लाइ । मुख परसाई हँसन मधुरता

डोलत संग लगाइ ॥ मन इनसों मिलि भेद बतायो विरह फाँस गरे डारी । कुललज्जा संपदा हमारी लूटि लई इन सारी ॥ मोह विपिनमें पडी कहरति हौं नेह जीव नाहिं जात । सूरदास गुण सुमिरि वे अंतरगति पछितात ॥

राग बिहागरो ॥ तिनको श्याम पत्याने सुनियत । ह्वांऊ जाइ अकाज करैंगे गुण गुनि गुनि शिर धुनियत ॥ विवश भई तनुकी सुधि नाहीं विरह फाँस गयो डारि । लगनि गांठी बैठी नहिं छूटति मगन मूरछा भारि ॥ प्रेमजीव निसरत नहिं कैसेहु अंतर अंतर जानति । सूरदास प्रभु क्यों सुधि पावैं बार बार गुण गावति ॥

राग सारंग ॥ रोम रोम ह्वै नैन गए री । ज्यों जलधर पर्वतपर बरषत बूंद बूंद ह्वै झरनि दए री ॥ ज्यों मधुकर रस कमल पान करि मात तजि उनमत भये री । ज्यों कांचुरी भुअंगम तजही फिरि न तकै जुगए सुगए री ॥ ऐसी दशा भई री इनकी श्यामरूपमें मगन रए री । सूरदास प्रभु अगणित शोभा ना जानौं केहि अंगछये री ॥

राग सारंग ॥ नैन निरखि अजहूँ न फिरे री । हरिमुख कमलकोश रस लोभी मनहु मधुप मधु माति गिरे री ॥ पलकनि शूल सलाक सही है निशि वासर दोउ रहत अरे री । मानहु बिवर गए चलि कारे तजि कंचुरी भये निररेरी ॥ ज्यों सरिता पर्वतकी खोरी प्रेम पुलक श्रमस्वेद झरे री । बूंद बूंद ह्वै मिले सूर प्रभु ना जानो केहि घाट तरे री ॥

राग सारंग ॥ नैन गए सु फिरे नहिं फेरि । यद्यपि घेरि घेरि मैं राखनि रहे नहीं पचि-हारी टेरि ॥ कहा कहौं सपनेहुँ नहिं आवत वश्यभए हरिहीके जाई । मोते कहा चूक उनि जानी जाते निपटगए बिसराई ॥ छिनहूकी पहिचानि न मानी उनको हम प्रतिपाले प्रेम । जो तजि गए हमारे वैसेइ उन त्याग्यो हम हैं वोहि नेम । मात पिता संगहि प्रतिपाले सँगही संग रहे निशियाम । सुनहु सूर ए बालसँघाती प्रेम बिमारि मिले ढरि श्याम॥

राग नट ॥ नैननि देखिवेकी ठौर । नन्द गोपकुमार सुंदर किए चंदन खौर ॥ शीशपिंड शिखंड भ्राजत नखशिखा छबि और । सुभगगावनि मृदुबजावनि बैन सुललित गौर ॥ कुटिलकच मृगमदतिलकछबि वचन मंत्र ठगौर । सूर प्रभु नटरूप नागर निरखि लोचन वौर ॥

राग मलार ॥ तबते नैन रहे यक टकही । जबते श्याम त्रिभंगललितगति जात भई इन तकही ॥ मुरली धरे अरुन अधरनिपर कुंडल झलक कपोल । निरखत यकटक पलक भुलानो मानो बिकाने मोल ॥ हमको वै काहे न बिसारैं अपनी सुधि उन नाहिं । सूर श्याम छबिसिंधुसमाने वृथा तरुनि पछिताहिं ॥

राग मलार ॥ नैना नैननिमाँझ समाने । टारे न टरत एक मिलि मधुकर सुरसमत्त अरुझाने ॥ मन गति पंगु भई सुधि बिसरी प्रेम पराग लुभाने । मिलि परस्पर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने ॥ मन वच क्रम पल वोट न भावत छिनु युग वरस समाने सूर श्यामके वश्य भए ए जेहि बीतै सो जाने ॥

राग गौरी ॥ मेरे माई लोभी नैन भए । कहा करौं ए कह्यो न माने बरजतही जो गए ॥ रहत न घूंघट वोट भवनमें पलक कपाट दए । लए फँदाइ बिहंगम मानो मदन व्याध बिधए ॥ नहिं परमिति मुखइंदुसुधानिधि शोभा नितहि नए । सूर श्याम तनु पीतवसन छबि अंग अनंग जितए ॥

राग बिहागरो ॥ नैना लोभहिं लोभ मरे । जैसे चोर भरे घरहीमें बैठत उठत खरे ॥ अंग अंग शोभा अपार निधि लेत न सोच परे । जोइ देखै सोइ सोइ निर्मोलै करलै तहीं धरै ॥ त्यों लुब्धे ए टरत न टारे लोकलाज न डरे । सूर कछू उनि हाथ न आयो लोभ जाग पकरे ॥

राग सेर ॥ नैना वोछे चोर सखी री । श्याम रूपनिधि नोखे पाई देखत गए भरी री ॥ अंग अंग छबि चित्त चलायो सो कछु रहति परी री । कहा लेहिं कह तजौं विवश भए तैसिय करनि करी री ॥ पुनि पुनि जाइ एक एक लेते आतुर धरणि धरी री । भोरे भए भोरसो ह्वैगयो धरे जगार परी री ॥ जो कोउ काज करै बिन बूझे पेलि महत्त हरी री । सूर श्याम वश परे जाइकै ज्यों मोहिं तजी खरी री ॥

राग मलार ॥ नैना मारेहू पर मारत । राखी छबि दुराइ हृदयमें तिनको हिय भरि डारत ॥ आपु न गए भली कीन्ही अब उनहि इहांते टारत । बरवशही लै जान कहत हैं पैज आपनी सारत ॥ ऐसे खोज परचो यह लैहैं आवत जात न हारत । उनके गुण कैसे कहि आवै सूर पयारहि झारत ॥

राग मलार ॥ नैना खोज परे हैं ऐसे । नैक रही हरिमूरति हृदय डाह मरत हैं जैसे ॥ मन तौ गयो इंद्रियन लैकै बुधि मति ज्ञान समेत । जिनकी आश सदा हम राखैं तिन्ह दुख दीन्हो जेत ॥ आपुन गए कौन सो चालै करत ढिठाई और । नैक रही छबि दुति हिरदैमें ताहि लगावत ठौर ॥ गए रहे आए एहि कारज भरि ढारत हैं ताहि । सूरदास नैननिकी महिमा कोहै कहिये काहि ॥

राग सारंग ॥ नैना यहि ढंग परे कहा करौं माई । आए फिरि कौन काज कबहि मैं बुलाई ॥ अबलौं इह आश रही मिलि हैं ये आई । भाँवरिसी पारि फिरैं नारि ज्यों पराई ॥ आवत हैं ताहि लेन ऐसे दुखदाई । मारेको मारत हैं बडे लोग भाई ॥ अतिही ए करत फिरत दिनही ढिठाई । सूरदास प्रभु आगे चलौ कहैं जाई ॥

राग गौरी ॥ यह तो नैननिही जु कियो । सर्वस जो कछु रह्यो हमारे सो है हरिहि दियो ॥ बुधिबिबेककुलकानि गँवाई इंद्रिन किये वियो । आपुन जाइ बहुरि आयो यह चाहत रूप लियो ॥ अब लाग्यो जिय घात करनको ऐसो निठुरहियो । सुनहु सूर प्रतिपालेको गुण बैरइ मानि लियो ॥

राग नट ॥ मेरे नैन चकोर भुलाने । अहनिशि रहत पलकसुधि बिसरे रूप सुधा न अघाने ॥ पल घटिका घरी याम दिनहिदिन युगही युग बरजाने । स्वाद परचो निमिषौ नहिं त्यागत ताही मांझ समाने ॥ हरि मुख विधु पीवत ए व्याकुल नेकहू नहीं थकाने । सूरदास प्रभु निरखिललिततनु अंग अंग अरुझाने ॥

राग सारंग ॥ हरि मुख विधु मेरी अँखियां चकोरी । राखे रहति वोट पटजतननि तऊ न मानत कितक निहोरी ॥ बरबसही इन गही मूढता प्रीत जाय चंचलसों जोरी । विवश भए चाहत उडि लागन अटकत नेक अंजनकी डोरी ॥ बरबसही इन गही चपलता करत फिरत हमहूंसों चोरी । सूरदास प्रभु मोहन नागर बरषि सुधारस सिंधु झकोरी ॥

राग बिहागरो ॥ लोचन लालचते न टरे। हरि सारंगसों सारंग गीधे दधिसुत काजे जरे॥ ज्यों मधुकर बश परे केतकी नहिं ह्यांते निकरे। ज्यों लोभी लोभहिं नहिं छांडत ए अति उमँगि भरे॥ सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे। वह धोखे यह जानतहै सब हितचित सदा करे॥ ज्यों पग फिर फिर परत प्रेमवश जीवत मुरछि मरे। जैसे मीन अहारलोभते लीलत परे गरे॥ ऐसेहि ए लुब्धे हरि छबिपर जीवन रहत भिरे। सूर सुभट ज्यों रण नाहिं छांडत जबलौं धरणि गिरे॥

राग नट ॥ मेरे नैननि कोउ समुझावे री। आपनो घर तुम छांडे डोलत मेरे ह्यां लै आवै री॥ इहै बूझि देखौ नीकेकरि जहां जात कछु पावे री। वृथा फिरत नटके गुण देखत नानारूप बनावैरी॥ देखतके सब सांचे लागत ताहि छुवन नहिं पावे री। सूर श्याम अँगअंग माधुरी शत शत मदन लजावे री॥

राग नट ॥ हरि छबि अंग नटके ख्याल। नैन देखत प्रगट सब कोउ कनकमुकुता लाल॥ छिनकमें मिटिजात सो पुनि और करत बिचार। त्यों ही एछबि और औरै रचत चरित अपार॥ लैहै तब जो हाथ आवै दृष्टि नहिं ठहरात। वृथा भूले रहत लोचन इनहि कहै कोइ बात॥ रहत निशिदिन संग हरिके हरष नहीं समात। सूर जब जब मिले हमको महाविह्वलगात॥

राग कान्हरो ॥ भईगई ए नैनन जानत। फिरिफिरि जात लहत नहिं शोभा हारेहुँ हारि न मानत॥ बूझहु जाइ रहत निशि बासर नैक रूप पहिचानत। सुनहु सखी सतरात इते पर हमपर भौंहैं तानत॥ झूठे कहत श्याम अंग सुंदर बातैं गढि गढि बानत। सुनहु सूर छबि अति अगाधगति निगम नेति जेहि गावत॥

राग बिहागरो ॥ श्यामछबि लोचन भटकि परे। अतिहि भए बेहाल सखी री निशि-दिन रहन खरे॥ हमते गए लूटि लेवेको उनहि परचो अब सोच। अपनो कियो तुरत फल पायो राखति घूँघट वोट॥ इक टक रहत पराए वश भए दुख सुख समुझि न जाइ। सूर कहौ ऐसो को त्रिभुवन आवै सिंधु थहाइ॥

राग नट ॥ नैन भये वोहितके काग। उडि उडि जात पार नहिं पावे फिरि आवत नहिं लाग॥ ऐसी दशा भई री इनकी अब लागे पछितान। मो बरजत बरजत उठि धाये नहिं पायो अनुमान॥ वह समुद्र वो छे वासनए धरे कहा सुखराशि। सुनहु सूर ए चतुर कहावत वह छबि महा प्रकाशि॥

राग गौरी ॥ हारि जीति नैना नहिं जानत। धाए जात तहींको फिरि फिरि वै कितनो अपमानत॥ परे रहत द्वारे शोभाके वोई गुण गुणि गानत। हरषत रहत सबनिको निदरे नेकहु लाज न आवत॥अबतो रहत निषसई कीन्हें यद्यपि रूप न जानत। दुख सुख बिरह संयोग समेत जनु सूरदास यह गावत॥

राग रामकली ॥ नैना मानपमान सह्यो। अति अकुलाइ मिले री बरजत यद्यपि कोटि कह्यो॥ जाकी बानि परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनी

सुवा गह्यो ॥ जैसे नीरप्रवाह समुद्रहि बह्यो सुबह्यो सुबह्यो । सूरदास इनि तैसिय कीन्हीं फिरि मोतन न चह्यो ॥

राग सोरठ ॥ यह नैननिकी टेव परी । जैसे लुबधाति कमलकोशमें भ्रमराकी भ्रमरी ॥ ज्यों चातक स्वातिहि रटलावै तैसिय धरनि धरी । निमिष नही मिलवत पल एकौ आपु-दशा बिसरी ॥ जैसे नारि भजै परपुरुषहि ताके रंग ढारी । लोक वेद आरजपथकी सुधि मारगहू न डरी ॥ ज्यों कंचुकी त्यागि वोहि मारग अहिवरनी न फिरी । सूरदास तैसेहि ए लोचनकी धौं परनि परी ॥

राग बिहागरो ॥ नैना गये न फिरे री माई । ज्यों मर्यादा जाति सुपतकी बहुरचो फेरि न आई ॥ जैसे बाला दशा बितावै फिरै नहीं तरुनाई । ज्यों जल ढरत फिरत नहिं पाछे आगेहि आगे जाई ॥ ज्यों कुलवधू बाहिरी परिकै कुलमें फिरि न समाई । तैसी दशा भई इनहूँकी सूर श्याम शरनाई ॥

राग सूही ॥ जबते नैन गये मोहिं त्यागि । इंद्री गई गयो तनुते मन उनहिं बिना अवसेरी लागि ॥ वे निर्दयी मोह मेरे जिय कहा करौं मैं भई बेहाल । गुरुजन उतै इह इनि त्यागी मेरे बाँटे परचो जंजाल ॥ इनकी भई न उतकी सजनी भ्रमत मैं भई अनाथ। सूर श्यामको मिलेजाइ सब दरशन करि वे भये सनाथ ॥

राग बिलावल ॥ नैना मेरे मिलि चले इंद्री मन संग । मोको व्याकुल छाडिकै आपुन करैं रंग ॥ अपनो यह कबहुँ न करे अधमनिके काम । जनम गमायो साथही अब भई निकाम ॥ धिग जन ऐसे जगतमें यह कहि कहि पछितातिं । धर्म हृदय जिनके नहीं धिग तिनकी जाति ॥ गनसा वाचा कर्मणा मोहि गए बिसारि । सूर सुमिरि गुन नैनके बिलपति ब्रजनारि ॥

राग बिलावल ॥ नैननिसों झगरो करिहौं री । कहा भयो जो श्याम संग हैं बांह पकरि सन्मुख लरिहौं री ॥ जनमहिते प्रतिपालिबडे किये दिन दिनको लेखो करिहौं री । रूप लूटि कीन्हों तुम काहे अपने बांटेको धरिहौं री ॥ एक मात पितु भवन एक रहे मैं काहे उनको डरिहौं री । सूर अंश जो नहीं देहिंगे उनके रँग मैं हूँ ढरिहौं री ॥

राग आसावरी ॥ मोहूते वे ढीठ कहावत । जबहींलौं मैं मौन धरेहौं तबलौं वे कामना पुरावत ॥ मैं उनको पहिलेहि करिराख्यो वे मोको काहे बिसरावत । आपकाजको उनहिं चले मिलि बांट देत रोई अब आवत ॥ बहुतै कानि करी मैं सजनी अब देखो मर्याद घटावत । जो जैसो तैसो त्यों चलिए हरिआगे गढि बात बनावत ॥ मिले रहैं नाहिं उनको चाहति मेरो लेखो क्यों न बुझावत । सूर श्यामसँग गर्व बढायो उनहींके बल बैर बढावत ॥

राग धनाश्री ॥ नैना न रहैं री मेरे अटके । कछु पढिदिये सखी एहि ढोंटा घूँघरवारी लटके ॥ कज्जल कुलुफ मेलि मंदिरमें पलक संदूक पट अटके । निगम नेति कुललाज टूटि सब मन गयंदके उटके ॥ मोहनलाल करो वश अपने हो निमेषके मटके । पुरनर नारिन सुरपुर तुरतै सूर लगाए नटके ॥

राग काफी ॥ नैना अटके रूपमें पल रहत बिसारे। निशिवासर नहिं संग तजै भरि भरि जल ढारे॥अरुन अधर द्युति चमकही चपला चकचौंधनि। कुटिलअलक छविघुँघरे सुमना सुत शोधनि॥चंपकलीसी नासिका रंग श्यामहिं लीन्हें। नैन विशाल समुद्रसों कुंडल श्रुति दीन्हें ॥ तहँ ए रहे भुलाइकै कछु समुझि न जाई। सूर श्याम बेवश किए मोहनी लगाई ॥

राग जैतश्री ॥ लोचन भूलिरहे तहां जाई। अंग अंग छबि निरखि माधुरी इकटक पल बिसराई ॥ अति लोभी अचवत अघातहैं तापर पुनि ललचात। देत नहीं काहूको नेकहु आपुहि डारत खात ॥ ओछे हाथ परी अपारनिधि काहू काम न आवे। सूर सबै इनको क्यों सौंप्यो यह कहिकहि पछितावै ॥

राग धनाश्री ॥ नैनन यह कुटेव पकरी। लूटैं श्याम रूप आपुनहीं निशि दिन पहर घरी ॥ प्रथमहिं इन यह नोखे पाई गए अतिहि इतराइ। मिले अचानक बडभागी हैं पूरण दरशन पाइ ॥ लोभी बडे कृपण को इनसरि कृपा भई यह न्यारी। सूर श्याम उनको भए भोरे हमको निठुर मुरारी ॥

राग भौरी॥सुन सजनी मोसों इक बात। भाग बिना कछु नहीं पाइए तू काहे पुनिपुनि पछितात ॥ नैनन बहुत करी री सेवा पल पल घरी पहर दिन राति। मन वच क्रम दृढता इनकी है धन्यधन्य इनकी है जाति ॥ कैसे मिले श्याम इनकी ढरि जैसे सुतके हितको मात। सूरदास प्रभु कृपासिन्धु वे सहज बडे हैं त्रिभुवन तात ॥

राग भैरव ॥ नैन श्यामसुख लूटतहैं। इहै बात मोको नहिं भावै हमते काहै छूटतहैं ॥ महा अक्षय निधि पाय अचानक आपुहि सबै चुरावतहैं। अपने हैं ताते यह कहियत श्याम इनहिं भरुहावतहैं ॥ यह संपदा कहौ क्यों पचिहै बालसँघाती जानतहैं। सूरदास जो देते कछुइक कहौ कहा अनुमानतहैं ॥

राग रामकली ॥ सजनी मोते नैन गए। अबलौं आश रही आवनकी हरिके अंग छए ॥ जबते कमलवदन उन दरश्यो दिनदिन और भए। मिले जाय हरदी चूने ज्यों एकहि रंग रए ॥ मोको तजि भए आपु स्वारथी वा रस मत्त भए। सूर श्यामके रूप समाने मानो बूंद तए ॥

राग बिहागरो ॥ नैन गएरी अति अकुलात। ज्यों धावत जल नीचे मारग कहूं नहीं ठहरात ॥ कहा कहौं ऐसी आतुरता पवन वश्य ज्यों पात। ज्यों आये ऋतुराज सखी री द्रुमन तेज झहरात ॥ आइ बसी ऐसी जिय उनके मैं व्याकुल पछितात। सूरदास कैसेहुँ न बहुरे गीधे श्यामल गात ॥

राग रामकली ॥ लोभी नैन हैं ये मेरे। उतहि श्याम उदार मनके रूपनिधि टेरे ॥ जातही उन लूटि खाई तृषा जैसे नीर। क्षुधामें ज्यों मिलन भोजन होत जैसे धीर ॥ वे भए री निठुर मोको अब परी यह जान। अष्ट सिधि नव सिद्धि हरि तजि लेहिं ह्यां कह आन ॥ आपने सुखके भए वे हैं जो युग अनुमान। सूर प्रभु करि लियो आदर बडे परम सुजान ॥

राग आसावरी ॥ नैननते हरि आप स्वारथी आजबात यह जानी री। ए उनको वे इनको चाहत मिले दूध अरु पानी री ॥ सुनियत परम उदार श्याम घन रूपराशि उनमाहीं री। कीजै कहा कृष्णकी संपति नैन नहीं जु पत्याहीं री ॥ विलसत डारत रूप सुधानिधि उनकी कछु न चलावै री। सुनहु सूर हम स्वातिबूँदलौं रटलागी नहिं पावै री ॥

राग सारंग ॥ जाते परयो श्याम घन नाउं । इनते निठुर और नाहिं कोई कवि गावत उपमाउ ॥ चातकके रट नेह सदा वह ऋतु अनऋतु नाहिं हारत । रसना तारूसों नाहिं लावत पीवै पीव पुकारत ॥ वै बरषत डोंगर बन धरणी सरिता कूप तडाग । सूरदास चातक मुख जैसे बूंद नहीं कहुँ लाग ॥

राग मलार ॥ श्यामघन ऐसे हैं री माई । हमको दरश नहीं सपनेहूं धरे रहत निठुराई ॥ षटऋतु व्रत तनु गारि कियो क्यों चातक ज्यों रट लाई । उनमें है चित सदा हमारो नेक नहीं बिसराई ॥ इंद्री मन लूटत लोचन मिलि इनको वै सुखदाई । सूर स्वाति चातककी करनी ऐसे हमहि कन्हाई ॥

राग सारंग ॥ नैनन हरिको निठुर कराए । चुगली करी जाइ उन आगे हमते वै उचटाए ॥ इहै कह्यो हम उनहिं बोलावत वे नाहिंन ह्यां आवत । आरज पंथ लोककी शंका तुमतन आवत पावत । यह सुनिकै उन हमहि बिसारी राखत नैनन साथ । सेवावश करिकैं लूटतहैं बात आपने हाथ ॥ संगहि रहत फिरत नहिं कतहूं आप स्वारथीनीके । सुनहु सूर वे एऊ तैसेइ बड़े कुटिल हैं जीके ॥ कपटी नैननते कोउ नाहीं । घरको भेद औरके आगे क्यों कहिबेको जाहीं ॥ आप गए निधरक ह्वै हमते बरजि बरजि पचिहारी । मनकामना भयो परिपूरण ढरि रीझे गिरि धारी ॥ इनहिं बिना वे उनहिं बिना ए अंतर नाहीं भावत । सूरदास यह युगकी महिमा कुटिल तुरत फल पावत ॥

राग बिलावल ॥ कहा भए जो आप स्वारथी नैनन अपनी निंद्य कराई । जो यह सुनत कहत सोइ धृग धृग तुरतहि ऐसी भई बडाई । कहा चाहिए अपने सुखको इनतो सीखी इहै भलाई । अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसों काहेको तुम लाज गँवाई ॥ अचरज कथा कहितहौं सजनी ऐसी इह तुमसों चतुराई । सुनहु सूर जे भजि उबरेहैं तिनको तुम अब चाहति माई ॥

राग बिहागरो ॥ सजनी नैना गए भगाइ । अवातीरको नीडवरे री कैसे फिरिहैं धाइ ॥ बरत भवन जैसे दहियतहै निकसे त्यों अकुलाइ । सोठ अपनो नहि पथिक पंथके वासा लीन्हों आइ ॥ ऐसी दशा भई है इनकी सुख पायो ह्यां जाइ । सूरदास प्रभुको ए नैना मिले निसान बजाइ ॥

राग बिलावल ॥ मोहन वदन बिलोकि थकित भए माईरी ए लोचन मेरे । मिले जाइ अकुलाइ अगमने कहा भयो जो घूँघट घेरे । लोकलाज कुलकानि छाँडि करि बरवस चपल चपरि भए चेरे । काहेको वादिहि बकति बावरी मानत कौन मते अब तेरे॥ललित त्रिभंगी तनु छवि अटके नाहिंन फिरत कितौऊ फेरे ॥ सूर श्याम सन्मुख रति मानत गए मग बिसरि जाहिं नहिं डेरे ॥

राग रामकली ॥ थकित भए मोहन मुख नैन । घूँघट वोट न मानत कैसेहु बरजत कीन्हो गौन ॥ निदरि गई मर्यादा कुलकी अपनो भायो कीन्हो । मिले जाइ हरि आतुर ह्वैकै लूटि सुधारस लीन्हो ॥ अब तू बकति वादिरी माई कह्यो मानि रहि मौन । सुनहु सूर अपनो सुख तजिकै हमहिं चलावै कौन ॥

राग देवगंधार ॥ मेरे इन नैनन इते करे। मोहन वदन चकोर चन्द्र ज्यों यकटकते न टरे॥ प्रमुदित मणि अवलोकि उरग ज्यों अति आनंद भरे। निधिहि पाइ इतराइ नीच ज्यों त्यों हमको निदरे॥ मृदु मुसुकानि मनो ठग लडुआ मिषि गति मति सुध बिसरे। फेरि लगे अंग अंग सो हरिके समुझि न सुधि पकरे॥ ज्यों अटके गोचर घूँघट पट शिशु ज्यों अरनि अरे। धरे न धीर अनमने रुदन बल सो हठ करनि परे। रही ताडि खिझिलाइ लकुट लै एकहु डर न डरे। सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे॥

राग जैतश्री ॥ नैनन दशा करी यह मेरी। आपुन भए जाइ हरिचेरे मोहिं करत हैं चेरी॥ जूठी खइए मीठे कारण आपुहि खात लडावत। और जाइ सो कौनन फेको देखन तौ नहिं पावत॥ काज होइ तौ इहौ कीजिए वृथा फिरै को पाछे। सूरदास प्रभु जब जब देखत नट सवाँगसो काछे॥

राग बिलावल ॥ को इनकी परतीति बखाने। नैना धौं काहेते अठके कौन अंग ढरकाने॥ उनके गुण वारेहिट सजनी मैं नीके करि जाने। चेरे भए जाइ ए तिनके कैसे उनहि पत्याने॥ छिन छिनमें औरै गति जिनकी ऐसे आप सयाने। सूर श्याम अपने गुण शोभा को नहिं वश करि आने॥

राग रामकली ॥ नैननि कठिन बानि पकरी। गिरिधर लाल रसिक बिन देखे रहत न एक घरी॥ आवतही यमुनाजल लीन्हें सखी सहज डगरी। वे उलटे मग मोहिं देखके हौं उलटी उत लै गगरी॥ वह मूरति तबते इन बलकरि लै उरमांझ धरी। ते क्यों तृप्ति होत अब रंचक जिनि पाई सिगरी॥ जग उपहास लोकलज्जा तजि रहे एक जकरी। सूर पुलक अंग अंग प्रेम भरि श्याम सँग तकरी॥

राग रामकली ॥ नैननि बानि परी नहिं नीकी। फिरत सदा हरि पाछे पाछे कहा लगनि उन जीकी॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा अतिही लागति फीकी। जो बीतति मोको गी सजनी कहौं काहि यह हीकी॥ अपने मन उन भली करीहै मोहि रहे हैं बीकी। सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसुकनि हरि पीकी॥

राग धनाश्री ॥ ऐसे निठुर नहीं जग कोई॥ जैसे निठुर भये डोलतहैं मेरे नैना दोई॥ निठुर रहत ज्यों शशि चकोरको वै उन बिन अकुलाहीं। निठुर रहत दीपक पतंग उडि ज्यों जरि बरि मरि जाहीं॥ निठुर रहत जैसे जल मीनहि तैसिय दशा हमारी। सूरदास धृगधृग तिनको है जिनके नाहीं पीरपरारी॥

राग धनाश्री ॥ नैना मानैं नहिं मेरो बरज्यो। इनके लिए सखी री मेरो बाहर रहै न घर ज्यों॥ यद्यपि जतन किये राखति ही तदपि न मानत हरज्यो। परवश भई गुडी ज्यों डोलति परचो पराए कर ज्यो॥ देखे बिना चटपटी लागति कछू मूंड पढि परज्यो। को बकि मरे सखीरी मेरे सूर श्यामके थरज्यो॥

राग नटनारायण ॥ नैना कह्यो मानत नाहिं। आपने हठ जहां भावत तहांको ए जाहिं॥ लोक लज्जा वेद मारग तजत नहीं डराहिं। श्याम रसमें रहत पूरण पुलक अंगन माहिं॥ पियहिके गुण गुणत उरमें दरश देखि सिहाहिं। बदत हमको नेक नाहीं मरहिं जो पछिताहिं॥ धरनि मन बिच धरी ऐसी कर्मना करि ध्याहिं। सूर प्रभुपद कमल अलि है रैनि दिन न भुलाहिं॥

राग आसावरी ॥ परी मेरे नैनन यह बानि । जब लगि मुख निरखत तब लगि सुख सुंदरताकी खानि ॥ ए गीधे बीधे न रहत सखि तजी सबनिकी कानि । सादर श्रीमुखचंद्र बिलोकत ज्यों चकोर रति मानि ॥ अतिहि अधीर नीर भरि आवत सहत न दरशन हानि । कीजे कहा बांधि करि सौंपी सूर श्यामके पानि ॥

राग जैतश्री ॥ नैनन ऐसी बानि परी । लुब्धे श्याम चरण पंकजको मोको तजी खरी ॥ घूँघट ओट किए राखतिही अपनीसी जु करी । गए पेलि ताको नहिं मान्यो देखौ ज्यों निदरी ॥ गए सुगए फेरि नहिं बहुरे का धौं जियहि धरी । सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले ते वश किए हरी ॥

राग सारंग ॥ नैनन हौं समुझाइ रही । मानत नहीं कह्यो काहूको कठिन कुटेव गही ॥ अनजानत ही चिते वदन छबि सन्मुख शूल सही । तनु बिसरचो कुलकानि गवांई जग उपहास सही ॥ ऐतेपर सन्तोष न मानत मर्यादा न गही । तनु बिसरचो वपु श्याम सिंधुमें कहूँ न थाह लही ॥ रोमरोम सुंदरता निरखत आनंद उँमगि ढही । सूरदास इन लोभिनके सँग वन वन फिरत बही ॥

राग रामकली ॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो । हारि मानिकै रही मौन ह्वै निकट सुनत नहिं टेरो ॥ ऐसे भए मनो नहिं मेरे जबहिं श्याम मुख हेरो । मैं पछिताति जबहिं सुधि आवति ज्यों दीन्हों मोहिं डेरो ॥ एतेपर कबहूं जब आवत झरपर लरत घनेरो । मोहूं बरबस उतहि चलावत दूर भयो उनकेरो ॥ लोक वेद कुलकानि न मानैं अति ही रहत अनेरो । सूर श्याम धौं कहा ठगोरी लाइ कियो धरि चेरो ॥

राग कल्याण ॥ कबहुं कबहुं आवत ए मोहिं लेन माईरी । आवतही इहै कहत श्याम तोहिं बोलाई री ॥ नेकहू न रहत बिरमि जात तहां धाई री । मानो पहँचान नहीं ऐसे बिसराई री ॥ उनको सुख देत मोहिं बहिवेको पाई री । सूर श्याम सँगही सँग निशिबासर जाई री ॥

राग बिहागरो ॥ मेरे नैननही सब दोष । बिनही काज औरको सजनी कत कीजै मन रोष ॥ यद्यपि हौं अपने जिय जानति अरु बरजै सब घोष ॥ यद्यपि वा यशुमतिके सुत बिन कहूँ न सुख सन्तोष ॥ कहि पचिहारि रही निशि वासर और कंठ करि सोष । सूरदास अब क्यों विसर तुहै मधुरिपुको परितोष ॥

राग सोरठ ॥ मेरे नैना दोष भरे । नँदनंदन सुंदर बर नागर देखत तिनहिं खरे ॥ पलक कपाट तोरिकै निकसे घूँघट वोट न मानत । हाहा करि पाँइन परिहारी नैकहु जो पहिंचानत ॥ ऐसे भए रहत ए मोपर जैसे लोग बटाउ । सोऊ तौ बूझेते बोलत इनमें इह निठुराउ ॥ ए मेरे अब होहिं नहीं सखि हरि छबि बिगरि परे । सुनहु सूर ऐसेउ जन जगमें करता करनि करे ॥

राग रामकली ॥ नैना मोको नहीं पत्याहिं । जे लुब्धे हरिरूप माधुरी और गनत ए नाहिं ॥ जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यो ते मुख परसैं छाक । ज्यों मधुकर मधुकमल कोश तजि रुचि मानतहै आक ॥ जे षटरस सुख भोग करत हैं ते कैसे खरि खात । सूर सुनहु लोचन हरिरस तजि हमसों क्यों तृपिपात ॥

राग देवगंधार ॥ मेरे नैननहीं सब खोरि । श्याम वदन छवि निरखि जु अटके बहुरे नहीं बहोरि ॥ जो मैं कोटि जतन करि राखति घूँघट वोट अगोरि । ज्यों उडि मेलि वधिक खग छिनमें पलक पिंजरन तोरि ॥ बुद्धि विवेक बल वचन चातुरी पहिलेहि लई अजोरि । अति आधीन भई सँग डोलति ज्यों गुड्डीवश डोरि ॥ अबधौं कौन हेतु हरि हमसों बहुरि हँसत मुख मोरि । मनहु सूर दोउ सिंधु सुधा भरि उमँगि चले मिति फोरि ॥

राग गौरी ॥ यह सब नैननहीको लागे । अपनेही घर भेद करो इन बरजत ही उठि भागे ॥ ज्यों बालक जननीसों अरुझत भोजनको कछु माँगे । त्योंही ए अतिही हठ ठानत इकटक पलक न त्यागे ॥ कहत देहु हरि रूप माधुरी रोवत हैं अनुरागे । सूर श्याम धौं कहा चखायो रूप माधुरी लोचन पागे ॥

राग धनाश्री ॥ लोचन टेक परे शिशु जैसे । मांगतहैं हरिरूप माधुरी खोज परे हैं नैसे ॥ बारंबार चलावत उतही रहन न पाऊँ वैसे । जात चले आपुनही अबलौं राखे जैसे तैसे ॥ कोटियतन कहि कहि परबोधति कह्यो न मानहिं कैसे । सूर कहूं ठगमूरी खाई व्याकुल डोलत ऐसे ॥

राग जैतश्री ॥ इन नैननकी टेव न जाइ । कहा करौं बरजतही चंचल पर मुख लागत धाइ ॥ बाट घाट जहां मिलत मनोहर तहां मुख चलत छपाइ । गीधे हेम चोर ज्यों आतुर वह छनि लेत चुराइ ॥ मनहु मधुप मधुकारण लोभी हरि मुखपंकज पाइ । घूँघट पटवश जलहि मीन ज्यों अधिक उठत अकुलाइ ॥ निलज भए कुलकानि न मानत तिनसों कहा बसाइ । सूर श्याम सुंदर मुखरा बिन देखे रह्यो न जाइ ॥

राग सोरठ ॥ जाके जैसी टेव परी री । सो तौ टरै जीवके पाछे जोजो धरनि धरी री ॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरी बरजेहु वहै करै री । बरज्यो जाइ हानि पुनि पावत कतही बकत मरी री ॥ यद्यपि व्याध वधै मृग प्रगटहि मृगिनी रहै खरी री । ताहू नादवश्य ज्यों दीन्हों शंका नहीं करी री ॥ यद्यपि मैं समुझावति पुनिपुनि यह कहि कहि जु लरी री । सूर श्याम दर्शनते इकटक टरत न निमिष घरी री ।

राग सारंग ॥ ए नैना मेरे ढीठ भए री । घूँघट ओट रहत नहिं रोके हरिमुख देखन लोभ गए री ॥ जो मैं कोटि जतन करि राखे पलक कपाटनि मूँदि लए री । उतरे उमँगि चले दोउ हठ करि करौं कहा मैं जान दए री ॥ अतिहि चपल बरज्यो नाहिं मानत देखि वदन तन फेरि नए री । सूर श्याम सुन्दर रस अटके मानहुँ लोभी उहइँ छए री ॥

राग नट ॥ नैना ढीठ अतिही भए । लाज लकुट दिखाइ त्रासी नैकहुं न नए ॥ तोरि पलक कपाट घूँघट वोट मेटि गए । मिले हरिको जाइ आतुर जे हैं गुर्णनि मए ॥ मुकुट कुंडल पीत पट कटि ललित भेष ठए । जाइ लुब्धे निरखि वह छबि सूर नंद जए ॥

राग बिलावल ॥ नैना झगरत आइकै मोसों री माई । खूँट धरत हैं धा कै चलि श्याम दुहाई ॥ मैं चकृत ह्वै ठगिरहौं कछु कहत न आवै । आपुन जाइ मिले रहें अब मोहिं बोलावै ॥ गए दरश जो देहिं वे तहां अपनी छाया । और कछू वह है नहीं री उनकी माया ॥ कपटिनके ढँग ए सखी लोचन हरि कैसे । सूर भली जोरी बनी जैसेको तैसे ॥

राग सूही ॥ नैननको मत सुनहु सयानी । निशि दिन तपत सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलै पानी ॥ हों उपचार अमित उर आनति खल भई लोकलाज कुलकानी । कछु न सोहाइ दहति दरशन दव वारिज बंदन मंद मुसुकानी ॥ रूप लकुट अभिमान निडर है जग उपहास न सुनत लजानी । बुधि विवेक बल वचन चातुरी मनहुँ उलटि उनमांझ समानी ॥ आरज पथ गुरु ज्ञान गुप्तकरि विकल भई तनुदशा हिरानी । याचत सूर श्याम अंजनको वह किशोर छबि जीवहि तानी ॥

राग सारंग ॥ नैन न भलो मतो ठहरायो । जबहीं मैं बरजति हरि सँगते तबहीं तब ठहरायो ॥ जरत रहत एते पर निशि दिन छिनु बिनु जनम गँवायो । ऐसी बुद्धि करन अब लागे मोको बहुत सतायो ॥ कहा करौं मैं हारि धरी जिय कोटि जतन समुझायो । लुब्धे हेम चोरकी नांई फिरिफिरि उतही धायो ॥ मोसों कहत भेद कछु नाहीं अपनोइ उदर भरायो । सूरदास ऐसे कपटिनको बिधिना हाथ छडायो ॥

रागबिहागरो ॥ मेरे नैना अटकिपरे । सुंदरश्याम अंगकी शोभा निरखत भटकि परे ॥ मोर मुकुट लट घूँघरवारे तामे लटकि परे । कुंडल तरनि किरनिते उज्ज्वल चमकनि चटकि परे ॥ चपल नैन मृग मीन कुंज जित अलि ज्यों लुब्धि परे । सूर श्याम मृदु हँसनि लोभाने हमते दूरि परे ॥

राग बिहागरो ॥ नैनन साधै यहै रही । निरखत बदन नंदनंदनको भूलि न तृप्ति कही ॥ पचिहारे उनकी रुचि कारण परमिति तौ न लही । मगन होत अब श्यामसिंधुमें कतहूँ न थाह लही ॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि बही । दुख सुख सूर बिचार एक करि कुलमर्याद ढही ॥

राग नट ॥ नैनन साध रही सिराइ । यद्यपि निशि दिन संगहि डोलत तद्यपि नहीं अघाइ । पलक नाहिं कहुँ नेक लागत रहत इकटक हेरि । तऊ कहुँ तृपितात नाहीं रूप रसकी ढेरि ॥ ज्यों अगिनिघृत तृप्ति नाहीं तृषा नहीं बुझाइ । सूर प्रभु अति रूप दानी नैन लोभ न जाइ ॥

राग कल्याण ॥ श्यामअंग निरख नैन कहुँ अघात नाहीं । एकहि टक रहे जोरि पलपल नाहिं सकत तोरि जैसे चंदा चकोर तैसी इन पाहीं ॥ छबि तरंग सरितागण लोचन ए सागर जनु प्रेम धार लोभ गहनि नीके अवगाही । सूरदास एते पर तृप्ति नहीं मानत ए इनकी सोइ दशा सखी बरणी नहिं जाही ॥

राग बिहागरो ॥ लोचन सपनेके भ्रम भूले । जो छबि निरखत सो पुनि नाहीं भरम हिंडोरे झूले ॥ इक टक रहत तृप्ति नहिं कबहूं एते पर हैं फूले । निदरे रहत मोहिं नाहिं मानत कहत कौन हमतूले ॥ मोते गए कुम्हीके जरलौं ऐसे वे निरमूले । सूर श्याम जलराशि परे अब रूप रंग अनुकूले ॥

राग गौरी ॥ मेरे नैना ई अति ढीठ । मैं कुलकानि किये राखतिही ये हठि होत बसीठ ॥ यद्यपि वे उत कुशल समर बल ए इत अतिबल हीठ । तदपि निपरि पट जात पलक छिदि जूझत देत न पीठ अंजन त्रास तजत तमकत तकि तानत दरशन डीठ ॥

हेरेहू नहिं हटत अमित बल वदन पयोधि पईठ ॥ आतुर अडत अरुझि अँगअँग अनुराग नमिति मननीठ । सूर श्याम सुन्दर रस अटके नहिं जानत कटु मीठ ॥

राग बिलावल ॥ नहीं ढीठ नैननते और । कितनो मैं बरजति समुझावति उलटि करत हैं झौर ॥ मोसों लरत भिरत हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत । भौंह धनुष शर सरस कटाक्षन मारु करत नहिं आवत ॥ मानत नहीं हारि जो हारत अपने मन नहिं टूटत । सूर श्याम अँग अँगकी शोभा लोभ सैनसों लूटत ॥

राग बिहागरो ॥ लोचन लालची भारी । इनके लए लाज या तनकी सबै श्यामसों हारी ॥ बरजत मात पिता पति बंधव अरु आवै कुलगारी । तदपि न रहत नंदनंदनबिन कठिन प्रकृति हठि धारी । नख शिख सुभग श्यामसुन्दरके अंगअंग सुखकारी । सूर श्यामको जो न भजै सो कौन कुमति है नारी ॥

राग कल्याण ॥ अति रसलंपट नैन भये । चारुयो रूप सुधारस हरिको लुब्धे उतहि गये ॥ ज्यों व्यभिचारि भवन नहिं भावत औरहि पुरुष रई । आवत कबहुँ होत अति व्याकुल जैसे गवन नई ॥ फिरि उतहीको धावत जैसे छुटत धनुषते तीर । चुभै जाय हरि रूप वोपमें सुन्दर श्याम शरीर ॥ ऐसे रहत उतहिको आतुर मोसों रहत उदास । सूर श्यामके मन वच क्रम भए रीझे रूप प्रकाश ॥

राग सूही ॥ ए नैना अति चपल चोर । सरबस मूसि देत माधवको सुधि बुधि सुधन विवेक न मोर ॥ अनजानत कल बैन श्रवण सुनि चितै रहत उत उनकी वोर । मोहन मुख मुसुकाइ चले मानों भेद भयो यह लायो अंकोर ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै जो कीजै सो इनको थोर । सूर संग सोवत न परी सुधि पायो मरम वियोग न भोर ॥

राग गौरी ॥ नैन करत घरहीकी चोरी । चोरन गएश्याम अँग शोभा उत शिरपरी ठगौरी ॥ अपवश करि इनको हरि लीन्हें मोतन फेरि पठाए । जो कछु रही संपदा मेरे सुधि बुधि चोर लिवाए ॥ ए धाए आए निधरकसों लैगए संग लगाइ । सूर श्याम ऐसे हैं माई उलटी चाल चलाइ ॥

राग सारंग॥नैनन प्राण चोरि लै दीने। समुझत नहीं बहुत समुझाए अति उतकंठ नवीने॥ अति हौ चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने । लोभ लिये परवश भइ माई मीन जु वंसी भीने ॥ कहा कहौं कहिबे नहिं लायक मते रहत भरहीने ॥ आपु बँधाइ पुंजि लै सौंपी हरिरस रतिके लीने । ज्यों डोरे वश गुडी देखियत डोलत संग अधीने । सूरदास प्रभु रूपसिंधुमें मिले सलिल गुण कीने ॥

राग नट ॥ ये लोचन लालची भए री । सारंग रिपुके रहत न रोंके हरिस्वरूप गिधए री ॥ काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दए री । मिलि मनदूत पै जकरि निकसे बहुरि श्यामपै दौरिगए री ॥ है आधीन पंचते न्यारे कुललज्जा न नए री । सूर श्याम सुन्दर रस अटके मानो उहइँ छए री ॥

राग बिहागरो॥लोचन लोभहिमें ये रहत । फिरैं अपने काजहीको धीर नाहीं गहत॥देखि मृषनि कुरंग धावत तृप्ति नाहीं होत । ए लहत ना हृदय धावत तऊ नहिंन वोत ॥ हठी लोभी लालची इनते नहीं कोउ और । सूर ऐसे कुटिलको छवि श्याम दीन्हों ठौर ॥

राग रामकली ॥ लोचन मानत नाहिंन बोल । ऐसे रहत श्यामके आगे मनु दै लीन्हें मोल ॥ इत आवत दै जात देखाई ज्यों भँवरा चकडोर । उतते सूत्र न टारत कतहूँ मोसों मानत कोर ॥ नीके रहे सदा मेरे वश जाइ भए ह्वां जोर । मोहन शिर मोहिनी लगाई जब चितए उनि वोर ॥ अब मिलिगए श्याम मन माने निशि बासर इक ठौर । सूर श्यामके चोर कहावत राखे हैं करि गौर ॥

राग रामकली ॥ नैना उनही देखे जीवत । सुन्दर वदन तडागरूप जल निरखनि पुट-भरि पीवत ॥ राखे रहत और नहिं पावै उन मानी परतीति । सूर श्याम इनसों सुख मानत देखे इनकी प्रीति ॥

राग गूजरी ॥ नैना नाहिंन कछू विचारत । सन्मुख समर करत मोहनसों यद्यपि हैं हठि हारत ॥ अवलोकत अलसात नवल छबि अमित तोष अति आरत । तमकि तमकि तरकत मृगपति ज्यों घूँघट पटहि विदारत ॥ बुधि बल कुल अभिमान रोष रस जोवत भषहि निवारत । निदरे विरह समूह श्याम अँग पेखि पलक नहिं पारत ॥ श्रमित सुभट सकुचत साहस करि पुनि पुनि सुखहि सम्हारत । सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल टरत न इकटक टारत ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम रंग नैना राचे री । सारंग रिपुते निकसि निलज भए अब परगटह्वै नाचे री॥मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर बजावन हार । गायन घर घर घेर चला-वत लोभ नचावन हार ॥ चंचलता नृत्यनि कटाक्षरस भाव बतावत नीके । सूरदास ए रीझे गिरिधर मन माने उनहीके ॥

राग रामकली॥नाचत नैन नचावत लोभ । यह करनी इन नई चलाई मेटि सकुच कुल-क्षोभ ॥ घूँघट घट त्याग्यो इन मन क्रम नाचहिपर मन मान्यो । घर घर घेरि मृदंग शब्दकरि निजल काछनी वान्यो ॥ इंद्री मन समाज गायन ए ताल धरे रहैं पाछे । सूर प्रेम भावनिसों रीझे श्याम चतुर वर आछे ॥

राग धनाश्री ॥ नैनन सिखवत हारि परी । कमल नैन मुख बिनु अवलोके रहत न एक घरी ॥ हों कुलकानि मानि सुनि सजनी घूँघट ओट करी । वे अकुलाइ मिले हरि ले मन लै तनहूकी बुद्धि हरी ॥ तबते अंग अंग छबि निरखत सो चितते न टरी॥सूर श्याम मिलि लोक वेदकी मर्यादा निदरी ॥

राग बिलावल ॥ इन नैननसों री सखीमैं मानी हारि । साट सकुच नहिं मानहीं बहु-बारनि मारि ॥ डरत नहीं फिरि फिरि औरैं हरि दरशन काज । आपु गए मोहूं कहैं चलि मिलि ब्रजराज ॥ घूंघट घरमें नहिं रहैं कहि रही बुझाइ । पलक कपाट विदारिकै उठि चले पराइ॥ तबते मौन भई रहौं देखत ए रंग । सूरज प्रभु जहँ तहँ रहैं तहँ तहँ ए संग ॥

राग गूजरी ॥ नैना बहुत भांति हटके । बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नेक नहीं मटके । इत चितवत उतही फिरि लागत रहत नहीं अटके । देखतही उडि गए हाथते भए बटा नटके ॥ एकहि परनि परे खगज्यों हरि रूप मांझ लटके । मिले जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके ॥

राग जैतश्री ॥ बहुत भांति नैना समुझाए। लंपट तदपि सकोच न मानत यदपि घुंघट पट अटकि दुराए ॥ निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि विविखंजन अंजन जनुपाए। श्याम कुँवरके कमल वदनको महामत्त मधुकर ह्वै धाए ॥ घूँघट वोट तजी सरिता ज्यों श्याम सिंधुके सन्मुख धाए। सूर श्याम मिल करि पलकनसों विनमोलहि हठि भए पराए ॥

राग सोरठ ॥ नटके बटा भए ए नैन। देखतिहीं पुनि जात कहांधौं पलक रहत नहीं ऐन ॥ स्वांगीसे ए भए रहत हैं छिनही छिन ए और। ऐसे जात रहत नहिं रोके हैंहूते अति दौर ॥ गए सु गए गए अब आए जात लगी नहिं बार। सूर श्यान सुंदरता चाहत जिनको वार न पार ॥

राग बिहागरो ॥ मोते नैन गए री ऐसे। देखे बधिक पिंजराते खग छूटि भजत है जैसे ॥ सकुच फांसिमें फँसे रहत हैं ते धौं तौरैं कैसे। मैं भूली यहि लाज भरोसे राखतिही ए वैसे ॥ श्याम रूप बनमांझ समाने मोपै रहैं अनैसे। सूर मिले हरिको आतुर ह्वै ज्यों सुरभी सुत तैसे ॥

राग जैतश्री ॥ लोचन भए पराए जाइ। सन्मुख रहत टरत नहिं कबहूं सदा करत सिवकाइ ॥ वां तौ भए गुलाम रहत हैं मोसों करत ढिठाइ। देखत रहति चरित इनके सब हरिहि कहौंगी जाइ ॥ जिनको मैं प्रतिपालि बडे किए ते तुम वशकरि पाइ। सूर श्यामसों यह करि लेहौं अपने बल पकराइ ॥

राग टोडी ॥ अब मैंहू यहि टेक परी। राखों अटकि जान नहिं पावें क्यों मोको निदरी ॥ मौन भई मैं रही आजुलौं अपनोइ मन समुझाऊं। एऊ मिले नैनही डागरि देखति इनहु भगाऊं ॥ सुन री सखी मिले ए कबके इनहीको यह भेद। सूरदास नहिं जानी अबलौं वृथा करति तनुखेद ॥

राग धनाश्री ॥ नैना भए पराए चेरे। नंदलालके रंग गए रँगि अब नाहिन वश मेरे ॥ यद्यपि यतन किये जुगवतिही श्यामल शोभा घेरे। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निवरत नहीं निबेरे ॥ कुल अंकुश आरज पथ तजिकै लाज सकुच दिये डेरे। सूर श्यामके रूप भुलाने कैसेहुँ फिरत न फेरे ॥

राग रामकली ॥ जाकी जैसी वानि परीरी। कोऊ कोटि करै नहिं छूटै जो जेहि धरनि धरी री ॥ बारेहीते इनके ए ढंग चंचल चपल अनेरे। बरजतही बरजत उठि दौरै भए श्यामके चेरे ॥ ये उपजे वोछे नक्षत्रके लंपट भए बजाइ। सूर कहा तिनकी संगति जे रहैं पराए जाइ ॥

राग आसावरी ॥ नैननको री इहै सुहाइ। लुब्धे जाइ रूप मोहनको चेरे भए बजाइ ॥ फूले फिरत गिनत नहिं काहू आनँद उर न समात। इहै बात कहि सबन सुनावति नेकहु नहीं लजात ॥ निशि दिन करि सेवा प्रतिपाले बडे भए जब आइ। तब हमको ये छांडि भगाने देखो सूर सुभाइ ॥

राम कान्हरो ॥ देखत हरिको रूप नैना हारे री पै हारी न मानत। भए भटकि बलहीन क्षीन तनु तउ अपनो जै जानत ॥ दुरत न पटुकी वोट प्रगट ह्वै बीच पलक नहिं आनत। छुटिगये कुटिल कटाक्ष अलक मनो टूटि गए गुण तानत॥ भाल तिलक भ्रुव चाप आप लै सोइ संधान सँधानत। मन क्रम वचन समेत सूर प्रभु नहिं अपबल पहिंचानत ॥

राग सूही ॥ हारि जीति दोऊ सम इनके । लाभ हानि काको कहियत है लोभ सदा जियमें जिनके ॥ ऐसी परनि परी री जाके लाज कहा ह्वैहै तिनके । सुंदर श्याम रूपमें भूले कहा वश्य इन नैननि के ॥ ऐसे लोगनको सब मानत जिनकी घरघर हैं भनके । लुब्धे जाइ सूरके प्रभुको सुनत रही श्रवणनि झनके ॥

अथ अँखियाँ समयके पद ॥ राग धनाश्री ॥ अँखियनके इहई टेव परी । कहा करौं वारिजमुख ऊपर लागति ज्यों भ्रमरी ॥ चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों बिसरति नाहिं न घरी । यद्यपि हटकि हटकि राखति हौं तद्यपि होति खरी ॥ गडि जु रही वा रूप जलधिमें प्रेम पियूषभरी । सूर तहां नगअंग परसरस लूटति निधि सिगरी ॥

राग धनाश्री ॥ अंखियां निरखि श्याम मुख भूलीं । चकित भईं मृदु हँसनि चमक पर इंदु कुमुद ज्यों फूलीं ॥ कुललज्जा कुलधर्म नाम कुल मानत नाहिं न एकौ । ऐसे ह्वै ये भजीं श्यामको बरजत सुनति न नेकौ ॥ लुब्धीं हरिके अंग माधुरी तनुकी दशा बिसारी ॥ सूर श्याम मोहनी लगाई कछु पढिकै शिरडारी ॥

राग जैतश्री ॥ अंखियां हरिके हाथ बिकानी । मृदु मुसुकानि मोल इन लीन्हीं यह सुनि सुनि पछितानी ॥ कैसे रहत रहीं मेरे वश अब कछु औरै भांति । अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरिपांति ॥ स्वपनेकीसी मिलनि करत हैं कब आवति कब जाति । सूर मिलीं ढरि नंदनँदनको अनत नहीं पतियाति ॥

राग बिहागरो ॥ अंखियनि ऐसी धरनि धरी । नंदनँदन देखे सचुपावैं मोसों रहति डरी ॥ कबहूं रहति निरखि मुख शोभा कबहुँ देह सुधि नाहीं । कबहूं कहति कौन हरि को मैं यों तनमय ह्वै जाहीं ॥ अँखियाँ ऐसे भजीं श्यामको नहीं रह्यो कछु भेद । सूर श्यामकी परम भावती पलक न होत विछेद ॥

राग रामकली ॥ अँखिअन श्याम अपनी करी । जैसेही उन मुहं लगाई तैसेही ए ढरी ॥ इनकिए हरि हाथ अपने दूरि हमते परी । रहति बासर रैनि इकटक छाँह घाम खरी ॥ लोकलाज निकास निदरी नहीं काहुहि डरी । एमहा अति चतुर नागरि चतुर नागर हरी ॥ रहति डोलति संग लागी डटति ज्यों नाहिं टरी । सूर जब हम हटकि हटकति बहुत हमपर लरी ॥

राग बिहागरो ॥ अँखिअनि तबते बैर धरचो । जब हम हटकति हरिदरशनको सो रिस नहिं बिसरचो ॥ तबहींते उन हमहिं भुलाई गई उतहिको धाइ । अबतौ तरकि तरकि ऐंटति हैं लेनी लेति बनाइ ॥ भई जाइ वे श्याम सुहागिनि बड भागिनि कहवावैं । सूरदास वैसी प्रभुता तजि हमपै अबवे आवैं ॥

राग जैतश्री ॥ धन्यधन्य अँखियाँ बडभागिनि । जिन बिनश्याम रहत नाहिं नेकहु कीन्हीं बनै सुहागिनि ॥ जिनको नहीं अंगते टारत निशिदिन दरशन पावैं । तिनकी सरि कहि कैसे कोई जे हरिके मनभावैं ॥ हमहींते ए भईं उजागरि अब हमपर रिस माने । सूर श्याम अति विवश भए हैं कैसे रहत लुभाने ॥

राग बिलावल ॥ ए अँखियां बडभागिनी जिन रीझे श्याम । अँगते नेक न टारहीं बासर अरु याम ॥ ए कैसी हैं लोभिनी छबि धरतिचुराइ । और न ऐसी करिसकै

मर्यादा जाइ ॥ यह पहिले मनही करी अब तो पछिताति । उनके गुण गुणिगुणि झरै याहू न पत्याति ॥ इंद्री वश न्यारी परी सुख लूटति आँखि । सूरदास जे सँग रहैं तेऊमरें झांखि ॥

राग बिलावल ॥ अँखिअनि तेरी श्यामको प्यारी नहिं और । जिनको हरि अँगअँगमें करि दीन्हों ठौर ॥ जो सुख पूरण इन लह्यो कहा जानै और । अम्बुजहरिमुख जारको दोउ भौंरी जौर ॥ यहि अंतर श्रवणन परी मुरलीकी शोर । सूर चकित भई सुंदरी शिर परी ठगोर ॥

राग बिहागरो ॥ अँखिअनकी सुधि भूलिगई । श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई ॥ जो जैसे तैसेहि रहि गई सुख दुख कह्यो न जाइ । लिखी चित्रकीसी सब ह्वै गईं इकटक पल बिसराइ ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका गान । भवनर-वनकी सुधि न रही तनु सुनत शब्द वह कान ॥ अँखिअनते मुरली अतिप्यारी वह बैरनि यह सौति । सूर परस्पर कहत गोपिका यह उपजी उदभौति ॥

राग सारंग ॥ अधर रस मुरली लूटन लागी । जा रसको षटऋतु तनु गारचो सो रस पिवत सभागी ॥ कहां रहीं कहँते इह आई कौने याहि बुलाई । चकृत कहा भई ब्रजवा-सिनि यह तौ भली न आई ॥ सावधान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाइ । सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हीं सौति बजाइ ॥

राग सारंग ॥ आवतही याके ये ढंग । मनमोहन वस भए तुरतही ह्वै गए अंग त्रिभंग ॥ मैं जानी यह टोना जानति करि है नाना रंग । देखो चरित भजे हरि कैसे या मुरलीके संग ॥ बातनमें कह ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग । सूरदाससे दूर सदनमें पैठो बडो भुजंग ॥

अध्याय २९ बंशी ध्वनि सुरगोपीमोहन ॥ रासलीलापंचाध्यायी ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत भई सब बौरी । मनहुँ परी शिरमांझ ठगौरी ॥ जो जैसे सो तैसे सोरी । तनु व्याकुल सब भईं किशोरी ॥ कोउ धरणि कोउ गगन निहारै । कोउ कर करते बासन डारै ॥ कोउ मनही मन बुद्धि विचारै । कोउ बालक नाहिं गोद सँभारै ॥ घर घर तरुनी सब बिततानी । मन मन कहति कौन यह वानी ॥ छुटि सब लाज गई कुलकानी । सुत पति आरजपंथ भुलानी ॥ लैलै नाम सबनिको टेरे । मुरली ध्वनि घरहीके नेरे ॥ कोउ जेंवत पतिहीतन हेरै । कोउ दधिमें जावन पय फेरै ॥ कोउ उठि चली जैसेही तैसे । फिरि आवहिं घरहीमें पैसे ॥ घर पाछे मुरलीध्वनि ऐसे । आँगन गए नहीं वह जैसे ॥ गृह गुरु जन तिनहूं सुधि नाहीं । कोउ कतहूं कोउ कतहूं जाहीं ॥ कोउ निरखत कोउ काहू माहीं । मुरछ्यो मदन तरुणि सब डाहीं ॥ व्याकुल भईं सबै ब्रजनारी । मुरलीसो बोली गिरि-धारी ॥ चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी । उपजी प्रीति हृदय हरि भारी ॥ मुरली श्याम अनूप बजाई । बिधि मर्यादा सबनि भुलाई ॥ निशि वनको युवती सब धाई । उलटे अंग अभूषण ठाईं ॥ कोउ चलि चरण हार लपटाई । काहू चौकी भुजनि बनाई ॥ अँगिया कटि लहँगा उर लाई । यह शोभा वरणी नहिं जाई ॥ कोउ उठि चली जाति है

कोऊ। कोउ मग गई मिली मग कोऊ ॥ सूरदास प्रभु कुंजाबिहारी । शरदरास रसरीति बिचारी ॥

राग गुंडमलार ॥ शरदनिशि देखि हरि हरष पायो । बिपिन वृंदावन सुभग फूले सुमन रासरुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वल रैनि छिटकिरही भूमिपर सद्य फल तरुन प्रति लटकि लागे । तैसोई परमरमणीक यमुनापुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागे ॥ राधिका रवन वन भवन सुख देखिकै अधर धरि बेनु सुललित बजाई । नाम लैलै सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवन वह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मैन परत काहु न चैन शब्द सुनि श्रवन भई विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान धरिकै चलीं उठि सबै भवनजन नेह तजि घोषनारी ॥ ७९ ॥

राग बिहागरो ॥ सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई । मोहे सुर नर नाग निरंतर ब्रजवनिता मिलि धाई ॥ यमुना नीर प्रवांह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई । खग मृग मीन अधीन भए सब अपनी गति बिसराई ॥ द्रुमवल्ली अनुराग पुलकतनु शशि थक्यो निशिन घटाई । सूर श्याम वृन्दावन विहरत चलहु सखी सुधि पाई ॥ ८० ॥

राग बिहागरो ॥ मुरली सुनत उपजी बाइ । श्यामसों अति भाव बाढो चलीं सब अकुलाइ ॥ गुरुजननसों भेद काहू कह्यो नहीं उघारि । अर्ध रैनि चलीं घरनिते यूथ यूथनि नारि ॥ नंदनंदन तरुनि बोलीं शरद निशिके हेत । रुचि सहित वनको चलीं वै सूर भईं अचेत ॥ ८१ ॥

राग गुंडमलार ॥ सुनत मुरली भवन डर न कीन्हों ॥ श्यामपै चित्त पहुँचाइ पहिले दियो आप उठि चलीं सुधि मदन दीन्हों ॥ कहत मन कामना आजु पूरण करैं नंदनंदन सबनि बन बुलाई । जानि लायक भजी तरुनि सुत पति तजी काहु नहिं लजीं अति प्रेम धाई ॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगीं रस कृष्ण बिन कछु न भावै । सूर प्रभुसों प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहां इनको बुलावै ॥ ८२ ॥

राग सोरठ ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम । मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी वाम ॥ भोजन भूषणकी सुधि नाहीं तनुकी नहीं सँभार । गृह गुरुलाज सूतसो तोरचो डरीं नहीं व्यवहार ॥ करत शृंगार विवश भईं सुंदरि अंगनि गईं भुलाई । सूर श्याम बन बेणु बजावत चितहित रास रमाई ॥

राग गुंडमलार ॥ करत शृंगार युवती भुलाहीं । अंग सुधि नहीं उलटे वसन धारहीं एक एकनि कछू सुरति नाहीं ॥ नैन अंजन अधर अंजहीं हरषसों श्रवण ताटंक उलटे सँवारैं। सूर प्रभु मुख ललित बेणु ध्वनि बन सुनत चलीं बेहाल अंचल न धारैं ॥ ८३ ॥

राग नट ॥ हरि मुख सुनत बैन रसाल । विरह व्याकुल भई बाला चलीं जहँ गोपाल ॥ पय दुहावन चलीं कोऊ रह्यो धीरज नाहिं । एक दुहनी दूध जावनको शिरावत जाहिं ॥ एक उफनतही चलीं उठि धरचो नही उतारि । एक जेंवन करत त्याग्यो चढै चूल्है दारि ॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसहि त्यागि । सूर प्रभुके पास तुरतहि मन गयो उठि भागि ॥ ८४ ॥

राग रामकली ॥ मन गयो चित्त श्यामसों लाग्यो । नानाविधि जेंवन करि परस्यो पुरुष जेंवाँवत त्याग्यो ॥ इक पय प्यावत चलि तजि बालक छोह नहीं तब कीन्हों । चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि बोलि वेनु ध्वनि लीन्हों ॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाहीं । सूर निदरि विधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाहीं ॥ ८५ ॥

राग जैतश्री ॥ जबहीं वन मुरली श्रवण परी । चकृत भई गोपकन्या सब काम धाम बिसरी ॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरीं । श्याम सिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरीं ॥ अँग मर्दन करिवेको लागी उबटन तेल धरी । जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि वनकुंज खरी ॥ सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा नहीं करी । सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों नागरनवल हरी ॥ ८६ ॥

राग केदारो ॥ सुनि मुरली शबद ब्रजनारि । करति अंग शृँगार भूली कामगयो तनु मारि ॥ चरणसों गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं । कंचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदय माहिं ॥ चतुरता हरि चोरि लीन्हीं भई भोरी बाल । सूर प्रभुरति काम मोहन रासरुचि नँदलाल ॥ ८७ ॥

राग रामकली ॥ ब्रजयुवतिन मन हरयो कन्हाई । रास रंग रस रुचि मन आन्यो निशि बन नारि बुलाई ॥ तब तनुगारि बहुत श्रम कीन्हों सो फल पूरण दैन । वेणुनाद रस विवश कराई सुनि ध्वनि कीन्हों गौन ॥ जाको मन हरि लियो श्याम घन ताहि सँभारै कौन । सूरदास ज्यों नारि कंठ मिलि करै सु भावै जौन ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ॥ चली बन वेणु सुनत जब धाइ । मात पिता बंधव इक त्रासत जाति कहां अकुलाइ ॥ सकुच नहीं शंकाहू नाहीं रैनि कहां तुम जाति । जननी कहति दईकी घाली काहेको इतराति ॥ मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि । जैसे जल-प्रवाह भादोंको सो को सकै बहोरि ॥ ज्यों केंचुरी भुवंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे । सूर श्यामके हाथ विकानी अलि अंबुज अनुरागे ॥ ८९ ॥

राग गुंडमलार ॥ सुनत मुरली अलि न धीर धरिकै । चलीं पित मात अपमान करि कै ॥ लरत निकासीं सबै तोरि फरिकै । भईं आतुर वदन दरश हरिकै ॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातै । कोऊ कछु करै सब निरस बातै ॥ ता बिना कछु नहीं भावै । और तो जोरि कोटिक दिखावै ॥ प्रीतिकी कथा वह प्रीति जानै । और करि कोटि बातें बखानै ॥ ज्यों सलिल सिंधु बिनु कहुँ न जाई । सूर वैसी दशा इनहुँ पाई ॥ ९० ॥

राग सूही बिलावल ॥ घरघरते निकसीं ब्रजबाला । लैलै नाम युवति जन जनके मुरलीमें सुनि सुनि ततकाला ॥ इक मारग इक घरते निकरी इक निकसत इक भई बेहाल । इक नाहीं भवननिते निकरी तिनपै आए परम कृपाल ॥ यह महिमा ओई पै जानैं कविसों कहा बरणि यह जाइ । सूरश्याम रस रास रीतिसुख बिन देखे आवै क्यों गाइ ॥ ९१ ॥

राग मलार ॥ रासरसरीति नहिं वरणि आवै । कहाँ वैसी बुद्धि कहां वह मन लहौं कहां इह चित्त जिय भ्रम भुलावै । जो कहौं कौन मानै निगम अगम जो कृपा बिन नहीं या रसहि पावै । भावसों भजै बिन भावमें ए नहीं भावही भावमहँ यह बसावै ॥ यहै निजमंत्र

यह ज्ञान यह ध्यान है दरश दंपति भजन सार गाऊं । इहै मांग्यो बारबार प्रभु सूरके नैन द्वौ रहैं नर देह पाऊं ॥ ९२ ॥

राग केदारो ॥ मुरली ध्वनि करी बलबीर । शरदनिशिको इंदुपूरण देखि यमुनानीर ॥ सुनत सो ध्वनि भईं व्याकुल सकल घोष कुमारि। अंग अभरण उलटि साजी रही कछु न सँभारि ॥ गईं सोरह सहस हरिपै छांडि सुत पति नेह । एक राखी एक पति सो गईं तजि निज देह ॥ दियो तिन तिय आन मधुरै चितै लोचनकोर । सूर भजि गोविन्द यों जग मोहबंधन तोर ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ सुनो शुक कह्यो परीक्षित राव । गोपिन परम कंत हरि जान्यो लख्यो न ब्रह्मप्रभाव ॥ गुणमय ध्यान कीन्ह निर्गुण पद पायो तिन केहि भाइ । मेरे जिय सन्देह गढ्यो यह मुनिवर देहु नशाइ ॥ शुक कह्यो कुटिल भाव मन राखे मुक्त भयो शिशुपाल । गोपी हरिकी प्रिया मुक्ति लहैं कहा अचरज भूपाल ॥ काम क्रोधमें नेह सुहृदता काहू विधि कहै कोई । धरैं ध्यान हरिको जे दृढकरि सूरसो हरि सो होई ॥ ९४ ॥

राग गुंडमलार ॥ सुनत बन बेनुध्वनि चलीं नारी । लोकलज्जा निदरि भवन तजि सुन्दरी मिलीं बन जायके बनविहारी ॥ दरशके लहत मन हरष सबको भयो परसकी साध अति करति भारी । इहै मन वच कर्म तज्यो सुत पति धर्म मेटि भवधर्म सहि लाज गारी ॥ भजै जेहि भाव जो मिलै हरि ताहि त्यौं भेद भेदानहीं पुरुषनारी । सूर प्रभु श्याम ब्रजवाम आतुरकाम मिलीं बनधाम गिरिराज धारी ॥ ९५ ॥

राग सूही बिलावल ।। देखि श्याम मन हरष बढायो । जैसिय शरद चांदनी निर्मल तैसोइ रासरंग उपजायो ॥ तैसिय कनकवरन सब सुंदरि यह शोभापर मन ललचायो ॥ तैसी हंससुता पवित्र तट तैसेइ कल्पवृक्ष सुखदायो । करौं मनोरथ पूरण सबके इहि अंतर इक खेद उपायो । सूर श्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो ॥ ९६ ॥

राग बिहागरो ॥ निशि काहे बनको उठि धाई । हँसि हँसि श्याम कहत हैं सुन्दरि की तुम ब्रज मारगहि भुलाई ॥ गई रही दधिवेचन मथुरा तहां आजु अवसेर लगाई । अति भ्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कहि सबनि बताई ॥ जाहु जाहु घर तुरत युवतिजन खिझत गुरुजन कहि डरवाई । की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन है नहीं भलाई ॥ यह सुनिकै ब्रजवाम कहतभई कहा करत गिरिधर चतुराई । सूर नाम लै लै जन जनके मुरली बारंबार लगाई ॥ ९७ ॥

राग बिहागरो ॥ यह जिनि कहौ घोषकुमारि । हम चतुरई नहीं कीन्हीं तुम चतुर सब ग्वारि ॥ कहां हम कहां तुम रही ब्रज कहां मुरलीनाद । करतिहौ परिहास हमसों तजौ यह रसवाद ॥ बड़ेकी तुम बहू बेटी न मिलै क्यों जाइ । ऐसे ही निशि दौरि आईं हमहिं दोष लगाइ ॥ भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर. फिरि जाहु । सूर प्रभु क्यों निडरि आईं नहीं तुम्हरे नाहु ॥ ९८ ॥

राग जैतश्री ॥ मात पिता तुम्हारे धौं नाहीं । बारंबार कमलदललोचन यह कहि कहि पछिताहीं ॥ उनके लाज नहीं वन तुमको आवन दीन्हीं राति । सब सुंदरी सबै नवयौवन

निठुर अहिरकी जाति ॥ की तुम कहि आई की ऐसेहि कीन्हीं कैसी रीति । सूर तुमहिं यह नाहीं बूझी बड़ी करी विपरीति ॥ ९९ ॥

राग रामकली ॥ अब तुम कही हमारी मानो । बनमें आइ रैनि सुख देख्यो इहै लह्यो सुख जानो ॥ अब ऐसी कीजो जिनि कबहूं जानति हौ मन तुमहूं । यह ध्वनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमहिं लाज अरु हमहूं ॥ हमतौ आज बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो । जैसो कियो लह्यो फल तैसो हमही दोषन आयो ॥ अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वरकी नाहीं । सूर श्याम युवतिनसों कहि कहि सब अपराध क्षमाहीं ॥ ७०० ॥

राग सूही बिलावल ॥ यह युवतिनको धर्म न होई । धृग सो नारि पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई ॥ पतिको धर्म रहै प्रतिपाले युवती सेवाहीको धर्म । युवती सेवा तऊ न त्यागै जो पति कोटि करै अपकर्म ॥ बनमें रैनि वास नहिं कीजै देख्यो बन वृन्दावन आई । विविध सुमन शीतल यमुना जल त्रिविध समीर परसि सुखदाई ॥ घरहीमें तुम धर्म सदाही सुत पति दुखित होत तुम जाहु । सूर श्याम यह कहि परबोधत सेवा करहु जाइ घर नाहु ॥ १ ॥

राग बिहागरो ॥ यह विधि वेद मारग सुनो । कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय गुनौ ॥ कंत मानहु भव तरौगी और नहिं न उपाइ । ताहितजि क्यों विपिन आई कहा पायो आइ ॥ विरध अरु बिन भागहूको पतितजो पति होइ । जऊ मूरख होइ रोगी तजै नाहीं जोइ ॥ इहै मैं पुनि कहत तुमसों जगतमें यह सार । सूर पति सेवा बिना क्यों तरौगी संसार ॥ २ ॥

राग बिहागरो ॥ कहा भयो जो हमपै आई कुलकी रीति गमाई । हमहूँको विधिको डर भारी अजहूं जाहु चँड़ाई ॥ तजि भरतार और जो भजिए सो कुलीन नहिं होई । मरे नरक जीवत या जगमें भलो कहै नहिं कोई ॥ हम जो कहत सबै तुम जानत तुमहूँ चतुर सुजान । सुनहु सूर घर जाहु हमौ घर जैहैं होत बिहान ॥ ३ ॥

राग बिलावल ॥ निठुर वचन सुनि श्यामके युवती बिकलानी । चकृत भई सब सुनिरही नहिं आवै बानी ॥ मनो तुषार कमलन परचो ऐसे कुँभिलानी । मनो महानिधि पाइकै खोयै पछितानी ॥ ऐसी ह्वै गई तनु दशा पियकी सुनि बानी । सूर विरह व्याकुल भई बूडी बिन पानी ॥ ४ ॥

राग मारू ॥ श्याम उर प्रीति मुख कपट बानी । युवती व्याकुल भई धरणि सब गिरि गईं आश गई टूटि नहिं भेद जानी ॥ हँसत नँदलाल मन मन करत ख्याल ए भई बेहाल ब्रज बालभारी । रुदनजल नदी सम बहि चल्यो उरजबिच मनों गिरि फोरि सरिता पनारी ॥ अंग थकि पथिक नहिं चलत कोऊ पंथ नावरसभाव हरि नहीं आनै । सूर प्रभु निठुर करि कहा ह्वै रहे हौ उनहिं बिन और को खेइ जानै ॥ ५ ॥

राग जैतश्री ॥ निठुर वचन जिनि बोलहु श्याम । आश निराश करौ जिनि हमरी व्याकुल वचन कहतिहैं बाम ॥ अंतर कपट दूरि करि डारौ हम तनु कृपा निहारो । कृपा-

सिंधु तुमको सब गावत अपनो नाम सँभारो ॥ हमको शरण और नहिं सूझै कापै हम अब जाहिं । सूरदास प्रभु निजदासनिको चूक कहा पछिताहिं ॥ ६ ॥

राग गौरी ॥ तुम पावत हम घोष न जाहिं । कहा जाइ लेहैं ब्रजमें हम यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं ॥ तुमहूते ब्रज हितू कोउ नहिं कोटि कहौ नहिं मानैं । काके पिता मात हैं काके काहू हम नहिं जानै ॥ काके पति सुत मोह कौनको घरहै कहां पठावत । कैसो धर्म पाप है कैसो आश निराश करावत ॥ हम जानै केवल तुमहीको और वृथा संसार । सूर श्याम निठुराई तजिए तजिय वचन बिसार ॥ ७ ॥

राग जैतश्री ॥ तुमहौ अंतर्यामि कन्हाई । निठुर भए कत रहत इतेपर तुम नहिं जानत पीर पराई ॥ पुनि पुनि कहत जाहु ब्रज सुंदरि दूरि करौ पिय यह चतुराई । आपुहि कही करौ पति सेवा ता सेवाको हैं हम आई ॥ जो तुम कहौ तुमहिं सब छाजै कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई । सुनहु सूर इहंई तनु त्यागैं हमपै घोष गयो नहि जाई ॥ ८ ॥

राग बिहागरो ॥ कैसे हमको ब्रजहि पठावत । मानतौ रह्यो चरण लपटानो जो एतनी यह देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसकनि अमृत वचन श्रवणनको भावत । इन्द्री सबै मनहिके पाछे कहो धर्म कहि कहा बतावत ॥ इनको करी आपनो लायक तौ क्यों हम नाहीं जिय भावत । सूर सैन दै सरवस लूट्यो मुरली लै लै नाम बुलावत ॥९॥

राग कान्हरो ॥ भवन नहीं अब जाहिं कन्हाई । सुजन बँधुते भई बाहिरी अब कैसे वे करत बडाई । जो कबहूं वे लेहिं कृपा करि धृग वे धृग हम नारि । तुम बिछुरत जीवन धृग राखैं कहौ न आपु बिचारि ॥ धृग वह लाज विमुखकी सँगति धनि जीवन तुम हेत। धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुतपतिको चेत ॥ हम चाहति मृदु हँसनि माधुरी जाते उपज्यो काम । सूर श्याम अधरन रस सींचहु जरति विरह सब वाम ॥ १० ॥

राग कान्हरो ॥ सुनहु श्याम अब करहु चतुरई क्यों तुम बेणु बजाइ बुलाई । बिधि मर्याद लोककी लज्जा सबै त्यागिहम धाई आई ॥ अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करौ जिनि साईं । सोइ कुलीन सोई बड भागिनि जो तुव सन्मुख रहै सदाई ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि तेई पंकज चरण रहैं दृढताई । सूरदास कहि कहा बखानैं यह निशि यह अंग सुंदरताई ॥ ११ ॥

राग रामकली ॥ बिनती सुनिये श्याम सुजान । अतिहि मुख अपमान कीन्हों दृढ न इनते आन ॥ अब करौ दुख दूरि इनको भजौं तजि अभिमान । बिरह द्वंद्व निवारि डारो अधर रस दै पान ॥ मनहि मन यह सुख करत हरि भए कृपानिधान । सूर निश्चय भजी मोकों नहीं जानति आन ॥ १२ ॥

राग बिलावल ॥ मोहिं बिना ए औरन जानैं ॥ बिधि मर्याद लोककी लज्जा तृणहूते घटि मानैं । इन मोको नीके पहिचान्यो कपट नहीं उर राख्यो । साधु साधु पुनि पुनि हरषित ह्वै मनहीं मन यह भाख्यो । पुनि हँसि कह्यो निठुरता धरिकै क्यों त्याग्यो गृहधर्म । सूर श्याम मुख कपट हृदय रति युवतिनके अति भर्म ॥ १३ ॥

राग गुण्डमलार ॥ तजौ नँदलाल अति निठुरई गहि रेह कहा पुनि पुनि कहत धर्म हमको। एकही ढंग रहे वचन सब कटु कहे वृथा युवती न दहे मेटि प्रनको ॥ विमुख तुमते रहैं तिनहि हम क्यों गहैं तहाँ ६.ह लहैं दुख देहिं भारी। कहा सुत पति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार वन वन विहारी ॥ हमहिं समुझाइ यह कहो मूरख नारि कहो तुम कहां नाहिं भर्म जानैं। सुनहु प्रभु सूर तुम भले की वे भले सत्य करि कहौ हम अबहिं मानैं ॥ १४ ॥

राग रामकली ॥ तुमहि विमुख धृग धृग नर नारि। हम तौ यह जानति तुव महिमाको सुनिए गिरिधारि ॥ साँची प्रीति करी हम तुमसों अंतर्यामी जानो ॥ गृह जनकी नाहिं पीर हमारे वृथा धर्म हमठानो ॥ पाप पुण्य दोऊ परित्यागे अब जो होइ सुहोई। आशनिराश सूरके स्वामी ऐसी करै न कोई ॥ १५ ॥

राग जयतश्री ॥ आश जिनि तोरहु श्याम हमारी। बैन नाद ध्वनि सुनि उठि धाईं प्रगटत नाम मुरारी ॥ क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे विरद भुलाने। दीन आजु हमते कोउ नाहीं जानि श्याम मुसुकाने ॥ अपने भुजदंडन कर गहिए विरह सलिलमें भासी। बार बार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी ॥ प्रीति वचन नवका करि राख्यो अंकम भरि बैठावहु। सूर श्याम तुम बिनु गति नाहीं युवतिन पारलगावहु ॥ १६ ॥

राग नट ॥ चितदै सुनहु अंबुजनैन। कृपणके गथ भयो हमको सरस अमृत बैन ॥ हम गुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धनराशि। कैसेहूं सुखदान दीजै विरह दारिद नाशि। करहु यह यश प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि। कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि बोलि ॥ दीनबाणी श्रवण सुनि सुनि द्रए परम कृपाल। सूर एकहु अँग न काची धन्यधनि ब्रजबाल ॥ १७ ॥

राग बिहागरो ॥ हरि सुनि दीन वचन रसाल। विरह व्याकुल देखि बाला भरे नैन बिशाल ॥ चारु आनन लोरधारा वरणि कापै जाइ। मनहुँ सुधातंडाग उछले प्रेम प्रगटि देखाइ ॥ चंद्रमुख परि निदरि बैठे सुभग जोर चकोर। पियत मुख भरि भरि सुधा शशि गिरत तापर भौंर। हरष वाणी कहत पुनि पुनि धन्य धनि ब्रजबाल। सूर प्रभु करि कृपा जो ह्यो सदय भए गोपाल ॥ १८ ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम हँसि बोले प्रभुता डारि। बारंबार विनय कर जोरत कटिपट गोद पसारि ॥ तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारे मैं असाध तुम साध। धन्यधन्य कहि कहि युवतिनको आप करत अनुराध ॥ मोको भजी एकचित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि। सुत पति नेह तोरि तिनुकासों मोही निजकरि जानि ॥ जाके हाथ पेट फल ताको सो फल लह्यो कुमारि। सूर कृपापूरणसों बोले गिरिगोवर्धनधारि ॥ १९ ॥

राग सूही बिलावल ॥ कहत श्याम यह श्रीमुखबानी। धन्यधन्य दृढ नेम तुम्हारो बिन दामन मो हाथ बिकानी ॥ निर्दय वचन कपटके भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निशंक आय तुम मोको गुरुजनकी शंका नाहिं मानी ॥ सिंह रहै जंबुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी। सूर श्यामअंकम भरि लीन्हीं विरह अग्नि झर तुरत बुझानी ॥ २० ॥

राग मारू ॥ कियो जेहि काज तप घोषनारी । देऊँ फल हौं तुरत लेहु तुम अब घरी हरष चित करहु दुख देहु डारी । रासरस रचौं मिलि संग बिलसहु सबै बिँहसि हरि कह्यो यों निगमबानी । हँसत मुख मुख निरखि वचन अमृत बरषि प्रियारस भरे सारंग-पानी ॥ ब्रजयुवती चहुँ पास मध्य सुंदर श्याम राधिका वाम अति छबि बिराजै ॥ सूर नव जलद् तनु सुभग श्यामलकांति इंद्र वधु पाँति बिच अधिक छाजै ॥ २१ ॥

राग नट ॥ हरि मुख देखि भूले नैन । हृदय हरषित प्रेम गद्गद् मुख न आवत बैन ॥ काम आतुर भजी गोपी मिले तेहि भाइ । प्रेमवश्य कृपालु केशव जानिलेत सुभाइ ॥ पर-स्पर मिलि हँसत रहसत हरषि करत विलास । उमँगि आनँद सिंधु उछल्यो श्यामके अभिलाष ॥ मिलति इकइक भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आनि । तेहि समय सुख श्यामश्यामा सूर क्यों कहैगानि ॥ २२ ॥

राग बिहागरो ॥ रास रुचि जबहि श्याम मन आनी । करहु शृंगार सँवारि सुंदरी हंसत कहत हरि बानी ॥ जोदेखे अंग उलटे भूषण तब तरुनिन मुसुकानी । बारबार पिय देखि मुख पुनि पुनि युवति लजानी ॥ नवसत साजि भई सब ठाढी को छबि सकै बखानी ॥ वह छबि निरखि अधीर भई तनु कामनारि बिततानी ॥ कुच भुज परसि करी मनइच्छा कछु तनुतृषा बुझानी । सुनहु सूर रस रास नायिका सुंदरि राधा रानी ॥ २३ ॥

राग सोरठ ॥ अंचल चंचल श्याम गह्यो । लैगए सुभगपुलिन यमुनाके अँग अँग भेष लह्यो ॥ कलप तरोवर तर बसीबट राधा रति गृहधाम । तहां रास रस रंग उपायो सँग शोभति ब्रजवाम ॥ मध्य श्याम घन तडित भामिनी अतिराजत शुभ जोरी । सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली गोरी ॥ २४ ॥

राग टोडी ॥ जहां श्यामघन रास उपायो । कुमकुमजल सुख वृष्टि रमायो ॥ धरणीरज कपूरमय भारी । विविध सुमन छबि न्यारीन्यारी ॥ युवती जुरि मंडली बिराजैं । बिचबिच कीन्ह तरुनिबिच भ्राजैं ॥ अनुपम लीला प्रगट देखायो ॥ गोपिनको कीयो मन भायो ॥ बिच श्रीश्याम नारि बिच गोरी । कनकखंभ मर्कत खचि धोरी ॥ शोभा सिंधु हिलोर हिलोरी । सूर कहा मति वरणै थोरी ॥ २५ ॥

राग गुण्डमलार ॥ रास मंडल बने श्याम श्यामा । नारि दुहुं पास गिरिधर बने दुहुँनि बिच सहस शशि वीस द्वादश उपामा ॥ मुकुटकी छबि निरखि कहा उपमा कहौं नैन जानत नहीं देह जानै । सुभगतन मेघ ता बीच चपला चमक निरखि नृत्यत मोर हरष मानै ॥ करति आनंद पियसंग लक्ष्मीपुंज बढत रसरंग छिन छिन हि औरै । सूर प्रभु रास रस नागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरै ॥ २६ ॥

परस्पर श्याम ब्रजबाम सोहैं । शीशश्रीखंड कुंडल जडित मणि श्रवण निरखि छबि श्याम मन तरुणि मोहैं ॥ नासिका ललित बेसरि बनी अधर तट सुभग तांटक छबि कहि न जाई । धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि मनहिंमन तहां रीझे कन्हाई ॥ तब चलत हरि मटकि रहीं युवती भटकि लटकि लटकन खटकि छबि विचारैं । कहति प्रभु सूर बहुरौ चलौ वैसही हमहु वैसे चलैं जो निहारैं ॥ २७ ॥

निरखि ब्रजनारि छबि श्याम लाजै । विविध वेनी रची मांग पाटी सुभग भाल बेंदी-बिंदु इंदु लाजै ॥ श्रवण ताटंक लोचन चारु नासिका हंस खंजन कीर कोटि लाजै । अधर विद्रुम दशन नहीं छबि दामिनी सुभग बेसरि निरखि काम लाजै ॥ चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोती न छबि कुच उँचनि हेम गिरि अनिहि लाजै । सूरकी स्वामिनी नारि ब्रज-भामिनी निरखि पिय प्रेम शोभा सुलाजै ॥ २८ ॥

राग बिहागरो ॥ बनी ब्रजनारिशोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहँगा अँग पचरँग सारि ॥ किंकिणी कटि कुनित कंकन करचुरी झनकार । हृदय चौकीचमकि बैठी सुभग मोतिनहार ॥ कंठश्री दुलरी विराजत चिबुक श्यामल बिंद । सुभग बेंदी ललित नासा रीझिरहे नँदनंद ॥ श्रवणपर ताटंककी छबि गोर ललित कपोल । सूर प्रभु वश अति भएहैं निरखि लोचन लोल ॥ २९ ॥

राग जैतश्री ॥ सुरगण चढि विमान नभदेखत । ललनासहित सुमन गण वरषत जन्म धन्य ब्रजहीको लेखत ॥ धनि ब्रजलोग धन्य ब्रजबाला विहरत रास गोपाल । धनि बंसी-वट धनि यमुनातट धनि धनि लता तमाल ॥ सबते धन्य धन्य वृंदावन जहाँ कृष्णको वास । धनि धनि सूरदासके स्वामी अद्भुत राचो रास ॥ ३० ॥

राग बिलावल ॥ नैन सफल अब भए हमारे । देवलोक नीसान वजाए वरषत सुमन सुधारे ॥ जै जै ध्वनि किन्नर मुनि गावत निरखत योग बिसारे । शिव शारद नारद यह भाषत धनि धनि नंददुलारे ॥ सुरललना पतिगति बिसराए रही निहारि निहारि । जात न बनै देखि सुख हरिको आईं लोक बिसारि ॥ यह छबि तिहूं भुवन कहुँ नाहीं जो वृंदावन धाम । सुंदर त्रय गुण रसकी सीवां सूर राधिका श्याम ॥ ३१ ॥

राग आसावरी ॥ हमको विधि ब्रजवधू न कीन्हीं कहा अमरपुर वास भए । वार वार पछितात यहै कहि सुखहोतो हरिसंग रए ॥ कहा जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रज अवतार भलो । वृंदावन द्रुम लता हूजिए करतासों माँगिए चलो ॥ यह बांछना होइ क्यों पूरण दासी ह्वै बरु ब्रज रहिए । सूरदास प्रभु अंतर्यामी तिनहि बिना कासों कहिए ॥ ३२ ॥

राग बिहागरो ॥ धन्य नंद यशुदाके नंदन । धनि श्रीखंड पिंड शिर लटकनि धनि कुंडल धनि मृगमद चंदन ॥ धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहनकी जोरी । ज्यों घनमध्य दामिनीकी छबि यह उपमा कहौं थोरी ॥ धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नंदकुमार । राधा श्याम सब गोपकुमारी क्रीडत रास विहार ॥ षटदश सहस गोपकी नारी षटदश सहस गुपाल । काहूसों कहुँ अंतर नाहीं करत परस्पर ख्याल ॥ धनि ब्रजवास आश यह पूरण कैसे होति हमारी । सूर अमरललनागण अंमर विथकीं लोक बिसारी ॥ ३३ ॥

राग मलार ॥ मानो माई घनघन अंतरदामिनि । घन दामिनि दामिनि घन अंतर शोभित हरि ब्रजभामिनि ॥ यमुन पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि । सुंदर शशि गुण

रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि ॥ रच्यो रास मिलि रसिक राइसों मुदित भई ब्रज-भामिनि । रूपनिधान श्यामसुंदर घन आनंद मनविश्रामिनि ॥ खंजन मीनमराल हरनछवि भान भेद गजगामिनि । को गति गुनही सूर श्यामसँग काम विमोह्यो कामिनि ॥ ३४ ॥

राग मलार ॥ देखो माई रूप सरोवर साज्यो । ब्रजवनिता बारवारि वृंदमें श्री ब्रजराज विराज्यो ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल । कुच चक्रवाक विलोकि वदन बिधु बिछरि रहे अनमोल ॥ मुक्तामाल बालबगपंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुक सैना वैजयंति समतूल ॥ पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावै । सूर श्याम आनंदकंदकी शोभा कहत न आवै ॥ ३५ ॥

राग सुही ॥ तरुतमाल गोपाल लाल वनमाल गिरिधर हृदय विशाल । कबहुंक गोधन सँग लै बालक कबहुं फिरत सँग सखा ग्वाल । धनि ब्रज नायक सब गुण लायक कियो महरि पोषी प्रतिपाल । कबहुँक बनिकै रहैं जु बनए गोरस दान लेत तत्काल ॥ पैठि पतालहि नाथ्यो काली फन प्रति नृत्यत विविधताल । धनि भूषन धनि मुकुट जरचो नग हीरा चूनी लाल ॥ धन्य सूर प्रभुता धरे राजै सँग सँग बनिताजाल । कुंडल लोल कपोल विराजत दशन चमक सपनाल ॥ ३६ ॥

राग कान्हरो ॥ भाल तिलक शोभित शिर केसरि नैना विविध बने । कटि कछनी चंदन खौरि श्याम बरन घनसुंदर ऐसे नट नागरके जैए री वारने त्रिभंगा ह्वै नृत्य करत ब्रज युवतिन मंडली बिच दुहुँ दुहुँ बिच श्याम घने । मोरमुकुट शीश धरे राजत है सूर प्रभु निरखि निरखि अमरन भजै जैजै ध्वनि भनै ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ॥ रास मंडल मध्य श्याम राधा । मनो घनबीच दामिनी कौंधति सुभग एक हैं रूप द्वै नाहिं बाधा ॥ नायका अष्ट अष्टहु दिशा सोहहीं बनी चहुँ पास सब गोप-कन्या । मिले सब संग नहिं लखति कोउ परस्पर बने षटदश सहस कृष्ण सैन्या ॥ सजे शृंगार नवसात जगमग रह्यो अंग भूषण रैनि बनी तैसी । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल ब्रज सुता मंडली जैसी ॥ ३८ ॥

राग भैरव ॥ युवति अंग छबि निरखत श्याम । नंदकुमार श्रीअंग माधुरी अवलोकति ब्रज वाम ॥ परी दृष्टि कुच उचनि पियाकी वह सुख कह्यो न जाई । अँगिया नील मांडनी राती निरखत नैन चुराई ॥ वै निरखति पिय उर भुजकी छबि पहुँचनि पहुँची भ्राजति । करपल्लवन मुद्रिका सोहत ता छबिपर मन लाजति ॥ बंदन बिंद निरखि हरि रीझे शशिपर बालवि भाल । नंदलाल ब्रज लालकि छबि क्यों बरणै सूरजदास ॥ ३९ ॥

राग गौरी ॥ श्याम तनु राजतपीता पिछौरी । उर बनमाल काछनी काछे कटि किंकिनि छबि रोरी । बेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी । सूथन जघन बांधि नाग बँद तिरनी पर छबि भारी ॥ नखनि रंग जावककी शोभा देखत पियमन भावत । सूरदास प्रभु तनु त्रिभंग ह्वै युवतिन मनहि रिझावत ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥ नीलांबर पहिरे तनु भामिनी जनु घनमें दमकत है दामिनी । शेष महेश लोकेश शुकादिक नारदादि मुनिकीहै स्वामनी ॥ शशि मुख तिलक दियो मृगमदको

खुटिला खुभी जराय जरी। नासा तिल प्रसून बेसरि छबि मोतियन माँग सुहाग भरी॥ अति सुदेश मृदु चिकुर हरत चित गूँथे सुमन रसालहि। कवरी अति कमनीय सुभग शिर राजति गौरी बालहि॥ सिगरी कनक रत्न मुक्तामणि लटकनि चितहि चुरावै। मानो कोटि कोटि शत मोहनी पाँइनि आनि लगावै॥ कामकमान समान भौंह दोउ चंचल नैन सरोजै। अलिगंजन अंजन दै रेखा बरषत बाण मनो जै॥ कंबु कंठ नाना मणि भूषन उर मुक्ताकी माल। कनक किंकिणी नूपुर कलरव कुंजत बाल मराल॥ चौकी हेम चंद्रमणि लागी हीरारतन जराय खची। भुवन चतुर्दशकी सुंदरता राधेके मुख मनहुँ रची॥ सजल मेघ घन साँवल सुंदर बाम अंग अति सोहै। रूप अनूप मनोहर मोहै ता उपमा कहि कोहै॥ सहज माधुरी अंग अंग प्रति सुवश किए ब्रजनाथ घनी। अखिललोक लोकेश विलोकत सब लोकनमाहिं एक गनी॥ कबहुँक हरि सँग नृत्यति श्यामा श्रमकन बूँद विराजत यों। मानहु अधरसुधाके कारण शशि दूजो मुक-ताहलयों॥ रमा उमा अरु शची अरुंधति दिन प्रति देखन आवैं। निरखि कुसुम सुरगण हैं वर्षत प्रेम मुदित यश गावैं॥ रूपराशि सुखराशि राधिका शील महागुणराशी। कृष्ण चरण ते पावहिं श्यामा जे तुव चरण उपासी॥ जगनायक जगदीश पियारी जगतजननि जगरानी। नित विहार गोपाललाल सँग वृन्दाबन रजधानी॥अगतिनकी गति भक्तनकी पति श्रीराधापद मंगलदानी। अशरनशरनी भवभयहरनी वेद पुराण बखानी॥ रसना एक नहीं शत कोटिक शोभा अमित अपारी। कृष्ण भक्ति दीजै श्रीराधे सूरदास बलिहारी॥४१॥

राग बिहागरो॥ नृत्यत श्याम नानारंग। मुकुट लटकनि धरे नटवर अंग॥ चलत गति कटि रुनित किंकिनि घूँघरू झनकार। मनो हंस रसाल बानी अरस परस विहार॥ लसति कर पहुँची सो पुंजय मुद्रिका अति ज्योति भावसों॥ भुज फिरत जबहीं तबहिं शोभा होति॥ कबहुँ नृत्यत नारि गतिपर कबहुँ नृत्यत आपु। सूरके प्रभु रसिककी मणि रच्यो रास प्रतापु॥४२॥

राग बिहागरो॥गति सुधंग नृत्यत ब्रज नारी। हाव भाव नैना सैना दै दै रिझवति गिरिधारी॥ मगपग पटकि भुजनि लटकावति फंदा करनि अनूप। चंचल चलत झूमिये अंचल अद्भुत है वह रूप॥ दुरि निरखत अंग रूप परस्पर दोउ मनहिंगन रिझवत। हँसि हँसि वदन वचन रस प्रगटत स्वेद अंग जल भीजत॥ वेनी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो॥ फूल खसत शिरते भए न्यारे सुभग स्वाति सुत मानो॥ गान करति नागरि रीझे पिय लीन्हीं अंकम लाइ। रसवश ह्वै लपटाइरहे दोउ सूर सखी बलिजाइ॥४३॥

राग गौरी॥ नृत्यत अंग अभूषण बाजत। गति सुढंगसों भाव देखावत इकते इक अति राजत॥ कहत न बनै रह्यो रस ऐसो वर्णत वरणि न जाइ। जैसेइ श्याम तैसियै गोपी अतिही छबि अधिकाइ॥ कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग पैजनि बिछिया शोभित। अद्भुत ध्वनि उपजत इन मिलिकै भ्रमि २ इत उत जोवत॥ सुनिसुनि श्रवण रीझि मनहीमन राधा रासरसज्ञा। सूर श्याम सबके सुखदायक लायक गुणनि गुणज्ञा॥४४॥

राग केदारो ॥ उघटत श्याम नृत्यत नारि। धरे अधर उपंग उपजै लेतहै गिरिधारि ॥ ताल मुरज रबाब बीना किन्नरी रससार। शब्द संग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार ॥ नागरी सब गुणनि आगरि मिलि चलति पियसंग। कबहुँ गावति कबहुँ नृत्यत कबहुँ उघटति रंग ॥ मंडली गोपाल गोपी अंग अँग अनुहारि। सूर प्रभु धनि नवल भामिनि दामिनी छबि डारि ॥ ४५ ॥

राग बिहागरो ॥ नृत्यत हैं दोउ श्यामा श्याम। अंग मगन पियते प्यारी अति निरखि चकित ब्रज वाम ॥ तिरप लेति चपलासी चमकति झमकति भूषण अंग। या छबिपर उपमा कहूं नाहीं निरखत विवश अनंग ॥ श्रीराधिका सकलगुण पूरण जाके श्याम अधीन। संगते होत नहीं कहुँ न्यारी भई रहति अति लीन ॥ रससमुद मानो उछलत भयो सुंदरताकी खानि। सूरदास प्रभु रीझि थकित भये कहत न कछु बखानि ॥ ४६ ॥

राग कल्याण ॥ कबहुँ पियं हरषि हिरदय लगावै। कबहुं लै लै तान नागरी सुघर नँदसुवनको मन रिझावै ॥ कबहुँ चुंबन देति आकर्षि जिय लेति करति बिनचेत सब हेतु अपने। मिलति भुज कंठ दै रहति अँग लटकिकै जात दुख दूरि ह्वै झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनि बिच देत अधरनि अमृत एक कर चिबुक इक शीश धारै। सूर प्रभु स्वामिनी श्याम अति सन्मुख ह्वै निरखि मुख नैन इक टक निहारै ॥ ४७ ॥

राग आसावरी ॥ जो सुख श्याम करत बृंदावन सो सुख तिहुँपुर नाहीं हो। हमको कहाँ मिलत रज उनकी यह कहि कहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु प्रिया श्रीसत्य कहत हौं मोते और न कोई हो। नंदकुमार रासरससुख बिन बृंदावन नहिं होई हो ॥ हरता करताको प्रभु मैंही वह सुख मोते न्यारो हो ॥ सूर धन्य राधावर गिरिधर धनि सुख नंददुलारो हो ॥ ४८ ॥

राग बिहागरो ॥ रसवश श्याम कीन्ही नारि। अधर रस अचवत परस्पर संग सब ब्रजनारि ॥ काम आतुर भजीं बाला सबनि पुरई आश। एक इक ब्रजनारि इकइक आप करचो प्रकाश ॥ कबहुँ नृत्यत कबहुँ गावत कबहुँ कोकविलास। सूरके प्रभु आश नायक करत सुख दुख नाश ॥ ४९ ॥

राग कल्याण ॥ हरषि मुरली श्याम नाद कीन्हों। करषि मनतिहुँ भुवन सुनिथकि रह्यो पवन शशिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हों ॥ तारकागण लजे बुद्धि मनमन सजे तबहि तनु सुधिं तजे शब्द लाग्यो। नाग नर मुनि थके नभ धरणि तनतके शारदास्वामी। शिव ध्यान जाग्यो ॥ ध्यान नारद टरचो शेष आसन चल्यो गई बैकुंठ ध्वनि मगन स्वामी। कहत श्रीप्रियासों राधिकारवन ए सूर प्रभु श्यामके दरशकामी ॥ ५० ॥

राग बिहागरो ॥ मुरली ध्वनि बैकुंठ गई। नारायण कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदय भई ॥ सुनहु प्रिया यह बाणी अद्भुत वृंदाबन हरि देख्यो। धन्य धन्य श्रीपति मुख कहिकहि जीवन ब्रजको लेख्यो। रासबिलास करत नँदनंदन सो हमते अति दूरि। धनि बन धाम धन्य ब्रजधरनी उडि लागे ज्यों धूरि ॥ यह सुख तिहूं भुवनमें जाहीं जो पल एक। सूर निरखि नारायण इकटक भूले नैन निमेक ॥ ५१ ॥

राग कल्याण ॥ जब हरि मुरलीनाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशौ दिशि पूरण ध्वनि आच्छादित कीन्हों । निशिवर कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीन्हों ॥ मैमत भए जीव जल थलके तनुकी सुधि न सँभार । सूर श्याम मुख बैन मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ॥ ५२ ॥

राग पूरवी ॥ मुरली गति विपरीति कराई । तिहूंभुवन भरि नादसमानो राधारवन बजाई ॥ बछरा धन नाहीं मुख परसत चरत नहीं तृण धेनु । यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनि बेनु ॥ बिह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधर्व नर नारि । सूरदास सब चकित जहां तहँ ब्रजयुवतिन सुखकारि ॥ ५३ ॥

राग केदारो ॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन विफल वृक्षन फले ॥ पय स्रवत गोधननि थनते प्रेमपुलकित गात । झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव विटप चंचलपात ॥ सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि । धरणि उमँगि न माति धरमें यती योग विसारि ॥ ग्वाल गृहगृह सहज सोवत उहै सहज सुभाइ । सूर प्रभु रस· रासके हित सुखद रैनि बढाइ ॥ ५४ ॥

राग केदारो ॥ रासरस मुरलीहीते जान्यो । श्याम अधरपर बैठि नाद कियो मारग चंद्र हिरान्यो ॥ धरणि जीव जल थलके मोहे नभमंडल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परचो जाके ॥ बच्यो नहीं पाताल रसातल कितिक उदै लौं भान । नारद शारद शिव यह भाषत कछु तनु रह्यो न सयान ॥ यह अपाररस रास उपायो सुन्यो न देख्यो नैन । नारायण ध्वनि सुनि ललचाने श्याम अधर सुनि बैन ॥ कहत रमासों सुनि सुनि प्यारी विहरत हैं वन श्याम । सूर कहाँ हमको वैसो सुख जो विलसति व्रजवाम ॥ ५५ ॥

जीती जीती है रनवंसी । मधुकर सूत वदत बंदी पिक मागध मदन प्रशंसी ॥ मथ्यो मान बल दर्प महीपति युवतियूथ गहि आने । ध्वनिभो खंड ब्रह्मंड भेद करि सुर सन्मुख शर ताने ॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनंदन बोलत जै जै बाने । राधापति सर्वस अपनो दै पुनि ताहाथ बिकाने ॥ खग मृग मीन सुमार किए सब जड जंगम जित भेष । छाजत छत मद मोह कवच कटि तजत न नैन निमेष ॥ अपनी अपनी ठकुराइनिकी काढति है भुवरेख । बैठी पीठ पानि गर्जति है देति सबनि अवशेष । रविको षटदश कला समेत । रच्यो यज्ञ रसरास राजसू वृन्दाविपिन निकेत ॥ दान मान परधान प्रेमरस बध्यो माधु· री हेत । अधिकारी गोपाल तहां है सूर सबनि सुख देत ॥ ५६ ॥

अथ श्रीकृष्ण विवाह वर्णन ॥ राग सारंग ॥ जाको व्यास वर्णत रास । है गंधर्वविवाह चितदै सुनो विविध विलास ॥ कियो प्रथम कुमारि यह ब्रत धरयो हृदय निवास । नंद-सुत पति देव देवी पूज मनकी आस ॥ दियो तब परसाद सबको भयो सबन हुलास । मंत्र नयना तरुन वर तर यमुनजल हरि पास ॥ धरचो लग्न जो शरद निशिकी सुधि करी गुरु रास । मोरमुकुट समीर मानो कनक कंकन रास ॥ वेणुध्वनि सुनि श्रवण सायक कमलवदन प्रकास । रूपप्रति प्रति रूप कीन्हें भए अंश निवास ॥ अधर निधि बेधीर करिकै करत आनन हास । फिरत भाँवरि वश्य भूषण अग्नि मानो भास ॥ सुरनारि

कौतुक लागि आई छाँडि सुत पति पास । जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननँद न सास ॥ निरखि श्रुतिमति कुसुमअंजलि वरषि प्रसुन अकास । लेत या रस रासको रस रसिक सूरजदास ॥ ९७ ॥

राग सूही ॥ यह व्रत हिय धरि देवी पूजी । है कछु मन अभिलाष न दूजी ॥ दीजै नंदसुवन पनि मेरे । जोपै होइ अनुग्रह तेरे ॥ वरष दिनन भरि तप तनु कियो । तब करि अनुग्रह देवी बर दियो ॥

राग छन्द ॥ करि अनुग्रह वर जो दीन्हों वरष युवतिन तप कियो । त्रैलोकभूषण पुरुष सुन्दर रूप गुण नाहिंन वियो ॥ उबटि खौरि शृंगारि सखिअन कुँवरि चोरी आनियो । जाहित कियो व्रतनेम संयम सो घरी विधि बानियो ॥ १ ॥

मोरमुकुटरचि मौर बनायो । माथेपर धरि हरि वरु आयो ॥ तनु श्यामल पट पीत दुकूले । देखत घन दामिनि मन भूले ॥

राग छन्द ॥ दामिनी घन कोटि वारौं जब निहारौं वह छवी । कुंडल विराजत गंडमंडल नहीं शोभा शशि रवी ॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जेहि माहिआं । मनो मौर नाचत संग डोलत मुकुटकी परिछाहिआं ॥ २ ॥

गोपीजन सब नेवते आई । मुरलीध्वनिते पठइ बुलाई ॥ बहु विधि आनँदमंगल गाए । नवफूलनके मंडप छाए ॥

राग छन्द ॥ छाये जु फूलन कुंज मंडप प्रीतिग्रंथि हिए परी । अति रुचिर रूप प्रवीण राधा निकट वृन्दा शुभ घरी ॥ गाए जु गीत पुनीत बहु विधि वेद रव सुन्दरी ध्वनी । नंदसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी ॥ ३ ॥

मिलि मनदै सुख असन वैसे । चितवनि वार किए सब तैसे ॥ तापरि पाणिग्रहण विधि कीन्ही । तब मंडप भरि भाँवरि दीन्ही ॥

राग छन्द ॥ देत भाँवरि कुंज मंडप पुलिनमें वेदी रची । बैठे जु श्यामा श्याम वर त्रैलोककी शोभा खची ॥ उत कोकिला गण कर कोलाहल इत सकल ब्रजनारियाँ । आई जु निवती दुहूँ दिशि मनों देति आनँद गारियाँ ॥ ४ ॥

भए जो मन्मथ सैन्य बराती । द्रुम फूले वन अनवन भाँति ॥ सुर बंदीजन सब जस गाए । मघवाजे मिरदंग बजाए ॥

राग छन्द ॥ बाजहिं जे बाजन सकल नभ सुर पुहुपअंजलि वरषहीं । थकिरहे व्योम विमान मुनिगन जै शब्द करि हर्षहीं ॥ सूरदासहि भयो आनँद पुजी मनकी साधा । श्रीलालगिरिधर नवलदूलह दुलहनी श्रीराधा ॥

राग बिहागरो ॥ प्रथम व्याहविधि ह्वैरह्यो कंकनचार विचारि । रचि रचि पचि पचि गूंथि बनायो नवल निपुनब्रजनारि ॥ नहिं छूटै मोहन डोहनाहो ॥ बडे हो बहुत बछोरियो हो ये गोकुलके राइ । की कर जोरिकरौ बिनतीकै छुवौ श्रीराधाजीके पांइ ॥ यह न होइ गिरिको धरिबो हो सुनहु कुँवर गोपीनाथ । आपुनको तुम बडे कहावत कांपन लागे हैं दोउ हाथ ॥ बहुरि सिमिटि ब्रजसुन्दरी मिलि दीन्ही गांठि बनाइ । छोरहु वेगि कि आनहु

अपनी यशुमति माइ बोलाइ ॥ सहजसिथिल पल्लवते हरि जू लीन्हों छोरि सवारि । किलकि उठीं सब सखी श्यामकी अब तुम छोरौ सुकुमारि ॥ पचि हारी कैसे हु नहिं छूटत बँधी प्रेमकी डोरि । देखि सखी यह रीति दुहुँनकी मुदित हँसी मुख मोरि ॥ अब जिनि करहु सहाय सखी री छोडहु सकल सयान । दुलहिनि छोरि दुलहको कंकन की बोलि बवा वृषभान ॥ कमल कमल कर वर निए हो पानि पियगोपाल । अलि कुल साँचे से लगे रोकटीले नाल ॥ लीला रास गोपाललालकी जो रसरसिक बखान । सदा रहो इह अविचल जोरी बलि सूर समान ॥ ५८ ॥

राग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माइ महाबल सब जग अपवश कीन्हो हो । नेक चितै मुसुकाइकै उनि सबको मन हरि लीन्हो हो ॥ कछु कुल धर्म न जानिए वाके रूप सबै रँग राचे हो । बिन देखे समुझे सुने जग ठगत न कोऊ बाचे हो ॥ पहिरे राती कंचुकी शिर श्वेत उपरना सोहे हो । ऊटि नीलो लहँगा कस्यो सो को जो निरखिन मोहे हो ॥ बोली चतुरानन ठगे सब अमर उपरना राते हो । अतरौटा अवलोकिकै सब असुर महामद माते हो ॥ एकनि दिन दरशन ठगे निशि एक न लै सँग सोवे हो । एकन लै मंदिर चढै रचि एकनि बिरचि विगोवै हो ॥ अकथ कथा वाकी सबै कछु कहौं तो कहिय न जाही हो । छैलनके सँग यों फिरे जैसे तनु सँग छाहीं हो ॥ सुनि ताकी सब अपतई शुक सनकादिक भागे हो । नेक दृष्टि पथ परि गई शंकर शिर टोना लागे हो ॥ योग युक्ति बिसरी सबै उर काम क्रोध मद जागे हो । लोकलाज सब छांडिके उठि धाइ चले सँग नाँगेहो ॥ और कहाँ लगि वाणये परपुरुष न उवरन पावै हो । जो सोवत अनिर्नींदमें हो तहऊँ जाइ जगावै हो ॥ यहि बिधि इह डहकै सबै भरि जल थलहु जीव जेते हो । चतुर शिरोमणि श्याम सुन्यो कनि कहौं कहां लगि केते हो ॥ यहि लाजन मरिये सदा हरि जब सब कहत माय तुम्हारी हो । सूरदास प्रभु वरजिकै किनि मेटहु कुलकी गारी हो ॥ ५९ ॥

राग काफी ॥ सनकादिक नारद मुनि शिव विरंचि जान । देवदुंदुभी मृदंग बाजे वर निसान ॥ वारने तोरन बँधाइ हरि कीन्हो उछाह । ब्रजकी सब रीति भई बरसाने व्याह ॥ डोरन कर छोरनको आईं सकल धाइ । फूली फिरैं सहचरी आनँद उर न समाइ ॥ गजवर गति आवनि पग धरनि धरत पाँव । लटकत शिर सेहरो मनो शिखि श्रीखंड सुभाव ॥ शोभित सँग नारि अंग सबै छबि विराज । गज रथ बाजी बनाइ चँवर छत्र साज ॥ दुलहिनि वृषभानु सुता अंग भ्राज । सूरदास प्रभु दूसह देखो श्रीव्रजराज ॥ ६० ॥

राग सारंग ॥ दूलह देखोंगी जाइ उतरे संकेत वट केहि मिस देखन पाऊं । फूल गूथि माला लै मालिनि ह्वै जाऊं ॥ नंदनंदन प्यारेको बिरिआ करि लाऊं । तमोलिनि ह्वै जाऊँ निरखि नैनन सुख देऊँ ॥ अपने गोपाल लालके मैं वागे रचि लेउँ । बजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन मुख देउँ ॥ वृंदावनचंदको मैं भूषण गढि लेउँ । सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि

नैननि सुख देउँ ॥ चंदन अरगजा सूर केसर धरि लेउँ । गंधिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ ॥ ६१ ॥

राग बिहागरो ॥ वृषभानुनंदिनी अतिछबि बनी श्रीवृन्दावनचंद राधा निर्मल चांदनी ॥ श्याम अलक बिच मोती दुति मंगा ॥ मानहु झलमलित शीश गंगा ॥ श्रवण तातंक सोहै चिकुरकी कांति । उलटि चल्यो है राहु चक्रकी भांति ॥ गोरे लिलाट सोहै सेंदुरको बिंद । शशिकी उपमा देत कविको है निंद ॥ चपल उनींदे नैन लागत सोहाये । नासिका चंप कलीको ह्वै अलिधाये ॥ वदन मंजनते अंजन गयो दूरि । कलंक रहित शशि पुनि कला पूरि ॥ गिरिते लता भइ यह हम सुनि । कचन लताते ह्वै गिरि भए पुनि ॥ कंचनसे तनु सोहै नीलांबरसारी । कुहूनिसामध्य जनु दामिनि उजियारी ॥ नख शिख शोभा मोपै वरणि न जाई । तुमसी तुमही राधा श्याम मनभाई ॥ यह छबि सूरदास सदा रहै बानी । नँद नंदनराजा राधिकादे रानी ॥ ६२ ॥

रागदेवगंधार ॥ दोऊ राजत श्याम श्याम । ब्रज युवती मंडली बिराजत देखति सुरनन वाम ॥ धन्य धन्य वृंदाबनको सुख सुरपुर कौने काम । धनि वृषभानुसुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरदकी याम । कैसेहु सूर जनम ब्रज पावै यह सुख नहिं तिहुँ धाम ॥ ६३

राग केदारो ॥ विराजत मोहन मंडलरास । श्यामा सुधा सरोवर मानो क्रीडत विविध विलास ॥ ब्रजयुवती सत यूथ मंडली मिलि कर परस करे । भुज मृणाल भूषण तोरण युत कंचन खंभ खरे ॥ मृदुपद न्यास मंद मलयानिल बिगलित शीश निचोल । नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल ॥ विपुल पुलक कंचुकि बँद छूटे हृदय अनंद भए । कुच युग चक्रवाक अवनी तजि अंतर रैनि गए । दशन कुंद दाडिम द्युति दामिनि प्रगटत ज्यों दुरिजात । अधर बिंब मधु अमी जलदकन प्रीतम वदन समात ॥ गिरत कुसुम कवरी केशनते टूटत है उरहार । शरद जलद मनो मंद किरन कन कहूं कहूं जलधार ॥ प्रफुलित पृथु नितंब करभीर कमल पद नखमणि चन्द्र अनूप । मानहु लुब्ध भयो वारिज दल इंदु किए दशरूप ॥ श्रुति कुंडल धर गिरत न जानति अति आनंद भरी । चरण परसते चलत चहूं दिशि मानहुँ मीन करी ॥ चरणरुनित नूपुर कटि किंकिनि करतल तालरसाल । तरनी तनय समेत सहज सुख मुख रति मधुर मराल ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी उपजति तान तरंग । निकट विकट मनो द्विजकुल कूजत वय बल बढै अनंग ॥ सकल विनोद सहिन सुरललना मोहे सुर नर नाग । विथकित उडुपति बिंद विराजत श्रीगोपाल अनुराग ॥ याचत दास आश चरणनकी अपनी शरन बसाव । मन अभिलाष श्रवण यश पूरित सूरहि सुधा पिआव ॥ ६४ ॥

राग सूही ॥ रासरसिक गोपाललाल ब्रजपाल संग विरहत वृंदावन । सप्त सुरन मुरली बाजत गाजत भ्राजत राजत अधरनि ध्वनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्वगन ॥ तरुण कान्ह तरु तमालके तट तरुणि गोपिका यूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन ॥

नृत्य करत उघटत संगति पद ताथेई थेई ता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मनमन ॥ ६५ ॥

राग बिहागरो ॥ आज निशि शोभित शरद सुहाई । शीतल मंद सुगंध पवन वह रोमरोम सुखदाई ॥ यमुनापुलिन पुनीत परमरुचि रचि मंडली बनाई । राधा वाम अंगपर कर धरि मध्यहि कुँवर कन्हाई ॥ कुंडल संग ताटंक एक भए युगल कपोलनि झाई । एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई॥चारि चकोर परे मनो फंदा चलत हैं चंचलताई । उडुपति गति तजि रह्यो निरखि लजि सूरदास बलि जाई ॥ ६६ ॥

राग केदारो ॥ आजु हरि ऐसे रास रच्यो । श्रवण सुन्यो न कहूं अवलोक्यो ॥ यह सुख अबलौं कहां सच्यो ॥ प्रथमहि सचे समाज साज सुर सबै मोहे कोउ न बच्यो । एकहि बार थकित थिर चर कियो को जानै को कबहिं नच्यो ॥ गत गुण मद अभिमान अधिक रुचि लै लोचन मन तहँइ खच्यो ॥ शिव नारद शारदा कहत यों हम इतने दिन वादि पच्यो ॥ निरखि नैन रसरीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कलह मच्यो । सूर धनुष धीरज न धरचो तब उलटि अनंग तच्यो ॥ ६७ ॥

आजु हरि अद्‌भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीन्हें मुरली नाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भए सब मुनिजन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना उलटि बहायो ॥ थकित भयो चंद्रमासहित मृग सुधा समुद्र बढायो । सूर श्याम गोपिनसुख दायक लायक दरश दिखायो ॥

राग सोरठ ॥ मोहन यह सुख कहां धरचो । जो सुख रास रैनि उपजायो त्रिभुवन मनहि हरचो ॥ मुरली शब्द सुनत ऐसो को जो व्रतते न टरचो । बचे न कोउ मोहित सब कीन्हें प्रेम उद्योत करचो ॥ उलटि काम तनु काम प्रकाश्यो अद्‌भुत रूप धरचो । सूरदास शिव नारद शारद कहत न कह्यो परचो ॥ ६८ ॥

राग बिहागरो ॥ आजु निशि रास रंग हरि कीन्हों । ब्रजबनिता बिच श्याममंडली मिलि सबको सुख दीन्हों ॥ सुरललना सुरसहित विमोहे रच्यो मधुरसुर गान ॥ नृत्य करत उघटत नानाविधि सुनि मुनि बिसरचो ध्यान । मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभधरनी पाताल ॥ सूर श्याम काको न किए वश रचि रसरासरसाल ॥ ६९ ॥

राग केदारो ॥ बनावत रासमंडल प्यारो । मुकुटकी लटक झलककुंडलकी निरतत नंद-दुलारो ॥ उर बनमाल सोहै सुंदर वर गोपिनके सँग गावै । लेत उपज नागर नागरि सँग बिच बिच तान सुनावै ॥ वंसीवट तट रास रच्यो है सब गोपिन सुखकारो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको भक्तन प्राण अधारो ॥ ७० ॥

राग बिहागरो ॥ दूलह दुलहिनि श्यामा श्याम । कोककला वितपन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको ब्रजनारि कियो ब्रत सो फल पूरण पायो । मनकामना भयो परिपूरण सबहित मानि मनायो ॥ राग रागिनी प्रगट देखायो गायो जो जेहि रूप । सप्त सुरनके भेद बतावति नागरि रूप अनूप ॥ अतिहि सुघर पियको मन मोह्यो अपवश करति रिझावति । सूर श्याम मोहन मूरतिको बारबार उर लावति ॥ ७१ ॥

राग रामकली ॥ इयामा इयाम रिझावति भारी । मन मन कहति और नहिं मोसी पियको कोऊ प्यारी ॥ ध्रुवा छंद धुरपद यश हरिको हरिहीं गाय सुनावति । आपुन रीझि कंतको रिझवति यह जिय गर्व बढावति ॥ नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति । सूर इयाम नागर अरु नागरि ललनासुलपमंडलीराजति ॥ ७२ ॥

राग रामकली ॥ रिझवति पियहि बारं बार । निरखि नैन लजात हरिके नहीं शोभापार॥ चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हँसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वनमृग होत व्याकुल रहत चकृत आइ । सूर प्रभु वश किए नागरि महाजानानि राइ ॥ ७३ ॥

प्यारी इयाम लई उर लाइ । उरज उरसों परसको सुख वरणि कापै जाइ ॥ कनक छबि तन मलय लेपन निरखि भामिनि अंग । नासिका शुभ वास लैलै पुलक इयाम अनंग ॥ देत चुंबन लेत सुखको मानि पूरणभाग । सूर प्रभु वश किए नागरि वदति धन्य सुहाग ॥ ७४ ॥

राग बिहागरो ॥ रीझे परस्पर वरनारि । कंठभुजभुज धरे दोऊ सकत नहिं निरवारि ॥ गौर इयाम कपोल सुललित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण इक द्वै देह कीन्हें भक्त प्रीति प्रकास । सूर स्वामी स्वामिनि मिलि करत रंग विलास ॥ ७५ ॥

गावत इयाम इयामा रंग । सुघर गति नागरि अलापति सुर धरति पियसंग ॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत । मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत ॥ भामिनी अंग जोन्ह मानो जलद इयामलगात । परस्पर दोउ करत क्रीडा मनहि मनहि सिहात। कुचनि बिच कच परम शोभा निरखि हँसत गोपाल ॥ सूर कंचन गिरि बिचनि मनों रह्यो है अंधकाल ॥ ७६ ॥

मोहन मोहनीरस भरे । भौंहमोरनि नैन फेरनि तहाँते नहिं टरे ॥ अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराइ । एककी कहा चलै शतशत कोटि रहतलजाइ ॥ इते पर स्तकनि गति छबि नृत्य भेद अपार । उडत अंचल प्रगटि कुच दोउ कनकघट रससार ॥ दरकि कंचुकी तरकि माला रही धरणी जाइ। सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाइ ॥ ७७ ॥

राग जैतश्री ॥ प्रेमसहित माला कर लीन्ही । प्यारी हृदय रहत यह जानी भुवपर नहीं पतीन्ही ॥ पीतवसन लै श्रमजल पोंछत पुनिलै कंठ लगाइ । चरणन कर परसतहैं अपने कहत अतिहि श्रम पाइ ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखहीके फूंकि झुरावत अंग । सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रियाके रंग ॥ ७८ ॥

राग भैरव॥ हाहा हो पिय नृत्य करो । जैसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यों मेरो मन तुमहु हरो ॥ तुम जैसे श्रम वायु करतहो तैसे मैंहुं डुलावोंगी । मैं श्रम देखि तुम्हारे अंगको भुजभरि कंठलगावोंगी ॥ मैं हारी त्योंही तुम हारो चरण चापि श्रम मेटोंगी । सूर इयाम ज्यों उछँगि लई मोहिं यों मैंहू हँसि भेटोंगी ॥ ७९ ॥

राग रामकली ॥ नृत्यत श्याम श्यामा हेत। मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकनि नारि मन सुखदेत ॥ कबहुं चलत सुगंध गतिसों कबहुं उघटत बैन। लोक कुंडल गंड मंडल चपल नैननि सैन ॥ श्यामकी छबि देखि नागरी रही इकटक जोहि। सूर प्रभु उर लाइ लीन्हों प्रेम गुण करि पोहि ॥ ८० ॥

राग मलारकमोद ॥ अरुझि कुंडललट बेसरिसों पीतपट वनमाल बीच आनि उरझे हैं दोउ जन। प्राणनसों प्राण नैन नैननसों अटकि रहे चटकीली छबि देखि लपटात श्याम घन ॥ होड होडी नृत्य करैं रीझि रीझि अंक भरैं ताता थेई थेई उघटत हैं हरषि मन। सूरदास प्रभु प्यारी मण्डली युवति भोरी नारिको अंचल लै लै पोंछत हैं श्रमकन ॥ ८१ ॥

राग अडानो ॥ मोहनलाल संग ललनायों सोहैं ज्यों तरुतमालके ढिग सुभग सुमन जरदको। वदन कांति अनूप भांति नहिं सँभारति नीलांबर गगन मैं नवघन बिच प्रगट्यो शशि मनो शरदको ॥ मुक्तालड तारागन प्रतिबिंबित बेसरिको चूने मिलि रंग जैसे होत है हरदको। सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छबि बाढी मेटति दुख निरखि नैन मैनके दरदको ॥ ८२ ॥

राग पूरवी ॥ नँदनंदन सुघराई मोहन बंशी बजाई। सरिगमा पधनिसा संसप्त सुरनि गाई। अति अनगीत संगीत सुघर और तान मिलाइ। सूर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुणराय मृदंग बजाइ ॥ सूर प्रभु नवल बाल सकल कलागुण प्रवीन अरस परस रीझि रिझाइ ॥ ८३ ॥

राग बिहागरो ॥ पियके संग खेलत अधिक श्रम भयो आउ री ह्यांको बयारि। अपनो अंचल लै सुख उरी रुचिर वदन श्रमकनके वारि ॥ नृत्यत उलटि गए अंग भूषन बिथुरी अलक बाँधौं सँवारि। सूर रची रचना वृंदावन ब्रज युवतिन सुखको बनवारि ॥ ८४ ॥

राग केदारो ॥ प्यारी देखि विह्वल गात। नंदनँदन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥ कबहुं लेहि उछंग बाला कहि परस्पर बात। प्रेम रस करि भरे दोऊ नैन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरण रैनि नहीं बिहात। सूर प्रभु सँग ब्रज तरुणि मिलि करत सुखन सिहात ॥ ८५ ॥

राग कल्याण ॥ रच्योरासरंग श्याम सबही सुख दीन्हों। मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवतिन तजि गेहवास बनहि गवन कीन्हों। मोहे सुर असुर नाग मुनिजन गन भए जाग शिव शारद नारदादि चकृत भए ज्ञानी। अंमर गन अमर नारि आईं लोकनि विसारि ओकलोक त्यागि कहति धन्य धन्य बानी ॥ थकित भयो गति समीर चन्द्रमा भयो अधीर तारागन लज्जित भए मारग नहिं पावैं। उलटि यमुन बहति धार विपरीत सबही बिचार सूरज प्रभु सँग नारि कौतुक उपजावैं ॥ ८६ ॥

राग टोडी ॥ नँदकुमार रासरस कीन्हों। ब्रज तरुनिनि मिलिकै सुख दीनों ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो। कियो श्याम सबहिन मन भायो ॥ बिच गोपी बिच मिले गोपाल। मणि कञ्चन सोहति शुभमाल॥राधा मोहन मध्य विराजैं। त्रिभुवनकी शोभा ये भ्राजैं॥रास

रंग रस राख्यो भारी । हाव भाव नानागति भारी ॥ रूप गुणनि करि परम उजागरि । नृत्यत अंग थकित भई नागरि ॥ उमँगि श्याम श्यामा उर लाई बारंबार कह्यो श्रमपाई ॥ कण्ठ कण्ठ भुज दोऊँ जोरे । घन दामिनि छूटति नहिं छोरे ॥ सूर श्याम युवतिन सुखदाइ । युवतिनके मग गर्व बढ़ाई ॥ ८७ ॥

राग सूही ॥ तव नागरि अति गर्व बढायो । मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैंहीं वश करि पायो ॥ जोइ जोइ कहति करत सोइ सोइ पिय मेरे हित यह रास उपायो । सुन्दर चतुर और नहिं मोसी देह धरेको भाव जनायो ॥ कबहुंक बैठि जाति हरि कर धरि कबहुंक कहति मैं अति श्रम पायो । सूर श्याम गहि कंठरही त्रिय कन्ध चढौं यह वचन सुनायो ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ कहै भामिनीकंतसों मोहिं कन्ध चढावहु । नृत्य करत अति श्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु ॥ धरणी धरत बनैं नहीं पग अतिहि पिराने । त्रियावचन सुनि गर्वके पिय मन मुसुकाने ॥ मैं अविगत अज अलक हौं यह मर्म न पायो । भाववश्य सबपै रहौं निगमनि यह गायो ॥ एक देह द्वै प्रान हैं दुविधा नहिं यामें । गर्व कियो नरदेहते मैं रहौं न तामें ॥ सूरज प्रभु अन्तर भए संगते तजि नारी । जहां तहां ठाढी रहीं सब घोष कुमारी ॥ ॥ ८९ ॥

अध्याय ॥ ३० ॥ अथ श्रीकृष्णअंतर्धानलीला । राम रामकली ॥ गर्व भयो ब्रजनारिको तबहीं हरि जाना । राधाप्यारी सँग लिए भये अंतर्धाना ॥ गोपिन हरि देख्यो नहीं तब गईं अकुलाई । चकित होइ पूछन लगीं कहां गए कन्हाई ॥ कोउ मर्म जानै नहीं व्याकुल सब बाला । सूर श्याम ढूँढत फिरैं जित तित ब्रजबाला ॥ ९० ॥

राग बिहागरो ॥ तब हरि भए अंतर्धान । जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन ॥ अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाइ । कंठ भुज गहि रही यह कहि लेहु जबहि चढाइ ॥ गए सँग बिसारि रिसमें बिरस कीन्हौं बाल । सूर प्रभु दुरि चरित देखत तुरत भई बेहाल ॥ ९१ ॥

राग टोडी ॥ श्याम गए युवती सँग त्यागि । चकित भई तरुणिन सँग जागि ॥ प्यारी सँग लगाइ बिहारी । कुंजलतातर कतहूं डारी ॥ सँग नहीं तहँ गिरिवर धारी । दशहुदिशा तन दृष्टि पसारी ॥ परी मुरुछि धरनी सुकुमारी । काम बैर लीन्हों शर मारी । त्राहि त्राहि कहि कहि बनवारी । भइ ब्याकुल तनु दशा बिसारी ॥ नैनसलिल भीजी सब सारी । सूर सँग तजि गए मुरारी ॥ ९२ ॥

अध्याय ॥ ३१ ॥ तथा ३२ गोपीबिरह ॥ राग बिहागरो ॥ व्याकुल भईं घोष कुमारि । श्याम तजि सँगते कहां गए यह कहति ब्रजनारि ॥ दशौ दिश नभ द्रुमन देखति चकित भईं बेहाल । राधिका नहिं तहां देखी कह्यो वाके ख्याल ॥ कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज लेगई श्याम । सूर प्रभु सँगमहीं देखो करे ऐसे काम ॥ ९३ ॥

राग धनाश्री ॥ बिकल ब्रजनाथवियोगन नारि । हाहा नाथ अनाथ करौ जिन टेरति बाँह पसारि ॥ हरिजूके लाड गर्व जो तनु सखी सकी न वचन सँभारि । जनिअत है अपराध हमारो नाहिं कछु दोष मुरारि ॥ ढूँढति बाट घाट वन घन तन मुरछि नैन जल धारि । सूरदास अभिमान देहको बैठी सरवस हारि ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ बायें कर द्रुम टेके ठाढी बिछुरे मदनगोपाल रसिक मोहिं विरह व्यथा तनु बाढी ॥ लोचन सजल वचन नहिं आवै श्वास लेति अति गाढी । नंदलाल ऐसी हमसों करी जलते मीन धरि काढी ॥ तब कित लाड लडाइ लडइते वेनी कुसुम गुहि गाढी । सूर श्याम प्रभु तुमरे दरशबिनु अब न चलत दृग आढी ॥ ९५ ॥

राग सारंग ॥ अकेली भूलि परी वनमाँहिं । कोऊ वायु बही कतहूंकी छूटिगई पियबाँहिं जहँजहँ जाउँ तहां डर लागत डगर न पावत नांहिं । सूरदास प्रभु तुमरे दरशबिनु वेइ कदम वै छांहिं ॥ ९६ ॥

राग बिहागरो ॥ वन कुंजन चलीं ब्रजनारि । सदा राधा करति दुविधा देति रसकी गारि ॥ संगही लै गई हरिको सुखकरत वनधाम ॥ कहां जैहैं ढूँढि लैहैं महारसकी वाम ॥ चरणचिह्ननि चलीं देखति राधिकापग नाहिं । सूर प्रभु पगपरासि गोपी हरषि-मन मुसुकाहिं ॥ ९७ ॥

राग कान्हरो ॥ हँसिहँसि युवती कहति परस्पर प्यारीको उरलाइ गए री । श्याम काम तनु आतुरताई ऐसे वामा वश्य भए री ॥ पुनि देखत राधिका चिह्न पग पियपग चिह्न न पावैं । की पियको प्यारी उर लीन्हों यह कहि भ्रम उपजावैं ॥ वै गिरिधरि उर धरि क्यों लेहीं वै गिरिधर उर लीन्हों । सूर भई आतुर ब्रजनारी पियप्यारी पग चीन्हों ॥९८॥

राग बिलावल ॥ जो देखे द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी । चकितभई सब सुंदरी यह तौ राधा नारी ॥ याहीको खोजति सबै यह रही कहांरी । धाइ परीं सब सुंदरी जो जहाँ तहां री ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला । यह तौ अति बेहाल हैं कहां गए गोपाला ॥ बारबार बूझति सबै नहिं बोलति बानी । सूर श्याम काहे तजी कहि सब पछितानी ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ राधे कत निकुंज ठाढी रोवति । इंदुज्योति मुखारबिंदकी चकित चहूँ-दिशि जोवति ॥ द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति । मुकुलित कच तन घनकि ओट ह्वै अँसुवनि चीर निचोवति ॥ सूरदास प्रभु तजी गर्वते भये प्रेम गति गोवति ॥ १८०० ॥

राग भैरव ॥ क्यों राधा नाहिं बोलति है । काहे धरनि परी ब्याकुल ह्वै काहे नैन न खोलति है ॥ कनकवेलिसी क्यों मुरझानी क्यों बनमांझ अकेली है । कहां गए मनमोहन तजिकै काहे विरहदहेली है ॥ श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावति है । सूर श्याम आए यह कहि कहि ऐसे मन हरषावति है ॥ १ ॥

राग बिहागरो ॥ कहां रहे अब लौं तुम श्याम । नैन उघारि रही तहां जो देखै ब्रजवाम ॥ लागी करन बिलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमकी नहीं मिले नँदनंदन बूझति है तब जागि ॥ निरखि बदन वृषभानु कुँवरिको मनो सुधा बिन चंद । राधा बिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नँदनंदन ॥ या बनमें कैसे तुम आई श्याम संग हैं नाहीं । कछु जानति कहां गए कन्हाई तहाँ तोहिं लै जाहीं ॥ मैं हठ कियो वृथा री माई जिय उपज्यो अभिमान । सूर श्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अंतर्धान ॥ २ ॥

राग बिहागरो ॥ मैं अपने मन गर्व बढायो । इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो ॥ यह बाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौन है मोसी अंतर जानिलई ॥ कहाँ गए गिरिधर मोको तजिह्यां कैसे मैं आई । सूर श्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई ॥ ३ ॥

राग बिहागरो ॥ रुदन करति वृषभानुकुमारी । बारबार सखियन उर लावति कहां गए गिरिधारी ॥ कबहूं गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा ब्रजनारी ॥ भरि अँकवारि धरति मुख पोंछति देति नैन जल ढारी ॥ त्रिया पुरुषसों भाव करतिहै जाने निठुर मुरारी । सूर-श्याम कुलधर्म आपनो लये रहत बनवारी ॥ ४ ॥

राग गौरी ॥ नँदनंदन उनको हम जानति । ग्वालन संग रहत जे माई यह कहिकहि गुण गावति ॥ बनबन धेनु चरावत वासर त्रिया बधत डर नाहीं ॥ देखि दशा वृषभानुसुताकी ब्रजतरुणी पछिताहीं ॥ कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हों यह न बूझिए श्यामहिं । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि दूरि करहु मन तामहिं ॥ ५ ॥

राग कल्याण ॥ राधिकासों कह्यो धीर मनधरि री । मिलैंगे श्याम व्याकुल दशा जिनिकरै हरषजिय करौ दुखदूरि करि री । आपु जहँतहँ गईं बिरह सब पगिरईं कुँवरिसों कहि गईं श्यामल्यावैं । फिरति बनबन विकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अलक नहीं पावैं ॥ कहाँ गए यह कहति सबै मग जोवहीं कामतनु दहति ब्रजनारि भारी । सूर प्रभु श्यामदुरि चरित देखहिं सकल गर्व अंतरहृदय हेत नारी ॥ ६ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम सबनिको देखहीं वै देखति नाहीं । जहांतहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं ॥ कोउ बंशीवटको चलीं कोउ वन घन जाहीं । देखि भूमि वह रासकी जहँ तहँ पगछाहीं ॥ सदा हठीली लाडिली कहि कहि पछिताहीं । नैन सजल जल ढारिकै व्याकुल मनमाहीं ॥ एक एक ह्वै ढूँढहीं तरुनी बिकलाहीं । सूरज प्रभु कहुँ नाहिं मिले ढूँढति द्रुमपाहीं ॥ ७ ॥

राग रामकली ॥ कहि धौं री बनबेलि कहूं तुम देखे हैं नँदनंदन । बूझहुं धौं मालती कहूँ तैं पाए हैं तनुचंदन ॥ कहि धौं कुंदकदम बाकुल वट चंपक लता तमाल । कहि धौं कमल कहां कमलापति सुंदर नयन विशाल ॥ श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढायो री ॥ जब बिन देखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण गायो री ॥ मृग मृगनी द्रुम बन सारस खग काहू नहीं बतायो री ॥ मुरली अधर सुधारस लै तरु रहे यमुनके तीर । कहि तुलसी तुम सब जानति हौ कहँ घन श्याम शरीर ॥ कहि धौं मृगी मयाकरि हमसों कहि धौं मधुप मराल सूरदास प्रभुके तुम संगी हौ कहाँ परमदयाल ॥ ८ ॥

कहूं न देख्यो री मधुबनमें माधौ । कहाँ धौं गमन कीन्हों कहाँ धौं बिलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते बिछुरे श्याम तबते रह्यो न जाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ सूरदास प्रभु बिनु कैसे जीवहिं माई घटत घटि रह्यो प्राण आधौ ॥ ९ ॥

राग आसावरी ॥ कहूं न पाऊंरी सब ढूँढ़ि वन घनश्याम सुंदर पर वारौं तन मन । नैनन चटपटी मेरे तबते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन ॥ चंपक जाई गुलाब बकुल

फूले तरुप्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन। सूरदास प्रभु रासरसिक बिनु रासरसिकिनी विरह-विकल करि भई हैं मगन॥ १०॥

राग काफी॥ कोऊ कहुँ देखे री नंदलाल साँवरो सलोना ढोंटा नैन विशाल॥ मोर मुकुट बनमाल रसाल। पीतांबर सोहै मोहै मनगोपाल॥ निशि बन गईं जहां सबै ब्रज बाल। अंतर्धान भए रचि ख्याल॥ द्रुमद्रुम ढूँढत भइ बेहाल। सूर श्याम बिनु विरह जंजाल॥ ११॥

राग सारंग॥ तुम कहुँ देखे श्याम बिसासी। नैक मुरलिका बजाइ बाँसकी लै गए प्राण निकासी॥ कबहुँक आगे कबहुँक पाछे पगपग भरत उसासी। सूर श्यामके दरशन कारण निकसी चंद्रकलासी॥ १२॥

वागेसरी॥ राग कान्हरो॥ मोहन मोहन कहि कहि टेरैं कान्ह हवौ यहि बनमेरे। कहियत हौ तुम अंतर्यामी पूरण कामी सब केरे॥ ढूँढतिहैं द्रुम वेली बाला भई बेहाल करति अवसेरे। सूरदास प्रभु रासविहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे झेरे॥ १३॥

राग अडानो॥ कहो कान्ह ए बातैं हैं तिहारी बनवारी सुखहीमें भए न्यारे। इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे॥ अब करि कृपा मिलौ करुणामय कहियत हौ सुखकारे। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब समझी चूक हमारे॥ १४॥

राग पराजी॥ केहि मारग मैं जाउँ सखी री मारग मुहि बिसरचो। ना जानौ कित ह्वै गए मोहिं जात न जानि परचो॥ अपनो पिय ढूँढति फिरौं री मोहिं मिलबेको चाव। कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यह पायो दाव॥ बन डोंगर ढूंढति फिरी घरमारग तजि गाउं। बूझों द्रुम प्रति रूख राय कोउ कहै न पियको नाउँ॥ चकित भई चितवत फिरी व्याकुल अतिहि अनाथ। अबकै जो कैसेहुँ मिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ॥ हृदय माहँ पियघर करौं री नैनन बैठक देउँ। सूरदास प्रभु सँग मिलैं बहुरि रास रसलेउँ॥ १५॥

राग श्रीराग॥ कान्ह प्यारो कहुँ पायो री। श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृन्दावन छायो री॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढ़ायो री। अब बिनु देखे कल न परत छिन श्याम सुंदर गुण रायो री॥ मृग मृगिनी द्रुम वनसारस खग काहू नहीं बतायो री। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि युवतिन टेरि सुनायो री॥ १६॥

राग बिहागरो॥ हो कान्ह मैं तुम्हैं चाहौं तुम काहे ना आवो। तुम धन तुम तन तुम मन भावो॥ कियो चाहों अरसपरस करौ नाहिं मान। सुन्यो चाहौं श्रवण मधुर मुरली की तान॥ कुंज कुंज जपति फिरी तेरे गुणनकी माल। सूरदास प्रभु वेगि मिलौ मोहिं मोहन नँदलाल॥ १७॥

राग काफी॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै। ज्यों चकोर चंदाको इक टक भृंगी ध्यान लगावै॥ बिनु देखे मोहिं कल न परै री यह कहि सबन सुनावै। तिन कारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुख पावै॥ हाहा करि करि पाँइन परि परि हरि हरि टेर लगावै। सूर श्याम बिनु कोटि करौ जो और नहीं जिय आवै॥ १८॥

राग आसावरी॥ हौं तौ ढूंढि फिरि आई री माई री सिगरो वृन्दावन कहुँ नहीं पाए री नँदनंदन। अनतहि रहे जाइ कौनै धौं राखे छपाइ मोको न कछु सुहाइ कहां जाइ रहे

काम कंदन ॥ मोहीते परी री चूक अंतर भए हैं जाते तुमसों कहति बातें मैंहीं कियो द्वंदन । सूरदास प्रभु बिनु भई हौं बिकल आली कहां रहे बनमाली सुर नर मुनि जन बंदन ॥ १९ ॥

राग बिलावल ॥ मिलहु श्याम मोहिं चूक परी । तेहि अंतर तनुकी सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥ धरणि परी ब्याकुल भई बोलति लोचन धारा अंसु झरी । कबहूं मगन कबहुं सुधि आवति शरन शरन कहि बिरह जरी ॥ कृष्ण कृष्ण करि टेरि उठति हैं युग-सम बीतत पलक घरी । सूर निरखि ब्रजनारि दशा यह चकित भई जहँ तहां खरी ॥२०॥

देखि दशा सुकुमारिकी युवती सब धाईं । तरु तमाल बूझति फिरैं कहि कहि मुरझाईं ॥ नँदनंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल मुकुट बिराजई तनु कुंडल भारी । लोचन चारु बिशाल हैं नासा अति लोनी । अरुण अधर दशनावली छबि बरणै कोनी ॥ बिंब पँवारे लाजहीं दामिनिद्युति थोरी । ऐसे हरि हमको कहौ कहुँ देखे हौ री ॥ अंग अंग छबि कहा कहैं देखे बनि आवै । सूर सुगूँगै खाइ ऊख क्यों स्वाद बतावै ॥ २१ ॥

राग बिलावल ॥ अति ब्याकुल भई गोपिका ढूँढति गिरिधारी । बूझतिहैं बन बेलिसों देखे बनवारी ॥ जाई जूही सेवती करना कनि आरी । बेलि चमेली मालती बूझति द्रुमडारी ॥ खूझा मरुआ कुंदसों कहैं गोद पसारी । बकुल बहुलि बट कदमपै ठाढी ब्रजनारी ॥ बार २ हाहा करैं कहुँ हौ गिरिधारी । सूर श्यामको नाम लै लोचन जल ढारी ॥ २२ ॥

कहूं न पावैं श्यामको बूझत बन बेली । सबै भई ब्याकुल फिरैं तन मदन दहेली ॥ मृगनारीसों बूझहीं बूझैं सुकुमारी । कमल सरोवर बूझहीं बिरहा तनु भारी ॥ कनक बेलीसी सुंदरी द्रुमके तर डारी । मानों दामिनी धरणि परी की सुधा पनारी ॥ इत उतते फिरि आवहीं जहँ राधा प्यारी । सूर श्याम अजहूं नहीं करि मिलत कृपा री ॥ २३ ॥

राग बिहागरो ॥ करति हैं हरि चरित्र ब्रजनारि । देखि अतिही बिकल राधा इहै बुद्धि बिचारि ॥ एक भई गोपालको वपु एक भई बनवारि । एक भई गिरिधरनसमरथ एक भई दैत्यारि ॥ एक भई वे धेनु बछरा एक भई नँदलाल । एक भई जमला उधारन इक त्रिभंग रसाल ॥ एक भई छबि राशि मोहन कहत राधा नारि । एक कहति उठि मिलहु भुज भरि सूर प्रभु री प्यारी ॥ २४ ॥

राग जयतश्री ॥ सुनत ध्वनि श्रवण उठीं अकुलाइ । जो देखैं नँदनंदन हीं वै सखियन भेष बनाइ ॥ कहा कपटकरि मोहिं देखावति कहां श्याम सुखदाइ । कृष्ण कृष्ण शरणागत कहि कै बहुरि गिरी भहराइ ॥ पुनि दौरी जहं तहं ब्रजबाला बन द्रुम शोर लगाइ । सूरदास प्रभु अंतर्यामी बिरहिनि लेहु जिवाइ ॥ २५ ॥

राग कान्हरो ॥ कृपासिंधु हरि क्षमा करौ हो । अनजाने मन गर्व बढायो सो अपने जिनि हृदय धरौ हो ॥ सोरह सहस पीर तन एकै राधा जिव सब देह । ऐसी दशा देखि करुणामैं प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ गर्व हत्यो तनु बिरह प्रकाश्यो प्यारी ब्याकुल जानि । सुनहु सूर अब दरशन दीजै चूक लई इनि मानि ॥

राग केदारो ॥ अहो तुम आनि मिलौ नँदलाल।दुर्बल मलिन फिरत हम बन बन तुम बिनु मदनगोपाल ॥ द्रुम बेली पूंछति सब उझकति देखति ताल तमाल। खेलत रास रंग भारि छांड़ी ले जु गये एकबाल ॥ सूरदास सब गोपी पछिली क्रीड़ा करति रसाल। गोपी वृन्द मध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ २७ ॥

हरि बिनु लागत है बन सूनो। ढूँढ़ति फिरति सकल ब्रज युवती दहत काम दुख दूनो ॥ तजि सूत पति सुनि श्रवणनि धाईं मुरलिनाद मृदु कीनों। व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन जल हीनो ॥ चितवति चकित दिशन दिश हेरति मनमोहन हर-लीनो। द्रुम बेली पूछैं सब सुंदरि नवल जात कहुँ चीनो ॥ कदली वोट निचोरत अञ्चल अधर सुधारस पीनो। सूर श्याम प्रिय प्रेम उमँगि रस हँसि आलिंगन दीन्हों ॥ २८ ॥

राग बिहागरो ॥राधे भूलिरही अनुराग। तरुतरु रुदन करत मुरझानी ढूँढ़ि फिरी बन-बाग ॥ कुँवरि ग्रसित श्रीखंड अहित भ्रम चरण शिलीमुख लाग। बाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काक ॥ कर पल्लव किसलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भए कीर। राका चन्द्र चकोर जानकै पिवत नैनको नीर ॥ व्याकुल दशा देख जगजीवन प्रकट भए तेहि काल। सूर श्याम हित प्रेम अंकुर उर लाइ लई भुज बाल ॥ २९ ॥

राग कल्याण ॥ न्याय तजी श्यामा गोपाल। थोरी कृपा बहुत करि मानी पांवर बुधि ब्रजबाल ॥ मैं कछु कपट सबनसों कीन्हों अपयशते न डेरानी। हम एकही संग एकहि मत सब कोउ नहिं बिलगानी ॥ हम चातक वन नँदनन्दन बरषन लागे हित कीन्हों। तु बड़ी प्रबल पवनसम सजनी प्रेमबीच दुख दीनो ॥ जानि दीन दुखी सब सुखके निधि मोहन बेनु बजायो। सूर श्याम तब दरश परश करि मिलि सन्ताप नशायो ॥३०॥

राग कान्हरो ॥ प्रगट भए नँदनंदन आइ। प्यारी निरखि विरह अति व्याकुल करते लई उठाइ ॥ उभय भुजा भरि अंकम दीन्हों राखी कण्ठ लगाइ। प्राणहुते प्यारी तुम मेरे यह कहिदुखबिसराइ ॥ हँसत भए अन्तर हम तुमसों सहज खेल उपजाइ ॥ धरणी मुरझि परी तुम काहे कहांगई चतुराइ ॥ राधा सकुचि रही मन जान्यो कह्यो न कछू सुनाइ। सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हों दुख डारयो बिसराइ ॥ ३१ ॥

राग कान्हरो ॥ नँदनंदन उर लाइलई। नागरिप्रेम प्रगट तनु व्याकुल तब करुणा हरिहृदय भई। देखि नारि तरुतरं मुरझानी देहदशा सब भूलिगई। प्रिया जानि अंकम भरि लीन्हीं कहि कहि ऐसी काम हई ॥ वदन बिलोकि कंठ उठिलागी कनकवेलि आनंद जई। सूर श्याम फल कृपादृष्टि भए अतिहि भई आनंद मई ॥

अध्याय ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्णमिले गोपिनको फेर रास लीला व जलक्रीडा ॥ राग सूही ॥ अंतरते हरि प्रगट भए। रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिनको मिलि हर्ष दए ॥ वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हों उहै भाव सब मानि लियो। वह जानति हरिसंग तबहिते उहै बुद्धि सब उहै हियो ॥ उहै रासमंडल रस जानति बिच गोपी बिच श्याम धनी। सूर श्याम श्यामामधिनायक उहै परस्पर प्रीति बनी ॥ १२ ॥

राग सारंग ॥ बहुरि श्याम सुखरास कियो। भुज भुज जोरि जुरीं ब्रजबाला वैसेही रस उमँगि हियो ॥ वैसेहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुर नर वश्य भए। वैसे उडुगण

सहित निशापति वैसेहि मारग भूलिगए ॥ वैसेहि दशा भई यमुनाकी वैसेहि गतिजति पवन थक्यो । वैसेहि नृत्य तरंग बढायो वैसेहि बहुरो काम जक्यो ॥ उहै निशा वैसेहि मनयुवती वैसेही हरि सबनि भजे । सूरश्याम वैसेइ मनमोहन वैसेहि प्यारी निरखि लजे ॥३३॥

राग बिहागरो ॥ श्यामछबि निरखत नागरिनारि । प्यारीछबि निरखत मनमोहन सकत न नैन पसारि ॥ पियसकुचत नहिं दृष्टि मिलावत सन्मुख होत लजात । श्रीराधिका निडरि अवलोकत अतिहि हृदय हरषात ॥ अरसपरस मोहनि मोहन मिलि सँग गोपी गोपाल सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुश्मनके उर शाल ॥ ३४ ॥

रची रस रास श्याम सुजान । प्रथम मुरलीनाद करि हरि हरयो सबको ज्ञान ॥ सबनि उलटी रीति कीन्हों देव सुर नर आदि । ब्रजबधू मनकामः पूरण कियो पुरुष अनादि ॥ सहज सुख निशि ग्वाल सोवत सो रची षटमास । हेतु युवती सुख बढ़ावन कियो पूरण आस ॥ मेटि अंतर्धानको दुख उहै राख्यो भाउ । सूर प्रभुमहिमा अगोचर निगम अंत न पाउ ॥ ३५ ॥

राग नट ॥ मोहन रच्यो अद्भुतरास । संग मिलि वृषभानुतनया गोपिका चहुँ पास ॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकाश । जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहिं उदास ॥ थकित भए समीर सुनिकै यमुन उलटी धार । सूर प्रभु ब्रजवाम मिलि मन निशा करत बिहार ॥ ३६ ॥

बिहरत रास रंग गोपाल । नवलश्यामहि सङ्ग शोभित नवल सब ब्रजबाल ॥ शरद निशि अति नवल उज्ज्वल नवलता वनधाम । परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु विश्राम ॥ कोश द्वादश रासपरमिति रच्यो नन्दकुमार । सूर प्रभु सुख दियो निशि रमि कामकौतुक हार ॥ ३७ ॥

राग मलार ॥ रासरमश्रमित भई ब्रजबाल । निशि सुखदै यमुनातट लैगए भोर भयो तेहि काल ॥ मनकामना भए परिपूरण रही न एकौ साध । षोडससहस नारिसँग मोहन कीन्हों सुख अगाध ॥ यमुनाजल बिहरत नँदनन्दन संगमिली सुकुमारि । सूर धन्य धरनी वृन्दावन रवितनया सुखकारि ॥ ३८ ॥

राग गुंड मलार ॥ संग ब्रजनारि हरि रास कीन्हों । सबनकी आश पूरनकरी श्यामले त्रियनिपियहेत सुख मानि लीन्हों ॥ मेटि कुलकानिमर्याद बिधिवेदकी त्यागि गृहनेह सुनि बैनधाईं । फवी जै जै करी मनहि सब जे धरी शंक काहु न करी आपमाई ॥ ज्यों महामत्त गजयूथ करनीलिए कूल सरकोरि डर कही मानैं । सूर प्रभु नंदसुत निदरि निशिरस करयो नाग नरलोक सुर सबै जानैं ॥ ३९ ॥

अथ जलक्रीडा ॥राग गुंडमलार॥ रैनि रसरास सुखकरत बीति॥ भोर भए गए पावन यमुनके सलिल न्हात सुखकरत अतिबढ़ी प्रीति॥ एक इक मिलति हँसि एक हरिसंग रसि एकजल मध्य इकतीर ठाढी । एकइक डरति इकएक भरिकै चलति एकसुख लरति अतिनेह बाढी ॥

काहु नाहिं डरति जल थलहु क्रीडा करति हरति मन निडारि ज्यों कंत नारी। सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनुसाध भई मगन भारी॥ ४०॥

राग गौरी॥ यमुनजल क्रीडत हैं नँदनंदन। गोपीवृंद मनोहर चहुँ दिश मध्य अरिष्ट निकंदन॥ पकरे पाणि परस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुजचंदन। मानों युवति पूजि अहिपतिको लग्यो अंक दै वंदन॥ कुच भरि कुटिल सुदेश अंबुकनि चुवति अग्रगति मंदन। मानहु भरि गंडूष कमलते डारत अलि आनंदन॥ भुज अंक अगाध चलत लै ज्यों लुब्धक खग फंदन। सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन॥ ४१॥

राग कान्हरो॥ बिहरत हैं यमुनाजल श्याम। राजत हैं दोउ बांहांजोरी दंपति अरु ब्रजवाम॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघलों कोउ कटि हिरदै ग्रीव। यह सुख बरणि सकै ऐसो को सुंदरताकी सींव॥ श्याम अंग चंदनकी आभा नागरि केसरि अंग। मलयज पंक कुमकुमा मिलिकै जल यमुना इक रंग॥ निशिश्रम मिट्यो मिट्यो तनु आलस परसि यमुन भई पावन। सूर श्याम जल मध्य युवति गन जन जनके मन भावन॥ ४२॥

जलक्रीडा सुख अति उपजायो। रास रंग मनते नाहिं भूलत उहै भेद मन आयो॥ युवती कर कर जोरि मंडली श्याम नागरी बीच। चंदन अंग कुमकुमा छूटत जलमिटि तट भई कीच॥ जो सुख श्याम करत युवती सँग सो सुख तिहुँपुर नाहीं। सूर श्याम देखत नारिनको रीझि रीझि लपटाहीं॥ ४३॥

राग बिलावल॥ बिहरत नारि हँसत नँदनंदन। निर्मल देह छूटि तनु चंदन॥ अति शोभा त्रिभुवन जन वंदन। पावत नहिं गावत श्रुति छंदन॥ कंचन पीठ नारि अति शोभा। वे उनको वे उनको लोभा॥ कबहुँ अंकभरि चलत अगाधहि॥ अरस परस मेंटत मन साधहि॥ कोउ भाजै कोउ पाछे धावै। युवतिनसों कहि ताहि मँगावै॥ ताको गहि अथाह जल डौरें। मुख व्याकुलतारूप निहौरें॥ कंठ लगाइ लेत पुनि ताही। देत आलिंगन रीझत जाही॥ सूर श्याम व्रज युवतिन भोगी। जाको ध्यावत शिर मुनि योगी॥ ४४॥

राग टोडी॥ ऐसे श्याम वश्य राधाके। नाम लेत पावन आधाके॥ प्यारी श्याम अंजली डारै। वा छबिको चितलाइ निहारै॥ मनो जलद जल डारत ढारै। मन मनही तन मन धन वारै॥ निरखि रूप नहिं धीर सम्हारै। सूर श्यामके अंकम धारै॥ ४५॥

राग ललित॥ राधे छिरकति छींट छबीली। कुच कुमकुम कंचुकि बंद टूटे लटकि रही लट गीली॥ वंदन शिर ताटंक गंड पर रतन जटित मणिलीली। गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली॥ मच्यो खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली। नंदसुवन भुज ग्रीव बिराजत भाग सुहाग भरीली॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली। सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत यमुन तरंग थकीली॥ ४६॥

राग रामकली॥ श्यामा श्याम सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत विहार। पीत कमल इंदीवर ऊपर मनो भोरहि भए निहार॥ श्रीराधा अंबुज कर भरिभरि छिरकत बारंबार।

कनकलता मकरंद झरत मनु हालत पवन सँचार ॥ अतसीकुसुम कलेवर बूँदें प्रतिबिंबत निरधार । ज्योति प्रकाश सुघनमें खोलत स्वाति सुवन आकार ॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृंगार । विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि स्रवत सुधाकी धार ॥ ४७ ॥

राग रामकली ॥ यमुनजल गिरिधर करत बिहार । इत उत गोपवधू मिलि छिरकत हस्तकमल सुखसार ॥ काहूकी कंचुकी छूटी काहूके बिथुरे हैं बार ॥ काहु खुभी काहू नकबेसरि काहूके टूटे हैं हार ॥ सूरदास कहँलौं बरणौं मैं लीला अगम अपार ॥ ४८ ॥

रीझे श्याम नागरि रूप । तैसियै लट बगरि ऊपर स्रवत नीर अनूप स्रवत । जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार । मनों उगलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार ॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ । सूर प्रभु तनकाम व्याकुल गए मननि जनाइ ॥ ४९ ॥

राग सारंग ॥ देख री उमँग्यो सुख आज । जल बिहार बिनोद सुखरुचि रतनको है साज ॥ भीजे पट लपट्यो सुभग उर रही केसर जयन । अरस परस स्वभाव मानो जगे निशिके नयन ॥ कछुक कुंचित केश माई सरस शोभा भयो । सुभग राजत कामद्रुमको मनो अंकुर नयो ॥ युवति गण सब यूथ जितकित भरत अंचल नीर । सूर सुभग गोपाल तन ब्रज सुखद श्याम शरीर ॥ ५० ॥

राग रामकली ॥ श्यामा श्याम अंकम भरी । उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढे धरी । तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारि तेहि रँग ढरी । परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नवहरी ॥ ऐसही सुख दियो मोहन सबै आँनद भरी । करति रंग हिलोर यमुना प्रेम आँनद झरी ॥ रास निशि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धनि यह घरी । सूर प्रभु तट निकसि आए नारि सँग सब खरी ॥ ५१ ॥

राग गूजरी ॥ ढाढे श्याम यमुना तीर । धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधर धीर ॥ युवति बनि बनि भई ठाढी और पहिरे चीर । राधिका सुख श्याम दायक कनकबरन शरीर ॥ लालचोली नील हँडिआ संग युवतिन भीर । सूर प्रभु छवि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर ॥ ५२ ॥

राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ सहसषटदशगोपकन्या रैनि भोगी रास । एक छिन भई कोउ न न्यारी सबनिपुरई आस ॥ बिहँसि सब घर घर पठाँई ब्रजगईं ब्रजबाल । सूर प्रभु नँद धाम पहुँचे लख्यो काहु न ख्याल ॥ ५३ ॥

राग बिलावल ॥ ब्रजवासी सब सोवत पाये । नंदसुवनमति ऐसी ठानी घरलोगन उन जाइ जगाए ॥ उठे प्रात गाथा मुखभाषत आतुर रैनि बिहानी । ऐंडत अंग जम्हात वदन भरि कहत सबै यह वानी ॥ जो जैसे सो तैसे लागे अपने अपने काज । सूर श्यामके चरित अगोचर राखी कुलकी लाज ॥ ५४ ॥

राग जैतश्री ॥ ब्रजयुवती रस रास पगी । कियो श्याम सबको मन भायो निशि रतिरंग जगी ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हों । जितनी

नारि भेष भए तितने भेद न काहू चीन्हों ॥ वह सुख टरत न काहू मनते पतिहित साध पुराई । सूर श्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भांवरि दै आई ॥ ९५ ॥

राग सोरठ ॥ साध नहीं युवतिन मन राखी । मनबांछित सबन फल पायो वेद उपनिषद साखी ॥ भुजभरि मिलि कठिन कुच चापै अधर सुधारस चाखी । हाव भाव नैनन सैननदै वचनरचन मुख भाषी ॥ शुक भागवत प्रकट करि गायो कछू न दुविधा राखी । सूरदास ब्रजनारि संग हरि बाँकी रही न कोऊ काखी ॥ ९६ ॥

राग कान्हरो ॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यो । गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो ॥ धन्य श्याम बृंदावनको सुख संत मयाते जान्यो । जो रस रास रंग हरि कीन्हें वेद नहीं ठहरान्यो ॥ सूर नर मुनि मोहित सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूँ पत्यान्यो ॥ ९७ ॥

राग धनाश्री ॥ शरद सोहाई आई राति । दह दिशि फूलिरही बन जाति ॥ देखि श्याम मन अति सुख भयो ❀ शशिगो मंडति यमुना कूल । बरषत विटप सदा फल फूल ॥ त्रिविध पवन दुखदवनहै ❀ श्रीराधा रवन बजायो बैन । सुनि ध्वनि गोपिन उपज्यो मैन ॥ जहां तहांते उठि चलीं ❀ चलत न काहुहि कियो जनाव । हरि प्यारीसों बाढ्यो भाव ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १ ॥

घर डर बिसरचो बढ्यो उछाह । मन चीते हरि पायो नाह ॥ ब्रजनायक लायक सुने ❀ दूध पूतकी छांडि आस । गोधन भरता करे निराश ॥ साँचे हित हरिसों कियो ❀ खान पान तनुकी न सँभार । हिलग छँडाई गृह व्यवहार ॥ सुधि बुधि मोहन हरि लई ❀ अंजन मंजन अँगन शृँगार । पट भूषण छूटे शिर बार ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २ ॥

एक दुहावतते उठि चली । एक सिरावत मग महँ मिली ॥ उतसहकंठा हरिसों बढी ❀ उफनत दूध न धरचो उतारि । सीझी थली चूल्हे दारि ॥ पुरुष तात ज्यों जेवतहुते ❀ पय प्यावत बालक धरि चली । पतिसेवा तजि करी न भली ॥ धरचो रह्यो जेवन जिते ❀ तेल उबटना त्याग्यो दूरि । भागन माई जीवन मूरि ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ३ ॥

अंजतही इक नैन बिसारचो । कटि कंचुकि लहँगा उर धारचो ॥ हार लपेट्यो चरणनसों ❀ श्रवणन पहिरे उलटे तार ॥ तिरनि पर चौकी शृंगार ॥ चतुर चतुरता हरिलई ❀ जाको मन जहां अटके जाइ । ता वनिताको कछु न सोहाइ ॥ कठिन प्रीतिको फंद है ❀ श्यामहि सूचत मुरलीनाद । सुनि धुनि छूटे विषै सवाद ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ४ ॥

एक मात पित रोकी आनि । सही न हरि दरशनकी हानि ॥ सबहीको अपमानकै ❀ जाको मन मोहन हरि लियो । ताको काहू कछुना कियो॥ज्यों पतिसों त्रिय रतिकरै❀जैसे सरिता सिंधुहि भजै । कोटिक गिरि भेदत नहीं लजे ॥ तैसी गति तिनकी भई ❀ इकजे घरते निकसि नहीं । हरि करुणा करि आये तेहीं ॥ रासरसिकगुण गाइहो ॥ ५ ॥

निरस कवौं न कहैं रसरीति । रसिकहि लीलारसपर प्रीति ॥ यह मत शुकमुख जानिबो ❀ ब्रजवनिता पहुँची पियपास । चितवत चंचल भ्रुकुटिविलास ॥ हँसि बूझी हरिमानदै ❀ कैसे आई मारग मांझ । कुलकी नारि न निकसै सांझ ॥ कहा कहैं तुम योगहो ❀ ब्रजकी कुशल कहौ बडभाग । क्यों तुम छाँडे सबन सोहाग ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ६ ॥

अजहूं फिरि अपने घर जाहु । परमेश्वर करि मानों नाहु ॥ बनमें निशि बसिए नहीं❀ श्रीवृन्दावन तुम देख्यो आइ । सुखद कुमोदिनि प्रफुलित जाइ ॥ यमुनाजलसीकर घनो ❀ घरमहँ युवती धर्महि फबै । ताबिन सुत पति दुःखित सबै ॥ यह विधना रचना रची ❀ भरताकी सेवा सतसार । कपट तजै छूटै संसार ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥७॥

बिरध अभागी जो पति होइ । मूरख रोगी तजै न जोई ॥ पतित विलक्ष कछाँडिए ❀ तजि भरतारहि जारहि लीन । ऐसी नारि न होइ कुलीन ॥ यशविहीन नरकहि परै ❀ बहुत कहा समुझाऊं आज । हमहूं कछु करिबे गृहकाज ॥ हमते को अति जानत है ❀ श्रीमुखवचनसुनत बलिखाइ । व्याकुल धरणि परी मुरझाइ ॥ रासरसिक गुण गाइहौ॥८॥

दारुण चिंता बढी न थोर । क्रूरवचन कहे नंदकिशोर ॥ और शरन सूझै नहिं ठौर ❀ रुदन करत नदी बढी गंभीर । हरि करि आनहि जानै पीर । कुच थंभन अवलंब है ❀ तुम्हरी रही बहुत पिय आश । विन अपराध न करहु निराश ॥ कै तौ रुखाई छांडिये ❀ निठुर वचन जिनि बोलहु नाथ । निजदासी जिनि करहु अनाथ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ ९ ॥

मुख देखत सुख पावत नैन । श्रवण सिरात सुनत मृदु बैन ॥ सैननहीं सरवस हरचो॥ मंद हँसनि उपजायो काम । अधरसुधा ध्वनि करि विश्राम ॥ वरषि सींचि विरहानला ❀ मुरली सुनतै भई सवाइ । तबते और न कछू सोहाइ ॥ कहौ घोष हम जाहिं क्यों ❀ सजन बंधु को करिहै कानि । तुम बिछुरत पिय आतमहानि ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥१०॥

बेनु बचाइ बुलाई नारि। सहि आई कुल सबकी गारि॥ मन मधुकर लंपट भयो❀सोऊ सुन्दरि चतुर सुजान । आरज पंथ सुनै तजि गान ॥ तिन देखत पुरुषउ लजै ❀ बहुत कहा वरणों यह रूप । और न त्रिभुवन शरण अनूप ॥ बलिहारी या रातिकी ❀ सुन मोहन विनती दै कान । अपयश होइ किये अपमान ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ ११ ॥

तुम हमको उपदेश्यो धर्म । ताको कछू न पायो मर्म ॥ हम अबला मतिहीन हैं ❀ दुखदाता सुत पति गृह बंधु । तुम्हरी कृपाबिनु सब जग अंधु ॥ तुमते प्रीतम और को ❀ तुमसों प्रीति करहिं जे धीरं । तिनहिं न लोक वेदकी पीर ॥ पाप पुण्य तिनके नहीं ❀ आशापाश बँधी हम बाल । तुमहिं विमुख ह्वै है बेहाल ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ १२ ॥

विरद तुम्हारो दीनदयाल । करसोंकर धरि करि प्रतिपाल॥भुजदंडनि खंडहु व्यथा ❀ जैसे गुणी देखावै कला । कृपण कबहुँनहिं मानै भला ॥ समय हृदय हमपर करौं ❀ ब्रजकी लाज बडाई तोहि । करहु कृपा करुणाकर जोहि ॥ तुमहिं हमारे

गति सदा ❀ दीन वचन जब युवतिन कहे। सुनत वचन लोचन जल बहे॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १३॥

हँसि बोले हरि बोली बोडि। करजोरे प्रभुता सब छोडि॥ हौं असाधु तुम साधु हो ❀ मो कारण तुम भई निशंक। लोकवेद बपुराको रंक॥ सिंहशरन जंबुक बसै ❀ बिन दामन हौं लीन्हों मोल। करत निरादर भई न लोल॥ आवहु हिलिमिलि खेलिये ❀ ब्रजयुवतिन घेरे ब्रजराज। मनहुँ निशाकर किरनसमाज॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १४॥

हरिमुख देखत भूले नैन। उर उमँगे कछु कहत न बैन॥ श्यामहि गावत कामवश ❀ हँसत हँसावत करि परिहास। मनमें कहत करैं अब रास॥ अंचल गहि चञ्चल चल्यो ❀ ल्यायो कोमल पुलिनमँझार। नखशिख भूषण अंग सँवार। पट भूषण युवतिन सजे ❀ कुचपरसत पुजई सब साध। रससागर मनो मदन अगाध॥ रास रसिक गुण गाइहौं॥ १५॥

रसमें बिरस जु अन्तर्धान। गोपिनके उपजै अभिमान॥ बिरहकथामें कौन सुख ❀ द्वादश कोस रास परमान। ताको कैसे होत बखान॥ आस पास यमुना हिली ❀ तामें मानसरोवर ताल। कमल विमल जल परम रसाल॥ सेवहिं खग मृग सुखभरे ❀ निकट कल्पतरु बंशीवटा। श्रीराधा रति कुंजनि अटा॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १६॥

नव कुमकुम रज वरषत जहां। उडत कपूर धूरि जहँ तहां॥ और फूल फल को गनै ❀ तहँ घनश्याम रास रस रच्यो। मर्कतमणि कंचनसों खच्यो॥ अद्भुत कौतुक परगट कियो॥ मंडल जोरि युवति जहां बनी। दुहुँ दुहुँ बीच श्याम घन धनी। शोभा कहत न आवई ❀ घूंघट मुकुट विराजत शीस। शोभित शशि मनो सहस बतीस॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥॥ १७॥

मणि कुंडल ताटंक बिलोल। विहँसत लज्जित ललित कपोल॥ अलक तिलक बेसरि बनी ❀ कंठशिरी गजमोतिनहार। चंचरि चुरि किंकिणिझनकार॥ चौकी चमकति उरलगी ❀ कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति। दशन दमक दामिनिते ज्योति॥ सरस अधर पल्लव बने ❀ चिबुक मध्य श्यामल रुचि बिंद। देखि सबनि रीझे गोविंद॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १८॥

सघन विमान गगन भरिरहे। कौतुक देखन अमर उमहे॥ नैन सुफलसबके भए ❀ बाजे देवलोक नीसान। बरषत सुमन करत सुर गान॥ मुनि किन्नर जयजयध्वनि करैं ❀ युवतिन बिसरे पति गति गेह। प्रेममगन सब सहितसनेह॥ यह सुख हमको हो कहां ❀ सुंदरता सब सुखकी खानि। रसना एक न परत बखानि॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १९॥

नीलकंचुकीमांडनि लाल। भुजनि नवै आभूषण माल॥ पीत पिछौरी श्यामतनु ❀ अँगुरिन मुँदरी पहुँची पानि। कछि कटि कछनी किंकिनि बानि॥ उर तितंब बेनी तुरै ❀ नाराबंधन सूथन जंघन। पाँयन नूपुरबाजत संघन॥ नखन महावर खुलिरह्यो॥ श्रीराधा मोहन मंडल माँझ। मनहु विराजत चंदा साँझ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ २०॥

पग पटकत लटकत लट बाहु । मटकत भौंहन हस्त उछाहु ॥ अंचल चंचल झूमका ❀ दुरिदुरि देखत नैनन सैन । मुखकी हँसी कहत मृदु बैन ॥ मंडित गंड प्रस्वेदकण ❀ चौरी डोरी विगलित केश । झूमत लटकत मुकुट सुदेश ॥ फूल खसत शिरते घने ❀ कृष्णवधू पावन यश गाइ । रीझत मोहन कंठ लगाइ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २१ ॥

बाजत भूषण ताल मृदंग । अंग दिखावत सरस सुधंग ॥ रंग रह्यो न कह्यो परै ❀ नूपर किंकिनि कंकण चुरी । उपजत मिश्रित ध्वनि माधुरी ॥ सुनत सिराने श्रवण मन ❀ मुरली मुरजरवाब उपंग। उघटत शब्द विहारीसंग । नागरि सब गुण आगरी ❀ गोपीमंडल मंडित श्याम । कनक नीलमणि जनु अभिराम ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥२२॥

तिरप लेति सुंदर भामिनी । मनहु विराजत घनदामिनी । या छबिकी उपमा नहीं ❀ राधाकी गतिपरत न लखी । रससागरकी सीवाँ नखी ॥ बलिहारी वारूपकी ❀ लेति सुघर औवर गति तान । दै चुंबन आकर्षति प्रान ॥ भेंटति मेटति दुख सबै ❀ राखति पियहि कुचन आनि । दै अधरामृत शिरपर पानि ॥ रासरसिकगुण गाइहौं ॥ २३ ॥

हरषित वेणु बजायो छैल । चंद्रहि बिसरी नभकी गैल ॥ तारागण मनमें लज्यो ❀ मुरलीध्वनि बैकुंठहि गई । नारायण सुनि प्रीति जु भई ॥ कहत वचन कमला सुनौ ❀ श्रीकुंजबिहारी विहरत देखि । जीवन जन्म सफल करि लेखि ॥ इहसुख तिहुँपुर है कहां ❀ श्रीवृंदावन हमते दूरि । कैसे धौं उडि लागै धूरि ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥२४॥

कोलाहल ध्वनि दहदिश जाति । कल्पसमान भई सुखराति ॥ जीव जंतु मैं मत सबै ❀ उलटि बह्यो यमुनाको नीर । बालक बच्छ न पीवैं क्षीर ॥ राधारमन ठगे सबै ❀ गिरिवर तरुवर पुलकित गात । गोधन थनते दूध चुचात ॥ सुनि खग मृग मुनिव्रत धर्यौ ❀ महि फूलि भूल्यो गति पौन । सोवत ग्वाल तजत नहिं भौन । रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २५ ॥

राग रागिनी मूरतिवंत । दुलह दुलहिनि सरस वसंत ॥ कोक कला संगीत गुरु ❀ सप्तसुरनकी जाति अनेक । नीके मिलवति राधा एक ॥ मन मोह्यो पियको सुघरि ❀ छंदध्रुवनिके भेद अपार । नाचति कुँवरि मिलै झपतार ॥ कह्यो सबै संगीतमें ❀ पिकनि रिझावति सुन्दर सुपद । सरस स्वलपध्वनि उघटत सुखद ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥२६॥

चलति सुमोहति गनि गज हंस । हँसत परस्पर गावत गंस ॥ तान मान मृगमथनके ❀ गौरी चंदनचरचित बाहु ॥ लेत सुवास पुलकतनु नाहु ॥ दै चुंबन हरि सुख लियो ❀ श्यामल गौर कपोल सुचारु । रीझि परस्पर लेत उगारु ॥ एक प्राण द्वै देह हैं ❀ नाचत गावत गुणकी खानि । श्रमित भए टेकत पिय पानी ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २७ ॥

पिक गावत अलि नादहि देत । मोर चकोर फिरत सँग हेत ॥ सघन सुमन हारहैं मनो ❀ कच कुच बिंदरसे हँसि श्याम । चलत भौंह नैनन अभिराम ॥ अंगन कोटि अनंग छबि ❀ हस्तक भेद ललित गति लई । अंचल उडत अधिक छबि भई ॥ कुच-विगलित मालागिरी ❀ हरि उरुणा करि लई उठाइ । पोंछत श्रमजल कंठलगाइ रास-रसिक गुण गाइहौं ॥ २८ ॥

तिनहिं लिवाइ यमुनजल गए । पुलिन पुनीत निकुंजनि ठए ॥ अंग श्रमित सबके भए ❀ जैसे मदगज कूल विदारि । तैसे सँग लै खेली नारि ॥ शंक न काहूकी करी ❀ मेटी वेद लोक कुलमेंडि । निकसि कुँवरि खेल्यो करि पेंडि ॥ फवी सबै जो मन धरी ❀ जल थल क्रीडत व्रीडत बही । तिनकी लीला परत न कही ॥ रास रसिक गुण गाइहौं ॥ २९ ॥

कह्यो भागवत शुक अनुराग । कैसे समुझै बिन बड भाग ॥ श्रीगुरुसकल कृपाकरी ❀ सूर आश करि वरण्यो रास । चाहत हौं वृंदावन बास ॥ श्रीराधावर इतनी कर कृपा ❀ निशिदिन श्याम सेउँमैं तोहिं । इहै कृपा करि दीजै मोहिं ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमय ❀ हरि बंसी हरि दासी जहां । हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दै ❀ कहत सुनत बाढत रसरीति । वक्ता श्रोता हरिपद प्रीति ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ ३० ॥ १८५६ ॥

राग धनाश्री ॥ मैं कैसे रस रासहि गाऊं । श्रीराधिका श्मामकी प्यारी तुव बिन कृपा बास ब्रज पाऊं । अन्य देव सपनेंहु न जानौं दंपतिको शिर नाऊं । भजन प्रताप शरन महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ नवनिकुंज बन धाम निकट इक आनंद कुटी रचाऊं । सूर कहा बिनती करि बिनवै जन्म जन्म यह ध्याऊं ॥ ५७ ॥

राग बिलावल ॥ तुम ही मोको ढीठ कियो । नैन सदा चरणनतर राखे सुख देखत नहिं गनत वियो ॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ माँगत पेलि । मांगौं चरण शरण वृंदावन जहां करत नित केलि ॥ यह वाणी भजनकी श्रवण बिन सुनत बहुत शरमाऊँ । श्रीवृषभानु सुता पति सेऊं सूर जगत भरमाऊं ॥ ५८ ॥

राग विहागरो ॥ रासरस लीला गाइ सुनाऊं । यह यश कहैं सुनैं मुख श्रवणन तिन चरणन शिर नाऊं ॥ कहा कहौं वक्ता श्रोता फल इक रसना क्यों गाऊं । अष्टसिद्धि नवनिधि सुख संपति लघुता करि दरशाऊं ॥ जो परतीति होइ हिरदयमें जगमाया धिग देखै । हरिजन दरश हरिहि सम पूजै अंतर कपट न भेषै ॥ धनि धनि वक्ता तेहि धनि श्रोता श्याम निकट हैं ताके । सूर धन्य तिनके पितु माता भाव भजन है जाके ॥ ५९ ॥

राग बिलावल ॥ वृंदावन हरि रास उपायो । देखि शरदनिशि रुचि उपजायो ॥ अद्भुत मुरलीनाद सुनायो । युवति सुनत तनु दशा गँवायो । मिलि धाई मनको फल पायो । जङ्गम चले जु चलनि थिरायो ॥ उलटी नमुना धार बहायो । सुनि धुनि चंचल पवन थकायो ॥ सुर नर मुनिको ध्यान भुलायो । चंद्र गगन मारग बिसरायो ॥ रूप देखि मन काम लजायो । रसमें अतर विरस जनायो ॥ युवतिनके तनु विरह बढायो । बहुरि मिले हित अति उपजायो ॥ हाव भाव करि सबन रिझायो ॥ कल्प रैनि रसहित उपजायो ॥ प्रात समय यमुनातट आयो । नारिनिके निशि श्रमहिं मिटायो ॥ युवतिन प्रति प्रति रूप बनायो । शिव नारद शारद यह गायो ॥ ध्यान टरचो चित तहां लगायो । राधावर निज नाम

कहायो ॥ सूरदास कछु कहिके गायो । रमाकंत जासुको ध्यायो । सो सुख नंद सुवन ब्रज आयो ॥ ६० ॥

गोपी पद्रज महिमा विधि भृगुसों कहीं । बरष सहस्रन कियो तप मैं तोऊ न लही ॥ यह सुनिके भृगु कह्यो नारद आदिक हरि भक्ता । माँगैं तिनकी चरण रेणु तोहिं यह जुगुता ॥ सो निज गोपी चरण रज वांछित हौ तुम देव । मेरे मन संशय भयो कहौ कृपा करि भेव ॥ ब्रज सुंदरि नहिं नारि ऋचा श्रुतिकी सब आहिं । मैं अरु शिव पुनि लक्ष्मी तिन सम कोऊ नाहिं ॥ अद्भुत है तिनकी कथा कहौं सो मैं अब गाइ । ताहि सुनै जो प्रीति कैसो हरि पदहि समाइ ॥ प्राकृत लै भए पुरुष जगत सब प्रकृत समाइ । रहै एक वैकुंठ लोक जहां त्रिभुवन राइ ॥ अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई । आदि अंत नहिं जानि अत आदि अंत प्रभु सोई ॥ श्रुति बिनती करि कह्यो सर्व तुमही हौ देवा । दूरि निरंतर तुमहिं हौ तुम निज जानत भेवा ॥ या विधि बहु अस्तुति करी तब भइ गिरा अकास । मांगो बर मन भावते पुरवों सो तुम आस । श्रुतिन कह्यो कर जोरि सने आनंद देह तुम । जो नारायण आदि रूप तुम्हरो सोलखो हम ॥ निर्गुण रहित जो निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव । मन बाणीते अगम अगोचर दरखरावहु सो देव ॥ वृंदावन निज धाम कृपा करि तहां देखायो । सब दिन जहां वसंत कल्प वृक्षनसों छायो ॥ कुंज अद्भुत रमणीक तहां बेलि सुभग रहीं छाइ । गिरि गोवर्धन धातुमय झरना झरत सुभाई ॥ कालिंदी जल अमृत प्रफुल्लित कमल सुहाइ । नगन जटित दोउ कूल हंस सारस तहँ छाइ ॥ क्रीडत श्याम किशोर तहां लिये गोपिका साथ । निरखि सो छबि श्रुति थकित भईं तब बोले यदुनाथ ॥ जो मन इच्छा होइ कहो सो मोहिं प्रगट कर । पूरण करौं सो काम देउँ तुमको मैं यह बर । श्रुतिन कह्यो ह्वै गोपिका केलि करैं तुम संग । एवमस्तु निज मुख कह्यो पूरण परमानंद ॥ कल्पसार सत ब्रह्म जबै सब सृष्टि उपावै । अरु तेहि लोगन वर्ण आश्रम धर्म चलावै ॥ बहुरि अधर्मी होहिं नृप जग अधर्म बढि जाइ । तब विधि पृथ्वी सुर सकल करैं बिनय मोहिं आइ ॥ मथुरा मंडल भरत खंड निज धाम हमारो । धरौं तहां मैं गोप भेष सो पंथ निहारो ॥ तब तुम होइकै गोपिका करिहौ मोसों नेह । करौं केलि तुमसों सदा सत्य बचन मम येह॥श्रुति सुनिकै हरि बचन भाग्य अपनी बहु मानी । चितवन लागे समय दिवस सो जात न जानी ॥ भार भयो जब पृथ्वी पर तब हरि लियो अवतार । वेदऋचा होइ गोपिका हरिसों कियो बिहार ॥ जो कोइ भरता भाव हृदय धरि हरि पद ध्यावै । नारि पुरुष कोउ होइ श्रुति ऋचा गति सो पावै ॥ तिनके पद्रज जो कोइ वृंदावन भूमाहिं । परसै सोऊ गोपिका गति पावै संशय नाहिं ॥ भृगु ताते मैं चरण रेणु गोपिनकी चाहत । श्रुति मति बारंवार हृदय अपने अवगाहत ॥ यह महिमा रज गोपिका जब विधि दई सुनाइ । तब भृगु आदिक ऋषि सकल रहे हरिपद चित लाइ ॥ सर्व शास्त्रको सार इतिहास सर्व जो । सर्व पुराणको सार युत श्रुतिनको ॥ वंदनरज विधि सबै कह्यो विधि दियो ऋषिन्ह बताइ । व्यास त्रिपद वामन पुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥ ६१ ॥

राग गूजरी ॥ श्यामा श्यामके उर बसी । रैनि नृत्यत रिझै पियमन तडितते छबि लसी श्याम ता रस मगन डोलत सब त्रियनमें जसी । कोककला प्रवीन सुंदरि कंठ गुण कर कसी ॥ करत सदन शृंगार बैठी अंग अँग प्रति रसी । सूर प्रभु आए अचानक देखि तिनको हँसी ॥ ६२ ॥

राग रामकली ॥ पिय निरखत प्यारी हँसि दीन्हों । रीझे श्याम अंग अंग निरखत हँसि नागरि उर लीन्हों ॥ आलिंगन दै अधर दशन खंडि कर गहि चिबुक उठावत । नासासों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत ॥ यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी । सूर श्याम मोको दिखरावत उर लाए धरि प्यारी ॥ ६३ ॥

अथ राधाको मान राग टोडी ॥ अब जानी पिय बात तुम्हारी । मोसों तुम मुहंकी मिलवत हौ भावति है वह प्यारी ॥ राखे रहत हृदयपर जाको धन्य भाग्य हैं ताके । ऐसी कहूं लखी नहिं अबलौं बश्य भए हौ याके ॥ भली करी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहि । सूर श्याम यह प्राण पियारी उरमें राखी पोहि ॥ ६४ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनत श्याम चकृत भए बानी । प्यारी पियमुख देखि कछुक हँसि कछुक हृदय रिस मानी ॥ नागरि हंसती हंसी उरछाया तापर अति झहरानी । अधर कंप रिस भौंह मरोरचो मनहीमन गहरानी ॥ इकटक चितै रही प्रतिबिंबहि सौतिशाल जिय जानी । सूरदास प्रभु तुम बडभागी बडभागिनि जेहि आनी ॥ ६५ ॥

प्यारी सांच कहति की हाँसी । काहेको इतनो रिस पावति कत तुम होहु उदासी ॥ पुनिपुनि कहति कहा तबहींते कहा ठगीसी ठाढी । इकटक चितैरही हिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी ॥ समुझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तुभ आगे । सूर श्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे ॥ ६६ ॥

मोहिं छुवौ जिनि दूरि रहौ जू ॥ जाको हृदय लगाइ लई है ताकी बांह गहौजू ॥ तुम सर्वज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी । मैं देखति हिरदय वह बैठी हम तुमको भइ हांसी ॥ बाँह गहत कछु शरम न आवत सुख पावत मनमाहीं । सुनहु सूर मोतनको इकटक चितवति डरपति नाहीं ॥ ६७ ॥

राग बिलावल ॥ कहा भई धन बावरी कहि तुमहिं सुनाऊं । तुमते को है भावती को हृदय बसाऊं ॥ तुमहिं श्रवण तुम नैन हौ तुम प्राणअधारा । वृथा क्रोध त्रिय क्यों करौ कहि बारंबारा ॥ भुज गहि ताहि बतावहू जो हृदय बतावति । सूरज प्रभु कहै नागरी तुमते को भावति ॥ ६८ ॥

राग नट ॥ माधो नाहिं न डरति जो हृदय बसति । ऐसी ढीठ मेरे जानि तुमहिं कीन्ही है कान्ह मो सन्मुख देखति न त्रसति ॥ झुकेते झुकति भाल भ्रुकुटी कुटिल किये रूखीहै रहत हँसेते हँसति । तबहीते इकटक चितवत और सिसकत हौं डरते इत उत न धसति ॥ जाहीसों लगत नैन ताही खगत बैन नख शिखलौं सब गात ग्रसति । जाके रँग राचे हरि सोई है अंतरसंग काँचकी करोतीके जलज्यों लसति ॥ बिहँसि बोले गोपाल सुनि री ब्रजकी बाल उछंग लेत कत धरणि खसति । अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसौटी सूर कर्षते कसति ॥ ६९ ॥

राग कान्हरो ॥ काहेको हौ बात बनावत । अब तुमको पिये मैं पत्याति हौं छांह आपनी धरणि बतावत ॥ वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको ताको अनखावत । जैहे कहूं निकसि हिरदेते जानि बूझि तेहि क्यों उचटावत ॥ जो वह कहै करौ तुम सोई कहा मोहिं पुनि पुनि समुझावत । सूर श्याम नागर वह नागरि भले जू मोहिं खिझावत ॥७०॥

राग गुंडमलार ॥ वृथा हठ दूरि किनि करौ प्यारी । कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देखि उरकोउनहीं रिस जरति भारी ॥ तुमहिं धन रहति मन नैनमें तुम बसति कनकसो कसिलेहु कहावैठी । चतुरई कहां गई बुद्धि कैसी भई चूक समझे बिना भौंह ऐंठी ॥ यह सुनत रिसभरी रही नहिं तहाँ खरी ओटह्वै झरहरी मान कीन्हों । जाहु मनमन कह्यो मैं बहुत सुख लह्यो सौति देखराइ मोहिं सूर दीन्हों ॥ ७१ ॥

राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृषभानुवारी । देखि प्रतिबिंब पियहृदय नारी ॥ कहा ह्यां करत लैजाहु प्यारी । मनहिमन देत अति ताहि गारी ॥ सुनत यह वचन पिय विरह बाढो । कियो अति नागरी मान गाढो ॥ काम तनु दहत महिं धीर धारै । कबहुँ बैठत उठत बार बारै । सूर अतिभए व्याकुल मुरारी । नैन भरिलेत जलदेत ढारी ॥ ७२ ॥

राग बिहागरो ॥ मान कर्‍यो त्रियबिन अपराधहि । तनुदाहति बिनकाज आपनो कहत डरत जिय वादहि ॥ कहारही मुख मूँदि भामिनी मोहिं चूक कछु नाहीं । झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनी छाहीं ॥ अजहूँ दूरि करौ रिस उरते हृदये ज्ञान विचारौ । सूर श्याम कहि कहि पचिहारे हठ कीन्हों जिय भारौ ॥ ७३ ॥

राग सोरठ ॥ काम श्यामतनु चटप कियो । मनो धर्‍यो नागरि जिय गाढौ सूख्यो कमल हियो ॥ व्याकुल भए चले वृंदावन मिली दूतिका आनि । बार बार हरिवदन निहारति सकै न दुख पहिचानि ॥ कैसी दशा आजु मैं देखति कहौ न मोहिं सुनाइ । सूर श्याम देखे तुम व्याकुल आए कहा गँवाइ ॥ ७४ ॥

राग गौरी ॥ व्याकुल बचन कहतहैं श्याम । वृथा नागरी मानबढायो जोर कियो तनुकाम ॥ यह कहतहि लोचन भरि आए पायो विरह सहाइ । चाहत कह्यो भेद ता आगे वाणी कही न जाइ ॥ और सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारि । सूर श्याम मुख देखि चकित भई क्यों तनु रहे बिसारि ॥ ७५ ॥

राग बिहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाइ । आजु राधिका मान कर्‍यो है श्याम गए कुँभिलाइ ॥ करसों कर धरि लाल लई गहि सखिन सहित बनधाम । सुख दै कह्यो लिए आवति हौं संग विलसियो बाम ॥ मो आगेकी महरि बिटनियां कहाकरै वह मान। सुनहु सूर प्रभु कितकि बात यह करै न पूरण काम ॥ ७६ ॥

राग भैरव ॥ श्याम कुंज बैठारि गई ॥ चतुर दूतिका सखियन लीन्हें आतुरताई जानि लई ॥ मनहींमन इक रचि चतुराई इहै कहौंगी बात नई । अबहीं लै आवतिहौं ताको इहै भई कछु बहुत दई ॥ करि आई हरिसों परतिज्ञा कहा कहै वृषभानुजई । सूर श्यामसों मान कर्‍यो है आजुहि ऐसी कहा भई ॥ ७७ ॥

राग नट ॥ सखिन संग लै तहां गई। दूतिकामुख निरखि राधा जानि हिरदय लई॥ अति चतुर वृषभानुतनया सहज बोलि लई। सहज वचन प्रकाश कीन्हों कहा कृपा भई॥ तुरत ही यह कहि सुनायो श्याम बोले तोहिं। सूर प्रभु बन बोलि पठई तोहिं कारण मोहिं॥ ७८॥

राग टोडी॥ काहेको बन श्याम बोलाई। याही ते तुम धाई आई॥ कहा कहौं तोको री माई। तुमहुँ भली अरु भले कन्हाई॥ अब इक नई मिली है आई। ताहीको अब लेहिं बुझाई॥ ताको राखी हृदय दुराई। तोको ह्यांते टारि पठाई॥ सूर श्याम ऐसे गुण राई। उनकी महिमा कही न जाई॥ ७९॥

राग धनाश्री॥ आजु कछू घर कलह भयोरी। वही आजु अनमनी बत्यानी यह कहि मान ठयो री॥ मोसों कछुक कह्यो नहिं मोहन सहज पठाई लेन। कहा पुकार परी हरि आगे चलो न देखो नैन॥ तेरो नाम लेत हरि आगे कहत सुनाइ सुनाइ। सूर सुनहु काको काको गथ तैं धौं लियो छँडाइ॥ ८०॥

राग सूही॥ वृन्दावन हरि बैठे धाम। काहेको गथ हरयो सबनको काहे अपनो कियो कुनाम॥ डारिदेहु कह लियो परायो मेरो कह्यो मानि री वाम। तबहींते उन शोर लगायो तोकों बोलीहै यहि काम॥ चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु अबहीं आइ करौ विश्राम। सूर श्याम तेरी घां झगरत तू काहे तिनसों करै ताम॥ ८१॥

राग जैतश्री॥ यह कछु नोखी बात सुनावति। काको गथ धौं मैं लीन्हों है बारबार बन मोहिं बोलावति॥ मेरी घां हरि लरत कौनसों इतीमया मोहिं कीन्हीं। जैसे हैं हरि तेरे माई मैं नीके करि चीन्हीं॥ की बैठो की भवन जाहु की मैं उनपै नहिं जाउँ। सूरदास प्रभुको री सजनी जन्म न लैहौं नाउँ॥ ८२॥

राग गौरी॥ मैं कहा तोहि मनावन आई। प्रगट लिए सबको ब्रज बैठी कहा करति अधिकाई॥ जाइ करौ ह्यां बोध सबनिको मोपर कत सतरानी। श्यामलरत तबहींते उनसों तिनपर अतिहि रिसानी॥ बारबार तू कहा कहतिरी ब्रज काको मैं लीन्हों। सूरदास राधा सहचरिसों ज्वाब निदरिकै दीन्हों॥ ८३॥

राग सोरठ॥ तैं कछु नहिं काहूको लीन्हों। प्रगट कहौं तबहीं मानौगी ज्वाब निदरि मोहिं दीन्हों॥ तब वदिहौं ऐसेहि ह्यां कैहैं जहँ बैठे सब बैरी। मेरे कहे बहुत रिस पावति संपति सबकी लैरी॥ इकटक करि सब तोहिं दिखाऊँ कहि आवहु बनजाइ। की दीजौ की पुनि सब लीजौ सूर श्यामपै आइ॥ ८४॥

राग सूही॥ जिन जिन जाइ श्यामके आगे तेरी चुगली बहुत करी। बारबार जिनसों हरि खीझे तेरी घां है महूं लरी॥॥ श्याम भेद करि मोहिं पठाई तू मोहीं पर खीझपरी। जाइ करो रिस वैरिनि आगे जाके जाके गथहि हरी॥ धरति अकाश बनहुके आए देखत तिनको अतिहि डरी। सूर श्यामबिनु न्याव चुकै क्यों तिनपर तू अति ही झगरी॥ ८५॥

राग धनाश्री॥ ते जन पुकारे हरिपै जाइ। जिनकी यह सब सौज राधिका तैं तेरे तनु लई छँडाइ॥ इंदु कहै हौं बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाइ। नैननि मृग वचनन

पिक छूटे विलपत हरिहि सुनाइ ॥ कमल केरि केहरिकपोत गज कनक कदलि दुखपाइ । विद्रुम कुंद भुजंग संगमिलि शरण गए अकुलाइ ॥ अतिअनीति जिय जानि सूर प्रभु पठई मोहिं रिसाइ । बोलि है ब्रजनारि वेगि चलि अब उत्तर दे आइ ॥ ८६ ॥

राग कल्याण ॥ चल राधे हरि रसिक बुलाई । कमलनयन कछु मर्म कह्यो नारिं मोहन वदन करन पुट आई ॥ अँगअँग सर्वसु हरन लगी री रचि बिरंचि तुव बनक बनाई । अब जो पुकार करत तेरे तनु जितनी उनकी शोभ चुराई ॥ मांग उरग नवतरनि तरौना तिलकभाल शशिकी ससकाई । भृकुटी शर धनु साधि बचन वर सुरपुर परि है मदन दोहाई ॥ दाडिम वज्र पंक्ति पंकजदल दामिनि घन दुति रदन दोहाई । कंबुकपोत कंठ निशिवासर बाहुबली कटिकंजलताई ॥ उर भय भेष शेष अंबर जनु मनो छवि कटि मृग-राज सुहाई । हंस पुकार करत सूरज प्रभु दीन बंधु हौं लेन पठाई ॥ ८७ ॥

राग कान्हरो ॥ मान करौ तुम और सवाई । कोटि करौ एकै पुनि ह्वैहौ तुम अरु वे मनमोहन माई ॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवणही मगन भई सुकुमारी । मान गयो रिस गई तुरतही लजित भई मन भारी ॥ धाइ मिली दूतिका कंठसों धन्य धन्य कहि बानी । सूर श्याम बन धाम जानिकै दरशनको अतुरानी ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ हँसिकै कह्यो दूतिका आगे श्यामहि सुख दै री तू जाई । करि अस्नान अभूषण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाई ॥ यह सुनि हर्ष भई अतिही सखि गई तहां जहँ श्याम । अति व्याकुल तनुकी सुधि नाहीं विह्वल कीन्हों काम ॥ की वनमें की वरही बैठे की वासर की याम । सूर श्याम रसना रट लागी राधाराधा नाम ॥ ८९ ॥

राग रामकली ॥ श्याम नारिके विरह भरे । कबहुंक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुंक रहत खरे ॥ कबहुँक तनुकी सुरति बिसारत कबहुँक तनु सुधि आवत । तब नागरिके गुणहि बिचारत तेइ गुण गुनि गुनि गावत ॥ कहूं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी । सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका दौरी ॥ ९० ॥

राग बिलावल ॥ श्यामभुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी । काहेको कदरात हौ मैं राधा आनी ॥ विरह दूरि करि डारिए सुख करो कन्हाई । त्रियानाम श्रवणनि सुन्यो चितए अकुलाई ॥ मिले दूतिकहि अंक दै लोचन भरि आए । प्यारी प्यारी बोलिकै युवती उर लाए ॥ तब बोली हँसि दूतिका पिय आवति नारी । सूर श्याम सुनि बोलवै हरषे बनवारी ॥ ९१ ॥

राग गूजरी ॥ धीर धरौ प्यारी अब आवति । मैं जु गई परतिज्ञा करिकै सो कहि बात जनावति ॥ मनचिंता अब दूरि करौ जू कहौ न कह मोहिं दैहौ । बनि आवति वृषभानु-नंदिनी भुजभरि अंकम लैहौ ॥ यह सुंदरता और नहीं कहुँ बड भागी सो पावै । सूर श्याम दूतिका वचन सुनि करयुग काम मनावै ॥ ९२ ॥

राग जैतश्री ॥ यह सुनिकै मन श्याम सिहात । पुलकित अंग रहै नहिं धीरज पुनि-पुनि पंथ निहारत जात ॥ कुंजभवन कुसुमनकी सेज्या अपने हाथ निवारत पात ।

जे द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात ॥ प्यारी अंग अति कोमल जानत सेजकली चुनि डारत। सूर श्याम रीझत मनहींमन सुधि करि छबिहि निहारत॥९३॥

राग कल्याण ॥ दूतिका हँसति हरि चरित हेरै। कबहुँ कर आपने रचत सुमनन सेज कबहुँ मग निरखि कहूँ भयो झेरै ॥ काम आतुर भरे कबहुँ बैठत खरे कबहुँ आगे जाइ रहत ठाढे। चतुर सखि देखि पुनि राधिकापै गई झेर क्यों करति घन कंतचाढे ॥ सुनत प्यारी हँसी पियाके मन बसी रूप गुण कर यशी प्रेमरासी। सूर प्रभु नाम सुनि मदन तन बल भयो अंग प्रति छबि उपर रमा दासी॥९४॥

राग धनाश्री ॥ धनि वृषभानुसुता बडभागिनि। कहा निहारति अंग अंग छबि धन्य श्याम अनुरागिनि ॥ और त्रिया नखशिख शृंगार सजि तेरे सहज न पूरै। रति रंभा उरवसी रमासी तोहिं निरखि मन झूरै ॥ ए सब कंत सुहागिनि नाहीं तू है कंतहि प्यारी। सूर धन्य तेरी सुंदरता तोसी और न नारी॥९५॥

सहज रूपकी राशि नागरी भूषण अधिक विराजै। सुख सौरभ संमिलित सुधानिधि कनकलतापर छाजै ॥ वदनारविंद धारमिलि शोभित धूमिल नील अगाध। मनहुँ बाल रवि रस समीर शंकित तिमिर कूट द्वै आध ॥ माणिक मध्य पास चहुँ मोती पंगति झलक सिंदूर। रंग्यो जनु तम तट तारागण ऊगत घेरचो सूर ॥ की मन्मथरथ चक्र कि तरिवन रवि रथ रंचित साज। श्रवणकूपकी रहत घंटिका राजत सुभगसमाज ॥ नासा नथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिंबित असमूच। वीध्यो कनक पासि शुक सुंदर करि कवीज गहि चूंच ॥ कहँलगि कहौं भूषणनभूषित अंग अंगके रूप। सूर सकल शोभा श्रीपतिके राजिवनैन अनूप॥९६॥

राग कान्हरो ॥ विराजत राधा रूप निधान। सुंदरताको पुंज प्रगट ही को पटतर त्रिय आन ॥ सिंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचकबरी अविनान। मनहुँ चंद्र मुख कोपि हन्यो रिपु राहु विषम बलवान ॥ तरल तिलक ताटंक गंडपर झलकत कल विय कान। मानहु शशि सहाय करिबेको रण बिरचे द्वै भान ॥ दीरघ नैन नासिकाबेसरि अरुण अधर छबि-वान। खंजन शुक नाहिं बिंब समितको लज्जित भए अजान ॥ को कहि सकै उरोजनकी छबि कंचनमेरु लजान। श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरहिबो विहरान ॥ रोमावलि त्रिवलीछबि छाजत जनु कीन्ही यह ठान। कृश कटि सबल डंड बंधन मनों विधि दीन्हो बंधान ॥ अंग अंग आभूषणकी छबि कापै होइ बखान। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्याम सुजान॥९७॥

राग सारंग ॥ राजत तेरे वदन शशी री। किरनि कटाक्षबाणबर सांधे भौंहकलंक कमानकसी री ॥ पीनपयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री। चक्रवाक खगचंचुपुटीते मनु सैवल मंजीर खसी री ॥ ज्यों नाभी सर एक नाल नव कनककमल विधि रहे बसी री। सूरज श्रीगोपालपियारी मेरी अघ तम धराधसीरी॥९८॥

राग गूजरी ॥ सुनि राधे तेरे अंगन ऊपर सुंदरता न बची। लोकचतुर्दश नीरस लागत तू रसरासरची ॥ नखशिख विशिख कुसुमकी सेनाको तुम अवधि रची। सहस माधुरी

रोमन वर्षत रतिरणकीच मची ॥ तोसी नारि श्यामसे नायक विधि बेकाज पची । सूर सुमेरु कूटकी सरवर क्यों पूजै घुँघची ॥ ९९ ॥

राग नट ॥ राधे देखि तेरो रूप । पठई हौं हरि शंकि मनु दल सज्यो मनसिज भूप ॥ चाल गज शृंखला नूपुर नीवि नव रुचि ढाल । किंकिनी घंटा घोष माधो भये भै बेहाल ॥ कंचुकी भूषण कवच सजि अति कुच कसे रणवीर । अंचलध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर ॥ भौंहैं चाप चढाइ कीन्हों तिलक शर संधान । नैनकी तकि देखि गिरिधर तज्यो है मदमान ॥ चमर चिकुर सुदेश घूँघट छत्र शोभित छाँह । ज्यों कह्यो त्योंही मिलाऊं दै दयालुहि बाँह ॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सु वचन विलास । सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि मुख मृदुहास ॥ १९०० ॥

राग कल्याण ॥ आजु अंजन दियो राधिका नैनको । मीन गणहीन मृगलजित खंजन-चकित अधिक चंचलसरस श्याम सुख दैनको ॥ लसति दाडिम दशन भौंह मन्मथ फंद स्वल्पलट लटकि रही रहत नहिं चैनको । कसमि कंचुकि बंद उर मुक्तमाल मुख निरखि उडराज तजिगयो सुर ऐनको ॥ रुनित नूपुर चरण क्षुद्रकटि घंटिका कनक तनु गौर छवि उमँगि उपरैनको । सूर सुनि सून उठि नवल गिरिधर सेज चली है गजगति मनो मदन गढ लैनको ॥ १ ॥

राग टोडी ॥ रसिक शिर मौर ढौरि लगावत गावत राधा राधा नाम । कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलत मुख तेरोई गुणग्राम ॥ श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोमरोम सुखराशि वाम । सूरदास प्रभु गिरिवरधरको चली मिलन गजराज गामिनि झनक रुनुक वनधाम ॥ २ ॥

राग देवगंधार ॥ चलौ किन मानिनि कुंजकुटीर । तुवबिन कुँवर कोटि बनिता तजि सहतवदनकी पीर ॥ गद्गदसुर पुलकित विरहानल नैन विलोकत नीर । क्वासि क्वासि वृष-भानुनंदिनी बिलपत विपिन अधीर । बंसी विशिखमाल व्यालावलि पंचानन पिक कीर । मलयज गरल हुताशनमारुत शाखामृग रिपुवीर ॥ हियमें हरषि प्रेम अति आतुर चतुर-चलहुपियतीर । सुनि भयभीतवज्रके पिंजर सूर सुरतिरणधीर ॥ ३ ॥

राग कल्याण ॥ नवेलीसुनिनवलपियानवनिकुंज है री । भावते लालसों भावती केलिकरि भावती भाव तो रसिक रस लै री । त्यागि अभिमान गुणरूप सौभाग रति मानिनी मनु हारि मैन सुख दैरी । एक ब्रजवास आवत जात देखियत आपनी जाति पति पैंड घेरी । ललित उदार हित पीर करि कीर मति धीर तनु मेटि मन्मथको भै री । कला चौंसठि संगीत शृंगाररस कोकविधि बंद प्रगट भेदसे से री ॥ सुरतिसागर साज स्रवत जस रसलाज अंग अनुकूल रतिराज रण जैरी । कामशर कनक कुच प्रगट भृङ्गी चिह्न दागि मेलै कंत आपनो कै री ॥ आसु आलाप सुनि दारुसे पल्लवै पुहुप मधुधार कर भारभर नै री । मुरलिका गान तुवनाम मधुराधुनी सुधागुण सिंधु नहिं गनत निज मेरी । हीनजल मीन ज्यों दरशबिन कमल है प्राण प्रीतम नहीं धीरज

धरै री ॥ प्रीति की रीति गति होति है री हरषि निरखि रति कारिचिबुक अशनि दै री। अधरमधुलोभ पंथान चितवत चकित कमल गुल्लालदल तल रचै री ॥ अरुण शीतल मृदु पातदल सरि करत सेज चढि दल मही चरणके बैरी। तुव कामकेलि कमनीय कामिनिवृंद चन्द चकोर चातक स्वाति तै री ॥ सूर सुनि श्रवण तजि भवन करि गवन मन रवन तनु तबहि कहँ सगतिगै री ॥ ४ ॥

राग कान्हरो ॥ मनो गिरिवरते आवति गंगा। राजति अतिरमणीकराधिका यहि बिधि अधिक अनूपम अंगा ॥ गौर गात द्युति बिमल बारिनिधि कटितट त्रिवली तरल तरंगा। रोमराजी मनो यमुन मिलि अध भँवर परत मानो भ्रुवभंगा ॥ भुजबल पुलिन पास मिलि बैठे चारुचक्कवे उरज उतंगा। मनो मुख मृदुल पाणि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल बिहँगा ॥ मणिगण भूषण रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिनमैं मंगा। सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा ॥ ५ ॥

राग सूही ॥ नाहिंन नैन लगे निशि यहि डर। जबते जाइ कह्यो हँसि हरिसों समर सोच उनके जिय धरधर ॥ भौंह कमान तिलक भलुका करि रुचि सुदेश सीमंत सुरँग सर। वलय ताटंक चक्र नख नेजा दामिनिसे चमकत रद असि बर। गज उरोज वर-बाजि बिलोचन बंकट बिशद बिशाल मनोहर ॥ लाल ढाल अंचल चंचल गति चमर चिकुर राजत ता ऊपर। अंगअंग सज सुभट सहायक बने विविध भूषण बानेवर ॥ कामिनि आजुहि आनि रहैगी कामकटक लैकुंज झँडातर। चरन रुनित नूपुर रणतूरा सुनत श्रवण कांपहिंगे थरथर ॥ तब जानवी किशोर जोर रुपि रहौ जीति करि खेत सबै पर। ऐंचि करौ जो कहौं किशोरी वै जो भीत ह्वै रहै बैठि घर ॥ यहै मतो मुखमुख जीरहौ तहाँ करहु पार लै पकरि पियहि कर। सहचरि चतुरातुर लै आई बाँह बोल दैकरि कहत वह छर। रोष सुरत तन मिलि अंकम भरि लै लटकी दै दंत पियाधर ॥ जुरत सुरत संग्राम मच्यो छवि छूटिछूटि कच टूटि हार लर। अनि सनेह दुहुँ बिसरि देह भिरि मैन मल्ल मुरझाइ गिरेधर ॥ विविध बिलासकोश वशकीने राधा नारि नंदनंदनवर। निगमन नेति कह्यो निर्गुण सो कह गुणाधि बरणिहै सूर नर ॥ ६ ॥

राग टोडी ॥ फूलनको महल फूलनकी सेज्या फूले कुंजविहारी फूली राधा प्यारी। फूले वै दंपति नवल मगन फूले फूले करैं केलि न्यारी न्यारी ॥ फूली लता वेलि विविध सुमनगण फूले आनन दोउ हैं सुखकारी। सूरदास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चंपक वेलि निवारी ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ॥ आज रंग फूले कुँवर कन्हाई। कबहुँक अधर दशन भरि खंडित चाखत सुधा मिठाई ॥ कबहुँक कुचकर परसि कठिन अति तहां वदन परसावत। मुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहीमन अति भावत ॥ तब प्यारी मुख गहि कर टारति नेक लाज नाहिं आवत। सूरदास प्रभु कामशिरोमणि कोककला देखरावत ॥ ८ ॥

राग विहागरो ॥ देखो सात कमल इकठौर। तिनको अति आदर देवेको धाय मिले द्वै और ॥ मिलत मिले फिरि चलत न बिछुरत अवलोकत यह चाल। न्यारे भए बिराजत

हैं सब अपने सहज सनाल ॥ हरि तम श्याम निशा निशिनायक प्रगट होत हँसि बोले। चिबुक उठाय कह्यो अब देखो अजहुँ रहति अनबोले। इतनी जतन किए नँदनंदन तब वह निठुर मनाई। भरिके अंक सूरके स्वामी पर्यंकपरि ह्वां आई ॥ ९ ॥

राग केदारो ॥ पियको भावति राधा नारि। उलटि चुंबन देति रसिकन सकुच दीन्हीं डारि ॥ परस्पर दोउ भरे श्रमजल फूँकि फूक झुरात। मनो बूझि अनंगज्वाला प्रगट करत लजात ॥ बहुरि उठे सँभारि भट ज्यों अँग अनंग सँभारि। सूर प्रभु वन धाम विहरत बने दोउ वरनारि ॥ १० ॥

राग रामकली ॥ विहरत वन दोउ मन इककरे। एक भाव इक भए लपटिकै उर उर जोरि धरे ॥ मनो सुभट रण एकसंग जुरि करिवर नहीं डरे। अधर दशनछत नखछत उरपर घायन फरहि परे ॥ यह सुख यह उपमा पटतर को रतिसंग्राम लरे। सूर सखी निरखत अंतर भई रतिपति काज करे ॥ ११ ॥

आजु अति शोभित हो घनश्याम। मानहुँ हैं जीते नँदनंदन मनसिजसों संग्राम ॥ मुकुलित कच न समात मुकुटमें रोष अरुण दोउ नैन। श्रम सूचत मानो आलस गति बोलत बनत न बैन। नखछतशोणित प्रस्वेद गाततें चंदन गयो कछु छूटि। मदन सुभट केसर सुदेश मनु लगे कवचपट फूटि ॥ दशन अंकपर प्रगट पीक मनो सन्मुख सहे प्रहार। सूरदासप्रभु परमसुरमैं जाने नंदकुमार ॥ १२ ॥

राग कल्याण ॥ सकुचिमन परस्पर बसन लीन्हें। प्यारी पिया निपुन कोकगुण कलामें उनिधनहिं कंतबल अबल कीन्हें ॥ स्वेदकन गंडमंडलनि नासानि तट पिय निरखि पीतपट पोंछि डारचो। निरखि प्यारी पोंछि वैसही पियवदन कछु सकुच कछु हरषिकै निहारचो ॥ नागरी डरन पिय पीत पट उर धरे बहुरि जिनि आपनी छाँह देखै। सूर प्रभु स्वामिनीअंग छबि दामिनी झलक प्रतिबिंब परमान भेषै ॥ १३ ॥

राग रामकली ॥ सँग राजति वृषभानुकुमारी। कुंज सदन कुसुमनि सेज्यापर दंपति शोभा भारी ॥ आलस भरे मगन रस दोऊ अंग अंग प्रति जोहत। मानहुँ गौर श्याम कै शशि तम बैठे सन्मुख सोहत ॥ कुंजभवन राधा मनमोहन चहूँ पास ब्रजनारी। सूर रही लोचन इकटक करि डारति तन मन वारी ॥ १४ ॥

राग नट ॥ इकटक रहीं नारि निहार। कुंज घर श्रीश्याम श्यामा बैठे करत बिहार ॥ नैन सैन कटाक्षसों मिलि करत रंग बिलास। नहीं शोभा पार पावति वचन मुख सुख हास ॥ तरुनि श्रीवृषभानुतनया तरुण नंदकुमार। सूर सो क्यों बरणि गावै रूपरस सुखसार ॥ १५ ॥

राग धनाश्री ॥ चितै राधा रतिनागर ओर। नैन वदन छबि यों उपजत मनो शशि अनुराग चकोर ॥ सारस रस अचवनको मानो तृषित मधुप युग जोर। पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि परस्पर जानिगई भयो भोर। सूरश्याम श्यामा आपुसमें करत रहत चितचोर ॥ १६ ॥

राग बिलावल ॥ देखो शोभासिंधु समाति। श्यामा श्याम सकल निशि रसवश जागे होत प्रभात ॥ लै पाहनसुत कर सन्मुख दै निरखि निरखि मुसुकात। अचरज सुभग बेद जल जातक कनक नीलमणि गात ॥ उदित जराउ हार पंचति यों रवि शशि किरनि तहांसे दुरात। चंचल खग वसु अष्टकंज दल शोभा वरणि न जात ॥ चारि कीरपर पारस विद्रुम आनि अलीगण खात। सुखकी राशि युगल मुख ऊपर सूरदास बलिजात ॥ १७ ॥

राग रामकली ॥ देख सखी पंच कमल द्वै शंभु। एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हें कमल सुकोमल अंग। युगल कमल सतकमल बिचारत प्रीति न कबहूं भंग ॥ षट जु कमल मुख सन्मुख चितवत बहुविधि रंगत रंग। तिनमें तीन सोमवंशी वश तीनि शाप सुख अंग ॥ जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग। तेई कमल सूर नितचितवत निपट निरंतर संग ॥ १८ ॥

राग नट ॥ देख सखि चारि चंद्र इक जोर। निरखति बैठि नितंबिनि पियसँग सूर सुताकी ओर ॥ द्वै शशि श्याम नवल घन सुन्दर द्वै कीन्हें बिधि गोर। तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि सुरंग पर बाल कुंदकलि अरुझिरह्यो मन मोर। सूरदास प्रभु अति रति नागर बलिबलि युगल किशोर ॥ १९ ॥

राग नट ॥ देखरी प्रकट द्वादश मीन। षट इंदु द्वादश तरणि शोभित विमल उडुगण तीन ॥ षट अष्ट अम्बुज कीर पट मुख कोकिला सुर एक। दश दोइ विद्रुम दामिनी षट तीनि व्यालविशेक ॥ त्रिवलि षट श्रीफल विराजत परस्पर वर नारि। ब्रज कुँवरि गिरिधर कुँवरपर सूर जन बलिहारि ॥ २० ॥

राग नट। दंपति कुंजद्वार खरे। शिथिल अँग मरगजे अंबर अतिहि रूप भरे ॥ सुरतही सब रैनि बीती कोक पूरण रंग। जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग ॥ चकृत है ब्रज नारि निरखन मनो चंद्र चकोर। सूर प्रभु वृषभानुतनया विलसि रतिपति जोर ॥ २१ ॥

राग ललित ॥ सघन कुंजते उठे भोरही श्यामा श्याम खरे। जलद नवीन मिली मनो दामिनि वरषि निशा उसरे ॥ शिथिल वसन तनु नील पीतद्युति आलसयुत पहिरे। श्रमजल बूंद कहूं कहुँ उडुगण बदरन वरन करे ॥ भूषण विविधभांति मँडवागी रतिरस उमँगि भरे। काजर अधर तमोरनैन रँग अँग अँग झलक परे ॥ प्रेम प्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे। शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुख जान तरे ॥ २२ ॥

राग बिलावल ॥ राजत दोउ निकुंज खरे। श्यामानव किशोर पिय नव रँग अति अनुराग भरे ॥ अति सुकुमारि सुभग चंपकतनु भूषण भृङ्ग अरे। मर्कत कमल शरीर सुभग हरि रति जिय वेष करे ॥ चंचित चारु कमलदल मानो पियके दशन समाति। मुख मयंक मधु पियत करन कसि ललना तउ न अघाति ॥ लाजत मदन दुराइ मधुन मृदु मुसकनि मन हरिलेत। छूटी अलक भुअंगनि कुचतट पैठी त्रिवलि निकेत ॥ रिस रुचि रंग विरहके मुखलौं आने सोम समेति। प्रेम पियूष पूरि पोंछति पिय इत उत जान

न देति ॥ वदन उघारि निहारि निकट करि पियके आनि धरे । विष शंका नख रहत मुदित मनो मनसिज ताप हरे ॥ युगल किशोर चरणरज वंदौं सूरज शरण समाहि । गावत सुनत श्रवणसुखकारी विषदुरीत दुरिजाहिं ॥ २३ ॥

राग नट ॥ जो सुख श्याम प्रियासंग कीन्हों । सो युवतिन अपनोहि करि लीन्हों ॥ दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यो । अति आनंद वचन मुख भाष्यो ॥ इहै कहति तब की अब नीके । सकुचि हँसी नागरि सँग पीके । नैन कोर पिय हृदय निहारचो । उन पहिलेहि पितांबर धारचो । सूरदास इह लीला गावै । हरि पदशरण अक्षै फल पावै ॥ २४ ॥

राग नट ॥ धनि ब्रज सुन्दरी धनि श्याम । धन्य धनि वृषभानुतनया राधिका जेहि नाम ॥ गेह गेहनि गईं तरुणी श्याम गए नँदधाम । भवन गई वृषभानुतनया कोककला सुजाम ॥ करत मनकामना पूरण एक निशि सब वाम । सूर प्रभु जा सदन जात न सोइ करत तनु ताम ॥ २५ ॥

अथ खंडितासमय ॥ राग बिलावल ॥ नाना रँग उपजावत श्याम । कोउ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निशि वसत बनाई । काहू मुख छ्वै आवत जाई । बहुनायक ह्वै विलसत आप । जाको शिव नहिं पावहिं जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानैं । कोउ आदर कोऊ अपमानैं ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुँ रैनि सब संग विहात । सुनहु सूर ऐसे नँदतात ॥ २६ ॥

राग बिलावल ॥ अब युवतिनसों प्रगटे श्याम । अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सब हिनके धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति विचार । आजु गए औरहि काहूको रिस पावति कहि बडे लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खंडित वचन कहत सुख होत । सांझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत॥२७॥

राग रामकली ॥ ठाढे नंदद्वार गोपाल । बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दै ततकाल ॥ हँसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर । कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आई हैं हम जाम ॥ २८ ॥

राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै गए श्याम । आज बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राण पियारी हौ तुम वाम ॥ यह कहिकै अनतहि पगधारे बहुनायकके भेद अपार । साँझ समय आवन कहि आए सौंह बहुत करि नंदकुमार । वह बैठी मारग हरि जोवति इकइक पल बीतत इक याम । सूर श्याम आवनकी आशा सेजसँवारी व्याकुलकाम ॥ २९ ॥

राग गौरी ॥ सांझहिते हरि पंथ निहारै । ललिता रुचि करि धाम आपने सुगंधनि सेज सँवारै ॥ कबहुँक होत वारने ठाढी कबहुँक गनति गगनके तारे । कबहुँक आइ गली मग जोवत अजहुँ न आए श्याम पियारे ॥ वै बहुनायक अनत लुभाने और वामके धाम सिधारे । सूर श्याम बिनु विलपति बाला तमचुर शब्द जहाँ तहँ पुकारे ॥ ३० ॥

ललिता तपचुरटेर सुन्यो । वै बहुनायक अनत लोभाने नहिं आए जिय कहा गुन्यो ॥ बिनकारण दै आश गए पिय बार बार तिय शीश धुन्यो । सेज सँवारि

पंथ निशि जोवत अस्त आनि भयो चंदपुन्यो ॥ तब बैठी मन मारि आपनो कछु रिस कछु मन सोच परचो। सूर श्याम याते नहिं आए मात पिताको त्रास धरचो ॥ ३१ ॥

राग जैतश्री ॥ सोच परचो नागरि मनमाहीं। की काहूके अनत लोभाने की पितुमात त्रास मनमाहीं ॥ वै निशि बसे महल शीलाके सुख सब रैनि गँवाई। उठे अकुलाइ भोर भयो जान्यो तब नागरि सुधि आई ॥ सहज चले गोपीसों कहिकै जिय सकुचे अति भारी। सूर श्याम ललिता गृह आए चितै रही मुँह प्यारी ॥ ३२ ॥

राग ललित ॥ प्यारी चितै रही मुख पियको। अंजन अधर कपोलिन वंदन लाग्यो काहू त्रियको ॥ तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो। अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम कहूं सिधारो ॥ काजर बिंदन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई। सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहिं जाई ॥ ३३ ॥

शीलाके घरते ललिताके आए ॥ राग आसावरी ॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छबि हेरोजू। मेरी सौं हाहा कहि पुनि पुनि उत काहे मुख फेरोजू ॥ सकुचत कहा बोलके सांचे मेरे गृह तौ आएजू ॥ रैनि नहीं तौ अब जु कृपा भई धनि जिन स्वांग कराएजू ॥ मेरी कही बिलग जिनि मानो मैं तुव करत बडाईजू। सूर श्याम सन्मुख नाहिं चितवत रहे धरणि शिरनाई जू ॥ ३४ ॥

राग ललित ॥ क्यों मोहन दर्पण नहिं देखत। क्यों धरणी पगनखन करोवत क्यों हम तन नहिं पेखत ॥ क्यों ठाढे बैठत क्यों नाहीं कहा परी हम चूक। पीतांबर गहि कह्यो बैठिए रहे कहा ह्वै मूक ॥ उघरि गयो उरते उपरैना नखछत बिन गुनमाल। सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छबिलाल ॥ ३५ ॥

राग ईमन ॥ ऐसी कहौ रँगीले लाल। जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिन मिलिहै को बाल ॥ बंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुण भए श्याम रसाल। जिन तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनिधनि पिय धनि धनि वह बाल ॥ माला कहाँ मिली बिनगुनकी उरछत देखि भई बेहाल। सूर श्याम छबि सबै बिराजी इहै देखि मोको जंजाल ॥ ३६ ॥

राग गुंडमलार ॥ काहेते सकुचत पिय दृष्टि नहीं तुम जोवत मोहनरूप बिहारी। निकसे समाचार सबसोवत घूमति आँखि तिहारी ॥ नैन जगे पल लगे जातहैं पौढत तल्प हमारी। विविध कुसुम रचना रचि पचिकै अपने हाथ सवाँरी ॥ कहत सूर उर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी ॥ ३७ ॥

राग बिलावल ॥ ज्वाब नहीं पिय आवई क्यों कहाँ ठगाने। मैं तबहींकी बकतिहौं कछु आजु भुलाने ॥ हाँ नाहीं नाहिं कहत हौ मेरीसों काहे। आए क्यों चकृत भए मोको रिसि दाहे ॥ कहाँ रहे कासों बन्यो तहइ पगधारो। सूर श्याम गुणरावरे हिरदै न बिसारो ॥ ३८ ॥

राग बिलावल ॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सौंहैं खाए। ऐसे मैं जाने नाहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए ॥ भलीकरी दरशन हरि दीन्हे जन्म जन्मके ताप नशाए। तब चितए हरि नेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए ॥ सूर दास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हें पिय अंकम लाए ॥ ३९ ॥

राग बिलावल ॥ नैनकोर हरि हेरिकै प्यारी वश कीन्ही । भाव कह्यो आधीनको ललिता लखिलीन्ही ॥ तुरत गयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए । भली करी मनभावते ऐसेहु मैं पाए ॥ भवन गई गहि बांहले जागे निशिजाने । अंग शिथिल निशि श्रमभयो मनहीमन जाने ॥ अँगसुगंध मर्दन कियो तुरतहिं अन्हवाये । अपने कर अँग पोंछिके मन साध पुराये ॥ चीर अभूषण अंग दै बैठे गिरिधारी । रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी ॥ ४० ॥

राग कल्याण ॥ कियो मन काम नहिं रही बाकी । प्रिया रिस दूरिकै दियो रसपूरिकै अनँगबल दूरिकै गोपजाकी ॥ नंदसुत लाडिले प्रेमके चांडिले सौंह दै कहतहैं नारि आगे । तुम परम भावती प्राणहूँते खरी सुख नाहीं लहत मैं तुमहिं त्यागे ॥ तुमहिं धन तन तुमहिं तुमहिं मनहीं बसौं और त्रिय नहीं मो मनहिं भावैं । सूर प्रभु चतुरवर चतुर नागरिनके चतुराई वचन कहि मन चुरावैं ॥ ४१ ॥

राग भैरव ॥ इहै भाव सब युवतिनसों । ऐसे वचन कहत सब आगे भूलि रहति मनमोहनसों ॥ बिन देखे रिसभाव बढावत मिलिआई दै सौंहनिसों । मुख देखत दुख रहत नहीं तनु चितवत मुरि दोउ भौंहनसों ॥ और त्रिया अँग चिह्न बिराजत रिस मनहीं मन छोहनसों । सूर श्याम सब गोपकुमारी टरति नहीं कहुँ गोहनसों ॥ ४२ ॥

राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै चले अपने निजधाम । बीच मिली चंद्रावली उन देखे श्याम ॥ मोर मुकुट कछनी कछे नटवर गोपाल । रही बदन तनु हेरिकै अति हित ब्रजबाल ॥ गली साँकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाइ । कहां कहां पिय रहत हौ हमको बिसराइ ॥ श्याम कह्यो हँसि वामसों तुम्हरे निशिवास । सूर हृदयकी कल्पना सुनि भई हुलास ॥ ४३ ॥

राग आसावरी ॥ श्याम वामको सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो । मात पिता जिय त्रास धरत हौं तऊ आइ सुख पाऊंगो ॥ तुव मिलबेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसाऊंगो । नैन बिशाल भाल उर बैठे ते तुव हाथ गहाऊंगो ॥ तव तन परसि काम दुख मेटों जीवन सफल कराऊंगो । सुनहु सूर अधरन रस अँचवों दुहुँ मन तृषा बुझाऊंगो॥४४॥

राग गूजरी ॥ सुनि सुनि वचन नारि मुसुकानी । गई सदन अति ह्वै उतावली आँनद-सहित लजानी ॥ फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो जनु पानी । बारंबार श्यामरति रसकी कही प्रगट करि बानी॥वासर कल्पसमान न बीतत कैसेहुँ रैनि तुलानी । सूर देखि गति गत पतंगकी अवधि जानि हरषानी ॥ ४५ ॥

राग कल्याण ॥ राधिकागेह हरिदेह बासी । और त्रिय घरनघर तनु प्रकाशी ॥ ब्रह्मपूरण एक द्वितीय नहिं कोऊ । राधिका सबै हरि सबै कोऊ ॥ दीपसें दीप जैसे उजारी । तैसेही ब्रह्म घरघर बिहारी ॥ खंडिता वचन हित यह उपाई । कबहुँ कबहुँ जात कहुँ नहिं कन्हाई ॥ जन्मको सफल हरि इहै पावैं । नारि रसवचन श्रवणन सुनावैं ॥ सूर प्रभु अनतही गमन कीन्हों । तहां नहिं गए जहँ बचन दीन्हों ॥ ४६ ॥

राग टोडी ॥ श्याम गए सुखमाके धाम । देखत हर्ष भई मन वाम ॥ आतुर मंदिर गए समाइ । प्यारी प्रेम उठी झहराइ ॥ श्याम भामिनी परम उतार । कोककला रस करत बिचार ॥ बोलत पिय नाहिं आवति पास । गद्गद बानी कहति उदास ॥ धाइ जाइ पति अंकम लाइ । हाहा कहि २ लेत बलाइ ॥ अति आतुर पतिके नति काम । कहा प्रकृति पाई यह वाम ॥ बाँह गहत कीन्हों धन मान । तब हरि कीन्हें एक सयान ॥ तब प्यारी चरणन शिर धारी । कामव्यथा जान्यो सुकुमारी ॥ अल्प हँसी मुख हेरि लजानी । सूरज प्रभु त्रियमनकी जानी ॥ ४७ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम कर भामिनी मुख सँवारयो । बसन तनु दूरि करि सबल भुज अंक भरि कामरिस वाम परि निदरि धारयो । अधर दशनन भरे कठिन कुच उरलरे परे सुखसेज मन मुरछि दोऊ । मनो कुंभिलाइ रहे मैनसे मल्ल दोऊ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ । अंग विह्वल भए नैन नैनन नए लजित रति अंत त्रिय कंत भारी । सूर धनि धन्य सुखमा नारिवश श्याम याम युग भई पतिते न न्यारी ॥ ४८ ॥

राग विहागरो ॥ चंद्रावली श्याममग जोवति । कबहुँ सेज करझारि सँवारति कबहुँ मलयरज भोवति ॥ कबहुँ नैन अलसात जानिकै जल लै लै पुनि धोवति । कबहुँ भवन कबहुँ आँगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति ॥ कबहुँक विरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमों अति । सूर श्याम बहु रवनि रवन पिय यह कहि तव गुण तोवति ॥ ४९ ॥

राग ललित ॥ ऐसेहि रैनि विहानी । चंद्र मलीने चिरैया बोली सुनी कागकी बानी ॥ वे लुब्धे अनतहिं काहूके मनकी आश भुलानी । कपटी कुटिल क्रूर कहा जानैं श्याम नाम जिय आनी ॥ कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्यामरंग है पानी । श्यामजलद अहि श्यामकहावत सूर श्याम सोबानी ॥ ५० ॥

राग गुंडमलार ॥ वामसँग श्याम त्रययाम जागे । कोक विद्या निपुण सकल गुणमें सुपुन सुरति संग्राम जुरि नहीं भागे ॥ अंग आलस भरे नैन निद्राढरे नेक सेज्या परे निशा बीती । सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीति ॥ ५१ ॥

राग विभास ॥ चन्द्रावलि धाम श्याम भोर भए आए । इत रिस करिरही वाम रैन जगी चारि याम देख्यो जो द्वार कान्ह ठाढे सुखदाये ॥ मंदिरते रहि निहारि मनहीमन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि बीते । रिस नाहिं सकी सँभारि बैठि चली द्वारि नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छवि नख शिखहीते ॥ बिनुगुन बनि हृदय माल ता बिचनखछत रसाल लोचन दोउ दरशिलाल जैसी रिस गाढी । जावकरँग लग्यो भालबंदन भुजपर विशाल पीकपलक अधर झलक वाम प्रीति गाढी ॥ क्यों आए कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूरदास गाने ॥ ५२ ॥

राग विलावल ॥ तहीं जाहु जहिं रैनि बसे हो । काहेको दाहन हौ आए अंग अंग देखति चिह्न जैसे हो ॥ अरगजे अंग मरगजी माला वसन सुगंध भरेसे हो । काजर अधर

कपोलन बंदन लोचन अरुन धरेसे हो ॥ पलकनि पीक मुकुर लै देखो एकौ नहीं अनैसे हो । सूरदास प्रभु पीठ बलै गडे नागरि अंक भरेसे हो ॥ ५३ ॥

राग सारंग ॥ तहँइ जाहु जहँ रैनि रहे बसि । कैतव कत दामिनि पद प्रगटत आए मारन दुअन बान कसि ॥ सिथिल सरोज रोर सुठि शोभित शीशहुते कछु पाग रही धसि । जावक रस मनौ संबर अरिगण पिया मनाई पद ललाट घसि ॥ बिन गुण माल मराल तरनि गति मगन चाल पद परत रहत खसि । चंदन चरचित कुच उर उपटित मनु नवघनमें उदित दोउ शशि ॥ सखियन समाचार लिखि पठए तन कागज नख लिखनि रुधिर मसि ॥ सूरदास प्रभु श्रीगोपाल हैं मानौ जागत नई निशा नशि ॥ ५४ ॥

राग बिलावल ॥ तहँइ जाहु जहां निशा बसे हो । जानत हौं पिय चतुर शिरोमणि नागरि नागर रासरसे हो ॥ घूमतहौ मनो प्रिया उरगिनी नव बिलास श्रमसे जु डसे हो । काजर अधरनि प्रगट देखियत नागवेलि रँग निपटलसेहो ॥ श्याम उरस्थल ऊपर रेखा मनहुँ गगन शशि उदित दिसेहो । लटपटी पाग महावरके रँग मानिनिपगपर शीश घसे हो ॥ बिगलितवसन मरगजी माला पीठ वलयके चिह्न लसेहो । सूरदास प्रभुप्रियावचन सुनि नागरनगधर नेक हँसे हो ॥ ५५ ॥

तहइँ जाहु जहँ रैनि हुते । काहे दुराव करत मनमोहन मिटे चिह्न नाहिं अंग जुते ॥ बिनही गुन उरहार बिराजत परम प्रीति हिय लाइ सुते । बिथुरी अलक अटपटे भूषण काम कुटिल कुचवीच गुते ॥ दशनदाग नखरेख बनीहै भामिनिभवन भलै भुगुते । सूर सुदेश अधरमधु पीके लोचन अलस उनींदहुते ॥ ५६ ॥

तहइं जाहु जहां रैनि गँवाई । काहेको मुँह परसन आए जानति हौं चतुराई ॥ वाके गुण मनते नहिं टारत बोलत नाहीं बैन । या छविपर मैं तन मन वारौं पीक बिराजित नैन ॥ भली करी यह दरश दिखायो ताते नैन सिराने । सूर श्याम निशिको सुख लक्ष्यौ हमको मया बिहाने ॥ ५७ ॥

राग सुघराई ॥ आए लाल ललित भेष किये । पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए ॥ चंदन खौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिये । पीतांबर तहां डारि कौनको नीलांबरहि लिए ॥ लालीदै पीरी लै आए देखत पुलकि जिए । सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिये ॥ ५८ ॥

राग सूही ॥ जागे हौजू रावरे नैना क्यों न खोलौ । भय त्रियाके वशनिसि जागे सरबस भोरभये उठि आए भूले कहा डोलौ ॥ चंदन मिटाये तनु अतिही अलसात नागरीकी पीकलीक लागीतौ कपोलौ । पीतांबर भूलि आए प्यारीजीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूर किए आए दोलौ ॥ ५९ ॥

राग बिलावल ॥ पीतांबर पट कहा भयो । नीलांबर ओढे हौ आए अति दुहुँ डहो नयो ॥ तैसोइ अंग वसन रंग तैसोइ कहा कहौं यह शोभा । तैसिय बनी मरगजीकेसर ता त्रियके मनलोभा ॥ एते पर क्यों बोलत नाहीं कहा खोइसे आए । सूर श्याम यह अब मैं जानी नागरिचित्त चुराए ॥ ६० ॥

राग भैरव ॥ हाहाहो पिय बातकहौ । आप कछू जिय तरक गहत हौतौ तुम मोसों मौन गहौ ॥ कहा चूक हमको पिय लागै रुसि रहेहौ काहेजू । तवहींते वैसेहि हो ठाढे मो तनको नहिं चाहेजू ॥ अव हमको अपराध क्षमैंगे कृपा करौ मुख बोलोजू । सूर श्याम अव तजो निठुरई गांठि हृदयकी खोलोजू ॥ ६१ ॥

राग बिलावल ॥ रूखेहौ पिय रूखेहौ । उत्तरको उत्तर न देतहौ देखतही न कछू खेहौ ॥ वह चितवनि न होइ नैननकी वचनहूंते उत हूखे हौ । वह मुख कमल विकास नहीं रति सायक शरहि विदूषेहौ ॥ की छुटि गई संपदा करते की ठग ठगे कछूसेहो । मेरेहु जान सूर प्रभु सांचे मदन चोर मिलि मूसेहौ ॥ ६२ ॥

मदन चोरसों जानि मुसायो । अपनी लाली खोई पीककी लाली पलकनि पायो ॥ ह्यांते गए चतुरई लीन्हें सो सब उनहिं छपायो ॥ आलस अवल जम्हात अंग ऐंडात गात दरशायो । कंचन खोय कांच लै आये विढतो भलो फवायो । सूर कहूं घर पर मन नाहीं जैसे हाल करायो ॥ ६३ ॥

राग काफी ॥ लाल उनींदे नयना आलस भारि आए । अरुझि कामकी वेलिसों कौने बिरमाए ॥ सिथिल पाग दस्तारकी जावकरँग भीने । पाँइ परे अपवश करे तब सरवस दीने ॥ लाली मेरे लालकी सबही तन ढीले । लाली लै लालन गए आए मुख पीले ॥ विनगुन माल हिये लसै प्रिय प्रीति निसानी । सखि रसाल हमको दई तुम देहु विरानी ॥ पग डगमग इतको धरौ उतको दृग धाए । अभ्यंतर अंतर वसे पिय मोमन भाए ॥ उलटि तहां पग धारिए जासों मन मान्यो । छपद कंजतजि बेलिसों लटि प्रेम नजान्यो ॥ तव हंसि बोले श्यामजी तुमते को प्यारी । तुम बिनु कल मोको नहीं अतिही सुख-कारी ॥ वचन चतुराई छांडि देहु कहाये पाढि आए । सूर श्याम गुण राशि हो नीके प्रगटाए ॥ ६४ ॥

राग सुघराई ॥ आए लाल यामिनी जागेसे भोर । नील कलेवर कोमल ऊपर रगडि गए कुच जे कठोर ॥ निशि वसि रहे मानिनीके गृह ह्यांउठि आए भोर ॥ सूरदास प्रभु वचन बनावत अब चोरत मन मोर ॥ ६५ ॥

आए लाल ललित भेष किये । पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए ॥ चन्दनखौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए । पीतांवर कहां डारि कौनको नीलांवरहि लिए ॥ लाली दै पियरी लै आए देखत पुलकि जिये । सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिए ॥ ६६ ॥

म जानी जिय जहँ रति मानी । तुम आएहौ ललना जव चिरिआं चुहचुहानी ॥ सुखकी बात कहा कहौं ठानी बात नहीं पहिचानी । येतपर अँखियां रससानी अरुणगिया लपटानी ॥ भालै जावक रंग बनानी ॥ अधरैं अंजन परगट जानी । बिन गुण वनी माल सब अंगन उलटी सकल निसानी ॥ सूरदास प्रभु गुनन निधानी अंतरगतिकी मैं सब जानी । धनि त्रिय तुमको जो सुखदानी संगम जागत रैनि बिहानी ॥ ६७ ॥

राग विभास ॥ मैं जानी पिव बात तुम्हारी । भोर भए मेरे गृह आए ऐसे भोरे भारी ॥ ह्यां आए मुख परसन मेरे हृदय टरति नाहिं प्यारी । कपट चतुरई दूरि करौ जू अपयश लेत रु गारी ॥ कहा सांच मैं खोवत करते झूठे कहा फवावति । सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवति ॥ ६८ ॥

राग काफी ॥ रैनि रीझे की बात कहौ । काहेको सकुचत मनमोहन ठाढे क्यों न रहौ ॥ पीतांबर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियो गहौ । नीलांबर पहरावनि पाई सन्मुख क्यों न चहौ ॥ तब हंसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहौ । सूर श्याम ह्यांई अब रहिए अति पुनीत तुमहौ ॥ ६९ ॥

राग बिलावल ॥ तुमरीझे की उनहिं रिझाए । हाहा यह पिय प्रगट सुनाए कोटिक सौंह दिवाए ॥ जावक भाल चिह्न मैं जान्यों हठ करि पाँय लगाए । नैनन पीक मया उनि कीन्हीं अंजन अधर लगाए ॥ बिनुगुन माल मिली कहँ तुमको कंकन पीठि देखावहु । सूर श्याम हमतौ यों जानति तुमहू कहि न सुनावहु ॥ ७० ॥

माधव नीकी बिधिसों आए । नखरेखा उर मंडित मानो द्वितिया चंद उगाए ॥ बिगलित बसन पाग डोलतिहै केहरि चाल चलाये । सर्वसु आनि जु रहे सूर प्रभु उत मेरे मन भाए ॥ पाउँ धारिए वामधाम जहं चारोंयाम गँवाए ॥ ७१ ॥

राग बिलावल ॥ आजु हरि पायोहै मुँह माँग्यो । जबते तुमसों बिचारयो मनसिज दैसिलवारयो त्याग्यो ॥ कहुँ जावक कहुँ बने तमोर रंग कहुँ अंग सेंदुर दाग्यो । मानौ रन छूटे घायलको जहँ तहँ शोणित लाग्यो ॥ नख मानो चंद्र बाण साजिकै झझकारत उर आग्यो । सूरदास मानिनिरण जीत्यो स्मर सँग डरि रणभाग्यो ॥ ७२ ॥

आजु हरि रैनि उनींदे आए ॥ अंजन अधर ललाट महाउर नैन तमोर खवाए । बिनु गुन माल बिराजत उर पर चंदन खौरि लगाए । मगन देह शिर पाग लटपटी जावक रंग रँगाए ॥ हृदय सुभग नखरेख बिराज्त कंकन पीठि बनाए । सूरदास प्रभु इहै अचंभव तीन तिलक कहां पाए ॥ ७३ ॥

आजु हरि आलस रंग भरे । कबहुंक बाँह जोरि ऐंडावत बहुत जम्हात खरे ॥ बैठोगे की पांव धारिए देखत नैन सिराने । साँझ आइकै दरशन दीन्हों की अब होत बिहाने ॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे बड़े कन्हाई । सूर श्याम ह्वां सुरति करत वह ह्यां तुम झेर लगाई ॥ ७४ ॥

सौंह करनको भोरही तुम मेरे आए । रैनि करत सुख अनतही ताके मन भाए ॥ अंग अंग भूषण औरसे माँगे कहुँ पाए । देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए । मान कियो वोहि मानिनी धनि पाइँ पराए ॥ यह चतुराई कहँ पढी उनही समुझाए । सूरदास प्रभु सांचि लै उपमा कवि गाए ॥ ७५ ॥

राग गौरी ॥ तुमको कमल नैन कवि गावत । वदन कमल उपमा यह सांची तागुनको प्रगटावत ॥ सुंदर कर कमलनकी शोभा चरणकमल कहवावत । और अंग कहि कहा बखानों इतनेहिको गुण गावत ॥ श्याम नाम अद्भुत यह वाणी श्रवण सुनत सुख पावत । सूरदास प्रभु ग्वाल सँगाती जानी जाति जनावत ॥ ७६ ॥

तुम न्याय कहावत कमल नैन । कमल चरण कर कमल वदन छबि अरज सुनावत मधुर बैन ॥ प्रात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवत अंक दैन । निशि दै द्वार कपाट सदन बधु मधु पति प्यावत परम चैन ॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित बसत सदा जल एक ऐन । सूर कपट फल तबहिं पाइहौ अपनी अरप जब देहै भैन ॥ ७७ ॥

राग भैरव ॥ धीर धरहु फल पावहुगे ॥ अपनेही पियके सुख चांडे कबहूं तौ वश आवहुगे ॥ हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे । कबहुं राधिका मान करैगी अंतरविरह जनावहुगे ॥ तब चरित्र हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे । सूर श्याम अतिचतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे ॥ ७८ ॥

राग देवगन्धार ॥ यह कहि प्यारी भवन गई । रीझे श्याम देखि वा छबिपर रिस मुख सुंदरई ॥ द्वारकपाट दियो गाढे करि कर आपने बनाई । नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढिरही तब जाई ॥ यहि अंतर हरि अंतर्यामी जो कछु करै सु होई । जहां नारि मुख मूंदी पौढिरही तहां संग रहे सोई ॥ जो देखे ह्यां संग बिराजत चली त्रिया झहराई । एक श्याम आंगनही देखे इक गृह रहे समाई ॥ उनको वै अति बिनय करतहैं इक अंकम भरिलीनी । सूर श्याम मनहरन कहावहु मन हरिके वश कीनी ॥ ७९ ॥

राग कल्याण ॥ तब नागरि रिस भूलिगई । पुलकि अंक अँगिया उर दरकी अंग अनंग जई ॥ अंकम भरि पिय प्यारी लीन्हीं निशिसुख वासर दीन्हों । मान छँडाई हुलास बढायो सुफल मनोरथ कीन्हों ॥ तब निजधाम श्याम पगधारे तहां सहचरी आई । सूरज प्रभु रसभरी नागरी देखि रही मनलाई ॥ ८० ॥

राग आसावरी ॥ चंद्रावली हरषसों बैठी तहां सहचरी आई हो । औरै बदन और अँगशोभा देखिरही चख लाई हो ॥ कहा आज अति हरषित बैठी कहा लुटिसी पाई हो । क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी यह छबि कही न जाई हो ॥ मोसों कहा दुराव करतिहै कहा रही शिर नाई हो । मैं जानी तोहिं मिले सूर प्रभु यशुमति कुँवर कन्हाईहो ॥ ८१ ॥

राग आसावरी ॥ चंद्रावली करति चतुराई सुनत वचन मुख मूँदिरही । ज्वाब नहीं कछु देति सखी क्यों हाँ नाहीं कछु बैन कही ॥ गूँगे गुरकी दशा भई है पूरण श्याम सोहाग सही । आये श्याम सदन सुखभारी दुख निवारि आनंद करी । वह ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितते न टरी ॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहौं मुख बनै नहीं । सूर श्याम युवतीमन मोहन तिनको गुण नाहिं परत कही ॥ ८२ ॥

राग बिलावल ॥ हाहा कहि चंद्रावलि मोसों हरिके गुण मैंहूं सुनिलेउँ । श्रवणन मग सुनि हृदय प्रकाशौं पुनि पुनि उत्तर देउँ ॥ की तोहिं मिले तीर यमुनाके की तोहि मिले भवनही माँझ । कहौं तोहिं मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि साँझ ॥ कहूं वामके धाम बसे निशि भोर सदन गए मेरे आइ । सूर श्याम जो चरित उपायो कहनचहौं मुख कह्यो न जाइ ॥ ८३ ॥

राग गौरी ॥ अब तो कहे बनैगी माई । कहा श्याम अचरज सो कीन्हों कहत कह्यो नहिं जाई ॥ कैसे लाल अनतते आए कैसे तेरे गेह । कैसे मान कियो क्यों मिटिगए कैसे बढ्यो सनेह ॥ तब गद्गद वाणी मुख प्रगटी सुन सजनी दै कान । सूरज प्रभुके चरित सुनाऊँ जैसे बिसरचो मान ॥ ८४ ॥

राग बिलावल ॥ प्रातसमै मेरे मोहन आए । कुंचित केश कमल मुख ऊपर हृदय रहो वन अलिकुल छाए ॥ डगमग चाल परत न सूध पग इहि बिधि तौ मेरे मन भाए । कहुँ

कहुँ पीक कहूं काजर कहुँ नखरेखा अति बनत सुहाए ॥ मो तन बीच निरखि मुसुकाने छोरि पीतपट अंक दुराए । सूर श्याम माधव बलि बलि अब श्याम जानि हौं पाए ॥८५॥

राग गौरी ॥ मैं हरिसोंहो मान कियोरी । आवत देखि आन बनिता रति द्वार कपाट दियो री ॥ अपनेही कर सांकर सारी संधि संधि सीयो री । जो देखौं तो सेज सुमूरति कांप्यो रिसनिहियो री ॥ जब झुकि चली भवनते बाहर तब हठि लौटि लियोरी । कहा कहौं कछु कहत न आवै हेतु गोविंद वियो री ॥ बिसारि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियोरी । सूरदास प्रभु अति रति नागर छलि मुख अमृत पियो री ॥ ८६ ॥

राग बिलावल ॥ तबहींते भयो हरष हियो री । वैसे आइ चरित ए कीन्हें सदन पैठि मन चोरि लियो री । अंग वाम छबि शेष देखिकै रिस उपजी जियभारी । क्रोध गयो उर आनँद उपज्यो सुख तनुदशा बिसारी ॥ ऐसे चरित कौनको आवै जे कीने गिरिधारी । सूर श्याम रति पतिके नायक सब लायक बनवारी ॥ ८७ ॥

राग भैरव ॥ नंदनँदन सुखदायक हैं । नैन सैनदै हरत नारिमन काम कामतन दायक हैं ॥ कबहूं रैनि बसत काहूके कबहुँ भोर उठि आवत हैं । सुनहु सूर जेइ जेइ मन भावत तेइ तेइ रँग उपजावत हैं ॥ ८८ ॥

राग बिलावल ॥ अनतहि रैनि रहे कहुँ श्याम । भोर भए आए निजधाम ॥ नागरि सहज रही मन माहीं । नंद सुवन निशि अनत न जाहीं ॥ महर सदन की मेरे गेह । हिरदय है त्रिय इहै सनेह ॥ आये श्याम रही मुख हेरि । मन मन करन लगी अवसेरि ॥ रतिरस चिह्न नारिके बानि । सूर हँसी राधा पहिचानि ॥ ८९ ॥

राग रामकली ॥ आज बने पिय रूप अगाध । पर उपकार हेतु तनु धारयो पुरवत सब मन साध ॥ धर्मनीति यह कहाँ पढी जू हमहूं बात सुनावहु । कहौ कहां काको सुख दीनों काहे न प्रनट बतावहु ॥ धनि उपकार करत डोलत हौ आज बात यह जानी । सूर श्याम गिरिधर गुणनागर अंग निरखि पहिचानी ॥ ९० ॥

राग गूजरी ॥ पिय छबि निरखि हँसति त्रिय भारी । कहां महा उर पाग रँगाई यह शोभा इक न्यारी ॥ अरुण नयन अलसात देखियत पलक पीक लपटानो । अधर दशनछत बंदन राजत बंधुकपर अलिमानो ॥ हृदय रुचिर मोतिनकी माला नखरेखा तेहि तीर । बिनु गुण माल सूरके स्वामी कुंकुम श्याम शरीर ॥ ९१ ॥

राग बिलावल ॥ धन्य आजु यह दरश दियो । धन्य धन्य जासों अनुरागे तब जानी नाहिं और वियो ॥ भले श्याम वह भली भावती भले भली मिलि भली करी । यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत क्यों एक घरी ॥ जाहु तहीं सुख दीनो मोको वै सुनिकै रिस पावैंगी । सूर श्याम अति चतुर कहावत बहुरो मन न मिलावैंगी ॥ ९२ ॥

क्यों आये उठि भोर इहां । काहेको इतनो शरमाने रैनि रहे फिरि जाहु तहां ॥ हमको कहा इती गुरुआई उनहीं क्यों न सम्हारो जू । उन आए ह्यां नाहीं जान्यो अजहूंलों पगधारौ जू ॥ हमहूं बोलि वहाँई लीजो डर उनको हमहू कोहै । सूर श्याम तिनहीं सुख दीजै जो विलसैं सँग तुमको लै ॥ ९३ ॥

राग रामकली ॥ उनहींको मन राखे काम । ह्यां तुम आए हौजू नाहीं बात सुनतहौ नाहीं श्याम ॥ देखौं अंग अंग प्रतिशोभा मैंतो भूली हौं यहि रूप । धनि पिय बने बनी वेऊ हैं इक इक रूप अनूप ॥ सो छबि मोहिं देखावन आए माया करी बहुत हरि आजु । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि वहौ रसिकनी बन्यो समाजु ॥ ९४ ॥

राग बिलावल ॥ रसिक रसिकई जानिपरी । नैननते अब न्यारे हूजे तबहींते अति रिसानि मरी ॥ तुम जोबन अरु सो नव जोबनि येते पर सब गुणनि भरी । लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि त्रिय झहरी ॥ अंजन अधर कपोलन बंदन पीक पलक छबि देखि डरी । सूर श्याम रति चिह्न देखावन मेरे आए भलेजु हरी ॥ ९५ ॥

राग धनाश्री ॥ श्याम त्रिया सन्मुख नाहिं जोवत । कबहुं नैनकी कोरनिहारत कबहुं वदन पुनि गोवत ॥ मन मन हँसत त्रसत तनु परगट सुनत भावती बात । खंडित वचन सुनत प्यारीके पुलक होत सब गात ॥ इह सुख सूरदास कछु जानै प्रभु अपनेको भाव । श्रीराधा रिस करति निरखि मुख सो छबि पर ललचाव ॥ ९६ ॥

पियको सुख प्यारी नाहिं जानै । जोइ आवत सोइ सोइ कहि डारत जाहु जाहु तुम गानै ॥ काहेको मोहिं डाहन आए रैनि देत सुख वाको । भली नवेली नोखी पाई जो जाको सो ताको ॥ चंदन वंदन प्रिय अँग कुमकुम शेष लिए ह्यां आए । सूर श्याम यह तुमहिं बड़ाई औरनको शरमाए ॥ ९७ ॥

राग बिलावल ॥ औरनको छबि कहा देखावत । तुमहीको भावत मनमोहन हम देखत रिसपावत ॥ आपुनको भइ बडी प्रतिष्ठा जावक भाल लगाए । याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाए । पिय निधरक हम अति सकुचतहै दर्पण लै मुखदेखो । सूर श्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हम तन नहिं पेखो ॥ ९८ ॥

राग गौरी ॥ श्याम हँसे प्यारी मुख हेरो । रिसहि उठी झहराइ कह्यो यह वश कीन्हों मन मेरो ॥ जाय हँसो पिय ताही आगे मैं रीझी अति भारी । ऐसे हँसि हँसि ताहि रिझा- वहु देउँ कहा अब गारी ॥ होत अबार गमन अब कीजै धरणी कहा निहारत । सूर श्याम मनकी मैं जानी ताके गुणहिं विचारत ॥ ९९ ॥

राग देवगंधार ॥ मैं जानी पिय मनकी बात । धरनी पगनख कहा कँरोवत अब सीखे ए घात ॥ तुम जानत जिय हमहि सयाने अरु सब लोग अयाने । रैनि वसत कहूँ भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥ यह चतुरई पढी ताहीपै सो गुण हमते न्यारो । धनि धनि सूरदासके स्वामी काहे हम न बिसारो ॥ ३०० ॥

मैं जानेहौं जू ललना तहीं न सिधारिए जहां नयो नेहरा । मुँहकी हलभलई मोहूसों करन आए जियकी जासों ताहीसों तुम बिन सूनो वाको गेहरा ॥ निशिके सुखकी कहे देत अधर नैना उर नख लागे छबि देहरा । वेगि सबारे पाँइ धारिए सूरके स्वामी नतर भीजैगो पियरो पट आवत है पिय मेहरा ॥ १ ॥

राग मलार ॥ ठाढे रहो आँगनही हो पिय जोलौं मेह न नखशिख भीजौ । परन देहु बडी बडी बूँदै तुम चीर उतारि और वस्त्र पहिरौ तब गेह देहरी पांव दीजौ ॥ कहिए बात रैनिकी सांची ता पीछे सौहैं कीजौ । सूर श्याम तुम हौ बहुनायक देह सुधारि मोहिं छीजौ ॥ २ ॥

मोहूसों निठुरई ठानी मोहन प्यारे काहेको आवन कह्यो सांचे ॥ प्रीतिके वचन बाचे विरह अनल आंचे अपने गरजको तुम एक पांइ नाचे ॥ भले हौजू जाने लाल अरगजे भीने माल केसरि तिलक भाल मैन मंत्र काचे । निशिचिह्न चीन्हें सूर श्याम रति भीने ताहीके सिधारो पिय जाके रंग राचे ॥ ३ ॥

राग मालकौशिक ॥ तुम जिनि सकुचो प्यारे लाल मेरे जा त्रियसों रति मानी ताहीके रहो अब । मैं इतनेहीमें भलों मानों प्रीतम जो मेरे आँगन पाँव धारे आपन जब ॥ नैन तृप्त भए दरश देखतही श्रवण तृप्त भए वचन सुनै तब । सूरदास प्रभु चरण छुए कहति रोम रोम पुलकित अंग भए सब ॥ ४ ॥

राग कान्हरो ॥ नैन चपलता कहां गँवाई । मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई ॥ ताहीके रँग अरुण भए हैं धनि यह सुंदरताई । मनो अरुण अंबुजपर बैठे मत्त भृंग रस आई ॥ उडि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जँभाई । सुनहु सूर यह अंग माधुरी आलसभरे कन्हाई ॥ ५ ॥

राग बिलावल ॥ नैनकी चंचलता कहा कीन्हें भीने रंग कौनके हो श्याम हमहूँसों करत दुरावत ॥ औरनिको वदन देखिबेको नेम लियो ताके पलकनि राखे भार भरे नए आवत ॥ पुहुप गंध लोभ भँवर उडि न सकत फिरि बैठत जा समीप रति मानी संग लिए आवत रतिकी रति गावत । सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवश कीन्हें मुखकी हमहि बनावत ॥ ६ ॥

राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लाल जाई । जावक तिलक भाल दियो है नंदलाल विनुगुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई ॥ अधर अंजनदाग मिट्यो है पीक पराग और मिटी बंदनकी ललाई । अंग अंग शिथिल भएहौ प्रेम सूरके स्वामी मिटि गई चंचलताई ॥ ७ ॥

रंग भरि आएहौ मेरे ललना बातैं कहतहौ अटपटी । अति अलसात जम्हातहौ प्यारे पिय प्रगट त्रिया परताप छुटत नाहिंन अंतरकी गटी ॥ यह चतुराई अधिकाई कहां पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढ़ेहौ पटी । सूरदास प्रभु गिरिधर बहु नायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥

राग ईमन ॥ डोलत महल महल इहै टहल हम जानति तुम बहु नाइक पिये । आयेहौ सुरति किए ठाटकरख लिये सकसकी धकधकी हिये । छूटे बंदन अरु बागकी छूटी लटपटे पेच अटपटे दिये सूरदास प्रभु हौ बहुनायक मेरे पाँवधारे बैठो जु बैठो भली किये ॥९॥

महल महल अब डोलत हौ ॥ इहै कामते धाम बिसार्यो बूझे काहे न बोलत हौ ॥ बहुनायककी आजु मैं जानी कहा चतुरई तोलतहौ । निशिरस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहौ ॥ टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहौ ॥ जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हौ ॥ १० ॥

अँग अँग रंग भरे आएहौ । रंगभरी पाग भालरँग शोभा रँग रँग नैन पगाएहौ ॥ रँग कपोल रँग पलकनि शोभा अधरन श्याम रँगाए हौ । नखछत रंग चारु उर रेखा रतिरँग रैनि जगाए हौ ॥ कंकण वलय पीठि गडि लागे उरपर छाप बनाए हौ । सूर श्याम वामारँग पागे अनुरागे मन भाए हौ ॥ ११ ॥

राग बिलावल ॥ बारबार मैं कहति हौं पिय तहाँ सिधारो । आए हौ मन हरनको हरि नाम तुम्हारो ॥ भली बनी छबि आजुकी क्यों लेत जम्हाई । रैनि आजसो एनहीं राति काम जगाई ॥ वह रति तुम रति नाथ हौ हम कैसे भावैं । सूर श्याम ते बहुगुणी जे तुमहिं रिझावैं ॥ १२ ॥

राग सोरठ ॥ सकुचत श्याम कहत मृदुबानी । किनि देख्यो किनि कही बात यह मो हुजूर कहै आनी ॥ याते वचन बोलि नहिं आवत रिस पावत हौं भारी । जोरि कहति बातैं तुम आगे खोटी ब्रजकी नारी ॥ तुमहूंते ऐसीको प्यारी सौंहकरौं जोमानौ । सुनहु सूर जो बूझति मोको मैं काहु न पहिचानौं ॥ १३ ॥

राग बिलावल ॥ को पतिआइ तुम्हारी सौंहनि । वा तियको अनुराग देखियत प्रगट गावरी भौंहनि ॥ तुलसीको कहि नीम प्रगट कियो मोहीते करि बोहनि । प्रात आइ मन पोषन लागे आय घालन कोहनि ॥ मुँहहींकी हमसों मिलवत जिय वरुत जहाँ मनमोहनि । सूर सुवस घर छाँडि हमारो क्यों रति मानत खोहनि ॥ १४ ॥

राग भैरव ॥ बिन बोले पिय रहिए जू नाहीं कही कहैं कहा ताको अब ऐसे जिनि दहिए जू ॥ मौनरहौ तौ कछू गँवावहु इन बातन कछु लहिए जू । सौंह कहा करिहौ सुनि पावहिं सन्मुख ह्वै यौं कहिए जू ॥ एतेपर कहा वादनलागे कैसे रिस मन सहिए जू । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि रसिकहि सबगुण चहिए जू ॥ १५ ॥

राग बिलावल ॥ आइगईं ब्रजनारी तहाँ । सौंह करत पिय प्यारी आगे आनँद विरह महाँ ॥ प्यारी हँसि देखी सखियनको अंतर रिस है भारी । नैन सैन दै अंग देखावति पिय शोभा अधिकारी ॥ श्याम रहे मुख मूँदि सकुचिकै युवति परस्पर हेरैं । सूरदास प्रभु अँग अनूप छबि कहँपायो केहि केरैं ॥ १६ ॥

तब नागरी कहति सखियनसों एतेपर क्यों सौंह करैं । दरशन प्रात देत हैं हमको निशि औरनके चित्त हरैं ॥ तुमहीं देखिलेहु अंगबानक एतेपर क्यों सही परैं । कृपा करैं अब तहीं सिधारैंमो आगेते अब जु टरैं ॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीपर जाइ ढरैं । सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहौ सखी अब ह्यां न फिरैं ॥ १७ ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम गए त्रियमान कियो । देखो मोहिं दोष तुम देती उन ऐसे मन चोरि लियो ॥ जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठि हौं धाम । जान देहु अब ह्यां जनि आवैं ऐसेनको कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकास । सुनहु सूर पुनि तौकहि आवैं तिनगि गए तापास ॥ १८ ॥

अथ राधाजूको मान ॥ राग बिलावल ॥ यह कहिकै त्रिय धाम गई । रिसनि भरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई ॥ सखी चलीं गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ । बोलत नहीं मान करि हरिसों हरि अंतर रहे आइ ॥ यहि अंतर युवती सब आई जहां श्याम घर द्वारे । प्रिया मान करि बैठिरही है रिस करि क्रोध तुम्हारे ॥ तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई । सुनत सूर एबात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई ॥ १९ ॥

राग बिहागरो ॥ बहुरि नागरी मान कियो । लोचन भरि भरि ढारि दिये दोउ अति तनु बिरह हियो ॥ देखतही देखत भए व्याकुल त्रिय कारण अकुलाने । वै गुण करत होत अब काचे कहियत परम सयाने ॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान । सूर श्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान ॥ २० ॥

राग केदारो ॥ दूती दई श्याम पठाइ । और मुख कछु बात न आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवैं जाहिं । सौति साल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं ॥ भीति बिन कह चित्र रेखै रही दूती हेरि । सूर प्रभु आतुर पठाई करत मन अवसेरि ॥ २१ ॥

राग कान्हरो ॥ दूती मन अवसेर करै । श्याम मनावन मोहिं पठाई यह कतहूं चितवै न टरै ॥ तब कहि उठी मान अति कीन्हों बहुत करी हरि कहौ करौ । ऐसे बिन वै नहीं जानि हैं अब कबहूँ जनि उनहिं ठरौ ॥ मैं आवति यमुनातटते ब्रज सखी एक यह बात कही । सुनहु सूर मैं रहि न सकी गृह कही श्यामकी प्रकृति सही ॥ २२ ॥

राग बिहागरो ॥ अब द्वारेते टरत न श्याम । अब परघरकी सौंह करत हैं भूलि करौं नहिं ऐसे काम ॥ अब तू मान तजै जिनि उनसों ईहै कहन आई तेरे धाम । अब समुझि औरौ समुझ्यो वै हम जब कहैं करैं तब ताम ॥ अब मोको यह जानिपरी है काहूके न बसे कहुँ याम । सूरदास दूतीकी वाणी सुनति धरति मनही मन वाम ॥ २३ ॥

राग सूही ॥ जब दूती यह वचन कह्यो । तब जानी हरि द्वारे ठाढे उर उमँग्यो रिस नहीं रह्यो ॥ काहेको हरि द्वार खरे हैं किन राखे कहि जीभ गरै । मौन गहे मैंही कहि आवौं तू काहेको रिसनि जरै ॥ चतुर दूतिका जानि लई जिय अब बोली गयो मान सबै । सूर श्यामपै आतुर आई कहत आनकी आन फबै ॥ २४ ॥

राग केदारो ॥ काहिमनाऊं श्यामलाल बाल जोरैं नहिं डीठि । मुखहूं जो बोलै तौ ममहीकी लहिये ऐसी तिहारी अदीठि ॥ अपनी सी बहुत कही सुनि सुनि उन सबै सही बारूकी बूंद ताको कहा करै बसीठि । सूरदास पिय प्यारी आपुहीं जाइ मनाय लीजै जैसी बयारि बहै तैसी ओडिए जू पीठि ॥ २५ ॥

ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो न मानति । बूझि न परति जानि का बैठी कियो जु इत रिस तुमही लै कोटि अवगुण गानति ॥ भरि भरि अँखियन नीरलेति पैढारति नाहीं अतिरिस कँपति अधर फरकि करि भृकुटी तानति । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि आपुन चालिए तौ भली बानति ॥ २६ ॥

राग पूरवी ॥ हौं कैसे कैल्याऊँ जो मरण पाऊँ श्याम वाकी मान मानो गढवै भयो । तनु कंचनगिरि प्रगट कियो तामें बसन कोटि रच्यो अंचल डचोढी ओट दियो ॥ वचन पौरिआ बोल न खोलै मुखपौरि मूँदिरह्यो ॥ मोहन भौंहैं कमान नैना रिसके बान ताते जाइ न निकट गयो ॥ साम दाम दण्ड भेद सबै मैं करि देख्यो सूरदास प्रभु चतुर कहावत आपुन चालिए जो तुमहूंपै जाय लयो ॥ २७ ॥

राग नट ॥ विहरत मानसरस कुमारि । कैसेहूं निकसत नहीं हो रही करि मनुहारि ॥ मौन पारि अपार रचि अवगाह अंश जु वारि । मन गह्यो वै डरत नाहीं थकित प्रगट

पुकारि ॥ सूर श्याम सरोज लोचन डुलन जनु जलचारि । ग्राह ग्राहक प्राण चाहक करत तहँ डर डारि ॥ चिकुर सइबर निकरि अरुझति सकति नाहिं निरुवारि । नील अंचल पत्र पद्मिनि उरज जलज निहारि ॥ रच्यो रचिरुचि मान मानिनि मन मराल मुरारि। सूर आपुन आनिए गहि बाँह नारि निकारि ॥ २८ ॥

राग बिहागरो ॥ यह सुनि श्याम विरह भरे । कहुँ मुकुट कहुँ कटि पितांबर मुरछि धरणि परे ॥ युवति भरि अंकवारि लीन्हों है कहा गिरिधारि आपुही चलि बाँह गहिए अंक लीजै नारि ॥ अतिहि व्याकुल होत काहे धरौ धीरज श्याम । सूर प्रभु तुम बड़े नागर विवश कीन्हें काम ॥ २९ ॥

राग रामकली ॥ श्यामहिं धीरज दै पुनि आई । वाणी इहै प्रकाशत मुखमें व्याकुल बडे कन्हाई ॥ बारंबार नैन दोउ ढारत परे मदन जंजाल । धरणि रहे मुरझाइ बिलोके कहा कहौं बेहाल ॥ बैठि आइ अनमनी ह्वैके बारबार पछितानि । सूर श्याम मिलिके सुख देहिन जो तुम बडी सयानि ॥ ३० ॥

तुही प्रिया भावती नाहिंन आन । निशि दिन मन मन करत मनोहर रसवश केलि निदान ॥ ध्यान बिलास दरश संभ्रम मिलि मानत मानिनि मान । अनुनय करत विवश बोलतहैं दै परिरंभण दान ॥ प्रथम समागमते नानाविधि चरित तिहारे गान । सूर श्याम कह वर अंतर सुनि सुयश आपने कान ॥ ३१ ॥

राग सारंग ॥ श्यामा तू अति श्यामहि भावै । बैठत उठत चलत गउचारत तेरिय लीला गावै ॥ पीतै पीत वसन भूषण सजि पीतधातु अँग लावै । चंद्रानन सुनि मोर चन्द्रिका माथे मुकुट बनावै ॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परम सुख पावै । बिछुरत तोहि क्वासि राधा कहि कुंज कुंजप्रति धावै ॥ तेरो चित्र लिखै अरु निरखै बासर विरह गँवावै । सूरदास रसरसी रसिकसों अंतर क्योंकरि आवै ॥ ३२ ॥

राग बिहागरो ॥ मनमन पछितायो रहिजैहै । सुनि सुन्दरि यह समौ गएते पुनि न शूल सहि जैहै ॥ मानहु मीन मँजीठ प्रेमरँग तैसेही गहिजैहै । काम हर्ष हेरै हरि अंतर देखतही बहिजैहै ॥ इते बेदकी बात सखी री कत कोउ कहिजैहै । बरत भवन खनि कूप सूर त्यों मदन अगिनि दहिजैहै ॥ ३३ ॥

राग केदारो ॥ तेई नैन सुहावनेहो नेक न भावत न्यारे री । पलक ओट प्राण जाते तेरे री ध्यान चकोर चंदा मेरे नैन चितवनिपर चेरे री ॥ कमल कुरंग जु मधुप उपमा नाहिं आवै चंचल रहत चितेरे री । सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कतहि करत त्रिय झेरे री॥३४॥

राग आसावरी ॥ बनत नहीं राधे मानकिए । नंदलाल आरतके पठई सौंह करतिहौं शीश छए ॥ जाके पद कमलाकर लीने मनवचक्रम चित उन्हैं दिये । ता प्रभुकी पठई हौं आई तू जु गर्वकी मोट लिये ॥ हरिमुख कमल सच्यो रस सजनी अति आनंद पीयूष पिये । सूरदास सकल सुख हरिसँग कृपा विमुख के काल जिये ॥ ३५ ॥

राग सारंग ॥ जबजब सुरति करत । तबतब डबडबाइ दोउ लोचन उमँगि भरत ॥ जैसे मीन कमलदलको चले अधिक अरत । पलक कपाट न होत तबहींते निकसि परत ॥

आंसु परत ढरिढरि उरऊपर मुक्ता मनहुँ झरत। सहज गिरा बोलत न बनत हित हेरि हरत॥ राधा नैन चकोर बिना मुख मानहु चंद्र जरत। सूर श्याम तुम्हरे दरशन बिन नाहिन धीर धरत॥ ३६॥

राग सारंग॥ चितै चलि ठुठुकि रहत। तव पद चिह्न परसि रसवश भए आधे वचन कहत॥ किसलए कुसुम पराग अंबपै फेन अहत। कंटक जनु भू कठिन जानियत कष्ट लहत॥ कमलकोश कोमल विभाग अनुराग बहत। सूरदास सुन्दर अति शीतल मृदु वैन सहत॥ ३७॥

हरि तोहिं बारंबार सम्हारैं। कहिकहि नाम सकल युवतिनके कहूं नहीं रुचि जेहि उर धारैं॥ कबहुँक आँखि मूँदिकरि चाहत चित धरि ठौर तिहारैं। तब प्रसिद्ध लीलाबन विहरत अब नहिं तुमहिं बिसारैं॥ जो जाको जैसो करि जानै सो तैसे हित मानै। उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै सब अंचरज करि जानै॥ क्यों पतियाँ पठवै नहिं उनको बाँचि समुझि सुख पावैं। सूर श्याम हैं कुंजधाममें अनत न मन बिरमावैं॥ ३८

राधे हरि तेरो नाम बिचारैं। तुम्हरेइ गुण ग्रंथित करि माला रसना करसों टारैं॥ लोचन मूँदि ध्यान धरि दृढकरि नेक न पलक उघारैं। अंगअंग प्रति रूप माधुरी उरते नहीं बिसारैं॥ ऐसो नेम तुम्हारो पियके कह जिय निठुर तिहारे। सूर श्याम मन काम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे॥ ३९॥

राग बिलावल॥ चल राधे हरि बोली री। उठि चलि वेगि गहर कत लावति वचन श्यामकी डोली री॥ तनु जोबन ऐसे चलिजैहै जनु फागुनकी होलीरी। भीजि बिनशि जाई क्षणभीतर ज्यों कागजकी चोली री॥ तोपर कृपा भई मोहनकी छांडि सबै तू छोली री। सूरदास स्वामी मिलिबेको ताते तू निर्मोलीरी॥ ४०॥

राग केदारो॥ जाके दरशनको जग तरसत ताहि दरश नेक दैरी। जाकी मुरलीकी ध्वनि सुरमुनि मोहे तातन नेक चितै री॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे चरणन परसतु है री। सूरदास वश तीनि लोक जाके है सो तो वश माई री तू मुख ध्वनि सुनाइ मोहिलै री॥ ४१॥

राग भूपाली॥ तुव को है री कौन पठाई तेरी को मानै। तू जो कहति श्याम कौनसे देखे न सुनेको पहिचानै॥ और कहति कहि नेम लियो ह्यां को वैसी वै जानै। सूरदास प्रभु रसिक बडे तोको पठई अतिस्यानै॥ ४२॥

राग सारंग॥ अति हठ न कीजै री सुनि ग्वारि। हौं जु कहति तू सुन याते शठ सरै न एकौ द्वारि॥ एक समय मोतियनके धोखे हंस चुनतहै ज्वारि। कीजै कहा काम अपनेको जीति मानिए हारि॥ हौं जो कहतिहौं मान सखी री तनको काज सँवारि। कामी कान्ह कुँवरके ऊपर सरबस दीजै वारि॥ यह जोवन बर्षाकी नदी ज्यों बोरति कतहि करारि। सूरदास प्रभु अंत मिलहुगी ए बीते दिन चारि॥ ४३॥

राग रामकली॥ कहा तुम इतनेहिको गर्वानी। जोवन रूप दिवस दशहीको ज्यों अँजुरीको पानी॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जानदे है अब कौन मति ठानी।

तन धन जानि याम युग छाया भूलति कहा अयानी ॥ नवसै नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी। सूर इतर ऊखरके बरषे थोरेहि जल इतरानी ॥ ४४ ॥

राग पूरिया ॥ तू चलि प्यारी री एतो हठ छांडि मानि री ॥ परम विचित्र गुण रूप आगरी अतिहि चतुर त्रिय भारी री ॥ मदनमोहन तन मदन दहतहै तेरी उनकी पीर न न्यारी। सूरदास प्रभु विरह विकलहैं नेक न निरखि निहारी री ॥ ॥ ४५ ॥

राग बिहागरो ॥ वादि बकति काहेको तू कत आई मेरे घर। वे अति चतुर कहा कहिये जिन तोसीमूरख लैन पठाई तनु वेधति वचनन शर ॥ उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीति रीति को ही तू को है गिरिवर धर। सूरदास प्रभु आनि मिलेंगे छैहैं पग अपने कर ॥ ४६ ॥

ज्यों ज्यों मैं निहोरे करौं त्यों त्यों त्यों बोलति है री अनोखी रूसनहारी बहियां गहत सतराति कौनपर मग धरी उँगरी कौनपै होत पीरी कारी ॥ कौन करत मान तोसी और न त्रिय आन हठ दूरि करि धरि मेरेकहे आरी। सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहिं रट लागी मदन दहत तनु भारी ॥ ४७ ॥

राग मलार ॥ तऊ तो गँवारि अहीरि। तोसों कछु नँदनंदन हँसि कह्यो इतनेहीको तू कबकी अन उत्तर बोलति कह्यो नहिंन मानतिही री। श्यामसुंदर हँसि हँसि देत सुनि सुनि करत कानि इकटकहि ग्वारि नि जु रही री। कहा कहौं हरिसों अब तोसीको मुँहलगाइवारि फेरिडारौं तोहिं पियके एक रोमपरही री। सूरदास प्रभुको कहा कहि बरणौं एती कबहूं काहूकी न सही री ॥ ४८ ॥

राग नट ॥ एकतौ लालन लाडनि लडाइ दूजे यौवन बावरी। उनके गरब जिनि भूलिरहै री हमसों करि लीन्हें सुख अनेकदिन दिन चारि होत अधिक चावरी ॥ मेरो कह्यो तू री माई सब त्रियानको इहै सुभाव री ॥ मैं जु कहति सूर श्यामसों हिलिमिलि रहिए उठत बैसको इहै दाँव री ॥ ४९ ॥

राग कान्हरो॥ रहिरी मानिनि मान न कीजे। यह जोबन अँजुरीको जलहै ज्यों गोपाल माँगे त्यों दीजै ॥ छिनुछिनु घटति नहिं रजनी ज्यों ज्यों कला चंद्रकी छीजै ॥ पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो काहे न रूप नैन भरि पीजै ॥ सौंह करत तेरे पाँइनकी ऐसे जियनि दशौ दिन जीजै। सूर सु जीवनि सुफल जगतकी वैरी बांधि विवश करिलीजै ॥ ५० ॥

सुन प्यारी राधिका सुजान। कहिधौं कौन काज सरिहैं री यहि झूठे अभिमान ॥ जिनके चरण रमा नित लोलित सब गुण रूप निधान। तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करतिन कान ॥ परमचतुर सुंदर सुखकारी तोसी त्रियान आन। कीजै कहा कृष्णकी संपति बिना भोग बिमदान ॥ ऐसी व्यथा होत निशि हरिको जिनि हठि करौ विहान। नाहिंन कढत औरके काढे सूर मदनके बान ॥ ५१ ॥

राग रामकली ॥ आज हठि बैठी मान किए। महाक्रोध रसअंश तपत मिलि मनु विष विषम पिये ॥ अधमुख रहति विरह व्याकुल सिख मूरि मंत्र नाहिं मानै। मूक न तजै सुनि जाति ज्यों सुधि आए तनु जानै ॥ एक लीक बसुधापर काढी नभतन गोद पसारी।

जनु बोहित तजिकै पैरनको दधि ज्यों अवनि निहारी ॥ ज्यों अतिदीन सुखी सबही अँग कतहूं शांति न पावैं। त्यों बिन पियहि त्रिया प्रातहिते एकै बात मनावै ॥ कबहुँक धुकति धरनि श्रम जलभरि महा शरदरविसास। इकटक भई चित्र पूतरि ज्यों जीवनकी नहिं आश ॥ तब उपचार कियो मैं करकस लै रस पारचो कान। मुरछा जगी नहीं मुख बोली लै बैठी फिरि मान ॥ हौ तौ थकी करति बहु जतननि जीकी व्यथा न पाई। बूझहु लाल नवल नागर तुम एकैं सैन बताई ॥ शिव आकार दिखायो कछु इक भाव दोष रस नाहीं। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि लै मेली पगछाहीं ॥ ९२ ॥

राग देवगंधार ॥ प्रिया पिय नाहिं मनायो मानै। श्रीमुख वचन मधुर मृदुवाणी मादक कठिन कुलिशते जानै ॥ शोभित सहित सुगंध श्याम कच कलकपोल अरुझानै। मनहु बिंधुतुद ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं बिन दानै। बालभाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंशुकन आनै। जनु खँजरटि युगल जठरातुर लेत सुभष अकुलानै ॥ गोरेगात लसत जो असितपट और प्रगट पहिचानै। नैन निकट तार्टकको शोभा मंडल कबिन बखानै। मानो मन्मथ फंद त्रासते फिरत कुरंग सकानै ॥ नासापुटनि सकोचति लोचति बिकट भ्रुकुटि धनु तानै। जनु शुक निकट निपट सरसाये षटपट सुभग पराने ॥ जनु खद्योत चमक चलि शंकित कुहु निशितिमिर हिराने। यह सुनिकै अकुलाइ चले हरि कृत अपराध क्षमानै ॥ सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसकानै ॥ ९३ ॥

राग धनाश्री ॥ मानि मनायो मोहन री। सकुच समेति चली उठि आतुर वनकी गैल गही ॥ विधिमुख निरखि विमुख करि लोचन पुनि विधुवदन चही ॥ दरशत परसत रूप आज निज भू नख लेखि कही। पुहुप सुरंग सारंग रिपु ओट देखी तब चतुर लही ॥ पानि सुपरसत शीश परस्पर मुसकाने तबही। तृण तोरचो गुनजात जिते काढति रेख मही। सूर श्याम बहुरो मिलि विलसहु जाति अवधि अबही ॥ ९४ ॥

राग सारंग ॥ चलीबन मान मनायो मानि। अंचल ओट पुहुप दिखरायो धरचो शीशपर पानि ॥ शुचितन चितै नैन दोउ मूँदे मुखमहँ अँगुरी आनि। यह तौ चरित गुप्तकी बातैं मुसकाने जिय जानि ॥ रेखा तीनि भूमिपर खाँची तृण तोरचो कर तानि। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्याम सुजानि ॥ ९५ ॥

राग गुंड ॥ सैनदै कह्यो वनधाम चलिए श्याम इहै करि काम अब आनिमिलिहौं। भावही कह्यो मन भाव दृढ राखिवो दै सुख तुमहिं सँग रंगरलिहौं ॥ जानि पिय अतिहि आतुर नारि आतुरी गई वनतीर तनुशुद्धि हेती। सूर प्रभु हरष भए कुंजवन तहाँ गए सजत रतिसेज जे निगम नेति ॥ ९६ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम वनधाम मग वाम जोवैं। कबहुँ रचि सेज अनुमान जियजिय करत लता संकेततर कबहुँ सोवैं ॥ एक छिन इक घरी घरी इक याम सम याम वासर हुते होत भारी। मनहिंमन साध पुरवत अंग भाव करि धन्य भुज धानि हृदय मिले प्यारी ॥ कबहिं आवै सांझ सोच अति जिय माँझ नैन खग इंदु ह्वै रहे दोऊ। सूर प्रभु भामिनी वदन पूरण चंद्र रस परस मनहि अकुलात कोऊ ॥ ९७ ॥

राग नटनारायणी ॥ दूती संग हरिके रही। श्याम अति आधीन ह्वै कै जाहु तासों कही ॥ वेगि आनि मिलाइ परम प्यारी नारि ॥ देखि हरितनु कामव्याकुल चली मनहिं बिचारि ॥ गई तहँ जहँ करति राधा अंग अंग शृंगार। सूरके प्रभु नवल गिरिधर संग जानि विहार ॥ ५८ ॥

राग बिहागरो ॥ राधा सखी देखि हरषानी। आतुर श्याम पठाई याको अंतर्गतकी जानी ॥ वह शोभा निरखत अँग अँगकी रही निहारि निहारि। चकित देखि नागरि सुख वाको तुरत शृंगारनि सारि ॥ ताहि कह्यो सुख दै चलि हरिको मैं आवति हौं पाछे। वैसेही फिरी सूरके प्रभुपै जहां कुंज गृह काछे ॥ ५९ ॥

राग केदारो ॥ दूती देखी आतुर श्याम। कुंजगृहते निकसि धाए काम कीन्हों ताम ॥ बोलि उठी रसाल बाणी धन्य तुव बड़भाग । अबहिं आवति बनी बाला किए मन अनुराग ॥ कहावरणौं अंग शोभा नैन देखौं आज । सूर प्रभु नेक धरौ धीरज करौ पूरण काज ॥ ६० ॥

राग ईमन ॥ बडे भाग्यके मोटे हौ। ऐसी त्रिया और को पावै बने परस्पर जोटे हौ॥ वैसिय नारि सुंदरी छोटी तैसेइ तुम बलि छोटे हौ । पूरबपुण्य सुकृतफलकी वह आपु गुननकरि घोटे हौ ॥ परम सुशील सुलक्षण नारी तुमहिं त्रिभंगी खोटे हौ। सूर श्याम उनके मन तुमहिं तुम बहुनायक कोटे हौ ॥ ६१ ॥

राग काफी ॥ सुनिहो मोहन तेरी प्राणप्रियाको वरणों नंदकुमार। जो तुम आदिअंत मेरो गुण मानहु यह उपकार ॥ चंद्रमुखी भौंहैं कलंकबिच चंदनतिलक लिलार। मनु बेनी भुवंगिके परसत स्रवत सुधाकी धार ॥ नन मीन सरवर आननमें चंचल करत बिहार। मानो कर्णफूल चाराको रवँकत बारंबार ॥ बेसारि बनी सुभग नासापर मुक्ता परम सुढार। मनो तिल फूल अधर बिंबधार दुहुँ बिच बूँद तुषार ॥ सुठि सुठान ठोढी अतिसुंदर सुंदरताको सार। चितवत चुअत सुधारस मानी रहिगई बूँद मझार ॥ कंठशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिनको हार। दहिनावर्त्त देत मनो ध्रुवको मिलि नक्षत्र की मार॥ कुचयुग कुंभ शुंडि रोमावलि नाभि सुहृद आकार। जनु जल सोखिलयो से सविता जोबन गज मतवार ॥ रत्नजटित गजरा बाजूबँद शोभा भुजन अपार। फुंदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटपकी डार। छीन लंक कटि किंकिणी ध्वनि बाजत अति झनकार ॥ मौर बाँधि बैठो जनु दूलह मन्मथ आसन तार। युगल जंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार। राजहंस गति चलति किशोरी अति नितंबके भार ॥ छिटकि रह्यो लहँगा रंग ताँसँग तन सुखवत सुकुमार। सूर सुअंग सगंध समूहनि भँवर करत गुंजार ॥ ६२ ॥

राग नट ॥ आज राधिका रूप अन्हायो। देखत बनै कहत नाहिं आवै मुखछबि उपमा अंत न पायो॥अलबेली अलक तिलक केसरिको ता बिच सेंदुर बिंदु बनायो। मानो पून्यो चन्द्र खेत चढि लरि सुरभानसों घायल आयो ॥ काननकी बारी अतिराजत मनहुँ मदन

रथचक्र चढायो। मानहु नाग जीति मणि माथे भरिसोहागको छत्र तनायो ॥ बंकित भौंह चपल अतिलोचन बेसरि रस मुकुताइलछायो। मानो मृगनि अमीभाजन भरि पिवत न बन्यो दुहूँ ढरकायो ॥ अधरदशन रसना कोकिल ज्यों तिमिरजीति बिचचिबुक लगायो। मनहुँ देखि रवि कमलप्रकाशत तापर भृंगीसावक स्वायो ॥ कंचुकि श्याम सुगंध सँवारी चौकीपर नग बन्योबनायो। मानो दीपक उदित भवनमैं तिमिर सकुचि शरणागत आयो ॥ भूषण भुजा ललित लटकन वर मनहु मिले अलिपुंज सुहायो। एतेहू पर रूठि सूर प्रभु लै दूती दर्पण देखरायो ॥ ६३ ॥

राग बिलावल ॥ देखत नवलकिशोरी सजनी उपजत अति आनंद। नवसत सजे माधुरी अँगअँग वश कीन्हें नंदनंद ॥ कंबुकंठ ताटंकगंडपर मंडितबदनसरोज। मोहनके मनबांधिवेको मनो पूरी पासि मनोज ॥ नासापरम अनूपम शोभित लज्जित कीर बिहंग। मनो विधु अपने कर बनायके तिलप्रसूनके अंग ॥ भुजविलास करकंकण शोभित मिलि-राजत अवतंस। तीन रेखकंचनके मानो बहु बनाइ पियअंश ॥ कुंकुम कुचन कंचुकी अंतर मंगलकलश अनंग। मधुपूरण राखे पियकारण मधुर मधुपके अंग ॥ कीरति विशद विमल श्यामाकी श्रीगोपाल अनुराग। गावत सुनत सुखद कर मानो सूर दुरे दुखभाग ॥ ६४ ॥

राग जैतश्री ॥ नवनागरीहो सकलगुण आगरीहो। हरिभुजग्रीवाहो शोभाकी सींवाहो श्याम छबीली भावती गौरश्यामछबिपावती ॥ सैसवतामें हेसखी जोवन कियो प्रवेश। कहा कहौं छवि रूपकी नखशिख अंग सुदेश ॥ श्रीपति केलि सरोवरी सैसव जल भरि पूरि। परगट भई कुचस्थली सोख्यो जोवन सूरि ॥ छुटेकेश मज्जनसमय देखि विरुधअहि भोर। भोर कहूं निशिमें रमे उतरि चले अहि ओर ॥ शीश सुचिक्कन केशहो बिच सीमंत सँवारि। मानहुं किरनि पतंगते भयो दुधां तमहारि ॥ केसरि आड लिलाटहो बिच संदु-रको बिंदु। चक्र तजे ता नैन मृग जनु बैठो रथ इंदु ॥ नैनन ऊपर कहा कहौं ज्यों राजत भ्रुवभंग। जुआ बनावत चन्द्रमा चपल होत सारंग ॥ चंपकलीसी नासिका राजत अमल अदोस। तापर मुक्ता यों बन्यो मनो भोर कनओस ॥ मुक्ता आपु बिकाइहो उरमें छिद्रकराइ। अधर अमृतहित तपकरै अधमुख ऊरधपाइ ॥ अधरनकी छबि कहतहौं सदा श्याम अनुकूल। बिंबपँवारे लाजहीं हरषत वरषत फूल ॥ पांति कांति दशनावली रहे तमोल रँग भीज। वंदन सो शशिमें बए मनो सौदामिनिके बीज ॥ गुंजाकीसी छबि लई मुक्ता अति बड़भाग। नैननकी लई श्यामता अधरनको अनुराग ॥ बेसरि मुक्तामनिन धनि धनि नासा ब्रज नारि। गुरु भृगुसुत बिच भौमहो शशिसमीप ग्रह चारि ॥ खुंटिला सुभग जराइके मुकुता मणि छबि देत। प्रगट भयो घनमध्यते शशि मनो नखत समेत ॥ सुंदर सुवर कपोलहो रहे तमोर भरिपूर। कंचन संपुट द्वै पला मानहु भरे सिंदूर ॥ चिबुक डिठोना जब दियो मो मन धोखे जात। निकस्यो अलि

शिशु कुंजते मनहुँ जानि परभात । जेहि मारग वनवाटिका निकसति आनि सुभाइ । मधुप कमल बन छांडिकै चलत संग लपटाइ ॥ जहां जहां तू पग धरै तहां तहां मन साथ । अति अधीन पिय ह्वै रहै तन मन दै तेरे हाथ ॥ देखि बदनके रूपको मोहन रह्यो लुभाइ । इकटक रह्यो चकोर ज्यों दृष्टि न इत उत जाइ ॥ तोहिं श्यामसों है सखी बढी निरंतर प्रीति । तू तन मन धन श्यामके तैं हरि पाए जीति ॥ मदन मोहन तू वश करै अति प्रवीन नँदलाल । सूरदास गावै सदा कीरति विशद विशाल ॥ ६५ ॥

राग नट ॥ राधा सँग ललिता लिए । श्याम आतुर जानि बाला गवन आतुर किए ॥ किंकिणी ध्वनि श्रवन सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए । नारि आवत जानि गिरिधर नहीं धीरज जिए ॥ चले आतुर धाइ आगे सँग सहचरि लिए । सूर प्रभु रतिरंग राचे देखि रीझीं त्रिए ॥ ६६ ॥

पिय छबि निरखत नागरी अँग दशा भुलानी । अंतरगत आनंद भरी ललिता हरषानी ॥ सहचरिसों कहि सुमन लै हरि भेंट भराए । अति अधीन पिय ह्वै रहे वश परे डराए ॥ मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारे । फूले फूले मग धरे कलिआं चुनिडारे । ऐसे वश पिय बामके सुख सूरज जानै । जो जेहि भावनि हरि भजै तेहितै सोई मानै ॥ ६७ ॥

राग पूरवी ॥ पीछे ललिता आगे श्याम प्यारी ता आगे पिय मारग फूल बिछावत जात । कठिन कठिन कली बीनि करत न्यारी प्यारीके चरण कोमल जानि सकुच अति गडि बेद्धि डरात ॥ दीरघ लता अपने कर निरुवारत ऊंचे लै डारत द्रुम बेली पात । सूरदास प्रभुकी ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात ॥ ६८ ॥

राम कान्हरो ॥ बडे बडे बार एँडिन परसत श्यामा पीछे अपने अंचलमें लिए । वेणी गूँथन मिस फूल सुगंध फेट भरे डोलत बोलत नाहिंन सकुच हिए ॥ अरु कुसुमी सारीमें अलक झलक गोरे तनु मनो अहि कुल चंदन वंदन सों पूजा किए । सूरदास प्रभु त्रिय मिलि नैन प्राण सुख भयो चितए करुखि अनि अनकनि दिए ॥ ६९ ॥

राग रामकली ॥ बरन बरन बन फूलि रह्यो । हर्षित ह्वै वृषभानुनंदिनी सँग सब सखिन कह्यो ॥ कुसुमकली देखत रुचि उपजत यह कहि तिनहिं सुनावति । आपुन चुनति गोद लै धारति युवतिन कहति चुनावति ॥ हँसत परस्पर दै दै तारी श्याम लिए करबाहीं । सूरदास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाहीं ॥ ७० ॥

डोलत बाँकी कुंजगली । ब्रज वनिता मृगशावक नैनी बीनति कुसुम कली ॥ कमल बदनपर बिथुरि रहीं लट कुंचित मनहुँ अली । अधर बिंब नासिका मनोहर दामिनि दशन छली ॥ नाभि परसलौं रस रोमावलि कुच युग बीच चली । मनहुँ विवरते उरग रिंग्यो तकि गिरिके संधि थली । पृथुनितंब कटि छीन हंसगति जघन सघन कदली । चरण महावर नूपुर मणिमय बाजत भाँति भली ॥ ओट भए अवलोकि परस्पर बोलत अली अली । सूर सुमोहन लाल रसिक सँग बन घन मांझ रली ॥ ७१ ॥

राग भूरवा ॥ सखियन सँग राधे कुँवरि बीनति कुसुमकलियाँ । एक वयक्रम एकहि बानक रूप गुणकी सींव मन भावत सुंदर श्याम लालके कर सोहति रँगीली डलियाँ ॥ एक अनूपम माल बनावति एक परस्पर बेनी गूँथति आजति कुंज महलियाँ । सूरदास प्रभु सँग मिलि कौतुक देखत हरषि प्यारी हरखि अंकम भरियाँ ॥ ७२ ॥

राग कल्याण ॥ लै गए धाम बन श्याम प्यारी । रहे पटलाइ दोउ भुजानि लपटाइकै कह्यो पिय वचन हौ निठुर नारी । बिहँसि वृषभानुतनया कहति हम निठुर तुम सुहृद बात वह जिनि चलावो । निठुर अरु सुहृद सो मनहिंमन जानिहै कहा वह कथाकी सुरति धावो ॥ परस्पर हँसे दोउ रसे रति रंगमें करत मन काम फल पुरुष नारी । सूर प्रभु कोकगुणमें निपुणहैं बडे काम बल तोरि रस रह्यो भारी ॥ ७३ ॥

राग सूही बिलावल ॥ गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही । सबल भुजा धरि अंकम भरिभरि चापि कठिन कुच ऊपर लीन्हीं ॥ कोक अनागत क्रीड़ा पर रुचि दूरि करत तनुसारी । कमल करनि कुच गहत लहत पुट देखो वह छबि न्यारी ॥ बार बार लल-चात साध करि सकुचति पुनि पुनि बाला । सूर श्याम यह काम करो जिनि धनि धनि मदनगोपाला ॥ ७४ ॥

राग रामकली ॥ सुता दधि पतिसों क्रोध भरी । अम्मर लेत भई खिझि बालहि सारँग-सँग लरी ॥ तब श्रीपति अति बुद्धि बिचारी मणि लै हाथ धरी ॥ वै अति चतुर नागरी लै मुख मांझ करी ॥ चाखत चरण शेष चलि आयो उदयाचलहि डरी । सूरदास स्वामी लीला उर अंकम लगि उबरी ॥ ७५ ॥

सकुचि तनु उदधि सुता मुसकानी। रवि सारथी सहोदर तापति अंबर लेत लजानी ॥ सारंग पाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुखमाँह समानी । चरण चाटि महि प्रगट करी पिय शेष शीश सहिदानी। सूरदास तब कहै करै अब लाज बहुरि तब यह मति ठानी । भुज अंकम भरि चापि कठिन कुच श्याम कंठ लपटानी ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ वह छबि अंत निहारत श्याम कबहुंक चुँबन देत उरज धरि अति सकुचत तब वाम ॥ सन्मुख नैन न जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे । हाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ढँग नैसे ॥ बहुरि काम रस भरे परस्पर रति बिपरीत बढाइ। सूर श्याम रतिपति विह्वल करि नागरि रहि मुरझाइ ॥ ७७ ॥

पिय प्यारी तनु श्रमित भए । सकुचि उठी नागरि पट लीन्हों श्याम लजाइ गए ॥ सावधान रति अंग भए पिय प्यारी तन नहिं हेरत। नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटी बंकन फेरत ॥ ऐसे गुण तुम किनहिं सिखाए तरुणी कटि कसि दीन्हीं । सूर कहति पियसों त्रिय बातैं आज तुमहिं मैं चीन्ही ॥ ७८ ॥

राग धनाश्री ॥ हर्षि श्याम त्रियबांह गही । अपने कर सारी अँग साजत यह इक साध कही ॥ सकुचत नारि वदन मुसकानी उतको चितै रही । कोककला करि पूरण दोऊ त्रिभुवन और नहीं ॥ कुंज भुवन सँग मिलि दोउ बैठे शोभा एक चही । सूर श्याम श्यामाशिर बेनी अपने करन गुही ॥ ७९ ॥

मोहन मोहनी अंग शृंगारत। बेनी ललित करि गूथन निरखत सुंदर मांग सँवारत। शीशफूल धरि पाटी पोंछत फूंदनि झँवा निहारत। बंदन बिंद जराइकी बेंदी तापर बनै सुधारत॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ आँजत नासा बेसरि साजत। बीरी मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत॥ नखशिख सजति शृंगार भावसों जावक चरणन सोहत। सूर श्याम प्रियअंग सँवारत निरखि आप मन मोहत॥ ८०॥

राग ललित॥ ऐसेहि सुख सब रैनि बिहानी। भोर भए ब्रज धाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी॥ प्यारी गई वृषभानुपुरा तन श्याम जात नँदधाम। सुखमा महल द्वारही ठाढी उन देखी वह बाम॥ प्रात चले बनते ब्रज आए मन मन करत विचार। सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गए नंदकुमार॥ ८१॥

अथ बहुरोखंडिता सुखमा घर आए। राग देवगंधार॥ कितते आएहो नँदलाल। ले भवनमें सब भेद बूझो सुनिहौ वचन रसाल॥ ऐसी कौन बाल जा धोखे तुम आइ द्वार ह्वै झांके। मिटत नहीं चितवनि हित चितकी उहै टेव नितनितकी मैं पहिचाने नैना बाँके॥ कबहुँ जम्हात कबहुँ अंग मोरत अट पटात मुखबात न आवै रैनि कहूं धौं थाके। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिक रसिकई जानी नाम लेहुरहे जाके॥ ८२॥

राग ललित॥ बनतनते आए अति भोर। राति रहे कहुँ गाइन घेरत आएहौ ज्यों चोर॥ अंग २ उलटे आभूषण बनहूंमें तुम पावत। बड भागी तुमते नाहिं कोई कृपा करत जहँ आवत॥ औचक आइ गए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हों। सूर श्याम निशि हौ कहुँ जागे पावति अँग अँग चीन्हों॥ ८३॥

राग बिलावल॥ लाल उनींदे नैना भए राजतहैं रतनारे नैना मानहुँ नलिन नए॥ पीक कपोल ललाट महाउर बंदन वलित खए। जनु तनुजामें सद्य अरुनदल कामके बीज बए॥ विन गुन हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ढए। अंजन अधर सुमंत्र लिख्यो रति दीक्षा लेन गए॥ सूर श्याम विथुरे कच मुखपर नख नाराच हए। ता ऊपर आनंद इंदु जनु मानहुँ समर जए॥ ८४॥

राग बिलावल॥ रैनि जागे अतिरसपागे अनुरागे नवप्रियसंग॥ मो सन्मुख कत आएहो दहन पिय रसमसे नैन अटपटे बैननि तहाँई आहु जाके रंग॥ विन गुन वनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलकभाल कीन्हें रसवश अंग। सूरदास प्रभु रजनी बिहाइ आप मेरे जीति अनंग॥ ८५॥

राग बिलावल॥ भोरभए मुख देखि लजाने। रतिके केलि बेलि सुख सींचति शोभित अरुणनैन अलसाने॥ काजररेख बनी अधरनपर नैन कपोलपीक लपटाने। मनहुँ कंज-ऊपर बैठे अलि उड़ि न सकत मकरंद लोभाने॥ है हियहार अलंकृत बिनुगुन आइ सुरतिरण जीति सयाने। सूरदास प्रभु पांइधारिये जानतिहौं परहाथ बिकाने॥ ८६॥

राग सारंग॥ अरुणोदयबेला अरुणनैन॥ निशिजागे अलसात श्यामधौं मोहन बोलत मधुरे बैन॥ आनन जल प्रसेव गतचलि यों आए मधुकरमधुहि लैन। बारबार रजनीमुख सींचति उमँगिउमँगि रसप्रीति दैन॥ क्रीडत सघनकुंज वृंदाबनबंशीवट यमुनाके ठैन। सूरदासप्रभु सबबिधिनागर पीवनहौ रस परमचैन॥ ८७॥

राग बिहागरो ॥ आजु निशि कहाँ हुते प्यारे । तुमरी सों कछु कहिन जाति छवि अरुण नैन रतनारे ॥ मेचक अधर निमेष पीक रुचि सो चिह्न देखि तुम्हारे । हृदय हार बिनही गुण लंकृत मृगमद मिल्यो लिलारे ॥ दशन बसन पर छाप हृदय छबि दई वृषभानु सुतारे । अरु देखो मुसुकाइ इतेपर सरबसु हरत हमारे ॥ सूर श्याम चतुरई प्रगटभई आगेते होहु न न्यारे ॥ ८८ ॥

कहौ श्याम कहाँरैनि गँवाई ॥ अब ए चिह्न प्रगट देखिअत हैं मोसों कौन करत चतुराई ॥ लटपटी पाग अलक जो बिथुरी बात कहत आवत अलसाई ॥ तुमसों चतुर सुजान नागरी जाके रस तुम रहे लोभाई ॥ सूरदास प्रभु तहँहि सिधारो नूतन प्रीति जहां उपजाई ॥ ८९ ॥

अथ सुखमाके घर सखी एक आई ॥ राग विभास ॥ सुनत सखी तहँ दौरि गई । सुने श्याम सुखमाके आए धाई तरुणि नई ॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखत अँग कोउ निरावत रँग और । रैनि कहूं फँग पगे कन्हाई कहति सबै करि रौर ॥ तब कहिउठी नारि सुखमा यह भाग्य हमारे आए । सूर श्याम धनि वाम तुम्हारी जिन निशि बश करि पाए ॥ ९० ॥

राग सारंग ॥ क्यों अब दुरतहैं प्रगट भए । कहतहै नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नए ॥ जावक भाल नागरस लोचन मसिरेखा अधरनि जो ठए । बलया पीठि वचन अलि सोहै बिन गुण कंठ हार बनए ॥ भुज ताटंक ग्रीव सोहै चंदन चिह्न कपोल दशन ग्रसए । आलिंगन चंदन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उरहि उए ॥ चरण सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर जए । सत्रवत सकल अंग शोणित है श्यामा नखसायक जो दए ॥ राजत बसन पीत उर राते अति आतुर होइ उलटि लए । सूर सखी कैसे मनमानै सुंदर श्याम कुटिलनगए ॥ ९१ ॥

राग बिलावल ॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । शोभित भूषण अंगअंग अलस भरे रैनि उनींदे जागे ॥ लटपटे शिर पेच पाग छूटे बंदन वागे । सूर श्याम रसिकराइ रसवश कीन्हे सुभाइ जागे जहां सोइ त्रिया बडभागे ॥ ९२ ॥

राग विभास ॥ हो माई आज अनत जागे री मोहन भोरहि मेरे कीन्हों है आवन । शोभित भूषण अंगअंग आलसभरे लैलै लागे अनमिली पिलावन ॥ अब कैसे पतिआति हौ प्रीतम सांचे हो सौंहनि बोल निबाहन बातैं बनावन । सूर श्याम रसिकराइ जावकचिह्न लगाइ अब आये मोहन असल सलावन ॥ ९३ ॥

राग सुघराई ॥ आज बन्यौ बनरंग पियारो । ब्रजबनिता मिलि क्यों न निहारो ॥ लटपटी पाग महाउर लागी । कुँवरि मनावति अति बडभागी ॥ पीक कपोल अधर मसिलागे । आलसवलित सबै निशि जागे ॥ कहुँ चंदन कहुँ बंदनकी छवि । रैनि रंग अँगअँग रह्यो फबि ॥ सूर श्यामके यह छवि देखो । जीवनजन्म सफल करिलेखो ॥९४॥

आज बने नव रंग छबीले । डगमगात पग अँग अँग ढीले ॥ जावक पाग रँगी धौं कैसे । जैसे करी कहौ पिय तैसे ॥ बोलत वचन बहुत अलसाने । पीक कपोलनसों लपटाने ॥ कुमकुम हृदय भुजन छवि वंदन । सूर श्याम नारिन मन फंदन ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ आज बने ब्रजते बन आवत । यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखि तऊ मोहिं भावत ॥ नखरेखा मुक्तावलिके तट अंग अनूप लसी । मनो सुरसरी ईश शीशते लै बिधुकला धसी ॥ केलि करत काहू युवती कर कुमकुम भरि उर दीन्हों । मनो भारती पंचधार ह्वै नभ ते आगम कीन्हों ॥ बीच बीच कमनीय अंगपर श्यामल देख रही । सूर-सुता मनो कनक भूमिपर धार प्रवाह बही ॥ निरखत अंग सूरके प्रभुको प्रगटत भई त्रिवे-नी । मन वच कर्म दुरित नाशनको मानहु स्वर्ग निसेनी ॥ ९६ ॥

राग रामकली ॥ सखी शोभा अनूपम अति राजै । नैन कोनकी अंजन रेखा पटतर कहूं न छाजै ॥ खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै । दुग्ध सिंधकी गरल सुधा ज्यों कोटिक भ्रम उपजावै ॥ की सुरसरिता सूरतनय तट की पय पिवति भुअंगिनि । की अति मान मानि सागरते उलटी यमुन तरंगिनि ॥ समरागीको सुयशकुयश की प्रगट एकही काल । किधौं रुचिर राजीवकोशते निकसि चली अलिमाल ॥ सूरदास दासिनि हितकर की हरि हलधरकी जोरी । राधावर निशि रसिकशिरोमणि कविकुल परी टगोरी ॥ ९७ ॥

राग अडानो ॥ लाल आये हौ उनींदे आपुन पौढिये पलका मेरे पलोटिहौं पाइ । मेरी सकुच जियमें कत आनत हौं तो आज्ञाकारिणि हौं तुम जिनि जानौ मोसों औगनिकेसे सुभाइ ॥ यह अचरज आवत इनि बातन मान करत नहिं मानत मोसों आए मान मनाइ । सूर श्याम ता वामहि वश करि लीन्ही कंठ लगाइ ॥ ९८ ॥

आजु अति रैनि उनींदे लाल । तुम पौढो मैं चरण पलोटौं जिय जनि जानौ ख्याल ॥ सुमन सुगंध सेज हैंदासी देखति अंगविहाल । मेरे कहे न्हाहु कछु भोजन करौ न मदन-गोपाल ॥ निशि श्रम भयो पीर मोहि आवत सुनत परस्पर बाल । सूर श्याम सुनि वचन कपट त्रिय भरिलीन्ही अंकमाल ॥ ९९ ॥

राग बिलावल ॥ श्यामहिं सुख दै राधिका निजधाम सिधारी । चितते कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजविहारी ॥ रैनि विपिन रतिरस रह्यो सो मनहिं विचारै । पियसँगके अँग चिह्न जे दर्पणहि निहारै ॥ यहि अंतर चंद्रावली राधागृह आई । अंग सिथिल छबि देखिकै जहँतहँ भरमाई ॥ कह्यो चहति कहत न बनै मनमन अनुमानै । सूर श्यामसँग निशि बसी निश्चै यह जानै ॥ २१०० ॥

राग आसावरी ॥ चंद्रावलि सखियन सँग लीन्हें राधाके गृह आई हो । आजु अंग शोभाकछु औरै हीर सँग रैनि महाई हो ॥ अबतौ नहीं दुराव रह्यो कछु कहो सांच हम आगे हो । अधर दशनछत उरजनि नख छत पीक पलक दोउ पागे हो ॥ हम जानो तुम कहौ प्रगट करि श्यामसंग सुख माने हो । सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि यश गाने हो ॥ १ ॥

राग बिलावल ॥ कहति सखिनसों राधिका तुमकहति कहा गी । मेरीसौं की हँसतिहौ सुनि चकित महारी ॥ पीक कपोलन यौं लग्यो मुख पोछनलागी । कहां श्याम कहां मैं रही कबधौं निशि जागी ॥ उरज करज निजकरजको गर हार सँवारत । सहज कछुक निशिमें

जगी वचनन शर मारत ॥ कहति औरकी औरई मैं तुमहिं दुरैहौं । सूर श्याम सँग जो मिलौं तुमसों नहिं कैहौं ॥ २ ॥

राग बिलावल ॥ आजु बनी नवरंग किशोरी । रसिक कुँवर मोहन बिन जोरी ॥ बिथुरी अलक शिथिल कटि डोरी ॥ कनकलता मनो पवन झकोरी ॥ अधर दशनछत कछु छवि थोरी । दर्पण लै देख्यो मुख गोरी ॥ सुख लूटत अतिही भई भोरी । सूर सखी डारत तृण तोरी ॥ ३ ॥

राग टोडी ॥ आजु बनी बृषभानुकुमारी । गिरिधर वर राधा तू नारी ॥ हमसों करत दुराव बृथा री । इन बातन तू लहति कहा री ॥ आलस अंग मरगजी सारी । ऐसी छवि कहि कालि कहां री ॥ सूरदास छवि पर बलिहारी । धन्य धन्य तुम दोउ बरनारी ॥ ४ ॥

राग सारंग ॥ बानक बनी वृषभानुकिशोरी । नखशिखसुंदर चिह्न सुरसके अरु मरगजी पटोरी ॥ उर भुज नील कंचुकी फाटी प्रगटे हैं कुचकोरी । नवघनमध्य देखिअत मानहु नवरविरथ निसुथोरी । आलस नैन शिथिल कज्जल बल मनिताटंकन मोरी । मानहु खंजन कंजपर लरतचूँचपढतोरी ॥ बिथुरी लट लटकी भ्रुकुटीपर बिकट माँग नग रोरी । मानहुँ कर कोदंड काम अलि सैन कमल हित जोरी ॥ अति अनुराग पियत पियूष हरि अधर सिंधु हद थोरी । सूर सखी निशि संग श्यामके प्रगट प्रात भई चोरी ॥ ५ ॥

राग सानुत ॥ राधे तू अति रंगभरी । मेरे जान मिली मनमोहन अचरा पीक परी ॥ हौं जानति हौं फौज मदनकी लुटिलई सगरी । छूटी लट टूटी नकवेसरि मोतिनकी दुलरी॥ अरुण नैन मुख शरद निशाकर कुसुम गलित कबरी । सूरदास प्रभु गिरिधरके सँग सुरत समुद्र तरी ॥ ६ ॥

राग नट ॥ मैं जानीहैरी तेरे जियकी बात सोई अरु गातचिह्न कहेदेत माई । आलस तनु मोरे भुज जोरे जम्हाइ री अटपटात माई री लागत मोहिं सुहाई वाही पियके मन भाई ॥ बैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले शृंगार हार बार बिथरिरहे री गति कँपति देति क्यों न जनाई । सूरदास प्रभुकी सुन जरी आली तेरे अंगअंग भयो उदोत वह हिलनि मिलनि खिलनिकी तेरे प्रेमप्रीतिजनाई ॥ ७ ॥

राग सूही ॥ नहिं दुरतहरि पियको परस । उपजतहै मनको अति आनँद अधरनरँग नैननको अरस ॥ अंचल उडत अधिकछवि लागत नखरेखा उर बनी बरस । मनो जलधरतर बालकलानिधि कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरश ॥ बिथुरी सुदेश देखियत श्रम जलते मिट्यो तिलक सरस । सूर सखी बूझेहुँ न बोलती सो कहि धौं तोहिं कौन तरस ॥ ८ ॥

राग बिलावल ॥ तोहिं छवि राजैरी ब्रजराजके संग जागेकी । करसों करजोरि मिली जम्हात अरु ऐंडात होति दुरि मुरिरही अलक लसी आगेकी कबहुंकबहुं पलक झपकि झपकि आवत ते मन भावत अँखियां अरुण भई प्रेमपागेकी । सूरदास प्रभुको जु प्रगट उमँगि देखत श्यामसुंदर उर लागेकी ॥ ९ ॥

राग देशाख ॥ अरी मैं जानिपाए चिह्न दुरैं न दुराए । अति अलसात जम्हात पियारी श्यामके काम पुराए ॥ कहा दुराव करति री प्यारी कोटि करै मुख नैन झुराए । सुमनहारसी

मरगजी डारी पिय रँग रैनि जगाए ॥ प्रगट नहीं तू करति डरति कहि सुरति सेज रति काम लराए। सूर श्याम तोहिं रसवश कीनी जात न मन बिसराए ॥ १० ॥

राग सारंग ॥ काहेको दुरावति नैन नागरी । जानतिहौं नँदलाल रसिक पिय मिलि सब रैनिजागरी ॥ सुरतसमैके मुखतमोर मिलि लोचन परस लाग री । मनहुँ शरदविधु भए पद्मयुग युग मुकुलित अनुरागरी ॥ उरज करज मानो शिवशिरपर शशिसारंग सुभाग री । अरुण कपोल अंक अलकै मिलि उरग कामिनी आगरी ॥ हरि पुनि चतुर चतुर अति कामी कै तु रूपकी आगरी । सूरदास प्रभु बश करिलीन्हे धनि त्रिय तेरो सुहाग री ॥११॥

राग टोडी ॥ लालसों रतिमानी जानी कहे देत नैनारीरंग भोए । चंचल कतहि दुरावति रूपराशि अति मानहु मीन महाउर धोए ॥ पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिनछबि जोए । सूरदास प्रभु छबिपर रीझे जानतिहौं निशि नेकन सोए ॥ १२ ॥

राग आसावरी ॥ देख री नखरेख बनी उर । अंचल उडत अधिक छबि उपजति मनहु उदित शशि दुति दुतियावर ॥ शोभा कहा कहत बनि आवहि निरखि निरखि नैननिसन पावति । लागति पाइ दशौ दिशि मेलति लिए रजनिकर अलिन वदावति ॥ सुनि श्रवणन उनमान करतिहौं निगम नेति यह लखनि लखी री । मानो विधु जु विधुंतु ग्रहण डर आयो तेरे शरण सखीरी ॥ मोतिन माल मुकति मनवांछित हरि हर हरिहि जु आज जपत जप । मनहु दक्ष ऋषिशापनिवारण उभै ईभ जिय जानि करत तप ॥ छाँडि सकुच साँचो कहि मोसों हौं जानति मन परम पराए । सूरदास प्रभु मिलन प्रगट भयो पियको परसु कैसे दुरत दुराए ॥ १३ ॥

राग बिलावल ॥ सुरतसमैके चिह्नराधिका राजतरंगभरे । जहँतहँ रतिरणकोप कियो प्रीतम कर दशन धरे ॥ आउमिटी छूटी अलक आलसवश लोचन लखि ढुकत खरे। मानहु धनुष धरे कर साज्यो जनु तूणके बाण झरे । सिंधुसुता तनु रोमराजि मिलि राजत वरण खरे । मानहुँ विधु मनकामना तीरथ तप करि तीर परे ॥ दशन अंक सहि पीक प्रगट मुख सन्मुखहू न डरे । सूर श्याम शोभासुखसागर सब अँग भरनिभरे ॥ १४ ॥

राग बिलावल ॥ भामिनि शोभा अधिक भईरी । सुपक बिंब शुकखंडित मंडित अधरसुधा मधु लाल लई री ॥ राजित रुचिर कपोल महावर रद मुद्रावलि नाह दई री । मनहुँ पीकदल सींचि स्वेदजल आलवाल रतिबेलि बई री । कंचुकिबँद विगलित सुललित छबि उच्च कुचनि नखरेख नई री । मनहु सिंदूर पूर द्युति दरशित कंचनकुंभ दरार लई री ॥ आलस भ्रुकुटि अलक छूटी मनु छूटि पनच सत जूझ जई री । नैन सु बने कटाक्ष लगे शर शिथिल भई मति मैन ढई री ॥ ढीली नीवी गोरी अति भोरी पियके सँग रँग राग रई री । सूरज श्रीगोपालविलासिनि चंद्रवदनि आनंद मई री ॥ १५ ॥

द्वै कर जोरि लेत जंभु आई । शोभा कहति बनति नहिं मोपै आजु सखी पिय संगते आई ॥ सोइ आभा पुनि फेरि फबत है विधि आपुन रुचि रचित बनाई । मानहुँ कुमुदिनि कनकर मेरे चढि शशि सन्मुख मृदु सहित सिधाई । शोभित चिकुर ललाट वदनपर कुंचित

कुटिल अलक बिथुराई । नागवधू मनु अमीकोशते लै मधुपान अमर ह्वै आई ॥ झुकिझुकि परत प्रेममदमाती उमँगि उमँगि तन देति दिखाई । सूरदास प्रभुसखी सयानी चुटकिनि देत तबहिं लखि पाई ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ॥ आलसभरि शोभित भामिनी । राजत सुभग नैन रतनारे हरि सँग जागत गई यामिनी ॥ बांह उँचाइ जोरि जमुहानी ऐंडानी कमनीय कामिनी । भुज छूटे छबि यों लागी मनो टूरि भई द्वैटूक दामिनी ॥ कुचउतंग वररचित कंचुकी विलसति त्रिवली उरछामिनी । देखि अति मनहु मदन नृप तव हरि रसजीते राधा नामिनी ॥ बिथुरी अलक शिथिल कटिडोरी नखछत छरित मरालगामिनी । दुगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि समुदित सूरजदास स्वामिनी ॥ १७ ॥

राग नट ॥ खंजन नैन सुरँगरसमाते । अतिशय चारु विमलदृग चंचल पलपिंजरा न समाते ॥ बसे कहूँ सोइ बात कही सखि रहे इहाँ केहिनाते । सोइ संज्ञा देखति औ रासी बिकल उदास कलाते ॥ चलि चलि आवत श्रवणनिकट अति सकुचत टंक फँदाते । सूरदास अंजनगुण अटके नतरु कबै उडिजाते ॥ १८ ॥

राग बिलावल ॥ भोरहि शोभा शिरसिंदूर । युगलपटा घनघटा बीच मनो उदय कियो नवसूर ॥ मन्मथरथ आनंद कंद मुख चंद्रकलापरिपूर । चक्रताटंक निशंक सुदृग मृग जनु रन तम सम जूर ॥ सुंदर बर नासिका देशपर बेसरि मुक्तारूर । किधौं तूल तिलफूल निकरकन किधौं असुरगुरुचूर । रद सद दामिनि अधरसुधा मधु रपा झपा झकि झूर ॥ वचनरचन माधुरी सवरपर कवन कोकिला कूर । उच्च उगेज मनोज नृपतिके जोबन कोटि कँगूर ॥ हरि सरि कटितटि लरकिजाइ जिनि विशद नितंब गरूर । कदलीजंघ मराल मंदगति रूप अनूप सपूर । सूरदास शोभा स्वामिनिपर वारत सखि तृण तूर ॥ १९ ॥

राग रामकली ॥ मोसों कहा दुरावति प्यारी । नंदलालसँग रैनि वसी री कोककलागुणभारी । लोचनपलक पीक अधरनको कैसे दुरत दुराए । मनो इंदुपर अरुण रहे बसि प्रेम परस्पर भाए ॥ अधर दशनछतकी अति शोभा उपमा कही न जाइ । मनो कीर फल बिंब चोंच दै भख्यो न गयो उडाइ ॥ कुच नखरेख धनुषकी आकृत मनो शिवशिर शशि राजै ॥ सुनत सूरप्रिय वचन सखी मुख नागरि हँसि मनलाजै ॥ २० ॥

राग धनाश्री ॥ प्यारी सुनत सखी मुखबानी हँसि मुसकाइ रही । नैनन रही लजाइ मुदित चित मानी बात सही ॥ तोसों कहा दुराव करौं री तू प्राणनते प्यारी । कहा कहौं वह मिलिनि श्यामकी क्रीडा कहति उघारी ॥ रति सुख अंत रची इकलीला कहौं कि धरौं दुराइ । सूरदास प्रभुके गुण आली चितहि रह्यो समाइ ॥ २१ ॥

राग सोरठ ॥ राधा अब जिनि कछू दुरावै । हाहाकरि चरणनशिर नावति अपनी सौंह दिवावै ॥ उहै कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहा री कीन्हों । जा रसमें तू मगन भई है कौन अंग सुख दीन्हों ॥ उछलत भए सुधा उरघटते मुखमारग न सँभारै । सूर श्यामरस छकी राधिका कहत न बनै बिचारै ॥ २२ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्यामरति अंतर सईहै कीन्हों । कहत पुनि पुनि कहा अंग अंचर जहू मैं रही सकुचि गहि आप लीन्हों ॥ कियो तब मैं कहा लरी सारंगसों साङ्गधर धरति तब चरण चापी । शेष सहसों फनानि मणिनकी ज्योति अति त्रासते कंठ लपटाइ कांपि ॥ रही उनकी टेक चलै मेरी कहा धरनि गिरिराज भुज सबल धारी । सूरप्रभूके सखी सुनहु गुण रैनिके वैपुरुष मैं कहाकरौं नारी ॥ २३ ॥

राग नट ॥ आजहौं अधिक हँसी मेरी माई । कामविवश मोसों रति बाढी अवलोकत मुरझाई ॥ रवि शशि कांति उग्र भवन में ठाढीही इकठाँई । विस्मय बढि प्रतिबिंब प्रतिह प्रति अंक दई यदुराई ॥ कर अंचर मुख मुदित रही हौं दीन देखि हंसि आई ॥ सूरदास प्रभु निश्चय जानी तबहिं उलटिउरलाई ॥ २४ ॥

राग आसावरी ॥ धन्य धन्य वृषभानुकुमारी गिरिवरधर वश कीन्हे री । जोइजोइ साध करी पिय रसकी सो सब उनको दीन्हे री ॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुष श्यामसे नाहीं री । कोककला पूरण तुम दोऊ अब न कहूं हरि जाहीं री ऐसे वश तुम भई परस्पर मोसों प्रभू दुरावै री । सूर सखी आनंद न सम्हारति नागरि कंठ लगावै री ॥२५॥

राग बिलावल ॥ श्याम गए उठि भोरही वृंदाके धाम । कामाके गृह निशि बसे पुरयो मनकाम ॥ सांझ गए कहि आइहैं बहुनायक नाम । सेज संवारति आश लै ऐसेहि गई याम ॥ अरुणउदय द्वारे खरे देखत भई ताम । रिसनि रही झहराइकै मनहीं मन वाम ॥ चिन्ह और अंग नारिके बिनगुण उर दाम । सूरदास प्रभु गुणभरे आलस तनु झाम ॥ २६ ॥

अथ वृन्दागृहगमन ॥ राग बिलावल ॥ लालन आएरैनि गँवाई । निशि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई ॥ अरुण किरनि मुख पंकज विगलित मधुप लियो रसजाई । चंद्र मलीन भयो दिनमणिते कुमुद गए कुँभिलाई ॥ आजकी रैनि गई मुहिं जागत तुम बिनु कछु न सोहाई । सूर श्याम या दरश परस बिनु निशि गई नींद हेराई ॥ २७ ॥

राग बिलावल ॥ नीके आए गिरिधरधारी नागर । तुम्हरी चिंताते अरुन नैन भए सकल निशाके जागर ॥ रतिके समाचार लिखि पठए सुभग कलेवर कागर । जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर भुलाए अगार ॥ बलि बलि गई मुखारविंदकी सुरति सिंधु रससागर । जाके रसवश भए सूर प्रभु ऐसी कौन उजागर ॥ २८ ॥

राग बिभास ॥ तुम्हारे पूजिये पिय पाँइ । बहुत बात उपजति है तुमको कहत बनाइ बनाइ ॥ अरुण अधर श्याम भये कैसे आए पट लपटाइ ॥ चारु कपोल पीक कहां लागी ऊरज पत्र लिखाई ॥ नंदकुमार जहां निशिजागे तहँ सुख देखौ जाई । सूरदास सब भांति अटपटी अब मन क्यों पतिआई ॥ २९ ॥

राग बिलावल ॥ मोहन काहेको लजात । मूँदि कर मुख रहे सन्मुख कहि न आवत बात ॥ अहि लता रंग मिट्यो अधरन लग्यो दीपक जात । रुचि कुसुम बंधूक मानो समय गथ कुंभिलात ॥ नैन मुद्रित सकुच जैसे उदय शशि जलजात । निकसि चल युग

पूतरी जनु अलि उरझि अधगात ॥ चारि याम जु निशि उनींदे अलसवशहि जँभात। सूर ऐसी मदन मूरति निरखि रति मुसुकात ॥ सकल निशि जागेके हैं नैन । जानति हौं अति किए कोकनद आन खनि सुख चैन ॥ लटपटी पाग चाल गति उलटी रसन अटपटे बैन । लगत पलक उघरत न उघारे मनु खंडित रसऐन ॥ तमचुर टेरतही उठि धाए अब दूनो दुखदैन । जानी प्रीति सूर प्रभु अब हम सुरति भई गति मैन ॥ ३० ॥

आजु और छबि नंदकिशोर । मिलि रिस रुचि लोचन भए रोचन चितवत चित्त पराई ओर शोभित पीठि प्रगट करकंकन शोभित हार हिए बिनु डोर । शोभित पीतवसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर ॥ नखशिख ज्यों शृंगार अटपटे पाए मनहु पराए चोर । फूले फिरत दिखावत औरन निडर भए दै हंसनि अकोर ॥ कहत न बनै सुनतहु न आवै वैसनि वर्नत कविन कठोर ॥ अचरज क्यों न होत इन बातन सूर ग्रहण देखेजनु भोर ॥ ३१ ॥

राग बिलावल सूही ॥ अतिहि अरुण हरिनैन तिहारे । मानहु रतिरस भए रंगमगे करत केलि पिय पलक न पारे ॥ मंदमंद डोलत शंकितसे शोभित मध्य मनोहर तारे । मनहु कमल संपुटमहँ वीधे उडि न सकत चंचल अलिवारे ॥ झलमलात रेतिरैनि जनावत अति-रसमत्त भ्रमत अनियारे । मानहु सकल जगत जीतनको कामबाण खरसान संवारे ॥ अटपटात अलसात पलकपट मूँदत कबहूं करत उघारे । मनहु मुदित मर्कतमणि आंगन खेलत खंजरीट चटकारे ॥ बारबार अवलोकि कुरुखियन कपटनेह मन हरत हमारे । सूर श्याम सुखदायक लोचन दुखमोचन रोचन रतनारे ॥ ३२ ॥

राग बिलावल॥नहिंन दुरतनैना रतनारे । बंधुक कुसुमपर शोभित सुन्दर श्यामशिलीमुख-तारे॥कुटिल अलक रही बिथुरि बदनपर सकुचसहित हरि नरम निहारे । भौंह शिथिलमनु मदन धनुष गुन गरे कोकनद बान बिसारे । मूँदेइ आवत नैन अलसवश छीन भए उघरत न उघारे । सूरदास प्रभु सोइ कहौ तुम को भामिनि जहँ रति रण हारे ॥ ३३ ॥

रति संग्राम वीररस माते । हैं हरि शूर शिरोमणि अजहूं नहिंन सँभारत ताते ॥ आनहि बरन भए दोउ लोचन अपने सहज बिनाते । मानहुं भीर परी जोधनकी भए क्रोध अति राते ॥ परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उठि न सकत तेहिठाते । मनहु मदनके हैं शर पाए फोंक बाहिरी घाते ॥ बैठिजात अलसात उनींदे क्रम २ उठत तहांते । मनु मूरछा कटाक्ष नाटसल कढि न सकत हियराते ॥ डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु रतिरण जीते अब सकात धौं काते ॥ ३४ ॥

नैन उनींद भए रँग राते । मनहु सुरंग सुमनपर सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेम पराग पाँखुरी पल दल प्रफुलित मदन लताते । सुभग सुवास विलास विलोकनि प्रगट प्रीति करि ताते ॥ तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिली मुदित छबियाते । सींचे सूर श्याम मानिनि कर हितसों केलिकलाते ॥ ३५ ॥

राग रामकली ॥ आए सुरति रंगरसमाते । मानहु छिन विश्राम नमित पिय श्रमित भएहैं ताते ॥ डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगि तहांते । मनु गजमत्त चरण सांकर करिगहि आनत तेहिठाँते ॥ उर नखछत कंकनछत पाछे शोभितहै रुहिराते ॥ मदन सुभटके बाण लागि मनो निकसि गए वोहि घाते ॥ सांचे करत आपने बोलनि टरत न मर्यादाते । सूर श्याम कहि गए आइहै पगधारे तेहि नाते ॥ ३६ ॥

राग बिलावल ॥ अरुण नैन राजत प्रभु मोरे । रतिसुख सुरति किए सखिसँगमनो जीति समर मन्मथशर जोरे ॥ अति उनींदे अलसात कर्मगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे । मनहु कमलके कोश तसी तम उठत रहत छबि रिपुदल दौरे ॥ शोभित सुभग सजल प्रतिकारे संगम छबितारे तनु डोरे । मनो भारती भँवर मीन शिशु जात तरल चितवत चित चोरे ॥ वरणि न जाइ कहाँ लगि बरणौं प्रेमजलधिवेला बल बोरे । सूरदास सो कौन त्रिया जिनि हरिके अंग अंग बल तोरे ॥ ३७ ॥

काहेको पिय भोरही मेरे गृह आए । इतनै गुण हमपै कहँ जे रैनि रमाए ॥ ताहीके पगुधारिए चकृत मैं जाने । बिनगुण गडिमालारही नाहिं कहुँ विहराने ॥ आएहौ सुख-देनको ऐसेइ हितकारी । सूरश्याम तुम योगको को वैसी नारी ॥ ३८ ॥

कृपा करी उठि भोरहीं मेरे गृह आए । अब हम भइ बडि भागिनी निशि चिह्न देखाए ॥ जावकभालनसों दियो नीके वश पाए । नैन देखि चकृत भई क्यों पान खवाए ॥ अधरन पर काजर बन्यो बहु रंग कहाए । बंदन बिंदुली भालकी भुज आप बनाए ॥ यह मोसों तुमहीं कहौ उरछत अरुनाए । सूर श्याम यशराशिहौ धनि त्रिया हँसाए ॥ ३९ ॥

राग भैरव ॥ जाहु तहां कहा सोचतहौ । जासँग रैनि विहात न जानी भोर भए तेहि मोचतहौ ॥ औरनको छिन युग बीतत है तुम निहचीते नागरहौ । झूमत नैन जम्हात बारही रतिसंग्राम उजागरहौ ॥ मैं अब कहति तिहारे हितकी ताहीके गृह सोइरहौ ॥ सूर श्याम वैसी त्रिय को है वह रस वाही बनन लहौ ॥ ४० ॥

हमहीं पर पिय रूखे हौ ॥ बोलत नहीं मूक क्यों ह्वै रहे अँग रँगहीन कछूखेहौ । तब निरखत औरहि हित की वैं हमसों कहुँ तुम लखे हौ । तब हँसि बदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुर पूषेहौ ॥ डगमगात पग उतहि प-तहै चित चंचल उत हूषेहौ । सूरदास प्रभुसौं चभाषि गए त्रिया अंग बल मूषे हौ ॥ ४१ ॥

राग बिलावल ॥ हरषि श्याम त्रियबाँह गही । चूक परी हमको यह बकसो आवनको कहि गए सही ॥ रिसन उठी झहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहीं । भवन गई आतुर ह्वै नागरि जो आई मुख सबै कही ॥ मेरे महल अजुते आवहु सौंह नंदकी कोटि लही । सूर श्याम जब लौं जग जीवौं मिलौं नहीं बरु कामदही ॥ ४२ ॥

राग नटनारायण ॥ नागरि निठुर मान गह्यो । पीठ दै रिस काँपि बैठी फिरिन उतहि चह्यो ॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनिव्याकुल नारि । तिनकही रिस खोइडारौं यह प्रतिज्ञा धारि ॥ सखी एक स्वभाव अपने गए ताके गेह । यह चरित सब कह्यो तासों

चतुरि लख्यो सनेह ॥ गई आतुर नारिताके लख्योनैननि कोर । चकित बाला नंद-सुताबिन लह्यो हठको छोर ॥ भुजा गहि कहि कियो का रिस कहि सही ब्रजग्वारि । सूर प्रभुसों मान कीन्हों हृदयदेखि बिचारि ॥ ४३ ॥

राग कान्हरो ॥ बाँह गह्यो कहि आँगन ल्याई । बहुनायक उनको नाहिं जानति बडी चतुरहौ माई ॥ मैं जो कहति श्रवण सुनि चित धरि जोबन धन सपनेको । चलुगहि भुजा मिलै कितहरिसों कहा निठुर भई तोको ॥ हूँही गहति न बाँह जाइकै मोसों बाँह गहावति । सुनहु सूर मैं सौंह करी है तू मोहिं तिनहिं मिलावति ॥ ४४ ॥

कहा कहति तू मिलिहि रहीहै । मोसों करति कहा चतुराई उन इह भेद कही है ॥ जो हठ करचो भली नहिं कीन्ही ए दिन ऐसे नाहीं । की इहई पियको न बोलवै की तहईं चलिजाहीं ॥ वै सब गुणलायक तूनागरि जोबन दिनद्वै चारि । सूर श्यामको मिलि सुख लेहि न पुनि पछितैहै नारि ॥ ४५ ॥

बहुरि पछितैहै री ब्रजनारि । देखि जाइ ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि ॥ ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि । कहा गर्व या झूठे तनको देखि हाथ लै वारि ॥ तजि अभिमान मानरी मानिनि मैंजु करति मनुहारि । सूर हंस स्वातीसुतधोखे कबहुँक खात जुवारि ॥ ४६ ॥

राग केदारो ॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाइ है री तेरी आँखिन मैं पैयत है । कत सकुचति मैं तौ सब जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयत है ॥ मेरो बिलग मानति यह जानति या बातनमें कछु पैयतहै । सूर श्याम न्यारे न बूझिये यह मोको नहिं भावै काहेको अनखैयत है ॥ ४७ ॥

राग बिलावल ॥ बहुरि मिलौगी कालिही चित समुझि सयानी । मेरो कह्यौ न क्यों करै क्यों भई अयानी ॥ 'अनलहि औषधि अनल है सब जानिरहीहौ । काहेको हठ करतिहौ । बेकाज बहीहौ ॥ धरणीधर व्याकुल खरे री गर्व गहली । सूर कह्यो सुनि मानिलै मैं कहति सहेली ॥ ४८ ॥

राग सोरठ ॥ श्याम धरचो त्रिय मोहन रूप । दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी बातैं । सरस बचन जु कहति सखि आगे कहौ मिलौं केहि नातैं ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकाने । सूरदास प्रभुहैं बहुनायक तुही कहति यह बाने ॥ ४९ ॥

राग मलार ॥ जौलैं माई हौं जीवन भरि जीवों । तबलगि मदनगोपाल लालके पंथ न पानी पीवों ॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमद तनु न लगाऊं । हस्त वलयकटिना पटु मेचक कंठ नपोति बनाऊँ ॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिकबाणी नैन न नवघन देखों । नील कमल कर धरौं न कबहूं श्याम सरीखे लेखों ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये प्रिय दूती संग । छूटिगई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि संग तब कर गहि कर लीन्हों । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधा सुख दीन्हों ॥ ५० ॥

राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम । गाढो मान दूरि करि डारयो हरष भई मन वाम ॥ ऐसे चरित और को जानै धन्य धन्य नँदलाल । जो एगुण तौ हरत त्रियन मन अति हरषित भई बाल ॥ मिट्यो काम तनुनाम तुरतही रिझई मदनगोपाल । सूर श्याम रस बश करिलीन्हीं इहै रच्यौ इक ख्याल ॥ ५१ ॥

राग मलार ॥ सखी री कठिन मानगढ टूट्यो ॥ श्रीगोपाल बिहँसनि बल आतस चल्यो अतिहि गोलनको जूट्यो । करि प्रतिहार तज्यो सुर गोपुर कांच कोट सम फूट्यो । काम अग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभटको तब रण छूट्यो । कुच लोचन दोउलरैं सौंह ह्वै भौंह कमान कुटिल शर छूट्यो । विद्याचरि गोपालकी सूर तजि सर्बस लुट्यो ॥ ५२ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्यामगणराशि मानिनि मनाई । रह्यो रस परस्पर मिट्यो तनु बिरह-झर भरी आनंद त्रिय उर न माई ॥ कबहुँ रति सहज कबहूं करति बिपरीत बासरहुते सब रैनि बीती । श्रमित दोउ अंग भए अतिहि विह्वल परे सेज रतिपति अधिक बढी प्रीती ॥ भोर भए चले निज सदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे । सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमदाधाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे ॥ ५३ ॥

सुखमाके धामते आए प्रमदाके धाम ॥ राग गुण्डमलार ॥ कहाँ है श्याम कहँ गमन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरश देत नाहिं धोखे गए आय हम मानिलीन्हों ॥ नैन आलसभरे चरण उत लरखरे कहाहौ डरेसे कहौ मोसों । रैनिकहुँ बसे त्रिय कौनसों रसेहौ उर करज कसे मो कहौ गोसों ॥ भले जूभले नँदलाल वेऊ भली चरणजावक पाग जिनहिं रंगी । सूर प्रभुदेखि अँगअँग बानक कुशल मैं रहौ रीझिवह नारि चंगी॥५४

राग कल्याण ॥ सुनत हँसि चले हरि सकुचि भारी । यह कह्यो आजु हम आइहैं गेह-तुब तरक जिनि कहौ हम समुझि डारी । नारि आनँद भरी रँगसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंगपुलकी । गए रहि सूर प्रभु रैनि बसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी५५

अंगशृंगार सुंदरि बनावै । मिलौंगी श्याम निजधम करि आजुही रैनि बिलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति सीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै । मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रंथि कबरी छांह पट निहारै । कमल खंजन मृगज मीन लोचन जिते सारंग सुत लेति तहां आँजे । हार उर धरति नख शिखहु भूषण भरति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजै ॥ ५६ ॥

राग कान्हरो ॥ बिधुबदनी अरु कमल निहारै । सुमनासुत लै कमलन मंजित धनपति धामको नाम सँवारै ॥ तरनि तात बनितासुत ता छबि कमलन रुचि रवि ग्रंथित चारै । कमल कमलपर रेख बनावति सारंग रिपु पाहन गति ढारै ॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारस ढिग पारै॥ सूर श्यामके नामहि जीतन कमलापतिके पदहि विचारै ॥ ५७ ॥

राग आसावरी ॥ अंग शृंगार सँवारि नागरी सेज रचतहरि आवहिंगे । सुमन सुगंध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे ॥ चंदन अगर कुमकुमा मिश्रितश्रमते अंग अंकम भरि लावहिंगे । रसभीतर मैं मान करौंगी सँग मिलि वै मनकाम पुरावहिंगे ॥

रतिसुख आलस अंकम भरि उर लावहिंगे । रसभीतर मैं मान करौंगी वै गहि चरण मनावहिंगे ॥ आतुर जब देखों पिय नैनन बचन रचन समुझावहिंगे ॥ सूर श्याम युवती मनमोहन मेरे मनहिंगे ॥ आतुर जबदेखों पिय नैनन बचन रचन समुझावहिंगे । सूर श्याम युवतीमनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ५८ ॥

नंदसुवन बहुनायकी अनतहि रहे जाई । वह अभिलाष करतरही ताको बिसराई । वासर ऐसे ही गयो निशि याम तुलानी । नारि अति सोचमें बिरहा अकुलानी ॥ आवन कहिगए सांचही अजहूं नहिं आए । कीधौं कतहूं रमिरहे फँग परे पराए ॥ वेई हैं बहुनायकी लायक गुणभारी । सूरश्याम कुमुदाभवन सुधि करि पगधारी ॥ ५९ ॥

राग केदारो ॥ हरे हरि रैनि कुमुदागेह । परस्पर दोउ प्रेम भीजे बढ्यो अतिहि सनेह ॥ एकक्षण इक याम बितवति कामरसवश गात । ताहि बीतंत याम युगसम गनत तारा जात॥उनहिं वैसेइ याहि ऐसे रंजनि गई भयो भोर । सूर मोसों करिचतुरई गए नंदकिशोर६०

राग नट ॥ कुटिलई हरिकरी मोसों । चित्तचिंताभरी सुंदरि करति मन गोसों॥कहि गए निशि आइहैं हरि अनत बिरमे जाइ । रैनि बीति उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥ भवनही मनमारि बैठी सहज सखि इक आइ । देखि तनु अति बिरहव्याकुल कहति बचन सुनाइ ॥ बोलि ढिग बैठारि ताको पोंछि लोर । सूर प्रभुके बिरह व्याकुल सखी लखि मुखओर ॥ ६१ ॥

राग गौरी ॥ आजु तोहिं काहे आनँद थोर यह विपरीति सखी तो महियां इन्दु बिन्दु इकठोर ॥ हरदावन संतत अधिकारी ज्यों बिधु चंद्रचकोर । दधि गृह क्यों न बनावति बिगसत अंबुज भोर ॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर सूरदास स्वामि रतिनागर तौन हरचो मनमोर ॥ ६२ ॥

राग गौरी ॥ आजु बिनु आनँदको मुख तेरो । कहा रही मानमारि भोरहीं अतिव्याकुल मनमेरो मोसों गोप करै जिनि सुंदरी नाहिं पावति वह भाव । सुनौं बात कैसी उपजीहै कछु जिनि करे दुराव ॥ तब बोली मधुरी बाणीसों कहा कहौं री तोहिं । तेरे श्याम भले गुण नागर कपटी कुटिल कठोहि ॥ निशिवसिबेकी आवधि वदी मोहिं साँझ गए कहि आवन । सूर श्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैन भये दोउ सावन ॥ ६३ ॥

राग सोरठ ॥ ऐसे गुग हरिकेरी माई । मैं पहिचानि रहीहौं नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अब मोसों उनसों कह बनिहै कछु मैं गई बुलावन । आपुहि कालिह कृपा यह कीन्हीं अजिर करिगए पावन ॥ तोसों मिलैं कहूं मेरी सौं तिनसों तू यह कहिए । सूरदास प्रभु बोलनिसांचे लाज कछुजिय गहिए ॥ ६४ ॥

राग बिहागरो ॥ सखी री और सुनहु इक बात । आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नाहिं मिसि प्रात ॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहतन जात । आगे द्वार नंद हैं ठाढे ताते गए न सकात ॥ डगमगात डग धरत पग आलसवंत जम्हात । मानहु मदन दंड दे छाँडे चुटकी देदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे मोहन तौ सन्मुख मुसकात । ताते कछू न उत्तर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ ६५ ॥

राग केदारो ॥ तब हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टार दै गए हरी ॥ आपुही श्रीमुख गए कहि सही कैसी परी । सेज रची सब रैनि जागी तब रिसनि हौं जरी ॥ श्याम देखे द्वार ठाढे मनहिं मन झरहरी । कहत सूर सुनाइ हरिको धन्य यह शुभ घरी ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ॥ सखी निरखि अंग अंग श्यामके । कहुँ चन्दन कहुँ बन्दन रेखा कहुँ काजर छवि लखत बामके ॥ आलस भरे नैन रतनारे चतुर नारि सँग जगे यामके । अपने मन हरि सोच करत यह परी त्रिया फँग कठिन तामके ॥ मान कियो मोहन फिरि बैठी आए हैं यह सुनत नामके । सूर श्याम इक बुद्धि बिचारी मन मोहन रति सहित कामके ॥ ६७ ॥

राग सूही ॥ श्याम सैनदै सखी बोलाई । यह कहि चली जाउं गृह अपने तूतो मान कियो री माई ॥ अंतर जाइ भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहँ जाई । मुख निरखत दोउ हँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउँ मनाई ॥ अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सुरति चिह्न नीकी सुघराई । सूर प्रभु गुन पार लहै को जानी बूझि करी रिसहाई ॥ ६८ ॥

राग बिलावल ॥ इहै कही कहि मौन रही । मन मन कहति दरश अब दीन्हों निशि सब रैनि डही ॥ मधुरे वचन सुनाइ सखीसों रिसवश भरे कही । आए कहां जाहिं ताहींके चतुर त्रिया ढिगही ॥ वाबिन उनको कौन मिलेगी नहिं कोउ फिरति बही । सूरज प्रभु इतको जिनि आवैं पग धारैं उतही ॥ ६९ ॥

राग गौरी ॥ सखी गई कहि लेउ मनाई । ज्ञानन मणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई ॥ प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तौ नहीं कन्हाई । आतुर चली यमुन जल खोरन काहू सँग न लाई ॥ पहुँची जाइ सु रवितनयातट न्हाइ चली अतुराइ । सूर श्याम मारग भए ठाढे बालक मोहनराइ ॥ ७० ॥

राग बिलावल ॥ पांच बरसके लाल ह्वै त्रिय मोहन आए । नागरि आगे ह्वै गई तब बोली सुनाए ॥ कह्यो कहां री जातिहै काकी तू नारी । मोहिं पठाई श्याम लै जाकी तू प्यारी ॥ यह सुनि नारि चकित भई आपुन तहां आए । तब करसों कर गहि लियो देखत मन भाए ॥ अगम चरित प्रभु सूरके ते लखे न कोई । श्याम नाम श्रवणन परचो हरषी मुख जोई ॥ ७१ ॥

राग रामकली ॥ हरषी निरखि रूप अपार । गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोपकुमार ॥ श्याम मोको बोलि पठई कहत है यह लाल । भवन लै इन भेद बूझौं सुनौं वचन रसाल ॥ हृदय आनंद भई बाला प्रेमरस बेहाल । कुँवरि अंतःपुर गई लै रच्यो हरि तहां ख्याल ॥ तरुण ह्वै करि उरज परसे दियो अंचल टारि । सूर प्रभु हँसि लई प्यारी भुजन अंकम धारि ॥ ७२ ॥

राग टोडी ॥ मुख निरखत त्रिय चकित भई । जो देखी अति तरुण कन्हाई यह को लखै दई ॥ छांडि देहु ऐसे मन मोहन हँसिमन लजित भई । ऐसे छन्द रचत पिय धनि धनि कीन्ही करनि नई ॥ अंकम भरि प्रिय कण्ठ लगाई कुच उर चापि लई । सूर श्याम भामिनि मन मोहन रति रससों भोगई ॥ ७३ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम मनाई मानिनी हरषित भई अंग । रैनि बिरहतनको गयो जे करे अनंग ॥ सुता महर वृषभानुकी सुधि कीनी श्याम । ताको सुख दै हरि चले प्यारीके धाम ॥ प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसकाइ । जिय डरपे मोहिं देखिकै सुख कह्यो न जाइ ॥ अब न पियहि उचटाइहौं मोको सरमात । त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात ॥ आनि द्वार ठाढे भए नायक बहुनाम । सूर प्रभु अंग सहजही निरखति रुचिसों वाम ॥ ७४ ॥

राग गुंड मलार ॥ श्याम डर वाम निज धाम आए । उतहि प्रमदा धाम सखी सहजहि गई अंगके चिह्न कछु और पाए ॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहि आनंद भरी श्याम रंगी । सखी बूझति ताहि हँसत जामुख चाहि श्यामको मिली री बनी चंगी ॥ कहन लागी कहा कहत तू आज मोहिं ताहि नाहीं करति दुरति कैसे । मिले प्रभु सूर तोहिं जानि यह चतुरई नहीं तू करति नहिं लखति जैसे ॥ ७५ ॥

राग सूही ॥ नैना तो अति रँगीले चिहुर छूटे छबीले काजर पीक लागिले आरसी देख । मरगजे वसन अधर दशननि छत कहुँ कहुँ नीकी लागी चन्दन रेख ॥ काहेको मोहिं दुरावति सजनी जानी अरस परस छबि शेष । सूरदास प्रभु नंदसुवन सँग अबहीं सुरति रंग कोसो भेष ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ अब तू कहा दुरावैगी । मोहिं कहत नहिं काहि कहैगी कबलौं बात लुकावैगी ॥ मोसी और कौन प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावेगी ॥ मेरीसों उनकी सौंतोको कहा दुराए पावैगी ॥ औरनसी मोहूको जानति मोते बहुरि रमावैगी ॥ सूर श्याम तोहिं बहुरि मिलेहैं आखिर तौ प्रगटावैगी ॥ ७७ ॥

प्रमदा अति हर्षित भई सुनि बात सखीके । रोम रोम पुलकित भई उपजी रुचि हीके ॥ कहति अबहिं ह्यांते गए नँदसुवन कन्हाई । चरित कहा उनके कहौं मुख कह्यो न जाई ॥ सांझ गए कहि आई हैं मोसों री आली । अनत बिरमि वतहूं रहे बहु नायक ख्याली ॥ रैनि रही मैं जागिकै भोरहि उठि आए । मान कियो रिस पाइकै पलमाँह छँडाए ॥ अगणित गुण प्रभु सूरके कहि तोहिं सुनाऊं । अबहिं चरित करिकै नए तेही गुण गाऊं ॥ ७८ ॥

राग रामकली ॥ आजु सखी यमुना मग मोहन मोहिं छली छँदलाइ । को तू आहि कौनकी वनिता बात एक सुनि आइ ॥ बिहँसि कह्यो मोहिं श्याम पठायो सुनत बिरह गति भूली । रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पलक पाखुरी फूली ॥ जानि कुमार गह्यो करसों कर ल्याई भवन बोलाइ । नैन मूँदि अंचल गहि डारयो मैं माधो मिलि आइ ॥ छैल छुयो उर वदन बिलोक्यो सकुचि रही मुसकाइ । छांडहु सूर श्याम तुम्हरी अब आवनि जानि न जाइ ॥ ७९ ॥

राग धनाश्री ॥ आवत ही मैं तोहिं लख्यो री । तुमहु भली उनको मैं जानति अधर बिंब मनो करि भख्यो री ॥ अंग मरगजी पटोरी देखी उर नख छत छबि भारी । धनि वै नंद सुवन धनि नागरि किधो सुरतिरण हारी ॥ हँसत गई सखी भवन आपने मन आनंद बढाए । सूर श्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाए ॥ ८० ॥

राग सारंग ॥ राधिका श्याम तन देखि मुसक्यानी । हार बिन गुण बन्यो अधर काजर रेख नैन तंमोर तुतरातवानी ॥ पाग लटपटी बनी उरह छूटी तनी अंगकी गति देखि मन लजानी । उलटि कंकन पीठि बाहु विह्वल ढीठ चतुरई चतुर्भुज अधिक ठानी ॥ पाणि पल्लव अधर दशन गहिरही बैन बोली वचन हारि मानी । बलि बलि सूर प्रभु अंग भरि प्राणपति नागरी नवल उरघालि सानी ॥ ८१ ॥

राग बिलावल ॥ भली करी पिय ऐसेंहू मेरे गृह आए । लीन्हें कंठ लगाइ कै बडभागिनी पाए ॥ कहा सोच जिय करतहौ भुजगहि कर लीन्हों । गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हों ॥ श्याम सकुचि अँग हेरहीं नागरि पहिचानी । चिह्न निहारत डर कहा आवतही जानी ॥ या छबिपर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई । तुम जानत यह रूपको अरु लखै न कोई ॥ चंदन वंदन पानरंग अधरन काजर छवि । सूर श्याम उर करजको को वरणि सकै कवि ॥ ८२ ॥

काहेको पिय सकुचतहौ । अब ऐसो जिनि काम करौ कहुँ जो अतिही जिय अकुचतहौ ॥ अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननको जानि रहौ । सौंह करौ मेरी मो आगे डरडारौ जिन मौन गहौ ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे बार बार शिव सौंह करी । सूर श्याम गिरिधर गुण नागर बात आजुते सही परी ॥ ८६ ॥

राग गुंडमलार ॥ श्याम सौंह कुच परस कियो । नंदसदनते अबहीं आवत और त्रियनको नेम लियो ॥ ऐसी शपथ करौ काहेको जो कछु आजुकरी सु करी । अबजुकालिते अनत सिधारो तब जानौगे तुमहि हरी ॥ मैं सति भाव मिलि हँसि तुमको कहा आजुकी सौंह करौ । सूर श्याम जो भई सुभई जू अबते सबको नेम धरौ ॥ ८४ ॥

राग गुंडमलार ॥ अहौ राजत राजीव नैन मोहन छबि उरग लता रंग लाग । जेहि बनितारस वश कीन्हें निशि प्रगट होत अनुराग ॥ सिथिल अंग अरु सिथिल पाग बनी सिथिल चरणगति आज । मनहुँ सेज रेवा हृदते उठि आवतहै गजराज ॥ भाल मध्य जावकरँग देखत लागति है मोहिं लाज । तुम अपने जिय यों जानतहौ तिलकलोक जई राज ॥ हंस वंधु रव लोचन ललना मिलित निशाकृति काज । वदन चंद विय संधि जानि नाहिं बढत किरनि मन लाज ॥ भवन जीव सुत लग्यो अधर पर यह छबि कही न जाइ । मनो बंधूक सुमन ऊपर विय अलिसुत बैठे आइ ॥ कुच कुम कुम अवलेप तरुनि किए शोभित श्यामलगात । गत पतंग राका शशि विय संग घटा सघन शोभात ॥ श्याम हृदय लछने ता ऊपर लगी करज कृत रेष । मनहुँ वसंतराज रुचि कीगति अरुण किसलतरु भेष ॥ काम बाण वर लिए पंच चितवन प्रति अँग अँग लाग । अब न जान गृह देउँ पियारे जब आए तब भाग ॥ तादिनते वृषभानु नंदिनी अनत जान नाहिं दीन्हें । सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रसवश कीन्हें ॥ ८५ ॥

अथ बडो मानसमय ॥ राग बिलावल ॥ सखियन सँग लै राधिका निकसि ब्रज खोखोरी । चली यमुन अस्नानको प्रातहि उठि गोरी ॥ नंदसुवन जागृहवसे तेहि बोलत आई । जाइ भई द्वारे खरी तब काढे कन्हाई ॥ औचक भेट भई तहां चकृत भए दोऊ । ये इतते वै

उतहिते नहिं जानत कोऊ ॥ फिरी सदनको नागरी सखि निरखत ठाढी । स्नान दानकी सुधि गई अति रिस तनु बाढी ॥ श्याम रहे मुरझाइकै ठग मूरीखाई । ठाढे जहँके तहँ रहे सखियन समुझाई ॥ इतनेहीके ह्वै गए गहिबाँह लैआई । सूरज प्रभुको ले तहां राधा दिखराई ॥

राग रामकली ॥ राधहि श्याम देखी आइ । महा मान दृढाय बैठी चितै कांपै जाइ ॥ रिसहि रिस भई मगन सुंदरि श्याम अति अकुलात । चकितह्वै जकि रहे ठाढे वहि न आवै बात ॥ देखि व्याकुल नंदनंदन सखी करति विचार । सूर प्रभु दोउ मिले जैसे करो सोइ उपचार ॥ ८६ ॥

राग कान्हरो ॥ सखी एकगई मानिनि पास । लखति नहिं कछु भाव ताको मिटी मनकी आस ॥ कहौं कासों कौन सुनिहै रिसनि नारि अचेत । बुद्धि सोचति त्रिया ठाढी नेक नहीं सुचेत ॥ श्याम व्याकुल अतिहि आतुर यहि कियो दृढ मान । सूर सहचरि कहति राधा बडी चतुर सुजान ॥ ८७ ॥

राग कान्हरो ॥ नहिं तेरो अतिही हठनीको । मेरौ कह्यो सुनहु ब्रज सुंदरि मान मनायो नागर पियको ॥ सोइ अति रूप सुलक्षण नारी रीझे जाहि भावतो जीको । प्यासे प्राण जाइँ जो जल बिनु पुनि कह कीजै सिंधु अमीको । तो जूमान तजहुगी भामिनि रविकी रसमि काम फल फीको । कीजै कहा समय बिनु सुंदरि भोजन पीछे अचवनघीको ॥ सूर स्वरूप गर्व जोबनके जानतिहौ अपने शिर टीको । जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमलकलीको ॥ ८८ ॥

राग सारंग ॥ चितयो चपल नैनकी कोर । मन्मथ बाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिए वहि ओर ॥ अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर । कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहूँ चंद्रिका मोर ॥ खन बूडत खनही खन उछलत विरह सिंधुके परे झकोर । प्रेम सलिल भीज्यो पीरो पट फट्यो निचोरत अंचल छोर ॥ फुरैं न वचन नैन नहिं उघरत मानहुँ कमल भए बिन भोर । सूर सुअधर सुधारस सींचहु मेटहु मुरछा नंदकिशोर ॥ ८९ ॥

राग नट ॥ राधे तेरे नैन किधौं मृगवारे । रहत न युगल भौंह युग जोते भजत तिल-करथ डारे ॥ यदपि अलक अंजन गहि बांधे तऊ चपल गति न्यारे । घूँघट पट बागरज्यों त्रिडवत जतन करत शशि हारे ॥ खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलि ग्रीव हारे । दोउ रुख लिये दीपकर मानो किये जात उजियारे ॥ मुरली नाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे । सूरदास प्रभु रीझि रसिक पिय उमन प्राण धनवारे ॥ ९० ॥

राधे तेरे नैन किधौंगी बान । यों मारै ज्यों मुरछि परै धर क्यों करि राखै प्रान ॥ खग पर कमल कमल पर केदलि केदलि पर हरि ठान । हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा शशि भान । शशि पर बिंब कोकिला ताबिच कीर करत अनुमान ॥ बीच बीच दामिनि दुति उपजत मधुपयूथ असमान ॥ तू नागरि सब गुणनि उजागरि पूरण कलानिधान । सूरश्याम तो दरशन कारण व्याकुल परे अजान ॥ ९१ ॥

राग नट ॥ राधे तेरे नैनकिधौं बटपारे ॥ चितवत दृष्टि बाण भरि मारत घूमत ज्यों मतवारे । करि अंजन मनो पियमनरंजन खंजन नैन सँवारे । चलि मुसवयाय श्यामसुंदरपै नाचत ज्यों नटवारे ॥ थकित भए देखत नँदनंदन तिनसों वहिकै हारे । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको कोटिमान पचिहारे ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ चपलभामिनिके भौंहै बंक । अलक तिलक छवि चित्र लिखीसी श्रुति मंडल ताटंक ॥ तेरो रूप कहाँलौं वरणौ नागरताको अंग । उर सुदेश रोमावलि राजत मृगअरिवो सो लंक ॥ तेरे नैन सुभट अनियारे नगवरधरन निशंक । सूरजचरित चुनौती पठवत भयो मदन मनरंक ॥ ९३ ॥

राग मलार ॥ यह ऋतुरूसिवेकी नाहीं । वरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥ जे तमाल ग्रीषमऋतु डाहीं ते तरुवर लपटाहीं । जे जल बिन सरिता ते पूरण मिलन समुद्रहि जाहीं ॥ जोबन धन है दिवस चारिको ज्यों बदरीकी छाहीं । मैं दंपति रस रीति कही है समुझि चतुर मनमाहीं ॥ यह चित धरहु सखी री राधिका दै दूतीको बाहीं । सूरदास हठि चलहु राधिका सँग दूती पियपाहीं ॥ ९४ ॥

राग बिलावल ॥ दधिसुतवदनी राधिका दवि दूरि निवारौ । दधिसुत दृष्टि मेलि दधिसुत में दधिसुत पतिसों क्यों न विचारौ ॥ घरहि छाँडिकै घरहि पकरिलै घरहु लता घनश्याम सवाँरौ । हार पहिरि कहि हार पकरि करि हार गुवर्धननाथ निहारौ ॥ समुझि चली वृष-भानुनंदिनी आलिंगन गोपाल पियारौ । विद्यमान कलहंस जात गलि सूरदास अपनो तनु वारौ ॥ ९५ ॥

राग सोरठ ॥ राधे हरिरिपु क्यों न छपावति । मेरु सुतापति ताके पतिसुत ताको क्यों न मनावति ॥ हरि बाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति । नव अरु सात बीस तोहिं शोभित काहे गहरु लगावति ॥ सारँग वचन कह्यो करिहरिको सारंग वचन निभावति । सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचन नीर बहावति ॥ ९६ ॥

राग नट ॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति । शैलसुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति । हरिबाहन शोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति । द्वै अरु चारि छहौ वै बीते काहेको गहरु लगावति ॥ नौ अरु सात राज तहँ शोभित ते तू कहि क्यों दुरावति । सूर-दास प्रभु तुमरे मिलनको श्रीरंग भरि आवति ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति । सारंगसुतवाहनकी शोभा सारंगसुतन बनावति ॥ शैलसुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति । हरिबाहनके मीत तासु पति तापति तोहिं बुलावति ॥ राकापति नहिं कियो उदौ सुनि यासमये नहिं आवति । विधिवि-लास आनंदरसिक सुख सूर श्याम तेरे गुण गावति ॥ ९८ ॥

राधा तैं बहु लोभ करचो । लावनरथतापति आभूषण आनन ओप हरचो । भ्रुकुटि कोदंड अवनि धरि चपला विवश ह्वै कीर अरचो । पिक मृणाल अलिअगित रूप सम ते वपु आप धरचो ॥ जलचरगति मृगराज सकुचि जिय सोच न जाइ परचो । सूरदास प्रभु को मिलि भामिनि निशि सब जात टरचो ॥ ९९ ॥

राग गौरी ॥ राधे यामें कहा तिहारो । मुख हिमकर तनु हाटक बेनी सो पन्नग अँग कारो । गतिमराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो । नैन कुरंग वचन कोकिलके

नासा शुक कहां गारो ॥ विद्रुम अधर दशन दाडिम कन करो न तुम निरवारो। सूरदास प्रभु त्रिभुवनपतिको एकौ न उनहिं उबारो॥ २२०० ॥

राग बिहागरो ॥ तोहिं किनरूठब सिखई प्यारी। नवल वैस नव नागरि श्यामा वै नागर गिरिधारी ॥ सिगरी रैनि मनावत बीती हाहा करि हौं हारी। एतेपर हठ छांडत नाहीं तू वृषभानुदुलारी ॥ शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी। मेटहु त्रास दिखाय वदनविधु सूर श्याम हितकारी ॥ १ ॥

राग ईमन ॥ आजु तेरे तनमें नयो जोबन ठौरठौर सु बनायो पिय मिलि मेरे मन काहे रूसि रही वे काज। अधिक राखें बडाई तोहि तोहि करैं माई और सब त्रियनमें तू अधिकाई अरु तिनमें भाग सुहाग बिराजत आज॥ रिस दूरि करौ छिआ मानि मेरे कहे तोहिं रूसनै न आवै लाज। सूर प्रभुको औसेर अतिही भई अबेर री वेगैं चलि सजि शृंगार काढि माठी खग वारो आइकै साज ॥ २ ॥

राग पूरवी ॥ देखि री कमलनैन मधुरमधुर बैंननि हँसिहँसि कबके करत मनुहारि। जब हरि नीचे चितवत भरिभरि अँखियन लाडिली वारति मानकी रिस निवारि ॥ अति आसक्त जानि मनमोहन रीझि मान दान दै प्रीति बिचारि। सूरदास प्रभुके चरणन पूज री आली प्रेम उमँगि अंसु ढारि ॥ ३ ॥

राग ईमन ॥ अनबोली क्यों न रहै री आली तू आई मोसों बात बनावन। बहुत सही हौं घर आएते ऊपर जात न तू लागी है पाछिली सुरति दिवावन ॥ वै अति चतुर प्रवीण कहा कहौं जिन पठई तोको बहरावन। सूरदास प्रभु जियकी होनी की जानति कांच करोती मैं जल जैसे ऐसे तू लागी प्रगटावन ॥ ४ ॥

राग कान्हरो ॥ तू आई है बात बनावन। जाहि न ह्यांते बैठिरही है ए आई है मोहिं मनावन ॥ आरि करत कहि मोहिं सुनावत जाइ रहै नहिं ताके। को उनकी ह्यां बात चलावै इतनो हित है काके ॥ इक रिस जरति मनहिं मन अपने तोहीको वै भावत। सूरदास दरशन ता गृहको उहै ध्यान मन भावत ॥ ५ ॥

राग केदारो ॥ यह कहि क्रोध मगन भई। रही एकटक साँस बिन तन बिरह विवश भई ॥ बारबार सखी बुलावति कहा भई दई। नारि नउमी दशा पहुँची है अचेत गई ॥ श्याम व्याकुल धरणि मुरछे त्रिया रोष हई। सूर प्रभु गए तीर यमुना काम जरनि ठई ॥ ६ ॥

राग कान्हरो ॥ रिसमें रसकी बात सुनाई। चतुर सखिन यह बुधि उपजाई ॥ क्रोध मगन त्रिय चतुर जगाई। जागतै दूतिका बोली तोको श्याम बुलाई ॥ उमधि गई तनु सुरति सँभारी फिरि बैठी लै मान। कान्ह गए यमुनातट व्याकुल यह गति देखि अजान॥ काहेको बिपरीति बढावति यह कहि गई हरि पास। देखे जाइ सूरके स्वामी कुंजद्रुमनतर बास ॥ ७ ॥

राग बिहागरो ॥ हरि मुख राधा राधा बानी। धरणीपरे अचेतनहीं सुधिसखी देखि बिकलानी ॥ वासर गयो रैनि इक बीती बिन भोजन बिनपानी। बाँह पकरि तब सखिन

जगायो धनि धनि शारँगपानी ॥ ह्यां तुम विवश भए हौ ऐसे ह्वां तौ वै विवशानी । सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम दुहुँकी अकथ कहानी ॥ ८ ॥

राग आडानो ॥ लाल अनमने कत होत हौ तुम देखो धौं देखो कैसे कैसे करि ल्याइ हौं । जलनि कटकीवारू जैसे गाढे गहि ऐसी कठिन होती त्रियाकी प्रकृति हौंतो करही कर पविलाइहौं । रिस अरु रुचि हौं समुझि देखिहौं वाके मनकी ढरनि वाकी भावती बात चलाइहौं । सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं नेक न ह्वैहौं न्यारे जैसे पानीमें रंग मिलाइहौं ॥ ९ ॥

राग भैरव ॥ सखी गई हरिको सुख दै । व्याकुल जानि चतुरई कीन्ही अब आवति प्यारीको लै ॥ आतुर गई मानिनी आगे जाइ कह्यो अजहूँ रिस है । मोहन रहे मुरछि द्रुमके तर त्रिभुवनमें ह्वैहै यश है ॥ अजहूं कह्यो मानि री मानिनि उठिचलिमिलिपियको जिय लैहै । सूर मान गाढो त्रियकीन्हों कहै बात कोउ कोटिकलै है ॥ १० ॥

राग सारंग ॥ तूचलिरी बनबोली श्याम । कमलनैनके तू अति वल्लभ सुरति करी हरि आतुर काम ॥ मुरलीमें तुव नाम प्रकाशत तेरे हितको सुन री वाम । कोमल करनि सुमन बहु तोरत रुचिसों सेज रचत गृह धाम ॥ मन क्रम वचन शपथ चरणनकी बिसरत नहीं तुम्हारो नाम । सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि जो पायो चाहत विश्राम ॥ ११ ॥

राग रामकली ॥ रसिक राधे बोली नंदकुमार । दरशनको तरसत हरिलोचन तू शोभाकी धार ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रंभा रचि अनुसार । गोरि सकुचि शशि बिरथ कियो रथ मेरु उलथ्यो बडि तार ॥ कौन हेतुते मिल्यो सितासित बिछुरी कौन विचार । मन्दाकिनि मानो शिर धरिकै रुद्रनि करी पुकार ॥ राख्यो मेलि पीठिते परधन हर जु कियो बिनहार । सूरदास प्रभुसों हठ कीन्हों उठिचल क्यों न सवार ॥ १२ ॥

राग सारंग ॥ बोलत हैं तोहिं नंदकिशोर । मान छाँडि सखीनेक चितैरी पैयांलागौं करौं निहोर ॥ तरिवन तिलक बनी नकबेसरिचख काजर मुख सुरँग तमोर । सब शृंगार बन्यो यौवनपर लै मिलि मदनगोपाल अकोर ॥ लताभवनमें सेज बिछाई बोलत सकल विहंगम मोर । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको ज्यों दामिनिघनचंदचकोर ॥ १३ ॥

राग केदारो ॥ चल राधे बोलत नंदकिशोर । ललित त्रिभंग श्यामसुंदर घन नाचत ज्यों बन मोर ॥ छिनछिन विरस करति है सुंदरि क्यों बहरत मन मोर । आनँद कंद चंद वृंदाबन तू करि नैन चकोर ॥ कहा कहौं महिमा तुअ भागकी पुण्य गनत नहिं ओर । सूर सखी पियपै चलि नागरि लै मिलि प्राण अकोर ॥ तोहिं बोलै री मधु केशीमथन । यमुनाकूल अनुकूल तृषारत चकित विलोकत सकल पथन ॥ न करु बिलँब भूषण कृत दूषण चिहुर बिहुर नाना करन गथन । समुद कुमुद गति मदर मिलन दुति पसित भए सब नाथ नथन ॥ निकुंजानकी सैम साजे एकाकी रमत सखी बियो न सथन । अति जु कुसुमवास सखी री तुम्हारी आश हरिजू रचि धरे अपने हथन ॥ युग जु जातपल श्रीगोपालके कुटिल तमकि री चढे हैं रथन । सूरदास अतिगति कामरत वासर गतभयो-तुम्हरीकथन ॥ १४ ॥

राग सारंग ॥ मानिनि मानमनायो मोर । हौंमाई पठई हौं तोपै प्रीतम नंदकिशोर ॥ तेरे विरह वृषभानुनंदिनी मोहन बहरावत डोर । तानतरंग मुरलिमें लैलै नाम बुलावत तोर ॥ बलि तुहि जाउँ बेगि लै मिलऊ श्याम सरोज वदन तुव गोर । सूरदास ऐसी दृष्टि सुधानिधि चरणकमल कमलाचितचोर ॥ १५ ॥

मानिनि नेक चितै यहि ओर । नाशत तिमिर वदन प्रकाशत ज्यों राजत रवि भोर ॥ तुव मुख कमल मधुप मेरो मन बिंध्यो नैनकी कोर । वक्रविलोक माधुरी मुसुकनि भावत है प्रिय तोर ॥ अंतर दूरि करौ अंचलको होइ मनोरथ मोर । सूर परस्पर रचौ प्रेमवश दोउ मिलि नवलकिशोर ॥ १६ ॥

राग नट ॥ कहि पठई हरिबात सुचित दै सुनि राधिका सुजान । तैंजु वदन झाँप्यो झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मन मान ॥ यह पै दुसह जु इतनेहि अंतर उपजि परै कछु आन । शरद सुधा शशिकी नवकीरति सुनियत अपने कान ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप पिक कीर करत हैं गान । विद्रुम अरु बंधूक बिंब मिलि देत बविन छविदान ॥ दाडिम दामिनि कुंदकलीमिलि बाढ्यो बहुत बखान । सूरदास उपमा नक्षत्र गन सब शोभित विनभान ॥ १७ ॥

राग सारंग ॥ रही दै घूँघटपटकी ओट । मनो कियो फिरिमान मवासो मन्मथ बंकट कोट ॥ नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अगोट । भीतर भाग कृष्णभूपतिको राखि अधर मधु मोट ॥ अंजन आड तिलक आभूषण सचि आयुध बड छोट । भ्रुकुटी सूरगहीकर सारँगनिकर कटाक्षनिचोट ॥ १८ ॥

राग बिलाबल ॥ तैं जु नीलपट ओट दियोरी ॥ सुन राधिका श्याम सुंदरसों विनहि काज अतिरोष कियोरी ॥ जलसुत बिंब मनहु जल राजत मनहुँ शरद शशि राहु सियो री । भूमिघिसनि किधौं कनकखंभ चढिमिलि रसहीरस अमृतपियो री ॥ तुम अतिचतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियो री । सूरदास प्रभु अँग अँग नागरि मनो काम कियो रूप वियोरी ॥ १९ ॥

साँरगरिपुकी ओट रहे दुरि सुंदर साँरग चारि । शशिमृग फनिग ध्वनिग दोउ अँग सँग साँरगकी अनुहारि ॥ तामें एक और सुत साँरग बोलत बहुरि विचारि । परकृत एक नाम हैं दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि ॥ ढाकति कहा प्रेमहित सुंदरि साँरगनेक उघारि । सूरदास प्रभु मोहे रूपहि साँरगवदन निहारि ॥ २० ॥

यहि तेरे वृंदावन बाग । सुन राधिका कदमविटपनकी शाखा एक अमीफल लाग ॥ श्याम अरुण कछु अधिक पीत छबि वरणि जाइ नाहिं अंगविभाग । अतिसुपक्क मुरलीके परसत चुइचुइ उमँगि परत रसराग ॥ ब्रजबनिता वर वारि कनकमय रोके रहत सुधासुर-नाग । तुवप्रताप छुइसकत न सुंदरि सुर मुनिमर्कटकोकिल काग ॥ मैं मालिनि जतननि जल जु गयो सींचन सु हथपरे कर दाग । सूर सु श्रमउठि भेटि परस्पर पिउ पियूष पाए बडभाग ॥ २१ ॥

राग सारंग ॥ देखि श्यामको वदन शशिमाई मोहिं अपनपौ भूल्यो । विद्यमान या दृष्टिसरोवर मोहन वारिज फूल्यो ॥ वारि अगाध सघन वृंदावन चंचल लता तरंग । निगम मृणाल समृति पत्रावलि गावत मुनिजन भृङ्ग ॥ सुरभी सुभग हंस गोवृषमृग जलचर जीव अनंत । सूर कछू यह ह्यां री अद्भुत लीला कमलाकंत ॥ २२ ॥

राग बिलावल ॥ अब राधे नाहिंन ब्रज नीति । नृपभयो कान्हकाम अधिकारी उपजी है ज्यों कठिन कुरीति ॥ कुटिल अलक भ्रुवचारुनैन मिलि सचरे श्रवणसमीप सुमीति । वक्रविलोकनि भेदभेदिया जोइ कहत सोइ करत प्रतीति ॥ पोचपिशुन लस दशनसभासद प्रभु अनंग मंत्री बिनभीति । सखि बिन मिलै तौ नावनिऐहै कठिन कुराज राजकी ईति ॥ मंदहास मुख मंद बचन रुचि मंदचाल चरणन भइप्रीति । नखशिखते चित चोर सकल अंग जस राजा तस प्रजा वसीति ॥ तेरो तनु धनरूप महागुण सुन्दर श्याम सुनी यह कीर्ति । सुकरिसूर जेहि भांतिरहैपति जिनि बल बाँधि बढावहु छीति ॥ २३ ॥

राग नट ॥ राधे तेरे रूपकी अधिकाइ । जो उपमा दीजे तेरे तनु तामें छबि न समाइ । सिंह सकुचि सर व्यथा मरति दिन बिन सोई नीर सुकाइ । शशि उर घटत हेम पावक परि चंपक कुसुम रहे कुम्हिलाइ ॥ इभ तूटत अरु अरुण पंकभएविधिना आन बनाइ । कद्रुज पैठि पताल दुरेरहि खगपति हरिबाहन भएजाइ ॥ हंसदुरचो सर दुरचो सरोरुह गज मृग चले पराइ । सूरज दास बिचारि देखि मन तोर रसन पिक रही लजाइ ॥२४॥

राग मलार ॥ राधे तेरो रूप न आनसो ॥ सुरभीसुतपतिताको भूषण सुत धनउदितन पुजै भानसो । अमी रसाल कोकिला जु साधे अंबुज चित अंकुराभिरामसो ॥ विद्रुम अधरदशन दाडिम बिज भृकुटी किए सुढानसो । सूरदास प्रभुसो कब मिलिहौ सुफलरूप कल्यानसो ॥ २५ ॥

राग सारंग ॥ राधे यह छबि उलटि भई । सारंगऊपर सुन्दर कदली तापर सिंह ठई ॥ ताऊपर द्वै हाटक बरणौं मोहन कुंभ मई ॥ तापर कमल कमलबिच विद्रुय तापर करि लई । ताऊपर द्वै मीन चपल हैं सउती साध रही । सूरदास प्रभु देखि अचंभो कहत न परत कही ॥ २६ ॥

राग केदारो ॥ लागो या वदनकी बलाइ । खंजन तेरे खरे कटाक्षनि न्याउ गुपाल बिकाइ ॥ का पटतर द्यों चंद्र कलंकी घटत बढत दिन लाजलजाइ । जा शशिकी तुम आरि करतहौ चंद्र कलंकी घटत बढत दिन लाजलजाइ । जा शशिकी तुम आरि करतहो चंद्र निहारौ आइ ॥ ढोटा जो पैखरो अटपटो बातैं कहत बनाइ । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनते तनुकी तपत बुझाइ ॥ २७ ॥

राग बिलावल ॥ जलसु प्रीतम सुतरिपुबंधन आयुध आनन बिलख भयो री । मेरुसुतापति बसत जु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयो री ॥ मारुतसुतपति अरिपुर वासी पितु बाहन भोजन न सोहाइ । हरसुत बाहन अशन सनेही मानहु अनल देह दव लाइ ॥ उदधिसुतापति ताकर बाहन ता बाहन कैसे समुझावे । सूर श्याम मिलि धर्मसुवनरिपु ता अवतारहि सलिल बहावै ॥ २८ ॥

राग नट ॥ लोचनश्याम जूके सायक । नैन चितै वृषभानुनंदिनी वश करि गोकुलनायक ॥ यहै जानि पठई नँदनंदन तुम सब बिधि सुखदायक । तू ब्रजनाथशिरोमणि सजनी श्यामसुन्दर पिय लायक ॥ लग लागे पागे उर अतर कठिन शिलीमुख पायक । सूरदासप्रभु मोहन जोरी करी कुंज मनभायक ॥ २९ ॥

राग सारंग ॥ जबते श्रवण सुन्यो तेरो नाम । तबते हा राधा राधा हरि इहै जु मंत्र जपत दुरि दाम ॥ बस निकुंज कालिंदीके तट सुरभी सखा छांडि सुखधाम । विरह वियोग महायोगी ज्यों जागतही बीतत युगयाम ॥ कबहुँक किसलय पीठ सुचिर रुचि कबहुँक गान करत गुणग्राम । कबहुँक लोचन मूदि मौन ह्वै चित चिंतत अँगअँग अभिराम ॥ तर्फत नैन हृदय होमत हवि मन वच क्रम औरै नहिं काम तरफत नैनहु देत मनोहर ब्रह्मभोज बोलत विश्राम । सूर श्याम कृशगात सबहि विधि दरशन दै पुरवै पियकाम ॥ ३० ॥

राग अडानो ॥ मोहन नीकोरी अतिनीको । तासों न रुसन कीजै हितकै मनाइ लीजै हँसतहँसत दूरि करै न रिस जीको ॥ अतिहि मानिनी जेजे तेऊ मैं मनाइ दई अतिहि कठिन हठ देख्यो री तो तीको । दूसरी यामिनि गई त्योंत्योंतू हठीली भई सूर निरखि मुख देखौ प्यारी पीको ॥ ३१ ॥

राग बिहागरो ॥ और सखी इक श्याम पठाई । हरिको विरह देखिभई व्याकुल मान मनावन आई ॥ बैठी आइ चतुरई काछे वह कछु नहीं लगार । देखतिहीं कछु और दशा तुव बूझति बारंबार । मनमन खिझति मानिनी याको कौने इहां पठाई । सूर सबन कछु मान मनायो सो सुनिकै इह आई ॥ ३२ ॥

राग बिहागरो ॥ अजहूं मान तजन नहिं प्यारी । मदननृपतिके सैन साजिकै घेरे आनि विहारी ॥ इतने कटक देखि मनमोहन भीत भए भय भारी । कुसुमबाण जित तितते छूटत खगरव घटा सवारी ॥ पल्लव पट निशान भँवरा भर मंजरी सलिल साटी । सूरदास प्रभुके सहायको उठि चलि वेगि हकाटी ॥ ३३ ॥

राग सारंग ॥ वेगि चलौ बलि कुँवरि सयानी । समय वसंत विपिन रथ हैंगे मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहुँदिशि चांदनि निशा चंचली मनो धवल धर धूरि उड़ानी । सोरहकला छपाकरकी छबि शोभित शीश छत्र शिर तानी ॥ बोलनि हँसनि चपल बंदीजन मनहु प्रशंसत पिक वर वानी । धीर समीर रटत वरअलिगण मनहुँ कमोदिक मुरलि सुठानी ॥ कुसुमशरासस अधिक विराजतकठिन मानगढ अति अभिमानी । सूरदास प्रभुकी है यह गति करहु सहाय राधिका रानी ॥ ३४ ॥

राग मलार ॥ सुन री सयानी त्रिय रूसिबेको नेम लियो पावसदिनन कोउ ऐसो है करत री । दिशिदिशि घटा उठी मिलि री पियासों रूठी निडर हियो है तेरो नेक न डरत री ॥ चलिए री मेरी प्यारी मोको मान देनहारी प्राणहूते प्यारे पति धीर न धरत री सूरदास प्रभु तोहिं दियो चाहै हितचित हँसि क्यों नमिलै तेरो नेम है टरत री ॥ ३५ ॥

सेज रचिपचि साज्यो सदन कुंजनिकुंज चित चरण लाग्यो छतिया धरकि रही। हाहा चल प्यारी तेरो प्यारो चौंकि चौंकि परै पातकी खरक पिय हियमें खरक रही॥ बात न धरत कान तानतिहै भौंहबान तऊ न चलति वाम अँखिया फरक रही। सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्यों ज्यों कह्यो त्योंत्यों बरु उतको सरकि रही ॥ ३६ ॥

तूतो मोसों बात न कहति माई चलौगी कहांते। काहेको गहरु कीजे बिन थर कहा लीजै दीजै जाइ उत्तर मैं आईहौं जहांते॥ अनोखी मानिनी नई पाहन पूतरी भई बैन न वदति और जरति नहांते। आई हौं शपथ खाइ जात न परत पाँइ सूरदास प्रभु नवल पहाँते ॥ ३७ ॥

राग सारंग ॥ उतते वे पठवत इतते ए नहिं मानत हौं तौ दुहुंनि बिच चकडोरी कीनी। क्रोध भेष मुख सुदेश नैनन छबि न कहि आवे आतुर ह्वै उठिधाई रावरे लीनी॥ तामरस लोचन हाव भाव बिन करै माने न मानिनी मान रंगभीनी। सूरज प्रभु राइ शिरोमणि आपुहि चलि देखौ क्यों न नायका नवीनी ॥ ३८ ॥

हौं पिय रीझि आई गईही मान छुडावन पिय रीझि आई। ऐसी छबि राजतहै मोपै सो वरणी नहिं जाई॥ आपुन चलिए वदन देखिए जौलौं रहे निठुराई। सूर श्याम प्यारी अति राजति गवरीय दुहाई ॥ ३९ ॥

राग कल्याण ॥ मैं तुम्हैं हँसत खेलत छांडिगई अब न्यारे अन बोले रहे दोऊ। इत तुम रूखे ह्वै रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उरमाइ मुख जंघ लगाइ रही ओऊ॥ नीची दृष्टि करी धरणी नखनि करोवति एहो पिया तबहौं एकएक घूँघटतन चितै रही आदि कहाहो करो अब सोऊ। सूरदास प्रभु प्यारी अंकभरि जाइ लीजै छोडो छोडो कहनदेहु और न मानै कोऊ ॥ ४० ॥

राग ईमन ॥ अजहुँ रैनि तीन यामहै जू काहेको हरबरात श्यामजू। मैंतौ वाकी प्रकृति लिए कैहौं बात जोपै रिस देखि हौं तौ घरिक लागिहै तिहारी प्यारी लाडिली वामहैजू॥ पैज किए जाति ताहि अवलिए आवतिहौं मेरे तौ तिहारे सुख सुख है याते कौन काम है जू। सुनहु सूरज प्रभु अबके मनाइ ल्याऊँ बहुरि रुठाएहौ जू तौ मेरी रामराम है जू ॥ ४१ ॥

राग सारंग ॥ जहां बैठे माधौ तहां तू बुलाई राधे यमुनानिकट शीतल छहिआं। आछी नीकी लागति कुसुंभि सारी गोरे तन परम चतुर चलि हरि पहिआं॥ दूती एक गई मोहनपै जाइ कह्यो यह पिय पहिआं। सूरदास मुनि चतुर राधिका श्याम रैनि वृंदावन महिआं ॥ ४२ ॥

राग सूही ॥ झूमक सारी तन गोरो हो। जगमगिर रहो जराइ कोटीको छबिकी उठत झकोरोहो। रत्नजडितके सुभग तरौना मनहु जात रबि भोरे हो। दुलरीकंठ निरखि पिय इकटक दृगभए रहे चकोरे हो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको रीझिरीझि तृणतोरेहो ॥४३॥

राग ईमन ॥ विरस कीजै न भामिनि रसमें .रिसकी बात। हौं पठई तोहिं लैन साँवरे तोहिं बिनु कछु न सोहात॥ हाहाकरति तेरे पायँन परति हौं छिनछिन निशि घटिजात। सूर श्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात ॥ ४४ ॥

राग बिलावल॥उठ राधे कत रैनि गँवावै। महिसुत गति तजि जलसुतगति ले सिंधुसुता-पति भवन न भावै॥ अलि बाहनको प्रीतम बाला ता बाहन रिपु ताहि सतावै। सो निवारि चलि प्राणपियारी धर्म सुनहि मति भाव न पावै॥ शैलसुतासुत बाहन सजनी ता रिपु ता मुख शब्द सुनावै। सूरदास प्रभु पंथनिहारत तोहिं ऐसो हठ क्यों बनि आवै॥ ४५॥

राग बिहागरो॥ उत्तर न देत मोहिनी मौन ह्वै रही री सुनि सब बात नैकहु न मटकी री॥ अबधौं चलैगी कब रजनी गई री सब शशिबाहन घरनी वै देखि लटकी री॥ चैन री करे थरे री मानि कपोल भव नख लिखै तिलहु न कछु मटकी री। मुग्ध बधूरी शठ काहेको करोहै हठ परम भावती तू नागर नटकीरी॥ ध्रुवसमान आएरी जु सप्तऋषि बहुरि तौ बेरह्वैहै तमचुर रटकी री। सूर सखि जाइचलि राधिकाकुँवरि चलि आजु छबि नीकी तेरे आछे नीलपटकीरी॥ ४६॥

राग सारंग॥ जिनि हठ करहु सारँगनैनी। सारँग सजि सारँगपर सारँग ता सारँगपर सारँग बेनी॥ सारँग रसन दशन पुनि सारँग सारग सुत दृग निरखी पैनी॥ सारँग कहौ सु कौन बिचारौ सारँगपति सारँग रचि मैनी॥ सारँग सदनहि लै जु बरन गई अजहुँ न मानति गत भई रैनी। सूरदास प्रभु तुव मगजोवै तू अंधकरिपु तारिपु सुखदैनी॥४७॥

राग बिहागरो॥ शर्वरी सर्व बिहानी तोहिं मनावति राधारानी। शुक्र उदय होन लाग्यो जागे तमचुर ढरिआई जु मृगानी। प्रफुलित कमल गुंजारकरत अलि पहुफाटी कुमुदिनि कुँभिलानी। सूर श्यामबन मुरछि परेहैं माननिवारो मो पैक्यों झहरानी॥ ४८॥

राग बिहागरो॥ श्यामा प्यारी बोलन लागे तमचुर घटिगई रजनी। अरी वै मनमोहन ब्रजनायक ठाढे सजनी॥ ठाढे हैं हरि कुंज द्वारे ललित वेणु बजाइ हो। श्रवण सुनत कैसे रहत कैसे तोहिं गेह सुहातहो। तुम कुँवरि वृषभानुकी कछु नेह प्रीति न जानहू। कहि पठई हरि तोहिं काहे न चित्तमें कछू आनहू॥ नंदनंदन कह्यो ऐसे सुंदरी ह्यां आइहो। और नहिं कछु काज बनमें नेकमधुर सुर गाइहो॥ सूर प्रभुहि बिचारि मनमें प्रीतिसों उर लाइए। यहै पुनि पुनि मैं कहति राधिका मनबांछित फल पाइए॥ ४९॥

राग केदारो॥ मोहन तेरे अधीन भए री इति रिस कबते कीजतरी गुण आगरी नागरी। तेरे अन उत्तर सुनिसुनि श्याम हँसिहँसि देत नैकचितै इत भाग आगरी॥ तेरोई भागसुहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथे रति री तू सुन रूप उजागरी। सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तुही तुही रट लागी जैसे मृगिनी भूली बागरी॥॥ ५०॥

राग नट॥ कौन कुमति आई री जो कह्यो नमानति। छाँडि मान सुन बात सयानी कत हरिसों हठ ठानति॥ यह निशि वृथा बिहाय पिया बिन सोच नहीं उर आनति। बीउत श्याम श्याम दामिनिको मनो शरद ऋतु जल घटत न जानति॥ धनुप कलास सही सब सिखि कै भई सयानी गानति। सूर सुंदरी आपुही कहा तु शर संधानति॥५१॥

तू सुन कान दैरी मुरलीध्वनि तेरे गुण गावैं श्याम कुंज भवन। सन्मुख ठाढे हैं ताहीको अंक भारत तेरे तनु परसे ज्यों आवतु तवन ॥ तेरो स्वरूप आनि उर अंतर नैन मूँदि निकसन कहत न करतगवन। सूरदास प्रभुके तू तन मन रमि रही रोमरोम प्रति याहीते नाम पायो राधारवन ॥ ९२ ॥

राग केदारो ॥ प्यारी है प्रीतम आरति करतु। तुम्हरे काजे कुँवरि राधिका मेरे पांइनि परतु ॥ वरही मुकुट लुढत अवनी पर नाहिंन निजभुज भरतु। बारंबार रहटके घट ज्यों भरिभरि लोचन ढरतु ॥ अति आधीन मीन ज्यों जलबिनु नाहिंन धीरज धरतु। सूरसुजान सखी सुन तुम बिनु मन्मथ पावक जरतु ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ मृगनैनी तू अंजन दै। नवल कुंज कालिंदसुतातट पीको सर्वसु लै ॥ शोभित तिलक मृगमद रुचि शुचि भुव बंक चितै ॥ हाटक घाटै सुधा पियनको नागिनि लट लटकै। नैन निरखि अँग अंग निरखियो अनख पिया जु तजै ॥ बादर वसन उतारि वदन यों चंदा जों न छपै। खंजन मीन अंजन दै सकुचे कविसो कहि गनै ॥ सूर श्यामको वेगि दरश देहु काम मदन जुडै ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ राधे कत रिस सरस तई। तिष्ठति जाइ बारबारनि पै होति अनीत नई ॥ नित तुव जलनि सिंधु सुत मानत मृगमद श्याम दई। जल थल खगनि सुमन गुरु दोऊ द्विज दुति किरन भई ॥ विरहत कुंज विलासिनी पद्मिनि सकुच नसे तकई। दुखी दुरे फल त्राहि विरहिनी अति अपराध बई ॥ अब तुम जाहु निकुंज भामिनी नातरु करत खई। परसै सूर चतुर चिंतामणिविपुल विलास मई ॥ ९५ ॥

राग देव गंधार ॥ मानिनि मानत क्यों न कह्यो। प्रथम श्याममन चोरि नागरी अब क्यों मानगह्यो ॥ जानति कहा रीति प्रीतिमकी वन जन जोग मह्यो। रुद्र वीर रवि शेष सहसमुख तिनहुँ न अंत लह्यो ॥ बैठे नवल निकुंज मंदिरमें सो रस जात बह्यो सूरज सखि मोहनमुख निरखहु धीरज नाहिं रह्यो ॥ ९६ ॥

राग नट ॥ कुंजभवनमें ठाढे देखो अँखियनभरि तब मैं जाऊंगी बलि। मोपै न देखे परे खरे द्रुमडार गहे अकेले नेक तू ठाढीहो ढिग चलि ॥ तेरो री वदन प्रफुलित अंबुज हरिजूके नैना मैं देखे अति आतुर अलि। सूरदास नँदनंदन प्यारे नेक न कीजे हाहा दूरि करो मानै मिलि ॥ ९७ ॥

राग केदारो ॥ तेरे मान बनहुतरी मानिनि नीको लागत ऐसेहि जौलौं लालहिलै आऊं। औरनकी हाँसी खेल तिहारी रुषय माय विरसमें यह रस नैनन आनि देखाऊं ॥ उलटि पियपै जाऊं नौतम चोप बढाऊं सोरह कलाको शशि कुहू बिग साऊं। सूरदास प्रभु गिरिधरनसों हिलिमिलिवेको यह सुख रूप अनूपम पाऊं ॥ ९८ ॥

राग विहागरो ॥ कहत श्यामसों जाइ मनावो मेरे कहे न मानै जू। कहा रही मौन घालि न कहूं अनुमानै जू ॥ कहा मनमें घालि बैठी भेद मैं नाहिं लखि सकी। आप ह्यां वह वहां बैठी जात आवत हौं थकी ॥ नेकहू जो कह्यो मानै कोटि भांतिन मैं कही। हाहा करि मनुहारि सुनतही अतिरिस गही ॥ कहा बैठे चले बनिहै आपुहू नाहिं मानिहौ। तुम कुँवर घरहीके बाढे अब कछू जिय जानिहौ ॥ वेगि चलिए अनखि जैहै तुम इहां

उह वहां जरति है । वाके जिय और द्वै है कपट करि हठ धरति है ॥ राधिका अति चतुर जानौ जाइ ता ढिगही रहौ । कहा जो मुख फेरि बैठी मधुर मधुर वचन कहौ। सूर प्रभु अब बनै नाचै काछ जैसो तुम कछ्यो । कहियत गुण प्रवीण राधा क्रोधहीमें विष भछ्यो ॥ ५९ ॥

सुनि यह श्याम विरहभरे । बारं बारहि गगन निहारत कबहूँ होतखरे ॥ मानिनी नाहिं मान मोच्यो दूसरी निशि आजु । तब परे मुरछाइ धरणी काम करयो अकाजु ॥ सखिन तब भुज गहि उचाए कहा बावरे होत । सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपनो गोत॥६०

राग बिलावल सूहीं ॥ श्याम चतुरई कहाँ गँवाई । अब जाने घरके बाढे हौ तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई ॥ बिना जोर अपनी जाँघनके कैसे सुख कियो चाहत । आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन दाहत ॥ उहई रहौ कहैगी तुमको कतहूँ जाइ रहे बहु-नायक । सूर श्याम मनमोहन कहियत तुम हौ सबही गुणके लायक ॥ ६१ ॥

राग रामकली ॥ तब हरि रच्यो दूती रूप । गए जहँ मानिनी राधा त्रियास्वांग अनूप ॥ जाइ बैठे कहत मुख यह तू इहाँ वन श्याम । मैं सकुचि तहँ गई नाहीं फिरी कहि पति वाम ॥ सहज बातैं कहत मानो अब भई कछु और । तू इहां वै वहां बैठे रहत एकहि ठौर ॥ कहौ मोसों कहा उपजी वै टरत तुव नाम । सुनतिहैं कछु बचन राधा सूर प्रभु वन धाम ॥ ६२ ॥

राधे तैं अति मान करयो । यह कहि हरि पछितात मनहिंमन पूरब पाप परयो ॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेष धरयो । तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हरयो । मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भरयो । शिव गणसहित समेत महामुनि को व्रतते न टरयो ॥ तातनकी छबि निरखि सूर शिव छत ज्यों ज्ञान गरयो । जेहि जारयो जग काम सु माधौ तेरे हठ जात जरयो ॥ ६३ ॥

राग बिहागरो ॥ इतो श्रम नाहिंन तबहूं भयो । धरणीधर बिधि वेद उधारयो मधुसो शत्रु हयो ॥ द्विज नृप कियो दुसह दुख मेटयो बलिको राज लयो । तोरयो धनुष स्वयं-बर कीनो रावन अजित जयो ॥ अघ बक वत्स अरिष्ट केशि मथि दावानल अचयो ॥ त्रियवपु धरयो असुर सुरमोहे को जग जो निद्रयो ॥ जानो नहीं कहा या रसमें जेहि शिर सहज नयो । सूर सुबल अबतोहिं मनावत मोहिं सब बिसरि गयो ॥ ६४ ॥

राग मलार ॥ समुझिरी नाहिन नई सगाई । सुन राधिके तोहिं माधौ सों प्रीति सदा चलिआई ॥ जब जब मान कियो मोहनसों विकल होत अधिकाई । बिरहानल सब लोक जरतहैं आपु रहत जलशाई ॥ सिंधु मथ्यो सागर बल बांध्यो रिपुरण जीति मिलाई ॥ अब सो त्रिभुवन नाथ नेहवश बन बाँसुरी बजाई । प्रकृति पुरुष श्रीपति सीतापति अनुक्रम कथा सुनाई । सूर इती रसरीति श्यामसों तैं ब्रज वसि बिसराई ॥ ६५ ॥

राधिका तजि मान मयाकरु । तेरे चरण शरण त्रिभुवन पति मेटि कल्प तू होहि कल्प तरु ॥ जिनके चरण कमल मुनि वंदत सो तेरो ध्यान धरै धरणीधर । अहो बावरी कहा तैं

कीन्हों प्रीतम पठै दियो बैरनिघर ॥ तुम नागरि वै श्री नागरवर तुम सुन्दरि वै श्रीसुंदर वर वै ॥ हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानु सुता हरिको हर ॥ जो झुकि कछुक कह्यो चाहतिहै उनहिं जानि सखि मोहीसों लर । तबहीं सूर निरखि नैनन भरि आयो उघरि लाल ललिताक्षर ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम चतुरई जानतहौं । ए गुण तुम अजहूं नहिं छांडो इन छंदनिमैं मानतिहौं ॥ तुम रसवाद करन अब लागे जे सब तेउ पहिचानतिहौं । वै बातैं अब दूरि गई जू ते गुण गुणि गुणि गानतिहौं ॥ यह कहि बहुरि मान गहि बैठी जियही जिय अनुमान तिहौं । सूर करो जोइ जोइ मन भावै इहै बात कहि भानतिहौं ॥ ६७ ॥

राग बिहागरो ॥ यह कहि बहुरि मान कियो । रिसनि थरथर होति बाला योग नेम लियो ॥ कहति मनमन बहुरि मिलिहौं अब न करौं बिलास । ध्यान धरि बिधिको मनावै लेति उरध उसाँस ॥ त्रियाको जिनि जन्म पाऊं जिनि करै पति नारि । जनम तौ पाषाण मांगौं सूर गोद पसारि ॥ ६८ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम चले पछिताइकै अति कीन्हों मान । व्याकुल रिस तन देखिकै सब गयो सयान ॥ बैठे शीश नवाइकै बिन धीरज प्रान । दूती तुरत बोलाइकै पठई दै आन ॥ बिरहाके वश हरि परे त्रिय कियो अनुमान । धीर धरौ मैं जातिहौं करिये कछु ज्ञान ॥ सावधान करिकै गई दूतिका सुजान । सूर महा वह मानिनी मानो पाषाण ॥ ६९ ॥

राग धनाश्री ॥ प्यारी अंश परायो दै री । मेरी सिख सुन रसिक राधिका मनमें न्याउ चितै री ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमर सबै री । हर सुरेश सुर शेष समुझि जिय क्यों प्रभु पान करै री ॥ वह झूठो शशि जानि बदन बिधु रच्यो बिरंचि इहै री । सौंप्यो सुपति बिचारि श्याममित सो तूं रही लटि लै री ॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहां सचै री ॥ सिंधु सुधा निधि अर्पि अबहिं उठि विधु पुनि नहीं पचै री ॥ ७० ॥

राग बिहागरो ॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे । रतिपति अशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैहै पद हरषि पखारे । अर्घ्यादिक आनंद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे ॥ धूप सुवास ततक्षण दशकरि मनमोहन हँसि दीप उजारे । वचन रचन भ्रुवभँग अवर अंग प्रेम मधुर रस परसिन न्यारे ॥ उचित केलि कटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अंकम हठि हारे । नखछत छार कसाई कुचग्रह चुंबन सर्पि समर्पि सवारे ॥ अधर सुता उपदंश सींक शुचि विधु पूरण मुखवास सचारे । सूर सुकृत सन्तोषि श्यामको बहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे ॥ ७१ ॥

राग धनाश्री ॥ अब मोहिं जानिए सो कीजै । सुन राधिका कहत माधो यों जो बूझिए दंड सो लीजै ॥ उर उर चापि बांधि भुज बंधन नखनाराच मर्म तकि दीजै । भौंह चढाइ रिसाइ दशन दशि अधर सुधा अपने मुख पीजै ॥ जिनि करै बिलंब भामिनी सुरस सोई

करौ जेहि गात पसीजै । ग्रंथि गुणनि गहि गूढ गांठि दै छुटै न कबहूं श्रमजल भीजै ॥ सुन सखि सुमुखि पाँइ लागतिहौं दंपति अरसपरस तनु छीजै । सूर श्याम सँग रस मिलि विलसहु जीवन सफल यहै सुख लीजै ॥ ७२ ॥

राग गुंडमलार ॥ गह्यो दृढ मान वृषभानुवारी । डुलै बरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसों डुलै कंचन मेरु रहि निहारी ॥ रैनि रवि उठौ बासर चंद्र होइ बरु डुलैं सब नखत यह होइ भाखै । धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेष शिर डुलै नहिं मान नाखै ॥ बांझ सुत जनैं उकठो काठ पल्लवै विफल तरु फलै बिन मेघ पानी । सूर प्रभु यह सुनौ बरु अचल चल थकै मनहिं मन दूतिका कहति बानी ॥ ७३ ॥

राग कान्हरो ॥ दूती यह अनुमान करै । कासों कहौं सुनै को मेरी कैसे कह्यो परै ॥ हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोच करै । कैसे बचन कहौं या आगे यह अनुमान करै ॥ चतुर चतुरई फबै न यासों सुनि रिस अतिहि करै । सूर सहजही मान मनाऊं जो यह कबहुं करै ॥ ७४ ॥

मानलीला । राग मलार ॥ मान मनायो राधा प्यारी । दहियत मदन मदन नायकही पीर पीरते न्यारी ॥ तू जु झुकतहै और रूसने अब कहि कैसे रूषी । बिनही शिशिर तमक तामसते तुव मुख कमल विदूषी ॥ सुनियत बिरद रूप रस नागरि लीन्ही पलटि कछूसी । तेरे हती प्रेम संपति सखी सो संपति केहि मूसी । उन तन चितै आपतन चितवहु अहो रूपकी राशी । पिय अपनो ना होइ तऊ ज्यों ईस सेइए कासी ॥ तुमतौ प्राण प्राणवल्लभके वै तुव चरण उपासी । सुनिहै कोऊ चतुर नारि कत करत प्रेमकी हांसी ॥ ज्यों ज्यों मौन भई तुम उनके बाढी आतुरताई । कान्ह आन बनितारत सुनि सुनि जिय बैठी निठुराई ॥ हिए कपाट जोरि जडि ताके बोलत नहीं बुलाई । हा राधा राधा रट लागी चित चातककी नाई ॥ जोपै मानत भांवरि नाहीं भांवरि मानन होई । हियते वादि प्रेम रति वति हो अंत भावतो सोई ॥ जो गोरी पियनेह गरव तौ लाख कहै किन कोई । काहू लियो प्रेम परचो वह चतुर नारि है सोई ॥ कत होरही नारि नीची करि देखत लोचन झूले । मानहु कुमुद उडुपति सों किए धर्म मुख फूले ॥ वै तौ हित वृषभानु नंदिनी सेवत यमुना कूले । तेरे तनक मान मोहनके सबै सयानप भूले ॥ अहो इंदुवदनी सुन सजनी कत पलकन पल जोरै ॥ तुव मुख दरश आशके प्यासे हरिके नयन चकोरै ॥ तेरे बल भामिनी वदत नहिं उपजत काम हिलोरे । सुनियत हते चतुर नागर ते तनक मान भये भोरे ॥ तब दूती फिरि गई श्याम पै श्याम वहां पग धरिए । जेहि हठ तजै प्राण प्यारी सो जतन सवारे करिए ॥ वे वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काज का सरिए । कीजै कहा च.व अपनी कत इहां मसूसन मरिए ॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वै रहे आगे ठाढे । भूलि गयो सब चतुर सयानप हुते जो बहु गुण गाढे ॥ डोलत नहिं बोलत न बुलाए मनहुँ चित्र लिखि काढे । परचो न काम नारि नागरसों हैं घरहीके बाढे ॥ निबह्यो सदा औरहीको हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी । आपुनही अधीन ह्वै ठाढे देखि गोवर्धनधारी ॥ प्राणहि पियहि रूसनो कैसो सुन वृषभानुदुलारी । कहूँ न भई सुनी नहिं देखी रहै तरंग

जल न्यारी ॥ रिस रूसनो मिलन पलकनको अति कुसुंभरँग जैसो। रहै न सदा छुटत छिनभातर प्रात ओस तृण तैसो ॥ वे हैं परममलीन किए मन उठि कहि मोहन वैसे। घर आए आदर न चूकिए बैठी दूध अचैसे ॥ वे तौ भँवर भावते वनके और वेलिके तोषी। कीजै मान मदनमोहनसों बात कहै हँसि नोखी ॥ तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहिं उनहिं है ऐसी। याहीते तुम गर्व भरीहौ वे ठाढे तुम वैसी ॥ जोबनजल वर्षाकि नदी ज्यों चारि दिनाको आवै। अंत अवधिही लौं नातो जो कोटिक कलह उठावै ॥ वल्लभको बल्लभको मिलिबौ तुमहिं कौन समुझावै। लै चलि भवन भावतेहिं भुज गहि को कहि गारि दिवावै ॥ झुकि ठेली ह्यांते रिसहाती कौने सिखै पठाई। लै किन जाहि भवन अपने ह्वां लरन कौनसों आई ॥ कांपति रिसन पीठिदै बैठी सहचरि और बुलाई। कछु सीरी कछु ताती वाणी कान्हहि देत दोहाई ॥ कबहुँक लै धरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो। इत नागरी उतहि वै नागर इन बातनको चाढो ॥ बडे बडाईको प्रतिपालैं बडो बडाई छीजै। ताके बडी बडी शरणागत वैर बडेसों कीजै ॥ तू वृषभानु बडेकी बेटी तेरे ज्याए जीजै। राखहु वैर हिए गहि मोसों वैर हि पीठि न दीजै ॥ भामिनि और भुअंगिनि कारी इनके विषहि डरैए। राचेहूं विरचे सुख नाहीं भूलि न कबहुँ पत्यैए ॥ इनके वश मन परे मनोहर बहुत जतन करि पैए। कामी होइ काम आतुर तेहि कैसेकै समुझैए ॥ जे जे प्रेमछके मैं देखे तिनहिं न चातुरताई। तेरे मान सयान सखी तोहिं कैसेकै समुझाई ॥ बहुरो भए सहचरी मोहन ताकैं अपनी वातैं। लागे काम सखीके धोखे कहत कुंजकी बातैं ॥ सुधि करि देखि रूसनो उनको जब खाई हाहा तैं। आप पीर परपीर न जानति भूली जोवन मातैं ॥ कबहुँ न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तनुते प्राण अबोले। होत कहाहै आलसहू मिस छिन घूँघटपट खोले ॥ पावति कहा मानमें तू री कहा गँवावति है हँसि बोले। कालिहि प्राणनाथ तुम प्यारी फिरिहौ कुंजनि डोले ॥ कहा रही अतिक्रोध हिए धरि नेक न दया दयानी। प्रगट्यो जानि मदनमोहनतनु बातबात अधिकानी ॥ हितकी कहे अनख लागतिहै समुझहु भले सयानी। मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही गरबानी ॥ रही मूँदि पटसों हठि भामिनि नेक न बदन उघारै। हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों दून उतारै ॥ धरे ग्रीवपट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारै। जा आधीन देव सुर नर मुनि सो दीनता पुकारै ॥ खन गावै खन बेन बजावै कमलभृंगकी नाहीं। खन पायनतन हाथ पसारै छुवन न पावै छाहीं ॥ खनखन लेहि बलाइ वामकी लालच करि ललचाही। कहै आनकी आन सौंह दै खनखन हाहा खाही ॥ कबहुँक निकट बैठि कुसुमावलि अपने कर पहिरावै। जोइ जोइ बात भावति हि भावै सोइसोइ बात चलावै ॥ जितहि जितहि रुख करै लडैती तितही आपुन आवै। नाचत जाके ढर त्रिभुवन तेहि नेकहु मान नचावै ॥ जिन नैनन देखत सुख भूले ते दुख नैन समोवै। जो मुख सकल सुखनिको दाता सो मुख नेक न जोवै ॥ जेहि लिलाट त्रिभुवनको टीको सो पाँइनतन सोवै। राजहिं जाहि सनक अरु शंकर बिरचै ताहि बिगोवै ॥ एते मान भये वश मोहन बोलत कटुक डराई। दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिन परसत जिनि बुझिजाई ॥ ताते करि हरि छल दूतीको कहत बात सकुचाई। कपटी कान्ह पत्याहि न राधे तोहिं वृषभानुदोहाई ॥ पठई मोहिं दई उरमाला

जहां कहूँ रति मानी । हौं बहराइ इतहि आई री आली तोहिं डरानी ॥ काहेको रूसनो बयो है मोसों कहो कहानी । नवनागर पहिचानि राधिका यह छल अधिक रिसानी ॥ जनिए कहा कौन अपराधिनि आनि कान है लागी । सुनिसुनि उठी सुंदरीके जिय प्रगट कोपकी आगी ॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीली प्रेमपियूषन पागी । किती दई शिख मंत्र साँवरे तउ हठ लहरि न जागी ॥ कहिए कहा नंदनंदनसों जैसे लाड लडाई । कौन न भई मानिनी उनसों जेते मान मनाई ॥ नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरताई । इन छँद बंदनि छँदे पैए प्रेम न पायो जाई ॥ हारे अबलासों बल मोहन तजत न पाणि कपोलै । मानहु पाहनकी प्रतिमासी नेक न इत उत डोलै ॥ इन धोसनि रूसनो करतिहौ करिहौ कबहिं कलोलै । कहा दियो पढि शीश श्यामके खैंचि आपनो सो लै ॥ तोहिं हठ परयो प्राण वल्लभसों छूटत नहीं छुड़ाए । देखहु मुरछि परयो मनमोहन मनहु भुअंगिनि खाए ॥ काहेको अपराध लेतिहै करति कामको भायो । नेक निरखि उठि कुँवरि राधिका जो चाहतिहै ज्यायो ॥ बहुरौ लियो जगाइ मनोहर युवतिन जतन बनायो । विरहताप बरदाप हरनको सरस सुगंध चढायो ॥ जिते करे उपचार मनहु तनु जरत माँझ घृत नायो । काम अग्निते बिना कामिनी काहि कौनै सचुपायो ॥ जिनके हित तू त्रिभुवन गाई ठकुरानी करि पूजी । आनँदअंग संग सुख विलसत बनना यक है कूजी ॥ अनुदिन काम विलास विलासिनि वै अलि तू अंबूजी । ऐसे पियसों मान करति है तोसी मुग्ध न दूजी ॥ मेरो कह्यो मानती नाहिंन ह्यां अरु कौन कहैगो । राखत मान तिहारो मोहन ऐसी कौन सहैगो ॥ जानहुगी तब मानहुगी मन जब तनु मदन दहैगो । करतिहौ मान मदनमोहनसों मानै हाथ रहैगो ॥ नख लिखि कह्यो जाहु तहँई उठि जाके हाथ । बिकाने राचे रहत रैनि दिन मोहन हरद चून ज्यों साने ॥ मुख मेरो हौ मान मनावत मन अंतहि रुचि माने । गावत लोग विरद सांचोई हरि हित कौन सिराने ॥ तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहिं प्राण धन मेरे । हौं सेवक शरणागत आए जानहु जतन घनेरे । तेरीसों वृषभानुनंदिनी एक गांठि सौफेरे । हितसों वैर नेह अनहितसों इहै न्याव है तेरे ॥ परधन रवक दवन दारुन द्रुम डोलनि कुंजएमाहीं । चारन धेन फेन मथि पीवन जीवन रोकत खाहीं ॥ डासन कास कामरी ओढन बैठन गोप सभाही । भूषण मोर पयूखन मुरली तिनके प्रेम कहाही ॥ प्रेम पतंग परे पावकमें प्रेम कुरंग बँधेसे । चातक रटै चकोर न सोवै मीन बिना जल जैसे ॥ जहां मान तहां मान मनायो प्रेम न गनिये ऐसे । प्रेममांझ जो करहिं रूसनो तिनहिं प्रेम कहि कैसे ॥ कांपत रिसन पीठि दै बैठी मणि माला तन हेरयो । निरखि आप आभास सयानी बहुरि नैनमुख फेरयो ॥ लिए फिरत उरमाँझ दुराए जानत लोग अँधेरो । एते मान भावती तो कत मान मनावत मेरो ॥ तेरीसौं आभास तिहारो यहां और को जोहै ॥ लै दर्पण मणि धरयो पांइतर देखि दुहुँनिमें कोहै ॥ लघु अपराध दासको त्रासै ठाकुरको सब सोहै । निरखि निरखि प्रतिबिंब उहै तनु नैन नैनमिलि मोहै ॥ नेक मोहिं मुसकात जानि मनमोहन मन सुख आन्यो । मानो दव द्रुम जरत आश भयो उनयो अंबर पान्यो ॥ जो भाई सो सौंह दिवाई तब सूधे मन

मान्यो। दियो तमोर हाथ अपने करि तब हरि जीवन जान्यो ॥ हँसि करि कह्यो चलौ हरि कुंजन हौं आवतिहौं पाछे। लकुटी मुकुट पीत उपरैना लालकाछनी काछे ॥ गोदोहनकी बेर जानि सँग लिए बछरुवा आछे। जो न पत्याहु जाहु मुरलीधर हमहिं तुमहिं हैं साछे ॥ सघनकुंज अलिपुंज तहां हरि किसलय सेज बनाई। आतुर जानि मदनमोहन तनु कामकेलि चलि आई ॥ हँसे गोपाल अंक भरिलीनी मनहुँ रंक निधि पाई। रति विपरीति प्रीति पिय प्यारी वर्णत वरणि न जाई ॥ आलिंगन चुंबन परिरंभन दियो सुरतिरस पूरो। छिटकि रही श्रमबूँद बदनपर अरु पांइन खुभि चूरो ॥ मुखके पवन परस्पर सुखवत गहे पानिपिय जूरो। बूझत जानी मन्मथचिनगी फिरिमनो दियो मरूरो ॥ आलसमगन बदन कुँभिलानो बाला निर्बल कीन्हीं। थकित जानि मनमोहन भुज भरि त्रिया अंक भरि लीन्हीं ॥ गोरे गात मनोहर उरजन लसत फुलेल कंचुकी भीन्हीं। मनु मधु कलस श्याम ताईकी श्याम छापसी दीन्हीं ॥ इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरतिरण सोऊ। नैनकटाक्ष बाण असिवर नख बरषि निदाने दोऊ ॥ टूटे हार कंचुकी दरकी घाइल मुरे न कोऊ। प्रगट्यो तेज तरनि पदवीकी लाज लजाने दोऊ॥ यहि डर रहत पितांबर वोढे कहा कहौं चतुराई।भोरयो काम प्रेमहू भोरयो भुरई बैस भुराई॥पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिबिंबत ज्यों जल दर्पण झाँई। अब जिनि कहै हिएमें कोहै बहुरि परी कठिनाई ॥ करजोरे बिनती करै मोहन कहौ पाँइ शिर नाऊं। हौं सेवक निज प्राणप्रियाको यह कहि पत्र लिखाऊं ॥ तेरी सौं वृषभानुनंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊँ। अब जिन मान करहि मोसों हो इहै मौज करि पाऊँ ॥ हँसिकरि उठि प्यारी उर लागी मान मैनदुख पायो। तुम मन देहु आन बनिता तो मैं मन काहि लगायो। लै बुलाइ उर लाइ अंकभरि पछिलो दुख बिसरायो। श्याम मान है प्रेम कसौटी प्रेमहि मान सहायो ॥ टूटे बंद छुटी अलकावलि मरगज तनके वागे। अंजन अधर भाल जावकरँग पीक कपोलन पागे ॥ बिनगुन माल पीठि गडि कंकन उपटि उठे उर लागे। रसिक राधिकाके सुखको सुख लूटयो श्याम सभागे ॥ नवल गोपाल नवेली राधा नये नेह वश कीन्हें। प्राणनाथसों प्राणपियारी प्राणलटकिसो लीन्हे ॥ विविध विलासकला रसकी बिधि उभै अंग परबीनो। अतिहितमानमान तजि मानिनि मनमोहनसुख दीनो ॥ राधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनैं जे गावैं। तिनके सदा समीप श्याम नितही आनंद बढावैं ॥ कबहुँ न जाइ जठर पातक जिहिको यह लीला भावै। जीवन मुक्त सूर सो जगमें अंत परमपद पावै ॥ ७५ ॥

राग गुंडमलार ॥ राधिका वश्यकरि श्याम पाए। विरह गयो दूरि जिय हरष हरिके भयो सहस मुख निगम जिन नेति गाए ॥ मान तजि मानिनी मैनको बल हरयो करत तनु कंतके त्रास भारी। कोक विद्या निपुण श्याम श्यामा विपुल कुंजगृह द्वार ठाढे मुरारी ॥ भक्तहित हेतु अवतारलीला करत रहत प्रभु तहां निज ध्यान जाके। प्रगट प्रभु सूर ब्रजनारिके हित बँधे देत मनकाम फल संग ताके ॥ ७६ ॥

हिंडोरलीलाको सुख ॥ श्रीकृष्ण राधिका गोपिन संग झूलहिंगे ॥ राग मारू ॥ वृंदावन श्यामलघन नारि संग सोहै जू । ठाढे नवकुंजनतर परमचतुर गिरिधर वर राधापति अरसपरस राधा मन मोहै जू ॥ नीपछाँह यमुनतीर ब्रजललना सुभग भीर पहिरे अँग विविध चीर नवसत सब साजै । बार बार विनय करति मुख निरखति पाइ परति पुनि पुनि कर धरति हरति पियके मन काजै ॥ विहँसति प्यारी समीप घनदामिनी संग रूप कंठ गहति कहति कंत झूलनकी साधा । यमुनपुलिन अति पुनीत पिय इहां हिंडोर रचौ सूरज प्रभु हँसति कहति ब्रजतरुनी राधा ॥ ७७ ॥

राग राग्नी मल्लारी ॥ हिंडोरे हरिसँग झूलिएहो अरु पियको देहिं झुलाय । गई बीति ग्रीषम शरद हितु ऋतु सरस वर्षा आय ॥ अब इहै साधपुरावहू हो सुनहु त्रिभुवनराइ । गोपांगना गोपालजूसों कहति गहि गहि पाइ ॥ गढनहार हिंडोरनाको ताहि न लेहु बोलाइ । बन बननि कोकिल कंठ निरखत करत दादुर शोर । घनघटा पीरी श्वेत बगपंगति निरखिये नभ ओर ॥ तैसियै दमकति दामिनी तैसोइ अंमर घोर । तैसोइ रटत पपीहरा बिच तैसोइ बोलत मोर ॥ तैसि हरीहरी भूमि हुलसति होति नाहिं रुचि थोर । तैसिऐ रँग सुरँग बिधिवधू लेति है चितचोर ॥ तैसिऐ नन्हीं बूँदनि बरषतु झमकिझमकि झकोरि तैसिऐ भरि सरिता सरोवर उमँगि चलीं मिति फोरि ॥ सुनि बिनय श्रीपति बिहँसि बोले विश्वकर्मा श्रुतिधारि । खचि खंभ कंचनके रचि पचि राजति मरुवा मयारि । पटुली लगे नगनाग बहुरंग बनी डाँडी चारि । भँवरा भँवैभजि केलि भूले नागर नागरि नारि ॥ पहिरि चुनिचुनि चीरचुहिचूहि चूनरी बहुरंग । कटि नीललहँगा लालचोली उबटि केसरि अंग ॥ नवसात सजि नई नागरी चलीं झुंडझुंडनि संग ॥ मुख श्याम पूरणचंदको मनो उमँगि उदधि तरंग । तहँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुभाइ । उर उड़त अंचल उघरि मुख मिलि नैन नैन लगाइ ॥ तैसो यमुना पुलिन परम पुनीत सब सुखदाइ । तैसिऐ गोपी कंठ लगावति मोहन मोहनराइ ॥ गिरिराजधारन गोपिकनसों करत कौतुक केलि । झूलत झुलावतकंठ लावत बढी आनँद बेलि ॥ कबहुँ रहसत मचत लै सँग एक एक सहेलि । झकझोरि झमकत डरत प्यारी प्रीतम अंकम मेलि ॥ तेहि समय सकुचि मनोजकी छवि जक्यो धनुशर डारि । अंमर बिमानन सुमन बरषत हरषि सुरसँगनारि ॥ मोहे सुरगण गंधर्व किन्नर रहे लोक बिसारि । सुनिसूरश्याम सुजान सुंदर सबनके हितकारि ॥ ७८ ॥

राग सारंग ॥ सुरँग हिंडोरना माई झूलत श्यामाश्याम । दोयखंभ बिश्वकर्मा बनाए कामकुंद चढाइ । हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ ॥ बहुत बिद्रुम बहुत मुक्ता ललित लटके कोर । बहुरंग रेशम वरुह वरुही होत राग झकोर ॥ श्यामश्यामा संग झूलत सखीदेति झुलाय । सब सरस शृंगार कीने रूप बरणि न जाइ । लालसारी नीललहँगा श्वेतअँगिया अंग । रोमावली नाहिं मनो यमुना त्रिवलि तरल तरंग । कहूं यूथनि युवति ठाढी कहूं ठाढे ग्वाल । कहूं तरुणी गीत गावैं कहुँ करैं सब ख्याल ॥ कहूं

दादुर कहूं चातक कहूं बोलैं मोर । चहुँओर चितै चकोरहि गए देखि री इहि ओर ॥ दशन दाडिम दमकि विकसी हँसी जब मुमुकाइ । दमकि दामिनि निरखि लज्जित बहुरि गई छिपाइ ॥ मीन खंजन कंज मानो उडत नाहिंन भोर । बिंबके ढिग कीर बैठे गहत नाहिंन ठौर ॥ देखि सखी उरोज कंचन शंभु धरचो बनाय । नाहिं होहिं श्रीफल सुंदरीके कमलकली सोहाय ॥ बीच मुक्ताहार मिलि सुरसरि जनु उतरी धाय । वार चकईपार चकवा दिनहु मिलत न आय ॥ लखि लंक कह्यो न जाय सखि री अंग देखिरि चारु । भृंगभ्रमभ्रम बनगयो कटि गयो केहरि हारु ॥ चाल देखि मराल लज्जित गए सरतजि गेह । अनुमानिके अभिमान गजशिर अजहुँ डारत खेह ॥ राग रागिनि सँचि मिलाई गावैं सुघर गुंडमलार । सुहवी सारंग टोडी भैरवी केदार ॥ मालवाई राग गोरी अरु आसावरीराग । कान्हरो हिंडोल कौतुकतान बहुविधिलाग ॥ देखि सखिरी एक अचरज राहु शशि इक ठोर । उड़त अंचल लपटिवेनी दपटि झपटे मोर ॥ कनकजटित जराइ वीरे कवि जो उपमा पाय । सूर शशि है एक व्रज मनो उगे तीनों आय ॥ ७९ ॥

राग मलार ॥ यमुना पुलिनहि रच्यो रंग सुरंग हिंडोरनो । रमत राम श्याम संग व्रज-बालक सुखपावत हँसि बोलनो ॥ द्वै खंभकंचनके मनोहर रत्नजडित सुहावनो । पटली बिच विद्रुम लागे हीरालाल खचावनो ॥ सुंदर डाँडी चुनी बहुत लायो कोटिक मदन लजावनो । मरुवा मयारि पिरोजा लाल लटकत सुंदर सुढिर ढरावनो ॥ मोतिनहिं झालरि झूमका राजत बिच नीलमणि बहुभावनो । पंचरँग पाट कनक मिलि डोरी अतिहि सुघर बनावनो । स्फटिक सिंहासन मध्य राजत हाटकसहित सजावनो ॥ हीरालाल प्रवाल पिरोजा पंगति बहु मणि पचित पचावनो । मनो सुरपुरतेहि सुरपति पठइ दियो पठावनो ॥ विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधर सुलभ सिलप दिखावनो । तेहि देखे त्रय ताप नाशै व्रज बधू मनभावनो ॥ सुनि श्यामानवसत सँगसखीलैं बरसाने तेहि आवनो । जब आवत बलराम देख्यो मधु मंगलतन हेरनो । तब मधुमंगल कहि ग्वालसों गैयाहो भैया फेरनो ॥ उठे संकर्षण करि शृंग वेणु ध्वनि धौरी काजरी धेनु टेरनो ॥ गैयां गईं बागराइ सघन वृंदा-वन वंसीवट यमुनातट घेरनो । पहिरे चीर सुही सुरंग सारी चुह चुह चूनरी बहुरंगनो ॥ नील लहँगा लाल चोली कसि उबटिकेसरि सुरंगनो । नवसत सजि शृंगार नागरि मणिग मय भूषण मंगनो ॥ सादर मुख गोपाललालको चित्त चकोर रस संगनो । श्यामा श्याम मिले ललितादिहि सुख पावत मनमोहनो ॥ गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छबि सोहनो । पचरंग वरन पाटहि पवित्रा बिच बिच फोंदा गोहनो ॥ नाचति सखी संगीत परस्पर पहिरि पवित्रा सोहनो ॥ माथे मोर मुकुट चंद्रिका राजहि वृंदा वैजंती माल कंज प्रभावनो । कुंडल लोल कपोलनके ढिग मानो रविप्रकाश करावनो ॥ अधर अरुण छबि कोटि वज्र द्युति शशि गुण रूप समावनो । मणिमय भूषण कंठ मुक्तावलि देखत कोटि अनंग लजावनो ॥ सखि हरषि झूलै वृषभानुनंदिनी शोभित सँग नँदलालनो । मणिमय नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकारनो ॥ ललिता विशाखा व्रजवधू झुलावैं सुरुचि सार सारको सारनो । गौर श्यामल नील पीत छबि मानोघन दामिनि संचारनो॥

तैसोइ नन्हीनन्ही बूँदनि बरषै मधुरमधुर ध्वनि घोरनो । तैसीही हरीहरी भूमि हुलसावनि मोरमरालसुख होत न थोरनो ॥ जहाँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुहावनो । तहँ विहरत उठत सुवासु उडत मधुप सुहावनो ॥ चढि विमानन सुर सुमन बरषैं जैजै ध्वनि नभ पावनो । श्यामाश्याम विहरत वृंदाबन सुरललना ललचावनो ॥ शुक शेष शारद नारदादिक विधि शिव ध्यानन पावनो । सूर श्याम सुप्रेम उमँग्यो हरियश सुलीला गावनो ॥ ८० ॥

राग गुंडमलार ॥ हिंडोरनो माई झूलत गोकुलचंद । संग राधा परम सुंदरि सबन करत अनंद ॥ द्वै खंभ कंचनके मनोहर रतनजडित सुरंग । चारिडाँडी परम सुंदरि निरखि लजित अनंग ॥ पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग । मरुवेति माणिक चुनी लागी बिचबिच हीरा तरंग ॥ कल्पद्रुम तर छाँह शीतल त्रिविध मंद समीर । वर लता लटकहिं भार कुसुमनि परसि यमुनानीर ॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर । नवनेह नवल किशोर राधा नवल गिरिधर धीर ॥ ललिताविशाखा देहिं झोंटा रीझि अँगनसमाति । अति लाडिकी सुकुमारि डरपति श्यामतन लपटाति ॥ गौर श्यामल अंग मिलि दोउ भए एकहि भांति । नील पीत दुकूल द्युति घन दामिनी दुरिजाति ॥ कुंजपुंज झुलैं झुलावत सहचरी चहुँ ओर । मनो कुमुदिनि कमल फूले निरखि युगुलकिशोर ॥ ब्रजवधू तृण तोरि डारति देति प्राण अकोर । जन सूरको ब्रजवास दीजै नागर नन्द-किशोर ॥ ८१ ॥

राग राग्री श्रीहटी ॥ हिंडोरे झूलत श्यामा श्याम । ब्रजयुवती मंडली चहूँघा निरखति विथकित काम ॥ कोउ गावति कोउ हरषि झुलावति मनसाध । कोउ सँग मचति कहति कोउ मचि हौं उपजौ रूप अगाध ॥ कोउ डरपति हाहा करि बिनवति प्यारी अंकम लाय । गाढे गहति पियहि अपने कर पुलकित अंग डराय॥अब जिनि मचो पांय लागतिहौं मोको देहु उतारि । यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अति नारि ॥ प्यारी टेरि कहत ललितासों मेरीसों गहि राखि । सूर हँसति ललिता चंद्रावलि कहा कहति पिय भाखि ॥ ८२ ॥

राग राग्री रामगिरी ॥ हिंडोरना माई झूलतहैं गोपाल । संग राधा परम सुन्दरि चहूंघां ब्रजबाल ॥ सुभग यमुनापुलिन मोहन रच्यो रुचिर हिंडोर । लाल डाँडि फटिक पटुली मणिन मरुवा घोर ॥ भँवरा मयारिनि नील मरकत खचे पाँति अपार । सरल कंचन खंभ सुन्दर रच्यो काम सुतिहार ॥ भांति भांतिन पहिरि सारी तरुणि नवसत अंग । सुन्दरि वृषभानुतनया नैन चपल कुरंग ॥ हँसति पियसँग लेति झूमक लखति श्यामल गात । मनो घनमें दामिनी छबि अंगमें लपटात ॥ कबहुँ पुलकति कबहुँ डरपति हंसति निरखति नारि । कबहुँ देति झुलाइ गोपी गावहीं नवनारि ॥ सूर प्रभुके संगको सुख वरणि कापै जाइ । अमर वर्षत सुमन अंबर विविध अस्तुति गाइ ॥ ८३ ॥

राग राज्ञी मलारी ॥ यमुनापुलिन रच्यो हिंडोर। घोष ललना संग तरुणी तरुण नंदल किशोर ॥ एक संग लै मचत मोहन एक देत झुलाय। एक निरखति अंग माधुरि एकएक उठि गाय ॥ इयामसुन्दर गोपिकागण रहीं घेरि बनाय। मनो जलदको दामिनी गण चहति लेन छुकाय ॥ नारिसंग बनवारि गावत कोकिला छवि थोर। डुलत झूलत मुकुट शिरपर मनो नृत्यत मोर ॥ सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल निरखि युवती भोर। चक्रवाक चकोर लोचन करिरहीं हरि ओर ॥ थकित सुर ललना सहित नभ इयाम निरखि विहार। हरषि सुमन अपार बरषत मुखहि जैजैकार ॥ कहत मन मन इहै बांछा भए न वन द्रुम-डार। देह धरि प्रभु सूर विलसत ब्रह्म पूरण सार ॥ ८४ ॥

राग केदारो ॥ हिंडोरने हरिसंग झूलन आई। पचरँग बरन पाटको डँडिया अतिही बानक सौंजु बनाई ॥ झूलति युवति नंदललना संग एक. बैस इकदाई। सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि झुलाई ॥ ८५ ॥

राग ईमन ॥ झूलन आई रंग हिंडोरे। पचरंग बरन कुसुंभी सारी पहिरे कंचुकी सौंधे बोरे ॥ मुक्तामाल ग्रीवते लर छुटि छविके उठत झकोरे। सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों चपलनयनकी कोरे ॥ ८६ ॥

राग बिहागरो ॥ ललना झूलति रंग हिंडोरे। शोभा तनु इयाम गोरे नील पीटपट घन दामिनि डोरे। शोभासिंधु मन बोर ॥ गोपीजन चहुँओरे। नैननसों नैन जोरे ॥ झुलवति थोरे थोरे। पवन गवन आवै सौंधेकी झकोरे ॥ तन मन वारौं छविपर तृण तोरे। सूर प्रभु चित चोरे नेक अंग मोरे ॥ सुन मुरलीकी घोरैं। सुखधू शीश ढोरैं ॥ ८७ ॥

राग मलार ॥ झूलत इयाम इयामा संग। निरखि दंपति अंगशोभा लजित कोटि अनंग ॥ मंद त्रिविध बयारि शीतल अंग अंग सुगंध। मचत उडत सुबासु संग गण रहे मधुकर बंध ॥ तैसियै यमुना सुभग जहँ रच्यो रंग हिंडोर। तैसियै ब्रजवधू बनि हरि चित लोचन कोर ॥ तैसो वृन्दाविपिनघनवन कुंजद्वारविहार। विपुल गोपी विपुल बन-गृह रवन नंदकुमार ॥ नित्य लीला नित्य आनंद नित्य मंगल गान। सूर सुर मुनि मुखन अस्तुति धन्य गोपी कान्ह ॥ ८८ ॥

राग मलार ॥ हिंडोरे हरिसंग झूलहि घोषकुमारि। ब्रजवधू विधि क्यों न कीनी कहति सब सुरनारि ॥ मरुवालगे नग ललितलीला सुविधि शिल्पसंवारि। वज्रकी कीलैंलगी सुठि सुभग शोभाकारि ॥ खंभजांबूनद सुविद्रुम रची रुचिरमयारि। मनु सुता रविकी दिखावति भुजा युगुल पसारि ॥ मणिलाल माणिक जटित भँवरा सुरंग रंग रसार। शुक शेष नारद शारदा उपमा कहै को पार ॥ डाँडी खचि पचि पचि मर्कत मय पांति सुढार। उवत रथ रविते धसी यमुना धरे विविधार ॥ विविधार धारा धसी अधक्यों फटिक पटुली संग। बहिनिकसि तिरछी बीच है मिलि गागनते जनु गंग। ढिग जरित भरि मंजीर इतउत

चरण पंकजरंग । प्रतिबिंब झलमल झलक मिलि सरस्वती आनिबिनंग ॥ बनमहलके द्वारे रच्यो नवरंग रंग हिंडोर । मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणि तरुण किशोर॥वदनतन चित चोरि चितवत झलकलोचनकोर । शरद बिधु मधु लुब्धको मनु उडिउडि मिलत चकोर ॥ उडि मिलत तहां चकोर अति छबि ललित चलित सखैन । मनहु अंबुज बासको संग मिलित मधुकर ऐन ॥ झुमकि झुमकि लेति दै द्रुमडी मचै रुचिकैन । गावति सुकंठ राग रागिनी नागरि गिरिधरकी जित सैन ॥ कनक नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकार । तहँ कुँवरि वृषभानुकी सँम सोहै नंदकुमार ॥ नील पीतदुकूल सांवल गौर अंग बिकार । मनहु नौतन घन घटामें तडित तरल अकार ॥ अनिमेष दृग दिए देखहीं मुख मंडली वरनारि । मानहु शृंगार नवीन तरुप्रति रची कंचन वारि ॥ हँसि हाव भाव कटाक्ष घूँघट गिरत लेनि सम्हारि । मनु हरन मुनि शोभा सु लै रति काम डारति वारि ॥ अधउरध झमकि झकोर इतउत झलक मोतिनमाल । ऋतु समय सावन जानि मनि बगपाँति उडत विशाल ॥ श्री शीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल । सारी सुरँग मिलि नील लहँगा शुभित कंचुकि लाल ॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि । ढरहरति ढरति हिंडोर डाँडी डरति धरि दुहुँ पानि ॥ उर उडत अंचल छोर छबि दुति पीतपट फहरानि । कहै सूर सो उपमा नहीं कहुँनेति निगमहु गानि ॥ ८९ ॥

राग मलार ॥ गोपीगोविंदके हिंडोरे झूलन आय । रंगमहलमें जहँ नंदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय ॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमर मरुवा बनाइ । तापर किंतिक जू भ्रमत भँवरा डाँडी जटित जराइ ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पूजि रोचन लाइ । सखी विविध विचित्र राग मलार मंगलगाइ ॥ नँदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नवसंग । बोलत जु दादुर अरु पपीहा करति कोकिल रंग ॥ तहँ वरहि नृत्यत वचन मुख दुतिअलि चकोर बिहंग बलि भाइ सहित गोपाल झूलत राधिका अधंग ॥ जलभरित सरवर सघन तरिवर इंद्र धनुष सुदेश । घन श्याम मध्य सफेद बग जुरी हरित महि चहुँ देश ॥ गगन गर्जत बीजु तरपति मधुर मेह अशेश । झूलहिं ते विट्ठल श्याम श्यामा शीश मुकुलित केश ॥ तार्टक तिलक सुदेश झलकत खचित चूनी लाल । आकृती विकृती वदन प्रहसित कमलनैन विशाल ॥ कर जु मुद्रिक किंकिनी कटि चाल गजगति बाल । सूर मुररिपु रंग रंगे सखी सहित गोपाल ॥ ९० ॥

राग सुहवी ॥ झूलत सुंदर युगल किशोर । नंदनंदन वृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर ॥ भ्रुकुटी बक्र धनुष श्रीशोभित तिलक भाल मनो सायक जोर । मंदमंद मुसुकात श्यामघन निरखत करत कटाक्षन कोर ॥ अंजनको पति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर । मृगमद आड बने करकंकन मोतिन हार शृंगार न डोर ॥ लियो शिरते पटु झटकि मनोहर उघरिगए कुच कलश कठोर । सूर सु निरखि भए वश प्रीतम तब प्यारीसों करत निहोर ॥ ९१ ॥

अध्याय ३४ ॥ विद्याधर शापमोचन बृन्दावनविहार शंखचूडदानववधवर्णन ॥ राग बिलावल ॥ नंद ॥ सब गोपी ग्वालसमेत । गए सरस्वतीके तट एक दिन शिव अंबिका पूजा हेत ॥ पूजा करत सकल दिन बीत्यो होइगई तहँ सांझ । ब्रज वासी सब श्रमित होइकै सोइरहे वनमांझ ॥ अर्ध निशा इक उरग आयकै लपटि गयो नंदपाइ । चौंकि परचो दुख पाइ पुकारचो हाहा कृष्ण छुडाय ॥ ग्वालन मिली श्रीकृष्ण जगाये छुवत पांइ अहि दीनों छोड । विद्याधरको रूप धारि कह्यो नाथ करै को तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहिं हो मैं देख्यो अब जोई ॥ ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरि आज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक । सूरदास हरिके गुण गावत ब्रज आए ब्रज लोग ॥ ९२ ॥

जागो मोहन भोर भयो । वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाश कियो ॥ संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलत हैं कछु खेल नयो । आँगन ठाढी कुँवरि राधिका उनको कहा दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेह गयो । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्वसु लै हरि आपु दयो ॥ ९३ ॥

मैं हरिकी मुरली बन पाई । सुनयशुमति सँग छाँडि आपनो कुँवर जगाइ देन हौं आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । इहके संग हुती मेरी पहुँची दै राधे वृषभानु दोहाई ॥ मैं नाहिं न चित लाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई । सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥ ९४ ॥

राग कान्हरो ॥ विहरत कुंजन कुंजविहारी । बग शुक विहँग पवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरि धारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरत मुरली जब प्यारी । रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन शंकागहि तब वदन उज्यारी ॥ आभूषण सब साजि आपने थकित भई ब्रजकी कुलनारी । सूरदास स्वामीकी लीला अब जोवै वृषभानुकुमारी ॥ ९५ ॥

राग गुंडमलार ॥ गगन उठी घटाकारी तामें बगपंगति न्यारी । न्यारी कान्ह कृपा करि देखिये सुरचापकी छवि वरन वरन रँगधारी ॥ बीच बीच दामिनी कौंधति जनु चंचल नारी । बिटवाहर गृह गृह प्रति दुरि जाति आवति विकल मदनकी जारी ॥ वन बरुही चातक रटै द्रुम द्युति सघन संचारी सूर श्यामहित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ अद्भुत कौतुक देखि सखी री श्रीवृंदावनमें होड परी री । उत घन उदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरी री ॥ उत बगपांति शोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरी री । वहां घन गर्ज इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरी री ॥ उतहि इंद्रधनु इत बनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरी री । सूर साथ प्रभु कुँवरि राधिका गगनकी शोभा दूरि करी री ॥ ९७ ॥

राग सोरठ ॥ नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंज कोमल कमलदलन सेज्या रची। गौर साँवर अंग रुचिर तापर मिले सरसमणि मृदुल कंचन खची ॥ सुरनीमी बंधु हित पिय मानि पियके भुजनमैं कलहमोरुण मची। सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोषहू करि गर्व दृग भाग्य भामिनी लची ॥ कोक कोटि करभ सरसिक हरि सूरज विविध कल-माधुरी किमपि नाहिन बची। प्राण ये मन रसिक ललितादि लोचन चसकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥ ९८ ॥

राग नट। राग जलसुत कर जु धरे। अतिही अरुण अधिक छबि उपजति तजत हंस सगरे ॥ चुगत चकोर चले हैं सन्मुख झझके रहे खरे। तब मुसिकाय वृषभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु शशि दोऊ एकै रथ सन्मुख आनि अरे। सूरदास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमगि भरे ॥ ९९ ॥

राग कान्हरो ॥ श्यामा वदन देखि हरि लाज्यो। यहै अपूर्व जानि जिय लघुता खीन इंदु एही दुख भाज्यो ॥ क्रीडत कुंज अटा रजनी मुख प्रेम मुदित नव सत अँग साज्यो। विधु लांछन जानत सुर नर सब मृगमद तिलकहु लाज्यो ॥ विथकित रथ चकित अवलोकत सुंदरि सँग हरि राज विराज्यो। विस्मय मिटि शशि पेखि समीपहि कहि अब सूर उभै हरि गाज्यो ॥ २३०० ॥

कंदुक केलि करत सुकुमारी। अतिहि सूक्ष्म कटितट आई जिमि विशदनितंब पयोधर भारी ॥ अंचल अंचल फटी कंचुकी विडुलित वर कुच सटी उघारी। मनु नवजलद बंधु कीनी विधु निकसी न भसि कला अनियारी ॥ तरल तांटक निकट तट उभय परस्पर शोभ शृँगारी। जलरुह हंस मिले मनो नाचत ब्रज कौतुक वृषभानुदुलारी ॥ मुक्तावलिको हार लोलगति तापर लटपटात लट कारी। तामें सो लर मनो तरंगिनि निशिनायक तुम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिण नूपुर छबि निशापान समद्युति रतिनारी। श्रीगोपाल लालउर लाई बलि बलि सूर मिथुन कृत भारी ॥ १ ॥

राग नट ॥ देखे चारि कमल इक साथ। कमलनि कमल गहे लावति है कमलहि मध्यसमात ॥ साँरँगपर साँरँग खेलत है साँरँग ही सों हँसि हँसि जात। साँरँग श्याम औरहू साँरँग साँरँगसों करै बात ॥ अरि सारंग राखि साँरँगको साँरँगगहि साँरँगको जात। तौलै राखि साँरँग साँरँगको साँरँग लै आऊवा हात ॥ सोइ साँरँग चतुरानन दुर्लभ सोई साँरँग शुभ मुनिध्यात। सेवत सूरदास साँरँगको साँरँग ऊपर बलि बलि जात ॥ २ ॥

राग नट ॥ हरि उर मोहनि वेलिलसी। तापर उरग ग्रसित तव शोभित पूरन अंश शशी ॥ चापति कर भुजदंड रेख गुन अंतरबीज कसी। कनककलशमधुपान मनो करभुजंग उलटी धसी ॥ तापर सुंदर अंचर झाँप्यो अंकित दंशतसी। सूरदास प्रभु तुमहिं मिलत जनु दारिव विगरि हँसी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो ॥ मोहनी मोहनकी प्यारी । रूप उदधि मथि कीविधि हठि पचि रची युवति न्यारी ॥ चंपककनक कलेवरकी द्युति शशिनबदनसमतारी । खंजरीट मृगमीनकि गुरुता नैनन सबै निवारी ॥ भ्रुकुटी कुटिल सुदेश शोभ अति मनहु मदन धनु धारी । भाल विशाल कपोल मधुप छवि नासा जित मदगारी ॥ अधर बिंब बंधूक निरादर दशन कुंद अनुहारी । परम रसाल श्याम सुखदायक बचनन सुनि पिकहारी ॥ कुँवरि अही जनु हेमखंभलगि ग्रीव कपोतविसारी । बाहु मृणाल जु उरज कुंभ गजनिम्ननाभि सुभगारी ॥ मृगरिपुखीन कटी राजति युग जंघ सरस अति भारी । अरुण रुचिर जु विडाल रसनसम चरणतली ललितारी ॥ एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसन मराल विचारी । सारंग मत्त जानि माने गहि भयहि जु विपिन बिसारी ॥ जहँ तहँ दृष्टि परति तहँ अरुझत भरि नहिं जात चितारी । सूरदास प्रभु रसवश कीन्हें अंगअंग सुखकारी ॥४॥

राग नट ॥ उर पर देखियत हैं शशि सात । सोवति हुती जुकुँवरि राधिका चौंकि परी अधरात ॥ खंड खंड होइ गिरे गगनते वास पतिनके भ्रात । कै बहु रूप किए मारगते दधिसुत आवत जात ॥ विधु बहुरे विधु किए शिखंडी शिवमैं शिवसुत जात । सूरदास धारै को धरणी श्याम सुनो यह बात ॥ ५ ॥

राग बिलावल ॥ आजु वन राजत युगलकिशोर । दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत शिथिल गति उठे कामरस भोर । रतिपति सारँग अरुणमहाछवि उमँगि पलक लगे भोर ॥ श्रुति अवतंस विराजत हरि सुत सिद्ध दरश सुत ओर । सूरदास प्रभु रस वश कीन्ही परी महारण जोर ॥ ६ ॥

राजत युगल किशोर किशोरी । प्रातसमय देखियत ग्रीव भुज श्याम शिथिल आलस गति गोरी ॥ रहे उवटि बलहीन विलासिनि बरणौं कहा मदन रंग बोरी । मनो अंग अँगसुखफलके हित द्युति वसंत मारुत झकझोरी ॥ शशिमुख सखी श्याम लोचन छवि प्रगटत मिलत उभय पदकारी । मनु रवि देखि हरषि कछु सकुचत निरखत युवति लेत चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनींदे कुरुखकटाक्ष करत मुरि थोरी । खंजन मृग अकुलात धार उर श्याम व्याध बाँधे रति डोरी ॥ नील अलक ताटंक अंकदै श्याम गंड उवटित वर छोरी । मनहु शेष मधुसर कूरमजु काढत उभय रूप धारि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रीडा रद रोरी । मदनकोशपर शैल सँचारी छाप तापमोचन मधु घोरी ॥ नैन बैन कर चरण चिकुर चलशिथिल उभय श्रम स्वेद नचोरी । मनु सेना संग्राम मध्यते प्रीति अमी दै जाइ बहोरी ॥ थाके रंग रणकी छवि छाजत हारि मानि नहिं रहत निहोरी । सूर सुभट दोउ खेत न छाँडत मानहु आइ खडे दलजोरी ॥ ७ ॥

राग सारंग ॥ देखौ माधौ राधाकी रत । सुरत समै संतोष न मानत फिरि फिरि अंक भरत ॥ मुखके अनिल सुखावत श्रमजल यह छवि मनहिं हरत । मानहु काम अग्नि

निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरि करत ॥ द्रुतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत । सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिज पाइँ परत ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ नैननको फल सुफल राधिका प्यारी । श्रमजल भर बूंद बदन मृदु अरबिंद प्रसेद मकरंद अलि अलकअनुसारी ॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेष नासिका जलज मनहुँ गुंजारी । भौंह मन्मथ धनुष पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण सीमंत सार सारी ॥ तार्टक द्रुति छुटि केश बिथुरी लटें घट कुर्बुरतर उदित उजियारी । गंड सूक्ष्म इंदु मनहु दिनकर उदै सकुचे सतदल सूछकै निवारी ॥ दशन हीरकी पांति बिचबिच मुसकाति बरणि न जात मृदुवचन किलकारी । विमल मुक्तामाल लहत उच्चकुचनपर मदन महादेव मनो दई है लचारी ॥ दोउ बसत एक ठौर काज निविसत भोर विरुद्ध त्यागि बात बनी अति भारी । कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुक चारी ॥ स्कंध बेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी । निम्ननाभी लेश कटि अति सुदेश बनी अधार जंघनि अतिभारी ॥ मनहु मन्मथ अजित करि हरिहि देत होत नादकिंकिणि झनकारी । अति विशद गुरुनितंब चौंर बांधे कोउ नाहिंन समतारी ॥ मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पटतर न तुम्हारी । अभिमानपूरन बंक सूर प्रभु यदपि थकितभये गिरि निरखि गिरिधारी ॥ ओटनिरखै सखी मनहु चित्रित लिखी युक्ति संयोगपर जाहि बलिहारी ॥ ९ ॥

राग केदारो ॥ नागरताकी राशि किशोरी । नवनागर कुलमूलसाँवरो वरवश कियो चितै मुख मोरी ॥ रूप रुचिर अंगअँग माधुरी बिनभूषण भूषित ब्रजगोरी । छिनछिन कुशल सुगंध अंगमें कोककरभसर सिंधु झकोरी ॥ चंचलरसिकमधुपमोहनमन राखे कनक कमल कुच कोरी । प्रीतम नैनयुगल खंजन खग बांधे विविध नितंबन डोरी ॥ अवनी उदर-नाभिसरसीमें मनहु कछुक मादक मधुरोरी । सूरदास पीवत सुंदर वर सींव सुदृढ निगमनिकी तोरी ॥ १० ॥

राग केदारो ॥ आजु तनु राधा सज्यो शृंगार । नीरजसुत सुतवाहनको भख श्याम अरुणरँगकौन बिचार ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि बनावहि हार । गिरिसुत तिन पति विवश करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार ॥ पंथपिता आसन सुत शोभित श्याम घटा बग पंक्ति अपार । सूरदास प्रभु हंससुतातट क्रीडत राधा नंदकुमार ॥ ११ ॥

राग ललित ॥ देख सखी सायक बलजोर । बीस कमल परगट देखियत है राधा नंदकिशोर ॥ सोरहकला सँपूरण मोह्यो ब्रज अरुणोदय भोर । तामें सखि द्वै कमल लागि रहे चितवत चारि चकोर ॥ मनु मदमत गजराज अरे हैं कोटि मदन भे भोर । सूरदास बलिबलि या छविकी अलकनकी झकझोर ॥ १२ ॥

राग सारंग ॥ मोरनके चँदवा माथे बने राजत रुचिरसुदेश री । मदनकमल ऊपर अलि गण मनो घूँघरवारे केश री ॥ भौंह धनुष दृग बान चपल अति भाल तिलक जनु वान री । भोरहोत रवि अंधकारको कियो उरधसंधानरी ॥ मणिगण जडित मनोहर कुंडल

राजत लोल कपोल री । कालिंदीमें रवि प्रतिबिंबित चंचल पवन अडोल री ॥ सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छबि होत री । भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोत री ॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद् कछु मुसुकात री । मानहु सुपकबिंबते प्रगटत रस अनुराग चुतात री ॥ दशनदमक दामिनिसी चमकति शोभा कहत न आवै री । याहीते दाडिम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावैरी ॥ चिबुक-चारुमर्कतमणि दुति सखि राजति त्रिवली ग्रीव री । मानहु सप्त तीनि रेखा करि कामरूपकी सींव री ॥ उन्नत विशाल हृदय राजत है तापर मुक्ताहार री । मानहु सॉंवर गिरिते सरिता अधं आवत द्वै वार री ॥ भुज भुजंग मनु चंदन चरचित करगहि मुख धरि वंस री । मानहु सुधा सरोवरके ढिग कूजत युग कलहंस री ॥ कंचन वरन पीत उपरैना शोभित सावँर अंग री । मानहु आवत आगे पाछे निशि वासर इक संग री ॥ नाभि सरोज सुधा सरसी जनु त्रिवली सिढी बनाइ री । ब्रजवधु नैन मृगी आतुर ह्वै अति प्यासी ढिग आइ री ॥ कटि प्रदेश सुंदर सुदेश सखि तापर किंकिणि राजै री । अति नितंब जंघन शोभित है देखत मृगपति लाजै री ॥ पीनपिंडुरिया सॉंवल सीरी चरणाम्बुज नख लाल री । मंद मंद गति वो आवति है मत्त दुरदकी चाल री ॥ सूरदास सरनसहि निरंतर मनमोहन अभिरामरी । वृंदावनमें विहरत दोऊ मम प्रभु श्यामा श्याम री ॥ १३ ॥

देखि हरिजूके नैननकी छबि । इह जानि दुख मानि मनहु अंबुज सेवत रवि ॥ खंजरीट अति वृथा चपलता गये बन मृग जल मीन रहे दबि । तहउँ जानि तनु तजत जबहि कछु पटतर देवे कहत कुकवि ॥ इनसे येइ पचि हारि रही हौं आवै नाहीं कहत कछू फवि । सूर सफल उपमा जो रही यों ज्यों होइ आवै कहत होमत हवि ॥ १४ ॥

राग गूजरी ॥ किशोरी देखत नैन सिरात । बलि बालि सुखद मुखारविंदकी चंद्रबिंदु दुरिजात ॥ अघमोचन लोचन रतनारे फूले ज्यों जलजात । राजत निकट निपट श्रवणनके पिशुन कहत मन बात ॥ गौर लिलाट पाट पर शोभित कुंचित कच अरुझात । मानो कनक कमल मकरंदहि पीवत अलि न अघात ॥ नकबेसरि वंसीके संभ्रम भौंह मीन अकुलात । मनु ताटंक कमठ घूँघट पट जालावलि अकुलात । श्याम कँचुकी मांझ सांझ फुले कुच कलशा न समात । मानहु मत्तगयंद कुंभपर नील ध्वजा फहरात ॥ नखशिखलौं रसरूप किशोरी विलसत सॉंवल सुकृतगात । यह सुख देखत सूर अवर सुख उडे पुराने पात ॥ १५ ॥

बसौ मेरे नैननमैं ए जोरी । सुंदरश्याम कमलदललोचनसँग वृषभानुकिशोरी ॥ मोरमुकुट मकराकृतकुंडल पीतांबर झकझोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको का वरणौं मति थोरी ॥

राग विलावल ॥ शंखचूड तेहि अवसर आयो । गोपी हुतीं प्रेमरसमाती तिन ताको कछु सुद्धि न पायो ॥ चल्यो पराइ सकल गोपी लै दूरि गयो तब उन सुधि आयो । को यह लिये जात कहां हमको कृष्णकृष्णकहिकहि गोहरायो ॥ गोपीटेर सुनत हरि पहुँचे दानव

देखि डरायो । मुष्टिक मारि गिराइदियो तेहि गोपिन हर्ष बढायो ॥ मणि अमोल ताके शिरताही दिये हलधरहि आयो । सूर चले बनते गृहको प्रभु विहँसतमिलि समुदायो ॥१६॥

राग सोरठ ॥ सोइ सुख नंद भाग्यते पायो । जो सुख ब्रह्मादिकको नाहीं सोइ सुख यशुमति गोद खिलायो ॥ सोइ सुख सुरभीवच्छ वृंदावन सोइ सुख ग्वालन टेरि सुनायो । सोइ सुख यमुनाकूल कदम चढि कोंप कियो काली गहि ल्यायो । सुख ही सुख डोलत कुंजनमें सब सुख निधि बनते ब्रज आयो । सूरदास प्रभु सुख सागर अति सोइ सुख शेष सहसमुख गायो ॥ १७ ॥

राग बिलावल ॥ कौन परी नँदलालहिं बानि । प्रातसमै जागनकीबिरियां सोवत हैं पीतांबरतानि ॥ मात यशोदा कबकी ठाढी दधि ओदन लिये पान । तुम मोहन जीवन धन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा ब्रजबाल खरे सब मधुबन धेनु चरावन जान ॥ यह सुनि श्रवण उठे नँदनंदन बंसी वेणु मँग्यो मृदु आन ॥ जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि । सूरज बलि बलि जाउँ वेणुकी जिहि लगि लालजगे हितमानि ॥ १८ ॥

अध्याय ३५ ॥ राग बिलावल ॥ भोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चंद भयो मंद ॥ तमचुरखगरोर अलि करैं तब शोरवेगि मोचन करहु शुभगल फंद । उठहु भोजन करहु शिशु खौरि उतारि धरहु जननीप्रतिदेहु रूप निज फंद॥ त्रियन दधिमथन् करहिं मधुर ध्वनि श्रवण सुनि कृष्णगुण विमल यश करत आनंद । सूर प्रभु हरि नाम उधारत जगजीवन गुण को न देखि छकित भयोछंद ॥ १९ ॥

राग बिलावल ॥ जागिए गोपाललाल ग्वाल द्वार ठाडे । रैनि अंधकार गयो चंद्रमा मलीन भयो तारागण देखियत नहिं तरणि किरणी बाढे ॥ मुकुलित भए कमलजाल गुंज करत भृंगमालप्रफुलित वन पुहुप डार कुमुदिनि कुम्हिलानी । गंधर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत विप्र वेद वानी ॥ बोलत नंद बार बार मुख देखें तुव कुमार गाइन भई बड़ी बार वृंदावन जैबे । जननी कहै उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैबे ॥ २० ॥

रसोई वर्णन ॥ भोजन भयो भावते मोहन । तातोइ जेंइ जाहु गो गोहन ॥ खीर खांड खीचरी सँवारी । मधुर महेरि सो गोपन प्यारी ॥ राइ भोग लियो भात पसाई । मूँग ढरहरी हींग लगाई ॥ सदमाखन तुलसी दै तायो । विरत सुवास कचोरा बनायो ॥ पापर बरी अचार परम शुचि । अदरख अरु निबुवन ह्वैहै रुचि ॥ सूरन करि तरि सरस तरोई । सेमि सींगरी छँवकि झोरई ॥ भरता भँटा खटाई दीनी । भाजी भली भांति दृश कीनी ॥ साग चना सँग सब चौराई ॥ सोवा अरु सरसों लरसाई ॥ बथुवा भली भांति रचि रांध्यो । हींग लगाइ राइ दधि सांध्यो ॥ पोई परवर फांग फरी चुनि । टेंटी टेंट सुछोलि कियो पुनि ॥ कुन्दरु और ककोरा कौरे । कचरी चार चँचेंडा सौरे ॥ बने बनाइ करेला कीने ॥ लोन लगाइ तुरत तलि लीने ॥ फूले फूल सहींजन छौंके । मन रुचि होइ नाजुके

औंके ॥ फूले करील कली पाकर नर्म । फली अगस्त्य करी अमृत सम ॥ अरु यई अँबिली दई खटाई । जेंवत षटरस जात लजाई ॥ पेठा बहुत प्रकारन कीने । तिनसों सबै स्वाद हरि लीने ॥ खीरा रामतरोई तामैं । अरुचिन रुचिअंकुर जिय जामैं ॥ सुन्दर रूप रताल्ह रातो । तरि करि लीन्हों अबहीं तातो ॥ ककरी कचरी अरु कचनारचो । सुरस निमोननि स्वाद सँवारचो ॥ कयौ भांति केरा करि लीने । दै करवँदा हरदि रंग भीने ॥ बरबरील अरु बरा बहुत बिधि । खारे खाटे मीठे हैं निधि ॥ पानौरा राइता पकौरी । उभकौरी मुँगछी सुठिसौरी ॥ अमृत इंडहर है रससागर । बेसन सालन अधिकौ नागर ॥ खाटी कढी विचित्र बनाई । बहुत बार जेंवत रुचि आई ॥ रोटी रुचिर कनकबेसन करि । अजवाइनि सैंधौ मिलाइ धरि ॥ अबहिं अगाकरि तुरत बनाई । जे भजिभजि ग्वालन सँग खाई ॥ मांडे मांडि दुनेरो चुपरे । वह घृत पाइ आपुही उखरे ॥ पूरि सपूरि कचौरी कौरी । सदल सु उज्ज्वल सुंदर सौरी ॥ लुचई ललित लापसी सोहै । स्वाद सुवासु सहज मन मोहैं ॥ मालपुआ माखन मथि कीन्हें । ग्रह ग्रासित रविसम रंग लीन्हें ॥ लावन लाडू लागत नीके । सेव सुहारी घेवर घीके ॥ गोझा गूँदे गालमसूरी ॥ मेवा मिलै कपूरन पूरी ॥ शशि सम सुंदर सरस अँदरसे । ऊपर कनी अमी जनु बरसे ॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी । नाहिंन घटित सुधातें थोरी ॥ देखत हरष होतहै सभी । मनहु बुदबुदा उपजत अमी ॥ फेनी घुरि मिसि मिलीं दूध सँग ॥ मिश्री मिश्रित भई एक रंग ॥ साज्यो दही अधिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर मलाई ॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो । सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो ॥ बासौंधी सिखरनि अति सौंधी । मिलै मिरच मेटत चकचौंधी ॥ छांछ छबीली धरी धुँगारी । झरहै उठत झारकी न्यारी ॥ इतने जतन यशोदा कीन्हें । तब मोहन बालक सँग लीन्हें ॥ बैठे आइ हँसत दोउ भैया । प्रेम मुदित परसतिहै मैया ॥ थार कटोर जरित रतनके ॥ भरि सब बासन विविध जतनकें । पहिले पनवारौ परस.यो । तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेंवत रुचि अधिकौ अधिकैया । भोजनहू बिसरति नहिं गैया ॥ शीतल जल कपूर रस रचयो । सो मोहन निज रुचि करि अचयो ॥ महरि मुदित नित लाड लडावै । ते सुख कहां देवकी पावै ॥ धरि तुष्टी झारी जल ल्याई । भरचो चुरू खरिका लै आई ॥ पीरे पान पुराने बीरा । खात भई दुति दांतनि हीरा ॥ मृगमद कन कपूर कर लीने । बांटि बांटि ग्वालनको दीने ॥ चन्दन और अरगजा आन्यो । अपने कर बलके अंग बान्यो ॥ ता पाछे आपुनहूं लायो । उबरचो बहुत सखन पुनि पायो । सूरदास देख्यो गिरिधारी । बोलि दई हँसि जूंठनि थारी ॥ यह जेवनार सुनै जो गावै । सो निजभक्ति अभयपद पावै ॥ २१ ॥

राग बिलावल । रामकली ॥ भोजन करत मोहनराइ । हरषि मुखतन देत मोहन आपु लेत छडाइ ॥ देखहीं मुख नंदको तब आनंद उर न समाइ । निरखि प्रभुकी प्रगट लीला जननि लेति बलाइ ॥ नंदनंदन नीर शीतल अचै उठे अघाइ । सूर जूंठन भक्तपाई देव रहे लुभाइ ॥ २२ ॥

राग बिलावल ॥ देख सखी ब्रजते बन आवत । रोहिणी सुत यशुमति सुतकी छबि गौर श्याम हरि हलधर गावत ॥ नीलांबर पीतांबर ओढे यह शोभा कछु कही न जात । युगल जलद युग तडित मनहुँ मिलि अरस परस जोरत हैं नात ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल झलकै विविध कपोलहिं भांति । मनहु जलद युग पास युगल रवि तापर इंद्रधनुषकी कांति ॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारन चले मन उनमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनँदनंदन बोलत वचन मधुरि मुसुकानि ॥ चितै रहीं ब्रजकी युवती सब आपुसहीमें करत बिचार । गोधन वृन्द लिए सूरज प्रभु वृन्दावन गए करत बिहार ॥ २३ ॥

ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति । राग गौरी ॥ छबीले मुरली नेक बजाउ । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्याउ ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेम तरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वैहै श्याम तुम्हारो सँग ॥ विनती करहिं सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम दै कान । जा रसको सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोपभेष ब्रज धरिहौ फिरिहौ सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनिकै खैहौ हो गोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कन्ध कमरिया ग्वालन दई डसाइ । सौंह दिवाइ नंद बाबाकी रहे सकल गहि पाइ ॥ सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर चितए मुख मुसकाइ ॥ गुण गम्भीर गोपाल मुरलि कर लीन्हों तबहिं उठाय ॥ धरि कर बेनु अधर मन मोहन कियो मधुर ध्वनि गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुनि वार्‌यो तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नासापुट सुनि सुन्दर मुख बैन । मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिये नायक मैन ॥ चमकत मोरचंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानहु कमल कोश रस चाखत उडि आए अलि माल ॥ कुण्डल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानहु सुधा सिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल । सरबस दियो मदन मोहनको प्रेम हरषि सब ग्वाल ॥ शोभित वैजंती चरणन पर श्वास पवन झकोरि । मनहु ग्रीव सुरसरि बहि आवत ब्रह्मकमंडलु फोरि ॥ डुलति लता नहिं मरुत मन्दगति सुनि सुन्दर मुख बैन । खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा सुभग सांवरे गात । मानो षट विधु एक रथ बैठे उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बाके अवलोकनि जु अनूप । मानहु कल्पतरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूप ॥ आयसु दियो गुपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत रूपनिधान ॥ २४ ॥

राग सारंग ॥ रीझत ग्वाल रिझावत श्याम । मुरलि बजावत सखन बोलावत सुबल सुदामा लैलै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी देदै नाम हमारो मुरली लेत । श्याम कहत अब तुमहुँ बोलावहु अपने करते ग्वालन देत ॥ मुरली लैलै सबै बजावत काहूपै नहिं आवै रूप । सूर श्याम तुम्हरेहि मुख बाजत कैसे देखो रागअनूप ॥ २५ ॥

राग टोडी ॥ हरिबराबरि वेणु कौन बजावै । जगजीवन विदित मुनिनाचन वेणु सो बजावै चतुरानन पंचानन सहसानन ध्यावै ॥ ग्वालबाल लिए यमुना कच्छ बच्छ चरावै ।

सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ न पार पावै ॥ तारन तरन अगणित गुण निगम नेति गावै ॥ तुमको यशुमति आँगन अपने दै करताल नचावै । सूरदास प्रभु कृपाधाम हैं भक्तनवश्य कहावै ॥ २६ ॥

अथ परस्पर गोपीकावचन विरहअवस्था ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत देहगति भूली । गोपी प्रेमहिंडोरे झूली । कवहूँ चकृत होहिं सयानी । स्वेदचलै द्रव जैसे पानी॥धीरज धरि इक इकहिं सुनावहिं । यह कहिकै आपुहि बिसरावहिं ॥ कवहूं सुधि कवहूं बिसराई । कवहूं मुरलीनाद समाई ॥ कवहूं तरुणी सब मिलि बोलैं । कवहूं रहैं धीर नहिं डोलैं ॥ कवहूँ चलै कवहुँ फिरिआवैं । कवहुँ लाज तजि लाज लजावैं ॥ मुरली श्यामसुहागिनि भारी । सूरदास प्रभुकी बलिहारी ॥ २७ ॥

राग बिहागरो ॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत । सारंग गौरी नटनारायण करिकै गौरी सुरहि सुनावत ॥ आपु भए रसवश ताहीके औरन वश करवावत । ऐसो को त्रिभुवन जल थलमें जो शिर नहीं धुनावत ॥ सुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारिन भावत । सूरदास प्रभु गिरिधर नागर मुरली धरनकहावत ॥ २८ ॥

राग सारंग ॥ अधररस मुरली सौतिन लागी । जा रसकी षटऋतु तप कीन्हों सो रस पिवत सभागी ॥ कहां रही कहँते इह आई कौने याहि बोलाई । सूरदास प्रभु हमपर ताको कीने सवति बजाई ॥ २९ ॥

राग केदारो ॥ मुरली मोहनी भई । करी जु करनि देव दनुजनि प्रतिवह विधि फेरिढई ॥ वह पयनिधि इन ब्रजसागर मथि प्याइ पियूष नई । सिंधुसुधा हरि वदन इंदुकी इह छलछीनि लई ॥ आपु अँचै अचवाइ सप्तसुर कीन्हें दिगविजई । एकहि पुट उत अमृत सूर इत मदिरा मदनमई ॥ ३० ॥

जोपै मुरलीको हित मानौ ॥ तौ तुम वार वार ऐसे कहि मनमें दोष न आनौ । वासर श्यामविरह अहिग्रासित हूजत मृतकसमान । लेति जिवाय मंत्र सुरस कही करति न डर अपमान ॥ निज संकेत खिलावति अजहूँ मिलवति सारँगपानि । शरदनिशा रस रास करायो बोलि बोलि मृदुवानि ॥ परकृत शील सुकृत उपमा रमि तासों यों कत कहिए । परमानंदसूरदास क्यों मेटिकृत न्याइ इतो दुख सहिए ॥ ३१ ॥

राग मलार ॥ अधरमधुकतक मुई हमराखि । संचित किए रही सरधासो सकी न सकुचनि चाखि ॥ शशि सहि शीत जाइ यमुनातट दीन वचन दिन भाषि । पूजि उमापतिको वर पायो मनहींमन अभिलाषि ॥ सोइ अब अमृत पीवति मुरली सबहिनके शिर नाखि । लिए छँडाइ निडर सुनि सूरज धेनुधूरिदै आँखि ॥ ३२ ॥

राग नट ॥ सखी री माधो हि दोष न दीजै । जो कछु करि सकिये सोई या मुरलीको अब कीजै ॥ वार वार वन बोलि मधुर ध्वनि अति प्रतीति उपजाइ । मिलि श्रवणन मन मोहि महारस तनकी सुधि बिसराइ ॥ मुखमृदु वचन कपट अंतर गति हम यह बात न

जानी । लोक वेद कुल छाँड़ि आपनो जोइजोइ कही सु मानी ॥ अजहूँ वहै प्रकृति याके जिय लुब्धकसंग जु साधी । सूरदास क्योंही करुणामय परति नहीं आराधी ॥ ३३ ॥

मुरली तो यह आहिबांसकी । बाजत श्वास परत माहिं जानति भई रहति पियपासकी । चेतनको चित हरति अचेतनि भूखी डोलत मासकी ॥ सूरदास सब ब्रजवासिनसों लिये रहति है गाँसकी ॥ ३४ ॥

जादिनते मुरली कर लीन्ही । तादिनते श्रवणन सुनि सुनि सखि मनकी बात सबै लै दीन्ही । लोकवेद कुल लाजकानि तजि मर्याद वचन मितिकीन्ही । तबहीते तनुसुधि बिसराई निशिदिन रहति गोपाल अधीन्ही ॥ शरदसुधानिधि शरदअंश ज्यों सींचत अमी प्रेमरस भीनी । ताऊपर शुभदरश सूर प्रभु श्रीगोपाल लोचनगति छीनी ॥ ३५ ॥

मुरली भई आजु अनूप । अधरबिंब बजाय कर धरि मोहे त्रिभुवन भूप देखि गोपी गाइ गाइन देखि गृह वन कूप । देखि मुनिजन नाग चंचल देखि सुंदररूप ॥ देखि धरणि अकाश सुर नर देखि शीतल धूप । देखि सूर अगाध महिमा भए दादुर चूप ॥ ३६ ॥

राग कान्हरो ॥ मुरलिया मोको लागत प्यारी । मिली अचानक आइ कहांते ऐसी रही कहां री ॥ धनि याके पितु मात धन्य यह धन्य धन्य मृदु बोलनि । धन्य श्याम गुण गुणिकै ल्याये नागरि चतुर अमोलनि ॥ इह निर्मोल मोल नाहिं याको भली न याते कोई । सूरदास याको पटतर को तौ दीजै जोहोई ॥ ३७ ॥

राग गौरी ॥ मोहन मुरली अधरधरी । कंचनमणिमयखचितरचितअतिकर गिरिधरन परी ॥ औघरतान बंधान सरस सुर अरु रस उमँगि भरी । हरि कर्षत मनतन युवतिनके नग खग विवश करी ॥ पियमुखसुधा विलासविलासिनि सुरत सँगीत समुद्र तरी । सूरदास त्रैलोकविजययुत दर्प मीनपति गर्व हरी ॥ ३८ ॥

राग केदारो ॥ मुरली श्यामके कर अधरबिंब रमी । लेपि सर्वसु युवति जनको बदन बिंदतअमी ॥ पिवति न्यारे गर्व मारे नेकु नाहीं नमी । बोलिशब्द सुसप्त सुर मिलि नाग मुनि गति दमी ॥ महाकठिन कठोर आली बांसबंश जु जमी । सूर पूरण परसि श्रीमुखनेकनाहीं झमी ॥ ३९ ॥

राग मलार ॥ बाँसुरी विधिहूते परवीन । कहिए काहि आहिको ऐसो कियो जगत आधीन ॥ चारि वदन उपदेश विधाता थापी थिर चर नीति । आठ वदन गर्जति नवौली क्यों चलिए यह रीति ॥ विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान । हरिकरकमलयुगलपर बैठी बाढ्यो यह अभिमान ॥ एकबेर श्रीपतिके सिखये उन लियो सब गुण गान । इनके तौ नँदलाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान ॥ एक मराल पीठि आरोहण विधि भयो प्रबल प्रशंस । इन तौ सकल विमान किए गोपीजन मानस हंस ॥ श्रीवैकुंठनाथ-उर वासिनि चाहत जापद रेन । ताको मुख सुखमय सिंह सन करि वैसी यह

ऐन ॥ अधरसुधा पी कुलव्रत टारचो नहीं सिखा नाहिं नाग । तदपि सूर या नंदसुवनको याहीसों अनुराग ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥ बंसी बैर परी जु हमारी । अधर पियूष अंश तिनहींको इन प्रियो सब दिन निजनिज प्यारी ॥ इकधौं हरि मन हरति माधुरी दूजे वचन हरत अनियारी । बाँस बंश हरि वेध महाशुभ अपने छेद न जानत कारी ॥ सुन्यो सुपति जानी ब्रजके पति सो अपनाइ लियो रखवारी । सुन अनीति सूरज प्रभुकेरी अधर गोपाल जे अपने धारी ॥ ४१ ॥

राग मलार ॥ जब जब मुरलीके मुख लागत । तब तब श्याम कमलदललोचन नख शिखते रस पागत ॥ बात न कहत रहत टेढे होइ बाँह अलिंगन मानत । भृकुटी अधर बिंब नासा पुट सूधो चितवन त्यागत ॥ पलइक माँह पलटिसों लीजत परगट प्रीति अनागत । सूरदास स्वामी बंसीवशमुरछि निमेष न जागत ॥ ४२ ॥

बंसीवचन रागमलार ॥ ग्वालिनी तुम कत उरहन देहु । पूछहु जाइ श्यामसुंदरको जिहि विधि जुरचो सनेहु ॥ बारेहीते भई विरत चित तज्यो माँउ गुण गेह । एकहि चरण रहीं हौं ठाढी दिम ग्रीषम ऋतु मेह ॥ तज्यो मूल शाखा सो पत्रनि सोच सुखानी देहु । अगिनि सुलाकत मुरचो न अँग मन बिकट बनावत वेहु । बकतीं कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु । सूर श्याम इहि भाँति रिझैके तुमहु अधररस लेहु ॥ ४३ ॥

राग मलार ॥ ज्यों ज्यों मुरलिहि महत दियो । त्यों त्यों निदरि श्याम कोमल तन वदन पियूष पियो ॥ रोके रहति पाणिपल्लव पुट होत न कछू वियो । बैटति अधरन पीट परमरुचि सकुचति नाहिं हियो ॥ जान्यो जग रतिपति शिव जारचो सो यह सूर जियो । विधि मर्याद मेटि इन जो जो रुचिआयो सो कियो ॥ ४४ ॥

राग सारंग ॥ इन मुरली कछु भलो न कीन्हों । अधर सुधा रसवर सु हमारो आपुन पियो अरु औरन दीन्हों ॥ वीरुधद्रुम तृण सोह सलिलतट पूजति गौरि भयो तनु छीनो । सो मधु सूरज परसि कुटिल चित सबहिनके देखत हरि लीनो ॥ ४५ ॥

अथ श्रीकृष्ण ब्रज आवत ॥ राग गौरी ॥ नटवर भेष धरे ब्रज आवत । मोरमुकुट मकराकृत कुंडल कुटिल अलक मुखपर छबि पावत ॥ भृकुटी विकट नैन अति चंचल यह छबि पर उपमा इक धावत । धनुष देखि खंजन विवि डरपत उडि न सकत उठिबे अकुलावत ॥ अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत । सुरभीवृन्द गोप बालक सँग गावत अति आनंद बढावत । कनक मखलो कटि पीतांबर नृत्यत मंद मंद सुर गावत । सूर श्याम प्रतिअंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन भावत ॥ ४६ ॥

राग कान्हरो ॥ ब्रजयुवती सब कहत परस्पर बनते श्याम बने ब्रज आवत । ऐसी छबि मैं कबहुं न पाई सखी सखीसों प्रगट देखावत ॥ मोरमुकुट शिर जलजमाल उर कटितट पीतांबर छबि पावत । नव जलधर पर इंद्रचाप मनो दामिनि छबि बलाक घन धावत ॥ जेहि

जु अंग अवलोकन कीन्हों सो तन मन तहँ हीं विरमावत । सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत ॥ ४७ ॥

राग गुण सारंग ॥ मेरे नयन निरखि सचुपावैं । बलि बलि जाऊँ मुखारविंदकी बनते पुनि ब्रज आवैं ॥ गुंजाफल अवतंस मुकुटमणि वेणु रसाल बजावैं । कोटि किरणि मुखमें जो प्रकाशत उडुपति वदन लजावैं ॥ नटवर रूप अनूप छबीलो सबहिनके मनभावैं । सूरदास प्रभु चलत मंदगति विरहिन ताप नशावैं ॥ ४८ ॥

राग गौरी ॥ बलि बलि मोहनि मूरतिकी बलिबलि कुंडलबलिनैनविशाल । बलिभ्रुकुटी बलितिलक विराजत बलि मुरली बलि शब्द रसाल ॥ बलि कुंडल बलि पाग लटपटी बलि कपोल बलि उर वनमाल । बलि मुसुकानि महामुनि मोहत बलि उपरैना गिरिधर लाल ॥ बलि भुज सखाअंसपर मेले बलि कुलही बलि सुंदर चाल । बलि काछनी चोलनाकी बलि सूरदास बलि चरण गोपाल ॥ ४९ ॥

राग जैतश्री ॥ सुंदर साँवरे हो तैं चित लियो चुराइ । संगसखा साँझके समये निकसे द्वारे आइ ॥ देखि अद्भुत रूप तेरे रहे नयन उर छाय । पाग ऊपर गोसमावल रंगरंग रचि बनाइ ॥ अति सुंदर शुक नासिका राजत लोल कपोल । रत्नजडित कुंडल ज्यों झलकत करन कपोल ॥ कटितट काछ विराजइ पीतांबर छवि देत । अमृत कमल मुख भाषई तन मन वश करिलेत ॥ भौंहैं धनुष दुइ वरुनि मनो मदन शर साध । जाहि लगे सोइ जाने संग लेत बलि बांध ॥ अंग अंगपर बलिगई मुरली नेक बजाइ । सुनि सचुपावैं गोपिका सूरदास बलिजाइ ॥ ५० ॥

राग बिलावल ॥ श्याम कछु मोतन ही मुसुकात । पीतांबर पहिरे चरण पाँवरी ब्रजबीथिनमें जात ॥ अतिबुधि बंदि बंद नखशिखलौं सौंधे भीने गात । अलकावली अधर मुख बीरा काँध कमल करदिशहि फिरावत ॥ धन्य भाग्य ब्रजके जो सखी री धनिधनि उनके जननी तात । धन्य जे सूरदास प्रभु निरखत अति भूँखे लोचन न अघात ॥ ५१ ॥

राग अडानो ॥ श्यामसुंदर आवैं वनते बने आजु देखि देखि नैन रीझे । शीशमुकुट डोल श्रवणकुंडल लोल भ्रुकुटी धनुष नैनखंजन झीझे ॥ दशन दामिनि ज्योति उरपर माल मोती ग्वालबाल सब आवैं रँगभीजे । सूर प्रभु श्याम प्रभु राम संतनके सुखद धाम अंगअंग प्रति छबि निरखि जीजे ॥ ५२ ॥

राग कान्हरो ॥ विराजत री बनमाल गरे हरे हरि आवत वनते । पुहुपनि लाल पाग लटकिरही वाम भाग सो छवि टरत न मनते ॥ मोरमुकुट शिर श्रीखंड गोरज मुखपर मंडित नटवर भेष धरे आवत छविते । सूरदास प्रभुकी छवि ब्रजललना निरखि थकित तन मन न्यवछावरि करति आनंद बरते ॥ ५३ ॥

राग गौरी ॥ ब्रजको देखि सखी हरि आवत । कटितट सुभग पीतपट राजत अद्भुत भेष बनावत ॥ कुंडल तिलक चक्र रज मंडित मुरली मधुर बजावत । हँसि मुसुकानि नेक अवलोकनि मन्मथ कोटि लजावत ॥ पीरी धौरी धुमरी गौरी लैलै नाम बोलावत । कबहुँ

गान करत अपने रुचि करतल ताल बजावत ॥ कुसुमित दाम मधुप कल कुंजत संग सखा मिलि गावत । कबहुँक नृत्य करत कौतूहल सप्तक भेद दिखावत ॥ मंद मंद गति चलत मनोहर युवतिन रस उपजावत । आनँदकंद यशोदानंदन सूरदास मन भावत ॥५४॥

राग गौरी ॥ कमलमुख शोभितसुंदरवेनु । मोहनराग बजावत गावत आवत चारे धेनु ॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर जनु साज्यो अलिसैनु । सहि न सकति मुरली मधु पीवति चाहत अपनो ऐनु ॥ भ्रुकुटी मनो कर चाप आप लै भयो सहायक मैनु । सूरदास प्रभु अधरसुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु ॥ ५५ ॥

राग केदारो ॥ नैनन निरखि हरिको रूप । मनबुद्धि दै सुख चितै माई कमल अयन अनूप ॥ कुटिल केश सुदेश अलिगण नैन शरद सरोज । मकरकुंडलकिरणिकी छबि दुरत पियत मनोज ॥ अरुन अधर कपोल नासा सुभग ईषद हास । दशन दामिनि जलद नव-शशि भ्रुकुटि वदन विशाल ॥ अंग अंग अनंग जीते रुचिर उर वमनाल । सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल ॥ ५६ ॥

राग केदारो ॥ हरिको वदन रूपनिधान । दशन दाडिमबीज राजत कमलकोश-समान ॥ नैन पंकज रुचिर द्दगदल चलन भौंहन बान । मध्य श्यामा सुभग मानौं अलिहि बैठो आन ॥ मुकुट कुंडल किरनि किरननि कियकिरनकी हान । नासिका मृग तिलक ताकत चिबुक चित्त भुलान । सूरके प्रभु निगमवाणी कौन भाँति बखान ॥५७॥

राग नट ॥ माधोजूके वदनकी शोभा । कुटिल कुंतलकमलमुख मनौं मधुपरस लोभा ॥ भ्रुकुटि धनु नव कंज पारस सदृश चंचल मीन । मुकुट कुंडल किरनि रवि छबि परस बिगसित कीन ॥ सुरभिरेणु पराग रंजित मुरलि ध्वनि अलिगुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मराल सम शिशुपुंज ॥ दशन दामिनि बीच मिलि मनो जलद मध्य प्रकाश । गावत निगम वाणी नेति क्यों कहि सकै सूरदास ॥ ५८ ॥

राग नट ॥ देखि री देख मोहन ओर । श्यामसुभग सरोज आनन चारु चित्त चकोर नील तनु मनु जलदकी छबि मुरली सुर घन घोर । दशन दामिनि लखत बदननि चितवनि झकझोर ॥ श्रवणकुंडल गंड मंडल उदित ज्यों रवि भोर । बरहि मुकुट विशाल माला इंद्रधनु छबि थोर ॥ वनधातु चित्रित भेष नटवर मुदित नवल किशोर । सूर श्याम सुभाइ आतुर चितै लोचनकोर ॥ ५९ ॥

राग कल्याण ॥ माधो जूके तनुकी शोभा कहत नाहिं बनि आवै । अचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नाहिं तृपिता पावै ॥ सघनमेघ अतिश्याम सुभगवपु तडित वसन बनमाल । शिरशिखंड बनधातु विराजत सुमन सुरंग प्रबाल ॥ कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केश । अंबुज रुचि परागपर मानो राजत मधुप सुदेश ॥ कुंडल लोल कपोल किरणि गण नैन कमलदल मीन । अधर मधुर मुसकानि मनोहर करत मदनमन हीन ॥ प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छबि सुन सखी परमप्रवीन । सूरदृष्टि जहँ जहँ परति तहँ तहँ रहति है लीन ॥ ६० ॥

राग हमीर ॥ इहै कोऊ जानै री । वाकी चितवनिमैं कि चंद्रिका मैं किधौं मुरली मांझ ठगौरी ॥ देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और खगो री । अरी माई जबते दृष्टि परे मनमोहन गृह मेरो मन न लाग्यो री । सूर श्याम विनु छिन न रहौं मेरो मन उन हाथ पगोरी ॥ ६१ ॥

राग कल्याण ॥ लालके रूप माधुरी नैनन निरखि नैक सखी री । मनसिजमन हरन हँसि साँवरो सुकुमारराशि नख शिख अंगअंग निरखि शोभाकी सींव नखी री । रंगमगी शिर सुरंग पाग लटकि रहीं वामभाग चंपकली कुटिल अलक बिच बीच रखी री ॥ आयत दृग अरुण लोल कुंडल मंडित कपोल अधर दशन दीपतिकी छवि क्योंहू न जात लखीरी । उभय भुजदंड मूल पीन अंस सानुकूल कनक मेखला दुकूल दामिनी धरखीरी ॥ उरपर मंदार हार मुकुतालर बर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियनि देहदशा करखीरी ॥ मुकुकित वय नवकिशोर बचनरचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनूप मंचरी चखीरी ॥ सूर श्याम अति सुजान गावत कल्यानतान सप्त सुरन कल इतेपर मुरलिका वरषीरी ॥ ६२ ॥

राग गौरी ॥ ढोटा कौनकोइहरी ॥ श्रुतिमंडल मकराकृतकुंडलकनक कंठदुलरी ॥ घन तन श्याम कमलदल लोचन चारु चपलतुलरी । इंदुवदन मुसुकानि माधुरी अलकन अलिकुल री ॥ उर मुक्ताकी माल पीतपट मुरली सुर गौरी । पग नूपुर मणिजडित रुचिर अति कटि किंकिणिरव री ॥ बालकवृंद मध्य राजत हैं छवि निरखत भुलरी । सोइसजीवन सूरदासकी महरि रहे उर री ॥ ६३ ॥

राग गौरी ॥ इह ढोटा नंदको है री । नहीं जानति बसति ब्रजमें प्रगटगोकुलरी ॥ धरचो गिरिवर वामकर जेहिं सोई है यह री । दैत्य सब इनहीं सँहारे आपु भुजबल री ॥ ब्रजघरनि जो करत चोरी खात माखन री । नंदघरनी जाहि बांध्यो अजिर ऊखल री ॥ सुरभिगण लिए वनते आवत सबइ गुण इन री । सूर प्रभु ए सबहि लायक कंसडर जिनरी ॥ ६४ ॥

यशुमतिको सुत इहै कन्हाई । इनहिं गोवर्द्धन लियो उठाई ॥ इंद्र परचो इनहींके पाई । इनहीकी ब्रज चलत बडाई ॥ बकी विवावन इनहीं आई । योजन एक परी मुरझाई ॥ इनहिं तृण लै गयो उडाइ । पटक्यो द्वार शिलापर आइ ॥ केशी सुर इनहीं संहारचो । अघा बकासुर इनहीं मारचो ॥ श्याम बरन तनु पीत पिछौरी । मुरली राग बजावत गौरी ॥ देखि रूप चकृत भई बाला । तनुकी सुधि न रही तेहि काला ॥ सूर श्यामको जानति नीके । मगन भई पूँछत सुख जीके ॥ ६५ ॥

राग गौरी ॥ आवत वनते सांझ देखे मैं गायन माँझ काहूको ढोटारी एक शीश मोर पँखिआ । अतसीकुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानो रसभरी जो लरति युग झँखिआ । केसरिकी खौरिकिए गुंजा वनमाल हिये उपमा न कहिआवे जेती तैं नखिआ ॥ राजत पीत पिछौरी मुरली बजावै गौरीध्वनि सुनि भई बौरी रही पलक अँखिआ॥चल्यो न परत पग गिरि परीसुधे मग भामिनि भवन ल्याई कर गहे कँखिआ ॥ सूरदास प्रभु चित्त चोरि लियो मेरेजान और न उपाव दांव सुनो मेरी सखिआ ॥ ६६ ॥

राग देवगंधार ॥ इक दिन हरि हलधर सँग ग्वालन । प्रात चले गोधन वन चारन ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत । कोउ सिंगी कोउ नाद सुनावन ॥ खेलत हँसत गए वन महियां । चरन लगीं जितकित सब गैयां ॥ हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे । सूर अमंगल मनके भागे ॥ ६७ ॥

अध्याय ॥ ३६ ॥ वृषभासुर वध केशी । राग सोरठ ॥ यहि अंतर वृषभासुर आयो । देखे नंदसुवन बालक सँग ईहै घातहै पायो ॥ गयो समाइ धेनुपति ह्वैके मनमें दाउं बिचारै हरि तबहीं लखि लियो दुष्टको डोलत धेनु बिडारै ॥ गैयां बिडरि चलीं जित तितको सखा जहां तहां धैरें । वृषभ श्रृंगसों धरणि उकासत बल मोहन तन हेरैं ॥ आवत चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अंग सारी । कूदि परचो हरि ऊपर आयो कियो युद्ध अति भारी ॥ धाइ परे सब सखा हांक दै वृषभ श्यामको मारचो ॥ पाऊं पकरि भुजसों गहि फेरचो भूतल माँह पछारचो ॥ परचो असुर पर्वत समान ह्वै चकित भए सब ग्वाल । वृषभ जानिकै हम सब धाए यह कोऊ बिकराल ॥ देखि चरित्र यशोमति सुतके मनमें करत बिचार । सूरदास प्रभु असुर निकंदन संतन प्राण अधार ॥ ६८ ॥

राग गौरी ॥ धन्य कान्ह धनि धनि ब्रज आये । आजु सबनि धरिके यह खातो धनि तुम हमहिं बचाए ॥ यह ऐसो तुम अतिहि तनकसे कैसे भुजन फिरायो । पलकहि मांझ सबनके देखत मारचो धरणि गिरायो ॥ अबलौं हम तुमको नहिं जान्यो तुमहिं जगत-प्रति पालक । सूरदास प्रभु असुर निकंदन ब्रजजनके दुखदालक ॥ ६९ ॥

राग कल्याण ॥ आवत मोहन धेनु चराए । मोर मुकुट शिर उर बनमाला हाथ लकुट गोरज लपटाए ॥ कटिक छनी किंकिणि ध्वनि बाजत चरण चलत नूपुर रवराए । ग्वाल मंडली मध्य श्याम घन पीतवसन दामिनिहि लजाए ॥ गोप सखा आवत गुण गावत मध्य श्याम हलधर छवि छाए । सूरदास प्रभु असुर सँहारचो ब्रज आवत मन हर्ष बढाए ॥ ७० ॥

ये गोरेणु रंजित आवत हैं मोहनलाल । श्याम सुभग तनु तडित वसन बग पंगति मुक्ता हार वनमाल ॥ गोपदरज मुखपर छबि लागति कुंडल नैन बिशाल । बल मोहन वनते बने आवत लीने गैया जाल ॥ ग्वाल मंडली मध्य विराजत बाजत वेणु रसाल । सूर श्याम वनते ब्रज आए जननि लिये अँकमाल ॥ ७१ ॥

राग कान्हरो ॥ तेरो माई गोपाल रणशूरो । जहँ तहँ भिरत प्रचारि पैज करि तहीं परत हैपूरो ॥ वृषभ रूप दानव इक आयो सो क्षणमांझ सँहारचो । पांव पकरि भुजसों गहि वाको भूतल माहँ पछारचो ॥ कहत ग्वाल यशुमति धनि मैया बडो पूततैं जायो । यह कोउ आदि पुरुष अवतारी भाग्य हमारे आयो ॥ चरण कमलपै वंदित रहिये अनुदिन सेवा कीजै । बारंबार सूर कहै प्रभुकी हरषि बलैया लीजै ॥ ७२ ॥

राग सोरठ ॥ यशुमति बारबार पछितानी । सुनि करतूति वृषभासुरकी जब ग्वाल कहीं मुखबानी ॥ गैयन भीतर आइ समान्यो कान्हहि मारन ताक्यो मैं नहिं काहूको कछु

घाल्यो पुण्यनि करवर नाक्यो ॥ सुन यशुमति मैया वत खीजत हरिके भाए ख्याल । पर्वत तूल देह धरिकै पलकमें कियो बेहाल ॥ तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं यह ब्रजके रखवार । सूरदास मन मोह्यो सबको मोहन नँदकुमार ॥ ७३ ॥

राग सारंग ॥ हमहिं डर कौनको री मैया । डोलत फिरत सकल वृन्दावन जाके मीत कन्हैया ॥ जब जब गाढ परतहै हमको तहँ करिलेत सहैया । चिरजीवहु यशुमति सुत तेरो हरि हलधर दोउ भैया ॥ इतने बडे और नहिं कोऊ इहि सब देत बडैया । सूरश्याम सन्मुख जे आए ते सब स्वर्ग चलैया ॥ ७४ ॥

राग कान्हरो ॥ हँसि जननीसों बात कहत हरि देख्यों मैं वृन्दावन नीके । अति रमणीक भूमि द्रुम वेली कुंज सघन निरखत सुखजीके ॥ यमुनाके तट धेनु चराई कहत मात मनवीके । भूख मिटी वन फलके खाए प्यास यमुनजल पीके ॥ सुनति यशोदा सुतकी बातैं अति आनंद मगन तवहीके । सूरदास प्रभु विश्वभरन ए चोर भए ब्रज तनकदहीके ॥७५॥

गोविंद गोकुलकी जीवनि मेरे । जाहि लगाइ रही तन मन धन दुख भूलत मुख हेरे ॥ जाके गर्व वच्यो नहिं सुरपति रह्यो सात दिन घेरे । ब्रजहित नाथ गोवर्धन धारे सुभग भुजन नख नेरे ॥ जाके यश ऋषि गर्ग बखान्यो कहत निगम निज टेरे । सोइ अब सूर सहित संकर्षण पाए जतन घनेरे ॥ ७६ ॥

अध्याय ॥ ३७ ॥ अथ केशीवध । राग मारू ॥ असुर पति अतिहि गर्व धरचो । सभामांझ बैठो गर्जत है बोलत रोष भरचो ॥ महामहा जे सुभट दैत्यबल बैठे सब उमराउ । तिहुँ भुवन भरि गमि है मेरो मो सन्मुख को आउ ॥ मो समान सेवक नहिं मेरे जाहि कहौं कछु दाव । काहि कहौं को ऐसो लायक ताते मोहिं पछिताव ॥ नृपतिराइ आयसु दै मोको ऐसो कवन विचार । तुम अपने चित सोचत जाको असुरनके सरदार ॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताको तिनको है संहार । मथुरापति यह सुनि हरषित भयो मनहिं धरचो अतिभार ॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर ध्वज पताक बहुबान । ऐसो को जो मोहिं न जानत तिहूँ भुवन मेरी आन ॥ असुर वंश जे महाबली सब कहौं काहि ह्याँ जान । तनक तनकसे महर ढिटौना करि आवे विन प्रान ॥ यह कहि कंस चितै केशीतन कह्यो जाइ करि काज । तृणावर्त शकटा अरु पूतना उनके कृत सुनि लाज ॥ तोते कछु ह्वैहै यों जानत धरि आनै ज्यों बाज । छलकै बलकै मारु तुरतही लै आवहु अब आजु ॥ अति गर्वित है कह्यो असुर भट कितिक बात यह आहि । कह मारौं जीवत धरि लावौं एक पलकमें ताहि ॥ आज्ञापाइ असुर तव धायो मनमें यह अवगाहि । देखौं जाइ कौन वह ऐसे कंस डरतहै जाहि ॥ माया चरित करि गोप पुत्र भयो ब्रज सन्मुख गयो धाइ । वल मोहन ग्वालन बालक सँग खेलत देखे जाइ ॥ धाइ मिल्यो कोउ रूप निशाचर हलधर सैन बताइ । मन मोहन मनमें मुसुकाने खेलत फलनि जनाइ ॥ द्वै बालक बैठारि सयाने खेल रच्यो ब्रजखोरि । और सखा सब जुरि जुरि ठाढे आपु दनुज सँग जोरि ॥ फलको नाम बुझावन लागे हरि कहि दियो अमोरि ।

कंध चढे जिमि सिंह महाबल तुरतहि घींच मरोरि ॥ तबकेशी ह्वै बरवपु काछयो लैगयो पीठि चढाइ । उतरि परे हरि ता ऊपरते कीन्हों युद्ध अघाइ ॥ दाउ घाउ सब भाँति करत है तब हरि बुद्धि उपाइ । एक हाथ मुख भीतर नायो पकरि केश धरि जाइ ॥ चहुँघा फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठयो आघात । चौंकि परयो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो परात ॥ यह कोइ नहीं भलो ब्रज जनम्यो याते बहुत डरात । जान्यो कंस असुर गहि पटक्यो नंदमहरके तात ॥ और सखा रोवत सब धाए आइ गये नर नारि । ग्वाल-रूप सँग खेलत हरिके लै गयो कांधे डारि ॥ धाए नंद यशोदा धाईं नितप्रति कहा गुहारि । ना जानिये आहि धौं को यह कपटरूप वपुधारि ॥ यशुमति तब अकुलाइ परी गिरि तनुकी सुधि न रहाइ । नंद पुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाइ ॥ दैत्य सँहारि कृष्ण तहँ आए ब्रजजन मरत जिवाइ । दौरि नंद उर लाय लियो सुत मिली यशोदा माइ ॥ खेलत रह्यो संग मिली मेरे लै उड़िगयो अकास । आपुनही गिरिपरयो धरणिपर मैं उब-रयो तेहि पास ॥ उर डरात जिय बात कहत उहि आए हैं करि नाश । सूर श्याम घर यशुमति लै गई ब्रजजनमनहिं हुलास ॥ ७७ ॥

अथ भौमासुरवध ॥ राग बिलावल ॥ हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे वनमें आँखि मिचाइ । शिशु होइ भौमासुर तहँ आयो काहू जान न पाइ ॥ ग्वालरूप होइ खेलन लाग्यो ग्वालनको लैजाइ चुराइ । धरै दुहाइ कंदरा भीतर जानी बात कन्हाइ ॥ गुदी चांपिकै ताहि निपात्यो परयो धरणि मुरछाइ । सूर ग्वाल मिलि हरि गृह आए देव दुंदुभी बजाइ ॥ ७८ ॥

राग कान्हरो ॥ कहति यशोदा बात सयानी । भावी नहीं मिटै काहूकी कर्ताकी गति काहु न जानी ॥ जन्म भयो जबते ब्रज हरिको कहा कियो करि करि रखवानी । कहां कहांते श्याम न उबरयो केहि राख्यो ता अवसर आनी ॥ केशी शकट अरु वृषभ पूतना तृणावर्त्तकी चलति कहानी । को मेरे पछिताइ मरै अब अनजानत सब करी अयानी ॥ लै बलाइ छातीसों लाए श्याम राम हरषति नँदरानी । भूँखे भए प्रात अघखातहि ताते आजु बहुत पछितानी ॥ रोहिणि तुरत न्हवाइ दुहुँनको भोजनको माता अतुरानी । ल्याई परसि दुहूँकी थारी जेंवत बल मोहन रुचि मानी ॥ माँगि लियो शीतल जल अँचयो मुख धोयो चरणन लै पानी । बीरा खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी ॥ रत्नजटित पलकापर पौढे वरणि न जाइ कृष्ण रजधानी । सूरदास कछु जूंठनि मांगत तब पाऊं कहि दीजै बानी ॥ ७९ ॥

राग बिलावल ॥ नित्य धाम वृन्दावन श्याम । नित्य रूप राधा ब्रजवाम ॥ नित्य रास जल नित्य विहार । नित्य मान खंडिताभिसार ॥ ब्रह्मरूप एई करतार । करन हरन त्रिभु-वन संसार ॥ नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोर । नित्यहि त्रिविध समीर झकोर ॥ सदा वसंत रहत जहँ बास । सदाहर्षजहँ नहीं उदास ॥ कोकिल कीर सदा तहँ रोर । सदारूप मन्मथ चितचोर ॥ विविध सुमनवन फूले डार । उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव वन-शोभा एक । विहरत हरि सँग सखी अनेक ॥ कुहूकुहू कोकिला सुनाइ । सुनि सुनि नारि

भई हरषाइ ॥ बारबार सो हरिहि सुनावति । ऋतु वसंत आयो समुझावति ॥ फागुचरित रस साध हमारे । खेलहिं सब मिलि संग तुम्हारे ॥ सुनि सुनि सूर श्याम मुसकाने । ऋतुवसंत आयो हरषाने ॥ ८० ॥

वसंतलीला ॥ राग वसंत ॥ राधेजू आज बरणो वसंत । मनहु मदन विनोद विहरत नागरी नवकंत ॥ मिलत सन्मुख पाटलपटलभरत मानजुही । बेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही ॥ केतकी कुच कलस कंचन गरे कंचुकी कसी ॥ मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हँसी ॥ बिरहब्याकुल मेदिनी कुल भई वदन विकास । पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास ॥ उसखाचंपक चतुर अति कुंद मनौ तनमाल । मधुपमणि माला मनोहर सूर श्रीगोपाल ॥ ८१ ॥

राग वसंत ॥ ऐसो पत्र पठायो ऋतुवसंत । तजहु मान मानिनि तुरंत ॥ कागज नवदल अंबुज पात । देति कलममसिभँवर सुगात ॥ लेख निकाम बाणके चाप । लिखि अनंग कसि दीनी छाप ॥ मलयाचल पठयो बिचारि । वाचल पिक सब नेहु नारि ॥ सूरदास क्यों होइ आन । भजि हरि गोपी तजि सयान ॥ ८२ ॥

बेगि चलहु पिय चतुर सयानी । समय वसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहूँ दिशा चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर बानी । बोलत हँसत चपल बन्दीजन मनहु धवल सोइ धूर उडानी ॥ सोलह कला छपाकरकी छबि शोभित छत्रशीशशिरतानी । धीरसमीर रटत बन अलि गण मनहु कामकर मुरलि सुठानी ॥ कुसुम शरासन बान विराजत मनहु मान गढ अनुअनुमानी । सूरदास प्रभुकी वेईगति करहु सहाय राधिका रानी ॥ ८३ ॥

राग वसंत ॥ देख्यो वृंदाबन कमलनयन । मनु आयो है मदन गुण गुदर दयन ॥ १ ॥

भए नवद्रुम सुमन अनेक रंग । प्रति लसित लता संकुलित संग ॥ करधरे धनुष कटि कसि निखंग । मनौ बने सुभट सजि कवच अंग ॥ २ ॥

जहां बान सुमति बह मलय वात । अति राजत रुचिर विलोल पात ॥ धपि धाय धरत मन तुरै गात । गति तेज वसन बाने उडात ॥ ३ ॥

कोकिल कूंजत हैं हंस मोर । रथ शैल शिला पदचर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तर-तारकेरि । निर्झरनिसान डफ भँवर भेरि ॥ ४ ॥

सूरदास इमि वदत बाल । करि काम कृपण शिवक्रोध काल ॥ हँसि चितय चारु लोचन विशाल । तेहि अपने करि थपिए गोपाल ॥ ५ ॥

राग बसंत ॥ राजत तेरे वदन शशी री । किरनि कटाक्ष बाण बरसाधे भौंह कलंक कमान कसीरी ॥ पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री । चक्रवाक खग चोंचपुटीते मनु सेनिवल मंजीर खसीरी ॥ ज्यों नाभीसर एकनाल नव कनककमल विंवि रहे बसी री । सूरज श्रीगोपाल पियारी मेरु नये अधतम धरा धसी री ॥ ८४ ॥

कोकिल बोली वन वन फूले मधुप गुंजारन लागे । सुनि भयो भोर रोर बंदिनको मदन महीपति जागे ॥ तिन दूने अंकुरद्रुम पल्लव जे पाहिले दवदागे । मानहु रतिपति रीझि

याचकन बरनबरन दए बागे ॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नेह नवनागरि हरषति सूर सुरँग अनुरागे ॥ ८५ ॥

देख्यो बृंदावन खेलहिं श्रीगोपाल । सबबनिठनि आई ब्रजकी बाल ॥ नववल्ली सुंदर नव तमाल । नव कमल महा नव नव रसाल ॥ अपने कर सुंदर रचित माल । अवलंबित नागर नंदलाल ॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि । छिरकति नागरि कहँ नव किशोरि ॥ नवगोपवधू राजहीं संग । गजमोतिन सुंदर लसित मंग ॥ गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेश । छिरकत सुगंध भये ललित भेष ॥ श्रीनंदनंदनके भ्रुवविलास । आनंदितगावत सूरदास ॥८६॥

पिय देख्यो बन छबि निहारि । बारबार यह कहति नारि ॥ नव पल्लव बहु सुमन रंग । द्रुमबेली तनुभयो अनंग ॥ भँवराभँवरी भ्रमत संग । यमुन करति नाना तरंग ॥ त्रिविध पवन मनहर्ष दयन । सदा बहत न विरहत चयन ॥ सूरजप्रभु करि तुरग नयन । चलेनारि मन सुखद मयन ॥ ८७ ॥

आयो पिय आयो ऋतुवसंत । दंपतिमन सुखविरहिनि न अंत ॥ फागु खिलावहु संग कंत । हाहा करि करि तृषा गेह दंत ॥ तुरत गए हरि लै मनाय । हरषि मिले उर कंठ लाय ॥ दुख डारचो तुरतहि भुलाय । सोसुख दुहुँके उर न माय ॥ ऋतुवसंत आगमन जानि । नारिन राखो मान बानि ॥ सूरदास प्रभु मिले आनि । रसराख्यो रति रंग ठानि ॥ ८८ ॥

आयो जान्यो हरि ऋतु वसंत । ललना सुख दीन्हों तुरंत ॥ फूले बरन २ सुमन पलास । ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संग नारिचहुँ आस पास । मुरली अमृत करत भास ॥ श्यामा श्याम विलास एक । सुखदायक गोपी अनेक ॥ तजत नहीं काहू छनेक । अलख निरंजन विविध भेक ॥ फागुरंग रस करत श्याम । युवतिन पूरन करन काम ॥ वासरहू सुख देत याम । सूर श्याम बहु कंत वाम ॥ ८९ ॥

देखत नव ब्रजनाथ आजु अति उपजतु है अनु राग । मानहु मदन वसंत मिले दोउ खेलत फूले फाग ॥ झाँझि झालरिनि झारि निसान डफ भँवर भेरिगुंजार । मानहु मदन मंडली रचि पुरवीथिन विपिनि विहार ॥ द्रुमगण मध्य पलास मंजरी मुदित अग्निकी नाई । अपने अपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाई ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी । मानहु लैलै नाउँ परस्पर देत दिवावत गारी ॥ कुंज कुंज प्रति कोकिल कूजति अति रस बिमल बढी । मनु कुलवधू निलज भइ गृहगृह गावति अटनि चढी ॥ प्रफुलितलता जहां जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात । मानहु सबहिनमें अवलोकत परसत गणिका गात ॥ लीन्हें पुहुपपराग पवन कर क्रीडत चहुँ दिशि धाइ । रस अनरस संयोग विरहिनी भरि छाँडति मन भाइ ॥ बहुविधि सुमन अनेक रंग छबि उत्तम भाँति धरे । मनु रति नाथ हाथसों सबही लैलै रंगभारे ॥ और कहाँ लगि कहौं कृपानिधि वृंदाविपिन विराज । सूरदास प्रभु सब सुख क्रीडत श्याम तुम्हारे राज ॥ ९० ॥

सुंदर वर संग ललनाहो विहरत वसंत समय ऋतु आइ । सकल शृंगार बनाइ ब्रज सुंदरि कमलनयनपै लाइ ॥ सरिता शीतल बहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो । अति-

रसभरी कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो ॥ द्वादश बन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले । मौरे अँबुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल । खेलत फागु रसिक ब्रज वनिता सुंदर श्याम तमाल ॥ खावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी । उडत गुलाल अबीर जोर तहँ बिदिश दीप उजियारी ॥ तालपखावज बीन बाँसुरी डफ गावत गीत सुहाये । रसिक गोपाल नवल ब्रज वनिता निकसि चौहटे आये ॥ झूमि झूमि झूमक सब गावति बोलति मधुरी बानी । देति परस्पर गारि मुदितमन तरुनी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नाग लोकपुर सबही अति सुख पायो । प्रथम वसंत पंचमी लीला सूरदास यश गायो ॥ ९१ ॥

सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई । लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयनपर धाई ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले । मौरे अँबुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥ सरिता शीतल बहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो । प्रेम उमंगि कोकिला बोली विरहिनि बिरह जगायो ॥ ताल मृदंग बीन बाँसुरि डफ गावत मधुरी बानी । देत परस्पर गारि मुदित ह्वै तरुणी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जल थल क्रीडारस पावै । प्रथम वसंत पंचमी बाला सूरदास गुण गावै ॥ ९२ ॥

खेलत नवलकिशोर किशोरी । नँदनंदन वृषभानुसुता चित लेत परस्पर चोरी ॥ औरौ सखी जाल बिच शोभित सकल ललित तनु गावति होरी । तिनकी नख शोभा देखतही तरनि नाथहूकी मति भोरी ॥ एक गोपाल अबीर लिए कर इक चंदन एक कुमकुम रोरी । उपर छिरकि रस सर भरि बहु कुल क्रीडा परिमिति फोरी ॥ देति अशीश सकल ब्रज युवती युग युग अविचर जोरी । सूरदास उपमा नहिं सूझत जो कछु कहो सु थोरी ॥ ९३ ॥

राग श्रीहठी ॥ तेरे आवैंगे हरि आजु खेलत फागु री । सगुन सँदेशो हो सुन्यो तेरे आँगन बोलै कागुरी ॥ मदनमोहन तेरे बश माई सुनि राधे बडभागु री । बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ का सोवै उठि जागुरी ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा केसरि लै पैयां लागु री । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको श्रीराधा अचलसुहागु री ॥ ९४ ॥

हो आजु नंदलालसों खेलौंगी सखी होरी । ललिता बिशाखा अंगना लिपावो चौक पुरावो तुम रोरी ॥ मलयज मृगमद केसरि लैलै मथिमथि भरो कमोरी । नवसत साजि शृंगार करौ सब भरि भरि लेहु गुलालहि झोरी ॥ ज्यों उडुगणमें इंदु बिराजत सहेलिन मध्य राधिका गोरी । इक गोरी इक साँवरी हो इक चंचल इक भोरी ॥ बरजति सखी बरज्यो नहिं मानै लै पिचकारी दौरी । उन रंग लै पिय ऊपर डारचो पियह रंगमें बोरी ॥ ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व बरषे बहुत वाटिका खोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको चिरजीवो राधावर जोरी ॥ ९५ ॥

राग मालकौशिक¹ ॥ नागर रसिक अरु रसिक नागरी। बलि बलि जाउँ देखि अब दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फाग री ॥ राधा दधि मथन करति अपने गृह प्रबल धरि सुकर पागरी। तब हरि उठि आए औचानक उससि शशी चसढरित नागरी। लै उसाँस अंजरि भरि लीनो विदुरति दधि जु अनूपम आगरी ॥ अति उमगति श्याम घन छिरके मनु बगपांति बिछुरि गई मागरी ॥ मोहन मुसकि गही दौरतमें छूटि तती छंद रहित घाघरी॥ जनु दामिनि बादरते विमुख वपु तरपि ततक्षण लई तलाग री ॥ आनंदित परम दंपति ऐसे पटने परस परत दाग री। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि का बरणौं ब्रज युवति भागरी ॥ ९६ ॥

रागी बंगाली² ॥ श्रीमदनमोहनजू मति डारौ केसरि पिचकारी। दधिही मथन जाहुँ यमुनाजल हो मोहन तुम कुंजविहारी ॥ मर्म न गुरुजन पुरजन जानैं नाहिं या वृंदावनकी नारी। सासु रिसाय लरै मेरी ननँदी देखैं रंग देहिं मोहिं गारी॥ मुरलिमाहिं गावत बंगाली अधर चुवत अमृत बनवारी। मुदित पियत संतन सुखकारी पूरब खचित तेहिगिरि धारी ॥ मृदु मुसुकानी युवति मन मोहत हो हरि माखनचोर मुरारी। सूरदास प्रभु दोउ चिर जीवो श्रीब्रजनाथ वृषभानु दुलारी ॥ ९७ ॥

राग धमारि ॥ ठाढी देखी नंद दुआरे हो सुंदरि एक दह्यो। बाढीहो प्रीति ललना गिरिधरसों गुरुजन सबहिन बिसरि दिये ॥ नयनन कज्जल नासिका बेसरि मौक्तिक मोर अति राज। ढार सुढार बन्यो जाको मोती रहत अधर मुख छाज ॥ कटि लहँगा पहुँची बंद अँगिया फुंदना बहु विधि सोहै। रतन जराव जरी जाको जेहरि हंसचाल मृग मोहै ॥ कंचन कलश भराए यमुनजल मोतियन चौक पुराये। मनहु सुछौना हंसन कैसे चुगन सरोवर आए ॥ तुमतौ कहावत हो नँदनंदन सारंग बुद्धि है थोरी। सूरदास प्रभु नंदके लालको बनी हो छबीली जोरी ॥ ९८ ॥

राग कान्हरो³ ॥ हरि संग खेलत हैं सब फाग। यहि मिस करत प्रगट गोपी उर अंतरको अनुराग ॥ सारी पहिरि सुरँग कसि कंचुकि काजर दैदै नैन। बनि बनि निकसि निकसि भई ठाढी सुनि माधौके बैन ॥ डफ बाँसुरी रुंज अरु महुअरि बाजत ताल मृदंग। अति आनंद मनोहर वाणी गावत उठत तरंग ॥ एक कोध गोविंद ग्वाल सब एक कोध ब्रजनारि। छांडि सकुच सब देति परस्पर अपनी भाई गारि ॥ मिलि दश

---

१ मालकौशिकराग:—श्यामांग: पीतवासा मधुरिपुगलजो वंशवाद्यस्त्रिभंगो रत्नानां कंठमालो विरचिततिलक: कुंकुमैर्भालमध्ये ॥ रागोयं मालकौशी प्रचरति शिशिरे कंठदेशे जनानां प्राय: सूर्योदयादौ स्वरनिचयविदां तुष्टये भूपतीनाम्।

२ वंगाल्याभाति यस्या अलिकपटलके शीतरश्मिर्नितांतं भर्तु: संतप्तिहंत्री मलयजरचितं सर्वदेहे प्रलेपम् ॥ शुक्लं वासो दधत्या तरुणतनुमदालस्यमत्तेभगत्या युष्माकं सा मुदे स्ताद्गुवजनहृदयानन्दकर्ता कटाक्ष:।

३ वज्रज्योतिसमानसुन्दररदा रत्नान्विते कुंडले बाह्वोर्मौक्तिकरत्नहारहृदयस्तत्कुंडले कर्णयो: ॥ नानापुष्पसुवासवासिततनु: पीतांशुकैरावृत: संगीतेन विचक्षणो दिविषदां संमोहन: कानर: ॥ राग:कानर:।

पांच अली बलि कृष्णहि गहि लावति उचकाय। भरि अरगजा अबीर कनक घट देति शीशते नाय॥ छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरकति बंदन धूरि। शोभित हैं मनो शरद समय घन आए हैं जल पूरि॥ दशहूँ दिशा भयो परिपूरण सूर सुरंग प्रमोद। सुरवनिता कौतूहल भूली निरखति श्यामविनोद॥ ९९॥

राग आसावरी॥ यमुनाके तट खेलति हरि सँग राधा सहित सब गोपी हो। नंदको लाल गोवर्धन धारी तिनके नख मणि ओपी हो॥ चलहु सखी जैये तहां छिन जियरा न रहाय हो। वेणु शब्द मन हरि लियो नाना राग बजाइ हो॥ सजल जलद तनु पीतांबर छबि करमुख मुरली धारि हो। लटपटी पाग बने मनमोहन ललना रहीं निहारि हो॥ नैनामें मिले करसों कर भुजा ठये हरि ग्रीवा हो। मध्यनायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो॥ करत केलि कौतूहल माधव मधुरी वाणी गावै हो। पूरणचंद्र शरदकी रजनी संतन सुख उपजावै हो॥ सकल शृंगार कियो व्रजवनिता नख शिख लोभलटानी हो। लोक वेद कुल धर्मकेतकी नेक न मानत कानी हो॥ बलि जाउँ बलके वीर त्रिभंगी गोपिनके सुखदाई हो। सकल व्यथा जु हरी या तनुकी हरि हँसि कंठ लगाई हो॥ माधव नारि नारि माधवको छिरकत चोवा चंदन हो। ऐसो खेल मच्यो उपरापरि नँदनंदन जगबंदन हो। ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व सबै एक रस बरषैं हो। सूरदास गोपी बड भागिन हरि सुखक्रीडा करषैं हो॥ २४००॥

राग गौरी॥ मानो व्रजते करिनि चलीं मदमाती हो। गिरिधर गजपै जाइ ग्वारि मदमाती हो॥ कुल अंकुश मानै नहीं मदमाती हो। शंका बढे तुराइ ग्वारि मदमाती हो॥ अवगाहै यमुना नदी मदमाती हो। करति तरुनि जलकेलि ग्वारि मदमाती हो॥ चहुँ दिशते मिलि छिरकहीं मदमाती हो। सुंड दंड गज पोल ग्वारि मदमाती हो॥ वृंदावन वीथिनि फिरैं मदमाती हो। संग मदन गजपालि ग्वारि मदमाती हो॥ कबहुँ नैन कर दै मिलैं मदमाती हो॥ तैसिय गजगति चाल ग्वारि मदमाती हो। नागबेलि चलती फिरै मदमाती हो॥ मोदकमांझ कपूर ग्वारि मदमाती हो॥ सुगंध पुढे श्रवणन चुवै मदमाती हो। मंडित मांग सिंदूर ग्वारि मदमाती हो॥ केसरि लाईं सानिकै मदमाती हो। घुंघरू घंट घुमाइ ग्वालि मदमाती हो॥ ऊपर कुच युग घंटसों मदमाती हो। मुक्तमाल तुराइ ग्वालि मदमाती हो॥ अंगअंग छिरकै श्यामको मदमाती हो। कुमकुम चंदन गारि ग्वारि मदमाती हो॥ सूरदास प्रभु क्रीडहीं मदमाती हो॥ सँग गोकुलकी नारि ग्वालि मदमाती हो॥ १॥

---

१ श्यामांगी मुकुरं करेण दधती हारं गलै मौक्तिकं ताटंकान्वितकर्णकंकणकरा दिव्यांबरैः संयुता॥ रंभाया घनकाननेषु रमती त्वध्यापयंती शुकमासावर्यपि किन्नरैरपि सुरैर्गीता निशांते दिवि॥ राज्ञी आसावरी।

वीणाहाटककंकपो च दधती पद्माक्षिपद्मानना वस्त्रं कैरवपद्मकोमलसमं शास्त्रे परं पंडिता॥ मालश्री सखिसंयुता त्रिभुवने गीतार्थपुंसां प्रिया भूपालीसहिता प्रियाय करुणामाकुर्वती श्रीहठी।

राग काफी ॥ खेलत अतिरसमसे रँगभीने हो । अति रसकेलि विशाल लाल रँगभीने हो ॥ जागत सब निशिगत भई रँगभीने हो । भले कान्ह भले आए प्रातकाल रंगभीने हो ॥ बोलत बोल प्रतीतिके रँगभीने हो ॥ सुंदर श्यामल गात लालरँग भीने हो ॥ अति लोहित दृग रँगमगे रँगभीने हो । मानो भोर भए जलजात लाल रँगभीने हो ॥ पिये अधर मधुपान मत्त रँगभीने हो । कहत कहूँकी कहूँ बात लाल रँगभीने हो ॥ केश शिथिल वर-वेश सिथिल रँगभीने हो । शशि मुख सिथिल जँभात लाल रंग भीने हो ॥ चाल सिथिल भुवभाल सिथिल रँग भीने हो । अंगअंग अलसात लाल रंगभीने हो ॥ सकुचत हो कत लाडिले रंगभीने हो । दुरत न उर नखघात लाल रँगभीने हो ॥ सूरदासप्रभु नँदकिशोर रंग भीने हो । बहुनायक विख्यात लाल रँगभीने हो ॥ १ ॥

राग गौरी ॥ गोकुल सकलग्वालिनी हो घर घर खेलैं फागु मनोरा झूमकरो । तिनमें श्रीराधा लाडिलीहो जिनको अधिक सुहाग मनोरा झूमकरो ॥ १ ॥

झुंडनि मिलि गावति चलीं हो झूमक नंददुवार मनोरा झूमकरो । आजु परव हँसि खेलो हो मिलि संग नंदकुमार मनोरा झूमकरो ॥ २ ॥

रसिकराइ सुंदर वरहो श्रीराधा जिन प्राण मनोरा झूमकरो । मोहन दरश दिखावहु हो डरहु तो नंदकी आन मनोरा झूमकरो ॥ ३ ॥

प्रगटप्रीति गोकुल भईहो अब कैसे करत दुराव मनोरा झूमकरो । हम न दरश बिन जीवहीं हो कोउ कछु करहु उपाव मनोरा झूमकरो ॥ ४ ॥

यशुमतिसुत चित चुभि रहीहो वह तुमहीं मुसुकान मनोरा झूमकरो । अब न अनत रुचि ऊपजैहो सहजपरी यह बानि मनोरा झूमकरो ॥ ५ ॥

दुरत श्याम धरि पाएहो राधा धाय भरी अँकवारि मनोरा झूमकरो । कनक कलश केशरि भरीहोलै धाईं ब्रजनारि मनोरा झूमकरो ॥ ६ ॥

भरहु भरहु सखि श्यामही होपीत पिछौरी पाग मनोरा झूमकरो । देह गेहसुधि बिसरी हो नँदनंदन अनुराग मनोरा झूमकरो ॥ ७ ॥

छूटे केश कंचुक बंदहो टूटे मोतिन माल मनोरा झूमकरो ॥ चोवा चंदन अरगजा हो उडत अबीर गुलाल मनोरा झूमकरो ॥ ८ ॥

करकट ताल बजावहींहो छिरकत सब ब्रजनारि मनोरा झूमकरो । हँसि हँसि हरिपर डारहींहो अरुन नयनफुलवारि मनोरा झूमकरो ॥ ९ ॥

सुर नर मुनि कौतुक भूलेहो आनँद बरषै फूल मनोरा झूमकरो । गगन विमानन छायो हो झेहनसूझे नाहिन सूर मनोरा झूमकरो ॥ १० ॥

सूर गोपालकृपा बिनुहो यह रस लहै न कोइ मनोरा झूमकरो । श्रीवृषभानु किशोरी हो श्याममगन मन होइ मनोरा झूमकरो ॥ ११ ॥

राग सारंग ॥ आली री नँदनंदन वृषभानु कुवरिसों बाढचो अधिक सनेह । दोऊ दिशि पै आनँद बरषत ज्यों भादौंको मेह ॥ सब सखियाँ मिलिगईं महरिपै मोहन माँगो देह । दिना चारि होरीके औसर बहुरि आपनो लेहु ॥ झुकि झुकि परति है कुँवरि राधिका देति

परस्पर गारि । अब कहां दुरे साँवरे ढोटा फगुवा देहु हमारि ॥ हँसि हँसि कहति यशोदा रानी गारी मति कोउ देहु । सूरजदास श्यामके बदले जो चाहौ सो लेहु ॥ ४ ॥

राग टोडी ॥ या गोकुलके चौहटे रंगभीजी ग्वालिनि । हरिसँग खेलें फाग नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । डरति न गुरुजन लाज नैन सलोनेरी रँग राची ग्वालिनि । दुंदुभि बाजैं गहगहे रँगभीजी ग्वालिनि ॥ नगर कोलाहल होइ नैन सलोन री रंग राची ग्वालिनि । दुंदुभि बाजैं गहगहे रंगभीजी ग्वालिनि ॥ नगर कोलाहल होइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । उमह्यो मानुष घोष यों रंगभीजी ग्वालिनि ॥ भवन रह्यो नाहिं कोइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । डफ बांसुरी सुहावनी रंगभीजी ग्वालिनि ॥ ताल मृदंग उपंगनैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । झांझ झालरी किन्नरी रंगभीजी ग्वालिनि ॥ आउझवर मुहचंगनैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । उतहि संग सब ग्वाल लिए रंग भीजी ग्वालिनि ॥ सुंदर नंदकुमार नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । उत श्यामा नवयौवना रंग भीजी ग्वालिनि ॥ अंबुजलोचन चारु नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । टेसूके कुसुम निचोइकै रंग भीजी ग्वालिनि ॥ भरैं परस्पर आनि नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । चोवा चंदन अरगजा रंगभीजी ग्वालिनि ॥ कुमकुम चंदन सानि नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । रत्नजटित पिचकारियां रंगभीजी ग्वालिनि कर लिए गोकुलनाथ नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । छिरकहिं मृगमद कुमकुमा रंग भीजी ग्वालिनि ॥ जो राधेकै साथ नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । सुरंगपीतपट रंगि रह्यो रंगभीजी ग्वालिनि ॥ सुभग सांवरे अंग नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । नीलवसन भामिनि बनी रंगभीजी ग्वालिनि ॥ कंचुकि कुसुम सुरंग नैन सलो री रंगराची ग्वालिनि । अरुण नुतनपल्लव धरे रंगभीजी ग्वालिनि ॥ कूजित कोकिल हंस नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि ॥ नृत्य करत अलिकुल मिले रंगभीजी ग्वालिनि ॥ अति आनंद अधीर नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि चढि । विमान सुर देखहीं रंगभीजी ग्वालिनि । देहदशा बिसराइ नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि ॥ राधा रसिकरसज्ञ हो रंग भीजी ग्वालिनि । सूरदास बलि जाइ नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि ॥ ५ ॥

राग गौरी ॥ खेलत हो हो हो हो होरी । अति सुख प्रीति प्रगट भई उत हरि इतहि राधिका गोरी । हो हो हो होरी बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बिच बिच बाँसुरी ध्वनि थोरी ॥ १ ॥

गावत दैदै गारि परस्पर उत हरि इत वृषभानु किशोरी । मृगमद साखजवाद कुमकुमा केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥ २ ॥

गोपी ग्वाल गुलाल उडावत मत्त फिरैं रतिपति मनो धौरी । भरति रंग रति नागरि राजति मानहु उमँगि बिलावल फोरी ॥ ३ ॥

छुटि गई लोकलाज कुलशंका गनत न गुरु गोपिनको कोरी । जैसे आपनेमें रमतेमें चोर भोर निरखत निशि चोरी ॥ ४ ॥

उन पट पीत किए रँगराते इन कंचुकी पीत रँग बोरी । रही न मन मर्याद अधिक रुचि सहचरि सकति गाँठि गहि जोरी ॥ ५ ॥

वरणि न जाइ वचनरचना रचि बहु छवि झकझोग झकझोरी। सूरदास शारदा सरलमतिसो अवलोकि भूलि भई भोरी ॥ ६ ॥ ६ ॥

राग गूजरी॥ ब्रजकी बीथिन बीथिन डोलत। मदनगोपाल सखा सँग लीने हो हो हो लै बोलत ॥ ताल मृदंग बीन डफ बाँसुरी बाजत गावत गीत। पहिरे वसन अनेक बरन तनु नील अरुन सित पीत ॥ सुनि सब नारि निकसि ठाढी भई अपने अपने द्वार। नवसत साजे प्रफुलित आनन जनु कुमुदिनी कुमार ॥ चपल नैन अतिचतुर चारु तुम जनु फुलवारी लाई। देखतही नँदनंद परममुख मिलत मधुप लौं धाई ॥ राखत गहि भुजबल चहुँ दिशि जुरि अति रिस मुँह अकुलात। मानहु कमल कोश अति अंतर भँवर भ्रमत वन प्रात ॥ छाँडति भरि भायो अपनो करि राजत अंग विभाग। मानहु उडि विचलेहैं अलि कुल आश्रित अंग पराग ॥ अंतर कछु न रह्यो तेहि अवसर अति आनंद प्रमाद। मानहु प्रेम समुद्र सूर सुख लै उपटित मर्याद ॥ ७ ॥

ऊँचोसे गोकुल नगर जहँ हरि खेलत होरी। चल सखि देखन जाहिं पिया अपनेकी चोरी ॥ बाजत ताल मृदुंग और किन्नरकी जोरी। गावति दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ बूका सुरँग अबीर उडावत भरि भरि झोरी। इत गोपिनको झुंड उतहि हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी। राधाचली रिसाइ ढीठसों खेलै को री। खेलतमें कैसो मान सुनहु वृषभानुकिशोरी। सूर सखी उर लाइ हँसति भुज गहि झकझोरी ॥ ८ ॥

राग पूरवी ॥ ऐसीको खेलै तोसों होरी। बार बार पिचकारी मारत तापर बाँह मरोरी नँदबाबाकी गऊ चरायो हमसों करो बरजोरी। छाकै छीनि खात ग्वालनकी करत रहे माखन दधि चोरी ॥ चोवा चंदन और अरगजा अबिर लिए भरि झोरी। उडत गुलाल लाल भए बादर केसरि भरी है कमोरी ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलिनमें गावो मुरली राधा गोरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चिरजीवो यहजोरी ॥ ९ ॥

राग सारंग ॥ निकसि कुँवर खेलन चले रँग हो हो होरी। मोहन नंदकुमार लाल रँग हो हो होरी ॥ कंचन माट भराइकै रँग हो हो होरी। सौंधे भरी कमोरी लाल रँग हो हो होरी ॥ झाँझ ताल सुरमंडरे रँग हो हो होरी। बाजत मधुर मृदंग लाल रँग होहो होरी ॥ तिनमें परम सुहावनी रँग हो हो होरी। मधुवरि बाँसुरी चंग लाल रँग हो हो होरी ॥ खेलत रँगीले लालजू रँग हो हो होरी। गए वृषभानुकी पौरीं लाल रँग हो हो होरी ॥ जेब्रज हुतीं किशोरी लाल रँग हो हो होरी। ते सब आई दौरि लाल रँग हो हो होरी ॥ सखियनसुख देखनकारने रंग हो हो होरी। गांठि दुहुँनकी जोरी लाल रंग हो हो होरी ॥ जोपै फगुवा दियो न जाइ रँग हो हो होरी ॥ श्रीराधाजूके लागी पांइ लाल रँग हो हो होरी ॥ यह सुख सबके मनबसो रंग हो हो होरी ॥ सूरदास बलि जाइ लाल रंग हो हो होरी ॥ १० ॥

राग सारंग ॥ करलिये डफहि बजावे होहो सनाक खेलार होरीकी। संग सखा सब बनि बनि आवत छबि मोहन हलधर जोरीकी ॥ १ ॥

१ श्यामो बाहुचतुष्टयेन सहितः पीतांबरस्ताक्ष्यंगः शार्ङ्गं यो विदधाति बाणसहितं शंखं च चक्रं गदाम् ॥ वामांगे रमणीयुतः प्रियतमः श्रीविष्णुवत्सर्वदा सारंगो मघवान्वितैः सुरगणैः संस्तूयमानो नरैः ॥ १ ॥ राग सारंग ॥

ताल मृदंग बजावत गावत भावत ध्वनि मुरली थोरीकी। लालगुलालसमूह उडावत फेंटकसे अबीर झोरीकी॥ खेलत फाग करत कौतूहल मत्त फिरैं मन्मथधोरीकी। बरन-बरन शिर पाग चौतनी कछि कटि छबि चंदन खोरीकी॥ २॥

उतहि सुनति वृषभानुसुता लई तरुणि बोलि सब दिन थोरीकी। नीलांबर कंचुकी सुरँगतनु अति राजति राधा गोरीकी॥ मनु दामिनि घनमध्य रहति दुरि प्रगट हँसनि चितवनि भोरीकी। नखशिख सजि शृंगार ब्रजयुवती तनडँडिया कुसुमी बोरीकी॥ ३॥

पानभरे मुख चमकत चौका भाल दिये बेंदी रोरीकी। कनककलश कोटिक भरि लीन्हें भरि फूले रँगरँग घोरीकी॥ युवति वृंद ब्रजनारि संग लै जाइ गहनि ब्रजकी खोरीकी। घरघरते धुनि सुनि उठि धाईं जे गुरुजनपुरुजन चोरीकी॥ ४॥

हाथन लै भरि भरि पिचकारी नानारंग सुमन तोरीकी॥ कोउ मारति कोउ दाँउ निहारति अरसपरस दौरा दौरीकी॥ उतहि सखाकर जेरी लीन्हें गारी देहिं सकुचतोरीकी। इतहिं सखी कर बांस लिए बिच मारुमची झोरा झोरीकी॥ ५॥

पाछेते ललिता चंद्रावलि हरि पकरे भुजभरि कोरीकी। ब्रजयुवती देखतही धाईं जहां तहां सब चहुं ओरीकी॥ इक पट पीतांबर गहि झटक्यो एक मुरली लई कर मोरीकी। इक मुखसों मुख जोरि रहति इक अंक भरति रतिपति ओरीकी॥ ६॥

तब तुम चीर रहे यमुनातट सुधि बिसरे माखन चोरीकी। अब मदाँव आपनो लैहैं पाँयपरो राधा गोरीकी॥ अपने अपने मन सुख कारण सब मिलि झकझोरा झोरीकी। नीलांबर पीतांबरसों लै गांठिदई कसिकै डोरीकी॥ ७॥

कनक कलश केशरि भरि ल्याई डारि दियो हरिपर डोरीकी। अति आनंद भरी ब्रजयुवती गावति गीत सबै होरीकी॥ अमर विमान चढे सुख देखत पुहुपवृष्टि जैध्वनि रोरीकी। सूरदास सो क्यों करि वरणै छबिमोहन राधाजोरीकी॥ ८॥ ११॥

राग रागिनी श्रीहठी॥ हरि संग खेलन फागु चली। चोवा चंदन अगर अरगजा छिरकति नगर गली॥ राती पीरी अँगिया पहिरे नूतन झूमक सारी। मुख तमोर नैनन भरि काजर देहिं भावती गारी॥ ऋतुवसंत रतिआगम नायक यौवनभार भरी। देखन रूप मदनमोहनको नँददुआर खरी॥ कहि न जाइ गोकुलकी महिमा घर घर गोकुल माहीं। सूरदास सो क्योंकरि वरणै जो सुख तिहुँ पुर नाही॥ १२॥

राग गौरी॥ ठाढो हो ब्रजखोरी ढौटा कौनको। लटिहि लकुट त्रिभंगि एकपद मनो मन्मथ गौनको। मोर मुकुट कछनी कसे री पीतांबर कटि शोभ। नैन चलावै फेरि कैरी निरखि होत मन लोभ॥भौंह मरोरे मटकिकै री यमुना रोकत घाट। चितै मंद मुसुकायकै री जियकरि लेय उचाट॥ हँसत दशन चमकायकै री चकचौंधीसी होति। बगपंगति नवजलदमै री उर माला गजमोति॥ कर पिचकारी रतन जरित री तकि तकि छिरकत अंग। टेसूके कुसुम नियोचकै री अरु केसरिको रंग॥ फेंट गुलाल भराइकै री डारत नैनन ताकि। एते पर मन हरत है री कहा कहौं गति वाकि॥ पुनि हाहा करि मिलत है अरु नाना रंग बनाय। नँदसुवनके रूपपर री जन सूरदास बलिजाय॥ १३॥

राग श्रीहठी ॥ सांवरो ढोटाको है री माइ जाके वारि जनैन विशाल। अधर धरे मुख मुरली बजावत गावत श्रीराग रसाल। मन्दमन्द मुसकनि सरोज मुख शोभा वरणि न जाइ। बांकी भौंहें तिरछी चितवनि चितवत लियो चुराइ॥ अति लोने सोनेसे कुंडल कौने रचे हो सँवारि। मनो काम किल फंद बनाए फंदै मीन ब्रजनारि ॥ शिर पगिया बीरा मुख सोहै सरस रसीले बोल। अति आधीन भई ब्रजवनिता वश कीने बिन मोल॥ कहा करौं देखे बिनु सजनी कल न परै पल प्रान। ग्वालन सँग रंग भरचो भावत गावत आछी तान॥ ताते और कौन हितु मेरे सखि चलि नेकु दिखाय। मदनमोहन जूकी चरणरेणु पर सूरदास बलिजाय॥ १४॥

राग नटनारायण ॥ खेलत श्याम फाग ग्वालन सँग। एक गावत एक नाचत एक करत बहु रंग॥ बीन मुरज उपंग मुरली झांझ झालरि ताल। पढत होरी बोलि गारी निरखिकै बजबाल॥ कनक कलशन घोरि केसरि कर लिये ब्रजनारि। जबहिं आवत देखि तरुनिन भजत दै किलकारि॥ दुरि रही इक खोरि ललिता उतते आवत श्याम। धरे भरि अँकवारि औचक धाय आय ब्रजवाम॥ बहुत ढीठो दै रहे हो जानवी अब आजु। राधिका दुरि हँसति ठाढी निरखि पियमुखलाजु॥ लियो काहू मुरलि करते कोउ गह्यो पटपीत। गूथि बेनी मांग पारे लोचन आँजि अनीति॥ गए करते छटकि मोहन नारि सब पछितातिं। शीश ध्वनि कर मीजि बोलति भली लै गए भांति॥ दांव हम नहिं लेन पायो वसन लेती लाल। सूर प्रभु कहां जाउगे अब हम परी यह ख्याल॥ १५॥

राग काफी ॥ मोहन गए आजु तुम जाहु दाँव हम लेहिंगी हो। लालन हमहिं करे जे हाल उहै फल देहिंगी हो॥ आजुहि दांव आपनो लेती भले गए हौ भागि। हाहा करते पांइग परते लेहु पितांबर मांगि॥ बेनी छोरत हँसत सखा सँग कहत लेहु पट जाइ। सौंह करत हौ नंद बबाकी अपनी विदति कराइ॥ जो मैं लेहु पितांबर अबहीं कहा देहुगे मोहिं। इत उत युवती बितवन लागीं रहीं परस्पर जोहि ॥ एक सखा हरि त्रियारूप करि पठै दियो तिन पास। गयो तहां मिलि सँग त्रियनके हँसति देखि पटवास॥ मोहि देहु राखौं दुरायके श्यामहिं जिनि लै देहु। लियो दुराय गोदमें राख्यो दांव आपनो लेहु। पीतांबर जिनि देहु श्यामको यह कहि चमक्यो ग्वाल। सूर श्याम पट फेरत करसों चकित निरखि ब्रजबाल॥ १६॥

चकित भई हरिकी चतुराई। हमहिं छली इन कुँवर कन्हाई॥ कहा ठगोरी देखत लाई। धिरवति है कहि भली बनाई॥ एक सखी हलधर वपु काछ्यो। चली नीलपट ओढे आछ्यो॥ श्याम मिलन ताको तहां आए। अजग्र जानि चले अतुराए॥ मिले सांकरी ब्रजकी खोरी। ढकी रहीं जहां तहँ गोरी॥ गह्यो धाइ भुज दोउ लपटानी। दौरि परीं सब सखी सयानी॥ निरखि निरखि तरुनी मुसकानी॥ गारि नारि सब देहिं सुहानी। नँद महरलैं जाति बखानी॥ सूर श्याम उचरचो मुखबानी। गईं लिवाइ जहँ राधारानी॥ १७॥

राग धनाश्री ॥ छैल छबीले मोहना जाके घुँघरारे केशरी। मोर मुकुट कुंडल लसे करि लीन्हों नटवर भेष री॥ राखे भौंह मरोरिकै री सुंदर नैनविशाल। निरखि हँसनि मुसका-

निकी री अतिहि भई बेहाल ॥ कीर लजावनि नासिका अधर बिंबते लाल ॥ दशन-चमकदामिनिहू तेरी श्याम हृदय वनमाल ॥ चिबुक चित्तको हरनहै री राजत ललित कपोल। मारग गहि ठाढो रहै री अरु बोलत मीठे बोल ॥ चन्दन खौरि विराजै री श्यामल भुजा सुचारु। ग्वाल सखा सब सँग लिए री वह करत गुलालन मारु ॥ इक भाजत इक भरतहै री कुसुमवरन रंग घोरि। सौंधे कीच मची भली री खेलत ब्रजकी खोरि ॥ सुनत चलीं सब धाइकै री वे देखन नंदकुमार। फागसांझसी ह्वै रही री उडि उडि गगन अपार ॥ मिलि तरुनी तहां जाइकै री जहँ बिहरत फागु गोपाल। सूर श्याम सुख देखिकै री बिसरयो तनु तेहिकाल ॥ १८ ॥

राग गौरी ॥ घर घरते सुनि गोपी हरि मुख देखन आई ॥ निरखि श्याम ब्रजनारि हरषि सब निकट बुलाई ॥ सुनति नारि मुसकाय बांस कीन्हें कर धाई। ग्वालन जेरी हाथ गारि दै त्रियन सोहाई ॥ शिलानाम ग्वालिनी अचानक गहे कन्हाई। सखिन बोलावति टेरि दौरि आवहु री माई ॥ एक सुनत गई धाइ बीस तीसक तहां आई। टूटिपरीं चहुँपास घेरि लीन्हों बलभाई ॥ इक पट लीन्हों छीनि मुरलिआ लई छिंडाई। लोचन काजर आँजि भांतिसों गारी गाई ॥ जबहिं श्याम अकुलात गहति गाढे उर लाई ॥ चंद्रावलिसों कह्यो गूँथि कच सौंह दिवाई। हाहा करिए लाल कुँवरिके पाँय छुआई ॥ यह सुख देखत नैन सूरजन बलि बलि जाई ॥ १९ ॥

राग काफी ॥ ललना प्रगट भए गुण आजु त्रिभङ्गी लाल ऐसे होजू। रोकत घाट बाट गृह बनहूँ निबहनि नहिं कोउ नारि। भली नहीं यह करत.सांवरे हम दैहैं अब गारि ॥ फागुनमें तौ लखत न कोऊ फबति अचगरी भारि। दिन दश गए दिना दश औरै लेहु साध सब सारि ॥ पिचकारी मोको जिन छिरको झरकि उठी मुसकाइ। सासु ननद मोको घर बैरिनि तिनहिं कहौं कहा जाइ ॥ हाहा कहि वहि नँद दोहाई कहा परी यह बानि। तासों भिरहु तुमहिं जो लायक इह हेरनि मुसकानि ॥ अन लायक हमहैं की तुम हौ कहौ न बात उघारि। तुमहूं नवल नवल हमहूं हैं बड़ी चतुर हौ ग्वारि ॥ यह कहि श्याम हँसे बाला हँसी मनही मन दोउ जानी। सूरदास प्रभु गुणन भरे हौ भरन देहु अब पानी ॥ २० ॥

राग काफी ॥ अरी माई मेरो मन हरि लियो नँदके ढुटोना। चितवनमें वाके कछु टोना ॥ निरखत सुंदर अंग सलोना। ऐसी छबि कहूं भई न होना ॥ कालिह रहे यमुनातट जौना। देख्यो खोरि सांकरी तौना ॥ बोलत नहीं रहत वह मौना। दधि लै छीनि खात रह्यो दौना ॥ घरघर माखन चोरत जौना बाटन घाटन देत है घौना ॥ खेलत फाग ग्वाल सँग छौना। मुरलि बजाय बिसरावत भौना ॥ मो देखत अबहीं कियो गौना। नटवर अँग सुभ सजे सजौना ॥ त्रिभुवनमें वश कियो न कौना। सूर नंदसुत मदनलजौना २१॥

माई री मोहन मूरति सांवरो नँदनंदन जेहि नावँरो। अबहिं गए मेरे द्वार ह्वै रहत कहत ब्रजगाँवरो ॥ मैं यमुना जल भरि घर आवति मोहिं करि लागो तावरो। ग्वाल-सखासँग लीन्हें डोलत करत आपनो भावरो ॥ यशुमतिको सुतमहर ढुटौना खेलत फागु सुहागरो। सूर श्याम मुरलीध्वनि सुनरी चित न रहत कहुँ ठाँवरो ॥ २२ ॥

अरी माई साँवरो सलोनो अति नंदकुँवर री ॥ चंदनकी खौरि भाल भौंह हैं जँवर री॥ कुंतल कुटिल छबि राजत झँवरे री। लोचन चपल तारे रुचिर भँवरे री ॥ मकर कुंडल गंडझलमल करै री। मनहु मुकुर बिच रवि छबि वरै री॥ नासिका प म लोनी बिंबाधर तरे री। तहां धरै मुरली सो नाना रंग झरै री॥ यमुनाके तीर ग्वाल संगहि विहरै री अबहीं मैं देखि आई बंसीवट तरे री॥ पिचकारी कर लिएधाइ अंगधरै री। नैनन अबीर मारैकाहूसों न डरै री ॥ बातनहरतमन रांगहेढरै री । सूरजको प्रभु आली चितते न टरे री॥ २३॥

नँदनंदन आली मोहि कीन्हीं बावरी। कहा करौं चित क्योंहूं रहत न ठाँव री॥ विहरत हरि जहां तहां तुहू आवरी निशिहूं वासर आली मोको उहैं चावरी ॥ यमुना जल भरन जाइ ईहै करि दाँव री। गुरुजन पुरजनसों और न उपाव री॥ काफी रागिनी मुख गावै मुरली बजाइरी। ध्वनि सुनि तनु भूली अतिही सुहाइ री॥ चंदनकपूरचूरि फेटन भराइ री। सौंधे भरि पिचकारी मारत है धाइ री॥ आतुर ह्वै चलि और जाइ किनि जाइरी। चित न रहत ठौर और न सोहाइ री॥ मिलि प्रभु सूरजको सकुच गँवाइ री। लाज डारि गारि खाइ कुल बिसराइ री॥ २४॥

राग कल्याण॥ खेलत हरि ग्वाल संग फागु रंगभारि। एकमारत एकनारत एक भाजत एक गाजत एक धावत एक पावत एक आवत मारि ॥ एक हर्षत एक लरखत एक करत घातहिको लोचन गुलाल डारी सौंधे ढरकावै। एक फिरत संग संग एक एक न्यारे २ विहरत टरतदाँव दीबेको वै ज्यों नहिं पावै॥ एक गावत एक भावत एक नाचत एक राचत एक करत मृदंग गति जति उपजावै। एक वीणा एक किन्नर एक मुरली एक उपंग एक तुंमर एक रवाब भांति सौं दुरावै॥ एक पटह एक गोमुख एक आवझ एक झालरी एक अमृतकुंडली एक एक डफ एक कर धारे । सूरज प्रभु बल मोहन संग सखा बहु गोहन खेलत वृषभानुपौरि लिए जात टारे॥ २५॥

राग आसावरी॥ सुनतहि वृषभानुसुता युवति सब बोलाई। आए बलराम श्याम आईं तजि काम वाम धामते आतुर सातवन बनाई॥ हरषत सब ग्वाल बाल अरसपरस करत ख्याल एक मारत एक भाजत गजत वह जोरी। उतते निकसी कुमारि संग लिए विपुलनारि कोउ कोउ नवयौवन भरि कोउ कोउ दिन थोरी॥ इतउत सुख दरश भए पिय पूरण कामकिये मानो शशि उदय भयो आनंदित चकोरी। उत जेरी धरे ग्वाल बाँसन इत परी मार यह छबि नहिं वारपार सोर झोर झोरी॥ उत होरी पढत ग्वार इत गारी गावति ए नन्दनाहिं जाय तुम महरि गुणनभारी। कुलटी उनतें कोहै नन्दादिक मन मोहै बाबा वृषभानुकी वै सूर सुनहु प्यारी॥ २६॥

राग काफी॥ श्रीराधा मोहन रंगभरे हो खेल मच्यो ब्रज खोरी। नागरि संगनारिगण सोहैं श्याम ग्वाल सँग जोरी॥ हरि लिए हाथ कनक पिचकारी सुरंग कुमकुमा घोरी। उतहि माट कंचन रँग भरि लै आईं तिरिया जोरी॥ आतुर ह्वै धाईं उत नागरि इत बिचले सब ग्वाल। घेरि लईं गहि खोरि साँकरी पकरे मदनगोपाल ॥ गह्यो धाइ चंद्रावलि हँसि के कह्यो भले हो लाल। जिनि बल करौ रहौ नेक ठाढे जुरि आईं ब्रज बाल ॥ आई

हँसति कहति हरि एई बहुत करतहैं गाल । क्यों जू खबरि कहौ यह कीन्ही करत परस्पर ख्याल ॥ काहू तुरत आइ मुख चूम्यो करसों छुयो कपोल । कोउ काजर कोउ बदन माँडती हर्षहिं करहिं कलोल ॥ कोउ मुरली लै लगीं बजावन मनभावनमुख हेरि । किनहूँ लियो छोरि पट कटितें वारति तनपर फेरि ॥ श्रवणन लागि कहति कोउ बातैं बसन हरे तेइ आपु । कालि कह्यो करि हौ कहा मेरो प्रगट भयो सो पापु ॥ कोउ नयननसों नयन जोरिकै कहति न मोतन चाहौ । अबहीं तुम अकुलात कहा हौ जानहुगे मनलाहौ ॥ घेरिरहीं सरघाकी नाहीं करति सबै मनलाहु । इक बूझति इक चिबुक उठावति वश पाए हरि नाहु ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं युवती स्वांग बनाइ । देखत सखा दूरि भए ठाढे निरखत श्याम लजाइ॥नख छत छाप बनाय पठाए जानि मानि गुण येहु सूर श्याम हमको जिनि बिसरौ चिह्न इहै तुम लेहु ॥ २७ ॥

राग गुंडमलार ॥ खेलत रंग रह्यो एक ओर ब्रज सुंदरि एक ओर मोहन । बरनबरन ग्वाल बने महर नंद गोपजने एक गावत एक नृत्यत एक रहत गोहन ॥ बजावत मृदंग ताल अरस परस करि विहार शोभाके बरनि पार एक एक दै सौंहन । कनकलकुट करन लिए धाए सब हरषि हिए एक व्रज ललना सूरज प्रभु मनमन मिलि मौंहन ॥ २८ ॥

राग सारंग ॥ होहोहोहोहोरी करत फिरत ब्रज खोरी । मोहन हलधर जोरी सुबननंद-कोरी ॥ ग्वाल सखा सँग ढोरी लिए अबीर करि झोरी ॥ मारि भजत जेहि जोरी दाँव लेत सोदौरी । एक गावति है धमारी एक एकन देति गोरीगारी । दई सबन लाज डारि बाल पुरुष तोरी ॥ सौंधे अरगजाकीच मची जहां तहां गलिगोरी । बिच एक एक ऊंच नीच करत रंग झोरी ॥ एक उघटत एक नृत्यत एक तान लै तोरी । उपजाइ एक दै कर-ताल हरषि गावतिहै गौरी ॥ सूरदास प्रभुको सुख निरखि हरषि होरी । सुरललना सुरन-सहित विथकति भई बौरी ॥ २९ ॥

राग नन्दन ॥ वृंदावन परम सोहावनो राधे खेलैं फागु बारे कन्हैया । मोहन बँसिया बजावै भला नदी यमुनाके तीर बारे कन्हैया ॥ श्रवण सुनत सब धावैंहो झोरिन भरे अबीर बारे कन्हैया । उर मोतिनकी माला री पहिरे रातुल चीर बारे कन्हैया ॥ ब्रज वधू सब सुंदरि श्रवणन झनकै बीर बारे कन्हैया । चोवा चंदन अगरजा छिरकै लकल शरीर बारे कन्हैया ॥ एकतो राधा सुंदरी दुसरे परी अधीर बारे कन्हैया । सांकरि खोरिया ब्रजकी हो भई चोवाकी हील बारे कन्हैया ॥ वृंदावनके कुंजन भई दोउ दिश भीर बारे कन्हैया ॥ यहि विधि होरी खेलहीं गावै निशिदिन सूर बारे कन्हैया ॥ ३० ॥

राग धमार ॥ प्यारी नँदनंदन बृषभानुकुँवरिसों खेलत रंग रह्यो । उडत गुलाल कुमकुमा मानो अंबर आली छाइ रह्यो ॥ अलिसुत युग वरण्यो बंकट छवि जलसुत अधर लह्यो । खंजन मीन मुक्ताहलराजत मनो रविरथ खैंचि रह्यो । हँसि मुसकात सहज स्वारथको रमनिहि रूप थह्यो । दारौं दरनि अरुन अति शोभा मनु शशि ग्रहण गह्यो ॥ गोपी ग्वाल सिमटि सब सुंदरि सज्यो शृंगार नह्यो । वरषत कंचन नीर कुसुमजल मनो घन गरज रह्यो ॥ सखि श्याम सबै सुखदाई सुखसागर सगरो । सूरदास प्रभु मिल्यो हो कृपा करि जिनि हृदये विसरो ॥ ३१ ॥

राग सारंग ॥ हो हो होरी खेलैं रंगसों ब्रजराज कुँवर वृषभानुपौरी । सुनि मुरली डफ ताल वेणु चढि अटाअटारी दौरि दौरी ॥ जो प्यारी न्यारी छबि सों देखति जलधरको छबि अपार । घनघटा अटा मंद छटके दै उदित चंद बादर बिदार ॥ सो प्यारेकी हिटू हती ते झकझोरो खेटक झक झांकवार । भौंहैं मंद भेद भाव हरपै बरषै रंग अपार ॥ इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिए लाल गुलाल । इक प्यारी केसरि छिरकतिहै भनत सूर चलि गति मराल ॥ ३२ ॥

राग बिलावल ॥ खेलत मोहन फागु भरे रँग ॥ डोलत सखा समूह लिए सँग ॥ १ ॥

नंदरायसों विनती कीनी । श्याम एककी आज्ञा लीनी । अगणित तब पिचकारी गढाये । कंचन रतनबबापै पाये ॥ २ ॥

मन सहसक केसरि लै दीनो । अमित सुगंध अरगजा लीनो ॥ गोपिन बैठि औसेरकीनो । गाइ चरावनको सँग दीनो ॥ ३ ॥

तब अनंत सखा गन साजे । सकल सँवारि संग लिए बाजे ॥ घरघर ध्वजा पताका बानी । तोरन बारन बासर ठानी ॥ ४ ॥

अरन पचासक अबिर सँवारे । बीथिन छिरकि तहां बिस्तारे ॥ मोहन चरन धरत तहँ आवैं ॥ द्वारे जुरि युवती मिलि गावैं ॥ ५ ॥

निरखि भरनको सब मिलि धावैं । मोहन इतते सखा सिखावैं ॥ नाहिं गात वस्तर नहिं राखैं । भरिनीके करि मुख कछु भाषैं ॥ ६ ॥

बैठे जहां गोप सब राजैं । आवत देखि सबै उठि भाजैं ॥ मोहनपै कोउ जान न पावैं ॥ महामत्त गजवर ज्यों धावै ॥ ७ ॥

सब मिलि बोलत होहो हो री । छिरकत चंदन बंदन रोरी ॥ एक घोस गोपी जुरि आय । घरहीमें घेरे हरि जाय ॥ ८ ॥

इक भीतर इकरही दुआरे । एक जाइ लागी पिछवारे ॥ इक इहां चहुँदिशिते घेरे । एक पैठि मंदिरमें हेरे ॥ ९ ॥

एक लिए कर कर कमल विराजे । परसै किरणि कोटि शशि भ्राजे ॥ एक लिए शिरसौंधे गागरि । फेट अबीर भरे बहु नागरि ॥ १० ॥

सारी सुभग काछ सब दिये । पाटंबर गाती सब हिये ॥ एकन जाइ दुरे हरि पाये । सैन देइ राधिका बताये ॥ ११

करति कुलाहल हरि गहि लाई । फूली ज्यों निधनी धन पाई ॥ एक गहे कर दोऊ हरिके । हलधर देखि उतहिको सरके ॥ १२ ॥

केसरि अरु गुलाल मुख लायो । पूरनचंद्र उदयकरि आयो ॥ पीत अरुण रँगनाये शिरते । चली धातु मनोसांवरगिरिते ॥ १३ ॥

एक भरे पिचकारी ताके । देत श्रवणमें नंदलालके ॥ ब्रजजन सकल सुधारस पीते । ऐसी भाँति पहर दुइ बीते ॥ १४ ॥

देखी निकट राधिका प्यारी । तब हरि लीला और बिचारी ॥ तब हरिजाइ दुरे उपवनमें । लगी नायका कुंज सदनमें ॥ १५ ॥

करत कुलाहल ब्रजकी नारी। देखत चढे कदंब बिहारी॥ कबहुँक मुरली मधुर बजावैं। श्रवण सुनत जितहीतित धावैं॥ १६॥

जब हरि जानि निकटही आई। डरते तब हरि रहे लुकाई॥ कुंज कुंज कोकिल ज्यों टेरैं। श्रवणनाद भृंगी त्यों हेरैं॥ १७॥

कबहूं फिर आपुसमें खेलति। सकल सुगंध परस्पर मेलति॥ झुकीं वचन कहती बिनपाये। कहति कछू राधिका लगाए॥ १८॥

करनि लाल वर वनु भै जैसे। जाइ डोलति वन वनमें तैसे॥ तब हरि भेष धरचो युवतीको। सुंदर परम भावतो जीको॥ १९॥

सारी कंचुकि केसरि टीको। करि शृँगार सब फूलनहीको॥ कर राजति कंदुक नौलासी छुटि दामिनिसी ईषद हाँसी॥ २०॥

सकल भूमि वन शोभा पाइ। सुंदरता उमँगी न समाइ॥ ता शोभा ब्रजनारी सोही। रहीं ठगीसी रूप विमोही॥ २१॥

एक कहति हरिकैसे नैना। एक कहति वैसेई बैना॥ बूझति एक कौनकी नारी। विधिकी सृष्टि नहीं तू न्यारी॥ २२॥

तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला। बोलति हँसि हँसि वचन रसाला॥ हम तुम मिलि खेलहिं सब जानति। राधा आली मोहिं पहिचानति॥ २३॥

हौंहूँ संग तिहारे खेली। जानति होहु अजान सहेली॥ अबहीं कीरति महरि पठाई। राधा इकलीं खेलन आई॥ २४॥

अब एक बात कहौं हौं जीकी। हौं जानति हौं हरिही पीकी॥ सघन विपिन ऐसे कहँ पावहु। सब मिलि एक संग जिनि धावहु॥ २५॥

सुनत शोर कत रहिहै नेरे। कोटि करौ पावहु नहिं हेरे॥ द्वै द्वै न्यारी न्यारी डोलहु। तनक मूंदि कर मुख जिनि बोलहु॥ २६॥

जाइ अचानकही गहि ल्यावहु। सखी एक ज्यों त्यों करि पावहु॥ राधाको भुज गहिकै लीनी। ऐसे सबको द्वै द्वै कीनी॥ २७॥

मौन किए प्रवेश कियो बनमें। हरिको रूप राखि निजमनमें॥ और सखी खोजति सब कुंजनि। राधा हरि विहरत सुखपुंजनि॥ २८॥

राधा आवति देखि अकेली। फिरीं बहुरि सब बैठि सकेली॥ तब बूझति वृषभानुदुलारी। सखी संगकी कहाँ बिसारी॥ २९॥

अति गह्वरमें जाइ परी हम। सूर्य न सूझत भयो निशातम॥ ता ठाहरते हौं भई न्यारी॥ फिरि आई डरपी हौं भारी॥ ३०॥

पुहुपवाटिका हौं फिरि आई। मुकुट पीठिते हो इत आई॥ ता ठाहर जो ठाढे पावहिं। चलौ जाइ धाइ गहि लावहिं॥ ३१॥

नारीबात सुनतही धाई। घेरि लिए कोकिलसुर गाई॥ जाहु कहाँ जु अकेले पाये। सकल सुगंध शीशते नाये॥ ३२॥

एक रूप माधुरी निहारहिं। एक कटाक्ष नयनशर मारहिं॥ एक सुमन लै ग्रंथितमाला। शोभित सुंदर हृदय विशाला॥ ३३॥

खेलत आए पुलिन सुहाए। बैठे तहँ मंडली बनाए॥ मोहन नव शशि मध्य विराजै। देखि सूर कोटिक छवि छाजै॥ ३४॥

राग काफी॥ खेलत फागु कुँवर गिरिधारी। अग्रज अनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब सखा अनुसारी॥ इत नागरि निकसीं घरघरते दै आगे वृषभानुदुलारी। नवसत सजि ब्रजराज द्वार मिलि प्रफुलित बदन भीर भई भारी॥ दुंदुभि ढोल पखावज बाजत डफ मुरली रुचिकारी। मारत बाँस लिए उन्नत कर भाजत गोप प्रियजनिसों हारी॥ एक गोप एक गोपी कर गहि मिलिगए हलधरसों भुजचारी। मिटि गर्ग लाज सम्हार न कुचपट बहुत सुगंध दियो शिरढारी॥ बाँह उँचाइ कहत हो हो हो लै लै नाम देत प्रभु गारी। इतहि राधिका निकसि यूथत सन्मुख पिय छाँडत पिचकारी॥ इक गोपी गोपाल पकरि कर चली आपने मेरे उसारी। आँजति आँखि मनावति फगुवाहँसति हँसावति दै कर तारी॥ सुर विमान नभ कौतुक भूले कोटि मनोज जाइ बलिहारी। सूरदास आनंदसिंधुमें मगन भए ब्रजके नर नारी॥ ३५॥

राग काफी॥ नँदनंदन वृषभानुकिशोरी राधा मोहन खेलत होरी। श्रीवृंदावन अतिहि उजागर बरनबरन नवदंपति भोरी॥ एकन कर है अगरकुमकुमा एकन कर केसरिलै घोरी॥ एक अर्थसों भाव दिखावति नाचति तरुनि बाल वृध भोरी॥ श्याम उतहि सकल ब्रजवनिता इतहि श्यामरस रूप लह्यो री। कंचनकी पिचकारि छूटति छिरकति ज्यों सचुपावैं गोरी। अतिहि ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहौ न करोरी। करत दुहाई नंदराइकी लै जु गयो कलबल छल जोरी॥ झुंडनि जोरी रही चंद्रावलि गोकुलमें कछु खेल मच्यो री। सूरदास प्रभु फगुवा दीजै चिरजीवौ राधाबर जोरी॥ ३६॥

राग श्रीहठी॥ श्यामा परवश परी हो विकाय मोहनके खेलत रस रह्योहो। खेलन चले करत अति तरकै मारत पीक पराइ। पेलि चलीं यौवन मदमाती अधरसुधारस प्याइ। इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जेरी धरे ग्वार। इत है रंगरँगीली राध उत श्रीनंदकुमार॥ १॥

खेलतमें रिस ना करि नागरि श्यामहिं लागी चोट। मोहन है अति माधुरि मूरति राखिये चंचल ओट॥ मारि डगै जब फिरि चली सुंदरि बेनी तुरे सुअंग। मनहु चंदके बदन सुधाको उडि उडि लागत भुअंग॥ २॥

रुंज मुरज डफ झाँझ झालरी यंत्र पखावज तार। मदन भेरि अरु राइगिरी गिरि सुरमंडल झनकार॥ एक जु आई आन गाँवते सुंदरि परम सुजान। यह ढोटा धौं आहि कौनको मारत मनसिज बान॥ ३॥

यमुनाकूल मूल बंसीवट गावत गोप धमारि। लैलै नाम गाऊँ बरसानो देत दिवावत गारि॥ खेलि फागु मिलिकै मनमोहन फगुवादियो मँगाय। हरषित भई सकल ब्रजवनिता सूरदास बलिजाइ॥ ४॥ ३७॥

राग नटनारायण ॥ हो हो हो हो लैले बोलै । गोरस केरी माते डोलैं ॥ ब्रजके लरिकनि सँग लिए डोलैं । वरघरकरो फरके खोलैं ॥ गोपीग्वालमिले इक सारी । बचत नहीं विन दीने गारी ॥ आनि अचानक अँखियांमीचैं । चंदन बंदन ऊपर सीचैं ॥ जो कोइ जाइ रहै घर वैठी । करि बरिआइ ततांऊं पैसी ॥ हाथन लिए कनक पिचकारी । तकितकि छिरकत मोहन प्यारी ॥ कुमकुम कीच मची अति भारी । उड़त अबीरन रँगी अटारी ॥ अभि आनंद भरे सब गावैं । नाना गति कौतुक उपजावैं ॥ मोहन गहि आने मिलि धाय । फगुवा हमको देहु मँगाय ॥ भागत कुसुम हार उर टूटे । पीतांबर मोहन दै छूटे ॥ शोभा सिंधु बढयो अति भारी । छबिपर कोटि काम बलिहारी ॥ सूरदास प्रभु करि रस होरी । वरणौं कहँलगि मोमति थोरी ॥ ३८ ॥

राग श्रीहठी ॥ नागरि राधापै मोहन लेआयहो । लोचन आँजि भाल बेंदीके पुनिपुनि पाँइ परायहो ॥ बेनीगूँथि माँग शिरपारचो वधूवधू कहि गाइहो । प्यारी हँसति देखि मोहनमुख युवती बने बनाइहो श्यामअंग कुसुमीनईसारी अपने कर पंहिरायहो।कोउ भुज गहति कहति कछु कोउ कोउ गहि चिबुक उठाइहो ॥ कोउ कपोल छुइ कहति लाल अति कोउ मुख मुखहि मिलाइहो । एक अधर गहि सुभग अँगुरिअन बोलत नहीं कन्हाइहो ॥ नीलांबर गहि खूंटचूनरी हँसिहँसिगाँठि जुराइहो ॥ युवती हँसति देति करतारी भयो श्याम मनभायहो ॥ कनककलश अरगजा घोरिकै हरिके शिर ढरकायहो । श्रीवृंदावन अद्भुतहोरी कहत कही नहिं जाइहो । नंदसुनत हँसि महरि पठाई यशुमति धाई आइहो । पटमें बाँध्यो श्याम छुडायो सूरदास बलिजाथेहो ॥ ३९ ॥

राग बिलावल[1] ॥ सौंधेकी उठत झकोर मोहनरंगभरे । चोवाचंदन अगर कुमकुमसौंधे माठ भरे ॥ रतनजडित पिचकारी कर गये बाल खरे । भरि पिचकारी प्रेमसों डारी सो मेरे प्राणहरे ॥ सब सखियन मिलि मारग रोक्यो जब मोहन पकरे । अंजन आँजि दियो आंखिनमें हाहा करि उबरे ॥ फगुवा बहुत मँगाइ साँवरे करजोरे अरज करे । धनिधनि भाग सूर प्रभु ताके जाके सँग विहरे ॥ ४० ॥

राग राज्ञी टोडी[2] ॥ ग्वाल हँसे मुख हेरिकै अति बने कन्हाई ॥ हलधरको लिए टेरि आजु अतिबने कन्हाई । होहो करिकरि कहतहैं अतिबने कन्हाई । रहे चहूँवां हेरि आजु अति बने कन्हाई ॥ ऐसेहि चलिए नंदपै अतिबने कन्हाई ॥ बलकी सौंह दिवाइ आजु अतिबने कन्हाई ॥ भुजागहे तहां लै गईं अतिबने कन्हाई ॥ वह छबि वरनि न जाइ आजु अतिबने कन्हाई॥ इत युवती मन हरति हैं अति बने कन्हाई ॥ उतहि चले कै भोर आजु अति बने कन्हाई॥और सखी आईं तहां अतिबने कन्हाई ॥ करिकरि नयन चकोर आजु अति बने कन्हाई ॥ महर हँसे छबि देखिकै अति बने कन्हाई ॥ सुनि जननी तहँ आइ आजु अति

---

१ अ.लिप्तं यस्य वक्षः प्रमदशुभवनं कुंकुमोद्भूतरागैरास्ते मौलौ किरीटं मखिगुणरचिते कुण्डले कर्णयोः स्तः ।। गौरांगः शुक्लवासाः कबलकरतले तालतूर्य्यं द्विवाद्यं धंधंधीधीति युष्मान् मुरजभवरवः पातु वेलावलोयम् ।। राग बिलावल ।

२ वीणो वामकराग्रकेण दधती तालौ तथा दक्षिणे मुक्ताहारललाटमध्यतिलकं नेत्रालये कज्जलम् ॥ लेपं चन्दनकर्दमेन रचितं चित्रांबरं नूपुरौ तांबूल करमोहिनी च मनसष्टोडी च मुक्तावली ।। राग राज्ञी टोडी ।

बने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हों उर लाइकै अति बने कन्हाई ॥ आनँदउर न समाय आजु अतिबने कन्हाई ॥ कछुक खिझी कछु हँसि कह्यो अति बने कन्हाई ॥ किन यह कीन्हों हाल आजु अति बने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हाई ॥ ए ऐरि।य ब्रज-बाल आजु अति बने कन्हाई ॥ रंगरंग पहिरावनि दई अति बने कन्हाई ॥ युवतिन महर बुलाय आजु अति बने कन्हाई ॥ यह सुख प्रभुको देखिकै अति बने कन्हाई । सूरदास बलि जाइ आजु अति बने कन्हाई ॥ ४१ ॥

राग कल्याण ॥ ब्रजराज लँडैतो गायहो मन मोहन जाको नाउँ । खेलत फाग सुहावनी रंग भीजि रह्यो सब गाउँ ॥ ताल पखावज बाजहीहो डफ सहनाई भेरे । श्रवण सुनति सब सुंदरी वै झुंड न आयहो घेरे ॥ इतहि गोप सब राजहीं हो उत सब गोकुलनारि । अति मीठी मनभावती हो देहिं परस्पर गारि ॥ चोवा चंदन छिरकहीं हो उडत अवीर गुलाल । मुदित परस्पर खेलहीं हो हो हो बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिन मिलि हलधर पकरे छाँडे पाँइ लगाइ । दाऊ आजु भले बने जू आए आँखि अँजाइ ॥ बहुरि सिमटि ब्रज-सुन्दरी मिलि पकरे गोकुलनाथ । नव कुमकुम मुख माँडिकै रचि बेनी गुँथी हो माथ ॥ तब नंदरानी बीचकियो बहु मेवा दिये मँगाय । पटभूषण पहिराइ सबनको निरखि सूर बलि जाय ॥ ४२ ॥

राग गौरी ॥ ग्वालिनि जोबनगर्व गहेली । राधेके सँग कदम सहेली ॥ १ ॥

कुमकुम उबटि कनक तनु गोरी । अंग सुगंध चढाय किशोरी ॥ दक्षिण चीर तिपाको लहँगा । पहिरि विविध पट मोलन महँगा ॥ २ ॥

कबरी कुसुम मांग मोतिअन मनु । केसरि आड लिलाट भ्रुकुटि धनु ॥ कज्जल रेख नैन अनिआरे । खंजन मीन मधुप मृग हारे ॥ ३ ॥

श्रवणन कुंडल रविसम ज्योति नकबेसरि लटकैं गजमोती ॥ दशन अनार अधर बिंब जानो । चिबुक चारु मूंद्यो मधु मानो ॥ ४ ॥

कंठ कपोत मुक्तावलि हार । जनु युग गिरि बिच सुरसरिधार ॥ कुच चकवामुख शशि भ्रम भूले । बैठे बिधुरि दुहूँअनुकूले ॥ ५ ॥

कर कंकण चूरो गजदंती । नख मणि माणिक मेटति दंती ॥ नाभी ह्रद तनु हाटक-बरनी । कटि मृगराज नितंबिनि तरनी ॥ ६ ॥

कदली जंघ चरण कल नूपुर । गवन मराल करत धरणीपर ॥ भूषण अंग सेज सत नौरी । गावति फागु नंदकी पौरी ॥ ७ ॥

सुनि सुंदर वर बाहिर आए । हलधर ग्वाल गोपाल बोलाए ॥ इकतन ग्वाल एकतन नारी । खेल मच्यो ब्रजके बिच भारी ॥ ८ ॥

कुमकुम चंदन अरगजा घोरी । हाथन पिचकारी लै दौरी ॥ गोपी गोप भए झकझोरे । अंचल गांठि परस्पर जोरे ॥ ९ ॥

---

१ मुक्तारत्नसुवर्णवज्ररचिते सिंहासने संस्थिते छत्रं शोभितमस्तके परिजनैः संवीज्यते चामरैः ॥ तांबूलं वदने सुगंधितवपुः कंठेषु मुक्तावली कल्याणो विशदांशुकः कमलदृक्कल्याणदो भूभुजाम् ॥ राग कल्याण ।

उडत गुलाल अरुणभए अंबर । कुमकुम कीज मची धरणीपर ॥ चंग मृदंग बांसुरी बाजै । परकत एक एक भरि भाजै ॥ १० ॥

राधा मिलि इक मंत्र उपायो । हलधर अपनी भीर बुलायो ॥ कानलागि श्यामहिं समुझायो । संकर्षण गहि श्यामहिं ल्यायो ॥ ११ ॥

हरिके हाथ गहे चंद्रावलि । कज्जल लै आई संझावलि ॥ ललिता लोचन आँजन लागी। चंद्रावलि मुरली लै भागी ॥ १२ ॥

इकलै लावति हृदय कपोलनि । इक लै पोंछति ललित पटोलनि ॥ इक अवलंबन इक अवलोकति । चुंबन दान देति इक दंपति ॥ १३ ॥

मगन भई अपु वपु न सँभारति । लालनभुज अपने उरधारति ॥ गुरुजनसंत सबै मिलि देखैं । तिनहुँको तरुणी तृण वर लेखैं ॥ १४ ॥

एक कहै पियको मुख माँडौ । एक कहै फगुवा लै छाँडौ ॥ वाम लियो पट पीत छुडाई । राधा राखति कृष्ण बडाई ॥ १५ ॥

सिमटे सखा छोडावन आए । उन लियो ठेल न मोहन पाए ॥ बाँसन मार मची कल आडे । ग्वाल टिके पग एक न छाँडे ॥ १६ ॥

बल कियो बीच ग्वाल समुझाए । मोहन मेवा मोल मँगाए ॥ फगुवा लै लालन छिट-काए । हँसत गोपाल ग्वाल तहँ आए ॥ १७ ॥

तब मोहन हलधर पकराए । करहु तरुनि अपने मनभाए ॥ नाक नयन मुख कज्जल लायो केसरि कलश हलधर शिरनायो ॥ १८ ॥

बहुत भरे बलराम सबन गहि । धौलागिरि मनो धातु चली बहि ॥ न्हान चले यमुनाके कल । गोपी गोप भए अनुकूल ॥ १९ ॥

जो रस बाढयो खेलत होरी । शारद का बरणै मति भोरी ॥ सूरदास सो कैसे गावै । लीलासिंधु पार नहिं पावै ॥ २० ॥ ४३ ॥

राग गौरी ॥ गारी होरी देत दिवावत । ब्रजमें फिरत गोपिकन गावत ॥ दूध दहीके माते डोलैं । काहेन हो हो हो हो बोलैं ॥ बगलनमें दाबे पिचकारी । बाँधत फेटैं पाग साँवारी। रुकि गए बाटनि नारे पैंडे । नवकेसरिके माट उलैडे । छज्जनते छूटति पिचकारी। रंगि गईं बाखरि महल अटारी ॥ नानारंग गएरंगि बागे । बलदाऊ इत उत ह्वै भागे ॥ न्हान चले यमुनाके तीर । मनमोहन हलधर दोउवीर ॥ सूरदास प्रभु सबसुखदायक ॥ दुर्लभ रूप देखिबे लायक ॥ ४४ ॥

रागिनी श्रीहठी ॥ ऋतु वसंतके आगमहि मिलि झूमक हो । सुखसदन मदनको जोर मिलि झूमक हो ॥ १ ॥

कोकिल वचन सोहावनो मिलि झूमक हो । हित गावत चातक मोर मिलि झूमक हो ॥ वृन्दावन तरुमाल मिलि झूमक हो । सब फूलिरही बनराय मिलिझूमक हो ॥ २ ॥

जहांनेवारी सेवती मिलि झूमक हो । बहु पांडर विपुल गंभीर मिलि झूमक हो ॥ खूझो मरुवो मोगरो मिलि झूमक हो । कुल केतकि करनि करील मिलि झूमक हो ॥ ३ ॥

वेलि चमेली माधवी मिलि झूमक हो । मृदुमंजुलबकुलतमालमिलि झूमक हो ॥ नववली रस विलसहीं मिलि झूमक हो । मनो मुदित मधुपकी माल मिलि झूमक हो ॥ ४ ॥

ताल पखावज बाजहीं मिलि झूमक हो। बिच डफ मुरलीकी घोरमिलि झूमक हो॥ चलहु तहां अलि जाइए मिलि झूमक हो। जहां खेलत नन्दकिशोर मिलि झूमक हो॥५॥

यूथ नियूथनि सुंदरी मिलि झूमक हो॥ जिनि जोवत लजत अनंग मिलि झूमक हो॥ चोवा चंदन अरगजा मिलि झूमक हो। मथि लै निकसीं एक सँग मिलि झूमक हो॥६॥

प्रति अंग भूषण साजिकै मिलि झूमक हो। लिये कनक कलश भरि रंग मिलि झूमक हो॥ जाइ परस्पर छिर कहीं मिलि झूमक हो॥ ७॥

इतते गईं ब्रजसुंदरी मिलि झूमक हो। उतते मोहन नवलन अहीर मिलि झूमक हो॥ बांस धरे जेरी धरी मिलि झूमक हो। बिच मार मची भई भीर मिलि झूमक हो॥ ८॥

एक सखि निकसी झुंडते मिलि झूमक हो। तिनि पकरि लई हरि हाथ मिलि झूमक हो॥ बहुरि उठीं दशबीस मिलि झूमक हो। धरि लिये आय ब्रजनाथ मिलि झूमक हो॥ ९॥

इक पट पीतांबर गह्यो मिलि झूमक हो। इक मुरली लई छिडाय मिलि झूमक हो॥ एक मुख मांडहिं कुमकुमा मिलि झूमक हो। एक गारी दै उठीं गाइ मिलि झूमक हो॥ १०॥

प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमक हो। हँसि आंजति पियकी आंखि मिलि झूमक हो॥ यहि विधि हरिको घेरि रहीं मिलि झूमक हो। ज्यों घेरि रहीं मधुमाखि मिलि झूमक हो॥ ११॥

अब तो घात भली बनी मिलि झूमक हो। तब चीर हरे जलभीतर मिलि झूमक हो। सो परी हँसा हम सारिहैं मिलि झूमक हो। सुनि लेहु ललन बलवीर मिलि झूमक हो॥ १२॥

अब हम तुमहिं न गाइहैं मिलि झूमक हो। मुसकात कहा यदुराय मिलि झूमक हो॥ की हमसों हाहा करौ मिलि झूमक हो। की परहु कुँवरिके पाँइ मिलि झूमक हो॥ १३॥

बंक विलोकनि मन हरो मिलि झूमक हो। ठगि तुमहिं रही ब्रजबाल मिलि झूमक हो॥ फगुवा बहुत मँगाय दियो मिलि झूमक हो। मधुमेवा मधुर रसाल मिलि झूमक हो॥ १४॥

कहि मोहन ब्रजसुंदरी मिलि झूमक हो। तब धाय धरे बल घेरि मिलि झूमक हो। शङ्क सकुच सब छांडिकै मिलि झूमक हो। कहुँ पास रहीं मुख हेरि मिलि झूमकहो॥१५॥

कनक कलश भरि कुमकुमा मिलि झूमक हो। धरि ढारि दिये शिर आनि मिलि झूमक हो॥ चन्दन बँदन अरगजा मिलि झूमक हो। सब छिरकति करति न कानि मिलि झूमक हो॥ १६॥

खेलि फागु अनुराग बढ्यो मिलि झूमक हो। फिर चले यमुनजल न्हान मिलि झूमक हो॥ द्वितिया बैठि सिंहासने मिलि झूमक हो। दोउ देत रत्न मणिदान मिलि झूमक हो॥ १७॥

यहि विधि हरि सँग खेलहीं मिलि झूमक हो। गण गोकुलनारि अनंत मिलि झूमक हो॥ सूर सबनको सुख दियो मिलि झूमक हो। रमि रसिक राधिका कंत मिलि झूमक हो॥ १८॥ ४५॥

रागिनी काफी मनमोहन ललना मनहरयो ॥ गृहगृहते सुंदरि चलीं देखन ब्रजराज कुमार। देखि वदन विथकित भईं बैठी हैं सिंह दुआर ॥ डिमि डिमि पटह ढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चङ्ग तार। गावत प्रीति सहित श्रीदामा बाढ्यो है रंग अपार ॥ १ ॥

इत राधिका सहित चन्द्रावलि ललिता घोष अपार। उत मोहन हलधर दोउ भैया खेल मच्यो दरबार। रत्नजटित पिचकारी कर लिये छिरकति घोषकुमारि। मदनमोहन पिय रसमाते हैं कछु अन अँग सँभारि ॥ २ ॥

मोहन प्यारी सैनदै हलधर पकराए जाय। आपु न हँसत पीतपट मुखदै आएहो आंखि अँजाय ॥ बहुरि सिमिट ब्रज सुंदरी मन मोहन पकरे जाय। अधर पानरस वरति पियारी मुरली लई छिडाय ॥ ३ ॥

परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी चले यमुनजल न्हान। वारि कुँवरिपर पट नँदरानी देति बिप्रन बहुदान ॥ द्वितिय पाट सिंहासन बैठे चमर छत्र शिरढार। सूरज प्रभु पर सकल देवता वरषत सुमन अपार ॥ ४ ॥ ४६ ॥

राग श्रीहठि ॥ श्याम संग खेलन चली श्यामा सब सखियनको जोरि। चन्दन अगर कुमकुमा केसरि बहुकंचन घट घोरि ॥ खेलत मोहन रंग भरे हो लाल प्यारो सुन्दर सब सुखराशि ॥ १ ॥

फूलनके गेंदुक नवला सजि कनक लकुटिया हाथ। जाय गही ब्रज खोरि राधिका कोटिक युवती साथ ॥ उतते हरि आए जब खेलत हो हो होरी सँग। कानपरी सुनिए नाहीं बहुबाजत ताल मृदंग ॥ २ ॥

पहिले सुधि पाई नहीं तब घिरे सांकरी खोरि ॥ अब हलधर उलटहु काहे तुम धावहु ग्वालन जोरि ॥ धरत भरत भाजत राजत गेंदुक नवला सन मार। रसन बसन छूटत न सँभारैं टूटत है उरहार ॥ ३ ॥

जब मोहन न्यारे करि पाए पकरे चहुँदिश घेरि ॥ बोलहु जू अब आनि छुडावै बल भैयाको टेरि ॥ आजु हमारे वश परेहौ जैहौ कहां छिडाइ। की बल छूटहु आपने की यशुमति माय बोलाइ ॥ ४ ॥

एक गहेकर एक फेंट गहि पीतांबर लियो छिडाय। राधा हँसति दूरि भइ ठाढी सखियन देति सिखाय ॥ एक श्रवणमें कहि कछु भाजति एक भरति अँकवारि। एक निहारती रूप माधुरी एक अपुनपौ वारि ॥ ५ ॥

एक चिबुक गहि बदन उठावति हमतन लाल निहारि। एक नैनकी सैन मिलावति एक उठति दै गारि ॥ आईं झूमि सकल ब्रज वनिता हरि देखी चहुँ ओर। राधा दृष्टि परे बिनु मोहन तलफत नैन चकोर ॥ ६ ॥

हरि तब अपने करवरसों घूँघट पट कीनो दूरि। हँसत प्रकाश भयो चहुँ दिशिते सुधा किरनि भरि पूरि ॥ आँखि दिखावतहौ जु कहा तुम करिहौ कहा रिसाय। हम अपनो भायो करि लैहैं छुवहु कुँवरिके पाय ॥ ७ ॥

तब तुम अंबर हरे हमारे कीन्हें कौन उपाय। अब तौ दाउँ पर्‍यो धरि पाए छाडहिं तुमहिँन गाय ॥ मुखकी कहति सबै झूठी मनहीं मन बहुत सनेहु। छूटि कैरँगे बल भैया अब हमहिं छांडि किनि देहु ॥ ८ ॥

तुम जो फगुवा दै हौ कहा चलि बोलहु सांचे बोल । की हमसों हाहा करिए की देहु श्रीदामा ओल ॥ हँसि हँसि कहत सहत सबहीकी आभूषण अब लेहु । नासाको मुक्ता अरु मुरली पीतांबर मेरो देहु ॥ ९ ॥

एक बनाइ देति बीरी कर वल्लभ छुवति कपोल । धन्य धन्य बडभाग सबहिके वश कीने बिनु मोल ॥ उडत गुलाल अबीर कुमकुमा छबि छाई जनु सांझ । नाहीं दृष्टि परत राधा मुख चंद्र नीलांबर मांझ ॥ १० ॥

खेलि फाग अनुराग बढ्यो घर मची अरगजा कीच । व्रज बनिता कुमुदिनी कुसुमगण हरि शशि राजत बीच अष्टसिद्धि नवनिधि व्रज बीथिन डोलति घरघर द्वार । सदा वसंत वसत वृंदावन लता लटकि द्रुम डार ॥ ११ ॥

देखि देखि शोभा सुख संपति यह जिय करति विचारि । ब्रज वनिता हम किन न भई यों कहति सकल सुरनारि ॥ फागु खेलि अनुराग बढायो सबके मन आनंद । चले यमुन अस्नान करनको सखा सखी नँदनंदन ॥ १२ ॥

दुष्टनदुख संतन सुखकारण ब्रज लीला अवतार । जय जय ध्वनि सुमनन सुर वर्षत निरखत श्याम बिहार ॥ युगलकिशोर चरण रज माँगौं गाऊं सरल धमार । श्रीराधा गिरिवरधर ऊपर सूरदास बलिहार ॥ १३ ॥ ४७ ॥

राग नटनारायण ॥ खेलत फागु कहत हो होरी । उत नागरीसमाज विराजति इत मोहन हलधरकी जोरी ॥ १ ॥

बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ रुंज मुरुंज बाँसुरी ध्वनि थोरी । श्रवण सुनाइ गारि दै गावति ऊंची तान लेति तिय गोरी ॥ कोटि मदन दुरि गयो देखि छबि तेउ मोहे जिनहूँ मति भोरी । मोहन नँदनंदन रस विथकित कोहू दृष्टि जात नाहिं मोरी ॥ २ ॥

कुमकुम रंग भरी पिचकारी उत्तम छिरकति नवल किशोरी । यहि विधि उमँगि चल्यो रँग जहँ तहँ मनु अनुरागसरोवर फोरी ॥ कतहुँक मिलि दश बीसक धावति लेति छिडाइ मुरलि झकझोरी । जाइ श्रीदामा लै आवत तब दे मानिनि बहुभाँति पटोरी ॥ ३ ॥

भरि करआन अबीर उडावत गोविंदनि कट जाय दुरि चोरी । मनहु प्रचंड पवनवश पंकज गगन धूरि शोभित चहुँ ओरी ॥ कनककलश कुमकुम भरि लीन्हों कस्तूरी मिलिकै घसि घोरी । खेल परस्पर कीच मची घर अधिक सुरंग भई ब्रज खोरी ॥ ४ ॥

ग्वाल बाल सब संग मुदित मन जाय यमुनजल न्हाइ हिलोरी । नए वसन आभूषण पहिरत औरन देत पीतांबर छोरी ॥ द्वीज समाज समेत करत द्विज तिलक दूब दधि रोचन रोरी । सूर श्याम विप्रन बंदीजन देत रतन कंचनकी बोरी ॥ ५ ॥ ४८ ॥

राग सारंग ॥ बनी रूप रंग रस राधिका ताते अधिक बने ब्रजनाथ हो । ललिता अरु चंद्रावली मिलि बन्यो छबीले साथ हो ॥ ताल पखावज बाजहीं सँग डफमुरलीकी घोर हो । नंदद्वार औसर रच्यो दोउ राजत नवल किशोर हो ॥ एक कोंध ब्रजसुंदरी एक कोंधग्वाल गोविंद हो । सरस परस्पर गावहीं दैगारि नारिबहुवृंद हो ॥ आवहु रीहमदुरिहैं बलभद्रकृष्णगहिदेहिं हो । लोचन उनके आँजहीं अधरनको रस लेहिं हो ॥ शीलानाम ग्वाळिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइ हो । पउरैना मुरली लई मुख निरखि हरषि मुसकाइ हो ॥ गहे कृष्ण अचानक राधिका रही कंठ भुज लाइ हो । मनके सब सुख

भोगए जब परसे यादवराय हो ॥ दई कोटि कलश भरि वारुनी बहुत मिठाई पान हो। राधा माधव रस रह्यो सब चले यमुनजल न्हान हो ॥ द्वितिया सकल समाज सो पट बैठे आनँदकंद हो। दान देति ब्रजसुंदरी नगभूषण नवनिधिनद हो ॥ बनवीथिनिभरी पुर गली उमँग्योरंग अपार हो। सूर सुनभ सुर थकिरहे निरखत प्राणअधार हो ॥ ४९ ॥

राग सारंग ॥ करत यदुनाथ जलधिजलकेलि। अबलन कर लिए अंबुज अमृत किए दिये नव नव सुख खेलि। जो राजत तिहिंकाल लाल ललना रसाल रसरंग। मानहु न्हात मदन वधु सजनी गज गजिनी गज संग ॥ स्रवत सलिल शिव विदित अलकमिव राहु वदन विधुमत। मनहु पान करि भोजन सो अलि जु पिकबल रस बमत ॥ ध्वनि-नकरत सिंधुउतरन धरत तरंग रह्योठहिराइ। पूजे कृष्ण उजागर सागर वैरागर पहिराइ ॥ भवन गवन यों नंदसुवन तब निकसि चढे रथ कूल। निरखत वरषत कुसुम त्रिदशजन सूर सुमति मनफूल ॥ ५० ॥

राग राज्ञी बसंती ॥ यदुपति जलक्रीडत युवतिन संग। सागरसकुचत तजीतरंग ॥ शोडशसहसदश अष्ट नारि। तिनमें अति शोभित श्रीमुरारि ॥[1] उडुगण समेत शशि सिंधु-वारि। मनु पुनि आयो चितहित बिचारि ॥ मृगमद मलयज केसरि कपूर। कुमकुमा कलित छत अगर चूर ॥ जल ताकि परस्पर छपत दूर। मनु धनुष निपुण संग्राम शूर ॥ चलत चारु कल वलय चीर। अरु जलदवृंद छतभित समीर ॥ वदन निकट कच चुवत नीर। मनु मधुप निकर ध्यावत न धीर ॥ जहँ नारदादि मुनि करत गान। जग पूरित हरियश सुर वितान ॥ सुर सुमन सुंघंने वर्षत विमान। जै सूर प्रभु सब सुख निधान॥५१॥

राग सारंग ॥ रवितनयाको सलिल गंभीर आवहुरे मिलि न्हाइये। यहँ अति श्रम गँवा-इदेहु को पुनि अपने घर जाइये ॥ भीजे गात जातहीं नवतन जो जसुदापै जाइये। लै सबहीको स्वाद मनोहर मीठो हो सो खाइये ॥ ए भूषण ए वसन मनोहर सादर सूरहिं दिखाइये। हरि जानत हौं ब्रज वेगि बिदा ह्वै विमुख जाइ चिताइये ॥ ५२ ॥

राग कल्याण ॥ यमुना तैं हौं बहुत रिझायो। अपनी सौंह दिय नंददोहाई ऐसो सुख मैं कबहुँ न पायो॥मिले मातु पितु बंधु सजन सब सखन संग वन विहरन आयो॥अज अनंत भगवंत धरणिधर सुवस कियो प्रिय गान सुनायो ॥ हौं भयो प्रसन्न प्रेमहित तेरे कलिमल हरे जु यह जल न्हायो॥अबजियसकुच कछू मति राखहु मांगि सूर अपनेमन भायो ॥५३॥

राग बिलावल ॥ श्यामा श्याम खेलत दोउ होरी। फागुमच्यो अति ब्रजकी खोरी ॥१॥

इतहि बनी वृषभानु किशोरी सँग ललिता चंद्रावलि जोरी ॥ ब्रजयुवती सँग राजति भोरी ॥ बनि शृंगार श्रीराधा गोरी ॥ २ ॥

उतहि श्याम हलधर दोउ जोरी ॥ वारौं कोटिकाम छबि थोरी ॥ ग्वाल अबीरनकी लिए झोरी। सुरंग गुलाल अरगजा रोरी ॥ ३ ॥

गावति सबै मधुर सुर गोरी। तानलेति दैदै झकझोरी ॥ राधा सहित चंद्रावलि दौरी। औचक लीनी पीत पिछौरी ॥ ४ ॥

१ मालाकंकणकुंडलैः कनकजैराभूषिता प्रायशः सम्यग्दाडिमबीजदंतरुचिभिः संस्पर्द्धमाना भृशम् ॥ ईषद्धास्यमुखी कठोरकुचका रक्तांबरं बिभ्रती वासन्ती वरलोललोचनचलल्लोलालना वर्तते ॥ राज्ञी व सन्ती।

२ नेत्रे कज्जलरंजितेऽतिललिते नासाग्रमुक्ताफलं भाले भाति सुकुंकुमस्य तिलकं गौरांगचित्रांबरम् ॥ वेणीचंपककेतकीसुकुसुमैः सार्द्धं करे वीटिकां नानासौरभगंधिताखिलवपुर्वेलावली योषिता ॥ राग बिलावल।

देखतही लगई अजोरी । डारिगई शिरश्यामठगोरी ॥ ग्वाल देत होरीकी गारी । बैर कियो हमसों तुम भारी ॥ ५ ॥

हँसति परस्पर यौवनवोरी । लै आई हरि पीत पिछोरी ॥ घात करति मन मुरलीको री । अधरनते नहिं टारत जोरी ॥ ६ ॥

भली करी सब हम तुमसों री । सावधान अब होहु कह्यो री ॥ श्याम चितै राधामुख ओरी । नैन चकोर चन्द्र दरश्यो री ॥ ७ ॥

पियको प्रिय मोहनी लगाय । इहि अंतर गोपी हँसि धाय ॥ गह्यो हरषि भुज ललिता धाय । गई श्यामकी सब चतुराय ॥ ८ ॥

मनमाने सब करति बडाय । राधा मोहन गाँठि जुराय ॥ करत सबै रुचिका पहुनाय । नंदमहरको गारी गाय ॥ ९ ॥

फगुवा हमको देहु दिवाय । पचरंग सारी बहुत मँगाय ॥ लीन्ही जो जाके मन आय । तुरत सबै युवती पहिराय ॥ १० ॥

खेलत फागु रह्यो रसभारी । वृद्ध किशोरि बाल अरु नारी ॥ अतिश्रम जानि गए जलतीरा । ग्वाल ग्वालि हलधर हरिवीरा ॥ ११ ॥

परम पुनीत यमुनजल राशी । क्रीड़त जहां ब्रह्म अविनाशी ॥ धन्यधन्य सब ब्रजके वासी । विहरत हैं हरिसंग करि हांसी ॥ १२ ॥

जलक्रीडातरुणिन मिलि कीनो । ब्रज नर नारिनको सुखदीनो ॥ करि अस्नान चले ब्रजधाम । करे सबनके पूरण काम ॥ १३ ॥

जो सुख नंद यशोदा पायो । सो सुख नाहीं प्रगट बतायो ॥ सुरवनिता यह साध बिचारैं । कैसे हरिसँग हमहु बिहारैं ॥ १४ ॥

धन्य धन्य ए ब्रजकी बाला । धन्य धन्य गोकुलके ग्वाला ॥ सूर श्याम जनके सुखदायक । भुव प्रगटे हरि हलधर भायक ॥ १५ ॥ ५४ ॥

राग गौरी ॥ कछु दिन ब्रज औरौ रहो हरि होरी है ॥ अब जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरी है ॥ १ ॥

सब सुखको फल फागु अहो हरि होरी है ॥ प्रगट करौ यह जानिकै हरि होरी है । अंतरको अनुराग अहो हरिहोरी है ॥ २ ॥

गनहु द्विजदिन शोधिकै हरि होरी है । भूपति ह्वैहै काम अहो हरि होरी है ॥ शशि रेखा शिर तिलक दै हरि होरी है ॥ सब कोउ करै प्रणाम अहो हरि होरी है ॥ ३ ॥

कनक सिंहासन बैठेहै हरि होरी है । युवतिनके उर आनि अहो हरि होरी है ॥ घूँघट आतपतानि अहो हरि होरी है ॥ ४ ॥

तीज तिहूँ दिश प्रगट है हरि होरी है । अपनी आनन रेख अहो हरि होरी है ॥ सुनि-पग मगडफ डिमिडिमी हरिहोरी है । सोइकरिहैं सब देश अहो हरि होरी है ॥ ५ ॥

चौथिचहूँदिश जानिहैं हरि होरी है । यह अपनी इक रीति अहो हरि होरी है ॥ मैं जो कहों पिय निलज अहो हरि होरी है । छांडि सकुचकुलनिति अहो हरि होरीहै ॥६॥

पांचैं परिमिति परिहरै हरि होरी है । चली सकल इक चाल अहो हरि होरीहै ॥ नारि-पुरुष सादर करैं हरि होरी है । वचन प्रीति प्रति पालिअहो हरि होरी है ॥ ७ ॥

छठि छ रागरसरागिनी हरि होरी है। ताल तान बंधान अहो हरि होरी है ॥ चटुल चारु रतिनाथके हरि होरी है। सीखत होइ औधान अहो हरि होरी है ॥ ८ ॥

सुनि बातैं सब सजग होइ हरि होरी है। सबन मतो मत एक अहो हरि होरी है ॥ नृप जो कहो सब कोउ करै हरि होरीहै। को राखिहै बिबेक अहो हरि होरी है ॥९॥

आठैं सुनि सब साजि भए हरि होरीहै। राजाकी रुचि जानि अहो हरि होरी है।करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है। आयसु माथे मानि अहो हरि होरी है ॥१०॥

नौमी नवसत साजिकै हरि होरी है। उर सुगंध उपहार अहो हरि होरी है ॥ मनहु चली है मायके हरि होरी है। मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है ॥११॥

दशै दुशै दिशि शोधिकै हरि होरीहै। बोलेहो नारायण अहो हरि होरी है॥ काज करहु रुचि आपनी हरि होगी है। आवहु काज सिराय अहो हरि होरी है ॥ १२ ॥

सुनि आयसु एकादशी हरि होरी है। बोले सब शिर नाइ हरि होरी है ॥ गज जीतहु बल आपने हरि होरी है। ज्ञानविराग छँडाय अहो हरि होरी है ॥ १३ ॥

देखि भले सुभट आपने हरि होरी है। दियो द्वादश घोस बिचारि अहो हरि होरी है करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है। होइ निशंक नर नारि अहो हरिहोरी है ॥१४॥

ढोलभेरिडफ बाँसुरी हरि होरी है। बाजैं पटह निशान अहो हरि होरी है ॥ मिलहु लोकपति छाँडिकै हरि होरीहै। नहिं उबरिबो निदान अहो हरि होरीहै ॥ १५ ॥

रथ औचक बरात साजैं हरि होरीहै। खरन भए असवार अहो हरि होरी है ॥ धूरि धातु घट रंग भरे हरि होरी है। धरे यंत्र हथियार अहो हरि होरी है। १६ ॥

जहां तहां सैन्या चली हरि होरी है। मुक्त काछ शिर केश अहो हरि होरी है ॥ आगै पर समुझैं नहीं हरि होरी है। राजा रंक अवेश अहो हरि होरी है ॥ १७ ॥

जे कबहूं देखे नहीं हरि होगी है। कबहूं सुनी न कान अहो हरि होरी है॥तिन कुलनारि निडर भई हरि होरी है। लागे लोग परान अहो हरि होरी है ॥ १८ ॥

भस्मभरैं अंजन करैं हरि होरी है। छिरकैं चंदन वारि अहो हरि होरी है ॥ मर्यादा राखैं नहीं हरि होरी है। कटिपट लेहिं उतारि अहो हरि होरी है ॥ १९ ॥

जहां सुनहिं तप संयमी हरि होरी है। धर्म धीर आचार अहो हरि होरी है ॥ छेकहिं ताहि निशंक होई हरि होरी है। पकरहिं तोरि किवाँर अहो हरि होगी है ॥ २० ॥

शठपंडितवेश्या वधू हरि होरी है। सबै भये एकसारि अहो हरि होगी है ॥ तेरसि चौदसि दिवस द्वैक हरि होरी है। जनु जीते जगझारि अहो हरि होरी है ॥ २१ ॥

पून्यो प्रगटी प्राणपती हरि होरी है। दुरेमिले पालागि अहो हरि होरी है ॥ जहां तहां होरी जरै हरि होरी है। मनहुं मवासे आगि अहो हरि होरी है ॥ २२ ॥

सब नाचहिं गावहीं सबै हरि होरी है। सबै उडावहिं छार अहो हरि होरी है ॥ साधु असाधु न समुझहीं हरि होरी है। बोलहिं वचन विकार अहो हरि होरी है ॥२३॥

अति अनीति मिति देखिकै हरि होरी है। परिवा प्रगटी आनि अहो हरि होरी है ॥ विमल बसन तनु साजहीं हरि होरी है। मर्यादाकी कानि अहो हरि होरी है ॥ २४ ॥

आवतही आदर करैं हरि होरी है। हंसि जोरहिं उठि हाथ अहो हरि होरी है ॥ बरन धर्म मिति राखहीं हरि होरी है। कृपा करौ रतिनाथ अहो हरि होरी है ॥ २५ ॥

सुनि विनती ऋतुराजकी हरि होरी है। प्रभु समुझे मनमाहँ अहो हरि होरी है॥ जाय धर्म अपने रहो हरि होरी है। बसो हमारे बाँह अहो हरि होरी है॥ २६॥

और कहां लौं बरनिए हरि होरी है। मनसिज के गुणग्राम अहो हरि होरी है॥ सुनहु श्याम या मासमें हरि होरी है। कियो जु कारण काम अहो हरि होरी है॥ २७॥

सूर रसिक मणि राधिका हरि होरी है। कहि गिरिधर सों बात अहो हरि होरी है॥ श्याम कृपा करि ब्रज रहौ हरि होरी है। बरजति मधुबन जात अहो हरि होरी है॥ २८॥ ५३॥

राग जयजयवंती॥ माई फूले फूले हो फूलत श्रीराधे कृष्ण झूलत सरस रसही फूलडोल। फूले फूले फूल जोरत फूले निमिष नहीं मोरत संतन हितही फूलडोल॥ १॥

फूल फटिक खँभरचित कंचनहीं फूल खचित सरस रसही फूलडोल। पटुली नवरतन खचित हीरालाल मोती जटित संतन हितही फूल डोल॥ २॥

मरुवा मयारि सुठि ढरिरोल प्रवाल पिरोजा झूमक चहुँ ओल सरस रसही फूल डोल। डाँडी हेम हीने चारु गोल चुनी नहीं फूल लगे लोल संतन हितही फूलडोल॥ ३॥

फूले श्रीवृंदावन अनुकूल सघनलता सब फूले फूल सरस रसही फूलडोल॥ फूले श्रीयमुनाकूल विविध तरंतरंग फूले फूल संतन हितही फूलडोल॥ ४॥

फूले हीन चंपक चारु चमेली फूले मलयज लवंगलता बेलि सरस रसही फूलडोल॥ फूले वेल निवारी फूलफूलि फूले मरुवो मोगरो सेवती फूल बेलि संतन हितही फूलडोल॥ ५॥

तहाँ हीन अंब मौरेहैं फूले जहां निबुवा सदाफल फूले सरस रसही फूलडोल। तहाँ कमल केवरे फूले जहाँ केतकी करने फूले संतन हितही फूलडोल॥ ६॥

फूली माधवी मालती रोलि फूलेहीमधुप करत हैं केलि सरस रसही फूलडोल। फूलेफले हैं आनँद बेलि फूले पिवत सुमन रस पेलि संतन हितही फूलडोल॥ ७॥

फूलनके सौंधेवार मानो मधुपछबि अपार सरस रसही फूलडोल। फूलनहीके हिए हैं हार सुरसरी मानो धरेही धार संतन हितही फूलडोल॥ ८॥

माथे मुकुट है रचित फूल फलनकी है बेनी शीशफूल सरस रसही फूलडोल। फूलनहीकी हैं बेंदी भाल फूलनके सब नखशिख श्रृंगार संतन हितही फूलडोल॥ ९॥

फले हैं हो धेनु धाम सब ग्वालबाल फूले हैं हो नंदजूके लाल परस रसही फूलडोल। फूली गोपी हीन तरुन वृद्ध बाल फूली करति हैं नाना बिधि ख्याल संतन हितही फूलडोल॥ १०॥

फूली रोहिणी यशोमति रानी फूली है देविहरिहीरजधानी सरस रसही फूलडोल॥ फूले हैं नंद संकर्षण सुख मानी फूले गोकुलही प्राणी संतन हितकी फूलडोल॥ ११॥

फूले ही बजावैं डफ ताल मृदंग बजै महुवरि मुँहचंग सरस रसही फूलडोल॥ फूले बजावैं बाँसुरी सुर संग बजावैं अमृत कुंडली उपंग संतन हितही फूलडोल॥ १२॥

फूले बजावैं किन्नरी यंत्र तार गति सुर मंडल झनकार सरस रसही फूलडोल। फूले बजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार संतन हितही फूलडोल॥ १३॥

फूलेहिन बजावैं रुंज मुरुंज फूले बजावैं झांझि झालरी पुंज सरस रसही फूलडोल। फूलेसुर बजावैं दुंदुभी घोरगुंजकूंजत मोर मराल कोकिल कुंज संतन हितही फूलडोल॥१४॥

देखि डोल ब्रजजन सब फूले गोपी झुलावति गिरिधर झूलै सरस रसही फूलडोल। फूले हो मुदित मनोहर फूले रसिकनि रसिक शिरोमणि फूल संतन हितही फूले डोल ॥१५॥

हरषि परस्पर गावैं हो होरी बोलत मीठे बोल बोलावैं सरस रसही फूलडोल। फूली प्रमुदित मनोहर भावैं कमलनयनको लाड लडावैं संतान हितकी फूलडोल ॥ १६ ॥

फूली चोवा चंदन बंदन रोरी केसरिमृगमदमथिमथि घोरी सरस रसही फूलडोल। फूली छिरकति नवलकिशोरी अबीर गुलाल भरे सब झोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १७ ॥

फूली नाचति वृद्ध बाल यौवनभोरी फूले ग्वाल ग्वालिनि यूथ यूथनि जोरी सरस रसही फूल डोल। फूले करत कुलाहल तिहुँपुर खोरी फूले हैं नरनारि किशोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १८ ॥

फूले फगुवा मँगायदियो रस राख्यो तट भूषण पहिराय रह्यो नहीं कास्यो सरसदिशही फूलडोल। फूले हरि हँसिहँसि अमृतभाष्यो फले हो जो जैसे तैसे सबको मन राख्यो संतन हितही फूलडोल ॥ १९ ॥

फूलेहिन नारद करत हो गान फूले हैं ऋषि मुनि शिव धरत ध्यान सरसरसही फूलडोल। फूले हो बीणा बजावत हरियश बखान मारचो कंस उग्रसेनकी फिरै आन संतन हितही फूलडोल ॥ २० ॥

फूलेहिन कहत हरि मुनि कह्यो जाय तुरतही मोहिं तुम लेहु बोलाय सरसरसही फूल डोल। फूल्योहिन जघानो मैं असुर आय नदी यमुनामैंही देहुँ बहाय संतन हितही फूलडोल ॥ २१ ॥

फूलेहिन उग्रसेन शिर छत्र धराय फूले मथुरा नरनारि आनँद देहु बढाय सरस रसही फूलडोल। फूलेहिन पितु मातु मिल्यो म्यत वधाय दुसह दुख बिसराउ सुख देहु जाय संतन हितही फूलडोल ॥ २२ ॥

फूले हिन मुनि सुनि ज्ञान हरषाय सकल भूमि ब्रजरत्नन छाय सरस रसही फूलडोल। फूले हैं त्रिदशपति सुर शची सहिताय नभ चढि बिमान फूले सुमन वरषाय संतन हितही फूलडोल ॥ २३ ॥

फूलेहिन हरषत हो ऋषिगाय फूले बिदा भये मुनि बैकुंठ सिधाय सरस रसहीं फूलडोल। फूले हरषिहरषि हरिको यशगाय फूले पूँछत सुर मुनिकछु कह्यो न जाय संतन हिसही फूलडोल ॥ २४ ॥

फूल्योहिन पैढं पढावैं सुनैं सुनावैं वसि वैकुण्ठ परमपद पावैं संतन हितही फूलडोल। सूरदास प्रभु कैसे करि गावै लीलासिंधुपार नहिं पावै संतनहितही फूलडोल ॥ २५ ॥५४॥

राग राज्ञी रामगिरी ॥ हरि पिय तुम जिनि चलन कहो। यह जिनि मोहिं सुनावहु बलि जाउँ जिनि जिय गहनि गहो ॥ जब चलिहौ तबही कहियो अबहीं जिनि उरहि

१ धत्ते श्यामलकं चुचूकयुगलं मुक्तावलीमंशुकं शोणाभं वरकंकणानि करयोः पादद्वये नूपुरौ। चंद्रास्या मदविह्वला सकरुणां भाषां भृशं भाषती सैषा रामगिरी दिनांतसमये रामेण गीता पुरा । रामगिरी ।

दहौ। औरहु जन्मप्राण मिलियत हैंपुनि तुम मिलत नहौ। जानि एई जिय तानि मनिसुख अबकी बेर रहौ। यह सुनि सूरदास को लालच कबहूँ जिनि उमहौ ॥ ९५ ॥

राग कल्याण ॥ श्रीगोकुलनाथ बिराजत डोल। संग लिए वृषभानुनंदनी पहिरे नील निचोल ॥ कंचनखचितलाल मनि मोती हीरा जटित अमोल।झुलवहिं यथ मिली ब्रजसुंदरि हरषति करति कलोल ॥ खेलति हँसति परस्पर गावति होहो बोलति मीठे बोल। सूरदास स्वामी पियप्यारी झूलत हैं झकझोल ॥ ९६ ॥

राग कल्याण ॥ श्रीझूलत नँदनंदन डोल। कनकखंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल ॥ सुभग सरल सुदेश डांडी रची विधना गोल। मनो सुरपति सुरसभाते पठैदियो हिंडोल ॥ जबहिं झंपति तबहिं कंपति विहँसति लगति डरोल। त्रिदशपति सजि चढि विमानन निरखि दैदै ओल ॥ थके मुख कछु कहि न आवै सकल मख कृत झोल। सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल ॥ थक्यो रतिपति देखि यह छवि इन्द्र भयो भ्रमभोल। सूरयहमुख गोपगोपीपियत अमृत कलोल ॥ ९७ ॥

राग गौरी॥ डोलत देखि ब्रजवासी फूलैं। गोपी झुलावैं गोविंद झूलैं ॥ नंदनंदनगोकुलमें सोहैं ॥ मुरलि मनोहरमन्मथ मोहैं ॥ कमलनयनको लाड लडावै। प्रमुदित मात मनोहर गावैं ॥ रसिकशिरोमणि आनँदसागर। सूरदास मनमोहन नागर ॥ ९८ ॥

इति फागुक्रीडा समाप्ता। अध्याय ३८ ॥ अथ अक्रूरप्रस्ताव कथावर्णन ॥ राग बिलावल ॥ फागु रंग करि हरि रस राख्यो। रह्यो न मन युवतिनके काख्यो॥ सखा संग सबको सुख दीनो। नर नारी मन हरि हरिलीनो ॥ जो जेहिभाव ताहि हरि तैसे। हितको हित कंटकको तैसे ॥ महरि नंद पितु मातु कहाए। तिनहीके हित तनु धरि आए ॥ युगयुग यह अवतार धरत हरि। हरता करता विश्व रहे भरि ॥ धरणी पाप भार भई भारी। सुरन लिए सँग जाइ पुकारी ॥ त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी। राखिलेहु मोहिं शरन उबारी ॥ राजस रीति सुरन कहि भाषी। भए चंद्र सूरज तहँ साखी ॥ क्षीरसिंधु अहि शयन मुरारी। प्रभु श्रवणन तहँ परी गुहारी ॥ तब जान्यो कमलाके कंता। दनुज भार पुहुमी मेमंता ॥ सिंधुमध्य वाणी परकाशी। भुव अवतार कह्यो अविनाशी ॥ मथुरा जन्मि गोकुलहि आये। मातपिता सुत हेतु कहाए ॥ नारद कहि यह कथा सुनाई। ब्रज लोगन सुख दियो कन्हाई ॥ नंद यशोदा बालक जान्यो। गोपी कामरूप करि मान्यो ॥ प्रथम पिवत पय बकी विनाशी। तुरत सुनत नृप भयो उदासी ॥ यहि अंतर बहु दनुज संहारे। यहि अंतर लीला बहु धारे ॥ को माया कहि सकै तुम्हारे। बाल तरुन सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ए ब्रजके वासी। वश कीन्हे जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहुते न्यारे। तिन युवती बन बननि विहारे ॥ आज्ञा इहै मोहिं प्रभु दीन्हों। यह अवतार जबहि भुवलीन्हों ॥ दैत्यदहन सुरके सुखकारी। अब मारो प्रभु कंस प्रचारी ॥ यह सुनि हँसे सुरनके नाथा। जब नारद गाई यह गाथा ॥ श्रीमुख कह्यो जाइ समुझावहु। नृप आयसु करि मोहिं बोलावहु॥ अंजलि जोरि राज मुनि हरषे। कृपावचन तिनसों हरि वरषे ॥ तुरत चले नारद नृपवासा। इहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥

संकर्षण हृदये प्रगटाई । जो वाणी ऋषि गाइ सुनाई ॥ आदि पुरुष अज्ञात बिचारी । शेषरूप हरिके सुखकारी ॥ हरिअंतर्यामी जगताता । अनुज हेतु जग मानत नाता ॥ इहै वचन हलधर कहि भाष्यो । सुनिसुनि श्रवण हृदय हरि राख्यो॥तुम जन्मे भुवभार उतारन तुम हौ अखिल लोकके तारन ॥ तुम संसार सारके सारा जल थल जहाँ तहाँ विस्तारा ॥ तब हँसि कह्यो भ्रातसों बानी । जो तुम कहत बात मैं जानी ॥ कंसनिकंदन नाम कहाऊं । केश गहौं पुहुमी घिसटाऊं ॥ यहि अंतर मुनि गए नृपपासा । मनमारे मुख करे उदासा । हरषि कंस मुनि निकट बोलाए । आदर करि आसन बैठाए ॥ कैसो मुख क्यों ऋषि मनमारे । कह चिंता जिय बढ़ी तुम्हारे ॥ नारद कह्यो सुनी हो राऊ । कहा बैठे कछु करहु उपाऊ ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो । देख्यो नंद सुवन ब्रज जैसो ॥ करत कहा रजधानी ऐसी । यह तुमको उपजी कछु जैसी ॥ दिनदिन भयो प्रबल वह भारी । हम सब हितकी कहैं तुम्हारी ॥ तब गर्वित नृप बोलो बानी । कहा बात नारद तुम गानी ॥ कोटि दनुज मोसरि मो पासा । जिनको देखि तरणितनु त्रासा ॥ कोटिकोटि तिनके सँग योधा । को जीवै तिंनके तनु क्रोधा ॥ मल्लनके गुण कहा बखानौं । जिनके देखत काल डरानौं ॥ कोटि धनुर्द्धर संतत द्वारे । बचै कौन तिनके जु हँकारे ॥ एक कुवलिया त्रिभुवनगामी । ऐसे और कितिक हैं नामी ॥ ग्वालसुतनकी कहा चलावहु । यह वाणी कहि कहा सुनावहु ॥ प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे । सेवा करत सदा रहैं नेरे ॥ ताते सकुचतहौं उन काजा । बालक सुनत होइ जिय लाजा॥भली करी यह बात सुनाई । सहज बुलाइलेउँ दोउ भाई ॥ और सुनहु नारद मुनि मोसों । श्रवणन लागि कहौं कछु गोसों ॥ कतिक बात बलराम कन्हाई । मोदेखत अति काल डेराई ॥ आजु कालि अब उनहिं बोलाऊं । कहि पठऊं ब्रजसहित मँगाऊं ॥ और प्रजा ब्रज आनि बसाऊं । अपने जियकी खुटक मिटाऊं ॥ तिनपर क्रोध कहा मैं पाऊं । रंगभूमि गजचरण रुँदाऊं ॥ मेरी समसरिको वह नाहीं । यह सुनिकै नारद मुसकाहीं ॥ सत्य वचन नृप कहत पुकारे । अब जाने उनि तौ तुम मारे ॥ यह कहि मुनि वैकुंठ सिधारे । त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे ॥ कंस परचो मन इहै विचारा । राम कृष्ण वध इहै खँबारा ॥ तनुज हृदय हरि इहै उपायो । नारद कही सुनत जिय आयो ॥ अब मारौं नहिं गहरु लगाऊं । मथुरा जहां तहां बल छाऊं ॥ धकधकात जिय बहुरि सँभारे । क्यौं मारौं सो बुद्धि विचारे ॥ सूरज प्रभु अविगत अविनाशी । कंसकाल यह बुद्धि प्रकाशी ॥ ५९ ॥

राग कान्हरो ॥ अहो नृप द्वै अरि प्रगट भए । वसे नंदगृह कोकुल थानक दियो सुदिन नगए ॥ तुमहूँको दुख बहुत जनमको रथ मारग आरोए । तादिनते शिशु सप्त देवकी तेरेही कर सोए ॥ जो परि राजकाज सुख चाहै वेगि बोलाइ न लीजै । हारि जीति दोउनकी विधि यह जैसे होइ सो कीजै ॥ ऐसी कहि वैकुंठ सिधारे कष्टनिशा-विकराय । सूर श्याम कृतकी वे इच्छा मुनि मन इहै उपाय ॥ ६० ॥

राग सोरठ ॥ नृपति मन इहै विचार परो । क्यों मारौं दोउ नंद ढोटौना ऐसी अगनि अरो ॥ कबहुंक कहत आपु उठि धावौं यहै विचार करो । सात दिवसमें वधी पूतना यह गुनि मनहिं डरो ॥ पुनि साहस जियजिय करि गर्वो ताको काल सरो । सूर श्याम बलराम हृदयते नेक नहीं बिसरो ॥ ६१ ॥

राग सारंग ॥ मथुराके निकट चरतिहैं गाई । दुष्टकंस भय करत मनहिमन ज्योंज्यों सुनै कृष्ण प्रभुताई ॥ शीश धुनै नृप रिसन मनैमन बहुत उपाइ करै । घर बैठेहि दशन अधरन धरि चंपै श्वास भरै ॥ जानो असुर बाढिवो गोकुल ज्यों जन दीप पतंग परै । समुझै वचन कहे जे देवी अरु पहिले आकास परै ॥ नारदगिरा सम्हारी पुनिपुनि शिर धुनि आपु सरै । कालरूप देवकी नंदन प्रकट भयो वसुधाके माहीं । कासों कहौं सूर अंतरकी सुफलकसुतको वचन कही ॥ ६२ ॥

राग सोरठ ॥ महर ढोटौना शालिरहे । जन्महिते अपडाव करत हैं गुणि गुणि हृदय कहै ॥ दनुजसुता पहिले संहारी पय पीवत दिन सात । गयो प्रतिज्ञाकरि कागासुर आइ गिरचो मुख छात ॥ तृणा शकट छिनमें संहारे केशी हेतो प्रचारि । जे जे गए बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे मारि ॥ ज्यों त्यों करि इन दुहुंन संहारौं बात नहीं कछु और । सूर नृपति अति सोच परो जिय यहै करत मन दौर ॥ ६३ ॥

राग रामकली ॥ नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं । श्याम राम अतिसुन्दर कहियत देखन काज मँगाऊं ॥ जैहै कौन प्रेम करि ल्यावै भेद न जानै कोइ । महर महरिसों हित करि ल्यावै महाचतुर जो होइ ॥ इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज । सूर चलौ मन सोच बढायो कौन है ऐसो काज ॥ ६४ ॥

राग धनाश्री ॥ अति आतुर नृप मोहिं बोलायो । कौन काज ऐसो अटक्यो है मनमन सोच बढायो ॥ आतुर जाइ पंवरि भयो ठाढो कहो पंवरिआ जाइ । सुनत बुलाइ महलई लीनो सुफलकसुत गयो धाइ कछु डर कछु जिय धीरज धारै गयो नृपतिके पास । सूर सोच मुख देखि डेरानो ऊरध लेत उसांस ॥ ६५ ॥

राग मारू ॥ सोच मुख देखि अक्रूर भरमे । माथ कर नाय करजोरि दोऊ रहे बोलि लीन्हों निकट वचन नरमे ॥ आपुही कंस तहं दूसरो कोउ नही त्रास अक्रूर जिय कहा कैहै । नृपति जिय सोच जान्यो हृदय आपने कहत कछु नहीं धौं प्राण लैहै ॥ निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भाषि नारद सवारैं । सूर सुत नंदके हृदय शालत सदा मन्त्र यह उनहिं अब बनै मारैं ॥ ६६ ॥

सुनो अक्रूरयह बात सांचीकरौ आजुमोहिं भोरते चेतनाहीं । श्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं काहि पठवहुं जाइ तिनहि पाहीं ॥ प्रीति करि नंदसों सहज बातैं कहै तुरत लै आइ दुहुं नृपति बोलै । देखिबेकी साध बहुत सुनि गुण बिपुल अतिहि सुन्दर सुने दोउ अमोलै ॥ कमल जबते उरग पीठि ल्याए सुने वहै बकशीश अब उनहिं दैहैं । सूर प्रभु श्याम बलरामको डर नहीं वचन इनके सुनत हरषपैहैं ॥ ६७ ॥

राग सोरठ ॥ यह वाणी कहि कंस सुनाइ । तब अक्रूर हिए भयो धीरज डर डारचो बिसराइ ॥ मनमन कहत कहा चित बैठी सुनि सुनि वैसी बानी । अपनो काल आपुही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी ॥ हरषि वचन अक्रूर कहे तब तुरत काज यह कीजे । सूर जाहि आयसु करि पाऊं मोरपंठे तेहि दीजे ॥ ६८ ॥

राग बिलावल ॥ तब अक्रूर कहत नृपआगे धन्यधन्य नारदमुनि ज्ञानी । बडे शत्रु ब्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चित आनी ॥ महाराज तुमसरि को ऐसो जाते जगत यह चलत कहानी । अब नाहिं बचै क्रोध नृप कीन्हो जैहै छनकि तवा ज्यों पानी ॥ यह सुनि हर्ष भयो गर्वानो जबहि कही अक्रूरसयानी । कालि बुलाइ सूर दोउ मारौं बारबार यह भाषत बानी ॥ ६९ ॥

ईहै मन्त्र अक्रूरसों नृप रैनि बिचारी । प्रातनंदसुत मारिहौं यह कह्यो प्रचारी ॥ करि विचार युग यामलौं मंदिरहि पधारे । कह्यो जाहु अक्रूरसों भए आलस भारे ॥ तुरत जाइ पलका परचो पलकनि झपकानो । श्याम राम स्वपने खडे तहां देखि डरानो ॥ अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अति झझक्यो ॥ जागिपरचो तहँ कोउ नहीं जियही जिय सुसक्यो ॥ चौकि परचो संग नारिके रानी सब जागीं । उठीं सबै अकुलायकै तब बूझन लागीं ॥ महाराज झझके कहा अपने कह शंके । सूर अतिहि व्याकुल भए घरघर उरदंके ॥ ७० ॥

कंसस्वप्नभ्रमः ॥ महाराज क्यों आजुही स्वप्न झझकाने । पौढे जबहीं आनिकै देखे बिलखाने ॥ कहा सोच ऐसो परचो ऐभे भूमीको । काकी सुधि मनमें रही कहिये अपजीको ॥ रानी सब व्याकुल भईं कछु भेद न पावैं । तब आपुन सहजहि कह्यो वह नहीं जनावैं ॥ सावधान करि पौरिआ प्रतिहार जगायो । सूर त्रास बल श्यामके नहिं पलक लगायो ॥ ७१ ॥

नंदस्वप्नभ्रमः ॥ राग बिलावल ॥ उतनंदहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने । बल मोहन कोउ लै गयो सुनिकै बिलखाने ॥ ग्वाल बाल रोवत कहैं हरि तौ कहुँ नाहीं । संगहिसंग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं ॥ दूत एक संग लै गयो बलराम कन्हाई । कहा ठगौरीसी करी मोहनी लगाई ॥ वाहीके दोउ ह्वैगये हम देखत ठाढे । सूरज प्रभु वै निठुरह्वै अतिही गएगाढे ॥ ७२ ॥

राग सोरठ ॥ व्याकुल नंद सुनत हैं बानी । धरणी मुरछिपरे अति व्याकुल विवश यशोदा रानी ॥ व्याकुल गोप ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल सखा श्याम बलके जे व्याकुल अति जियभारी ॥ धरणी परत उठत पुनि धावत इहि अंतर नँद जागे । धकधकात उर नयन स्त्रवंत जल सुत अंग परसन लागे ॥ सुसुकत सुनि यशुमति अतुराई कहा महर भ्रम पायो । सूर नंद घरनीके आगे यह भ्रम नहीं सुनायो ॥ ७३ ॥

कंस कथावदत राम कल्याण ॥ एक याम नृपको निशि युगवत भई भारी । आपुनहूं जाग्यो संग जागी सब नारी ॥ कबहुं उठत बैठत पुनि कबहुं सेज सोवै । कबहुं अजिर

ठाढे ह्वै ऐसे निशि खोवैं ॥ वारवार जोतिकसों घरी बूझिआवै । एक जाइ पहुँचै नहिं और इक पठावै ॥ जोतिक जिय त्रास परचो कहा प्रात करिहै । सूर क्रोध भरचो नृपति काके शिर परिहै ॥ ७४ ॥

व्याकुल टेरै निकट बूझै घरी वाकी । एक एक छिन याम याम ऐसी गति ताकी ॥ को जैहै ब्रजको मन करै केहि पठाऊं जासों कहि नंदसुवन आजुही मँगाऊं ॥ अब नहिं राखौं उठाइ वैरी नहिं नान्हों । मारौं गजपै रुँदाइ मनहि यह अनुमान्हो ॥ पठऊँ अक्रूरहिको ऐसो नहिं कोऊ। सूर जाइ गोकुलते ल्यावै ढिग दोऊ ॥ ७५ ॥

राग बिलावल ॥ अरुणोदय उठि प्रातही अक्रूर बोलाये । आप कह्यो प्रतिहारसों इकसनि शत धाये ॥ सोवत जाइ जगायकै चलिए नृप पासा । उहै मन्त्र मन जानिकै उठि चले उदासा ॥ नृपति द्वारही पै खरो देखत शिर नायो । कहि खवासको सैनदै शिरपावँ मँगायो ॥ अपने कर करि कै दियो सुफलकसुत लीन्हों । लै आवहु सुत नंदके यह आयसु दीन्हों ॥ सुख अक्रूर हर्षित भयो हृदय बिलखानो । असुर त्रास अति जिय परचो कह कहै सयानो ॥ तुरतहि रथ पलनाइकै अक्रूरहि दीन्हों । आयसु शिरपर मानिकै आतुर ह्वै लीन्हों ॥ बिलम करौ जिनि नेकहू अबहीं ब्रज जाहू । सूरकाज करि आवहू जिनि रैनि बसाहू ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ कंस नृपति अक्रूर बोलायो । बैठि एकांत मंत्र दृढ कीन्हों राम कृष्ण दोउ बंधु मँगायो ॥ कहूँ मल्ल कहुँ गज दै राखे कहूं धनुष कहुँ वीर। नंदमहरके बालक मेरे कर्षत रहत शरीर ॥ उनहिं बुलाय बीचही मारौं नगर न आवन पावैं । सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढावैं ॥ ७७ ॥

राग कल्याण ॥ तुम बिन मेरे हितू न कोऊ । सुन अक्रूर तुरत नृप भाषत नंदमहरसुत ल्यावहु दोऊ ॥ सुनि रुचि वचन रोम हरषित गात प्रेमपुलकि मुख कछू न बोल्यो। यह आयसु पूरव सुकृतवश सो काहूपै जाहि न तोल्यो ॥ मौन देखि परिहँसि नृप भीनो मनहु सिंह गो आय तुलानो। वहिक्रम बिनु द्वै सुत अहीरके रे कातर कत मन शंकानो ॥ आयसु पाइ सुष्ठ रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धृत जोह्यो । सूर श्यामकी मिलनि सुरति करि मनु निरधन धन पाय विमोह्यो ॥ ७८ ॥

अक्रूर वचन कंससों राग बिलावल ॥ सुनहु देव इकबात जनाऊं । आयसु भयो तुरत लै आवहु ताते फिरिहि सुनाऊं ॥ बल मोहन बन जात प्रातही जो उनको नहिं पाऊं । रैहौं आजु नंदगृह वसिकै कालि प्रात लै जाऊं ॥ यह कहि चल्यो नृपतिहू मान्यो सुफलकसुत रथ हांक्यो ॥ सूरदास प्रभु ध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो ॥ ७९ ॥

अक्रूर गोकुल गमन ॥ राग टोडी ॥ सुफलकसुत मन परचो बिचार। कंस निवंश होय हत्यार ॥ डगर मांझ रथ कीन्हों ठाढो। सोच परचो मनमन अति गाढो॥ मंत्र कियो निशि मेरे साथ । मोहिं लेन पठयो ब्रज नाथ गजमुष्टिक चाणूर निहारचो। व्याकुल नयन नीर दोउ ढारचो ॥ अति बालक बलराम कन्हाई । कहा करौं नहिं कछू वसाई ।

कैसे आनि देउँ मैं जाई । मोदेखत मारे दोउ भाई ॥ मारे मोहिं बंदि लै बोलै । आगेको रथ नेक न डोलै ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी । सुफलकसुत मन पूरण कामी ॥ ८० ॥

राग कल्याण ॥ सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हों अविनाशी । हरन करन समरथ वै सब घटके वासी ॥ धन्य धन्य कंसहि कहि मोहिं जिन पठायो । मेरो करि काज मीच आपुको बोलायो ॥ यह गुणि रथ हांकि दियो नगर परचो पाछे । कछु सकुचत कछु हरषत चल्यो स्वांग काछे ॥ बहुरि सोच परचो दरश दक्षिण मृगमाला । हरष्यो अक्रूर सूर मिलिहैं गोपाला ॥ ८१ ॥

अक्रूर शकुन परीक्षा ॥ राग टोडी ॥ दक्षिणदरश देखि मृगमाला । अति आनंद भयो तेहि काला ॥ बहु दिनके मेटौं जंजाला । यहि बन मिलिहैं मोहिं गोपाला ॥ श्याम जलद तनु अंग रसाला । ता दरशनते होउँ निहाला ॥ बहुदिनके मेटौं जंजाला । मुख शशि नैन चकोर विहाला ॥ तनु त्रिभंग सुंदर नँदलाला । विविध सुमन हृदये शुभमाला ॥ सारसहूते नैन विशाला । निहचै भयो कंसको काला ॥ सूर प्रभु त्रिभुवन प्रतिपाला ॥ ८२ ॥

राग आसावरी ॥ दहिने देख मृगनकी मालहि । मनौ इन शकुन अबहिं यहि बन इन भुजभरि भेंटौंगो गोपालहि ॥ निरखि तनुत्रिभंग पुलक सकलअंग अंकुर धरनि जिमिपाय पावस कालहि । परिहौं पाँयन जाय भेंटिहौं अंक मलाइ मूलते जमी ज्यों वेली चढति तमालहि ॥ परसिपरमानंद सींचिकै कामनाकंद करिहैं प्रगट प्रीति प्रेम प्रवालहि ॥ वचनरचनहास सुमन सुख निवासकरहि फलिहै फल अमोघ रसालहि । स्फुरित शुभ सुबाहु लोचन मन उछाहु फूलिकै सुकृतफल फली तेहि कालहि ॥ निगम कहतनेति शिव न सकत चेति सूर हृदयै लगाइ लैहौं ता दयालहि ॥ ८३ ॥

राग कान्हरो ॥ आजु वै चरण देखिहौं जाय । जे पदकमल प्रिया श्री उरसे नेक न सकै भुलाइ ॥ जे पदकमल सकल मुनि दुर्लभ मैं देखौं सतिभाव । जे पदकमल पितामह ध्यावत गावत नारद जाव ॥ जे पदकमल सुरसरी परसे तिहूँ भुवन यश छाव । सूर श्याम पदकमल परसिहौं मन अति बढचो उराव ॥ ८४ ॥

आजु जाइ देखिहौं वै चरण । शीतल सुभग सकलसुख दाता दुसहदवन दुखहरण ॥ अंकुशकुलिश कमल ध्वज चिह्नित अरुण कंजके रंग । गउ चारत बन जाइ पाइहौं गोपसखनके संग ॥ जाको ध्यान धरत मुनि नारद शिव विरंचि अरु ईश । तेई चरण प्रगट करि परसौं इन कर अपने शीश ॥ देखि स्वरूप रहि न सकिहौं रथते धै हौं धरधाइ । सूरदास प्रभु उभय भुजाधरि हँसि भेटिहैं उठाइ ॥ ८५ ॥

राग नट ॥ जब शिर चरण धरिहौं जाइ । कृपा करि मोहिं टेकिलै हैं करन हृदय लगाइ ॥ अंग पुलकित वचन गदगद मनहिं मन सुख पाइ । प्रेमघट उच्छलित ह्वै हैं नैन अंशु बहाइ ॥ कुशल बूझत कहि न सकिहौं बार बार सुनाइ । सूर प्रभुगुण ध्यान अटक्यो गयो पंथ भुलाइ ॥ ८६ ॥

राग बिलावल ॥ मथुराते गोकुल नाहिं पहुंचे सुफलकसुतको सांझ भई । हरि अनुराग देहसुधि बिसरी रथ वाहनकी सुरति गई ॥ कहां जात किनमोहिं पठायो कोहौं मैं यहि सोच परचो । दशहूं दिशा श्याम परिपूरण हृदय हरष आनंद भरचो ॥ हरि अंतर्यामी

यह जानी भक्तवछल बानो जिनको । सूर मिले जो भाव भक्तके गहर नहीं कीन्हों तिनको ॥ ८७ ॥

राग कल्याण ॥ वृंदावन ग्वालन सँग गैयन हरि चारैं । अपने जनहेत काज ब्रजको पगधारै ॥ यमुना करि पार गाय श्याम देत हेरी । हलधर सँग सखा लए सुरभी गण घेरी ॥ धेनु दुहुन सखन कह्यो आपु दुहन लागे । वृंदाबन गोकुल बिच यमुनाके आगे ॥ भक्त हेतु श्रीगोपाल यह सुख उपजायो । सूरज प्रभुको दरशन सुफलक सुत पायो ॥ ८८ ॥

राग कल्याण ॥ सुफलक सुत हरि दरशन पायो । रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल भयो उहै मन भायो ॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त लगायो । पुलक अंग लोचन जल धारा श्रीगृह शिर परसायो । कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि लियो भक्त उर लाइ । सूरदास यह सुख सो जानै कहौं कहा मैं गाइ ॥ ८९ ॥

राग गुंडमलार ॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो । मिले तेहि भाव जो भाव चितवनि चित्त भक्त वत्सल नाम तौ कहायो ॥ कुशल बूझत प्रसन वचन अमृत रसन श्रवण सुनि पुलक अंग अंग कीन्हों । चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अब दलौं यह ज्वाब दीन्हों ॥ भेदही भेद सब दई वाणी कहि तुरत बोले हेतु इहै वाके । सूर सँग श्याम बलराम अक्रूर सह निपट अति प्रेमके पंथ थाके ॥ ९० ॥

राग बिलावल ॥ श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमें बोलाये । अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाये ॥ सँग सखा यह सुनतही चकृत मन कीन्हों । कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरि लीन्हों ॥ श्याम सखन मुख हेरिकै तब करी सयानी । कालि चलौं नृप देखिए शंका जिय आनी ॥ हर्ष भए हरि यह कहे मनमन दुख भारी । सूर सँग अक्रूरके हरि ब्रज पगधारी ॥ ९१ ॥

राग रामकली ॥ अति कोमल बलराम कन्हाई ॥ दुहुँनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमन-हुते हरुवाई ॥ ग्वाल सँग रथ लीन्हें आए पहुँचे ब्रजकी खोरी । देखत गोकुल लोग जहां तहँ नंद उठे सुनि शोरी ॥ निशि सपनेके तृषित भए अति सुन्यो कंसको दूत । सूर नारि नर देखन धाए घरघर शोर अकूत ॥ ९२ ॥

राग गुंडमलार ॥ कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाए । गए आगे लेन नंद उपनंद मिलि श्याम बलराम उन हृदय लाए ॥ उतरि सादर मिल्यो देखि हरप्यो हियो सोच मन यह भयो कहां आयो । राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनकौ नृप पठायो । कुशल तेहि बूझि लै गए ब्रज निजधाम श्याम बलराम मिलि गए वाको ॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको ॥ कियो अक्रूर भोजन दुहुँन सँग लै नर नारि ब्रजलोग सबै देखै । मनो आए सँग देखि ऐसे रंग मनहिं मन परस्पर करत मेषै ॥ सारि जेवनार अचवन कै भए शुद्ध दियो तंमोर नँद हर्षि आगे । सेज बैठारि अक्रूरसों जोरि कर कृपा करिकै तब कहन लागे ॥ श्याम बलरामको कंस बोले हेतसों नँद लै सुतन हम पास आवैं । सूर प्रभु दरशकी साध अतिही करत आजुही कह्यो जिनि गहरु लावैं ॥ ९३ ॥

राग कान्हरो ॥ सुन्यो ब्रज लोग कहत यह बात । चकृत भए नारि नर ठाढे पांच न आवै सात ॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनहीं मन अकुलात । दै दै सैन श्याम बलरामहिं सबै बुलावत जात ॥ परब्रह्म अविगत अविनाशी माया रहित अतीत । मनो नहीं पहिचानि कहूँकी करत सबै मन भीत । बोलत नहीं नेक चितवत नहिं सुफलक सुतसों पागे । सूर हमहिं नृप हितकरि बोले इहै कहत ता आगे ॥ ९४ ॥

राग बिहागरो ॥ व्याकुल भए ब्रजके लोग । श्याम मन नहिं नेक आनत ब्रह्म पूरण योग ॥ कौन माता पिता को है कौन पतिको नारि । हँसत दोउ अक्रूरके सँग नवल नेह बिसारि ॥ कोउ कहति यह कहां आयो क्रूर याको नाम । सूर प्रभु लै प्रात जैहै और सँग बलराम ॥ ९५ ॥

गोपिका विरह अवस्था वर्णन ॥ चलन चलन श्याम कहत कोउ लेन आयो । नंदभवन भनक सुनि कंस कहि पठायो । ब्रजकि नारि गृह बिसारि व्याकुल उठि धाई । समाचार बूझनको आतुर ह्वै आई ॥ प्रीति जानि हेतु मानि बिलखि वदन ठाढी । मानहु वै अति-विचित्र चित्र लिखित काढी ॥ ऐसी गति ठौर ठौर कहत न बनि आवै । सूर श्याम बिछुरे दुख विरह काहि भावै ॥ ९६ ॥

राग कान्हरो ॥ चलत जानि चितवत ब्रज युवती मानहु लिखी चितेरे । जहां तहां यक टक मग जोवत फिरत न लोचन कोरे ॥ बिसरि गई गति भांति देहकी सुनत न श्रवणन टेरे ॥ मिलि जु गये मनोपय पानी है निबरत नहीं निबेरे ॥ लागे सँग मतंग मत्त ज्या धिरत न कैसेहु घेरे । सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दै नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ सब मुरझानी री चलिबेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वै रह्यो मूद चनक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक । सूरदास स्वामीके बिछुरत घट नहिं रैहैं प्राण तनक ॥ ९८ ॥

राग रामकली ॥ अनलते विरह अग्नि अति ताती । माधो चलन कहत मधुवनको सुनै तपै अति छाती ॥ न्याइहि नागरि नारि विरह वश जरत दिया ज्यों बाती । जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीर नयन भरिभरि सब व्याकुलता मद माती । सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रंगराती ॥ ९९ ॥

राग आसावरी ॥ श्याम गए सखि प्राण रहैंगे । अरस परस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥ इंदु वदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे । वासर निशि कहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे ॥ एक कहौं तुम आगे वाणी श्याम नजाहिं रहैंगे । सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुरा कहा लहैंगे ॥ २५०० ॥

राग मलार ॥ हरि मोसों गौनकी कथा कही । मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचि रही ॥ सुनि सखि सत्य भावकी बातैं विरह वेलि उलही ॥ करवत चिह्न कहे हरि हमको ते अब होत सही ॥ आजु सखी सपने मैं देख्यो सागर पालि ढही । सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जल ज्यों जाति बही ॥ १ ॥

राग मारू ॥ बहुत दुख पैयतहै यहि बात । तुम जु सुनत हौं माधो मधुबन सुफलक सुत सँग जात ॥ मनसिज व्यथा दहति दावानल उपजी है या गात ।

सुधौं कहौ तब कैसे जीहौं निज चलिहौं उठि प्रात ॥ जो पै यही कियो चाहत है मीचु विरहशरघात । सूरश्याम तौतबकत राखी गिरिकर लै दिनसात ॥२॥

अक्रूरवचन राग रामकली ॥ देख अक्रूर नरनारि बिलख्यो । धनुभंजन यज्ञहेत बोलइ नाहिं और डरनहिं सबन काहे संतोख्यो ॥ महरिव्याकुल दौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंदसंग जाहुलैकै । राजको अंश लिखिलेउ दूनो देउँ मैं कहा करौं सुत दुहुंनि दैकै ॥ कहति ब्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननको काज मथुरा कहा है । सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भयो धनुष देखन कहत कपटि महाहै ॥ ३ ॥

यशोदाबिनय अक्रूरप्रति राग सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे । इतको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊजन बारे ॥ यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयमान जतन करि पारे । ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरुजन विप्रौ न जुहारे ॥ मथुरा असुरसमूह वसत हैं करकृपाण योधा हथियारे । सूरदास स्वामी एलरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ॥ ४ ॥

ब्रजवासिनके सरबस श्याम । रे अक्रूरक्रूर बडवारे जीकोजीमोहन बलराम ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि जे कछु राजअंशके दाम । और महर ले संगसिधारैं नगर कहा लरिकनको काम । संतत साधु परम उपकारी सुनियत बडो तुम्हारो नाम ॥ ५ ॥

यशोदा वचन सखीप्रति ॥ राग मलार ॥ सखी री हौं गोपालहि लागी । कैसे जियैं वदनबिन देखे अनुदिन खिन अनुरागी ॥ गोकुल कान्ह कमल दल लोचन हारि सबहिनके प्राण । कौन न्याव अक्रूर कहतहै कहै मथुरा लै जान ॥ ६ ॥

तुम अक्रूर बडेके ढोटा अति कुलीन मतिधीर । बैठत सभा बडे राजनके जानतहौ परपीर ॥ लीजै लागु यहांते अपनो जो कछु राजको अंश । नगर बोलि ग्वालनके लरिका कहा करैगो कंस ॥ मेरे तौ रामै धन माईं माधोई सब अंग । बहुरि सूरहौंकापै मांगौ पैठि पराए संग ॥ ७ ॥

राग रामकली ॥ मेरो माई निधनीको धन माधौ । बारंबार निरखि सुख मानत तजत नहीं पल आधौ ॥ छिनछिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगट ह्वै लाधौ । निशि दिन चंद्र चकोरकी छबि जनु मिटै न दरशकी साधौ॥करिहै कहा अक्रूर हमारो दैहै प्राण अगाधौ । सूर श्याम घन हौं नहिं पठऊं अबहिं कंस किन बांधौ ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ मनहु प्रीति अति भई पातरी । अनुज सहित चले राम हमारे कमलनैन देखौ मिलिन जात री ॥ अरस परस कछु समुझत नाहीं या ब्रज पोच भलौकी बात री । कंचन काँच कपूर कपट खरी हीरा सम कैसे पोति बिकात री ॥ वे दोउ हंस मानसरवरके छीलरे क्षुद्र मलिन कैसे न्हात री । सूर श्याम मुक्ताफल भोगी को रति करत ज्वारिकन खात री ॥ ९ ॥

राग सोरठ ॥ नहिं कोई श्यामहिं राखै जाइ । सुफलकसुत वैरी भयो मोको कहति यशोदा माइ ॥ मदनगुपाल बिना घर आंगन गोकुल काहि सुहाइ । गोपी रहीं ठगीसी ठाढी कहा ठगोरी लाइ ॥ सुंदर श्याम राम लोचन भरि बिनु देखे दोउ भाइ । सूर तिनहिं लै चले मधुपुरी हिरदय शूल बढाइ ॥ १० ॥

राग सोरठ ॥ यशोदा बारबार यों भाषैं । है कोउ ब्रजमें हितू हमारी चालत गोपालहि राखै॥ कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलकसुत मेरे प्राण हतनको कानरूप ह्वै आयो ॥ वरु ए गौधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलौ । इतनेही सुख कमलनैन मेरी अँखियन आगे खेलौ ॥ वासर वदन विलोकतु जीवों निशि निज अंकम लाऊं ॥ तेहि विछुरत जो जिवों कर्मवश तौ हँसि काहि बोलाऊं ॥ कमलनैन गुण टेरत टेरत अधर वदन कुम्हिलानी । सूर कहांलगि प्रगट जनाऊं दुखितनंदकी रानी ॥११॥

यशोदावचन श्रीकृष्णप्रति राग सोरठ ॥ गोपालराइ केहि अवलंबौ प्राण । निष्ठुर वचन कुलिशसे कहत मधुपुरी जान ॥ क्रूर नाम गति क्रूर क्रूरमति काहेको गोकुल आयो। कुटिल कंस नृप वैर जानिकै हरिको लेन पठायो ॥ जिहि मुख तात कहत ब्रजपतिसों मोहिं कहत हे माइ । तिहि मुख चलन सुनत जीवतिहौं विधिसों कहा बसाइ ॥ को कर कमल मथानी धरिहै को माखन अरि खैहै । वर्षत मेघ बहुरि ब्रजऊपर को गिरिवर कर लैहै॥हौं बलि बलि इन चरणकमलकी इहई रहौ कन्हाई । सूरदास अवलोकि यशोदा धरणी परी मुरझाई ॥ १२ ॥

मोहन इतनो मोहिं चित धरिये । जननी दुखित जानिकै कबहूं मथुरागमन न करिये यह अक्रूर क्रूरकृत रचिकै तुमहिं लेनहै आयो । तिरछे भए कर्म कृत पहिले विधि यह ठाट बनायो ॥ बारबार जननी कहि मोसों माखन माँगत जानै । सूर तिनहिं लैबेको आए करिहौ सूनो भौन ॥ १३ ॥

राग सूही ॥ सुफलकसुतके संगते हरि होत न न्यारे ॥ बारबार जननी कहै मोहिं न तज्यो दुलारे ॥ कहा ठगोरी यहि करी मेरे बालक मोह्यो । हाहा कहिकहि मरतिहौं मोतन नहिं जोह्यो ॥ नंद कह्यो परबोधिकै सँग लै जैहौं । धनुषयज्ञ देखराइकै तुरतहिं लैएहौं ॥ घर घर गोपनसों कह्यो करभार जुरावहु । सूर नृपतिके द्वारको उठि प्रात चलावहु ॥१४॥

नंदवचन यशोदाप्रति ॥ राग मलार ॥ भरोसो कान्हकोहै मोहिं । सुन यशोदा कंसभयते तू जनि व्याकुल होहि ॥ पहिले पूतना कपटकरि आइ स्तननि विष पोहि । वैसी ज्यों प्रबलदुनिनके बालक मारि देखावत तोहि ॥ अघबक धेनु तृणावर्त केशीको बल देख्यो जोहि । सात दिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो द्रपुछोहि ॥ सुनिसुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि । सूरदासप्रभुजी कहिए कछु सो आवै सब सोहि ॥ १५ ॥

राग बिहागरो ॥ यशुमति अतिही भई बेहाल । सुफलकसुत यह तुमहि बूझि ए हरतहौ मेरो बाल ॥ ए दोउ भैया ब्रजके जीवन कहति रोहिणी रोइ । धरणीगिरति दुरति अति व्याकुल कहि राखत नाहिं कोइ ॥ निठुर भए जबते यह आयो घरहू आवत नाहिं । सूर कहा नृपपास तुम्हारो हम तुमबिनु मरिजाहिं ॥ १६ ॥

राग सोरठ ॥ कन्हैया मेरी छोह बिसारी । क्यों बलराम कहत तू नाहीं मैं तुम्हरी महतारी ॥ तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी । ज्यों सावनकी बेलि प्रफुलितै फूलतिहै दिनचारी ॥ हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहूँ तुमहिते जात । सूर हृदयधीरज अबधारौ काहेको बिलखात ॥ १७ ॥

राग सोरठ ॥ यह सुनि गिरी धरणि झुकि माता । कहा अक्रूर ठगोरी लाई लिए जात दोउ भ्राता ॥ विरध समयकी हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं । कछू नफा तुमको है यामें सो शोधौ मनमाहीं ॥ नाम सुनत अक्रूर तुम्हारो क्रूर भएहौ आई । सूर नंदघरनी अति व्याकुल ऐसेहि रैनिबिहाई ॥ १८ ॥

गोपिकावचन परस्पर रामकली ॥ सुनेहैं श्याममधुपुरी जात । सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात ॥ शंकित वचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात । नींद न परै घटै नहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात । सूर श्याम सँगते बिछुरतहैं कब ऐहैं कुशलात ॥ १९ ॥

राग सारंग ॥ सुने नँदलाल मधुपुरी जात । सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात । सकृत वचन अनागत सखि कोऊ जु गयो अधरात । रजनी घटै न सूर प्रकाशै कब उठि देखौं प्रात ॥ उर धकधकी तबहिंते लागी अगम जनायो सीरे गात । सूरदास स्वामीके चलिबे ज्यों यंत्रीबिनु यंत्र सकात ॥ २० ॥

प्रभात कथावदत ॥ सखावचन ॥ राग भैरव ॥ भोर भयो ब्रजलोगनको । ग्वाल सखा सखि व्याकुल सुनिकै श्याम चलतहैं मधुवनको ॥ सुफलकसुत स्यंदन पलनावत देखैं तहां बलमोहनको । यह सुनि घरघरते उठि धाईं नंदसुवनमुख जोवनको ॥ रोरि परी गोकुलमें जहँतहँ गाइ फिरत पय दोहनको । सूर वरस कर भार सजावत महरचलत हरिगोहनको ॥ २१ ॥

राग रामकली ॥ चलनको कहियतहै री आजु । अबहीं गई श्रवण सुनि आई करत गमनको साजु ॥ कोउ एककंस कपट करि पठयो कछु सँदेश दै हाथ । सो लै चल्यो हमारी जीवन निधिको अपने साथ ॥ अब यहि शूलनजाति समुझि सहि रही हिये करि लाज । धीरज अवधि आशदै जननिहिं जात चले व्रजराज ॥ करिये विनती कमलनयनसों सूरसमौ पहिचान । कौने कर्मभयो दुखदारुन रहतन मेरो कान ॥ २२ ॥

चलत हरिधिग जु रहत ए प्राण । कहां वह सुख अब सहौं दुसहदुख उर करि कुलिशसमान ॥ कहां वह कंठश्यामसुंदर भुज करति अधररस पान । अचवत नयनचकोर सुधाविधु देखहु मुखछबि आन ॥ जाको जग उपहास कियो तब छाँड्यो सब अभिमान । सूरसुनिधि हमते है बिछुरत कठिन है करमनिदान ॥ २३ ॥

राग कल्याण ॥ हौं साँवरेके संग जैहौं । होनी होइ सु होइ उभै हठ यश अपयश काहू न डरै हौं ॥ कहा रिसाइ करैगो कोऊ जो रोकि है प्राण तिहि दैहौं । दैहौं छाँडि राखिहौं यह ब्रत हरिहित बीजु बहुरि को बैहौं ॥ करिहौं सूर अजर अवनीतन मिलि अकास पियभौन समैहौं । बायबीज वापीजलक्रीडा तेज मुकुरमुख सब सुख लैहौं ॥ २४ ॥

यहि अंतर एक सखी आइ हरिके गवनको संदेश वदति ॥ राग कल्याण ॥ श्याम चलन चहत कह्यो सखी एक आई । बलमोहन रथ बैठे सुफलकसुत चढन चहत यह निचकित भई विरह दौ लगाई ॥ धुकिधुकि सब धरणि परीं ज्वालाझर लता गिरी मनो तुरत जलद वरषि सुरतिनीरपरसी । धाई सब नंदद्वार बैठे रथ दोउ कुमार यशुमति लोटति भुवपर निठुररूप दरसी ॥ कौन पिता कौन मात आपु ब्रह्म जगधात राख्यो नाहिं

कछू नात नेकहु मनमाहीं । आतुर अक्रूर चढे रसना हरिनाम रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैननाहीं ॥ २५ ॥

गोपिवचन मोहनप्रति ॥ राग सारंग ॥ विनती एक सुनौ श्रीश्याम । चलन न देत चलौ चाहत मन चलन कहौ सो सुनिए श्याम । तुम सर्वज्ञ सकलघट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम । संतन रहत कहत ढीठो दै करते सब सोवत सुखदाम ॥ बाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लैलै गुणग्राम । सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारे न ग्राम ॥ २६ ॥

राग सारंग ॥ विनु परबहि उपराग आजु हरि तुमहै चलन कह्यो । को जानै उहिराहु रमापति कत ह्वै शोध लह्यो ॥ वैतकिचुनित नीच नैनन मिलि अंजनरूप रह्यो । विरहसंधि बलपाइ मैनअति है तिय वदन गह्यो ॥ दुसह दशन मनो धरत श्रमित अति परस परत न सह्यो । देखो देव अमृत अंतरते ऊपर जात बह्यो ॥ अब यह शशि ऐसो लागत ज्यों बिन माखनहि मह्यो । सूर सकलगुणपति दरशन बिनु सुखछबि अधिक दह्यो ॥ २७ ॥

राग धनाश्री ॥ मिलि किन जाहु बटाऊ नाते । नंद यशोदाके तुम बालक विनती कर-तिहौं ताते ॥ तुम्हारी प्रीति हमारी सेवागनियत नाहिंन काते । रूप देखि तुम कहा भुलाने मीत भए वन याते ॥ तुम बिछुरत घनश्याम मनोहर हम अबला सरघाते । कहा करौं जु सनेह न छूटे रूप ज्योति गई ताते ॥ जब उठि दान माँगते हँसिकै संग गात लपटाते । सूरदास प्रभु कौन प्रबलरिपुबीच परचो धौं जाते ॥ २८ ॥

हरिकी प्रीति उरमांहि करकै । आय क्रूर लैचले श्यामको हित नाहीं कोउ हरकै ॥ कंचनको रथ आगे कीन्हों हरिहि चढाए वरकै । सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चलेउ जरकै ॥ २९ ॥

राग सारंग ॥ सब ब्रजकी शोभा श्याम । हरिके चलत भई हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम ॥ देखियतहौं तुम क्रूर विषमकेसे सुनियतहौं अक्रूरहि नाम । विचरतिहौं न आन गृहगृहको शिशु लायक नृपको कह काम ॥ ३० ॥

यशोदाविलाप ॥ राग बिलावल ॥ गोपालहिं राखहु मधुबन जात । लाजगए कछु काजन सरिहैं बिछुरत नँदके तात ॥ रथ आरूढ होत बलि २ गई होइआयो परभात ॥ सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेमपुलकि सब गात ॥ ३१ ॥

मोहन नेक वदन तनहेरो ॥ राखो मोहिं नातजननीको मदनगुपाललाल मुख फेरो । पाछे चढो बिमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अँधेरो । बिछुरत भेंट देहु ठाढे ह्वै निरखौं घोष जन्मको खेरो ॥ माधो सखा श्याम इन कहिकहि अपने गाइ ग्वाल सब घेरो । गए न प्राण सूर ता औसर नंदजतन करि रहे घनेरो ॥ ॥ ३२ ॥

अथ श्रीकृष्णमथुरागमनहेतु अक्रूरसाथ ॥ राग सोरठ ॥ जबहीं रथ अक्रूर चढे । तब रसना हरिनाम भाषिकै लोचन नीर बढे ॥ महरि पुत्र कहि शोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाई । देखति नारि चित्रसी ठाढी चितए कुँवर कन्हाई ॥ इतनेहिमें सुख दियो सबनको मिलिहैं अवधि बताइ । तनक हँसे मनदै युवतिनको निठुर ठगोरी लाइ ॥ बोलत नहीं रहीं सब ठाढो श्याम ठगी व्रजनारी । सूरतुरत मधुवन पगधारे धरणीके हितकारी ॥ ३३ ॥

राग बिहागरो ॥ चलत हरि फिरि चितये ब्रज पास । इतनेहि धीरज दियो सबनको अवधि गए दै आश । नंदहि कह्यो तुरत तुम आवहु ग्वालसखा लै साथ । माखन मधु मिष्टान्न महर लै दियो अक्रूरके हाथ ॥ आतुर रथ हाँक्यो मधुवनको व्रजजन भए अनाथ सूरदास प्रभु कंसनिकंदन देवन करन सनाथ ॥ ३४ ॥

राग नटी ॥ रहीं जहांसो तहां सब ठाढी । हरिके चलत देखिअत ऐसी मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥ सूखे वदन स्रवत नैननते जलधारा उर बाढी । कंधनि बाँह धरे चितवति द्रुम मनहु वेलि दवडाढी ॥ नीरस करि छाँडी सुफलकसुत जैसे दूध बिन साढी । सूरदास अक्रूर कृपाते सही विपति तनु गाढी ॥ ३५ ॥

राग सारंग ॥ चलतहु फेरि न चितए लाल । रथ पर बैठि दूरते देखे अंबुजनैन विशाल॥ मींडत हाथ सकल गोकुलजन विरहविकल बेहाल । लोचन पूरि रहीं जल महियाँ दृष्टि परी जो काल ॥ सूरदास प्रभु फिरिके चितयो अंबुजनैन रसाल ॥ ३६ ॥

राग बिलावल ॥ बिछुरे श्रीब्रजराज आजु तौ नैननते परतीति गई । उठि नगई हरिसंग तबहिते ह्वै न गई सखि श्याममई ॥ रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछुवौन भई । साँचे क्रूर कुटिल ए लोचन व्यथा मीन छबि छीनि लई ॥ अब काहे जल मोचत सोचत समौगएते शूल नए । सूरदास याहीते जडभये इनपलकनही दगा दए ॥ ३७ ॥

सखीवचन परस्पर ॥ राग धनाश्री ॥ केतिक दूरिगयो रथ माई । नंदनंदनके चलत सखी री तिनको मिलन न पाई ॥ एक दिवस हौं द्वार नन्दके नहीं रहति बिनु आई । आजु विधाता मति मेरी गई भौनकाज बिरमाई ॥ जब हरि ऐसो ख्याल करत है काहुन बात चलाई । ब्रजही वसत विमुख भई हरिसों शूल न उरते जाई ॥ सूरदास प्रभु बिनु ब्रज पल न सोहाई ॥ ३८ ॥

राग मलार ॥ सखी री वह देखौ रथ जात । कमल नैन कांधे पर न्यारो पीत बसन फहरात ॥ लई जांइ जब ओट अटनकी चीर न रहत कृशगात । छत्र पत्र ध्वज कनकदल मनो ऊपर पवन विहात ॥ मधु छुड़ाइ सुफलकसुत लैगए ज्यों माछी भई हीन । सूरदास प्रभुबिनु देखियतहैं सकल बिरह आधीन ॥ ३९ ॥

राग सारंग ॥ पाछे ही चितवत मेरे लोचन आगे परत न पांइ । मन लै चली माधुरी मूरति कहा करौं ब्रजजाइ ॥ पवन न भई पताका अंबर भई न रथके अंग । धूरि न भई चरण लपटाती जाती वहँलौं संग ॥ ठाढी कहा करौ मेरी सजनी जिहि बिधि मिलहिं गोपाल । सूरदास प्रभु पठै मधुपुरी मुरझि परी ब्रजबाल ॥ ४० ॥

राग नट ॥ तब न बिचारी री यह बात । चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढी पछितात ॥ निरखि निरखि मुख रही मौन ह्वै थकित भई पलपात । जब रथ भयो अदृष्ट अगोचर लोचन अति अकुलात । सबै अजान भई वहि औसर धिगहि यशोमति मात । सूरदास स्वामीके बिछुरे कौड़ी भरि न बिकात ॥ ४१ ॥

राग सारंग ॥ अब वै बातैं ईहँ रही । मोहन मुख मुसकाइ चलत कछु काहू नहीं कही ॥ सखी लाजवश समुझि परस्पर सन्मुख सबै सहीं ॥ अब वै सालति हैं उरमहिंया कैसेहु कढति नहीं । त्यों ज्यों सलिल करनको सजनी काहेको फिरति बही । हरि चुंबक जहां मिलहिं सूर प्रभु मो लैजाऊँ तहीं ॥ ४२ ॥

राग नट ॥ मेरी वज्रकी छाती बिदरि नाहिं जाति । हरिहि चलत चितवत मग ठाढी पछिताति ॥ विद्यमान बिरह शूल उरमें जु समाति । आवनकी आश लागि अवधिही पत्याति ॥ प्रेमकथा प्रगट भई शरद रासराति । प्राणनाथ बिछुरे सखि जीवत न लजाति ॥ एकै पै सुरति रही वदन कमल कांति । ज्यों ठग निधिहि हरत की रंजक गुरदै काहू भांति। इमि फिरि मुसकानि सूरमनसागई माति।चितवनि मन मादक भई जागत अकुलाति॥४३॥

राग गौरी ॥ आजु रैनि नहिं नींद परी । जागत गनत गगनके तारे रसना रटत गोविंद हरी ॥ वह चितवति वह रथकी बैठनि जब अक्रूरकी बांह गही। चितवत रही ठगी सी ठाढी कहि न सकी कछु कामदही ॥ इतने मन व्याकुल भई सजनी आरज पंथ हुते बिडरी । सूरदास प्रभु जहां सिधारे कितिक दूरि मथुरा नगरी ॥ ४४ ॥

राग सारंग ॥ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो । भयो कठोर वज्रते भारी रहिकै पापी कहा-कियो ॥ घोरि हलाहल सुन री सजनी औरस तेहि न पियो । मन सुधि गई सँभारति नाहिंन पूरो दांव अक्रूर दियो ॥ कछु न सुहाइ गई सुधि तबते भवनकाजको नेम लियो । निशि दिन रटत सूरके प्रभुबिनु मरिबो तऊ न जात जियो ॥ ४५ ॥

राग अडानो ॥ सुंदरवदन री सुखसदनश्यामको निरखि नैन मन थाक्यो । वारक इन बीथिन ह्वै निकसे मैं दुरि झरोखनि झांक्यों ॥ उन कछु नेक चतुराई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो । वारौं लाज भई मोको वैरनि मैं गँवारि मुखढाक्यो ॥ कछु करिगए तनक चितवनिमें याते रहत प्रेम मद छाक्यो । सूरदास प्रभु सर्बसु लैगए हँसत हँसत रथ हांक्यो ॥ ४६ ॥

राग सारङ्ग ॥ अरी मोहिं भवन भयानक लागै माई श्याम बिना । देखहिं जाइ काहि लोचन भरि नंद महरके अँगना ॥ लै जु गए अक्रूर ताहिको व्रजके प्राणधना । कौन सहाय करै घर अपने मेटै विधिन घना ॥ काहि उठाइ गोद करिलीजै करि करि मन मगना । सूरदास मोहन दरशनबिनु सुख संपतिसपना ॥ ४७ ॥

राग मलार ॥ सब कोउ कहत गोपाल दोहाई । गोरस बेचन गई बबाकी सौं हौं मथुराते आई ॥ जबते कह्यो कंससों मोहन जीवत मृत करि लेखो ॥ जागत सोवत आश देवनकी कृष्ण कला सब देखो ॥ करते ओघ प्रजा लोगै सब नृपकी शंक नमानी । ठकुराई तकियो गिरिधरकी सूरदास जनजानी ॥ ४८ ॥

यशोदा विलाप ॥ राग धनाश्री ॥ है कोइ ऐसी भांति देखावै । किंकिणिशब्द चलत ध्वनि रुनुझुनु ठुमुक २ गृह आवै ॥ कछुक विलापवदनकी शोभा अरुण कोटि गति पावै । कञ्चन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपंख छबि छावै । धूसर धूरि अङ्ग अंगलीने ग्वाल बाल सँगलावै । सूरदास प्रभु कहति यशोदा भाग्य बड़ेते पावै ॥ ४९ ॥

राग सोरठ ॥ मनौंहौं ऐसेही मरिजैहौं । इहि आँगन गोपाललालको कबहुँक कनियां लैहौं ॥ कब वह मुख बहुरौ देखौंगी कब वैसो सचुपैहौं । । कब मोपै माखन माँगैंगे कब रोटी धरि दैहौं ॥ मिलन आश तनु प्राण रहत है दिन दश मारग चैहौं । जो नसूर कान्हा अइ है तौ जाइ यमुन धँसि लैहौं ॥ ५० ॥

अध्याय ॥३९॥ तथा ॥४०॥ अक्रूरदर्शन प्राप्ति हेतु तथा श्रीकृष्णस्तुतिवर्णन ॥ राग गुंडमलार । मनहिं मन अक्रूर सोच भारी । जननि दुःखित करी इनहिं मैं लै चल्यो भई व्याकुल सबै घोषनारी॥ अति हिए बालभोजन नवनीतके जानि तिन्हें लीन्हें जात दनुजपासा। कुवलया मल्ल मुष्टिक चाणूरसे कियो मैं कर्म यह अति उदासा॥फेरि लै जाउँ ब्रत श्याम बलरामको कंसलै मोहि तब जीव मारै । सूर पूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहिं अक्रूर मन यह विचारै ॥ ५१ ॥

इहै सोच अक्रूरपरचो । लिये जात इनको मैं मथुराकंसहि महाडरचो ॥ धिग मोको धिग मेरी करनी तबहीं क्यों न मरचो ॥ मैं देखौं इनको अब हति है अति व्याकुल ठहरचो । यहि अंतरयमुनातट आए कियो अस्नान खरचो । सूरदास प्रभु अंतर्यामी भक्त सँदेह हरचो ॥ ५२ ॥

राग धनाश्री ॥ सुफलकसुत दुख दूरि करचो । यमुनातीर कियो रथ ठाढो आपुहि प्रगट हरचो तिनहिं कह्यो तुम स्नान करौ ह्यां हमहिं कलेऊ देहु । भूँख लगी भोजन करि हैं हम नेम सारि तुम लेहु ॥ तबलौं नंद गोप सब आवैं संग मिले सब जैहौं ॥ सूरदास प्रभु कहत हैं पुनि पुनि तब अतिही सुख पैहौं ॥ ५३ ॥

राग गुंडमलार ॥ सुनत अक्रूर यह बात हरषे । श्याम बलरामको तुरत भोजन दियो आपु अस्नानको नीर परसे ॥ गए कटि नीरलौं नित्यसंकल्प करि करत अस्नान इकभाव देख्यो । जैसोई श्याम बलराम स्यन्दन चढे वहै छवि कुँवर सर मांझ पेख्यो ॥ चकृत भए कबहुँ तीर पुनि जल निरखि घोष अक्रूर जिय भयो भारि । सूर प्रभु चारितमें थकित अतिही भयो तहां दरसे नित स्थल बिहारी ॥ ५४ ॥

राग कान्हरो ॥ कमलपरबज्र धरति उर लाइ । राजति रमा कुंभरस अंतर पति निज थल जलसाइ ॥ वैनतेय संपुट सनकादिक चतुरानन जय विजय सखाइ । औसर बाग विशारद हाहा जित गुण गाइ ॥ कनक दंड सारंग विविध रव कीरति निगम सिद्ध सुर धाइ । तिनके चरण सरोज सूर अब किए गुरु कृपा सहाइ ॥ ५५ ॥

राग धनाश्री ॥ हरष अक्रूर हृदय न माइ । नेम भूल्यो ध्यान श्याम बलरामको हृदय आनंद मुख कहि न जाइ ॥ ब्रह्म पूरण अकल कलाते रहित ए हरता करता समर्थ और नाहीं । कहा बपुरो कंस मिटचो तब मन संस करत है गंस निर्वंश जाहीं ॥ हांकि रथ चढि चल्यो विलम अब कहा प्रभु गयो संदेह अक्रूर जीको । नंद उपनंद सँग ग्वाल बहु-भार लै आइ सदनहि मिले सूर पीको ॥ ५६ ॥

अक्रूरश्रीकृष्ण स्तुति ॥ राग कल्याण ॥ बार बार श्याम राम अक्रूरहि गानैं ॥ अबहीं तुम हरष भए तबहीं मन मारि रहे चले जात रथहि बात बूझत हैं वानैं ॥ कहौ नहीं

सांची सो हमसों जिनि गोप करौ सुनिकै अक्रूर बिमल अस्तुति भानैं । सूरज प्रभु गुण अथाह धन्य धन्य प्रियानाह निगमन अगाध सहसानन नहिं जानैं ॥ ५७ ॥

राग बिलावल ॥ बार बार मोसों कहा बूझत तुमहौ पूरण ब्रह्म गुसाईं ॥ तुम हर्ता तुम कर्ता एकै तुमहौ अखिलभुवनके साईं ॥ कहा मल्ल चाणूरकुवलया अब जिय त्रास नहीं तिननैको । सूरदास प्रभु कंस निपातहु गहरु न कीजै अब वैसनैको ॥ ५८ ॥

राग धनाश्री ॥ बूझत हैं अक्रूर हि श्याम । तरनि किरनि महलनि पर झाईं इहै मधु पुरी नाम ॥ श्रवणन सुनत रहत जाको नित सो दरशन भए नैन । कंचन कोट कँगूरनकी छबि मानहु बैठे मैन ॥ उपवन बन्यो चहूँवा पुरके अतिही मोको भावत । सूर श्याम बल रामहिं पुनि पुनि करपल्लवनि देखावत ॥ ५९ ॥

श्रीकृष्ण वचन अक्रूरप्रति राग कल्याण ॥ बार बार बलरामको मधुपुरी बतावत । छज्जे महलन देखिकै मन हरष बढावत ॥ जन्म थान जिय जानिकै ताते सुख पावत । वन उप-वन छाये सघन रथ चढे जनावत ॥ नगरशोर अकनतसुनत अति रुचि उपजावत । सुनत शब्द घरियारके नृपद्वार बजावत ॥ बरनबरनमंदिर बने लोचन ठहरावत । सूरज प्रभु अक्रूरसों कहि देखि सुनावत ॥ ६० ॥

अक्रूर वचन श्रीकृष्ण प्रति राग कल्याण ॥ श्रीमथुरा ऐसी आजु बनी । देखहु हरि जैसे पति आगम सजति शृंगार धनी ॥ मानहु कोटि कसी कटिकिंकिणि उपवनवसन सुरंग । भूषण भवन विचित्र देखियत शोभित सुंदर अंग ॥ सुनत श्रवण घरियार घोरध्वनि पाँयन नूपुर बाजत । अति संभर अंचल चंचलगति धामन ध्वजा विराजत ॥ ऊँच अटनपर छत्र-नकी छबि शीशनमानो फूली । कनक कलशकुचप्रगट देखियत आनँद कंचुकि भूली ॥ विद्रुमफटिकपची परदा छबि लाल रंध्रकी रेख । मनहु तुम्हारे दरशन कारण भूले नैन निमेष ॥ चित दै अवलोकहु नँदनंदन पुरी परमरुचि रूप । सूरदास प्रभु कंस मारिकै होहु यहांके भूप ॥ ६१ ॥

मथुरा हरषित आजु भई ज्यों युवती पति आवत सुनिकै पुलकित अंग मई ॥ नवसत सजि शृंगार बनि सुंदरि आतुर पंथ निहारति । उडत ध्वजा तनु सुरति बिसारे अंचल नहीं सँभारति ॥ उरजप्रगट महलनपर कलसा लखति पास बनसारी । ऊँचे अटनि छाजकी शोभा शीश उँचाइ निहारी ॥ जालरंध्र इकटक मग जोवति किंकिणि कंचन दुर्ग । बेनी लसति कहौ छबि ऐसी महलन चित्रे उर्ग ॥ बाजत नगर बाजने जहँ तहँ और बजत घरिआर । सूर श्याम बनिता ज्यों चंचल पगनूपुर झनकार ॥ ६२ ॥

राग गुंडमलार ॥ नगरके पास जब श्याम आए । देखि रथ चढे बलराम अरु श्यामको गए अक्रूर तिन लै आए । कंसके दूत जहँ तहाँते देखिकै गए नृप पास आतुर सुनाए । उठचो झझकीरि कर ढाल खड्गहि लिए रंग रण भूमिके महल बैठचो ॥ कुवलया मल्ल मुष्टिक चाणूरसों होहु तुम सजग कहि सबन ऐंठचो । एक पठवत एक कहत है आइकै एकसों कहत धौं कहां आए । सूर प्रभु शहर पैठार पहुँचे आइ धनुषके पास जोधा रखाए ॥ ६३ ॥

पुरनारि श्रीकृष्णशोभा परस्पर वदति ॥ राग धनाश्री॥ मथुरा पुरमें शोर परचो। गजत कंस वंश सब साजे मुखको नीर हरचो ॥ पीरो भयो फेफरी अधरन हिरदय अति हि डरचो। नंदमहरके सुत दोउ सुनिकै नारिन हर्ष भरचो ॥ इंदुवदन नवजलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यो। सूर श्याम देखत पुरनारी उर उर प्रेम भरचो ॥ ६४ ॥

राग रामकली ॥ रथपर देखि हरि बलराम। निरखि कोमल चारु मूरति हृदयमुकुता-दाम ॥ मुकुट कुंडल पीतपट छवि अनुज भ्राता श्याम। रोहिणी सुत एक कुंडल गौरतनु सुखधाम ॥ जननि कैसे धरचो धीरज कहति सब पुरवाम । बोलि पठये कंस इनको धौं कहा काम ॥ जोरि कर विधिसों मनावति लै अशीशै नाम । न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचैं धाम ॥ कंसको निर्वंश ह्वै है करत इनपर ताम। सूर प्रभु नंदसुवन दोऊ हंस बाल उपाम ॥ ६५ ॥

राग कल्याण ॥ देख री आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ जप तप तीरथव्रत कीजत है जेहि लोभा। चारु चक्र मणिखचित मनोहर चंचलचमर पताका॥श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो राका॥घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रकट एकही काला ॥ उपजत छवि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु अरुण कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा। मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख शोक बिसारी। पैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारी ॥ आनंदित जित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास यदुकुल हित कारण माधो मधुपरी आए ॥ ६६ ॥

राग मलार ॥ वे देखो आवत हैं ब्रजते बने वनमाली। घन तन श्याम सुदेह पीतपट सुन्दर नैन विशाली ॥ जिन पहले पलना पौढे पय पीवत पूतना दाली। अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि जलते काढचो काली ॥ जिन हति शकट प्रलंब तृणाव्रत इंद्र प्रतिज्ञा टाली। एते पर नहिं तजत अघोडी कपटी कंस कुचाली॥ अब विधु वदन विलोकि सुलोचन श्रवण सुनतही आली। धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रकट प्रीतिपाली ॥६७॥

राग भैरव ॥ एई माधो जिन मधु मारे री। जन्मतही गोकुल सुख दीन्हों नंददुलार बहुत सारे री ॥ केशी तृणावर्त्त वृषभासुर हती पूतना जब बारे री। इंद्र कोप वर्षत गिरि धारचो महाप्रलय ब्रजके टारे री ॥ बल समेत नृपकंस बोलाए रचे रंग अति भारे री। सूर अशीश देति सब सुन्दरि जीवहिं अपनी माँप्यारे री ॥ ६८ ॥

राग विहागरो ॥ भए सखि नैन सनाथ हमारे। मदन गोपाल देखतहि सजनी जब दुख शोक बिसारे ॥ पठएहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारे। मल्लयुद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहां हँकारे ॥ मुष्टिक अरु चाणूर शैलसम सुनियत हैं अति भारे। कोमल कमल समान देखियत ये यशुमतिके बारे। ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सबारे। सूरदास चिरजीवहु युग युगदुष्ट दलैं दोउ नंददुलारे ॥ ६९ ॥

अथ दूसरी लीला अक्रूरकी ॥ राग मारू ॥ यमुनतट आइ अक्रूर अन्हाए। श्याम बल-रामको रूप जलमें निरखि बहुरि रथ देखि आचरज पाए ॥ किधौं प्रतिबिंब यह जलहिमें

देखतो किधौं निज रूप दोउ हैं सुहाए । चकितहोइ नीरमें बहुरि बुड़की दई सह सुता सिंधु तहँ दरश पाए ॥ दोउ कर जोरि करि बिनय बहुविधि करीं लियो जब रूप तब प्रभु दुहाई । निकसि कै नीरते तीर आयो बहुरि ताहि ढिग बोलि बोले कन्हाई ॥ कहा तुम और देखत हुते तात तुम कह्यो सब जगत तुमहीं भुलायो । गति तुम्हारी न जानै कोऊ तुम बिना राख प्रभु राख मैं शरण आयो ॥ हरि कह्यो चलौ मथुरा पुरी देखिए सहित अक्रूर पुनि तहां आए । सूर प्रभु कियो विश्राम सब निशि तहां बोधि अक्रूर निजघर पठाए ॥ ७० ॥

अध्याय ॥ ४१ ॥ श्रीकृष्ण मथुरापुर आगमन हेतु ॥ राग भैरव ॥ भोर भयो जागे नंदलाल । नंदराइ निरखत मुख हरषे पुनि आए सब ग्वाल ॥ देखि पुरी अति परम मनोहर कंचन कोट विशाल । कहन लगे सब सूर प्रभूसों होहु इहां भूपाल ॥ ७१ ॥

राग परज॥ हरि बल शोभित यों अनुहार । शशि अरु सूर उदै भए मानो दोऊ एकहि बार ॥ ग्वाल बाल संग करत कौतुहल गवन पुरी मंझार । नागर नारि सुनि देखन धाईं रति पति गेह बिसार ॥ उलटि अंग आभूषण साजत रही न देह सँभार । सूरदास प्रभु दरश देखिकै भई चकृत न विचार ॥ ७२ ॥

राग धनाश्री ॥ वै देखो आवत दोऊ जन । गौर श्याम नट नील पीत पट जनु दामिनि मिली घन ॥ लोचन बक बिशाल चितैकै हरत तबै सबके मन । कुंडल श्रवण कनकमणि भूषित जडित लाल अति लोलमीन तन॥ वंदन चित्रविचित्र अंग शिर कुसुमसुवास धरे नँदनंदन । बलि बलि जाउँ चलहिं जेहि मारग संग लगाइ लेत मधुकरगन ॥ धन्य सुभूमि जहां पग धारे जीतहिंगे रिपु आजु रंगरन । सूरदास वै नगर नारि सब लेत बलाइ बारि अंचलसन ॥ ७३ ॥

अथ रजकवधहेतु ॥ राग रामकली ॥ नृपतिरजक अंबर नृप धोवत । देखे श्याम राम दोउ आवत गर्वसहित तिन जोवन ॥ आपुस हीमें कहत हँसत हैं प्रभु हिरदय यह सालत । तनकतनकसे ग्वाल छोहरन कंस अब हिंवधि घालत ॥ तृणावर्त प्रभु आहि हमारो इनहीं मारचो ताहि । बहुत अचगरी यहि करि राखी प्रथम मारि हैं याहि ॥ जाको नाम श्याम सोइ खोटो तैसेइ हैं दोउ वीर । सूर नंद विनुपुत्र कहाए ऐसे जाए हीर ॥ ७४ ॥

राग बिलावल अंतर्यामी जानिकै सब ग्वाल बोलाए । परखिलिए पाछेनको तेऊ सब आए ॥ सखावृंद लै तहां गए बूझन तेहि लागे । नृपति पास हम जाहिंगे अंबर कछु मांगे ॥ हँसे श्याम मुख हेरिकै धोवत गरवानो । मारत मारत सातके दोउ हाथ पिरानो ॥ अबहीं दैहैं आइकै कछु हम ले रैहैं । पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूं दैहैं ॥ की पहिलेही लेहुगे हम ईहै बिचारे । देहु बहुत गुण मानिहै आधीन तुम्हरे ॥ मार मार कहि गारि दै धिग गाइ चरैया । कंसपासह्वै आइए कामरी वोढैया ॥ बहुरि अरसते आनिकै तब अंबर लीजो । अरस नाम है महलको जहां राजा बैठे । गारी दैदै सब उठे भुजनिजकर ऐंठे ॥ पहिरावनकोजुरि चले पैहो मल्लनसों । सूर अजाके भोग ए सुनिलेहु नमोसों॥७५॥

राग बिलावल ॥ हम माँगतहैं सहजसों तुम अति रिसकीन्हों । कहा करैं तो जाहिंगे जो तुम हमहिं न दीन्हों ॥ रिस करियत क्यों सहज हौ भुज देखत ऐसे । करि आए नट स्वांगसे मोको तुम वैसे ॥ हमहिं नृपतिसों नात है ताते हम माँगे । बसन देहु हमको सबै कहैं नृपके आगे ॥ नृप आगेलैं जाहुगे बीचहि मरिजैहौ नेक जिवनको आश है ताहू बिना ह्वैहौ ॥ नृप काहेको मारिहै तुमहीं अब मारत । गहर करत हमको कहा मुख कहा निहारत ॥ सूर दुहुँन मैं मारिहौं अति करत अचगरी बसत तहां बुधि तै सियै यह गोकुल नगरी ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम गह्यो भुज सहजही क्यों मारत हमको । कंस नृपतिकी सौंह है पुनिपुनि कही तुमको ॥ पहुँचा करसों गहिरहे जिय संकठ मेल्यो । डारि दियो ताहि शिलापर बालक ज्यों खेल्यो ॥ तुरत गयो उडि स्वर्गको ऐसे गोपाला । जन्म मरनते रहि गये वह कियो निहाला ॥ रजक भजे सब देखिकै नृप जाइ पुकारचो । सूर छोहरन नंदके नृप सेठिहि मारचो ॥ ७७ ॥

राग गौरी ॥ यह सुनिकै नृप त्रास भरचो । सबन सुनाइ कही यह वाणी इह नँदनंद कह्यो ॥ मारौ श्याम राम दोउ भाई गोकुल देउ बहाइ । आगे दैकै रजक मरायो स्वर्गहि देहु पठाइ ॥ दिनदिन इनकी करौं वडाई अहिर गए इतराइ । तौ मैं जो वाहीसों कहिकै उनकी खाल कढाइ ॥ सूर कंस इह करत प्रतिज्ञा त्रिभुवन नाथ कहाए ॥ ७८ ॥

राग बिलावल ॥ रजक मारि हरि प्रथमही नृपवसन लुटाए । रंग रंग बहु भाँतिके गोपन पहिराए ॥ आए नगर लगारको सब बने बनाए ॥ इकटक रहीं निहारिकै तरुणिन मनभाए ॥ जैसी जाके कल्पना तैसेहि दोउ आए । सूर नगर नर नारिके मन चित्त चोराए ॥ ७९ ॥

येइ वसुदेवके दोउ ढोटा । गौर श्याम नट नील पीत पट कलहंसनके जोटा ॥ कुंडल एक काम श्रुति जाके श्रीरोहिणिको अंश । उर वनमाल देवकीको सुत जाहि डरतहै कंस॥ लै राखे ब्रज सखा नंदगृह बालक भेष दुराइ । सम बल बैस विराट मैनसे प्रगट भएहैं आइ ॥ केशी अघ पूतना निपाती लीला गुणनि अगाध । सूर श्याम खलहरन करन सुख अभयकरन सुरसाध ॥ ८० ॥

राग रामकली ॥ येइ कहियत वसुदेव कुमार । कंसत्रास मनमात पठाए कीन्हें नंददुलार॥ प्रथम पूतना इनहिं निपाती काग मरत उठि भाज्यो । शकटातृणा इनहिं संहारचो काली इनहिं निवाज्यो ॥ अघाबका संहारन एई असुर सँहारन आए । सूरज प्रभु हितहेतु भावकै यशुमतिबाल कहाए ॥ ८१ ॥

राग नट ॥ वैहैं रोहिणीसुत राम । गौर अंग सुरंग लोचन प्रलय कैसे ताम ॥ एक कुंडल श्रवणधारी दोत दरशीग्राम । नील अंबरअंगधारी श्याम पूरणकाम ॥ महा जे खल तिनहुँते अति तरतहैं एक नाम । ब्रह्म पूरण सकल स्वामी रहे ब्रजनिशिधाम ॥ ताल बन इन वच्छ मारचो ब्रह्म पूरणकाम । सूर प्रभु आकरषि ताते संकर्षण है नाम ॥ ८२ ॥

राग रामकली ॥ एहैं देवकीसुत श्याम । मुकुट शिर शुभ श्रवणकुंडल करत पूरणकाम॥ महा जे खल तिनहुँते अति तरत हैं इक नाम । ब्रह्मपूरण सकल स्वामी रहे ब्रजवसिधाम॥

नंदपितु माता यशोदा बाँधे ऊखल दाम । लकुट लैलै त्रास कीन्हों करचो इनपर ताम ॥ ताहि मान्यो हेतुकरि इन हँसति ब्रजकी वाम । सूर धनि नँद धन्य यशुमति धन्य गोकुल ग्राम ॥ ८३ ॥

अध्याय ॥ ४२ ॥ हरि धनुष भूमि आगमन उद्धार ॥ राग मारू ॥ धनुषशाला चले नंद-लाला । सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कोउ न लखहिं करत ख्याला ॥ नृपतिके रजकसों भेंट मगमें भई कह्यो दे वसन हम पहरि जाहीं । वसन ए नृपतिके जासु के प्रजा तुम ए वचन कहत मन डरत नाहीं ॥ एकही मुष्टिका प्राण ताके गए लए सब वसन कछु सखन दीन्हें । आइ दरजी गयो बोलि ताको लयो सुभग अँग सजत उन विनय कीन्हें । यों सुदामा कह्यो गेह मम अति निकट कृपाकरि तहां हरिचरणधारी । धोइ पदकमल सो हार आगे धरी भक्तिते तासु सब काज सारी ॥ लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिली श्यामअँग लेप कीयो बनाई । रीझि तेहि रूद दियो अंग सूधो कियो वचन शुभ मानि निजगृह पठाई ॥ पुनि गए तहां जहं धनुष बोले सुभट हौस मन जिनि करौ बनविहारी । सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरणी परचो शोर सुनि कंस भयो भ्रमित भारी ॥ ८४ ॥

दूसरी लीला धनुषयज्ञकी विस्तार वदत ॥ राग गुंडमलार ॥ श्याम बलराम गए धनुष-शाला । लियो रथते उतरिरजक मारचो जहां कंदराते निकसि सिंह बाला ॥ नंद उपनंद सँग सखा एक थल राखि दोउ बने आवहीं वीर जोटा । असुरसैना खडे देखिकै वे डरे धनुष चहुँपास रिपु घुटा घोटा ॥ घेरिलीन्हें श्याम बलरामको तहां बोलि सब उठे हरि धनुष तोरो । सूर तुमको सुनैं भुजनिबलचंड अति हँसत हरि करचो यह वैर जोरो ॥ ८५ ॥

राग बिहागरो ॥ हमको नृप यहिहेतु बोलाए ॥ कहां धनुष कहँ हम अति बालक कहि आश्चर्य सुनाए । ठाढे शूर बीर अवलोकत तिनसों कहौ न तोरैं । हमसों कहौ खेल कछु खेलैं यह कहि कहि मुख मोरैं ॥ कंस एक तहां असुर पठायो इहै कहत वह आयो । बनै धनुष तोरे अब तुमको पाछे निकट बोलायो ॥ बालक देखि गहन भुजलाग्यो ताहि तुरतही मारचो । तोरि कोदंड मारि सब योधा तब बल भुजा निहारचो ॥ जाके अस्त्र तिनहिं तेहि मारचो चले सामुहीं खौरी । सूर सुकुबरी चन्दन लीन्हें मिलि श्यामको दौरी ॥ ८६ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रभु तुमको चन्दन मैं ल्याई । गह्यो श्यामकर कर अपनेसों लिए सद-नको आई ॥ धूप दीप नैवेद्य साजिकै मंगल करे बिचारी । चरण पखारि लियो चरणो-दक धनि धनि कहि दैत्यारी ॥ मेरो जनम कल्पना ऐसी चन्दन परसौं अंग । सूर श्याम-जनके सुखदायक बँधे भावरजु रंग ॥ ८७ ॥

राग गुंडमलार ॥ कूबरी नारि सुन्दरी कीन्हीं । भावमें वास बिन भाव नहिं पाइए जानि हिरदय हेतु मानि लीन्हीं ॥ ग्रीव कर परसि पग पीठि तापर दियो उर्वशी रूप पटतरहि दीन्हीं । वित्त वाके इहै श्याम पति मिलैं मोहिं तुरत सोइ भई नहिं जात चीन्हीं ॥ ताहि अपनी करी चले आगे हरी गए जहँ कुवलया मल्ल द्वारचो । बीच माली मिल्यो दौरि चरणन परचो पुहुपमाला श्याम कंठ धारचो ॥ कुशल प्रसनन कहे

तुरत मनकाम लहि भक्तवत्सल नाम भक्त गावैं । ताहि सुखदै चले पौरिही ह्वै खरे सूर गजपालसों कहि सुनावैं ॥ ८८ ॥

अध्याय ४३ ॥ कुवलया हस्ती व मुष्टिक चाणूर वध ॥ राग कान्हरो ॥ सुनहु महावत बात हमारी । बारबार संकर्षण भाषत लेत नहीं ह्यांते गज टारी ॥ मेरो कह्यो मानि रे मूरख गज समेत तोहि डारौं मारी । द्वारे खडे रहेहैं कबके जिनिरे गर्वकरै जियभारी ॥ न्यारो करि गयंदु तू अजहूं जान देहिका अंकुश मारी । सूरदास प्रभु दुष्टनिकंदन धरणी भार उतारनकारी ॥ ८९ ॥

राग गुंडमलार ॥ बारबार संकर्षण भाषत वारन वनि वारन करि न्यारौ । वारन छाँडि-देत किन हमको तू जानत मतंग मतवारौ ॥ बाहर खडेबात सुन मेरी त्रिभुवनपति जिनि जानै बारो । बादिहि मरिजैहै पल भीतर कहेदेत नाहिं दोष हमारो ॥ बात सुनत रिस भरचो महावत तुमहिं कहा इतनो रे गारो । बादत बड़े शूरकी नाँई अबहिं लेतहौं प्राण तुम्हारो ॥ वारनहिं करौं वारन सहित पटकिहौं बावरे बात कहि मुख सँभारे । बादि मरिजाइगो वारनहिं छोडिदे वदत बलराम तोहिं बारबारै ॥ बात मेरी मान गर्व बोलै कहा काल किनि देखि इतरात कारे । वाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हांक दै तुरत गजको हँकारे ॥ बाजसो टूटि गजराज हांकत परचो मनो गिरि चरण धरि लपकिलीन्हों । वारि बांधे वीर चहूँघा देखितहि वज्रसम थाप बल कुंभ दीन्हों ॥ कूक पारचो लपकिवीं चमनडरचो मनुगंडमधि रंध्र झरवो सुखानो ॥ क्रोध गजपालके ठिठकि हाथी रह्यो देत अंकुश मसकि कहा सकानो । बहुरि तातो कियो डारि तिनपर दियो आय लपटे सुतहु नंदकेरे । सूर प्रभु श्याम बलराम दोउ इतैं उत बीच करि नाग इत उतहि टेरे ॥९०॥

राग गुंडमलार ॥ क्रोध गजराज गजपाल कीन्हों । गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवनते बेग तेहि समै चीन्हों ॥ चक्र सो भ्रमत चकृत भए देखि सब चहूँघा देखिए नंद ढोटा । चमकि गए बीर सब चकाचौंधीलगी चितै डरपे असुरघटा घोटा ॥ नील अंबर धौल बरन बलरामबनि पीतअंबर श्याम अंग शोभा । सूर प्रभु चरित पुर नारि देखति खडी महलपर आशिषा देतिलोभा ॥ ९१ ॥

कहत हलधर कह्यो मानि मेरो । अखिल ब्रह्मण्डके नाथ हैं ह्याँखरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो ॥ यह सुनत रिस भरचो दौरिबेको परचो सूँडि झटकत पटकि कूक पारचो । घात मन करत लै डारिहौं दुहुँनिपर दियो गज पेलि आपुन हँकारचो ॥ लपकि लीन्हों धाइ दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वैधौं । अरचो दै दशन धरणी कढे बीरदोउ कहत अबहीं याहि मार कैधौं । खेलिहैं संगदै हाँक ठाढे भए श्याम पाछे राम भये आगे । उतहि वै पूंछ गहिजात ए शुंडि छ्वै फिरत गज पास चहुँ हँसन लागे ॥ नारि महलन खरी सबै अतिही डरीं नंदके नंदराज दोउ खिलावैं । सूर प्रभु श्याम बल-राम देखति तृषित बचैं इक बेर विधिसों मनावैं ॥ ९२ ॥

खेलत गजसंग कुँवर श्याम राम दोऊ । क्रोध द्विरद व्याकुल अति इनको रिस नेक नहीं चकृत भए योधा तहँ देखत सबकोऊ ॥ श्याम झटकि पूछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महल महल नारि चरित देखत यह भारी । ऐसे आतुर गोपाल चपलनैन मुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी । सुरगण व्याकुल विमान मनमन यह करत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुँ मारचो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नहिं आजु मारिहौं इनको कंस डरिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभपर करष्यो हलधर उठे हँकारी । धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी ॥ तब हरि पूँछ गह्यो दक्षिणकर कबुक ओर शिरवारी । पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी ॥ दुहुँ कर द्विरददशन इकइक छबि निरखति पुर नरनारी । सूरदास प्रभु सुरसुखदायक मारचौ नाग पछारी ॥ ९४ ॥

दूसरी लीला हस्तीवध ॥ राग मारू ॥ नवल नँदनंद रंगद्वार आए । तडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये मुख सुहाए ॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितुको पुत्रभाव आयो । ब्रह्म पूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसिकरि पंथते टारि गजको महावत । दियो फटकारि उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताहि आवत ॥ दंत युग विवि युग चरन भीतर निकसि युग करन पूँछको गह्यो जाई । महाकरि सिंह भेटत महा उरगको महाबल गरुड ज्यों गहत धाई ॥ कबहुं लैजात उत इतै ल्यावत कबहुँ भ्रमत व्याकुल भयो मतुल भारी । गयंद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंत दोउ लये निजकर उपारी । भभकिकै दंतते रुधिरधारा चली छीट छबि बसनपर भई भारी । केसरी चीर पर अबिर मानो पर्यो खेलते फाग़ु डारचो खिलारी ॥ मातुलहु तजि प्राण गयो निर्वाणको सिद्ध गंधर्व जैजै उचारैं । देखि लीलाललित सूरके प्रभूकी नारि नर सकल तन प्राण वारैं ॥ ९५ ॥

राग नट ॥ नवल नँदनंद रंगभूमि आए । संग बलराम अभिराम शशि सूर ज्यों निरखि आपने छबिसों सोहाए ॥ द्वार गजराज लखि पीतपट कटि कसत मँद मृदु हँसत अति लखत भारी । कछु न कहिपरति तब जबहि फिरि हेरिकै छबीली हरषि पति आसवारी ॥ गर्वको गिरि मनो चलत पांइन तैसें कुवलया प्रबल रिस सहित धायो । बालकै मूस ज्यों पूंछि धरि खेलिए तैसे हरि हाथ हाथी गिरायो ॥ गहि पटकि पुहुमिपर नेक नहिं मटकियो दंत मनु मृणालसे ऐंचि लीन्हें । कंध धरि चले दोउ वीर नीके बने निरखि पुरजन प्राण वारि दीन्हें ॥ शैलसे मल्ल वै धाइ आए शरन कोउ लगे गोडपर थरथराने । कंसके प्राण भयभीत पिंजरा जैसे नव विहंगम मरत फरफराने ॥ मधुपुरी युवति सब कहति अति रति भरी देखु री देखु अंग अंग लोनाई । सुनत श्रवणन रही दिखे री तेइ सही मधुर मूरति सुरति पति न पाई ॥ धन्य राधा केलि वृंदावन

कुंज है सबै देखौ माई हम अभागी । धन्य ब्रज बाल नंदलाल गिरिधरनको नित्य निरखि रहति प्रेम पागी । अबलसों अबल भए सबलसों सबल भए ललित तनु मनु प्रकाशी ॥ सूर प्रभु ज्ञान करि ध्यान जिन जैसि लई मात पितु दुःख डारे विनाशी ॥९६॥

राग बिलावल ॥ देखो री आवत वै दोऊ । मणि कंचनकी राशि ललित अति यह उपमा नहिं कोऊ ॥ कैधौं प्रात मानसरवरते उडि आए दोउ हंस । इनको कपट करै मथुरापति तो ह्वैहै निर्वंस ॥ जिनके सुने करत पुरुषारथ तेई हैं की और । सूर निरखि यह रूप माधुरी नारि करत मन डौर ॥ ९७ ॥

राग कान्हरो ॥ सजनी येइ हैं गोपाल गुसाँई । नंदमहरके ढोटा जिनकी सुनियत बहुत बडाई ॥ नैनन रूप निरखि देखौं बड भाग परम निधिपाई । चन्द्र चकोर मेघ चातकलौं अवलोको मनलाई ॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट भुज चन्दन चरचित कीन्हें । नटवर भेष धरे मन मोहन गज युग दशन कन्ध धरि लीन्हें ॥ नूपुर चारु चरण कटि किंकिणि वनमाला उरपर सोहै । कर कंकण मणि कंठ मनोहर सो को न युवति जो मन मोहै । परम रुचिर मणि कंठकिरन गन कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी । विधुमुख मृदु मुसकानि अमृतसम सकल लोक लोचन प्यारी ॥ सत्य शील संपन्न सु मूरति सुर नर मुनि भक्तन भाए । सूरदास प्रभु दुष्ट बिनाशन गोकुलते मथुरा आए ॥ ९८ ॥

राग बिलावल ॥ एइ सुत नंद अहीरके । मारचो रजक बसन सब लूटे सँग सखा बलवीरके ॥ कांधे धरि दोऊ जन आए दंत कुवलया धीरके । पशुपति मंडल मध्य मनो मणि क्षीरधि नीरधि नीरके ॥ उडि आए तजि हंस मात मनो मानसरोवर नीरके । सूरदास प्रभु ताप निवारण हरन संत दुख पीरके ॥ ९९ ॥

राग कल्याण ॥ हँसत हँसत श्याम प्रबल कुवलया मारचो । तुरत दांत लिए उपारि कांधेपर चले धारि निरखत नर नारि मुदित चकृत गज संहारचो ॥ अतिही कोमल अजान सुनत नृपति जिय सकान तनु बिनु जनु भयो प्राण मल्लनिपै आए । देखतही शंकि गए काल गुण विहाल भए कंस डरन घेरि लिए दोउ मन मुसुकाए ॥ असुर वरी चहूँ पास जिनके दश भुव अकाश मल्लनपै आए करि नास जिय बिचारै । सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हारि जीति घरहीकी कौन काहि मारै ॥ हँसि बोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहिं काम बालक सँग डोले । सूर नंदके कुमार यह है राजस विचार कहा करत बार बार प्रभु ऐसे बोले ॥ २६०० ॥

रंग भूमि आए अति नंदसुवन बारे । निरखति ब्रजनारि नेह उरते न बिसारे ॥ देखो री मुष्टिक चाणूर इनि हँकारे । कैसे ये बचैं नाथ साँस उरध डारे ॥ रजक धनुष जोधा हति दंत गज उपारे । निर्दय इह कंस इनहिं चाहत है मारे ॥ कहां मल्ल कहां अतिहि कोमल ए भारे । कैसी जननी कठोर कीन्हें जिन न्यारे ॥ बार बार इहै कहति भरिभरि दोउ तारे । सूरज प्रभुबल मोहन उरते नहिं टारे ॥ १ ॥

राग गुंडमलार ॥ बोलि लीन्हों कंस मल्ल चाणूरको कहा रे करत क्यों बिलम कीन्हों । वंश निवंश करि डारिहौं छिनकमें गारि दै दै ताहि त्रास दीन्हों ॥ शत्रु नान्हों जानि रहे

अबलौं बैठि जन आपनेको मारि डारौ । द्विरदको दंत उपठाय तुम लेत है उहै बल आजु काहेन सँभारौ ॥ भली नहिं करी तुम राखि राख्यो उनहिं इहै कहि तुरत वाको पठायो । कछु क्रोध कछु त्रास कछु सोच कछु शोक करै साहस रंगभूमि आयो ॥ परस्पर कहि सबन नृपति त्रास्यो मोहिं सुनहु रे बीर अबलौं न मान्यो । की मरौ की मारि डारियो दुहुँनिको होइ सो होइ यह कहत रान्यो ॥ निरखि दोउ वीर तनु डरे मनहीं महा इहै बुधि करै ज्यों नाश कीजै । लखति पुरनारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहतिहैं नृपतिपै सुयश लीजै ॥ २ ॥

राग धनाश्री ॥ कहति पुर नारि यह मन हमारैं । रजक मारचो धनुष तोरि द्वै खंड करि हत्यो गजराज त्यों इनहु मारैं ॥ तृषित अति नारि सब मल्ल ज्यों ज्यों कहें लरत नाहिं श्याम हम सँग काहे । परस्पर मत करत मारि डारौ इनहिं लखत ए चरित निमिषौ न चाहे ॥ कहा ह्वैहै दई होन चाहति कहा अबहिं मारत दुहुँन हमहि आगें । सूर कर जोरि अंचल छोरि बीनवैं बचैं ए आजुविधि इहै मांगैं ॥ ३ ॥

राग कल्याण ॥ देखो री मल्ल इनहिं मारनको लोरैं । अतिही सुंदर कुमार यशुमति रोहिणी वार बिलखति यह कहति सबै लोचन जल ढोरैं ॥ कैसेहुँ ए बचैं आजु पठए धौं कौन काज निठुर हियो वाम ताको लोभही पठाए । एतो बालक अजान देखौ उनके सयान कहा कियो ज्ञान इहां काहेको आए । कहां मल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिलाभंजन कहत भुजा गहि पटकन नंदसुवन हरषैं । नगर नारि व्याकुल जिय जानत प्रभु सूरश्याम गर्व-हतन नाम ध्यान करि करि वै हरषैं ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण वचन मल्लप्रति । राग गुंडमलार ॥ सुनौ हो वीर मुष्टिक चाणूर सबै हमहि नृप पास नाहिं जान दैहौ । घेरि राखे हमहिं नाहिं बूझै तुमहिं जगतमैं कहा उपहास लैहौ ॥ सबै कैहैं इहै भली मति तुम यहै नंदके कुँवर दोउ मल्ल मारे । इहै यश लेहुगे जान नाहिं देहुगे खोजही परे अब तुम हमारे ॥ हम नहीं कहैं तुम मनहिं जो यह बसी कहतहौं कहा तैं करै कैसी । सूर हम तन निरखि देखिए आपुको बात तुम मनहिं यह बसी नैसी ॥ ५ ॥

राग तोडी ॥ जबहीं श्याम कही यह बानी । यह सुनिकै युवती बिलखानी ॥ मल्लन कह्यो हमहिं तुम देखौ । अपनो बल अपनो तनु पेखौ ॥ चितए मल्ल नंद सुत क्रोधा । कालरूप वज्रांगी जोधा ॥ भुजा ऐंठि रज अंग चढायो । गांस धरे हरि ऊपर आयो ॥ श्याम सहज पीतांबर बांधे । हलधर निरखत लोचन आधे ॥ तब चाणूर कृष्णपर धायो ॥ भुजभुज जोरि अंग बल पायो ॥ प्रथम भए कोमल तन ताको । शिथिल रूप मनमें लस वाको ॥ तब चाणूर गर्व मन लीन्हों । दुर्ग प्रहार कृष्णपर कीन्हों ॥ फूलहुते अति श्रम करि मान्यो । तेहि अपने जिय मारचो चान्यो ॥ हरष्यो मल्ल मारि भयो न्यारो । कहन लाग्यो मुख अहिर बिचारो ॥ हँसत श्याम जब देखत ठाढे । सोच परचो तब प्राणनि गाढे ॥ फिरि कहिकहि हरि मल्ल हुंकारचो मनु कंदरते सिंह पुकारचो ॥ हांक सुनत

सब कोउ भुलान्यो । थरथराइ चाणूर सकान्यो ॥ सूर श्याममहिमा तब जान्यो । निहचै मीचु आपनो आन्यो ॥ ६ ॥

राग धनाश्री ॥ भिरचो चाणूरसों नंदसुत बाँधि कटि पीतपट फेंट रणरंग राजैं । द्विरदरद कर कलित भेष नटवर ललित मल्ल उर सह्लि तल बाजैं ॥ पीन भुज लीन जे लक्षत रंजित हृदय नीलघन शीत तनु तुंग छाती । देखि रहीं भेष अति प्रेम पुरनारि सब वदति तजि भीर रतिरीति राती ॥ मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमाल सोहै । कमलदलनैन मृदुबैन बंदित वदन देखि सुरलोक नरलोक मोहै ॥ बाहुसों बाहु उर जानुसों जानुकी चरणसों चरण धरि प्रगटपेलैं । धमकदै घूँघरनि भीरभय बंधुजन सुभटपद पाणि धरि धरनि मेलैं ॥ चित्तसों चित्त मनिबंध मनिबंधसों दृष्टिसों दृष्टिधरि शिर चँपया । जानि रिपुहानि तजि कानि यदुराजकी बबकि उठि फूलि वसुदेवरैया ॥ ऐसे ही राम अभिराम सुर शेष वपु गहि व मुष्टिक महामल्ल मारचो । तोरि निजजनक उर केश गहि कंसनर सूर हरि मंचते दुष्ट डारचो ॥ ७ ॥

राग भैरो ॥ श्याम बलराम रँगभूमि आए । बली लखि रूप सुंदर परम देखि यों प्रबल बलजानि मनमें सकाए ॥ कह्यो गज कुवलिया हयो भयो गर्व तुम जानि परिहै भिरत सँग हमारे । कालसों भिरैं हम कौन तुम बापुरे पै हृदय धर्म रहियो बिचारे ॥ श्याम चाणूर बलबीर मुष्टिकभिरे शीशसों शीश भुजभुज मिलावैं । वे उनै गहत वे दौरि उनको गहत करत बल छल नहीं दांव पावैं ॥ धरि पछारचो दोउ बीर दुहुँ मल्लको हरषि कह्यो सुरनए नंद दोहाई । सूर प्रभु परस लहि लह्यो निर्वान तेहि सुरन आकाश जयध्वनि सुनाई ॥ ८ ॥

राग गुंडमलार ॥ गह्यो कर श्याम भुजमल्ल अपने धाइ झटकि लीन्हों तुरत पटकि धरनि । भटक अति शब्द भयो खुटक नृपके हिए अटक प्राणन परचो चटक करनी ॥ लटकि निर्खन लग्यो मटक सब भूलिगयो हटकि गयो गटकि रह्यो मीचु जागी ॥ मुष्टिकै मरदि चाणूर चुरकुट करचो कंसको कंप भयो उई रंगभूमि अनुरागरागी । मल्ल जेजे रहे सबै मारे तुरत असुर जोधा सबैं तेउ सँहारे ॥ धाइ दूतन कह्यो मल्ल कोउ नहिं रहे सूर बलराम हरि सब पछारे ॥ ९ ॥

अध्याय ॥ ४४ ॥ कंसवधन उग्रसेनराज्य हेतु ॥ राग कल्याण ॥ मारे सब मल्ल नंदके कुमार दोऊ । कोट सबन भूलिगए हांकदेत चकृत भए लपकिलपकिहए तुरत उबरचो नाहिं कोऊ ॥ जोधा चितवतहि मरे हहरि हहरि धरनि परे ज्वाला ज्यों जरे डरे सब भए बिनप्राना । तारागन लिपित होत जैसे दिनके प्रकाश यहसुनि नृप भए निराश रह्यो नहीं ज्ञाना ॥ गलबल सब नगर परचो प्रगटे यदुवंशी । द्वारपाल इहै कही जोधा कोउ बचे नाहिं कांधे गजदंत धरे सूर ब्रह्म अंशी ॥ १० ॥

राग गुण्डमलार ॥ नंदके नंद सब मल्ल मारे निदरि पौरिया जाय नृपपै पुकारे ॥ सुनत ठाढो भयो हांक तिनको दयो दनुजकुल दहन तातन निहारे । सुभट बोले सबैं मल्ल मेरे । अचगरी करि रहे बचन एई कहे डर नहीं करत सुत अहिरकेरे ॥ रंगमहलनि

खरचो कहा रे तुम काचो ढाल कर खड्ग तहांते चलावै। जिवत अब जाहुगे बहुरि करिहौ राज नहीं जानत सूर कहि सुनावै ॥ ११ ॥

राग धनाश्री ॥ भले रे नंदके छोहरा डर नहीं कहा जो मल्ल मारे बिचारे। बारही बार दै हांक ये गए कहां आपने सम असुर ते हँकारे ॥ पौरि गाढौ करौ द्वार बीरनि कहे आप ललकारि मुख गारि दैकै। बहुरि घर जाहुगे धेनुदुहि खाहुगे जान दैहौं तुमहिं प्राण लैकै ॥ कोउ नहिं रे वहां लौटि आवत कहां पग द्वैक धरणि हरि सन्मुख आए। चकृत ह्वैकै गयो मीच दरशन भयो कहारे मीच यह कहि सुनाए ॥ श्याम बलरामको नाम लैलै कहत मीच आई लेन तुमहिं बाजै। सूर प्रभु देखि नृप क्रोध पूरी घरी कस्यो कटि पीतपट देवराजै ॥ १२ ॥

राग मारू ॥ कंध दंत धरिडोलत रंगभूमि बलहारि। उज्ज्वल सावँल वपु शोभित अंग फिरति फरि ॥ द्वारे पैठत कुंजर मारचो डुलाय धरनी डारचो। मुष्टिक चाणूर शिल्प सौशील संहारचो ॥ जिहिं ज्यों जिय रूप बिचारचो तैसोई रूप धारचो। देवकी वसुदेव जीयको संताप निवारचो ॥ मल्ल सुभट परे भगार कृष्णको परिसाने। देखि यह पराक्रम तब कंस जिय बिलखाने ॥ दुःखदलन अभय दान करै करन दाने। जो जिहि जबहिं कहैं सबै गोवर्धनराने ॥ कंस सुनि अचेत भयो बजनलगे बाजा। कहि अशीश गगन उठे सिद्ध सुर समाजा ॥ सुभट रहे देखतही रोके दरवाजा। सूर नंदनंदन गए जहाँ कंस राजा ॥ १३ ॥

राग मारू ॥ नवल नँदनंद रँगभूमि राजैं। श्याम तन पीतपट मनो घनमें तडित मोरके पंख माथे विराजैं ॥ श्रवण कुंडल झलक मनो चपला चमकि दृग अरुण कमलदलसे विशाला। भौंह सुंदर धनुष बाणसम शिर तिलक केश कुंचित शोभित भृंगमाला ॥ हिरदय वनमाल नूपुर चरण लोल चलत गजचाल अति बुद्धि राजै। हंस मनो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरषि गाजै कुवलिया मारि चाणूर मुष्टिक पटकि वीर दोउ कंध गज दंत धारै। ढाल तलवारि आगे धरी रहिगई महलको पंख खोजन न पावंत ॥ लातके लगत शिरते गयो मुकुट गिरि केश धरि लै चले हरषि सावंत। चारि भुज धारि तेहि चारु दरशन दियो चारि आयुध चहूँ हाथ लीन्हें ॥ असुर तजि प्राण निर्वाण पदको गयो विमल गति भई प्रभुरूप चीन्हें। देखि यह पुहुप वर्षा करी सुरन मिलि सिद्ध गंधर्व जै धुनि सुनाई ॥ सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहिपरत सुरनकी गति तुरत अक्रूर पाई ॥ १४ ॥

राग मारू ॥ देखि नृप तमकि हरि चमकि तहांई गए दमकि लीन्हों गिरह बाज जैसे। धमकि मारचो घाउ गुमकि हृदये रह्यो झमकि गहि केश लै चले ऐसे ॥ ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महलके तरे धरणी गिरायो। अमर जयध्वनि भई धाक त्रिभुवन भई कंस मारचो निदरि देवरायो ॥ धन्य वाणि गगन धरणि पाताल धनि धन्य हो धन्य वसुदेवताता। धन्य अवतार सुर धरनि उपकारको सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता ॥ १५ ॥

राग बिलावल ॥ जय जय ध्वनि तिहुँ लोक भई। मारचो कंस धरणि उद्धारचो ओकओक आनंद भई ॥ रजक मारिकै दंड बिभंज्यो खेल करत गज प्राण लियो। मल्ल पछारि असुर संहारे तुरत सबनि सुरलोक दियो ॥ पुर नर नारीको सुख दीन्हों जो जैसो फल सोई लह्यो। सूर धन्य यदुबंश उजागर धन्य धन्न ध्वनि घुमरि रह्यो ॥ १७ ॥

राग गुंडमलार ॥ हर्ष नर नारि मथुरा पुरीके। सोच सबको गयो दनुजकुल हयो तिहुँ भवन जैजयो हरष कूबरी के ॥ निदरि मारचो कंस प्रकट देखत सबै अतिहि दिन अल्प नंद भए ढोटा। नैन दोउ ब्रह्मसे परम सोभातसे भक्तको जैसे शुभ हंस जोटा ॥ देवदुंदुभि बजी अमर आनंद भए पुहुपगण वरषहीं चैन जान्यो। सूर वसुदेवसुत रोहिणी नंद धनि धनि मिल्यो भुवभार अखिल जान्यो ॥ १७ ॥

राग रामकली ॥ तुरत मारचो कंस देवनाथा। निदरि मारचो असुर पूतना आदिते धरणि पावन करी भई सनाथा ॥ लोक लोकन विदित कथा तुरतहि गई करन अस्तुतिहि जहँ तहां आए। देवदुंदुभि पुहुपवृष्टि जै ध्वनि करैं दुष्ट यह मारि सुरपुर पठाए ॥ केश गहि करषि यमुनाधार डारिदै सुन्यो नृपनारि पति कृष्ण मारचो। भई व्याकुल सबै हेतु रोवन लागीं मरनकी तुरत जोहत विचारचो ॥ गये तहं श्याम बलराम बोधी सबै कहति तब नारि तुम करी नैसी। नृप सुनहु वाम इह काम ऐसोइ रह्यो जानि यह बात क्यों कहति ऐसी ॥ मरति काहे कहा तुमहिंकौ यह भई जानि अज्ञान तुम होति काहे। सूर नृप नारि हारि वचन मान्यो सत्य हरष है श्याममुख सबनि चाहे ॥ १८ ॥

राग कल्याण रानिन परबोधि श्याम महलद्वार आए। कालनेमिवंश उग्रसेन सुनत धाए ॥ झुकि चरण परचो आइ त्राहि त्राहि नाथा। बहुतै अपराध परे छिनहुमें सनाथा ॥ महाराज कहि श्रीमुख लियो उर लाई। हमको अपराध क्षमहु करी हम ढिठाई ॥ तबहीं सिंहासन पाउँ उग्रसेन धारे। छत्र शिर धराइ चमर अपने कर ढारे ॥ ठाढे आधीन भए देव देव भाषैं। अपने जनको प्रसाद सारी शिर राखैं ॥ मोकों प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी। घटघटकी जानतहौ तुम अंतर्यामी ॥ तौ नृप कहत कहा तुमको यह केती। सेवा तुम जिती करी पुनि देहौं तेती ॥ रजक धनुष गजमल्लन कंस मारि काजा। सूरज प्रभु कीन्हों तब उग्रसेन राजा ॥ १९ ॥

राग बिलावल ॥ उग्रसेनको दियो हरि राज। आनंदमगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीब्रजराज ॥ जहां तहांते यादव आए डरेडरे जे गए पराइ। मागध सूर करत सब अस्तुति जै जै जै श्रीयादवराइ ॥ युगयुग विरद इहै चलि आयो भए बलिके द्वारे प्रतिहार। सूरदास प्रभु आज अविनाशी भक्तन हेतु लेत अवतार ॥ २० ॥

राग विलावल ॥ मथुरा लोगनि बात सुनी यह उग्रसेनको राज दियो। सिंहासन बैठारि कृपा करि आपु हाथसों चमरलियो ॥ मात पिताको संकट हरि हैं देवन जै ध्वनि शब्द कियो। रानी सबै मरतते राखीं उनते प्रभु नहिं और वियो ॥ अबहीं सुनि वसुदेव देवकी हरषित ह्वै है दुहुँनि हियो। सूरदास प्रभु आइ मधु पुरी दरशनते पुरलोग जियो ॥ २१ ॥

राग रामकली ॥ मथुराके लोगन सुख पाए । नटवर भेष काछनी काछे नँदनंदन संग अक्रूरके आए ॥ प्रथमहिं रजक मारि अपनेकर गोपवृंद पहिराए । तोरि धनुष लीला नटनागर तब गजखेल खिलाए ॥ रंग भूमि मुष्टिक चाणूर हति भुजबल तार बजाए । नगर नारि देहिं गारि कंसको अजगुत युद्ध बनाए ॥ बरषहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी बजाए । चढ़ि चढ़ि अमर विमान परमसुख कौतुक अमर छाए ॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए । मात पिता बंदिते छोरि हैं सूर सुयश गुणगाए ॥ २२ ॥

राग रामकली ॥ मथुरा घरघरनि यह बात । रजक धनुष गज मल्ल मारे तनकसे नंद-तात ॥ धन्य माता पिता धनि वह धन्य धनि वह रात । जब लियो अवतार धरणी धन्य धनि सोभात ॥ हंसकेसे जोट दोऊ असुर कियो निपात । सूर जोधा सबै मारे कहा जानत घात ॥ २३ ॥

अध्याय ॥ ४५ ॥ वसुदेवदर्शन कुबिजा गृह आगमन नंदबिदा गुरुपुत्रहेतु ॥ सुन्यो वसुदेव दोउ नंदसुवन आए । त्रियासो कहत कछु सुनति है री नारि रातिहू सुपन कछु ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहि नृपति मांगे बोलि तुरत आए आनि कंस मारे । कहा पिय कहत सुनि है बात पौंरिया जाय कैहे रहौ मष्ट धारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पति परस्पर कहां हम पाप करि जन्म लीन्हों । सात देखत बधे एक ब्रज दुरि बच्यो इतेपर बांधि हम पंगु कीन्हों ॥ मारि डारै कहा बंदिको जीवन धिग मीच हमको नहीं मनन भूल्यो । मरै वह कंस निर्वंस विधना करै सूरक्योंहूं होइ निर्मूल्यो ॥ २४ ॥

राग जैतश्री ॥ इहै कहत वसुदेव त्रिया जिनि रोवहु हो । भाग्य विवश सुख दुःख सकल जग जोवहु हो ॥ जल दीन्हें कर आनि कहत मुख धोवहु नारी । कहियत है गोपाल हरन दुख गर्व प्रहारी ॥ कबहुं प्रगट वै होइँगे कृष्ण तुम्हारे तात । आजु कालिह हरि आइ हैं यह सपनेकी बात अबजिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानो । देखत जाइ बिलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयो त्रिया सत्यकरि मानि । त्रिभुवनपति तेरे सुवन हैं तोहिं मिलैंगे आनि॥यह अंतर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे । तहां लै गए अक्रूर श्याम बलराम पधारे । ब्रज शिला द्वारे दियो दरशनते गयो छूटि । सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥ जो देखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा आए । दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाइ मिले पितु मातको यह कहि मैं निजुतात । मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंस डरात ॥ तुरत बंदिते छोरि कह्यो मैं कंसहि मारचों । योधा सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछारचों ॥ जिय अपने जिनि डर करौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख बिसरौ अब सुख करौ अब काहे पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधरि रोवन लागी । तब बोले बलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहे कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहां रहे मातपिता बलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखौ नहिं मेटै कोई । जोइ जोइ मनकी साध कहौ मैं करिहौं सोई ॥ जे दिन गए सु

ते गये अबसुख लूटहु मात। तात नृपति रानी जननि जाके मोसो तात॥ जो मन इच्छा होइ तुरत देओ मैं करिहौं। गगन धरणि पाताल जात कतहूँ नहिं डरिहौं॥ मात हृदयकी जब कही तब मन बढचो अनंद। महर सुवन मैंतौ नहीं मैं वसुदेवको नंद॥ राज करौ दिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर घरको॥ रमा सेवकिनी देउँ करि करजोरै दिन याम। अब जननी दुख जिनिकरौ करौ जु पूरनकाम॥ धनि यदुवंशी श्याम चहूँ युग चलत बड़ाई। शेष रूप मैं राम कहत नहिं बात बनाई॥ सूरज प्रभु दनुकुलदहन हरन करन संसार। ते पाए सुत तुमहिं करि करौ जु सुख विस्तार॥ २५॥

राग देवगंधार॥ मेरे माथे राखो चरन। दीनदयालु कंस दुखभञ्जन उग्रसेन दुखहरन॥ परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन। मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल धरन॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन। आए सूरदासके जीवन भवजल-नवका तरन॥ २६॥

राग रामकली॥ तब वसुदेव हरषित गात। श्याम रामहिं कंठ लाए हरषि देवै मात। अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैजैकार॥ दुष्टदलि सुखदियो सन्तन ए वसुदेवकुमार। दुखगयो बहि हरष पूरन नगरके नर नारि॥ भयो पूरव फल सम्पूरन लह्यो सुत दैतारि॥ तुरत विप्रन बोलि पठए धेनु कोटि मँगाइ। सूरके प्रभु ब्रह्मपूरण पाइ हरषे राइ॥ २७॥

राग काफी॥ आजु हो निसान बाजै वसुदेव राइकै। मथुराके नर नारि उठे सुख-पाइकै॥ अमर विमान सब कहैं हरषाइकै। फूले मात पिता दोऊ आनन्द बढायकै॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइकै। धेनु जे संकल्प राखीं लई ते गनाइकै॥ तांबे रूपे सोने सजि राखीं वै बनाइकै। तिलक विप्रन बंदि दई वै दिवाइकै॥ मागध मंगन जन लेत मन भाइकै॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइकै। सब पुर नारि आईं मंगलन गाइकै॥ अम्बर भूषण पठै दई पहिरायकै। अखिल भुवन जन कामना पुराइकै। पुरजन गन धेनु देतहैं लुटाइकै॥ सूर जन दीन द्वारे ठाढो भयो आयकै॥ कछू कृपाकरि दीजै मोहूकौं दिवाइकै॥ २८॥

यज्ञ उपवीत उत्सव॥ राग बिलावल॥ बिसरयो कुलव्यवहार विचार। हरि हलधरको दियो जनेऊ करि षटरस जेवनार॥ जाके श्वास उसाँस लेतमें प्रगटभए श्रुति चार। तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार॥ विधिसों धेनु दई बहु विप्रन सहित सर्व लंकार। यदुकुल भयो परम कौतूहल जहांतहां गावत नर नार॥ मात देवकी परम मुदितह्वै देत निछावर बारंबार। सूरदासकी इहै अशीश है चिरजीवो दोउ नंदकुमार॥२९॥

राग धनाश्री॥ आजु परम दिन मंगलकारी। लोक लोकको टीको आयो मुदित सकल नर नारी॥ शिव सुरेश शेष औरहु को गनै चतुरानन कर थारी। हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटसारी॥ बाजतढोल निशान शंख रव होत कुलाहल भारी। अपने अपने लोक चले सब सूरदास बलिहारी॥ ३०॥

राग बिलावल ॥ जब यदुपति कुल कंसहि मारचो । तिहूं भुवन भयो शोर पसारचो ॥ तुरत मञ्चते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत बिलम न लायो ॥ केश गहे पुहुमी घिसटायो । डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहुँ भुवन डगाई । ताको मारयो हलधर भाई ॥ जाके धनुष टँकोरत हाथा । आसन छाँड़ि भजे सुरनाथा ॥ मारत ताहि बिलंब न कीन्हों । उग्रसेनको राजस दीन्हों ॥ जै हो जै वसुदेवकुमारा । जै हो जै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि मैया । धनि यशुमति त्रिभुवनपति धैया ॥ धन्य अक्रूर मधुपुरी लाए । सुर अंमर जै जै ध्वनि गाए ॥ दनुज वंश निरवंश कराए । धरनी शिरते भार गँवाये ॥ मात पिता बंदिते छोराए ॥ यह बाणी सुरलोकनि गाए ॥ जो जैसेतैसे तेहिभाए । सूरज प्रभु सबको सुखदाये ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री ॥ मथुरा दिनदिन अधिक बिराजै । तेज प्रतापराइ केशोको तीनिलोक पर गाजै ॥ कोटिक तीरथ पग पग जाके मधु विश्रात विराजै । करि अस्नान प्रात यमुनाको जियत मरत भैभाजै ॥ श्रीविट्ठल विपुल विनोद विहारन व्रजको वसिबो छाजै ॥ सूरदास सेवक उनहींको कहत सुनत गिरिराजै ॥ ३२ ॥

कंस मारि सुर कारज किए । माता पिता बंदिते छोराए दुख बिसरचो आनंद हिये ॥ उग्रसेनको धाय मिले हरि अभय अचल करि राज्य दियो । असुरवंश निरवंश छिनकमें ऐसो नाहिं कोउ और बियो ॥ मिली कूबरी चंदन लैकै ऐसेहि हरिको नाम लियो । सुनहु सूर नृप पास जाति है बीच सुकृति अतिदरश दियो ॥ ३३ ॥

राग रामकली ॥ कूबरी पूरब तपकरि राख्यो । आए श्याम भवन ताहीके नृपतिमहल सब नाख्यो ॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवत हैं बीच मिली यह धाइ । तेहि अनुरागवश्य भए ताके सो हित कह्यो न जाइ ॥ देव काज करि आवन कहि गए दीन्हों रूप अपार । कृपा दृष्टि चितवतही श्रीभई निगम न पावत पार ॥ हमते दूरि दीनके पाछे ऐसे दीन-दयाल । सूर सुरनकरि काज तुरतहीं आवत तहां गोपाल ॥ ३४ ॥

कियो सुरकाज गृह चले ताके । पुरुष अरु नारिको भेदभेदा नहीं कुलिन अकुलीन आवतहौ काके ॥ दास दासी श्याम भजनते हूजिए रमा सम भई सो कृष्ण दासी । मिली वह सूर प्रभु प्रेमचंदन चरचिकै मनो कियो तप कोटि कासी ॥ ३५ ॥

राग रामकली ॥ भक्त वछल श्रीयादवराई । गेह कूबरीके पगधारे जाति पाँति बिसराई ॥ पूरब भाग मानि तिन अपने चरण गही उठि धाई । सुरति रही नाहिं गेह देहकी आँनद उर न समाई ॥ प्रभुगहि बाँहपास बैठारी सो सुख कह्यो न जाइ । सूरदास प्रभु सदा भक्तवश रंक न गनहि न राइ ॥ ३६ ॥

राग नट ॥ कुबिजासदन आए श्याम । कृपा करि हरि गए प्रथमहि भई अनुपम वाम ॥ प्रीतिके वश दीनबंधु सु भक्तवत्सल नाम । मिली मारग मलय लैकरि भए पूरण काम ॥ उर्वशी पटतरहि नाहीं रमाके मनताम । सूर प्रभु महिमा अगोचर बसे दासी धाम ॥ ३७ ॥

राग धनाश्री ॥ कुबिजा हरिकी दासी आहि । जैसे आपु भाजि गोकुल रहे तैसे राखी ताहि ॥ रूपरतन दुराइहो राख्यो जैसे नली कपूर । जैसे छाप अमोल रतन भरि

कह जानै जो क्रूर ॥ वैसेहि रही कूबरी दासी अविनाशीकी आहि । सूरदास प्रभु कंस मारिकै लई आनि तिहि चाहि ॥ ३८ ॥

मथुराके नरनारि कहै । कहा मिली कुबिजा चंदनलै कहा श्याम तेहि कृपा चहै ॥ कहा तपस्या करि यह राख्यो जहां तहां पुर इहै चहै । कछु नहिं कहि आवत हरि देखि इहै कह्यो प्रभु हेत वहै ॥ तबहिं कृपाकरि सुंदरि कीन्ही यह महिमा मोहिं कहत न आवै । सूरदास भाग कूबरीको कौन ताहिको पटतर पावै ॥ ३९ ॥

कुबिजासी भागिनि को नारी । कंसहि चंदन लिए जातही बीचमिले ताको दैतारी ॥ हरि करि कृपा करि पटरानी कुबिज मिटायो डारि । इहई बात मधुपुरी जहँ तहँ दासी कहत डरत जिय भारि ॥ कुबिजा कहत न भूल्यो कोऊ ताहि उठत दै दै सब गारि । सुनहु सूर रानी सुनि पावै त्रास होत जिन मारै डारि ॥ ४० ॥

राग धनाश्री ॥ कुबिजा तौ बडभागी है । करुणा करि हरि जाहि निवाजी आपु रहे तहँ राजी है ॥ पूरब तप फल बिलसन लागी मनके भाव पुरावति है । मथुरा नर नारिन मुख बानी रह्यो जहँतहँ जैजै है ॥ दैत्य बिनाशी तुम तहां आए यह लीला जानै पैवै । सूरदास प्रभु भावहिके वश मिलत कृपाकै अति सुख दैवै ॥ ४१ ॥

श्रीवसुदेव वचन राजा प्रति ॥ राग रामकली ॥ हरिकी कृपा जापर होइ । ताहि कछु यह बात नाहीं हृदय देखो जोइ ॥ कहा संशय करत याको कितिक है यह बात । असुर सैन सँहारि डारे भक्तजनसों नात ॥ हरन करन समरथ येई हैं कहौं बारंबार । सूर हरिकी कृपाते खल तरिगए संसार ॥ ४२ ॥

कंसवधलीला दूसरी राग बिलावल ॥ कृष्णकृपा सबहीते न्यारी । कोटि करै तप नहीं मुरारी ॥ भाव भजन कुबिजा भई प्यारी । दनुज भाव बिनु मारे डारी ॥ प्रथमहि रजक मारि पुर आए । धनुष यज्ञ कहँ कंस बोलाए ॥ तोरि कोदंड बीर सब मारे । हित कुबिजाके धाम सिधारे ॥ रूपराशि निधि ताको दीन्हों । आवन कह्यो गमन तब कीन्हों ॥ तहां कुवलिया राख्यो द्वारे । जात श्याम बलराम बिचारे ॥ माली मिल्यो माल शुचि लैकै । लीन्हों कंठ श्याम अति रुचिकै ॥ मनकामना तुरत फल पायो । कोटि कोटि मुख अस्तुति गायो ॥ आतुर गयो कुवलिया पासा । सूरज चंद्र धरणि परगासा ॥ बालक देखि महावत हरष्यो । कान्ह पूछ धरि तुछकारि परष्यो ॥ कौतुक करि मतंग तब मारचो । गहि पटक्यो तनु नेक न टारचो ॥ दुहुँन एक इक दंत उपारचो । जहाँ मल्ल तहँको पग धारचो ॥ देखत रूप त्रास जिय आन्यो । मनमन काल आपनो जान्यो ॥ तब कोमल दरशे यदुराई । तुरत गए आगे सब धाई ॥ मारे मल्ल एक नहिं उबरचो । पटक धरणि नृप श्रवणन घुमरचो ॥ क्रोधसहित तब कंस प्रचारचो । ताहि प्रगटि तुरतहिं तेहि मारचो ॥ अमर नाग नर कहि कहि भाखैं । सदा आपने जनको राखैं ॥ राजा उग्रसेन कहवाए । मात पिता बंदिते छोडाए ॥ इतने काज किए हरि नीके । कुबिजा प्रेम बँधे हरि हीके ॥ आतुर हरि ताके गृह आए । रानिन बोधि महल नहिं भाए ॥ चितवत मंदिर भए

अवासा। महल महल लाग्यो मणि पासा ॥ जबहिं सुने कुबिजा हरि आए। पाटम्बर पाँवडे डसाये ॥ कुबिजाते भई राजकुमारी। रूप कहा कहौं कृष्ण पियारी ॥ टेढी जे हरि सूधी कीन्हीं। लक्षण अंग अंग प्रति दीन्हीं ॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी। मथुरा घरघर सबही जानी ॥ गोप सखा यह सुनत न माने। त्रासहिमें सब रहतसकाने ॥ मारचो कंस सुनत सब शंके। बलमोहन आए नहिं दंके ॥ ब्रजते चले भए षट यामा। व्याकुल महरि होति लै नामा ॥ प्रजा जानि मनमन डरपाहीं। कैसे बलमोहन ब्रज जाहीं ॥ यहि अंतर हरि आए तहँई। नंद गोप सब राखे जहँई ॥ नृप उद्धव अक्रूरहि लीन्हों। तहां गवन प्रभु सूरज कीन्हों ॥ ४३ ॥

राग बिलावल ॥ यदुबंशी कुल उदित कियो। कंस मारि पुहुमी उद्धारी सुरन कियो निर्भय सु हियो ॥ घरघर नगर अनन्द बधाई मनवांछित फल सबनि लहो। निगड तोरि मिलि मात पिताको हरष अनल करि दुखहि दहो ॥ उग्रसेन मथुरा करि राजा ऐसो प्रभु रक्षक जनको। कहुँ जनमें कहुँ कियो पान पय राखि लेत भक्तन पनको ॥ आपुन गए नन्द जहँ बासा हलधर अग्रज संग लिए। सूर मिले नँद हरषवन्त ह्वै ब्रज चलि हैं अति हरष हिए ॥ ४४ ॥

अरसपरस सब ग्वाल कहैं। जब मारचो हरि रजक आवतहि मन जान्यो हम नहिं निब हैं। वैसो धनुष तोरि रुब योधा तिन मारत नहिं बिलम करचो। मल्ल मतंग तिहूँपुर गामी छिनकहिमें सो धरणि परचो ॥ वैसे मल्लनि दांव बिसारे मारि कंस निरबंश कियो। सुनहु सूर ये हैं अवतारी इनते प्रभु नहिं और बियो ॥ ४५ ॥

नंद गोप सब सखा निहारत यशुमतिसुतको: भाव नहीं। उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत सुफलकसुत वैसे सँगही ॥ जबहीं मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन इह व्यापिगई। बोलि उठे यहि अन्तर मधुरे निठुर ज्योति जो ब्रह्ममई ॥ अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नन्द जिय झझकिरहे। सूरदास प्रभुकी लीला यह वसुदेव मोसों वचन कहे ॥ ४६ ॥

राग बिलावल ॥ काहि कहत प्रतिपाल कियो। मोसों कहत होहि जिनि ऐसी नैन ढरत नाहिं भरत हियो ॥ शंकित नंद निरसबानी सुनि बिलम करत कहा क्यों न चलैं। कंस मारि रजधानी दीन्ही ब्रजते बहुरौ आनि मिलैं ॥ मनही मन ऐसी उपजावत वै उत ब्रह्म ब्रह्मदरशी। सूर पिताको मात कौनके रहत सबनमें वै परशी ॥ ४७ ॥

तब बोले हरि नंदसों मधुरे करि बानी। गर्ग वचन तुमसों कही नाहिं निहचै जानी ॥ मैं आयो संसारमें भुवभार उतारन। तिनको तुम धनि धन्य हौ कीन्हों प्रतिपारन ॥ मात पिता मेरे नहीं तुमते अरु कोऊ। एक बेर ब्रजलोगको मिलिहौं सुनौ सोऊ ॥ मिलन हिलन दिन चारिको तुम तो सब जानौं। मोको तुम अति सुख दियो सो कहा बखानौं ॥ मथुरा नर नारी सुनैं व्याकुल ब्रजवासी। सूर मधुपुरी आइकै ये भए अविनाशी ॥ ४८ ॥

राग टोडी ॥ निठुर वचन जिनि कहौ कन्हाई। अतिही दुसह सह्यो नहिं जाई ॥ तुम हँसिके बोलत ए बानी। मेरे नयन भरत है पानी ॥ अब ए बोल कबहुँ

जिनि बोलौ । तुरत चलौ ब्रज आँगन डोलौ ॥ पंथ निहारत यशुमति ह्वैहै । तुम बिन मोको देखि सुखैहै ॥ तब हलधर नंदहिं समुझावत । कछु करि काज तुरतब्रज आवत ॥ जननि अकेली ब्याकुल ह्वैहै । तुमहि गए कछु धीरज लैहै ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो । जाइ कहां उर ध्यान तुम्हारो ॥ व्याकुल होन जननि जिनि पावै । बारबार वहिकहि समुझावै ॥ ब्याकुल नँद सुनत ए बानी । डसि मानो नागिनी पुरानी ॥ ब्याकुल सखा गोप भए ब्याकुल । अंतकदशी भयो भय आकुल ॥ सूर श्याम मुख निरखत ठाढे॥ मनो चितेरे लिखि सब काढे ॥ ४९ ॥

राग सोरठ ॥ गोपालराइ हौं न चरण तजि जैहौं । तुमहिं छाँडि मधुवन मेरे मोहन कहा जाइ ब्रज लैहौं ॥ कैहौं कहा जाइ यशुमतिसों जब सन्मुख उठि ऐसे । प्रातसमय दधि मथत छाँडिकै काहि कलेऊ देहैं । बारहवर्ष दया हम ठाढो यह प्रताप बिनुजाने । अब तुम प्रगट भए वसुदेवसुत गर्गवचन परमाने ॥ कत हमलागि महारिपु मारे कत आपदा बिनासी । डारि न दियो कमलकरते गिरि दबि मरते ब्रजवासी ॥ बासर संग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु चरैहौ । क्यों रहिहैं मेरे प्राण दरश बिनु जब संध्या नहिं ऐहौ ॥ अब तुम राज्य करौ कोटिक युग मातपिता सुख देहौ । कबहुँक तात तात मेरे मोहन या मुख मोसों कैहो ॥ ऊरधश्वास चरणगति थाक्यो नैन नीर न रहाइ । सूर नंद बिछुरेकी वेदन मोपै कहिय न जाइ ॥ ५० ॥

राग बिलावल ॥ वेगि ब्रजको फिरि ये नँदराइ । हमहिं सुत तातको नातो और परचो है आइ ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो सो नहिं जीते जाइ । जहां रहैं तहँ तहाँ तुम्हारे डागे जिनि बिसराइ ॥ मायामोह मिलन अरु बिछुरन ऐसेही जगजाइ । सूर श्यामके निठुर वचन सुनि रहे नयन जल छाइ ॥ ५१ ॥

राग नट ॥ यह सुनि भए ब्याकुल नंद । निठुर बाणी कही जब हरि परि गए दुख-फन्द ॥ निरखि मुखमुख रहे चकृत सखा अरु सब गोप । चरित ए अक्रूर कीन्हें करत मनमन कोप ॥ धाइ चरणन परे हरिके चलहु ब्रजको श्याम । कंस असुरसमेत मारे सुरनके करि काम ॥ मोचि बन्धन राज दीनों हर्ष भए बसुदेव । सूर यशुमति बिनु तुम्हरे कौन जानै देव ॥ ५२ ॥

राग सोरठ ॥ नंद बिदा ह्वै घोष सिधारौ । बिछुरन मिलन रच्यो बिधि ऐसो यह संकोच निवारौ ॥ कहियो जाइ यशोदा आगे नैन नीर जिनि ढारौ । सेवा करी जानि सुत अपने कियो प्रतिपाल हमारौ ॥ हमैं तुम्हैं कछु अन्तर नाहीं तुम जिय ज्ञान बिचारौ । सूरदास प्रभु यह बिनती है उर जिनि प्रीति बिसारौ ॥ ५३ ॥

राग सोरठ ॥ मेरे मोहन तुमहिं बिना नहिं जैहौं । महरि दौरि आगे जब ऐहै कहा ताहि मैं कैहौं ॥ माखन मथि राख्यो ह्वैहै तुम हेतु चलौ मेरे बारे । निठुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे । सुख पायो बसुदेव देवकी अरु सुख सुरन दियो । यहै कहत नँद गोप सखा सब बिदरन चहत हियो ॥ तब माया जडता उपजाई ऐसे प्रभु यदुराई । सूर नंद परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई ॥ ५४ ॥

राग नट ॥ नंदहि कहत हरि ब्रज जाहु। कितिक मथुरा ब्रजहि अंतर जिय कहा पछिताहु ॥ कहा ब्याकुल होत अतिही दूरिहूं कहुँ जात। निठुर उरमें ज्ञान वरत्यो मानि-लीन्हों बात ॥ नंद भए कर जोरि ठाढे तुम कहे ब्रज जाउ। सूर मुख्य यह कहत वाणी चित नहीं कहुँ ठाउ ॥ ९९ ॥

राग बिलावल ॥ तुम मेरी प्रभुता बहुत करी। परम गँवार ग्वाल पशुपालक नीच दशा लै उच्च धरी ॥ रोग दोष संताप जनमके प्रगटतही तुम सबै हरी ॥ अष्ट महासिधि और नवौ निधि करजोरे मेरे द्वार खरी ॥ तीनिलोक अरु भुवन चतुर्दश वेद पुराणन सही परी। सूरदास प्रभु अपने जनको देत परम सुख घरी घरी ॥ ९६ ॥

राग रामकली ॥ उठे कहि माधौ इतनी बात। जिते मान सेवा तुम कीन्हीं बदलो दयो न जात ॥ पुत्रहेतु प्रतिपाल कियो तुम जैसे जननी तात। गोकुल वसत खवावत खेलत दिवस न जान्यो जात ॥ होहु बिदा घरजाहु गुसाईं माने हरियो नात। ठाढो थक्यो उतर नहिं आवै लोचन जल न समात ॥ भए बलहीन खीन तनुकंपित ज्यों बया-रिवश पात। धकधकात मन बहुत सूर उठि चले नंद पछितात ॥ ९७ ॥

राग नट ॥ फिरिकरि नंद न उत्तर दीन्हों। रोमरोम भरिगयो वचन सुनि मनहुँ चित्र-लिखि कीन्हों ॥ यहतो परंपरा चलिआई सुख दुख लाभ अरु हानि। हमपर बबा मया-करि रहियो सुत अपनो जिय जानि ॥ को जलपै काके पल लागे निरखि वदन शिर नायो। दुखसमूह हृदये परिपूरण चलत कंठ भरिआयो ॥ अधअध पद भुव भई कोटि गिरि जौलगि गोकुल पैठो। सूरदास अस कठिन कुलिशते अजहुँ रहत तनु बैठो ॥ ९८ ॥

राग धनाश्री ॥ चले नंद ब्रजको समुहाइ। गोप सखा हरि बांधि पठाए सबै चले अकुलाइ ॥ काहू सुधि न रही तबकी कछु लटपटात परे पाइ। गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मम पुनि उतहि चलाइ ॥ विरहसिंधुमें परे चेतबिनु ऐसेहि चले बहाइ। सूर श्याम बलराम छाँडिकै ब्रज आये नियराइ ॥ ९९ ॥

राग भैरव ॥ बार बार मग जोवति माता। ब्याकुल बिन मोहन बल भ्राता ॥ आवत देखि गोप नँद साथा। विवि बालक बिनु भई अनाथा ॥ धाई धेनु बच्छ ज्यों ऐसे। माखन बिना रहैं धौं कैसे ॥ ब्रजनारी हरषित सब धाई। महरि जहाँ तहँ आतुर आई ॥ हरषित मात रोहिणी धाई। उर भरि हलधर लेहुँ कन्हाई ॥ देखे नँद गोप सब देखे बल मोहनको तहां न पेखे ॥ आतुर मिलन काज ब्रजनारी। सूर मधुपुरी रहे मुरारी ॥ ६० ॥

अथ नंद ब्रज आगमन यशोदावचन नंद प्रति ॥ राग सोरठ ॥ नंदहि आवत देखि यशोदा आगे लैनगई। अति आतुर गति कान्ह लैनको मन आनंद भई ॥ कहँ नवनीन चोर छाँडे मेरे देखत नारि नई। तेहि खन घोष सरोवर मानो पुरइनि हेममई ॥ गर्ग कथा तब कहि जु सुनाई सो अब प्रगट भई। सूर मोहिं फिरिफिरि आवत गहि झग-रत नेत रई ॥ ६१ ॥

राग कल्याण ॥ श्याम राम मथुरा तजि नंद ब्रजहि आए। बारबार महरि कहति जनम धिग कहाए ॥ कहूं कहनि सुनी नहीं दशरथकी करनी। यह सुनि नँद ब्याकुल

ह्वै परे मुरछि धरनी ॥ टेरि टेरि पुहुमि परति व्याकुल ब्रजनारी । सूरज प्रभु कौन दोष हमको जु बिसारी ॥ ६२ ॥

राग सारंग ॥ उलटि पग कैसे दीन्हों नंद । छाँडे कहाँ उभय सुत मोहन धिग जीवन मतिमंद ॥ कै तुम धन यौवन मदमाते कै तुम छूटे बंद । सुफलकसुत वैरी भयो हमको लैगयो आनँदकंद ॥ राककृष्ण बिन कैसे जीजै कठिन प्रीतिकै फंद । सूरदास प्रभु भई अभागिनि तुमबिनु गोकुलचंद ॥ ६३ ॥

राग मलार ॥ दोउ ढोटा गोकुलनायक मेरे । काहे नंद छाँडि तुम आए प्राणजिवन सबकेरे ॥ तिनके जात बहुत दुख पायो रोरि परी यह खेरे । गोसुत गाइ फिरत हैं दह दिश बने चरित्रनथोरे ॥ प्रीति न करी राम दशरथकी प्राण तजे बिन हेरे । सूर नंदसों कहति यशोदा प्रबल पाप सब मेरे ॥ ६४ ॥

राग बिहागरो ॥ यह गति करत नहिं छाजी । हरिबिन विकल भयो न गयो परि कुल-कुठार जननी कत लाजी ॥ राम कृष्ण तजि गोकुल आए छतियां क्षोभ रही क्यों साजी । कहा अकाज भयो दशरथको लइ जु गयो अपनी जग बाजी ॥ बातै पै रहि रहति कहनको सब जग जात कालकी खाजी । सूर यशोदा कहति सु धिग मति जो गिरिधरन विमुखह्वै भाजी ॥ ६५ ॥

राग सोरठ ॥ यशोदा कान्ह कान्हकै बूझै । फूटि न गईं तिहारी चारौ कैसे मारग सूझै ॥ इकतनु जरोजात विनदेखे अब तुम दीने फूक । यह छतिया मेरे कुँवर कान्हबिनु फाटे न गए ह्वै टूक ॥ धिक तुम धिगवै चरण अहो पति अध बोलत उठि धाए । सूर श्याम बिछुरनकी हमपै देन बधाई आए ॥ ६६ ॥

नंद हरि तुमसों कहा कह्यो । सुनिसुनि निठुर वचन मोहनकै क्योंकरि हृदय रह्यो ॥ छाँडि सनेह चले मंदिरकत दौरि न चरन गह्यो ॥ फाटि न गई वज्रकी छाती कत यहि शूल सह्यो ॥ सुरति करत मोहनकी बातैं नैनन नीर बह्यो । सुधि न रही अति गलित गात भयो जनु डसिगयो अह्यो ॥ कृष्ण छाँडि गोकुल कत आए चाखन दूध दह्यो । तजे न प्राण सूर दशरथलौं हुतो जन्म निबह्यो ॥ ६७ ॥

मेरो अति प्यारो नँदनंद । आए कहाँ छाँडि तुम उनको पोचकरी मतिमंद ॥ बल मोहन दोउ पीड नयनकी निरखतही आनंद । सरवर घोष कुमोदिनि ब्रजजन श्यामवदन बिनचंद ॥ काहे न पाँइ परे वसुदेवके घालि पाग गरे फंद । सूरदास प्रभु अबके पठवहु सकल लोक मुनिवंद ॥ ६८ ॥

अथ नंदवचन यशोदा प्रति ॥ राग रामकली ॥ तब तू मारिबोई करति । रिसनि आगे कहि जो आवत अब लै भाँडे भरति ॥ रोसकै करदाँवरी लै फिरति घरघर धरति । कहिन हिय करि तब जो बाँध्यो अब वृथाकरि मरति ॥ नृपति कंस बुलाइ पठयो बहुतकै जिय डरति । इह कछू विपरीत मो मनमाँझ देखी परति ॥ होनहारी होइहै सोइ अब यहां कत अरति । सूर तब किन फेरि राखे पाइ अब केहि परति ॥ ६९ ॥

यशोदा वचन नंदप्रति ॥ राग अडानो ॥ कहा ल्यायो तजि प्राण जिवन धन । रामकृष्ण कहि मुरछि परी धर यशुदा देखत लोगन ॥ विद्यमान हरि वचन श्रवण सुनि कैसे गए न

प्राण छूटि तन । सुनी कथा दशरथकी तऊ नहिं लाज भई तेरे मन ॥ मंद हीन अति भयो नंदअति होत कहा पिछताने छिनछिन । सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी ल्यावहु सुत करि कोटि जतन ॥ ७० ॥

समूह ब्रजलोग वचन ॥ राग केदारो ॥ कहो नंद कहां छाँडे कुमार । कैसे प्राण रहे सुत बिछुरत पूछैं गोपी ग्वार ॥ करुणा करै यशोदा माता नैनन नीर बहै असरार । चितवत नंद ठगेसे ठाढे मानो हारचो हेम जुआर ॥ मुरली नहिं सुनिअतहै ब्रजमें सुर नर मुनि नहिं करतहै बार । सूरदास प्रभुके बिछुरेते कोऊ नहीं झांकते द्वार ॥ ७१ ॥

अथ ग्वालवचन राग नट ॥ ग्वालन कही ऐसी जाइ । भए हरि मधुपुरी राजा बडे वंश कहाइ ॥ सूत मागध वदत विरदहि वरणि वसुद्यौ तात । राजभूषण अंग भ्राजत आहिर कहत लजात ॥ मात पितु वसुदेव देवै नंद यशुमति नाहिं । यह सुनत जल नैन ढारत मीजि कर पछिताहिं ॥ मिली कुबिजा मलै लैकै सो भई अरधंग । सूर प्रभु वश भए ताके करत नानारंग ॥ ७२ ॥

अथ गोपीवचन कुबजाप्रति परस्पर तरक वदत ॥ राग गौरी ॥ कुबिजा मिली कहौ यह बात । मात पितावसुदेव देवकी मन दुख सुख हरषात ॥ सुंदरि भई अंग परसतहीं करी सुहागिनि भारी । नृपति कन्ह कुबिजा पटरानी हँसति कहति ब्रजनारी ॥ सौतिशाल उरमें अति शाल्यो नखशिखलौं भहरानी । सूरदास प्रभु ऐसेई भाई कहति परस्पर बानी ॥७३॥

राग कल्याण ॥ कुबिजाको नाम सुनत विरह अनल जूडी । रिसन नारि झहरि उठीं क्रोध मध्य बूडी ॥ आवनकी आश मिटी ऊरध सब श्वासा । कुबिजा नृपदासी हमसब करी निरासा ॥ लोचन जलधार अगम विरहनदी बाढी । सूर श्याम गुण सुमिरत बैठी कोउ ठाढी ॥ ७४ ॥

राग धनाश्री ॥ कुबिज श्याम सुहागिनि कीन्ही । रूप अपार जाति नहिं चीन्ही ॥ आपु भए पति वह अरधंगी । गोपिन नावँ धरचो नवरंगी ॥ वै बहुरवन नगरकी सोऊ । तैसोइ संग बन्यो अब दोऊ ॥ एक एकते गुणन उजागर । वह नागरि वै तो अति नागर ॥ वह जोइ कहत श्याम सोइ मानत । निशिदिन वाके गुणहि बखानत जानि अनोखी मनहिं चौरावै । सूर प्रभू अब नहिं ब्रज आवै ॥ ७५ ॥

राग रामकली ॥ कुबिजा नई पाई जाइ । नवल आपुन बनिन वेली नगररही खेलाइ ॥ दास दासी भाव मिलि गयो प्रेमते भए एक । निठुर है सखि गए हमते जानि साह अनेक ॥ लेन जब अक्रूर आयो तुरत लाग्यो कान । नई कुबिजा उन सुनाई सूर प्रभु मन मान ॥ ७६ ॥

राग धनाश्री ॥ कैसे री यह हरि करिहैं । राधाको तजिहैं मनमोहन कहा कंसदासी धरिहैं ॥ कहा कहति वह भई रानी वै राजा भए जाइ वहां । मथुरा बसत लखत नहिं कोऊ को आयो को रहत कहां ॥ लाज बेचि कूबरी बिसाही संग न छाँडत एक घरी । सूर ताहि परतीति न काहू मन सिहात यह करनि करी ॥ ७७ ॥

कुबिजा नाहिं तुम देखीहै । दधि बेचन जब जाति मधु पुरी मैं नीके करि पेखी है ॥ महल निकट माळीकी बेटी देखत जेहि नर नारि हँसै । कोटि बार पीतरि ज्यों डाहौ कोटि बार

जो कहा करै ॥ सुनियत ताहि सुंदरी कीन्ही आपु भए ताको राजी । सूर मिलै मन जाहि जाहिसों ताको कहा करै काजी ॥ ७८ ॥

कोटि करो तनु प्रकृति न जाइ । ए अहीर वह दासी पुरकी विधिना जोरी भली मिलाइ ॥ ऐसेनको मुख नाम न लीजै कहा करौं कहि आवत मोहिं । श्यामहिं दोष किधौं कुबिजाको इहै कहौ मैं बूझति तोहिं ॥ श्यामहिं कहा दोष कुबिजाको चेरी चपल नगर उपहास । टेढी टेकि चलत पग धरणी यह जानै दुख सूरज दास ॥ ७९ ॥

राग नट ॥ हरिही करी कुबिजा ढीठ । टहल करती महल महलनि अब सँग बैठी पीठ ॥ नेकही मुँह पाइ भूली अति गई इतराइ । जात आवत नहीं कोऊ इहै कहैं पठाइ ॥ वे दिना गए भूलि तोको दिवस दशकी बात । सूर प्रभु दासी लोभाने ब्रज वधू अनखात ॥ ८० ॥

राग नट ॥ देखो कूबरीके काम । अब कहावत पाटरानी बडे राजा श्याम कहत नाहिं कोउ उनहिं दासी वै नहीं गोपाल । वै कहावत राज कन्या वै भए भूपाल ॥ पुरुष केरी सबै सोहै कूबरी केहि काज । सूर प्रभुकी कहा कहिए बेंचि खाई लाज ॥ ८१ ॥

यह सुनि हमहिं आवति लाज । जाय मथुरा कंस मारचो कूबरीके काज ॥ लोग पुरमें बसत ऐसेइ सबन इहै सोहात । कबहुं कोऊ कहत नाहीं श्याम आगे बात ॥ कहा चेरी नारि कीन्हीं कहा आपुन होत । तुम बडे यदुवंश राजा मिले दासी गोत ॥ अजहुँ कहै सुनाइ कोई करैं कुबिजा दूरि । सूर डाहनि मरत गोपी कूबरीके झूरि ॥ ८२ ॥

राग बिलावल ॥ कंस वध्यो कुबिजाके काज । और नारि तुमको न मिली कहुँ कहा गँवाई लाज ॥ जैसे काग हंसकी सम्पति लहसुन सँग कपूर । जैसे कंचन कांच बराबरि गेरू काम सिंदूर ॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मणके तै सोइ उनको साथ । सुनहु सूर हरि गाइ चरैया तौ भए कुबिजा नाथ ॥ ८३ ॥

राग गौरी ॥ भामिनि कुबिजासों रंगराते । राजकुमारि नारि जो पवते तौ कबहिं न अंग समाते ॥ रीझे जाइ तनक चन्दन लै मधुबन मारग जाते । ताकी कहा बडाई कीजै ऐसे रूप लुभाते ॥ ए अहीर वह कंसकी दासी जोरी करी विधातैं । ब्रज वनिता त्यागी सूरज प्रभु बूझी उनकी बातैं ॥ ८४ ॥

राग आसावरी ॥ वै कहा जानैं पीर पराई । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन हरि हलधरके भाई ॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ बनवन धेनु चराई । जे यमुनाजल रंग रंगे हैं ते ब्रजहूं नहिं तजत कराई ॥ उहई भूले देखि कूबरी हम सब गए बिसराई । सूर चातकी बूँद भईहौं हेरत हेरत रही हिराई ॥ ८५ ॥

राग जैतश्री ॥ सखी री काके मीत अहीर । काहेको भरिभरि ढारतिहौ नैन राहके नीर ॥ आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुनके क्षीर । निशि वासर छिन नहिं बिसरत हे जो यमुनाके तीर ॥ मेरे हियरे दौ लागति है जारत तनुकी चीर । सूरदास प्रभु दुखित जानिकै छांडि गए बेपीर ॥ ८६ ॥

अथ श्यामरंगको तरक वदति । राग मलार ॥ सखी री श्याम सबै इक सार । मीठे वचन सुहाये बोलत अंतर जारनहार ॥ भँवर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिनकी चट-

सार । कमलनयन मधुपुरी सिधारे मिटि गयो मंगल चार ॥ सुनहु सखी री दोष न काहू जो विधि लिखो लिलार । यह करतूति इन्हैंकी नाईं पूरब विविध विचार ॥ उमँगि घटानाषि आवै पांवस प्रेमकी प्रीति अपार । सूरदास सरिता सर पोषत चातक करत पुकार ॥ ८७ ॥

राग मलार ॥ सखी री श्याम कहा हितु जानैं । कोऊ प्रीति करै कैसेहूँ वे अपनो गुण ठानैं ॥ देखो या जल धरकी करनी वरषत पोषै आनै । सूरदास सरवस जो दीजै कारो कृतहि न मानै ॥ ८८ ॥

राग सारंग ॥ तिनहिं न पती जैरी जे कृतहि न माने ॥ ज्यों भँवरा रस चाखि चाहिके तहां जाइ जहां नवतन जाने ॥ कोयल काग पालि कहा कीन्हों मिले कुलहि जब भए सयाने । सोई घात भई नंद महरकी मधु बनते जो आने ॥ तब तौ प्रेम विचारि न कीन्हों होत कहा अबके पछिताने । सूरदास जे मनके खोटे अवसर परे जाहिं पहिचाने ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री ॥ तबते मिटे सबै आनंद । या ब्रजके सब भाग संपदा लैजु गए नँदनंद ॥ विह्वल भई यशोदा डोलति दुखित नंद उपनंद । धेनु नहीं पय स्रवति रुचिर मुख चरति नाहिं तृण कंद ॥ विषम वियोग दहत उर सजनी बाढि रहे दुख द्वंद । शीतल कौन करै री माई नाहिं इहां हरिचंद । रथचढि चले गहे नहिं काऊ चाहि रही मतिमन्द । सूरदास अब कौन छोडावै परे विरहाके फन्द ॥ ९० ॥

राग कान्हरो ॥ अब वह सुरति होत कत राजनि । दिनदश रहे प्रीति करि स्वारथ हित रहे अपने काजनि ॥ सबै अजान भए सुनि मुरली वधिक कपटकी बाजनि । अब मन थक्यो सिंधुके खग ज्यों फिरि फिरि शरन जहाजनि ॥ वह नातो तादिनते टूटचो सुफलक सुत मग भाजनि । गोपी नाथ कहाइ सूर प्रभु मारतहौ कत लाजनि ॥ ९१ ॥

राग गौरी ॥ ब्रज री मनो अनाथ कियो । सुर री सखी यशोदा नँदन सुखसंदेश दियो ॥ तब हम कृपा श्याम सुंदरकी कर गिरि टेकि लियो । अरु प्रति गाइ बच्छ ग्वालनको जल कालिंदि पियो ॥ यह सब दोष हमहिं लागतहै बिछुरत फटचो न हियो । सूरदास प्रभु नँदनंदन बिनु कारण कौन जियो ॥ ९२ ॥

राग केदारो ॥ अब तो हैं हम निपट अनाथ । जैसे मधु तोरेकी माखी त्यों हम बिनु ब्रजनाथ ॥ अधर अमृतकी पीर मुई हम बाल दशाते जोरि । सो छिडाय सुफलक सुत लै गयो अनायासही तोरि ॥ जौ लगि पानि पलक मींडत रही तौ लगि चलि गए दूरि । करि निरंध निब है दै माई आँखिन रथपद धूरि ॥ हम निशिदिन करि कृपणकी सम्पति कियो न कबहूं भोग । सूर बिधाता लिखि राखी वह कुबिजाके मुख जोग ॥ ९३ ॥

अथ नन्द यशोदा वचन परस्पर । राग रामकली ॥ इक दिन नंद चलाई बात । कहत सुनत गुण राम कृष्णके ह्वै आयो परभात ॥ वैसेहि भोर भयो यशुमतिको लोचन जल न समात । सुमिरि सनेह विहरि उर अंतर ढरि आवत ढरि जात ॥ यद्यपि वै वसुदेव देवकी हैं निज जननी तात । बार एक मिलि जाहु सूर प्रभु धाइ हूनके नात ॥ ९४ ॥

राग गौरी ॥ चूक परी हरिकी सिवकाई। यह अपराध कहांलौं कहि एकहि कहि नंदमहर पछिताई ॥ कोमलचरण कमल कंटक कुश हम उनपै बनगाइ चराई। रंचक दधिके काज यशोदा बांधे कान्ह उलूखल लाई ॥ इंद्र कोप जानि ब्रज राखे वरुनफांस मान मेरी निठुराई। सूर अजहुँ नातो मानतहै प्रेमसहित करै नंद दोहाई ॥ ९५ ॥

राग सोरठ ॥ हरिकी एकौ बात न जानी। कहौ कंत कहा तज्यो श्यामको अतिहि बिकल पूछति नंदरानी ॥ अब ब्रज सूनो भयो गिरिधर बिनु गोकुलमणि बिलगानी। दशरथ प्राण तज्यो छिन भीतर बिछुरत शारंगपानी ॥ ठ.ढी रही ठगोरी डारी बोलत गदगद बानी। सूरदास प्रभु गोकुल तजिगए मथुराही मनमानी ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ लै आवहु गोकुल गोपालहि। पाइन परिकै बहु बिनती करि बलि छलि बाहुविशालहि ॥ अबकीबार नेकदेखरावहु यहि व्रज अन्द आपने लालहि। गाइन गनत ग्वाल गोसुत संग सिखवत वेणु रसालहि ॥ यद्यपि महाराज सुख संपति. कौन गिनै मोती मणि लालहि। तदपि सूर वे छिन न तजतहैं वा घुँघुचीकी मालहि ॥ ९७ ॥

राग सोरठ ॥ सराहौं तेरो नंद हियो। मोहनसो सुत छांडि मधुपुरी गोकुल आनि जियो ॥ कहा कहौं मेरे लाल लडैते जब तू बिदा कियो। जीवन प्राण हमारे ब्रजको वसुदेव छीनि लियो। कह्यो पुकार पारि पचिहारी बरजत गमन कियो। सूरदास प्रभु श्यामलाल धनलै परहाथ दियो ॥ ९८ ॥

राग बिलावल ॥ यद्यपि मन समझावत लोग। शूलहोत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग ॥ निशिबासर छतियां लै लाऊं बालकलीला गाऊं। वैसे भाग बहुरि फिरि ह्वै हैं मोहन मोद खवाऊं ॥ जा कारण मुनि ध्यान धरै शिव अंग विभूति लगावै। सो बालक-लीला धारि गोकुल ऊखल साथ बंधावै ॥ बिदरत नहीं वज्रको हिरदय हरि बियोग क्यों सहिए। सूरदास प्रभु कमलनैनविनु कौने विधि ब्रज रहिए ॥ ९९ ॥

राग कान्हरो ॥ नंद ब्रजलीजै ठोंकि बजाइ। देहु बिदा मिलिजाहिं मधुपुरी जहँ गोकुलके राइ। नैनन पंथ गयो क्यों सूझ्यो उलटि दियो जब पाइ ॥ रघुपति दशरथ सुनी है पर मरिवे गुण गाइ ॥ भूमि मशान विदितिए गोकुल मनहु धाइ धइ खाइ। सूरदास प्रभु पास जाहिं हम देखैं रूप अघाइ ॥ २७०० ॥

राग सोरठ ॥ माई हौं किन संग गई। हौं ए दिन जानतही बूडी लोगनकी सिखई ॥ मोको वैरी भए कुटुंब सब फेरि २ ब्रज गाडी। जो हौं कैसेहु जान पावती तौ कत आवत छांडि ॥ अब हौं जाइ यमुनजल बहिहौं कहा करौ मोहिं राखी। सूरदास वा भाइ फिर-तहौं ज्यों मधु तोरे माखी ॥ १ ॥

राग मलार ॥ हौं तौ माई मथुराहीपै जैहौं। दासी ह्वै वसुदेवराइकी दरशन देखत रैहौं ॥ राखि राखि एते दिवसन मोहिं कहा कियो तुम नीको। सोऊ तौ अक्रूर गए लै तनक खिलौना जीको ॥ मोहिं देखिकै लोग हँसेगे अरु किन कान्ह हंसै। सूर अशीश जाइ देहौं जिनि न्हातहु बार खसै ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ पंथी इतनी कहियो बात। तुम बिनु इहां कुँवरवर मेरे होत जिते उत-पात ॥ बकी अघासुर टरत न टारे बालक बनहिं न जात। ब्रजपिंजरी रुंधि मानो राखे

निकसनको अकुलात ॥ गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीत वरण कृश गात । परम अनाथ देखियत तुमबिनु केहि अवलंबिये तात ॥ कान्ह कान्ह कै टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत । यह व्यवहार आजुलौं है ब्रज कपट नाट छल ठानत ॥ दशहू दिशिते उदित होत हैं दावानलके कोट । आंखिन मूँदि रहत सन्मुख ह्वै नाम कवच दै ओट ॥ ए सब दुष्ट हते अरि जेते भए एकही पेट ॥ सत्वर सूर सहाइ करो अब समुझि पुरातन हेट ॥ ३ ॥

राग सारंग ॥ कहियो श्यामसों समुझाय । वह नातो नहिं मानत मोहन मनो तुम्हारी धाइ ॥ एकबार माखनके काजै राखे मैं अटकाइ । वाको बिलग मानु जिनि मोहन लागत मोहिं बलाइ ॥ बारहिबार इहै लवलागी गहे पथिकके पाँइ । सूर दास या जननीको जिय राखौ वदन देखाइ ॥ ४ ॥

राग बिलावल ॥ यद्यपि मन समुझावत लोग । शूल होत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुख योग ॥ प्रातकाल उठि माखन रोटी कौ बिन मांगे देहै । अब उहि मेरे कुँवर कान्हको छिनछिन अंकम लैहै ॥ कहियो पथिक जाइ घर आवहु राम कृष्ण दोउ भैया । सूर श्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया ॥ ५ ॥

राग रामकली ॥ मेरो कहा करत ह्वैहै । कहियउ जाइ वेगि पठवहिं गृह गाइनिको ह्वैहै ॥ दीजै छांडि नगर वारी सब प्रथम बोरि प्रतिपारो । हमहूँ जिय समुझें नहिं कोऊ तुम तजि हितू हमारो ॥ आजुहि आजु कालिह कालिहहि करि भलो जगत यश लीन्हों । आजहुँ कालिह कियो चाहतहौ राज्य अटल करि दीन्हों ॥ परदा सूर बहुत दिन चलती दुहुँदुनि फबती छूटि । अंतहु कान्ह आयहौ गोकुल जन्मजन्मकी बूटि ॥ ६ ॥

संदेशो देवकीसों कहियो । हौं तौ धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति रहियो ॥ यदपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहिं कहि आवै । प्रातहि उठत तुम्हारे कान्हको माखन रोटी भावै ॥ तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजिजाते । जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ देती क्रमक्रम करि करि न्हाते ॥ सूर पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन बढ्यो रहत उर सोच । मेरो अलक लडै तो मोहन ह्वैहै करत सँकोच ॥ ७ ॥

राग सोरठ ॥ मेरो कान्ह कमलदल लोचन । अबकी बेर बहुरि फिरि आवहु कहा लगे जिय सोचन ॥ यह लालसा होत जिय मेरे बैठी देखत रैहौं । गाइ चरावन कान्ह कुँवरसों भूलि न कबहूं कैहौं ॥ करत अन्याय न बरजौं कबहूं अरु माखनकी चोरी । अपने जियत नैन भरि देखौं हरि हलधरकी जोरी ॥ एक बेर ह्वै जाहु इहाँलौं अनत कहूँके उत्तर । चारिहु दिवस आनि सुख दीजै सूर पहुनई सूतर ॥ ८ ॥

अथ पन्थीवाक्य देवकी प्रति । राग आसावरी ॥ हौं इहां गोकुलहीते आई । देवकी माई पाँइ लागतिहौं यशुमति इहां पठाई ॥ तुमसों महरि जुहार कह्यो है कहहु तौ तुमहिं सुनाऊँ । बारक बहुरि तुम्हारे सुतको कैसहुँ दरशन पाऊं ॥ तुम जननी जग विदित सूर प्रभु हौं हरिकी हित धाइ । जो पठवहु तौ पाहुन नाते आवहिं बदन दिखाइ ॥ ९ ॥

राग सारंग ॥ जो परि राखतहौ पहिँचानि । तौ अबके वह मोहनमूरति मोहिं देखावहु आनि ॥ तुम रानी वसुदेवगेहिनी हौं गँवारि ब्रजवासी । पठैदेहु मेरो लाड लडैतौ वारौ ऐसी हाँसी ॥ भली करी कंसादिक मारे सब सुरकाज किये । अब इन गैयन कौन चरावै भरि भरि लेतहिये ॥ खान पानपरिधान राजसुख जो कोउ कोटि लडावै । तदपि सूर मेरे बारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥ १० ॥

राग सोरठ ॥ मेरे कुँवर कान्ह बिनु सब कछु वैसेहि धरचो रहै । को उठि प्रात होत लै माखन को कर नेत गहै ॥ सूने भवनयशोदा सुतके गुनि गुनि शूल सहै । दिन उठि घेरत हीं घर ग्वारिनि उरहन कोउ न कहै ॥ जो ब्रजमें आनंद होतो मुनिमनसाहू न गहै । सूरदास स्वामीबिनु गोकुल कौडीहू न लहै ॥ ११ ॥

अथ गोपी विरह अवस्था परस्पर वर्णन । राग सारंग ॥ चलत गुपालके चले । यह प्रीतमसों प्रीति निरंतरहै ना अधरपले ॥ धीरज पहिल करी चलिबेकि जैसी करत भले । धीर चलत मेरे नैनन देखे तिहिछिन अंश हले ॥ अंश चलत मेरी वलयन देखे भए अंग शिथले । मन चलिरह्यो हु तौ पहिलेही सबै चले विमले ॥ एक न चलै अब प्राणसूर प्रभु असलेउसालसले ॥ १२ ॥

राग मलार ॥ लोग सब कहत सयानी बातें । सुनतहि सुगम कहत नहिं आवत बोलि जाइ नहिं तातें ॥ पहिले अग्नि सुनत चंदनसी सती बहुत उमहै । समाचार ताते अरु सीरे पाछे जाइ लहै । कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमलता करिवार । सूरदास शिरदेत शूरमा सोइजानै व्यवहार ॥ १३ ॥

बातनि सबकोइ जिय समुझावै । किहि बिधि मिलनि मिलैं वै माधौ सो विधि कोउ न बतावै ॥ यद्यपि जतन अनेक रची विधि सारि अशन बिरमावै । तद्यपिहठी हमारे नैनन और न देखो भावै ॥ वासर निशा प्राणवल्लभ तजि रसना और न गावै । सूरदास प्रभु प्रेमहि लगिकै कहिये जो कहि आवै ॥ १४ ॥

राग नट ॥ सब मिलि करहु कछू उपाव । मार मारन चढेउ विरहिनि करहु लीनो चाव ॥ हुतासन ध्वज उमँगि उन्नत चलेउ हरि दिश वाउ । कुसुम शर रिपुनंद वाहन हरषि हरषित गाउ ॥ वारि भव सुत तात नावरि अब न करिहौं काउ । बार अबकी प्राणप्यारो विजय सखा मिलाउ ॥ रुचि बिचारि न मान कीजै सोई किन बहि जाउ । सूर प्रभुकी शरण रहिहौं सकल त्रिभुवन राउ ॥ १५ ॥

राग सारंग ॥ करिगए थोरे दिनकी प्रीति । कहँ वह प्रीति । कहां यह बिछुरन कहँ मधुवनकी रीति । अबकी बेर मिलौ मनमोहन बहुत भई विपरीति । कैसे प्राण रहत दरशनबिन मनहुँ गए युग बीति ॥ कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर प्रेम रह्यो तनु जीति । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन भई भुसपरकी भीति ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ॥ प्रीति करि दीनी गरे छुरी । जैसे वधिक चुगाई कपटकन पीछे करत बुरी ॥ मुरली अधर चंप करकांपा मोरमुकुट लटवारि । बंग बिलोकनि लगी लोभ सम सकति न पंख पसारि ॥ तलफत छांडि गए मधुवनको बहुरि न कीनी सार । सूर श्याम सुख संग कल्पतरु उलटि न बैठी डार ॥ १७ ॥

राग मलार ॥ देखी माधोकी मित्राई । आई उघरि कनक कलईसी दै निज गए दगाई ॥ हम जानैं हरि हितू हमारे उनके चित्त ठगाई । छांडी सूरति सब ब्रजकुलकी निठुर लोग भए माई ॥ प्रेम निबाहि कहा वै जानैं सांचे अतिही राई । सूरदास विरहिनी विकलमति कर मींजैं पछिताई ॥ १८ ॥

एकहि बेर दई सब टेरी ॥ तब कत डोरि लगाइ चोरि मनु मुरलि अधर धरि टेरी ॥ बाट घाट बीथी ब्रज घर बन संग लगाए फेरी । तिनकी यह करि गए पलकमें पारि बिरहदुख बेरी ॥ जो परि चतुर सुजान कहावत कही समुझियो मेरी । बहुरि न सूर पाइहौ हमसी बिनदामनकी चेरी ॥ १९ ॥

राग नट ॥ अबतौ ऐसेई दिन मेरे । कहा करौं सखि दोष न काहू हरिहित लोचन फेरे ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा ए सब संतत चेरे । मादप बन शशि कुसुम सकोमल तेउ देखियत जु करेरे ॥ बनबन बसत मोर चातक पिक आपुन दिए बसेरे । अब सोइ बकत जाहि जोइ भावै बरजे रहत न मेरे ॥ जो द्रुम सींचिसींचि अपने कर कियो बढाय बडेरे । तिन सुनि सूर किसल गिरिवर भए आनि नैन मग घेरे ॥ २० ॥

राग सारंग ॥ बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजैं । जे वै लता लगत तनु शीतल अब भई विषम अनलकी पुंजैं ॥ वृथा बहुत यमुनातट खगरौ वृथा कमलफूलनि अलि गुंजैं । पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत किरनि भानु भै भुंजैं ॥ ए ऊधौ कहियो माधोसों मदन मारि कीन्हीं हमलुंजै । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मग जोवत अँखियन भई धुंजैं ॥२१॥

राग कान्हरो ॥ करकपोल भुज धरि जंघापर लेखति माई नखनकी रेखनि । सोचति बिचार करति वैसी भाँति धरति ध्यान मदन मुख भेजनि ॥ नैन नीर भरि भरि जु लेतहै गोपी धिग दिन जात अलेखनि । कमलनैन माधो मधुपुरी सिधारे जाके गुण जाने न सहसफन शेषनि ॥ अवधि छुडाइ सुनोरी सजनी क्यों जीवहिं निशि दामिनि देखनि । सूरदास प्रभु चटकि गए ज्यों नानाविधि नाचत नट पेखनि ॥ २२ ॥

राग कान्हरो ॥ सोचति राधा लिखति नखनमें वचन न कहत कंठ जलतास । छितिपर कमल कमलपर कदली पंकज कियो प्रकाश ॥ तापर अलि साँरगपर सारंगप्रति सारंग रिपुलै कियो वास । तहां अरिपंथ पिता युग उदित वारिज विविध रंग भजो अभास ॥ सारंग मुखते परत अंबु ढरि मन शिव पूजति तपति विनास । सूरदास प्रभु हरि विरहारिपु दाहत अंग दिखावत वास ॥ २३ ॥

राग नट ॥ मैं सब लिखि शोभा जु बनाई । सजलजलद तन वसन कनक रुचि उर बहुदाम रु राई ॥ उनतकंध कटि खीन विशद भुज अंगअंग प्रति सुखदाई । सुभग कपोल नासिका नैन छबि अलक लिहित धृत पाई ॥ जानतिही यहलोल लेख करि ऐसेहि दिन विरमाई । सूरदास मृदु वचन श्रवणको अतिआतुर अकुलाई ॥ २४ ॥

राग गौरी ॥ सुरति करि वहांकी बात रोइ दियो। पंथी एकु देखि मारगमें राधा बोलि लियो ॥ कहिधौं बीर कहांते आयो हमजु प्रणाम कियो। पालागौं मंदिर पगु धारौ सुनि दुख जानि त्रियो ॥ गदगदकंठ हियो भरि आयो वचन कहै न दियो। सूर श्याम अभिराम ध्यान मन भरिभरि लेत हियो ॥ २५ ॥

राग मलार ॥ कहियो पथिक जाइ हरिसों मेरो मन अटक्यो नैननके लेखे। इहै दोष दैदै झगरत हैं तब निरखत मुख लगी क्यों निमेखे ॥ कैतो मोहिं बताय दबकियो लगी पलक जड जाके पेखे। ते अब अब इनपै भरि चाहत बिधि जो लिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहि विधि अनुदिन जुरति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अवसेखे। सूरदास सुनि इनि झगरनिते नाहिं चित घटत वदन बिन देखे ॥ २६ ॥

राग ईमन ॥ नाथ अनाथनकी सुधि लीजे। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहि दिन छीजे। नैन सजल धारा बाढी अति बूडत ब्रज किन कर गहिलीजे ॥ इतनी बिनती सुनहु हमारी वारकहूं पतियां लिखि दीजे ॥ चरण कमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजे। सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै ॥२७॥

राग सारंग ॥ दिशिअति कालिंदी अतिकारी। अहो पथिक कहियौ उन हरिसों भई विरहज्वरजारी ॥ मन पर्यंकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी। तट वारू उपचार चूरजलपरी प्रसेद पनारी ॥ बिगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकजु काजल सारी। मनमें भ्रमरते भ्रमत फिरत है दिशिदिशि दीन दुखारी ॥ निशिदिन चकई बादि बकत है प्रेम मनोहर हारी। सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी ॥ २८ ॥

परेखो कौन बोलको कीजे। ना हरि जाति न पांति हमारी कहा मानि दुख लीजे ॥ नाहिंन मोर चंद्रिकामाथे नाहिंन उर वनमाल। नहिं शोभित पुहुपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल ॥ नंदनँदन गोपीजन वल्लभ अब नहिं कान्ह कहावत। वासुदेव यादवकुल दीपक बंदीजन वर भावत ॥ बिसरयो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग। सूर श्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग ॥ २९ ॥

बटाऊ होहिंनकाके मीत। संगरहत शिरमेलि ठगौरी हरत अचानक चीत ॥ मोहे नैन रूपदरशनके श्रवण मुरलिकागीत। देखतही हरि लै जु सिधारे बाँधि पिछोरी पीत ॥ याहीते झुकति इहै मग चितवति सुख जु भए विपरीत। सूरदास वरु भली पिंगला आशा तजि परतीत ॥ ३० ॥

राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतियारो। पीछे ही पछिताहि मिलहुगे प्रीति बढाइ सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके बींधे लाग्यो बान बिसारो। प्रीतिके लिये प्राण वश कीनो हरि तुम यहै विचारो ॥ बलि अरु बालि सुपनखा बपुरी हरिते कहा दुरायो। सूरदास प्रभु जानि भले हौ भरयो भरायो डरायो ॥ ३१ ॥

राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो। प्रीति बढाय चले मधुवनको बिछुरि दियो दुख भारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे वेकल प्राण हमारो। सूरदास प्रभुके दरशन विनु ज्यों विनु दीपक भौन अँधियारो ॥ ३२ ॥

राग आसावरी ॥ सखी री हरिको दोष जनि देहु ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु। तदपि सखी ब्रजनाथ बिना

उरफटि न होत बडवेहु ॥ कहिकहि कथा पुरातन सजनीं अब जिनि अंतहि लेहु । सूरदास तन योग करौंगी ज्यों फिरि फागुन मेहु ॥ ३३ ॥

राग मलार ॥ अबकछु औरहि चालचली । मदनगोपाल बिना या तनुकी सबै बात-बदली ॥ गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहू थली । शीतल चंद्र सुतौ सखि कहियत तिनहूं अधिक जली ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली । एक न फुरत बिरह ज्वरते कछु लागति नाहिं भली ॥ वह ऋतु अमृतलता सुनि सूरज अब बिष फलनि फली । हरि बिधु मुख नहिंनाहिंनै फूलति मनसा कुमुदकली ॥ ३४ ॥

राग सारंग ॥ इहि बिरिया बनते ब्रज आवते । दूरहिते वह बैन अधर धरि बारंबार बजावते ॥ कबहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुर गावते । कबहुँक लैलै नाम मनोहर धवरी धेनु बुलावते ॥ इहि विधि वचन सुनाय श्यामघन मुरछे मदन जगावते । आगम सुख उपचार बिरह ज्वर वासर ताप नशावते ॥ रुचिरुचि प्रेम पियासे नैनन क्रम-क्रम बलहिं बढावते । सूरदास स्वामी तिहि अवसर पुनिपुनि प्रगट करावते ॥ ३५ ॥

राग सारंग ॥ नाहिं बिसरति वह रति ब्रजनाथ । हौं जु रही रूठि मौन धरि सुखहीमें खेलत इक साथ ॥ पचिहारे मैं मनायो न मानौं आपुन चरण छुए हरि हाथ ॥ तब रिस धरि सोई उत मुख कहि झुकि झाँक्यो उपरैना माथ ॥ रह्यो न परै सुप्रेम आतुरअति जानी रजनी जात अकाथ । सूर श्याम हो ठगी महा निशि पढि जु सुनाए प्रातके गाथ ॥ ३६ ॥

राग बिलावल ॥ माधौ इतने जतन तब काहेको किए । अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए ॥ अघ बक वृषभ बच्छ बधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए ॥ इंद्र नाम मेटे गिरि कर धरि छिनछिन प्रति आनंद हिए ॥ हरि बिछुरत की पीर न जानी वचन मानि हम बादि जिये । सूरदास अब वा लालन बिन कहा न सहत ए कठिन हिए ॥ ३७ ॥

राग गौरी ॥ यह कुमया जो तबहीं करते । तौ कत इनये जिवत आजुलौं या गोकुलके लोग उबरते ॥ केशी तृणावर्त वृषभासुर कहौ कौनके मारे मरते । भूम प्रलंब व्याल दावानल हरि बिन बरहि निवाइ निवरते ॥ शंखचूड बक बकी अघासुर सुरपति वरुन कौनते डरते । सूर श्याम तौ घोष कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते ॥ ३८ ॥

राग मलार ॥ हरि हम तब काहेको राखी । जब सुरपति ब्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी ॥ अबलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी । सो क्यों झूठो होय सखी री गर्ग कथा सो भाखी ॥ तो हमको होती कत यह गति निशिदिन वर्षत आंखी । सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी माषी ॥ ३९ ॥

हरिजू वै सुख बहुरि कहां । यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां ॥ मुख मुरली शिर मोरपंख बने उर घुँघुचिनि को हारु । आगे धेनु रेनु तनु मंडित चित-वति तिरछी चारु ॥ रातिदिवस अँगअँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात । सूर देखि वा प्रभुता उनकी कही न आवै बात ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥ मधुवन तुम क्यों रहत हरे । विरहवियोग श्यामसुंदरके ठाढे क्यों न जरे ॥ तुम हौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुप धरे । शश सियार अरु वनके पखेरू धिग धिग सवन करे ॥ कौनकाज ठाढे रहे वनमें काहे न उकठि परे । कपट हेतु कीयो हरि हमसे खोटे होहिं खरे ॥ गोविंदगुण उरते नाहिं बिसरत रचिरचि कुसुम भरे । बिन देखे वा नंदनँदनको फूलत फेरि फरे ॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखा टेकि खरे। मोहे अस्थावरु जड जंगम मुनिगन ध्यान टरे । बिछुरत हियो बलि मोहनके केउ न कल्याण करे । सुख संपति बिछुरी मोहनकी फल फूलनसों करे ॥ नैननते बिछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरे । सूरदास प्रभु विरहदवानल नखशिखलौं पसरे ॥ ४१ ॥

राग केदारो ॥ जो सखि नाहिंनै व्रज श्याम । वर्ष होत पलसम अब सो युगवर याम ॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम । उहै गृह जिहि सकल संपति बन भयो सोइ धाम ॥ उहै रतिपति अछत मुरारिहि लैन सकतो नाम । सूर प्रभुबिनु अब कलेवर दहन लागे काम ॥ ४२ ॥

राग जैतश्री ॥ हरि न मिले माई जनम ऐसेही लागो जान । चितवत मग दिवस निशा जात युगसमान ॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परत कान । चंदन अरु चंदकिरनि मनो अनेक भान ॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान । भीषमलौं सहत मदन अर्जुनके बान ॥ सोखति तनुसेज सूर चले न चपल प्रान । दक्षिण रवि अवधि अटल इतनी जिय आन ॥ ४३ ॥

राग सारंग ॥ अब योंहीं लागे दिन जान । सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान ॥ लोचन रहत वदन विनु देखे वचन सुनै विनु कान । हृदय रहत हरि पान परस बिन छिदि तन मनसिज बान ॥ मानो सखी रहे नाहिं मेरे वै पहिले तनु प्रान । बिधि समेतरचि चले नंदसुत विरहव्यथा दै आन ॥ विधि बछ हरे और पुनि कीन्हें वैसेइ वेत बिषान । सूरदास ऐसीऐ कछु यह समुझत हैं अनुमान ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ॥ ऐसे कोऊ नाहिंनै सजनी जो मोहनै मिलावै । बारेक बहुरि नंदनंदनको यहाँलौं लै आवै ॥ पांइन परि विनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै । निशि निकुंज निशि केलिपरमरुचि रासरंगकी सुरति करावै ॥ और कौनहूं बातकी सकुच न सबबिधिकी उपजावै । पुनिपुनि सूर इहै करि हरिसों लोचन जरत बुझावै ॥४५॥

राग केदारो ॥ बहुरयो देखिवो वहिभाँति । अशन बाँटत खात बैठे बालकनकी पाँति ॥ एकदिन नवनीत चोरत हौं रहीं दुरिजाइ । निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरे धाइ ॥ पोंछिकर मुख लिए कनियां तब गई रिसि भागि । वह सुरति जिय जाति नाहीं रहो छाती लागि ॥ जिन घरनि वह सुख बिलोक्यो ते लगत अबखान । सूर बिन ब्रजनाथ देखे रहत पापी प्रान ॥ ४६ ॥

राग रामकली ॥ मरियत देखिबेकी हौसनि । जिन सतकल्प पलकवर जाते अब सु रही दुख मौसनि ॥ पलकभरेकी ओट न सहती अब लागे दिनजात । इतनेहूपर बिन साखन घर घट निकसत नहिं प्रान ॥ यदपि मोहिं बहुतै समुझावत सकुचन लीजतु मानि

अंतर हेरि जरत बिन देखे कौन बुझावे आनि ॥ कुबिजापै आवन क्यों पावत अबतो परिहै जानि। लीनीबडी यहाऊँकी सब बात पाछिली ते सब गानि ॥ आए सूरदिना द्वैतौ कहा तौ मानिबो समौसो। कोटि बेर जल औटि सिरावै तऊ कहा पति लौसो४७॥

राग सारंग ॥ जिय हिय हौसे बिच जे रही। सुन री सखी श्यामसुंदर हँसि बहुरि न बाँहगही ॥ अब वह दिवस बहुरि कब ह्वैहै ऐसे जानि संगही। कहांसु कान्ह कहांरी अब हम कौन बयारि बही ॥ कासों कहौं कहत नहिं आवै कहत परै न कही ॥ जो कछु हुती हमारे हरिके हरिके संग निबही। अपने कहतहि हबुकी लागै गोबिंदगुणनदही । सूरदास काटे तरुवरज्यों ठाढी रटत रही ॥ ४८ ॥

राग जैतश्री ॥ कहाँलौं मानौं अपनी चूक। बिन गोपाल सखी यह छतिया ह्वै न गई द्वै टूक ॥ तन मन धन यौवन ऐसे भए भुअंगमको फूक। हृदय जरतहै दावानल ज्यों कठिन बिरहकी हूक ॥ जाकी मणि शिरते हरिलीनी कहा कहत अति मूक। सूरदास ब्रजवास बसी हम मनो दाहिनो सूक ॥ ४९ ॥

राग मलार ॥ भलो व्रज भयो धरणिते स्वर्ग। तब इनपर गिरि अब गिरि पर ए प्रीति किधौं यह दुर्ग ॥ सुरवासुर छलबोलवारी गढ अब अवधि मिति खूटी। प्रिय पतिविरह मदन गढ घेरचो एकौ अलँग न टूटी ॥ नैन तडाग श्रवण मूरति मठ यंत्र सकत वर बानी। रासकेलि वन पौंरिकोट मनु देखि अमर रजधानी ॥ गोरंभन गोपाल गरजनिघन धूमि दुंदुभिन रौकी। कंटक रोम कँगूरनि प्रति मनो अपनी अपनी चौकी ॥ चढत त्रिभंगी सौंज साजि सत धसत नहीं पल आंखी। देखहु सूर सनेह श्यामको गगनमंडल हम राखी ॥ ५० ॥

सखी री हरि बिनु हरि दुख भारी। सिंहको सुत हर भूषण ग्रासे सोइ गति भई हमारी ॥ शिखर बंधु अरि क्यों न निवारत पुहुप धनुषके बिशेष। चक्षुश्रवा उर हार ग्रसी ज्यों छिन द्वितिया वपुरेख ॥ घटसू अशन समै सुत आनन अमी गलित जैसे मेत। जलधर व्योम अंबुकन मुंचत नैन होड वदि लेत ॥ द्विजपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु हरिसुत आरति जानि। जैसे हरि कर बंध प्रगट भए हरी आरती मानि ॥ षटआनन बाहन काननमें घन रजनी तहँ वासी। सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि सुनि चातक पिक त्रासी ॥ ५१ ॥

राग सोरठ ॥ कहा दिन ऐसेही जैहैं। सुन सखि मदनगोपाल अब किन ग्वालन संग रैहैं ॥ कबहूँ जात पुलिन यमुनाके बहुविहार विधि खेलत। सुरत होत सुरभी सँग आवत बहुत कठिन करि झेलत ॥ मृदु मुसुकानि आनि राखो पिय चलत कह्योहै आवन। सूर सो दिन कबहूं तौ ह्वैहै मुरली शब्द सुनावन ॥ ५२ ॥

राग मलार ॥ श्याम सिधारे कौने देश। तिनको कठिन करे जो सखि री जिनको पिय परदेश ॥ उन ऊधो कछु भली न कीन्ही कौन तजनको बेश। छिन बिनु प्रान रहत नहिं हरि बिन निशिदिन अधिक अँदेश ॥ अतिहि निठुर पतिया नहिं पठई काहू हाथ सँदेश। सूरदास प्रभु यह उपजत है धरिए योगिनवेश ॥ ५३ ॥

राग मलार ॥ गोपालहि पावौं धौं केहि देश । शृंगी मुद्रा कनक खपरकरि करिहौं योगिनि भेष ॥ कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटा बँधाऊँ केश । हरि कारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांग महेश ॥ तन मन जारों भस्म चढाऊं बिरहिन गुरु उपदेश सूर श्याम बिनु हम हैं ऐसी जैसे मणि विन शेष ॥ ५४ ॥

राग केदारो ॥ फिरि ब्रज आइए गोपाल । नंदनृपतिकुमार कहिहैं अब न कहिहैं ग्वाल ॥ मुरलिका सुर सप्त दिशि दिशि चले निशान बजाई । दिग्विजयको युवतिमंडल भूप परिहैं पाई॥सुरभिसेन सु सखा भट सँग उठैगी खुर रैनु । आतपत्र मयूरचंद्रिका लसति है रवि ऐनु ॥ सदसपति मधुकरनिकर वर मदन आयसु पाइ । द्रुम लता बन कुसुम बानकु वसन कुटी बनाइ ॥ सकल खगगण पैक पायक पौरिया प्रतिहार । समै सुख गोविंद ब्रजको कहत सूर बिचार ॥ ५५ ॥

राग जैतश्री ॥ फिरिकै वसो गोकुलनाथ । अब न तुमहिं जगाय पठवैं गोधननके साथ ॥ बरजैं न माखन खात कबहूँ दह्यो देत लुढाय । अब न देहिं उराहनो यशुमतिहि आगे जाइ ॥ दौरि दामन देहिंगी लकुटी यशोदा पानि । चोरी न देहिं उघारिकै अवगुण न कहिहैं आनि ॥ कहिहैं न चरणन देन जावक गुहन बेनी फूल । कहिहैं न करन शृंगार कबहीं वसन यमुना कूल ॥ करिहैं न कबहीं मान हम हठिहैं न मांगत दान । कहिहैं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान ॥ देहु दरशन नंदनंदन मिलनहूंकी आश । सूर हरिके रूप कारन मरतलोचन प्यास ॥ ५६ ॥

राग जैतश्री ॥ हरिसो प्रीतम क्यों बिसराइ । मिलन दूरि मन बसत चंद्रपर चितचकोर पछिताइ ॥ जलमें रहै जलहिते उपजै जलही बिन कुँभिलाइ । जल तजि हंस चुगै मुक्ताफल मीन कहां उडि जाइ ॥ सोइ गोकुल गोवर्धन सोई सोइ किन करहि अब छाइ । प्रगट न प्रीति करै परदेशी सुख केहि देश समाइ ॥ धरणी दुखित देखि बादर अति वर्षा ऋतु बरसाइ । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन दुख क्यों हृदय समाइ ॥ ५७ ॥

बारक जाइबो मिलि माधो । को जानै तनु छूटि जाइगो शूल रहै जिय साधो ॥ पहुनेहु नंद बबाके आवहु देखि लेउँ पलआधो । मिलेहीमें विपरीति करी विधि होत दरशको बाधो ॥ सो सुख शिव सनकादि न पावत जो सुख गोपिन लाधो । सूरदास राधा विलपति है हरिको रूप अगाधो ॥ ५८ ॥

अथ नैनप्रस्थांबुपद ॥ राग मलार ॥ बारक नैनहूं मिलि जाहु । कमल नैन घन श्याम राधिकाहि परसत जो न पत्याहु ॥ जानतहौ कर कमल विरोधी बरन विरोधी बाहु । शशि मुखशत्रु पयोधर गिरि अति तहाँ तुम क्यों बसमाहु ॥ गज गति मंद मराल विरोधी हेम सुरुचि रिपु दाहु । जंघ कदलि कटि सिंह विरोधी न्याय निरखि सकुचाहु ॥ चीन्हिलहे चितचोरि सकल अँग एकै सुपतन शाहु । तदपि सूर उनकी रुचि राखहु कत अधिकै बडराहु ॥ ५९ ॥

राग सारंग ॥ नैननको मत सुनो सयानी । निशिदिन तदपि सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलत पटरानी ॥ हौं उपचार अमित आनत उर खल भयो लोक लाज कुलकानी ।

कछु न सोहाइ दही दरशन दौ वारिजबदन मंद मुसकानी ॥ रूप लकुट अभिमान मनहु उलटी उन माँझ समानी । आरज पथ गुरुजान कुपित करि सूरज विकल समानी ॥ ६० ॥

राग मलार ॥ सखि इन नैननते घन हारे । बिनही ऋतु बरषत निशि वासर सदा मलिन दोउ तारे ॥ ऊरधश्वास समीर तेज अति सुख अनेक द्रुम डारे । दिशन सदन करि वसे वचन खग दुख पावसके मारे ॥ ढुरि ढुरि बूँद परत कंचुकिपर मिलि अंजनसों कारे । मानो परतकुटी शिव कीन्हीं विरि मूरति धरि न्यारे ॥ सुमिरि सुमिरि गर्जत जल छाँडत अंशु सलिलके धारे । बूडत ब्रजहि सूरको राखै बिन गिरिवरधर प्यारे ॥ ६१ ॥

नैना सावन भादौं जीते । इनही बिषे आनि राखै मनो समुदनिहू जल रीते ॥ वै झरलाय दिना ह्वै उघरत ए भूलि न मारग देत । वै वर्षत सबके सुख कारण ए नँदनंदन हेत ॥ वै परिमान पुजै दहमानत ए दिन धार न तोरत । यह विपरीति होति देखति हौं बिना अवधि जग बोरत ॥ मेरे जिय ऐसी आवत भई चतुराननकी मांझ । सूर बिन मिले प्रलय जानिबो इनहीं दिवसनि सांझ ॥ ६२ ॥

निशि दिन वरषतु नैन हमारे । सदा रहत वर्षा ऋतु हमपर जबते श्याम सिधारे ॥ नयन अंजन न रहत निशि वासर कर कपोल भए कारे । कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे ॥ ऐसे सलिल सबै भई काया पलन जात रिसटारे । सूरदास प्रभु गोकुल बूडत काहे न लेत उबारे ॥ ६३ ॥

राग सारंग ॥ नैननधौं नाधौहै झर । ऊंचे चढि टेरत अतिआतुर सुरकहि गिरधर गिरधर ॥ फिरत सदन दरशनके काजै ज्यों झष सूखे सर । कौनकौनकी दशा कहौं सुन सब ब्रज तिमते पर ॥ निशि दिन कलमलात सुन सजनी शिरपर गाजत मदन अर । सूरदास प्रभु रही मौन ह्वै कहि नहिं सकति मैनके भर ॥ ६४ ॥

अति रसलंपट मेरे नैन । तृप्ति न मानत पिवत कमल मुख सुंदरता मधु बैन ॥ दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस निमिष न मानत चैन ॥ शोभासिंधु समाई कहँलौं हृदय सांकरे ऐन ॥ अब यह विरह अजीरण ह्वैकै वमिलाग्यो दुखदैन । सूर वैद ब्रजनाथ मधुपुरी काहि पठाऊँ लैन ॥ ६५ ॥

राग केदारो ॥ हरि दरशनको तरसत अखियां । झांकति झपति झरोखा बैठी कर मींडत ज्यों मखियां ॥ बिछुरी वदन सुधानिधि रिसते लागत नहीं पलखियां ॥ इकटक चितवति उडि न सकति जनु थकति भई लखि सखियां ॥ बारबार शिर धुनति विसूरति विरह ग्राह जन भखियाँ ॥ सूर स्वरूप मिले ते जीवहि काढि किनारे नखियाँ ॥ ६६ ॥

राग सारंग ॥ लोचन व्याकुल दोऊ दीन । कैसे रहैं दरश बिन देखे विधु चकोर ज्यों लीन ॥ विवरन भए खंजन जों दाधे वारिज ज्यों जलहीन । श्याम सिंधुसों बिछुरिपरे हैं तरफरात ज्यों मीन ॥ रतिराज विमुख भृंगीको छिनुछिनु वाणी हीन । सूरदास प्रभु बिनु गोपालहि कत विधनै एई कीन ॥ ६७ ॥

महादुखित दोउ मेरे नैन । जादिनते हरि चले मधुपुरी नेकु न कबहूं कीनो सैन । भरेरहत अति नीर न निघटत जानत नहिं दिन रैन । महादुखित अतिही भ्रम माते बिन

देखे पावत नहिं चैन ॥ जो कबहूं पलकौ नहिं खोलत चाहत मूरति मैन । छांडत छिनमें ए जो शरीरहि गहिकै व्यथा जात हरि लैन ॥ रसना इहई नेम लियो है और नहीं भाषौं मुख बैन । सूरदास प्रभु जबते बिछुरे तबते सब लागे दुख देन ॥ ६८ ॥

अँखियां करतिहैं अति आर । सुंदर श्याम पाहुनेके मिसि मिल न जाहु दिनचार ॥ बाँह थकी वायसहि उडावत कब देखौं उनहार । मैंतौ श्याम श्याम कै टेरति कालिंदीके करार ॥ कमलवदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत वार । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सकैं न पंखपसार ॥ ६९ ॥

राग धनाश्री ॥ लोचन लालचते न टरैं । हरि मुख ए रंगसंग विधे दाधौ फिरैं जरैं ॥ ज्यों मधुकर रुचि रच्यो केतकी कंटक कोटि अरैं । तैसोई लोभ तजत नाहिं लोभी फिरि फिरि फिरि फिरै ॥ मग ज्यों सहत सहज सरदारन सन्मुखते न टरै । जानत आहि हते तनु त्यागत तापर हितहि करै ॥ समुझि न परै कवन सच पावत जीवत जाइ मरै । सूर सुभट हठ छांडत नाहीं काटे शीश लरै ॥ ७० ॥

राग सारंग ॥ लोचन चातक जीवो न चाहत । अवध गए पावसकी आशा क्रमक्रम करि निरवाहत ॥ सरिता सिंधु अनेक अवर सखि विलसत पति सजन सनेह । ए सब जल यदुनाथ जलद बिनु अधिक दहतहैं देह ॥ जब लगि नहिं बरसत ब्रज ऊपर नौघन श्याम शरीर । तौ इह तृषा जाय क्यों सूरज आनि ओसके नीर ॥ ७१ ॥

राग मलार ॥ नैनन नैननकी सुधि लीजै । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै ॥ नैन सजल जलधार बढे अति बूडत ब्रज किन कर गहि लीजै । इतनी बिनती सुनहु हमारी बारकहू पतिआ लिखि दीजै ॥ चरण कमल दरशन नवनौका करुणा सिंधु जगत यश लीजै । सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै ॥ ७२ ॥

राग केदारो ॥ मेरे नयना विरहकी वेली बई । सींचत नीर नैनके सजनी मूल पताल गई ॥ बिकसत लता सुभाइ आपने छाया सघन भई । अब कैसे निरुवारौं सजनी सब तन पसरि छई ॥ को जानै काहूके जियकी छिन छिन होत नई । सूरदास स्वामीके बिछुरे लागे प्रेम झई ॥ ७३ ॥

राग देवगंधार ॥ ब्रज बसिकाके बोल सहौं । इह लोभी नैननके काजे परवश भई जो रहौं ॥ बिसरि लाज गई सुधि नहिं तनुकी अब धौं कहा कहौं । मेरे जियमें ऐसी आवत यमुना जाइ बहौं ॥ एक बन ढूँढि सकल बन ढूँढ्यो कबहुं न श्याम लहौं । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको इह दुख अधिक सहौं ॥ ७४ ॥

राग केदारो ॥ नैना अब लागे पछितान । बिछुरत उमँगि नीर भरि आई अब न कछू अवसान ॥ तब मिलिमिलि कत प्रीति बढावत अब सो भई विषवान । तबतौ प्रीति करी उत्तर होई समुझी कछु न अजान ॥ अब इह काम दहत निशि वासर नाहीं मेरे मान । भयो बिदेश मधुपुरी हमको क्योंहूं होत न ज्ञान ॥ अति चटपटी देखिबे चाहत अब लागी अकुलान । सूरदास प्रभु दीन दुखित ए लै न गए सँगप्रान ॥ ७५ ॥

राग आसावरी ॥ हौं तादिन कजरा देहौं । जादिन नंदनंदनके नैनन अपने नैन मिलैहौं ॥ सुनरी सखी इहै जिय मेरे भूलिन और चितैहौं । अब हठ सूर इह ब्रत मेरो कौंकि रखै मरिजैहौं ॥ ७६ ॥

राग मलार ॥ उपमा नैनन एक रही । कविजन कहत कहत सब आए सुधि करि नाहिं कही ॥ कहि चकोर विधु मुख विन जीवत भँवर नहीं उडिजात । हरिमुख कमल-कोश बिछुरते ढोले कत ढहरात ॥ अघा बधिक व्याधा ह्वै आय मृगसम क्यों न पलात । भाजि जाहि बन सघन श्याममें जहां न कोऊ घात ॥ खंजन मनरंजन होहिं ए कबहिं नहीं अकुलात । पंख पसारि नहो छिन चपला गति हरिसमीप मुकलात ॥ प्रेम न होहि कौन विधि कहिए झूठेही तनु आडत । सूरदास मीनतौ कछु एक जल भरि कबहुँ न छाँडत ॥ ७७ ॥

राग गौरी ॥ कहाइन नैननको अपराध । रसना रटत सुनत यश श्रवणन इतनी अगम अगाध ॥ भोजन किये बिनु भूँख क्यों भाजै विनखाए सब स्वाध । इकटक रहत छुटत नहिं कबहू हरि देखनकी साध ॥ ये दृग दुखी बिना वह मूरति कहौ कहा अब कीजै । एकबेरब्रज आनि कृपाकरि सूर सो दरशन दीजै ॥ ७८ ॥

राग मलार ॥ चितवतही मधुवन तन जात । नैननि नींद परति नहिं सजनी सुनि सुनि बात मनै अकुलात ॥ अब ए भवन देखिअत सूनो धाइधाइ हमको ब्रज खात । कवन प्रतीति करैं मोहनकी जोहिं छाँडे निज जननी तात ॥ अनुदिन नैन तपत दरशनको हरदि समान देखिअत गात । सूरदास स्वामीके बिछुरे ऐसे भए हमारे धात ॥ ७९ ॥

राग मलार ॥ देख सखी उत है वह गाउँ । जहां बसत नँदलाल हमारे मोहन मथुरा नाउँ ॥ कालिंदीके कूल रहतहैं परम मनोहर ठाउँ । जे तनु पंख होइ सुन सजनी आजु अबहिं उडिजाउँ ॥ होनोहोउ होउ सो अबहीं यहि ब्रज अन्न न खाउँ । सूरदास नँद-नंदनसों रतिलोगन कहा डराउँ ॥ ८० ॥

राग गौरी ॥ मथुराके द्रुम देखि अत न्यारे । वहई श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे ॥ कितिक बीच संदेशहु दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे । तुव गुण सुमिरिसुमिरि हम मोहन मदन बान उर मारे । तुम बिन श्याम सबै सुख मूलो गृह वन भए हमारे । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु रैन गनत गई तारे ॥ ८१ ॥

स्वप्नदर्शनवर्णन ॥ राग केदारो ॥ जबते बिछुरे कुंजबिहारी । नींद न परै घटै नहिं रजनी व्यथा विरहज्वर भारी ॥ हौं उठि सखि आँगन ह्वै आई जगमगि रही जियारी । श्रवण-शब्द सुहाइ न सखीरी यमचातक द्रुमडारी ॥ उरतेसखी दूरि करुहारहि कंकन धरहु उतारी । सूरदास प्रभुबिन अतिव्याकुल करि वह जतन जुहारी ॥ ८२ ॥

राग नट ॥ सुपनहुमें देखिये जो नैननि नींद परै । विरहिनि ब्रजनाथबिन कहि कौन उपाइ करै ॥ चंद मंद समीर शीतल सेज सदा जरै । कहा करौं कौनी भाँति मरौं मन धीरज न धरै ॥ बहुत उपाइ करै विरहिनि कछु न चाव सरै । सूर शीतल कृष्णबिन कहौ कौन तापहरै ॥ ८३ ॥

राग सारंग ॥ इतनी दूरि गोपालहि कबहुँ न मिलि आई । कहिए कहा दोष दीजै किहि अपनीही जडताई ॥ सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई। गनतहि आनि अचानक कोकिल उपवन बोलि जगाई ॥ जो जागौं तो कहा उठि विकल भई अधिकाई। किसलै कुसुम नवनूत दशहु दिशि नधुकर मदन दोहाई ॥ बिछुरत तनु नाम ज्यों हठि तिहि छिन गई नहीं संगुमाई। समुझि न परी सूर दोहेदिन हरि हँसि कंठ लगाई ॥ ८४ ॥

राग धनाश्री ॥ तबहीं जैहै हेति कहां। जहँ वै श्याम मदनमूरति चल मोहिं लिवाइ तहां ॥ कुटिल अलक मकराकृत कुंडल सुन्दर नैन विशाल। अरुन अधर नासिका मनोहर तिलक तरनि शशिभाल ॥ दशन ज्योति दामिनिज्यों दमकति बोलत वचन रसाल। उर बिचित्र वनमाल बनी जनु कंचन लता तमाल। घनतन पीत बसन शोभित अति अलिके बलैपराग ॥ विपुलबहू अति कृत परिरंभन मनहुँ बसे द्रुम नाग। सोवतिही सुपनेमाहिं सोचति सत्य जानि जिय जागी। सूरदास प्रभु प्रगट मिलनको चातकज्यों लवलागी ॥ ८५ ॥

राग मलार ॥ सुपने हरि आए हौं किलकी। नींद जो सौति भई रिपु हमको सहि न सकी रति तिलकी ॥ जो जागौं तो कोऊ नाहीं रोके रहति न हिलकी। तब फिरि जरनि भई नख शिखते दिआ बाति जनु मिलकी। पहिली दशा पलटि लीनी है त्वचा त्वचकि तनु पिलकी। अब कैसे सहिजात हमारी भई सूरगति सिलकी ॥ ८६ ॥

राग कान्हरो ॥ मैं जान्यो रीआए हैं हरि चौंकिपरेते पछितानी। इते मान तन तलफत वहिंते जैसे मीन बिन पानी ॥ सखी सुदेहते जरति विरह ज्वर तनु पुनिपुनि नहिं प्रकृत्यो आनी ॥ कहा करौं अपथि भई मिलि बाढी व्यथा दुःखदुहरानी ॥ पठवौ पथिक सब समाचार लिखि बिपतिविरह वपुअकुलानी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिना कैसे घटत कठिनकानी ॥ ८७ ॥

राग मलार ॥ ज्यों जागो तो कोऊ नाहीं अंत लगी पछितान। हौं जानौं साँचे मिले माधौ भूलो यहि अभिमान ॥ नींदमाहिं मुरझाइ रही हौं प्रथमपंच संधान। अब उरअंतर मेरी माई सपने छुटी छलिवान ॥ सूर सकति जैसे लछिमन तन विह्वल होइ मुरझान। ल्याउ सजीवन मूरि श्यामको तौ रहिहैं ए प्रान ॥ ८८ ॥

राग कल्याण ॥ हरि बिछुरन निशि नींद गईरी। वन प्रिय विरह शिलीमुख मधुपति वचननि हौं अकुलाई री ॥ वह जु हुती प्रतिमा समीपकी सुख संपति दूरंत जई री। ताते भर हरि सुन री सजनी सेज सलिल दृगनीर भई री ॥ अबउ अधार जु प्राण रहत हैं इनि वशहिन मिलि कठिन ठई री। सूरदास प्रभु सुधारस बिना भई सकल तनु बिरह रई री ॥ ८९ ॥

राग केदारो ॥ बहुरचो भूलि न आँखि लगी। सुपनेहुके सुख न सहि सकी नींद जगाइ भगी ॥ बहुत प्रकार निमेष लगाए छूटि नहीं शठगी। जनु हीरा हरि लिए हाथते ढोल बजाइ ठगी ॥ कर मींडति पछिताति बिचारति इहि बिधि निशा जगी। वह मूरति वहसुख दिखरावै सोईसूर सगी ॥ ९० ॥

राग धनाश्री ॥ अब सखि नींदौ तो गई । भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई ॥ अति रिस अहनिशि कंत किए वश आगम अटक दई । सुपनेहू संयोग सहति नहिं सहचारि सौति भई ॥ कहतहि पोच सोच मनहीं मन करत न बनति खई । सूरदास तनु तजे भले बनै विधि विपरीति ठई ॥ ९१ ॥

राग नट ॥ पियकी बात सुनहि किन प्यारी । जो कछु भयो सो कहिहौं तुमसन होहु सखिनते न्यारी ॥ तव वियोगशोक तौ उपज्यो कामदेव तनु जारी । भेषज अधर सुधाहै तुमपै चलिदै व्यथा निवारी ॥ कठिन परे जु कुशल रिपु पूँछै मनकी कहा विचारी । सूरदासप्रभु हृदय है तेरे मानहु सार पुछारी ॥ ९२ ॥

राग मलार ॥ हमको सुपनेहूमें सोच । जादिनते बिछुरे नँदनंदन इह तादिनते पोच ॥ मनो गोपाल मेरे आए गृह हँसिकरि भुजा गही । कहा करौं वैरिनि भई निद्रा निमिष न और रही ॥ ज्यों चकई प्रतिबिंब देखिकै आनंदै पियजानि । सूरपवन मिलि निठुर विधाता चपल कियो जल आनि ॥ ९३ ॥

राग बिहागरो ॥ हरिबिनु वैरिननींदबडी । हौं अपराधिनि चतुर विधाता काहे बनाई गढी ॥ तन मन धन यौवन सुख संपति विरहाअनल दढी । नँदनंदनको रूप निहारत अहनिशि अटा चढी ॥ जेहिं गोपाल मेरे वश होत सो विद्या न पढी । सूरदास प्रभु हरि न मिलैं तौ घरते भली मढी ॥ ९४ ॥

राग मलार ॥ सुनहु सखी ते धन्य नारि । जो अपने प्राणवल्लभकी सपनेहुँ देखतिहै अनुहारि ॥ कहा करौं चलत श्यामके पहिलेहि नींद गई दिनचारि देखि सखी कछु कहत न आवै झींखि रही अपमानन मारि ॥ जादिनते नैनन अंतर भयो अनुदिन अति बाढतिहै बारि । मनहुं सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चले मर्यादा डारि ॥ ९५ ॥

राग मलार ॥ हमको जागत रैनि बिहानी । कमलनैन जगजीवनकी सखि गावत अकथकहानी ॥ विरह अथाह होत निशि हमको बिनु हरि समुद समानी । क्योंकरि पावहि बिरहिन पारहि बिन केवट अगवानी ॥ उदित सूर चकई मिलाप निशि अलि जो मिलै अरविंदहि । सूर हमैं दिन रात दुसह दुख कहा कहैं गोविंदहि ॥ ९६ ॥

मोको माई यमुना जल होइरही । कैसे मिलौं श्यामसुन्दरको वैरिनि बीच बही ॥ केतिक बिच मथुरा औ गोकुल आवत हरि जो नहीं । हम अबला कछु मर्म न जान्यो चलत न फेट गही ॥ अब पछितात प्राण दुख पावत जात न बात कही । सूरदास प्रभु सुमिरिसुमिरि गुणदिनदिन शूल सही ॥ ९७ ॥

राग धनाश्री ॥ नैनसलोने श्यामहरि कब आवहिंगे । वै जो देखत रातेराते फूलन फूले डार । हरिबिनु फूलझरीसी लागत झरिझरि परत अंगार । भूल बिनन ना जाउँसखी री हरिबिन कैसे फूल । सुन री सखी मोहिं रामदोहाई लागत फूलत्रिशूल ॥ जबते पनिघट जाऊँ सखीरी वा यमुनाके तीर । भरिभरि यमुना उमडि चलतहै इन नैननके नीर ॥ इन नैननके नीर सखी री सेज भई घर नाव । चाहत हौं ताहीपै चढिकै हरिजीके ढिग जाव ॥ लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ । सूरदास प्रभु कुंजविहारी मिलत नहीं क्यों धाइ ॥ ९८ ॥

राग मलार ॥ बहुरो गोपाल मिले सुखनेह कीजै । नैनन मग निरखि वदनशोभारस पीजै ॥ मदनमोहन हृदय उर आसन दीजै । परैंन पलक आखिनके देखि देखि जीजै ॥ मान छांडि प्रेम भजन अपनो करि लीजै । सूर सोई सुभगनारि जासों मन भीजै ॥ ९९ ॥

राग केदारो ॥ सखीरी हरि आवैं केहि हेत । वै राजा तुम ग्वाल बुलावत इहै परेखो लेत । अब शिर छत्र कनक राजत है मोरपंथ नाहिं भावत । सुनि ब्रजराज पीठि दै बैठत यदुकुल विरद बुलावत ॥ द्वारपाल अति पौर बिराजत दासी सहस अपार । गोकुल गाई दुहत दुख गोयो सूर भए एवार ॥ २८०० ॥

राग मलार ॥ चलत न माधौकी गहि बाहैं । बारबार पछिताति सबहिते इहै शूल मनमाहैं ॥ घर बन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहुँ मृगी दौ दाहैं । मिटति न तपनि बिना घनश्यामहिं कोटि घनी छन छाहैं ॥ विलपति अति पछिताति मनहिं मन चंद्र गहे जनु राहैं । सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख कहिए केहि पाहैं ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ मनके मनकी माहँ रही । जब हरि रथ चढि चले मधुपुरी सब अज्ञान भही ॥ मति बुधि हरी परी धरणी पर अति बेहाल खरी । अंकुश अलक कुटिल भए आशा ताते अवधि वरी ॥ ज्यों बिनु मणि अहि मूक फिरत है याविधि विधि बिपरीत धरी । मन तो रह्यो पंथ सूरज प्रभु माटी रही धरी ॥ २ ॥

मेरो मन वैसै सुरति करै । मृदु मुसुकानि नैक अवलोकनि हृदयेते न टरै ॥ जब गोपाल गोधन सँग आवत मुरली अधर धरै । मुखके रेणु झारि अंचलसों यशुमति अंग भरै ॥ संझा समय घोषकी डोलन वह सुधि क्यों बिसरै । सूरदास प्रभु दरशनकारण नैनन नीर ढरै ॥ ३ ॥

राग आसावरी ॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहि ताहि और क्यों भावै हो । जैसे मीन दूधमें डारै जल बिनु नहिं सचु पावै हो ॥ अति सुकुमार डोलत अंगनही परि काहू न जनावै हो । जैसे सरिता मिलै सिंधुको उलटि प्रवाह न आवै हो ॥ ऐसे सूर कमललोचन बिनु मन नाहिं अनत लगावै हो ॥ ४ ॥

राग सारंग ॥ कहां लौं रखिए मन बिरमाई । इकटक शिव धरे नैन लागत श्यामसुता सुत धन आई ॥ हर बाहन दिव बास सहोदर तिहि मति उदित मुरछि सुहि जाई । गिरिजापति रिपु नखशिख व्यापत वंश सुधा पिय कथा सुनाई ॥ बिरहिन विरह आपु वश कीन्हें लेउ कमल जिमि पाइ छुआई । वेगिहि मिलौ सूरके स्वामी उदधितनयापति मिलि है आई ॥ ५ ॥

राग मारू ॥ कमलनैन अपने गुनन मन हमारो बाँध्यो । लागत तो जानो नहिं विषम बाण साध्यो ॥ कठिन पीर बाँध्यो शर मारि गयो माई । लागत तो जानो नहिं अब सहो न जाई ॥ मंत्र तंत्र जेतिक करौ तउ पीर न जाई । है कोउ उपचार करै कठिन दरद माई ॥ कैसेहुँ नंदलाल पावों नेक मिलौं धाई । सूरदास प्रेमफंद तोरौ नहिं जाई ॥ ६ ॥

राग सोरठ ॥ हरि हमसों करी री माई मीन जलकी प्रीति । इतनी दूरि दयालु माधौ गई अवधि व्यतीति ॥ तलफिकै उन प्राण दीनों प्रेमकी परतीति । नीर निकट न पीर जानी व्यर्थ गयो वपु बीति ॥ चलत मोहन कहो हमसों आइ हैं रिपु जीति । सूर वा ब्रजनाथके जिय सबै उलटी रीति ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ॥ मति कोई प्रीतिके फंगपरै । सादर संत देखि मन मानो पैखै प्राण हरै ॥ या पतंग कहा कर्म कीन्हों जीवको त्याग करै । अपने मरबेते न डरत है पावक पैठि जरै ॥ भौ करत नहीं ताहि निपाते केतिक प्रेम धरै । शारँग सुनत नाद रस मोह्यो मरिबेते न डरै ॥ जैसे चकोर चंद्रको चाहत जल बिन मीन मरै । सूरज प्रभुसों ऐसे मिलिए तौ कहौ कानसरै ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ प्रीति करि काहू सुख न लह्यो । प्रीति पतंग करी दीपकसों आपै प्राण दह्यो ॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों संपति हाथ गह्यो । शारँग प्रीति करी जो नादसों सन्मुख बान सह्यो ॥ हम जो प्रीति करी माधौसों चलत न कछू कह्यो । सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो नैनन नीर बह्यो ॥ ९ ॥

राग मलार ॥ प्रीति तौ मरनोऊ न बिचारै ॥ प्रीति पतंग ज्योंति पावक ज्यो जरत न आपु सँभारै ॥ प्रीति कुरंगनादस्वरमोहित बधिक निकट है मारै । प्रीति परेवा उडत गगनते गिरत न आपु सँभारै ॥ सावन मास पपीहा बोलत पियपिय करि जो पुकारै । सूरदास प्रभुदरशन कारन ऐसी भाँति बिचारै ॥ १० ॥

जिन कोउ काहूके वश होहि । ज्यों चकई दिनकरवश डोलति मोहिं फिरावत मोहि ॥ हमतौ रीझि लटू भई लालन महाप्रेम तिय जानि । बंध अबंध अमति निशिवासर को सुरझावति आनि ॥ उरझे संग अंगअंग प्रति बिरह वेलिकी नाई । मुकुलिति कुसुम नयन निंद्रा तजि रूपसुधा सियराई ॥ अति आधीन हीन मति व्याकुल कहांलौं कहौं बनाइ । ऐसी प्रीति करी रचनापर सूरदास बलि जाइ ॥ ११ ॥

राग नट ॥ दिनही दिन को सहै बियोग । यह शरीर नाहिंन मेरो सखि इहै बिरह ज्वर योग ॥ रचि स्रक कुसुम सुगंध सेजसजि बसन कुमकुमा बोरि । नलिनीदलनि दूरि करि उनते कंचुकिके बँद छोरि ॥ बन बन जाइ मोर चातकपिक मधुवन टेरि सुनाई । उचित चंद चंदन चढाइ उर त्रिबिध समीर बहाई ॥ रटि मुख नाम श्यामसुंदरको तोहिं सुनाइ सुनाई । तो देखत तनु होमि मदन मुख मिलौं माधवहि जाई ॥ सूरदास स्वामी कृपालु भए जानि युवति रसरीति । तिहि छिन प्रगट भए मनमोहन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥१२॥

राग धनाश्री ॥ बहुरि न कबहुँ सखी मिलै हरि । कमलनयनके कारण सजनी अपनोसो जतन रही बहुतै करि ॥ जेइजेइ पथिक जात मधुवनतन तिनहुँ सों व्यथा कहति पाँइनि परि । काहु न प्रगट करी यदुपतिसों दुसह दुरासा गई अवधि ढरि ॥ धीरन धरति प्रेम व्याकुल चित लेत उसाँस नीर लोचन भरि । सूरदास तनु थकित भई अब कृष्णविरहसों परि न सकति मरि ॥ १३ ॥

पावससमयवर्णन राग मलार ॥ ब्रजते पावस पै न टरी ॥ शिशिर वसंतशरदगत सजनी बीती औधि करी ॥ उनैउनै घन वरषत चख उरसरिता सलिलभरी । कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारि परी ॥ ताहुमें प्रगट विषम ग्रीषमऋतु इतयो ताप मरी । सूरदास प्रभु कुमुद चंद्रबिनु बिरहातरनि जरी॥ १४ ॥

अब वर्षाको आगम आयो। ऐसे निठुर भये नँदनंदन संदेशो न पठायो ॥ बादर घोर उठे चहुँ दिशिते जलधर गरजि सुनायो ॥ एकै शूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं ब्रज छायो ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोकिल शब्द सुनायो। सूरदासके प्रभुसों कहियो नैनन है झर लायो ॥ १५ ॥

माई री ए मेघ गाजें। मनहुँ काम कोपि चढो कोलाहल कटक बढ्यो बग्हा पिक चातक जैजै निसान बाजें ॥ बरनबरन बादर बनाए तब जगत बिराजै। दामिनि करवार करनि कंपत सब गात उरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुष साजै ॥ ऐसे अभिलाष धीर विगत विरतते न लाजै। अबलनि अकेली करि अपनी कुलनीति विसरि अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजै ॥ १६ ॥

ब्रजपर बदरा आए गाजन। मधुवनको पठए सुनु सजनी फौज मदन लग्यो साजन ॥ ग्रीवरंध्र नैन चातकजल पिक मुख बाजे बाजन। चहुँ दिशिते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन ॥ कहियत हुते श्याम परपीरक आए शंकर काजन। सूरदास श्रीपतिकी महिमा मथुरा लागे राजन ॥ १७ ॥

देखियत चहुँ दिशिते घन घोरे। मानो मत्त मदनके हथियन बलकरि बंधन तोरे ॥ श्याम सुभगतनु चुअत गंडमद बरषत थोरेथोरे। रुकत न पौन महावतहूपै मुरत न अंकुश मोरे ॥ बल बेनी बल निकसि नयनजलकुच कंचुकि बंद बोरे। मनो निकसि बगपाँति दांत उर अवधि सरोवर फोरे ॥ तब तेहि समै आनि ऐरापति ब्रजपतिसों करजोरे। अब सुधि सूर कान्ह केहरिबिन गरत गात जैसे बोरे ॥ १८ ॥

ब्रजपर सजि पावस दल आयो। धुरवा धुंधि बढी दशहूँ दिशि गर्जि निसान बजायो ॥ चातक मोरइतरपै दागन करत अवाजैं कोयल। श्याम घटा गज अशन वाजि रथ चित बगपांति सजोयल ॥ दामिनि कर करवार बूँद शर इहिविधि साजे सैन। निधरक भयो चल्यो ब्रज आवत अग्र फौजपति मैन ॥ हम अबला जानिकै तुम बल कहौ कौन विधि कीजै। सूर श्याम अबके इहि औसर आनि राखि ब्रज लीजै ॥ १९ ॥

सखि री पावस सैन पलान्यो। पायो बीच इंद्र अभिमानी हरिबिन गोकुल जान्यो ॥ दशहु दिशासों धूप देखियत कंपतिहै अति देह। मनहु चलत चतुरंगचमू नभ बाढी है खुर खेह ॥ बोलत मोर शैल द्रुम चढिचढि बग जु उडत तरु डारैं। मनु सहनाफहराइ फिरावत भाजन कहत पुकारैं ॥ गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकार। सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी काहे न करत सँभार ॥ २० ॥

बदरिया वधन विरहिनी आई। मारुत मोर करत चातक अरु नग शिखर सुहाई ॥ नदिया सुचर संदेश क्यों पठऊं बाट तृणनहू छाये। इक हम दीन हती कान्हर विनु औ इन गरजि सुनाए ॥ सूनो घोष वैर तकि हमसों इंद्र निसान बजाए। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि होति हमारे धाए ॥ २१ ॥

वरु ए बदराऊ वर्षन आए। अपनी अवधि जानि नँदनंदन गरजि गगन घन छाए ॥ कहियतहै सुरलोक वसत सखि सेवक सदा पराए। चातक पिककी पीर जानिकै तेउ

तहांते धाए ॥ तृज किए हरित हरषि वेली मिलि दादुर मृतक जिवाए। साजे निविड नीड तन सिचि सजि पंछिनहू मन भाए ॥ समुझत नहीं चूक सखि अपनी बहुते दिन हरि लाए । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि मधुवनवसि बिसराए ॥ २२ ॥

बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम । ऋतु वसंत अरु ग्रीषम बीते अब बादर भए श्याम ॥ तारे गनत गनतकै सजनी बीते चारौ याम । औरौ कथा सबै बिसराई लेत तुम्हरो नाम ॥ छिन अंतर छिन द्वारे ठाढी अरु सूखतिहै घाम । सूर श्याम जादिनते बिछुरे अस्थि रहीकै चाम ॥ २३ ॥

किधौं घन गर्जत नाहिं उनदेशनि । किधौं हरि हरषि इंद्र हठि बरजे कै धौं दादुर खाए शेषनि ॥ किधौं उहि देशन गवन मग छांडे घरनि न बूँद प्रवेशनि । चातक मोर कोकिला उहिवन बधिकन बधे विशेषनि ॥ किधौं उहिदेश बाल नहिं झूलति गावति सखिन सुदेशनि । सूरदास प्रभु पथिक न चलहीं कासों कहौं सँदेशनि ॥ २४ ॥

देखो माई श्यामसुरति अब आवै । दादुर मोर कोकिला बोलै पावस अगम जनावै ॥ देखि घटा घनचाप दामिनी मदन शृँगार बनावै । विरहिनि देखि अनाथ नाथ बिन चढि चढि व्रजपर आवै ॥ कासों कहौं आइ को हरिपै यह बसुदेव सुनावै । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि ब्रजवनिता सचुपावै ॥ २५ ॥

तुम्हारो गोकुल हो ब्रजनाथ । घेरचो है अरि चतुरंगिनि लै मन्मथ सेना साथ ॥ गर्जत अतिगंभीर गिरा मन मैगल मत्तअपार । धुरवा धूरि उडत रथ पायक घोरनकी खुरतार । चपला चमचमाति आयुध बग पंगति ध्वजा अकार । परत निसाननि घाव तमकि धनु तरपत जिहि जिहि वार । मारैमार करत भट दादुर पहिरे बहु बरन सनाह । अरै कवच उघरे देखियत मनो बिरहिनि घाली आह ॥ करै तौ गात अंग चातक पिक कहत भाजि जिनि जाहु । उरनि उरनि वै परत आनि वे जोधा परम उछाहु ॥ भयो अहंकार सुभार सूरवाँ सकति रही उर शालि । हम कत हाथ परे नाहीं गहि रहि न ढाल संभालि ॥ अति घायल धीरज दुवाहिआतेज दुर्जन दालि । टूकटूकह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि ॥ निशि वासरकैविग्रह आयो अति संकेतहि घाउ । कापै करौं पुकार नाथ अब नाहिंन तुम बिनु ठांउ ॥ नंदकुमार श्याम घन सुंदर कमल नैन सुखधाम । पठवहु बेगि गोहार लगावन सूरदास जिहि नाम ॥ २६ ॥

ऐसेमें न सुध्यो करै अति निठुराई धरै उनैउनै घटादेखौ पावसकी आई है । चहुँ दिशि घोर मोरलागी है मदन रोर पिककी पुकार उरअरसी लगाईहै ॥ दामिनिकी दमकनि बूँदनिकी झमकनि सेजकी तलफ कैसे जीजियत माईहै ॥ लागेहैं बिसारे बान श्यामबिनु युग याम घायल ज्यों घूमैं मनो विषहर खाईहै ॥ मिटै न जियको शूल जातहै यौवन फूल घरीघरी पलपल विरह सताईहै । जगतके प्रभुबिनु कल न परतछिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराई है ॥ २७ ॥

ऐसो जो पावस ऋतु प्रथम सुरति करि माधौजू आवहिं । बरनबरन अनेक जलधर अति मनोहर भेष । तिहि समय सखि गगन शोभा सबहिंते सु विशेष ॥ उडत खग

बगवृंद राजत रटत चातकमोर । बहु विविध विधि रुचि बढावत दामिनी घनघोर ॥ धरनि तृण तनु रोम पुलकित पिय समागम जानि । द्रुमनि बरवल्ली वियोगिनि मिलतिहैं पहिं-चानि ॥ हंस शुक पिक सारिका अलि गुंज नाना नाद । मुदित मण्डल भेक भेकी विगन विहँग विषाद ॥ कुटज कुमुद कदम्ब कोविद कनकआरि सुकञ्ज । केतकी करवीर वेलउ विमल बहुविधिमन्त ॥ सघनदल किलकार अंकित सुमन सुकृतसुवास । निकट नैन निहारि माधो मन मिलनकी आस ॥ मनुजमृग पशुपक्षिपरिमित और अमित जुनाम । सुमिरि देश विदेश परिहरि सकल आवहिं धाम ॥ यहै अवधि उपाउ सोचति कछुन परै विचार । कौन हित ब्रजवास बिसरचो नीक नन्दकुमार ॥ परम सुहृद सुजान सुन्दर ललित गति मृदु हास । बैनवर बहुविधि बजावन गोपशिशु चहुँपास ॥ चारुकुण्डल लोललसित सुकमल-विमल विशाल । सुदिन कब जब देखवी वन बहुत बाल विशाल ॥ बारबार सु विरहिनी अति विरह व्याकुल होति । बातवेग बिलोल ज्यों अलि दीन दीपक ज्योति ॥ सुनि सँदेसहि हृदयसूरजदास करि परतीति । दरश दै दुख दूरि कीजै प्रेमकी यह रीति ॥२८॥

राग मलार ॥ आजु घनश्यामकी अनुहारि । उनइ आए साँवरेते सजनी देखि रूपकी आरि ॥ इन्द्रधनुष मानो पीत वसनछवि दामिनि दशनविचारि । जनु बगपांति माल मोतिन की चितवत हितहि निहारि ॥ गर्जत गगन गिरागोविन्दमिसु सुनत नयन भरे वारि । सूर-दास गुण सुमिरि श्यामके विकलभई ब्रजनारि ॥ २९ ॥

कैसेकै भरिहैं री दिन सावनके । हरित भूमि भरै सलिलसरोवर मिटे मग मोहन आवनके ॥ दादुर शोर मोर चातक पिक निशहि निशासुर पावनके । अब घन घुमडि उमडि दामिनि रूप मदन धनुषधरि धावनके ॥ पहिरि कुसुमसारी कंचुकि तनु झुंडनि झुंडनि गावनके । सूरदास प्रभु दुसह घटत क्यों शोक त्रिगुण शिररावनके ॥ ३० ॥

राग केदारो ॥ हरि सुत पावक प्रगट भयो री । मारुतसुत वंधौ प्रतिप्रोहित ताप्रति पालन छाँडि गयो री ॥ हरसुतवाहनअशन सनेही सो लागत अंग अनलमयो री । मृग-मदस्वादमोदनाहिं भावत दधिसुत भानसमान भयो री ॥ बारिजसुत प्रतिक्रोध कियो सखि मेटि दकारसकारलयोरी । सूरदास विनु सिंधुसुतापति कोपि समर कर चाप लयो री ॥ ३१ ॥

राग मलार ॥ ऐसे बादर तादिन आये जा दिन श्याम गोवर्धन धारचो । गरजि गरजि घन वरषन लागे मनोसुरपति निज वैर सँभारचो ॥ सबै सँयोग जुरोहै सजनी हठिकरि घोष उजारचो । अबको सात दिवस राखै गोदूरिगयो ब्रजको रखवारचो ॥ जब बलराम हुते या ब्रजमें काहू देव न ऐसो डारचो । अब यह सूमि भयानक लागै विधिना बहुरि कंस अवतारचो ॥ अब इह सुरति करै को हमरी या ब्रज कोऊ नाहिं हमारचो । सूरदास अतिविकल विरहिनी गोपिन पिछलो प्रेम सँभारचो ॥ ३२ ॥

जोपै नंदसुवन ब्रज होते । तो पै नृप पावस मुनि बिनती कहत न डरती सोते ॥ अब हम अबल जानिकै सखि री हैं गैवररथ जोते । हमपर गरजि गरजि पठवतहैं लेत न सकल सञोते ॥ सूरदास प्रभु शैलधरनविनु कहा सबै अब तोते ॥ ३३ ॥

इहां नाहिन नंदकुमार । उहै जानि अजान मघवा करी गोकुलआर ॥ नैन जलद निमेष दामिनि आँसु वर्षत धार । दरश रवि शशि दुरयो धीरज श्वास पवन अकार । उरज गिरिभे भरन भारी अगम काम अपार । गरजि बिकल वियोग बाणी हरति अवधि अधार ॥ पथिक मथुरा जाइ हरिसों बात कहै बिचार । शत्रुसेन सुधाम घेरचो सूर लगहु गुहार ॥ ३४ ॥

मानो माई सबन इहै है भावत । अब वहि देश नंदनंदन कहँ कोउ न समौ जनावत ॥ धरत न बन नवपत्र फूल फल पिक वसंत नाहिं गावत । मुदित न सर सरोज अलि गुंजत पवन पराग उडावत ॥ पावस विविध बरन वर बादर उडि नाहिं अंबर छावत । चातक मोर चकोर शोर करि दामिनि रूप दुरावत ॥ हमपर सकल कोप करि सजनी हठिकरि बलहि बढ़ावत । सूर श्याम परपीर न जानत कत सर्वज्ञ कहावत ॥ ३५ ॥

सखि कोई नई बात सुनि आई । इह ब्रजभूमि सकलसुर सम्पति सो मदन मिलिक करिपाई ॥ घनदामिनि बगपाँति मनोवै वरषै तडित सुहाई । बोलत बग निकेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई ॥ गोकुलै मोर चकोर मधुप शुक सुमन समीर सोहाई । चाहत वास कियो वृन्दावन विधिसों कछु न बसाई ॥ सकत न जानत लागत सूनो कोउ हुते बल वीर कन्हाई । सूरदास गिरिधर बिन गोकुल कौन कौन करिहै ठकुराई ॥ ३६ ॥

बहुरि बन बोलन लागे मोर । कर सम्भार नन्दनंदनकी सुनि बादरको घोर ॥ जिनको पिय परदेश सिधारो सो तियपरी निठोर । मोहिं बहुत दुख हरि बिछुरेको रहत विरहको जोर ॥ चातक पिक चकोर पपीहा ए सबही मिलि चोर ॥ सूरदासप्रभु वेगिन मिलहु जनम परत है वोर ॥ ३७ ॥

यहि वन मोर नहीं ए कामबान । विरह खेद धनुपुहुप भृंग गुन करिल तरैया रिपु-समान॥लयो घेरि मनो मृग चहुँ दिशिते अचूक अहेरी नहिं अजान । पुहुपसेन घन रचित युगल तनु क्रीडत कैसो वन निधान ॥ महामुदित मन मदन प्रेमरस उमँगिभेरे मैं मैन जान । इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदरचो नानागदै जीवनदान ॥ ३८ ॥

आजु बन मोरन गायो आइ । जबते श्रवण सुन्यो सुन सखी री तबते रह्यो न जाइ ॥ ब्रजते बिछुरे मुरलि मनोहर मनहुँ व्याल गयो खाइ । औषध वैद गरुरियो हरि नाहिं मानै मन्त्र दोहाइ ॥ चातक पिक दुखदेत रैनिदिन पिय पियवचन सोहाइ । सूरदासप्रभु तौ पैहै जीवहि जौ मिलि हैं हरि आइ ॥ ३९ ॥

शिखिन शिखर चढि टेर सुनायो । बिरहिनि सावधान ह्वै रहियो सजि पावस दल आयो॥ नव बादल वानैत पवन ताजी चढि चुटकि दिखायो । चमकत बीजु शैलकर मण्डित गरजि निसान बजायो ॥ दादुर मोर चातक पिकके गण सब मिलि मारू गायो । मदन

सुभट करवाण पंच लै ब्रजतन सन्मुख धायो ॥ जानि विदेश नन्दको नन्दन अबलन त्रास दिखायो। सूर श्याम पहिले गुण सुमिरिहि प्राण जात बिरमायो ॥ ४० ॥

हमारे माई मोरवा वैर परे। घन गर्जत बरज्यो नहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे ॥ करि करि पंख प्रकट हरि इनको लैलै शीश धरे। ताही ते मोहन विरहिनिको एऊ ढीठ करे ॥ को जानै काहेतै सजनी हमसों रहत अरे। सूरदास परदेश बसे हरि ए बनते न टरे ॥४१॥

कोउ जाई बरजौ बोलत मोरनि। टेरनि विरह छिनु न रह्यो परै सुनि दुखहोत करोरनि ॥ रटत पपीहा छिनु न रहाई होत विरहकी रोरनि। चमकत चपल चहूं दिशि दामिनि अंबर घनकी घोरनि ॥ बर्षत बूंद बाणसे लागत विरहाशरके जोरनि। चन्द्र किरन नैनन भरि पीवत नाहिंन तृप्ति चकोरनि ॥ मन्मथ पीर अधिक तनु कंपित ज्यों मृग केहरि कोरनि। सूर दास तोहीपर बचिवो मिलि हो नंदकिशोरनि ॥ ४२ ॥

राग सारंग ॥ अहोरे विहंगम बनवासी। तेरे बोलत रजनी बाढत श्रवन सुनत नींदउ नासी ॥ कहा कहौं कोउ मानत नाहीं इक चन्द औ चंद परासी। सूरदास प्रभु ज्यों न मिलैंगे लेहौं करवत कासी ॥ ४३ ॥

शारंग श्यामहि सुरति कराइ। पौढे होहिं जहां नंदनंदन ऊँचे टेर सुनाइ ॥ गये ग्रीष्म पावस ऋतु आई सब काहू चितचाइ॥तुम बिनु ब्रज बासी ऐसे जीवैं ज्यों करिया बिननाइ॥ तुम्हरो कह्यो मानिहैं मोहन चरण पकरि लैआइ। अबकी बेर सूरके प्रभुको नैनन आनि देखाइ ॥ ४४ ॥

राग मलार ॥ सखी री चातक मोहिं जिआवत। जैसे हि रैनि रटति हौं पिय पिय तैसेही वह पुनि पुनि गावत ॥ अतिहि सुकंठ दाहु प्रीतमको तारूजीभ न लावत। आपु न पिवत सुधारस सजनी विरहिनि बोलि पिआवत ॥ जो ए पंछि सहायन होते प्राण बहुत दुख पावत। जीवन सफल सूर ताहीको काज पराए आवत ॥ ४५ ॥

राग सारंग ॥ चातक न होइ कोउ बिरहिनि नारि। अजहूं पिय पिय रजनी सुरति करि झूठेहि मांगत वारि ॥ अति कृशगात देखि सखि याको अहनिशि वाणी रटत पुकारि। देखौ प्रीति बापुरे पशुकी आन जनम मानत नहिं हारि ॥ अब पति बिनु ऐसो लागत यह ज्यों सरवर शोभित विनबारि। त्योंही सूर जानिए गोपी जोन कृपाकरि मिलहु मुरारि ॥ ४६ ॥

राग आसावरी ॥ अब मेरीको बोलै साखि। कैसे हरिके संग सिधारे अबलौं यह तनु राखि ॥ प्राण उदान फिरत ब्रज बीथिनि अवलोकनि अभिलाषि। रूप रंग रस रास परानो बचन न आवै भाषि ॥ सूर सजीवनि मूरि मुकुंदहि लै आईही आंखि। अब सोइ अंजन देति सुरचिकरि जिहि जीजै मुख चाखि ॥ ४७ ॥

राग मलार ॥ बहुत दिन जीवो पपीहा प्यारो। वासर रैनि नावँले बोलत भयो विरह ज्वर कारो ॥ आपु दुखित पर दुखित जानि जिय चातक नाउँ तुम्हारो। देखो सकल बिचारि सखी जिय बिछुरनको दुख न्यारो ॥ जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम बाण अनियारो। सूरदासप्रभु स्वातिबूँद लगि तज्यो सिंधु करिखारो ॥ ४८ ॥

हौं तौ मोहनके विरह जरीरे तू कत जारत । रे पापी तू पंखि पपीहा पिउपिउपिउ अधराति पुकारत ॥ सब जग सुखी दुखी तू जलबिनु तऊ न तनुकी विथहि बिचारत। कहा कठिन करतूति न समुझत कहा मृतक अबलनि शर मारत ॥ तू शठ बकत सतावत काहू होतउ है अपने उर आरत । सूर श्याम बिनु ब्रजपर बोलत हठि अगलेऊ जनम बिगारत ॥ ४९ ॥

राग नट ॥ जो तू नेकहूँ उडि जाहि । कहा निशिवासर बकत बनु विरहिनीतनु चाहि ॥ बिधिहि वचन सुदेश बाणी इहां रिझवत काहि । पति विमुख पिक पुरुष वसु लौ एतो कहा रिसाहि ॥ नाहिनैं सुख सुनत समुझत बिकल विरह व्यथाहि । राखि यहु तन वा अवधिलौं मदन मुख जिनि खाहि ॥ तहूँतो तनु दग्धरवलखि फिरि कहा समुहाहि । करि कृपा ब्रज सूर प्रभुबिनु मौनि मोहिं बिसाहि ॥ ५० ॥

राग सारंग ॥ कोकिल हरिको बोल सुनाउ । मधुवनतेउ पठारि श्यामको इहि ब्रज लैकरी आउ ॥ जा जस कारण देत सयाने तन मन धन सब साजु । सुयश बिकात बचनके बदले क्यों नबिसाहत आजु ॥ काज कछू उपकार परायो यहै सयानो काज । सूरदास पुनि कहां यह औसर वनै वसंत ऋतुराज ॥ ५१ ॥

सुन री सखी समुझि शिख मेरी । जहां बसत यदुनाथ जगतमणि वारक तहां आउ दै फेरी । तू कोकिला कुलीन कुशल मति जानत व्यथा बिरहिनी केरी । उपवन वैसि बोलि वखानी वचन सुनाय हमहि करि चेरी ॥ करियो प्रकट सुनाय श्यामसों अबला आनि अनंगरिपु घेरी । तोसी नहीं और उपकारिनि यह बसुधा सच बुधि करि हेरी ॥ प्राणनके बदले न पाइयत सेति बिकाय सुयशकी ढेरी । ब्रज लेआउ सूरके प्रभुको गाऊंगी कुलकीरति तेरी ॥ ५२ ॥

राग मलार ॥ अब इह वरषौ बीति गई । जिनी सो चहु सुखमान सयानी भली ऋतु शरद भई ॥ प्रफुलित सरज सरोवर सुन्दर नवबिधि नलनि नई । उदित चारु चंद्रिका अवर उर अंतर अमृत मई ॥ घटी घटा सब अभिन मोह मद तमिता तेज हई । सरिता संयम स्वच्छ सलिल जल फाटी काम कई ॥ हे सरघा सन्देश सूर सुनि करुणा कहि पठई । यह सुनि सखी सयानी आई हरि रति अवधि दई ॥ ५३ ॥

राग मारू ॥ शरद समैहू श्याम न आए । को जानै काहेते सजनी कहुँ विरहिनबिरमाए ॥ अमल अकास कास कुसुमिन क्षिति लक्षण स्वाति जनाए । सर सरिता सागर जल उज्ज्वल अलिकुल कमल सुहाए ॥ अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाए ॥ त्रिय सब रंग संग मिलि सुन्दरि रचि सचि सींच सिराए ॥ सूनी सेज तुषार जमत चिरहास चन्दन बाए । अबलहि आश सूर मिलिबेकी भए ब्रजनाथ पराए ॥५४॥

अथ चन्द्रप्रति तरकवदति ॥ राग कान्हरो ॥ छूटिगई शशि शीतलताई । मनु मोहि जारि भसम कियो चाहत साजत मनोकलंक तनु काई ॥ याहीते श्याम अकास

देखिये मानो धूम रह्यो लपटाई। ताऊपर दौ देत किरनी उर उडुगण कउनै चढि इत आई॥ राहु केतु दोउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावहि पाई। ग्रसे ते न पचि जात पापमें कहत सूर बिरहिनि दुखदाई॥ ५५॥

राग केदारो॥ यह शशि शीतल काहेते कहियत। मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत॥ बिरहिनि अरु कमलनि त्रासत कहुँ उपकारी रथनहियत। सूरदास प्रभु मधुवन गौने तो इतनो दुख सहियत॥ ५६॥

करधनु लिए चंद्रहि मारि। तबतोपै कछुवै न सिरै है जब अतिज्वर जैहै तनु जारि॥ सूहरवाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण बिस्तारि। ऐसी भांति बुलाई मुकुर महि अति वल खंड खंड करिडारि॥ सोई अवधि आई है चलतैही जौ दई मुरारि। सूरसो विनय करति हिमकरसों अब तू उयो छांडि दिनचारि॥ ५७॥

राग सारंग॥ हरको तिलक हरि विनु दहत॥ वै कहियत उडुराज अमृतमै तजि स्वभाव मोहि बहनि बहत॥ कत रथ थकित भयो पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहण ग्रहत। छयो न छीन होत सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहाँ बसत॥ जाको ध्यान धरतिहीं दधिसुत मणि महेश जैसे रहनि रहत। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना प्राण तजति यह नाहिनै सहत॥ ५८॥

राग मारू॥ या बिन होव कहा यह सूनो। लै किन प्रगट कियो प्राचीदिशि विरहि-निको दुख दूनो॥ सब निरदै सुर असुर शैल सखि सायर सर्प समेत। काहु न कृपाकरी इतननिमें त्रियतन बन दौ देत॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचुर अरु कमलनको हेतु। युग युग जीवै जर वापुरी मिलै राहु अरु केतु॥ चितै चन्द्रतन सुरति श्यामकी बिकलभई ब्रज बाल। सूरदास अजहूं इहि औसर काहे न मिलत गुपाल॥ ५९॥

दूरिन करहि बीनको धरिबो। रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूँ चंद्रको टरिबो॥ जामें बीती सोई जानै कठिनसु प्रेम पाशको परिबो। प्राणनाथ संगहुते बिछुरे रहत न नैननीरको झरिबो॥ चन्दन चरचि तनु दहत मलयानिल श्रवण बिरहानल जरिबो। सूर सु कमलनैनके बिछुरे झूंठो सब जतननिको करिबो॥ ६०॥

राग केदारो॥ बिधु बैरी शिरपर बसै निशि नींद न परई। हरि सुरभान सुभट बिना-यहिको वश करई॥ गगन शिखर उतरै चढै गवैं जिय धरई। किरनि सकति भुजभरि हनै उरते न निकरई॥ उडु परिवार पिशुनसभा अपयशहिन डरई। सोइ परपंच करै सखी अबला ज्योंबरई॥ घटै बढै यहि पापते कालिमा नटरई॥ सूर दुष्ट समुझावही त्योंत्यों जियखरई॥ ६१॥

राग मलार॥ कोऊ बरजोरी या चंदहि। अतिही क्रोध करत हमऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि॥ कहा कहौं वर्षा रवि तमचुर कमल बलाहक कारे। चलत न चपल रहत थिरकै रथ बिरहिनिके तनु जारे॥ निंदत शैल उदधि पन्नगको श्रीपति कमठ कठोरहि। देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि। ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति ऐसी गति ब्रजबालहि। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदनगुपालहि॥ ६२॥

अब हरि कौनसों रति जोरी । काके भए कौनके ह्वैहैं बँधे कौनकी डोरी ॥ त्रेता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ बिलपति छोरी । सूर्पनखा वह ब्याहन आई नाक निपाति बहोरी ॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी । बहुतै प्रीति बढाय महरिसों बहुरौ ना चितयो उन ओरी ॥ आरजपंथ छिंडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी । सूरदास करि काज अपनो गुडी डोरि ज्यों तोरी ॥ ६३ ॥

अब या तनुहि कहो कहा कीजै।सुन री सखी श्यामसुन्दर बिन बाँटि विषम विष पीजै॥ कै गिरिए गिरि चढि सुनि सजनी शीश शंकरहि दीजै । कैदहिए दारुण दावानल जाय यमुन धसि लीजै ॥ दुसह वियोग विरह माधोको दिनही दिनही छीजै । सूर श्याम प्रीतम बिनु राधे सोचिसोचि जियजीजै ॥ ६४ ॥

राग भोपाली ॥ हमहि कहा सखी तनके जतनकी अब या यशहि मनोहर लीजै । सकल त्रास सुख याही पपुलौं छाँडि दियेते कछू न छीजै ॥ कुसुमित सेज कुसुम सरसरवर हरिके प्राण प्राणपति जीजै । विरह थाह ब्रजनाथ सवन दै निधरक सकल मनोरथ कीजै ॥ सबन कहत मन रीस रिसाए नहिंन बसाय प्राण तजि दीजै । सूर सु पतिसों चरित्र चतुरई तुम यह जाइ बधाई लीजै ॥ ६५ ॥

राग केदारो ॥ जियहिं क्यों कमलिनि काँदौ हीन । जिनसों प्रीति हुती री सुन सखि तिनहुँ बिछुरि दुख दीन ॥ सागरकूल मीन तरफत हैं हुलसि होत जल दीन । श्याम वारि विधि लई विरद तजि हम जु मरति लवलीन ॥ शशि चन्दन अरु अंभ छाँडि गुण वपुजु दहत मिलि तीन । सूरदास प्रभु मौन सबै ब्रज बिन यन्त्री बिन बीन ॥ ६६ ॥

राग सारंग ॥ वैसी शारंग करहि लिये । शारंग कहत सुनत वे शारँग शारँग मनहिं दिये ॥ शारँग पथिक बैठि वह शारँग शारँग विकल हिये । शारँग धुकि शारँग परे शारँग शारँग क्रोध किए ॥ शारँग है भुज करहि बिराजत शारँग रूप किए । सूरदास मिलहीं वे शारँग तौपरि सुफलजिये ॥ ६७ ॥

राग मलार ॥ सो सुनियत हैरी द्वै माह । इतनेमाहिं सब बात समुझिबी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो बहुत दिन लाए करी पाछिली गाह । हमहिं छाँडि कुबिजा मन बाँध्यो कौन वेदकी राह ॥ एतेहुपर सन्तोष न मानत परे हमारे डाह । सूरदास प्रभु पूरो दीजै दिन दश मानी साह ॥ ६८ ॥

राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत है द्वै सावन । उहै शूल फिरिफिरि सालत जिय श्याम कह्यो हो आवन ॥ तब कत प्रीति करी अब त्यागी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखी निकसि तजि जइये जहां सुनिए नावन ॥ एकहिबेर तजी मधुकर ज्यों लागे नेह बढावन । सूर सुरति क्यों होति हमारी लागीनीकी भावन ॥ ६९ ॥

राग कान्हरो॥काहेको पिय पियहि रटतहौ पियको प्रेम तेरो प्राण हरैगो । काहेको लेति नयन जल भरिभरि नयन भरेते कैसे शूल टरैगो ॥ काहेको श्वास उसाँस लेतिहौ बैरी बिरहको दवा जरैगो ॥ छाल सुगन्ध सेज पुहुपावलि हारु छुएते जियहारु जरैगो ॥वदन दुराइ

बैठि मंदिरमें बहुरि निशापति उदय करैगो। सूर सखी अपने इन्ह नैननि चन्द्रचितै जिनि चन्द्र जरैगो ॥ ७० ॥

राग सारंग ॥ अब हरि हमको माई री मिलत नाहिंन नेकु। नित उठि जाइ प्रातलै बनसंग आगे पाछे चलि न सकति सखी डग एकु ॥ बाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ द्रुमतन मेरे उर लगि एक दिन नख एक। रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तो न लखि सुधर बरषै एक ॥ लावत हृदय खोंचि पुरतपट फरुहरि लेत परिजन रेक। अब कोउ सोहै वसु सूर प्रभु कौन अधिक जिहि परिनेक ॥ ७१ ॥

राग मलार ॥ हौं कछु बोलति नाहीं लाजनि । एक दाइँ मरिवो पै मरिवो नंदनँदनके काजनि ॥ तजि ब्रजबाल आपनो गोकुल अब भाए सुखराजनि। कागज लिखि पतियां नहिं पठवत पायो जियको माजनि ॥ जे गृह देखि परमसुख होतो विन गोपाल भए भाजन। कासों कहौं सुनै कोई दुख दूरि श्यामसो साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरह लयो करताजनु। सूरदास नागरविन अब यह कौन सहै शिर गाजनु ॥ ७२ ॥

राग गौरी ॥ बहुदिन ऐसोई हतो री। द्वै जाते मेरे आँगनमें मोहन चरन चलि ऐसो री ॥ बालदशाकी प्रीति निरन्तर परी रहतही ठोरी। राधा/राधा नँदनन्दन मुखलागि रहो तिहिसोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी। सूरदास श्याम शारँग तजि बहु सुख बहुरि न भोरी ॥ ७३ ॥

राग सारंग ॥ गौरिपूत रिपु तासुत आए प्रीतम ताहिननारे। शिव विरञ्चि जाके दोउ बाहन तिन हरे प्राण हमारे ॥ मोहिं बरजत उठि गमन कियो उठि स्वादे लुबध रसाल। कुन्ती नन्दतात सुख जोवत अरु वारत अतिचाल ॥ उगवै सूर छुटैबे बन्धन तौ विरहिनि रति मानै। इहि विधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सो जानै ॥ ७४ ॥

राग गौरी ॥ माधोजू दरशनकी औसेरि। लै जु गए मन संग आपने बहुरि न दीन्हों फेरि ॥ तुम्हरे भवन नहीं भावै मनुजनु राखे वैटेरि। कमल नयो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि ॥ तुम बिछुरे सुख कबहुँ न पायो सब जग देखति हेरि। सूरदास सब नातो ब्रजको आए नंद निवेरि ॥ ऋतु वसंत कोकिल कत कूजहि मदनसांकली खेरि ॥ ७५ ॥

राग आसावरी ॥ सखी री विरहा यह विपरीत। विरहिनी वासु क्यों करै पावसकाल प्रतीत ॥ नित नवला नवसात साजिकै अरु वह भावक राखी। ना जानौं नृपति प्राणपति कहां हैं रुचि आँखी ॥ सूरदास गोपालकी सब अवधि गई व्यतीत। बहुरि कब देखिबो मुख तुम्हारो यह नीत ॥ ७६ ॥

राग बिलावल ॥ तौऊ तौ गोपाल आहिं गोकुलबासी ॥ ऐसी बातैं बहुतै कहि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि मथि सिंधु सुरन कर पोषी शंभु भए विषुआसी। इमि हति कंस राज औरै दयो चाहि लई इक दासी ॥ विसरो सूर विरहदुख अपनो अब चली चाल औरासी। ऐसे विहंग प्रीतिनिधि देखे प्रगटन परखी खासी ॥ ७७ ॥

राग सारंग ॥ उन ब्रजदेव नेकु चितु करते । कछु जिय आश रहति विधिवश जो बहुरहु फिरि २ मिलते ॥ कहा कहिए हरि सब जानत हैं या तनुकी गति ऐसी । सूरदास प्रभु ताहि सुरुचि मिलि नातरु हम गरवैसी ॥ ७८ ॥

राग बिलावल ॥ श्याम चितौदीरे मधुबनियां । अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनकके मनियां ॥ बहुरि गोकुल काहेको आवत भावत नवजोबनियां । सूरदास प्रभु वाके वश परि अब हरि भए चिकनियां ॥ ७९ ॥

देखोरी धौं लोग चतुर मधुवनको । बादत नहीं गोविंद बिमोहै गुण जानौ माधौको ॥ जब हरि गमन करौ मधुवनको । छाँडो हेतु सबनको । सूरदास प्रभु बेगि मिलावो गोविंद प्यारो निज प्राणनको ॥ ८० ॥

राग धमार ॥ कहीं री जो कहिबेकी होई । प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन और न जानै कोई । ज्यों २ अधर सुधारस लैलै मगन रही मुखजोई । जो रखशिव सनकादिक दुर्लभ सो रस बैठी खोई । कहा करौं कछु कहत न आवै सुख सपनो भयो सोई । हमसों कठिन भए कमलापति काहि सुनावौं रोई ॥ विरह व्यथा अन्तरकी वेदन सो जानै जेहि होई । सूरदास सुखमूरि मनोहर लैजो गयो मन गोई ॥ ८१ ॥

राग सानुत ॥ बिछुरे री मेरे बालसँघाती । निकसि न जात प्राण ए पापी फाटत नाहिं वज्रकी छाती ॥ हौं अपराधिनि दही मथतिही भरि यौबनमदमाती । जौहौं जानति हरिको चलिबौ लाज छाँडि सँग जाती ॥ ढरकत नीर नैनभरि सुन्दर कछु न सोहात दिवस अरु राती । सूरदास प्रभु दरशनकारन सब सखिअन मिलि लिखिये पाती ॥८२॥

राग मलार ॥ हरि परदेश बहुत दिन लाए । कारी घटा देखि बादरकी नैन नीर भरिआए ॥ वीर बटाऊ पन्थी हौ तुम कौन देशते आए । इह पाती हमरी लै दीजो जहां साँवरे छाए ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए । सूरदास गोकुलते बिछुरे आपुन भए पराए ॥ ८३ ॥

हमारो हिरदै कुलिसै जीत्यो । फटत न सखी अजहुँ उहि आशा बरष दिवस परि बीत्यो ॥ हमहूँ समुझिपरी नीकेकरि यहै असित तनु रीत्यो । बहुरि न जीवन मरनसों साझो करी मधुपकी प्रीत्यो ॥ अबतौ बात घरी पहरन सखि ज्यों उदबसकी भीत्यो ॥ सूरश्याम दासी सुखसो बहु भयो उभयमन चीत्यो ॥ ८४ ॥

राग सारंग ॥ एक दिवस कुञ्जनमैं माई । नाना कुसुम लैलै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति न जाई ॥ इतनेमें घन गार्जि वृष्टिकरि तनु भीज्यो मो भई जुडाई । कंपत देखि उठाइ पीतपट लै करुणामय कण्ठ लगाई ॥ कहँ वह प्रीति रीति मोहनकी कहाँ अबधौं एती निठुराई । अब बलबीर सूर प्रभु सखि री मधुवन बसि सबरति बिसराई ॥ ८५ ॥

राग कान्हरो ॥ हौं जानौं मोको सखि माधो हितु है कियो । अति आदर आतुर अलि ज्यों मिलि मुख मकरंद पियो ॥ बरु वह भली पूतना जाको पयसँग प्राण गयो । मन मधु अचै निपट सूने तन यह दुख अधिक दयो ॥ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चलै जु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अधारते अबलौं परत जियो ॥ ८६ ॥

राग सारंग ॥ यागतिकी माईको जानै । पंकजसों पंकज गहि सींचे ए कबहूं न निदानै ॥ शिबि नृप अरु सनकादिक कपि मुनिराई पर रतिरंग मानै । करि हारी वह लोमनि सोए जु रहत इकता तानै ॥ बपु बिचारि अवगनि इनि इनते भाव कुचित यह ठानै । सूरदास प्रभु शिशुलीलामैं नावी रैनि जु बानै ॥ ८७ ॥

नाहिंनै ब्रज नंदकुमार । परम चतुर सुंदर सुजान सखि या तनुको प्रतिहार ॥ रूप लकुट लिएही रहते अलि अनुदिन नैननि द्वार । तादिनते डर भौन भयो सखि शिव-रिपुको संचार ॥ दुख आवन कछु अटक न मानत सूनो देखि अगार । अंशु साँस जात अंतरते करत न कछु बिचार ॥ निशा निमिष कपाट लगे बिन शशि मूषत सतसार । सूर प्राणलटि लाज न छांडत सुमिरि अवधि आधार ॥ ८८ ॥

राग मलार ॥ ऐसे जो हरि आवहिंगे । निरखि निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिंगे तैसिहि श्याम घटा घनघोरनि बिच बगपांति दिखावहिंगे । तैसे मोर पिक करत कुलाहल हरषि हिंडोलना गावहिंगे ॥ तैसीयै दमकति दामिनि अरु मुरली मलार बजावहिंगे । अबके चलते जानि सूर प्रभु सब पहिले उठि धावहिंगे ॥ ८९ ॥

राग रामकली ॥ ब्रज कहा खोरी । छत अरु अछत एकरस अंतर मिटत नहीं कोई करहु कोरी ॥ बालकही अभिलाषनि लीला चकृत भई कुल लाज न छोरी । विरुध विवेक गोपरस परि करि विरह सिंधु मारत ते बोरी ॥ यद्यपि हौ त्रयलोकके ईश्वर परसि दृष्टि चितवतिन बहोरी । सूरदास प्रभु प्रीतिरीति कतते तुम सब अब रहे तोरी ॥ ९० ॥

राग सारंग ॥ हरि मोको हरिभषु कहि जु गयो । हरि दशरत हरि मुदित हरि ब्रज हरि जुलयो ॥ हरिरिपुतारिपु पतिको सुत हरि बिनु प्रजरि दहे । हरिको तात परस उर अंतर हरि बिनु अधिक बहे ॥ हरि तनया सुधि तहां वदति है हरि अभिमानन ढायो । अब हरि दवन दिवा कुबिजाको सूरदास मन भायो ॥ ९१ ॥

राग सारंग ॥ हरि बिनु कौनसों कहिए । मनसिज व्यथा जराति अरनिलौं उर अंतर दहिए ॥ कानन भवन रैनि अरु वासर कहूं न सच लहिए । भूखे भये यज्ञ पशुलौं कोलौं दुख सहिए ॥ कबहुंक उपजै जियमें ऐसी जाइ यमुन बहिए । सूरदास प्रभु कमल नैन बिन कैसे ब्रज रहिए ॥ ९२ ॥

राग मारू ॥ कितै दिन हरि देखे बिन बीते । एकौ फुरत न श्याम सुंदर विन बिरह सबै सुख जीते ॥ मदन गोपाल बैठि कंचन रथ चितै किए तनु रीते । सुफलक सुत लै गए दगा दै प्राणनहींके प्रीते ॥ बहुरि कृपालु घोष कब आवहिं मोहन राम समीते । सूरदास प्रभु बहुरि कृपा करि मिलहु सुदामामीते ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ कान्हधौं हमसों कहा कह्यो । निकस्यो वचन सुनाइ सखीरी नाहिंन परतु रह्यो । मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यों भूली मथत मह्यो । अब कहा करौं घोष वसि सजनी दूत दूरि निबह्यो ॥ सबै अजान भई तेहि औसर काहू रथन गह्यो । सूरदास प्रभु वृथा लाज करि दुसह वियोग सह्यो ॥ ९४ ॥

राग नट ॥ ग्वालिनी छांडि देखि रहु खरचो। तेरे विरह विरहिनी व्याकुल भवन काज बिसरचो ॥ कर पल्लव उडुपति रथ खैंच्यो मृगपति वैर करचो। पंखीपति सब ही सकुचाने चातक अनगभरचो ॥ शारंग सुर सुनि भयो वियोगी हिमकर गर्व टरचो। सूरदास सायर सुतहित पति देखत मदन हरचो ॥ ९५ ॥

राग सारंग ॥ विरह भरचो घर अंगन कोने। दिनदिन बाढत जात सखी री ज्यों कुरखेतके डारे सोने ॥ तब वह दुख दीनों जब बांधे ताहूको फल जानि। निजकृत चूक समुझि मनहीं मन लेत परस्पर मानि ॥ हम अबला अति दीन हीन मति तुमही सब विधि-योग। सूर वदन देखतही अहुठै या शरीरको रोग ॥ ९६ ॥

राग मलार ॥ जोपै कोउ माधोसों कहै। तो यह व्यथा सुनत नँदनंदन कत मधुपुरी रहै ॥ पहिलेही सब दशा बतावै पुनि कर चरण गहै। यह प्रतीति मेरे चित अंतर सुनत न प्रेम सहै ॥ यहै संदेश सूरके प्रभुको को कहि यशहि लहै। अबकी बेर दयालु दरश दै यह दुख आनि दहै ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ माधो छांडि बेपहिचानि। तबते विरह कुटिल या गोकुल कीनो है बिजु खानि ॥ तनु गिरि जानि आनि अवनी डर इहि उड भीत रहे। गमन कान्ह क्षणक्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे ॥ रेणु अंजन जल नैन द्वार ह्वै रह्यो हृदय भरि पूरि। निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्याम सँग दूरि ॥ तुमसों बात और अलि भाषै उलटि ध्यान वपु जीत्यो। द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहौ सूरको नीत्यो ॥ ९८ ॥

राग नट ॥ मेरे मन इतनी शूल रही। बैशतियां छतियां लिखि राखी जे नँदलाल कही॥ एक दिवस मेरे गृह आए हौंही मथत दही। रति मांगत मैं मान कियो सखि सो हरि गुसा गही ॥ सोचति अतिपछितात राधिका मूर्छित धरणि ढही। सूरदास प्रभुके बिछुरेते व्यथा न जात सही ॥ ९९ ॥

राग मलार ॥ हरि इते दिन लाए। आवन कहि गए अजहुँ न आए ॥ चलत चितै मुसुकायके मृदु वचन सुनाये। तेई ढँग मोदक भए न धीरज हरितन छूछ करि छिटकाये ॥ मोहन यदुनाथके गुण जानि पाए। मनहु सूर घनश्याम सुंदर बहुरि न चरण दिखाए ॥ २९०० ॥

यह दुख कौनसों कहौं। जोइ बीतति सोइ कहति सयानी तिन सब शूल सहौं ॥ जे सुख श्याम संग सबकीने गहि राखे इहि गात। ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात ॥ जो हुती निकट मिलनकी आसा सो तो दूरि गई। यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई ॥ यह तनु त्यागि मिलन यों बनि है गंगा सागर संग। अब सुन सूर ध्यान ऐसो है श्याम राम इक रंग ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ हम सखा ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि। मन मुख भरि भरि नैन ऐन ह्वै उर प्रति कमल कोशलरौं खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहां राखति चित रचि रचि। मोहन मदन स्वरूप सुयश रस करत सु गुप्त प्रेमरस पचि पचि ॥ सूरज दास पियूष लागि रस पठयो नृपति तेउ गए बचि बचि। अब सोई मधु हरचो सुफलक सुत दुसह दाह जो उठत तन तचि तचि ॥२॥

जबते नन्दलाल चले काहू मुरली न बजाई। उन बिना जिय कठिन पीर निकसिहू न जाई। वृन्दावनमें भूलि काहू सारंगौ न गाई॥ गोपिन कठिन हिये तरकिहू न जाई। सूरदास प्रभुकी लीला ऊधो कछुपाई।॥ ३ ॥

राग सारंग ॥ माई वै दिना ये देह अछत विधना जो आनै री। श्याममुन्दर रंग रंग युवति वृन्द ठानै री ॥ यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पठावै री। प्राणनाथ कमलनैन बाँसुरी बजावै री ॥ सोई कहा कहौं कहत कठिन कहे कौन मानै री। सूर सो नन्द प्रेम पीर विरही मिले जानै री ॥ ४ ॥

सबकोउ कहत सयानी बातैं। समुझि न परत बूझि नाहिं आवत कही जात नहीं तातैं॥ पहिले जानि अग्नि चन्दनसी सती बहुत उमहै। समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमभाल करवार। सूरदास शिर देत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥ ५ ॥

राग गूजरी ॥ कुँवरिको बैरागी बैराग। पलटति बसन करति निशि चोरी वपु बिलसुत भई जाग ॥ बेसरि वेह मूँदि मृगमद मथि नख उर धुकधुकी खेद कीनी। चलत चरण चिन गयो गलित शिर स्वेद सलिल भैभीनी ॥ छूटी भुजबल फुटी बलय कर छुटि लर फटी कंचुकी छीनी। मनहुँ प्रेमकी परनि परेवा याहीसे पढि लीनी ॥ अवलोकत इहि भाँति रमापति जानौं अहिमणि छीनी। सूरदास प्रभु कहि न जाय कछु हौं जानी मतिहीनी ॥ ६ ॥

राग मलार ॥ हरिको मारग दिन प्रति जोवति। चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों सुमिरि सुमिरि गुण रोवति ॥ पतिआँ पठवत मसि नाहिं खण्डित लिखि लिखि मानहु धावति। भूषण दिन निशि नींद हिरानी एकौ पल नाहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरें दरश बिनु वृथा जनमसुख खोवति ॥ ७ ॥

राग बिलावल ॥ अंतर्यामी कुँवरकन्हाई। गुरुगृह पढत हुते जहां विद्या तहां ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई। गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई ॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई ॥ सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधोको ब्रज दियो पठाई ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ ४६ ॥ उद्धव ब्रज आगमन हेतु ॥ राग नट ॥ यदुपति जानि उद्धव रीति। जिहिं प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति। विरहदुख जहां नाहिं जामत नहीं उपजै प्रेम। रेख रूप न बरन जाके यहि धरचो वह नेम ॥ त्रिगुणतनु करि लखत हमको ब्रह्म मानत और। बिना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डौर। विरहरसके मंत्र कहिये क्यों चलै संसार। कछु कहत यह एक प्रगटत अति भरचो अहंकार ॥ प्रेमभजन न नेकु याके जाइ क्यों समुझाइ। सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ ॥ ९ ॥

राग नट ॥ इह अद्वैत दरशीरंग। सदा मिलि एकसाथ बैठत चलत बोलत संग॥ बात कहत न बनत यासों निठुर योगी जंग। प्रेम सुनि विपरीत भाषत होत है रस भंग॥ सदा ब्रजको ध्यान मेरे रासरंग तरंग। सूर वह रस कहौं कासों मिल्यो सखा भुरंग॥

राग नट ॥ संग मिलि कहौं कासों बात । यह कथत योगकी बातैं जामें रस जरि-जात कहत कहा पितु मात कौनको पुरुष नारि कहा नात । कहां यशोदासी है मैया कहां नंदसम तात ॥ कहां ब्रजभानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात । सखी सखा सुख नहिं त्रिभुवनमें नहिं बैकुंठ सुहात ॥ वै बातैं कहिए केहि आगे यह गुनि हरि पछि-तात । सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत बलभ्रात ॥ १० ॥

राग धनाश्री ॥ कहां सुख ब्रजकोसो संसार । कहां सुखद बंसीवट यमुना यह मन सदा विचार ॥ कहां वनधाम कहां राधा संग कहां संग ब्रजवाम । कहां रसरासबीच अंतरसुख कहां नारि तनु ताम ॥ कहां लता तरुतरु प्रति झूलनि कुंज २ बनधाम । कहां विरहसुख बिनु गोपिन सँग सूर श्याम ममकाम ॥ सखा हमको मिले ऊधो वचनन मारत ताम ॥ भावभजन बिना नाहीं सुख कहां प्रेम अरु योग । काग हंसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग ॥ जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म । सूरब्रजकी कथा सो कहे यह करै जो दंभ ॥ ११ ॥

राग कान्हरो ॥ हंसकागको संग भयो । कहां गोकुल कहां गोपगोपिका बिधि यह संग दयो ॥ जैसे कंचन कांचसंग ज्यों चन्दन संग कुगंधि । जैसे खरी कपूर एक सम यह भई ऐसी संधि ॥ जलबिनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत । जब ब्रजकी बातैं यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ॥ याको ज्ञान मापि ब्रज पठऊं और न याहि उपाव । सुनहु सूर याको बन पठऊं यहै बनैगो दाव ॥ १२ ॥

राग धनाश्री ॥ याहि और कछु नहीं उपाइ । मेरो प्रगट कह्यो नाहिं वदि है ब्रजही देउँ पठाइ ॥ गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौ महंत । गोपिनको परबोधन कारण जैहै सुनत तुरंत ॥ अति अभिमान करैगो मनमें योगिनकी इह भांति । सूर श्याम यह निहचै करिकै बैठत है मिलि पांति ॥ १३ ॥

जबहीं यह कहौंगो वाहि । मोहिं पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि ॥ योगको अभि-मान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ । कहैगो मोहिं श्याम मानत करौं यह चतुराइ ॥ आइ गए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो बोलि । कंध धरि भुज भए ठाढे करत वचन निठोलि ॥ बारबार उसांस डारत कहत ब्रजकी बात । सूर प्रभुके वचन सुनि सुनि उपँगसुत मुसकात ॥ १४ ॥

राग धनाश्री ॥ हरिगोकुलकी प्रीति चलाई । सुनहु उपँगसुत मोहिं न बिसरत ब्रजवासी सुखदाई ॥ यह चित होत जाउँ मैं अबहीं यहां नहीं मन लागत । गोपी ग्वालगाइ बनचा-रण अति दुख पायो त्यागत ॥ कहां माखन रोटी कहां यशुमति जेवहुँ कहि कहि प्रेम । सूर श्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम ॥ १५ ॥

राग रामकली ॥ यदुपति लखो तेहि मुसकात । कहत हम मनरहे जोई सोइ भई यह बात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ । सुनहु ऊधो मोहिं ब्रजकी सुधि नहीं बिसराइ ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहीं है मन आन । नंद यशुमति नारि नर ब्रज तहां मेरो प्राण । कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहत हौं रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति ॥ १६ ॥

सखा सुन एक मेरी बात। वह लतागृह संग गोपिन सुधि करत पछितात ॥ विधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात। हँसि उपँगसुत बचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात। सूर प्रभु यह सुनहु मोसों एकहीसों नात ॥ १७ ॥

जब ऊधो यह बात कही। तब यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगटसही ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम ब्रजको मिलो जाइ ब्रजलोग। मोबिन बिरहभरी ब्रजबाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान परबोधहु तुम हौ पूरण ज्ञानी। सूर उपँगसुत मन हरषाने यह महिमा इन जानी ॥ १८ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो तुम यह निहचै जानो। मन वच क्रम मैं तुमहिं पठावत ब्रजको तुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुम हौ ज्ञाता। रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता ॥ यह मत दै गोपिनको आवहु विरह न मनमें भाषतिन। सूर तुरत तुम जाय कहौ यह ब्रह्म विना नहिं आसति ॥ १९ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो तुम वेगही ब्रज जाहु। सुरति संदेश सुनाइ मेटो वल्लभनिको दाहु ॥ काम पावक तुलित मनमें बिरहश्वास समीर। भस्म नाहिन होन पावत लोचनके नीर ॥ आजुलौं इहि भांति है वा कछुक श्वास शरीर। एतेपर बिना समाधानहिं क्यों धरै त्रिय धीर ॥ बारबार कहा कहौं तुमसों सखा साधु प्रवीन। सूरसुमति विचारिए जिहि जियै जलबिनु मीन ॥ २० ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो ब्रजको गमन करो। हमहि बिना विरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावैं नारि। पूरण ब्रह्म अलख परिचै करि मोहिं बिसारैं डारि ॥ सखा प्रवीन हमारे तुम हौ तुमते नहीं महंत। सूर श्याम कारण यह पठवत है आवैंगे संत ॥ २१ ॥

राग नट ॥ ऊधो मन अभिमान बढायो। यदुपति योग जानि जिय सांचो नयन अकाश चढायो ॥ नारिनपै मोको पठवत हैं कहत सिखावन योग। मनहीमन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुखभोग ॥ आयसु मानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा परमान। सूरदास प्रभु गोकुल पठवत मैं क्यों कहौं कि आन ॥ २२ ॥

राग कान्हरो ॥ तुम पठवत गोकुलको जैहौं। जो मानि हैं ब्रह्मकी बातैं तो उनसों मैं कैहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित बारबार समुझै हौं। आजुइ नहीं कहौं तुव कारज कौन काज पुनि लैहौं ॥ यह मिथ्या संसार सदाई यह कहिकै उठि ऐहौं। सूर दिना द्वै ब्रजजन सुखदै आइ चरण पुनि गैहौं ॥ २३ ॥

राग केदारो ॥ सुन सखाहित प्राण मेरे नाहिनैं सम तोहिं। कैसेहू करि उऋण कीजो ब्रजबधुनते मोहिं ॥ त्याजिये मैं रतन दीन्हों वृथा गोपकुमारि। सालोक्य सामीप्य नासा रोपिता भुजचारि ॥ अंगरही साजो चितासों संधि नहीं तनु ज्ञान। सोइ तुम उपदेशहू जो लहैं पद निर्वान। जौ न अबकै कृत करैं तो होइहौं ऋण दास। सूर गाइ चराइ हौं हैं फेरि बसि ब्रजवास ॥ २४ ॥

राग बिहागरो ॥ तुरत ब्रज जाहु उपँगसुत आजु । ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पंथ द्वै काजु ॥ जबते मधुवनको हम आए फेरी गयो नहिं कोई ॥ युवतिनपै ताहीको पठैं जो तुम लायक होई ॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सरि कौन । सोइ कीजो जैसे ब्रजबाला साधन सीखैं पौन ॥ श्रीमुख श्याम कहत यह बाणी ऊधो सुनत सिहात । आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानिहैं बात ॥ २५ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो ब्रजजिनि गहरु लगावहु । तुम ब्रजनारि जानि मन सकुचत कहिधौं योग सुनावहु ॥ बाणी कहत समुझि वै लैहैं कही हमारी मानौ । विरहदाह यह सुनत बूझिहै मानहु अनलहि पानौ ॥ अबहीं जाहु विकल सब गोपी योगवचन कहि पोषौ । सूर नंदबाबा जननी यशोमतिको बेगिजाइ संतोषौ ॥ २६ ॥

राग सोरठ ॥ हलधर कहत प्रीति यशुमतिकी । कहां रोहिणी ए तन पावै वह बोलन वह हितकी ॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हों पेलि । मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करठेलि ॥ नंदबाबा तब कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको । सूर श्याम नान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको ॥ २७ ॥

राग रामकली ॥ यशोमति करती मोको हेत । सुनत ऊधो कहत बनत न नैन भरि भरिलेत ॥ दुहूँको कुशलात कहियो तुमहिं भूलत नाहिं । श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं ॥ आइ तुमको धाइ मिलिहैं कछुक कारज और । सूर हमको तुमहिं बिन सुख नहीं है कहुँ ठौर ॥ २८ ॥

राग बिहागरो ॥ श्याम कर पत्री लिखी बनाइ । नंदबाबासों बिनती करी करजोरि यशोदामाइ ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि कंठ लगाइ । और ब्रजनर नारि जैहैं तिनहि प्रीति जनाइ ॥ गोपिकनि लिखियोग पठयो भाउ जान न जाइ । सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढाइ ॥ २९ ॥

उपँगसुत हाथदई हरिपाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं बिसरत दिनराती ॥ कहत कहा वसुदेवदेवकी तुमको हमहैं जाए । कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें राखि दुराए ॥ कहै बनाइ कोटि कोउ बातैं कहि बलराम कन्हाई । सूर काज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिलैंगे आई ॥ ३० ॥

राग बिलावल ॥ ऊधोइतनो कहियो जाइ । हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ ॥ याको विलग बहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ । वह गुण हमको कहा बिसरिहै बडे किये पय प्याइ ॥ और जु मिल्यो नंदबाबासों तब कहियो समुझाइ । तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरि प्याइ ॥ यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख तदपि रह्योना जाइ । सूरदास देखों ब्रजवासिन तबहीं हियो सिराइ ॥ ३१ ॥

राग आसावरी ॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे । बाबा नन्दहि पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे ॥ जादिनते मधुवन हम आए शोध न तुमही लीनोहो ।

देदै सौंह कहोगे हित करि कहा निठुरई कीन्हो हो ॥ यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाई हो। सूर कर्मकी रेख मिटै नहिं यहै कह्यो यदुराई हो ॥ ३२ ॥

राग केदारो ॥ विधना इहै लिख्यो संयोग। कहाते मधुपुरी आए तज्यो माखन भोग ॥ कहां वै ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग। देवकी वसुदेव सुत सुनि जननि कैहै सोग ॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग। सूर प्रभु मुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग ॥ ३३ ॥

राग गौरी ॥ पाती लिखि ऊधोकर दीन्ही ॥ नन्द यशुदहि हेतु कहि दीजौ हँसि उपंग सुत लीन्ही। मुख वचनन कहि हेतु जनायो तुम हौ हितू हमारे। बालक जानि पठै नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे ॥ कुबिजा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलइ लियो बोलाई। हाथन पाति लिखी राधाको गोपिन सहित बडाई ॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास। झुकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहुन सूरजदास ॥ ३४ ॥

राग मलार ॥ हमपर काहेको झुकत ब्रजनारी। साझे भाग नहीं काहूको हरिकी कृपा निनारी ॥ कुबिजा लिखो सन्देश सबनको अरु कीनी मनुहारी। हौंतौ दासी कंसराइकी देखौ हृदय बिचारी ॥ फलन मांझ ज्यों करुई तोरई रहत घुरेपर डारी। अब तौ हाथ परी यन्त्रीके बाजत रागदुलारी ॥ ३५ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो ब्रजहि जाहु पालागौं। यह पाती राधाकर दीजौ यह मैं तुमसों मांगौं ॥ गारी देहिं प्रात उठि मोको सुनत रहत यह बानी। राजा भये जाइ नँदनन्दन मिली कूबरी रानी ॥ मोपर रिस पावत काहेको बरजि श्याम नहिं राख्यो। लरिकाईते बाँधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो॥ रजु लै सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृषभान। सूर श्याम बहुरो ब्रज जैहैं ऐसे भए अजान ॥ ३६ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो यह राधासों कहियो। जैसी कृपा श्याम मोहिं कीन्ही आपु करत सोइ रहियो ॥ मोपर रिस पावत वे कारण मैंहौं तुम्हरी दासी। तुमहीं मनमें गुणिधौ देखो विन तप पायो कासी ॥ कहां श्यामकी तुम अर्धगिनि मैं तुमसरकी नाहीं। सूरज प्रभुको यह न बूझिए क्यों न वहाँलौं जाहीं ॥ ३७ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो जाइ कहियो राधिकाही तुम इतनीसी बात। आवनदिए कहो काहेको फिरि पाछे पछितात ॥ अब दुखमानि कहाधौं करिहौ हाथ रहैगी गारी। हमैं तुम्हैं अंतर है जेतो जानत हैं बनवारी ॥ एतो मधुप सबै रस भोगी जहीं जहीं रस नीको। जो रस खाइ स्वाद करि छाँडे सो रस लागत फीको ॥ एक कूबर हरि हरयो हमारो जगतमांझ यश लीनों। ताको कहा निहोरो हमको मैत्रिभंग करि दीनो ॥ तुम सब नारि गँवारि अहीरी कहा चातुरी जानो। राखि न सकी आपुवशकै तब अब काहे दुख मानो ॥ सूरदास प्रभुकी ए बातैं ब्रह्म लखै नहिं पारै। जाके चरण पाइकै कमला गति आपनी बिसारै ॥ ३८ ॥

राग केदारो ॥ सुनियत ऊधो लये सँदेशो तुम गोकुलको जात। पाछे करि गोपिनसों कहियो एक हमारी बात ॥ मात पिताको नेह समुझिकै श्याम मधुपुरी आए। नाहिन

कान्ह तुम्हारे प्रीतम ना यशुमतिके जाए ॥ देखो बूझि आपने जियमें तुम माधो कौने सुख दीने । ए बालक तुम मत्तग्वालिनी सबै मुंडकरिलीने ॥ तनक दही माखनके कारण यशुदा त्रास दिखावै । तुम हँसि सब बाँधनको दौरी काहू दया न आवै ॥ जो वृषभानु-सुता उन कीनीसो सब तुम जिय जानो । ताही लाजत ज्यो ब्रह्ममोहन अब काहे दुख मानो ॥ सूरदास प्रभु सुनि सुनि बातैं रहे श्याम शिरनाए । इत कुबिजा उत प्रेम गोपिका कहत न कछु बनि आए ॥ ३९ ॥

राग बिहागरो ॥ ऊधौ जात व्रजहिं सुने । देवकी वसुदेव सुनिकै हृदय हेत गुने ॥ आपसे पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नंद । सुत हमारो पालि पठयो अति दियो आनंद ॥ आइकै मिलि जात कबहुँ न श्याम अरु बलराम । इहौ कहति पठाइ देहैं तबहिं तनु बिन बाम ॥ बाल सुख सब तुमहिं लूट्यो मोहिं मिले कुमार । सूर यह उप-कार तुमते कहत बारंबार ॥ ४० ॥

राग बिलावल ॥ तब ऊधो हरि निकट बुलायो । लिखि पाती दोउ हाथ दई तेहि ए मुख वचन सुनायो॥ब्रजबासी जारत नारी नर जल थल द्रुम वन पात।जो जेहिविधि तासों तैसेहि मिलि अरस परस कुशलात ॥ जो सुख श्याम तुमहिंते पावत सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं । सूरदास प्रभु दै सौंह आपनी समुझत हौ कै नाहिं ॥ ४१ ॥

राग सारंग ॥ पहिले प्रणाम नन्दराइसों । ता पीछे मेरो पालागन कहियो यशुमति माइसों । बार एक तुम बरसाने लों जाइ सबै सुधि लीजौ ॥ कहि वृषभानु महरसों मेरो समाचार सब दीजौ ॥ श्रीदामाआदि सकल ग्वालनको मेरेहित भेटिबो । सुख सन्देश सुनाइ सबनको दिन दिनको दुख मेटिबो ॥ मित्र एक मन बसत हमारे ताहि मिलै सुख पाइहौ । करिकरि समाधान नीकी बिधि मोहिंको माथो नाइहो ॥ डरियहु जिनि तुम सघन कुञ्जमें हैं तहँके तरुभारी । वृन्दावन मति रहति निरन्तर कबहुँ न होत निनारी ॥ ऊधोसों समुझाइ प्रगट करि अपने मनकी बीती । सूरदास स्वामीसो छलसों कही सकल व्रज प्रीति ॥ ४२ ॥

कही हरि ऊधोसों ब्रजप्रीति । बोलै चले योग गोपिनको तहां करन बिपरीति ॥ तुरत अंक भरि रथहि चढायो बिनय कह्यो करिताहि । विरहा जाल मेटि गोपिनको आवहु काज निबाहि ॥ लै रज चरण शीशवन्दनि करि ब्रज रैहों दिन द्वैक । सूरज प्रभु श्रीमुख कहि पठवत तुमबिनु रहों न नेक ॥ ४३ ॥

राग गौरी ॥ गहर जनिलावहु गोकुलजाई । तुमहिं बिना व्याकुल हम ह्वैहै यदुपति करी चतुराइ ॥ अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत पलनाइ । अपने अंग आभूषण करि करि आपुनही पहिराइ । अपनो मुकुट पीतांबर अपनो देत सबै सुख पाये । सूर श्याम तदपि उपंगसुत भृगुपद एक बचाये ॥ ४४ ॥

राग बिलावल ॥ ऊधो चले श्याम आयसु सुनि ब्रज नारिनको योग कह्यो । हरिके मन यह प्रेम लहैगो वह तो जिय अभिमान गह्यो ॥ आतुर चल्यो हर्ष मन कीन्हें कृष्ण महंत

करि पठैदियो। स्यंदन उहै श्याम सब भूषण जानिपरे नंदसुवन वियो। युवती कहा ज्ञान समुझैंगी गर्ग वचन मन कहत चल्यो। सूर ज्ञानको मान बढाये मधुवनके मारगहि मिल्यो ।। ४५ ॥

राग बिलावल ॥ जबहिं चले ऊधो मधुवनते गोपिन मनहि जनाइगई। बारबार भौंरा लगै कानन कछु दुख कछु हिय हर्ष भई ॥ जहँतहँ काग उडावन लागीं हरि आवत उडि जाहि नहीं। समाचार कहि जबहिं सुनावत उडि बैठत सुनि अनत कहीं ॥ सखी परस्पर यह कहि बातैं आजु श्यामकै आवत हैं। किधौं सूर कोई ब्रज पठयो आजु खबरिकै पावत हैं ॥ ४६ ॥

आजु कोउ नीकी बात सुनावै। कै मधुवनते नन्दलाडिले कै व दूत कोउ आवै ॥ भौंरा इक चहुँदिशिते उडि उडि कान लागि कछु गावै। उत्तम भाषा ऊंचे चढि चढि अंगअंग सगुनावै ॥ सूरदास कोऊ ब्रज ऐसो जो ब्रजनाथ मिलावै ॥ ४७ ॥

राग धनाश्री ॥ तूतो उडहि नहीं रे काग। जो गोपालगोकुलको आवैं तो ह्वै है बड-भाग ॥ दधि ओदन भरि दोनो दैहौं अरु अंचलकी पाग। मिलिहौं हृदय सिराइ श्रवण सुनि मेटि विरहके दाग ॥ जैसे मात पिता नहिं जानत अंतरको अनुराग। सूरदास प्रभु करैं कृपा तब जबते देह सुहाग ॥ ४८ ॥

राग कल्याण ॥ मथुराते निकसिपरे गैलमांझ आइ, उहै मुकुट पीताम्बर श्याम रूप काछे। भृगुपद एक वंचित उर और अंग आछे ॥ ज्ञानको अभिमान किए मोको हरि पठयो। मेरोई भजन थापि माया सुख झुठायो ॥ मधुवनते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो। देखत ब्रजलोग श्याम आयो अनुमान्यो ॥ राधासों कहति नारि काग सगुन टेरो। मिलिहैं तोहिं श्याम आजु भयो वचन मेरो ॥ वैसोइ रथ देखति सब कहति हरष वानी। सूरज प्रभुसे लागत तरुणी मुसुकानी ॥ ४९ ॥

अध्याय ४७ ॥ भवँरगीत ॥ राग बिलावल ॥ राधेहि सखी बतावत री। वैसोई रथ लखौं सेत मैं को उतहीते आवत री ॥ चढि आयो अक्रूर जाहिपर स्यंदन ब्रजतन धावत री। वैसिहि ध्वजा पताका वैसी घरघर सबन सुनावत री ॥ कोउ कहै श्याम कहति को ऐहै ब्रजतरुनी हरषावत री। सूरश्याम जेहि मग पगधारे तेहि मारग दरशावत री ॥ ५० ॥

राग सारंग ॥ है कोउ वैसीही अनुहारि। मधुवन तनते आवत सखि री देखहु नैन निहारि ॥ माथे मोर मुकुट कटि किंकिणि पीतवसन रुचि चारि। सूरदास प्रभुबिन सब ऐसी जैसे मीन बिन वारि ॥ ५१ ॥

राग कल्याण ॥ वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आवत उतहीते। झुरिझुरि सब मरति विरह गोपीजनकीते ॥ देखो री मुकुटझलक कुंडलकी ओभा। वैसोइ पटपीत अंग सुन्दर अतिशोभा ॥ आए री नँदसुवन राधा हरषानी। सूर मरत मीन तुरत मिले अगम पानी ॥ ५२ ॥

राग नट ॥ देखत हरषभईं ब्रजनारी। वै निहचै आये बनवारी ॥ जो जैसे सो तैसे धाई। घर घर लोगन सुने कन्हाई ॥ रथहीतन सब निरखनलागे। सपनेको सुख लूटत

आगे॥कृपा करी आए गोपाल।गोपिन जानी बिरह बिहाल॥ज्योंही ज्यों रथ आतुर आवै। त्योंही त्योंहि पट फहरावै॥ सूर भई सुखव्याकुल नारी। प्रेमविवश अनँद उर भारी॥५३॥

राग बिलावल॥ घरघर इहै शब्द परचो। सुनत यशुमति धाइ निकसी हर्षि हियो भरचो॥ नन्द हर्षित चले आगे सखा हर्षत अंग। झुंड झुंडन नारि हर्षत चली उद-धितरंग॥ गाइ हर्षत पय स्रवत थन हुंकरत गउ बाल। उमँगि अँगन मात कोउ वृध तरुन अरु बाल॥ कोउ कहत बलराम नाहीं श्याम रथपर एक। कोउ कहति प्रभु सूर दोऊ रचित बात अनेक॥५४॥

राग बिलावल॥ सुने ब्रजलोग आवत श्याम। जहां तहँते सबै धाईं सुनत दुर्लभ नाम॥ मनो मृगी वन जरति व्याकुल तुरत बरष्यो नीर। वचन गदगद प्रेमव्याकुल धरत नाहिं मन धीर॥ एकएक पल युग सबनको मिलनको अतुरात। सूर तरुनी मिलि परस्पर भईं हर्षितगात॥५५॥

राग धनाश्री॥ नंदगोप हर्षित ह्वै गए लेन आगे। आवत बलराम श्याम सुनत दौरि चलीं वाम मुकुट झलक पीतांबर मनमन अनुरागे॥ निहचै आए गोपाल आनंदित भई बाल मिट्यो बिरद जंजाल जोवत लैहिकाल। गदगद तनु पुलक भयो बिरहाको शूल गयो कृष्णदरश अतुर अति प्रेमके बेहाल॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत बसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ। सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग बीर दोउ॥५६॥

राग आसावरी॥ आजु कोइ श्यामकी अनुहारी। आवत उत उमँगे सुनि सबही देखि रूपकी वारी॥ इंद्रधनुषसे उर बनमाला चितवत चित्त हरैं। मनो हलधर अग्रज गोहनके श्रवणन शब्द परैं॥ गईं चलि निकट न देखे मोहन प्राण किए बलिहारी। सूर सकल गुण सुमिरि श्यामके बिकल भईं ब्रजनारी॥५७॥

राग बिलावल॥ कोउ माई आवतहै तनुश्याम। वैसे पट वैसेइ रथ बैठनि वै भूषण वै दाम॥ जो जैसे तैसे उठिधाईं छाँडि सकल गृहकाम। पुलक रोम गद्गद तेही छिन शोभित अँग अभिराम। इतने बीच आइगए ऊधो रहीं ठगी सब बाम॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भईं व्याकुल तनुताम। सूरदास प्रभु कत आवतहैं बसे कूबरीधाम॥५८॥

उमँगि ब्रज देखनको सब धाए। एकहि एक परस्पर बूझति मोहन दूलह आए॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए। श्रुति कुंडल अरु पीति बसन स्रक वैसोइ साज बनाए॥ जाइ निकट पहिचान्यो ऊधो नयन जलज जलछाए। सूर श्याम मिटी दरशन आशा नूतन बिरह जगाए॥५९॥

जबहीं कहो ए श्याम नहीं। परीं मुरछि धरणी ब्रजबाला जो जहां रहीं सुतहीं॥ सपनेकी रजधानी ह्वै गई जो जागी कछु नाहीं। बारबार रथ ओर निहारहिं श्याम बिना अकुलाहीं॥ कहा आय करिहैं ब्रज मोहन मिली कूबरी नारी। सूर कहत सब ऊधो आए गई श्यामशर मारी॥६०॥

राग रामकली ॥ तरुणी गईं सब बिलखाइ । जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गईं झुराइ ॥ परी व्याकुल जहाँ यशुमति गईं तहँ सब धाय । नीर नयनन बहत धारा लईं पोंछि उठाय ॥ एक भईं अब चलौ मारग सखा पठयो श्याम । सुनौ हरिकुशलात ल्यायो महरिसों कहैं वाम ॥ जबहिंलौं रथ निकट आयो तबहुँते परतीति । वह मुकुट कुंडल पिताम्बर सूर प्रभु अँगरीति ॥ ६१ ॥

राग बिलावल ॥ भली भई हरि सुरति करी । उठौ महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगी भरी ॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहु सुफल घरी । पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहिं ढरी ॥ निकट उपंगसुत आइ तुलाने मानो रूप हरी । सूर श्यामको सखा इहै री श्रवणन सुनी परी ॥ ६२ ॥

राग धनाश्री ॥ निरखति ऊधो सुख पायो । सुंदर सुजन सुवंश देखियत याते श्याम पठायो ॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहैं । यह जानति हरि तुरत आयहैं ए कहि हृदय सिरैहैं ॥ घेरि लिए रथ पास चहूँवा नँद गोप ब्रजनारी । महर लिवायगए निजमंदिर हरषित लियो उतारी ॥ अरघ देत भीतर तेहि लीन्हों धनिधनि दिन कहि आजु । धनि धनि सूर उपंग सुत आए मुदित कहत ब्रजराजु ॥ ६३ ॥

अथ नन्दवचन उद्धवप्रति । राग मलार ॥ कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी । पूँछत नँद पिता ऊधोसों अरु यशुदा महतारी ॥ बहुतै चूकपरी अनजानत कहा अबके पछिताने । वासुदेव घर भीतर आए मैं अहीरकै जाने ॥ पहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों सँग देत गयो भूली । सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस भै शूली ॥ ६४ ॥

अथ उद्धववचन । राग सारंग ॥ कह्यो कान्ह सुनु यशुमति मैया । आवहिंगे दिन चारि पांचमें हम हलधर दोउ भैया ॥ मुरली बेत विषाण देखियो शृंगी बेर सबेरो । लै जिनि-जाय चुराय राधिका कछुक खिलौना मेरो ॥ जा दिनते तुमसों बिछुरे हम कोउ न कहत कन्हैया । भोरहि नाहिं कलेऊ कीनो सांझ न पय पियो धैया ॥ कहत न बन्यो सँदेशो मोपै जननि जितो दुख पायो । अब हमसों वसुदेव देवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नँद बाबासों बहुत निठुर मन कीनों । सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोधन लीनों ॥ ६५ ॥

पुनः नंदवचन । राग सारंग ॥ हमते कछु सेवा न भई । धोखे धोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोक मई ॥ चरण पकरि करि बिनती करिबो सब अपराध क्षमा कीबे । ऐसो भाग होइगो कबहूं श्याम गोदमें लीबे ॥ कहैं नंद आगे ऊधोके एक बेर दरशन दीबे । सूरदास स्वामी मिलि अबकै सबै दोष गत कीबे ॥ ६६ ॥

अथ सखावचन । राग बिलावल ॥ भली बात सुनियत है आज । कोऊ कमलनयन पठयो हैं तन बनए अपनोसो साज ॥ पूँछत सखा कहौ कैसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज । कंस मारि वसुदेव गृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही भयो सुख सुरभी सँग बन गोप समाज ॥ अब सुन सूर करै को कौतुक ब्रजमें नाहिं बसत ब्रजराज ॥ ६७ ॥

अथ ब्रजनरनारीवाक्य । राग सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज । मानहुँ बहुरि बिचारि कछू मन सुफलक सुत आयो ब्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो लै हरिको परम सुमति राख्यो रतिराज । अजहुँ कहा कीयो चाहत है याते अधिक कंसको काज ॥ व्याध जो मृगन बधत सुन सजनी सो शर काढि सँग नहिं लेत । यह अक्रूर कठिन कीनो इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे बचन बहुत बिधि कहिकहि लोचन भरि सींचत उरगार । सूरदास प्रभु अवधि जानिकै चलीं सबै पूँछन कुशलात ॥ ६८ ॥

राग रामकली ॥ ब्रज घरघर सब होत बधाए । कंचन कलश दूब दधि रोचन महरि महर वृंदावन आए ॥ मिलि ब्रजनारि तिलक शिर कीनो करि प्रदक्षिणा पास । पूँछत कुशल नारि नर हरषत आए सब ब्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे । सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदै ह्वै गाढे ॥ ६९ ॥

सखीवचन गोपीप्रति । राग धनाश्री ॥ आजु ब्रज कोऊ आयो है । कैधौं बहुरि अक्रूर क्रूर ह्वै जियत जानि उठि धायो है ॥ मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है । कैकरि कृपा दुखित जानिकै हरि संदेश पठायो है ॥ चलीं मिलि सिमिटि सखी पूछनको ऊधो दरश दिखायो है । तब पहिंचानि सबै प्रभुको भृत करन जोरि शिरनायो है ॥ हरि हैं कुशल कुशलहौ तुमहूँ कुशल लोग जेहि भायो है । है वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है ॥ ७० ॥

राग धनाश्री ॥ देख्यो नंदद्वार रथ ठाढो । बहुरि सखी सुफलक सुत आयो परचो सँदेह जिय गाढो । प्राण हमारे तबहिं गयो लै अब किहि कारण आयो । मैं जानी यह बात सत्य कै कृपा करन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहि क्षण दरशन दीन्हों । तब पहिचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियो अति रुचिसों अरु सबही कर जोरे । सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सु भोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सुफल करि मान्यो । सूरज ऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायो पान्यो ॥ ७१ ॥

राग धनाश्री ॥ बोलक इनहूको सुनि लीजे । कैसी उठनि उठै धौं ऊधौ तैसे उत्तर कीजे ॥ यामें कछू खरचिरतु नाहीं अपनो मतो न दीजे । कहीरी सखी भागिए किहि डर चलहु जाइ मुख छीजे ॥ द्वैकर जोरि भई सन्मुख ठाढी वचन कहो त्यों जीजे सूर सुमति सोई दीजे हरि वदन सुधारस पीजे ॥ ७२ ॥

राग नट ॥ ऊधो कहो हरि कुशलात । कहौ आवन किधैं नाहीं बोलिए मुख बात ॥ एक छिन युग जात हमको बिन सुने हरि प्रीति । आइ आपै कृपा कीनी अब कहो कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनो श्रीमुख योग । सूर सुनि सब दौरि आईं हटकि दीनो लोग ॥ ७३ ॥

अथ उद्धव वचन । राग सारंग ॥ गोपी सुनहु हरि कुशलात । कंस नृपको मारि छोरचो आपनो पितु मात ॥ बहुत बिधि व्यवहार करि दियो उग्रसेनहिं राज । नगर लोग सुखी वसत हैं भए सुरनके काज ॥ इहै पाती लिखी अरु मुख कह्यो कछु सँदेश । सूर निर्गुण ब्रह्म धरिकै जतहु सकल अँदेश ॥ ७४ ॥

राग केदारो ॥ गोपी सुनहु हरिसंदेश । गए संग अक्रूर मधुवन हत्यो कंस नरेश ॥ रजक मारचो वसन पहिरे धनुष तोरे जाइ । कुवलया चाणूरमुष्टिक दये धरणि गिराइ ॥ मातपितुके बंदि छोरे वासुदेवकुमार । राज्य दीन्हों उग्रसेनहि चमर निजकर ढार ॥ कह्यो तुमको ब्रह्म ध्यावो छाँडि विषै विकार । सूर पातीदई लिखि मोहि पठौ गोपकुमार ॥७५॥

अथ पातीवाचनअवस्था ॥ राग सारंग ॥ पाती मधुवनहीते आई । सुंदर श्याम कान्ह लिखि पठई आइ सुनो री माई ॥ अपने अपने गृहते दौरीं लै पाती उर लाई । नैनन निरखि निमेष न खंडित प्रेमव्यथा न बुझाई ॥ कहा करौं सूनो यह गोकुल हरिबिन कछु न सोहाई । सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति विसराई ॥ ७६ ॥

निरखत अंक श्याम सुंदरके बारबार लावत लै छाती । लोचनजल कागजमसि मिलिकरि ह्वैगइ श्याम श्यामजूकी पाती ॥ गोकुल वसत नंदनंदनके कबहुँ बयारि न लागी ताती । अरु हम उती कहा कहैं ऊधो जब सुनि वेणुनाद सँग जाती ॥ प्रभुके लाड वदति नाहिं काहू निशिदिन रसिक रास रस राती । प्राणनाथ तुम कबहुँ मिलहुगे सूरदास प्रभु बालसँघाती ॥ ७७ ॥

पाती मधुवनते आई । ऊधो हरिके परमसनेही ताके हाथ पठाई ॥ कोउ पूछत फिरि-फिरि ऊधोको आपुन लिखी कन्हाई । बहुरो दई फेरि ऊधोको तब उन बाँचि सुनाई ॥ मनमें ध्यान हमारो राखो सूरदास सुखदाई ॥ ७८ ॥

राग मारू ॥ लिखि आई ब्रजनाथकी छाप । ऊधो बाँधे फिरत शीशपर देखे आवै ताप ॥ उलटी रीति नन्दनन्दनकी घरि घरि भयो संताप । कहिये जाययोग आगधैं अविगत अकथ अमाप । हरि आगे कुबिजा अधिकारिनि को जीवै इहि दाप । सूर सँदेश सुनावनलागे कहौ कौन यह पाप ॥ ७९ ॥

राग मलार ॥ कोउब्रज बांचत नाहिंन पाती । कत लिखि पठवत नँदनंदन कठिन विरहकी कांती ॥ नैनसजल कागज अति कोमल कर अँगुरी अतिताती । परसेजरै विलोके भीजै दुहूँ भांति दुख भाती ॥ क्यों ए वचन सु अंक सूर सुनि विरह मदन शर घाती । मृदु मुख वचन बिना सींचै अब जिवहिं प्रेमरस माती ॥ काहेको लिखि पठवत कागर । मदनगोपाल प्रगट दरशन बिनु क्यों राखहिं मन नागर ॥ ऊधो योग कहा लै कीबो बिनु जल सूखो सागर ॥ कहिधौं मधुप सँदेश सुचितदै मधुवन श्याम उजागर । सूर श्यामबिनु क्यों मन राखौं तन योवनके आगर ॥ ८० ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो कहा करैं लै पाती । जब नहिं देख्यो गुपाललालको विरह जरावत छाती ॥ जानतिहौं तुम मानति नाहीं तुमहूँ श्यामसँघाती । निमिष २ मो विसरत नाहीं शरद सुहाई राती ॥ यह पाती लैजाहु मधुपुरी जहँ बसैं श्याम सुजाती । मजुन हमारे उहां लैगए काम कठिन शरघाती ॥ सूरदास प्रभु कहा चलत है कोटिक बात सुहाती । एकबेर मुख बहुरि दिखावहु रहैं चरणरज राती ॥ ८१ ॥

राग मलार ॥ सँदेशन मधुवन कूप भरे। अपने तौ पठवत नँदनंदन हमरे फिरि न फिरे ॥ जेइ जेइ पथिक हुते ब्रजपुरके बहुरि न शोध करे। कै वह श्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच बरे ॥ कागज गरे मेघ मसि खूटी शरदौ लागि जरे। सेवक सूरलिखेते आधो पलक कपाट खरे ॥ ८२ ॥

राग मलार ॥ आए नँदनंदन के भेव। गोकुलमांझ योग बिस्तारयो भली तुम्हारी जेव ॥ जब वृंदावन रास रच्यो हरि तबहिं कहां तुमहेव। अब यह ज्ञान सिखावन आए भस्म अधारी सेव ॥ अबलनकोलै सो ब्रतठान्यो जो योगिनिको योग। सूरदास ए सुनत न जीवहिं आतुर बिरह वियोग ॥ ८३ ॥

राग सारङ्ग ॥ यहि अन्तर मधुकर इक आयो। निजस्वभाव अनुसार निकट होइ सुन्दर शब्द सुनायो ॥ पूँछन लागीं ताहि गोपिका कुबिजा तोहिं पठायो। कीधौं सूर श्यामसुन्दरको हमैं सँदेशो ल्यायो ॥ ८४ ॥

राग मलार ॥ मधुकर कहा यहां निर्गुण गावहि। ए प्रियकथा नगरनारिनसों कहहि जहाँ कछु पावहि॥जिनि परसहि अब चरन हमारे बिरहताप उपजावहि। सुन्दर मधु आनन अनुरागी नैनन आनि मिलावहि॥ जानति मर्म नन्दनन्दनको और प्रसंग चलावहि। हम नाहिंन कमलासी भोरी करि चातुरी मनावहिं ॥ अतिबिचित्र लरिकाकी नाईं गुर देखाइ बौरावहिं। ज्यों अलि किवत सुमन रसलै तजि जाइ बहुरि नहिं आवहि ॥ नागर रतिपति सूरदास प्रभु किहि बिधि आनि मिलावहि ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ॥ मधुप तुम कहौ कहांते आए हो। जानति हैं अनुमान आपने तुम यदुनाथ पठाये हो ॥ वैसहि बरनबसन तनु वैसे वै भूषण सजिलाएहो। लै सरबसु सँगश्यामसिधारे अब कापर पहिगए हो ॥ अहो मधुप एकै मन सबको सुतौ उहाँ लै छाए हो। अब यह कौन सयान बहुरिब्रज जाकरण उठि आए हो ॥ मधुवनकी मानिनी मनोहर तहीं जाहु जहाँ भाएहो। सूर जहांलौं श्याम गात हौ जानि भले करि पाये हो ॥८६॥

राग गौरी ॥ मधुकर जो हरि कहो सो कहिए। तब हम अब इनहींकी दासी मौन गहे क्यों रहिए ॥ जो तुम योग सिखावन आए निर्गुण क्यों करि गहिए। जो कछु लिखो सोई माथेपर आनिपरे सब सहिए ॥ सुन्दर रूप लाल गिरिधरको बिनु देखे क्यों लहिए। सूरदास प्रभु समुझि एकरस अब कैसे निरबहिए ॥ ८७ ॥

ऊधो वचन राग धनाश्री ॥ सुनहु गोपी हरिको सन्देश। करि समाधि अन्तर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेश ॥ वै अविगत अविनाशी पूरण सब वट रहे समाइ। निर्गुणज्ञान बिनु मुक्ति नहीं है वेद पुराणन गाइ ॥ सगुण रूप तजि निर्गुण ध्यावो इकचित इक मन लाइ। यह उपाव करि बिरह तरौ तुम मिलै ब्रह्म तब आइ ॥ दुसह सँदेश सुनत माधोको गोपीजन बिलखानी। सूर बिरहकी कौन चलावै बुडत मीन बिनपानी ॥ ८८ ॥

गोपीवचन ॥ राग मलार ॥ मधुकर हमहीं क्यों समुझावत। बारंबार ज्ञान गीता ब्रज अबलनि आगे गावत ॥ नँदनंदन बिनु कपटकथा ए कत कहि रुचि उपजावत। स्रक

चंदन जो अंग क्षुधारत कहि कैसे सुख पावत ॥ देखि विचारत तहीं जिय अपने नागर हौ जु कहावत । सब सुमननपर फिरत निरखिकरि काहो कमल बँधावत ॥ चरणकमल कर नयनकमल कर वदनकमल वर भावत । सूरदास मनु अलि अनुरागी केहि विधिहौ बहरावत ॥ ८९ ॥

राग मलार ॥ रहु रहु मधुकर मधुमतवारे । कौन काज या निर्गुणसों चिरजीवहु कान्ह हमारे ॥ लोटत पीत पराग कीचमें नीच न अंग सम्हारे । बारंबार सरक मदिराकी अपसर रटत उघारे ।' द्रुमवेली हमहूं जानतहौ जिनके हौ अलि प्यारे । एक बास लैकै बिरमावत जेते आवत कारे ॥ सुन्दर बदन कमलदल लोचन यशुमति नंद दुलारे । तन मन सूर अर्पिरही श्यामहिं काप लेहिं उधारे ॥ ९० ॥

मधुकर कौन देशते आए । ब्रजवाते अक्रूर गए लै मोहन ताते भए पराए ॥ जानी सखा श्यामसुन्दरकै अवधि बन्धन उठि धाए । अंगविभाग नंदनंदनके यह स्वामित हैं पाए ॥ आसन ध्यान वाइ आराधन अलि मन चित तुम ताए। अतिहि विचित्र सुबुद्धि सुलक्षण गुंजयोग मति गाए ॥ मुद्रा भस्म विषान त्वचा मृग ब्रजयुवतिन मनभाए। अतसीकुसुम बरन मुरली मुख सूरज प्रभु किन ल्याए ॥ ९१ ॥

मधुकर काके मीत भए । त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि मालति भौंरे लए ॥ छिनुके बिछुरे कमल रति मानी केतकि कत बिधए । छांडन नेहु नाहिं मैं जान्यो लै गुण प्रगट नए ॥ नूतन कदम तमाल बकुल वट परसत जनम गए । भुज भरि मिलनि उडत उदास ह्वै गत स्वारथ समए॥ भटकत फिरत पातद्रुमबोलिन कुसुम करञ्ज भए । सूर विमुख पद अंबुज छाँडे विषयनिविष वर छए ॥ ९२ ॥

राग जैतश्री ॥ मधुकर काके मीत भए । दिवस चारि करि प्रीति सगाई रसलै अनत गए । डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखण्ड अग्र दए ॥ चाँडसरै पहिंचानत नाहिंन प्रीतम करत नए । मुण्डउ बाँटि मेलि बौराए मन हरि हरि जु लए । सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुखके बीज वए ॥ ९३ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर हम न होहिं वै बेली । निजभाजि तजि तुम फिरत और रँग करत कुसुमगत केली ॥ वारेते वर वारि बढी है अरु पोषी पिय पानि । बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत होति सदा हितहानि ॥ ए वेली विरहा वृन्दावन उरझी श्याम तमाल । पुहुपवास रसरसिक हमारे विलसत मधुप गोपाल ॥ योग समीर धीर नहिं डोलत रूप डार ढिगलागी । सूर पारीगनि तजति हिएते श्रीगुपाल अनुरागी ॥ ९४ ॥

मधुकर कहाँ पढी यह रीति । लोक वेद श्रुति पंथ रहित सब कथा कहति विपरीति ॥ जन्मभूमि ब्रज सखी राधिका कहि अपराध तजी । अतिकुलीन गुणरूप अमित सुख दासी जाइ भजी ॥ योग समाधि वेद गुण मारग क्यों समुझै जु गँवारि । जो पै गुण अतीत व्यापकहै तोहिं कहाहै प्यारि ॥ रहि अलि ढीठ कपट स्वारथहित तजि बहुवचन विशेषि । मन क्रम बचन बचति यहि नाते सूर श्यामतन देखि ॥ ९५ ॥

राग मलार ॥ मधुकर काहेको गोकुल आए । हम वैसीही सच अपनेमें दूने विरह जगाए ॥ हम जानतिहैं जिनहिं पठाए श्याम सँदेशो ल्याये । जन्म जन्मके दूत तिगोवन को नहिं लार लगाए ॥ कहा कराहिं कहाँ जाहिं सखी री हरि बिनु कछु न सोहाए । जन्म सुफल सूरज तिनको जो काज पराए धाए ॥ ९६ ॥

राग मलार ॥ आए माई दुर्ग श्यामके संगी । जे पहिले रँग रँगे श्यामरँग तिनहीकी बुधिरंगी ॥ हमरी उनकीसी मिलवत हौ ताते भएविहंगी ॥ सूधी कहैं सबन समुझावत ते सांचे सरबंगी ॥ औरनको सरबसु लै मारत आपुन भए अभंगी । सूर सु नाम शिली मुख पीवैं जे धनकवच उपंगी ॥ ९७ ॥

सखी वाक्य परस्पर ॥ राग मलार ॥ हैकोऊ मधुवनते आयो । सुनो सुमति सब सखी सयानी हितकरि कान्ह पठायो ॥ जामोहन बिछुरनते गोकुल इते दिवस दुख पायो । सो इहि कमलनैन करुणामय हृदही माँझ बतायो ॥ जो जहुँ योगी जतन करत हैं नेकहु ध्यान न आयो । सो यह परमउदार मधुप ब्रजबीथिन माँझ बहायो ॥ अतिकृपालु आतुर अबलनिको व्यापक अंग गहायो । समुझि सूर सुख होत श्रवण सुनि नेतिजुनि गमन गायो ॥ ९८ ॥

राग सारंग ॥ परी पुकार द्वार गृहगृहते सुनहुसखी इक योगी आयो । पवन सधावन भवन छोडावन नवल रिसाल गोपाल पठायो ॥ आशा अवधि परमउरध जो तिनहिं कहा हित ल्यायो । कनक वेलि कामिन ब्रजबाला योगअग्नि देवेको धायो॥ भवभय हरन असुर मारन हित काल मधुपुरी आयो । व्रजमें यादव एकौ नाहीं काहेको उलटो सुयश हरायो॥ सुथल श्यामधाममें बैठो मृत अधिकार जनायो । सूर बिसरी प्रीति साँवरे भली चतुरता जगत हँसायो ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ दैबे आए ऊधो मत नीको । आयोरी मिलि सुनहु सयाने लिए सुयश कोटीको ॥ तजन कहत अंबर आभूषण गेह नेह सुतहीको । अंग भस्म करि शीश जटाधीर सिखवत निर्गुण फीको ॥ मेरे जानइहै युवतिनको देत फिरत दुख पीको । ता शरापते भए श्याम तम तउ न गहत डरजीको ॥ जाकी प्रकृति परी जिय जैसी सोचन भली बुरीको । जौलगि सूर व्यालडसि भाजै सुख नहिं होत अमीको ॥ ४३००० ॥

राग नट ॥ ऊधो तनक सुयश हरिको श्रवणन सुनि । कंचन काँच कपूरकर रस सम दुख सुख गुण औगुन ॥ नाम उनको सुनि गृह कुटुंब तजि जाइ बसत परकानन । परमहंस विहंग देखतहि आवत भिक्षा माँगन ॥ बालकपनको राउ संहारचो लोकलाज डर डारी । शूर्पनखाकी नाक निवारचो त्रियवश भए मुरारी ॥ बलिको बाँधि पताल पठायो कीन्हें यज्ञनि आई । सूर प्रीति जानी तेहरिकी कथा तजा नाहिं जाई ॥ १ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो श्यामसखा तुम साँचे । कीकरिलियो स्वांग बीचहिते वैसेहि लागत कांचे जैसी कही हमहिं आवतही औरन कहि पछिताते । अपनो पति तजि और बतावत मोहिं मानि कछु खाते । तुरत गमन कीजे मधुवनको इहां कहां यह ल्याए । सूर सुनत गोपिनकी वाणी ऊधो शशि नवाए ॥ २ ॥

राग नट ॥ ऊधो वेगि मधुवन जाहु । हम विरहिनी नारि हरिबिनु कौन करै निबाहु ॥ तहीं दीजै मुरपरैना नफो तुम कछु खाहु । जो नहीं ब्रजमें बिकानो नगरनारी साहु ॥ सूर वै सब सुनत लैहैं जिय कहा पछिताहु ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो और कछू कहिबेको । मनमानै सोऊ कहिडारौ पालागैं हम सुनि सहिबेको ॥ यह उपदेश आजुलौं ऐसो कानन सुन्यो न देख्यो । निरपत पटे कटुक अति जीरन चाहत महि उर लेख्यो ॥ निशिदिन बसत नेक नहिं निकसत हृदय मनोहर ऐन । याको इहां ठौर नाहिंन है लै राखो जहां चैन ॥ ब्रजवासी गोपाल उपासी हमसों बातैं छाँडि । सूर योगधन राखु मधुपुरी कुबिजाके घर गाडि ॥ ४ ॥

राग नट ॥ जाहुजाहु ऊधो जाने हौ पहिचाने हौ । जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपटचतुरई साने हौ ॥ निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो कौने सिखै ब्रज आने हो । यह उपदेश देहु लै कुबिजहि जाके रूप लुभाने हो ॥ कहांलगि कहौं योगकी बातैं बाँचत नैन पिराने हो । सूरदास प्रभु हम पर खोटी तुमतौ बारहवाने हो ॥ ५ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो जाहु तुमहिं हम जाने । इयाम तुमहिं ह्यांको नाहिं पठए तुम हौ बीच भुलाने ॥ ब्रजनारिनसों योग कहतहौ बात कहत न लजाने । बड़े लोग न विवेक तुम्हारे ऐसे भए अयाने ॥ हमसों कहीं लई हम सहिकै जिय गुणिलेहु सयाने । कहां अबला कहां दिशा दिगंबर मष्ट करौ पहिचाने ॥ साँच कहौ तुमको अपनी सौं बूझति बात निदाने । सूर इयाम जब तुमहिं पठायो तब नेकहु मुसकाने ॥ ६ ॥

राग गौरी ॥ कहति कहा ऊधोसों तुम बौरी । जाको सुनत रहे हरिके ढिग इयाम सखा यह सौरी ॥ कहति कहा री मैं पत्याति नाहिं तूही कहा बनावति । हमको योग सिखावन आए यह तेरे मन आवति ॥ करनी भली भलेई जानैं कुटिल कपटकी बानी हरिको सिखाव नहीं री माई इह मन निहचै जानी ॥ कहां शशिमुखरस कहां योगघर। इतने अंतर भाषत । सूर सचै तुम भई बावरी याकी पति कहा राखत ॥ ७ ॥

राग कान्हरो ॥ ऐसेही जन धूत कहावत । मोको एक अचंभो आवत यामें वै कछु पावत । वचन कठोर कहत कहि दाहत अपनो महत गवांवत । ऐसिउ प्रकृति परी कान्हाको युवति ज्ञान बतावत ॥ आपुन निलज रहत नख शिखलौं एतेपर पुनि गावत । सूर करत परशंसा अपनी हारेहु जीति कहावत ॥ ८ ॥

राग मलार ॥ ऐसे जन बेशरम कहावत । सोच बिचार कहूँ इनके नाहिं कहि डारत जो आवत ॥ अहिके गुण इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत । लघुता लहत महति करि यों हँसि नारिन योग बतावत ॥ ब्रजमें हीन भए अब जैहै अनतहु ऐसेहि गावत ॥ ९ ॥

राग कान्हरो ॥ प्रकृति जो जाके अंग परी । इवान पूँछको कोटिक लागे सूधी कहुँ न करी ॥ जैसे सुभख नहीं भख छांडै जन्मत जौन घरी । धोए रंग जात नहिं कैसेहु ज्यों कारी कमरी ॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी । सूर होइसो होइ सोच नाहिं तैसे हैं एऊ री ॥ १० ॥

राग सारंग ॥ ऊधो होहु आगे ते न्यारो । तुमहि देखि तन अधिकजरत है अरु नैननके तारे ॥ अपनो योग सैंति धरि राखौ यहां देतकत डारे । सो को जानत अपने मुख हैं मीठे ते फल खारे ॥ हमरे गिरिधरके जु नाम गुण बसै कान्ह उरवारे । सूरदास हम सबै एकमतए सब खोटे कारे ॥ ११ ॥

राग कल्याण ॥ जाहुजाहु आगे ते ऊधो पति राखति हौं तेरी । काहेको अब रोष दियावत देखति आंखि बरतहैं मेरी ॥ तुम जो कहतहौ संत हैं गोबिंद कहियत है कुबिजा उन घेरी । दोऊ मिले तैसेई तैसे वह अहीर वै कंसकी चेरी ॥ तुम सारिखे बसीठि पठाए कहिये कहा बुद्धि उनकेरी । सूर श्याम वह सुधि बिसराई गावत हे ग्वालन सँग हेरी ॥१२॥

राग सारंग ॥ समुझि न परत तुम्हारी ऊधो । ज्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोलति बचन न सूधो ॥ आपुनको अपचार करौ कछु तब औरन शिख देहु । बडो रोग उपज्यो है तुमको भौन सवारे लेहु ॥ वहां भेषज नाना विधिको अरु मधुरिपुसे हैं वैद । हम कातर डरपत अपने शिर यह कलंक है कैद ॥ साँची बात छाँडि कत झूठी कहौ कौन विधि सुनहीं । सूरदास मुकुताहल भोगी हंस ज्वारि क्यों चुनहीं ॥ १३ ॥

राग सोरठ ॥ हम अलि गोकुलनाथ अराध्यो । मन बच क्रम हरिसों धरि पतिब्रत प्रेमयोग तप साध्यो ॥ मात पिता हित प्रीति निगम पथ तजि दुख सुख भ्रम नाख्यो । मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो ॥ सकुचासन कुल शील करषि करि जगत वंद्य कर बंदन । मौनउपवाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन ॥ गुरुजन कानि अग्नि चहुँ दिशि नभ तरनि ताप बिनु देखे । पिवत धूम उपहास जहाँ तहँ अपयश श्रवण अलेखे ॥ सहज समाधि बिसारि वपु करी निरखि निमेष न लागत । परमज्योति प्रतिअंग माधुरी धरत इहै निशि जागत ॥ त्रिकुटी सँग भ्रूभंग तराटक नैन अनुरागे ॥ नैन लगि लगि लागै । हँसनि प्रकाश सुमुख कुंडल मिलि चंद्र सूर मुरली अधर श्रवण ध्वनिसो सुनि शब्दअनहद करि कानै । वरषत रस रुचि बचन संग सुख पद आनंद समानै ॥ मंत्र दियो मनजात भजन लगि ज्ञान ध्यान हरिहीको । सूर कहौ गुरु कौन करै अलि कौन सुनै मत फीको ॥ १४ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो हम आजु भई बड़भागी । जिन अँखियन तुम श्याम बिलोके ते अँखियाँ हम लागी ॥ जैसे सुमन बास लै आवत पवन मधुप अनुरागी । अति आनंद होत है तैसे अंगअंग सुखरागी ॥ ज्यों दर्पणमें दरशन देखत दृष्टि परमरुचि लागी ॥ तैसे सूर मिले हरि हमको विरह व्यथा तनु त्यागी ॥ १५ ॥

राग सारंग ॥ विलग जिनि मानो हमारी बात । डरपत वचन कठोर कहत मति बिनु पानी उडिजात ॥ जो कोउ कहैं जरे कछु अपने फिरि पाछे पछितात । जो प्रसाद तुम पावत ऊधो कृष्णनाम लै खात ॥ मन जो तिहारो हरिचरनन तर चलत रहत दिन प्रात । सूर श्यामते योग अधिक है कासों कहिआवै यह बात ॥ १६ ॥

राग सारंग ॥ अलिहौं कैसे करि कहौं हरिके रूपके रसके रसहि । अपने तनमें भेद बहुत विधि रचना न जानै इन नैनके दशहि ॥ बारबार पछताति इहै कहि कहा करौं जो विधि नवसहि ॥ बिनुवाणी ए उमँगि सजल होइ सुमिरि सुमिरि वा सगुण यशहि जे देखत ये वचन रहित हैं जिनहिं वचनते है दरशन देखहि । सूर सकल अंगनकी इह गति क्यों समुझावैं षट्पद पेखहि ॥ १७ ॥

राग सारंग ॥ सुको जेहि नाहिन सचुपायो बल गोपालके राज ऊभो इहै संपदा हरिकी आवै सबके काज ॥ धनुष तोरि गजमारि मल्ल मथि किए निडर यदुवंश । इन औरन अमरन सुख दीनो करषि केश शिरकंस ॥ कुबिजहि रूप दियो यदुनंदन मालीको हित-काम । उग्रसेन वसुदेव देवकी आने अपने धाम ॥ दीनदयालु दयानिधि मोहन हैं हमरे इह आस ॥ सूर श्याम हरि जे जु कृपाकरि इन नैननकी प्यास ॥ १८ ॥

राग धनाश्री ॥ मधुकर कहिएकाहि सुनाऊँ । हरि बिछुरत हम किते सहे हैं जिते विरहके घाऊ ॥ बरु माधो मधुवनही रहते कत यशुदाके आए । कत प्रभु गोपवेष ब्रज धरिकै कत ए सुख उपजाए॥ कत गिरि धरचो इंद्रमद मेट्यो कत बन रास बनाए । अब कहा निठुर भए अबलनिको लिखिलिखि योग पठाए॥तुम परवीन सबै जानतहौं ताते इह कहि आई ॥ अपनी को चालै सुनि सूरज पिता जननि बिसराई ॥ १९ ॥

उद्धववचन राग धनाश्री ॥ जानि करि बावरी जिनि होहु । तत्त्व भजे ऐसी ह्वै जैहौ ज्यों पारस परसे लोहु । मेरो बचन सत्य करि मानहु छाँडो सबको मोहु । जौ लगि सब पानी कीचु परी तौलगि अस्तुति द्रोहु ॥ अरे मधुप बातैं ए ऐसी क्यों कहि आवत तोहि । सूर सुबस्तुहि छाँडि अभागे हमहिं बतावत खोहि ॥ २० ॥

गोपी वचन ॥ राग सारंग ॥ कहिबे जीय न कछु शक राखौ लावा मेलिदए हैं तुमको बकत रहौ दिन आखौ ॥ जाकी बात कहौ तुम हमसों सो धौं कहौ को कांधी । तेरो कहो सो पवन भूस भयो बहो जात ज्यों आंधी ॥ कत श्रम करत सुनत को इहां है होत जो बनको रोयो । सूर इतेपर समुझत नाहीं निपट दईको खोयो ॥ २१ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर भली सुमति मति खोई । हाँसी होन लगी है ब्रजमें योगहि राखहु गोई ॥ आतम ब्रह्म लखावत डोलत घटघट व्यापक जोई । चापे काँख फिरत निर्गुण गुण इहां गाहक नाहिं कोई ॥ प्रेमकथा सोई पै जानै जामें बीती होई । अति रस एतो कहा कोई जानै बूझि देखावै ओई ॥ बडो दूत तू बडी उमरको बडिऐ बुद्धि बडोई । सूरदास पूरो दै षटपद कहत फिरत हौ सोई ॥ २२ ॥

राग धनाश्री ॥ मधुप कहि जानत नाहिंन बात । फूंकिफूंकि हियरो सुलगावत उठि किन यहांते जात ॥ जेहि उर बसत यशोदानंदन तेहि निर्गुण क्यों समात । कत डोलत भटकत पुहुपनको पान करत किन पात ॥ यद्यपि बहु बेली बन बिहरत बसत जाइ जल-जात । सूरदास अब मिलवन आए मौन किए कुशलात ॥ २३ ॥

मधुकर छाँड अटपटी बातैं । फिरिफिरि बारबार सोइ सिखवत हम दुख पावत जातैं ॥ हम दिन देत अशीश प्रात उठि बार खसो मत न्हातै । तुम निशिदिन उर अंतर सोचत ब्रजयुवतिनकी घातै ॥ पुनि पुनि तुमहिं कहत कत आवै कछुक सकुच है नातै । सूरज दास श्याम रँगराचे फिरि न चढै रँगरातै ॥ २४ ॥

राग मलार ॥ क्यों मन मानत है इन बातन । पाये जानि सकल सुनि मधुकर जे गुण साँवरे गातन ॥ प्रथम प्रेम निशिहू न तजत अब सकुचत है जलजातनि । निरस जानि निकटहु नहिं आवत देखि पुराने पातनि ॥ सुनियत कथा कान कोकिलकी कपट रंगकी रातनि । निशिदिन श्रम सेवा कराइ उठि अंत मिले पितु मातनि ॥ तब ब्रज वसत वेणुरव ध्वनि करि वन बोली अधरातनि ॥ अति रतिलोभ तजत नाहिं इक क्षण पैठे सकत नाहिं प्रातनि ॥ बालि जीति जिन बलि बन्धन किये लुब्धक कैसी हातनि । को पतियाइ सुधौं कहि सूरज संकर्षणके भ्रातनि ॥ २५ ॥

राग सारंग ॥ उलटी रीति तिहारी ऊधो सुनै सु ऐसी को है । अल्पवयस अबला अहीरि शठ तिनहिं योग कत सोहै ॥ कचखुवि आँधरि काजर कानीनकटी पहिरै बेसरि । मुँडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि ॥ पतिसों बात करै तौ तैसोई उत्तर पावै । सो गति होइ सबै ताकी जो ग्वारिनि योग सिखावै ॥ सिखई कहत श्यामकी बतियां तुमको नाहीं दोषु । राजकाज तुमते न सरैगो काया अपनी पोषु ॥ जाते भूलि सबै मारगमैं इहां आनि कहा कहते । भली भई सुधि रही सूर तौ मोह धारमें बहते ॥ २६ ॥

राग सारंग ॥ राखो सब इह योग अटपटो ऊधो पाँइ परौं । कहां रसरीति कहां तनु शोधन सुनि सुनि लाज मरौं ॥ चन्दन छाँडि विभूति बतावत यह दुख क्यों न जरौं । नासा कर गहि योग सिखावत बेसरि कहां धरौं ॥ सगुण रूप रहत उर अंतर निर्गुण कहा करौं । निशि दिन रटना रटन श्याम गुण का करि योग मरौं ॥ मुद्रा न्यास अंग अँग भूषण पतिव्रतते न टरौं । सूरदास याही व्रत मेरे हरि मिलि नहिं बिछुरौं ॥ २७ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर हम अयान मति भोरी । जानैं तेइ योगकी बातैं जेहैं नवल किशोरी ॥ कंचनको मृग कवने देख्यो किन बांध्यो गहि डोरी । विनही भीत चित्र किन कीनो किन नभ हठ करि घाल्यो झोरी ॥ वहिधौं मधुप वारि मथि माखन काढि जो भरो कमोरी । कहो कौनपै कढो जाय कन बहुत सरास पछोरी ॥ सबते ऊंचो ज्ञान तुम्हारो हम अहीरि मति थोरी । सूरज कृष्णचन्द्रको चाहत अँखिआं तृषित चकोरी ॥ २८ ॥

अथ नेत्र अवस्थावर्णन ॥ राग धनाश्री ॥ अंखियां हरिदरशनकी भूँखी । अब कैसे रहति श्यामरंग राती ए बातैं सुनि रूखी ॥ अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एइत्यो नहिं झूखी । इते मान इहियोग सँदेशन सुनि अकुलनी दूखी । सूर सकत हठ नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी । बारक वह मुख आनि देखावहु दुहिपै पिवत पतूखी ॥ २९ ॥

राग धनाश्री ॥ अँखियाँ हरि दरशनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमलनैनको निशिदिन रहत उदासी ॥ आए ऊधो फिरिगए आँगन डारि गए गर फाँसी । केसरिको तिलक

मोतिनकी माला वृंदावनको वासी ॥ काहूके मनकी कोउ न जानत लोगनके मनहाँसी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको जाइ करवट ल्यों कासी ॥ ३० ॥

राग धनाश्री ॥ नैनन उहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको सांचहु सफल करि लेख्यो ॥ लोचन चपल चारु खंजन मनरंजन हृदय हमारे । सुरंग कमल मीन मनोहर श्वेत अरुन अरु कारे ॥ रत्न जडित कुंडल श्रवणन वर गंड कपोलनि झाई। मनु दिनकर प्रतिबिंब मुकुर महँ ढूँढत यह छबि पाई ॥ मुरली अधर बिकट भौंहें करि ठाढी होनि त्रिभंग । मुक्त माल उर नील शिखरते धसी धरणि जनु गंग ॥ और वेसको कहै वरणि सब अंग अंग केसरि खौर । देखे बनै कहत रसना सों सूर विलोकत और ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री ॥ नैनन नंदनँदन ध्यान । तहां लै उपदेश दीजै जहां निर्गुण ज्ञान ॥ पानि पल्लव रेख गनि गुनि अवधि विविध विधान । एतेपर कहि कटुक वचनन हते जैसे प्रान ॥ चन्द्रकोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिक भान । कोटि मन्मथ वारि छबिपर निरखि दीजत दान ॥ भ्रुकुटि कोटि कोदंड रुचि अवलोकननि संधान । कोटि वारिज वक्र नयन कटाक्ष कोटिक बान । मणि कंठ हार उदार उर अतिशयो बन्यो निर्मान । शंख चक्र गदा धरे कर पदुम सुधा निधान ॥ श्याम तनु पट पीतकी छबि करै कौन बखान । मनहु नृत्यत नील घनमें तडित देती मान । रासरसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान । सूर ऐसे श्याम बिन को यहाँ रक्षक आन ॥ ३२ ॥

राग गूजरी ॥ ऊधो इन नैनन नेम लियो । नँदनंदनसों पतिव्रत राख्यो नाहिंन दरश बियो ॥ चन्द्र चकोर चित्त चातक जल घरसों बँधो हियो । ऐसेहि इन नैनन गोपालहि इकटक प्रेम दियो ॥ आयो पुहुप ज्ञान ले ए दृग मधुपन रुचि न कियो । हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत उहै पियो ॥ ३३ ॥

राग कान्हरो ॥ ऊधो जू नैनन यह व्रत लीन्हों । स्वाति बिना ऊषर सब भरियत ग्रीव रंध्र मत कीन्हों ॥ मुरली गरज तात मुकुतातन मेघ ध्यान जल हीनो । बरुए प्राण जाहिं ऐसेही बयन होय क्यों हीनों ॥ तुम आए लै योग सिखावन सुनत महा दुख दीन्हों । कैसे सूर अगोचर लहिए निगम न पावत चीन्हों ॥ ३४ ॥

राग सारंग ॥ जबते सुन्दर वदन निहारचो ॥ तादिनते मधुकर मन अटक्यो बहुत करी निकरै न निकारचो ॥ मात पिता पति बन्धु सजन जन तिनहूको कहिबो शिर धारचो । रही न लोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीटो करि डारचो ॥ ह्वैबो होइ सु होइ कर्म-वश अब जीको सब सोच निवारचो । दासी सूरदास परमानँद भलो पोच अपनो न बिचारचो ॥ ३५ ॥

हरि मुख निरख निमेष बिसारे । तादिनते ए भए दिगंबर इन नैननके तारे ॥ तजी सीख सब सास ससुरकी लाज जनेऊ जारे । घर घूँघुट छांडौ वन वीथिनि अहनिशि रहत उघारे ॥ सहज समाधि रूपरस इकटक करत न टकते टारे । ताके बीच विघ्न करि-

बोको मातु पिता पचिहारे ॥ कहत सुनत समुझत मन महिँ ऊधो वचन तुम्हारे । सूरदास ए हटक न मानत लोचन हठी हमारे ॥ ३६ ॥

राग केदारो ॥ नैनन निपट कठिन व्रत ठानी । जादिनते बिछुरे नँदनंदन तादिनते नहिं नेक सिरानी । पलक न लावत रहत ध्यान धरि बारंबार दुरावत पानी । लाल गोपाल मिले ऊधो मैं कर्महीन कछुओ नहिं जानी । समुझि समुझि उनहार श्यामकी अति सुंदर वर शारंग पानी । सूरदास ए मोहि रहे अति हरि मूरति मन मांझ समानी ॥ ३७ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो क्यों राखौं ए नैननि । सुमिरि सुमिरि गुण अधिक तपत हैं सुनत तुम्हारे बैननि ॥ ए जु मनोहर वदन इंदुके शारद कुमुद चकोर । परम तृषारत सजल श्याम घन तनके चातक मोर ॥ मधु मराल युगपद पंकजके गति विलास जलमीन । चक्रवाक द्युति मन दिन करके मृग मुरली आधीन ॥ सकल लोक सूनो लागत है बिन देखे वह रूप । सूरदास प्रभु नँदनंदनके नखशिख अंग अनूप ॥ ३८ ॥

राग धनाश्री ॥ और सकल अंगनते ऊधो अँखियां बहुत दुखारी । अधिक पिरात सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी ॥ चितवत मग सु निमेष न मिलवत विरह बिकल भई भारी । भरि गई विरह वाइ माधोके इकटक रहत उघारी । अलीआली गुरु ज्ञान शलाका क्यों सहि सकति तुम्हारी । सूर सु अंजन आँजि रूप रस आरति हरौ हमारी ॥ ३९ ॥

राग रामकली ॥ ऊधो इन नैनन अंजन देहु । आनहु क्यों न श्याम रंग काजर जासों जुरचो सनेहु ॥ तपति रहति निशि बासर मधुकर नहिं सुहात बन गेहु । जैसे मीन मरत जल बिछुरत कहा कहौं दुख एहु ॥ सब बिधि वानि ठानि करि राख्यो खरी कपूरको रेहु । वारक श्याम मिलावहु सूर सुनि क्यों न सुयश यश लेहु ॥ ४० ॥

राग मलार ॥ नैना नाहिंनै ये रहत । यदपि मधुप तुम नंद नँदनको निपटहि निकट कहत ॥ हृदय मांझ जो हरिहि बतावत सीखो नाहिं गहत । अधपर ही संदेश अवधिको उलटे उलटि गहत ॥ परी जु प्रकृति प्रगट दरशनकी देखोई रूप चहत । सूरदास प्रभु बिन अवलोके सुख कोई न लहत ॥ ४१ ॥

पूरनता ए नैन पुरे । तुम पुनि कहत श्रवण हहिं समुझत दुख अति मरत बिसूरे ॥ ए अलि चपल मोद रस लम्पट कटु सन्देश कथत कत कूरे । वहां मुनि ध्यान कहां ब्रजवासिन कैसे जात कुलिश कर चूरे ॥ हरि अंतर्यामी सब बूझत बुद्धि बिचार सु वचन समूरे । वे हरि रत्न रूप सागरके क्यों पाइए खनावत धूरे ॥ देखि बिचारि प्रगट सरिता सर शीतल सजल स्वाद रुचि रूरे । सूर स्वाति की बूँद लगी जिय चातक चित लागत सबझूरे ॥ ४२ ॥

राग मलार ॥ ऊधो अँखियां अति अनुरागी । इकटक मग जोवति अरु रोवति भूलेहु पलक न लागी ॥ बिन पावस पावस ऋतु आई देखत हैं विदमान । अब धौं कहा कियो चाहत हैं छांडहु निर्गुण ज्ञान ॥ सुनि प्रिय सखा श्याम सुन्दरके जानतु सकल सुभाइ । जैसे मिलें सूरके स्वामी तैसी करहु उपाइ ॥ ४३ ॥

राग बिहागरो ॥ मधुकर सुनो लोचन बात । रोकि राखी अंग अंगन तऊ उडि उडि जात॥जो कपोत वियोग व्याकुल जाति है तजि धाम । जात यो दृग फिरि न आवत बिना दरशन श्याम ॥ मूँदि नैन कपाट पट दै उभै घूँघट ओट । स्वाति सुत ज्यों जाति कीतहूँ निकसि मणि नग फोट ॥ श्रवण सुनि यश रहत हरिको मन रहत हरि ध्यान । रहति रसना नाम रटि रटि कण्ठ करि गुण गान । कछुक दियो सुहाग इनको तो सबै ए लेत । सूरदास प्रभु बिना देखे नैन चैन न देत ॥ ४४ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर ए नैना पैंहारै । निरखि निरखि मग कमल नयनके प्रेममगन भए भारै ॥ तादिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारे । सपने तुरिए जागत पुनि वोई वसत जो हृदय हमारे ॥ यह निर्गुण लै ताहि बतावो जो जानै याकी सारै । सूरदास गोपाल छाँडिके चूसे टेटा खारे ॥ ४५ ॥

राग धनाश्री ॥ अँखियाँ अबलागीं पछितान । जब मोहन उठि चले मधुपुरी तब क्यों दीनो जान ॥ पंथन चले सँदेश न आवै धीरज धरै न प्रान । जादिनके बिछुरे नँदनंदन अंग अँग लागे बान ॥ ऊधो अब तुम जाइ सुनावहु आवहिं शारंगपानि । सूरदास चातक भईं गोपी अंतरगतिकी जानि ॥ ४६ ॥

राग जैतश्री ॥ कमलनैन कान्हरकी शोभा नैननिते न टरै । ऊधो आए योग सिखावनको जंजाल करै ॥ जब मोहन गाइनलै आवत ग्वालन संग धरै । बलदाऊ अरुसंग सखा मिलि कहौ कैसे बिसरै ॥ बंसीवट यमुनातट ठाढे मुरली अधर धरै ॥ सुख समूह विनोद जे कीन्हे को तेहि धरनि धरै ॥ ये व्रजवासी भये उदासी को संताप हरै । सूरदासके प्रभु विन ऊधो को तनुतप्त हरै ॥ ४७ ॥

राग नट ॥ सुन्दर श्यामके सँग आँखि । प्रथम ऊधो आनिदै हम सगुन डारैं नाखि ॥ द्वै तीन सप्त अनंग तजे श्रुति स्मृति कही जो भाखि । हृदय विद्या ज्ञान धरम सु लोचननि अभिलाखि ॥ जहां जहांकी केलि पिय हरि सोई सर चकई पाँखि । हारि हारि अहेरिया हरि रही झुकि झखि झाँखि ॥ कमल कुमुदनि इंदु उड्डगन मिलन सूरज साखि । राति ज्यों अक्रूर दिन अलि मदन दह मधु माखि ॥ ४८ ॥

राग मलार ॥ सखी री मथुरामें द्वै हंस । वै अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके गंस ॥ ए दोउ नीर खीर निरवारत इननि बँधायो कंस । इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर वंस ॥ अब इन कृपाकरी व्रजआए जानि आपनो अंस । सूर सुज्ञान सुनावत अबलनि सुनत होत मतिभ्रंस ॥ ४९ ॥

राग सारंग ॥ मानो दोउ एकहि मतै भए । ऊधो अरु अक्रूर वधिक मति व्रज आखेट ठए ॥ वचन पासि विध ऐ मृग माधौ उन रथ नाइ लए । इन हिय हेरि मृगी सब गोपी सायक ज्ञानहए ॥ योग अग्निकी दवा देखियत चहुँ दिशा लाइ दए ॥ ५० ॥

मानो भरे दोउ एकहि सांचे । नख शिख कमल नयनकी शोभा एकै भृगुपद बांचे ॥ दारुजात कैसे गुण इनमें ऊपर अन्तर श्याम । हमको है गजदंत प्रचारित वचन कहत नहिं काम ॥ एई सब असित देह धरे जेते ऐसेई सब जानि । सूर एकते एक आगरे वा मथुराकी खानि ॥ ५१ ॥

सबै खोटे मधुवनके लोग ॥ जिनके संग श्याम सुन्दर सखी सीखे सब अपयोग ॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधो युवतिनको लै योग। आसन ध्यान नैन मूँदे सखि कैसे कटै वियोग। हम अहीरि इतनी का जानैं कुबिजासों संयोग। सूर सु वैद कहा लै कीजै कहे न जानै रोग ॥ ९२ ॥

राग नट ॥ मधुवनके लोगन को पतिआइ। मुख औरै अन्तर्गति औरै पतियाँ लिखि पठवत जो बनाइ ॥ ज्यों कोइल खत काग जिवाए भक्षअभक्ष खवाइ ॥ कुहुकुहानि सुनि ऋतु बसन्तकी अन्त मिले कुल अपने जाइ ॥ ज्यों मधुकर अंबुज रस चाख्यो बहुरि न बूझी बातैं आइ। सूर जहाँ लगि श्यामगात हैं तिनसे कतकीजे सगाइ ॥ ९३ ॥

माई री मधुवनकी यह रीति। नीरस जानि तजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति ॥ तिनहूँके संगिनको कैसे चित आवति परतीति। हमहिं छाँडि बिरमहिं कुबिजा सँग आए न रिपुरण जीति ॥ जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं लागे करन समीति। सूरदास श्यामसँग ऐसो ज्यों भुसपरकी भीति ॥ ९४ ॥

राग मलार ॥ मधुवनके सब कृतज्ञ धर्मीले। अति उदार परहित डोलतहैं बोलत बचन सुशीले ॥ प्रथम आइ गोकुल सुफलकसुत लै मधुरिपुहि सिधारे। उहां कंस इहां हम दीननिको दूनो काज सँवारे ॥ हरिको सिखै सिखावन हमको अब ऊधो पगधारे। उहां दासी रतिकी कीरतिकै इहां योग विस्तारे ॥ अब तेहि बिरह समुद्र सबै हम बूडि चहत नहीं लीला सगुन नावही सुनु अलि तेहि अवलंब रही ॥ अब निर्गुणहि गहै युवतीजन पारहि कहो गईको। सूर अक्रूर छपदके मनमें नाहिंन त्रास दईको ॥ ९५ ॥

राग धनाश्री ॥ अब नीके कै समुझि परी। जिनि लगि हुती बहुत उर आशा सोऊ बातनिवरी ॥ वै सुफलकसुत ए सखी ऊधो मिली एक परिपाटी। उनतौ वह कीन्ही तब हमसों ए रतन छँडाइ गहावत माटी ॥ ऊपर मृदु भीतरसे कुलिशसम देखतके अति भोरे। जोइ जोइ आवत वा मथुराते एक डार केसे तोरे ॥ यह सखी मैं पहिले कहि राखी असित न अपने होहीं। सूर काटि जो माथो दीजै चलत आपनी गोहीं ॥ ९६ ॥

ऊधौ प्रेम रहित योग निरस काहेको गायो। हम अबलनिको निठुर वचन कहे कहा पायो ॥ जिन नैनन कमलनैन मोहन मुख हेरचो ॥ मूँदन ते नैन कहत कौन ज्ञान तेरचो ॥ तामें सुनि मधुकर हम कहा लेन जाहीं। जामें प्रिय प्राणनाथ नंदनँदन नाहीं। जिनके तुम सखा साधु बात कहो तिनकी। जीवत कहि प्रेम कथा दासी हम उनकी ॥ अविनाशी निर्गुण मत कहा आनि भाख्यो। सूरदास जीवन प्रभु कान्ह कहां राख्यो॥९७॥

राग सारंग ॥ जिनि चालहि अलि बात पराई। नहिं कोउ सुनै न समुझत ब्रजमें नई कीरति सब जात हिराई ॥ जाने समाचार सुखपाए मिलि कुलकी आरति बिसराई। भले ठौर वसि भली भई मति भले ठौर पहिंचालि कराई ॥ मीठी कथा कटुकसी लागति उपजतहैं उपदेश खराई। उलटे न्याउ सूरके प्रभुके बहे जात माँगत उतराई ॥ ९८ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो योग सिखावन आए अब कैसे धीरज धरौ । जोरि जोरि चित जोरि जुरीनो जोरी जोरि न जानौ ॥ पहिलो योग कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढानो ॥ उन हरि हमसो प्रीति करी जो जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसन लागे पापी पीर न जानी ॥ निशि वासर मोहिं पलकन लागै कोटि जतन करि हारी । ज्यों भुवंग तजि गयो केंचुरी सो गति भई हमारी ॥ एकदिवस हरि अपने हाथन करनफूल पहिराए । ते मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥ बेनी सुभग गुहीकर अपने हाथन चरणन जावक दीनो । कहा कहौं वा श्यामसुन्दरसों निपट कठिन मन कीनो ॥ तुम जो बसत हौ मथुरा नगरी हम जो बसत या गांव । ऊधो हरिसों यों जाइ कहियो प्राण तजहिं या ठांव ॥ प्रीतम प्यारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ । सूरदास हरिजीके आगे कौन कहै दुखजाइ ॥ ५९ ॥

राग जैतश्री ॥ ऊधो योग सिखावन आए । शृंगी भस्म अधारी मुद्रा दै यदुनाथ पठाए ॥ जो पै योग लिखो गोपिनको कत रसरास खिलाए । तबहीं क्यों न ज्ञान उपदेशो अधर सुधारस प्याए ॥ मुरली शब्द सुनत बनगवनी पति सुत गृह बिसराए । सूरदास संग छांड स्वामिको हमहिं भले पछिताए ॥ ६० ॥

राग धनाश्री ॥ बहुत दिन गए ऊधो चरण कमल बिनु देखे । दरशनहीन दुखित दिनही दिन छिन छिन बिपति बिशेषे ॥ रजनीमें अति प्रेम पीर बन गृह मन धरैनधीर । बासर मग जोवत उर सरिता भए नैनके नीर ॥ जौलौं रही आश सोइ गानगति घटि रही श्वास । अतिवियोग बिरहिनि तनु तजिहै कहि सो सूरज दास ॥ ६१ ॥

ऊधोवचन ॥ राग धनाश्री ॥ ज्ञान बिना कहुँ वै सुखनाहीं । घट घट व्यापक दारु अग्निज्यों सदा बसै उर माहीं ॥ निर्गुण छांडि सगुणको दौराति सोचि कहो किहि वाहीं । तत्त्व भजौ ज्यों निकट न छूटै त्यों तनुके संग छाहीं ॥ तिनके कहो कौन जस पायो जे अबलौं अवगाहीं । सूरदास ऐसे कर लागत ज्योंकृषि कीन्हे पाहीं ॥ ६२ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो प्यारे कही सो बहुरि न कहिए । जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए ॥ प्राण हमारे घात होत हैं तुमरे भावै हांसी । या जीवनते मरन भलो है करवट लेवो कासी ॥ पूरव प्रीति संभारि हमारे तुमको कहन पठायो । हमतौ जरिबरि भस्म भए तुम आनि मसान जगायो ॥ कै हरि हमको आनि मिलावहु कै ले चलिए साथे । सूरश्याम बिन प्राण तजत हैं बनै तुम्हारे माथे ॥ ६३ ॥

राग धनाश्री ॥ रे मधुकर कहा सिखावन आयो । एतौ नैन रूप रस राचे कह्यो न करत परायो ॥ योग युक्ति हम कछु बन जानैं ना कछु ब्रह्मज्ञानो । नवकिशोर मोहन मृदु मूरति तासों मन उरझानो ॥ भली करी तुम आए ऊधो देखो दशा बिचारी । दाइ उपाइ मिलाइ सूर प्रभु आरति हरहु हमारी ॥ ६४ ॥

राग कल्याण ॥ मधुकर कहा कियो अब चाहत । ए सब भई चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत ॥ हमसों तोसों वैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत । झारि झारि मनतो तू

लै गयो बहुरि पथा रहि गाहत ॥ अब तौ है मारुतको गंहिबो का सस मूकी लैहै। सूरज जो उन हमहिं हते तू अपनो कीयो पैहै ॥ ६५ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो तुम अपनो जतन करौ । हितकी कहत कुहितकी लागत इहां बेकाज अरौ ॥ जाइ करौ उपचार आपनो हौं जु देत शिख नीकी । कछु वै कहत कछु कहि नाहिं आवत ध्वनि देखत नाहिं नीकी ॥ साधु होइ तिहि उत्तर दीजै तुमसों मानी हारि । यह जिय जानि नंदनंदन तुम इहां पठाए ढारि ॥ मथुरा गहौ बेगि इन पांइन उपज्यो है तनुरोग । सूर सुवैद बेगि ढोहो किन भए मरनके योग ॥ ६६ ॥

राग नट ॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे । कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम न बहकि हैं वाहे ॥ काहेको अपने जीमें री तू सतलै मनलाहे । यह भ्रमतौ अबहीं भजिजै है ज्यों पयारके गाहे ॥ काशीके लोगनलै सिखयो जे समझे या माहे । सूर श्याम विहरत ब्रज भीतर जीजतु है मुख चाहे ॥ ६७ ॥

राग सारंग ॥ आप देखि पर देखि रे मधुकर तब औरन सिख देह । बीतैगी तबहीं जानोगे महाकठिन है नेह ॥ मनजु तुम्हारे हरिचरणनहै तन लै गोकुल आयो । नंदनंदनके संगके बिछुरे कहिकौने सचै पायो ॥ गोकुल रहौ जाहु जनि मथुरा झूठो मायामोहु । गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहू होहु ॥ ६८ ॥

तू अलि कहा परचो कहि पैडे । ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहऊं बचत न बैडे ॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहौ बरैडे । राजति जतन यशोदानंदहि हृदय मांझ सब मैंडे ॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसे चलहि कुपैंडे । याआदर परअजहूं बैठौ टरतनसूर पलैंडे ॥ ६९ ॥

राग सारंग ॥ घरहीके बाढेहो रावरे । नाहिन मीत वियोग बशपरे अनव्योगे अलि-बावरे । अधरसुधा मुरलीकी पोषे योग जहर कत प्याव रे ॥ अबला कही योग हम जानैं ज्यों जल सूखे नावरे ॥ वरु मरिजाइ चरै नहि तिनका सिंह कोइ हैं सुभाइरे ॥ जानत सूरदास कंठ हरियो तजि अनत न ठांवरे ॥ ७० ॥

राग सारंग ॥ तुम अलि कासों कहत बनाई । बिनु समुझे हम फिरि बूझति हैं बारक बहुरौ गाई ॥ किहिधौं गमन कीन्हों स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग । किहि बिधि रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग ॥ किहि हाँते चाप निदरि गज निजबल किहि बल मल्ल मथिजाने । उग्रसेन बसुदेव देवकी किहि बनि गडते आने । तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोष पठायो ॥ किहि मातुल हति कियो जगत यश कौन मधुपुरी छायो ॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुख मुरली कल बाजे । सूरदास यशुदानंद नंदन गोकुल कान्ह विराजै॥७१॥

राग सारंग ॥ हमको हरिकी कथा सुनाउ । ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मथुराही लै जाउ ॥ वै नर नारि नीके समुझेंगी तेरो बचन बनाउ । पालागौं ऐसी इन बातनि उनही जाइ रिझाउ ॥ जो शुचि सखी श्याम सुन्दरको अरु जिय अति सति भाउ ॥ तो बारक आतुर इन नैनन वह मुख आनि देखाउ ॥ जो कोउ कोटि करै कैसेहू बिधि विद्या व्यौसाउ । तो सुन सूर मीनके जलबिनु नाहिंन और उपाउ ॥ ७२ ॥

राग भोपाली ॥ ऊधो हरि बिनु ब्रज रिपु बहुरि जिये । जे हमरे देखत नँदनंदन हति हति हुते सो दूरि किये ॥ निशिको रूप बकी बनि आवत अति भय करत सु कंप हिए । तापहतै तनु प्राण हमारे रबिहू छिनक छँडाइ लिए ॥ उर ऊंचे उसाँस तृणावर्त तिहि सुख सकल उडाइ दिए ॥ कोटिक कालीसम कालिंदी परसत सलिल न जात पिए ॥ बन बकरूप अघ सुर समघर कतहूँ तौ न चितै सकिए ॥ कैसो कठिन कर्म कैसो बिन काको सूर शरन तकिए ॥ ७३ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा बिचारो । ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा बिस्तारो ॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं । कितोक बीच बिरह परमारथ जानत हौ किधौं नाहीं ॥ तुम परवीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहौ । जल बूडत अवलंब फेनको फिरि फिरि कहा गहतहौ ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवनि कैसे उरते टारौं । योग युक्ति अरु मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौं ॥ जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्यों आवै । सूरदास सो भजन बहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥ ७४ ॥

राग आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारे । अजहुँ रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात बिरह शर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि बिचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उर पखाण बिदरत न बिदारे ॥ जीवन मरण दोउ दुख भारे । कहियत सूर लाज पतिहारे ॥ ७५ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो इतनो मोहिं सतावत । कारीवटा देखि बादरकी दामिनि चमकि डरावत ॥ हेमसुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथन चलावत । अंबूखंडन शब्द सुनतही चित चक्रत उठि धावत ॥ कंचनपुर पतिको जो भ्राता ते सब बलहिं न आवत । शंभूसुतको जो वाहन है कुहकै असल सलावत ॥ यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास बिरहिन अति व्याकुल खगपति चढि किन आवत ॥ ७६ ॥

राग धनाश्री ॥ हमको तुमबिन सबै सतावत । लखौ न मधुप चतुरमाधौसो तुमहू सखा कहावत ॥ ताको तनु हरि हरचो दीनसो कुल सर्वांगतदीनी । सोइ मारत करि वारपार करि हमको कानन कीनी॥सिंधुते काढि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नांई । सो शशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिशि देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमा करि तबहिं भोग मुकरायो । प्रात इंद्र कोपित जलधरलै ब्रजमंडलपर छायो ॥ पूंछपूंछ सरदार सखनके इहि बिधि दई बडाई । तिन अति बोल झोल तनु डारचो अनल भँवरकी नाई ॥ पछ छोरि अलि सूझ पंछ धरि तिनहूँ कोपि जनायो । पत्यो जो रेख ललाट और सुख मेटि दुकार बनायो । कौनकौनको बिनय कीजिए एकहि जेतिक कहि आई । सूर श्याम अपने या ब्रजको इहिविधि कानकटाई ॥ ७७ ॥

राग नट ॥ ऊधो यहु हित लागत काहे । निशिदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदमाहे ॥ पलकन परत चहुँ दिशि चितवत बिरहानलके दाहे । इतनी आगति काहे न मिलहीं जो पर श्याम इहां हैं ॥ पालागौ ऐसेही रहनदे अवधिआश जल थाहैं । जिनि

बोरहि निर्गुण समुद्रमें पुनि पाई बिन चाहिं ॥ उपजि परी जासों तिहि अँगअँग सो अँग बनै निबाहे । सूर कहा लै करै पपीहा एते सरसरिताहें ॥ ७८ ॥

राग मलार ॥ ह्यां तुम कहत कौनकी बातैं । सुन ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि बूझतिहैं तातैं ॥ को नृप भयो कंस किन मारयो को वसुदेवसुत आहि । ह्यां यशुदासुत परम मनोहर जीजतुहै मुख चाहि ॥ नितप्रति जात धेनु वनचारन गोप सखनके संग । वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग ॥ को अविनाशी अगम अगोचर को विधि वेद अपार । सूर वृथा बकवाद करत कत इहि ब्रज नँदकुमार ॥ ७९ ॥

ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी । अजहुँ न आइ मिले इहि औसर अवधि बतावत लामी ॥ कीन्ही प्रीति पुहुप शुंडाकी अपने काजके कामी ॥ तिनको कौन परेखो कीजै जे हैं गरुडके गामी ॥ आई उघरि प्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी । सूर इते पर खुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी ॥ ८० ॥

मधुकर वह जानी तुम साँची । पूरण ब्रह्म तुम्हारो ठाकुर आगे माया नाची ॥ यह इहि गाउँ न समुझत कोऊ कैसो निर्गुण होत । गोकुल बाट परे नँदनंदन उहै तुम्हारो पोत ॥ को यशुमति ऊखलसों बाँध्यो को दधि माखन चोरे । को ए दोऊ रूख हमारे यमलार्जुन तोरे ॥ को लै बसन चढ्यो तरुशाखा मुरली मन औकरषै । को रसरास रच्यो वृन्दावन हरषि सुमन सुर वरषै ॥ ज्यों डाक्यों तब कत बिन बूडे काहेको जीभ पिरावत । तब जु सूर प्रभु गये क्रूर लैं अब क्यों नैनसिरावत ॥ ८१ ॥

राग कान्हरो ॥ निर्गुण कौन देशको वासी । मधुकरकहि समुझाइसौं हदैबूझति सांचकि हांसी ॥ कोहै जनक कौन हैं जननी कौन नारिको दासी । कैसो वरन भेषहै कैसो केहि रसमें अभिलासी ॥ पावैगो पुनि कियो आपनो जोर करैगो गासी । सुनत मानैं है रह्यो बावरो सूर सबै तिनाशी ॥ ८२ ॥

राग कल्याण ॥ ऊधो हमैं हरि कत बिसराए । एक दिवस बृन्दावनभीतर करकरि पत्र डसाए ॥ सुमिरिसुमिरि गुण गाऊँ श्यामके नैन सजल है आए । पलकको बिछुरे किते दिन बीते प्रीतम भए पराए ॥ शीतल पंथ जोवति हम निशिदिन कित विरहिन बिरमाए । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना मदनकी ताप सताए ॥ ८३ ॥

अथ गोपी कुबिजाप्रति तर्के वदति ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो अब चित भए कठोर । पूरब प्रीति बिसारी गिरधर नौतम राचे ओर ॥ जन्मजन्मकी दासी तुम्हरीं नागर नंदकिशोर । प्रीतिके बाण लगाए मधुकर निकरिगए दोउ ओर ॥ जब हरि मधुवनको जु सिधारे धीरज धरत न ढोर । सूरदास चातक भईं गोपी कहां गए चितचोर ॥ ८४ ॥

राग मलार ॥ ऊधो हमहिं न जान्यो श्यामहिं । सेवा करत करी कछु औरै गई जाति कुल नामहिं ॥ तन मन चोरि प्रीति जो जोरत कौन भलाई तामहिं । ते कहा जानैं पीर पराई लुब्धक अपने कामहिं ॥ अंतहु सूर सोई पै प्रकटै होइ प्रकृति जो जामहिं । नागरि नारि रतिके रतिनागर राचे कुबिजा वामहिं ॥ ८५ ॥

राग गौरी ॥ मधुकर उनकी बात हम जानी । कोऊ हुती कंसकी दासी कृपावरी भई रानी । कुबिजा नाऊँ मधुपुरी बैठी लै सुवास मन मानी । कुटिल कुचील जन्मकी टेढी सुन्दरि करिघर आनी ॥ अब वह नवल बधू ह्वै बैठी ब्रजकी कहत कहानी । सूर श्याम अब कैसे पैये जासों मिली सयानी ॥ ८६ ॥

राग मलार ॥ बर उन कुबिजा भलो कियो । सुनिसुनि समाचार ए मधुकर अधिक जुडात हियो ॥ जाको हरि मन हरचौ रूप करि हरचो सुपुनि न दियो । तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसिहँसि लोग जियो ॥ सूर तनक चन्दन चढाय उर श्रीसर्वसजुपियो । और सकल नागरिनारिनको दासी दाँव लियो ॥ ८७ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो अब कछु कहत न आवै । शिरपर सौति हमारे कुबिजा चामके दाम चलावै ॥ उन कछु मन्त्र करचो चन्दनमें ताते श्यामहिं भावै । आपनकी रँग रची साँवरी शुक ज्यों बैठि पढावै ॥ दासी हुती असुर दैयतकी अब कुलबधू कहावै । त्यों नटनी कर लिए लकुटिया कपि ज्यों नाच नचावै ॥ टूटचो ना या गोकुलको लिखिलिखि योग पठावै । सूरदास प्रभु हमहिं निदरि दाधेपर लोन लगावै ॥ ८८ ॥

राग कान्हरो ॥ सुनि सुनि ऊधो आवत हाँसी । कहँवै ब्रह्मादिकके ठाकुर कहां कंसकी दासी ॥ इंद्रादिककी कौन चलावै शंकर करत खवासी । निगम आदि बंदीजन जाके शेष शीशके वासी ॥ जाके कमला रहत निरन्तर कौन गनै कुबिजासी । सूरदास प्रभु दृढकरि बाँधे प्रेमपुंजिका पासी ॥ ८९ ॥

राग मलार ॥ तबते बहुरि दरश नहिं दीन्हों । ऊधो हरिमथुरा कुबिजाघर इहै नेम ब्रत लीन्हों ॥ चार मास वर्षाके लीन्हें मुनिहु रहत इकठौर । दासीधाम पवित्र जानिकै नहिं देखत उठि और ॥ ब्रजवासी सब ग्वाल कहतहैं कत ब्रज छाँडि गए । सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुण नाम भए ॥ ९० ॥

राग जैतश्री ॥ कुबरीको न्याउरी जासों गोविन्द बोलै । जिनसों कृपा करी नँदनँदन काहेन ऐंडी डोलै ॥ कारोकारो कुटिल अति कान्हर अंतरग्रंथि न खोलै । हम बौरी दक-वाद करतहैं वृथा अरति यह जोलै ॥ प्रीति पुरातन पोरी उनसों नेह कसौटी तोलै । सूर श्याम उपहास चल्यो ब्रज आप आपने टोलै ॥ ९१ ॥

कामगँवारी सोच परचो । रूपहीन कुलहीन कूबरी तासों मन जो ढरचो ॥ उनको सदा स्वभाव सलिलको खेरनी खंड झरचो । सकुचो नहीं जानि ऊँचो तनु उमँगति मन पसरचो ॥ फेरे फिरत असुर दासीके जनु जड मांड भरचो । सूरदास गोपाल रसिकमणि अकरन करन करचो ॥ ९२ ॥

राग मलार ॥ काहेको गोपीनाथ कहावत । जुपै मधुप हरि हितू हमारे काहेन गोकुल आवत ॥ सुपनेकी पहिंचानि जीयमहिं कलंक लगावत । जो परि कृष्ण कूबरिहि रीझे सोइ किन नाम धरावत ॥ ज्यों गजराज काजके औसर औरै दशन देखावत । ऐसे हम कहिबे सुनबेको सूर अनत बिरमावत ॥ ९३ ॥

कहियत कुबिजा कृष्ण नेवाजी । छुवत अटपटी चाल गई मिटि नवसत कंचुकि साजी ॥ मिली जाइ आगे दरवाजे चंदन देत ठगी करि बाजी । बाँधो सुरति सुहाग

सबनको हरि मिलि प्रीति उपराजी ॥ सुफल भयो पछिलो तप कीन्हों देखि स्वरूप कामरति भाजी। जगतके प्रभु वश किए सूर सुनि सेवहि सुहागिनिके शिर गाजी ॥ ९४ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो जाके माथे भाग। अबलन योग सिखावन आए चेरिहि चपा सोहाग॥आए बचन योगकी बेली कोटी प्रेमकी बाग। कुबिजहि करिआये पटरानी हमहिं देत बैराग ॥ लौंडीकी डौंडी बाजी जग बढ्यो श्याम अनुराग। कुबिजा कमलनैन मिलि खेलत बारहमासी फाग ॥ मिल्यो सोहायो साथ श्यामको कहां हंस कहां काग। सूरदास प्रभु ऊख छाँडिकै चतुर चचोरत आग ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ ऊधोजू जाइ कहौ दूरि करैं दासी। नागरनरजिय बिचारि करतहैं सब हाँसी ॥ हेम कांच हंस काग खरि कपूर जैसो। कुबिजा अरु कमलनैन संगबन्यो ऐसो ॥ जातिहीन कुलबिहीन कुबिजा कान्ह दोऊ। जो ऐसिनके संग लागै सूर तैसो सोऊ ॥९६॥

राग मलार ॥ ऊधो कहा हमारी चूक। वैगुण अवगुण सुनिमुनि हरिके हृदय उठति है कूक ॥ वेही काज छाँडिगए मधुवन हम घटी कहाकरी। तन मन धन आतमा निवेदन सोउ न चित हिधरी ॥ रीझेजाइ सुंदरी कुबिजहि यहि दुख आवैं हाँसी। यद्यपि कूर कुरूप कुंद्रस तद्यपि हम ब्रजवैसी ॥ एतेऊपर प्राण रहतहैं घाट कहहु कहा कहिए। पूरब कर्मलिखे बिधि अक्षर सूर सबैसो सहिए ॥ ९७ ॥

राग मलार ॥ अलिहमहिं कान्हको इहै परेखो आवै। तब वह प्रीति चरणजावक शिर अब कुबिजा मन भावै ॥ तब तक पाणिधरो गोवर्धन कत ब्रजपतिहि छँडावै ॥ अब वह रूप अनूप कृपा करि नैनन क्यों न देखावै ॥ तब कत बैन अधर धरि मोहन लैलै नाम बुलावै। अरु कत लाड लडाइ राग रस हँसिहँसि कंठ लगावै ॥ जेहि मुख संग समीप राति दिन तेहि क्यों योग सिखावै। जेहि मुख अमृत पिऊं रसनाभरि तेहि क्यों विषहि पिआवै ॥ कर मींडति पछिताति मनहिंमन क्रमक्रम करि समुझावै। सोई सुनि सूरदास अब विरहिनि यहि दुख दुख अति पावै ॥ ९८ ॥

राग सोरठ ॥ मेरे जिय इहै परेखो आवै। सरबस लूटि हमारो लीनो राज कूबरी पावै ॥ तापर एक सुनो री अजगुत लिखिलिखि योग पठावै। सूरकुटिल कुबिजाके हितको निर्गुणवेद सुनावै ॥ ९९ ॥

राग मलार ॥ ऊधो आवै इहै परेखो। जबबारे तबवैसी मिलनी बडे भए इहै देखो ॥ योग यज्ञ तप नेम दान व्रत इहै करत तब जात। क्योंहुँ बालसुत बढै कुशलसों कठिन मोहकी बात ॥ करि निज प्रगट कपट पिक कीरति अपने काज लगि धीर। काज सरे दुख गए कहौधौं का वायसकी पीर ॥ जहँ जहँ रहहु राज्य करौ तहँतहँ लेहु कोटिको भार। इहै अशीश सूर प्रभुसों कहिन्हातखिसै जिनि बार ॥ ३१०० ॥

राग मलार ॥ हरिब्रजकबहिं कह्यो हो आवन। वेगि सुवचन सुनाइ मधुप जो मोहिं व्यथा बिसरावन ॥ हौं यह बात कहा जानौं प्रभुजात मधुपुरीछावन। पछिली चूक समुझि उरअंतर अब लागी पछितावन ॥ सब निशि सूर सेज भई वैरनि शशि सीखो तनुतावन। अब यह कर कच अंगनि ऊपर दशहू दिशि घनसावन ॥ १ ॥

राग सारङ्ग ॥ तुम्हारी प्रीति किधौं तरवारि । दृष्टिधार धरि हती जु पहिले घायल सब ब्रजनारि ॥ गिरीसुमार खेत वृंदावन रण मानी मन हारि । विह्वलविकल सँभारति छिनछिन वदनसुधानिधि बारि ॥ अब यह कृपा योग लिखि पठए मनसिज वरी गुहारि । कछुइक शेष बच्यो है सूर प्रभु सोउ जिनि डारहु मारि ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ कहो तो जो कहिबेकी होई । प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन जानत नाहिं न कोई ॥ जोहम अधर सुधारस लैलै रही मदन गति भोई । कहा कहौं कछु कहत न आवै तन मन रही समोई ॥ विरह व्यथा वेदन उर अंतर जामें बितै जानै सोई । सूरज शिव सनकादिक लोभे सो हम बैठी खोई ॥ ३ ॥

राग नट ॥ ऊधो तुम ब्रजमें पैठ करी । लै आएहौ नफा जानिकै सबै बस्तु अकरी ॥ हम अहीर माखन मथि बेचैं सबन टेक पकरी । इह निर्गुण निर्मोलकी गठरी अब किन करत घरी ॥ यह व्यापार वहां जो समातो हुती बड़ी नगरी । सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखिअत गरे परी ॥ ४ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो योग ठगौरी ब्रज न बिकैहै । मूरीके पातनके बदले को मुक्ताहल दैहै । यह व्यापार तुम्हारो ऊधो ऐसेहि धरचो रहिजैहै । जिनपैते लै आए ऊधो तिनहिके पेट समैहै ॥ दाख दाडिम कत कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै । गुणकरि मोहिं सूर सावरेको निर्गुणही निबैहैहै ॥ ५ ॥

राग सारंग ॥ मीठी बातनमें कहा लीजै । जोपै वै हरि होहिं हमारे करन कहैं सोइ कीजै ॥ जिन मोहन अपने कर कानन कर्णफूल पहिराए । तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥ एकदिवस बेनी वृंदावन रचि पचि बिविध बनाई । ते अब कहत जटा माथेपर बदलो नाम कन्हाई ॥ लाइ सुगंध बनाइ अभूषण अरु कीनी अर्धंग । सो वै अब कहिकहि पठवतहैं भस्म चढावन अंग ॥ कहा करौं दूरि नँदनंदन तुमजो मधुपमधुपाती । सूर न होइ श्यामके मुखको जाहु न जारहु न छाती ॥ ६ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो भूलि भले भटके । कहत कही कछु बात लडैते तुम ताही अटके ॥ देखौं सकल सयान तिहारो लीने छरि फटके । तुमहिं दियो बहराइ इतैको वे कुबिजासों अटके ॥ लीजो योग सँभारि आपनो जाहु तहीं तटके । सूरश्याम तजि को उन लैहै या योगहिकटुके ॥ ७ ॥

राग नट ॥ ऊधो तुम हौ निकटके वासी । यह निर्गुण लै ताहि सुनावहु जे मुडिया बसैं कासी ॥ मुरली अधर सकल अँग सुन्दर रूपसिंधुकी रासी । योग कटोरे लिए फिरतहौ ब्रजवासिनकी फाँसी ॥ राजकुमार भले हम जानैं घरमें कंसकी दासी । सूरदास यदुकुलहि लजावत ब्रजमें होत है हाँसी ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो तुम जो निकटके वासी । यह परमारथ बूझि कहौं किन नाम बड़ो की कासी ॥ योग रु ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी । नाम प्रकार कहा रुचि मानहिं जो गोपाल उपासी ॥ परमारथी जहां लौं जेते विरहिनिके दुखदाई । सूरदास प्रभु रँगे प्रेमरँग जारौ योग सगाई ॥ ९ ॥

राग मलार ॥ मधुप बिराने लोगबटाऊ दिन दशरहे आपने कारण तजि गए मिले न कोऊ ॥ प्रीतम हरि हमको सुधि पठई आयो योग अगाऊ । हमको योग भोग कुबिज को उहि कुल यहै सुभाऊ ॥ जान्यो योग नंदनंदनको कीजै कौन उपाऊ । सूर श्यामको सर्वसु दीन्हों प्राण रहै की जाऊ ॥ १० ॥

दिनदिन प्रीति देखिअत थोरी । सुनहु मधुप मधुवन बसि मधुरिपु कुल मर्यादा छोरी ॥ गोकुलके मणि त्रिभुवननायक दासीसों रति जोरी । तापर लिखिलिखि योग पठावत बिसरी माखनचोरी ॥ काको मान परेखो कीजै बँधी प्रेमकी डोरी । सूरदास बिरहिनि बिरहा जरि भई साँवरी गोरी ॥ ११ ॥

राग आसावरी ॥ जादिनते गोपाल चले । तादिनते ऊधो या ब्रजके सब सुभाइ बदले ॥ घटे अहार बिहार हर्ष हितु सुख शोभा गुणगान । उतल तेज सब रहित सकल विधि आरति असम समान ॥ बाढी निशा वलय आभूषण उर कंचुकी उसाँस । नैननजल अंजन अंचलप्रति आवत अवधिकी आस ॥ अब यह दशा प्रगटकै तनुकी कहवीजाइ सुनाइ । सूरदास प्रभुसों कीबो जिहि वेगि मिलहिं अब आइ ॥ १२ ॥

राग गौरी ॥ हमारी ऊधो पीर न हरिबिन जाइ । जो सोउं तौ मोहिं हरि मिलैं जागौं देइ अतिदाइ ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँ न संग लगाइ । अब यह व्यथा कौन विधि भरिहैं कोऊ देइ बताइ ॥ उदमद यौवन आनि ठाढिकै कैसे रोको जाइ । सूरदास स्वामीके मिलिबेतनुकी तपतबुझाइ ॥ १३ ॥

राग मलार ॥ गोपालहि बोरहीकी टेव । जानति नहीं कहांते सीखे चोरीके छल छेव ॥ तब कछु दूधदह्योकै खाते करिरहती हौं कानि । कैसे सही परत अब मोपै मनमाणिकही हानि ॥ ऊधो नन्दनन्दनसों कहियो राजनीति समुझाइ । रा तुभए तजत नाहिं लोभहि गुप्त नहीं यदुराइ ॥ बुद्धि विवेक अरु वचनचातुरी पहिलेलई चुराइ । सूरदास प्रभुके गुण ऐसे कासोंकहिएजाइ ॥ १४ ॥

राग सारंग ॥ बिसर तक्यों गिरिधरकी बातैं । अवधि आश लगि रह्यो मधुप मन तजि न गयो घट तातैं ॥ हरिके विरह छीन भई ऊधो दोउ दुख परे सँघाते । तन रिपु काम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नाहिं याते ॥ श्रवणसुन्यो चाहतगुणहरिको जोवै वृथा पुराते । लोचन रूप ध्यान धर्‌यो निशिदिन कहो घटैको काते ॥ ज्यों नृप प्राण गए सुत अपने बिरचि रह्यो जो जाते ॥ सूर सुमतितौही पै उपजै हरिआवैं मथुराते ॥ १५ ॥

राग मलार ॥ ऊधो कुलिश भई यह छाती । मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झषत रहत दिन राती ॥ तजि ब्रज लोग पिता अरु जननी कण्ठ लाइ गए काती ॥ ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहुँ पठई न पाती ॥ पियपिय कहत रहै जिय मेरो होइ चातककी जाती । सूरदास प्रभु प्राणहिं राखहु होइकरि बूँद सेवाती ॥ १६ ॥

राग गौरी ॥ हम तौ कान्हकेलिकी भूँखी । कहा करौ लै निर्गुण तुम्हरो बिरहिनिबिरह बिदूखी ॥ कहिए कहा इहै नाहिं जानत कहो योगही योग । पालागौं तुमसे अपने पुर वसत बापुरे लोग ॥ चन्दन अभरन चीर चारु बरु नेकु आपु तनु कीजै ॥

दण्ड कमण्डलुभस्मअधारीतौ युवतिन कहुँ दीजै । ईहै देखि दृष्टि धौं गोपिन क्यों धौं दृढ व्रत पायो । सूरदास यदुनाथ मधुपको प्रेमहि पढन पठायो ॥ १७ ॥

राग गौरी ॥ तुमहिं मधुप गोपालदुहाई । कबहुँक श्याम करत इहांको मन कैधौं चित्त सुध्यों बिसराई ॥ हम अहीरि मतिहीन बावरी हटकतहू हठि करहिं मिताई । वो नागर मथुरा निर्मोही अँग अँग भरे कपट चतुराई ॥ साँची कहहु देख श्रवणनसुख छाँडहु छिया कुटिल दुचिताई । सूरदास प्रभु बिरदलाज धरि मेटहु इहाँकै लोगहँसाई ॥ १८ ॥

उद्धववचन ॥ राग बिहागरो ॥ गोपी सुनहु हरि संदेश । कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्या भेश ॥ मैं कहौं सो सत्यमानहु त्रिगुण डारौ नाखि । पंचत्रिय गुण सकल देही जगत ऐसो भाखि ॥ ज्ञानबिनु नरमुक्ति नाहीं यह विषै संसार । रूप रेखे न नाम कुल गुण बरण अवरन सार ॥ मात पितु कोउ नाहिं नारी जगत मिथ्या लाइ ॥ सूरसुख दुख नाहिं जाके भजो ताको जाइ ॥ १९ ॥

राग सारंग ॥ ऐसी बात कहौ जिनि ऊधो । नँदनंदनकी कानकरत नतु आवत आखर मुखते सूधो ॥ बातनहीं उडिजाहिं और ज्यों त्यों हम नाहिंन काची । मन क्रम वचन बिशुद्ध एकमत कमलनैन रँगराची ॥ सो कछु जतन करौ पालागौं मिटै हृदयको शूल । मुरलीधरै आनि दिखरावो बाढे प्रीति दुकूल ॥ इनहीं बातन भए श्याम तनु अजहुँ मिलावतहौ गढि छोलि । सूर वचन सुनि रह्यो ठग्योसो बहुरि न आयो बोलि ॥ २० ॥

राग सोरठ ॥ फिरिफिरि कहा बनावत बातैं । प्रातकाल उठि देखत ऊधो घरघर माखन खातैं ॥ जिनकी बात कहत हौ हमसों सो हैं हमसों दूरि । इहां न निकट यशोदानंदन प्राण सजीवनमूरि ॥ बालक संग लिएदधि चोरत खात खवावत डोलत । सूर शीशनीच्यो क्योंनावत अब काहे नहिं बोलत ॥ २१ ॥

राग सारंग ॥ फिरिफिरि कहा सिखावत मौन । वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यों पजरेपर लौन ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी अरु आराधना पौन । हम अबला अहीर शठ मधुकर धरि जानहिं कहि कौन यह मत जाइ तिनहिं तुम सिखवहु जिनहिं यहै मत सोहत । सूर आजलौं सुनी न देखी पोत पूतरी पोहत ॥ २२ ॥

राग केदारो ॥ रहिरहि देख्यो तेरो ज्ञान । सुफलकसुत सर्वसु रस लैगयो तूकरन आयो ज्ञान ॥ वृथा कत अपलोक लावत कहत यह उपदेश । उपरिकीतर होहु जानिन कहत बैन बलेस ॥ योगमत अति विशद कीरति होहि वांछित काम । सदा तनु प्रताप भरे हैं वे पुरुष तुमधाम ॥ हमचरत कञ्ज सुवास लैलै जिवति ऐसी रीति । कहत तिनसन धूम घोटहु नाहिं चाहत प्रीति ॥ अजहुँ नाहिंन कहि सिरानो यह कथाको छेव । सूरधोखो तनक है हम देखलीन्ही सेव ॥ २३ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधोजी हमहिं न योग सिखैए । जेहि उपदेश मिलैं हरि हमको सोव्रत नेम बतैए ॥ मुक्ति रहौ घर बैठि आपने निर्गुण सुनि दुख पैए । जिहि शिर केश कुसुम

भरि गूँदे तेहि कैसे भसम चढैए ॥ जानि जानि सब मगन भए है आपुन आपु लखैए । सूरदास प्रभु सुनहु नवौनिधि बहुरि किया ब्रज अइए ॥ २४ ॥

राग मलार ॥ हम तो तबहींते योग लियो । जबहींते मधुकर मधुवनको मोहन गवन कियो । रहित सनेह सरोरुह सबतन श्रीखँड भस्म चढाए । पहिरि मेखला चीर चिरातन पुनि पुनि फेरि सिआए ॥ श्रुति ताटंक नैन मुद्रावलि औधि अधार अधारी । दरशनभिक्षा माँगत डोलत लोचनपत्र पसारी ॥ बांधो वेणु कंठ शृंगी पिय सुमिरिसुमिरि गुणगावत । करवरबेंत दंडउरउर तन सुनत श्वान दुख धावत ॥ गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुराग । भोग भुगति भूलेहु भावै नहिं भरी बिरहवैराम ॥ भूली भई फिरति भ्रम श्रमकै वनवीथिन दिन राति । वारक आवत कुंटुबयात्रा है सोऊ न सोहति ॥ परम गुरू रतिनाथ हाथशिरदियो प्रेम उपदेश । चतुर चेटकी मथुरानाथसों कहियो जाइ अदेश ॥ भोगीको देखहु याब्रजमें योग देनजेहिआए । देखी सिद्धि तिहारे सिद्धकी जिन तुम इहां पठाए । सूर सुमति प्रभु तुमहिं लखायो हमरे सोई ध्यान । अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनो फोकट ज्ञान ॥ २५ ॥

राग मलार ॥ ऊधो करिरहौ हम योग । कहा एतौ बाद टानै देखि गोपीभोग ॥ शीश सेली केश मुद्रा कनक बीरी बीर । बिरह भस्म चढाइ बैठी सहज कंथा चीर ॥ हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ । चाहते हरिदरश भिक्षा दई दीनानाथ ॥ योगकी गति युक्ति हमपै सूर देखौ जोइ । कहत हमको करन योग सोयोग कैसो होइ ॥ २६ ॥

ऊधो योग तबहिंते जान्यो । जादिनते सुफलकसुतके सँग रथ ब्रजनाथपलान्यो ॥ तादिनते सब छोह मोह गयो सुत पितु हेतु भुलान्यो । तजि मायासंसार तर्क जिय ब्रज-बनिता व्रत ठान्यो ॥ नैन मूँदि मुख मौन रही धरि तनु तपतेज सुखान्यो । नँदनंदन मुरलीमुखपर धरि उहै ध्यान उर आन्यो ॥ सोइ रूप योगी जेहि भूले जो तुम योग बखान्यो । ब्रह्मउपचिमुए ध्यान करतही अंत उनहिं पहिचान्यो ॥ कहौ सुयोग कहालै कीजै निर्गुणही नहिं चान्यो । सूरउहै निज रूप श्यामको है मनमाहँसमान्यो ॥ २७ ॥

राग सारंग ॥ एअलिकहा योगमें नीको । तजि रसरीतिनंदनंदनको सिखवत निर्गुण फीको ॥ देखति सुनति नाहिं कछु श्रवणनिज्योतिज्योति करि धावति । सुंदरश्याम कृपालु दयानिधि कैसे हौं बिसरावति ॥ सुनिरसालमुरलीकी सुरध्वनि सुरमुनिकौतुक भूले । अपनी भुजा ग्रीवपर मेली गोपिनके मन फूले ॥ लोककानि कुलके भ्रम छाँडे प्रभु सँग घरबनखेली ॥ अब तुम सूर सिखावन आए योग जहरकी बेलि ॥ २८ ॥

राग गौरी ॥ ऊधोयोग कहत हौ कहायोगकिये । श्याम सुंदर कमलनयन वसो मेरे जिये ॥ योग युगति साधिकै जे तप योगिनि योग सिरायो । ताहूको फल सगुण मूरति प्रगटहि दरशन पायो ॥ मकराकृत कुंडल छवि राजित लोल कपोलै । मोर मुकुट पीत वसन बाँसुरी कर बोलै ॥ ऐसे प्रभु गुणनिधान दरश देखि जीजै । राम श्याम निधि

पियूष नयनन भरि पीजै ॥ जाको अयन जलमें तेहि अनल कैसे भावै । सूरज प्रभु गुण निधान निर्गुण क्यों गावै ॥ २९ ॥

राग मलार ॥ मधुकर श्याम हमारे ईश । तिनको ध्यान धरैं निशिवासर औरहि नवै न शीश । योगिन जाइ योग उपदेशहु जिनके मन दश बीस । एकै चित एकै वह मूरति पलन लगै दिन तीस ॥ काहेको निर्गुण ज्ञान गनत हौ जिततित डारत खीस । सूर हृदयमें वसत निरन्तर त्रिभुवन पति जगदीस ॥ ३० ॥

राग सोरठ ॥ योगकी गति सुनत मेरे अंग आगिबई । सुलगि सुलगि हम जरतिहीं तुम आनि फूकिदई ॥ भोग कुबिजा कूबरी सँग कौन बुद्धि भई । सिंह भष तजि चरत तिनकासुनीबातु नई ॥ ध्यान धरत न टरत मूरति त्रिविधि ताप तई । सूर हरिकी कृपाजापर सकल सिद्धि मई ॥ ३१ ॥

राग मलार ॥ मधुकर रह्यो योगलौं नातौ । कतहि बकतवे कामकाज बिन होहि नह्यां ते हातौ ॥ जब मिलि मिलि मधुपान कियो हो तब तू कहिधौं कहातौ । अब आयो निर्गुण उपदेशन सो नहिं हमहिं सुहातो ॥ काचेगुण ज्यों तनु लै वे धोलै वारिजको तातो । मेरे जानि गह्यो चाहत हौ फेरिकि मैंगल मातो ॥ यह लै देहु सूरके प्रभुको आयो योग जहातो । जब चहिहै तब मांगि पठै हैं जो कोउ आवत जांतो ॥ ३२ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो योग किधौं यह हाँसी । कीनी प्रीति हमारे ब्रजसों दई प्रेमकी फांसी ॥ तुम हौ बडे योगके पालक सँग लिए कुबिजासी । सूरदास सोई पै जानै जा उर लागै गाँसी ॥ ३३ ॥

राग मारू ॥ योग विधि मधुबन सिखि अहि जाइ । मन बचकर्म शपथ सुनि ऊधो सँगहि चलौ लिवाइ ॥ सब आसन रेचक अरु पूरक कुम्भक सीखे पाइ । बिन गुरु निकट संदेशन कैसे यह औ गाह्यो जाइ ॥ तुम जो कहत देखिहैं कुबिजहि तेई करब उपाइ । श्रद्धा सहित ध्यान एकहि सँग कहत जाउ यदुराइ ॥ सूर सु प्रभुकी जापर रुचि है सो हम करिहैं आइ । आज्ञा भंग करैं हम क्यों करि जों पतिव्रत न नशाइ ॥ ३४ ॥

राग धनाश्री ॥ योग सँदेशो ब्रजमें लावत । थाके चरण तुम्हारे ऊधो बारवारके धावत ॥ सुनि हैं कथा कौन निर्गुणकी रचिपचि बात बनावत । सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृणकी ओट दुरावत हम जानत पर पंच श्यामके बात नहीं बौरावत । देखी सुनी न अब लगि कबहूं जल मथि माखन आवत ॥ योगी योग अपार सिन्धुमें ढूँढेहूँ नहिं पावत । इहां हरि प्रगट प्रेम यशुमतिके ऊखल आप बँधावत ॥ चुप करि रहौ ज्ञान ढकि राखौ कत हा विरह बढ़ावत । नन्दकुमार कमलदल लोचन कहिको जाहि न भावत ॥ काहेको विपरीत बात कहि सबके प्राण गँवावत । सोहं सकित सूर अबलनि जिहि निगम नेति यश गावत ॥ ३५ ॥

अथ मन अवस्था वर्णन । राग मलार ॥ मधुकर कहि कैसे मन मानै । जिनके एक अनन्य व्रत सूझै क्यों दूजो उर आनै ॥ यहुतौ योग स्वाद अलि ऐसो पाय सुधा खारि-साने । कैसे धौं यह बात पतिव्रत सुनि शठ पुरुष बिरानै ॥ जैसे मृगिअन ताकि बधिक दृग कर कोदंड गहि तानै ॥ हिंसाकरि पोषत तम मन सुख शिर अपराधन आनै ॥ बडे

विचित्र कुबिजाके रँग रंगे हम निर्गुण लिखिठानै । सूर श्याम निर्गुण रतिमानी मधुप प्राण जिनि छानै ॥ ३६ ॥

राग मलार ॥ कहां लौं राखैं हिय मनधीर । सुनहु मधुप अपने इन नैनन अन देखे बलबीर । घर आंगन न सुहात रैनि दिन बिसरै भोजन नीर । दाहत देहचंद चन्दन है अरु वह मलय समीर ॥ पुनि पुनि उहै सुरति आवति चित चितवत यमुनातीर । सूरदास कैसे बिसरत है सुंदर श्याम शरीर ॥ ३७ ॥

राग केदारो ॥ बिन हरि क्यों राखैं मनधीर । एकबेर हरि दरश देखावहु सुन्दर श्याम शरीर ॥ तुम जो दयालु दयानिधि कहियत जानतहौ परपीर । बिछुरे प्राणनाथ ब्रज अबहीं कत हम कत यदुवीर ॥ मत अपयश आनहु शिर अपने कठिन मदनकी पीर । सूरदास प्रभु मिलन कहत हैं रवितनयाके तीर ॥ ३८ ॥

राग नट ॥ मेरो मन अनत कहां सचुपावै । जैसे उडि जहाजको पंछी उडि जहाज पर आवै ॥ जिहि मधुकर अमृतरस चाख्यो क्यों करील फल भावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ ३९ ॥

राग सारंग ॥ मनतो मथुराही जो रह्यो । तबको गयो बहुरि नहिं आयो गहे गुपाल गह्यो ॥ राख्यो रूप चुराइ निरंतर सो हरि शोधु लह्यो । आए और मिलावन ऊधो मनदै लेहु मरचो ॥ निर्गुण साटि गुपालहि मांगत क्यों दुख जात सह्यो । यह तनु यहि आधार आजु लगि ऐसे ही निबह्यो ॥ सोई लेत छुडाइ सूर अब चाहत हृदय दह्यो ॥ ४० ॥

राग सारंग ॥ कहा भयो हरि मथुरा गये । अब अलि हरि कैसे सुख पावत तनु दोउ भांति भय ॥ इहां अटक अति प्रेम पुरातन वहां अति नेह नए । उहां सुनियत नृप भेष इहां दिन देखि अत वेणु लए ॥ कहा हाथ परचो शठ अक्रूरके यह ठगठाट ठए ॥ अब क्यों कान्ह रहत गोकुल बिन योगनके सिखए ॥ राजा राज्य करौ गृह अपने माथे छत्र दए । चिरंजीव रहौ सूर नंद सुत जीजत मुख चितए ॥ ४१ ॥

अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन । कहिकहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नँदनंदन बिन ॥ श्रवण सँदेश नयन बरषत जल मुख बतियां कछु और चलावत । अनेक भांति चित धरति निठुरता सब तजि सुरति उहै जिय आवत ॥ कोटि स्वर्ग सम सुखद न मानत हरि समीप समता नहिं पावत । थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरि फिरि फेरि वहै गुण गावत ॥ जेजे बात विचारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनल उर दाहत । सूरदास परिहरि न सकत तन बारक बहुरि मिलो है चाहत ॥ ४२ ॥

मधुकर ह्यांनाहिंन मन मेरो । गयोजु सँग नँदनँदनके बहुरिन कीन्हों फेरो ॥ उन नैनन मुसकानि मोल लै कियो परायो चेरो । जाके हाथ परचो ताहीको बिसरचो बास बसेरो । को सीखै ता बिनु सुन सूरज योग जकाहू केरो । मंदो परचो सिखाउ अनत लै यहि निर्गुण मत तेरो ॥ ४३ ॥

मुक्ति आनि मंदेमों मेली । समुझि सगुन लै चलै न ऊधो यह तुमपै सब पूजी अकेली ॥ कै लै लजाहु अनतही बेचौ कै लै राग जहां विषवेली । याहि लागि को मरै हमारे वृन्दावन चरणनसों ठेली ॥ धरे शीश घरघर डोलत हौ एकै मति सब भई सहेली । सूरदास गिरि धरन छबीलो जिनकी भुजा कंठ गहि खेली ॥ ४४ ॥

ऊधो मनतौ एकै आहि। लै हरि संग सिधारे ऊधो योग सिखावत काहि॥ सुनि शठनीति प्रसून रस लंपट अबलनिको घांचाहि। अब काहेको लोन लगावत विरह अनलके दाहि॥ परमारथ उपचार कहतहौ विरह व्यथा है जाहि। जाको राजरोग कफ वाढत दह्यो खवावत ताहि॥ अबलगि अवधि अलंबन करिकरि राख्यो मनहि सवाहिं। सूरदास या निर्गुण सिंधुहि कौन सके अवगाहि॥ ४५॥

ऊधो मनन भए दशबीस। एकहु तो सो गयो श्याम सँगको अवराधे ईश॥ इंद्री शिथिल भई केशौ बिन ज्यों देही बिनशीश। आशा लगी रहत तनु श्वासा जीजो कोटि वरीस॥ तुमतौ सखा श्यामसुंदरके सकल योगके ईश। सूरदास वारसकी महिमा जो पूँछैं जगदीश॥ ४६॥

ऊधो जो मनहोत वियो। तो तुम्हेरे निर्गुणको दीजे सो विधना न दियो॥ एक जु हुतो मदनमोहनकी सो छविछीनि लियो॥ अब वा रूपराशि बिनु मधुकर कैसे परतु जियो। जो तुम कह्यो सोई शिर ऊपर सूर श्याम पठयो। नाहिंन मीन जिवत जल बाहर जो घृतमें सजियो॥ ४७॥

ऊधो यह मन और न होई। पहिलेही चढि रह्यो श्यामरँग छूटत नहिं देख्यो धोई॥ कै तुम बचन बडे अलि हमसों सोई कह जो मूल। करत केली वृंदावन कुंजन वा यमुनाके कूल॥ योग हमहिं ऐसो लागत ज्यों तो चंपेको फूल। अब क्यों मिटत हाथकी रेखें कहौ कौन विधि कीजे। सूर श्याम मुख आनि देखावहु जेहि देखे दिन जीजै॥४८॥

मधुकर मोमन अधिक कठोर। विगसि न गए कुंभ काचे जौं बिछुरत नंदकिशोर॥ प्रेम वनिज कीन्हो हुतो नेह नफा जियजानि। ऊधो अब उलटी भई प्राण पूँजिमें हानि॥ जो हम प्रीति रीति नहिं जानति तौ ब्रजराज तजी। हमारे प्रेम नेमकी ऊधो मिलि रसरीति लजी॥ हमते भली जलचरी बपुरी अपनो नेम निबाह्यो। जलते बिछुरि तुरत तनु त्यागो तउ कुल जलको चाह्यो॥ अचरज एक भया सुन ऊधो जलबिन रह्यो। सूरदास प्रभु अवधिआश लगि मन विश्वास गह्यो॥ ४९॥

राग मलार॥ मधुकर ए मन बिगरि परे। समुझत नहीं ज्ञानगीताको हरि मुसुकानि अरे॥ हरिपद कमल बिसारत नाहिंन शीतल उर सचरे। योग गँभीर अंधकूपनसों ताहि जु देखि डरे॥ बालमुकुंद रूपरसराते ताते वक्र परे। सूधे होहिं न श्वानपूँछ ज्यों कोटिक वैद मरे॥ हरि अनुराग सुहगा भरि अमीके गागर रे। सूरदास प्रभु ऐसी रहनदे कान्ह वियोग भरे॥ ५०॥

इहि उर माखनचोर गडे। अब कैसे निकसत सुनु ऊधो तिरछे ह्वै जो अडे॥ यदपि अहीर यशोदानंदन कैसे जात छडे। वहां यादवपति प्रभु कहियत हैं हमें न लगत बडे॥ को वसुदेव देवकीनन्दन को जानै को बूझै। सूर नन्दनन्दनको देखति और न कोई सूझै॥ ५१॥

राग केदारो॥ मनमें रह्यो नाहिंन ठौर। श्रीनन्दनंदन अछत कैसे आनिये उर और॥ चलत चितवत द्योस जागत सपने सोवत राति। हृदयते वह मदन मूरति छिन न इत उत

जाति ॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोग लोभ दिखाइ। कहाकरौं मन प्रेमपूरण घट न सिन्धु समाइ ॥ श्यामगात सरोज आनन ललित गति मृदु हास। सूर इनके दरशको बलि मरत लोचन प्यास ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हरिलियो तनक चितवनिमें चपल नैनकी कोर ॥ पकरे हुते और उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर। गए छँडाइ तोरि सब बन्धन दैगये हँसनि अकोर ॥ औझकि परी रैनि सो बीती दूत मिल्यो मोहि भोर। सूरदास प्रभु सर्वसु लूट्यो नागर नवलकिशोर ॥ ९३ ॥

अली अब ब्रजनाथ कछू करौ। जा कारण ये देहधरी है तिहिके लेखे परौ ॥ प्रथमहिं अर्पिदियो हम सर्वसु ए बिरहिनि यों जरौ ॥ कोटि मुक्त वारौं मुसकनि पर योग बापुरो सरो ॥ सूर सगुन बाँटि दियो गोकुलमें अब निर्गुण को बिसरो। ताकी छटा छार कँटहरिया जो ब्रज जानों दुसरो ॥ ९४ ॥

ऊधो भली करी गोपाल। आपुनपै हरि आवत नाहीं बिरमि रहे यहि काल ॥ चन्दन चंदहुते तव शीतल कोकिल शब्द रसाल। अब समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल ॥ हार चीर कंकन-कंटक भए तरनि तिलक भए भाल। सेज सिंधु गृह तिमिर कंदरा सर्प सुमन भए माल ॥ हमतो न्याय इतौ दुख पावैं ब्रज बसि गोपी ग्वाल। सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भँवर मृणाल ॥ ९५ ॥

राग मलार ॥ हमको इती कहा गोपाल। नँदकुमार कमलदललोचन सुन्दरबाहु विशाल ॥ इक ऐसीही बिरह रही लटि बिन घनश्याम तमाल। तापर अलि पठए हैं सिखवन अबलन उलटी चाल ॥ लोचन मूँदि ध्यान चित चितवनि धरि आसन मृगछाल। क्यों सहिजाइ जरे पर चूनो दूनो दुख तिहि काल ॥ डारि न दिए कमल करते गिरि दबि रहतीं ब्रजबाल। सूरश्याम अब यह न बूझिए बिछुरि करी बेहाल ॥ ९६ ॥

जब वह सुरति होतिहै बात। सुनो मधुप या बेदनकी रति मन जानैं कै गात ॥ रहत नहीं अंतर अति राखे कहत नहीं कहिजात। भई रीति हठि उरग छछूँदरि छाँडे बनै न खात ॥ एकहि भाँति सदा या ब्रजमें बीततहै दिन रात। सूरदास प्रभुके मिलि बिछुरन समुझिसमुझि पछितात ॥ ९७ ॥

राग सारंग ॥ यह बात हमारी कौन सुनै। जिन चाह्यो हरिरूप सुरति करि भूलि अँगारनि को चुनै ॥ इहां सेवनको ठौर न देखति ताते सुनि मनमें गुनै। कैमुख बिरह बयारि पैनकी बैठे ठानै को धुनै ॥ तब उन भाँतिन लाड लडाए अब बूझिए न यह उनै। बालि छाँडिकै सूर हमारे अब नरवाई को लुनै ॥ ९८ ॥

ऊधो कहिए काहि सुनाइ। हरि बिछुरे हम जिती सहतहैं तिते बिरहके घाइ ॥ बरु माधो मधुबनहीं रहते कत यशुमतिके आए। कत प्रभु गोपवेष ब्रज धारचो कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धरचो इन्द्रमण मेट्यो कत वन रास बनाए। अब कह निठुर भए अबलनिपर लिखिलिखि योग पठाए ॥ तुम परवीन सबै जानतहौ ताते यह कहि आई। आपन कौन चलावै सूर जिन मात पिता बिसराई ॥ ९९ ॥

राग नट ॥ ऊधो बात कही नहिं जाइ। मदनगोपाल लालके बिछुरे प्राण रहे मुरझाइ ॥ जब स्यन्दन चढि गमन कियो हरि फिरि चितए गोपाल। तबहीं परम कृतज्ञ सब सुठि संग लगीं ब्रजबाल ॥ अब यह और सृष्टि बिरहनकी बकत बाइ बौरानी। तिनसों कहा होत फिरि उत्तर तुम हौ पूरण ज्ञानी ॥ अब सो साधन घट का कीजै को उपजै परतीति ॥ सूरदास कछु बरणि न आवै कठिन बिरहकी रीति ॥ ६० ॥

राग सारंग ॥ मधुकर जो तू हितू हमारो। पिवहिन रे यह वदन सुधारस छांडि योग जल खारो ॥ सुन शठ नीति सुरभि पयदायक क्यों ब लेति हल भारो। जे भयभीत होहिं शृंग देखे क्यों ब छवहिं अहि कारो ॥ निजकृत समुझि वेणु दशनन हति धाम सजत नहिं हारो। ताबल अछत निशा पंकज भ्रम दल कपाट नहिं टारो ॥ रे अलि चपल मूढ रसलंपट कतहि बकत बेकाज। सूर श्याम छबि क्यों बिछुरति है नखशिख अंग बिराज ॥ ६१ ॥

राग बिलावल ॥ तुम्हारी प्रीति ऊधो पूरब जनमकी अब जु भए मेरे तनहुके गरजी। बहुत दिननते बिरमि रहे हौ संगते बिछोहि हमहिं गए बरजी ॥ जादिनते तुम प्रीति करीही घटति न बढति तूलिलेहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना तनु भयो ब्योंत बिरह भयो दरजी ॥ ६२ ॥

राग सारंग ॥ हमहिं बोल बोलेकी परतीति। सुनु ऊधो हम नाहिंन जानत तुम्हारे गाँवकी रीति ॥ हमारे प्रीतम तुम जो लै गये आवन कह्यो रिपु जीति। तुम्हरी बोलनि कौन पतीजै ज्यों भुसपरकी भीति ॥ आवन अवधि बदी हरि हमसों सोऊ दिन गए बीति। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ ६३ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो। सो हम निपट कठिनई हठ करि या मनको समुझायो ॥ युक्ति जतन जिमि योग अंगहुगहि अपथ पंथ लैआयो। भटकि भ्रम्यो वो हितके खगज्यों पुनिपुनि हरिजीपै आयो ॥ हमको सबै अहित लागतैं हैं तुम अतिहितहि जनायो। सर सरिता जल होम किएते कहा अग्नि सचुपायो ॥ अब सोई उपाउ उपदेशो जिहि जिय जाइ जिवायो। बारक मिलैं सूरके स्वामी कीजहु अपनी भायो ॥ ६४ ॥

राग मलार ॥ ऊधो हरि कहिये प्रतिपालक। जे रिपु तुम पहिले हति छाँडे बहुरि भए मम शालक ॥ अघ बक बकी तृणावर्त केशी ए सब मिलि ब्रज घेरत। सूनो जानि नँदनंदन बिनु बैर आपनो फेरत ॥ अरु अपने परिहस मेटनको इन्द्र रह्यो करि घात। सत्वर सूरसहाय करै को रही छिनककी बात ॥ ६५ ॥

राग कल्याण ॥ ऊधो तुम जानन गुप्तहि यारी। सबकाहूको मनकी बूझो बांधो मूढ फिरो ढिग बारी ॥ पीत ध्वजा उनकी मनरंजन लाल ध्वजा कुबिजा बिबिचारी। यशकी ध्वजा श्वेत ब्रजबाँधे अपयशकी ऊधोपै कारी ॥ वै तो प्रेम पुंज मनरञ्जन हमतो शीश योग व्रतधारी। सूर शपथ मिथ्या लँगराई ए बातैं ऊधोकी प्यारी ॥ ६६ ॥

राग मलार ॥ श्याम अब न हमारे। मथुरा गए पलटिसे लीन्हों माधो मधुप तुम्हारे ॥ अब मोहिं आवत पतु पछतावो कैसे वै गुण जात बिसारे। कपटी कुटिल काग अरु

कोकिल अंत भए उडि न्यारे ॥ करिकिरि मोह मगन ब्रजवासी प्रेम प्रतीति प्राण धन वारे । सूर श्यामको कौन पत्यैहै कुटिल गात तनु कारे ॥ ६७ ॥

अथ श्यामरंग तर्क वदति राग धनाश्री ॥ मधुकर कहा कारेकी जाति । ज्यों जल मीन कमल मधुपनको छिन नहिं प्रीति खटाति ॥ कोकिल कपट कुटिल वायस छलि फिरि नहिं वह बन जाति । तैसेही रसकेलि रस अचयो बैठि एकही पाँति ॥ सुतहित योग यज्ञ व्रत कीजतु बहुबिधि नीकी भाँति । देखहु अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जनि खाति ॥ तिनको क्यों मन विषयमें कीजै अवगुण लैं सुखशांति । तैसे सूर सुने यदुनंदन बजी एकरस तांति ॥ ६८ ॥

राग धनाश्री ॥ श्याम सखी कारेहुमें कारे । तिनसों प्रीति कहा कहि कीजै मारग छांडि सिधारे ॥ लोक चतुर्दश विभव कहतहै पटुहि पत्र जल न्यारे । सरवर त्यागि विहंग उडे ज्यों फिरि पाछे न निहारे ॥ तब चितचोर भोर ब्रजवासिन प्रेम नेत व्रत टारे । लै सरबस नहिं मिले सूर प्रभु कहिअत कुलट बिचारे ॥ ६९ ॥

राग नट ॥ ऐसे नंदराइके बारे । इतननि जिनि पतियाहु सखी री जितने हैं तनुकारे ॥ खेलत रंग संग वृंदावन निमिष न होत निनारे । पहिले सुख दारुण भए हमको देइ जु गए दुखभारे ॥ उरऊपर भीजत सारंग रिपु नैन नीर बहु ढारे । सूरदास प्रभु बेगी मिलहु किमि टरत नहीं गुण टारे ॥ ७० ॥

राग सारंग ॥ मधुकर यह कारेकी रीति । मन दै हरत परायो सरबस करै कपटकी प्रीति ॥ ज्यों षटपद अंबुजके दलमें वसत निशा राति मानि । दिनकर उए अनत उडि बैठै फिरि न करत पहिचानि ॥ भवन भुजंग पिटारे पाल्यो ज्यों जननी जियतात । कुल-करतूति जाति नहिं कबहूँ सहज सुडसि भजिजात ॥ कोकिल काग कुरंग श्याम घन हमहि न देखे भावैं । सूरदास अनुहारि श्यामकी छिनुछिनु सुरति करावैं ॥ ७१ ॥

राग मलार ॥ मधुकर देखि श्यामतनु तेरो । या मुखकी सुनि मीठी बातैं डरपतु है मन मेरो ॥ कत ए चरण छुवत रसलंपट बरजतही बेकाज । परसत गात स्रवत कुच कुंकुम यहउ करी कछु लाज ॥ बुधि विवेक बल वचनचातुरी सरबस चितै चुरायो । ऐसो धौं उन कहा बिचारो जालगि तू ब्रज आयो ॥ अब कहिकहि आशा गावतहौ हम आगे ए गीत । सूर इतेपरि द्वार कहा है जो परित्रिगुण अतीत ॥ ७२ ॥

राग मलार ॥ मधुप तुम दिखियतहौ अतिकारे । कालिंदीतट पार बसतहौ सुनियत श्याम सखारे ॥ मधुकर चिकुर भुअंग कोकिला अवधि नहीं दिन टारे । वै अपने मुखहीके राते जियत उहै उनिहारे ॥ कपटी कुटिल निठुर निर्मोही दुखदै दूरि सिधारे । बारक बहुरि कबहुँ आवहुगे नैननि साध निवारे ॥ उनकी सुनैसु आपु बिगोवै चितचोरत बटपारे । सूरदास प्रभु क्यों मन मानै सेवक करत ननारे ॥ ७३ ॥

राग सारंग ॥ भूलत हो कत मीठी बाननि । एतौ अलि उनहीके संगी चञ्चलचित्त साँवरे गातनि ॥ वै मुरलीध्वनि जगमन मोहत इनकी गुंजसुमन मधुपातनि । ए षटपद वै द्विपद चतुर्भुज काहूभाँति भेद नहिं भ्रातनि ॥ वै नव निशि मानिनिगृह बासी एहु बसत निशि नव जलजातति । वै उठि प्रात अनत मन रंजत एउडि करत अनत रसरातनि ॥ स्वारथ निपुण सद्य रस भोगी जिनि पतिआहु बिरह दुख दातनि । वे माधव ए मधुप सूर कहि दुहुँमें नहिं न कोउ घटि घातनि ॥ ७४ ॥

राग मलार ॥ बिलग मति मानो ऊधो प्यारे । वह मथुरा काजरकी उबरी जे आवैं ते कारे ॥ तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भवांरे । तिनहूँ मांझ अधिक छबि उपजत कमलनैन मणिपारे ॥ मानो नीलमांटमें बोरै लै यमुना जु पखारे । तागुण श्याम भई कालिंदी सूर श्यामगुण न्यारे ॥ ७५ ॥

ऊधो तुम सब साथी भोरे ॥ । मेरे कहे बिलगु मानहुगे कोटि कुटिल ले जोरे ॥ वै अक्रूर क्रूरकृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे । आपुन श्याम श्याम अंतर मन श्याम-काममें बोरे ॥ तुम मधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे । सूरदास कारणके संगी कहां पाइयत गोरे ॥ ७६ ॥

राग भोपाली ॥ ऊधो हम दूबरी वियोग । प्रीतम हुते सोउ गए मधुवन रहे बटाऊ लोग ॥ जो तुम बूझो व्यथा हमारी कहे बनै तुम आगे । देह बिहार शृङ्गार न भावै मन तरसै हरिकाजै ॥ कारीघटा देखि अँधियारी सारंगशब्द न भावै । दिवस रैनि मोहिं बिरह सतावै कबा गोपाल घरआवै ॥ सूरदास स्वामी मनमोहन अब करिगए अनाथ । मन क्रम बचन वहांई बसत हैं जहां बसत यदुनाथ ॥ ७७ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो यह हरि कहा करचो । राजकाज चित दियो साँवरे गोकुल क्यों बिसरचो ॥ कत गिरि धरचो इंद्रमद मेट्यो कत वै सुख उपजाए । अब कह निठुर भए अबलनिनर लिखि लिखि योग पठाये ॥ परम प्रवीन सकल विधि सुंदर ताते यह कहि आवत । हमरी कहा चलै सुन सूरज मात पिता बिसरावत ॥ ७८ ॥

राग नट ॥ यदपि मैं बहुतै यनत करे । तदपि मधुप हरि प्रिया जानिकै काहु न प्राण हरे ॥ सौरभ युत सुमनन लै निजकर संतत सेज धरे । सन्मुख सहति दरश शशि सजनी तिहिहुँ न अंग जरे ॥ मधुकर मोर कोकिला चातक सुनिसुनि श्रवण भरे । सादर ह्वै निर-खति रतिपति दृग नेक न पलक परे ॥ निशिदिन रटत नंदनंदनको उरते छिन न टरे । अति आतुर गुणसहित चमू सजि अंगन शर सचरं ॥ जानत नहीं कौन गुण यहितन जाते सब बिडरे । सूरदास सकुचन श्रीपतिकी सुभटन बलबिसरे ॥ ७९ ॥

राग केदारो ॥ जिहिदिन तजी ब्रजकी भीर । कहौं ए अलि लेखि तुमसों सखा सुंदर धीर ॥ काम नृप शशि नेव अबलनि दूत दुर्ग समीर । सजे सेना बिपुल बादर बदत बंदीकीर ॥ लता लघु जनु कुसुम सर कर कली कोटि तुणीर । बरुनबान बसंत कर लै बधत है आभीर ॥ मध्य द्रुम है फूल मानो कवच कंचन चीर । करि कुंभ कुंजर बिटप

भारी चमर चारु मयीर ॥ चमू चंचल चंचल नाहिन रही है पुर तीर। समर मारुहु कीटकी रट सहत त्रिया अधीर ॥ जन्म जातक व्याध व्यापक कहौं कासों पीर। सूर रसिकशिरोमणिहिबिन जरत यमुनानीर ॥ ८० ॥

राग कान्हरो ॥ हरि बिछुरनको शूल न जाई। बलिबलि जाउं मुखारविन्दकी वह मूरति चितरही समाई ॥ एक समय वृन्दाबनमहियां गहि अंचल मेरी लाज छिडाई। कबहूँक रहसि देतं आलिंगन कबहुँक दौरि बहोरत गाई ॥ वै दिन ऊधो बिसरत नाहीं अम्बर हरे यमुनतट जाई। सूरदास स्वामी गुणसागर सुमिरि सुमिरि राधे पछिताई ॥ ८१ ॥

राग नट ॥ मोहन माँग्यो अपनो रूप। यह ब्रज बसत अचै तुम बैठी ताविन उहां निरूप ॥ मेरो मन नेरो अलि लोचन लै जु गये धुपिधूप। हमसों बदलो लेन उठि धाए मनो धारि करसूप ॥ अपनो काज सँवारि सूर सुनि हमहिं बतावत कूप। लेवादेह धराधरमें है कौन रंक को भूप ॥ ८२ ॥

राग सारंग ॥ पठवत योग कछू जिय लाजन। तब ज्यों जतन तंत्र मृग मोहत अब कपटरूपकी बाजन ॥ जिय गहिलई कूरके सिखए मोह होत कहुँ राजन। सब सुधि परी वचन कन ढोए ढके रहो मुखभाजन ॥ यह नृपनीति रह्यो कौनेहु युग नेह होत जस आनन। ताहू तजी सुरति नहिं आवति दुख पाए जन माजन ॥ करि दासी दुलहिनि भयो दूलह फिरत ब्याहके साजन। सूर बडे भुव भूप कंस हते वा कुबिजाकेकाजन ॥८३॥

राग मलार ॥ संदेशनि विरहव्यथा क्यों जाति। जबते दृष्टिपरी वह मूरति कमलवदनकी कांति ॥ अबतो जिय ऐसी बनि आई कहो कोउ केहु भाँति। जोइ वह कहै सोई सो सुनो सखी गुगवर रैनि बिहाति ॥ जौलौं न भेंटौं भुजभरि हरिको उर कंचुकि न सोहाति। सूरदास प्रभु कमलनयन बिनु तलफति अरु अकुलाति ॥ ८४ ॥

राग मलार ॥ संदेशनि क्यों निवटति दिनराति। कबहुँक श्याम कमलदललोचन कब मिलिहैं उहि भाँति ॥ खंजरीट मृग मीन सबै मिलि उपमाको अकुलाति। बारबार मैं बरजति ग्वालनि अपने मारग जाति ॥ सहस भाँति अर्पित करिन सब एकौ चित न समात। सूरदास प्रभु संततिहितते कहे सुनत नहिं बात ॥ ८५ ॥

गोपालहि लै आवहु मनाइ। अबकी बेर कैसेहु ऊधो करि छल बल गहि पाइ ॥ दीजो उनहीं सु सारि उरहनो संधिसंधि समुझाइ। जिनहिं छाँडि बटिआमहँ आए ते बिकल भए यदुराइ ॥ तुमसों कहा कहौंहो मधुकर बातें बहुत बनाइ। बहियां पकरि सूरके प्रभुकी नंदकी सौंह दिवाइ ॥ ८६ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो श्याम इहां लै आवहु। व्रजजन चातक मरत पियासे स्वातिबूँद बरषावहु ॥ इहाँते जाहु बिलंब करहु जिनि हमरी दशा जनावहु। घोष सरोज भए हैं संपुट होइ दिनमणि बिगसावहु ॥ जो ऊधो हरि इहां न आवहिं तौ हमैं वहाँ बुलावहु। सूरदास प्रभु हमहिं मिलावहु तब तिहुँ पुर यश पावहु ॥ ८७ ॥

कहहु कहा हमते बिगरी । कोने न्याइ योग लिखि पठए हम सेवा कछुए न करी ॥ पाखंड प्रीति करी नँदनंदन अवधि अधार हुतीसो टरी ॥ मुद्रा जटा ऊधो लै आए ब्रज-बनिता पहिरो सगरी ॥ जातिस्वभाउ मिटै नहिं सजनी अंत तऊबरी कुबरी । सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात निकरी ॥ ८८ ॥

राग केदारो ॥ बिरही कहालौं आपु सँभारौ । जबते गंग परी हरिपगते बहिबो नहीं निवारै ॥ नैननते बिछुरी भौंहैं भ्रमि शशि अजहूँ तनु गारे । रोमते बिछुरी कमल कंठ भए सिंधु भए जरि छारे ॥ बैनते बिछुरी बिधि अवधि भई वेदहिको निरवारे । सूरदास जाके सब अँग बिछुरे केहि बिधा उपचारे ॥ ८९ ॥

राग मलार ॥ बहुत दिन गए माई हरिदरशन बिनु देखे । गनतहिगनत गई सुनिसजनी कर अँगुरिनकी रेखे ॥ अब इहि बिरह अगर जो करी हम बिरुरी नैन निमेषै । होड परति सुनि सूरदास जनि पारहु उनहिंके लेखे ॥ ९० ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो भली भई अब आए । विधि कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए ॥ रंग दीनो हो काम श्याम लै अँगअँग चित्र बनाए । याते गरे न नैन मेहते अवधि अटापर छाए ॥ ब्रज करि अवाँ योग ईंधनसम सुरति आगि सुलगाए ॥ फूँक उसाँस विरह परजारनि संग ध्यान दर शीश अराए ॥ भरे सँपूरण कलश प्रेमजल छुअन न काहू पाए । राजकाजते गए सूरप्रभु नँदनंदन करलाए ॥ ९१ ॥

राग मलार ॥ ऊधो भली करी इहां आए । तुम देखे जनु माधो देखे दुख त्रय ताप नशाए ॥ नँद यशुदाको नातो न छूटत वेद पुराणन गाए । हम अहीरि तू अहिर लाख दशका भयो निर्गुण गाए ॥ तब यहि घोष खेलावहु खेलहुऊखलभुजा बँधाए । सूरदास प्रभु इहै शूल जिअ बहुरि न दरश देखाए ॥ ९२ ॥

मधुकर कहि मधुवनकी रीति । राजा हैं यदुनाथ तिहारे कहा चलावत नीति ॥ निशिलौं करत दाह दिनकर ज्यों हुतो सदा शशि शीति । पूरब पवन कहो नहिं मानत गयो सहज वपु जीति । कंस काज कुबिजाके मारचो भई निरंतर प्रीति । सूर विरह ब्रज भलो न लागत जहीं ब्याहु तहींगीति ॥ ९३ ॥

राग केदारो ॥ हरि बिनु नाहिंन परत रहो । उत गिरि दुर्ग इतहि दव दारुण क्यों दुख जात सहो ॥ उठत विरहा धूम पावक जरि बरि बाउ बहो । हरि नागरि फिरि फूँक प्रजारनि पलकनि हृदय दहो ॥ यद्यपि घृत लै आयो ऊधो योग सँदेश कहो । तद्यपि भस्म न होत सूर सुनि चलत गुपाल चहो ॥ ९४ ॥

राग मलार ॥ माधोजी नेक देखाई देहु । जो यातनमें ताके बदले जो चाहो सो लेहु ॥ भूली फिरत ठगीसी तबते बिनु बलमति गुण गेहु । जबते इन अपराधी नयनन बरजत कियो सनेहु ॥ कहियो जाइ मधुप पालागौं विरह कियो तनु गेह । रहत आश सुनि सूर दरशके निशि दिन इहै सँदेहु ॥ ९५ ॥

राग गौरी ॥ ब्रज होइ है कब हरिको आवन । नीके वचन सुनाउ मधुप मोहिं विरह-व्यथा बिसरावन ॥ हौं इह बात कहा जानौं प्रभु जात मधुपुरी छावन । अपनी चूक मानि उर अंतर अब लागी दुख पावन ॥ अहनिशि सूरज धरी भई हो तनु श्वासै शशि तावन । या ब्रज करषि अग्नि उर ऊपर रहो दुसह घन सावन ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो जो हरि आवैं तो प्राण रहै । आवत जात उलटि फिरि बैठत जीवत औधिगहै ॥ जब उइ दामन ऊखल बाँधे वदन नवाइ रहे । चुभि जु रही नवनीतचोर छबि क्यों भूलति ज्ञान कहे ॥ तिनसों ऐसी क्यों कहि आवति जो कुल त्रास सहे । सूर श्याम गुणरसनिधि तजिकै क्यों घट नीर बहै ॥ ९७ ॥

उद्धववचन ॥ राग नट ॥ जबलगि ज्ञान हृदय नहिं आवै । तौ लगि कोटी जतन करै कोऊ बिनविवेक नहिं पावै ॥ बिना बिचार सबै सुपनेसो मैं देख्यौं सो जोई । नाना दारु बसैं ज्यौं पावक प्रगट मथेते होई ॥: तुम इक कहत सकल घट व्यापक अरु सबहीते नीरे । नखशिखलौं तनु जरत निशादिन निकसि करत किन सीरे ॥ बातैं कहत सबै सांचीसी मुँहमें लैहो तुरसी । सूर सो औषध हमहिं बतावत ज्यों पितज्वरपर गुरसी॥९८॥

गोपी वचन ॥ राग सारंग ॥ तुम जो कहत हरि हृदय रहत हैं । कैसे होइ प्रतीति मधुप सुनि ए इतनी जु सुनत हैं ॥ बासर रैनि कठिन बिरहागिन अंतरप्राणदहत हैं । प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति नैनन नीर बहत हैं ॥ कठिन अवज्ञाहोत देहदुखमर्यादा न गहत हैं । कहे व क्यों मानै मन सूरज ए बातैं जु कहत हैं ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ जो पै हिरदयमाँझहरी । तोपै इती अवज्ञा उनपै कैसे सही परी । तब दावानल दहन न पायो अब यहि बिरह जरी । उरते निकसि नंदनंदन हम शीतल क्यों न करी ॥ दिनप्रतिइंद्रनैनजलबरषत घटत न एक घरी । अतिही शीत भीत भीजत तनु गिरि कर क्यों न धरी ॥ कर कंकन दर्पण ले देखौ हि अति अनख मरी । क्यों जीवहिं सुयोग सुनि सूरज बिरहिनि बिरहभरी ॥ ६९०० ॥

राग सारंग ॥ तुम घटहीमों श्याम बताए । लीजे सँभारि सकल सुख अपने रासरंग जे पाए ॥ जो सम दृष्टि आदि निर्गुणपद तौकत चित्त चोराए । मोहन वदन बिलोकि मानि रुचि हँसि हरि कंठ लगाए ॥ हम मतिहीन अजान अल्प मति तुम अनुभौ पद ल्याए । सूरदास तेहि बनिज कवन गुण मूलहुमांझ गवाँए ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ इनि बातनके मारे मरियत । निर्गुण ज्ञान मधुप लै आए बिनि गोपाल कैसे निशितरियत ॥ सबै अटपटी कहरे मधुकर सुनि देखीं मधुवनकी रीति । कौन हाल हमरे ब्रजवनि तन जानत नहीं बिरहकी रीति ॥ बुझी अगिनि बहुरौ सुलगाई अंतर्गति बिरहानल जारत । सूरदास स्वामी सुखसागर मिलि काहे न तनु ताप निवारत ॥ २ ॥

राग नट ॥ बातैं कहत बनाइ बनाइ । रंचक बिरह हुते यह गोकुल मधुकर मेट्यो आइ ॥ कमलनैनकी मोहन लीला रहति रही गुण गाइ । ओछी पूँजी हरै ज्यों तस्कर रंक मरै पछिताइ ॥ भली करी हमको लै आए पठये योग सिखाय । सूरदास स्वामी यह घाली निर्गुण कथा सुनाइ ॥ ३ ॥

राग केदारो ॥ ऐसो योग न हमपै होई । सुनिकै वचन तुम्हारो ऊधो नैना आवत रोई ॥ कुटिल कुंतल मुकुट कुंडल रही छबि छबि पोई ॥ सूर प्रभुबिन प्राण रहै नहिं कोटि करै किन कोई ॥ ४ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर कह्यो संदेश सिधारो । बिनु उपदेश सहजही योगी सुधरि रह्यो ब्रज सारो ॥ जाको ध्यान धरत गौरीपति योग युक्ति करि हारो । सो हरि बसत सदा हृदयेमें नेक टरत नहिं टारो ॥ इह उपदेश आपनो ऊधो राखो ढाँपि सवारो । सूर श्याम जानत भले जियकी जो निजहितू हमारो ॥ ५ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो हमैं कहा समुझावहु । पशु पंछी सुरभी ब्रजकी सब देखि श्रवण सुनि आवहु ॥ तृण न चरत गो पिवत न सुत पै ढूँढत बनबन डोलैं। अलि कोकिल दे आदि बिहंगम भीत भयानक बोलैं ॥ यमुना भई श्याम श्याम बिनु अंध छीन जे रोगी । तरुवर पत्र बसन न सँभारत बिरह वृक्ष भए योगी ॥ गोकुलके सब लोग दुखित हैं नीरबिना ज्यों मीन । सूरदास प्रभु प्राण न छूटत अवधि आशमें लीन ॥ ६ ॥

राग नट ॥ ऊधो अवधि आश गई । योगकी गति सुनत मेरे अंग आगिबई ॥ धरत हृदय न टरत मूरति तिहूँ ताप तई । हम सुलगि सुलगि उठतही तुम फूँकि आनि दई ॥ सिंह गज तजि चरत तृण ते सुनत बात नई । अब भोग कुबिजा सुन्दरीसों कौन बुद्धि दई ॥ नैननीर प्रवाह सरिता ज्वालजाल छई । सूरप्रभुकी कृपा जाको सकल सिद्धि भई ॥ ७ ॥

हमसों उनसों कौन सगाई । हम अहीर अबला ब्रजवासी वै यदुपति यदुराई ॥ कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इह पदवी पाई । सकुच न आवत घोष बसतकी तजि ब्रज गए पराई ॥ ऐसे भए वहां यादवपति गए गोप बिसराई । सूरदास यह ब्रजको नातो भूलिगए बल भाई ॥ ८ ॥

राग सोरठ ॥ हरि निर्मोहि यासों प्रीतिकीनी काहेन दुख भोई । कपटकी करि प्रीति कपटी लैगयो मन गोई ॥ सींचिआ मजीठ जैसो निकट काटी पोई। हमारे मनकी सोई जानै जामें बीती होई ॥ कालवदनते राखिलीन्हीं इन्द्रगर्व जे खोई । सूर गोपिन ऊधो आगे डहकि दीन्हों रोई ॥ ९ ॥

ऊधो तुम यह मत ले आए । इकहम जरै खिझावन आए मानो सिखै पठाए ॥ तुम उनके वे नाथ तुम्हारे प्राण एक इकसारे । मित्रके मित्र सजनके सज्जन ताते कहत पुकारे॥ रे सुन मूढ जरत अबलनको परदुख तू नहिं जाने । निपट गँवार होइ जो मूरख सो तेरी बातैं मानै ॥ हम रुचिकरी सूरके प्रभुसों दूजो मन न सुहाई । उलटि जाहि अपने पुरमाहीं वादिहि करत लराई ॥ १० ॥

राग मारू ॥ हरिमुखे देखही परतीति । जो तुम कोटिभांति परबोधो योग ध्यानकी रीति । नहिंनैं कछू सयान ज्ञानमें इह नीके हम जानैं । कहो कहा कहिये वा प्रभुसों कैसे मनमें आनैं ॥ इहै मन एक एक वह मूरति भृंगी कीट समानै । सूर शपथदै ऊधो पूछो इहि ब्रज कौन सयानै ॥ ११ ॥

ऊधो बात तिहारी को सुनै । हरिपदपंकज मन मधुकर गह्यो मन बिन बात कछू न बनै ॥ योग युक्तिको बडो बिस्तार है ऐसे ठौर नहिं अपने । ब्रजवासिनको इतनो हियो है कृष्णलेत संकोच बने ॥ तहां जाउ जहां बैठे योगी इहां काम रस रहौ धनै । हम अहीर कृष्णनंदनाती मुखसों क्यों मित्रपनै ॥ जो तुम जानत तत्त्व कृपाला मौन रहौ तुम घर

अपने । घर घर फिरत लेव लेव नाहीं वस्तुको मोल हनै ॥ भूख न प्यास नीद् गई हरिविनु पति सुत गृहकी कौन तनै । माया और छूटगए यमुना अधिक कहालौं योग बनै ॥ सो हरि प्राण प्रणत बल्लभ मोहनलीला हैं अकनै । आवत है कछु कह्यो सूरप्रभु नहिंतौ रहौ तुम मौन बनै ॥ १२ ॥

राग मलार ॥ बातन को परतीति करै । को अब कमलनयन मूरति तजि निर्गुण ध्यान धरै ॥ जो मत वेद कहत युग बीते रूप देख बिन जाने । सो मति मूढ कहत अबलनिसों नाहिं सो हृदय समाने ॥ जो रस काज देवमुनि चिन्तत ध्यान पलक नहिं आवत । सोइरस सूरगाइ ग्वालन सँग मुरली लेकर गावत ॥ १३ ॥

राग सारंग ॥ नहीं हम निर्गुण पहिंचानि । मन मन सार स्वरूप सिन्धुमें आपनो हम सानि ॥ यद्यपि अलि उपदेशत ऊधो पूरण ज्ञान बखानि । चित चुभिरही मदनमोहनकी जीवन मृदु मुसुकानि ॥ जुरचो सनेह नन्दनन्दनसों तजि परमिति कुलकानि । छूटत सहज न सूरज प्रभु दुख सुखहि लाभ करिहानि ॥ १४ ॥

ऊधो जाइ बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नन्दकुमार । इह न होइ उपदेश श्यामको कहत लगावन छार ॥ निर्गुण ज्योति कहां उनपाई सिखवत बारंबार । कालिहि करतहुते हमरे अंग अपने हाथ शृंगार ॥ व्याकुलभई गोपालहि बिछुरे गयो गुन ज्ञान सँभार । ताते जो भावै सो बकतहौ नाहिंन दोष तुम्हार ॥ विरह सहनको हम सरजी है पाहन हृदय हमार । सूरदास अन्तर्गति मोहन जीवन प्राण अधार ॥ १५ ॥

अलि तुम योग बिसरि जनि जाहु । बांधो गाँठि छूटि परिहै कहूँ बहुरि वहां पछिताहु॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधुकर मन जिनि जानहु और । ब्रजवनिताके नाहिं कामको है तुम्हरे पै ठौर ॥ जो हित करि पठए मनमोहन सो हम तुमको दीन्यो । सूरदास ज्यों विप्र नारि पर करहि बन्दना कीन्यो ॥ १६ ॥

ज्ञान योग अबलनि अहीरिसों कहत न आवै लाज । ऊधो सखा श्यामके कहियत पठए हो बे काज ॥ जा लायक जो बात होइ सो तैसिये तासों कहिये । विना नाद संगीत सुधानिधि मूढहि यहा सुनइये ॥ हम जानी जु बिचार पठाए सखा अंग परवीन । सुख दै है मोहन कहि बतियां करत योग आधीन ॥ मुरली अधर मोरके पांखें जिन इह मूरति देखि । सोव कहा जानै निर्गुणको सोहै भीति चित्र अवरेखि ॥ पालागौं तुम बडे सयाने अनबोलेही रहियो । सिखये योग सूरके प्रभुको उनहींसों फिरि कहियो ॥ १७ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो काहेको भक्त कहावत । जो पै योग लिखि पठयो हमको तुमहु न भस्म चढावत ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी हमहीको कहा सिखावत । कुबिजा अधिक श्यामकी प्यारी ताहि नहीं पहिरावत ॥ यहतौ हमको तबहिं न सिखयो जबते गाइ चरावत । सूरदास प्रभुको कहियो अब लिखि २ कहा पठावत ॥ १८ ॥

राग नट ॥ ऊधो न विरहिनि न हम तुमदास । कहत सुनत घट प्राण रहत हैं हरि तजि भजहु अकास ॥ बिरही मीन मरै जल बिछुरे छांडि जीवनकी आस । दासभाव नहिं तजत

पपीहा वरुसहि रहत पियास ॥ पंकज परम कमलमें विहरत विधि कियो नीर निगाल । राजिव रविको दोष न मानत शशिसों सहज उदास ॥ प्रगट प्रीति दशरथ प्रतिपाली प्रीतमको बनवास । सूर श्याम सो पतिव्रत कीन्हों छांडि जगत उपहास ॥ १९ ॥

ऊधो बिनती सुनो इक मेरी । तबके बिछुरि गए नन्दनन्दन कामकेदली घेरी ॥ देखो हृदय बिचारि तुमहिं अब प्रीति रीति सबकेरी । जहां जाकी निधि तहां सब सौंपै ज्यों मृगनाद अहेरी ॥ वै दशमास रतन रस बसते शशि बिन रैनि अँधेरी । सूरदास स्वामी कब आवै बास करन ब्रजफेरी ॥ २० ॥

राग सारंग ॥ मधुकर कहा प्रवीन सयाने । जानत तीनि लोककी महिमा अबलनि काज अयाने ॥ जे कच कनक कटोरा भरिभरि मेलत तेल फुलेल । तिन केशनको भस्म चढावत टेसू कैसे खेल ॥ जिन केशन सब रोगहि सुन्दर अपने हाथ बिनाई । तिनको जटा कहा नीकी हैं कहु कैसे कहि आइ ॥ निज श्रवणन ताटंक खुभी औ करन फूल खुटि लाऊ । तिन श्रवणन कश्मीरी मुद्रा लै लै चित्र झुलाऊ ॥ भाल तिलक अञ्जन चख नासा बेसरि नथमें फुली । ते सब तजि अलि कहत मलन मुख उज्ज्वल भस्म खुली ॥ जिहि मुख गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गास । ता मुख मौन गहे क्यों जीजै छूटत ऊरध श्वास ॥ कण्ठ सुमाल हार मुक्ताके हीरा रत्न अपार ॥ ताहू कंठ बाँधिबे कारण सींगी योग शृंगार ॥ कंचुक छीन छीन पटसारी चन्दन सरस सुछन्द । अब कन्था एकै अति गुदरी क्यों उपजी मति मन्द ॥ ऊधो ऊधो सब पालागैं देखो ज्ञान तुम्हारो । सूर सु प्रभु मुख फेरि देखिहैं चिरजीवै कान्ह हमारो ॥ २१ ॥

हमतो दुहूँ भांति फल पायो । जो गोपाल मिलैं तौ नीको नातो जगत यश गायो ॥ कहा हम या गोकुलकी गोपी वरण हीन घटि जाति । कहँ वै श्रीकमलाके वल्लभ मिलि बैठी इकपांति । निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर सो भए घोष निवासी ॥ ता ऊपर अब कहौं देखि धौं मुक्ति कौनकी दासी ॥ योग कथा ऊधो पालागों नाकहु बारंबार । सूर श्याम तजि और भजैं जो ताकी जननी छार ॥ २२ ॥

राग मारू ॥ मोहिं अलि दुहूँ भांति फल होति । तब रस अधर लेत जो मुरली अब भइ कुबिजा सौति ॥ तुम जो योग मत सिखवन आए भस्म चढावन अंग । इन बिरहिनिमैं कहूँ तू देखी सुमन गुहाए मंग ॥ कानन मुद्रा पहिरि मेखला धरैं जटा योग अधारी । इहां तरल तरिवना काके अरु तन सुखकी सारी ॥ परम वियोगनि रटत रैनि दिन धरि मनमोहन ध्यान । तुम तौ चलौ बेगि मधुबनको जहां योगको ज्ञान ॥ निशिदिन जीजतु है या ब्रजमें देखि मनोहर रूप । सूर योग लै घर घर डोलौ लेहु लेहु ज्यों सूप ॥ २३ ॥

राग नट ॥ जोपै अलि मथुराहू लै जाहु । आरति हरौ श्रवण नैननकी मेटहु उरके दाहु ॥ बुधि बल वचन जहाज बांह गहि बिरह सिंधु अवगाहु । पार लगावहु मधुरिपुके तट चन्द्र तज्यो जनु राहु ॥ देखहु जाइ रूप कुबजाको सहि न सकत यहु घाहु । जीवन जनम सफल करि लेखहिं सूर सबन उत्साहु ॥ २४ ॥

लै चल ऊधो अपने देश । मदन गोपाल मिलन मन उमह्यो कौन बसै इह यदपि सुदेश ॥ वह मूरति मेरे हृदय बसत है मुरली अधर पुट कुन्तल केश । कुण्डल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेश ॥ कहा करौं मोपै रहो न जांइ छिन सब सुखदायक बसत विदेश । सूरज श्याम मिलन कब ह्वैहै दूरि गमन ब्रजनाथ नरेश ॥ २५ ॥

राग विहागरो ॥ ऊधो लै चलुरे लै चलुरे । जहां बसैं सुन्दर श्याम बिहारी लै चलुरे तहां लै चलुरे ॥ आवन आवन कहि गए ऊधो करि गए हमसों छलुरे । हृदयकी प्रीति श्यामजी जानत केतिक दूरि गोकुलरे ॥ आपुन जाइ मधुपुरी छाए वहां रहे हिलिमिलिरे । सूरदास स्वामीके बिछुरे नैन नीरपर वलुरे ॥ २६ ।

राग सारंग ॥ गुप्त मतेकी बात कहौ जिनि काहूके आगे । कै हम जानैं कै तुम ऊधो इतनी पावहिं मांगे ॥ एक बेर खेलत वृन्दावन कंटक चुभि गयो पांइ । कंटकसों कंटक लै काढ्यो अपने हाथ सुभाइ ॥ एक दिवस विहरत बन भीतर मैं जु सुनाई भूँख । पाके फल वै देखि मनोहर चढे कृपाकरि रूख ॥ ऐसी प्रीति हमारी उनकी बसते गोकुलवास । सूरदास प्रभु सब बिसराई मधुवन कियो निवास ॥ २७ ॥

राग मलार ॥ ऊधो कत ए बातैं चाली । कछु मीठी कछु मधुरी हरिकी वै अन्तर सब शाली ॥ तब ए वेली सींचि श्याम घन अपनी करि प्रतिपाली । अब ए वेली सूखत हरि बिनु छांडि गए वनमाली ॥ जबहीं कृपा हुती यदुपतिकी रहसि रंग रसरास सुखाली । सूरदास प्रभु तब न मुई हम जिवहिं बिरहकी जाली ॥ २८ ॥

राग नट ॥ ऊधो इहै बिचार गहो । कै तन गए भलो मानै मन कै हरि ब्रज आइ रहो ॥ कानन देह विरह दौ लागी इन्द्री जीव जरै । बूझि श्यामघन प्रेम कमलमुख मुरली-वृंद परै ॥ चरण सरोवर माहिं मीन मन रहत एक रस रीति । तुम निर्गुण वश तामें डारत सूर कौन यह नीति ॥ २९ ॥

ऊधो हम लायक शिख दीजै । यह उपदेश अग्निते तातो कहो कौन बिधि लीजै ॥ तुमहीं कहो इहां इतनन महिं सीखन हारी को है । योगी यती रहित मायाते तिनहीं यह मत सोहै ॥ कहा सुनत बिपरीति लोक महिं यह सब कोई कैहै ॥ देख्यों धौं अपने मन सब कोइ तुमहीं दूषण दैहै । स्रक चन्दन बनिता विनोद रस क्यों विभूति वपु माजे । सूरदास शोभा क्यों पावत आंखि आंधरी आँजे ॥ ३० ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो हम लायक हमसों कहो । बात विचारि सोहाती कहिए कै अन बोलै ह्वै रहो ॥ भली कंहे तुमको अति शोभा अरु सबही पाइ लहो । यह बिपरीत बूझिए तुमको कंध जूव सुरभिन हो ॥ एतेपर पुनिपुनि शिखवतहौ योग रत्न दृढ करि गहो । सूर कहै अलि पूरो दीजै निपटहि बातनि मति बहो ॥ ३१ ॥

राग सारंग ॥ कबहूं वै ऊधो बात कहो । तजहु सोच मिलि हैं नंदनँदन हित करि दुखनि दहो ॥ तुम हरि समाधानको पठए हमसों कहन सँदेश । अधिक आनि आरति उपजाई कहि निर्गुण उपदेश ॥ इक अति निकट रहत अरु निजयुत जानत सकल उपाई । सोइ करहु जिहि पावहिं दरशन छांडहु अगम सुभाई ॥ हम किंकरी कमललोचनकी बश कीनी मृदुहास । सूरदास अब क्यों बिसरत है नखशिख अंग विलास ॥ ३२ ॥

राग मलार ॥ सब जल तजे प्रेमके नाते। चातक स्वाति बूँद नहिं छाँडत प्रगट पुकारत ताते ॥ समुझत मीन नीरकी बातैं तजत प्राण हठि हारत। जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत यद्पि व्याध शर मारत ॥ निमिष चकोर नैन नहिं लागत शशि जावत युग बीते। ज्योति पतंग देखि वपु जारत भए न प्रेमघट रीते ॥ कहि अलि क्यों बिसरति वै बातैं सँग जो करी ब्रजराजै। कैसे सूर श्याम हमैं छाँडैं एक देहके काजै ॥ ३३ ॥

ऊधो जो हरि हितू तुम्हारे। तौ तुम कहियो जाइ कृपा करि ए दुख सबै हमारे ॥ तनु तरुवर उर श्वास पवनमें बिरह दवा अति जारे। नहिं सिरात नहिं जात छार ह्वै सुलगि सुलगि भए कारे ॥ यद्यपि प्रेम उमँगि जल सीचे वरषिवरषि घन हारे। जो सींचे यहिभाँति जनत करि तो एते प्रतिपारे ॥ कीर कपोत कोकिला चातक बधिक वियोग बिडारे। क्यों जीवैं यहि भाँति सूर प्रभु ब्रजके लोग बिचारे ॥ ३४ ॥

राग धनाश्री ॥ हमैं तो इतनेहीसों काजु ॥ कैसेहूं अलि कमलनैनको ब्रज लै आवहु आजु ॥ और अनेक उपाव तुम्हारे सकल करहु सुख राजु। कैसे हैं निवहत अबलनपै कठिन योगके साजु ॥ नखशिख सुभग श्यामघन तनको दरशन हरति विथाजु। सूरदास मत रहत कौन बिधि वदन बिलोकनि बाजु ॥ ३५ ॥

अब हरि कौनके रस गीधे। सकत नहीं निरवारि ऊधो शशि बदरी ज्यों वीधे ॥ बर-तहीन नवल डुलाई तजी सकल कुलकानि। अन्धकारि छाँडी भए गहिल वान फून लकुट बिनपानि ॥ जातन घुरि निर्गुण भए सब नरकी अभिलाष बिना चरणसरोज देखै ॥ ३६ ॥

राग कान्हरो ॥ हरि ठाकुर लोगनसों मधुकर कहो काहेकी प्रीति। ज्यों कीजे तो होइ जलधर रविकी ऐसी रीति ॥ जैसे मीन कमल चातकही ऐसे दिन गए बीति। तरफत जरत पुकारत निशिदिन नाहिंन कछु इहां नीति ॥ मन हठ परचो कमंद जोधालौं हारेहु नाहीं जीति। रुकत न प्रेम समुद्र सूर बल वारूहीकी भीति ॥ ३७ ॥

राग सारंग ॥ को गोपाल कहांके वासी कासों है पहिचानि। तुम संदेश कौनके पठये कहत कौनके आनि ॥ अपनी चोप मधुप उडि बैठत भोर भले रस जानि। पुनि वह बेलि बढो कै सूखो ताहि कहा हितहानि ॥ प्रथम बैन मन रह्यो अहिरनको राग रागिनी ठानि। पुनिवह बधिक विश्वासघाती हनत विषम शरतानि ॥ पय प्यावत पूतना बिनाशी छले जु बलिसे दानि। शूर्पनखा ताडका निपाती सूरदास यह बानि ॥ ३८ ॥

राग मलार ॥ मधुकर कौन मनायो मानै। अविनाशी हरि अंग तुम्हारो कहा प्रीतिरस जानै ॥ सिखवहु जाइ समाधि योग रस जे सब लोग सयाने। हम अपने ब्रज ऐसेहि रहिहैं बिरह बाइ बौराने ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि रहिहैं रूप परवानै। वारक बालकिशोरी लीला शोभा समुद समानै ॥ जिनके तन मन प्राण सूर सुनि सुख मुसकानि बिकानै। परी जु पयनिधि अल्प बूँद जल सु पुनि कौन पहिचानै ॥ ३९ ॥

राग सारंग ॥ हरिसुत सुत हरिके तनु आहि । तहांको कहै कौनकी बातें ज्ञान ध्यान सुमिरै को काहि ॥ को मुख ममतारस युवतीको को जिनि कंसहतै । हमरे तौ गोपतिसे अधिपति वनिता औरनतै ॥ गोरज रंध्ररूप रुचिकारी चितैचितै हरिहोत । कबहुँक करनी समेतिले नैकन मानकै सोत ॥ ता रिपु समै संग शिशुलीन्हें पय आवत तनुघोष । सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोष ॥ ४० ॥

अब हरि और भए माइ इतनी दूरि । मधुकर हाथ सँदेशो पठयो चतुर चातुरी घूरि ॥ रूपराशि सो सबै गुण परमिति श्याम सजीवन मूरि । तिनसों कहत मनहि मन समझहु हैं सबही भरिपूरि ॥ इक सुनि सूर ऐसेहिया तनको रहो विरह झकझूरि । तापर छपद कियो चाहतहै कोइलाहूते धूरि ॥ ४१ ॥

राग कान्हरो ॥ कहा जानै कोऊ परपीर । नँदनंदनके बिछुरे सखिरी जैसी सही शरीर ॥ कहिकहि कथामधुम समुझावत मन राखहु धारि धीर । नैनमीन कैसे सचुपावत बिनदरशन हरिनीर ॥ योगसमाधि कहा हम जानैं ब्रजवासिनी अहीर । सोइ कीजै जो मिलैं सूर प्रभु भव ऋतु रंगनितीर ॥ ४२ ॥

हम त्रिय मृतक जिवत शशि साखी । तुम अलि रविहित कमल विशेषी हरे विकल मधुमाखी ॥ मुरली अधरसुधा ध्वनि सुनि सुख संच्यो श्रवण दुआर । मधुहारी अक्रूर वधिक सुख अवधि लगाई छार ॥ मनको बिरह नैन कहा जानै श्रुति मत तुही सुनावै । सूर भस्म अँग लगी कुटिलता तरु योगै गुण गावै ॥ ४३ ॥

राग रामकली ॥ हमारी सुरति लेत नाहिं माधो । तुम अलि सब स्वारथके गाहक नेह न जानत आधो । निशिलैं मरत कोश अभ्यंतर जो हित कहो सु थोरी । भ्रमत भोर सुख ओर सुमनसँग कमल देत नहिं कोरी ॥ राकारास मास ऋतु जेती रजनि प्रीति नाहिं थाही । बैस संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरीमाहीं ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ॥ कैसे जीवैं ऊधो हरि परदेश रहै । गरजि गरजि घन बरषन लागे नदिया नार बहै ॥ किहि पठवौं मधुपुरी सखीरी मेरो ह्वै चरण गहै । बासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहै ॥ कासों कहौं तपत मन निशिदिन को इह पीर लहै । हमहूं किन लै जाहि सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहै ॥ ४५ ॥

हरि हम काहेको योग बिसारी । प्रेमतरंग बुडत ब्रजवासी तरत श्याम सोइ हारी ॥ रिपु माधव पिक बचन सुधाकर मरुत मंदगति भारी । सहि न सकत अति विरहत्रास तनु आगि सलाकनि जारी ॥ ज्यों जलथाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि अडारी । विजय अधोमुख लेन सूर प्रभु कहियहु विपति हमारी ॥ ४६ ॥

जो पै इहै हुती उनके मन । तो तब कमलनयन हम कारण कहा किये ब्रज एते जतन ॥ विष जल व्याल बरुन वर्षानल अनेक अशुभ हति राखे । संतत संग रहत काहूमिस निठुर वचन नहिं भाषे ॥ उन विपदनि कुंचित जो करते कछुअ न जीव सराहती ॥ बिधि वश नाउ बहुरि फिरि मिलती ऐसो विलंब कत सहती ॥ कहिये

कहा जो सब जानत हैं यातनुकी मति ऐसी। सूरदास प्रभु हित सुचित्त कै बेगि प्रगट कीजो तैसी॥ ४७॥

मोहनसों मुख बनत न मोरे। जिन नैनन मुखचन्द्र बिलोक्यो जात तरणि नहिं जोरे॥ मुनिमनमण्डन योगकर्म ऋतु मन्दिर भार सहत कहि कोरे। बनत नहीं द्वै कमलके बन्धन कुञ्जर क्यों व रहत बिनु तोरे॥ नीलांबुज तनु नील बसन मणि चितै न जात धूमके भोरे। सूरदास जे कमलके बिरही चम्पकबन लागत चित थोरे॥ ४८॥

राग सोरठ॥ बिलग हम मानै ऊधो काको। तरसत रहे वसुदेव देवकी नहिं हितु मात पिताको॥ काको मात पिताको काको दूध पियो हरि जाको। नन्द यशोदा लाड लडायो नाहिंन हरि भयो ताको॥ कहियो जाइ बनाइ बात यह को हित है अबलाको। सूरदास प्रभु प्रीतिहै कासों कुटिल नीच कुबिजाको॥ ४९॥

उघरि आये कान्ह कपटकी खानि। सरबस हरो बजाय बाँसुरी अब छाँडे पहिचानि॥ जिन पय पियत पूतना मारी दालत करी न हानि। बलि छलि बांधि पताल पठाये नेक न कीनी कानि॥ जैसे बधिक अधिकमृग बिधवत राग रागिनी ठानि। अवधि आश परतीति ओटदै हनत विषमशर तानि॥ जैसे नाट सरु टूरत न उरते तुम ऊधो अति जानी। सूरदास प्रभुके जिय भावै आयसु माथे मानी॥ ५०॥

राग सारंग॥ जीवन मुख देखेको नीको। दरश परश दिन रीति पाइअत श्याम पियारे पीको॥ सुनो योग कहि काम हमारे जहां ज्यान है जीको। नैन मूंदिकै मृतक देखि वर मधुप ध्यान पोथीको॥ आछे सुन्दर श्याम हमारे और जगत सब फीको। खाटी मही कहा रुचि मानै सूर खवैया घीको॥ ५१॥

मधुकर को मधुवन रहियो। काके कहे सँदेशो ल्याये किनि लिखि लेख दयो॥ को वसुदेव देवकी नन्दको को यदुवंश उजागर। इहां तिन्हसों पहिचानि न काहू फिरि लेइजैं एकागर। गोपीनाथ राधिकावल्लभ यशुमतिसुवन कन्हाई॥ दिन प्रति लेत दान वृन्दावन दूनी रीति चलाई॥ मधुकर हौ तुम भये सयाने कहत औरकी और। सूर सुपथ काहू बहिकायो कै भूली यहि ठौरें॥ ५२॥

इहां तुम कहत कौनकी बातैं। बिना कहे हम समुझत नाहीं फिरिफिरि बूझति तातैं॥ को नृप भयो कंस किन मारचो को वसुदेवसुत आहि। इहां यशुमतिसुत परम मनोहर जीजत है मुख चाहि॥ दिन उठि जात धेनु बन चारन गोप सखनके संग। वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग॥ को परिपूरण को अविनाशी को विधि वेद अपार। सूर विरथ बकवाद करतहौ यहि ब्रजनंदकुमार॥ ५३॥

राग गूजरी॥ डसी री माई श्याम भुंअगम कारे। चितवनि फिरि मुसुकानि महाविष लागत ज्यों शर डारे॥ तंत्र न फुरै मंत्र नहिं लागै चले गुणी गुण हारे। प्रेम प्रीतिकी व्यथा तप्त तनु सो मोहिं डारत मारे॥ भली भई तुम आए ऊधो वंद दै चले हमारे। आनु बेगि गारुरी गोविंदहि जो यहि विषहि उतारे॥ आवत लहरि मदन बिरहाकी को हरि वेद हँकारे। सूरदास गिरिधर जो आवहिं हम शिर गारुड टारे॥ ५४॥

राग केदारो ॥ नेहन होइ पुरानो रे अलि । जलप्रवाह ज्यों शोभासागर नित नवतन ब्रजनाथ इहाँ बलि ॥ जीवत है आनंदरूप रस बिन प्रतीति को मीन चढो थलि । अमी अगाध सिंधु सर विहरत पीवतहू न अघात इतेजलि ॥ दिनदिन बढत नीर नलिनी ज्यों श्यामरंगमें नैन रहे पलि । सूर गोपालप्रीति जिय जाके छूटत नाहिंन नेह सती सलि ॥५५॥

राग धनाश्री ॥ अपने सगुन गोपाल माई यह विधि काहे देति । ऊधोकी इनि मीठी बातनि निर्गुण कैसे लेति ॥ धर्म अर्थ कामना सुनावत सब सुख मुक्ति समेति । काकी भूँख गई मनलाडू सो देखसु चित चेति । जाको मोक्ष विचारत वर्णत निगम कहतहै नेति । सूर श्याम तजि को भुस फटकै मधुप तुम्हारे हेति ॥ ५६ ॥

हमरी सुधिहु भूलि अलि आए ॥ अब कछु कान्ह कहत औरै हैं समुझि सखा गुण गाए ॥ निज स्वारथ रसरीति समुझि उर विकल निमेष न चाहे । कहतहि सुगम सबै कोउ जानत कठिन हेतु निरवाहे ॥ अब परतीति बातकी मानैं कहत हैं श्याम पराए । कबलौं चलै कपटको नातो सूरसनेह बनाए ॥ ५७ ॥

मधुकर हम सब कहा करैं । पठए हौ गोपाल हेतु करि आयसुते न टरैं ॥ रसना उरवारौं ऊधोपर इहि निर्गुणके साथ ॥ यह पै नेकु बिलगु जिनि मानौ अँखियां नाहिंन हाथ ॥ कवनभाँति गुण कहौं तिहारे हितको धीर धरावो । महाविचित्र नीरबिनु नौका विन जल मीन जिआवो ॥ सेवा हीन अपूरब दरशन कब आवहुगे फेरि । सूरदास प्रभुसों यों कहियो केलापोष सँग उबरी बेरि ॥ ५८ ॥

राग गौरी ॥ ए अलि जन्म कर्म गुण गाए । हम अनुरागी यशुमतिसुतकी नीरस कथा बहाए ॥ कैसे कर गोवर्धन धारचो कैसे केशी मारचो । कालीदमन कियो कैसे अरु बकको वदन विदारचो ॥ कैसे नंद महोत्सव कीनो कैसे गोपी धाए । पट भूषण नाना भाँतिनके ब्रजयुवतिन पहिराए ॥ दधि माखनके भाजन कैसे गोप सखा लै धाए । वनको धातु चित्र अँग कीनो नाचत भेष सुहाए ॥ तबते कछु न सुहाइ कान्ह बिनु युगसम बीतत याम । सूर मरहिंगी विरह वियोगिनि रटिरटि माधो नाम ॥ ५९ ॥

राग नट ॥ मधुप आए योग गथ लै दुख अरु हांसी को सहै । कान मुद्रा भस्म कन्था मृगतुचा आसन डहै ॥ कान्ह तौ वै निठुर कहिए सखा तिनके रावरे । जरे ऊपर लोन लावहिं कोहै उनते बावरे ॥ श्यामके गुण हम जु जानैं मानु बाँधे नल कियो । संग खेलि खवाइ अपने सोच तो इतनो दियो ॥ एक दिन वैकुण्ठवासी रास वृन्दावन रच्यो । सोइ स्वरूप विलोकि माधो आइ इन बिधितनु खच्यो ॥ शरद यामिनि इन्दुराका लाज तजि कुञ्जनि गई । बांसुरीको शब्द सुनिकै बधिककी मृगनी भई ॥ मुरलीका है मदन-मूरति मो हृदय मन रमिरई । याहिते हम जगत जानी वेद मेटो दृढ भइ ॥ मन्दमति हम कर्महीनी दोष काहि लगाइए । प्राणपतिसों नेह बांध्यो कर्म लिख्यो सो पाइए ॥ हम न जानैं

जन्म ऐसो रैनिको सपनो भयो। अंजुरिन जल घटत जैसे तैसही यातन गयो॥ भेदिआसों भेद कहिबो छेदसो छाती परौ। अंत नाहिंन ओर आवै सुख सबै कुबिजा करौ॥ योग जपतप ध्यान पूजा इह तु हृदय न आवई। सुधारस जेहि स्वाद चाख्यो तिनहिं और न भावई॥ ज्ञान दृढ तप ध्यान पूजा हरिचरण जिनके हिए। विमुख हैं जे सूर स्वामी फल कहा तिनके जिए॥ ६०॥

उद्धववचन॥ राग मलार॥ वे हरि सकल ठौरके वासी। पूरण ब्रह्म अखंडित मंडित पंडित मुनिन विलासी॥ सप्त पताल अध ऊर्ध्व पृथ्वीतल जल नभ वरुन बयारी। अभ्यंतर दृष्टी देखनको कारण रूप मुरारी॥ मन बुधि चित अहंकार दशेन्द्रिय प्रेरक रथमनकारी। ताके काज वियोग विचारत ये अवला व्रजनारी॥ जाको जैसो रूप मन रुचै सो अपवस करि लीजै। आसन वैसन ध्यान धारण मन आरोहण कीजै॥ षटदल अष्ट द्वादशदल निर्मल अजपा जाप जपाली। त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि यों मिलिहैं वनमाली॥ एकादशगीता श्रुति साखी जिहि विधि मुनि समुझाए। ते सँदेश श्रीमुख गोपिनको सूर सुमधुप जनाए॥ ६१॥

अथ गोपी वचन कर्णाटी॥ देखि रे प्रेम प्रगट द्वादश मीन। ऊधो एकबार नंदलाल राधिका बनते आवत सखिही सहित गिरिधर रसभीन॥ गए नव कुंज कुसुमनिके पुंज अलि करैं गुंज सुख हम देखि भई लवलीन॥ षट उडुगण षट मनिधर राजत चौबीस धात केहि चित्र कीन। षट इंदु द्वादश पतंग मनो मधुप सुनि खग चौंअन माधुरी दश पीन। द्वादश बिंबाधर सो बानवे ब्रज कन मानो षट दामिनि षट जलज हँसि दीन॥ द्वादश धनुष द्वादशै विष्का मनमोहन षटै चिबुक चिह्न चित चीन। द्वादश व्याल अधो मुख झूलत मधुमानो कंजदलसों बीसद्वै बंसीन॥ द्वादशै मृणाल द्वादश कदली खंभ मानो द्वादश दारिम सुमन प्रवीन। चौबीस चतुष्पद शशि सौबीस मधुकर अंगअंग रस कन्द नवीन॥ नील नीलै मिलि घटा विविधि दामिनि मानो षोडशशृंगार शोभित हरिहीन। फिरि फिरि चक्र गगनमें अमी बतावत युवती योग मौनकहुँ कीन॥ बचन रचन रसरास नंदनंदन ते वही योग पौन हृदये लवलीन। नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गात दिनही दिन दुखीन॥ बकी बका शकटा तृण केशी वच्छ वृषभ रासभै अलि बिनु गोपाल इनि बैर कीन। उद्धव यहां मिलाइ परैं पांय तेरे सूरप्रभु आरति हरैं भई तनुछीन॥ ६२॥

राग गौरी॥ मधुकर ल्याए योग सँदेशो। भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो॥ आशरही जिय कबहुँ मिलैकी तुम आवतही नाशी। युवतिनि कहत जटा शिर बांधौ तौ मिलि हैं अविनाशी॥ तुमको जिन गोकुलहि पठाए ते वसुदेव कुमार। सूर श्याम हमते कहुँ न्यारे होत न करत विहार॥ ६३॥

राग मलार॥ मधुकर बादि वचन कत बोलै। आपुन चपल चपलके संगी चपल चहूँ दिश डोलै॥ इन बातनको कौन पत्यै है अंतर कपट न खोलै। कंचन कांच कपूर कटु

खरी एकहि सँग क्यों बोलै ॥ अब अपनीसी हमहि दिखावत मति भूलहु यहु जोलै । सूर श्याम बिन रटत बिरहिनी बिरह दाग जनि छोलै ॥ ६४ ॥

राग नट ॥ ऊधो सुनत तिहारे बोल । ल्याए हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पारचो गोल ॥ कहन देहु कहा करै हमारो वरु उठि जैहै झोल । आवतही याको पहिचान्यो निपटहि ओछो तोल । जिनके सोच नहीं कहिबेको ए बहुगुणनि अमोल । जानी जात सूर हम इनकी बतचल चंचल लोल ॥ ६५ ॥

राग धनाश्री ॥ मीठी बात हमारे आगे बारबार अलि कहा सुनावहु । हमहिं खिझाइ आपु पति खोवत यामें कहौ कहा तुम पावहु । कहों न जाइ नगर नारिनसों वै सुनिहैं तिनको समुझावहु । ब्रजवासिनी अहीरिनि विरहिनि तिन आगे तुम काहे गावहु ॥ लोचन गए श्याम संगही बडे चतुर तौ वोनहीं बुलावहु । सूर चकोर चंद्र दरशन तजि कैसे जीवैं तरनि दरशावहु ॥ ६६ ॥

राग धनाश्री ॥ मधुकर कहा करन ब्रज आए । योग ज्ञान हमको परबोधन हरितौ नहीं पठाए ॥ जा मुख मुरली धरि अद्भुत सुर गाइ बजाइ रिझावत ॥ तेहि मुख श्याम कहैंगे ऐसे यह तौ तुमहिं बनावत । अंगअंग आभूषण अपने कर करि हमहिं बनावै । सूरदास प्रभु कैसे तुमकर कंथा जोरि पठावै ॥ ६७ ॥

कहा कहत रे मधुमतवारे । आयो धाइ योग उपदेशन प्रेमभजन गडिडारे ॥ जेहि मुख सुधा श्याम रस अचवत अब पीवै जल खारे । यह अक्रूर हिते अति खोटो डारतिहौ अहिकारे ॥ हम जान्यो यह श्याम सखाहै यहतो औरै न्यारे । सूर कहा याके मुखलागत कौन याहि अवगारे ॥ ६८ ॥

रे अलि कासों कहत बनाइ । बिन समुझे फिरि फिरि बूझतहै बारक बहुरो गाइ ॥ कौने गमन कियो स्यंदन चढि सुफलकसुतके संग । किन वधि रजक लिये नानापट पहिरे अपने अंग ॥ केहि हति चापि निदरि गज मारचो केहि बल मल्ल मथि भाने । उग्रसेन वसुदेव देवकी केहि व निगडहति आने ॥ काकी करत प्रशंसा निशिदिन कौने घोष पठाए । केहि मातुल वधिलियो जगत यश कौन मधुपुरी छाए ॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुख मुरली कल गाजै । सूरजदास यशोदानंदन गोकुल सदा विराजै ॥ ६९ ॥

राग सारंग ॥ तैं अलि कहां पढी यह नीति । लोक वेद श्रुति ज्ञानरहित सब कहत कथा विपरीति ॥ जन्मभूमि ब्रज जननि यशोदा केहि अपराध तजे । अतिकुल निर्गुण रूपजो अति सुखदासी जाइ भजे ॥ योगसमाधि मूढ मुनि मारग क्यों समुझैं हम ग्वारी । जो वै गुण अतीति व्यापकता तौ हम काहे न्यारी ॥ रहि मधु ढीठ कपट स्वारथहित जिय ये वचन विरोखै । मन क्रम वचन बचति वा नाते सूर श्याम तनु धोखै ॥ ७० ॥

राग सारंग ॥ मधुकर जाहि कहो सुनि मेरो । पीतवसन तनु श्याम जालकी राखत परदा तेरो ॥ यहि ब्रजको उपदेशन आयो कत जो रहो करि डेरो । एते मान यह सखी महाशठ छांडत नाहिंन खेरो ॥ ऐसी बात कहो तुम तिनसों

होइ जो कहिबे लायक । इहां यशोदा कुँवर हमारे छिनु छिनु प्रति सुखदायक ॥ ज्यों तू पुहुष पराग छांडिकै करहि ग्राम बसवास । तौ हम सूर इहै कारि देखहिं निमिष न छांडहिं पास ॥ ७१ ॥

राग रामकली ॥ ऊधो मौने साधि रहे । योग कहि पछितात मन मन बहुरि कछु न कहे ॥ श्यामको यह बूझे अतिहि रह्यो सिखाइ । कहा मैं कहि कहि लजानो नैन रह्यो नवाइ ॥ प्रथमही कहि वचन एकै लियो गुरु करि मानि । सूर प्रभु मोको पठायो इहै कारण जानि ॥ ७२ ॥

राग कल्याण ॥ कहा न कीजे अपने काजे । अब दिन दश ऐसो करि देखो जो हरि मिलैं योगके साजे ॥ माथे जटा पहिरि उर कंथा लावहु भस्म अंग मुख माजै । सींगी बजाइ पहिरि मृगछाला लोचन मूँदि रहौ किन आजै ॥ सन्मुख ह्वै शर सहो सयानी नाहिंन वचन आजुकै भाजै । योग बिरहके बीच परमदुख मरियतु है यह दुसह दुराजै ॥ ऊधो कहै सत्य करि मानो वर्षा वदत पंचमी गाजै । ज्यों यमुना छांडि सूर प्रभु लीन्हैं बसन तजी कुल लाजै ॥ ७३ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो कहा मति दीनो हमहिं गोपाल । आवहु री सखी सब मिलि सोचैं जो पावैं नन्दलाल ॥ घर बाहरते बोलि लेहु सब जावदेक ब्रजबाल । कमलासन बैठ हुरी माई मूँदहु नैन विशाल ॥ षटपद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नहिं आई । सुन्दर श्याम कमलदल लोचन नेकु न देत दिखाई ॥ फिरि भई मगन विरह सागरमें काहुहि सुधि न रही । पूरण प्रेम देखि गोपिनको मधुकर मौन गही ॥ कछु सुनि श्रवणन चातककी प्राण पलटि तनु आए । सूर सो अबके टेरि पपीहै विरही मृतक जिवाए ॥ ७४ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर भलेहि आए । दुर्लभ दरशन सुलभ पाए जानि हौ परपीर ॥ कहत वचन विचारि विनवहुं शोधि हो मनमाहिं । प्राण पतिकी प्रीति ऊधो है कि हमसों नाहिं ॥ कोए तुमसों कहै मधुकर कहन योगी नाहिं । प्रीतिकी कछु रीति न्यारी जानिहौ मनमाहिं ॥ नैन नींद न परै निशिदिन विरह डाढी देह । कठिन निर्दय नँदके सुत जोरि तोरो नेह ॥ कौन तुमसों कहै मधुकर गुप्त प्रगटित बात । सूरके प्रभु क्यों बनै ज्यों करै अबलाघात ॥ ७५ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो तैं कत चतुर कहावत । जेनहिं जानैं पीर पराई है सर्वज्ञ जनावत ॥ जो पै मीन नीरते बिछुरे को करि जतन जियावत । प्यासे प्राण जात हैं जल विनु सुधा समुद्र बतावत ॥ हम विरहिनी श्याम सुन्दरकी तुम निर्गुणहिं बतावत । योग भोग रस रोग शोग सुख जाने जगत सुनावत ॥ ए दृग मधुप सुमन सब परिहरि कमल वदन रस भावत । सोवत जागत स्वप्न रैनि दिन वह मूरति मोहिं भावत ॥ कहि कहि कपट सँदेशन मधुकर कत बकवाद बढावत । कारो कुटिल निठुर चित्त अंतर सूरदास कवि गावत ॥७६॥

मधुकर एमन ऐसो वैरन । अहो मधुप निशिदिन मरियतु हैं कान्ह कुँवर अवसेरन ॥ चित चुभि रही मनोहर मूरति चपल दृगनके हेरन । तन मन लियो चुराय हमारो वा मुरलीकी टेरन ॥ कहत न बनै कांध कामरि छवि वन गैयनकी घेरन । वरणि न जाय

सुभग उर शोभा पीताम्बरकी फेरन ॥ तुम प्रवीन हरि हमहिं बतावत अगहि गहत भट भेरन। नँदकुमार छाँडि को लैहै योग दुखनकी टेरन ॥ जहां न परम उदार नँदसुत मुक्ति परो किन झेरन ॥ सूर रसिक बिनु को जीवति है निर्गुण कठिन करेरन ॥ ७७ ॥

राग बिलावल ॥ काहेको रोकत मारग सूधो । सुनहु मधुप निर्गुण कंटकते राजपंथ क्यों सूधो ॥ कै तुम सिखै पठाए कुबिजा कही श्याम घन जूधो । वेद पुराण स्मृति सब ढूँढो युवतिन योग कहूँधो ॥ ताको कहा परेखो कीजै मांगत छाँछ न दूधो । सूर मूर अक्रूर गयो लै ब्याज निबेरत ऊधो ॥ ७८ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर समुझि कहो किन बात । काहेको हियरा सुलगावत उठि न इहांते जात ॥ जहि उर बसत यशोदानँदन निर्गुण कहां समात । कत भटकत डोलत कुसुमनि सँग तुम कित पातन पात । यद्यपि सकल बेलि वन विहरत जाइ बसत जलजात । सूरदास ब्रज मिलवत आए दासीकी कुशलात ॥ ७९ ॥

राग धनाश्री ॥ तुम तो अपनेही मुख झूठे । निर्गुण छवि हरि बिनुको पावै ज्यों आँगुरी अँगूठे ॥ निकट रहत सुनि दूरि बतावत हो रसमाहँ अपूछे । दुइ तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवनन मूठे ॥ हमसो मिले वर्ष द्वादश दिन चारिक तुमसों टूटे । सूर आपने प्राणन खेलै ऊधो खेलें रूठे ॥ ८० ॥

राग मलार ॥ ऊधो बूझति है अनुमान । देखिअत नाहिं जतन जीवेको इत विरहा उत ज्ञान ॥ इतहि चंद्र चंदन समीर मिलि लागत अनल निधान । उत निर्गुण अवलोकन मनको कठिन विरोधी प्रान ॥ इत भूषण भै करत अंगको सब निशि जागि विहान । उत कहुँ सुनत समाधि कछू नाहिं गूढ कठिनको जान ॥ दुसह दुराइ विपत्ति वियोगहि नृप बडे दोउ समान । को राखे सूरज यहि अवसर कमलनैन बिन आन ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर राख योगकी बात । कहि कहि कथा श्याम सुंदरकी शीतल करि सब गात । जेइ निर्गुण गुणहीन गनैगो सुनि सुंदरि अलसात । दीरघ नदी नाउ कागरकी को देखो चढि जात ॥ हम तन हेरि चितै अपनो पट देखि पसारहि लात । सूरजदास वा सगुण बासिकै कैसे कल्प बिहात ॥ ८२ ॥

राग मलार ॥ योगसों कौने हरि पाए । निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रस रास खिलाए ॥ योग युक्ति शंकर आराधी परम तत्त्व नवलाए । भुज धरि ग्रीव कबहिं नँदनंदन हिलिमिलि कल सुर गाए । बगदालभ्य महाऋषि कबहूँ तृण छाया न कराए । वर्षत दुखित जानि मन मोहन कब गिरिवर कर छाए ॥ अति तप पुंज विप्र दुर्वासा दूर्वा तृण नित खाए । चक्र सुदर्शनतपत महामुनि कब मुख अनल समाए ॥ बहु तप कियो मार्कंडेय द्विज आय सिंधु भरमाए । सप्तकल्प बीती कब कहि हरि वरुणपासमों ल्याए ॥ भक्त विरह कातर करुणामय वेद निरंतर गाए । कोहै योग सुनत इह ऊधो सूर श्याम मन भाए ॥ ८३ ॥

राग मलार ॥ हमारे कौन वेद विधि साधै । बटुआ झोरी दंड अधारा इतनेनको आराधै ॥ जाको कहूँ थाह नहिं पइअत अगम अपार अगाधै । गिरिधर लाल छबीलेको यह कहा पठायो पाधै ॥ सुनु मधुकर जिन सर्वस चाख्यो सो अब क्यों सचु पावत आधै । सूरदास मणि श्याम छांडिकै धुँघुचि गांठिको बांधै ॥ ८४ ॥

जिहि तनु गोकुल नाथ भज्यो । ऊधो हरि बिछुरतते बिरहिनीसो तनु तबहिं तज्यो ॥ अब या औरै सृष्टि बिरहकी बकत बाइ बौरानी । तिनसों उत्तर कहा देतहौ तुमतें पूरण ज्ञानी ॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिर चितयो गोपाल । तबहीं परम कृतज्ञ प्राण सँग उठि लागे तेहि काल ॥ अब औसान घटत कहि कैसे उपजी मन परतीति । सूरदास कछु कहत न आवै कठिन बिरहकी रीति ॥ ८५ ॥

राग गौरी ॥ मधुप बार बार काहेको और कथा कहत । प्रभुकी प्रतीति गए नाहिंन कछु रहत ॥ पवन तेज अरु अकाश पृथ्वी अरु पान्यो । तामें ते नँदनंदन कहा घालि सान्यो ॥ कमल नैन श्याम सुंदर कौन नाहिं भावै । ताको तू गुप्त करै आनै कछु गावै ॥ सूरसो नँद प्रभु दयालु लीला वपुधारी । निर्गुणते सगुण भए सन्तन हितकारी ॥ ८६ ॥

राग सारंग ॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी । तुम तौ अलि उनहींके सँगी अपनी गौंके टेकी ॥ ऐसीको ठाली बैसीहै तोसों मूँड चढावै ॥ झूँठी बात तुसीसी बिन कन फटकत हाथ न आवै ॥ अजहूँ लौ अंगहु नहिं छांडत यह मूरख मतिभोरे । मन क्रम वचन सूर अभ्यंतर नँदनंदन हित मोरे ॥ ८७ ॥

कहिये तासों जो होइ विवेकी । एतो अलि उनहींके सँगी अपने बातके टेकी ॥ ऐसी बात कहौ तुम उनसों जो नहिं जानै बूझै । सूरदास प्रभु नँदनंदन बिनु देखे और न सूझै ॥ ८८ ॥

राग कान्हरो ॥ ऊधो निर्गुण कहत हो तुमही धौं नेह । सगुण मूरति नँदनंदन हमहिं आनिय देहु ॥ अगम पंथ परम कठिन गमन तहां नाहिं । सनकादिक भूलि फिरे अबला कहां जाहिं ॥ पंचतनु परम कान्ह अपर कैसे जानी । मन वच करि कर्म रहित वेदहुकी बानी ॥ कहिए जो निबहिबे अकथन कहुँ सोही । सूर श्याम मुख सु चन्द्रलीनी युवति मोही ॥ ८९ ॥

ऊधो सूधे नेकु निहारो । हम अबलनिको सिखवन आए सुनो सयान तिहारो ॥ निर्गुण कहो कहा कहियत हैं तुम निर्गुण अतिभारी । सेवत सगुण श्याम सुन्दरको मुक्ति लही हम चारी ॥ हम सालोक्य स्वरूप सगुज्यो रहत समीप सदाई । सो तजि कहत औरकी औरै तुम अलि बडे अदाई ॥ हम मूरख तुम बडे चतुर हौ बहुत कहा अब कहिए । बेही काज फिरत भटकत कत अब मारग निज गहिए ॥ अहो अज्ञान कतहि उपदेशत ज्ञान रूप हमही । निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखति जित तितही ॥ ९० ॥

ऊधो कोउ नाहिंन अधिकारी ॥ लै न जाहु यह योग आपनो कत तुम होत दुखारी ॥ यह तौ वेद उपनिषदको मत महापुरुष व्रतधारी । हम अबला अहीरि ब्रजवासिनि देख्यो

हृदय बिचारी ॥ को है सुनत कहत कासों हो कौन कथा अनुसारी । सूरश्याम सँग जात भयो मन अहिकांचुली उतारी ॥ ९१ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो राखिए यह बात । कहत हो अनगढिन अनहद सुनत हो चपि जात ॥ योग अलि कुष्मांड जैसो अजा मुख न समात । बार बार न भाषिए कोउ अमृत तजि विष खात ॥ नैन प्यासे रूप जलके दिये नहिंन अघात । सूर प्रभु मन हर्‌यो जबलौं तौ लगि तनु कुशलात ॥ ९२ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो औरै कथा कहो । तजिये ज्ञान सुनत तावत तनुवर गहि मौन रहो ॥ रुचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल सींचि ध्यान झर लागी । ताके प्रेम सुफल मुनि श्रावत श्याम सुरँग अनुरागी ॥ ग्रीषम अलि आए उपजी व्रज कठिन योग रवि हेरो । वन मुरझात सूर को राखै महानेह विन तेरो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ॥ कै तुमसों छूटैं लरि ऊधो कै रहिए गहि मौन । इक हम जरैं जरे पर जारत बोलहु बकुची कौन ॥ एक अंग मिलि दोऊ कारे काको मन पति आए । तुमसी होइ सो तुमसों बोलै लीने योगहि आए ॥ जा काहूको योग चाहिए सो लै भस्म लगावै । जिन उर ध्यान नँदनँदनको तहँ क्यों निर्गुण भावै ॥ कहो सँदेश सूरके प्रभुके यह निर्गुण अँधियारो । अपनो बोयो आप लोनिये तुम आपहि निरुवारो ॥ ९४ ॥

राग केदारो ॥ कहा रस बरि आईकी प्रीति । जो न गडै उर अंतर ऊधो भुसपर कीसी भीति ॥ नैन बैन अरु हृदय मिलत तब बाढत प्रेम प्रतीति । ए दोउ हंस होत जब सन्मुख लेत मनहि मन जीति ॥ ऊधो यहै सँदेशो कहियो मनुवन कैसी रीति । सूरदास सोई जन जानै गई जाहि महिं बीति ॥ ९५ ॥

राग मलार ॥ जौपै इहै प्रीतिकी बात । तौ ऊधो तुम निकट रहत कत निरख सांवरे गात ॥ बात कहत भरि लेत नैन जल सुगति करत अकुलात । जो घटघट हरि रहत निरंतर तौ कत मधुपुरी जात ॥ सगुण प्रीति ऐसी प्रति पालत दुखित होत तनुगात । तुम निर्गुणसों प्रीति करनको सूर समुझि पछितात ॥ ९६ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो जनि मधुवन तन देखो । कछुक दिवस औरौ ब्रज वसिकै जन्म सफल करि लेखो ॥ कहा जाइ लेइहौ ह्वाँ जामें राजकाजकी बात । बाल किशोर कुमार निरखि मुख घरपर माखन खात ॥ तुम निर्गुण नित कहत निरंतर निगम नेति यह नीति । प्रगट रूप मदमत्त नयन क्यों छांडे दरशन प्रीति ॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि मन सन्तत जाको धावत । सूरदास प्रभु गोप सुनत सँग गोधन बृंद चरावत ॥ ९७ ॥

राग मलार ॥ ऊधो जीवन धन हम पैए । सोइ होइ जो रचो विधाता औरन दोष लगैए ॥ कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए । मोहनसो वर कुबिजा पायो हमको योग बतैए ॥ आज्ञा होइ सोइ पै कीजै विनती इहै सुनैए । सूरदास प्रभु तृषा बढी अति दरशन सुधा पियैए ॥ ९८ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो खरी जरी हरिके शूलनकी । कुंज किलोल किये बनही बन सुधि बिसरी उन बोलनकी ॥ अरु यह प्रीति कहांलौं बरणौं या यमुनाजल कूलनकी ॥ वह

छबि छाके ऊति हैं दोऊ लोचन बहि गहि झूलनकी । सूरदास प्रभु दरशन दीजै अरु लीजै अनुकूलनकी ॥ ९९ ॥

राग सारंग ॥ हरिबिनु यहि विधि हैं ब्रज रहियत । पर परिहि तुम जातन ऊधो ताते तुमसों कहियत ॥ चंदन चंद किरनि पावक सम मिलिमिलि है तन दहियत । जागत याम जात युगयामिनि जतन नहीं निरवहियत ॥ वासरहू या विरह सिंधुको कैसेहु पार न लहियत । फिरि फिरि वहै अवधि अवलंबन बूडत ज्यों तृण गहियत ॥ एक जु हरिदरश-नकी आशा तालगि यहु दुख सहियत । मन क्रम वचन शपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत ॥ ३३०० ॥

हरिबिनु यहि विधि हैं ब्रज जीजतु । पंकज वरषिवरषि उर ऊपर साँरगरिपु जल भीजतु ॥ वायस अजा शब्दकी मिलवनि याही दुखतनु छीजतु । चन्द्र न चौथि जात गोपिनको मधुप परखि यश लीजतु ॥ तारापति अरिके शिर ठाढी निमिष चैन नहिं कीजतु । सूरदास प्रभु वेगि कृपा करि प्रगट दरश मोहि दीजतु ॥ १ ॥

हमारे धन जीवन कृष्ण मुकुन्द । परम उदार कृपानिधि कोमल पूरण परमानंद ॥ निठुर वचन सुनि फटतु हियो यों रहु रे अलि मतिमंद । ब्रजयुवतिनको सुगम जनावत योग युक्ति सुखद्वंद ॥ यहुतौ जाइ उनै उपदेशो सनकादिक स्वच्छंद । बारक हमैं दरश देखरावो सूर श्याम नँदनंद ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ वै बातैं यमुनातीरकी । कबहुँक सुरति करत हैं मधुकर हरन हमारे चीरकी ॥ लीने वसन देखि ऊँचे द्रुम रवँकि चढनि बलबीरकी । हम ठाढी जलमाहिं गुसांई खरी जुडाई नीरकी ॥ दोऊ हाथ जोरिकै माँगौं दोहाई नंद अहीरकी । सूरदास प्रभु सब सुखदाता जानतहैं परपीरकी ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ॥ अब हरि क्यों बसैं गोकुल गवईं । बसत नगर नागर लोगनमें नई पहँचानि भई ॥ इक हरि चतुर हुते पहिलेही अब बहुतै उन गुरु सिखई । हम सब गवं-गँवारि जानि जड अधपर छाँडि दई ॥ ऊधो मुख जोवत कुबिजाको ब्रजवनिता सब बिसरि गई । याहीते चतुर सुजान सूर प्रभु औ ए ग्वाली सँग न लई ॥ ४ ॥

राग गौरी ॥ प्रेम न रुकत हमारे बूते । किहि गयंद बाँध्यो सुन मधुकर पद्मनालके काचे सूते ॥ सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सँदेश श्यामके दूते । विरहसमुद्र सुखाइ कवन विधि किरचक योग अग्निके लूते । सुफलकसुत अरु तुम दोऊ मिलि लैजैये मुक्ति हमारेहूते । चाहति मिलन सूरके प्रभुको क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूते ॥ ५ ॥

राग मलार ॥ वै गोपाल गोकुलके वासी । ऐसी बातैं बहुतै सुनिसुनि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथिमथि सिंधु सुधा सुर पोषे शंभु भए विष आसी । इमि हति कंस राज औरहि दै आपु चहे हैं दासी ॥ बिसरचो हमहिं विरह दुख अपनो सुनत चाल ए रासी । जैसे ठग अवलोकि गुप्त निधि प्रगट न परखै फांसी ॥ आरजपंथ छुडाइ गोपिका कुलमर्यादा नासी । आप करत सुख राज सूर प्रभु हमैं देत दुख गासी ॥ ६ ॥

राग धनाश्री ॥ इक कछु नाहिंन नेह नयो । अहो मधुप माधवसों इह ब्रज विधिते पहिल भयो ॥ बीज मन माली मदन चुर आलबाल वयो । प्रेमपय सींचो पहिलही सुभग

जिवरी दयो ॥ इते श्रम तन श्यामसुंदर बिरव विमल बढ्यो। मुरली मुख छवि पत्र शाखा दग दुरेफ चढ्यो ॥ कमल तेजि तनु रचत नाहीं आकको आमोद। सूर जो गुण वचन परसत विनु गोपाल विनोद ॥ ७ ॥

राग मलार ॥ ऊधो अब यह समुझि भई। नँदनंदनके अंग अंग प्रति उपमा न्याइ दई ॥ कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर मालति भुरै लई। तजत न गहरु कियो तन कपटी जानि निराश गई ॥ आननइंदु बरन संपुट तजि करखेते न नई। निर्मोही नवनेह कुमुदिनी अंतहु हेममई ॥ तन धन सजल सेइ निशिबासर रटि रसना छिजई। सूर विवेकहीन चातकमुख बूँदौ तौ न स्रई ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ ऐसो माई एक कोदको हेतु। जैसे बसन कुसुमरँग मिलिकै नेक चटक पुनि श्वेत ॥ जैसे करनि किसान बापुरो नौनौ बाहै देत। एतेहूपर नीर निठुर भयो उमँगि आपुही लेत ॥ सब गोपी पूछहिं ऊधोको सुनियो बात सुचेत। सूरदास प्रभु जनते बिछुरे ज्यों कृत राईरेत ॥ ९ ॥

राग सारंग ॥ मुख देखेकी कौन मिताई। जैसे कृपणहि दीन माँगनो लालच लीने करत बडाई ॥ प्रीतम सो जो रहै एकरस निशिबासर बढि प्रेम सवाई। चितमाहिं और कपट अन्तर्गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई ॥ तब वह करी नंदनंदन अलि वनबेली रसरास खिलाई। अब यह कितनी दूरि मधुपुरी ज्यों उडि भँवर बेलि तजि जाई ॥ योग सिखाए क्यों मन मानै क्यों व ओसकण प्यास बुझाई। सूरदास उदास भई हम पाखण्ड प्रीति उघरि निज आई ॥ १० ॥

राग मलार ॥ मधुकर मन सुनि योग डरै। तुमहूँ चतुर कहावत अतिही इतनी न समुझि परै ॥ और सुमन जो अनेक सुगंधिक शीतल रुचि जो करै। क्यों तुमको कहि बनै सरै ज्यों और सबै अनरै ॥ दिनकर महाप्रताप पुंज वर सबको तेज हरै। क्यों न चकोर छाँडि मृगअंकहि वाको ध्यान धरै ॥ उलटोइ ज्ञान सकल उपदेशत सुनिसुनि हृदय जरै। जंबू वृक्ष कहो क्यों लंपट फलवर अंब फरै ॥ मुक्ता अवधि मराल प्राणमै अबलगि ताहि चरै। निघटत निपट सूर ज्यों जल बिनु व्याकुल मीन मरै ॥ ११ ॥

राग आसावरी ॥ ऊधो योगयोग हम नाहीं। अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं ॥ ते ये मूँदन नैन कहत हैं हरिमूरति जामाहीं। ऐसी कथा कपटकी मधुकर हमते सुनी न जाहीं ॥ श्रवण चीर अरु जटा बँधावहु ए दुख कौन समाहीं ॥ चंदन तजि अंग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं। योगी भरमत जेहि लगि भूले सो तो है अपुमाहीं। सूर श्यामते न्यारे न पल छिन ज्यों घटते परछाहीं ॥ १२ ॥

राग मलार ॥ ऊधो कहिए बात जो हुती। जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमेंको हुती॥ अन्तहु सिखवन सुनहु हमारी कहियत बात बिचारी। फुरत न वचन कछू कहिबेको रहेबैन सो हारी ॥ देखियत है करुणाकी मूरति सुनियत है परपीरक। सोइ करौ जो मिटै हृदयको दाहु परै उर सीरक ॥ राजपन्थते टारि बतावत उज्ज्वल कुचल कुपेंडो। सूरदास सो समाइ कहांलौं अजावदनमें कुम्हडो ॥ १३ ॥

राग सारंग ॥ हमतो नन्दघोषके वासी । नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी ॥ गिरिवरधारी गोधन चारी वृन्दावन अभिलाषी । राजा नन्द यशोदा रानी जलहि नदी यमुनासी ॥ मीत हमारे परम मनोहर कमलनयन सुखरासी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अठसिधि नवनिधि दासी ॥ १४ ॥

राग सारंग ॥ गोकुल सब गोपाल उपासी । जे गाहक साधनके ऊधो ते सब बसत ईशपुर कासी ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि तऊ रहति चरणन रसरासी । अपनी शीतलता नहिं तजई यद्यपि विधु भयो राहुगरासी ॥ किहि अपराध योग लिखि पठवत प्रेमभकिते करत उदासी । सूरदास सो कौन विरहिनि मांगि मुक्तिछांडै गुणरासी ॥१५॥

राग मलार ॥ ब्रजजन सकल श्यामव्रतधारी ॥ बिना गोपाल और जेहि भावत ते कहि हैं व्यभिचारी ॥ योगमोट शिर बोझ आनि तुम कतधौं घोष उतारी । इतनिक दूरि जाहु चलि काशी जहां बिकत है प्यारी ॥ यह संदेश सुनै को मधुकर अति मंडली अनन्य हमारी । जो रसरीति कही हरि हमसों सो क्यों जाति बिसारी ॥ महामुक्ति कोऊ नाहिं बांछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहन मूरतिकी बलिहारी ॥ १६ ॥

राग धनाश्री ॥ कहां लौं कीजै बहुत बडाई । अति अगाध मन अगम अगोचर मनसो तहां न जाई ॥ जाके रूप न रेख बरन वपु नाहिंन संगति सखा सहाई । ता निर्गुणसों नेह निरंतर क्यों निबहै री माई ॥ जलबिन तरंग भीतिबिन लेखन बिन चेतहि चतुराई । या ब्रजमें कछु नहीं चाह है ऊधो आनि सुनाई ॥ मन चुभि रही माधुरी मूरति अंगअंग उरझाई । सुन्दर श्याम कमलदल लोचन सूरदास सुखदाई ॥१७॥

राग नट ॥ ऊधो कछुक समुझि परी । तुमजु हमको योग ल्याए भली करनि करी ॥ इक बिरह जरिरही हरिके सुनत अतिही जरी । जाहु जिनि अब लोन लावहु देखि तुमहिं डरी ॥ योगपाती दई तुमकर बडे चतुर हरी । सूरदास स्वामीके रंग रचि कहँ धरैं गठरी ॥ १८ ॥

राग कान्हरो ॥ कहत अलि तेरे मुख बातौ । कमलनयनकी कपटकहानी सुनि न भयो तातो ॥ कत ब्रजराज काज गोकुलको सबै किए गहिनातौ । तब नहिं निमिष वियोग सहति उर करत काम नहिं हातौ । मधुवन जाइ कान्ह कुबिजा संग मति भूलहु सुधि सातौ ॥ ज्यों गजयूथ नेक नहिं बिछुरत शरद मदन मदमातौ । सूर श्याम बिन हम सब अबला यातन कहां समातौ ॥ १९ ॥

राग धनाश्री ॥ तुम अलि कमलनयनके साथी । देखत भले काजको जैसे होत धूमके हाथी ॥ सुन्दर श्याम गंड मद लंकृत सम श्रम जलकन छाजै । योग ज्ञान दोउ दशन भोग रद करनी कुंभ विराजै ॥ जब शिशु हुते कुमार असुर हति याते प्रीतम जाने । अब भए जाइ विवश दासीके ब्रजते प्रगट पराने ॥ करिकै कपट तुच्छ विद्यावश भगन करत अँग भट ज्यों । सूर अवधि पढि मंत्र सजीवन मरि जीवत है नटज्यों ॥ २० ॥

राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत द्वै वैशाख । जानत हौं जीवन काहेको जतन करौ जो लाख ॥ मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा केसरि मलया खाख । जरति अग्निमें ज्यों घृत नायो तनु जरि ह्वै है राख ॥ ता ऊपर लिखि योग पठावत खाहु नींब तजि दाख । सूरदास ऊधोकी बतियां उडि उडि बैठीं ताख ॥ २१ ॥

राग नट ॥ जानी ऊधोकी चतुराई । बारबार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बडाई ॥ जो तुम कहत अगाध अगोचर हरिरस तजो न जाई । कौतुक कहत उक्रुति अपनीतें को तुम कहत कहाई ॥ बाहर भीतर ध्यान सगुण बिनु सुनियत दूरि भलाई । सूरदास प्रभुविरह जरि हैं बिनु पावक दौ लाई ॥ २२ ॥

राग सारंग ॥ जानी अलि ऊधो चतुराई । ब्रजमंडलकी दशा देखिकै कथा सबै बिसराई ॥ परमप्रिया पथ देखन पठए कहि गति योग बनाई । इनको आन भाव बिछुरनको लै बाजनि हम लाई ॥ कहा कह्यो हरि कहा सुन्यो इनि कहि लीला मुख गाई । यद्यपि बिबुध बडे यदुकुलके नेक न बढ़ी बडाई ॥ गुणमहि मंत्र सदा श्रीपतिके मुक्तिपुरी अब गाई । नहिं देखी ब्रज बनकी लीला सूर श्याम लरिकाई ॥ २३ ॥

राग मलार ॥ इहि बिधि पावस सदा हमारे । पूरब पवन श्वास उर ऊरध आनि जुरे एकठारे ॥ बादर श्याम श्वेत नयननमें बरषि आँसुजल ढारे । अरुन प्रकाश पलक दुति दामिनि गर्जन नाम पियारे ॥ चातक दादुर मोर प्रगट ब्रज बसत निरंतर धारे । ऊधो ए तबते अटके जब श्याम रहे हिततारे ॥ कहिए काहि सुनै कत कोऊ या ब्रजके व्यवहारे । तुमहींसों कहिकै पछितानी सूर विरहके धारे ॥ २४ ॥

राग केदारो ॥ जोपै कोऊ मधुवनहूं लौं जाइ । पतियां लिखौं श्यामसुंदरको कंकन दैहौं ताहि ॥ नयननीर सारंगरिपु भीजत युगसम रैनि बिहाइ । अब यह भवन भयो पावकसम हरि बिन मोहिं न सुहाइ ॥ पछिली प्रीति कहा भई ऊधो मिलते वेणु बजाइ । सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किन पुनि कहा करोगे आइ ॥ २५ ॥

राग बिलावल ॥ ऊधो कोकिल कूजत कानन । तुम हमको उपदेश करतहो भस्म लगावन आनन ॥ औरौ सींगी सखी संगलै टेरत चढे पषानन । बहुरो आइ पपीहाके मिस मदन दहत निज बानन ॥ हमतौ निपट अहीरि बावरी योग दीजिए जानन । कहा कथन मौसीके आगे जानत नानी नानन ॥ तुमतौ हमहिं सिखावन आए मुक्ति होइ निर्वानन । सूर मुक्ति कैसे पूजति है वा मुरलीके तानन ॥ २६ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो हरिके अवरै ढंग । जहां न अनंग रस रूप नेहकौ तहां दई गति जो अनंग ॥ आपु विषमता तजि दोउ सम भै बानक ललित त्रिभंग । मानो मरिचि देखि तनु भूली भूपथ सुरभि सुरंग ॥ तजे कुसुम कर कंटक वन भ्रमि नहिं कामो भ्रूभंग । कनकबेलि शतदल सर मंडित दृढतर लता लवंग ॥ श्यामा सदन बिसारि भजे पुर चंचल नारि पलंग ॥ ते सुख बहुत बहुत पावहिंगे जै करि हैं अंगसंग । काके होहिं जो नाहिं गोकुलके सूरज प्रभु श्रीरंग ॥ २७ ॥

राग आसावरी ॥ ऊधो हम दोउ कठिन परी । जो जीवैं तो मुनि जड ज्ञानी तनु तजि रूप हरी ॥ गुण गावैं तौ शुक सनकादिक धाय लीला फरी । आशा अवधि बिचारी रहैं तौ धर्म न ब्रजसुंदरी ॥ सखी मंडली सब जो सयानी विरहा प्रेम भरी । शोक समुद तरिबेको नौका जे मुख मुरली धरी ॥ निशिवासर निरअंकुश अति बड़ मातो मदन करी । ढाहत धाम सूर प्रभु चितवत गमन करै केसरी ॥ २८ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो सुनिहौ बात नईसी । प्रेमबानिकी चोट कठिन है लागी होइ कहो कत ऐसी ॥ तुमहि बिचारि कहा कहि दीजे आनि कहतरे जैसी । जानै कहा बांझ ब्यावर दुख जातक जनहिं पीर है कैसी ॥ हम बावरिन आनि बौरावत कहत न तुम्हैं बूझिए ऐसी । सूरदास न्याइ कुबिजाको सरवसु लेइ हमारो वैसी ॥ २९ ॥

यशोमति वचन ॥ राग केदारो ॥ ऊधो उदित भई सब दुखकी करनी । ब्रजबेली सब सूखन लागीं बात कही नँदघरनी ॥ कमलबदन कुँभिलात सबनके गौवन छाँडी तृणकै चरनी । सुख संपति बिति गयो सबनकी लागी अलि अनजलकी झरनी । देखौ चारु चन्द्रमुख शीतल बिन दरशन क्यों मिटती जरनी । सुतसनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरि फिरि यशुमति परती धरनी ॥ ३० ॥

राग सारंग ॥ ऊधो पूंछति ते बावरी । गोकुल तजो कूबरी कारण नेह न होति जोरावरी ॥ जैसो बीज बोइए तैसो लुनिए लोग कहत सब बावरी । सूरदास प्रभु पारस परसे लोहो कनक बराबरी ॥ ३१ ॥

राग गौरी ॥ मधुकर देखो दीनदशा । इतनी बातैं तुमसों कहति हैं जो तुम श्याम सखा ॥ जे कारे ते सबै कुटिल हैं मृतकनके जे हता । तुम विरहिनी विरहदुख जानत कही यह गूढ कथा ॥ मन वश भयो श्रवण सुनि मुरली कुंजनि कुंज बसी । अबतौ एक न भए सूर प्रभु घर बन लोग हँसी ॥ ३२ ॥

राग सारंग ॥ जैसे कियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल । ग्रंथित सूत धरत तेहिं ग्रीवा जहां धरते बनमाल ॥ टेरि देत श्रीदामा द्रुम चढि सरस वचन गोपाल । ते अब श्रवण अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कुशलात ॥ कोमल नील कुटिल अलकावलि रेखी राजत भाल । ऐसे शर त्यागे सुन सूरज फंदा न्याइ मराल ॥ ३३ ॥

राग मलार ॥ विरंचि मन बहुरि राचो आइ । टूटी जुरै बहुत जतननि करितऊ दोष नहिं जाइ ॥ कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोथि चोखाई गाइ । दूध फाटि जैसे भइ कांजी कौन स्वाद करि खाइ ॥ केरा पासि ज्यों बेरि निरंतर हालत दुख देजाइ । स्वाति बूँद जैसे परै फनिकमुख परत विषै ह्वै जाइ ॥ एती केती तुमरी उनकी कहत बनाइ बनाइ । सूरजदास दिगंबर पुरते रजक कहा ब्योसाइ ॥ ३४ ॥

ऊधो तुम हौ अति बड़भागी । अपरस रहत सनेह तगाते नाहिंन मन अनुरागी ॥ पुरइनि पात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी । ज्यों जलमांह तेलकी गागरि बूँदन ताको लागी ॥ प्रीतिनदीमहँ पाँव न बोरचो दृष्टि न रूप परागी । सूरदास अबला हम भोरी गुरचैंटी ज्यों पागी ॥ ३५ ॥

राग धनाश्री ॥ हमते हरि कब हीन उदास । रास खिलाइ पिआइ अधररस क्यों बिसरत ब्रजबास ॥ तुमसों प्रेमकथाको कहिबो मनहु काटिबो घास । बहिरो तान स्वाद कहा जानै गूगो खात मिठास ॥ सुन री सखी बहुरि हरि ऐहैं वह सुख बढ़ै विलास । सूरदास ऊधो हमको अब भए तेरहौं मास ॥ ३६ ॥

तेरो बुरो न कोई मानै । रसकी बात मधुप नीरस सुनि रसिक होइ सो जानै ॥ दादुर बसै निकट कमलनके जन्मनरस पहिचानै । अलि अनुराग उडत मन बाँध्यो कही सुनत नहिं कानै ॥ सरिता चली मिलन सागरको कूल सबै द्रुम भानै । कायर बकै लोभते भागै लरै सो सूर बखानै ॥ ३७ ॥

हम सब जानत हरिकी घातैं । तुम जो कहत वो राज्य करत नाहिं जानत हौ कछु कातैं ॥ मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पातैं । उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुलनातैं ॥ तपते राज राजते आगे तुम सब समुझत बातैं । सूर श्याम यहि भाँति सयाने हमहींको वदु सातैं ॥ ३८ ॥

राग नट ॥ ऊधो है तू हरिके हितको । हम निर्गुण तबहींते जान्यो गुण मेल्यो जब पितुको ॥ समुझहु नेक श्रवण दै सुनिए प्रगट बखानौं नितको । कूपरत्न घट कहु क्यों निकसै बिनुगुन बहुतै वितको ॥ पूरणता तो तबहीं बूडी संग गए लै चितको । हमतौ खगहि सूर सुनि षटपद लोक बटाऊ हितको ॥ ३९ ॥

राग काफी ॥ आयो घोष बड़ो व्यापारी । लादि पोषि गुणज्ञान योगकी ब्रजमें आनि उतारी ॥ फाटक दैहै हाटक भागत भोरो निपट सुधारी । धुरहीते खोटो खायो है लिये फिरत शिर भारी ॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी । अपनो दूध छाँडिको पीवै खारे कूपको वारी ॥ ऊधो जाहु सबेरे ह्यांते बेगि गहर जनि लावहु । मुखभाँगो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावहु ॥ ४० ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो योग कहा है कीजतु । ओढिअत है की डसिअत है किधौं कहियत किधौं पतीजतु ॥ की कछु भलो खेल बनी सुंदरि कीकछु भूषण नीको । हमरे नँदनंदन जो कहियत जीवनजीवन जीको । तुम जो कहत हरि निगम निरंतर निगम नेति है रीति । प्रगट रूपकी राशि मनोहर क्यों छाँडै परतीति ॥ गाइ चरावन गए घोषते अबहीं हैं फिरि आवत । सोई सूर सहाय हमारे वेणु रसाल बजावत ॥ ४१ ॥

राग मलार ॥ मधुकर जानो ज्ञान तिहारो । जानै कहा राजलीलाको अंत अहीर विचारो ॥ एक भली हम सबै सयानी एक सयानीसों मनमानो । लाज लए प्रभु आवत नाहीं है जो रहे खिसिआनो ॥ लै आवौ हम कछू न कैहैं मिलि हैं प्राण पियारे । ब्याहो बीस धरो दश कुबिजा अंतहु श्याम हमारे ॥ सुन री सखी कहूँ नहिं कहिए माधो आवनदीजै । सूरदास प्रभु आनि मिलैं जो हाँसी करिकरि लीजै ॥ ४२ ॥

मधुकर तुमहीं श्याम सखाई । पालागौं यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई ॥ कौनै रंक संपदा बिलसी सोवत सपने पाई । धाम धुआँको कहो कवनकै कवनै धाम उठाई ॥ अरु कनकी माला कर अपने कौने गूँथि बनाई । कहि कागजकी तरनी कीन्हे कौन

तरचो सर जाई ॥ किन अकाशते तोरि तरैआ आनि धरी घरमाई और कौन अबलन व्रत धारचो योग समाधि लगाई ॥ इहि उर आनि रूपदेखेकी आगि उठै अगिआई । सुन ऊधो तुम फिरि फिरि आवत यामें कौन बडाई ॥ सूरदास प्रभु ब्रज युवतिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥ ४३ ॥

राग गौरी ॥ मनकी मनहीं मांझ रही । कहिए जाइ कौनपै ऊधो नाहिंन परत कही ॥ अवधि अधार आश आवनकी तन मन व्यथा सही । चाहति हुती गोहारि जितहिते तितहिते धार बही ॥ अब इन योग सँदेशन सुनिसुनि बिरहिनि बिरहदही । सूरदास अब धीर धरहिं क्यों मर्यादा न लही ॥ ४४ ॥

राग गौरी ॥ तुमहिं दोष नहिं हम अति बौरी । रूप निरखि दृग लागेहैं ढौरी ॥ चित चोराइ लियो मूरति सौंरी । सुभग कलेवर कुमकुम खौरी ॥ गुंज माल उर पीत पिछौरी । यहिते जो नेकुलुबुधियौरी ॥ गहत सोइ जो समात अँकौरी । सूरश्यामसों कहियो एक ठौरी ॥ यह उपदेश सुनहिं ते औरी ॥ ४५ ॥

राग नट ॥ श्याम तुम ठगसों प्रीति करी । काटेनाक पछोरे पूँछत ताते सब सुधरी ॥ ह्यां ऊधो काहेको आए कौनसी अटक परी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पाती उघरी ॥ ४६ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो नवतन राज भयो । नए गोपाल नई कुबिजा बनी नौतन नेह ठयो ॥ नए सखा जोरे यादवकुल अरु नृप कंस हयो । नवतननारि नए पुर कीन्हों तिन अपनाइ लयो ॥ बिसरे रासविलास कुंज सब अपनी जाति गयो । सूरदास प्रभु बहुत बटोरी दिनदिन होत नयो ॥ ४७ ॥

अब तुम कापर कपट बनावत । नाहिं न कंस कान्ह नहिं गोकुलको पठवत कहां आवत॥ जिन मोहन बंसी बारिज करि सुख तन सींचि बढायो । सो पुनि ऊधोकर कारनको योग कुठार पठायो ॥ इतनो तौ मानुषही जानैं जिनकैहैं मतिथोरी । धोखेहू बिरवा लगाइकै काटत नाहिं बहोरी ॥ वै प्रवीन ऊधो अति नागर जानि परस्पर प्रेम । कैसेकै पठवत वै आवत टारनको हित नेम ॥ स्वर्गहु गए कंस अपराधी परचो हमारे खोज । दृष्टिते टारि ध्यानहुते टारत वाऊ सबको चोज ॥ विद्यमान आए जे छल करि तिन अपनो फल पायो । ह्यां है हिरदय सूर श्याम प्रभु बनत न स्वांग बनायो ॥ ४८ ॥

अपने स्वारथके सबकोऊ । चुप करि रहो मधुप सुन लपट तुम देखे अरु ओऊ ॥ जो कछु कहो कह्यो चाहतहौ करि निरवारो सोऊ । अब मेरे मन ऐसी षटपद होवे होउ सु होऊ ॥ तब कत रास रच्यो वृंदावन ज्यों ज्ञानीहू तोऊ । लीने योग फिरत युवतिनमें बडे सुपथ तुम दोऊ ॥ छुटिगयो मान परेखो रे अलि हृदय हतो बहु जोऊ । सूरदास प्रभु गोकुल बिसरो चित चिंतामणि खोऊ ॥ ४९ ॥

राग नट ॥ कहत कत परदेशीकी बात ॥ मंदिर अरध अवधि बदी हमसों हरिअहार चलिजात ॥ शशिरिपु वरष सूररिपु युगवर हररिपु किए फिरै घात । मघ पंचम लैगए श्यामघन ताते जिय अकुलात ॥ नखत वेद ग्रह जोरि अर्ध करि बनि आवै सोइ खात । सूरदास प्रभु तुमहिं मिलनको कर मींडत पछितात ॥ ५० ॥

राग मलार ॥ ऊधो जानी न हरि यह बात। बैठे रथपर चढे भोरही हँसत मधुपुरी जात ॥ सुफलकसुत मिलि ढँग ठान्यो है साधे विषमन घात। जेतक बडे धर्मध्वज नामी संग प्रेम पथ पात ॥ यदुकुलमें दोउ संग सबै कहैं तिनके ए उतपात। एकन हरे प्राण गोकुलके यापर योग कुशलात ॥ यद्यपि सूर प्रताप श्यामको दानव दूरि दुरात। तद्यपि भवन भाव नहिं ब्रज विनु खोजो दीपै सात ॥ ५१ ॥

हम अलि कैसेके पति आहिं वचन तुम्हारे हृदय न आवत क्योंकरि धीर धराहिं ॥ वपु आकार भेष नहिं जाको कौन ठौर मन लागै। हौं करिरही कण्ठमे मनिआं निर्गुण कहा रसहिते काज। सूरदास सर्गुण मिलि मोहन रोमरोम सुखराज ॥ ५२ ॥

राग मलार ॥ मधुकर जानतहैं सब कोऊ। अैसे तुम अरु सखा तिहारे गुणन आगरे दोऊ ॥ सुफलकसुत कारे नखशिखते कारे तुम अरु वोऊ। सरवस हरन करत अपने सुख कोउ कितो गुण होऊ ॥ प्रेम कृपण थोरे वित वपुरी उवरत नाहिंन सोऊ। सूर सनेह करै जो तुमसों सो पुनि आपु बिगोऊ ॥ ५३ ॥

मधुकर तुम रसलंपट लोग। कमलकोश नित रहत निरन्तर हमहिं सिखावत योग ॥ अपने काज फिरत बन अन्तर निमिष नहीं अकुलात। पुहुप गए बहुरौ बल्लिनके नेक निकट नाहिं जात ॥ तुम चञ्चल अरु चोर सकल अँग बातनको पतिआत। सूर विधाता धन्यरचे एइ मधुप साँवरे गात ॥ ५४ ॥

राग सारंग ॥ मधुप रावरी ये पहिंचानि। बासर समय अनत उठि बैठत पुहुपनकी तजि कानि ॥ बाटिका बहु विपिन जिनके एक वै कुम्हिलानि। तहां अगणित फूल फूले कौन ताके हानि ॥ काम पावक जरत छाती लोन लायो आनि। योगपाती हाथ दीनी विष लगायो सानि ॥ शीशकी मणि हरी जाकी कौन जामें बानि। निठुर हौ तुम सूरके प्रभु ब्रज तज्यो यह जानि ॥ ५५ ॥

को कहिहै हरिसों बात हमारी। यह तौ हम तब ते जियजानी जबते भए मधुप अधिकारी ॥ एकै प्रकृति एकई तवगति जे मनसिज असितहि क्यों भावै। प्रगटे नित नव कञ्जमनोहर ब्रजकी सरक करन कत आवै ॥ कुटिल खान चंपक चंचल मति सबहीते जु निनारी। ता अलिकी संगति बसि मधुपुरी सूरदास प्रभु सुरति बिसारी ॥५६॥

मधुकर तुम अति चतुर सुजान। जे पहिले मनरँगे श्यामरँग अब न चढै रँग आन ॥ ए दोउ लोचन विराटके विधि किये एक समान। भेद चकोर कियो ताहूमें विधु प्रीतम रिपुभान ॥ बिरहा भेद भयो पालागौं तुम हौ पूरणज्ञान। दादुर जलबिन जिवै पवन भख मीन तजै हठिप्रान ॥ वाजिवदन नैन मेरे षटपद कब करिहैं मधुपान। सूरदास गोपिन परतिज्ञा छुवहिं न योगबिरान ॥ ५७ ॥

ऊधो बिरही प्रेम करै। ज्यों बिन पुट पट गहत न रँगको रंगनरसै परै ॥ ज्यों धर देह बीज अंकुर गिरि तौ सतफरनि फरै। ज्यों घट अनल दहत तन अपनो पुनि पय भरै ॥ ज्यों रण शूर सहत शर सन्मुख तौ रविरथहि ररै। सूर गोपाल प्रेमपथ चलिकरि क्यों दुख सुखन डरै ॥ ५८ ॥

राग मलार ॥ मधुकर प्रीति किए पछितानी । हम जानी ऐसेहि निबहैगी उन कछु औरै ठानी ॥ वा मोहनको कौन पतीजै बोलत मधुरी बानी । हमको लिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी ॥ अब तो सेज सुहाइ न हरिबिन चितवत रैनि बिहानी । जबते गमन कियो मधुवनको नैनन बरषत पानी ॥ कहियो जाइ श्याम सुन्दरको अंतरगतिकी जानी । सूरदास प्रभु मिलिकै बिछुरे तातें भई दिवानी ॥ ५९ ॥

हमरे हरि हारिलकी लकरी । मन क्रम वचन नन्दनन्दन उर यह दृढ करि पकरी ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि कान्ह कान्ह जकरी । सुनत योग लागत हमैं ऐसो ज्यों करुई कँकरी ॥ सुतौ व्याधि हमको लै आए देखी सुनी न करी । यह तौ सूर ताहि लै सौंपौ जिनके मन चकरी ॥ ६० ॥

राग सारंग ॥ बात हमारी मानौ जौतौ । आवन कह्यो हुतो हम जीवति ताते उनही कौतौ ॥ एक बोलकै लीन्हें सोई अपनी खोई देवति । ताते खरी मरत इहि ठाहर वाही वचनहि सेवति ॥ इतनो कह्यो करौ धरि राखौ योग आपने घरको । पैज खैंचि मेटन आए हौ तनक उजारो खरको ॥ नंदनँदन लै गए हमारी सब ब्रजकुलकी ऊब । सूर श्याम तजि औरै सूझै ज्यों खेरेकी दूब ॥ ६१ ॥

राग मलार ॥ श्याममुख देखेही परतीति । जो तुम कोटि जतन करि सिखवहु योग ध्यानकी रीति ॥ नाहिं न कछू सयान ज्ञान महिं यह हम कैसे मानैं । कहो कहा गहिए अनुभवको कैसे उरमें आनैं ॥ एही मन इक इक वह मूरति भृंगी कीट समानैं । सूर शपथ दै पूँछौ ऊधो यह ब्रज लोग सयानैं ॥ ६२ ॥

राग सारंग ॥ हरि हैं राजनीति पढि आए । समुझी बात कहत मधुकरसे समाचार सब पाए ॥ पहिलेही अति चतुर हुते अरु गुरु सब ग्रन्थ दिखाए । बाढी बुद्धि कहत युवतिनको योग सँदेश पठाए ॥ आगेहूके लोग भलेहो परहित डोलत धाए । अब अपने मन फेरि पाइहैं चलत जो होहिं पराए ॥ ते क्यों नीति करैं आपुन जिन औरन अपथ छडाए । राजधर्म सुनि इहै सूर जिहि प्रजा न जाहिं सताए ॥ ६३ ॥

बारक मिलत कहा है होत । इतनेहुँ मान कहा उहि कुबिजा पाए हैं परिपोत । इतनिक दूरि भए कछु औरै बिसर्‍यो गोकुल गोत । कैसे जियहिं बदन बिनु देखे बिरहिनि बिरहिनि सोत ॥ आए योग देन अबलनिको सुरभिकंठ वृष जोत । सूरदास प्रभु तौ पै जीवहिं देखहिं रविहि उद्योत ॥ ६४ ॥

राग मलार ॥ मधुकर नाहिंन काज सँदेशो । इहि ब्रज कौने योग लिख्यो है कोटि जतन उपदेशो ॥ रविके उदय मिलन चक्रईको शशिके समय अँदेशो । चातक क्यों बन बसत बापुरो बधिकहि काज बधेसों ॥ नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिबेसों । सूर स्वभाव मिटै क्यों कारे फनिकहि काज डसेसों ॥ ६५ ॥

ऊधो हम वह कैसे मानैं । धूत धौल लम्पट जैसे हरि तैसे और न जानैं ॥ सुनत सँदेश अधिक तनु कम्पत जनि कोउ डर तहां आनै । जैसे वधिक गँवहिंते खेलत अन्त

धनुहियां तानैं ॥ निर्गुण वचन कहहु जनि हमसों ऐसी करटि न कानैं ॥ सूरदास प्रभुकी हौं जानौं और कहैं औरै कछु ठानैं ॥ ६६ ॥

राग मलार ॥ ऊधो अब कछु कही न जाइ । गनी भई कूबरी दासी कापै वरणी जाइ ॥ जोइ जोइ मन्त्र कहत कुबिजा है सोइ सोइ लिखत बनाइ । अन्त अहीर प्रीति दासीसों मिटत न सहज सुभाइ ॥ छुटत नहीं गुण अवगुण जाको कीजै कोटि उपाइ । सूर सुभाइ तजै नहिं कारो कीजै कोटि उपाइ ॥ ६७ ॥

राग मलार ॥ बदलेको बदलो लै जाहु । उनकी एक हमारी दोइ तुम बडे जनैऔ आहु ॥ तुम अलि जानि अतिहि भोरे संसारो चाहत दाव । अपनी बेर मुकरिकै भागत हिए चौगुने चाव ॥ अब तुम साखि बँधो तहां जाई काहेको पछिताहु । सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु ॥ ६८ ॥

राग मलार ॥ ऊधोजी यहि ब्रज बिरह बढे । घर बाहर सरिता सर वन उपवन देखहु द्रुमन चढे ॥ दिन अरु रैनि सधूम भवनकै दिशिदिशि तिमिर मढे । द्वन्द्व करत अति प्रबल बलीबल जीवन अनल उढे ॥ जरि नहिं भई भसम तेही छिन जब हरि वचन रढे । सूरदास विपरीति विधातै यहि तनु फेरि ठढे ॥ ६९ ॥

ऊधो जो तुम बात कही । ताको अछुअ न उत्तर आवै समुझि बिचारि रही ॥ पालागौं तुमही बूझतहौं तुम पर बुधि उमही । कैसे शीतल होइ पवन जल पिए वियोग दही ॥ कुबिजासों पढि तुमहिं पठाए नागर नवल लही । अब जोई पद देहिं कृपा करि सोइ हम करैं सही॥बिछुरत बिरह अग्नि नाहीं जरी नैनन जल न बही । अब सुनि शूल सहति सब सूरज कुलमर्याद ढही ॥ ७० ॥

योग मिटि पतिआहू ब्योहारु ॥ मधुवन बसि मधुरिपु सुनु मधुकर छांडे ब्रज आभारु ॥ धरणीधर कर गिरिधर कर धरिकै मुरली धर सुखमारु । अब लिखि योग सँदेशो पठवत ब्यापक अगम अपारु ॥ हांसी अरु दुख सुनहु सखी सुठि श्रवण दशा संचारु । सूर प्राण तन तज तन याते सुमिरि अवधि आधारु ॥ ७१ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर जो हरि कही सो करो । राजकाज चित दियो सांवरे गोकुल क्यों बिसरो ॥ जे जे घोष रहे हम तेहिलौं संतत सेवा कीनी । वारक कबहुं उलूखल बांधे उहै बांधि जिय लीनी ॥ जो हमसों कोटि करैं ब्रजनायक बहुतै राजकुमारी । तौ ए नँद कहां मिलि हैं औ यशुमतिसी महतारी ॥ गोवर्धन कहँ गोपवृन्द सचु कहां गोरस सच पैवो । सूरदास अब सोई करि ए बहुरि गोकुलहिं ऐवो ॥ ७२ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो हरि यह कहा विचारी । सदा समीप रहत वृन्दावन करत विहार विहारी ॥ एक तौ रंग रचे कुबिजाकै बिसरि गए सब नारी । कछु इक मन्त्र कियो उन दासी तेहि विनोद अधिकारी ॥ दिन दश और रहौ तुम इहां देखो दशा विचारी । प्राण रहतहैं आशा लागे कब आवैं गिरिधारी ॥ तुम तौ कहत योगहै नीको कहो कवन बिधि कीजै । हमतन ध्यान नँदनंदनको निरखि निरखि सो जीजै ॥ सुन्दर श्याम कंठ वैजंती माथे मुकुट विराजै । कमल नैन मकराकृत कुण्डल देखतही भव भाजै ॥ याते योगन आवै मनमें तूनीके करि राखि । सूरदास स्वामीके आगे निगम पुकारत साखि ॥ ७३ ॥

राग बिहागरो ॥ मधुकर बहुरि न कबहुँ मिलैं हरि। कमलनयन मिलबेके कारण अपनो सो जतन रही बहुतै करि ॥ जेजे पथिक जात मधुवनको तेहिसों व्यथा कहति पाँयन परि। काहे न प्रगट करौ यदुपतिसों दुसह दोषकी अवधि गई ढरि ॥ धीर न धरत प्रेमव्याकुल मन लेत उसाँस नीर लोचन भरि। सूरदास तनु थकित भयो अति इह वियोग सायर न सकत तरि ॥ ७४ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर अब भयो नेह बिरानी। बाहर हेत इतो कहवावत भीतर काज सयानी ॥ ज्यों शुक पिंजरमाहँ उचारत ज्यों ज्यों कहत बखानी। छूटतही उडि मिले अपुन कुल प्रीति न पल ठहरानी ॥ यद्यपि मन नहिं तजत मनोहर तद्यपि कपटी जानी। सूरदास प्रभु कवन काजको माखी मधु लपटानी ॥ ७५ ॥

राग सोरठ ॥ हरिते भलो सुरपति सीताको। जाके विरह जतन ए कीने सिन्धु कियो नीताको ॥ लंका जारि सकल रिपु मारे देखतही मुख ताको। दूत हाथ उन लिखि जो पठयो ज्ञान कह्यो गीताको ॥ तिनको कहा परेखो कीजै कुबिजाके मीताको। चढे सेज सो तो सुधि बिसरी जो सब सुख चीताको ॥ चढिचढि सेज सातहू सिंधू बिसरी जो चीताको ॥ करि अति कृपा योग लिखि पठयो देखो डराई ताको। सूरदास प्रभु हम कहा जानैं अब लोभी बनिताको ॥ ७६ ॥

राग नट ॥ ऊधो हम ब्रजनाथ बिसारी। जबते गमन कियो मथुराको चितवन लोचन हारी ॥ महाप्रलय तब काहेको राखी इंद्रत्रास भवटारी। छूटत नहीं त्रास हृदयेते तब न मुई अब मारी ॥ अवधि बदी हरि ते सब बीतीं आवन कहि जो सिधारी। सूरदास प्रभु कबधौं मिलैंगे लैगए प्राण हमारी ॥ ७७ ॥

राग मलार ॥ प्रीति उन देखन को उत जानत। तौ यों बात कहत अलि ऐसे व्यथा नहीं पहिचानत ॥ जे गोपाल गृहगृह ब्रजमेंते चोर दूध दधि खात। ते अब दुखित देखि ब्रजवासिन निठुर भए ते जात ॥ सूर कुटिलता जे सुनियतहैं लोग पुराणनि गावत। नखशिखलौं विषरूप बसत पै मधुवन नाम कहावत ॥ ७८ ॥

तू अलि बात नहीं कहि जानत। निर्गुण कथा बनाइ कहत नहिं विरहव्यथा उर आनत ॥ प्रफुलित कमल देखि उठि धावत सब कुल संग लिए। और सुमन सौ बंधु याचतहौ फाटि न जात हिए ॥ चातक स्वाति बूँद जो गाहक सदा रहत इकरूप। कहा जानै दादुर जल पैरत सागर औ समकूप ॥ बात कहौ सजि ऐसी जासों जाके जिय तुम भावहु। सूर वचन जैसो उपदेशत तैसोही तुम पावहु ॥ ७९ ॥

राग सारंग ॥ कुटिल बिनु और न कोई आवै। तौ ब्रजराज प्रेमकी बातैं तातैं ताके हाथ पठावै ॥ प्रीति पुरातन सुमिरि सांवरे सुरति सँदेशो दीनी। तैं अलि कहत औरकी औरै श्रुति मतिकी उर लीनी ॥ ये हो सखा कहे नहिं मानत गहे योगकी टेक। ऐसें सूर बहुत मधुबनमें कहा दोष हैं एक ॥ ८० ॥

राग धनाश्री ॥ बतिअन सबकोऊ समुझावै। ऐसो कोउ नाहिंनै प्रीतम लै ब्रजनाथ मिलावै ॥ आयो दूत कपटको बासी निर्गुण ज्ञान बतावै। सखा हमारे श्याम मनोहर

नैनन भरि न देखावै ॥ ज्ञान ध्यानको मर्म न जानै चतुरहि चतुर कहावै । सूरजदास सबै काहूको अपनो हरि हित भावै ॥ ८१ ॥

राग मलार ॥ ऊधो क्यों विसरत वह नेह । हमरे हृदय आनि नँदनंदन रचि रचि कीन्हें गेह ॥ एक दिवस गई गाइ दुहावन तहां जो वरषो मेह । लिये वोढाय कामरी मोहन निज करि मान्यो देह ॥ अब हमको लिखिलिखि पठवत हैं योगयुक्ति तुम लेहु । सूरदास विरही क्यों जीवैं कौन सयानप येहु ॥ ८२ ॥

ऊधो नँदको गोपाल गिरधर गयो तृण ज्यों तोर । मीन जलकी प्रीति कीनी नाहिं निबही और । अबकि जब हम दरश पावैं देहिं लाखकरोर । हरिसो हीरा खोइकै हौं रहि समुद्र ढँढोर ॥ ऊधो हमारो कछु दोष नाहीं वै प्रभु निपट कठोर । हौं जपौं तुम नाम निशि दिन जैसे चंद्रचकोर ॥ हम दासी विनमोलकी ऊधो ज्यों गुड्डीवश डोर । सूरको प्रभु दरश दीजे नहीं मनसा और ॥ ८३ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो अवरै कान्ह भए । जबते यह ब्रज छाँडि मधुपुरी कुबिजाधाम गए ॥ कै वह प्रीति रीति गोकुल बसि दुख सुख प्रीति निवाहत । अब इह करत वियोग देह द्रुम सुनत काम दव डाहत ॥ जहां स्वारथ हरिगुण साँवरो निर्गुण कपट सुनावत । सूर सुमिरि ब्रजनाथ आपने कत न परेखो आवत ॥ ८४ ॥

राग मारू ॥ ऊधो जो तुम हमहिं बतायो । सो हम निपट कठिनई करिकरि वा मनको समुझायो ॥ योग याचना जबहिं अगह गहि तबहीं है सो ल्यायो । भटक परयो वोहितके खग ज्यों फिरि हरिहीपै आयो ॥ अबकै तौ सोई उपदेशो जेहि जिय जाइ जिआयो । वारक मिलैं सूरके प्रभु तौ करौं आपनो भायो ॥ ८५ ॥

॥राग धनाश्री ॥ ऊधो मन मानेकी बात । दाख छोहारा छांडि अमृतफल विषकीरा विष खात ॥ जो चकोरको देइ कपूर कोउ तजि अंगार अघात । मधुप करत घर कोरे काठमें बँधत कमलके पात ॥ ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपकसों लपटात । सूरदास जाको मन जासों सोई ताहि सुहात ॥ ८६ ॥

राग सोरठ ॥ बातैं कहत सयाने कीसी । कपट तिहारे प्रगट देखिअत ज्यों जल नाए सीसी ॥ हौंतो कहति तिहारै हितकी एतेमों कत भरमति । हौंहू मया तिहारे हितकी कछु व्यौरोसो मरमति ॥ छाइ वसाइ गए सुफलकसुत नेकहु लागी वारन । सूर कृपा करि आए ऊधो तापर लागे टारन ॥ ८७ ॥

राग विलावल ॥ ऊधो हम ऐसे गोपाल बिनु । सबही ये जैसे हरुओ तनु ॥ सोचत गनत जाइ यहि विधि दिनु । युग निशि होत हमहिं एको छिनु ॥ कहियो सूर संदेश श्याम तिनु । जिनि राखौ प्रभु पोच वचन ऋनु ॥ हरिकित भये ब्रजके चोर । तुम्हरे मधुप वियोग उनके मदनकी झकझोर ॥ ८८ ॥

इक कमलपर धरैं गजरिपु एक कमलपर शशिरिपु जोर । दोउ कमल एक कमल ऊपर जगी एकटक भोर । एक सखी मिलि हँसति पूछत खैंचि करकी कोर । तज सुवाइ

सु भखत नाहिं निरखि उनकी और ॥ बिरस रासनि सुरति करिकरि नैन बहु जल तोर। तीन त्रिवली मनो सरिता मिली सागर छोर ॥ षट कंध अधरनि माल ऊपर अजयारिपुकी घोर। सूर अबलनि मरत ज्यावो मिलो नंदकिशोर ॥ ८९ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर तोहिं कौनसों हेतु। जोपै चढत रंगतो ऊपर त्यों पै होब श्यामता सेतु ॥ मोहन मणिनिडार मोलीते करि आए मुखप्रीति। अतिशठ ढीठ बसीठ श्यामको हमैं सुनावत गीति ॥ जो कारिखतनु मेटो चाहत तो कमलवदन तनु चाहि। सूर गोपाल सुधारसमें मिलि आवन संग समाहि ॥ ९० ॥

राग सूहो ॥ ऊधो सुनौ वृथा तनुतात। पारधी मारि माल क्यों काढै है उरझी हृदयगात ॥ ऐसे बधिक मृगन मारनको माथे बांधे पात। सुंदर श्याम नाद बंसीके बँधी काम शर घात। यह तौ पीर बिरहिनी जानै बहुत जियै दिनसात। सूर अबै न आपने जानै क्यों पूँछै कुशलात ॥ ९१ ॥

राग नट ॥ जोपै मोहिं कृष्ण जिय भावहिं। तो सुन मधुप यशोदानंदन अबहीं गोकुल आवहिं ॥ जिन नैनन मोहन मुख निरख्यो निशिदिन रूप बिचारयो। ते नैना जो रहत सूने गृह प्रीति न हृदय बिदारयो ॥ जेहि तनु आसन शयन संग सुख हरि समीप रुचि मानी। जिहि तनु बिरह न छुटत सुमिरि गुण नेकहु व्यथा नजानी ॥ जिनि श्रवणन सुनि वचन मनोहर मुरली कल मुख बाजति। तिन श्रवणन हरि सुनत मधुपुरी देत सँदेशन लाजति ॥ अतिप्रचंड यह अंड महाभट जाहि सबै जग जानत। सो मदहीन दीनह्वै बपुको कोपि धनुष सर तानत ॥ सर सौरभ शशि अनिल त्रिविध गुण वैसिय प्रकृति निबाहत। विषम बिरह निज जानि मानिमिति तौ या तनुहि न दाहत ॥ बन बिलास ब्रजवास रास रस देखि देखि दुख पावत। सूरदास बहुरौ वियोग गति कुकवि निलज ह्वै गावत ॥ ९२ ॥

राग धनाश्री ॥ अब हरि औरहि रंग राचे। तुम सम सखा श्यामसुंदरके परम सयानप काचे ॥ बालापनते निकट रहतहो सुन्यो न एक पखानो। जैसे वास बसतहै कोऊ तैसो हो तुम सयानो ॥ अरु अपने मुख तुम जु कहतहो प्रभु सबही भरिपूर। आवागमन करतहौ कापै को लागत को दूर ॥ अरु उपमा पटतर लै दीजै ते सब उनहिंन लायक। जोपै अलख रह्यो चाहत तौ बादि भए ब्रजनायक ॥ अरु जो जतन करहुगे हमको ते सब हमहिं अलेखैं। सूर सुमनसा तब सुख मानै कमलनैन मुख देखैं ॥ ९३ ॥

राग मलार ॥ हरिबिनु जान लगे दिनही दिन। कैसेकै राखैं प्राण कान्ह बिन ॥ करत जतन कतहि छिनही छिन। सिंह कैसे जीभ धरे हरे तृण ॥ जो पै नाहीं मानत प्रभु वचन ऋन। तौ का कहिए सूर श्याम सिन ॥ ९४ ॥

अब कोउ ऐसी बात कहो। छाँडहु सकुच मिलहु नँननन्दन हितकरि दुखन दहो ॥ तुम प्रभु समाधानके कारण पठए कहन सँदेश। अधिक आय आरति उपजाई मेटहु विरह कलेश ॥ इक तुम निकट रहत उनके अरु जानत सकल सुभाइ। सोई करहु प्रगट

दरशन जेहि वेगि मिलैं यदुराइ ॥ हम किंकरी कमललोचनकी बश कीनी मृदुहास । सूरदास प्रभु क्यों बिसरतहैं नख शिख अंग प्रकास ॥ ९५ ॥

इहै प्रकृति परिआई ऊधो अनुदिन या मन मेरे । जो कोउ कोटि जतन करौ कैसेहुँ फिरत नहीं मति फेरे ॥ जादिनते यशुदा गृह जनमें सुन्दर यदुराई । तादिनते वा दरश परस विनु और न कछू सुहाई ॥ क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत छिन समान दिन जाते । परमतृप्ति सबही अँग होती लोचन पै न अघाते ॥ जागत सोवत स्वप्न श्याम घन सुन्दर तनु अति भावै । सु कहि सूर ता कमलनयन बिन बतान क्यों बनिआवै ॥ ९६ ॥

ऐसी नियत हृदये माँह । याहीमें सब बात बूझबी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो बहुत दिन लायो करी पाछिली गाह । हमहि छाँडि कुबिजहि मन दीनों मेटि वेदकी राह ॥ एते पर लिखि योग पठावत सिद्ध बतावत थाह । सूर श्याम अब ब्रज किन आवहु दिनदश मानहु साह ॥ ९७ ॥

यहि डर बहुरि न गोकुल आए । सुन री सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए ॥ आधीरातको उठि बालक सब मोहिं जगो है आइ । बिन पल्लव बन बहुरि पठैहै मोहि चरावन गाइ ॥ सूने भवन जाइ रोकत हो अध चोरत नवनीत । पकरि यशोदा पै लइ जैहैं नाचहु गावहु गीत ॥ जानो मोहिं बहुरो बाँधेगी कैतव बचन सुनाइ । वै दुख सुमिरि सूर मनहीं मन बहुरि सहै को जाइ ॥ ९८ ॥

ऊधो वेदवचन प्रमान । कमल मुख पर नैन खञ्जन निरखि है को आन ॥ श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान । अधरसुधा पिआइ बिछुरे पठै दीनो ज्ञान ॥ ए नहीं हैं कृपालु केशव एहैं हिए समान । निकरि क्यों न गोपाल योलत दुखिनके दुख जान ॥ रूप रेख न देखिए तहां मूठ सुमिरि भुलान । इनहि दंड अडारि हरि गुण योगजान बखान ॥ बीतराग सुज्ञान योगिन भक्त जनन निवास । निगमबाणी मेटि कहि क्यों सकै सूरजदास ॥ ९९ ॥

आवन आवन कहि गए पै ऊधो अजहूं नाहिं आए । इतनी दूरि गोपाल सँदेशन मधुबन दये पठाये ॥ चलत चितै मुसकाइकै मृदु वचन सुनाए । तेही ठगमोदक भए मनधीर न हरि तन छूछो छिटकाए ॥ जगमोहन यदुनाथके गुण जानिहु पाए । मनहु सूर यहि लाजते घनश्याम सुंदर वर बहुरि न चरण देखाए ॥ ३४०० ॥

नाधो मन मर्याद तजी । ज्यों गजमत्त जानि हरि तुमसों बात बिचारि सजी ॥ माथ नहीं महावत सतगुरु अंकुश ध्यान कर टूटो । धावत अध अवनी आतुर तजि सोंकर सर्गुण सु छूटो ॥ इहै यूथ संग लए विहरत त्रिया काननहु माँहिं । क्रोध सोच जलसों रतिमानी कामभक्ष हित जाहिं ॥ अयुत अधार नहीं कछु समुझत भ्रम गहि गुहा रहे । सूर श्यामके हरि करुणामय कवनहि विरदु गहे ॥ १ ॥

राग नट ॥ सखी री पुरवनिता हम जानी । याहीते अनुमान करतहैं षटपदसे अगवानी ॥ अब तौ राज तहाँ सुनियत है कुबिजासी पटरानी । प्रथम ग्वाल गाइन सँग रहते भए छाँछके दानी ॥ अर्धनीशा ब्रजनारि संगलै वन बंसी लीला ठानी । मन हरलियो

बजाइ बाँसुरी अब होइ बैठे ज्ञानी ॥ महामल्ल मारत मनमोहन नाहीं समता आनी। सूर दास ए कलपत नैना कहै कौन अब बानी ॥ २ ॥

राग बिलावल ॥ जिन कोई वशपरो बरिआए। सरबस दियो आपनो उनको तऊ न कछू कान्हके भाए ॥ सहज समाधि रहत योगी ज्यों मुद्रा जटा विभूति लगाए। राज करो यह दान तिहारो जौपै देहु बहुत हरि ध्याए ॥ ना जानौं अब भलो मानिहैं ऊधो नाचे गाए। सूरदास प्रभु दरशन कारण मानो फिरत धतूरा खाए ॥ ३ ॥

राग मलार ॥ जो पै कोउ विरहिनको दुख जानै। तो तजि सगुण साँवरी मूरति कत उपदेशै ज्ञानै ॥ कुमुद चकोर मुदित विधु निरखत कहा करै लै भानै ॥ चातक सदा स्वातिको सेवक दुखित होत बिनपानै ॥ भवँर कुरंग काक कोयलको कविजन कपट बखानैं। सूरदास जो सरबस दीजै कारे कृतहि न मानैं ॥ ४ ॥

राग मलार ॥ श्याम बिनु क्यों जीवैं ब्रजवासी। इहि घट प्राण रहत क्यों ऊधो बिछुरे कुंजबिलासी ॥ कुबिजा वर पायो मोहनसो मनो तप कियो कासी । सूर श्यामको इहै परेखो इक दुख दूजी हाँसी ॥ ५ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो कैसे जीवैं कमलनैन बिनु। तबतौ पलक लगत दुखपावत अब जो निरखि भरिजात अंग छिनु ॥ जो ऊजर खेरेके देवन को पूजै को मानै। तो हम बिनु गोपाल भए ऊधो कठिन प्रीति को जानै ॥ तुमते होइ करो सो ऊधो हम अबला बल-हीन। सूर वदन देखे हम जीवैं ज्यों जलभीतर मीन ॥ ६ ॥

राग धनाश्री ॥ लरिकाईको प्रेम कहो अलि कैसे छूटत। कहा करौं ब्रजनाथ चरित अंतर्गति लूटत ॥ वह चितवन वह चाल मनोहर वह मुसुक्यानि जो मंद ध्वनि गावन। नटवर भेष नंदनंदनको वह विनोद जोबनको आवन ॥ चरणकमलकी सौंह करतहौं इह संदेश मोहिं विषसों लावत। सूरदास मोहिं पलक न बिसरत मोहन मूरति सोवत जागत॥७॥

उद्धव वचन ॥ राग धनाश्री ॥ यह उपदेश कह्यो है माधो। करि विचार सन्मुख ह्वै साधो ॥ इंगला पिंगला सुषमना नारी ॥ सून्यो सहजमें बसहिं मुरारी ॥ ब्रह्मभाव करि मैं सब देखो। अलख निरंजन ही को लेखो ॥ पद्मासन इक मन चित ल्यावो। नैन मूँदि अंतर्गति ध्यावो ॥ हृदयकमलमें ज्योति प्रकाशी। सो अच्युत अविगति अविनाशी॥ याहिप्रकार विषम तम तरिये। योगपंथ क्रम २ अनुसरिए। दुसह सँदेश सुनत ब्रज-बाला। मुरछि परी धरणी बेहाला ॥ अरे मधुप लंपट अनिआई। यह सन्देश कत कहैं कन्हाई ॥ नन्दभवनमें सदा विराजैं। नटवर भेष सदा हरि राजैं ॥ रासविलास करैं वृन्दा वन। बिच गोपी बिच कान्ह श्यामघन। अलि आयो है योग सिखावन। देखि प्रीति लागे शिर नावन ॥ भवँरगीत जो दिन दिन गावै। ब्रह्मानन्द परमपद पावै ॥ सूर योगकी कथा बहाई। शुद्ध भक्ति गोपी जन पाई ॥ सांचो मतो जो जिहि विधि धावै। तैसो भाव हरि हिय भरि पावै ॥ ८ ॥

अथ गोपी वचन ॥ राग धनाश्री ॥ इहां हरिजी बहु क्रीडा करी। सो तो चितते जात न टरी ॥ इहां पय पीवत बकी संहारी। शकट तृणावर्त इहां हरि मारी ॥ वत्सासुरको इहां

निपात्यो । बका अघा इहां हरिजी घात्यो ॥ हलधर मारचो धेनुकको इहां । देखो ऊधो हत्यो प्रलंब जहां । इहाँते ब्रह्म हमको गयो हरि । और किए हरि लगी न पलक घरि ॥ ते सब राखे संपति नरहरि । तब इहां ब्रह्मा आय अस्तुति करि ॥ इहां हरि काली उर्ग निकास्यो । लगेउ जरावन अनल सो नास्यो ॥ वस्त्र हमारे हरि जु इहां हरि । कहांलगि कहिए जे कौतुक करि ॥ हरि हलधर इहां भोजन किए । विप्रतियनको अति सुख दिए ॥ इहां गोवर्धन कर हरि धारचो । मेघ वारिते हमैं निवारचो ॥ शरद निशामें रास रच्यो इहां । सो सुख हमपै बरण्यो जात कहां ॥ वृषभ असुरको इहां संहारचो । भ्रम अरु केशी इहां पछारचो ॥ इहँ हरि खेलत आँखि मुचाई । कहांलगि बरनैं हरि लीला गाई ॥ सुनि सुनि ऊधो प्रेम मगन भयो । लोटत धर पर ज्ञान गर्ब गयो ॥ निरखत ब्रज भूमि अतिसुख पावै । सूर प्रभूको पुनिपुनि गावै ॥ ९ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो जो करि कृपा पाऊँ धरत हरि तौ मैं तुमहिं जनावों । मौन गहे तुम बैठिरहौ हौं मुरली शब्द सुनावों ॥ अबहिं सिधारे बन गोचारन हौं बैठी यश गावों । निशि आगम श्रीदामाके सँग नाचत प्रभुहि देखावों ॥ को जानै दुबिधा संकोचमें तुम डर निकट न आवें । तब इह द्वन्द्व बढै पुनि दारुण सखियन प्राण छोडावें । छिन न रहैं नंदलाल इहां बिनु जो कोउ कोटि सिखावै । सूरदास ज्यों मनते मनसा अनत कहूं नहिं धावै ॥ १० ॥

पुनि उद्धव वचन ॥ राग सारंग ॥ मैं ब्रजबासिनकी बलिहारी । जिनके संग सदा हैं क्रीडत श्रीगोबर्द्धन धारी ॥ किनहूके घर माखन चोरत किनहूंके सँग दानी । किनहूंके संग धेनु चरावत हरिकी अकथ कहानी ॥ किनहूंके सँग यमुनाके तट बंसी टेर सुनावत । सूरदास बलि बलि चरणनकी इह सुख मोहिं नित भावत ॥ ११ ॥

राग सारंग ॥ हों इहि मोरनकी बलिहारी । बलिहारी वा बाँसवंशकी बंसीसी सुकुमारी ॥ सदा रहतहै करज श्यामके नेकहु होत न न्यारी ॥ बलिहारी वा कुंजजातकी उपजी जगत उजियारी । सदा रहत हृदये मोहनके कबहूँ टरत न टारी ॥ बलिहारी कुल शैल सर्व विधि कहत कलिंदि दुलारी । निशि दिन कान्ह अंग आली गण आपुनहूं भई कारी ॥ बलिहो वृंदावनके भूमिहि सो तो भागकि सारी । सूरदास प्रभु नांगे पाँयन दिनप्रति गैया चारी ॥ १२ ॥

अथ गोपी वचन ॥ राग मारू ॥ अलि तुम जाहु फिरि वहि देश । चीर फारि करिहौं भगौ हौं शिखनि शिखि लवलेश ॥ भाल लोचन चन्द्र चमकनि कठिन कंठहि सेष । नाद मुद्रा बिभूति भारो कसैं रावर भेष । वहां जाइ सँदेश कहियो जटा धारैं केश । कौन कारण नाथ छाँडी सूर इहै अँदेश ॥ १३ ॥

राग मलार ॥ हमपर हेतु किए रहिबो । वा ब्रजको व्यवहार सखा तुम हरिसों सब कहिबो ॥ देखे जात अपनी इन अँखियन या तनको दहिबो । बरनौं कहा कथा या तनुकी हिरदैको सहिबो ॥ तब न कियो प्रहार प्राणनिको फिरि फिरि क्यों चहिबो । अब न देह जरिजाइ सूर इन नैननको बहिबो ॥ १४ ॥

अपने जिय सुरति किए रहिबो । ऊधो हरिसों इहै बीनती समो पाइ कहिबो ॥ घोष बसतकी चूक हमारी कछू न चित गहिबो । परमदीन यदुनाथ गुण विचारि सहिबो ॥ अबकी बेर दयालु दरश है दुखकी राशि दहिबो । सूर श्याम हम कहैं कहाँ लग वचैन लाज बहिबो ॥ १५ ॥

राग कल्याण ॥ यदुपतिको सन्देश सखीरी कैसेकै कहौं । बिनहीं कहे आपनेहि मनमें कबलग शूल सहौं ॥ जो कछु बात बनाऊं चितमें रचि पचि सोचि रहौं । मुख आनन ऊधो तन चितवत नबहु बिचार बहौं ॥ सो कछु सीख देहु मोहिं सजनी जाते धीर गहौं । सूरदास प्रभुके सेवकसों बिनती करि निबहौं ॥ १६ ॥

राग बिलावल ॥ करकंकनते भुज टाड भई ॥ मधुबन चलत श्याम मनमोहन आवन अवधि जु निकट दई ॥ जो अति पंथ मनावत शंकर निशि वासर मो गनत गई । पाती लिखत विरह तनु व्याकुल कागर ह्वै गयो नीर मई ॥ ऊधो मुखके वचनन कहियो हरिकी नितप्रति शूल नई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको विरह वियोगिनि विकल भई ॥ १७

राग कल्याण ॥ कहियो मुख सँदेस हाथलै दीजे पाती । समय पाइ ब्रज बात चलाई सुखही माँझ सुहाती ॥ हम प्रतीत करि सरबस अरप्यो गयो नहीं दिनराती । नँदनन्दन यह जुग तन होई लैजु रहे मनु थाती ॥ जो तव साधि दीज तौ कोऊ तो अब कत पछ-ताती । सूरदास प्रभु मुकुर जानती तौ सँग लीन्हें जाती ॥ १८ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो नँदनंदनसों इतनी कहियो । यद्यपि ब्रज अनाथ करि डारयो तदपि सुरति चित किये रहियो ॥ तिनकी तोर करहु जिनि हमसों एक सिवकी लाजनि बहिबो । गुण अवगुणन देखि नाहिं कीजतु दासन दासकी इतनी सहियो ॥ तुम बिन प्राण त्याग हम करि हैं यह अवलंब न सुपनेहु लहियो । सूरदास प्रभु लिखिदे पठयो कहां योग कहाँ पियनन्दहियो ॥ १९ ॥

राग नट ॥ ऊधो इतनी जाइ कहो । सबै विरहिनी पाँइलगति हैं मथुरा कान्ह रहो ॥ भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि ज्यों चन्द । सुन्दर वदन श्याम कोमलतनु क्यों सहि हैं नँदनंद ॥ मधुकर मोर प्रबल पिक चातक वन उपवन चढि बोलत । मनहुँ सिंहकी गर्ज सुनत गो वत्स दुखित तनु डोलत ॥ आसन भये अनल विष अहि सम भूषण विविध विहार । जित जित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुष धरे मनु मार ॥ तुमहो संत सदा उपकारी जानतहौ सब रीति । सूरदास ब्रजनाथ बचै तौ ज्यों नाहिं आवै ईति ॥ २० ॥

राग मलार ॥ मधुकर इतनी कहियहु जाइ । अति कृश गात भई ए तुम बिनु परम-दुखारी गाइ ॥ जलसमूह बरषति दोउ आंखैं हूँकति लीने नाउँ । जहां तहां गोदोहन कीनो सूँघति सोई ठाउँ ॥ परति पछार खाइ छिनही छिन अति आतुर ह्वै दीन । मानहु सूर काढि डारी है वारिमध्यते मीन ॥ २१ ॥

राग नट ॥ तुम बिनु हम अनाथ ब्रजबासी । इतनो सँदेशो कहियो ऊधो कमलनैन विनु त्रासी ॥ जादिनते तुम हमसों बिछुरे भूँख नींद सब नासी । विह्वल विकल कलउ न

परत तनु ज्यों जल मीन निकासी ॥ गोपी ग्वाल बाल वृन्दावन खग मृग फिरत उदासी । सबई प्राण तज्यो चाहत हैं को करवत को कासी ॥ अंचल जोरे करत बीनती मिलिबेको सब कासी । हमरो प्राण घात है निबरे तुम्हरे जाने हाँसी ॥ मधुकर कुसुम न तजत सखी री छाँडि सकल अविनाशी । सूर श्याम बिन यह बन सूनो शशि बिनु रैनि निरासी ॥ २२ ॥

राग धनाश्री ॥ सबै करति मनुहारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवै । दिन दश रहे सुभली कीन्हीं अब जनि गहरु लगावैं ॥ नाहिंन सोहात कछू हरि तुम बिनु कानन भवन न भावैं । बेनु विकल सो चरत नहीं तृण वछा न पीवन धावैं ॥ देखत अपनी आँखि तुमहिं तन और कहा बात न समुझावैं । सूरदास प्रभु कठिन हीन तन कत अब वै ब्रजनाथ कहावैं ॥ २३ ॥

राग गौरी ॥ ऊधो हरि वेगहि देहु पठाइ । नँदनंदन दरशन बिनु रटि मरौं ब्रज अकुलाइ ॥ मातु यशुमति सहित ब्रजपति परे धरणि मुरझाइ । अतिविकल तनु प्राण त्यागत करैं कछु गति आइ ॥ सकल सुरभी यूथ दिनप्रति रुदति पुर दिश धाइ । जहां जहँ दुहि बन चराई मरति तहां बिललाइ । परमप्यारी शरद राधिका लई गृह दुख छाइ । तजत चक्र न वक्र चख बिनु करैं कोटि उपाइ ॥ योगपद लै देहु योगिहि हमहिं योग मिलाइ । मधुप बिछुरे वारि मीनहि अनत कहां सोहाइ ॥ आजु जेहि विधि श्याम आवैं कहो तेहि विधि जाइ । सूरदास विरह ब्रज जन जरत लेहु बुझाइ ॥ २४ ॥

राग जैतश्री ॥ अलि मलीन वृषभानुकुमारी । हरि श्रमजल अंतर तनु भीजे ता लालच न धुआवत सारी ॥ अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्यों गथहारे थकित जूथ आरी । छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकरकी मारी ॥ हरि सँदेश सुनि सहज मृतक भई एक विरहिनि दूजे अलिजारी । सूर श्याम बिन यों जीवति हैं ब्रजवनिता सब श्याम दुलारी ॥ २५ ॥

राग सारंग ॥ ऊधो देखही ब्रज जात । जाइ कहियो श्यामसों यों विरहके उतपात ॥ नैन कछू न सूझई अरु श्रवण कछु न सोहात । श्याम बिन सब ब्रजहि सूनो दुसह सरवन घात ॥ आइवौ तौ आइधौं हरि बहुरि शरीर समात । सूर प्रभु पछिताहुगे तुम अंतहू गए गात ॥ २६ ॥

राग मलार ॥ हरिजीसों कहियो हो जैसे गोकुल आवहिं । दिन दश रहे भली कीनी वहां अब जिनि गहर लगावहिं ॥ नाहिंन कछू सुहात तुमहिं बिनु कानन भवन न भावहिं । बाल बिलख मुख गौ न चरति तृण बछ पय पियन न धावहिं ॥ देखत अपनी अँखिअन ऊधो हम कहि कहा जनावहिं । सूर श्याम बिनु तपत रैनि दिन मिले भलेहि सचु पावहिं ॥ २७ ॥

राग बिहागरो ॥ ऊधो तुमहिं श्यामकी सौंहै । मुख देखत कहियो तुमसों जित तित लगी मदनकी दौंहै ॥ जो मन योग जुगुति आराधै सो मन तो सबको उनपै है । जैसे बसन तजत हैं पंगन सो गति कान्ह करी हमको है ॥ हम बावरी

त्यों न चलि जान्यो ज्यों गज चलत आपनी गोहैं । सूरदास कपटी चित माधो कुबिजा मिलि कपटीकी खोहैं ॥ २८ ॥

राग केदारो ॥ ऊधो एक मेरी बात । बूझियो हरवाइ हरिसों प्रथम कहि कुशलात ॥ तुम जो इह उपदेश पठयो आनि यो मन ज्ञान । सत्यहू सब बचन झूंठो मानिये मनन्यान॥ और व्रज कहि दूसरोहू सुन्यो कहा बलवीर । जाहि बरजन इहां पठयो. करि हमारी पीर ॥ आपु जबते गये मथुरा कहत तुमसों लोग । सहजही ता दिवसते हम भूलियो भय भोग ॥ प्रगट पति पितु मात प्रभु जन प्राण तुम आधीन । ज्यों चकोरहि सँग चकोरी चित्त चन्दहि लीन ॥ रूप रसन सुगन्ध परसन रुचि न इंद्रिन आन । होति हौंस न ताहि विषकी कियो जिन मधुपान ॥ ह्वैगयो मन आपुही सब गिनत गुनगन ईश । ज्ञानकी अज्ञान ऊधो तृणतोरि दीजै शीश । बहुत कहा कहैंहि केशोराइ परम प्रवीन । सूर सुमत न छाँडिहै जहां जिवत जल बिन मीन ॥ २९ ॥

राग सारंग ॥ मधुकर कहियो सुचित सँदेशो । समै पाइ समुझाइ श्यामसों हम जिय बहुत अँदेशो ॥ एक बार रसरास हमारे मुरली मन जो हरेसो । तब उन बेणु बजाइ बोलाई अब निर्गुण उपदेसो ॥ और बार उनि योग जुगुतिको भेद न कहो परेसो । तब पतिव्रत तुम करन कहत अब उखरो ज्ञान गडेसो ॥ और कहाँलौं हम कहैं ऊधो अबलन को दुख ऐसो । सूरदास इनपर हँसि मरियतु कुबिजा केशव कैसो ॥ ३० ॥

पुनः ऊधोवचन ॥ राग नट ॥ अब अति चकितवन्त मन मेरो । आयो हों निर्गुण उपदेशन भयो सगुनको चेरो ॥ मैं कछु ज्ञान कह्यो गीताको तुमहिं न परहो नेरो । अति अज्ञान जानिकै अपनो दूत भयो उनके रो ॥ निजजन जानि हरि इहां पठायो दीनों बोझ घनेरो । सूर मधुप उठि चले मधुपुरी बोरि योगको बेरो ॥ ३१ ॥

गोपीवचन ॥ राग केदारो ॥ ऊधो तिहारे मैं चरणन लागौं बारक यहि व्रज करियो बिभावरी । निशि न नींद आवै दिवस न भोजन भावै चिववत मग भई दृष्टि झावरी ॥ एक श्याम बिनु कछू न भावै रटत फिरत जैसे बकत बावरी । या वृंदावन सघन श्याम बिन तहां यमुना बहै सुभग सांवरी ॥ लाज न होति उहैं चलिजाती चलि न सकति आवै बिरह तावरी । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु ऊधो कीरति होइ रावरी ॥ ३२ ॥

अथ यशोमति संदेश उद्धवप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो तिहारे पाँइ लागतिहौं कहियो श्यामसों इतनी बात । इतनी दूर बसत क्यों बिसरे अपनी जननी तात॥जादिनते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात । तादिनते मेरे नैन पपीहा दरश प्यास अकुलात ॥ जहाँ खेलनको ठौर तुम्हारे नंद देखि मुरझात । जो कबहूं उठिजात खरिकलौं गाइ दुहावन प्रात ॥ दुहत देखि औरनके लरिका प्राण निकसि नहिं जात । सूरदास बहुरो कब देखों कोमल कर दधि खात ॥ ३३ ॥

राग मलार ॥ तब तुम मेरे काहेको आए । मथुरा क्यों न रहे यदुनंदन जोपै कान्ह देवकी जाए ॥ दूध दही काहेको चोरचो काहेको बन गाइ चराए । अघ अरिष्ट काली

नहिं काढ्यो विष जलते सब सखा जिआए । सूरदास लोगनके भोरये काहे कान्ह अब होत पराए ॥ ३४ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो हम ऐसे नहिं जानी । सुतके हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे शारँगपानी ॥ निशिवासर छातीसों लाई बालकलीला गाई । ऐसे कबहूं भाग होहिंगे बहुरो गोद खेलाई ॥ को अब ग्वाल सखा सँग लीन्हें सांझ समै ब्रज आवै । को अब चोरिचोरि दधि खैहै मैया कवन बोलावै ॥ विदरत नाहिं बज्रकी छाती हरि वियोग क्यों सहिए । सूरदास अब नँदनंदन बिनु कहो कौन विधि रहिए ॥ ३५ ॥

राग धनाश्री ॥ ऊधो जो अब कान्ह न ऐहैं । जिय जानौ अरु हृदय बिचारो हम अति ही दुख पैहैं ॥ पूँछो जाइ कवनको ढोटा तब कहा उत्तर दैहैं ॥ खायो खेले संग हमारे याको कहा बतैहैं ॥ गोकुल अरु मथुराके वासी कहांलौं झुठै कैहैं । अब हम लिखि पठयो चाहत हैं उहां पता नहिं पैहैं ॥ इन गायन चरबो छाँडो है जो नहिं लाल चरैहैं । इतने पर नहिं मिलत सूर प्रभु फिरि पाछे पछितैहैं ॥ ३६ ॥

राग सारंग ॥ तबते छीन शरीर सुभाहु । आधो भोजन सुबल करतहै ग्वालनके उर दाहु ॥ नन्द गोप पिछवारे डोलत नैनन नीर प्रवाहु । आनँद मिट्यो मिटी सब लीला काहु न मन उत्साहु ॥ एक बेर बहुरो ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु । सूर सुपथ गोकुल जो बैठहु उलटि मधुपुरी जाहु ॥ ३७ ॥

राग नट ॥ कहियो यशुमतिकी आसीस । जहाँ रहो तहां नन्द लाडिलो जीवो कोटि वरीस ॥ मुरली दई दोहनी घृत भरि ऊधो धरि लई शीश ॥ इह घृत तौ उनहीं सुरभिन को जो प्यारी जगदीश ॥ ऊधो चलत सखा मिलि आए ग्वाल बाल दश बीश । अबके इहां व्रज फेरि बसावो सूरदासके ईश ॥ ३८ ॥

अथ सखा वचन ॥ राग बिलावल ॥ ऊधो देखत हो जैसे व्रजवासी । लेत उसाँस नैन जल पूरित सुमिरि सुमिरि अविनासी ॥ भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअंगम डासी । छूटत नहीं प्राण क्यों अटके कठिन प्रेमकी फाँसी ॥ आवत नहीं नन्द मन्दिरमें वह्यो फिरत पनियासी । प्रेम न मिले धेनु दुर्बल भई श्यामविरहकी त्रासी । गोपी ग्वाल सखा बालक सब कहूँ न सुनियत हांसी । काहे दियो सूर सुखमें दुख कपटी कान्ह लवासी ॥ ३९ ॥

उद्धववचन ॥ राग सारंग ॥ धन्य नन्द धनि यशुमति रानी ॥ धन्य कान्ह प्रकटे सुखदानी ॥ धन्य ग्वाल धन्य धन्य गोपिका जेहि खेलाए शारँगपानी । धनि ब्रज भूमि धन्य बृंदावन जहां अविनाशी आए ॥ धन्य धन्य सूर आजु हमहूं जो तुम सब देखे आए ॥ ४० ॥

अथ दूसरी लीला ॥ भवँर गीत ॥ गोपीवचन ॥ राग आसावरी ॥ छन्द त्रिभंगी ॥ हरिरथ रतन जरयो अनूप दिशाते आवै । जेहि मग कृष्ण गयो तेहि मगते दर्शावै ॥ वै मगते आवै सखन बोलावे देखो नैन बिचारी । मुकुट कुंडल तनु पीत बसन कोउ गोविन्दकी अनुहारी ॥ वैतो भूषण परखन लागी तब लगि निअरे आए । ऊधो जिय जानी मन कुँभिलानी कृष्ण सन्देश पठाये ॥ १ ॥

चली चली पूँछें कछु बातैं। कहि कहि ऊधो हरि कुशलातैं॥ छन्द॥ कहि कुशलातैं सांची बातैं आवन कह्यो हरि नाथैं। कै गरवाने राजसभा अब जीवत हम न सुहाथैं॥ ठाढी तनु कांपै टेरै झांकैं बारबार अकुलाई। अब जिय कछू कपट जिनि राखौ बूझैं सौंह दिवाई॥ २॥

कहो ऊधो तुम क्यों ब्रज आए। तब हँसि कह्यो हम कृष्ण पठाए॥ छन्द॥ कृष्ण पठाये तो ब्रज आए कहत मनोहर बानी॥ सुनहु सँदेशो तजहु अंदेशो हौ तुम चतुर सयानी। गोप सखा जिय हिय जिनि राखौ अविगत है अविनासी। मोह न माया बैर न दाया सब घट आपु निवासी॥ ३॥

ऊधो जिनि इह कहो तुम प्रभुकी प्रभुताई। सुनि जिय अंगहि बढ्यो रिसि सही न जाई॥ रिसि सही न जाई अंगहि बाढी अति इह तुमरी चतुराई। दासी कुबिजा सेजकी संगत कवन वेद मति पाई॥ तुमहूं भली कहनको आए हमको भली सु बानी। जो कछु वस्तु देखिअत नैनन सो क्यों नहिं मनमानी॥ ४॥

गोविंदकी बाणी सब कोई जानी। परबश भई कहत अब सोई मानी॥ राग छन्द॥ सब कोइ जानै क्यों मनमानै अब न कछू कहि आवै। जो कछु कुबिजाके मनभावै सोइ सोइ नाच नचावै॥ वाको न्याउ दोष सब हमको कर्मरेख को जानै। गोरस देखि जो राख्यो गाहक विधिनाकी गति आनै॥ ५॥

ऊधो कमल नयनसों कहियो जाइ। एक बेर ब्रज देखो आइ॥ राग छन्द॥ जिहिके प्रीति निरन्तर मनमें सो मन क्यों समुझावै। शंकर ब्रह्म शेष अरु सुरपति कोउ हरि दरशन पावै॥ वैसे राज बिलास कोलाहल घरघर माखन हरई। सूरदास प्रभु मिलत बहुत सुख बिरह श्वास कत जरई॥ ६॥ ४१॥

उद्धव वचन। राग भैरव॥ मैं तुमपै ब्रजनाथ पठायो। आतमज्ञान सिखावन आयो आपहि पुरुष आपुही नारी। आपुहि वानप्रस्थ ब्रह्मचारी॥ आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि भगिनी आपुहि भ्राता॥ आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी॥ आपुहि राजा आपुहि रानी॥ आपुहि धरती आपु अकासा। आपुहि स्वामी आपुहि दासा॥ आपुहि ग्वाल आपुहि गाइ। आपुहि आप चरावन जाइ॥ आपुहि भँवरा आपुहि फूल। आतमज्ञान बिना जगमूल॥ राव रंक दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरंजन सोई॥ इहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरनसे भवभय भागै॥ योग समाधि ब्रह्म चित लावहु। ब्रह्मानंद तबहि सुख पावहु॥ ७॥

गोपी उद्धव प्रति उत्तर॥ योगी होइ सो योग बखानै। नौधा भक्ति दास रति मानै॥ भजनानन्द अली हम प्यारो। ब्रह्मानंद सुख कौन विचारो॥ बतियां रचिपचि कहत सयानी। अँखिया हरिके रूप लोभानी॥ ब्यावरि बिथा न बंझा जानै। बिन देखे कैसे रति मानै॥ पुनि पुनि पुनि वोही सुधि आवै। कृष्णरूप बिन और न भावै॥ नवकिशोर जेहि नैन निहारयो। कोटि योग वा छबिपर वारयो॥ शीश मुकुट कुंडल बनमाला। क्यों बिसरैं वे नैन बिशाला॥ मृगमद मलय अलक घुँघुरारे। उन मोहन मन हरे हमारे॥

भ्रुकुटी कुटिल नासिका राजै । अरुन अधर मुरली कल बाजै ॥ दाडिमदशन दामिनि दुति सोहै । मृदु मुसकान जो तन मन मोहै ॥ चन्द्रझलक कण्ठामणि मोती । दूर करत उडुगणकी ज्योती ॥ कंकन किंकिणि पदिक विराजै । गजगति चाल नूपुर कल बाजै । बनके धातु चित्र तनु किए । श्रीवत्स चिह्न राजत अति हिए ॥ पीतबसन छबि बरणि न जाई । नख शिख सुन्दर कुँवर कन्हाई ॥ रूपराशि ग्वालनको संगी । कब देखैं वह ललित त्रिभंगी ॥ जो तू हितकी बात बतावै । मदन गोपालहि क्यों न मिलावै ॥ ८ ॥

उद्धव वचन ॥ जाके रूप बरन वपु नाहीं नैन मूँदि चितवो चितमाहीं ॥ हृदय कमलमें ज्योति बिराजै । अनहदनाद निरन्तर बाजै ॥ इडा पिंगला सुषमन नारी । सहज सु तामें वसै मुरारी ॥ माता पिता न दारा भाई ॥ जल थल घटघट रह्यो समाई ॥ इहि प्रकार भवदुख सारि तरहू । योग पंथ क्रमक्रम अनुसरहू ॥ ९ ॥

उत्तर गोपीका ॥ हम ब्रजबाल गोपाल उपासी । ब्रह्म ज्ञान सुनि आवै हांसी ॥ ब्रजमें योग कथा तैं ल्यायो । मनो कुबिजा कूबर मांह दुरायो ॥ श्यामसो गाहक पाइ देखायो । सो माधो तुम हाथ पठायो ॥ हम अबला ठगि अल्प अहीरी । महा भलो ठग्यो कंसकी चेरी ॥ राम जन्म सीता जदुराई । भली भई कुबिजा वधु पाई ॥ तब सीता बियोग दुख पायो ॥ अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो ॥ इह नीरस ज्ञान कहा लै कीजै । योगमोट दासी शिर दीजै ॥ १० ॥

उद्धव वचन ॥ वे परब्रह्म अच्युत अविनाशी । त्रिगुण रहित प्रभु धरै न दासी ॥ नाहिं दासी ठकुराइन कोई । जहां देखो तहां ब्रह्म है सोई । अपने और ब्रह्महि जानो । ब्रह्म बिना दूजो नहिं मानो ॥ ११ ॥

गोपिका वचन ॥ खरे करब अलि योग सँवारो । भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥ कहा होत उपदेशे तेरे । नैन सुवस नाहीं अलि मेरे ॥ हरिपथ जोवैं छिन छिन रोवैं । कृष्ण वियोगी निमिष न सोवैं ॥ नन्दनन्दनको देखे जीवैं । योग पन्थ याते नहिं पीवैं ॥ जब हरि आवैं तब सचुपावैं । मोहन मूरति कंठ लगावैं ॥ दुःसह वचन हमैं नहिं भावैं । योग कथा वोढ़ै कि बिछावैं ॥ १२ ॥

उद्धव वचन ॥ ऊधो कहि कहि धनि ब्रजबाला । जिनके सर्वस मदनगोपाला ॥ मै जो कही सो आवन न पाई । तुमरे दरश भक्ति निजमाई ॥ तुम मम गुरु मैं दास तिहारो । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारो ॥ भवँरगीत जो सुनै सुनावै प्रेम भक्ति गोपिनकी पावै ॥ सूरदास गोपी बड़भागी । हरि दरशनकी ढवरी लागी ॥ १३ ॥ ४२ ॥

अथ दूसरी लीला । भँवर गीत । गोपी वचन जैतश्री ॥ ऊधोको उपदेश सुनो किन कान दै । निर्गुण सँदेशो श्याम पठायो आन दै ॥ कोउ आवत ओहि ओर जहां नंदसुवन पधारे । सरस वेणुध्वनि होइ मनो आए ब्रजप्यारे ॥ धाये सब गलगाजिकै ऊधो देखै जाइ । लै आए ब्रजराज गृह आनँद उर न समाइ ॥ अर्घ्य आरती तिलक दूब दही माथे दीनी । कंचन कलश भराइ और परिकर्मा कीनी ॥ गोपभीर आंगन भई जुरि बैठे इक जाति । जलझारी आगे धरे पूँछत हरि कुशलाति ॥ कुशल क्षेम वसुदेव

कुशल देवै कुबिजाऊ। कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके बलदाऊ ॥ पूँछि कुशल गोपालकी रहें सकल गहि पाइ। प्रेम मगन ऊधो भए पेखत ब्रजके भाइ ॥ मनमें ऊधो कहैं ऐसि बूझियन गोपालहि। ब्रजके हेतु बिसारि योग सिखावैं ब्रजबालहि ॥ इनकी प्रीति पतंगलौं जारतहैं सब देह। वै हरि दीपक ज्योति ज्यों नेक न उनके नेह ॥ तब ऊधो कर लै लिखी हरिजूकी पाती। पढी परत नाहिं नेक रहे गंभीर करि छाती ॥ पाती बाँचि न आवई रहे नयन जल पूरि। देखि प्रेम गोपिनके ऊधो ज्ञान गर्व गयो दूरि ॥ फिरि इत उत बहराइ नीर नैननके शोधे। ठानी कथा प्रबोधि तबहिं फिरि गोप समोधे ॥ जो ब्रत मुनिवर ध्यानहीं पावहिं नर अवतार। ते ब्रत सिख सब गोपिका देहीं विषयबिसार ॥ सुनि ऊधोके वचन रहीं नीचे कै तारे। मानो मांगति सुधा आनि ब्यालनि विष जारे ॥ हम अबलौं कहा जानई योग युक्ति की रीति। नँदनंदनव्रत छाँडिकै को लिखि पूजे भीति ॥ अगमत अगह अपार आदि अविगत है सोऊ। आदि निरञ्जन नाम ताहि रंजै सबकोऊ ॥ नयन नासिका अग्र है सोऊ तहाँ ब्रह्मको बास। अविनाशी बिनशै नहीं सहज ज्योति परगास ॥ ऊधो जो पग पानि नहीं ऊखल क्यो बांधे। नयन नासिका मुखन चोरि दधि कौने खाधे। तब जो खिलायो गोदमें बोलि तौतरे बैन। ऊधो ताको बतावही जाहि न सूझै नैन ॥ माया अनित्य अधारी ता लोचन दुइ नाखै। ज्ञानी नयन अनंत ताहि सूझै परमाखै ॥ बूझो निगम बोलाइकै कहैं भेद समुझाइ। आदि अंत जाको नहीं कौन पिता को माइ ॥ ऊधो घर लागै अरु घूर कहो मन कहँ कहँ धावै। अपनो घर परि हरै कहो वो घूर बतावै ॥ मूरख यादव जाति हैं हमहिं सिखावहिं योग। हमसों भूली कहत हैं हम भूली धौं लोग ॥ प्रेम प्रेमते होइ प्रेमते परहै हिए। प्रेम बंधो संसार प्रेम परमारथ लहिए ॥ एकै निश्चय प्रेमको जीवन मुक्तिरसालं। सांची निश्चय प्रेमकी जिहिरे मिलैं गोपाल॥ऊधो कहि सतभाव न्याय तुम्हरे मुख सांचे। योगप्रेमरस कथा कहो कंचनकी कांचे ॥ जाके परहै हूजिय गहिए सोई नेम। मधुप हमारी सों कहो योग भलो किधौं प्रेम ॥ सुनि गोपीके वचन नेम ऊधोके भूले। गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनमें फूले ॥ खन गोपी कै पाँइ परै धन्य सोईहै नेम। धाइ धाइ द्रुम भेंटई ऊधो छाके प्रेम ॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य सुरभी वनचारी। धनि इहां पावन भूमि जहां गोविंद अभिसारी ॥ उपदेशन आये हुते मोहिं भयो उपदेश। ऊधो यदुपतिपै चले धरे गोपकी भेष ॥ भूले यदुपति नावँ कहो गोपाल गोसाईं। एकबार ब्रज जाहु देहु गोपिन देखराईं ॥ वृन्दावन सुख छाँडिके कहां बसेहो आइ ॥ गोवर्धन प्रभु जानिकै ऊधो पकरे पाँइ। ऊधो ब्रजको प्रेम नेम वरणो सब आई। उमँग्यो नैनन नीर बात कछु कह्यो न जाई ॥ सूर श्याम भूलत भए रहै नैन जल छाइ। पोंछि पीतपटसों कह्यो भले आए योग सिखाइ ॥ ४३ ॥

इति भँवरगीत अध्याय ॥ ४८ ॥ अथ उद्धवो मथुरामागत्य श्रीकृष्णं प्रति वदति ॥ राग सारंग ॥

ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाइ। तबकी कथा कृपा करि कहिए हम सुनिहैं मन लाइ ॥ बाबानंद यशोदा मइया मिले सबन हित आइ। कबहूं सुरति करत माइनकी किधौं रहे

बिसराइ ॥ गोप सखा दधि खात भात वन अरु चाखते चखाइ । गऊ बच्छ मुरली सुनि उमडत अबहिं रहत केहि भाइ ॥ गोपिन गृह व्योहार बिसारे मुख सन्मुख सुखपाइ । पलकवोट निमिपर अनखाती यह दुख कहां समाइ ॥ एक सखी उनमें जो राधा जब हौं इहँते गयो । तब ब्रजराज सहित सब गोपिन आगे ह्वै जो लयो ॥ उतरे जाइ नन्दबाबाके सबही शोध लह्यो । मेरीसौं सांचीकहु ऊधो मैया कछू कह्यो ॥ बारंबार कुशल पूँछी मोहिं लै लै तुम्हरो नाम । ज्यों जल तृषा बढी चातक चित कृष्ण कृष्ण बलराम ॥ सुन्दर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली । लई उठाइ उर लाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उर शाली ॥ ४४ ॥

सुनिए ब्रजकी दशा गोसाईं । रथकी ध्वजा पीतपट भूषण देखतही उठि धाईं ॥ जो तुम कही योगकी बातैं ते मैं सबै सुनाईं । श्रवण मूँदि गुण कर्म तुम्हारे प्रेम मगन मन गाईं ॥ औरो कछु संदेश सखी इक कहत दूरि लौं आईं । हुतो कछू हमहूँसों नातो निपट कहा बिसराईं ॥ सूरदास प्रभु बनविनोद करि जो तुम गऊ चराईं । ते गाय ग्वालन हेरी देय हरति मानों भईं पराईं ॥ ४५ ॥

राग सारंग ॥ ब्रजके विरही लोग दुखारे । बिन गोपाल ठगेसे ठाढे अतिदुर्बल तनु कारे ॥ नंद यशोदा मारग जोवत नित उठि साँझ सवारे । चहुँ दिशि कान्ह कान्ह करि टेरत अँसुवन बहत पनारे ॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब अतिही दीन विचारे । सूरदास प्रभु बिन यों शोभित चन्द्र बिना ज्यों तारे ॥ ४६ ॥

राग केदारो ॥ हरिजी सुनो वचन सुजान । विरह व्याकुल छीन तनमनहीन लोचन प्रान ॥ इहैहै संदेश ब्रजको माधो सुनहु निदान । मैं सबै ब्रज दीन देखे ज्यों बिना निर्मान ॥ तुम विना शोभा न ज्यों गृह बिना दीप भयान । आस श्वास उसाँस घटमें अवध आशा प्रान ॥ जगत जीवन भक्तपालन जगतनाथ कृपाल । करि जतन कछु सूरके प्रभु जी जिवैं ब्रजबाल ॥ ४७ ॥

राग जैतश्री ॥ ॥ सुनहु श्यामजू वै ब्रजवनिता विरह तुम्हारे भईं बावरी । नाहिंन नाथ और कहि आवत छाँडि जहां लगि कथा रावरी ॥ कबहुँ कहत हरि माखन खायो कौन वसै या कठिन गाँवरी । कबहुँ कहत हरि ऊखल बांधे घर घर ते लैचलौ दाँव री ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ बन गए जोवत मग भई दृष्टि झाँवरी । कबहुँ कहत वा मुरली महियाँ लै लै बोलत हमरो नाँउरी ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ साथते चंद्र उग्योहै एहि ठाँवरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु अब वह मूरति भई साँवरी ॥ ४८ ॥

राग बिहागरो ॥ हरि आए सो भली कीन्ही । मोहिं देखत कहि उठी राधिका अंक तिमिरको दीन्ही ॥ तनु अति कँपति विरह अति व्याकुल उर धुकधुकी खेद कीनी ।

चलत चरणगहि रही गई गिरि खेद सलिल भयभीनी ॥ छूटी वट भुज फूटी बलया टूटी लर फटी कंचुकी झीनी । मानो प्रेमके परन परेवा याहीते पढि लीनी ॥ अवलोकति इहिभाँति रमापति मानो छूटी अहिमणि छीनी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलगि है अयान मति हीनी ॥ ४९ ॥

राग मलार ॥ सुनो श्याम यह बात और कोउ क्यों समुझाय कहै । दुहुँदिशिको रति विरह विरहिनी कैसेकै जो सहै । जब राधे तबहीं मुख माधो माधो रटत रहै । जब माधो होइजात सकल तनु राधा विरह दहै । उभय अग्र दौंदारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै । सूरदास अति विकल विरहिनी कैसेहु सुख न लहै ॥ ५० ॥

राग केदारो ॥ चितदै सुनो श्याम प्रबीन । हरि तुम्हारे विरह राधा मैं जु देखी छीन ॥ तज्यो तेल तमोल भूषण अंग वसन मलीन । कंकना करवाम राख्यो गढी भुजगहि लीन ॥ जब सँदेशा कहन सुंदरि गवन मोतनकीन । खसि मुद्रावलि चरन अरुझी गिरि धरनि बलहीन ॥ कंठवचन न बोल आवै हृदय परिहस भीन । नैन जल भरि रोइ दीनो ग्रसित आपद दीन ॥ उठी बहुरि सँभारि भट ज्यों परम साहस कीन । सूर प्रभु कल्याण ऐसे जिवहि आशा लीन ॥ ५१ ॥

भरि भरि लेत ऊरध श्वास । साँवरे ब्रजनाथ तुम बिनु दुखित पंचशरत्रास ।' अमित पीर अधीर डोलत समर मीन बिलास । तेई सुख दुख भए दारुण मिलि गए रसरास ॥ निगम गुरुजन लोग न डरत जगकरत उपहास । सूर श्याम बिनु विकल विरहिनी मरत दरश बिन प्यास ॥ ५२ ॥

राग धनाश्री ॥ उमँगि चले दोउ नैनविशाल । सुनिसुनि यह संदेश श्यामघन सुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल ॥ आनन वपु उरजनिके अन्तर जलधारा बाढी तेहि काल । मनु युगजलज सुमेर शृङ्गते जाइ मिले सम शशिहि सनाल ॥ भीजे विय अंचर उर राजित तिनपर वर मुकुतनकी माल । मनो इन्दु आये नलिनी दल लंकृत अमी ओस कण जाल ॥ कहां वह प्रीति रीति राधासों कहां यह करनी उलटी चाल । सूरदास प्रभु कठिन कथनते क्यों जीवै बिरहिनि बेहाल ॥ ५३ ॥

राग मारू ॥ तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढी । लीने जाति निमेष कूल दोऊ एते यान चढी ॥ गोलकनाउ निमेष न लागत सो पलकनि बर बोरति । ऊरध श्वास समीर तरंगिनि तेज तिलक तरु तोरति ॥ कज्जल कीच कुचील किए तट अम्बर अधर कपोल । थकि रहे पथिक सुयश हितहीके हस्त चरण मुख बोल ॥ नाहिंन और उपाय रमापति बिन दरशन जो कीजै । अंशु सलिल बूडत सब गोकुल सूर सुकर गहिलीजै ॥ ५४ ॥

राग मलार ॥ नैन घट घटत न एकघरी । कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी ॥ विरह इन्द्र बरषत निशिवासर इहि अति अधिक करी । उरध उसाँस समीर तेज जल उर भुवि उमँगि भरी ॥ बूडति भुजा रोमद्रुम अंबर अरु कच उच्चथरी । चलि न सकत पथिक रहे थकि चन्द्रकी चखरी ॥ सब ऋतु मिटि एक भई ब्रज महिं यहि विधि उलटि धरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरे मिटि मर्याद टरी ॥ ५५ ॥

राग केदारो ॥ देखी मैं लोचन चुवत अचेत । मनहुँ कमल शशि त्रास ईशको मुक्ता गनिगनि देत ॥ द्वारखडी इकटक मग जोवत ऊरध श्वासन लेत । मानहुँ मदन मिले चाहति है मुक्षत मरुत समेत ॥ श्रवण न सुनत चित्र पुतरी लौं समुझावत जितनेत । कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहुँ नेत ॥ मनहु बिरह दव जरत विश्व सब राधा रुचिर निकेत । धुज होइ सूखिरही सूरज प्रभु बँधीं तुम्हारे हेत ॥ ५६ ॥

राग मलार ॥ नैननि होड बदी बरषासों । रात दिवस बरसत झर लाए दिन दूरी कर खासों ॥ चारि मास बरषे जल खूटे हारि समुझि उनमानीं । एतेहुपर धार न खंडित इनकी अकथ कहानी ॥ एते मान चढाइचढी अति तजी पलककी सींव । मैं दिन दिन उनमानो महाप्रलयकी नीव ॥ तुमपै होइ सो करहु कृपानिधि ए ब्रजके व्यवहार । अबकी बेर पाछिले नाते सूर लगावहु पार ॥ ५७ ॥

राग गौरी ॥ ब्रजते द्वैऋतु पैनगई । ग्रीष्म अरु पावस प्रवीन हरि तुम बिनु अधिक भई ॥ उरध उसाँस समीर नैन घन सब जल योग जुरे । बरषि प्रगट कीन्हें दुख दादुरहुते जु दूरि दुरे ॥ तुम्हरो कठिन वियोग विषम दिनकर सम उदो करै । हरिपद विमुख भए सुनु सूरज को इहि ताप हरै ॥ ५८ ॥

राग कान्हरो ॥ नाहिनकछु सुधि रही हिए । सुनो श्याम वै सखिहि राधिकहि जुगवति जतन किए ॥ कर कंकन कोकिला उडावत बिनुमुख नाम लिए । सैन सूचना नखनि नितंबै किसलय श्रवणन शब्द बिए ॥ शशिशंका निशि जालनिके मग वसन बनाइ किये । दिशि दिशि शीत समीरहि रोकत अंबर ओट दिए ॥ मृगमदमलै परस तनु तलफत जनु विष विषम पिए ॥ जो न इतेपर मिलहु सूरप्रभु तौ जान बीजए ॥ ५९ ॥

राग गौरी ॥ कहाँलौं कहिए ब्रजकी बात । सुनहु श्याम तुम बिनु उन लोगइ जैसे दिवस बिहात ॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वै मलिन वदन कृश गात । परमदीन जनु शिशिर हिमीहत अंबुज गन बिनपात ॥ जाकहुँ आवत देखि दूरते सब पूँछति कुशलात । चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात ॥ पिक चातक बन वसन न पावहिं बाइस बलिहि न खात । सूर श्याम सन्देशनके डर पथिक न उहि मग जात ॥ ६० ॥

राग मलार ॥ ब्रजकी कही न परतिहैं बातैं । गिरितनयापति भूषण जैसे बिरह जरी दिनरातैं ॥ मलिन वसन हरिहित अंतरगति तनु पीरो जनु पाते । गदगद वचन नैन जल पूरित बिलखि वदन कृशगाते ॥ मुक्तो ताते भवनते बिछुरे मीन मकर बिललाते । सारंगरिपु सुत सुहृदपति बिना दुख पावति बहु भांते ॥ हरि सुर भषन बिना बिरहाने छीन भई तनु ताते । सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिलके नाते ॥ ६१ ॥

राग कल्याण ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट । चितवत इकटक मग चकोर लौं जबते तुम बिछुरे नागर नट ॥ भरि भरि नैन नीर ढारतिहैं सजल करति अति कंचुकिके पट । मनहुँ बिरहकी ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम शिव शीश सहसघट ॥ जैसे युगके अग्र ओसकण प्राण रहत ऐसे अवधिहिके तट । सूरदास प्रभु मिलौ कृपाकरि जो दिन कहे तेउ आए निकट ॥ ६२ ॥

राग सारंग ॥ दिन दश घोष चलहु गोपाल । गाइनके अवसेर मिटावहु लेहु आपने ग्वाल ॥ नाचत नहीं मोर तादिनते बोले न बर्षाकाल ॥ मृग दूबरे तुम्हारे दरश बिनु सुनत न वेणु रसाल ॥ वृन्दावन हरचो होत न भावत देखो श्याम तमाल । सूरदास मइया अनाथ है घर चलिए नंदलाल ॥ ६३ ॥

राग सोरठ ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो । तुमसों अब यों कहा कहतहैं मैं कहि कहा पठायो ॥ कहवावतहौ बडे चतुरपै वहां न कछु कहि आयो । सूरदास ब्रजवासिनको हित हरि हियमांझ दुरायो ॥ ६४ ॥

राग सारंग ॥ मैं समुझाई अति अपनो सो । तदपि उन्हैं परतीति न उपजी सबै लखो सपनोसो ॥ कह्यो तुम्हारो सबै कही मैं और कछु अपनी । श्रवण न वचन सुनत हैं उनके जो घटमहँ अकनी ॥ कोई कहे बात बनाइ पचासक उनकी बात जो एक। धन्य धन्य जो नारी ब्रजकी बिन दरशन इहि टेक ॥ देखत उमँग्यो प्रेम यहांके धरी रही सब रोयो । सूर श्याम हौं रहौं ठगोसो ज्यों मृग चौको भोयो ॥ ६५ ॥

बातैं सुनहु तौ श्याम सुनाऊं । वै उमँगी जलनिधि तरँग ज्यों तामें थाह न पाऊं ॥ कौन कौन कौ उत्तर दीजे ताते भग्यो अगाऊं । वे मारे शिर पटिया पारे कन्था काहि उढाऊं ॥ एक अँधेरो हियेकी फूटी दौरत पहिर खराऊं । सूर सकल षट दरशन वे हैं बारहखरी पढाऊं ॥ ६६ ॥

सुनि लीन्हों उनहींको कह्यो । अपनी चाल समुझि मनहीं मन मुनि अरगाइ रह्यो ॥ अबलनि सों कही परि जापै बात तोरि कनिकानि । अनबोले पूरो दै निबह्यो बहुत दिननको जानि । जानि बूझिकै हौं कत पठयो शठ बावरो अयानो । तुमहूं बूझि बहुत बातनको वहां जाहु तौ जानौ ॥ आज्ञाभंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले । सूर पठावनहीकी बोरी रह्यो जु गजसों लीले ॥ ६७ ॥

राग मलार ॥ हो हरि बहुत दाँउदै हारचो । आज्ञाभंग होइ क्यों मोपै वचन तुम्हारो पारचो ॥ हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै जानि आपुन पै कै । जानिलेहु हरि इतनेहीमें कहा करै नीमनको वैदु ॥ उत्तरको उत्तर नाहिं आवत तब उनहीं मिलि जातु । मेरी किती बात ब्रह्माको अर्धवचनमें मातु ॥ अपनी चाल समुझि मनहीं मन घल्यो बसीठी तोरि । सूर एकहू अंग न काची मैं देखी टकटोरि ॥ ६८ ॥

कहिबेमें न कछू शक राखी । बुधि विवेक उनमान आपने मुख आई सो भाखी ॥ हौं मरि एक कहौं पहरकमें वै छिनमांझ अनेक । हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै छाँडि आपनी टेक ॥ हौं पठयो कत कौने काजै शठ मूरख जो अयानो । तुमहिं बुझावहु ते बातनकी वहाँ जाहु तौ जानो ॥ श्रीमुखकी सिखई ग्रन्थोकति ते सब भईं कहानी । एक होइ तौ उत्तर दीजै सूर सुमठी उभानी ॥ ६९ ॥

राग सोरठ ॥ माधोजी मैं योगको बोझा भरचो । श्याम उन मुखविधु वचन सुधारस सुनि सुनि कछु न कह्यो ॥ तौलौं भार तरंग मो उदधि सखि लोचन उमह्यो । तुम जो कह्यो ज्ञानको मारग सो बातैं जो बह्यो ॥ मोहिं आश्चर्य एक जो लागत तौ कैसे जात सह्यो । सूरदास प्रभु सखी सयानी लै भुज बीच गह्यो ॥ ७० ॥

राग नट ॥ कोऊ सुनत न बात हमारी । कहा मानै योग युक्ति यादवपति प्रगट प्रेम ब्रजनारी ॥ कोऊ कहति इंद्र जब बरषो टेकि गोवर्धन लेत ॥ कोउ कहति हरि गए कुंजवन शीश धाम वे देत ॥ कोऊ कहत नाग कारे सुनि गए हरि यमुनातीर । कोउ कहै गए अघासुर मारन संग लिए बलवीर ॥ कोउ कहै ग्वाल बाल संग खेलत वनमें जाइ लुकाने । सूर सुमिरि गुण माथे तुम्हारे कोउ कह्यो ना माने ॥ ७१ ॥

राग सारंग ॥ हरि तुम्हैं बारंबार सँभारैं । कहहु तौ सब युवतिनके नाम कहौं जे हितसों उर धारैं ॥ कबहुँक आँखि मूँदिकै चाहति सब सुख अधिक तिहारे । तब प्रसिद्ध लीला सँग बिहरत अबचित डोर विहारे ॥ जाको कोऊ जेहि बिधि सुमिरै सोउ तेही हित मानै। उलटी रीति सबै तुम्हरे है हमतो प्रगट कहिजानै ॥ जो पतिआंहो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पाउ । सूर श्याम है पलक धाममें लखिचित कत बिललाउ ॥७२॥

माधोजू कहा कहौं उनकी गति । देखत बनै कहत नाहिं आवै परम प्रीति तुमते रति ॥ यद्यपि हौं षडमास रह्यो ढिग लही नहीं उनकी मति । कासों कहौं सबै बुधि परबोधी मानै नाहीं अति ॥ तुम कृपालु करुणामय कहियत ताते मिलत कहा क्षति । सूर श्याम सोईपै कीजै जाते तुम पावहु पति ॥ ७३ ॥

तुम्हारोइ चित्र बनाउ कियो । तब को इन्दु सम्हारि तुरतही मनसिज साजि लियो ॥ ब्रति गहि युग अँगुलीके बीचै उन भरि पानि पियो । पुरप्रति करति लेखको प्रारम्भ तबहिं प्रहार कियो ॥ वे पथ विकल चकित अति आतुर भर्मत हेतु दियो। भृति बिलंबि पृष्टि दै श्यामा श्यामै श्याम वियो ॥ या गति पाइरही राधा अब चाहति अमृत पियो । सूरदास प्रभु प्रीत उलटि परीहै कैसे जात जियो ॥ ७४ ॥

राग केदारो ॥ अब जिनिबाँधि वेहि डराहु । दुध दधि माखन मनोहर डारि देहु अरु खाहु ॥ सदा बैठे घोष रहियो बन न दैहैं जान । पलकहू भरि दुख न दैहैं राखिहैं ज्यों प्रान ॥ सब तिहारो कहै करिहैं वचन माथे मानि । परम चतुर सुजान ईते मांझ लीजो जानि ॥ अब न कौनो चूक करिहैं यह हमारे बोल । किंकरिनिकी लाज धरि ब्रज सुबस करहु निटोल ॥ समुझ निज अपराध करनी नारि नावति नीचि । बहुत दिनते बरति है कै आंखि दीजै सींचि ॥ मन वचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिंन राखि । सूर प्रभु यह बोल हृदय सातराजा साखि ॥ ७५ ॥

राग सारंग ॥ कहत न बनै ब्रजकी रीति । नाथ मम शठको पठयो देखि उनकी प्रीति युवतिवल्लभ कत कहावत करत सकल अनीति । मोहितो यह कठिन औरो क्यों करि है परतीति ॥ सुनौ धौं दै कान अपनी लोक लोकनि कीति । सूर प्रभु अपनी सचाई रही निगमन जीति ॥ ७६ ॥

राग नट ॥ परम वियोगिनी सब ठाढी । ज्यों जलहीन दीन कुमुदिनिबन रविप्रकाशकी डाढी ॥ जिहि विधि मीन सलिलते बिछुरे तिहि अतिगत अकुलानी । सूखे अधरकहि न आवै कछु वचन रहित मुखवानी ॥ उन्नत श्वास विरह विरहातुर कमलबदन कुम्हिलानी । निंदति नैननिमेष छिनहि छिन मिलन कठिन जिय जानी ॥ विनु बुधि बल विचित्र कृत शोभित चलि न सकी पनिहारी । सूरदास प्रभु अवधि गयो न तो प्राण तजत व्रजनारी ॥ ७७ ॥

राग मारू ॥ सब ब्रज घर घर एकै रीति । ज्यों कुरुखेत गडेको सोनौ त्यौं प्रभु तुम्हरी प्रीति ॥ वे सब परम विचित्र सयानी अरु सबही जग कीति । उनको ज्ञान सुनतही शठ भयो ज्यों बहुदिनकी भीति ॥ एकै गहन धरी उन हठ करि मेटि वेदविधि नीति । गोपवेष निज सूरश्याम लै रही विश्ववर जीति ॥ ७८ ॥

राग केदारो ॥ ब्रज जन दुखित अति तन छीन । रटत इकटक चित्र चातक श्याम घन तन लीन ॥ नाहिं पलटत वसन भूषन दगन दीपक तात । मलिन वदन बिलखि रहत जिमि तरनि हीन जलजात ॥ कहन जो तुम कहेउ सो रति मति पच्यो करि उपदेश । धरत नलनी बूँद ज्यों जल वचन नहिं परवेश ॥ धरे मुरली मोर चंद्रिका पीतपट बनमाल । हरी वह छवि एक अंगनि लपट श्याम तमाल ॥ दिवस बितवति सकल जन मिलि कथति गुण बलवीर । रैनि उडुपति निरखि तलफति मीन ज्यों जलतीर ॥ हौंहो करुणानाथ बंधो कहेउ ऊधो गहि पाइ । सूर प्रभु अब दरश दैकरि लेहु मरति जिआइ ॥७९॥

राग सारंग ॥ तबते इन सबहिन सचु पायो । जबते हरि संदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो ॥ फूले व्याल दुरेते प्रगटे पवन पेट भरि खायो ! फूचो यश मूचो को बरणन तेहुतौ सब बिसरायो ॥ निकसि कंदराहूते केहरि शिरपर पूंछ हिलायो । गह्वरते गजराज आइ अंगही सर्व गर्व बढायो ॥ ऊंचे वैसि विहंगम भामै शुक बनराइ कहायो । किलकि किलकि कुलसहित आपनी कोकिल मंगल गायो ॥ अब जिनि गहर करोहो मोहन जो चाहतहौ ज्यायो । सूर बहुरि ह्वैहै राधाको सब वैरिनिको भायो ॥ ८० ॥

राग धनाश्री ॥ आज विरहिनी विरह तुम्हारे कैसो रटतरही । चारि याम निशि तुम्हरोई सुमिरन और न बात कही ॥ बासर कथा कठिन मन करिकरि क्रम क्रम व्यथा सही । सन्ध्या शशि देखि उठि चलीं जब अंकन रहत गही ॥ मृगमद मलय कुमकुमा उरजल सरिता सेज बही । ते क्यों शीतल होहिं सूरप्रभु पिय जू विरहदही ॥ ८१ ॥

राग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी विकलविरहिनी पिलपतिविरह वियोग। अतिआरत न सम्हारत तन मन इकटक लोमग योग ॥ कतर मिलो लोचन वरषत अति दुख मुखके छबिरोयो। राहु केतु मानौ सुमीडि विधुआंक छुटावत धोयो ॥ अवला कहा योगमत जानै मन्मथ व्यथाबिगोयो। सूरदास क्यों नीर चुवत है नीरस बसन निचोयो ॥ ८२ ॥

राग सोरठ ॥ माधोजू सुनो ब्रजको प्रेम। बूझि मैं षटमास देख्यो गोपिकनको नेम ॥ ह्रदयते नहिं टरत उनके श्याम नाम सुहेत। अँसुव सलिल प्रवाह उरमनौं अरघ नैनन देत ॥ चमर अंचल कुच कलश मनो पाद्य पाणि चढाइ। प्रगट लीला देखि उनकी कर्म उठती गाइ ॥ देह गेह सनेह अर्पण कमल लोचन ध्यान। सूर उनको भजत देखत फीको लागत ज्ञान ॥ ८३ ॥

माधोजू सुनिये ब्रजव्यवहार। मेरो कह्यो पवनको भुसभयो गावत नन्दकुमार ॥ एक ग्वालि गोसुत ह्वै रेंगति एक लकुट कर लेति। एक ग्वालि मंडली करि बैठति छांक बांटिकै देति ॥ एक ग्वालि नटवत बहुलीला एक कर्मगुण गावति। बहुत भांति करि मैं समुझाई नेक न उरमें आवति ॥ निशिवासर याही ढँग सब ब्रज दिन दिन नवतन प्रीति। सूर सकल फीको लागत हैं देखत वह रँगरीति ॥ ८४ ॥

राग मलार ॥ बातैं बूझति यों बहरावति। सुनहु श्याम वै सखी सयानी पावसऋतु राधहिं न सुनावति ॥ घन गर्जत मनु कहत कुशलमति कूंजत गुहासिंह समुझावति। नहिं दामिनि द्रुम दवा शैलचढि फिरि बयारि उलटी झर धावति ॥ नाहिंन मोर बकत पिक दादुर ग्वालमंडली खगन खिलावत। नहिं नभ वृष्टि झरन झर ऊपर बूँद उचटि इत आवत ॥ कबहुँक प्रगट पपीहा बोलत कहि कुवेष करतारि बजावत। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन सो बिरहिनि इतनो दुख पावत ॥ ८५ ॥

राग नट ॥ नेकहू काहू सोच न कीन्हों। सुन ब्रजनाथ सबनके अवगुण मिलि मिलि है दुख दीन्हों ॥ ऋतुबसंत अनसमै अधममति पिक सहाउ लै धावत। प्रीतम संग न जानि युवति रुचि बोलेहु बोल न आवत ॥ सदा शरद ऋतु सकल कला लै सन्मुख रहत जुन्हाइ। सो सितपक्ष कुहू सम बीतत कबहुँ न देत दिखाइ ॥ त्रिविध समीर सुमनसौरभ मिलि मत्त मधुप गुंजार। जोइ जोइ रुचै सुकियो बांधि बल तजि मन सकुच बिचार ॥ रतिपति अति अनीति कीवेको कोटि धूमध्वज मानो। लैकर धनुष चितै तुम्हरो मुख अब बोलै तब जानौ ॥ इतिविधि सब नवीन पायो ब्रजकाढत बैर दुरासी। सूरदास प्रभु बेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी ॥ ८६ ॥

राग सारंग ॥ सबते परम मनोहर गोपी। नँदनंदनके नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी ॥ बरि कुबिजाके रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजै भजै निशि बासर नेकहू न कोपी ॥ ज्ञानकथा की मथि मन देखो ऊधो बहुधोपी। टेरति घरी छिन नेक न अँखिया

श्यामरूप रोपी ॥ जे तिहि तिहि हरिके अवगुणकी ते सबई तोपी । सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यों अधिक ओप ओपी ॥ ८७ ॥

राग सारंग ॥ मोमन उनईको भयो ॥ परचो प्रभु उनके प्रेमको समै तुमहूं बिसरि गयो ॥ तुमसों शपथ करि गयो माधव बेगि कह्योहो आवन । तिनहिं देखि वैसोई ह्वैगयो लग्यो उनहि मिलि गावन । समुझि परी षटमास बितेते कहां हुतो हों आयो । सूर अनकही दै गोपिनसों श्रवण मूँदि उठिधायो ॥ ८८ ॥

राग गंधार ॥ उनमें पांचो दिन जो बसिए । नाथ तुम्हारीसौं जिय उपजत फेरि अपनो यों कसिए ॥ वह विनोदलीला वह रचना देखेही बनि आवै । मोको कहां बहुरि वैसे सुख बडभागी सो पावै ॥ मनसा वचन कर्मना अबहैं कहत नहीं कछु राखी । सूर काढि डारचो ब्रजते ज्यों दूध मांझते माखी ॥ ८९ ॥

राग सोरठ ॥ माधोजू मैं अतिही सचुपायो । अपनो जानि सँदेश साजि करि ब्रजमें मिलन पठायो ॥ क्षमा करो तो करौं बीनती उनहिं देखि जो आयो । सकल निगम सिद्धान्त जन्म कर श्याम उन सहज सुनायो ॥ नाहिं श्रुति शेष महेश प्रजापति जो रस गोपिन गायो । कथा गंग लागी मोहिं तेरी उह रस सिंधु उमहायो ॥ तुम्हरी अकथ कथा तुम जानौ हमैं जिन नाथ बिसरायो । सूरश्याम सुंदरि इह सुनि सुनि नैनन नीर बहायो ॥ ९० ॥

राग मलार ॥ जोपै प्रभु करुणाके आलै । तौकत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख शालैं ॥ वहो विरदकी लाज दीनपति करि सुदृष्टि देखो । मोसों बात कहत किन सन्मुख कहा अवनि अवलेखो । निगम कहत वश होत भक्तिते सोऊ है उन कीनी । सूर उसाँस छाँडि हाहा ब्रज जल अँखियां भरिलीनी ॥ ९१ ॥

राग मारू ॥ सुनु ऊधो मोहिं नेक न बिसरत वै ब्रजवासी लोग । तुम उनको कछु भली न कीनी निशिदिन दियो वियोग ॥ यद्यपि वसुदेव देवकी मथुरा सकल राज सुख-भोग । तद्यपि मनहि बसत बंसीबट ब्रज यमुना संयोग ॥ वै उत रहत प्रेम अवलंबन इतते पठयो योग । सूर उसाँस छाँडि भरि लोचन बढचो विरहज्वर शोग ॥ ९२ ॥

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं । वृंदावन गोकुल तन आवत सघन तृणनकी छाहीं ॥ प्रात समय माता यशुमति अरु नंद देखि सुख पावत । माखन रोटी दह्यो सजायो अति-हित साथ खवावत ॥ गोपी ग्वाल बालसँग खेलत सब दिन हँसत सिरात । सूरदास धनि धनि ब्रजवासी जिनसों हँसत ब्रजनाथ ॥ ९३ ॥

भक्तबछल वसुदेवकुमार । चले एक दिन सुफलकसुतके गृह पंडवहेत विचार ॥ मिलो सो आय पाय सुधि मगमें वारबार परि पाइ । गयो लिवाय सुभग मंदिरमें प्रेम न बरनो

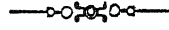
जाइ ॥ चरण पखारि धारि जल शिरपर पुनिपुनि दृगन लगाइ ॥ विविध सुगंध चीर आभूषण आगे धरे बनाइ ॥ धन्यधन्य मैं गृह धनि धनि मम धनिधनि भाग हमारे । जो प्रभुज्ञान ध्यान नहिं आवत तिन मम गृह पग धारे ॥ प्रभु तव माया अगम अमोघ है लहि न सकत कोउ पार । दीजै भक्ति अनन्य कृपाकरि होइ सो मम उद्धार ॥ अरु जेहि कारन प्रभु पगधारे कहिये सोउ विचारि । करहुँ ताहि तुमरी किरपातें आयसु माथे धारि॥ यह अक्रूरदशा जो सुमिरै सिखै सुनै अरु गावै । अर्थ धर्म कामना मुक्ति फल चारि पदारथ पावै ॥ हरिजी कह्यो मनोरथ तुम्हरो करिहैं श्रीभगवान । जो जानत सोई सो पावत यह निश्चय जिय जान ॥ तुम जानत हौ पाण्डवके सुत हैं अति हितू हमारे। कुरुपति अंध मोहवश तिनको देत सदा दुख भारे ॥ तात जाइ उनको तुम भेंटौ हमरी कुशल सुनावहु । बहुरौ समाचार सब उनके लै हमपै चलिआवहु ॥ यह कहि श्याम राम ऊधो मिलि अपने भवन सिधारे । सुफलकसुत आयसु माथे धरि पण्डवगृह पग धारे ॥ पहिले कौरवपतिसों भेंट्यो पुनि पण्डवगृह आए । पखरि चरन कुन्तीके पुनिपुनि सूनै गले लगाए ॥ कुशल भाषि सब यादवकुलकी प्रभुको कह्यो सन्देश ॥ भयो परम सन्तोष तबहिं सुनि कह्यो हम शरन तुम्हारी । कुरुपति अन्ध मोह पुत्रनके देत सदा दुख भारी ॥ पुनि कुरुपतिसों मिलि सुफलकसुत कह्यो बहुत समुझाइ । चारि दिवसके जीवन ऊपर तुम कत करत अन्याइ ॥ अन्याईको वास नरकमों यह जानत सब कोइ । गर्वप्रहारी हैं त्रिभुवनपति जो कछु करैं सो होइ ॥ कुरुपति कह्यो मैंहूं यह जानत पै मोहन न बसाय । नमसकार मेरो यदुपतिसों कहिबो गहिकै पाय ॥ सुफलकसुत सब कथा तहांकी आइ श्यामसों भाखी । सूरदास प्रभु सुनिकै तासों हृदय आपनी राखी ॥ ३४९४ ॥

॥ इति श्रीसूरसागर दशमस्कन्ध पूर्वार्धं समाप्त ॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

दशमस्कन्धोत्तरार्ध ।



जरासंध आगमन द्वारकाहेतु ।

राग मारू ॥ श्याम बलराम जब कंस मारचो । सुनि जरासंध वृत्तान्त अस सुतासे युद्धहित कटक अपनो हँकारचो ॥ जोरि दल प्रबल सो चल्यो मथुरापुरी सुन्यो भगवान जब निकट आयो । तब दुहूँ बीर दल साजिकै आपनो नगरते निकसि रणभूमि छायो ॥ दुहूँदिशि सुभट बाँके बिकट अति जुरे मनो दोउ दिशि घटा उमडि आई । सूर प्रभु सिंहध्वनि करत जोधा सकल जहां तहँ करन लागे लराई ॥ १ ॥

राग मलार ॥ मानहु मेघ घटा अति गाढी । बरषत बाण बूँद सेनापति महानदी रण बाढी । जहां बरन बरन ब्रादर बानैत अरु दामिनि करि करिवार । उडत धूरि धुँरवा धुर दीसत शूल सकल जलधार ॥ गर्जनि पणव निसान शंखरव हय गज हींस चिकार । प्रगटत दुरत देखियत रविसम द्वै वसुदेवकुमार ॥ कुञ्जर कूल रमित अतिराजत तहँ शोणित सलिल गँभीर । धनुष तरंग भँवर स्यंदन पग जलचर सुभट शरीर ॥ उडत ध्वजा पताक रु छत्र रथ तरुवर टूटत तीर । परमनिशंक समर सरिता तट क्रीडत यादव वीर ॥ सूने किये भुवन भूपतिके सुवस किए सुरलोक । छिनक मध्य हरि हरचो कृपा करि उन सबहिनके शोक ॥ आनंदे मधुबनके वासी गई नगरकी रोक । जरासंधको जीति सूर प्रभु आये अपने ओक ॥ २ ॥

अध्याय ॥ ५१ ॥ कालयवनदहन मुचुकुन्द उद्धार । राग सारंग ॥ बार सत्रह जरासन्ध मथुरा चढि आयो । गयो सो सबदिन हार जात घर बहुत लजायो ॥ तब खिसिआइकै कालयवन अपने सँग ल्यायो । हरिजी कियो बिचार सिन्धुतट नगर बसायो ॥ उग्रसेन सब कुटुम्ब लै ताठौर सिधायो । अमरपुरीते अधिक सुख तहां लोगन पायो ॥ कालयवन मुचुकुन्दसों हरि भस्म करायो । बहुरि आइ भरमाइ अचल सब ताहि जरायो ॥ जरासंध वहँते बहुरि निजदेश सिधायो । श्याम राम गये द्वारका सूरज यश गायो ॥ ३ ॥

अथ द्वारकाप्रवेश । राग कल्याण ॥ देखरी आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजत है जेहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चञ्चल

चमर पताका । श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदै कियो निशि राका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उर माला । जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छविकर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा । मानहु अरुित कमल मंडलमें कूजत है कलहँसा ॥ मदन गोपाल देखियत है अब सब दुख शोक बिसारी । बैठेहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो वहां सिधारी ॥ आनंदित चित जननि तातहित कृष्ण मिलन जिए भाए । सूरदास दुहुँ कुल हित कारण माधो मधुपुरी आए ॥ ४ ॥

अध्याय ॥ ५२ ॥ द्वारकाकी शोभा । राग कल्याण ॥ दिन द्वारावति देखन आवत । नारदादि सनकादि महामुनि ते अवलोकि प्रीति उपजावत ॥ विद्रुम फटिक पची कञ्चन खजि मणिमय मंदिर बनै बनावत । जितने तर नर नारि उपर खग सबहिनको प्रतिबिंब दिखावत ॥ जल थल रंग विचित्र बहुत विधि अवलोकत आनन्द बढावत । भूलि रहे अति चतुर चितै चित कौन सत्य कछु मर्म न पावत ॥ बन उपवन फल फूल सुभग सर शुक सारिका हंस पारावत । चातक मोर चकोर ददत पिक मनहु मदन चटसार पढावत ॥ धाम धाम संगीत सरस गति बीणा वेणु मृदंग बजावत । अति आनंद प्रेम पुलकित तनु जहां तहां यदुपतियश गावत ॥ निशिदिन रहत विमान रूढ रुचि सुरवनितानि सँग सब आवत । सूर श्याम क्रीडत कौतूहल अमरन अपनो भवन न भावत ॥ ५ ॥

राग सारंग ॥ श्रीमनमोहन खेलत चौगान । द्वारावती कोट कञ्चनमें रच्यो रुचिर मैदान ॥ यादव वीर बराइ बटाई इक हलधर इक आपै ओर । निकसे सबै कुँवर असवारी उच्चैःश्रवाके पोर ॥ लीले सुरंग कुमैत श्याम तेहि परदे सब मन रंग । बरन अनेक भांति भांतिनके चमकति चपला वेग ॥ जीन जराइ जु जगमगाइ रहे देखत दृष्टि भ्रमाइ । सुर नर मुनि कौतुक सब लागे इकटक रहे लुभाइ ॥ जबहीं हरि लै चले गोइकुदासौ लाइ । तबहीं औचकही वेल हलधर पाइ ॥ कुँवर सबै घेरि फेरे फेरत छुडत नहिंनै गुपाल । बलै अछत छल बल करि सूरदास प्रभु हाल ॥ ६ ॥

रुक्मिणीपत्रिका आवन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो । हरि सुमिरण जब रुक्मिणि करचो । हरि करि कृपा ताहि तब बरचो ॥ कहौं सो कथा सुनो चितलाई । वहै सुनै सो रहै सुखपाई ॥ कुन्दनपुरको भीष्म राई । विष्णु भक्तिको ता मन चाई ॥ रुक्म आदि ताके सुत पांच । रुक्मिणि पुत्री हरि रंग राच ॥ नृपति रुक्मसों कह्यो सुनाई । कुँवरि योग्य वर श्रीयदुराई । रुक्म रिसाइ पितासों कह्यो । सुनि ताको अंतर्गत दह्यो ॥ रुक्म चँदेरी विप्र पठायो । ब्याह काज शिशुपाल बुलायो ॥ सो बरात जोरि तहां आयो । श्रीरुक्मिणिके जिय नहिं भायो ॥ कह्यो मेरो पति श्रीभगवान । उनहि बरोंके तजौं परान ॥ भीष्म सुता रुक्मिणी वाम । सूर जपति निशिदिन वह नाम ॥ ७ ॥

राग कान्हरो ॥ द्विज पतिया दै कहियो श्यामहिं । कुंदन पुरकी कुँवरि रुक्मिणी जपति तुम्हारे नामहिं ॥ पालागौं तुम जाहु द्वारावति नँदनन्दनके ग्रामहिं । कंचन चीर पटंबर देहौं करकंकन जे नामहिं ॥ यह शिशुपाल मजैत श्रीदीनबंधु ब्रजनाथ कबै मुख देखिहौं । कहि रुक्मिणि मनमाहँ सबै सुख लेखिहौं ॥ गावहिं सब सहचरी कुँवरि तामसकरि हेरचो । सब दिन सुखसाथिनी आज कैसे मुख फेरचो ॥ मेरे मन कछु और है तुम कछु गावति और । प्राण तजौंगी आपनो देखि असुर शिरमौर ॥ तिहूँ लोकके धनी मनी-तुमहीकी सोहै । सत्यकीर्ति औ पुरुषहि समरथ सब मोहै ॥ पर पुरुषारथ काग हंसनीके घर आवै । कामधेनु खरु लेइ काल अमृत उपजावै ॥ कुटुँब वैर मेरे परे वरनि वरे शिशुपाल । करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसे चपै शृगाल ॥ भुवन चतुर्दश राज सकल सुर नर मुनि देवा । कर जोरे शशि सूर पवन पानी करैं सेवा ॥ अबहिं औरकी और होती कछु लागै बारा । ताते मैं पाती लिखी तुम प्राण अधारा ॥ कहति भूँख औ नींद जिवन हौं जानति नाहीं । अनदेखे ये नैन लगे लोचन पथवाहीं ॥ कै यदुपति लै आवहू करौं प्राणलगि घाउ । बाजै शंख जानिहौं सांची आयो यादवराउ॥जो मांगौ सो देउँ लेहु माधौ सँग आए । कोटि यज्ञफल होइ पिता वहि दरशन पाए ॥ रोइ रुक्मिणी यों कह्यो धरो पाणि मैं माथ । यह पाती लै पिता दीजियो प्राणनाथके हाथ ॥ विप्रभवन रथ चढयो चलत तब बार न लाई । छपन कोटिके मधि राजत हैं यादवराई ॥ छाँडि सकुच पाती दई तब पूँछी कुशलात । जानि चीन्ह पहिचानि कुँवर मन फूले अंग न मात॥आपुन झारी माँगि विप्रके चरण पखारे । इती दूरि श्रम कियो राज द्विज भए दुखारे॥पाती बाँचिन आवई माँग्यो तुरत विमान । लोचन भरिभरि आवही मानहु कर जलपान ॥ लीन्हों विप्र चढाइ बोलि बलसों कहि सारा । सकल सभा जिय जानिकसे साजे हथिआरा ॥ कहहु नाथ कहां आवहीं कियो कौनपर छोहु । भीषमकै रुक्मिणिहरण सावधान सब होहु ॥ आवत देख्यो विप्र जोरि कर रुक्मिणि धाई । कहा कहैगो आनि हिए धकधकी लगाई ॥ विप्र आनि माला दए कहे कुशलके बैन । कुँवरि पत्यारो तब कियो जब रथ देख्यो नैन ॥ गए कंचुकि बन्द टूटि छूटि हृदय सो पाइ । करति मनहिंमन सेव निकट रथ दयो देखाइ ॥ तिहूंलोकके कन्तहौ हों दासी प्रभु जानि । रुक्मिणि बिनती करतिहै लाजहि आपुहि मानि ॥ बैठि असुर सब सभा रुक्मसों मतौ बिचारचो । आयो सुन्यो अहीर मनों यहि काल हँकारचो ॥ गाइ चरावन ग्वाल है आयो मुजरा देन । देखहु ढीठो दूरिते आयो भातहि लेन ॥ सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहिं जाई । परपञ्ची है कान्ह कछू मति करै ढिठाई ॥ कुँवरि गौरि पाँयन परी मनवाँछित फल जानि । हौं यदुपति वर पाइहौं वदन धरौं दोउ पानि ॥ गौरि कहै सु कुँवरि पाँय मेरे जिनि लागहि । कहा कुटुंबके बैन नैग श्रीमति बैरागहि । आधो श्रीवृषभानुको आधो दीन्हों तोहिं ॥ राजसोहाग बढो सबै कहा निहोरो मोहिं ॥ अब गावहु करि सगुन बोलि मुख अमृत बानी । दूलह श्रीनँदलाल दुलहिनी रुक्मिणिरानी ॥ याको जननी दीजियो करत सखिनसों नेह । हौं यदुपति घर जाति हौं जाको है यह देह ॥ अंबर बाणी भई सजल बादर दल

छाए। देव तेतीसौ कोटि जो यज्ञ तवासे आए॥हरन रुक्मिणी होत है दुहूँ ओर भई भीर। अति आघात कछु नाहिंन सूझत बज्र चलिहि ज्यों नीर॥ लागे रुक्म गोहारि संग शिशुपाल न छोडै। छांडहि कान विशाल युद्ध ऐसो को वोडै॥ चक्र धरे हरि आवहीं सुनि असुरन जियगाज। टेरि कह्यो शिशुपालसों कीजो कंकन लाज॥ सकल सैन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हों। आगे इहि सों काम रुक्मिणी सों प्रण कीन्हों। सात सिखा शिर राखिकै तब बूझी कुशलात। कंचनराजको काज सँवारचो भूषनवो यह काज॥ नगर बधाई बाजि नाथ बहुतै सुख मान्यो। पूरण कीन्हों नेह रुक्मते सत्यहि जान्यो॥ कंकन छोरचो द्वारका बाज्यो अनंद निसान। भक्ति मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान॥ ८॥

राग कान्हरो॥ पतियां दीजै श्याम सुजानहिं। मुख संदेश बनाइ विप्र ज्यों प्रभु न झूठ करि मानहि॥ श्रीहरि योग्य रुक्मणी लिखितं बिनती सुनहि प्रभो धरि कानहि। बांचत बेगि आइबो माधव जात धरे मेरे प्रानहि॥ समुझत नहीं दीन दुख कोऊ सिंह भखहि शृगालके पानहि। मणि मर्कट कर देत मूढमति मृगमद रजमें सानहि॥ कबलगि सहौं दुख दरश दीन भई मीन बिना जलपानहिं। सूरदास प्रभु अधर सुधाघन। बरषि देहु जिय दानहिं॥ ९॥

राग सारंग॥ द्विज कहिबो हरिसों समुझाइ। सकत शृगाल सिंहको भोजन दुर्बल देखिकै छीने खाइ। परमिन गए लाज तुमहींको हंसिनि ब्याहि काग लै जाइ। काहेको नेम धर्म्म व्रत कीन्हों माघमास जल शीत अन्हाइ॥ श्वान संग सिंहिनि रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ। सूरदास प्रभु बेगि न आवहु प्राण गये कहा लैहो आइ॥ १०॥

द्विज कहिये यदुपति सन बात। वेदविरुद्ध होत कुन्दनपुर हंसको अंश काग लै परात॥ जिनि हमरो अपराध बिचारी कन्या लिख्यो मेटि गुरु तात। ताते यह द्विज बेगि पठायो नेम धर्म मर्यादा जात॥ तनु आत्मा समर्पित तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात। कृष्णसिंह बलि धरी तिहारी लेबेको जंबुक अकुलात॥ कृपा करहु उठि बेगि चढहु रथ लग्न समै आवहु परभात। सूरदास शिशुपाल पानि गहै पावक जारि करौं तनुघात॥ ११॥

राग धनाश्री॥ हौं प्रभु जन्मजन्मकी चेरी। भीषमभवन रहतहौं मैं ज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी॥ प्रातकाल शिशुपाल कालते यदुपति आवैं बेगि सबेरी। कछु विपरीति बात नहिं आवै उपजी प्रीति ग्राह गज केरी। सूरदास प्रभु कृष्णप्रीति बिनु प्राणबिना तनु लागत पेरी॥ १२॥

राग मारू॥ द्विज बेग धावहु कहि पठावहु द्वारकाते जाइ। कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ॥ दीन ह्वैकरि करहुँ बिनती पाती दीजहु जाइ। रुक्म

बरवस व्याहि देहै गनै पितहि न माइ ॥ लग्न लै जु बरात साजी उनत मंडप छाइ। पैज करि शिशुपाल आए जरासंध सहाइ ॥ हंरुको मैं अंश राख्यो काग कत मँडराइ। गरुड-वाहन कृष्ण आवहु सूर बलि बलि जाइ ॥ १३ ॥

अथ द्विज संदेश कृष्णप्रति वदत ॥ राग आसावरी ॥ बाल मृगीसी भूली आँगन ठाढी। नवल विरहिनी चित चिंता बाढी ॥ तुम्हरो पंथ निहारै स्वामी। कबहिं मिलहुगे अंतर्यामी ॥ मंडप पुर देखे उर थरथर करै। मनु चहुँदिशि दौ लागी धीरज तन न धरै ॥ अपने विवाहके दुंदुभी सुनि सुनि। चकृत मन मानो महासिंह ध्वनि ॥ सखिनकी माल जाल जिय जानति। व्याधरूप शिशुपालहि मानति ॥ सूरदास युगभरि बीतत छिनु। हरि नवरंग कुरंग पीव बिनु ॥ १४ ॥

अध्याय ॥ ५३ ॥ कुन्दनपुर श्रीकृष्ण गए ॥ राग सारंग ॥ सुनत हरि रुक्मिणिको संदेश। चढि रथ चले विप्रको संगलै कियो न गेह प्रवेश ॥ बारंबार विप्रको पूँछत कुँवरि वचन सो सुनावत। दीनवचन करुणानिधान सुनि नयननीर भरि आवत ॥ कह्यो हलधरसों आवहु दललै मैं पहुँचतहौं धाई। सूर प्रभु कुंडिनपुर आए विप्रजु जाइ सुनाई ॥ १५ ॥

कुँवरि सुनि पायो अति आनंदन। मनहीं मनहिं विचार करत इह कब मिलिहैं नँद-नंदन ॥ हार चीर पाटंबर देकरि विप्रहि गेह पठायो। पै इह भेद रुक्मिणी निज मुख काहू कहि न सुनायो ॥ हरि आगमन जानिकै भीषम आगे लेन सिधाये। सूरदास प्रभु दरशन कारन नगर लोग सब धाये ॥ १६ ॥

राग आसावरी ॥ देख रूप सब नगरके लोग। बारंबार अशीश देत सब यह वर बन्यो रुक्मिणी योग ॥ जो कछु चतुराई विधनामों जानत युगरस रीति। तौ अजहूं लौं राजसुतापति हरि ह्वैहै शिशुपालहि जीति ॥ जो राजा कौतुक चलि आए ते मुख निरखि कहत हैं बात। परत न पलक चकोर चंद्रलौं अवलोकन लोचन अकुलात ॥ मनसाको हीता जगजीवन सुन्दर वर वसुदेव कुमार। सूरदास जाके जिय जैसी हरि कीन्हें तैसो व्यवहार ॥ १७ ॥

सखी वचन रुक्मिणी प्रति सुही ॥ राग बिलावल ॥ सोच सोच तू डार उठि देख दीन-दयालु आयो। निरखि लोचन प्रणत मोचन कुँवरिफल बांछो सो पायो ॥ सुनत भइ अकुलाइ ठाढी ज्यों मृतक विधि दै जिवायो। चढि सदन वह वदनकी छवि परखि दीनो दव बुझायो ॥ ले बलाइ सुकर लगायो निरखि मंगलचार गायो। नैनआरति अर्घ्य आँसू पुहुप तन मन धन चढायो ॥ जानि हौं ब्रजनाथ जियकी कियो सो जो तुम बतायो। अपहरन पुन वरन वश हरि जानि हौं केहि योग भायो ॥ भक्तके वश भक्तवत्सल विदुर सातो साग खायो ॥ मुदित ह्वै गई गौरि मंदिर जोरि कर बहु बिधि मनायो ॥ प्रगट तेहि छिन सूरके प्रभु बाँह गहि कियो वाम भायो। कृपासागर गुणन आगर दासि दुख दीनहि विहायो ॥ १८ ॥

रुक्मिणी हरन ॥ राग आसावरी ॥ रुक्मिणी देवी मन्दिर आई । धूप दीप पूजा सामग्री अली संग सब ल्याई ॥ रखवारीको बहुत महाभट दीन्हें रुक्म पठाई । ते सब सावधान भए चहुँदिशि पंछी इहां न जाई ॥ कुँवरि पूजि गौरी बिनती करि वर देहु यादवराई । मैं पूजा कीन्ही या कारण गौरी सुनि मुसुकाई ॥ पाइ प्रसाद अंबिका मंदिर रुक्मिणि बाहर आई । सुभट देख सुन्दरता मोहे धरणि गिरे मुरझाई ॥ यहि अंतर यादवपति आए रुक्मिणि रथ बैठाई । सूर प्रभू पहुँचे अपने घर तब सबहिन सुधि पाई ॥ १९ ॥

राग आसावरी ॥ याही ते शूल रही शिशुपालहि । सुमिरि सुमिरि पछितात सदा वह मान भंगके कालहि ॥ दुलहिनि कहति दौरि दीजहु द्विज पाती नंदके लालहि । वर सुबरात बुलाइ बडे हित मनसि मनोहर बालहि ॥ आये हरषि हरन रुक्मिणि रिस लगी दनुज उर शालहि । सूरज दास सिंह बलि अपुनो लीनी दलकि शृगालहि ॥ २० ॥

अध्याय ॥ ५४ ॥ श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह ॥ राग सोरठ ॥ श्याम जब रुक्मिणी हरि लै सिधारे । सुनि जरासंध शिशुपाल धाए ॥ शाल्व दंतवक्र बनारसीको नृपति चढे दल साजि मानो रविहि छाए । सांगकी झलक चहुँदिशि चपला चमकि गजगर्ज सुनत दिग्गज डेराए ॥ श्याम बलराम सुधि पाइ सन्मुख भये बाणवर्षा करन लगे सारे । रुक्मिणी भय कियो श्याम धीरज दियो बानसों बान तिनके निवारे ॥ राम हल मूशल संभारि धायो बहुरि विपुलरथ औ सुभट सब संहारे ॥ रुंडपर रुंड धुकि परे धरि धरणिपर गिरत ज्यों संग कर वज्रमारे ॥ जरासंध जीवते भजो रणखेतते शाल दंतवक्र याविधि पराई । प्रातके समै ज्यों भानुके उदयते भलै होइ जात उडगन नशाई ॥ गह्यो भगवान शिशुपालको जीवते ताहिसों वचन याविधि उचारे । रुक्मिणी लिये मैं जात तुम देखतहि पै नहीं हरष कछु मन हमारे ॥ पुरुषको भाजिबेते मरनहै भलो जाइ सूरलोक द्वारे उघारे । पुरुषको हार अरु जीत दोउ होतहै हर्ष अरु सोच नाहिं चित्तधारे ॥ बीज बोइये जोइ अंतलोनिये सोइ समुझि यह बात नाहिं चित्तधरई । करन कारण महाराजहैं आपही तिनहिं चित राखि नित धर्म्म करई ॥ बहुरि भगवान शिशुपालको छाँडिदियो गयो निज देशको सो खिसाई । शस्त्र धनु छाँडिकै भाजि नरपति गये यादवनहेत हरि दै लुटाई ॥ रुक्म यह सुनि चल्यो सौंह करि नृपनपै श्याम बलरामको बाँधि ल्याऊँ । आइ इहां कह्यो शिशुपालसो मैं नहीं आपनो बल तुम्हैं अब दिखाऊँ ॥ बाणवर्षा लग्यो करन या भांति कहि कृष्ण ज्यों तिनहिं मगमें निवारचो । आपने बाणसों काटि ध्वज रुक्मके असुर औ सारथी तुरत मारचो ॥ रुक्म भू परचो उठि युद्ध हारिसों करचो हारि सकल शस्त्र ताके निवारे । बहुरि खिसिआइ भगवानके ढिग चल्यो ज्यों चलत पतंग दीपक निहारे ॥ खड्ग लै ताहि भगवान मारन चले रुक्मिणी जोरि कर बिनय कीयो । दोष इन कियो मोहिं क्षमा प्रभु कीजिए भद्र करि शीश जिवदान दीयो ॥ राम अरु यादवन सुभट ताके हते रुधिरके नहर सरिता बहाई । सुभट मनो मकर अरु केश सेवार ज्यों धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई ॥ बहुरि भगवानके निकट आये सकल देखिकै रुक्मको हँसे सारे कह्यो भगवानसों कहा यह कियो तुम छाँडिबो हुतो या भलो मारे ॥ मरेते अप्सरा आइ

ताको वरति भाजिहैं देखि अब गेह नारी। रुक्मिणीसों कह्यो सोच नहिं कीजिए होत है सोइ जो होनिहारी॥ रुक्म शिरनाइ या भाँति बिनती करी नाथ मैं मर्म तुम्हरो न जान्यो। ब्रह्म तुम अनंत तुमहिं कारण करण मैं कौन भाँति तुमको पहिंचान्यो॥ दीनबन्धु कृपासिन्धु करुणाकर सुनि बिनय दयाकरि ताहिको छाँडि दीन्हों। बहुरि निज नगर पैठ्यौ न सो लाज करि बनहि तिन आपनो बास कीन्हों॥ आइ भीषम दियो दाइज ताठौर बहु श्याम आनन्द सहित पुर सिधाये। सुनत द्वारावती मारु उतसों भयो सूर जन मंगलाचार गाये॥ २१॥

राग आसावरी॥ देखहिं दौरि द्वारकावासी। सुनत सकल पुर जीत रुक्मिणी लै आए यदुपति अविनासी॥ लेति बलाइ करत नवछावरि बलि भुज दंड कनक अतित्रासी। नर नारीके नैन निरखि करिचातक तृषित चकोरी प्यासी॥ कर आरती कलश लैधाई चीन्हि न परति कुलवधू दासी। देश देश भयो रहसि सूर प्रभु जरासंध शिशुपालकी हाँसी॥ २२॥

राग धनाश्री॥ आवहु री मिलि मंगल गावहु। हरि रुक्मिणिहि लिये आवतहैं इह आनँद यदुकुलहि सुनावहु॥ बाँधो बंदनवार मनोहर कनक कलश भरि नीर भरावहु। दधि अक्षत फल फूल परमरुचि अंगन चन्दन चौक पुरावहु॥ कदलीयूथ अनूप कुशल दल सुरंग सुमन लै मंडल छावहु। हरद दूब केशर मग छिरकौ भेरी मृदंग निसान बजावहु॥ जरासंध शिशुपाल नृपतिते जीते हैं उठि अर्घ्य चढावहु। बल समेत तनु कुशल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु॥ २३॥

बिवाह वर्णन॥ राग विलावल॥ छंद त्रिभंगी॥ श्री यादवपति व्याहन आयो। धनि धनि रुक्मिणि हरिबर पायो॥ छंद॥ हरिश्यामघनतन परम सुन्दर तडित वसन बिराजई। अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकला मनों भ्राजई॥ कमल मुख कर कमल लोचन कमलमृदुपद सोहही। कमल नाभी कमल सुंदर निरखि सुर मुनि मोहही॥१॥

सुधा सरोवर छिटकि अनूपम। ग्रीव कपोत मनो नासा कीरसम॥ छंद॥ कीरनासा इंद्रधनु भ्रू भँवरसे अलकावली। अधर विद्रुम बज्रकन दाडिम किधौं दशनावली। खौर केशरि अति विराजत तिलक मृगमदको दियो। कामरूप विलोकि मोह्यो वास पद अंबुज कियो॥ २॥

वसुदेवनंदन त्रिभुवन मनहरन। मुकुट तरुन मनो मकर कुंडल श्रवन॥ छंद॥ मकर कुंडल जटित हीरा लाल शोभा अति बनी। पन्ना पिरोजा लगे बिच बिच चहूँ दिशि लटकत मनी॥ सेहरो शिर पर मुकुट लटक्यो कण्ठ माला राजई। हाथ पहुँची वीर कांगन जरित मुंदरी भ्राजई॥ ३॥

उर बैजन्ती माल शोभा अतिबनी। चरणन नूपुर कटितट किंकिनी॥ छन्द॥ किंकिनी कटि चरण नूपुर शब्द सुन्दर कुंजही। कोकिला कलहंस बाल रसालते नाहिं पुंजही॥

तुरई बाजनि बीना ताजनि चपल चपला सेहरी । जौन जरित जराव बागहि लगे सब मुकुतासरी ॥ ४ ॥

चढि यदुनन्दन बनित बनाइकै । साजि बरात चले यादव चाइकै ॥ छन्द ॥ चले साजि बरात यादव कोटि छप्पन अतिबली । उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति तली ॥ शंख भेरि निशान बाजहिं नचहिं शुद्ध सोहावनी । भाट बोलैं बिरद नारी वचन कहैं मन भावनी ॥ ५ ॥

सुरपति आयो सँगहै शची । शुद्ध मुहूरत चौरी विधिरची ॥ छंद ॥ रची चौरी आपु ब्रह्मा जरितखम्भ लगाइकै । इन्द्र सुरदारनि सहित बैठे तहां सुखपाइकै ॥ चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरिबैठे तहां । निरखि सुर नर सकल मोहे रहिगए जहँके तहां ॥ ६ ॥

कुँवारि रुक्मिणी कमला अवतरी । शशि षोडश कला शोभा तनुधरी ॥ छंद ॥ कुँवरि शशि षोडशकला शृङ्गार करिल्याई अली । विविधविधि कियो ब्याह बिधि वसुदेव मन उपजी रली ॥ सुर पुहुप बरसैं हरषिकै गन्धर्व किन्नर गावहीं । शारदा नारद आदि सुयश उच्चार जयति सुनावहीं ॥ ७ ॥

विप्रगण उदिए बहु युगुति सुरति करि । किए अयाची याचक जन बहुरि ॥ छन्द ॥ बहुरि निज मन्दिर सिधारे करि सुभद्रा आरती । देवकी पीबो वार नीरददई अशीशा भारती ॥ युवा युवति खेलाइ कुल व्यवहार सकल कराइबो ॥ जनन मन भयो सूर आनँद हरषि मंगल गाइबो ॥ ८ ॥

राग सारंग ॥ तोसों गारि कहा कहिदीजै हो यदुनन्दन । जग वपु नाउँ कौनको लीजै हो यदुनन्दन ॥ छन्द ॥ वपु जगत काको नाउँ लीजै हो यदुज्ञाति गोतन जानिए । गुण-रूप कछु अनुहारि नाहीं का बखान बखानिए ॥ सब शोधि रह्यो न शोध पायो बिन सुनेका कीजिए । बलिजाऊँ यादवपति तुम्हारी गारिका कहि दीजिए॥तेरी मैया सब जग खोयो । सो कीजो बल न बिछोयो ॥ छन्द ॥ सो कीजो नवल करि बिगोयो फिरत निशि वासर बनी । शिर श्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली बिन तनी ॥ कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भज भीतर लए । बलि जाउं यादवपति तुम्हारी माया कुल बिनु तुम किए ॥ कछु कहि न जाइ गति ताकी । नित रहत मदनमद छाकी ॥ नित रहत मन्मथ मदहि छाकी निलज कुच झाँपत नहीं । तब देखि देखि जु छयल मोहित बिकल ह्वै धावत तहीं ॥ इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा महीं । यही भांति कथा अनेक ताकी कहतहू न परै कही ॥ वहतौ नित नवतनु रति जोरै । चित चितवनिही महँ है चोरै ॥ छन्द ॥ अति चतुर चितवनि चित चुरावति चलत धर धीर न धरै । फिरि चमक चोप लगाइ चंचल तनहिं तब अन्तर करै ॥ कछु भौंहकी छवि निरखि नैननि सु को जन व्रतते टरै । इहि भांति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सबसों करै ॥ इनही भूलि रहे सब भोगी । वश कीने ब्राह्मण जे योगी ॥ वश किये ब्राह्मण बहुत योगी छत्रपति केते

कहौं । और अग जग जीव जल थल गनत सुनत न सुधि लहौं ॥ ते परम आतुर काम कातुर निरखि नित कौतुक नए । यहि भाँति समधिन संग निशिदिन फिरत भ्रम भूले भए ॥ अब तुम हौ परम सयाने । तुम ठाकुर सब जग जाने ॥ छंद ॥ ठाकुर सबनके कृपानिधि हरि सुयश सब जग गाइए । या लोकके उपहास आपुन ताहि बरजि मिटाइए ॥ कहि एक ही भल पांच माधो और अनत न सूझिए । सुनि सूर श्याम सुजान इहि कुल अब न ऐसी कीजिये ॥ २४ ॥

अध्याय ॥५५॥ प्रद्युम्नजन्म ॥ राग बिलावल ॥ प्रद्युम्न जन्म शुभ घरी होऊ । काम अवतार लीन्हों विदित बात यह तासु सम तूल नाहिं रूप दोऊ ॥ पृथ्वीपर असुर शंबर भयो अति प्रबल तिन्ह उदधि माँह तेहि डारि दीन्हों । मक्ष लियो भक्ष सो भक्ष गह्यो असुर तब कौनसों लेइकै भेंट कीन्हों ॥ मक्षके उदरते बाल परकट भयो असुर मायावती हाथ दीन्हों । कह्यो तेहि काम परमाण नारद वचन सुमिरि अति हर्षसों ताहि लीन्हों ॥ भयो जब तरुण तब नारि तासों कह्यो रुक्मिणी मात हरि तात तेरो । नाम ममरति विदित बात जानत जगत काम तुअ नाम पुनि पुरुष मेरो ॥ असुरको मार परिवारको देहि सुख देउँ विद्या तोको मैं बताई । बिना विद्या असुर जीत सक्ही नहीं भेदकी बात सब कहि सुनाई ॥ प्रद्युमन सकल विद्या समुझि नारिसों असुरसों युद्ध माँग्यो प्रचारी । काटि करवारि लियो मारि ताको तुरत सुरन आकाश जयध्वनि उचारी ॥ बहुरि आकाश मधि जाइ द्वारावती मातमन मोद अतिही बढायो । भयो यदुवंश अति रहस मनो जन्म भयो सूर जन मङ्गलाचार गायो ॥ २५ ॥

अध्याय ॥ ५६ ॥ मणिहेतु सत्यभामा जाम्बवतीविवाह ॥ राग सारंग ॥ हरिदर्शन सत्राजित आयो । लोगन जान्यो आवत आदित हरिसों जाइ सुनायो । हरि कह्यो रवि न होइ सत्राजित मणि है ताके पास । रवि प्रसन्न होइ दीन्ही ताको यह ताको परकास ॥ आइ गयो सोऊ तेहि अवसर तेहि हरि कह्यो सुनाइ । यह मणि अति अनुपम है सो सुनि रहि न सक्यो ललचाइ ॥ एक दिन ताते अनुज सो माँगी ले गयो अखेटक काजा । ताको मारि सिंहमणि लै गयो सिंह हत्यो रिछराजा ॥ ऋच्छराज वह मणि तासों लै जाम्बवतीको दीन्हीं । प्रसमनको विलम्ब भयो तब सत्राजित सुध लीन्ही ॥ जहां तहांको लोग पठायो काहू खोज न पायो । सूरदास सत्राजित भ्रमसों चोरी हरिहि लगायो ॥ २६ ॥

अध्याय ॥ ५७ ॥ शतधन्वा बध अक्रूर संवाद ॥ राग सोरठ ॥ शुकदेव कहत सुनहु हो राजा । ज्ञानी लोभ करत नहिं कबहूँ लोभ बिगारत काजा ॥ करिकै लोभ अमृत जो पीवै विष समान सो होई । विष अमृत होइ जाइ लोभ बिन यह जानत जन कोई ॥ एक समय यदुपति औ हलधर पण्डवगृह पगधारी । शतधनवा अरु सुफलकसुत मिलि कीन्यों मन्त्र बिचारी ॥ सत्राजितको हति मणि लीजै ज्यों जानै नहिं कोई । ऐसो समय बहुरि फिरि नाहीं पाछे होइ सो होई ॥ निशि अँधियारि जाइ शतधन्वा मारि ताहि मणि ल्यायो ।

फैलगई यह बात नगर सब तब मनमें पछितायो ॥ सतभामा करि शोक पिताको यदुपतिपास सिधाई । शतधन्वा जो कृत्य करी सो हरिसों कहि समुझाई ॥ सुनि यदुपति हलधर उठि धाये वेगि विलम्ब न लाई । लैहैं वैर पिता तेरेको जैहै कहां पराई ॥ तब मणि डारि अक्रूरपास वह मिथिलापुरको धायो । शत योजन मग एक दिवसमें तुरँग जाइ पहुँचायो ॥ द्वारावति पैठत हरिसों सब लोगन खबरि जनाई । मिथिलापुरी जाइ तिन मारयो पै मणि वहां न पाई ॥ तब हरि कह्यो हत्यो बिन दूषण हलधर भेद बतायो । वहां जाइ खोज तुम कीजो द्वारावति धरि आयो ॥ हलधर रहे गदायुध सीखन हरि द्वारावति आये । सतभामा मन हरष भयो जब समाचार सब पाये ॥ सुफलकसुत मनहीं मन सकुच्यो करौं कहा अब काजा । देत न बनै बनै नहिं राखत उर डेरात उठि भाजा । सब यादव मिलि हरिसों इह कह्यो सुफलकसुत जहां होइ । अनावृष्टि अतिवृष्टि होति नहिं इह जानत सब कोइ ॥ कीजै दोष क्षमा अब ताको हरि तब ताहि बुलायो । कह्यो कहा कहिए अब तुमसों तिन शिर नीचो नायो ॥ पुनि कह्यो मणि सतभामाको दै याते भय भयो तोहीं । मणि उनदै बहुरो तेही दइ कह्यो लोभ नहिं मोहीं ॥ लोभ भलो नाहीं दूनो पुर लोभ किये तप जाई । सूर लोभ कीनो सो विगोयो शुक यह कहि समुझाई ॥ २७ ॥

अध्याय ॥ ५८ ॥ पञ्चपटरानीनका विवाह श्रीकृष्णसों भयो ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरयो है जिन जहां । हरि तेहि दरशन दीन्हों तहां ॥ हरि सुमिरन कालिन्दी कीन्हों । हरि वहँ जाइ दरश तेहि दीन्हों ॥ पाणिग्रहण पुनि ताको कीन्हों । सबै भाँति ताको सुख दीन्हों ॥ हरिहि मित्रविंदा चित ध्यायो । हरि तहां जाइ विलंब न लायो ॥ करि विवाह ताही लै आयो । तासु मनोरथ सकल पुजायो ॥ हरिचरणन सीता चित दीन्हों । ताको पिता परण यह कीन्हों ॥ सात बैल इह नाथै जोइ । सीता व्याह ताहि सँग होइ ॥ हरितहँ जाइ तासु प्रण राख्यो । धन्य धन्य सबकाहू भाष्यो ॥ ताके पिता व्याह जब कियो । दायज बहु प्रकार पुनि दियो ॥ बहुरो भद्रा सुमिरो हरी ॥ गये पास तब विलम न करी ॥ ऐसेही त्रिभुवनपति राई । ताके मनकी आश पुराई ॥ बहुरि लछमना सुमिरन कीन्हों । ताहि स्वयंवरमें हरि लीन्हों ॥ पांचौ बारि व्याहि घर आये । सूरदास यश मंगल गाये ॥ २८ ॥

द्वारकाप्रवेश शोभा वर्णन ॥ राग मलार ॥ देखो माई हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ तप कठिन कर्म्म सब कीजतहै जिहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि पानि विराजत चंचल चमर पताका । श्वेत छत्र मनु शशि प्राचीदिशि प्रगट्यो रजनी राका ॥ उपजत छवि कर अधर शंख निश सुनियत दुष्ट प्रशंसा । मानहु अरुन कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा ॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उर माला । जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एकही

काला । आनंदित सुत बंधु जननि पितु कृष्णमिलन पियभावै । सूरदास प्रभु द्वारका-वासिनि प्राणनाथ हिय भावै ॥ २९ ॥

अध्याय ॥ ५९ ॥ भौमासुरवध ॥ नृपकन्यामोक्ष ॥ सुरतरु आगमन ॥ षोडशसहस्र रानी विवाह ॥ राग गौरी ॥ सतभामासों इती बात जबते न कही री । किंतिक कठिन सुरतरु प्रसूनकी या कारण तू रूठि रही री ॥ परमुख सुख जनाउ न दीने बिन काजै रिस देह दही री । अपनीसौं सुनि सतभामा तैं मैं मन बच यह सुधि न रही री ॥ सूनो निपट अकेलो मंदिर चंद्रकला जनु राहु गही री । तुव वियोगकी पीर कठिन अति सुकहि सूर क्यों जाति सहीरी ॥ ३० ॥

राग आसावरी ॥ रटत कृष्ण गोविंद हरि हरि मुरारी । भक्तभयहरन असुर अंतकारी ॥ षट दश सहस कन्या असुर बन्दिमें नींद अरु भूँख अहनिशि बिसारी । प्रीति तिनकी सुमिरि भये अनुकूल हरि सत्यभामा हृदय यह उपाई ॥ कल्पतरु देखिबेकी भई साध मोहिं कृपा करि नाथ ल्यावहु देखाई । सत्यभामा सहित बैठे हरि गरुडपर भौमासुर नगर गए तुरत धाई ॥ एकही बान पाषानको कोट सब हुतो चहुँ ओर सो दियो ढहाई । गरुड चहुँ पासके नाग लियो निगलि जल बरषिकै अग्नि ज्वाला बुझाई ॥ करे हरि शंख-ध्वनि जग्यो तब असुर सुनि कोप करि भवनते निकसि धायो । देखिकै गरुडको लगो ताहृदय दव कठिन तिर शूल तब गहि चलायो ॥ असुर शिर टेक तब कह्यो निज नृप-तिसों नहीं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे । युद्धको करत छाजत नहीं है तुम्हैं सुनो महा-राज चाहत हमारे ॥ कियो तब युद्ध उन क्रुद्ध होइ श्यामसों हरि कह्यो गरुड याहति प्रचारी ॥ गरुड सुनि धाइ गह्यो जाइ ताको तुरत नैनहू शीश डारे प्रहारी ॥ तासु पुत्रन बहुरि युद्ध हरिसों कियो मारते सोउ कादर डेराने । असुर कटि कटि परे कोउ उठि उठि लरे कोउ डर डर विदिश दिश पराने ॥ तब असुर अग्नि जल बान डारन लग्यो तासु माया सकल हरि निवारी । असुरके तनहिको लग्यो कलपन तुरंग गज उडि चले लागी बयारी ॥ असुर अजरूढ होइ गदा मारै फटकि श्याम अँग लागि सो गिरैं ऐसे । बालके हाथते कमल अमल नालयुत लागि गजराजतन गिरत जैसे ॥ आप जगदीश सब शीश ता असुरकी मारि तिरशूल सोइ काटि डारे । छांडि सो प्राण निर्वाणपदको गयो सुर पुहुप बर्षि जै जै उचारे ॥ पृथ्वी गहि पाइ माला कुंडल छत्र लै जोरि कर बहुरि विनती सुनाई । नाथ मम पुत्रको दीजिए परमगति हरि कह्यो पुत्रको मुक्ति पाई ॥ बहुरि गये तहां कन्या हुतीं सब जहां निरखि हरि रूप सो सब लुभाई ॥ चरणही लागि बड़ भागि लखि आपने कृपा करि हरि सो निजपुर पठाई ॥ बहुरि गयो इंद्रपुर इंद्र रह्यो पाँइ परि कल्पतरु वृक्ष तासों मँगाई । त्रिदशपति मोति अरु रत्न कुंडल दई वृक्ष लै आप निजपुरी आई ॥ बहुरि बहु रूप धरि गए हरि सबन घर ब्याह करि सबनकी आश पूरी । सबनके भौन हरि रहहिं सब रैन दिन सबनसों नेक नहिं होत दूरी ॥ सबनको पुत्र दशदश कुवरि एक एक दै सकल धर्म गृह किए सिखाई । कोटि ब्रह्मांड नायक सो वसुदेव सुत सूर सोइ नँदनंदन कहाई ॥ ३१ ॥

अध्याय ॥ ६० ॥ रुक्मिणीभक्तिपरीक्षा । राग बिलावल ॥ भक्तबछल हरि भक्त उधारन । भक्ति परीक्षाके हित कारन ॥ रुक्मिणिसों बोले सति भाई । हम जानी तुमरी चतुराई ॥ राउ चंदेरीको शिशुपाल । जाको सेवत सब भूपाल ॥ तासों तेरी भई सगाई । तैं पाती क्यों हमहिं पठाई ॥ जाति पांति उन सम हम नाहीं । हम निर्गुण सब गुण उनपाहीं ॥ उन सम नहिं हमरी ठकुराई । पुरुष भलेते नारि भलाई ॥ निःकंचन जिनमें मम वासा । नारि सँग मैं रहौं उदासा ॥ जो कहै मोहिं काहे तुम ल्याये । ताको उत्तर द्यों समुझाये ॥ कुंडिनपुर बहु भूपति आये । तिनके हृदय गर्वसों छाये ॥ बरजोरी मैं तोहिं हरि ल्यायो । उनके मनके गर्व नशायो ॥ इह सुनि रुक्मिणि भई बेहाल । जानि परचो नहिं हरिको ख्याल ॥ लै उसाँस नैनन जल ढारे । मुखते वचन न कछुक उचारे ॥ ताकी दशा देखि हरि जानी । इन मम भक्ति भली पहिंचानी ॥ हँसि बोले तब शारँग पानी । प्राण प्रिया तुम क्यों बिलखानी ॥ मैं हांसी करि बात चलाई । तुम्हरे मन यह सांची आई ॥ आंसू पोंछि निकट बैठारी । हँसी जानि बोली तब प्यारी ॥ कहँ तुम त्रिभुवनपति गोपाल । कहां बापुरो नर शिशुपाल ॥ कहँ चंदेरी कहँ द्वारावति । जाके सरबर नहिं अमरावति ॥ तुम अमर वह जनमै मरै । मूरख उन तुम सरबर करै ॥ तुमसन और नहीं यदुराई । यही जानि मैं शरणन आई ॥ इह सुनि हरि रुक्मिणिसों कह्यो । ज्यों तुम मोको चितमें चह्यो ॥ त्योंही हम चित चाहत तुमसों । नहिं अंतर कछु हमसों तुमसों । यदुपतिको यह सहज सुभाउ ॥ जो कोउ भजै भजहि तेहि भाउ । जो इहलीला हितकरि गावै । सूर सो प्रेम भक्तिको पावै ॥ ३२ ॥

अध्याय ॥ ६१ ॥ प्रद्युम्नविवाह रुक्म कलिंगराजावध । राग मारू ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम यज्ञ जप इहै तप नेम ब्रत यहै मम प्रेम फल यही पाऊं ॥ श्याम बलराम प्रद्युम्नके व्याहहित रुक्मके देश जबहीं सिधाये । कलिंगको राउ अरु रुक्म बलभद्रसों कपट करि सारि पासा खिलाये ॥ दांव बलरामको देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे । देववाणी भई जीत भई रामकी ताउपै मूढ नाहीं सम्हारे ॥ कलिंगको राउ करि हँसी लाग्यो करन वनवसनहार कहा खेल जानो । सभाके लोगहू लगे हांसी करन राम तब हृदयमें क्रोध आन्यो ॥ रुक्म औ कलिंगको राउ मारचो प्रथम बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे । सूर प्रभु राम बलराम रणजीत भये प्रद्युम्न ब्याहि निज-पुर सिधारे ॥ ३३ ॥

अध्याय ॥ ६२ ॥ ऊषाअनिरुद्ध विवाह वर्णन । राग मारू ॥ कुँवर तन श्याम मनो काम है दूसरो सपनमें देखि ऊषा लोभाई । चित्ररेखा सकल जगतके नृपनकी छिनकमें मुरति तब लिखि देखाई ॥ निरखि यदुवंशको रहस मनमें भयो देखि अनिरुद्धसों युद्ध मांडचो । सूर प्रभु ठडी ज्यों भयो चाहै सो त्यों फांसि करि कुँवर अनिरुद्ध बांध्यो ॥ ३४ ॥

अनिरुद्ध व्याह ॥ अध्याय ॥६३॥ राग मारू ॥ श्याम बलराम यह सुनत धाये । आइ नारद कह्यो द्वारकानाथसों बाणसुर चोर अनिरुध बँधाये ॥ छोंहनी दोइ दशहुतो हरिसँग कटक जातही नगर ताको लुटायो । देखि यह असुरसन्मुख भयो श्यामके रुद्र निजसेन लै तहां आयो ॥ रुद्र भगवान अरु बान सांबक भिरे राम कुंभांड मांडी लराई । सैनपति कोपि प्रद्युम्नसों भिरचो सांतुकुंकर दोऊ भिरत धाई ॥ तेज भगवानको पाय जलावन लगे असुरदल चल्यो सबही पराई । रुद्र तब कोपि करि अग्निबरषा करी श्याम जल वर्षि डारचो बुझाई ॥ पुनि महादेव जो बाण संधान लियो आप भगवान ताको प्रहारचो । देखि यह युद्ध सुर असुर चक्रत भये लख्यौ तब बाण जो रुद्र धारचो ॥ बाण तब आइ भगवान सन्मुख भयो बाज वर्षा करन लग्यो भारी । एकहू बाण आयो न हरिके निकट तब गह्यो धनुष सारंगधारी॥एकही बाण संधान रथके तुरग ध्वजा अरु धनुष सब काटिडारी । शंखको शब्द करि लिये असुर तेज हरि ध्वनि रही फैलि नभ पृथ्वी सारी ॥ देखि यह असुरकी मातु धाई नगन तुरत भगवानके निकट आई । नगन त्रिय देखिवे जगत नाहिंन कह्यों जानि इह हरि रहे मुख फिराई ॥ असुर यह घात तकि गयो रणते सटकि विपतिज्वर दियो तब शिव पठाई । सप्तज्वर युद्धकरि कियो विह्वल तिसै तिन तबहिं आइ बिनती सुनाई ॥ प्राणदाता तुहीं स्थल सूँछिम तुही सर्व आत्मा तुही धर्मपालक । ज्ञान तुही कर्म्म तुही विश्वकर्मा तुही अनंत शक्ति प्रभु असुर शालक ॥ संपत्ति अरु विपतिको मिलि चलै प्रभु तहां जहां नहिं होइ सुमिरन तिहारो । वरत दंडवत मैं तुम्हैं करुणाकरन कृपा करि ओर मेरे निहारो ॥ सुनत यह वचन हरि कह्यो अब मौन करि कृपाकरि तोहिं परवीर धारी । संपति रु विपतिको भय न होइ है तिसै सुनै जो यह कथा चित्त धारी ॥ विपति ज्वर कह्यो शिर नाइ हरिको तुरत बाणसुर बहुरि रणभूमि आयो । चक्रपरिहार हरि कियो ताको निरखि रुद्र शिर नाइ तब कहि सुनायो ॥ प्रगट तुम कपट तुम तुमहिं सब आत्मा निकारचो अग्नि रुद्रक तिहारी । बुद्धि विधि चंद्रमा मन अहंकारमें धरि चरण रोम तू पृथ्वि सारी ॥ शीश आकाश अरु श्रवण दशहूं दिशा इंद्र कर लोकनृप वपु तिहारो । बाण जगदीश मोहिं जान मम ईश तुम राखि तेहि अब नाथ हाथचारो॥ हँसि जगदीश कह्यो रुद्र जो तोहिं भजै तहां मैं जाउँ यह प्रण हमारो । कियो प्रह्लाद कुल अभै मैं प्रथमही बाण कियो अमर भाषै तिहारी ॥ करैं जो सेव तुम्हरी सो मम सेव है विष्णु शिव ब्रह्म मम रूप सारी । बाण अभिमान मनमांह धारचो हुत्यो यों विदित हाथ ताते सँहारी ॥ रुद्र अरु बान अनिरुद्ध सन्मान करि तुरत भगवानके निकट ल्याये । बहुरि ऊषा दई व्याहि दाइज सहितकरै सुमिरन तिसै भै न होई । कह्यो जो व्यास शुकदेव भागवतमें कही अब सूरजन गाइ सोई ॥ ३९ ॥

अध्याय ६४ नृगराजा उद्धार ॥ राग सारंग ॥ अविगति गति जानी न परै । राईते पर्वत करिडारै राई मेरु करै ॥ नृग राजा नित सहस गऊ दै करत हुत्यो जलपान । नृगते

गिरगिट कीन्हें ताको को करि सकै बखान ॥ कूपमाहिं तेहि देखि बालकन हरिसों कह्यो सुनाई । कृपानिधान जानि अपनो जन आये तहँ यदुराई ॥ अंधकूपते काढि बहुरि तेहि दरशन दै निस्तारो । सूरदास सब तजि हरि भजिये जब तब करै उधारो ॥ ३६ ॥

अध्याय ॥ ६९ ॥ बलभद्र वृन्दावन आये ॥ राग बिलावल ॥ श्याम रामके गुण नित गावौं । श्याम रामहीसों चित लावौं ॥ एक बार हरि निजपुर छये । हलधरजी वृन्दावन गये ॥ यह देखत लोगन सुख पाये । जान्यो राम श्याम दोउ आये ॥ नंद यशोमति जब सुधि पाई । देह गेहकी सुरति भुलाई ॥ आगे ह्वै लैबेको धाई । हलधर दौरि चरण लपटाई ॥ बलको हित करि गले लगाय । दै अशीश बोली ता भाय ॥ तुमतौ भली करी बलराम । कहाँरहे मनमोहन श्याम ॥ देखी कान्हरकी निठुराई । कबहूँ पातीहू न पठाई ॥ आपु जाइ वहां राजा भए । हमको बिछुरि बहुत दुख दये ॥ कहो कबहुँ हमरी सुधि करत । हमतो उन बिनु बहु दुख भरत ॥ कहा करैं वहां कोउ न जात । उन बिनु पलपल युगसम जात ॥ यहि अंतर आए सब ग्वार । बैठे सबन यथा व्यवहार ॥ नमस्कार काहूको कियो । काहूको भरि अंकम लियो ॥ गोपी जुरीं मिलीं वन आई । अतिहित साथ अशीश सुनाई ॥ हरि करि सुध सुधि बुधि बिसराई । तिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥ कोउ कहै हरि व्याही बहु नार । तिनके बढ्यो बहुत परिवार ॥ उनको इह हम देत अशीस । सुखसों जीवैं कोटि बरीस ॥ कोऊ कहैं हरिहि नहिं चीन्हों । बिन चीन्हें उनको मन दीन्हों ॥ निशिदिन रोवत हमैं बिहाइ । कहो कहा हम करैं उपाइ ॥ कोउ कहै इहां चरावत गाइ । राजा भये द्वारका जाइ ॥ काहेको वै आवैं इहां । भोग विलास करत नित उहां ॥ कोउ कहै हरि रीत सब नई । और मित्रनको सब सुख दई ॥ विरह हमारो कहां रहि गयो । जिन हमको अतिही दुख दयो ॥ कोउ कहै जे हरिजीकी रानी । कौन भांति हरिको पतियानी ॥ कोउ कहै चतुर नारि जो होई । करि है नहीं निवारो सोई ॥ कोउ कहै हम तुम क्यों पतिआई । उनके हित कुल लाज गवांई ॥ हरि कछु ऐसो टोना जानत । सबको मन अपने वश आनत ॥ कोउ कहै हम हरि सब बिसराइ । कहा कहैं कछु कह्यो न जाइ ॥ हरि उनके सुमिरि नयन जल ढारे । नेक नहीं मन धीरज धारे ॥ इह सुनि हलधर धीरजधार । कह्यो आइ हैं हरि निरधार ॥ जब बल इह संदेश सुनायो । तब कछु इक धीरज मन आयो ॥ बलितहँ रहे बहुरि दुइ मास । ब्रजवासिनसों करत विलास ॥ सबसों मिलि पुनि निजपुर आये । सूरदास हरिको गुण गाये ॥ ३७ ॥

राग सारंग ॥ वारुणी बल घूर्मलोचन विहरत बन सचुपाए । मनहु महा गजराज विराजत करनि यूथ सँग लाए ॥ मुकुलित केश सुदेश देखियत नीलबसन लपटाए । भरि अपने कर कनक कटोरा पीवति प्रियहि चुखाए ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत तरस भौंह चढाये । उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आये॥

इन्द्र धनुष भुव चाप अधिक छबि वरबानि तनके भाये। सर्वस रीझिदेत अपने रस सूर श्याम गुण गाये ॥ ३८॥

राग सारंग ॥ वारुणी बलराम पियारी। गौतमसुता भगीरथ वीवर सबहिनते सुंदरि सुकुमारी ॥ ग्रीवां बाहु गला रन गाजत सुखरजनी सतिभाय सवांरी। संकर्षणके सदा सुहागिनि अति अनुराग भाग बहुभारी ॥ बसुधा धर जु वाम गिरिराजत भ्राजति सकल लोक सुखकारी। प्रथम समागम आनँद आगम दूलह वर दुलहिनी दुलारी ॥ रतिरस रीति प्रीति परगट करि राम कामपूरण प्रतिपारी। सूर सु भाग उदित गोपिनके हरिजू रति भेंटे हलधारी ॥ ३९॥

कालिंदी सुन कह्यो हमारी। बोली बेगि चलहि दन विहरत न्हाहिं शरीर भयो श्रम भारी ॥ अतिहि सतर होइ जिनि सरिता छोडि गर्व या गुणको गारो। आपनि सौंह कृष्णकी कानी राखतहौं यश मान तुम्हारो ॥ इतहु महातम मोहिं देखावत भवँर तरंग प्रवाह पसारो। इन खुनसन गोपाल दोहाई हल करि खैंचि करो नारो ॥ शिव विरंचि सनकादि सकल मुनि बोल वचनको ऊधो टारो। सूर सुभद्र श्यामके भैयहि निपट नदी जानत मतवारो ॥ ४० ॥

यमुना आइ गई बलदेव। जो तुमको हौं सौंह करी हौं संतत सादर सेव ॥ सुर नर मुनि जन गन गंधर्व ए सब बचननके देव। सूर भनो यह मानु करत हौ अवलंबनकी टेव ॥ ४१ ॥

कालिंदी है हरिकी प्यारी। जैसे मोपै श्याम करत हैं तैसी तुम करहु कृपा निनारी ॥ यमुना यशकी राशि चहूं युग यम जेठी जगकी महतारी। सूर कछू जियजिनि दुख पायो कहा करौं यह टेव तिहारी ॥ ४२ ॥

राग रामकली ॥ श्रीयमुनाजी तिहारो दरश मोहिं भावै। बंशीबटके निकट बसत हौं लहरनिकी छबि आवै ॥ दुखहरनी सुखदेनी श्रीयमुना प्रातहिं जो यश गावैं। मदनमोहनजू की अधिक पियारी पटरानी जू कहावै ॥ वृंदावनमें रास विलासै मुरली मधुर बजावै ॥ सूरदास दंपति छबि निरखत विमल विमल यश गावै ॥ ४३ ॥

अध्याय ॥ ६६ ॥ पुंडरीक उद्धार ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोय। हरिके शत्रु मित्र नहिं दोय ॥ ज्यों सुमिरै त्यौंहीं गति होइ। हरिहरिहरि सुमिरहु सब कोइ ॥ पुंडरीक काशीको राई। हरिको सुमिरै वैर सुभाइ ॥ अहनिशि रहै एहि लवलाई। क्यों करि जीतौ यादवराई ॥ द्वारावति तिन दूत पठायो। ताको ऐसे कहि समुझायो ॥ चारिभुजा मम आयुध धारा ॥ वासुदेव मैं ही निरधारा ॥ योंहीं कह्यो यदुपतिसों जाई। कपट तजौ की करो लराई ॥ दूत आइ हरिसों सब कह्यो। हरिजी तेहि यह उत्तर दयो जो तैं कही सो हम सब जानी। पुंडरीककी आयु सिरानी ॥ कहो जाइ करैं युद्ध विचार।

सांच झूँठ होइ है निरुआर ॥ दूत आइ निज नृपहिं सुनायो । तब उन मनमें युद्ध ठहरायो ॥ जहां तहांते सबन बुलाइ । तब लगि यदुपति पहुँचे आइ ॥ पुंडरीक सुनि सन्मुख आयो । पांच क्षोहनी दल सँग ल्यायो ॥ सेना देखि अस्त्र संभारी । यदुपतिके लोगनपर डारी ॥ हरि कह्यो तू आजहूं संभारी । सांच झूँठ जिय देख बिचारी ॥ ताकी मृत्यु आइ नियरानी । जो हरि कही सो मन नहिं आनी ॥ यदुपति तब निज चक्र सँभारचो । ताकी सेना ऊपर डारचो ॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई । जाकी महिमा देवन गाई ॥ कोऊ भजो काहू परकारा । सूरदास सो उतरै पारा ॥ ४४ ॥

अध्याय ॥ ६७ ॥ द्विविद व सुतीक्षण वध ॥ राग मारू ॥ द्विविद करि क्रोध हरिपुरी आयो । नृप सुदक्षिण जरचो जरी बाराणसी धाइ धावन जबहिं यह सुनायो ॥ द्वारकामाँह उत्पात बहुभाँति करि बहुरि रेवत अचल गयो धाई । तहां हूँ देखि बलरामकी सभा को करन लागो निडर ह्वै ढिठाई ॥ लख्यो बलराम यह सुभटवंत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारचो । द्विविद लै शालवृक्ष संमुख भयो फुरत करि राम तनु फेकि मारचो ॥ राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियो द्विविद शिर फटगयो लगत ताके । बहुरि तरु तोरि पाषाण फटकन लग्यो हल मुशल करन परहार बांके ॥ वृक्ष पाषाणको जब वहां नाश भयो मुष्टिका युद्ध दोऊ प्रचारी । रामकी मुष्टिका लगे गिरचो सो धरणिपर निकसि गयो प्राण सुधिबुधि बिसारी ॥ सुरन आकाशसे पुहुप वर्षा करी करि नमस्कार जैजै उचारे । देवता गये सब आपने लोकको सूर प्रभु राम निजपुर सिधारे ॥ ४५ ॥

अध्याय ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ सांब विवाह ॥ राग आसावरी ॥ श्यामबलरामको सदा गाऊं । श्यामबलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहूंमाहिं नहिं शीश नाऊं ॥ श्याम सुनि सांब गयो हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहँ स्वयंवर रचायो । देखते सबनके ताहि बैठारि रथ आपने देशको पलटि धायो ॥ कर्ण दुर्योधनादिक लियो घेरि तेहि कर्ण ढिग आइ बहु बाण मारे । सांब तेहि काटि निज बाणसंधान करि तुरँग रथ नाशकरि सब संहारे ॥ हतेउ पुनि सारथी एकही बाण करि परचोसो धरणि गिरि सुधि बिसारी । एक इक बाण भेज्यो सकल नृपनपै मनो सब साथ कीन्हें जोहारी ॥ देखि यह सुरन धनि धन्य सबहिन करचो पुनि करण अश्वरथके संहारे । सांबपै कोपि बैठारि रथ आपने सुभट सब हस्तिनापुर सिधारे॥ आइ नारद कही तुरत भगवानसों चले भगवान हलधर बोलाई । कह्यो मैं जाइकै ल्याइहौं सांबको कौरवनसों सदा हित हमारो । प्रीतिकी रीति समुझाइकै नतरु मैं एकही मुशल सबको सँहारो ॥ जाइ बलराम भेंटे सकल कौरवन बहुरि तिन सबन पुनि कहि सुनायो । सांबसों चूक जो भई बालक हुतो तुम्हैं नाहिं बूझिये जो बंधायो॥ कह्यो दुर्योधन अति कोप तेहि दोष नहिं दोष सब लगै पुर गये हमारे । जो मने कियो सन्मान निज सभामें बहुरि इन ओर हित करि निहारे ॥ कहां जाम्बवंत सुता सुत कहां मम सुता बुधिवंत पुरुष यह सब सँभारै । अरु सदा देत यादवसुता कौरवन कहत अब बात बल सुनि बिचारै ॥ कह्यो बलराम यह सांब सुत श्यामको रुद्र विधि रेणु जाकी न पावैं । इंद्र

सुर सकल दरबार ठाढे रहैं सिद्ध गंधर्व गुण सदा गावैं ॥ बहुरि करि कोप हल अग्रपर चक्र धर कटक भे दरर चाहत डुबायो । कौरवन मिलि बहुतभाँति विनती करी दोष तिनको द्विजन मिलि क्षमायो ॥ सांबको लक्ष्मना सहित ल्याये बहुरि दियो दाइज अगिन गिन न जाई । सूर प्रभुराम बलराम अतुल कौतुहल करैं आनंद निजपुरी आई ॥ ४६ ॥

अध्याय ॥ ७० ॥ नारदसंशय द्वारका आगमन ॥ राग धनाश्री ॥ हरिकी लीला देखि नारद चक्रत भये । मन यह करत विचार गोमती तर गये ॥ अलख निरंजन निर्विकार अच्युत अविनाशी । सेवत जाहि महेश शेष सुर माया दासी ॥ धर्म स्थापन हेतु पुनि धारचो नर अवतार । ताको पुत्र कलत्रसों नहिं संभवत पियार ॥ हरिके षोडश सहश रहीं पतिवर्ता नारी । सबसों हरिको हेत सबै हरिजीकी प्यारी ॥ जाके गृह दुइ नारि होंइ ताहि कलह नित होइ । हरि विहार केहि विधि करत नैनन देखों जोइ ॥ द्वारावति ऋषि पैठ भवन हरि जूके आयो । आगे होइ हरि नारिसहित चरणन शिर नायो ॥ सिंहासन बैठारिकै प्रभु धोये चरण बनाइ । चरणोदक शिर धरि कह्यो कृपा करी ऋषि राइ ॥ तब नारद हँसि कह्यो सुनो त्रिभुवन पतिराई । तुम देवनके देव देतहौं मोहिं बडाई ॥ विधि महेश सेवत तुम्हैं मैं बपुरो केहिमाहीं । कहत तुम्हैं ब्रह्मण्य देवता यामें अचरज नाहीं ॥ और गेह ऋषि गये तहां देखे यदुराई । चमर ढोरावत नारि करत दासी सेवकाई ॥ ऋषिको रुखे देखि हरि बहुरि कियो सन्मान । उहँऊते नारद चले करत ऐसो अनुमान ॥ जा गृहमें मैं जाऊँ श्याम आगेही आवत । ताते छाँडि सुभाउ जाउँ अब कैसे धावत ॥ जहां नारद श्रम करि गये तहां देखे घनश्याम । पालनहू क्रीडा करत कर जोरे खडी बाम ॥ नारद जहँ जहँ जाइँ तहँ तहाँ हरिको देखै । कहुँ कछु लीला करत कहूं कछु लीला पेखै ॥ योंहीं सब गृहमें गये भयो न मन विश्राम । तब ताको व्याकुल निरखि हँसि बोले घनश्याम ॥ नारद मनकी भर्म तोहिं यतनो भरमायो । मैं व्यापक सब जगत वेद चारों मुख गायो ॥ मैं कर्ता मैं भोक्ता मोहिं बिनु और न कोइ । जो मोको ऐसो लखै ताहि नहीं भ्रम होइ ॥ बूझो सब घर जाइ सबै जानत मोहि योंहीं । हरिकी हमसों प्रीति अनत कहुँ जात न क्योहीं ॥ मैं उदास सबसों रहौं इह मम सहज सुभाइ । ऐसो जानै मोहिं जो मम माया न रचाइ ॥ तब नारद कर जोरि कह्यो तुम अज अनन्त हरि । तुमसे तुम बिन द्वितिय कोउ नाहीं उत्तम दुरि ॥ तुम माया तुम कृपा बिनु सकै नहीं तरि कोइ । अब मोको कीजै कृपा ज्यों न बहुरि भ्रम होइ ॥ ऋषि चरित्र मम देखि कछू अचरज मति मानो । मोते द्वितिया और कोऊ मनमाहिं न आनो॥मैंही कर्ता मैं ही भुक्ता नहिं यामें संदेहु । मेरे गुण गावत फिरौ लोगनको सुख देहु ॥ नारद करि परणाम चले हरिके गुण गावत । बारबार उरहेत ध्याइ हृदयमें ध्यावत ॥ इह लीला करि अचरज की सूरदास कहिगाइ । ताको जो गावै सुनै सो भवजल तरिजाइ ॥ ४७ ॥

अध्याय ॥ ७१ ॥ भगवान हस्तिनापुर चले जरासंध वधहेत ॥ राग मारू ॥ चले हरिधर्म सुअनके देश । बन्दित जन भूभार उतारन काटन बन्दी कठिन नरेश । जब प्रभु जाइ

शंखध्वनि कीनी ठाढे नगर प्रवेश । सुनि नृपवधू सकल उठिधाई डारि चरण रजु केश ॥ शीश नाइ कर जोरि कह्यो तब नारद सभासहेस । तत्क्षण भीम धनंजय माधो धन्य द्विजनको भेस ॥ पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेश । यांच्यो जाइ अतिथि रूप ह्वै आशिश युद्ध नरेश ॥ जरासंधको युद्ध अथरबल रहत न क्षत्रीलेश । सूर श्यामदिन सातवीत तिन तोरिब कोटि कलेश ॥ ४८ ॥

राग कान्हरो ॥ राजरवनि गावत हरिको यश । रुदन करत सुतको समुझावति राखति श्रवणन प्यार सुधारस ॥ तुम जिनि जीव डरहुरे बालक कृपासिंधुके शरन सदा वसु । तजि जिय सोच तात अपनेको करि प्रतीति निश्चय ह्वै ह्वै हँसु ॥ जिन प्रभु जनकसुताप्रण राख्यो अरु रावणके शीश सकल नशु । सोई सूर सहाय तुम्हारो मोचन गोप गयंद महापशु ॥ ४९ ॥

राग धनाश्री ॥ इहां और कासों कैहौं गरुडगामी । दीनबन्धु दयासिन्धु अशरनके शरन सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी ॥ इन जरासंध मदअंध मन मान मथि बाँधि बिनु काज बल इहां आने । भए आरूढ अति क्रोध जिनि गिरि गुहा रहत भृंगी क्रीट ज्यों त्रास माने ॥ नाहिंनै नाथ जिय सोच धन धरणिको मरनते अधिक यह दुख सतावै । भृत्यकी रीति तजि होत मागध सकल नाथ जिनि दमत उद्वेग पावै ॥ मधु कैटभ मथन मुर भौम केशी भिदन कंस कुल काल अनुसाल हारी । जानि युगजूपमें भूष तद्रूपता बहुरि करिहै कलुष भूमि भारी ॥ वदत नृप देत भैभीत उर भीरत सुनत हरि सूर सारथि बोलायो । भयो आरूढ तकि ताहि उत्तर दियो जाइ सुख देहु या हेतु आयो ॥ ५० ॥

अध्याय ॥ ७२ ॥ जरासंधवध राग मारू ॥ कंसखलदलन रन राम रावणहतन सँहारी । दीन दुखहरन गज मुक्तकारी ॥ नृपति चहुँदेशके बन्दि जरासंधके रैनि दिन रहत जिय दुखित भारी ॥ सुने यदुनाथ इह बात तब पथिकसों धर्मसुतके हृदय यह उपाई । राजसूयज्ञको कियो आरंभ मैं जानिकै नाथ तुमको सहाई ॥ भीम अर्जुन सहित विप्रको रूप धरि हरि जरासंधसों युद्ध मांग्यो । दियो उनपै कह्यो तुम कोउ क्षत्रिआ कपटकरि विप्रको स्वांग स्वांग्यो ॥ हरि कह्यो भीम अर्जुन दोऊ सुभट ये कृष्ण मैं देखि लोचन उघारी । वचन जो कही प्रतिपाल ताको करो कै सभामाँह सत जाहु हारी ॥ पार्थ अरु तुम सामर्थ सम युद्धको भीमसों उनय कह सुनादिई । बीस औ सप्त दिन यों गदायुद्ध कियो दोउ बलवंत कोउ लियो न श्याम तृण चीहर देखराय दियो भीमको भीम तब हर्षि ताको संहारचो । जरा जरासंधकी संधि जोरचो हुत्यो भीम ता संधिको चीर चारचो ॥ नृपनको छोरि सहदेवको राज्य दियो देव नर सकल जै जै उचारचो । सूर प्रभु भीम अर्जुन सहित तहांते धर्मसुत देशको पुनि सिधारचो ॥ ९१ ॥

अध्याय ॥ ७३ ॥ हस्तिनापुर आये ॥ राग सारंग ॥ जीत्यो जरासंध बन्दि छोरी । युगल कपाट बिदारि बाट करि लतनि जुही संधियोरी ॥ विषम जाल बल बांधि व्याधलौं नृप खग अवलि बटोरी । जनु सुअहेरो हति यादवपति शुहापीजरी तोरी ॥ निकसे देत अशीश एकमुख गावत कीरति कोरी । जनु उड चले विहंगमको गन कटी कठिन पगडोरी ॥ मिटिगए कलह कलेश कुलाहल जनु करि बीती होरी । सूरदास प्रभु अतुलित महिमा जो कछु कह्यो सो थोरी ॥

राग मारू ॥ जीत्यो जीत्यो हो यदुपति रिपुदल मारचो । तउ न तजत हठ परम शठ ना जानौ कुबुद्धि जड कै वारहै विदारचो ॥ बारबार मूढ उठि खेलत बालक सुठि आनित ईंधन दौरि दौरि संचारचो । ऐसे इहु नृप नर सकल सकेलि धरके साककरन हृदरस बकुल जारचो ॥ कह्यो न काहूको करै बहुरि बहुरि अरै एकही पाइदै इक पग पकरि पछारचो । सूर स्वामी अतिरिस भीमकी भुजाके मि ब्यौंतत वसन ज्यों तासु तन फारचो ॥ ५२ ॥

समूह राजा विनती ॥ राग बिलावल ॥ जाहिं कहां अपराधभरे । तुम माता तुम पिता जगतगुरु तुमहिं सहोदर बंधु हरे ॥ वसन कुचील देह अति दुर्बल उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे । राजा सबै बंदिते छोडे आइ कृष्णके पाँइ परे ॥ सावधान करि बिदा दई हरि उठे कमल कर शीशधरे । सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपाते भवसागरके मांझ तरे ॥ ५३ ॥

अध्याय ॥ ७४ ॥ पांडवयज्ञ शिशुपालगति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमरो सब कोइ । शत्रु मित्र हरि गिनत न दोइ ॥ जो सुमिरै ताकी गति होइ । हरि हरि हरि सुमिरो सब कोइ ॥ वैरभाव सुमिरचो शिशुपाल । ताहि राजसूमें गोपाल ॥ चक्र सुदर्शन करि संहारचो । तेज तासु निज मुखमें डारचो ॥ भक्त भाव भक्तन उद्धारत । वैरभाव असुरन निस्तारत ॥ कोऊ सुमिरो काहु प्रकार । सूरदास हरिनाम उधार ॥ ५४ ॥

अध्याय ॥ ७५ ॥ पांडवसभा दुर्योधन क्रोध ॥ राग बिलावल ॥ भक्तकाज हरि जित कित सारे । यज्ञराजसू माहिं आप हरि सबके पाँइ पखारे ॥ अष्टनायका द्रुपदसुताकी करैं तहाँ सेवकाई । दुर्योधन यह रीति देखिके मनमें रह्यो खिसाई ॥ भक्त संग हरि लागे डोलत भक्तवत्सल प्रभु भोरी । सब विधि काज करत भक्तनके गनत नहीं हम कोरी ॥ जीते जीतत भक्त अपनकी हारे हार विचारत । सूरदास प्रभु रीति सदा यह प्रण युगयुग प्रतिपारत ॥ ५५ ॥

अध्याय ॥ ७६ ॥ तथा ॥ ७७ ॥ शाल्व द्वारका आक्रमण प्रद्युम्नशाल्वयुद्ध शाल्ववध ॥ राग मारू ॥ सुभट शाल्व करि क्रोध हरिपुरी आयो । हत्यो शिशुपालको राजसू मांह हरि धाइ धावन जबहिं इह सुनायो ॥ वृक्ष बन काटि महलान ढाहन लग्यो नगरके द्वार दीनों

गिराई । सर्व पाषाणकी वृष्टि करि लोगपर पाइ अति पलक बीते जराई ॥ प्रद्युमन सांब रण निकसि सन्मुख भये नंदनन्दन सुनत तुरत धाई।तहाँ चारिदेश दिश साजि दल मिलि सकल हाँकि रथ तुरत ता ठौर आई । सुमिरि गोपाल तब शाल्व माऱ्यो फटकि प्रद्युमन बाण दिशिते चलायो । मिट्यो अन्धकार तब बाण वर्षा करी तुरंग रथ सारथीसो गिरायो ॥ सैन्यके लोग पुनि बहुत घायल किये लऱ्यो ध्वज धारि धर पऱ्यो मुरछाई । शाल्व इह देखिकै चकृत तो होइ रह्यो शस्त्रके गहनकी सुध भुलाई ॥ अस्त्र विद्या समर बहुरि लाग्यो करन कबहुँ लघु कबहुँ दीरघसो होई । गुप्त कबहूँ कबहुं प्रगट तेहि देखिकै धरती रहहि आकाश सोई ॥ अग्नि कबहुँक बरखि वारिवर्षा करै प्रद्युमन सकल माया निवारी । शाल्व परधान उदमान मारी गदा प्रद्युमन मुरछित भये सुधि बिसारी ॥ धर्मपति सारथी गयो एकांत लै उहां जब चेत ह्वै सुधि सँभारी । खीझ कह्यो ताहि क्यों इहां ल्यायो मुझे मम पिता मातको लगै गारी ॥ कहा कहिहैं हमैं राम भगवान सुनि नारि मम सुनत अति दुखित होई । मरे रण सुयश त्रैलोक सुख पाइये मंदमति तैं दोऊ बात खोई ॥ धर्मपति कह्यो करि बिनय मम शोक नहिं सारथी धर्म मोहि गुरु सिखायो । मूर्च्छित सुभट नहीं राखिये खेतमें जानि यह बात मैं इहां ल्यायो ॥ प्रद्युमन कह्यो जो भई सो भई अब बात नहिं जिन कोऊसों सुनैये । ताहिदै शपथ करि आचमन यों कह्यो चलो रणभूमि अब येगि जैये । आइ रणभूमिमें सबन धीरज दियो शाल्व रथ तुरंग चारों संहारे । छत्र ध्वज तोरि माऱ्यो बहुरि सारथी देखि यह दूर कियो सुभट सारे ॥ हस्तिनापुर गये हते हरि पांडु गृह तहांते चले यह बात जानी । शाल्व उत्पात कियो द्वारका माँह बहु हांकि रथ कह्यो सारंगपानी ॥ सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई । शाल्वके भटन लखि कटक भगवानको आपने नृपतिसों कह्यो जाई ॥ सुनि सो भगवानके आइ सन्मुख भयो सारथी दौरि बर्छी चलाई । ताहि आवत निरखि श्याम निज सांगको काटिकरि शाल्वकी सुधि भुलाई ॥ बहुरि तिन कोपि निज बाण संधान करि धनुष भगवानको काटि डाऱ्यो । टूटते धनुषके शब्द आकाश गयो शाल्व निज जिय समुझि पुनि उचाऱ्यो ॥ रुक्मिणी माँगि शिशुपालकी तुम हरी बहुरि तेहि राजसूमें संहाऱ्यो । जाइहौ अब कहां दाँव लैहौं इहां छाँडिती जार आपा संभाऱ्यो॥ कह्यो भगवान सुनु शाल्व जे शूर नर ते नहीं करत निज मुख बडाई । जंगमें शूर तिनको नहीं जानिये भाषि यह गदा ताको चलाई ॥ गदाको लगतही गयो सो गुप्त होइ धारि धावन रूप यह सुनायो । कह्यो वसुदेव जगदीश सुनु अस्त्र जे तुअ अछत शाल्व मोहिं बांधि ल्यायो।बहुरि करि कपट बसुदेव तहां प्रगट कियो कह्यो तिन नाथ मैं दुखित भारी। शाल्व करवार लै श्यामके देखते डारि दियो ताको शीश उतारी ॥ कह्यो भगवान करि कपट इन यह कियो तासु माया तुरत हरि निवारी । भागि निज पुर चल्यो श्याम पहिलेहि

पहुँचि पुनि गदा खैंचि ता शीशमारी ॥ शाल्व कियो युद्ध बेरलैं गदाकी बहुरि हरि सांग ताको चलाई । लगत ताके गए प्राण वाके निकसि सुरन आकाश दुन्दुभि बजाई ॥ शीश ताको बहुरि काटि करवालसों नगर सब समुद्रमों डारि दीन्हों ॥ सूर प्रभु रहे ताठौर दिन और कुछ मारि दंतवक्र कुर गवन कीन्हों ॥ ५६ ॥

अध्याय ॥ ७८ ॥ दंतवक्रपरमगति । राग मारू ॥ हरि निकटे सुभट दंतवक्र आयो । कह्यो शिशुपाल तुम राजसूमें हत्यो धनि सो यह हेत सुनि दरश पायो ॥ भृत्य तुम हने, संशय नहीं कुछ हमैं दोउ बिधि आइ प्रभु हित हमारी । जीवै तो राज सुख भोग पावै जगत मुये निर्बाण नीरस तुम्हारी ॥ बहुरि लै गदा प्रहार कियो श्यामपर लगे ज्यों लकुट अंबुजप भारी । हरि गदा लगत गये प्राण ताके निकसि बहुरि हरि निज बदन मांह धारी ॥ अनुज ताको बडो रथ लग्यो फिरन यों चक्रसो शीश ताको प्रहारचो । सूर प्रभु युद्ध भयो मुनि जन हरषिये सुर पुहुप वरषि जै जै उचारचो ॥ ५७ ॥

अध्याय ॥ ७९ ॥ बल्वल बध रामतीर्थ गमन । राम मारू ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यही रहै स्नान फल इहै पाऊं ॥ श्याम दंतवक्र अरु शाल्वको जीत करि करत आनंद निज पुरी आये । राम गंगा और यमुना स्नान करि नैमिषारण्यमें जाइ न्हाये ॥ सूत तहां कथा भागवतकी कहत हैं ऋषि अठासी सहस हुते श्रोता । रामको देखि संमान सबही कियो सूत नहिं उठचो निजजानि वक्ता ॥ रामतेहि हत्यो तब सब ऋषिन मिलि कह्यो विप्रहत्या तुम्हैं लागि भाई । वाहि निमित्त सकल तीर्थ स्नान करो पाप जो भयो सो सब नशाई ॥ पुनि कह्यो ऋषिन पावन महा प्रबल इहां हमैं दुख देत सोई सदाई । ताहि जो हतौ तौ होइ कल्याण तुम्हैं हम करैं यज्ञ सुखसों सदाई ॥ राम दिन कइक ता ठौर अवरो रहे आइ बल्वल तहां दई देखाई । रुधिर औ मांसकी लगो बर्षा करन ऋषि सकल देखिकै गये डेराई ॥ राम हलसों पकरि मुशलसों हत्यो तेहि प्राण तजि तिन सकल सुधि बिसारे । सुरन आकाशते पुहुप वर्षा करी ऋषिन आशीश दै जै ध्वनि उचारी ॥ बहुरि बलभद्र परणाम करि ऋषिन्हको पृथ्वी पर दक्षिणाको सिधाये । प्रभु रची ज्योंहिं ज्यों होइ सो त्योंहिं त्यों सूर जन हरि चरित कहि सुनाये ॥ ५८ ॥

अध्याय ॥ ८० ॥ तथा ॥ ८१ ॥ सुदामा दारिद्र्य भंजन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ विप्र सुदामा सुमिरे हरी । ताकी सकल आपदा टरी ॥ कहौं सो कथा सुनो चितधार । कहै सुनै सो लहै सुखसार ॥ विप्र सुदामा परम कुलीन । विष्णुभक्त सो अति लवलीन ॥ भिक्षा वृत्ति उदर नित भरै निशि-दिन हरि हरि सुमिरन करै ॥ नाम सुशीला ताकी नारी । पतिव्रता अति आज्ञाकारी ॥ पति जो कहै सो करै चितलाइ । सूर कह्यो इक दिन या भाइ ॥

राग बिलावल ॥ कहि न सकति सकुचति इक बात । केतिक दूरि द्वारका नगरी काहे न द्विज यदुपति लौं जात ॥ जाके सखा श्याम सुन्दरसे श्रीपति सकल सुखनके दात ।

उनके अछत आपने आलस काहे कंत रहत कृशगात ॥ कहियत परम उदार कृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात । द्रवत आपु देत दासनको रीझत हैं तुलसीके पात ॥ छांडौ सकुच बांधि पट तंदुल सूरज सँग चलो उठि प्रात । लोचन सफल करौ प्रभु अपने हरि मुख कमल देखि बिलसात ॥ ८९ ॥

राग नट ॥ श्रीकंत सिधारो मधुसूदनपै सुनियत हैं वे मीत तुम्हारे । बाल सखाकी विपति बिहंडन संकट हरन मुरारे ॥ और जु अति आदरहु सुन्यो हम निज जन प्रीति बिचारे । यद्यपि तुम सन्तोष भजतहौ दरश निकट सुख भारे ॥ सूरदास प्रभु मिले सुदामें सबहिं भांति सुख दैजु नारे ॥ ९० ॥

राग बिलावल ॥ दूरिहिते देखैं बलवीर । अपने बाल सखा सुदामा मलिन बसन अरु छीन शरीर ॥ पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डोलावत तीर । उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैन भरि आये नीर ॥ तेहि आसन बैठारि श्याम घन पूँछी कुशल करौ मन धीर । ल्यायेहौ सु देहु किन हमको अब कहा राखि दुरावत चीर ॥ दरशन परसि दृष्टि संभाषन रही न उर अन्तर कछु पीर । सूर सुमति तन्दुल चबातही कर पकरयो कमला भइ भीर ॥ ९१ ॥

राग धनाश्री ॥ यदुपति देखि सुदामा आये । विह्वल बिकल छीनदारिद्वश करि प्रलाप रुक्मिणि समुझाये ॥ दृष्टि परेते दिये संभाषण भुजा पसारि अंक लै आये । तन्दुल देखि बहुत दुख उपज्यो मांगु सुदामा जो मन भाये ॥ भोजन करत गह्यो कर रुक्मिणि सोइ देहु जो मन न डुलावै । सूरदास प्रभु नवनिधिदाता जापर कृपा सोई जन पावै ॥ ९२ ॥

राग बिलावल ॥ ऐसी प्रीतिकी बलि जाउँ । सिंहासन तजि चले मिलनको सुनत सुदामा नाउँ ॥ गुरुबांधव अरु विप्र जानिकै चरणनि हाथ पखारे । अंकमाल दै कुशल बूझिकै अर्धासन बैठारे ॥ अर्धंगी बूझत मोहनको कैसे हितू तुम्हारे । दुर्बल दीन क्षीन देखतिहौं पांउ कहांते धारे ॥ संदीपनके हम औ सुदामा पढे एक चटसार । सूर श्यामकी कौन चलावै भक्त न कृपा अपार ॥ ९३ ॥

राग धनाश्री ॥ गुरुगृह जब हम वनको जात । तुरत हमारे बदले लकरी ये सहि दुख निजगात ॥ एक दिवस वर्षा भई वनमें रहि गये ताही ठौर । इनकी कृपा भयो नहिं मोहिं श्रम गुरु आये भये भोर ॥ सो दिन मोहिं बिसरत न सुदामा जो कीन्हों उपकार । प्रति-उपकार कहा करौं सूर अब भाषत आप मुरार ॥ ९४ ॥

हरिको मिलन सुदामा आयो । बिधि करि अरघ पांवडे दीने अन्तर प्रेम बढायो ॥ आदर बहुत कियो यादवपति मर्दन करि अन्हवायो । चोवा चन्दन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढायो ॥ पूरब जन्म अदात जानिकै ताते कछू मँगायो । मूठिक तंदुल बांधि कृष्णको बनिता बिनय पठायो ॥ समदै विप्र सुदामा घरको सर्वसु दै पहुँचायो । सूरदास बलि बलि मोहनकी तिहूं लोक पद पायो ॥ ९५ ॥

वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हम तुम बन गए लकरियन पठए गुरुकी भामा॥ चपल समीर भयो तेहि रजनी भीजे चारों यामा। कांपत हृदय वचन नहिं आवै आए सत्वर धामा॥ तबहिं अशीश दई परशन ह्वै सफल होहु तुम कामा। सूरदास प्रभुको जो मिलन यश गावत सुर नर नामा॥ ६६॥

राग बिलावल॥ सुदामा गृहको गमन कियो। प्रगट विप्रको कछु न जनायो मनमें बहुत दियो॥ वोई चीर कुचील वोई विधि मोको कहा कियो। धरिहौं कहा जाइ त्रिय आगे भरि भरि लेत हियो॥ भयो संतोष भाव मनहीं मन आदर बहुत कियो। सूरदास कीन्हें करनी बिन को पतिआइ वियो॥ ६७॥

सुदामा मंदिर देखि डरयो। शीश धुनै दोऊ कर मींडै अंतर सांच परयो॥ ठाढी त्रिया मार्ग जो जोवै ऊंचे चरण धरयो। तोहिं आदरयो त्रिभुवनको नायक अब क्यों जात फिरयो॥ इहां हुती मेरी तनिक मडैआ को नृप आनि छरयो। सूरदास प्रभु करि यह लीला आपद विप्र हरयो॥ ६८॥

देखत भूलि रह्यो द्विज दीन। ढूँढत फिरै न पूँछन पावै आपुन गृह प्राचीन॥ किधौं देवमाया बौरायो किधौं अनतही आयो। तृणहुकी छांह गई निधि मांगत अनेक जतन करि छायो। चितवत चकित चहूँदिशि ब्राह्मण अद्भुत रचना रीति। ऊंचे भवन मनोहर छाजा मणि कंचनकी भीति॥ पति पहिचानि धरी मंदिरते सूर त्रियां अभिराम। आवहु कंत देखि हरिको हित पाउँ धारिये धाम॥ ६९॥

भूलो द्विज देखत अपनो घर। औरहि भांति रची रचना रुचि देखतही उपज्यो हिरदय डर॥ कै यह ठौर छिनाइ लियो कहुँ आइ रह्यो कोऊ समरथ नर। कै हौं भूलि अनतखण्ड आयो यहु कैलास जहां सुनियत हर॥ बुधजन कहत दुबल घातक विधि सोइ न आजु लह्यो यह पटतर। ज्यों नलनी बन छाँडि वसी जल दाही हेम जहां पानी सर॥ जगजीवन जगदीश जगतगुरु अविगति जानि भरयो। आवो चले मन्दिर अपनेही कमलाकन्त धरयो॥ ता पीछे त्रिय उतरि कह्यो पति चलिये घरहि गहे करसे कर। सूरदास यह सब हित हरिको रोप्यो द्वार सुभगति कलपतर॥ ७०॥

कहा भयो मेरो गृह माटीको। हौं तो गयो गोपालहि भेंटन और खर्च तन्दुल-गांठीको॥ बिनु ग्रीवा कल सुभग न आन्यो हुतो कमण्डलु दृढ काठीको। घुनो बाँसगत-बुन्यो खटोला काहूको पलंग कनक पाटीको॥ नौतन पीरे दिकुयुगतीपै भूषण हुते न लोहे माटीको। सूरदास प्रभु कहा निहोरो मानतु रंक त्रास टाटीको॥ ७१॥

राग धनाश्री॥ कहौ कैसे मिले श्यामसंघाती। कैसे गए सु कन्त कौन विधि परसे हुते वस्तर कुचिल कुजाती॥ सुनि सुन्दरि प्रतिहार जनायो हरि समीप रुक्मिणी जहाती। उभै मुठी लीनी तन्दुलकी सम्पति सश्चि करीही थाती॥ सूर सु दीनबन्धु करुणामय करत बहुत जो श्रीनरिसाती॥ ७२॥

राग बिलावल॥ ऐसे मोहि और कौन पहिचानै। सुन सुन्दरी दीनबन्धू बिन कौन मिताई मानै॥ कहां हम कृपण कुचील कुदरशन कहां वै यादवनाथ गुसाँई। भेंटे हृदय लगाइ अंक भरि उठि अग्रजकी नाँई॥ निज आसन बैठारि परम रुचि निजकर चरण

पखारे। पूँछी कुशल श्याम घन सुन्दर सब संकोच निवारे॥ लीन्हें छोरि चीरते चाउर करगहि मुखमें मेले। पूरब कथा सुनाइ सूर प्रभु गुरुगृह वसे अकेले॥ ७३॥

राग धनाश्री॥ हरि बिन कौन दरिद्र हरै। कहत सुदामा सुन सुन्दरि जिय मिलन न हरि बिसरै॥ और मित्र ऐसे समयामहँ कत पहिंचान करै। विपति परे कुशलात न बूझै बात नहीं बिचरै। उठिकै मिले तन्दुल हरि लीने मोहन वचन फुरै। सूरदास स्वामीकी महिमा टारी निधि न टरै॥ ७४॥

• और को जानै रसकी रीति। कहां हौं दीन कहां त्रिभुवनपति मिले पुरातन प्रीति॥ चतुरानन तन निमिष न चितवत इती राजकी नीति। मोसों बात कही हृदयकी गए जाहि युगबीति॥ बिनु गोविंद सकल सुख सुन्दरि भुसपरकीसी भीति। हौं कहा कहौं सूर प्रभुके गुन निगम करत जाकी कीर्ति॥ ७५॥

गोपाल बिना और मोहिं ऐसो कौन सँभारै। हँसत हँसत हरि दौरि मिले सु उरते नाहिं टारै॥ छीन अंग जीरन वस्त्र दीन मुख निहारै। मम तन रज पथ लागी पीटपटसों झारै॥ सुखद सेज आसन दीन्हों सु हाथ पायँ पखारै। हरि हित हर गंग धरै पदजल शिर ढारै॥ कहि कहि गुरु गेह कथा सकल दुख निवारै। न्याय निजवपु सूरदास हरिजी ऊपर वारै॥ ७६॥

राग केदारो॥ दीन द्विज द्वारे आई रहो ठाढो। नाम सुदामा कहत नाथ जो दुखी आहि अति गाढो॥ सुनतहि वचन कमलदल लोचन कमला तज उठि धाए। त्रिभुवन नाथ देखि अपनो प्रिय हितसों कंठ लगाए॥ आदर करि मंदिर लै आने कनक पलँग बैठाए। कथा अनेक पुरातन कहि कहि गुरुके धाम बताए॥ खइबेको कछु भाभी दीन्हों श्रीपति श्रीमुख बोले। फेंट उपरतें अंजुल तंदुल बलकरि हरिजू खोले॥ दुइ मूठी तंदुल मुखमें ले बहुरो हाथ पसारयो। त्रिभुवन दैकरि कह्यो रुक्मिणी अपुनो दान निवारयो॥ विदा कियो पहुँचे निज नगरी हेरत भवन न पायो। मंदिर रही नारि पहिं- चान्यो प्रेम समेत बुलायो॥ दीनदयाल देवकीनंदन वेद पुकारत चारो॥ सूर सुभेंटि सुदामाको दुख हरि दारिद्र मिटारो॥ ७७॥

श्रीकृष्ण द्वारका गमन पंथीप्रति ब्रजनारी बदति॥ राग मलार॥ तबते बहुरि न कोऊ आयो। उहै जु एकबेर ऊधोसों कछु संदेशो पायो॥ छिन छिन सुरति करत यदुपतिकी परत न मन समुझायो। गोकुलनाथ हमारे हितलगि लिखिहू क्यों न पठायो॥ यहै बिचार करहु धौं सजनी इतौ गहर क्यों लायो। सूर श्याम अब बेगि न मिलहू मेघनि अंबर छायो॥ ७८॥

राग गौरी॥ बहुरयो ब्रजबात न चाली। वहै सु एक बेर ऊधोकर कमल नैन पाती दै घाली॥ पथिक तुम्हारे पांइन लागति मथुरा जाउ जहां वनमाली। कहियो प्रगट पुकार द्वार ह्वै कालिंदी फिरि आयो काली॥ तबहूं कृपा हुती नँदनंदन रचि रचि रसिक प्रीति प्रतिपाली। मांगत कुसुम देखि ऊंचे द्रुम लेव उछंग गोद करि आली॥ जब वह सुरति होत उर अन्तर लागति काम बाणकी भाली। सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत उरहि शूल अति शाली॥ ७९॥

राग धनाश्री ॥ तुम्हरे देश कागर मसि खूटी । भूँक प्यास अरु नींद गई सब हरि बिन विरह लयो तनु लूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोले अवधि भई सब झूठी । हम अपराधिनि मर्म न जान्यो अरु तुमहूते तूटी ॥ सूरदास प्रभु कबहुँ मिलहुगे सखी कहत सब झूठी ॥ ८० ॥

अध्याय ॥ ८२ ॥ कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी मिलन ॥ पथिक कहियो ब्रज जाइ सुने हरि जात सिन्धु तट । सुनि सब अंग शिथिल गयो नाहीं वज्र हियो फट ॥ नर नारी घर घर सबै इह करति बिचारा । मिलिहैं कैसी भांति हमैं अब नन्दकुमारा ॥ निकट बसत हुती आस कियो अब दूर पयाना । बिना कृपा भगवान उपाउ न सूर अपाना ॥ ८१ ॥

राग गौरी ॥ हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरि । मधुवन वसत आशहुती सजनी अब मरिहैं जु बिसूरि ॥ कौने कहीं कौन सुनि आई किहि रुख रथकी धूरि । संगहि सबै चलौ माधवके नातौ मरिहैं खरि ॥ दक्षिणदिशि यह नगर द्वारका सिन्धु रह्यो जलपूरि । सूरदास प्रभु बिनु क्यों जीवों जात सजीवन मूरि ॥ ८२ ॥

गोपिका विरह ॥ राग धनाश्री ॥ नैना भये अनाथ हमारे । मदनगोपाल वहाँते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वै जलहर हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे । हम चातक चकोर श्यामघन वदन सुधानिधि प्यारे ॥ मधुवन वसत आश दरशनकी जोइ नैन मग हारे । सूरज श्याम करी पिय ऐसो मृतकहुते पुनि मारे ॥ ८३ ॥

राग धनाश्री ॥ अब निज नैन अनाथ भये । मधुवनहूते माधो सजनी कहियत दूरि गये ॥ मथुरा बसत हुती जिय आशा यह लागत व्यवहार । अब मन भयो भीमके हाथी सुपने अगम अपार ॥ सिन्धुकूल इक नगर बतावत ताहि द्वारका नाउँ । यह तनु सौंपि सूरके प्रभुको और जन्मधरि जाउँ ॥ उती दूरते को आवै री । जासों सन्देशो कहि पठऊं इहांते सो कहि कहां पावैरी ॥ कंचनके बहु भवन मनोहर राजा रंक न तृण छावैरी । वहां के बासी लोगनको क्यों ब्रजको बसिबो भावै री ॥ सिंधुकूल इक देश वसत है देख्यो सुन्यो न मन धावै री । बहुविधि करत विलाप विरहिनी अनेक उपाय दुख पावै री ॥ कहा करौं कहां जाउँ सूर प्रभु को हरि पियपै पहुँचावैरी ॥ ८४ ॥

राग सारंग ॥ हौं कैसेकै दरशन पाऊँ । सुनहु पथिक वहि देश द्वारका जो तुम्हरे सँग आऊं ॥ बाहिर भीर बहुत भूपनकी बूझत वदन दुराऊं । भीतर भीर भोग भामिनिकी तेहिठां कौन पठाऊँ ॥ बुधि बल युक्ति जतन करि वहि पुर हरि पियपै पहुँचाऊँ । अब बन बसी निकुंजरसिक बिन कौनहिं दशा सुनाऊं ॥ श्रमकै सूर जाउँ प्रभुपासहि मनमें भले मनाऊं । नवकिशोर मुख मुरली बिना इन नैनन कहा देखाऊँ ॥ ८५ ॥

राग नट ॥ मानो विधि अब उलटि रचीरी । जानति नहीं सखी काहेतै वहि दिनते जु तजीरी ॥ बूडि न मुई नीर नैननके प्रेम न प्रजरि पचीरी । विरह अग्नि अरु जल प्रवाहते क्यों दुहुँ बीच बची री ॥ जो कछु सकल लोककी शोभा लै द्वारका सची री । वहांकि वारिधि वडवानलमें रेत न आनि बची री ॥ कहिये संकर्षणके भ्राता कीटनि कितन मची री । सूर श्याम या जग मोह्यो सोई मुख निरखि नचीरी ॥ ८६ ॥

राग मारू ॥ औ नहीं माई कोइ तौ । सुन री सखी संदेश दुर्लभ भए नैन थके मग जोइ तौ । गोकुल छांडि निवास सिंधु कियो प्राण जिवन धन सोइ तौ ॥ द्वारावती कठिन अति मारग क्यों करि पहुँचै लोइ तौ । मिती मिलनकी आश अवधि गई ब्रजबनिता कहि रोइ तौ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको त्रिपति कहूं नहिं होइ तौ ॥ ८७ ॥

राग मलार ॥ ताते अब अति मरियत अपसोसनि । मथुराहूते गए सखी री अब हरि कारे कोसनि ॥ यह अचरज सु बडो मेरे जिय यह छांडनि वह पोसनि । निपट निकाम जानि हम छांडी ज्यों कमान बिन गोसनि ॥ इक हरिके दरशन बिनु मरियत अरु कुबिजा के ठोसनि । सूरसु जरनि कहा उपजी जो दूरिहोतकरि बोसनि ॥ ८८ ॥

राग मारू ॥ जोपै लैजाइ कोऊ मोहिं द्वारका देश । संग ताके चलौं सजनी जटाहू करि केश ॥ बोलिधौं हर वाइ पूछहु आपने समेस ॥ जैसेही जो कहै कोऊ बनै तैसे भेस॥ यदपि हम ब्रजनाथ युवती यूथनाथ नरेस । तदपि शशि कुमुदनी सूरज रची प्रीति परेस ॥ ८९ ॥

राग सारंग ॥ उघरि आयो परदेशीको नेह । तब जो सबै मिले कान्ह करि भूलतही अवलेहु ॥ काहेको सखी अपनो सरवस हाथ पराये देहु । लहियो महिमा भंग मथुरा छाँडि जाइ समुद्र कियो गेह ॥ कहा अब करी अग्नि तनु उपजी बाढयो अतिहि संदेहु । सूरदास विह्वल भई गोपी नैनन वर्षत मेहु ॥ ९० ॥

राग मलार ॥ कैसे है बनत इहि ब्रज हरिको अवन । कहियत है मधुवनते सजनी कहूँ कान्ह कियो दूरि गवन ॥ निकट वसत मतिहानि भई हम मिलिहु न आई सु त्यागि भवन । अब अपने यदुकुल समेत लै दूरि सिधारे जीति जवन ॥ अगम सुपंथ दूरि दक्षिण दिशि तहँ सुनितय सखी सिंधुलवन । सूरदास तरसत मन निशिदिन यदुपति लौं लैजाइ कवन ॥ ९१ ॥

राग धनाश्री ॥ सुनियत कहुँ द्वारका बसाई । पश्चिम देश तीर सागरके कञ्चन कोट गोमती सों खाई ॥ पंथ न चलत संदेश न आवत उहां लगि नर कोऊ नहिं जाई । शत योजन मथुराहूते कहियत यह हम सुधि निगमहूपै पाई ॥ बन उपवनमें जन मंदिर छवि कोकिल कीर हंस ध्वनि लाई । द्वारपाल चातक द्रुम सुपचनि माँझ कोट निधि पाई ॥ घोष ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एकको कौन सगाई । सूर श्याम ब्रजवास विसारे बाबा-नंद यशोदा माई ॥ ९२ ॥

राग मारू ॥ उडुपतिसों बिनवति मृगनैनी । तुम कहियत उडुराज अमृतमय तजि सुभाउ वर्षत कत बहनी ॥ उमयापति रिपु अधिक दहतहै हरि रिपु प्रीतम सूखत तौनी । छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहां दुरौनी ॥ श्याम संदेश बिचार करति है कहां रहे हरि छाइ बछोनी । सूर श्याम बिनु भवन भयानक जो अति रहति गोपाल की अवनी ॥ ९३ ॥

दधिसुत जातिहौ वहि देश। द्वारकामें श्यामसुंदर सकल भुवन नरेश ॥ परम शीतल अमृतदाता करतहैं उपदेश। श्यामसुंदर वियोगिनीको लेहु यह संदेश ॥ नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर भेष। काज अपनो सारि स्वामी रहे जाइ विदेश ॥ भक्तवत्सल बिरद तुमरो मोहिं इह अंदेश। अबकी बेर तुम मिलहु कृपाकरि कहैं सूर सुदेश ॥ ९४ ॥

राग मलार ॥ वीर बटाऊ पाती लीजो। जब तुम जाहु देश द्वारका हमरेइ लाल गोपालहि दीजो ॥ रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढाइ कहो दह कीजो। खारि समुद्र छाँडि किन आवत निर्मल जल यमुनाको पीजो ॥ या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देत अशीश बहुत युग जीजो। सूरदास प्रभु हमरे कोते नँदनंदनके पाँइ परीजो ॥ ९५ ॥

राग सारंग ॥ हौं तो आइ मिलत गोपालहि। सिंधु धरनि यह जुगुत न तेरी दुख दीनो ब्रजबालहि ॥ कहा करों पट नील पीत वर दुइते भये भुज चारि। बहु सुख कहा जु तब मन होतो भेंटत श्याम मुरारि ॥ संतत सूर रहत पति संगम सब जानति रुचि जीकी। तू क्यों नहीं धरति या भेषहि जोपै मुक्ति अति नीकी ॥ ९६ ॥

राग मलार ॥ श्याम बिन भई शरदनिशि भारी। हमैं छाँडिप्रभु गये द्वारका ब्रजभूमि कैसे बिसारी ॥ निर्मल जल यमुनाको छाँडयो सेवत समुद्रजल खारी। कहियो जाइ पथिक जैसे आवैं चरणनकी बलिहारी ॥ अबला कहा योगकर जानै ब्रजवासी जो बिसारी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको रटत राधिका प्यारी ॥ ९७ ॥

राग मलार ॥ ब्रज परम दरकरत है काम। कहियो पथिक जाइ श्यामसों राखहिं आइ आपनो धाम ॥ जलधि कमान वारि दारू भरि तडित पलीता देत। गर्जन औ तर्पन मानो गो पहरकमें गढ लेत ॥ लेहु लेहु सब करत बंदिजन कोकिल चातक मोर। दादुर नगर करि जीवन ढोवा अलग बिलग चहुँ ओर ॥ ऊधो मधुप जसूस देखि कर कह्यो लुटाऊं धीरज पारन। रखिबे होइ तौ आनि राखिये सूरलोक निज जारन ॥ ९८ ॥

राग मलार ॥ ब्रजपर बहुरो लागे गाजन। ज्यों क्योंहू पति जात बडेकी मुख न देखावत लाजन ॥ चहुँदिशिते दल बादल उमडे सूने लागे बाजन। घोषके लोग कान्ह बल तिन अब जित कित लागे भाजन ॥ आपुन जाइ द्वारका छाये लागे श्याम बिराजन। सूरदास गोपी क्यों जीवैं बिछुरे हरिजी साजन ॥ ९९ ॥

राग मारू ॥ अब मोहिं निशि देखत डर लागे। बारबार अकुलाइ देहते निकसि निकसि मन भागे ॥ प्राचीदिशा पेखि पूरण शशि ह्वै आयो तन तातो। मानहु मदन मदन बिरहिनिको करिलीनी रिसरातो ॥ भ्रुकुटी कुटिल कलंक चाप मानों अति रिसिसों शर साधे। चहुँघा किरनि पसारे पासिनि हठिकर योगिनि बाँधे ॥ सुनि शठ सहै प्राणपति मेरो जाको यश जग जानै। सूर सिन्धु बूडतते राख्यो ताहू कृतहि न मानै ॥ १०० ॥

रुक्मिणि वचन श्रीभगवानप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि बूझत है गोपालहिं। कहौ बात अपने गोकुलकी कतिक प्रीति ब्रजबालहिं ॥ कहा देखि रीझे राधासों चंचल नैन

विशालहिं । तब तुम गाय चरावन जाते उर धरते बनमालहिं ॥ इतनी सुनी नैन भरि आये प्रेम नन्दके लालहिं । सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै घोष बात जनि चालहि ॥ १ ॥

राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि मोहिं निमेष न बिसरत वै ब्रजबासी लोग । हम उनसों कछु भली न कीनी निशिदिन मरत वियोग ॥ यदपि कनकमय रची द्वारका सखी सकल सम्भोग । तद्यपि मन जो हरत बंसीवट ललिताके संयोग ॥ मैं ऊधो पठयो गोपिनपै देइ सँदेशो योग । सूरजदास देखि उनकी गति किन्ह उपदेशे योग ॥ २ ॥

राग मलार ॥ रुक्मिणि मोहिं ब्रज बिसरतु नाहीं । वा क्रीडा खेलत यमुनातट विमल कदमकी छाहीं ॥ गोपवधूकी भुजा कण्ठधीर विहरत कुञ्जनमाहीं । अनेक बिनोद कहांलौं वरणौं मोमुख वरणि न जाहीं ॥ सकल सखा अरु नंद यशोदा वे चितते न टराहीं । सुत हित जानि नन्द प्रतिपाले बिछुरत विपति सहाहीं ॥ यद्यपि सुखनिधान द्वारावति तोउ मन कहुँ न रहाहीं । सूरदास प्रभु कुंजविहारी सुमिरि सुमिरि पछिताहीं ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि चलहु जनम भूमि जाहीं । यदपि तुम्हारो हतो द्वारका मथुराके सम नाहीं ॥ यमुनाके तट गाय चरावत अमृत जल अचवाहीं । कुंजकेलि अरु भुजा कन्ध धरि शीतल द्रुमकी छाहीं ॥ सरस सुगन्ध मन्द मलया गिरि विहरत कुंजनमाहीं । जो क्रीडा श्रीवृन्दावनमें तिहूं लोकमें नाहीं ॥ सुरभी ग्वाल नन्द अरु यशुमति मम चितते न टराहीं । सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि सेवा तिनकी कराहीं ॥ ४ ॥

श्रीकृष्णकुरुक्षेत्र आवन राग सारंग ॥ ब्रजबासिनको हेतु हृदयमें राखि मुरारी । सब यादवसों कह्यो बैठिकै सभामँझारी ॥ बडो पर्व रवि गहन कहा कहौं तासु बडाई । चलौ सबै कुरुक्षेत्र तहां मिलि न्हैये जाई ॥ तात मात निज नारिलै हरिजी सब सङ्गा । चले नगरके लोग साजि रथ तरलतुरंगा ॥ कुरुक्षेत्रमें आइ दियो इक दूत पठाई । नंद यशोमति गोपि ग्वाल सबसूर बुलाई ॥ ५ ॥

सखीवचन राधिका प्रति शकुन विचार ॥ राग सारंग ॥ वायस गहगहत शुभवाणी विमल पूर्वदिशि बोली । आजु मिलाओं श्याम मनोहर तू सुनु सखी राधिके भोली ॥ कुच भुज अधर नयन फरकत हैं बिनहिबात अंचलध्वज डोली । सोच निवार करो मन आनँद मानो भाग्यदशा बिधि खोली ॥ सुनत सु वचन सखीके मुखते पुलकित प्रेम तरकिगई चोली । सूरदास अभिलाष नन्दसुत हर्षी सुभग नारि अनमोली ॥ ६ ॥

राग केदारो ॥ माधवजी आवनहार भये । अंचल उडत मन होत गहगहो फरकत नैन खये ॥ देही देखि सोच जिय अपने चितवत सगुन दये । ऋतु बसंत फूली द्रुमबल्ली उलहे पात नये ॥ करत प्रतीति आपु आपुनते सबन शृंगार ठये । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि अवधिहु पूजिगये ॥ ७ ॥

श्रीभगवान दूत वचन नन्द यशोमति प्रति ॥ राग धनाश्री ॥ हौं इहां तेरेही कारण आयो । तेरीसों सुन जननि यशोदा हठि गोपाल पठायो ॥ कहा भयो जो लोग कहत हैं देवकी माता जायो । खान पान परिधान सबै सुख तैंहीं लाड लडायो ॥ इता हमारो राज द्वारका मो जी

कछू न भायो। जब जब सुरति होत उहि हितकी बिछुर बच्छ ज्यों धायो ॥ अब वे हरि कुरुक्षेत्रमें आयो सो मैं तुम्हें सुनायो । सब कुल सहित नन्द सूरज प्रभु हितकरि वहां बोलायो ॥ ८ ॥

राधिका वचन सखी प्रति ॥ राग सारंग ॥ राधा नैन नीर भरि आई। कब धौं श्याम मिलैं सुंदर सखी यदपि निकट है आई ॥ कहा करौं केहि भाँति जाउँ अब पेखहि नहिं तिन पाई। सूर श्याम सुंदर घन दरशे तनुकी ताप नशाई ॥ ९ ॥

सखीवचन राधिकाप्रति राग केदारो ॥ अब हरि आइहैं जिन सोचै। सुन विधुमुखी वारि नयननते अब तू काहे मोचै ॥ सत्य जानि चित चेत आनि तू अब नख क्यों तनु नोचै। मदनमुरारि सँभारि सुमिरि सुख तुम समीपको बोचै ॥ लै लेखनि मसि करि कर अपने लिखि संदेश छाँडि संकोचै। सूर सुविरह जनाउ करत कित प्रबल मदनरिपु पोचै ॥१०॥

गोपीसंदेश श्रीभगवान प्रति ॥ राग सारंग ॥ पथिक कहियो हरिसों यह बात। भक्तवछल है बिरद तिहारो हम सब किये सनाथ ॥ प्राण हमारे संग तुम्हारे हमहू हैं अब आवत। सूर श्यामसों कहत संदेशो नयनन नीर बहावत ॥ ११ ॥

कुरुक्षेत्र श्रीभगवान मिलन ॥ राग सारंग ॥ नंद यशोदा सबब्रजबासी । अपने अपने शकट साजिकै मिलन चले अविनाशी ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ उतावल धावत। हरि दरशन लालसा कारन विविध मुदित सब आवत ॥ दरशन कियो आइ हरि-जीको कहत सपनकी साँची। प्रेम मानि कछु सुधि न रही अँग रहे श्याम रँग राची ॥ जासों जैसी भाँति चाहिये ताहि मिल्यो त्यों धाइ। देश देशके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाइ ॥ उमँग्यो प्रेम समुद्र दशहुँ दिशि परमिति कही न जाइ। सूरदास इह सुख सो जानै जाके हृदय समाइ ॥ १२ ॥

राग कान्हरो ॥ तेरी जीवनि मूरि मिलहि किन माई। महाराज यदुनाथ कहावत तबहिं हुते शिशु कुँवर कन्हाई ॥ पानि परे भुज धरे कमल मुख पेखत पूरब कथा चलाई। परम उदार पानि अवलोकत हीन जानि कछु कहत न जाई ॥ फिरि फिरि अब सन्मुखही चितवति प्रीति सकुच जानी न दुराई। अब हँसि भेंटहु कहि मोहिं निज जन बाल तिहारो हो नंद दोहाई ॥ रोम पुलकि गदगद तनु तिहि छिन जलधारा नैनन वरषाई। मिले सु तात मात बंधू सब कुशल कुशल करि प्रश्न चलाई ॥ आसन देइ बहुत करि विनती सुत धोखे तब बुद्धि हेराई। सूरदास प्रभु कृपा करी अब चितहि धरे पुनि करी बडाई ॥१३॥

राग मलार ॥ माधव या लगि है जग जीजतु। जाते हरिसों प्रेम पुरातन बहुरि नयो करि कीजतु ॥ कहँ रवि राहु भयो रिपु मति रचि विधि संयोग बनायो । उहि उपकार आज यहि औसर हरि दरशन सचु पायो ॥ कहां बसहिं यदुनाथ सिंधु तट कहँ हम गोकुलबासी । वह बियोग यह मिलनि कहां अब काल चाल औरासी ॥ सूरदास मुनि चरण चरचि करि सुरलोकनि रुचि मानी। तब अरु अब यह दुसह प्रमानी निमिषो पीर न जानी ॥ १४ ॥

श्रीभगवान रुक्मिणी प्रत्युत्तर ॥ राग कान्हरो ॥ हरिजूसों बूझत है रुक्मिणि इनमें को वृषभानुकिशोरी । बारेक हमैं देखाओ अपने बालापनकी जोरी ॥ जाके हेतु निरन्तर लीये डोलत ब्रजकी खोरी । अति आतुर होइ गाइ दुहावन जाते पर घर चोरी ॥ रजनी सेज सु करि सुमननकी नवपल्लव पुट तोरी । बिनु देखे ताके मन तरसै छिन बीते युग मोरी ॥ सूर सोच सुख करि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी । शिथिल गात मुख वचन फुरत नहिं है जो गई मति भोरी ॥ १५ ॥

• राग धनाश्री ॥ बूझति है रुक्मिणि पिय इनमें को वृषभानुकिशोरी । नेक हमैं देखरावहु अपनी बालापनकी जोरी ॥ परम चतुर जिन कीने मोहन अल्प बैसही थोरी । बारेते जिहि यहै पढायो बुधि बल कलविधि चोरी ॥ जाके गुणगनि गुथति माल कबहूँ उरते नहिं छोरी । सुमिरन सदा बसतहीं रसना दृष्टि न इत उत मोरी ॥ वह देखो युवतिवृंदमें ठाढ़ी नीलवसन तनु गोरी । सूरजदास मेरो मन वाकी चितवन देखि हरयो री ॥ १६ ॥

राग मारु ॥ गोविंद परम कृपा मैं जानी । निगम जु कहत दयालु शिरोमणि सत्य सु निधि बानी ॥ अब ये श्रवन वरन कर स्वारथ तुम जु दरश सुख दीनो । या फल योग सुकृत नहिं समुझत दीन देखि हित कीनो ॥ यह दिन धन्य धन्य जीवन जस धन्य भाग्य प्रभु पाये । शिव मुनि मन दुर्लभ चरणांबुज जनहि प्रगट परसाए ॥ हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्णमिलन जिय भाये । सूरजदास सकल लोचन जनु शशि चकोर कुल पाए ॥ १७ ॥

राग सारंग ॥ हरिजी इते दिन कहाँ लगाये । तबहि अवधि मैं कहत न समुझी गनत अचानक आये ॥ भली करी जु अबहिं इन नैनन सुंदर चरण दिखाये । जानी कृपा राज-काजहूँ हम निमिष नाहिं बिसराए ॥ विरहिनि विकल बिलोकि सूर प्रभु धाइ हृदय कर लाए । कछु मुसुकाइ कह्यो सारथि सुन रथके तुरंग छुराए ॥ १८ ॥

राग मलार ॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहां । यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां ॥ मुख मुरली शिर मोरपखौआ गर घुँघुँचनिको हार । आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवन तिरछी चाल ॥ राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात । सूर देखि वा प्रभुता उनकी कहि नहिं आवै बात ॥ १९ ॥

राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि राधा ऐसे बैठी । जैसे बहुत दिननकी बिछुरी एक बापकी बेटी ॥ एक सुभाउ एकलै दोऊ दोऊ हरिकी प्यारी । एक प्राण मन एक दुहुनको तनु करि देखिअत न्यारी ॥ निज मंदिर लै गई रुक्मिणी पहुनाई विधि ठानी । सूरदास प्रभु तहँ पगधारे जहाँ दोऊ ठकुरानी ॥ २० ॥

राग धनाश्री ॥ राधा माधव भेंट भई । राधा माधव माधव राधा क्रीट भृंग गति होइ जो गई ॥ माधव राधाके रँगराचे राधा माधव रंग रई । माधो राधा प्रीति निरंतर रसना कहि न गई ॥ बिहँसि कह्यो हम तुम नहिं अंतर यह कहि ब्रज पठई । सूरदास प्रभु राधा माधव ब्रज विहार नित नई नई ॥ २१ ॥

राग धनाश्री ॥ राधावचन सखी प्रति ॥ करत कछु नाहीं आजु बनी । हरि आए हौं रही ठगीसी जैसे चित्र धनी ॥ आसन हर्षि हृदय नहिं दीन्हों कमलकुटी अपनी । न्यव- छावर उर अरघ न अश्रुत जलधारा जोबनी ॥ कंचुकीते कुचकुलश प्रगट ह्वै टूटि न तरक तनी । अब उपजी अति लाज मनहिमन समुझत निजकरनी ॥ मुख देखत न्यारेसी रहिहौं विनु बुधिमति सजनी । तदपि सूर मेरी यह जडता मंगल मांझ गनी ॥ २२ ॥

भगवान वचन ब्रजवासी प्रति ॥ राग सारंग ॥ ब्रजवासिनसों कह्यो सबनते ब्रजहित मेरे । तुमसों मैं नाहिं दूर रहतहौं सबहिनके नियरे ॥ भजै मोहिं जो कोइ भजौं मैं तिनको भाई । मुकुरमांह ज्यों रूप आपनो आपुन सम दरशाई ॥ यह कहिकै समदे सकल जन नयन रहे जलछाई । सूरश्यामको प्रेम कछू मोपै कह्यो न जाई ॥ २३ ॥

राग सारंग ॥ सबहिनते सब है जन मेरो । जन्म जन्म सुन सुभल सुदामा निबह्यो इह प्रण मेरो ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि आदि दै जानत बलि वसि केरो। इक उपहास त्रास उठि चलते तजिकै अपनो खेरो ॥ कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों दूरि बसेरो । आपुनहीं या ब्रजके कारण करिहौं फिरि फिरि फेरो ॥ यहां वहां हम फिरत साधहित करत असाध अहेरो । सूर हृदयते टरत न गोकुल अङ्ग छुअतहौं तेरो ॥ २४ ॥

ब्रजवासी वचन ॥ राग सारंग ॥ हमतो इतनेही सचुपायो । सुन्दर श्याम कमलदल लोचन बहुरो दरश देखायो ॥ कहा भयो जो लोग कहत हैं कान्ह द्वारका छायो । सुनि यह दशा विरह लोगनकी उठि आतुर होइ धायो ॥ रजक धेनु गज कंस मारिकै कियो आपनो भायो ॥ महाराज होय मातु पिता मिलि तऊ न ब्रजबिसरायो ॥ गोपी गोप अरु नन्द चले मिलि प्रेम समुद्र बहायो । येते मान कृपालु निरन्तर नैननीर ढरि आयो ॥ यद्यपि राज बहुत प्रभुता सुनि हरि हित अधिक जनायो । वैसहि सूर बहुरि नँदनन्दन वर घर माखन खायो ॥ २५ ॥

अध्याय ॥ ७३ ॥ अष्टनायिका द्रौपदी प्रश्न । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु दिनराति । नातरु जन्म अकारथ जाति ॥ सौ बातनकी एकै बात । हरि हरि हरि सुमिरो दिनरात ॥ हरि कुरुक्षेत्र अन्हान सिधाये । तब सब भूपति दरशन आये ॥ हरि तेहि सबको आदर कियो । भयो सन्तुष्ट सबहिनको हियो ॥ तब भूपहि हरिको शिरनाइ । करनलगे अस्तुति या भाइ ॥ परमहंस तुम सबके ईश । वचन तुम्हारे श्रुति जगदीश ॥ तुम अच्युत अविगति अविनाशी ॥ परमानन्द सदा सुखरासी ॥ तुम तनु धारि हर्‍यो भुवभार । नमो नमो तुम्हैं बारम्बार ॥ पुनि रानी रानिनपै आई । द्रुपदसुता तब बात चलाई ॥ ज्यों करि भयो तुम्हारो व्याह । कहो सो तिनको मोहिं उत्साह ॥ कह्यो सबन्ह हरि अज अविनाशी । भक्तवछल सब जगत निवासी ॥ ना हमकोनहिं सुन्दरताई । भक्त जानिकै सब अपनाई ॥ व्याह सबनको ज्यों ज्यों भयो । बहुरो तिन्हते वहि त्यों कह्यो ॥ द्रुपदसुता सुनि मन हरषाई । कह्यो धन्य तुम धनि यदुराई ॥ धन्य सकल पट-

रानी रानी । जिन वर पायो शारँगपानी ॥ धन्य जो हरिगुण अहनिशि गावै । सूरदास तिनकी रज पावै ॥ २६ ॥

अध्याय ॥ ८४ ॥ ऋषिस्तुति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । बिनु हरि सुमिरन मुक्ति न होई ॥ श्री शुक व्यास कह्यो यह गाई । सोइ अब कहौं सुनो चित लाई ॥ सूरज गहन पर्व हरि जान । कुरुक्षेत्रमें आए न्हान ॥ तहां ऋषि हरि दरशन हित आये । हरि आगे होइ लेन सिधाये ॥ आसन दे पूजा हित करी । हाथ जोरि विनती उच्चरी ॥ दरश तुम्हारे देवन दुर्लभ ॥ हमको भयो सो अतिही सुर्लभ ॥ यों कहि पुनि लोगन समुझायो । जैसे वेद पुराणन गायो ॥ हरिजीको पूजे हरि जान । ताको होइ तुरत कल्यान ॥ गुरुपूजा बहु बिधिसों कीजै । तीरथ जाइ दान बहु दीजै ॥ यह सब किये होइ फल जोइ । संत संगसों छिनमें होइ ॥ यह सुनिकै ऋषि रहे लजाइ । पुनि हरिसे बोले या भाइ ॥ तुम सबके गुरु सबके स्वामी । तुम सबहिनके अन्तर्यामी ॥ तुम्हैं वेद ब्राह्मणहि बखानत । ताते हमरी अस्तुति ठानत ॥ हम सेवक तुम जगत अधार । नमो नमो तुम्हें बारंबार॰॥ तुम परब्रह्म जगत करतारा । नरतनु धरयो हरन भूभारा ॥ सुरपूजा औ तीर्थ बतावत ।॰ लोगनके मतिको भरमावत ॥ तुम रूपहि यहि भाँति छिपायो काठ माँह ज्यों अग्नि दुरायो ॥ वसुदेव तुमको जानत नाहीं । और लोग बपुरे किन माहीं ॥ कोउ न मानत कोउ न जानत । कोऊ शत्रु मित्रकरि मानत ॥ सर्व-शक्ति तुम सर्व अधार । तुम्हें भजै सो उतरै पार ॥ जैसे नींद माहिं कोइ होय । बहुविधि सपनो पावै सोय ॥ पै तेहि वहां न कछू सम्हार । केहि देखत को देखनहार ॥ त्यों जिय रहै विषै रस भोइ । तेहिके सुद्धि बुद्धि नहिं कोइ ॥ जापर कृपा तुम्हारी होइ । रूप तुम्हारो जानै सोइ ॥ घटघटमांह तिहारो बासं । सर्व ठौर ज्यों दीप प्रकाश ॥ इहि बिधि तुमको जानै जोइ । भक्त रु ज्ञानी कहिये सोइ ॥ नाथ कृपा अब हमपर कीजै । भक्ति आपनी हमको दीजै ॥ प्रेम भक्ति बिन कृपा न होइ । सर्व शास्त्रमें देखे जोइ ॥ तपसी तुमको तपकरि पावै । सुनि भागवत गृही गुण गावै ॥ कर्म योग करि सेवत कोई । ज्यों सेवै त्योंही गति होई ॥ ऋषि यहि बिधि हरिके गुण गाइ । कह्यो होइ आज्ञा यदुराइ ॥ हरि तिनकी पुनि पूजा करी । कीरति सकल जगत विस्तरी । वेद पुराण सब-नको सार । व्यास कह्यो भागवत बिचार ॥ बिनु हरि नाम नहीं उद्धार । वेद पुराण सबनको सार । सूर जानि यह भजो मुरार ॥ २७ ॥

अध्याय ॥ ८५ ॥ श्रीकृष्ण देवका षट्पुत्र आनयन ॥ राग बिलावल ॥ श्रीगोपाल तुम कहो सो होइ । तुमहीं कर्त्ता तुमहीं हर्त्ता तुमते और न कोइ ॥ अबलौं मैं तुमको नहिं जान्यो पुत्रभावकरि मान्यो । तुमहो देव सकल देवनके अब तुमको पहिचान्यो ॥ गुरुसुत आनि दिये तुम जैसे कृपाकरी यदुराई । मम सुतहूं जे कंस सँहारे ते प्रभु देहु जिवाई॥मेरे जिय यह बडी लालसा देखो नैनन जोई । दूध पिवाइ हृदयसों लावों पाछे होइ सो होइ॥यह

हरि पाताल सिधारे जहां हुते बलिराइ। करि प्रणाम बैठारि सिंहासन हितकरि धोये पाइ ॥ तासों कह्यो देवकीके सुत षष्ठ कंस जे मारे। नेक मँगाइ देहुते हमको हैं वे लोक तुम्हारे ॥ तहँते आनि दिये हरि बालक माता लाड लडाये। सूरदास प्रभु दरस परसकै ते वैकुंठ सिधाये ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ ८६ ॥ वेदस्तुति वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारविन्द उर धरो। हरिके रूप रेख नहिं राजा। अरु हरि सम द्वितिया न विराजा ॥ अलखरूप हरि कह्यो न जाई। देवन कछु वेद उक्ति बताई ॥ हरिजीके हिरदय यह आई। देवन सबन निरूप देखाई ॥ तीनलोक हरि करि बिस्तार। ज्योति अपनिको कियो उजियार ॥ जैसे कोऊ गेह सँवार। दीपक बारिकरै उजिआर ॥ त्यों हरि ज्योति अपनी प्रगटाइ। घट घटमें सोई दरशाइ ॥ तीन लोक सरगुण तनु जान्यो। ज्योति स्वरूप आपनो मान्यो ॥ श्वासा तासु भये श्रुतिचार। करि सो अस्तुति या परकार ॥ नाथ तुम्हारी ज्योति अभास। करत सकल जगमें परकास ॥ थावर जंगम जहँलों भयो। ज्योति तुम्हारी चेतन कियो ॥ तुम सब ठौर सबनते न्यारे। को लखि सकै चरित्र तुम्हारे ॥ सो प्रकाश तुम साजे सदा। जीव कर्म्म करि बंधन बँधा ॥ सर्व व्यापी तुम सब ठाहर ॥ तुमहिं दूर जानत नर नाहर ॥ तुम प्रभु सबके अंतर्यामी। बिसरि रह्यो जिव तुमको स्वामी ॥ तुम्हरी लीला अगम अपार। युग प्रमान कीन्हो व्यवहार ॥ तुम्हरी माया जगत उपाया। जैसेको तैसे मगलाया ॥ अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारे। जो करिकै भुवभार उतारे ॥ तेहिको समुझि सकत नहिं जोइ। निर्गुण रूप लखै क्यों सोइ ॥ नरतन भक्ति तुम्हारे होइ। जीव तनुमें जिव आसरै सोइ ॥ करिये भक्ति उतरिये पार ॥ नमो नमो तुम्हें बारंबार ॥ शुक जैसे वेद अस्तुति गाई। तैसेही मैं करि समुझाई ॥ जो पद अस्तुति सुनै सुनावै। सूर सुज्ञान भक्तिको पावै ॥ २९ ॥

राग बिलावल ॥ नमो नमस्ते बारंबार। मदन सुदन गोविन्द मुरार ॥ माया मोह लोभ अरु मान। ए सब त्रयगुण फांस समान ॥ काल सदा शर साधे रहै। क्यों करि नर तुव सुमिरन कहै ॥ तुम निर्गुण उदय निराकार। सूर अमर हम रहे पचिहार ॥ तुमरो मर्म न जानै सार। नर बपुरो क्यों करै बिचार ॥ अरुण असित सित वपु उनहार। करत जगतमें तुम अवतार ॥ सो जगको मिथ्या कहिजाइ। जहां तरै तुमरे गुण गाइ ॥ प्रेमभक्ति बिनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपाकरि दीजै सोइ ॥ और सकल हम देखौं जोइ। तुम्हरी कृपा होइ सो होइ ॥ इह तनुहै प्रभु जैसे ग्राम। यामें शब्दादिक विश्राम ॥ अधिष्ठाता तुम हौ भगवान। जान्यो जगत न तुम अस्थान ॥ तुम श्वासाते पुहुमी नाथ। श्वासरूप हम लख्यो न बात ॥ कहा कहि तुम्हरी अस्तुति करैं। बाणी नमो नमो उच्चरैं॥ जगत पिता तुमहीं हौ ईश। याते हम विनवत जगदीश ॥ तुम सम द्वितिया और न आहि। पटतर देहिं नाथ हम काहि ॥ शुक जैसे वेदअस्तुति गाई। तैसेही मैं कही समुझाई ॥ सूर कह्यो श्रीमुख उच्चार। कहै सुनै सो तरै भवपार ॥ ३० ॥

नारद अस्तुति ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभु तुम मर्म समुझि नहिं परचो । जगसिरजत पालत संहारत पुनि क्यों बहुरि करचो ॥ ज्यों पानीमें होत बुदबुदा पुनि तामाहिं समाई । त्योंही सब जग कुटुम्ब तुमते पुनि तुममाहिं बिलाई ॥ माया जलधि अगाध महाप्रभु तरि न सकै तेहि कोई । नाम जहाज चढै जो कोई तुवपद पहुँचै सोई ॥ पापी तरचो तरचो सबही सम प्रभुजी नाहीं तासु निबाही । काठ उतारत वारि बोहिमें नाम तुम्हारो ताही ॥ पारस परसि होत ज्यों कञ्चन लोहपना मिट जाई । ज्यों अज्ञानी ज्ञानहिं पावत नाम तुम्हारे गाँई ॥ अमर होत ज्यों संशय नाशे रहत सदा सुखपाइ । याते होत अधिक सुख भक्तन चरण कमल चितलाइ ॥ थावर जंगम सब तुम आश्रित सनक सनंदन बानी । ब्रह्मा शिव अस्तुति न सकैं करि मैं बपुरो केहिमाहीं ॥ योग ध्यान करि देखत योगी भक्त सदा मोहिं प्यारो । ब्रजवनिता भज्यो मोहिं नारद मैं तेहि पार उतारो ॥ नारद ज्यों ही अस्तुति कीनी शुक्र त्यों कहिं समुझाई । सूर प्रेम भक्तिकी महिमा श्रीपति श्रीमुख गाई ॥ ३१ ॥

अध्याय ॥ ८७ ॥ सुभद्राविवाह वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ भक्तवछल श्रीयादवराई । भक्त-काज हरि कृत सुखदाई ॥ अर्जुन तीरथ यात्रा सिधाये । फिरत फिरत द्वारावति आये ॥ सुन्यो बिचार करत बलयेइ । दुर्योधनहिं सुभद्रा देइ ॥ तब अर्जुनके मन यह आई । याको मैं लैजाउँ दुराई ॥ भेष तापसीको तिन गह्यो । चारि मास द्वारावति रह्यो ॥ बलदेव ताको नेवत बुलायो । भोजन हेतु सो बल गृह आयो लख्यो सुभद्रा इह संन्यासी राजकुँवर कियो भेद उदासी ॥ मेरे मनमें यह उत्साह । मेरो या सँग होहि विवाह ॥ इक दिन सो हरिमंदिर गई । वहां भेंट पारथसों भई ॥ देखि ताहि रथ ठाढो कियो । हरि दोउको चहरो लिखिलियो ॥ धनुष बाण अपनो तब दियो । अर्जुन सावधान होइ लियो ॥ यह सुनिकै हलधर उठि धायो । तब हरि अर्जुन नाम सुनायो ॥ बल कह्यो जो तुम मन ऐसी आइ । तौ तुम क्यों कीन्हीं न सगाइ ॥ हरि कह्यो अबहुँ बुलावहु ताहि । भली भांतिको करो विवाहि ॥ तब बल पारथ तुरत बुलायो । शुद्ध मुहूरत लग्न धरायो ॥ करि विवाह अर्जुन घर आयो । सूरदास जन मंगल गायो ॥ ३२ ॥

राग नट ॥ बिनती करत गोविंद गोसाई । दै सब सौंज अनत लोकपति निपट रंककी नाइ॥धरि धन धाम सजनके आगे श्याम सकुचि कर जोरे । टहल योग यह कुँवरि सुभद्रा तुमसम नाहीं कोरे ॥ इतनी सुनत पंडुनंदन कह यहै वचन प्रभु दीजे । सूरज दीनबन्धु अब इहि कुल कन्या जन्म न कीजे ॥ ३३ ॥

अध्याय ॥ ८८ ॥ जनकदेवमिलाप परमारथ ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । राव रंक हरि गनत न दोई ॥ जो सुमिरै ताकी गति होई । हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई ॥

श्रुतदेव ब्राह्मण सुमिरचो हरि । ताकी भक्ति हृदयमें धरी ॥ राउ जनक हरि सुमिरन कीन्हों ॥ हरिजू सोउ हृदय धरि लीन्हों ॥ तब हरि ऋषिहि पथिक सँग किये । तिनके देश प्रीतिवश गये ॥ दोउ रूप हरि दोउनको मिले । तोषि तेहि पुनि निजपुर चले ॥ हरिजीको यह सहज सुभाव । रंक होइ भावे कोउ राव ॥ जो हित करै ताहि हित करै । सूर प्रभू नहिं अन्तर धरै ॥ ३४ ॥

राग कान्हरो ॥ घरही बैठे दोऊ दास । ऋधि सिधि मुक्ति अभयपद दायक आइ मिले, प्रभु हरि अनयास ॥ आये सुने श्याम उपवनमें भेटलई भुज परम सुवास ॥ चर्चित गात चन्द्रमुख चितवत उर सरवर भयो कमल विगास ॥ भूपति चमर विप्र कर वस्तर करत वाउ अति अंग हुलास । आनंद उमँगि चल्यो नैनन जल सुरत देव द्विज नृप बहुलास ॥ जाको ध्यान धरत मुनि शंकर शीश जटा दिगअम्बर तास । कामदहन गिरिकन्दर आसन वा मूरतिकी तऊ पिआस ॥ भक्तवछलता प्रगट करी है भयो विप्र धरकर कलिग्रास । सूरदास स्वामी सुमिरन वश अछत निरंजन सेवा पास ॥ ३५ ॥

अध्याय ॥ ८९ ॥ भस्मासुर वध । राग धनाश्री ॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिनके वश अनमुख अनेक गन अनुचर आज्ञाकारी ॥ महादेव वर दियो असुरको जब उन निज तनु जारचो । शिवके शीश धरन लाग्यो कर शिव वैकुण्ठ सिधारचो ॥ विप्ररूप हरि कह्यो असुरसों इह वर सत्य न होइ । शिर अपने पर धरो असुर कर भस्म होइ गयो सोइ ॥ शिव कैलास गये अस्तुति करि आनंद उपज्यो भारी । सूरदास हरिको यश गायो श्रीभागवत अनुसारी ॥ ३६ ॥

अध्याय ॥ ९० ॥ भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूपदर्शन । शंखचूड पुत्रल्यावन राग बिलावल ॥ हरिसो ठाकुर और न जनको । तिहूं लोक भृगु जाइ आइ कह्यो या बिधि सब लोगनको ॥ ब्रह्मा राजसगुण अधिकारी शिव तामस अधिकारी । विष्णु सत्य केवल अधिकारी विप्रलात उरधारी ॥ मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ नित देखत नैन सिराई । इह जिय जानि भजो सब कोई सूर प्रभू यदुराई ॥ ३७ ॥

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ हरि इक दिन निज सभा मँझार । बैठे हते सहित परिवार ॥ अर्जुन हूं ता ठौर सिधाये । शंखचूड तब वचन सुनाये ॥ द्वारावती बसत सब सुखी । महीं एक अह अरु निशि दुखी ॥ मेरे पुत्र होत हैं जबहीं । अन्तर्ध्यान होत सो तबहीं ॥ अर्जुन कह्यो द्वारका माहीं । ऐसो कोउ धनुधारी नाहीं ॥ जो तुअ सुतकी रक्षा करै । अरु तेरो पर दुख परि हरै ॥ मैं तुअ सुतकी रक्षा करों । अरु तेरो इह दुख परिहरों ॥ यह प्रतिज्ञा जो न निबाहौं । तौ तनु अपनो पावक दाहौं ॥ विप्र कह्यो तुम श्याम कि राम । कै प्रद्युमन अनिरुद्ध अभिराम ॥ अर्जुन कह्यो मैं उनमें नाहीं । पै हौं उनके दासन माहीं ॥ अर्जुन है मेरो निज नाम । धनुष काम दियो मम अभिराम ॥ तू निहचिन्त बैठ गृह जाइ । समै होय कह मोसों

आइ ॥ पुत्र प्रसूति समय जब आयो । विप्र अर्जुनसों आनि सुनायो ॥ अर्जुन तब शर पंजर कियो । पवन संचार रहत नहिं दियो ॥ गृहको द्वारो राख्यो जहां । अर्जुन साव- धान भयो तहां ॥ ब्राह्मण कह्यो समय अब भयो । अर्जुन धनुष बाण तब गह्यो ॥ बालक ह्वै भया अन्तर्धान । अर्जुन ह्वै रह्यो चकृत समान ॥ विप्र नारि तब गारी दई । लख्यो प्रतिज्ञा कहा होइ गई ॥ तैं पुरुषारथ कहांते पायो । मिथ्याही कहि वाद बढायो ॥ हरिसों दुःख अब कहिहौं जाई । अर्जुन कह्यो तासों या भाई ॥ तेरे सुतको मैं अब ल्याऊं । तेरो सब सन्ताप नशाऊं ॥ अर्जुन तिहूं लोक फिरि आयो । ऐसो बालक कहूँ न पायो ॥ अर्जुन वीर श्याम तन आय । हरि अर्जुनसों वचन सुनाय ॥ तुम्ह बालक काहीं नहिं राख्यो । सो वृत्तांत हमैं तुम भाष्यो ॥ कह्यो जो मैं परतिज्ञा करी । सो मोसों पूरण नहिं परी ॥ बालक होत कौन लै गयो । मोको कछू ज्ञान न भयो ॥ मैं देख्यो तेहि त्रिभुवन जाइ । पै ताकी कहुँ सुधि नहिं पाइ ॥ विप्रकाज प्रभु अब तुम करो । नातरु मोको जानो मरो हरि रथपर अर्जुन बैठाई । पहुँचे लोकालोकहि जाइ ॥ उतहूँते जब आगे धाई । दारुक हरिसों वचन सुनाई ॥ अन्धकार मग नहिं दरशाइ । याते रथ नहिं सकत चलाइ ॥ चक्र सुदर्शन आगे कियो । कोटिक रवि परकाशित भयो ॥ तब हरि अर्जुन पहुँचे तहां । गति नाहीं काहूकी जहां ॥ तहां जाइ देख्यो इक रूप । तासम और न द्वितिय स्वरूप ॥ नैन निरखि चकृत होइ गये । मन वाणी दोऊ थकि रये ॥ कहिबे योग होइ तौ कहै । तहां कछू आकार न लहै ॥ शयन नागफन मुकुट स्थान । नैन प्रभा मानो कोटिक भान ॥ हरि अर्जुन कियो निरखि प्रणाम । सुन्यो तहां एक शब्द अभिराम ॥ तुम्हरे हेतु चरित्र यह कियो । बोझ पृथ्वीको हरवो भयो ॥ आवहु अब तुम अपने धाम । पूरण भये सुरनके काम ॥ दशो पुत्र ब्राह्मणके दीन्हें । हरि अर्जुन प्रणाम तब कीन्हें ॥ नहिं जान्यो मैं कहां सिधायो । और यहां मैं कैसे आयो । हरि अर्जुनको निज जन जान । लै गये तहां न जहां शशि भान ॥ निज स्वरूप अपनो दरशायो । जो कछु देख्यो वा नहिं पायो ॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई । कहा सकै रसना गुण गाई ॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो । सूरदास ताही विधि गायो ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते दशमस्कन्धो- त्तरार्द्धः समाप्तः ॥ १० ॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर।

एकादश स्कन्ध।



॥ राग नटनारायण ॥ तुम्हरो वचन न मेट्यो जाइ। प्राणनाथ कृपालु परम गुरु सुजान यादवराइ ॥ कहत पठवन बद्रिका मोहिं गूढ ज्ञान सिखाइ। सकुच साहस करत मनमें चलत परत न पाँइ ॥ पताकाके दंडलौं मन लेत संग लगाइ। कहा करों चित चरण सन्मुख बसन सदृश उडाय ॥ मेरेही या हृदयकी हरि कठिन सकल उपाइ। सूर सुनत जु गयो तबहीं खंड खंड नशाइ ॥ १ ॥

राग सारंग ॥ हरिसों हौं कहा कहौं। प्रभु अंतर्यामी सब जानत यह सुनि सोचि रहौं। बिनु बुधि मनुज देह दयानिधि क्यों करि लै निबहौं। समुझि आपनी करनी गोसाईं काहे न शूल सहौं ॥ मैं यह ज्ञान छली ब्रजवनिता दियो सु क्यों न लहौं। प्रकट पाप तनुताप सूर प्रभु केहिपर हठहि गहौं ॥ २ ॥

राग नट ॥ कैसे करि आवत श्याम इती। मन क्रम वचन और नहिं मेरे पदरज त्यागि हिती ॥ अंतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि बिती। ज्यों कुजवारि रस बींधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती ॥ रहत अवज्ञा होइ गुसाईं चलत न दुखहि मिती। क्यों विश्वास करहिगो कौरौ सुनि प्रभु कठिन कृती ॥ इतर नृपति जिहि उचत निकट करि देत न मूठि रिती। छुटत न अंश सु नितहि कृपिणके प्रीति न सूर रिती ॥ ३ ॥

राग केदारो ॥ क्यों करि सकौं आज्ञा भंग। करुणामय पद कमल लोचन नाहिंन छूटत संग ॥ यह रजायसु होत मोसन कहत बदरी जान। कहा करौं मम पाप पूरण सुनि न निकसत प्रान ॥ मैं अपराधी ब्रजवधू सों कहे वचन विष तूल ॥ मोहिं तजि अवर

को विय सहै ऐसे शूल ॥ अब न जो तुम जाहु ऊधो मिटै युग भृत रीति ॥ हौं जु तेरी सकल जानत महा मोसन प्रीति ॥ सकल ज्ञान प्रबोधि उनसों कहि कथा समुझाइ । यादवनको प्रलय सुनि वे मरहिंगी अकुलाइ ॥ अति विषाद सुहृदय करि करि उठि चल्यो है दीन । सूर प्रभु तू कृपासागर किन भयो हौं मीन ॥ ४ ॥

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ नारायण जब भये अवतार । कहों सो कथा सुनो चितधार । धर्म पिता अरु मूरति माई । भये नारायण सुत तेहि आई ॥ बदरिकाश्रम रहे पुनि जाइ । योग अभ्यास समाधि लगाइ ॥ उनके और कामना नाहिं । सुख पावे त्रिभुवन मन नाहिं ॥ सुरपति देखत गयी डेराइ । कामसैन सँग दियो पठाइ ॥ ऋतु वसंत फूली फुलवाइ । मंद सुगंध बयार बहाइ ॥ करत गान गंधर्व सुहाइ ॥ नृत्य भली अप्सरा देखाइ ॥ काम बाण पांचौं संधाने । नारायणते मनहिं न आने ॥ तब तिन सबन तहां भय पायो । कह्यो इन्द्र हमें कहां पठायो ॥ तब नारायण आंख उघारी । उन सबकी कीन्हीं मनुहारी ॥ तुम कछु मनमें भय मति धरो । अभय हमारे आश्रम करो ॥ दोष तुम्हारो है कछु नाहिं । तुमहिं पठायो है सुरनाहिं ॥ इन्द्रहुको कछु दूषण नाहीं । राजहेतु डरपत मनमाहीं ॥ उन कर जोर बीनती उचारी । नारायण हरि हरि बनवारी ॥ उधरत लोग तुम्हारे नाम । क्यों करि मोह सकै तुम काम ॥ जे न शरण प्रभु तुम्हरे करैं । तिनको अंतराइ हम करैं ॥ और संभारि मनोरथ धरैं । ते सब हमको अहनिशि डरैं ॥ कहूं पुत्र मोह उपजावै । कहूं त्रियाके रूप लोभावै ॥ भूँख प्यास होइ कबहु संतापैं । ऐसे विधि हम उनको व्यापैं ॥ जो कोउ तुम्हरे शरण न आवै । सुख संसार सकल बिसरावै ॥ तासों हमरो कछु न बसावै । होय चेत सो तुमपै आवै ॥ नारायण तहां प्रगट करी । इन्द्र अपसरासो भगिरी ॥ सहस अप्सरा सुंदर रूप । एक एकते अधिक अनूप ॥ काम देखि चकृत होइ गयो । रूप अवनि हम देख्यो नयो ॥ कौन जिते सबहीं इन माहिं । इनसम इन्द्रलोक कोउ नाहिं ॥ तब नारायण आज्ञा करी । इनमें लेहु एक सुन्दरी ॥ पुनि प्रणाम हरिको तिन कीन्ही । नाम उर्वशी इक उन लीन्हीं ॥ सो सुरपतिको दीन्हीं जाइ । कह्यो सकल वृत्तांत सुनाइ ॥ पुनि भयो नारायण अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ५ ॥

हंस अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि ज्यों धरचो हंस अवतार । कहौं सो कथा सुनो चितधार ॥ सनकादिक ब्रह्मापै गये । नमस्कार कर पूँछत भये ॥ किधौं विषयको चित गहि रह्यो । की विषहीमें चितको गह्यो ॥ नीर क्षीर ज्यों दोउ मिलिगये । न्यारे होत न न्यारे किये ॥ हमतो जतन करी बहु भाइ । तुम अब कहो सो करैं उपाइ ॥ ब्रह्माको उत्तर नहिं आयो । तब सनकादिक गर्व बढायो ॥ ज्ञान हमारो अतिशय जोइ । ब्रह्मा रह्यो

निरउत्तर होइ ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगाय । तब हरि हंस रूप धरि आय ॥ सबहिन रूप देखि सुख पायो । सबहिन उठिकै माथो नायो ॥ सनकादिकन कह्यो या भाइ । हमको दीजै प्रभु समुझाइ ॥ को तुम क्यों करि इहां पधारे । परमहंस तब वचन उचारे ॥ यह तो प्रश्न योग है नाहीं ॥ एकइ आतम हम तुममाहीं ॥ जो तुम देह देखिकै पूछे । तोहू प्रश्न तुम्हारे छूँछे ॥ पंच भूतते सब तनु भए । कहा देखिकै तुम भ्रमिगए ॥ यह कहि उनको गर्व निवारयो । बहुरो या विधि वचन उचारयो ॥ विषय चिन्ता दोऊ है माया । दोऊ चपरि ज्यों तरुवर छाया ॥ तरुवर डोलै डोलै सोइ । त्यों जिव लगि चित चेत न होइ ॥ बहुरि चित चेत विषै तनु जोवै । चित्त विषय संयोग तब होवै । ऐसी भाँति रहै दोउ गोइ । तिन्हें न्यारे करिसकै न कोइ ॥ ज्यों सुपनेमें सुख दुख जोइ । जानि सत्य राखै चित लोइ ॥ जब जागै तब मिथ्या जानै । ज्ञानी इनको नित यों मानै ॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम जानो । आतमरूप सत्य करि मानो ॥ श्रवणादिकमें चित्त लगावहु । प्रेम सहित मम रूपहि ध्यावहु ॥ ऐसे करत विषयहू होइ । अरु मम चरण रहै चित गोइ ॥ जो ऐसे विधि साधन करै । सो सहजहि मम पद अनुसरै ॥ और जो बीचहि तनु छुटिजाय । तौ ले जन्म भक्तगृह आय ॥ वहांहू प्रेम भक्तिको थान । पावे मेरो परम स्थान ॥ सनकादिकसों कहि यह ज्ञान । परमहंस भये अंतर्धान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सूर सो प्रेम भक्तिको पावै ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते एकादशः स्कन्धः समाप्तः ॥ ११ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर

द्वादश स्कन्ध।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ शुकदेव हरि चरणन शिरनाइ। राजासों बोल्यो या भाइ ॥ कहौं हरि कथा सुनो चितलाय। सूर तरो हरिके गुण गाय ॥ १ ॥

बौद्धावतारवर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारविंद उर धरो ॥ बौद्धरूप जैसे हरि धारचो। अदिति सुतनको कारज सारचो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धार ॥ कहै सुनै सो तरै भवपार ॥ असुर एक समय शुक्रपै जाइ। कह्यो सुरन जीतैं केहि भाइ ॥ शुक्र कह्यो तुम जग विस्तरो। करिकै यज्ञ सुरनसों लरो। याही विधि तुमरी जय होइ ॥ या बिनु और उपाय न कोइ ॥ असुर शुक्रकी आज्ञा पाइ। लागे करन यज्ञ बहु भाइ ॥ तब सुर सब हरिजू पै जाइ। कह्यो वृत्तांत सकल शिर नाइ। हरिजू तिनको दुःखित देख। कियो तुरत सेवरिको भेष ॥ असुरन पास बहुरि चलि गए। तिनसों वचन ऐसी विधि कए ॥ यज्ञमाहिं तुम पशुन यों मारत। दया नहीं आवत संहारत ॥ अपनोसो जीव सबनको जानि। कीजै नहिं जीवनकी हानि ॥ दया धर्म पालै जो कोइ। मेरी मति ताकी जय होइ ॥ यह सुन असुरन यज्ञै त्यागि ॥ दया धर्म मारग अनुरागि ॥ या विधि भयो बुद्ध अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ २ ॥

भविष्य कल्की अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि करिहैं कलंक अवतार। जेहि कारण सो कहो चित धार ॥ कलिमें नृप होइ हैं अन्याई। कृषी आइ लेहैं बरिआई ॥ झूंठे नरसों लेहिं अंकोर। लावहिं सांचे नरको खोर ॥ प्रजा धर्मरत होइ न कोइ। वरन धर्म न पहिंचानै सोइ ॥ दूरितीर्थन श्रम करि जाहिं। जहां रहैं तहां लख्यो न ताहिं ॥ जाके गृहमें प्रतिमा होइ। तिन तजि पूजै अनतै सोइ ॥ ब्राह्मण पूँछे जान्यो जाइ। संन्यासी फिरै भेष बनाइ ॥ गृही न अपनो धर्म पहिंचानै। उन नहिं आए को सन्मानै ॥ दया सत्य सन्तोष नशाइ। दया धर्मकी रीति बिलाइ ॥ फल सुधर्मको जानै सोइ। पै सुधर्म को करै न कोइ ॥ पापनको फल चाहै नाहीं। अहनिशि पाप करतही जाहीं।

वर्षा समै न वर्षा होइ। बिना अन्न दुख पावै लोइ॥ दान देहिं तो यशके काज। कलि न होइ पृथ्वीपति राज॥ मन इन्द्रिय वश करैं न लोग। ज्यों त्यों कीन्हों चाहैं भोग॥ शत संवत आयुःकुल होइ। सोऊ जीवै बिरला कोइ॥ नृप ऐसे आयुर्दा पाइ। पृथ्वीहित नित करैं उपाइ॥ पृथ्वी देखि तिन हांसी करही। ऐसो को जो मोपर रहही॥ मन्वंतर लगि कियो जेहि राज। तेऊ नृपति गये मोहिं त्याज॥ पृथुसे पृथ्वीपति जग भए। तेऊ नृपति छांडि मोहिं गए॥ तुच्छ आयु परिश्रम करत। आपु आपुमें लरि लरि मरत॥ इनहिं देखि मोहिं हांसी आवत। इनको इतनी समुझि न आवत॥ सतयुग सत त्रेता जग करते। द्वापर पूजा मनमें धरते॥ कलियुग एक बडो उपकार। जो हरि कहै सो उतरे पार॥ कलिमें पाप करै नित लोइ। कहँलगि कहिये अंत न होइ॥ हरि हरि कहत पाप पुनि जाइ। पवन लागि ज्यों रूइ उडाइ॥ अजामेल सुत हित हरि भाष्यो। यमदूतनते तेहि हरि राख्यो॥ कलिमें राम कहै जो कोइ। निश्चय भव जल तरिहै सोइ॥ जबलगि बढै अधर्म अपार। रहै विष्णुजस धर्म सतहार॥ तागृह संभल कलकी होइ। करै संहार दुष्ट नर लोइ॥ पृथ्वी अकास तहां रहिजाइ। राज देहि जो कुंभ बैठाइ॥ समदृष्टि होवे सब लोइ। दुष्ट भाव मन धरै न कोइ॥ यों होइहै कलंकि अवतार। कलिमें राम नाम आधार॥ शुक नृपसों कह्यो जा परकार॥ सूर कह्यो ताही अनुसार॥ ३॥

राजा परीक्षित हरिपद प्राप्ति वर्णन ॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धारो॥ बिनु हरिभक्ति मुक्ति नहिं होइ। कोटि उपाय करौ किन कोइ॥ रहट घरी ज्यों जग व्यवहार। उपजत बिनशत बारंबार॥ उत्पति प्रलय होत जा भाइ। कहौं सुनो सो नृप चित लाइ॥ राजा प्रलय चतुर्विध होइ। आवत जात चहूँ में लोइ॥ युग परलय तो तुमसों कही। तीन और कहिबे को रही॥ चतुर्युगी बीतै एक-हत्तर। करै राज तब लगि मन्वंतर॥ चौदह मनु ब्रह्मा दिन माहिं। बीतत तासों कल्प कहाहिं॥ रात कोइ तब परलय होइ। निशि मर्यादा दिन सम होइ॥ प्रात भए जब ब्रह्मा जागै। बहुरो सृष्टि करनको लागै॥ दिन सो तीन साठ जब जाहिं। सो ब्रह्माको वरष कहाहिं॥ वर्ष पचाश परारध गए। प्रलय तीसरी या बिधि लए॥ बहुरो ब्रह्मा सृष्टि उपावै। जबलौं परारध दूजो आवै॥ शत संवत भये ब्रह्मा मरै। महाप्रलय नित प्रभुजू करै॥ माया माहिं नित्य लेपावै॥ माया हरिपद माहिं समावै॥ हरिको रूप कह्यो नाहिं जाइ। अलख अखंड सदा इक भाइ॥ बहुरि जब हरिकी इच्छा होइ। देखै माया के दिशि जोइ॥ माया सब तबहीं उपजावै। ब्रह्मा सों पुनि सृष्टि उपावै। तब हम प्रलय सदा पुनि होइ। जन्मै मरै सवाई लोइ॥ हरिको भजै सो हरिपद पावै। जन्म मरण तेहि ठौर न आवै॥ नृप मैं तोहिं भागवत सुनायो। और तो हिय माहिं बसायो॥ मुक्ति माहिं संशय नहिं कोइ। सुने भागवतमें सोइ होइ॥ सप्तम दिवस आजु है राउ। हरि चरणारबिंद चित लाउ॥ इह अछेद अभेद अविनाशी। सर्व गति अरु सर्व उदासी॥ दृष्टिहि दृष्टि सोइ दृष्टि टारि। काको दीजै को दिखहारि॥ हरि स्वरूप सों रतिहि बिचारि। मिथ्या तनुको मोह पसारि॥ नृप कह्यो तनुको मोह न कोइ। याको जो भावै सो होइ॥

मोहि अब सर्व ब्रह्म दरशावै । तक्षक भय मनमें नाहिं आवै ॥ तुम प्रसाद मैं पायो ज्ञान । छूटि अमिथ्या देह अभिमान॥अब मैं गहि हरिपद अनुराग।करिहौं मिथ्या तनुको त्याग ॥ शुक जान्यो नृपको जो ज्ञान । आज्ञा लैकरि कियो पयान ॥ तक्षक नृप शरीरको डस्यो । तब तनु तजिकै पदमें बस्यो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । मैंहूँ ता अनुसार सुनायो ॥ अंत समय हरिपद चित लावै । सूरदास सो हरिपद पावै ॥ ४ ॥

जन्मेजय कथा ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धारो ॥ जन्मेजय जब पायो राज । एकबार निज सभा बिराज ॥ पिता वैर मनमें सो बिचार । बिप्रनसों यों कह्यो उचार ॥ मोको तुम अब यज्ञ करावहु । तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सेत कुली जब जारी । तब राजा तिनसों उच्चारी ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारौ ॥ कह्यो इन्द्र निज शरन उबारौ ॥ नृप कह्यो इन्द्रसहित तेहि जारौ । बिप्रनहूं इह मतो बिचारौ ॥ आसतीक तेहि अवसर आयो । राजासों यह वचन सुनायो ॥ कारण करनहार भगवान । तक्षक डसनहार मति जान ॥ बिनु हरि आज्ञा द्वितिय न बात । कौन सकै काहू संताप ॥ हरि जो चाहै त्योंहीं होइ । नृप तामें संदेह न कोइ ॥ नृपके मन यह निश्चय आयो । यज्ञ छांडि हरिपद चित लायो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं करि गायो ॥ ५ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते द्वादशः
स्कन्धः समाप्तः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीसूरसागर संपूर्ण ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर' स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.